

लेखन कला का इतिहास

प्रथम खण्ड

ईश्वर चन्द्र राहो

इस ग्रन्थ में

विभिन्न देशों के प्राचीन एवं
अर्वाचीन ६० मानचित्र;



सिन्धु - घाटी-लिपि का
रहस्योद्घाटन का प्रयास करने वाले
२५ विद्वानों के निष्कर्ष;



विश्व की समस्त प्राचीन एवं
अर्वाचीन लिपियाँ एवं प्रतिदर्श
३८१ फलकों पर;



३६२ प्रकार की मृतक
एवं जीवित लिपियों के रूप;



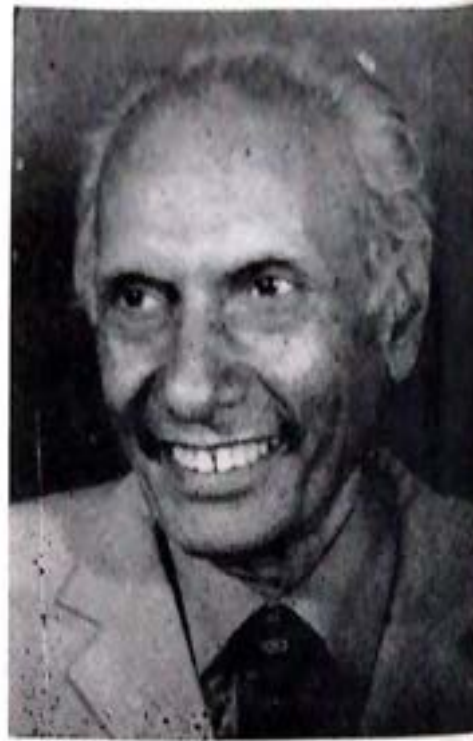
विभिन्न लिपियों की,
खोज करने वाले,
उत्खनन करने वाले,
उनको पढ़ने वाले,
विद्वानों के नाम;



विभिन्न भाषाओं के ग्रन्थों के
नाम (जिनको पढ़कर यह ग्रन्थ
लिखा गया);



दिये गये हैं



श्री ईश्वरचन्द्र राही जिन्होंने

- समस्त भारत की यात्रा सायकिल पर की १९३८-६०
- विश्व के ३५ देशों की यात्रा सायकिल पर १९७४-७६ में की।
- ४८ विश्वविद्यालयों, ८०६ महा-विद्यालयों, ११,८०० विद्यालयों तथा ११४ रोटरी क्लबों में विभिन्न विषयों पर भाषण दिये।
- आठ पुस्तकें हिन्दी एवं अंग्रेजी में लिखीं तथा चार पुस्तिकाएँ इसी विषय पर लिखीं।
- विश्व की विभिन्न लिपियों के उद्भव एवं विकास के चार्ट बनाकर यूरोप में प्रदर्शनियाँ कीं।
- श्री राही जी का जन्म १९१६ को उ० प्र० के शाहजहाँपुर जनपद के एक ग्राम बेहटी में हुआ। बचपन में ही माता-पिता का स्वर्गवास हो गया। आर्थिक अभाव के कारण क्रमबद्ध शिक्षा ग्रहण कर सके। किन्तु विश्व के महाविद्यालय में स्वाध्याय तथा यायावर जीवन द्वारा योग्यता प्राप्त की ऐसे कर्मठ विद्वान् पर भारत की गर्व है। □

हि० ग्रं० अ० प्रभाग ग्रन्थाङ्क : २५९

Lekhan Kala ka Itihās
लेखन कला का इतिहास
Vol. I
(प्रथम खण्ड)

लेखक
ईश्वर चन्द्र राहो



उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान

(हिन्दी ग्रन्थ अकादमी प्रभाग)

राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन हिन्दी भवन

महात्मा गांधी मार्ग, लखनऊ—२२६००१

Uttar Pradesh Hindi
Sansthan,
Lucknow

प्रकाशक

बिनोद चन्द्र पाण्डेय

निदेशक,

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान,

लखनऊ

विधा एवं समाज कल्याण मंत्रालय,

भारत सरकार की विश्वविद्यालयस्तरीय ग्रन्थ योजना के अन्तर्गत,

हिन्दी ग्रन्थ अकादमी प्रभाग, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा प्रकाशित ।

पुनरोक्त

प्रोफेसर डॉ० लल्लन जी गोपाल

विभागाध्यक्ष : प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं

पुरातत्त्व विभाग, कला संकाय,

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,

वाराणसी ।



H
001.552
R 129.1L

© उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान

प्रथम संस्करण : १९८३ 1983

प्रतियाँ : २२००

मूल्य : १०७ रुपये (एक सौ सात रुपये)



मुद्रक

जीवन शिक्षा मुद्रणालय (प्रा०) लि०

गोलघर, वाराणसी

प्रस्तावना

शिक्षा-आयोग (१९६४-६६) की संस्तुतियों के आधार पर भारत सरकार ने १९६८ में शिक्षा सम्बन्धी अपनी राष्ट्रीय नीति घोषित की और १८ जनवरी, १९६८ को संसद के दोनों सदनों द्वारा इस सम्बन्ध में एक सङ्कल्प पारित किया गया। उक्त सङ्कल्प के अनुपालन में भारत सरकार के शिक्षा एवं युवक सेवा मंत्रालय ने भारतीय भाषाओं के माध्यम से शिक्षण की व्यवस्था करने के लिए विश्वविद्यालयस्तरीय पाठ्यपुस्तकों के निर्माण का एक व्यवस्थित कार्यक्रम निश्चित किया। उस कार्यक्रम के अन्तर्गत भारत सरकार की शत-प्रतिशत सहायता से प्रत्येक राज्य में एक ग्रन्थ अकादमी की स्थापना की गयी। इस राज्य में भी विश्वविद्यालय स्तर की प्रामाणिक पाठ्य-पुस्तकें तैयार करने के लिए हिन्दी ग्रन्थ अकादमी की स्थापना ७ जनवरी, १९७० को की गयी।

प्रामाणिक ग्रन्थ-निर्माण की योजना के अन्तर्गत यह अकादमी विश्वविद्यालय स्तरीय विदेशी भाषाओं की पाठ्यपुस्तकों को हिन्दी में अनूदित करा रही है और अनेक विषयों में मौलिक पुस्तकों की भी रचना करा रही है। प्रकाश्य ग्रन्थों में भारत सरकार द्वारा स्वीकृत पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग किया जा रहा है।

उपर्युक्त योजना के अन्तर्गत वे पाण्डुलिपियाँ भी अकादमी द्वारा मुद्रित करायी जा रही हैं जो भारत-सरकार की मानक-ग्रन्थ योजना के अन्तर्गत इस राज्य में स्थापित विभिन्न अधिकरणों द्वारा तैयार की गयी थी।

प्रस्तुत पुस्तक इसी योजना के अन्तर्गत मुद्रित एवं प्रकाशित करायी गयी है। इसके लेखक श्री ईश्वर चन्द्र राही हैं। इसका पुनरीक्षण प्रो० डॉ० लल्लन जी गोपाल ने किया है। इन दोनों विद्वानों के इस बहुमूल्य सहयोग के लिए उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान उनके प्रति आभारी है।

श्री राही जी द्वारा प्रस्तुत 'लेखन कला का इतिहास' उनके विशद अध्ययन और अध्यवसाय का परिचायक है। उसमें उन्होंने समस्त विश्व की भाषाओं के उद्गम, लिपियों के आविष्कार और इतिहास के बदलते हुए चरणों का विकासक्रम दिखाते हुए प्रत्येक प्राचीन देश के मूल स्वरूप, उसकी जातिगत विशेषता तथा आधुनिक उपलब्धियों का वैज्ञानिक विश्लेषण भी प्रस्तुत किया है। लिपियों के उद्भव एवं विकास का निरूपण करते हुए प्राचीन मानक चित्रों द्वारा सम्यता और संस्कृति के विकास में मानवजाति के सामूहिक योगदान का भी समुचित उल्लेख है। इस प्रकार भाषा, लिपि, पुरातत्त्व, काल निर्धारण और प्राचीन इतिहास के आधार पर सिन्धु-घाटी, दक्षिण एशियाई देशों, पश्चिम एशियाई देशों तथा मध्य व पूर्वी एशियाई देशों को लेखन कला के विकास के साथ-साथ नृविज्ञान के आधार पर समस्त मानवता का इतिहास भी रेखांकित किया गया है। राही जी ने ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न भण्डारों का आकलन कर विश्व मानक की जिज्ञासाओं के सहज विकास को वर्तमान दुर्धर्ष तकनीकी युग तक की मंगल यात्रा के रूप में निरूपित किया है। जहाँ तक मैं जानता हूँ भारतीय भाषाओं में यह अपने ढंग का अनन्य प्रयास है, निश्चित ही राही जी के इस ग्रन्थ के प्रकाशन से हिन्दी संस्थान गौरवान्वित हो सकेगा। वे हम सबके साधुवाद के पात्र हैं।

शिवमंगल सिंह 'सुमन'

उपाध्यक्ष

उ० प्र० हिन्दी संस्थान,

लखनऊ

प्राक्कथन

मानव सभ्यता और संस्कृति के इतिहास में अनेक क्रान्तिकारी परिवर्तन समय-समय पर प्रस्फुटित हुए हैं। मानव समाज को नयी दिशा देनेवाले आविष्कारों के सापेक्षिक महत्त्व का निर्धारण दुष्कर है, तथापि इनमें लेखन-कला की उपयोगिता किसी से कम नहीं है। मानव के अन्य जीवों पर प्राप्य श्रेष्ठता के सूचक गुणों और उपलब्धियों में भावों और विचारों को अंकित करने की उसकी क्षमता विशिष्ट है। इसके कारण मानव के लिए यह सम्भव हो सका है कि वह ज्ञान का सर्जन, संरक्षण, संवर्धन और सातत्य बनाये रखे। वह अपने अनुभवों, विचारों और कल्पनाओं को भी मूर्त और स्थायी रूप दे सकता है।

लेखन कला के आविष्कार, उसमें सुधार और विकास की कथा अत्यन्त रोचक है। उससे कुछ कम रोमांचक नहीं है इन आविष्कारों की कथा और अनेक भूली-बिसरी लिपियों को पहचानने और समझने का आधुनिक विद्वानों का प्रयास। लेखन कला का इतिहास इतना विस्तृत है और तथ्यों की इतनी अधिकता है कि उनका विविध अध्ययन और समुचित प्रस्तुतीकरण सरल नहीं है। इस क्षेत्र में श्री ईश्वरचन्द्र राही का प्रयास स्तुत्य है। अर्थाभाव के होते हुए भी उन्होंने दीर्घकालीन अध्ययन के द्वारा एक कठिन कार्य को सम्पादित किया है। मुझे स्वयं पता है कि किस प्रकार अनेक देशों की यात्रा करके, अनेक पुस्तकालयों में अध्ययन करके और विशिष्ट विद्वानों से परामर्श करके उन्होंने प्रस्तुत पुस्तक का प्रणयन किया है। इस पुस्तक की रचना की अपनी एक रोचक कथा है जो किसी भी नैष्ठिक, कर्मठ और जिज्ञासु व्यक्ति के लिए प्रेरणा एवं स्फूर्ति का स्रोत सिद्ध होगी।

मुझे हर्ष है कि इस पुस्तक को प्रस्तुत करने का संयोग मुझे प्राप्त हुआ है। मैंने इस पुस्तक का औपचारिक पुनरीक्षण भी किया है। हिन्दी ही नहीं अन्य किसी भाषा में इससे तुलनीय उद्देश्य, विस्तार और शैली के ग्रन्थ विरल हैं। मानव की सांस्कृतिक विरासत को समझने में सहायक यह पुस्तक विभिन्न समाजों में परस्पर सहयोग और आदान-प्रदान की प्रक्रिया स्पष्ट करके समता और सद्भावना के विचारों और प्रयासों को बल देगी।

श्री राही को उनके इस बहुमूल्य योगदान के लिए साधुवाद देते हुए मैं सरस्वती से मेरी प्रार्थना है कि उनको स्थायी यश का भागी बनाये।

संकाय प्रमुख, कला संकाय,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,
वाराणसी - २२१००५

प्रो० लल्लन जी गोपाल
एम० ए०, डी० फिल (इलाहाबाद),
पी एच० डी० (छन्दन),
विद्या चक्रवर्ती (मानद)

दो शब्द

जब मैं सन् १९२८ में ८ वर्ष की आयु में सर्वप्रथम एक सायकिल - विश्व - यात्री के संपर्क में आया तो मनरूपी कक्ष के एक कोने में यात्रा करने की प्रेरणा का बीजारोपण हो गया। चैतन्यता तथा उत्सुकता के खाद एवं पानी देने से वह बीज अंकुरित होकर बढ़ता रहा। २ जून १९३८ को वही बीज एक फल के रूप में परिवर्तित हो गया, जब मैंने अपनी प्रथम सायकिल-यात्रा दिल्ली से पंजाब की ओर इस आशय से आरम्भ कर दी कि मैं एक ऐतिहासिक खैबर दर्रे को पार करके विदेश चला जाऊँगा। परन्तु अंग्रेजी राज्याधिकारियों ने मुझे अनुमति नहीं दी और मैं अपने देश 'अखण्ड भारत' को जानने व समझने में लग गया।

भारत के सुदूर पश्चिमी, दक्षिणी, पूर्वी तथा उत्तरी पर्वतीय भागों की यात्रा में मेरा ध्यान एक मुख्य समस्या की ओर आकर्षित हुआ और वह समस्या थी भाषा की अर्थात् बोली व लिपि की। अंग्रेजी राज्य में अंग्रेजी भाषा द्वारा अहिन्दी भाषा-भाषियों से विचार-विनिमय का कार्य चलता रहा, परन्तु समस्या, समस्या ही बनी रही और मन में कुलबुलाती रही। न समस्या का पूर्ण रूप और न उसके किसी निदान का रूप मस्तिष्क में आ सका।

भारत की स्वतंत्रता के पश्चात् राजनैतिक, सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक समस्याएँ कुछ आंशिक रूप में सुलझने लगीं और विद्वानों का ध्यान भारत की राष्ट्रभाषा के निर्माण एवं एकता की ओर अग्रसर होने लगा तो मेरे मन की वह कुलबुलानेवाली समस्या भी अपने स्थूल रूप में प्रकट होने लगी और मैंने सन् १९५८-६० में पुनः सायकिल - यात्रा आरम्भ कर दी। अब मैं ३८ वर्ष का एक विकसित मानव बन चुका था, विचारों में भी परिपक्वता आ चुकी थी। इसके अतिरिक्त भी मैं बम्बई में सन् १९५२ - ५४ तक केन्द्रीय सरकार की ओर से विदेशी यात्रियों के लिए एक पथ-प्रदर्शक भी रह चुका था, जिसने उसी कुलबुलाती समस्या को अत्यधिक प्रज्वलित कर दिया था।

दूसरी बार की सायकिल - यात्रा ने भाषा एवं लिपि की समस्या पर मुझे कुछ गहरी दृष्टि से सोचने एवं समझने का अवसर प्रदान किया। एक प्रश्न, जिसका जन्म तो हो चुका था, परन्तु उसका स्पष्ट रूप सामने नहीं आया था, सदैव उठता रहा कि जब भारत की मुख्य १५-१६ भाषाएँ - बोली व लिपि और उनकी लगभग २६५ बोलियों के रूप में शाखाएँ हैं, जिनका एकीकरण असम्भव सा प्रतीत होता है तो विश्व की भाषाओं का एकीकरण तो एक यूटोपियन विचार होगा।

अपने इसी सायकिल - यात्रा - काल में मैंने एक पुरातत्त्व-सम्बन्धी पुस्तक के लिए हैदराबाद में प्रान्तीय सरकार के पुरातत्त्व विभाग के तात्कालिक निदेशक श्री मोहम्मद अब्दुल वहीद से भेंट की और उनसे कुछ चर्चा राष्ट्रभाषा

हिन्दी व उसकी देवनागरी लिपि के सम्बन्ध में हुई तब उन्होंने कुछ प्राचीन लिपियों के अभिलेख दिखाये तथा उनकी एकता पर कुछ प्रकाश डाला। अब क्या था, अन्धे को दो आँखें मिल गयीं, अँधेरी राह पर चलने के लिए एक कभी न बुझनेवाला दीप मिल गया और कुछ अध्ययन के पश्चात् यह भी पता लग गया कि भारत की समस्त लिपियों का एक ही स्रोत ब्राह्मी है। उसी की खोज में लग गया और अध्ययन की सही दिशा में अग्रसर होने लगा।

जब एक देश में भाषाओं एवं लिपियों की समस्या है तो विश्व में कितनी समस्या होगी? क्या भारत की लिपि देवनागरी का सम्बन्ध विदेशों की लिपियों से है या हो सकता है? क्या भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी — देवनागरी विश्व-भारती के पथ पर अग्रसर हो सकती है? क्या एक भारतीय अपनी राष्ट्रभाषा के द्वारा विश्व की अन्य भाषाएँ सीख सकता है? क्या भारत की तरह विश्व की अन्य लिपियों का स्रोत भी एक है? ऐसे प्रश्नों ने मुझे न केवल विश्व की लिपियों के अध्ययन करने की प्रेरणा प्रदान की, अपितु भिन्न-भिन्न देशों की लिपियों के जन्म व विकास के विषय में शोध करने के लिए विश्व की सायकिल — यात्रा करने के लिए भी प्रेरित किया, जिसके फलस्वरूप मैं १९७४ में ५८ वर्ष की आयु में अपनी सायकिल — यात्रा पर निकल पड़ा और ३५ देशों की यात्रा दो वर्ष में पूरी कर ली। इस यात्रा के पूर्व ही मैंने इस विषय का पर्याप्त ज्ञान प्राप्त कर लिया था और उसको चार पुस्तिकाएँ तथा एक बृहद् ग्रन्थ लिखकर एक रूप भी दे चुका था। इस विश्व — सायकिल — यात्रा में मैंने अनेक पुरातत्त्व — विभागाध्यक्षों से भेंट करके इस विषय पर विचार-विमर्श किया। इस विषय की ऐसी अनेक पुस्तकों व ग्रन्थों का अवलोकन किया जिनका भारत में उपलब्ध होना असम्भव था। स्वीडन तथा जर्मनी में मैंने स्वयं चार्टर्स बनाकर भारत तथा अन्य मुख्य देशों के वर्णों की प्रदर्शनियाँ कीं तथा भाषण दिये। इन कार्यों से मेरे ज्ञान का विस्तार हुआ तथा भारत की देवनागरी लिपि की सरलता का प्रचार हुआ तथा अनेक पाश्चात्य देशवासियों को लिपियों के तुलनात्मक अध्ययन करने का अवसर मिला।

इस पुस्तक में आदिकाल अर्थात् ५००० वर्ष पूर्व से वर्तमान काल तक की लगभग सभी लिपियों के जन्म व विकास की तथा अन्य लिपियों से उनके सम्बन्ध की, विस्तार से प्रमाणों सहित चर्चा की गयी है। जहाँ — जहाँ से प्राचीन लिपियाँ उत्खनन द्वारा निकाली गयीं, वे भिन्न-भिन्न देशों के सारे स्थान मानचित्रों में दिये गये हैं। साथ साथ उन लिपियों का काल एवं देश का — प्राचीन से अर्वाचीन तक का — इतिहास, प्राचीन मानव का लिपियों के विकास में योगदान का रूप तथा अर्वाचीन मानव का उनको पढ़ने का प्रयास, प्रमाण सहित इस पुस्तक में दिया गया है।

सम्भवतः हिन्दी भाषा एवं उसकी देवनागरी लिपि के माध्यम से विश्व की समस्त लिपियों की ध्वनियों को तथा उनके वर्णों को लिपिबद्ध करने का मेरे द्वारा यह प्रथम प्रयास होगा। वैसे तो इसके पूर्व भी एक पुस्तक उर्दू भाषा में विश्व की लिपियों पर श्री मोहम्मद ईशाक सिद्दीकी द्वारा लिखी जा चुकी थी। यह प्रयास एक अन्त नहीं, अपितु इस बात का श्रीगणेश है कि हिन्दी को विश्व-भारती बनाना है तो उसके बुनियाद की भाषा और लिपियों को विश्व की भाषा की दृष्टि से अन्वेषण-ग्रंथ तैयार करने होंगे। भाषा से भी पहले लिपि को महत्त्व देना होगा। इस दृष्टि से भी यह हिन्दी या भारतीय भाषा में प्रथम पुस्तक होगी, ऐसी मेरी धारणा है।

अन्त में मैं उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के उपाध्यक्ष डॉ० शिवमंगल सिंह 'सुमन' जी का अत्यन्त आभारी हूँ, जिन्होंने अपने व्यक्तिगत प्रयास से इस ग्रन्थ व अनोखे ग्रंथ को, प्रकाशित करने का भार वहन किया। मैं आंध्र प्रदेश के पुरातत्व-विभाग के भूतपूर्व निदेशक श्री मोहम्मद अब्दुल वहीद खाँ का भी आभारी हूँ, जिन्होंने इस विषय के अध्ययन की ओर मेरा ध्यान आकर्षित किया तथा मैं विश्व के सभी पुरातत्व-वेत्ताओं का, प्राचीन एवं अर्वाचीन इतिहासकारों का और सभी लिपि-सम्बद्ध शोधकर्ताओं का, लेखकों का, लिपियों के रहस्योद्घाटनकर्ताओं का तथा उत्खननकर्ताओं का अत्यन्त आभारी हूँ, जिनके अथक परिश्रम के परिणामों द्वारा मैं इस ग्रन्थ को पूरा कर सका। इससे भी अधिक मुझे आभारी होना चाहिए और आभारी हूँ, जीवन शिक्षा मुद्रणालय (प्रा०) लि०, वाराणसी के श्री तरुण भाई का, जिनके प्रयास के फलस्वरूप यह ग्रन्थ मुद्रित हो सका। इसके अतिरिक्त भी इस विषय के विद्वानों स्व० श्री सी० शिवराममूर्ति, डॉ० लल्लन जी गोपाल, डॉ० गोवर्धन राय शर्मा, डॉ० रमेशचन्द्र शर्मा, स्व० डॉ० राजवली पाण्डेय आदि का भी आभारी हूँ जिन्होंने समय-समय पर मेरा मार्गदर्शन किया है तथा अपने व्यक्तिगत सहयोग से प्रेरित करते रहे। मैं विश्व के अनेक मुख्य पुस्तकालयाध्यक्षों का तथा उन सभी व्यक्तियों का आभारी हूँ, जिन्होंने इस ग्रन्थ के लेखन तथा प्रकाशन में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया है।

इस बृहद् ग्रन्थ के प्रकाशन में समस्त विश्व की लिपियों के वर्ण, उनकी ध्वनियाँ, अभिलेखों के प्रतिदर्श आदि का यथासंभव प्रामाणिक एवं शुद्ध रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इसके मुद्रण में यदि कुछ अशुद्धियाँ एवं त्रुटियाँ रह गयी हों तो मैं पाठकगणों से क्षमा चाहूँगा तथा भविष्य में ग्रन्थ को त्रुटिरहित बनाने के लिए उनके बहुमूल्य सुझाव एवं विचारों का स्वागत करूँगा।

श्याम निवास,
बाग़ शेरजंग,
लखनऊ—२२६००३

ईश्वरचन्द्र राही

संकेताक्षर

A. S. I.	Archaeological Survey of India.
C. I. I.	Corpus Inscriptionum Indicarum.
C. I. V.	Civilization of Indus Valley.
E. I.	Epigraphica Indica.
E. R.	Epigraphic Researches.
F. E. M.	Further Excavation by Mackay.
I. A.	Indian Antiquary.
I. M. D.	Indus-Valley – Mohenjo-Daro.
I. M. P.	Inscriptions of Madras Presidency.
J.	Journal.
J. I. A. S.	Journal of Indian Asiatic Society.
J. A. S. B.	Journal of Asiatic Society.
J. R. A. S.	Journal of Royal Asiatic Society.
L. S. I.	Linguistic Survey of India of Bengal.
M. D.	Mohenjo-Daro.
M. E. H.	Mackay's Excavation at Harappa.
M. I. C.	Marshall's Indus Civilization.
N. Y.	New York.
P.	Page.
Pl.	Plate.
P. U. B.	Published.
S. I. I.	South-Indian Inscriptions.
Vol.	Volume.

आ०; आधु०	—	आधुनिक
ई०	—	ईसवी
ई० पू०	—	ईसा पूर्व
ई० स०	—	ईसवी सन्
फ० सं०	—	फलक संख्या
तृ०	—	तृतीय
श०	—	शताब्दी

प्रयुक्त शब्दों के विविध रूप

अमेरिका	:	अमरीका	ब्राह्मी	:	ब्राह्मो
अर्साकिड	:	अर्सासिड	बैजेन्टाइन	:	बैजेन्टीन
अशुरबनीपाल	:	अशुरबनीपाल	भिन्न	:	भिन्न
इङ्गलैण्ड	:	इंगलैण्ड	मिट्टी	:	मिट्टी
उद्देश्य	:	उद्देश्य	मिन्न	:	मिस्र
उद्भव	:	उद्भव	मैथ्यु	:	मैथिउ
कम्बोडिया	:	कम्पूचिया	युद्ध	:	युद्ध
केल्ट	:	सेल्ट	युरोप	:	यूरोप, यूरोप
कन्द्रा	:	कन्दरा	व्यञ्जन	:	व्यंजन
क्रम	:	कूम	लिये	:	लिए
खेमर	:	खेमिर	संभव	:	सम्भव
गई	:	गयी	संबन्ध	:	सम्बन्ध
म्यान	:	ज्ञान	सेमेटिक	:	सेमिटिक
गेल्व	:	जेल्व	हण्टर	:	हन्टर
चित्र	:	चित्त	हेरोग्लिफ्स	:	हेरोग्लिफ्स
चिन्ह	:	चिह्न	हेरेटिक	:	हेरैटिक
चिन्तन	:	चितन	हैड्रामोत	:	हैड्रमउत
जिह्वा	:	जिह्वा	होञनी	:	हूरोञ्नी
दायें	:	दाएँ	ख	:	ख
टियूनिस	:	ट्युनिस	झ	:	झ
डञ्छ	:	डच	ण	:	रा
पियू	:	प्यू	१	:	१
पश्चात्	:	पश्चात्	४	:	४
फ्रीजिया	:	फ्रीगिया	५	:	५
फ्रांस	:	फ्रांस	८	:	८
बायें	:	बाएँ	६	:	९

कुछ विशेष संयुक्ताक्षर

ळ	=	ल	+	ड़	तमिळ
सं	=	स	+	म	संभव
क्ष	=	क	+	श	कक्षा
ज्ञ	=	ग	+	य	ज्ञान
श्री	=	श	+	री	श्रीमान्
स्र	=	स	+	र	मिस्र
प्र	=	त	+	र	मित्रता
स्य	=	स	+	य	राजस्य
अं	=	अ	+	न्	अंक
ह्ला	=	व	+	ह	जिह्वा
ह्ल	=	न	+	ह	चिह्न
हृ	=	हृ	+	र	हृदय
न्ध्र	=	न	+	ध्र + र	आन्ध्र
त्त	=	त	+	त	दत्त
क्य	=	क	+	य	चालुक्य
क्त (क्त)	=	क	+	त	शक्ति (शक्ति)
ण्ड	=	ण	+	ड	पाण्डेय
कृ	=	क	+	रि	कृपा
ण्ण	=	प	+	ण	कृष्णा
प्र	=	प	+	र	प्रपात
द्व	=	द	+	व	द्वार
श्व	=	श	+	व	ईश्वर
न्द	=	न	+	द	नन्द
र्म	=	र	+	म	कर्म
म्ब	=	म	+	व	सम्बन्ध
क्रम	=	क	+	र	क्रम
स्य	=	स	+	य	संख्या
कष्ट	=	क	+	ट	कष्ट

अनुक्रम

क्या

कहाँ

प्रारम्भिक :

प्रस्तावना	V
प्राक्कथन	VII
दो शब्द	IX
संकेताक्षर	XIII
प्रयुक्त शब्दों के विविध रूप	XIV
कुछ विशेष संयुक्ताक्षर	XV
पृष्ठबोधिनी	XVII
लिपियों के फलों (Plates) की तालिका	XXV
मानचित्रों की तालिका	XXXI

पृष्ठबोधिनी

अध्याय : १

विषय प्रवेश -

परिचय :

भाषा : भाषा की परिभाषा; शब्द व वाक्य; भाषा की उत्पत्ति; भाषा का प्रसार; बोली और भाषा; भाषा में स्वर व व्यंजन; संसार की भाषाओं में अन्तर; पठनीय सामग्री	३
लिपि : लिपि की उपयोगिता; लिपि की काल्पनिक उत्पत्ति; लिपि की प्रामाणिक उत्पत्ति; लिपियों का वर्गीकरण; अक्षरात्मक लिपि; वर्णात्मक लिपि; रेखाक्षरात्मक लिपि; लिपि का कौटुम्बिक वर्गीकरण; पठनीय सामग्री	७
पुरातत्त्व : पठनीय सामग्री	१७
काबन - १४ द्वारा काल निर्धारण	१६
प्राचीन इतिहास	२१
	२२

अध्याय : २

दक्षिण एशियाई देशों की लेखन कला का इतिहास—

सिन्धु घाटी : ऐतिहासिक घटना; इतिहास; लिपि; एल० ए० बर्टेल; प्रो० विलियम मैथ्यू फिलिप्स प्रेटी; डा० जी० आर० ह्यूटर; फ्रादर यच० हेरास; मुधांशु कुमार रे; डा० प्राणनाथ विशालकार; श्री राजमोहन नाथ; स्वामी शंकरानन्द; हर पी० मेरिंगो; एस्को परपोला, सीमो परपोला आदि; डा० फ्रेड्रिह सिंह; श्री एस० आर० राव; श्री एम० बी० कृष्ण राव; श्री० एल० एस० वाकणकर; डब्लोकर; श्री बांके बिहारी चक्रवर्ती; श्री जॉन न्यूबेरी; शंकर हाजरा; होवनी द्वारा रहस्योद्घाटन; रूसी विद्वानों द्वारा रहस्योद्घाटन; पशुपति - मुद्रा के विविध स्पष्टीकरण; मुमर की मुद्रा; अभिलेखों तथा मुद्राओं का विवरण; सिन्धु - घाटी के विषय में कुछ अन्य बातें; पठनीय सामग्री

७५

भारत का इतिहास : परिचय; क्रान्ति युग; मौर्य वंश; शुंग वंश; काण्व वंश; आन्ध्र सातवाहन वंश; शक वंश; पल्लव वंश; कुषाण वंश गुप्त; मौर्य वंश; गुर्जर वंश; गुहिलोत वंश; मौखिरि वंश; वर्धन वंश; उत्तर भारत के राजपूत वंश; दक्षिण भारत के वंश; मुसलमानों का आगमन; मरहटों का उत्थान; सिक्ख; विदेशियों का आगमन; पठनीय सामग्री

६४

भारत की लिपियाँ : ब्राह्मी लिपि के गूढ़ाक्षरों का रहस्योद्घाटन; खरोष्ठी लिपि; खरोष्ठी लिपि - दूसरी शताब्दी; विवादास्पद काल की प्राचीन ब्राह्मी; उत्तरी ब्राह्मी - ई० पू० तीसरी श०; उत्तरी ब्राह्मी - दूसरी श० (क्षत्रप); उत्तरी ब्राह्मी - दूसरी श० (कुषाण); उत्तरी ब्राह्मी - चौथी श० (गुप्त लिपि); दक्षिणी ब्राह्मी - ई० पू० दूसरी श०; दक्षिणी ब्राह्मी - दूसरी श०; दक्षिणी ब्राह्मी - तीसरी श०; दक्षिणी ब्राह्मी - चौथी श०; दक्षिणी ब्राह्मी - पांचवीं श०; कुटिल लिपि; तमिल लिपि; तमिल लिपि - सातवीं श०; तमिल लिपि का विकास; वट्टेलुत्तु लिपि; ग्रन्थ लिपि - सातवीं श०; ग्रन्थ लिपि - तेरहवीं श०; ग्रन्थ लिपि का विकास; पश्चिमी लिपि - छठी श०; कन्नड़ लिपि - छठी श०; कन्नड़ लिपि का विकास; तेलुगु लिपि; तेलुगु लिपि का विकास; बंगला लिपि बारहवीं श०; कामरूप की बंगला लिपि; बंगला लिपि का विकास; उड़िया लिपि - ग्यारहवीं श०, गंगवंश; उड़िया लिपि पन्द्रहवीं श०; धारदा लिपि का विकास; मौड़ी लिपि; उत्तर - पूर्व की मध्यकालीन लिपियाँ (मैथिल, तिरहुतिया, भोजपुरी, मागधी, कैथी, अहोम, खाम्ती, मेई - येई); उत्तर - पश्चिम की मध्य - कालीन लिपियाँ

(उर्दू, अरबी - सिन्धी, बनियाकर, हिन्दी - सिन्धी, टाकरी, लाण्डा, गुरमुखी) कुछ आधुनिक लिपियाँ (मलयालम, तुलु, उड़िया, गुजराती); देवनागरी लिपि (देवनागरी का जन्म, देवनागरी नामकरण के विविध कारण, देवनागरी लिपि की कुछ विशेषतायें, देवनागरी लिपि के कुछ दोष; देवनागरी ग्यारहवीं श०; देवनागरी बारहवीं श०; देव - नागरी का विकास; देवनागरी में संशोधन (स्वामी सत्य भक्त द्वारा, श्री श्रवण कुमार द्वारा, रामनिवास द्वारा, हिन्दी - साहित्य - सम्मेलन द्वारा, श्री बी० बी० लाल द्वारा, कुछ अन्य सुधारकों द्वारा, शासकीय सुधार); देवनागरी - ब्रैल - लिपि; देवनागरी - आशु - लिपि; अंक; पठनीय सामग्री	२०३
नेपाल : इतिहास; लेखन कला (किरात - लिपि, रंजना - लिपि, भुजिमोल; नेवारी - लिपि); संयुक्त वर्ण (किरात, रंजना, भुजिमोल); पठनीय सामग्री	२०६
सिक्किम : इतिहास; लिपि; पठनीय सामग्री	२१५
श्री लंका : इतिहास; लिपि; पठनीय सामग्री	२२०
माल्डीव द्वीप - समूह : इतिहास; लिपियों का जन्म (देवेही लिपि, जवालीटूरा); पठनीय सामग्री	२२२

अध्याय : ३

पश्चिमी एशियाई देशों की लेखन कला का इतिहास -

मेसोपोटामिया - १ : इतिहास; पठनीय सामग्री	२३४
मेसोपोटामिया - २ : लेखन कला (सुमेर की रेखा - चित्रात्मक लिपि, सुमेर के अन्य रेखा - चित्र, उत्खनन तथा रहस्योद्घाटन, हम्मुराबी का प्रसिद्ध शिलालेख, असीरियन लिपि के व्यंजन व स्वर, असीरियन लिपि के कुछ निर्धारक शब्द, प्राचीन तथा नव - बेबिलोनी लिपि, कीलाकार लिपि का कालानुसार परिवर्तन, सुमेर की संख्या पद्धति, असीरिया की संख्या पद्धति); पठनीय सामग्री	२४६
पर्शिया (ईरान) : इतिहास; पठनीय सामग्री	२५४
पर्शिया की लेखन कला : आरम्भिक काल; कीलाकार लिपि का रहस्योद्घाटन; अक्कादियन भाषा का रहस्योद्घाटन; बहु - ध्वनीय चिह्न; भावात्मक, निर्धारक, अक्षरात्मक चिह्न, बेहिस्तून शिलालेख का आंशिक पाठ; बेहिस्तून शिलालेख का सूसियन पाठ; बेहिस्तून शिलालेख का बेबिलोनी पाठ; पहलवी लिपि (अरसाकिड पहलवी, ससानिड लिपि, ससानिड ग्रन्थ लिपि) अवेस्त; पठनीय सामग्री	२८६

- फ़िनीशिया :** इतिहास; लेखन कला (बिबलास; बिबलास के वर्ण तथा उनके रूप भेद; मोआब की लिपि; मध्य काल की फ़िनीशियन लिपि; प्यूनिक लिपि; कनआन की लिपि) ३०८
- युगारिट :** इतिहास; लिपि तथा रहस्योद्घाटन; पठनीय सामग्री ३०८
- हत्तुशा :** इतिहास; हित्ती लिपि का रहस्योद्घाटन; चार देशों की चित्रात्मक लिपियों की तुलना; पठनीय सामग्री ३२४
- इस्त्रायल :** इतिहास; इस्त्रायल की लिपियाँ (हेब्रू - प्राचीन, आधुनिक); समारिया की लिपियाँ (शिलालेख, वाइबिल, शोध - लेखन); पठनीय सामग्री ३३४
- सोरिया :** इतिहास; सूरिया की लिपियाँ (अरमायक लिपि, पालमीरा लिपि, अरमायक लिपि की विशिष्ट शाखा, ज़ेबेद लिपि, ऐस्ट्रेंजलो लिपि, नेस्टोरियन लिपि, जैकोबाइट लिपि - १ व २, सोरिया की कर्शुनी या मालाबारी लिपि) ३४३
- फ़ीजिया :** इतिहास; लिपि ३४३
- लीकिया :** इतिहास; लेखन कला; लीकिया का एक द्विभाषिक अभिलेख ३४६
- लीडिया :** इतिहास; लिपि ३५१
- कैरिया :** इतिहास; लिपि; सिडेटिक भाषा (परिचय, लिपि, रहस्योद्घाटन); यज़ीदी लिपि (इतिहास, लिपि); पठनीय सामग्री ३५८
- अरेबिया :** इतिहास (मोनियन राज्य, सैबियन राज्य, हिमारी राज्य, होरा राज्य, इस्लाम राज्य); अरेबिया की लिपियाँ (नब्ती, थामुडिक - हेजाज, नज्द, मण्डायक लिपि, सफ़ातनी लिपि, सफ़ातनी का प्रतिदर्श, लिहियानिक); सिनाइ की लिपियाँ - परिचय; सिनाइ की प्राचीन लिपि; सिनाइ की अरबी लिपि; सबा की लिपि; अरबी लिपि की अन्य शाखाएँ (ज़ेबेद लिपि, कूफ़ा की लिपि, मगरिबी, नस्ख) नस्ख लिपि का विकास; अरबी लिपि के विषय में कुछ अन्य बातें ३८५
- अरमेनिया :** इतिहास; अरमेनिया की लिपियाँ (बोलर - अजिर, मुद्रणार्थ - हस्तलेखनार्थ) ३८७
- जॉर्जिया :** इतिहास; जॉर्जिया की लिपियाँ (खुतसुरी, मेहदूली); पठनीय सामग्री ३९३

अध्याय : ४

मध्य व पूर्व एशियाई देशों की लेखन कला का इतिहास -

- तिब्बत :** इतिहास; तिब्बत की लिपियाँ (अ - चैन एवं अ - मेद लिपियाँ, पस्तेपा, बाल्टो लिपि, अ - चैन लिपि का प्रतिदर्श, अ - मेद लिपि का प्रतिदर्श); पठनीय सामग्री ४०८

चीन : इतिहास (शिया वंश, इन या शांग वंश, चाउ वंश, चीन वंश, हान वंश, मुई वंश, तांग वंश, पाँच वंश, सँग वंश, युआन वंश, मिंग वंश, मंचू वंश); चीन की लेखन कला परिचय, चीनी व्याकरण की एक झलक, चीन में साक्षरता, चीनी लिपि की विदेश यात्रा, चीनी लिपि का सुधार; चीन की लिपियाँ (वा गुआ, चीन की प्राचीन लिपि, चीनी लिपि का कालानुसार विकास, चीनी लिपि की ध्वनि - बल, चीनी लिपि के चार टोन, चीनी लिपि का वर्गीकरण - वस्तु चित्र, सांकेतिक चित्र, संयुक्त - सांकेतिक चित्र, क्रम द्वारा निर्मित चित्र, ध्वनि सूचक चित्र, ग्रहण किये हुये चित्र); सुलेख; चीनी लिपि की लेखन - पद्धति; लिपि का सरलीकरण, चीनी भाषा की ध्वनियाँ; इनीशियल्स की तालिका; फ़ाइनल्स की तालिका; चीनी लिपि की ध्वन्यात्मक पद्धति - १, २, ३; शाब्दिक चित्रों की लिखने की पद्धति; आठ मौलिक रेखाएँ; चीनी लिपि के अंक; चीन के दक्षिणी भाग की लोलो लिपि; म्याओ - त्से लिपि; मोसो लिपि; ची तान लिपि; पठनीय सामग्री ४५६

मध्य एशिया : मंगोलिया का इतिहास, मंगोलिया की लिपियाँ (उइगुरी लिपि, गालिक लिपि, मंगोल लिपि - १, २, कालमुक लिपि, बुरियात लिपि); मंचूरिया - इतिहास, लिपि; सोवियत - इतिहास, लिपि; साइबेरिया - इतिहास, साइबेरिया की लिपियाँ (यानिसी लिपि, ओरहून लिपि; मनीकी लिपि - इतिहास, लिपि); पठनीय सामग्री ४७९

कोरिया : इतिहास (सिल्ला राज्य, कोजुरियो राज्य, पैक्ची राज्य); कोरिया की लेखन कला (पुमसो लिपि, ओनमुन लिपि) पठनीय सामग्री ४८६

जापान : इतिहास; लेखन कला (दैवी लिपि कताकाना लिपि, हीरागाना लिपि, जापान की लेखन पद्धति, चीनी, कायशू लिपि से जापानी वर्णों का विकास, जापानी अक्षर विन्यास, जापानी लिपि के कुछ उदाहरण); पठनीय सामग्री ५०४

अध्याय : ५

दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों की लेखन कला का इतिहास -

ब्रह्मा : इतिहास (पागन वंश, शान वंश, तुंगू वंश, अलंग पाया वंश); लेखन कला (चतुष्कोण पाली, सुलेख पाली, आधुनिक गोलाकार लिपि, पेगुअन लिपि, चकमा लिपि ५१४

थाईलैण्ड : इतिहास; लेखन कला (बोरोमात लिपि, पतीमोखा लिपि, प्राचीन थाई लिपि, आधुनिक लिपि) ५२३

लाओस : इतिहास; लेखन कला ५२५

कम्पूचिया : इतिहास; लेखन कला (मूल अक्षर, संशोधित लिपि, आधुनिक लिपि)	५२७
फ़िलिपाइन्स : इतिहास; लिपि (तगाला)	५२७
हिन्देशिया : इतिहास; लेखन कला	५३२
जावा : इतिहास; लिपि (कवि, जावा की दूसरी लिपि)	५३५
सुमात्रा : इतिहास; लिपि (रेदजांग, लम्पोंग)	५३७
सिलेबीस : इतिहास; लेखन कला (बुगनो मकासर); पठनीय सामग्री	५४२

अध्याय : ६

अफ्रीका महाद्वीप के देशों की लेखन कला का इतिहास -

मिस्र : इतिहास (प्रथम वंश, द्वितीय वंश, तृतीय वंश, चतुर्थ वंश, पाँचवाँ वंश, छठवाँ वंश, सातवाँ वंश, आठवाँ वंश, नवाँ वंश, दसवाँ वंश, ग्यारहवाँ वंश, बारहवाँ वंश, तेरहवाँ वंश, चौदहवाँ वंश, पन्द्रहवाँ वंश, सोलहवाँ वंश, सत्रहवाँ वंश, अठारहवाँ वंश, उन्नीसवाँ वंश, बीसवाँ वंश, इक्कीसवाँ वंश, बाईसवाँ वंश, तेइसवाँ वंश, चौबीसवाँ वंश, पच्चीसवाँ वंश, छब्बीसवाँ वंश, सत्ताइसवाँ वंश, अट्ठाइसवाँ वंश, उन्तीसवाँ वंश, तीसवाँ वंश, एकतीसवाँ वंश, ग्रीक वंश, मिस्र रोम के अन्तर्गत, मिस्र देश की लेखन कला) हेरोग्लिफ्स, उसका रहस्योद्घाटन, चित्रात्मक, संकेतात्मक, ध्वन्यात्मक, निर्धारित शब्द, एक - वर्णिक, द्वि - वर्णिक, त्रि - वर्णिक, हेरेटिक, लिपि का विकास, एक चित्र दो ध्वनियाँ, दो चित्र एक ध्वनि, एक चित्र दो ध्वनियाँ, हेरोग्लिफ्स तथा हेरेटिक के प्रतिदर्श, हेरेटिक का विकास, हेरोग्लिफ्स एवं हेरेटिक के अभिलेख, डिमाटिक के वर्ण, प्रतिदर्श, काप्टिक लिपि, प्रतिदर्श मिरोइटिक, डिमाटिक एवं अभिलेख, अंक, हेरेटिक अंक

नुमीदिया : इतिहास, लिपि (नुमीदियन, बर्बर उनके आंशिक पाठ, तुर्तेनियन)	६०२
कैमेरून : इतिहास, लिपि (बामुन)	६०२
सोमाली लैण्ड : इतिहास, सोमाली लिपि	६०४
लिबेरिया : इतिहास, बई लिपि	६०७
सियरैलियोन : इतिहास, मेण्डे लिपि	६१३
नाइजेरिया : इतिहास, यनसिब्दी लिपि	६१७
अबोसोनिया : इतिहास, लिपि (प्राचीन)	६१७
इथियोपिया : इतिहास, लिपि	६२५

अध्याय : ७

यूरोपीय देशों की लेखन कला का इतिहास

सायप्रस : इतिहास, लेखन कला (सिप्रियाटिक लिपि का क्रेटन लिपि से सम्बन्ध, सिप्रियाटिक लिपि का अभिलेख)	६३२
ग्रीस : इतिहास, ग्रीक वर्णों का विकास	६४१
क्रोट व माइसीनिया : इतिहास (क्रोट, माइसीनिया); लेखन कला (पूर्वकालीन युग, मध्यकालीन युग, उत्तरकालीन युग, क्रोट की चित्रात्मक लिपि, माइसीनिया की वर्णावली, पाइलस की त्रिपद पाटिया, क्रोट की लाइनियर - 'ए', फेस्टास चक्रिका)	६५६
ग्रीस के नगर राज्य : कोरिथ - इतिहास; लिपि । ऐयेन्स - इतिहास; लिपि । बोयेशिया - इतिहास, लिपि । आकैडिया - इतिहास, लिपि । पटनीय सामग्री	६६६
इटली : नगर - राज्यों में विभाजित था उन्हीं का वर्णन निम्नलिखित है :—	
इटूरिया : इतिहास (हेरोडोटस के अनुसार, डायोनीसियस, एफ़० दि संसुरे, वी० थामसेन) एट्रस्कन लिपि	६७२
कम्पेनिया : इतिहास (कपुआ नगर, नोला, पोम्पेआई), लिपि (ओस्कन)	६७४
अम्ब्रिया : इतिहास, लिपि	६७५
फलेरीआई : इतिहास, लिपि (फेलिस्कन)	६७८
रेशिया : इतिहास, लिपि (बोल्जानो, माग्रे, सोन्ड्रियो)	६७८
उत्तरो इटली : लिपि (लुगानो, वेनेती, कांसे की पाटिया)	६८५
लैटियम : इतिहास, लिपि (लैटिन, मैनियस की कटार, वर्णों का विकास); पटनीय सामग्री	६८८
गोथिया : इतिहास (पूर्वी गोथ, पश्चिमी गोथ); लिपि (गोथिक)	६८४
बुल्गारिया : इतिहास (मोराविया का इतिहास); लिपियाँ (ग्लेगोलिथिक, प्राचीन सीरिलिक बुल्गारी सीरिलिक)	६८८
रूस : इतिहास; लिपि (सीरिलिक, सीरिलिक के कुछ शब्द); पटनीय सामग्री	७०६
आयरलैण्ड : इतिहास (आइबेरियन्स, ब्रिटन्स, ड्रूइस, नगर एवं जागीरों का निर्माण आदि); लिपियाँ (ओगम, रोमन लिपि)	७१४
हंगेरी : इतिहास, लिपि (प्राचीन लिपि, निकोल्स नर्ग लिपि)	७२०
जर्मनी : इतिहास; लिपि (रून)	७२३

नार्वे-स्वीडन-डेनमार्क : इतिहास (नार्वे, स्वीडन, डेनमार्क), लिपियाँ (तीन देशों की रूनी लिपि; विन्दी वाले रून, दत्सका रून)	७२६
प्राचीन इंगलैण्ड : इतिहास (ऐंगिल, सैक्सन); लिपि (ऐंग्लो-सैक्सन रून, अभिलेख, बार्डी लिपि)	७३३
रुमानिया : इतिहास; लिपि	७३६
अल्बेनिया : इतिहास; लिपि; पठनीय सामग्री	७३७

अध्याय : ८

अमरीकी देशों की लेखन कला का इतिहास -

मैक्सिको : इतिहास ; लेखन कला (अज़टेक-पंचांग, अज़टेक-अंक, अज़टेक चित्र-लिपि, अज़टेक के अन्य चित्र, विश्वोत्पत्ति की कहानी, एक रेडइण्डियन की कहानी)	७४८
युकेटान : इतिहास; लिपि (मय चित्र लिपि के वर्ण - लान्दा द्वारा, अंक, मय का पंचांग)	७५३
अलघेनी : इतिहास; चैरोकी लिपि	७५५
मैनीटोबा : इतिहास; क्री लिपि	७५५
एलास्का : इतिहास; लिपि (एलास्का की लिपि, मोटजेबू क्षेत्र की चित्र लिपि)	७६१
ईस्टर द्वीप : इतिहास; लिपि	७६२
कुछ अन्य लिपियाँ : आशु लिपि; ब्रेल लिपि; पिकटो लिपि; विशिष्ट चिह्नों का प्रयोग	७६८
उद्बोधन :	७६९

परिशिष्ट

- परिमार्जिका
- परिभाषिक शब्दावली
- अनुक्रमणिका (हिन्दी)
- अनुक्रमणिका (अंग्रेजी)



लिपियों के फलकों (Plates) की तालिका (प्रथम खण्ड)

क्रम सं०	फ० सं०	विवरण	पृष्ठ
१	१	भूषण लिपि	११
२	२	चित्रात्मक लिपि	१२
३	३	सूत्रात्मक लिपि	१३
४	४	ध्वन्यात्मक लिपि	१४
५	५	लिपि का कौटुम्बिक वर्गीकरण	१७
६	७	एल० ए० वड्डेल	३०
७	८	प्रो० पेट्री	३१
८	९	डा० जी० आर० हण्टर	३२
९	१०	" "	३३
१०	११	" "	३४
११	१०	फ़ादर यच० हेरास	३५
१२	१०क	" "	३६
१३	१०ख	" "	३७
१४	१०ग	" "	३८
१५	११	श्री रे द्वारा ब्राह्मी लिपि के १३ चिह्नों की तुलना	४०
१६	११क	सुधांशु कुमार रे	४१
१७	११ख	" "	४२
१८	११ग	" "	४३
१९	१२	डा० प्राण नाथ	४५
२०	१३	श्री राज मोहन नाथ	४६
२१	१४	स्वामी शंकरानन्द	४७
२२	१४क	" "	४८
२३	१४ख	" "	४९
२४	१५	हर पी० मेरिगी	५१
२५	१६	परपोला	५२
२६	१७	डा० फ़तेह सिंह	५४
२७	१७क	" "	५५
२८	१७ख	" "	५६
२९	१८	श्री एस० आर० राव	५७
३०	१९	श्री कृष्णा राव	५८
३१	१८क	" "	६०
३२	२०	श्री एल० एस० वाकणकर	६१

क्रम सं०	फ० सं०	विवरण	पृष्ठ
३३	२१	सिन्धु-घाटी व ईस्टर द्वीप चिह्नों की तुलना	६२
३४	२२	बांके बिहारी चक्रवर्ती	६३
३५	२३	जॉन न्यूबेरी	६५
३६	२४	शंकर हाजरा द्वारा रहस्योद्घाटन	६६
३७	२५	होज्नी द्वारा रहस्योद्घाटन	६७
३८	२५क	रूसी विद्वानों द्वारा रहस्योद्घाटन	६७
३९	२६	पशुपति-मुद्रा के विविध स्पष्टीकरण	७०
४०	२७	सुमेर की मुद्रा	७१
४१	२८	सिन्धु - घाटी - लिपि के चिह्न	७२
४२	२८क	" "	७३
४३	३६	सेमिटिक व सिन्धु - घाटी के चिह्नों की ब्राह्मी के अक्षरों की तुलना	८८
४४	३८	खरोष्ठी लिपि के वर्ण	१०३
४५	३८क	खरोष्ठी के कुछ अन्य संश्लिष्ट वर्ण	१०४
४६	३८ख	खरोष्ठी लिपि - दूसरी श०	१०५
४७	३८ग	" "	१०६
४८	३९	विवादास्पद काल की प्राचीन ब्राह्मी	१०८
४९	४०	उत्तरी ब्राह्मी लिपि - ई० पू० तीसरी श०	११०
५०	४०क	" "	१११
५१	४०ख	गिरनार शिलालेख के कुछ शब्द	११२
५२	४१	उत्तरी ब्राह्मी (क्षत्रप) दूसरी श०	११४
५३	४१क	" "	११५
५४	४२	" " (कुषाण)	११५
५५	४३	" " (गुप्त लिपि) चौथी श०	११७
५६	४४	दक्षिणी ब्राह्मी - ई० पू० दूसरी श०	११८
५७	४४क	" " के अभिलेख	१२०
५८	४५	दक्षिणी ब्राह्मी - दूसरी श०	१२२
५९	४६	" " तीसरी श०	१२३
६०	४७	" " चौथी श०	१२४
६१	४८	" " पाँचवी श०	१२६
६२	४९	कुटिल लिपि	१२८
६३	५०	तमिल लिपि - सातवीं श०	१३०
६४	५१	तमिल लिपि का विकास	१३१
६५	५२	वट्टेलुत्तु लिपि ग्यारहवी श०	१३३
६६	५३	ग्रन्थ लिपि - सातवीं श०	१३५
६७	५४	" " तेरहवीं श०	१३६

क्र० सं०	फ० सं०	विवरण	पृष्ठ
६८	५५	ग्रन्थ लिपि का विकास	१३७
६९	५६	पश्चिमी लिपि - छठी श०	१३८
७०	५७	कन्नड़ लिपि - छठी श०	१४१
७१	५८	" " का विकास	१४३
७२	५८ क	" " " "	१४४
७३	५९	तेलुगु लिपि - दसवीं श०	१४६
७४	६०	" " - ग्यारहवीं श०	१४७
७५	६१	" " - तेरहवीं श०	१४८
७६	६२	" " - का विकास	१४९
७७	६३	बंगला लिपि - बारहवीं श०	१५१
७८	६४	कामरूप की बंगला लिपि	१५२
७९	६५	बंगला लिपि का विकास	१५३
८०	६६	उड़िया लिपि - ग्यारहवीं श०	१५५
८१	६६ क	" " - " "	१५६
८२	६७	" " - पन्द्रहवीं श०	१५८
८३	६८	शारदा लिपि का विकास	१५९
८४	६९	मौड़ी लिपि - सत्तरहवीं श०	१६१
८५	७०	मैथिल लिपि	१६२
८६	७१	तिरहुतिया लिपि	१६३
८७	७२	भोजपुरी लिपि	१६४
८८	७३	मागधी (मगही) लिपि	१६५
८९	७४	कैथी लिपि	१६६
९०	७५	अहोम लिपि	१६७
९१	७६	खाम्ती लिपि	१६८
९२	७७	मेई - मेई लिपि	१७०
९३	७८	उर्दू लिपि	१७१
९४	७९	अरबी - सिन्धी लिपि	१७३
९५	८०	बनियाकर लिपि	१७४
९६	८१	हिन्दी - सिन्धी लिपि	१७५
९७	८२	टाकरी लिपि	१७६
९८	८३	लाण्डा लिपि	१७८
९९	८४	गुरमुखी लिपि	१७९
१००	८५	मलयालम लिपि	१८०
१०१	८६	तुलु लिपि	१८१
१०२	८७	उड़िया लिपि	१८२

क्र० सं०	फ० सं०	विवरण	पृष्ठ
१०३	८८	गुजराती लिपि	१८३
१०४	८९	मुख्य भारतीय लिपियों के कुछ शब्द	१८४
१०५	९१	देवनागरी का जन्म	१८६
१०६	९२	देवनागरी — ग्यारहवीं श०	१९०
१०७	९३	„ — बारहवीं श०	१९१
१०८	९४	„ का विकास	१९२
१०९	९४ क	„ „ „	१९३
११०	९५	स्वामी सत्यभक्त द्वारा सुधार	१९५
१११	९६	श्रवण कुमार गोस्वामी द्वारा सुधार	१९७
११२	९७	देवनागरी के कुछ अन्य संशोधित रूप	१९८
११३	९८	नेत्रहीनों के लिये ब्रेल लिपि	१९९
११४	९९	देवनागरी आशु — लिपि	२०१
११५	१००	अंक	२०२
११६	१०२	नेपाल की लिपियाँ	२०८
११७	१०३	सुलेख के लिये कुछ सुन्दर लिपियाँ	२०८
११८	१०४	किरात लिपि के संयुक्त वर्ण	२०९
११९	१०५	रंजना „ „ „ „	२१०
१२०	१०६	भुजिमोल „ „ „ „	२११
१२१	१०८	सिक्किम की लेप्चा या रोंग लिपि	२१४
१२२	११०	सिंहली लिपि	२१६
१२३	११० क	„ „ शब्द व संयुक्त अक्षर	२२०
१२४	१११	माल्डीव की लिपियाँ	२२२
१२५	११४	सुमेर की रेखा — चित्रात्मक लिपि	२३६
१२६	११५	सुमेर के रेखाचित्र	२३७
१२७	११६	असोरियाई कीलाक्षरों का विकास	२४०
१२८	११७	बेबीलोन की कोलाकार लिपि	२४१
१२९	११८	हम्मुराबी की विधि — संहिता	२४२
१३०	११९	असोरियन लिपि के व्यंजन तथा स्वर	२४४
१३१	१२०	„ अंक	२४६
१३२	१२४	एलाम की प्राचीन लिपि	२४६
१३३	१२५	बेहिस्तून का शिलालेख	२४६
१३४	१२६	बेहिस्तून की शिला पर मूर्तियों का विवरण	२४६
१३५	१२७	कीलाकार अक्षर	२६०
१३६	१२८	„ चिह्न	२६२
१३७	१२९	„ अक्षर	२६४
१३८	१३०	„ शब्द	२६४

क्रम सं०	फ० सं०	विवरण	पृष्ठ
१३९	१३१	कीलाकार अक्षर	२६६
१४०	१३२	" "	२६६
१४१	१३३	" वर्णावली	२७०
१४२	१३४	" बहु - ध्वनीय चिह्न	२७२
१४३	१३५	भावात्मक, निर्धारक, अक्षरात्मक चिह्न	२७३
१४४	१३६	असीरियाई - बेबीलोनी लिपि के निर्धारक - अक्षरात्मक चिह्न	२७४
१४५	१३७	प्राचीन सुमेर तथा नव - असीरियाई लिपियाँ	२७५
१४६	१३८	बेहिस्तून शिलालेख का आंशिक पाठ	२७६
१४७	१३८ क	" " " " "	२७७
१४८	१३८ ख	" " " " "	२७८
१४९	१३९	" " " सूसियन पाठ	२८०
१५०	१४०	" " " बेबीलोनी पाठ	२८१
१५१	१४१	पहलवी लिपि के रूप	२८३
१५२	१४२	जेन्द - अवेस्ता लिपि	२८४
१५३	१४३	ससानिड पहलवी तथा जेण्ड	२८५
१५४	१४५	प्राचीन फ़िनीशियन चिह्नों की तुलना, क्रीट के चिह्नों से	२८९
१५५	१४६	फ़िनीशिया लिपि के वर्ण	२९२
१५६	१४७	बिबलास के वर्ण	२९४
१५७	१४८	बिबलास का एक लघु अभिलेख	२९५
१५८	१४९	फ़िनीशियन लिपि के कालानुसार रूप	२९६
१५९	१५०	अहिराम का अभिलेख	२९८
१६०	१५० क	मेशा का अभिलेख	२९८
१६१	१५० ख	मध्यकालीन फ़िनीशियन का प्रतिदर्श	३००
१६२	१५१	प्यूनिक लिपि	३०१
१६३	१५२	कनआन की लिपि	३०३
१६४	१५३	युगारिट की लिपि	३०४
१६५	१५४	" " "	३०४
१६६	१५५	" " "	३०५
१६७	१५६	" " "	३०६
१६८	१५७	" " "	३१४
१६९	१५९	तारकोण्डेमस मुद्रा	३१३
१७०	१५९ क	तारकोण्डेमस मुद्रा (भीतरी भाग)	३१५
१७१	१६०	हिती चित्रात्मक लिपि	३१६
१७२	१६१	एक द्विभाषिक अभिलेख	३१७
१७३	१६२	भावात्मक चित्र-लिपि के कुछ पठन	

क्रम सं०	फ० सं०	विवरण	पृष्ठ
१७४	१६३	सर्वनाम चिह्न	३१८
१७५	१६४	अन्य चिह्न	३१८
१७६	१६५	अन्य चिह्न	३१९
१७७	१६६	एक अभिलेख	३२१
१७८	१६७	चार देशों की चित्रात्मक लिपियों की तुलना	३२३
१७९	१६९	हेब्रू लिपि की वर्णमाला	३२९
१८०	१७०	हेब्रू लिपि के प्रतिदर्श	३३०
१८१	१७१	समारिया की लिपियाँ	३३३
१८२	१७३	अरमायक व पालमीरी लिपियाँ	३३६
१८३	१७४	अरमायक लिपि की एक विशिष्ट शाखा	३४१
१८४	१७५	जेबेद, एस्ट्रेंजलो आदि	३४२
१८५	१७६	सीरिया की कर्शुनी	३४४
१८६	१७८	फ्रीजिया की लिपि	३४६
१८७	१७९	लीकियन लिपि	३४७
१८८	१८०	लीकियन लिपि (द्विभाषिक अभिलेख)	३४८
१८९	१८२	लीडिया की लिपि-एक प्रतिदर्श	३५२
१९०	१८३	कैरियन लिपि के अक्षर	३५४
१९१	१८४	सिडेटिक लिपि	३५५
१९२	१८५	यजीदी लिपि	३५६
१९३	१८८	नवात की नब्ती लिपि	३६५
१९४	१८८ क	प्रतिदर्श	३६४
१९५	१८९	हेजाज और नज्द की लिपियाँ	३६७
१९६	१८९ क	थामुडिक (हेजाज) का प्रतिदर्श	३६६
१९७	१९०	मण्डायक, सफ्रातैनी, उम्म-अल-जमल	३७०
१९८	१९० क	सफ्रातैनी का प्रतिदर्श	३६९
१९९	१९१	लिहियानिक लिपि	३७१
२००	१९३	सिनाइ की लिपियाँ	३७४
२०१	१९४	सिनाइ की अरबी लिपि	३७६
२०२	१९५	सबा की लिपि	३७८
२०३	१९६	अरबी लिपि की अन्य शाखाएँ	३८०
२०४	१९७	नब्ती द्वारा नस्खों का विकास	३८१
२०५	१९७ क	नब्ती द्वारा नस्खों का विकास	३८२
२०६	१९८	कूफी लिपि में कलमा	३८४
२०७	२००	अरमेनिया की लिपि - बोलर-आजिर	३८८
२०८	२०२	जॉर्जिया की लिपियाँ	३९१
२०९	२०३	जॉर्जिया की मेहदूली	३९२

लिपियों के फलकों (Plates) की तालिका

(द्वितीय खण्ड)

क्र० सं०	फ० सं०	विवरण	पृष्ठ
२१०	२०५	अु-मेद् लिपि	४०३
२११	२०६	अु-चेन् लिपि	४०४
२१२	२०७	पस्सेपा लिपि	४०५
२१३	२०८	बाल्टी लिपि	४०६
२१४	२०९	अु-मेद् एवं अु-चेन् के प्रतिदर्श	४०७
२१५	२१५	आठ त्रिपुण्ड; प्राचीन रेखा-चित्र	४२६
२१६	२१६	चीन की प्राचीनतम लिपि	४२८
२१७	२१७	चीनी लिपि का कालानुसार विकास	४३०
२१८	२१८	चीनी लिपि में ध्वनि-चल (टोन)	४३३
२१९	२१९	चीनी लिपि के वस्तु-चित्र	४३४
२२०	२२०	चीनी लिपि के सांकेतिक चित्र	४३५
२२१	२२१	संयुक्त सांकेतिक चित्र	४३६
२२२	२२२	क्रम द्वारा निर्मित चित्र; ध्वनि-सूचक चित्र	४३७
२२३	२२३	ग्रहण किये हुये चित्र 'हृदय' (सुलेख)	४३९
२२४	२२४	कुछ शब्द व वाक्य	४४२
२२५	२२५	इनीशियल्स व फ़ाइनल्स की तालिका	४४३
२२६	२२६	ध्वन्यात्मक चिह्नों का आविष्कार	४४५
२२७	२२७	चीनी लिपि की ध्वन्यात्मक पद्धति - १	४४७
२२८	२२८	" " " " - २	४४८
२२९	२२९	" " " " - ३	४४९
२३०	२३०	लिपि का सरलीकरण; आठ मौलिक स्ट्रोक	४५१
२३१	२३१	रेखाओं के द्वारा शब्द निर्माण	४५२
२३२	२३२	चीनी लिपि के अंक	४५३
२३३	२३३	चीन में दक्षिणी भाग की लोलो लिपि	४५५

क्रम० सं०	फ० सं०	विवरण	पृष्ठ
२३४	२३४	दक्षिण-पश्चिम चीन की म्याओ - लो लिपि	४५६
२३५	२३५	मोसो लिपि	४५७
२३६	२३७	उइगुरी लिपि	४६३
२३७	२३८	गालिक लिपि	४६४
२३८	२३९	मंगोलिया की दो प्रकार की लिपियाँ	४६६
२३९	२४०	मंगोल लिपि का एक प्रतिदर्श	४६७
२४०	२४१	कालमुक लिपि	४६८
२४१	२४२	बुरियाती लिपि	४७०
२४२	२४३	तोखारी लिपि	४७१
२४३	२४४	मंचूरिया की लिपि	४७२
२४४	२४५	सोमदी लिपि	४७४
२४५	२४६	साइबेरिया की यानिसी लिपि	४७५
२४६	२४७	„ „ ओरहन लिपि	४७७
२४७	२४८	मनीकी लिपि	४७८
२४८	२४९	पुमसो लिपि	४८३
२४९	२५०	ओनमुन लिपि	४८४
२५०	२५१	ओनमुन लिपि का पाठ	४८५
२५१	२५२	जापान की प्राचीनतम दैवी लिपि	४८६
२५२	२५३	कताकाना लिपि के अक्षर	४८७
२५३	२५४ क	„ „ „	४९५
२५४	२५५	हिरागाना लिपि के अक्षर	४९७
२५५	२५६	„ „ „	४९८
२५६	२५७	होरागाना व कताकाना के आधुनिक वर्ण	४९९
२५७	२५८	जापानी भाषा के कुछ शब्द व स्त्रोक	५०१
२५८	२५९	चीनी काइशू लिपि से जापानी अक्षरों का विकास	५०२
२५९	२६०	जापानी लिपि के मिश्रित प्रतिदर्श	५०३
२६०	२६१	चतुष्कोण पाली लिपि	५१०
२६१	२६२	मुलेख पाली लिपि	५११
२६२	२६३	आधुनिक गोल लिपि एवं अंक	५१२

क्रम० सं०	फ० सं०	विवरण	पृष्ठ
२६३	२६५	प्राचीन पेगुअन लिपि	५१३
२६४	२६६	चमका लिपि	५१४
२६५	२६९	बोरोमात	५१६
२६६	२७०	पत्तीमोखा लिपि	५२०
२६७	२७१	प्राचीन थाई लिपि	५२१
२६८	२७२	आधुनिक थाई लिपि	५२२
२६९	२७३	„ „ „ (संयुक्त अक्षर)	५२३
२७०	२७४	कुछ लिपियों के पाठ	५२४
२७१	२७५	लाओस की लिपि	५२५
२७२	२७६	मूल अक्षर लिपि	५२८
२७३	२७७	संशोधित शीघ्र लिपि	५२९
२७४	२७८	आधुनिक लिपि	५३०
२७५	२८०	तगाला लिपि	५३३
२७६	२८२	कवि लिपि की वर्णमाला	५५३
२७७	२८३	जावा की दूसरी लिपि	५३७
२७८	२८४	बटक लिपि	५३८
२७९	२८५	रेदजांग एवं लेम्पोंग लिपियाँ	५३९
२८०	२८६	बुगिनी - मकासार लिपि	५४०
२८१	२८८	मिस्र राज्य के मुकुट व चिह्न	५४८
२८२	२८९	कार्टूश	५६७
२८३	२९०	मिस्र लिपि का क्रमशः विकास	५७७
२८४	२९१	हेरोग्लिफ्स के वर्ण (डिटिजर द्वारा)	५७८
२८५	२९२	हेरोग्लिफ्स के वर्ण (वेलिस बज द्वारा)	५७९
२८६	२९३	ध्वनियाँ व चित्र	५८०
२८७	२९४	हेरोग्लिफ्स के कुछ शब्द	५८१
२८८	२९५	कुछ अतिरिक्त वर्ण व कुछ शब्द	५८२
२८९	२९६	हेरोग्लिफ्स तथा हेरेटिक के कुछ प्रतिदर्श	५८३
२९०	२९७	हेरोग्लिफ्स का घसीट रूप - हेरेटिक	५८४
२९१	२९८	हेरोग्लिफ्स एवं हेरेटिक का एक अभिलेख	५८५

क्र० सं०	फ० सं०	विवरण	पृष्ठ
२९२	२९९	डिमाटिक की वर्णमाला; डिमाटिक एवं कॉप्टिक के प्रतिदर्श	५८६
२९३	३००	कॉप्टिक लिपि की वर्णमाला	५८७
२९४	३०१	मिरोइटिक लिपि की वर्णमाला	५८८
२९५	३०२	मिरोइटिक — डिमाटिक की वर्णमाला	५८९
२९६	३०३	मिस्री लिपि के अंक	५९०
२९७	३०३ क	हेरेटिक के अंक	५९२
२९८	३०५	नुमीदियन लिपि	५९८
२९९	३०५ क	नुमीदियन लिपि का आंशिक पाठ	५९९
३००	३०६	बर्बर लिपि	६००
३०१	३०७	बर्बर लिपि का आंशिक पाठ	६०१
३०२	३०७ क	तुर्देतेनियन लिपि के कुछ वर्ण	६०१
३०३	३०८	बामुन लिपि	६०३
३०४	३०९	सोमाली लिपि	६०५
३०५	३१०	सोमाली लिपि के कुछ संयुक्त अक्षर	६०६
३०६	३११	एक्रोफोनी पद्धति से वर्णों का विकास	६०८
३०७	३१२	वई लिपि	६०९
३०८	३१२ क	वई लिपि	६१०
३०९	३१२ ख	वई लिपि	६११
३१०	३१२ ग	वई लिपि	६१२
३११	३१३	मेण्डे लिपि	६१४
३१२	३१४	यनसिब्दी लिपि	६१६
३१३	३१५	प्राचीन अबीसीनिया की लिपि	६१८
३१४	३१७	इथियोपिया की वर्णमाला	६२१
३१५	३१७ क	" " "	६२२
३१६	३१७ ख	" " "	६२३
३१७	३१७ ग	" " "	६२४
३१८	३१९	सिप्रियाटिक लिपि की वर्णमाला	६२३
३१९	३२०	सिप्रियाटिक लिपि का क्रेटन से सम्बन्ध	६२४
३२०	३२१	सिप्रियाटिक लिपि के कुछ शब्द	६२५

क्रम०	सं०	फ०	सं०	विवरण	पृष्ठ
३२१	३२४			ग्रीक लिपि के वर्णों का उद्भव	६४२
३२२	३२४ क			" " " " " "	६४३
३२३	३२५			क्रोट की चित्रात्मक लिपि	६५१
३२४	३२६			माइसीनिया की वर्णवली	६५२
३२५	३२७			पाइलस की त्रिपद पाटिया	६५३
३२६	३२७ क			" " " "	६५४
३२७	३२८			क्रोट की लाइनियर - 'ए' के चिह्न	६५५
३२८	३२९			फ्रैस्टास चक्रिका	६५६
३२९	३३०			एथेन्स की लिपि (अभिलेख)	६५९
३३०	३३१			कोरिथ की लिपि	६६१
३३१	३३२			बोयेशिया की लिपि	६६३
३३२	३३३			आर्केडिया एवं साहित्यिक काला के वर्ण	६६५
३३३	३३४			ग्रीक लिपि के आधुनिक वर्ण	६७३
३३४	३३६			प्रोटो - टाइरेनियन द्वारा एट्रस्कन वर्णों का उद्भव	६७५
३३५	३३७			ओस्कन लिपि के वर्ण	६७६
३३६	३३८			अंब्रियन लिपि के वर्ण	६७७
३३७	३३९			फैलिस्कन लिपि के वर्ण	६७८
३३८	३४०			बोल्जानो लिपि के वर्ण	६८०
३३९	३४१			माग्ने लिपि के वर्ण	६८१
३४०	३४२			सोन्ड्रियो लिपि के वर्ण	६८२
३४१	३४३			लुगानो लिपि के वर्ण	६८३
३४२	३४४			वेनेती लिपि के वर्ण	६८४
३४३	३४५			कांसे की पाटिया	६८६
३४४	३४६			लैटिन वर्ण	६८९
३४५	३४७			मैनियस की कटार - ६०० ई० पू०	६९०
३४६	३४८			कुछ वर्णों का विकास	६९१
३४७	३४९			गोथिक लिपि	६९५
३४८	३५१			ग्लेगोलिथिक लिपि	७०१
३४९	३५२			प्राचीन सीरिलिक लिपि	७०२
३५०	३५३			बुल्गारी सीरिलिक लिपि	७०३
३५१	३५५			रूस की सीरिलिक लिपि	७०५
३५२	३५६			रूस की लिपि के कुछ शब्द	७०६
३५३	३५८			ओगम लिपि	७१३
३५४	३५९			आयरलैण्ड की रोमन लिपि	७१४
३५५	३६१			हंगेरी की प्राचीन लिपि	७१७

क्रम०	सं फ० स०	विवरण	पृष्ठ
३५६	३६२	निकोल्सबर्ग लिपि के वर्ण; नवीं श० का एक लघु अभिलेख	७२०
३५७	३६४	प्राचीन जर्मनी के रून	७२३
३५८	३६६	डेनमार्क नार्वे-स्वीडन के रून	७२७
३५९	३६६क	एक प्रतिदर्श	७२८
३६०	३६७	बिन्दी वाले रून; दल्सकारून	७२९
३६१	३६९	ऐंग्लो - सैक्सनरून	७३१
३६२	३६०	ऐंग्लो-सैक्सन रून का प्राचीनतम् अभिलेख	७३२
३६३	३७१	बार्डी लिपि	७३४
३६४	३७२	रुमानिया की लिपि	७३५
३६५	३७३	अल्बे नेयन लिपि	७३६
३६६	३७४	अजुटेक गणित	७४२
३६७	३७५	अजुटेक जाति की चित्र-लिपि	७४३
३६८	३७६	अजुटेक जाति के कुछ अन्य चित्र	७४४
३६९	३७७	विश्वोत्पत्ति की कहानी	७४६
३७०	३७८	एक रेड - इण्डियन की कहानी	७४७
३७१	३८०	मय चित्र लिपि के वर्ण	७५१
३७२	३८१	मय जाति का पंचांग	७५२
३७३	३८२	चिरोकी लिपि के वर्ण	७५४
३७४	३८३	क्रो लिपि	७५७
३७५	३८५	एलास्का की वर्ण माला	७५९
३७६	३८६	मोटजेबू क्षेत्र की चित्र लिपि	७६०
३७७	३८७	ईस्टर द्वीप की चित्र लिपि	७६२
३७८	३८८	अंग्रेजी की आशु लिपि	७६५
३७९	३८९	रोमन वर्णों की ब्रेल लिपि	७६६
३८०	३९०	खगोल शास्त्र, राशि चक्र	७६७
३८१	३९१	पिक्टो लिपि का प्रति दर्श	७६८



मानचित्रों की तालिका

(प्रथम खण्ड)

क्रम सं०	फ० सं०	विवरण	पृष्ठ
१	६	सिन्धु - घाटी सम्यता के नगर	२७
२	२९	कुषाण साम्राज्य	७६
३	३०	चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य का साम्राज्य	८१
४	३१	हर्ष वर्धन का साम्राज्य	८३
५	३२	गुर्जर - प्रतिहार वंश का साम्राज्य	८५
६	३३	अकबर का साम्राज्य	८९
७	३४	भारत १७६३ ई० सन् में	९२
८	३५	भारत १८५३ में	९३
९	३७	अशोक के शिला - लेख एवं स्तम्भ - लेख	१००
१०	९०	भारत की भाषायें	१८५
११	१०१	नेपाल	२०५
१२	१०७	सिक्किम	२१३
१३	१०६	माल्डीव द्वीप समूह तथा श्री लंका	२१७
१४	११२	प्राचीन मेसोपोटामिया	२२६
१५	११३	शलमनासर तृतीय एवं असुरबनीपाल का राज्य	२३१
१६	१२१	पश्चिम - एशिया के राज्य	२४९
१७	१२३	डैरियस का विशाल साम्राज्य	२५१
१८	१२३	सिकन्दर का साम्राज्य	२५३
१९	१४४	फ़िनीशिया	२८८
२०	१५८	हत्तुशा (हित्ति) राज्य	२१०
२१	१६८	इस्लायल जाति का इतिहास	३२८
२२	१७२	सीरिया	३३६
२३	१७७	एशिया माइनर के देश	१४५
२४	१८१	लीडिया तथा फ़ीजिया	३५०
२५	१८६	प्राचीन अरेबिया	३६०
२६	१८७	पश्चिम एशिया (इस्लाम के पूर्व)	३६२
२७	१६२	सिनाइ	३७२
२८	१९९	पश्चिम एशिया (अरमेनिया)	३८६
२९	२०१	अरमेनिया जॉर्जिया	३८९
३०	२०४	तिब्बत	३९८
३१	२१०	चीन	४१०
३२	२११	चीन - तांग वंश का साम्राज्य	४१३

मानचित्रों की तालिका

(द्वितीय खण्ड)

क्रम सं०	फ० सं०	विवरण	पृष्ठ
३३	२१२	चीन - १३वीं श० के अन्त में	४१५
३४	२१३	चीन - १७३६ से १७८६ ई० तक	४१८
३५	२१४	चीन - १९०० ई० में	४२०
३६	२३६	मंगोल जातियाँ	४६१
३७	२४६	कोरिया	४८२
३८	२५२	जापान	४९०
३९	२६१	ब्रह्मा	५०८
४०	२६७	श्याम व हिन्द - चीन के देश	५१६
४१	२६८	श्याम, कम्बोडिया, लाओस (वर्तमान)	५१७
४२	२७०	फिलिपाइन द्वीप समूह	५३२
४३	२८१	हिन्देशिया द्वीप समूह	५३४
४४	२८७	मिस्र	५४७
४५	३०४	अफ्रीका (अठारहवीं श० के अंत में)	५६६
४६	३१६	इथियोपिया (उन्नीसवीं श०)	६१९
४७	३१८	सायप्रस	६३०
४८	३२२	प्राचीन ग्रीस - ई० पू० की दूसरी शती	६३७
४९	३२३	आधुनिक ग्रीस	६३८
५०	२३५	प्राचीन इटली	६६८
५१	३४८ क	यूरोप की प्राचीन जातियों का विस्तार - पाचवीं से ग्यारहवीं श० तक	६९२
५२	३५०	मोराविया - ९२० से ११२५ ई० के मध्य - आधुनिक बुल्गारिया	६६६
५३	३५४	रूस - १००० ई० के लगभग	७०४
५४	३५६	आयर लैण्ड	७०६
५५	३६०	हंगेरी	७१६
५६	३६३	जर्मनी	७१९
५७	३६५	नार्वे स्वीडन	७२६
५८	३६८	इंग्लैण्ड	७२८
५९	३७६	मध्य - अमरीका (मैक्सिको व युकेटान)	७४६
६०	३८४	एलास्का - ईस्टर आइलैण्ड	७५८



नोट :- इस पुस्तक में जो भी मानचित्र दिये गये हैं वे प्रामाणिक मानचित्रों के छाया - मात्र हैं । ये मानचित्र देशों की धारणा - मात्र प्रदर्शित करने के लिए अंकित किये गये हैं । सभी मानचित्र शुद्ध अनुपात में नहीं (not to scale) हैं ।

लेखन कला का इतिहास
(प्रथम खण्ड)

अध्याय : १
विषय प्रवेश

परिचय

‘लेखन कला का इतिहास’ आरम्भ करने के पूर्व कुछ विषय ऐसे हैं जो इस विषय के सीधे अन्तर्गत तो नहीं आते, परन्तु वे इस विषय से इतने सम्बन्धित हैं कि उनका पाठकों को बोध कराना आवश्यक होगा। वे विषय हैं :—

भाषा—यह विषय भाषा-विज्ञान पर, भाषा की परिभाषा पर, उसकी उत्पत्ति पर, उसके भेदों पर तथा भाषा व लिपि के सम्बन्ध पर पर्याप्त प्रकाश डालेगा।

लिपि—यह विषय लिपि की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं पर, लिपि के भेदों पर, लिपि की उपयोगिता पर तथा उसकी उत्पत्ति पर पर्याप्त प्रकाश डालेगा।

पुरातत्व—यह विषय उत्खनन के इतिहास पर, उसके भिन्न-भिन्न विभागों पर, लिपियों की खोज और उनके रहस्योद्घाटन-कार्य पर प्रकाश डालेगा।

कालनिर्धारण—यह विषय कार्बन-१४ की अकथ खोज पर, जिसने प्राचीन इतिहास को नया जीवन तथा इतिहासकारों को नया प्रोत्साहन प्रदान किया है तथा कालनिर्धारण को वैज्ञानिक रूप दिया है, प्रकाश डालेगा।

प्राचीन इतिहास—यह विषय विषय का परिचय प्रदान करेगा तथा मानव के विकास पर प्रकाश डालेगा।

इस पुस्तक में न केवल लेखन कला का इतिहास ही दिया गया है अपितु उन प्राचीन देशों का प्राचीन से अर्वाचीन काल तक का इतिहास भी दिया गया है, जहाँ अमुक लिपियों का उद्भव तथा विकास हुआ है। साथ ही साथ प्रत्येक प्राचीन देश के प्राचीन मानचित्र भी दिये गये हैं ताकि पाठकों को उस देश की तात्कालिक रूपरेखा का भली प्रकार से बोध हो जाये।



भाषा

मनुष्य ने अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए सर्वप्रथम भाषा का ही — चाहे वह किसी रूप में हो — प्रयोग किया, तदनन्तर उसको सुरक्षित रखने के लिए लिपि का प्रयोग आरम्भ किया।

भाषा की परिभाषा

इस विषय पर पूरी एक पुस्तक ही लिखी जा सकती है, परन्तु यहाँ संक्षेप में कुछ परिभाषाओं के विषय में दे दिया गया है।

भाषा का अर्थ विचारों को व्यक्त करना है। विचार कई प्रकार से व्यक्त किये जा सकते हैं। आँख के इशारों से, मुँह के इशारों से, उँगली व हाथ के इशारों से (स्काउट्स को आज भी उँगलियों के इशारों से गूँगे-बहरों की तरह बात करना सिखाया जाता है) तथा ध्वनि के उच्चारण से। ये सब साधन भाषा के ही रूप हैं। परन्तु वर्तमान युग में केवल बोल कर ही विचारों को व्यक्त करना 'भाषा' कहलाता है।

भाषा मानसिक क्रिया का फल है। विचार भाषा का प्राण है अथवा आत्मा है। भाषा उन्हीं विचारों का बाहरी तथा भौतिक स्वरूप है। भाषा उन सारे चिह्नों का योग है जो हमारे विचारों को, मनोभावों को तथा अन्य बाहरी विचारों को ग्रहण करके पुनः उत्पन्न करे और आवश्यकता पड़ने पर उसको फिर दोहरा सके। केवल स्वरतंत्रों का हिलना ही भाषा नहीं है, अपितु वह बाहरी वातावरण है जो स्वरतंत्रों को चलने के लिए बाध्य करता है अर्थात् मनुष्य जो भी उपचेतन मस्तिष्क में ग्रहण कर लेता है, उसी को पुनः उत्पन्न करना (reproduction) भाषा है। भाषा हर ध्यक्ति द्वारा ग्रहण की जाती है परन्तु प्रत्येक व्यक्ति द्वारा रची नहीं जाती है।

मनुष्य का दिल और दिमाग एक टकसाल है, जिसके अन्दर दिल और दिमाग की प्रतिक्रिया स्वरूप सबसे पहले अचिंतित (uncontemplated) भाव, विचार प्रकट होते हैं। अचिंतन का चिंतन, भाषा की सर्वप्रथम अवस्था है। अचिंतित विचार जब चिंतन के विषय बनते हैं, तब दूसरी अवस्था का प्रारम्भ होता है। पहली अवस्था दूसरी अवस्था का आधार है। यह अमूर्त का मूर्तिकरण तथा अव्यक्त का व्यक्तिकरण है। यह वह सीढ़ी है, जहाँ भाषा जन्म लेती है।

शब्द व वाक्य

भाषा को साधक बनाने के लिए किसी पद्धति में बाँधना पड़ता है। शब्द निर्धारित नियमों के अनुसार मुख से निकालने पड़ते हैं। ये शब्द स्वयं विशेष-विशेष स्थानों से सतत् ध्वनियाँ निकालने से बनते हैं और ये ध्वनियाँ अलग-अलग जिह्वा के स्पर्श से अलग-अलग बनती हैं। नाक से ध्वनियाँ निकालने पर रूप बदल जाता है। कभी हम ऐसी ध्वनि पर पहुँच जाते हैं, जिसे हम और अधिक खण्डित नहीं कर सकते। ऐसी ध्वनियों को कल्पित करके अक्षर बनाये जाते हैं। एक वैज्ञानिक भाषा का गुण यह है कि जो अक्षर लिखे जायें वे एक से अधिक ध्वनिके परिचायक न हों, न ही कोई ऐसा अक्षर हो जो लिखा तो जाये परन्तु उसका उच्चारण न हो। भाषा मन की टकसाल में गढ़ा हुआ एक ऐसा सिक्का है जो अचिंतित रेखाओं से गुजर कर चिंतित वस्तु द्वारा रूप ग्रहण करता है।

एक और बात ध्यान देने योग्य है। विचारों का बोध वाक्यों द्वारा होता है। वाक्य ही भाषा का छोटे से छोटा अवयव है। हमारे विचार का छोटे से छोटा बाहरी स्वरूप वाक्य ही है, शब्द नहीं। शब्दों को जोड़ कर वाक्य बनाये जाते हैं। विचारों के अन्तर्गत भाव होते हैं। उसी प्रकार वाक्य के अन्तर्गत शब्द होते हैं। भाव से पहले जिस प्रकार विचार आता है, उसी प्रकार शब्द से पहले वाक्य आता है। जिस प्रकार पृथक् भाव की कोई स्थिति नहीं, उसी प्रकार वाक्य से स्वतंत्र शब्द का कोई अस्तित्व नहीं। अतएव भाषा का चरम अवयव वाक्य है, शब्द या अक्षर नहीं।

भाषा की उत्पत्ति

भाषा अब केवल भाषा ही नहीं, अपितु भाषा-विज्ञान हो गयी है और इस पर बड़े-बड़े वैज्ञानिक शोध हो चुके हैं तथा आगे भी होते रहेंगे। भाषा की उत्पत्ति लाखों वर्ष पूर्व हुई, जिसके विषय में यह खोज करने के लिए कि वह कब और कैसे प्रारम्भ हुई, पर्याप्त आधार उपलब्ध नहीं हैं। ऐसी परिस्थिति में अनुमान का ही सहारा लिया जा सकता है। क्योंकि कल्पना या अनुमान विज्ञान के अंतर्गत आ नहीं सकते, इस कारण 'भाषा की उत्पत्ति' का विषय 'भाषा-विज्ञान' के विषय का अंग माना नहीं जा सकता। इसी विचार को ध्यान में रखते हुए जब १८६६ में भाषा-विज्ञान-परिषद् (La Societe de Linguistique) की स्थापना पेरिस में की गयी तो संस्थापकों ने 'भाषा की उत्पत्ति' के विषय पर विचार करने पर ही प्रतिबंध लगा दिया। फिर भी अज्ञेय को ज्ञेय की परिधि में लाने के मानव स्वभाव ने विद्वानों को उत्पत्ति के विषय में विचार करने पर विवश किया, जिनके निष्कर्ष निम्नलिखित हैं,—

१. देवताओं के द्वारा : सारे प्राचीन देश ईश्वरवादी थे। ज्ञान के अभाव में हर बात जो तात्कालिक मनुष्य के लिए अज्ञेय थी, ईश्वर के निमित्त कर दी जाती थी। इसी सिद्धांत पर भाषा की उत्पत्ति भी ईश्वर के निमित्त कर दी गयी। पाणिनि के १४ सूत्र शिव के डमरू की ध्वनि से उत्पन्न हुए। संस्कृत को देव भाषा, अरबी को अल्लाह की तथा हेब्रू को जेहोवा की प्रदान की हुई भाषा समझा गया। यह प्राचीन विचार आज भी उतना ही प्रबल है। बच्चा जन्म के पश्चात् ही सुन कर भाषा सीखता है इसी कारण बहरे बोल नहीं पाते।
२. अनुकरण के द्वारा : मनुष्य ने अपने वातावरण में पशु-पक्षियों की ध्वनियां सुनीं और ध्वनियों के लिए शब्द बने। उदाहरणार्थ कुत्ते के भौंकने के लिए 'भौं-भौं', घोड़े के सांस निकालने के लिए 'हिनहिनाना', शेर का गर्जना, हाथी का चिंघाड़ना आदि। ऐसे ही हवा से 'साँय-साँय', लकड़ी की मार से 'ठक-ठक', बिजली (आकाश की) से कड़कना आदि।
३. आवेग के द्वारा : (पूह-पूह सिद्धान्त) क्रोध, प्रेम, घृणा आदि को व्यक्त करने के लिए कुछ न कुछ ध्वनियों का प्रयोग अकस्मात् हो जाता है, जैसे—घट्, ओह, छिः आदि।
४. श्रम के द्वारा : (हो-हो वाद) जब मनुष्य शारीरिक परिश्रम करता है, तो कंठ से स्वाभाविक रूप से किसी न किसी प्रकार की ध्वनियां निकलती हैं, जैसे — घोड़ी की 'छियो-छियो', नाव चलानेवाले की 'हे हो' आदि।
५. इङ्गितों के द्वारा : आधार इसका भी अनुकरण है, परन्तु बाहर की चीजों का न होकर अपने शरीर के अंगों का संकेत, जो जान कर न किया जाये, अपितु स्वयं हो जाये (Unconscious imitation)।
६. सम्पर्क के द्वारा : मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। आरम्भ काल में जब कि मनुष्य जंगलों में टोलियां बना कर रहता था, कन्द मूल, फल आदि खाता था, वह जैसी परिस्थिति के सम्पर्क में आया उसने विवश

होकर किसी ध्वनि का प्रयोग किया। उदाहरणार्थ यदि उसने शेर या भालू देखा तो उसने डो-डो की या टो-टो की ध्वनि निकाली। शनैः-शनैः वह ध्वनि उस टोली वालों के लिए एक संकेत के रूप में निर्धारित हो गयी। इसी प्रकार सांकेतिक ध्वनियाँ बढ़ती गयीं और मानव-विकास के साथ ध्वनियों का विकास होता रहा। इस विकास का मुख्य कारण था सम्पर्क।

७. समन्वित सिद्धान्त : वे टोलियाँ जब दूसरी टोलियों के सम्पर्क में आयीं जो अपने साथ दूसरे प्रकार की ध्वनियाँ लायीं थीं, उनके सम्मिश्रण से नयी ध्वनियों ने जन्म लिया और इस प्रकार स कुछ इशारे कुछ अनुकरण, कुछ भाव, कुछ बाहरी वातावरण आदि के कारण ध्वनियों से वाक्य, वाक्य से शब्द और शब्द से वर्ण बन गये। यह कार्य लाखों वर्षों में सम्पन्न हुआ।

भाषा का प्रसार

कुछ लोग शताब्दियों तक एक क्षेत्र में रहे, इसी प्रकार कुछ अन्य लोग दूसरे क्षेत्र में रहे। जब वहाँ की भोजन सामग्री समाप्त हो गयी तो कुछ नये स्थानों को चले गये। उन स्थानों की बोली भिन्न थी। इस कारण भाषा का वर्णसंकर होना स्वाभाविक था; जिसके द्वारा एक नयी भाषा ने जन्म लिया। इस प्रकार बनते-बनते आज २७९६^१ बोलियाँ बन गयीं हैं और सम्भव है कुछ और बन जायें।

बोली और भाषा

बोली और भाषा में बहुत अन्तर है, परन्तु बहुत से शिक्षित लोग भी समझ नहीं पाते। बोली की सीमा संकीर्ण होती है जब कि भाषा की सीमा व्यापक होती है, परन्तु पहले व्यापकता की सीमा नहीं थी। राष्ट्रवाद के जन्म के साथ व्यापकता की सीमा देश की सीमा के साथ बँधकर भाषा में राष्ट्र जुड़कर राष्ट्र-भाषा बन गयी।

इनके अन्तर को समझने के लिए भाषा-विज्ञानवेत्ताओं ने तीन रूप निर्धारित किये हैं, जो निम्नलिखित हैं :—

१. व्यक्ति बोली (Idiolect) : व्यक्ति-बोली भाषा का लघुतम रूप है। व्यक्ति के जन्म मरण तक उसकी भाषा में अन्तर होता रहता है, जो पर्याप्त रूप में दृष्टिगोचर होता है। बच्चे पानी को मम, भोजन को हप्पू या पप्पू आदि कहते हैं और बड़े होकर यह परिवर्तित हो जाते हैं।
२. स्थानीय-बोली (Local Dialect) : यह बहुत-सी व्यक्ति-बोलियों का सामूहिक रूप है। इसमें आपस में कोई अन्तर नहीं होता।
३. भाषा (Language) : यह बहुत-सी स्थानीय बोलियों का सामूहिक रूप है। इसमें आपस में कुछ अन्तर अवश्य होता है। भारत के प्रांत प्रांतीय भाषाओं के आधार पर निर्माण किये गये परन्तु एक प्रांत में अनेक बोलियाँ प्रचलित होती हैं।

भाषा में स्वर व व्यंजन

इनकी परिभाषा आवश्यक है। यह पुस्तक की लिपियों को समझने में सहायक सिद्ध होगा। स्वर और व्यंजन की परिभाषा इस प्रकार है :—

1. Gray's Foundations of The Languages—P. 418.

स्वर : किसी भाषा के वे वर्ण हैं जो दूर से सुनाई दे सकें, बिना किसी की सहायता के देर तक बोले जा सकें, कुछ मुँह खोल कर बोले जा सकें इत्यादि। मूल स्वर हैं :—‘अ-इ-उ-ऋ’ शेष स्वर इनके सम्मिश्रण से बने।

व्यञ्जन : वे वर्ण हैं जो स्वर से नज़दीक सुनाई दे सकते हैं। ध्वनि की दूर तक पहुँचाने में केवल स्वर ही शेष रह जायेगा।

संसार की भाषाओं में अन्तर

प्रथम महायुद्ध का १९१८ में अन्त हुआ। देश स्वतंत्र हुए। मानव परतंत्र हुआ। उसके आने-जाने की स्वतंत्रता पर रोक लगायी गयी। सम्पर्क कम होने लगे। राष्ट्रीय भाषाओं में कट्टरता आने लगी तो भाषाओं में परिवर्तन भी कठिन हो गये। अब जो कठिनाता सामने है, वह यह कि यदि मनुष्य चाहे कि एक देश के अक्षर देख कर वह उनका उच्चारण सही कर ले सो असम्भव है। क्योंकि एक अक्षर या वर्ण रोमन का ‘G’ है; कहीं इसको ध्वनि ‘ग’ है तो कहीं ‘ज’। इसी प्रकार ‘C’ है, कहीं यह ‘स’ का उच्चारण देती है और कहीं ‘क’ का। भाषा उसी समय सीखी जा सकती है जब उन्हीं लोगों के मध्य रहा जाये, जिनकी वह भाषा है। इस ओर कई प्रयत्न हुए हैं कि मानव एकता के लिए भाषा की एकता होना अनिवार्य है, परन्तु राष्ट्रवाद की कट्टरता के कारण तथा अन्य कठिनाइयों के कारण प्रयास सफल न हो सके।

पठनीय सामग्री

Bodmer	: Loom of the Language.
Diamond, A. S.	: History and Origin of Language.
Dutta, B.	: History of Language.
Graff, W. L.	: Language and Language.
Hall, Robert	: Introductory Linguistics.
Helene & Laird, C.	: Tree of Language.
Mehrotra, R. M.	: भाषा विज्ञान-सार।
Ministry of Education	: भाषा त्रैमासिक (भारत सरकार, नयी दिल्ली) सितम्बर १९६८।
Pathak, D. B.	: भाषा विज्ञान।
Tiwari, Dr. B. N	: भाषा विज्ञान।



लिपि

लिपि, भाषा का कुछ निर्धारित चिह्नों के रूप में प्रतिनिधि का कार्य करती है। संसार के निवासी अपने देश, काल व परिस्थिति के अनुसार आरम्भ से आज तक विभिन्न ध्वनियों के अनुसार चिह्नों का भी प्रयोग करते रहे। मानव विकास के साथ-साथ उन ध्वनियों का भी विकास होता रहा जो मनुष्य ने निर्धारित की थीं। इसी कारण इस परिवर्तनशील जगत में भाषा व लिपि में भी सदैव परिवर्तन होते रहे। परिवर्तन जीवन है और अपरिवर्तन मृत्यु। परिवर्तन से विकास, विकास से संघर्ष, संघर्ष से जीवन-उपयोगिता तथा जीवन-उपयोगिता से सुख व आनन्द प्राप्त होता है। यही क्रम आदि से अन्त तक चलता रहा है एवं चलता रहेगा। कोई प्राणी तथा वस्तु इस क्रम से बच नहीं सकते। हाँ, इतना अवश्य है कि पर्याप्त विकास के पश्चात् परिवर्तन की गति में कुछ शिथिलता दृष्टिगोचर होने लगती है। लिपि भी इस क्रम से अछूती न रह सकी।

लिपि की उपयोगिता

यदि संसार में लिपि न होती तो मनुष्य

- १—दूर स्थानों के लिए संदेश न भेज पाता।
- २—प्राचीनकाल की उपलब्धियों को सुरक्षित न रख पाता।
- ३—अनेक विषयों पर शोध व खोज न कर पाता।
- ४—कला, दर्शन, विज्ञान व शिल्प आदि की प्रगति न कर पाता।
- ५—भावी संतान को प्रगति की ओर अग्रसर न कर पाता।
- ६—अनेक विषयों के ग्रन्थों को सुरक्षित न कर पाता।
- ७—भाषाओं का विकास न कर पाता।
- ८—दूर के स्थानों में तथा अल्पकाल में विचारों का प्रसार न कर पाता।

भाषा व लिपि मानव विकास के अभिन्न अंग हैं। भाषा लिपि के बिना और लिपि भाषा के बिना जीवित नहीं रह सकती। लिपि भाषा की वाहन है। भाषा उसी वाहन द्वारा दूरी और काल (space and time) का मार्ग तय करती है। जब कभी किसी विजेता आक्रमणकारी ने किसी पराजित देश की सभ्यता व संस्कृति को नष्ट करना चाहा तो उसने सर्व प्रथम पराजित देश के अभिलेखालय तथा पुस्तकालय अग्नि के अर्पण किये। इस लिपि ने दूर दूर के देशों में एकता की भावना को जागृत किया है।

इतने लाभ होने पर भी एक-दो दोष भी हैं, जैसे लिपि के कारण मनुष्य अपनी स्मरण-शक्ति में कुछ कमी प्रतीत करने लगता है। जहाँ अच्छे विचारों का प्रसार शीघ्र होता है वहाँ बुरे विचार भी शीघ्र फैलते हैं।

लिपि की काल्पनिक उत्पत्ति

हमारी मान्यता के अनुसार संसार की प्रत्येक वह वस्तु जो हमारे लिए अज्ञेय है, वह ईश्वर, गॉड व खुदा के लिए ज्ञेय है। इसी कारण प्रत्येक मनुष्य, शिक्षित अथवा अशिक्षित, जब अपने ज्ञान की परिधि से बाहर

निकल जाता है तो 'भगवान् जाने' शब्दों का ही प्रयोग करता है। यही बात लिपि के सम्बन्ध में भी है। प्राचीन काल में जब भी कहीं कोई लिपि दिखाई दी और उस देश - वासी से जहाँ वह प्रचलित थी पूछा गया तो उसने वही उत्तर दिया 'भगवान् जाने' भगवान् चाहे जानता हो या न जानता हो, पर उसका अटल विश्वास था कि जो बात वह नहीं जानता, भगवान् अवश्य जानता है। इसी कारण प्राचीन काल में प्रत्येक देशवासी अपने किसी तात्कालिक देवता को ही लिपि का जन्मदाता मानता था, जो निम्नलिखित है :—

देश का नाम	लिपि का नाम	देवता का नाम	काल
१. मेसोपोटामिया	कीलाकार (Cuneiform)	नेबू (Nebu)	ई० पू० की २५वीं श०
२. मिस्र	हीरोग्लिफ्स (Hieroglyphs)	थॉथ (Thoth)	ई० पू० की २८वीं श०
३. चीन	चीनी	वेनचांग (Wenchang)	ई० पू० की १८वीं श०
४. भारत	ब्राह्मी	ब्रह्मा	ई० पू० की चौथी श०
५. फ़िनीशिया	उत्तर सेमिटिक	कैडमस (Cadmus)	ई० पू० की १२वीं श०
६. ग्रीस	ग्रीक	हर्मिस (Hermes)	ई० पू० की ११वीं श०
७. रोम	रोमन	मर्कुरी (Mercury)	ई० पू० की ५वीं श०
८. इस्राइल	हेब्रू	जेहोवा (Jehova)	ई० पू० की १३वीं श०
९. अरब	अरबी	अल्लाह, आदम के द्वारा	आदिकाल
१०. आयरलैण्ड	केल्टिक ओगम	ओगमा (Oghma)	तृतीय सदी

लिपि की प्रामाणिक उत्पत्ति

प्राचीन लिपियों के खोज का कार्य अठारहवीं शताब्दी से आरम्भ हुआ। यह खोज सभ्यता व संस्कृति के जन्मदाता प्राचीन देशों में, असभ्य देशों के अर्वाचीन विद्वानों ने अनेक कठिनायियों का सामना करते हुए की। पृथ्वी में दबे हुए तथा गूढ़ लिपियों में छिपे हुए प्राचीन इतिहास को प्रकाश में लाने का श्रेय, जो कभी भुलाया नहीं जा सकता, उन्हीं पाश्चात्य विद्वानों को है। उस प्राचीन इतिहास ने प्राचीन देशों के सम्मुख, अर्वाचीन वैज्ञानिक देशों को नतमस्तक कर दिया। विशेष रूप से प्राचीन लिपियों के रहस्योद्घाटन में विद्वानों ने अपना जीवन तक अर्पण कर दिया।

प्राचीन लिपियों के जन्म की प्रामाणिकता सिद्ध करने वाले निम्नलिखित विद्वान् हैं :—

देश का नाम	लिपि का नाम	विद्वान् का नाम	काल
१. मिस्र	हीरोग्लिफ्स	शम्पोलियाँ	१८१०
२. मेसोपोटामिया	कीलाकार	ग्रोट फेण्ड	१८०२
३. "	"	हेनरी रॉलिंग्सन	१८४५
४. भारत	ब्राह्मी	जेम्स प्रिंसेप	१८३७
५. फ़िनीशिया	उत्तरी सेमिटिक	ए० यच० गाडिनर	१९१६
६. सिनाइ	सिनायटिक	फ़िलण्डर्स पेट्री	१९०४
७. क्रीट	क्रीटन (लीनियर)	ऑर्थर ईवान्स	१९०५
८. हत्तूशा	हिती	ए० यच० सेसी	१८८०
९. इस्राइल	हेब्रू (प्राचीन)	लिज्बार्सकी	१८९५
१०. नबात	नबती एवं अरबी	नबिया एवॉट	१९३०

इस प्रकार सैकड़ों विद्वानों ने लिपियों की खोज व उनके रहस्योद्घाटन में अपना सारा जीवन अर्पण कर दिया। कुछ विद्वानों के नाम विख्यात हुए, परन्तु कितने ऐसे विद्वान् हुए होंगे जिन्होंने अपने को तो बलिदान कर दिया, परन्तु उनके नाम प्रकाश में न आ सके।

लिपियों का वर्गीकरण

जैसे जैसे प्राचीन लिपियाँ प्रकाश में आने लगीं, वैसे वैसे उनकी तुलनाएँ अन्य लिपियों के साथ होने लगीं। उन पर नये-नये शोध होने लगे तथा उनके वर्गीकरण भी किये जाने लगे, जो निम्नलिखित हैं :—

१. भ्रूण लिपि (Embryo writing) : यह लिपि लिपि नहीं थी। यह कुछ चित्र-थे, कुछ रेखाएँ थीं, जिनसे न तो किसी उद्देश्य का पता चलता है और न वे कुछ तांत्रिक या धार्मिक चित्र प्रतीत होते हैं। इस प्रकार के चित्र भिन्न-भिन्न देशों में लगभग बीस सहस्र वर्ष से दस सहस्र वर्षों के मध्य असभ्य निवासियों द्वारा उत्कीर्ण किये गये, जिनका विवरण निम्नलिखित है (फ० सं०-१)^१ :—

१. रंगीन पत्थर जो दक्षिणी फ्रांस से प्राप्त हुए।
२. प्राचीन चित्रकारी — स्पेन से प्राप्त हुई।
३. शिला पर उत्कीर्ण किये हुए — पुर्तगाल से प्राप्त हुए।
४. शिला पर उत्कीर्ण — इटली से प्राप्त हुए।
५. रेखा - गणितात्मक चिह्न — फिलिस्तीन से प्राप्त हुए।
६. रेखा - चित्र — क्रीट से प्राप्त हुए।
७. हाथी - दाँत पर अंकित चिह्न — मिस्र से प्राप्त हुए।
८. रेखा चित्र — मिस्र से प्राप्त हुए।
९. चट्टानों पर उत्कीर्ण रंगीन चित्र — अफ्रीका से प्राप्त हुए।
१०. चिह्न — कैलीफोर्निया (अमरीका) से प्राप्त हुए।
११. चिह्न — ऐरीज़ोना (अमरीका) से प्राप्त हुए।
१२. चिह्न — बहामा (कैरीबियन सागर) से प्राप्त हुए।
१३. चिह्न — ब्राज़ील (दक्षिण अमरीका) से प्राप्त हुए।
१४. चिह्न — आस्ट्रेलिया से प्राप्त हुए।

२. चित्रात्मक लिपि (Pictographic Script) : आदि काल में मनुष्य ने अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए अथवा कहीं दूर संदेश भेजने के लिए दैनिक जीवन की उपयोगी वस्तुओं के चित्रों को अंकित करके प्रयोग किया। चित्र के अर्थ उसी वस्तु तक सीमित थे। सूर्य के चित्र के अर्थ केवल सूर्य थे। यह स्थिति प्रत्येक उस प्राचीन सभ्य देश में थी, जहाँ किसी प्रकार की लिपि ने जन्म लिया। आज भी इस लिपि का प्रयोग चालक के लिए मार्ग — चिह्नों द्वारा तथा अन्य कार्यों के लिए किया जाता है। (फ० सं० - २)

३. सूत्रात्मक लिपि : कुछ प्राचीन देशों में रस्ती में गाँठें डाल कर संदेश भेजने का कार्य होता था। अफ्रीका, पीरू (दक्षिण अमरीका) तथा चीन में इसके प्रमाण मिले हैं। अन्य देशों में भी यह प्रचलित हो सकती है, परन्तु प्रमाण नहीं मिलते। आज भी स्काउटिंग में इसकी उपयोगिता बतलायी जाती है। इन्का जाति

१. इनमें कर्मांक लेखक ने दिये हैं।

भ्रूण लिपि

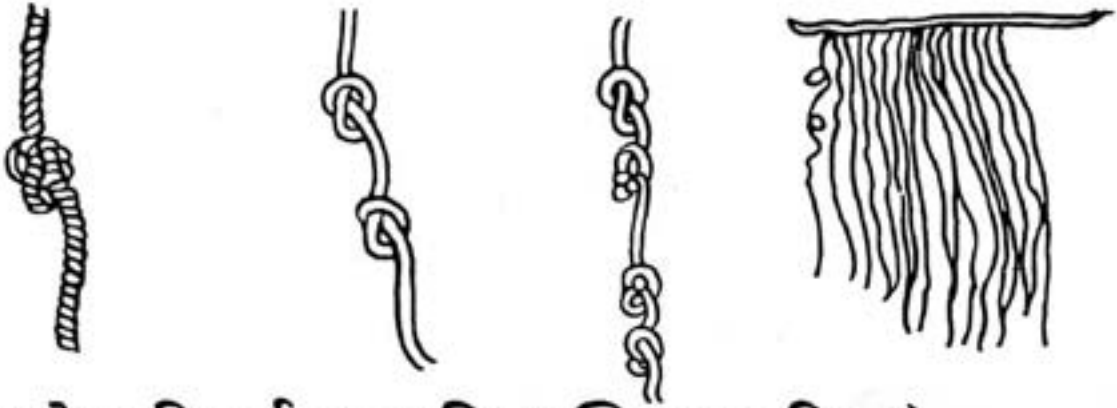


फलक संख्या - १

चित्रात्मक लिपि

पेड़ से फल तोड़ा	कुत्ता बिल्ली पर भौंका				
आदिकाल में मानव के चित्र मानव द्वारा					
बायां	मोड़	हार्न नहीं	है	← रेल फाटक → नहीं	सीधा
स्कूल . धूम्रपान निषेध .	गढ़ा है . खतरा				

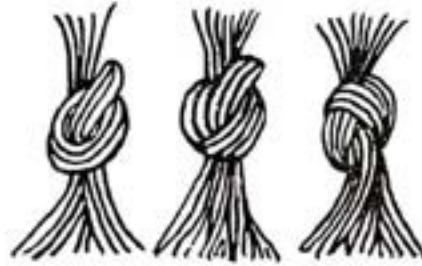
सूत्रात्मक लिपि



पीरु देश की कुईपस पद्धति (दक्षिण अमरीका)



मार्ग साफ है



इधर खतरा है

घास
में
गाठें

भावात्मक लिपि



आंख=देखना



पैर=चलना



डण्डा=पीटना



आंसू=रोना



आकाश



वर्षा



आकाश-देवता

के पीरू - निवासी रेड इण्डियन लगभग नवीं श० में गाँठों का प्रयोग करते थे। लाल डोरी के अर्थ सैनिक, पीली डोरी के अर्थ स्वर्ण, सफ़ेद डोरी के अर्थ चाँदी तथा हरी डोरी के अर्थ अनाज होते थे। डोरी की एक गाँठ = १०, दो गाँठें = २०, एक दोहरी गाँठ = १०० तथा दो दोहरी गाँठें = २०० के अंक होते थे। इसको कुईपस कहते हैं। (फ० सं० - ३)

४. भावात्मक या संकेतात्मक लिपि (Ideographic Script) : लिपि के विकास में जब मनुष्य आगे बढ़ा तब वही दैनिक वस्तुओं के चित्र अब एक भाव या संकेत प्रकट करने लगे। उदाहरणार्थ सूर्य का चित्र पहले केवल सूर्य का ही सूचक था, परन्तु अब दिन, गर्मी तथा प्रकाश का भी सूचक होने लगा। आकाश का तारा अब केवल तारा न रहकर आकाश का भी सूचक होने लगा। चित्र के भावार्थ निर्धारित किये जाने लगे, ताकि संदेश लिखे जा सकें और भेजे जा सकें। इसमें एक चित्र का एक ही भाव या संकेत निर्धारित किया गया, परन्तु कहीं एक से अधिक अर्थों का भी प्रयोग हुआ। लगभग प्रत्येक प्राचीन सभ्य देश में इस लिपि का प्रयोग चलता रहा। (फ० सं० - ३)

५. ध्वन्यात्मक लिपि (Phonetic or Phonographic Script) : यह एक महान् तथा दुर्लभ कार्य था — शब्द के लिए चिह्न निर्धारित करना। मानव के विकास के साथ मानव की आवश्यकताएँ बढ़ीं। आवश्यकताएँ बढ़ीं तो उनका उत्पादन बढ़ा, उत्पादन बढ़ाने के साधन बढ़े और हर क्षेत्र में प्रगति होने लगी। आदि काल में मानव के दैनिक जीवनोपयोगी यदि दस वस्तुएँ थीं, तो अब अस्सी या नब्बे हो गयीं। इस कारण जब आरम्भिक शब्द अपर्याप्त होने लगे तो मानव ने उन शब्दों की वृद्धि करने के बजाय अक्षरों की पद्धति का आविष्कार किया।

यह आविष्कार एक देश में हुआ अथवा कई देशों में — यह समस्या अभी तक सुलझ नहीं सकी। पक्ष तथा विपक्ष में बोलने वाले विद्वान् अभी तक एकमत नहीं हैं। कई देशों में आरम्भ होने के प्रमाण उपलब्ध न होने के कारण अभी यही माना जाता है कि सर्वप्रथम इस ओर मिस्र देश के प्राचीन निवासियों ने एक २४ अक्षर वाली (व्यंजन थे, स्वर नहीं) लिपि का निर्माण ई० पू० लगभग अठ्ठाईसवीं श०^१ में किया, परन्तु वह अन्य देशों द्वारा न अपनायी गयी और न उसमें आगे कोई प्रगति हुई। इस कार्य में मिस्र के पड़ोसी देश फ़िनीशिया ने इतनी सफलता पायी कि आज लगभग सभी देश (चीन, जापान, भारत आदि को छोड़कर) उसी देश की लिपि के परिवर्तित रूप का प्रयोग कर रहे हैं।

इस लिपि का जन्म लगभग ई० पू० की पन्द्रहवीं श० में हुआ, जिसे हम आज 'उत्तरी सेमिटिक लिपि' कहते हैं और जिसमें केवल २२ व्यंजन — वर्णों का निर्माण किया गया। ध्वन्यात्मक लिपि द्वारा चित्रों में ध्वनि का प्रवेश कराया गया। एक चित्र का अमुक भाग लिया तथा उस चित्र के तात्कालिक नाम की पहली अथवा बाद की ध्वनि लेकर निर्धारित कर दिया। उदाहरणार्थ इस लिपि का पहला अक्षर लीजिये, जिसका नाम अलिफ़ है। अलिफ़, अलिप या अलपू से बना, जिसका अर्थ मिस्र की भाषा (अलिप) तथा असीरिया की भाषा (अलपू) में बेल होते हैं। अब इस अलिप या अलपू के चित्र का एक भाग अर्थात् 'सिर' ले लिया तथा उस शब्द की ध्वनि का पहला उच्चारण 'अ' ले लिया, तो बेल के सिर की ध्वनि हो गयी 'अ' तथा अक्षर का नाम हो गया अलिफ़। इसी प्रकार 'बेथ' अर्थात् घर के एक भाग का चित्र (कक्ष या कमरा) ले लिया और

१. निश्चित रूप से कहना कठिन है।

चित्रों और ध्वनियों का योग = ध्वन्यात्मक

चित्र	आधु. नाम	प्राचीन नाम	वर्ण	ध्व नि	चित्र	आधु. नाम	प्राचीन नाम	वर्ण	ध्व नि
	बैल	अलिफ	✕	अ		हथेली	कफ	ॢ	क
	घर का कमरा	बेथ	३	ब		अंकुश	लमेद	७	ल
	कुंठ गर्दन	जमल गमल	२	ज ग		पानी	मीम	ॣ	म
	द्वार	दलेश	△	द		मछली सांप	नून नहन	॥	न
	खिड़की	एइ	⋈	इ		आंख	ऐन	○	अ
	हुक	वाव	Y	व		मुंह	पी	७	प
	अहाता	हीथ	卩	ह		सिर	रास रेश	१	र
	हंसिया	ज़ाजिन	⌒	ज़		दांत	शिन सिन्न	W	श
	हाथ	योध	ॢ	य ज		निशान	ताव	+	त

उस शब्द की पहली ध्वनि 'ब' ले ली। अब दूसरे अक्षर का नाम बेध पड़ गया, ध्वनि 'ब' हो गयी। इस पद्धति को एक्रोफोनी पद्धति (**Acrophony System**) कहते हैं।

इस लिपि में स्वर न होने के कारण एक शब्द को कई प्रकार से उच्चरित किया जा सकता था। जैसे यदि 'बक' लिखा जाये तो इसको बिक, बुक, बेक, बकी, बीक, बोक कितने प्रकार से पढ़ सकते हैं और हर प्रकार के पढ़ने से अनेक अर्थ निकाले जा सकते हैं। इसमें चाहें जितनी त्रुटियाँ हों, परन्तु प्रयास आश्चर्यजनक था। एक और बात ध्यान देने योग्य है। चित्रात्मक व भावात्मक लिपियों में चित्र या चिह्न किसी वस्तु या भाव को प्रकट करते हैं, जब कि ध्वन्यात्मक लिपि में चिह्न किसी वस्तु या भाव को न प्रकट कर केवल ध्वनि को प्रकट करते हैं और उन ध्वनियों के आधार पर किसी वस्तु या भाव का नाम लिखा जा सकता है।

इस ध्वनि - मूलक लिपि के पुनः तीन भेद किये जा सकते हैं :— अक्षरात्मक (**Syllabic**), वर्णात्मक (**Alphabetic**) और रेखाक्षरात्मक (**Logographic**)।

अक्षरात्मक लिपि

इस लिपि में चिह्न किसी अक्षर (**Syllable**) को व्यक्त करते हैं। उदाहरणार्थ, नागरी लिपि को लें। यह अक्षरात्मक है, क्योंकि इसके अक्षरों में दो वर्ण मिले होते हैं; जैसे 'क' में क् + अ या 'ब' में ब् + अ अर्थात् अक्षर स्वरांत है। अब रोमन लिपि को लें। इसमें 'क' की ध्वनि के लिए 'K' है, 'ब' की ध्वनि के लिए 'B' है। यह लिपि प्रयोग में तो सामान्यतया ठीक लगती है, परन्तु भाषा - विज्ञान - वेत्ता जब ध्वनियों का विश्लेषण करते हैं तो इसकी कमी को स्पष्ट कर देते हैं।

हिन्दी में 'बल' शब्द लिखने में ज्ञात नहीं होता कि इसमें कौन से वर्ण हैं, परन्तु रोमन में लिखने से तुरन्त पता लग जाता है, जैसे 'BAL' तो इसमें तीन वर्ण हुए। इस प्रकार अरबी फ़ारसी, बंगला, गुजराती, पंजाबी, तेलुगु तथा उड़िया अक्षरात्मक लिपियाँ हैं।

वर्णात्मक लिपि

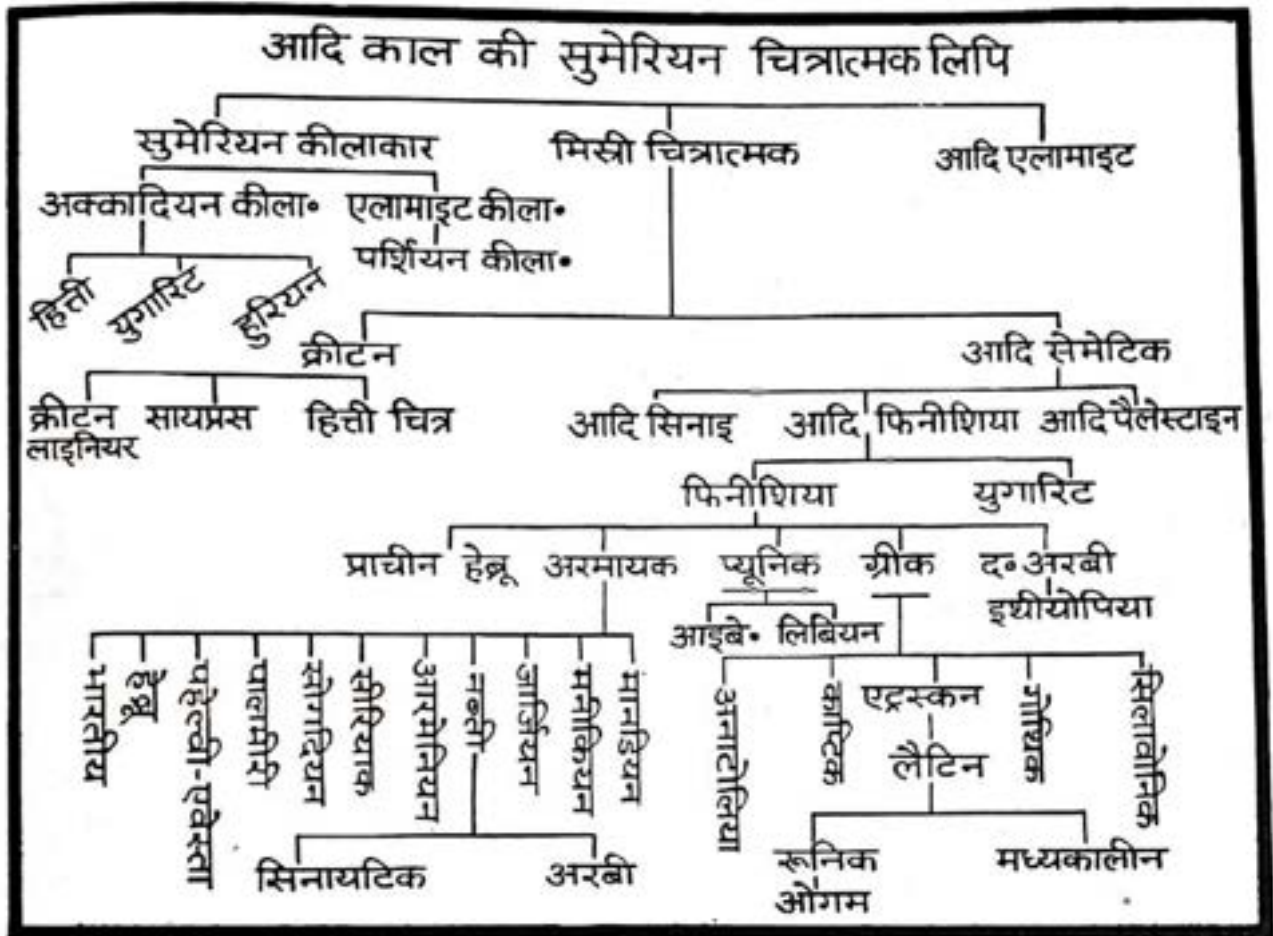
लिपि की प्रथम सीढ़ी चित्रात्मक लिपि है और अन्तिम सीढ़ी वर्णात्मक लिपि है। इस लिपि में ध्वनि की प्रत्येक ईकाई के लिए पृथक् चिह्न निर्धारित किये गये हैं। भाषा - विज्ञान की दृष्टि से यह आदर्श लिपि है। रोमन लिपि इसका प्रतीक है।

रेखाक्षरात्मक लिपि

इसमें हर शब्द के लिए तथा हर ध्वनि के समावेश के लिए पृथक् रेखाचित्र निर्धारित कर दिये गये हैं। इसके अन्तर्गत चीनी एवं जापानी लिपियाँ आती हैं। परन्तु जापान ने अपनी लिपि को सरल बनाने के लिए वर्णों का निर्माण किया है।

लिपि का कौटुम्बिक वर्गीकरण — जिस प्रकार मानव जाति का वर्गीकरण हुआ, भाषा का वर्गीकरण हुआ, उसी प्रकार लिपियों का वर्गीकरण भी विद्वानों ने किया है। यहाँ आई० जे० गेल्ब (I. J. GELB) द्वारा किया गया वर्गीकरण फ० सं० — ५ पर दिया गया है। इन्होंने लिपियों का मूल स्रोत सुमेर की रेखाओं को माना है, जिनका उद्भव लगभग ४००० ई० पू० के माना है। इस विचार पर बहुत से लिपि - विशेषज्ञ एकमत नहीं हैं, परन्तु लिपि का उद्भव कहीं से तो मानना ही पड़ेगा। इस कारण अस्थायी रूप से इसी विचार

को मान्यता प्रदान कर दी गयी है। हो सकता है कि भविष्य में पुरातत्त्व - वेत्ताओं के सर्वेक्षण तथा अन्वेषण इस को सुलझाने में उपयोगी सिद्ध हों।



पुरातत्त्व

आर्कैयोलॉजी (Archaeology) ग्रीक भाषा का शब्द है। ग्रीक भाषा में आर्कैयास (Archaïos) के अर्थ हैं 'प्राचीन' तथा आर्के (Arche) के अर्थ हैं 'आरम्भ' और लोगस (Logos) के अर्थ हैं 'वार्तालाप' इसका अर्थ हुआ 'मानव के आदिकाल के परीक्षण पर वार्तालाप' और भावार्थ हुआ 'अतीत के ज्ञान का प्रयास तथा परीक्षण'। 'पुरातत्त्व' मानव के आदि से अन्त तक के विषय में प्रकाश डालता है और उसके जीवन के परिवर्तन, विकास तथा पतन के विषय में खोज करता है।

पुरातत्त्व का इतिहास उन लुटेरों के फावड़ों से आरम्भ होता है, जो उन्होंने प्राचीन शासकों के कोषा - गारों की खोज में चलाये, जिनके विषय में उन्होंने बहुत कुछ सुन रखा था। कुछ दूसरे प्रकार के भी लुटेरे थे, जो अनोखी वस्तुओं (Curios) की खोज में पृथ्वी के वक्षस्थल को चोरा करते थे। इस प्रकार के कार्य मिस्र व मेसोपोटामिया में बहुत दिनों तक चलते रहे।

१७९८ में जब नैपोलियन का मिस्र में आगमन हुआ तो उसके एक सैनिक पदाधिकारी को नील नदी के डेल्टा में स्थित रोसेटा में एक काला शिला - खण्ड प्राप्त हुआ। इस शिला - खण्ड पर एक ही लेख तीन लिपियों में उत्कीर्ण था। यह शिलालेख रोसेटा शिला - खण्ड (Rosetta Stone) के नाम से पुरातत्त्व जगत में प्रसिद्ध हुआ। तभी से पुरातत्त्व का दृष्टिकोण परिवर्तित होने लगा। अब पुरातत्त्व में केवल खजानों व अनोखी वस्तुओं की खोज करना नहीं रहा परन्तु मानव के अतीत के विषय में खोज करना हो गया। रोसेटा के शिलालेख को एक अठारह वर्षीय फ्रांस - निवासी अध्यापक शैम्पोलियाँ (Champollion) ने देखा और उस शिलालेख के उत्कीर्ण चित्रों पर अपना शोध आरम्भ कर दिया। कई वर्षों के अथक परिश्रम करने के पश्चात् उसने केवल उस शिलालेख के गूढ़ाक्षरों का रहस्योद्घाटन ही नहीं किया वरन् उन अक्षरों का एक शब्दकोष भी तैयार किया, जो उसके भाई ने उसके मरणोपरांत प्रकाशित करवाया तत्पश्चात् संसार के विद्वानों की आँखें खुलीं। वे सब इस कार्य से बड़े प्रभावित हुए तथा इतने प्रोत्साहित हुए कि उन्होंने मानव के अन्ध - कारमय अतीत को प्रकाश में लाने का संकल्प कर लिया। भिन्न भिन्न क्षेत्रों के विद्वान् उत्खनन कार्य में जुट गये।

शनैः शनैः उत्खनन कार्य बड़े वैज्ञानिक ढंग से होने लगा। पुरातात्विक उत्खनित सामग्री (घरेलू वस्तुएँ, हथियार, औजार, आभूषण, अभिलेख, सिक्के, मुद्राएँ, अंकित मिट्टी के ठीकरे, पत्थर व ताँबे की पाटियाँ, मिट्टी के खिलीने व बर्तन, लकड़ी का सामान, अनाज कंकाल आदि) का परीक्षण होने लगा। उन वस्तुओं पर शोध होने लगा। विभिन्न स्थानों के उत्खनित पदार्थों की समानता - असमानता पर शोध व खोज होने लगी।

कार्बन - १४ द्वारा काल-निर्धारण

पौराणिक व धार्मिक घटनाओं का काल - निर्धारण, प्रमाणों पर कम और अनुमानों पर अधिक आधारित होता है तथा वैज्ञानिक काल - निर्धारण प्रमाणों पर अधिक और अनुमानों पर कम आधारित होता है परन्तु दोनों तरीकों से ईसा के पूर्व की घटनाओं का सही रूप नहीं निकल पाता। कभी कभी तो पुरातत्त्व-वेत्ताओं के काल - निर्धारण में तथा धार्मिक पण्डितों के काल - निर्धारण में जमीन आसमान का अन्तर आ जाता है।

आखिर कैसे मालूम हो कि यह वस्तु जो खुदाई में निकली है, कितनी प्राचीन है। नोबिल - पुरस्कार विजेता डब्ल्यू० एफ० लिब्वी (W. F. Libby) ने इस समस्या का हल १९४९ में अपने शोध व अथक परिश्रम से निकाल ही लिया जिसका आधार है रेडियो कार्बन। इसी की एक प्रयोगशाला बम्बई के टाटा इन्स्टीट्यूट ऑफ फ़ण्डामेंटल रिसर्च (Tata Institute of Fundamental Research)¹ में १९६१ में स्थापित हुई। इस पर लगभग २५ लाख रुपये व्यय किया गया।

यह बात विज्ञान के सभी विद्यार्थी जानते हैं कि सारे द्रव्य परमाणुओं द्वारा संरचित हैं। जिस प्रकार सूर्य के चारों ओर नक्षत्र प्रदक्षिणा करते रहते हैं, उसी प्रकार से द्रव्य के सूक्ष्मतम कण परमाणु में न्युक्लियस (Nucleus) के चारों ओर इलेक्ट्रॉन (Electron) चक्कर लगाते रहते हैं। स्वयं न्युक्लियस प्रोटॉन (Proton) एवं न्यूट्रॉन (Neutron) से रचित होता है। परमाणु का समस्त भार न्युक्लियस में सीमित रहता है।

कार्बन में छः इलेक्ट्रॉन और छः प्रोटॉन होते हैं। स्थायी रूप में छः या सात न्यूट्रॉन होते हैं, परन्तु यदि दो अतिरिक्त न्यूट्रॉन पहुँचाये जायें तो प्रोटॉनों और न्यूट्रॉनों की संख्या चौदह हो जाती है। इस न्युक्लियस को कार्बन - १४ (Carbon - 14; C^{14}) कहा जाता है। स्थायी रूप वाला न्युक्लियस कार्बन - १२ के नाम से जाना जाता है। प्रत्येक तत्त्व की रेडियो ऐक्टिविटी (Radio Activity) का रेट (rate) निश्चित है। किसी भी रेडियो - ऐक्टिव तत्त्व के प्रारम्भिक परमाणुओं के क्षय होकर आधा रह जाने के समय को उस तत्त्व की 'अर्धायु' (Half Life) कहा जाता है। रेडियो कार्बन की अर्धायु ५७३० वर्ष है।

अब यह विदित है कि हमारा वायुमण्डल तीव्र गति से चलने वाली ब्रह्माण्डीय किरणों द्वारा आच्छादित है। वस्तुतः ये किरणें न्युक्लियस कण होते हैं। इन्हीं किरण रूपी कणों के वायुमण्डल में विचरण से न्यूट्रॉनों की उत्पत्ति होती है। मन्द पड़ने पर जब यह न्यूट्रॉन नाइट्रोजन (Nitrogen) के न्युक्लियस पर प्रघात करते हैं तो वायुमण्डल के ऊपरी हिस्सों में कार्बन - १४ परमाणु उत्पन्न होते हैं। कार्बन - १४ के ये परमाणु ऑक्सीजन (Oxygen) के परमाणुओं से मिलकर साधारण कार्बन की तरह ही कार्बन - डाई - आक्साइड

1. लेखक ने स्वयं बम्बई जाकर इन्स्टीट्यूट के कार्बन १४ विभाग के अध्यक्ष डॉ० धर्मपाल अग्रवाल से सन् १९७१ में भेंट की तथा कार्बन डेटिंग के विषय में विस्तार से समझा। उसी आधार पर यह पाठ लिखा गया है।

(Carbon - Di - Oxide) के अणुओं की रचना करते हैं। वायुमण्डल में प्रत्येक कार्बन - १४ परमाणु के लिए आठ खरब साधारण कार्बन - १२ के परमाणु मौजूद रहते हैं अर्थात् कार्बन - १४ और कार्बन - १२ का अनुपात १ और ८, ००, ००, ००, ००, ००० का है और चूँकि पौधे (और पौधों द्वारा मनुष्य व पशु) अपना भोजन इसी कार्बन - डाई - आक्साइड से प्राप्त करते हैं, इस कारण उनमें भी यही अनुपात कार्बन - १४ और कार्बन - १२ का विद्यमान रहता है।

पौधे अथवा जानवर की मृत्यु हो जाने पर उसमें कार्बन - १४ का प्रवेश नहीं हो पाता अर्थात् वायु - मण्डल से कोई सम्बन्ध न रह जाने के कारण उसमें कार्बन - १४ का पदार्पण नहीं हो पाता। इस प्रकार पौधे अथवा जानवर के अवशेषों में प्रारंभ में कार्बन - १४ और कार्बन - १२ का अनुपात वायुमण्डल के अनुपात जितना ही होता है। लेकिन रेडियो ऐक्टिविटी होने के कारण कार्बन - १४ परमाणु तुरन्त क्षय होने लगता है। अब अगर यह जानना हो कि किसी टीले के भीतर दवा चारकोल (Charcoal) या कोयला कितना पुराना है, तो हमें यह जानना होगा कि इस कोयले में कार्बन - १४ कितनी मात्रा में बच गया है। जब जीवित था, तब कार्बन - १४ की क्षय दर, जो ५७३० वर्षों में कार्बन - १४ अपनी प्रारम्भिक मात्रा का आधा रह जाता है, भी मालूम है।

अब सबसे पहले रेडियो ऐक्टिविटी का नापना है। यह बड़ा कष्ट - साध्य कार्य है। इसके लिए बहुत जटिल तकनीकों का प्रयोग करना आवश्यक हो जाता है। नमूनों को, जिनका काल निर्धारित करना होता है, मिथेन गैस में बदलना पड़ता है तथा इसके पूर्व अनुपयोगी वस्तुओं को नमूने से अलग करना पड़ता है तथा बड़ी कठिनाई एवं उपचारों से उन वस्तुओं को ब्रह्माण्ड की किरणों से बचाना पड़ता है। यदि कहीं उत्खनन कार्य करते समय वह नमूना किसी प्राणी द्वारा छू जाये तो कार्बन के अनुपात में अन्तर आ जायेगा और सारा परिश्रम बेकार हो जायेगा। इसी कारण ऐसी वस्तुओं को प्रयोगशाला भेजने से पहले बड़ी सावधानी से रखना पड़ता है।

रेडियो ऐक्टिविटी का एक बार मापन हो जाने से नमूने का काल - निर्धारण करना कठिन नहीं रह जाता। यदि आरम्भ की रेडियो ऐक्टिविटी से वाद की आधी रह जाती है तो पता लग गया कि नमूना ५७३० वर्ष पुराना है। यदि उसकी सक्रियता चौथाई रह गयी है तो 2×5730 वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। इसी प्रकार सक्रियता आठवाँ भाग रह गयी है तो नमूना 4×5730 वर्ष पुराना माना जायेगा।

उत्खनन द्वारा प्राप्त सामग्री में कुछ ही पदार्थ ऐसे होते हैं जिन पर परीक्षण किया जा सकता है। उदाहरणार्थ चारकोल, सुरक्षित लकड़ी, सड़ी हुई लकड़ी, बाल, खाल, चमड़ा, सूती कपड़ा, सुरक्षित समुद्री घोंघे या कौड़ियों के ढाँचे, हड्डियाँ और दाँत। इन नमूनों का परीक्षण इस प्रकार लिखा जाता है : 95.6 ± 0.9 डी० पी० यम० (disintegrations per minute) जिसमें सम्भव त्रुटि ± 0.9 d. p. m. हो सकती है। इसी कारण परीक्षण के पश्चात् का काल यदि 4700 ± 950 वर्ष निर्धारित किया गया है तो इसका अर्थ यह होगा कि नमूना ४४०० और ५००० वर्ष पुराना है^१।

काल - निर्धारण की यह वैज्ञानिक पद्धति भी आलोचना से बच न सकी। इंग्लैण्ड के कई विद्वानों ने कार्बन - १४ के कई काल - निर्धारणों की तिथियों को ग़लत सिद्ध कर दिया। फिर भी संसार के पुरातत्त्व - वेत्ताओं में कार्बन - १४ का परीक्षण सर्वमान्य है।

□

१. डॉ० धर्मपाल अग्रवाल की सौजन्यता से।



प्राचीन इतिहास

अब तक के प्राचीन इतिहास धार्मिक एवं पौराणिक कथाओं के अप्रामाणिक प्रमाणों पर आधारित थे, परन्तु आज प्राचीन इतिहास को प्रामाणिक बनाने के लिए पुरातत्त्व, प्राचीन अभिलेख तथा काल - निर्धारण के लिए कार्बन - १४ उपस्थित हैं। फिर भी अनुमानों के, धार्मिक विश्वासों के, राष्ट्रीय विचारों के समावेश का स्थान इतिहासकार को मिल ही जाता है, जहाँ वह अपने पक्षपाती विचारों से प्राचीन इतिहास की सच्चाई को समाप्त कर देता है। उसको ऐसे रंग में रंग देता है, जिनसे भावी पीढ़ी के नवयुवकों में एकता व सहयोगिक वृत्ति के स्थान पर पृथक्ता व असहयोगिक वृत्ति पनपने लगती है और मानव कल्याण के स्थान पर अकल्याण होने लगता है।

विज्ञान की इतनी प्रगति होने पर भी प्राचीन इतिहास के लिए इतनी पर्याप्त सामग्री नहीं मिल पाती है, जिसके द्वारा इतिहासकार उसको पूरा कर सके। प्राचीन इतिहास में मतभेद के निम्नलिखित कारण हैं :—

१. शिलालेखों, सिक्कों, मुद्राओं तथा अन्य अभिलेखों के रहस्योद्घाटनों में, उनके लिप्यन्तरणों में तथा भाषान्तरणों में अंतर हो जाता है, क्योंकि यह कार्य भिन्न - भिन्न देशों में भिन्न - भिन्न भाषा - भाषी करते हैं। इस अंतर के कारण इतिहास की दिशा ही परिवर्तित हो जाती है और वह तथ्य से दूर चला जाता है।

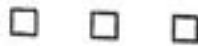
२. प्राचीन अभिलेख श्रृंखला - वद्ध नहीं होते।

३. प्राचीन अभिलेखों में घटनाओं की तिथियों को पढ़ने में तथा उनको ईसवी संवत् में परिवर्तन करने में, जो विभिन्न विद्वानों द्वारा किया जाता है, अन्तर पड़ जाता है।

४. प्राचीन नामों व अर्वाचीन नामों में अन्तर पड़ने से मतभेद उत्पन्न हो जाते हैं।

५. कार्बन - १४ के परीक्षण में त्रुटि के कारण या नमूने की भले प्रकार सुरक्षा न होने के कारण काल-निर्धारण में बड़ा अंतर पड़ने से इतिहास के विद्वानों में मतभेद हो जाता है।

प्राचीन इतिहासकार को संकीर्ण विचारों से दूर होकर अपने हृदय को विशाल तथा मस्तिष्क को व्यापक रखना चाहिए ताकि वह न केवल उस देश का, जिसका वह निवासी हो, बल्कि विश्व का भला कर सके।



अध्याय : २
दक्षिण एशियाई देशों की
लेखन कला का इतिहास

सिन्धु घाटी

पुरातत्त्व विज्ञान का सूर्योदय होने से पूर्व भारत का प्राचीन इतिहास धार्मिक कथाओं तथा पौराणिक वंशावलियों पर निर्भर करता था। धर्म को, प्रमाण नहीं, विश्वास की आवश्यकता होती है। विश्वास को तर्क की नहीं, धर्म - शास्त्रों के ज्ञान की आवश्यकता होती है। रामायण व महाभारत, वेद व उपनिषद् आदि ग्रन्थों का काल आज तक पुरातत्त्व - वेत्ता तथा इतिहासकार, प्रमाणों के अभाव में, निर्धारित नहीं कर सके। भारतवासियों को उनकी ऐतिहासिकता का प्रमाण नहीं, अपितु उनकी दार्शनिकता का ज्ञान चाहिए जो उनके जीवन को आनन्द तथा आत्मा को मोक्ष प्रदान करता है, परन्तु विज्ञान को प्रमाण चाहिए। यही कारण था कि हमारा प्रमाणित प्राचीन इतिहास ई० पू० की छठी शताब्दी के पूर्व ज्ञात नहीं हो सका।

ऐतिहासिक घटना

मोहेंजो - दड़ो के पुरातात्विक महत्त्व का ज्ञान अकस्मात ही हुआ। पुरातत्त्व के उच्च - पदाधिकारी स्व० राखल दास बनर्जी पाँच वर्षों से उन बारह स्तम्भों की खोज में घूम रहे थे जो सिकन्दर ने भारत से प्रस्थान करते समय अपनी कीर्ति के लिए यहाँ स्थापित करवाये थे। १९२२ के शीतकाल में घोड़े पर शिकार खेलते समय रास्ता भूल जाने के कारण वे एक टीले पर जा पहुँचे। दैवयोग से उनको एक चकमक पत्थर (Flint) दिखाई पड़ा। उन्होंने अनुमान लगाया कि इस भू - गर्भ में कुछ प्राचीनता अवश्य दबी पड़ी है। वहीं पर कुषाण - कालीन बौद्ध स्तूप भी था। उत्खनन करने पर एक प्राचीन नगर की एक नहीं, सात परतें निकलीं तथा जो सामग्री मिली वह पूर्णतया नये प्रकार की थी। सर जॉन मार्शल के निरीक्षण में यह उत्खनन कार्य सम्पन्न हुआ तदनन्तर ई० जे० एच० मैके के निदेशन में १९३२ तक यह कार्य चलता रहा। यह सिन्धु नदी के पश्चिम की ओर सिन्धु प्रांत के लारकाना जिले (वर्तमान पाकिस्तान) में स्थित है। इस नगर का नाम मोहेंजो - दड़ो अर्थात् 'मुर्दों की समाधि' अथवा 'मुर्दों का नगर' था।

मोहेंजो - दड़ो से लगभग ४०० मील उत्तर, रावी के पूर्वी किनारे पर मॉन्टगुमरी जिले (पाकिस्तान) में पुरातत्त्व विभाग के उप - निदेशक स्व० दयाराम साहनी ने १९२१ में उत्खनन कार्य आरम्भ किया तदनन्तर माधव स्वरूप बत्स ने भी किया। इस प्राचीन नगर का आधुनिक नाम हड़प्पा था। इसका प्राचीन नाम हरीयुपा (हरीत = स्वर्ण; युपा = स्तम्भ अर्थात् स्वर्ण स्तम्भों का नगर) जिससे हरप्पा तथा हड़प्पा हुआ।

इन दो प्राचीन नगरों के अतिरिक्त कुल्लि (बलूचिस्तान - पाकिस्तान), कालीबंगन (राज०), लोथल व रंगपुर (गुजरात), आलमगीर पुर (उत्तर प्रदेश) तथा अन्य कई स्थानों में उत्खनन कार्य सम्पन्न हुए।

केन्द्रीय पुरातत्व विभाग के भूतपूर्व निदेशक श्री बी. बी. लाल के कथनानुसार सिन्धु — घाटी की सभ्यता केवल दो नगरों तक ही सीमित न थी अपितु सारे पश्चिमी भारत व दक्षिण-पश्चिमी भारत में विद्यमान थी ।

इतिहास

इन स्थानों के उत्खनन से कई प्रकार के ताम्रपत्र, मिट्टी के चित्रांकित बर्तन, स्वर्णभूषण, मूर्तियाँ, अस्त्र-शस्त्र, वस्त्र, मानव — कंकाल, मुद्राएँ तथा अन्य विविध पुरातात्विक सामग्री प्राप्त हुई, जिसने संसार को आश्चर्य — चकित कर दिया । खुदाई से इस बात का भी पता लगा कि इन नगरों में मकान पक्की ईंटों के दो-मंजिले बने थे तथा इन में पक्की सड़कें, स्नानागार, अनाज रखने की कोठियाँ, शिक्षालय आदि भी बने थे ।

इन सब प्रयत्नों के फलस्वरूप देश — विदेश के विभिन्न विद्वानों को एक असीम प्रेरणा मिली, जिससे उन्होंने सिन्धु — घाटी — सभ्यता के विषय में अपने अपने क्षेत्रों (इतिहास, मानव — विज्ञान, कला, लिपि, संस्कृति आदि) में शोध व खोज करना आरम्भ कर दिया । विद्वान् अब भी उसी तत्परता से अपने कार्य में संलग्न हैं ।

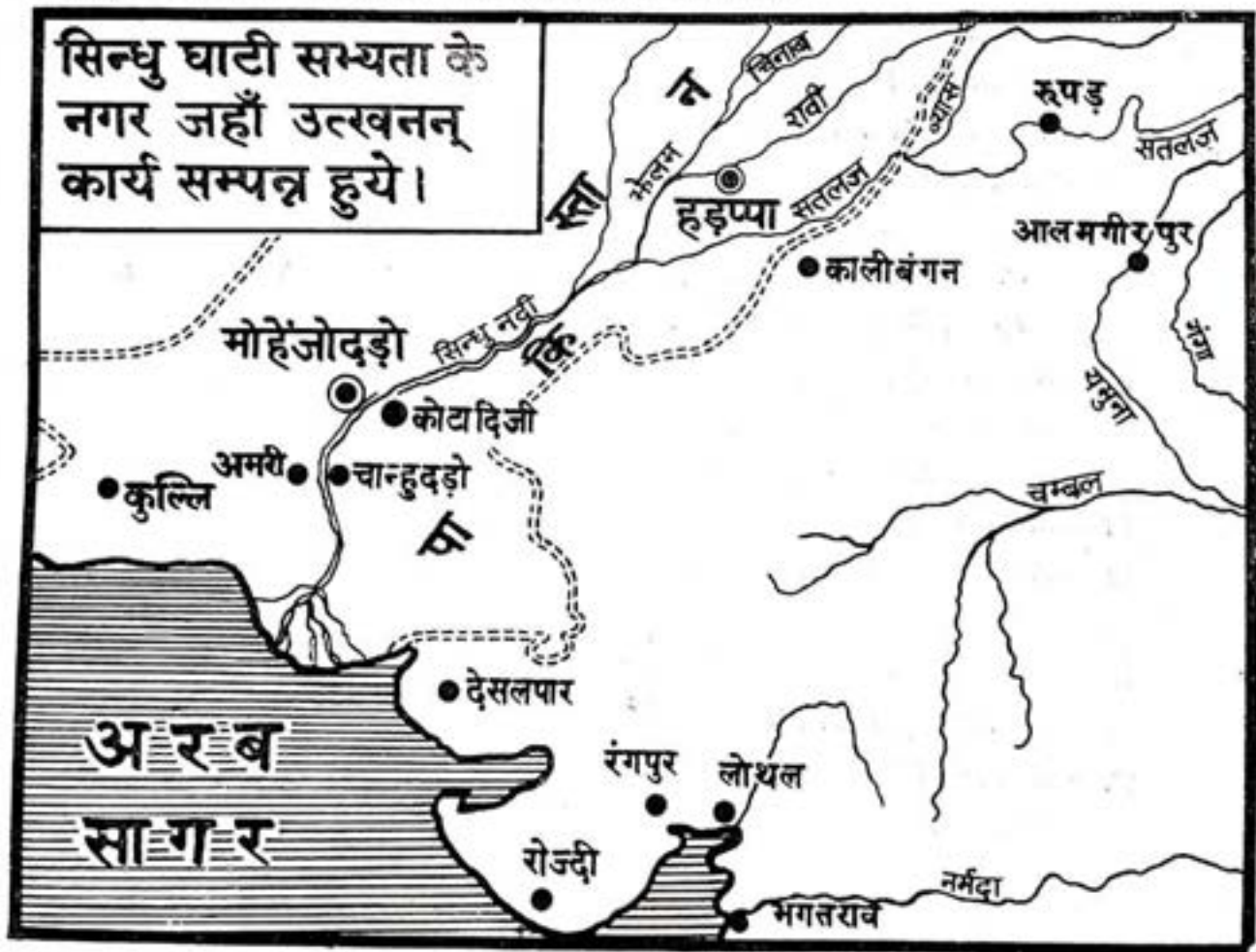
अब प्रश्न उठता है कि सिन्धु — घाटी के लोग कौन थे, कहाँ से आये जो आज से लगभग पाँच सहस्र वर्ष पूर्व असभ्यता के युग में भी इतने सभ्य थे । इतिहासकारों ने तथा अन्य क्षेत्रों के खोजकर्त्ताओं ने सुई की नोक के समान सांकेतिक प्रमाण मिलने पर फावड़े के समान अपने अनुमान मिला कर वक्तव्य दे डाले । पर्याप्त प्रमाण न मिलने पर अनुमानों के पहाड़ खड़े हो जाते हैं । व्यक्तिगत अनुमान कदापि स्वतंत्र और निरपेक्ष नहीं होते । वे तो अपने अपने राष्ट्रीय, धार्मिक व सामाजिक विचारों तथा पढ़ी हुई पुस्तकों से बनी धारणाओं व मान्यताओं पर आधारित होते हैं । उस पर भी वे कट्टरता से सराबोर होते हैं अथवा कभी उदारता से । इन्हीं कारणों से इस सभ्यता के विषय में विद्वानों में इतने मतभेद हैं कि स्वप्न में भी उन के एकमत होने की सम्भावना दिखाई नहीं देती ।

पुस्तकों के (जो प्राचीन इतिहास के स्नातकों को पढ़ायी जाती हैं) आधार पर अब एक धारणा पन-पती जा रही है कि भारत की मूल असभ्य जातियाँ, कोल आदि, जो इस क्षेत्र में निवास करती थीं, द्रविड़ जाति के आने से जंगलों व पहाड़ों की ओर चली गयीं । द्रविड़ जाति के लोग भारत के मूल — सभ्य — निवासी थे, जिन्होंने सिन्धु — घाटी की सभ्यता को जन्म दिया । क्योंकि इनके साथ अन्य जातियों के शनैः शनैः आगमन से शनैः शनैः मिश्रण हुआ और इस मिश्रण से एक नये प्रकार की संस्कृति का विकास हुआ । फिर विदेशी आक्रमणकारी जातियों का आगमन आरम्भ हुआ, युद्ध हुए, नगर नष्ट — भ्रष्ट हुए, फिर निर्माण हुए और यह क्रम कई शताब्दियों के अंतर से क्रमानुसार चलता रहा, जिसके कारण एक के ऊपर एक नगर बसते चले गये । अंत में एक पर्यटनशील जाति आयी, जिसके व्यक्ति आर्य कहलाते थे (आर्य जाति नहीं क्योंकि “आर्य” का शब्द जाति के साथ जुड़ा हुआ कहीं वैदिक साहित्य में नहीं मिलता । यह केवल पाश्चात्य विद्वानों की देन है जिसे हम भी मानने लगे) और जिसने इस द्रविड़ सभ्यता को लगभग ई० पू० की १५ वीं श० में सदैव के लिए नष्ट कर दिया । क्या इस धारणा को मान्यता प्राप्त हो गयी ? क्या इस विचार से सब विद्वान् एकमत हो गये ? नहीं । न हुए हैं और न होंगे, उस समय तक जब तक कोई प्रमाण प्राप्त न हो जाये, जिस प्रकार से मिस्र में तीन — लिपि — अंकित एक काला शिलाखण्ड रोसेटा से प्राप्त हुआ या ईरान में तीन — भाषा — अंकित एक शिलालेख बिसीतून से प्राप्त हुआ । इन्हीं प्रमाणों के आधार पर मिस्र व ईरान के प्राचीन इतिहास का रहस्योद्घाटन हुआ और वह संसार के सब विद्वानों को मान्य हुआ ।

लिपि

इस घाटी के उत्खनन से लगभग तीन सहस्र मुद्राएँ व उनकी छापें प्राप्त हुई, जिन पर चित्र, चित्र व चिह्न तथा केवल चिह्न अंकित हैं, जो उस सभ्यता में विकसित लिपि का होना सिद्ध करते हैं।

किसी भी गूढ़ लिपि का रहस्योद्घाटन करने के लिए उसकी भाषा का ज्ञान होना अनिवार्य है। यदि लिपि का ज्ञान हो तो भाषा समझी जा सकती है परन्तु यदि शोधकर्ता भाषा व लिपि दोनों से ही अनभिज्ञ है तो अभिलेखों का पढ़ना असम्भव है। इसी कारण कितने ही भारतीय एवं अन्य देशवासी लिपि - विशेषज्ञों ने मुद्राओं के रहस्योद्घाटन करने का दावा किया है परन्तु वह अभी तक सर्वमान्य नहीं हो सका। इसी प्रकार इतिहासकारों ने अपने विचार भी रखे कि सिन्धु - घाटी की सभ्यता का रहस्य खुल जाये परन्तु इस पर भी विद्वान् एकमत न हो सके। कुछ के मत निम्नलिखित हैं :— जॉन मार्शल कहते हैं कि यहाँ की संस्कृति वैदिक संस्कृति से सर्वथा भिन्न है। श्री नीलकण्ठ शास्त्री का मत है कि वे जैन थे, क्योंकि एक शब्द है 'वृषभ' (ऋषभ) तीर्थंकर का नाम मिलता है तथा योगेश्वर की मूर्तियाँ भी प्राप्त हुई हैं। कुछ का मत है वे आर्य थे तथा कुछ का द्रविड़। केदारनाथ शास्त्री कहते हैं कि इनकी सभ्यता सुमेर - निवासियों से बहुत कुछ मिलती है तथा यहाँ के निवासी एकेश्वरवादी थे। कुछ कहते हैं कि सुमेर - सभ्यता इसकी जन्मदाता है और कुछ का मत है कि सिन्धु - घाटी - सभ्यता उसकी जन्मदाता है। मानव - विज्ञान - वेत्ताओं (ऐन्थ्रोपॉलॉ-जिस्ट्स) का मत है कि यह सभ्यता चार जातियों का सम्मिश्रण है।



किन किन विद्वानों ने किस किस प्रकार से यहाँ की गूढ़ लिपि का रहस्योद्घाटन करने का प्रयास किया है तथा यहाँ की सस्कृति के विषय में या निवासियों के विषय में क्या क्या विचार रखे हैं, अगले पृष्ठों पर संक्षिप्त में दिये गये हैं। विद्वानों के शोध - कार्य से कोई भी विद्यार्थी या ज्ञान की खोज का उत्सुक पाठक किसी प्रकार का निश्चित परिणाम नहीं निकाल सकता। वह तो ऐसी भूल - भुलझियों में फँस जायेगा, जिनसे निकलना असम्भव हो जायेगा। इसका मुख्य कारण है विद्वानों के निष्कर्षों की भिन्नता।

सिन्धु-घाटी-क्षेत्र में लगभग १०० स्थानों पर उत्खनन कार्य किये जा चुके हैं, जिनमें से लगभग ६० स्थानों से सिन्धु-घाटी-सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए हैं। उत्खनित सामग्री में अनेक प्रकार की मुद्राएँ (Seals) भी प्राप्त हुईं, जिन पर चित्र व चिह्न (एक प्रकार के वर्ण Characters) उत्कीर्ण थे। उन्हीं चित्रों व चिह्नों के रहस्योद्घाटनाथ संसार के अनेक विद्वानों ने प्रयास किये, जिनमें मुख्य के नाम नीचे दिये गये हैं। (फ० सं० ६)

सिन्धु-घाटी-लिपि के रहस्योद्घाटन का प्रयास करने वाले विद्वानों की तालिका :—

- १—श्री एल० ए० वड्डेल (L. A. Waddell)
- २—प्रो० डबल्यू० यम० फ़्लिण्डर्स पेट्री (Sir W. M. Flinders Petrie)
- ३—डा० जी० आर० हन्टर (Dr. G. R. Hunter)
- ४—रेवरेण्ड यच० हेरास (Rev. H. Heras)
- ५—श्री सुधांशु कुमार रे
- ६—डा० प्राण नाथ
- ७—श्री राज मोहन नाथ
- ८—स्वामी शंकरानन्द
- ९—हर पी० मेरेग्गी (Herr P. Meriggi)
- १०—एस्को परपोला, सीमो परपोला, कोसकेन्निमी एवं पी० आल्टो (Asko Parpola, Simo Parpola, Kos Kenniemi, P. Aalto)¹
- ११—डा० फ़तेह सिंह
- १२—श्री एस० आर० राव
- १३—श्री यम० बी० एन० कृष्णाराव
- १४—श्री यल० यस० वाकणकर
- १५—श्री डी० यम० बरुआ
- १६—श्री यस० पर्णवितान
- १७—श्री एरस्ट डब्लोफ़र और हेवेसी (Erust Doblhofer and Hevesy)
- १८—श्री बांके बिहारी चक्रवर्ती
- १९—श्री शंकर हाजरा
- २०—रूसी विद्वान
- २१—बी० हरोज्नी
- २२—श्री जॉन न्यूबेरी (John Newberry) आदि।

1. ये विद्वान 'स्कैण्डिनेवियन इन्स्टीट्यूट आफ़ पशियन स्टडीज — कोपेनहेगन (डेनमार्क)' के हैं।

दक्षिण एशियाई देशों की लेखन कला]

एल० ए० वड्डेल

एल० ए० वड्डेल^१ ने १९२५ में सुमेर की लिपि के चिह्नों के आधार पर सिन्धु-घाटी की मुद्राओं को पढ़ने का प्रयास किया है। मुद्राओं में अधिकतर बैल या भैंसा दिखाया गया है, जो सम्भवतः मानव आवश्यकताओं का प्रमुख मूल कारण हो। कुछ समानताएँ दिखाई हैं, जैसे सुमेरियन भाषा में मोहेंजो के अर्थ भैंस हैं तथा संस्कृत में महिशा के अर्थ हैं भैंसा। सुमेरियन में दुरु के अर्थ सागर, संस्कृत में द्वार के अर्थ सागर हैं तथा फारसी में दरिया के अर्थ सागर हैं। इस प्रकार दड़ो के अर्थ भी सागर हुए अर्थात् मोहेंजो-दड़ो के अर्थ हुए 'भैंसों का सागर'। फ० सं० - ७ की मुद्रा को दायेंसे बायें पढ़ा है।

आपने अपनी पुस्तकों में यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि सिन्धु-घाटी, सुमेर तथा फिनीशिया के मूल निवासी आर्य थे।

प्रो० विलियम मैथिड फ़िलण्डर्स पेट्री

प्रोफ़ेसर पेट्री^२ ने कुछ चित्रों का रहस्योद्घाटन करने का प्रयत्न किया, जिनमें से कुछ का विवरण नीचे दिया जा रहा है तथा वे फ० सं० - ८ पर दिये गये हैं। आपने उन चिह्नों को शब्द माना है।

M D—४० एवं ४१ : पानी वाला कन्धों पर चमड़े के थैलों में पानी ले जा रहा है। उनके सिर ढकने के लिए बड़ी टोपियाँ लगी हैं।

MD—४७ : पानी वाला नहर से पानी ले जा रहा है।

MD—५१ : पानी विभाग का एक पदाधिकारी।

MD—५३ : नहर का कांटा।

MD—५४ : सड़क निरीक्षक की मुद्रा।

MD—४६ : १. गायन शास्त्री; २. राजदरबार; ३. पदाधिकारी।

डा० जी० आर० हण्टर

डा० हण्टर^३ ने सिन्धु-घाटी लिपि का गहन अध्ययन किया है। उसको हर दिशा से समझने का प्रयत्न किया है। आप ने लगभग ७५० मुद्राओं के चिह्नों को पढ़ने का प्रयत्न किया है और २३४ मौलिक चिह्नों को निर्धारित किया है। एक वर्णमाला भी तैयार की है, जो फ० सं० - ९ क (पृष्ठ ३२-३३) पर दी गयी है। परन्तु आपने मुद्राओं का रहस्योद्घाटन नहीं किया।

आपने चित्रों का विश्लेषण इस प्रकार दिया है :—

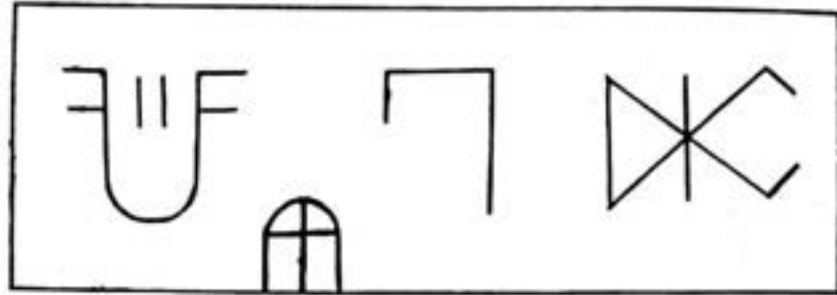
१-तीर कमान सहित एक योद्धा। २-ताल में बत्तख। ३-अनाज के कोठे।

तीनों चित्र पृष्ठ ३४ पर फ० सं० - ९ ख में दिये गये हैं।

1. आप पहले इंग्लैण्ड के विद्वान् हैं, जिन्होंने सर्वप्रथम सिन्धुघाटी लिपि को पढ़ने का प्रयास किया तथा आर्यों की संस्कृति को पश्चिम-एशिया की प्राचीन संस्कृतियों का जन्मदाता माना है।
2. प्रो० पेट्री मिन्न के पुरातत्त्ववेत्ता थे। विविध प्रकार की पुरातात्विक सामग्री जो आपने उत्खनन द्वारा प्राप्त की, लन्दन के संग्रहालय में सुरक्षित है। जन्म १८५३, स्वर्गवास १९४२।
3. डा० जी० आर० हण्टर ने ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में अपना शोध-कार्य सिन्धु-घाटी-लिपि पर किया (१९२९)।

एल० ए० वड्डेल

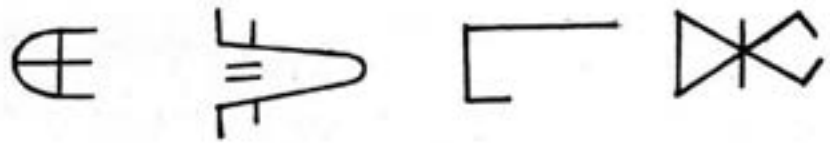
मुद्रा
MEH
pl. XCVI
No. 82



सुमेर के
चिन्ह



सिं० घा० के
चिन्ह

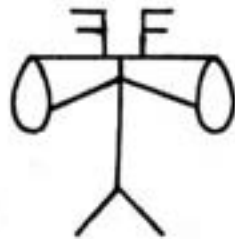
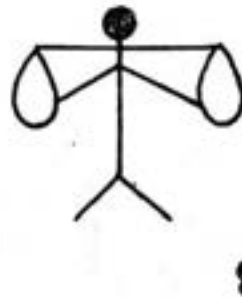
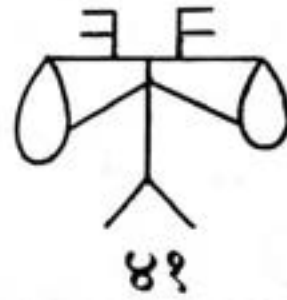
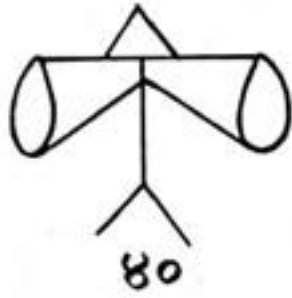


लिप्यन्तर = व अम बर कन

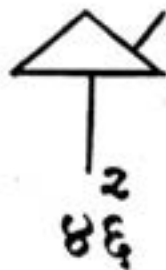
अनुवाद = कन (व) = कान ; बरम = ब्रह्मा

अर्थ = ब्रह्मा के कान

प्रो० पेट्री



५१



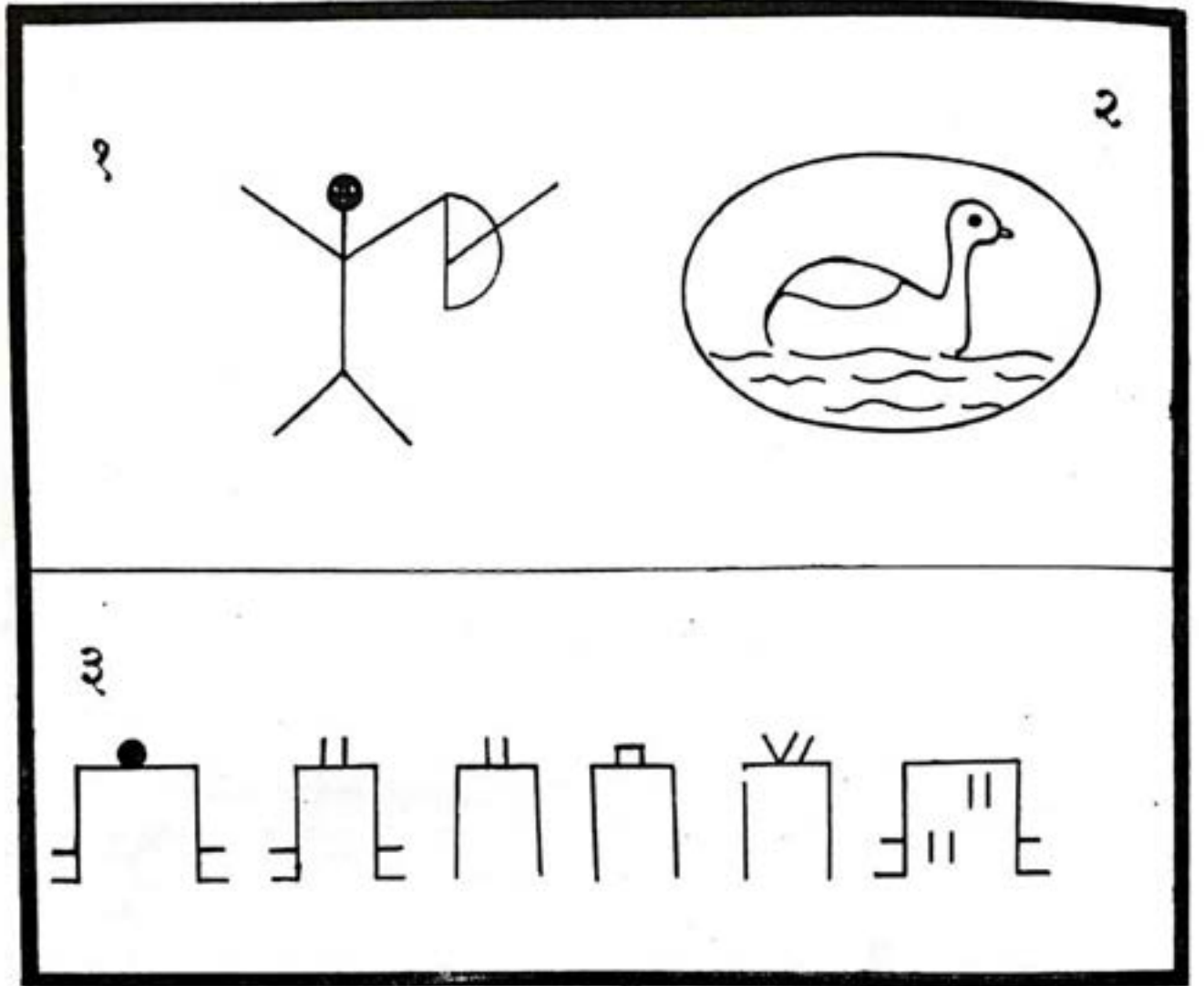
फलक संख्या - ८

डा० जी० आर० हण्टर

थ	द		ध	न	
○ .) (X (.	∅ ∅ ∅ .			⋈	
नी	नु	नू	ब	म	म
⋈ .	⋈ .	⋈ .	⊞ .	6 7 8 .	⋈
मि	मे	मी	मो	य	र
⋈ .	⋈ .	⋈ .	⋈ .	U U U	
ल			व		
⋈	⋈	⋈	⋈	⋈	⋈
वी		वू	श	स	
⋈	⋈	⋈	⋈	⋈	⋈
ह			हा	ही	हु
⋈	⋈	⋈	⋈	⋈	⋈

फलक संख्या - ९ क

डा० जी० आर० हण्टर



फलक संख्या - ९ ख

फ़ादर यच० हेरास

हेरास^१ ने मोहेंजो-दड़ो की लगभग १८०० मुद्राओं (Seals) के गूढ़-रहस्यात्मक चिह्नों को पढ़ने का प्रयास किया है। आप ने २९० संश्लिष्ट चिह्नों को पृथक् किया। भाषा व संस्कृति के विषय में आपका पूर्ण विश्वास है कि सिन्धु-घाटी के निवासी द्रविड़ थे तथा उनकी भाषा भी द्रविड़ थी। आर्यों ने इस द्रविड़ संस्कृति को कई बार नष्ट किया। १५०० ई० पू० में आर्यों के अन्तिम आक्रमण ने इसको सदैव के लिए नष्ट कर दिया, जो फिर कभी जीवित न हो सकी। उसी विश्वास के आधार पर आपने चिह्नों का स्पष्टीकरण (पृष्ठ ३५-३८) किया है, जो 'फ० सं० - १०' पर दिया गया है। हेरास का यह रहस्योद्घाटन १९३७ में प्रकाशित हुआ^२। चार मुद्राओं के रहस्योद्घाटन का निम्नलिखित विवरण है जो 'फ० सं० - १० क' पर दिया गया है :-




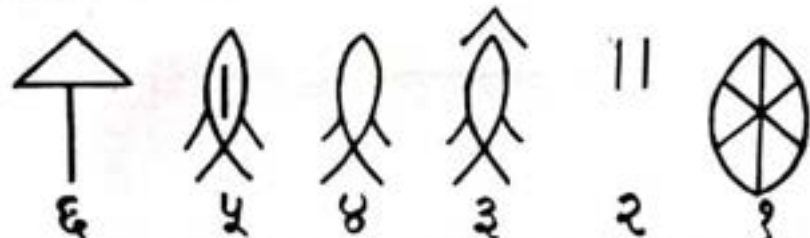
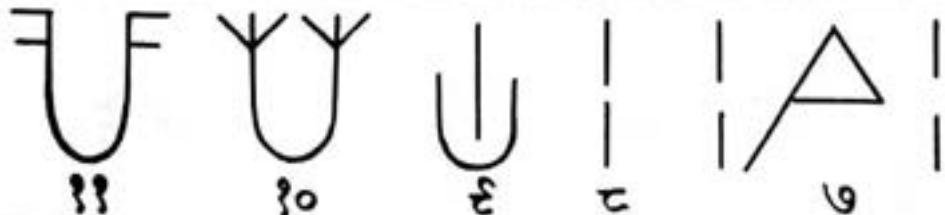
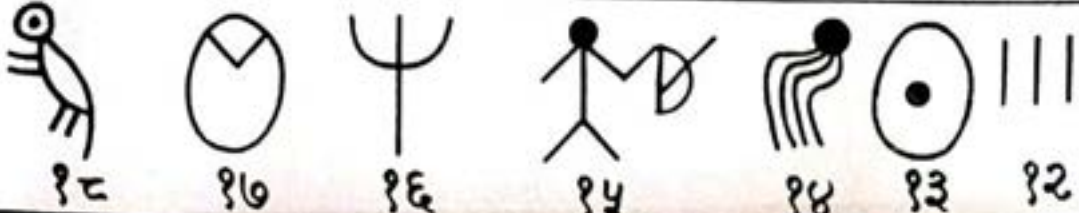
1. फ़ादर हेरास, भूतपूर्व निदेशक, इण्डियन हिस्टारिकल रिसर्च इंस्टीट्यूट, सेन्ट जेवियर्स कालेज, बम्बई-१
2. Published in "INDIAN CULTURE"—Vol. III (1937)

फादर यच० हेरास

मिश्रित	पृथक्	द्राविड़भाषा	अर्थ
		विलाला	विलाल जाति का मनुष्य
		पिराल	प्रमुख व्यक्ति
		रुरुअल	शिक्षक
		वलिल	दुर्ग
		रुवल	मनोरंजन

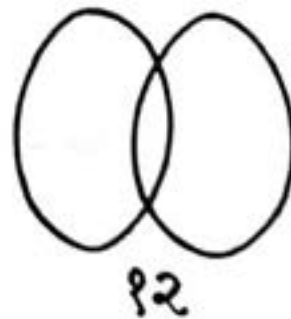
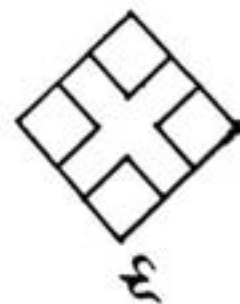
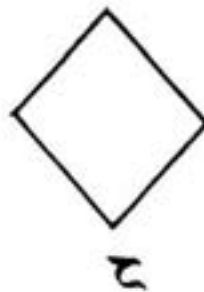
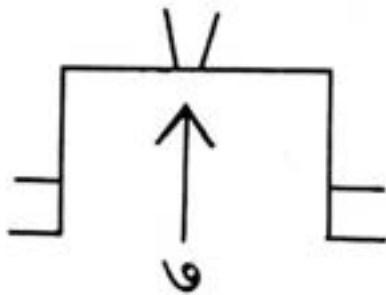
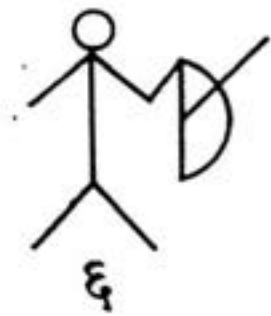
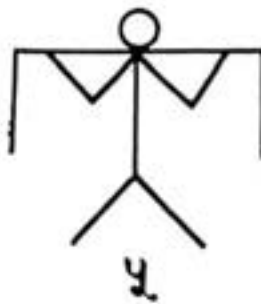
	इल = घर		इलइल = घर में
	उर = नगर		उरिल = नगर में
	मीन = मछली		मीनिल = मछली में
	उर = नगर		उरवेलि = नगर के बाहर

हेरास




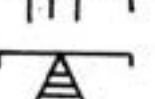


मार्शल MD १६६	
मार्शल MD २१७	
मार्शल हड़प्पा ४४	
MEH Vol. II pl. XCII क्र० २७१	
	
	
	

फलक संख्या - १० क

हेरास



हेरास

	मीनावन	=	धोबी
	मुनेन	=	त्रिमूर्ति
	मुन मेला	=	त्रिपर्वत
	कल	=	पत्थर खोदना
	कन	=	आंख (देखना)
	निलः	=	भूमि
	पक	=	भाग देना
	मल	=	वर्षा
	कोन	=	राजा
	मग	=	पुत्र
	पगल	=	दिन
	नाडू	=	मध्य
	एन	=	विचार करना
	उइर	=	जीवन

मुद्रा का क्रमांक	लिप्यन्तर	अर्थ
मार्शल MD-१६९	पकीलल ।	व्यक्ति कष्ट में ।
मार्शल MD-२१७	सेर अडु ।	यह कैदी है ।
	१-इर ।	
	२-तलालिलल ।	
मार्शल; हड़प्पा-४४	३-इर ।	मछली दो आँखों से पहचानी गयी
(दाएँ से बाएँ पढ़िये)	४-कन ।	जो दो घरों में थीं ।
	५-अरि ।	भावार्थ :—वेधशाला जिसके द्वारा नक्षत्रों
	६-मीन ।	का अध्ययन किया जाता है ।

क्रम २७१ की मुद्रा का लिप्यन्तर : १-उइरइ; २-इर; ३-मीनन; ४-मीन; ५-मीन; ६-कन; ७-आइर; ८-इर; ९-एन; १०-तेन; ११; अडु; १२-मुन; १३-पाकिल; १४-अस्प; १५-बिलान; १६-वेतु; १७-रिल; १८-आ; अर्थ : “बेलूर की गायों ने दो मछली की आँख वाले दक्षिण निवासी ग्वालों के तीन बिल्वासों को जो मीनों के थे तथा तप्ती घूप में खड़े थे, नष्ट कर दिया ।”

फ़ादर हेरास ने इस लिपि से २४१ ऐसे चिह्न पृथक् किये हैं जो चित्रात्मक लिपि की तरह प्रयोग में लाये गये हैं । उनमें कुछ फ० सं०-१० ख (पृष्ठ ३७) पर दिये गये हैं तथा उनका विवरण इस प्रकार है :—

क्रमांक	चित्र-विवरण	द्रविड़	अर्थ
१	एक मनुष्य है—जिसके चार हाथ हैं ।	कडावुल	देवता
२	एक मनुष्य ।	आल	मनुष्य
३	एक मनुष्य जिसके पूँछ है ।	कुडागू	बन्दर (जाति के)
४	एक मनुष्य ढोल बजा रहा है ।	परियन	ढोल वाला
५	एक मनुष्य कुछ उठा रहा है ।	टुकान	मजदूर
६	एक मनुष्य तोर कमान के साथ ।	बिलन	धनुष-धारी
७	समाधि या स्तूप जिसके नीचे गड़ा हुआ मनुष्य ।	का	मृत्यु
८	मकान का मानचित्र ।	इल	घर
९	चार मकान जिनके चारों ओर चार-दिवारी बनी हुई है ।	पली	नगर
१०	कमरे या उसके उप-भाग ।	नालवीड	चार घर
११	एक नगर या देश ।	उर	नगर-देश
१२	नगर के चारों ओर का देश अर्थात् नगर राज्य ।	कलाकुर	देश-संघ

आपने लगभग १८५ मिश्रित ध्वन्यात्मक चिह्न को निर्धारित किया है । उनमें से कुछ उदाहरणार्थ ‘फ० सं० - १० ग’ (पृष्ठ ३८) पर उनकी मूल भाषा व अर्थ दिये गये हैं ।

सुधांशु कुमार रे

श्री सु० कु० रे^१ ने अपने एक विभागीय उच्चपदाधिकारी के कहने पर सिंधु - घाटी की कला, शिल्प लिपि का अध्ययन १९३५ में आरम्भ किया ।

१. भूतपूर्व जूनियर कोल्लेज अकसर, काफ़्टस म्यूजियम, आल इण्डिया हेण्टी कैफ़्ट्स बोर्ड, नयी दिल्ली ।

श्री रे द्वारा ब्राह्मी लिपि के १३ चिह्नों की
सिन्धु घाटी लिपि के चिह्नों से तुलना

ब्राह्मी	ग च त द ध न ट
सि. घा.	Λ d 人 𐑖 D ⊥ C
ब्राह्मी	ड प ब भ म स
सि. घा.	N 𐑇 𐑉 𐑊 𐑋 𐑌

फलक संख्या - ११

१९६२ तक अर्थात् लगभग सत्ताइस वर्ष आपने गम्भीर खोज की। सैकड़ों चार्ट बनाये और बिगाड़। अनगिनत विद्वानों (जैसे डा. सी. जे. गैड, डा. आर. ई. फ्रोकनर, डा. आई. ई. यस, एडवर्ड्स आदि) से आपने परामर्श लिये, परन्तु किसी सर्वमान्य निष्कर्ष पर न पहुँच सके।

सत्ताइस वर्ष की खोज तथा महान् विद्वानों के परामर्श ने आपके मन में कुछ धारणाएँ व मान्यताएँ दृढ़ कर दीं, जिनके आधार पर आप का कहना है कि यहाँ के निवासी आर्य थे तथा उनकी भाषा प्राकृत थी। उन्होंने यह भी माना है कि यहाँ की लिपि ब्राह्मी तथा भारत की अन्य लिपियों की पूर्वज है। अब आगे बढ़ने के लिए अर्थात् शोध व खोज करने के लिए श्री रे ने एक निश्चित पथ का निर्माण कर लिया।

आपके कथनानुसार यहाँ की लिपि में २८८ चिह्न हैं। तेरह चिह्न आप ने ब्राह्मी के आधार पर पढ़े हैं (फ० सं० - ११)। आरम्भ में यहाँ की लिपि में चित्र नहीं हैं परन्तु न समझने के कारण तात्कालिक विद्वानों ने लिपि - चिह्नों के साथ चित्र भी जो लिपि का साम्य रखते थे बनाना आरम्भ कर दिये।

इस सभ्यता व लिपि का अंतिम काल १५०० ई० पू० सर्वमान्य बन गया है। पुनः ४०० ई० पू० में एक विकसित लिपि दृष्टिगोचर होती है। इसके अर्थ हैं कि प्राचीन लिपि का अंत और नवीन लिपि का आरम्भ का अन्तर लगभग ११ सौ वर्ष हो जाता है। अंत-आरम्भ की कड़ियों को कैसे जोड़ा जाये। आप

सुधांशु कुमार रे

FEM PI.XCII No.5.

𑀓 𑀕 𑀘 𑀡 𑀣 𑀤 𑀥

म अ र र च न म ग

गमनाचरमि = घूमने के लिये जा रहे

MIC SEAL No.11.

𑀓 𑀣 𑀤 𑀥 𑀦 𑀧 𑀨 𑀩 𑀪 𑀫 𑀬 𑀭 𑀮 𑀯 𑀰 𑀱 𑀲 𑀳 𑀴 𑀵 𑀶 𑀷 𑀸 𑀹 𑀺 𑀻 𑀼 𑀽 𑀾 𑀿 𑁀 𑁁 𑁂 𑁃 𑁄 𑁅 𑁆 𑁇 𑁈 𑁉 𑁊 𑁋 𑁌 𑁍 𑁎 𑁏 𑁐 𑁑 𑁒 𑁓 𑁔 𑁕 𑁖 𑁗 𑁘 𑁙 𑁚 𑁛 𑁜 𑁝 𑁞 𑁟 𑁠 𑁡 𑁢 𑁣 𑁤 𑁥 𑁦 𑁧 𑁨 𑁩 𑁪 𑁫 𑁬 𑁭 𑁮 𑁯 𑁰 𑁱 𑁲 𑁳 𑁴 𑁵 𑁶 𑁷 𑁸 𑁹 𑁺 𑁻 𑁼 𑁽 𑁾 𑁿 𑂀 𑂁 𑂂 𑂃 𑂄 𑂅 𑂆 𑂇 𑂈 𑂉 𑂊 𑂋 𑂌 𑂍 𑂎 𑂏 𑂐 𑂑 𑂒 𑂓 𑂔 𑂕 𑂖 𑂗 𑂘 𑂙 𑂚 𑂛 𑂜 𑂝 𑂞 𑂟 𑂠 𑂡 𑂢 𑂣 𑂤 𑂥 𑂦 𑂧 𑂨 𑂩 𑂪 𑂫 𑂬 𑂭 𑂮 𑂯 𑂰 𑂱 𑂲 𑂳 𑂴 𑂵 𑂶 𑂷 𑂸 𑂹 𑂺 𑂻 𑂼 𑂽 𑂾 𑂿 𑃀 𑃁 𑃂 𑃃 𑃄 𑃅 𑃆 𑃇 𑃈 𑃉 𑃊 𑃋 𑃌 𑃍 𑃎 𑃏 𑃐 𑃑 𑃒 𑃓 𑃔 𑃕 𑃖 𑃗 𑃘 𑃙 𑃚 𑃛 𑃜 𑃝 𑃞 𑃟 𑃠 𑃡 𑃢 𑃣 𑃤 𑃥 𑃦 𑃧 𑃨 𑃩 𑃪 𑃫 𑃬 𑃭 𑃮 𑃯 𑃰 𑃱 𑃲 𑃳 𑃴 𑃵 𑃶 𑃷 𑃸 𑃹 𑃺 𑃻 𑃼 𑃽 𑃾 𑃿 𑄀 𑄁 𑄂 𑄃 𑄄 𑄅 𑄆 𑄇 𑄈 𑄉 𑄊 𑄋 𑄌 𑄍 𑄎 𑄏 𑄐 𑄑 𑄒 𑄓 𑄔 𑄕 𑄖 𑄗 𑄘 𑄙 𑄚 𑄛 𑄜 𑄝 𑄞 𑄟 𑄠 𑄡 𑄢 𑄣 𑄤 𑄥 𑄦 𑄧 𑄨 𑄩 𑄪 𑄫 𑄬 𑄭 𑄮 𑄯 𑄰 𑄱 𑄲 𑄳 𑄴 𑄵 𑄶 𑄷 𑄸 𑄹 𑄺 𑄻 𑄼 𑄽 𑄾 𑄿 𑅀 𑅁 𑅂 𑅃 𑅄 𑅅 𑅆 𑅇 𑅈 𑅉 𑅊 𑅋 𑅌 𑅍 𑅎 𑅏 𑅐 𑅑 𑅒 𑅓 𑅔 𑅕 𑅖 𑅗 𑅘 𑅙 𑅚 𑅛 𑅜 𑅝 𑅞 𑅟 𑅠 𑅡 𑅢 𑅣 𑅤 𑅥 𑅦 𑅧 𑅨 𑅩 𑅪 𑅫 𑅬 𑅭 𑅮 𑅯 𑅰 𑅱 𑅲 𑅳 𑅴 𑅵 𑅶 𑅷 𑅸 𑅹 𑅺 𑅻 𑅼 𑅽 𑅾 𑅿 𑆀 𑆁 𑆂 𑆃 𑆄 𑆅 𑆆 𑆇 𑆈 𑆉 𑆊 𑆋 𑆌 𑆍 𑆎 𑆏 𑆐 𑆑 𑆒 𑆓 𑆔 𑆕 𑆖 𑆗 𑆘 𑆙 𑆚 𑆛 𑆜 𑆝 𑆞 𑆟 𑆠 𑆡 𑆢 𑆣 𑆤 𑆥 𑆦 𑆧 𑆨 𑆩 𑆪 𑆫 𑆬 𑆭 𑆮 𑆯 𑆰 𑆱 𑆲 𑆳 𑆴 𑆵 𑆶 𑆷 𑆸 𑆹 𑆺 𑆻 𑆼 𑆽 𑆾 𑆿 𑇀 𑇁 𑇂 𑇃 𑇄 𑇅 𑇆 𑇇 𑇈 𑇉 𑇊 𑇋 𑇌 𑇍 𑇎 𑇏 𑇐 𑇑 𑇒 𑇓 𑇔 𑇕 𑇖 𑇗 𑇘 𑇙 𑇚 𑇛 𑇜 𑇝 𑇞 𑇟 𑇠 𑇡 𑇢 𑇣 𑇤 𑇥 𑇦 𑇧 𑇨 𑇩 𑇪 𑇫 𑇬 𑇭 𑇮 𑇯 𑇰 𑇱 𑇲 𑇳 𑇴 𑇵 𑇶 𑇷 𑇸 𑇹 𑇺 𑇻 𑇼 𑇽 𑇾 𑇿 𑈀 𑈁 𑈂 𑈃 𑈄 𑈅 𑈆 𑈇 𑈈 𑈉 𑈊 𑈋 𑈌 𑈍 𑈎 𑈏 𑈐 𑈑 𑈒 𑈓 𑈔 𑈕 𑈖 𑈗 𑈘 𑈙 𑈚 𑈛 𑈜 𑈝 𑈞 𑈟 𑈠 𑈡 𑈢 𑈣 𑈤 𑈥 𑈦 𑈧 𑈨 𑈩 𑈪 𑈫 𑈬 𑈭 𑈮 𑈯 𑈰 𑈱 𑈲 𑈳 𑈴 𑈵 𑈶 𑈷 𑈸 𑈹 𑈺 𑈻 𑈼 𑈽 𑈾 𑈿 𑉀 𑉁 𑉂 𑉃 𑉄 𑉅 𑉆 𑉇 𑉈 𑉉 𑉊 𑉋 𑉌 𑉍 𑉎 𑉏 𑉐 𑉑 𑉒 𑉓 𑉔 𑉕 𑉖 𑉗 𑉘 𑉙 𑉚 𑉛 𑉜 𑉝 𑉞 𑉟 𑉠 𑉡 𑉢 𑉣 𑉤 𑉥 𑉦 𑉧 𑉨 𑉩 𑉪 𑉫 𑉬 𑉭 𑉮 𑉯 𑉰 𑉱 𑉲 𑉳 𑉴 𑉵 𑉶 𑉷 𑉸 𑉹 𑉺 𑉻 𑉼 𑉽 𑉾 𑉿 𑊀 𑊁 𑊂 𑊃 𑊄 𑊅 𑊆 𑊇 𑊈 𑊉 𑊊 𑊋 𑊌 𑊍 𑊎 𑊏 𑊐 𑊑 𑊒 𑊓 𑊔 𑊕 𑊖 𑊗 𑊘 𑊙 𑊚 𑊛 𑊜 𑊝 𑊞 𑊟 𑊠 𑊡 𑊢 𑊣 𑊤 𑊥 𑊦 𑊧 𑊨 𑊩 𑊪 𑊫 𑊬 𑊭 𑊮 𑊯 𑊰 𑊱 𑊲 𑊳 𑊴 𑊵 𑊶 𑊷 𑊸 𑊹 𑊺 𑊻 𑊼 𑊽 𑊾 𑊿 𑋀 𑋁 𑋂 𑋃 𑋄 𑋅 𑋆 𑋇 𑋈 𑋉 𑋊 𑋋 𑋌 𑋍 𑋎 𑋏 𑋐 𑋑 𑋒 𑋓 𑋔 𑋕 𑋖 𑋗 𑋘 𑋙 𑋚 𑋛 𑋜 𑋝 𑋞 𑋟 𑋠 𑋡 𑋢 𑋣 𑋤 𑋥 𑋦 𑋧 𑋨 𑋩 𑋪 𑋫 𑋬 𑋭 𑋮 𑋯 𑋰 𑋱 𑋲 𑋳 𑋴 𑋵 𑋶 𑋷 𑋸 𑋹 𑋺 𑋻 𑋼 𑋽 𑋾 𑋿 𑌀 𑌁 𑌂 𑌃 𑌄 𑌅 𑌆 𑌇 𑌈 𑌉 𑌊 𑌋 𑌌 𑌍 𑌎 𑌏 𑌐 𑌑 𑌒 𑌓 𑌔 𑌕 𑌖 𑌗 𑌘 𑌙 𑌚 𑌛 𑌜 𑌝 𑌞 𑌟 𑌠 𑌡 𑌢 𑌣 𑌤 𑌥 𑌦 𑌧 𑌨 𑌩 𑌪 𑌫 𑌬 𑌭 𑌮 𑌯 𑌰 𑌱 𑌲 𑌳 𑌴 𑌵 𑌶 𑌷 𑌸 𑌹 𑌺 𑌻 𑌼 𑌽 𑌾 𑌿 𑍀 𑍁 𑍂 𑍃 𑍄 𑍅 𑍆 𑍇 𑍈 𑍉 𑍊 𑍋 𑍌 𑍍 𑍎 𑍏 𑍐 𑍑 𑍒 𑍓 𑍔 𑍕 𑍖 𑍗 𑍘 𑍙 𑍚 𑍛 𑍜 𑍝 𑍞 𑍟 𑍠 𑍡 𑍢 𑍣 𑍤 𑍥 𑍦 𑍧 𑍨 𑍩 𑍪 𑍫 𑍬 𑍭 𑍮 𑍯 𑍰 𑍱 𑍲 𑍳 𑍴 𑍵 𑍶 𑍷 𑍸 𑍹 𑍺 𑍻 𑍼 𑍽 𑍾 𑍿 𑎀 𑎁 𑎂 𑎃 𑎄 𑎅 𑎆 𑎇 𑎈 𑎉 𑎊 𑎋 𑎌 𑎍 𑎎 𑎏 𑎐 𑎑 𑎒 𑎓 𑎔 𑎕 𑎖 𑎗 𑎘 𑎙 𑎚 𑎛 𑎜 𑎝 𑎞 𑎟 𑎠 𑎡 𑎢 𑎣 𑎤 𑎥 𑎦 𑎧 𑎨 𑎩 𑎪 𑎫 𑎬 𑎭 𑎮 𑎯 𑎰 𑎱 𑎲 𑎳 𑎴 𑎵 𑎶 𑎷 𑎸 𑎹 𑎺 𑎻 𑎼 𑎽 𑎾 𑎿 𑏀 𑏁 𑏂 𑏃 𑏄 𑏅 𑏆 𑏇 𑏈 𑏉 𑏊 𑏋 𑏌 𑏍 𑏎 𑏏 𑏐 𑏑 𑏒 𑏓 𑏔 𑏕 𑏖 𑏗 𑏘 𑏙 𑏚 𑏛 𑏜 𑏝 𑏞 𑏟 𑏠 𑏡 𑏢 𑏣 𑏤 𑏥 𑏦 𑏧 𑏨 𑏩 𑏪 𑏫 𑏬 𑏭 𑏮 𑏯 𑏰 𑏱 𑏲 𑏳 𑏴 𑏵 𑏶 𑏷 𑏸 𑏹 𑏺 𑏻 𑏼 𑏽 𑏾 𑏿 𑐀 𑐁 𑐂 𑐃 𑐄 𑐅 𑐆 𑐇 𑐈 𑐉 𑐊 𑐋 𑐌 𑐍 𑐎 𑐏 𑐐 𑐑 𑐒 𑐓 𑐔 𑐕 𑐖 𑐗 𑐘 𑐙 𑐚 𑐛 𑐜 𑐝 𑐞 𑐟 𑐠 𑐡 𑐢 𑐣 𑐤 𑐥 𑐦 𑐧 𑐨 𑐩 𑐪 𑐫 𑐬 𑐭 𑐮 𑐯 𑐰 𑐱 𑐲 𑐳 𑐴 𑐵 𑐶 𑐷 𑐸 𑐹 𑐺 𑐻 𑐼 𑐽 𑐾 𑐿 𑑀 𑑁 𑑂 𑑃 𑑄 𑑅 𑑆 𑑇 𑑈 𑑉 𑑊 𑑋 𑑌 𑑍 𑑎 𑑏 𑑐 𑑑 𑑒 𑑓 𑑔 𑑕 𑑖 𑑗 𑑘 𑑙 𑑚 𑑛 𑑜 𑑝 𑑞 𑑟 𑑠 𑑡 𑑢 𑑣 𑑤 𑑥 𑑦 𑑧 𑑨 𑑩 𑑪 𑑫 𑑬 𑑭 𑑮 𑑯 𑑰 𑑱 𑑲 𑑳 𑑴 𑑵 𑑶 𑑷 𑑸 𑑹 𑑺 𑑻 𑑼 𑑽 𑑾 𑑿 𑒀 𑒁 𑒂 𑒃 𑒄 𑒅 𑒆 𑒇 𑒈 𑒉 𑒊 𑒋 𑒌 𑒍 𑒎 𑒏 𑒐 𑒑 𑒒 𑒓 𑒔 𑒕 𑒖 𑒗 𑒘 𑒙 𑒚 𑒛 𑒜 𑒝 𑒞 𑒟 𑒠 𑒡 𑒢 𑒣 𑒤 𑒥 𑒦 𑒧 𑒨 𑒩 𑒪 𑒫 𑒬 𑒭 𑒮 𑒯 𑒰 𑒱 𑒲 𑒳 𑒴 𑒵 𑒶 𑒷 𑒸 𑒹 𑒺 𑒻 𑒼 𑒽 𑒾 𑒿 𑓀 𑓁 𑓂 𑓃 𑓄 𑓅 𑓆 𑓇 𑓈 𑓉 𑓊 𑓋 𑓌 𑓍 𑓎 𑓏 𑓐 𑓑 𑓒 𑓓 𑓔 𑓕 𑓖 𑓗 𑓘 𑓙 𑓚 𑓛 𑓜 𑓝 𑓞 𑓟 𑓠 𑓡 𑓢 𑓣 𑓤 𑓥 𑓦 𑓧 𑓨 𑓩 𑓪 𑓫 𑓬 𑓭 𑓮 𑓯 𑓰 𑓱 𑓲 𑓳 𑓴 𑓵 𑓶 𑓷 𑓸 𑓹 𑓺 𑓻 𑓼 𑓽 𑓾 𑓿 𑔀 𑔁 𑔂 𑔃 𑔄 𑔅 𑔆 𑔇 𑔈 𑔉 𑔊 𑔋 𑔌 𑔍 𑔎 𑔏 𑔐 𑔑 𑔒 𑔓 𑔔 𑔕 𑔖 𑔗 𑔘 𑔙 𑔚 𑔛 𑔜 𑔝 𑔞 𑔟 𑔠 𑔡 𑔢 𑔣 𑔤 𑔥 𑔦 𑔧 𑔨 𑔩 𑔪 𑔫 𑔬 𑔭 𑔮 𑔯 𑔰 𑔱 𑔲 𑔳 𑔴 𑔵 𑔶 𑔷 𑔸 𑔹 𑔺 𑔻 𑔼 𑔽 𑔾 𑔿 𑕀 𑕁 𑕂 𑕃 𑕄 𑕅 𑕆 𑕇 𑕈 𑕉 𑕊 𑕋 𑕌 𑕍 𑕎 𑕏 𑕐 𑕑 𑕒 𑕓 𑕔 𑕕 𑕖 𑕗 𑕘 𑕙 𑕚 𑕛 𑕜 𑕝 𑕞 𑕟 𑕠 𑕡 𑕢 𑕣 𑕤 𑕥 𑕦 𑕧 𑕨 𑕩 𑕪 𑕫 𑕬 𑕭 𑕮 𑕯 𑕰 𑕱 𑕲 𑕳 𑕴 𑕵 𑕶 𑕷 𑕸 𑕹 𑕺 𑕻 𑕼 𑕽 𑕾 𑕿 𑖀 𑖁 𑖂 𑖃 𑖄 𑖅 𑖆 𑖇 𑖈 𑖉 𑖊 𑖋 𑖌 𑖍 𑖎 𑖏 𑖐 𑖑 𑖒 𑖓 𑖔 𑖕 𑖖 𑖗 𑖘 𑖙 𑖚 𑖛 𑖜 𑖝 𑖞 𑖟 𑖠 𑖡 𑖢 𑖣 𑖤 𑖥 𑖦 𑖧 𑖨 𑖩 𑖪 𑖫 𑖬 𑖭 𑖮 𑖯 𑖰 𑖱 𑖲 𑖳 𑖴 𑖵 𑖶 𑖷 𑖸 𑖹 𑖺 𑖻 𑖼 𑖽 𑖾 𑖿 𑗀 𑗁 𑗂 𑗃 𑗄 𑗅 𑗆 𑗇 𑗈 𑗉 𑗊 𑗋 𑗌 𑗍 𑗎 𑗏 𑗐 𑗑 𑗒 𑗓 𑗔 𑗕 𑗖 𑗗 𑗘 𑗙 𑗚 𑗛 𑗜 𑗝 𑗞 𑗟 𑗠 𑗡 𑗢 𑗣 𑗤 𑗥 𑗦 𑗧 𑗨 𑗩 𑗪 𑗫 𑗬 𑗭 𑗮 𑗯 𑗰 𑗱 𑗲 𑗳 𑗴 𑗵 𑗶 𑗷 𑗸 𑗹 𑗺 𑗻 𑗼 𑗽 𑗾 𑗿 𑘀 𑘁 𑘂 𑘃 𑘄 𑘅 𑘆 𑘇 𑘈 𑘉 𑘊 𑘋 𑘌 𑘍 𑘎 𑘏 𑘐 𑘑 𑘒 𑘓 𑘔 𑘕 𑘖 𑘗 𑘘 𑘙 𑘚 𑘛 𑘜 𑘝 𑘞 𑘟 𑘠 𑘡 𑘢 𑘣 𑘤 𑘥 𑘦 𑘧 𑘨 𑘩 𑘪 𑘫 𑘬 𑘭 𑘮 𑘯 𑘰 𑘱 𑘲 𑘳 𑘴 𑘵 𑘶 𑘷 𑘸 𑘹 𑘺 𑘻 𑘼 𑘽 𑘾 𑘿 𑙀 𑙁 𑙂 𑙃 𑙄 𑙅 𑙆 𑙇 𑙈 𑙉 𑙊 𑙋 𑙌 𑙍 𑙎 𑙏 𑙐 𑙑 𑙒 𑙓 𑙔 𑙕 𑙖 𑙗 𑙘 𑙙 𑙚 𑙛 𑙜 𑙝 𑙞 𑙟 𑙠 𑙡 𑙢 𑙣 𑙤 𑙥 𑙦 𑙧 𑙨 𑙩 𑙪 𑙫 𑙬 𑙭 𑙮 𑙯 𑙰 𑙱 𑙲 𑙳 𑙴 𑙵 𑙶 𑙷 𑙸 𑙹 𑙺 𑙻 𑙼 𑙽 𑙾 𑙿 𑚀 𑚁 𑚂 𑚃 𑚄 𑚅 𑚆 𑚇 𑚈 𑚉 𑚊 𑚋 𑚌 𑚍 𑚎 𑚏 𑚐 𑚑 𑚒 𑚓 𑚔 𑚕 𑚖 𑚗 𑚘 𑚙 𑚚 𑚛 𑚜 𑚝 𑚞 𑚟 𑚠 𑚡 𑚢 𑚣 𑚤 𑚥 𑚦 𑚧 𑚨 𑚩 𑚪 𑚫 𑚬 𑚭 𑚮 𑚯 𑚰 𑚱 𑚲 𑚳 𑚴 𑚵 𑚶 𑚷 𑚸 𑚹 𑚺 𑚻 𑚼 𑚽 𑚾 𑚿 𑛀 𑛁 𑛂 𑛃 𑛄 𑛅 𑛆 𑛇 𑛈 𑛉 𑛊 𑛋 𑛌 𑛍 𑛎 𑛏 𑛐 𑛑 𑛒 𑛓 𑛔 𑛕 𑛖 𑛗 𑛘 𑛙 𑛚 𑛛 𑛜 𑛝 𑛞 𑛟 𑛠 𑛡 𑛢 𑛣 𑛤 𑛥 𑛦 𑛧 𑛨 𑛩 𑛪 𑛫 𑛬 𑛭 𑛮 𑛯 𑛰 𑛱 𑛲 𑛳 𑛴 𑛵 𑛶 𑛷 𑛸 𑛹 𑛺 𑛻 𑛼 𑛽 𑛾 𑛿 𑜀 𑜁 𑜂 𑜃 𑜄 𑜅 𑜆 𑜇 𑜈 𑜉 𑜊 𑜋 𑜌 𑜍 𑜎 𑜏 𑜐 𑜑 𑜒 𑜓 𑜔 𑜕 𑜖 𑜗 𑜘 𑜙 𑜚 𑜛 𑜜 𑜝 𑜞 𑜟 𑜠 𑜡 𑜢 𑜣 𑜤 𑜥 𑜦 𑜧 𑜨 𑜩 𑜪 𑜫 𑜬 𑜭 𑜮 𑜯 𑜰 𑜱 𑜲 𑜳 𑜴 𑜵 𑜶 𑜷 𑜸 𑜹 𑜺 𑜻 𑜼 𑜽 𑜾 𑜿 𑝀 𑝁 𑝂 𑝃 𑝄 𑝅 𑝆 𑝇 𑝈 𑝉 𑝊 𑝋 𑝌 𑝍 𑝎 𑝏 𑝐 𑝑 𑝒 𑝓 𑝔 𑝕 𑝖 𑝗 𑝘 𑝙 𑝚 𑝛 𑝜 𑝝 𑝞 𑝟 𑝠 𑝡 𑝢 𑝣 𑝤 𑝥 𑝦 𑝧 𑝨 𑝩 𑝪 𑝫 𑝬 𑝭 𑝮 𑝯 𑝰 𑝱 𑝲 𑝳 𑝴 𑝵 𑝶 𑝷 𑝸 𑝹 𑝺 𑝻 𑝼 𑝽 𑝾 𑝿 𑞀 𑞁 𑞂 𑞃 𑞄 𑞅 𑞆 𑞇 𑞈 𑞉 𑞊 𑞋 𑞌 𑞍 𑞎 𑞏 𑞐 𑞑 𑞒 𑞓 𑞔 𑞕 𑞖 𑞗 𑞘 𑞙 𑞚 𑞛 𑞜 𑞝 𑞞 𑞟 𑞠 𑞡 𑞢 𑞣 𑞤 𑞥 𑞦 𑞧 𑞨 𑞩 𑞪 𑞫 𑞬 𑞭 𑞮 𑞯 𑞰 𑞱 𑞲 𑞳 𑞴 𑞵 𑞶 𑞷 𑞸 𑞹 𑞺 𑞻 𑞼 𑞽 𑞾 𑞿 𑟀 𑟁 𑟂 𑟃 𑟄 𑟅 𑟆 𑟇 𑟈 𑟉 𑟊 𑟋 𑟌 𑟍 𑟎 𑟏 𑟐 𑟑 𑟒 𑟓 𑟔 𑟕 𑟖 𑟗 𑟘 𑟙 𑟚 𑟛 𑟜 𑟝 𑟞 𑟟 𑟠 𑟡 𑟢 𑟣 𑟤 𑟥 𑟦 𑟧 𑟨 𑟩 𑟪 𑟫 𑟬 𑟭 𑟮 𑟯 𑟰 𑟱 𑟲 𑟳 𑟴 𑟵 𑟶 𑟷 𑟸 𑟹 𑟺 𑟻 𑟼 𑟽 𑟾 𑟿 𑠀 𑠁 𑠂 𑠃 𑠄 𑠅 𑠆 𑠇 𑠈 𑠉 𑠊 𑠋 𑠌 𑠍 𑠎 𑠏 𑠐 𑠑 𑠒 𑠓 𑠔 𑠕 𑠖 𑠗 𑠘 𑠙 𑠚 𑠛 𑠜 𑠝 𑠞 𑠟 𑠠 𑠡 𑠢 𑠣 𑠤 𑠥 𑠦 𑠧 𑠨 𑠩 𑠪 𑠫 𑠬 𑠭 𑠮 𑠯 𑠰 𑠱 𑠲 𑠳 𑠴 𑠵 𑠶 𑠷 𑠸 𑠹 𑠺 𑠻 𑠼 𑠽 𑠾 𑠿 𑡀 𑡁 𑡂 𑡃 𑡄 𑡅 𑡆 𑡇 𑡈 𑡉 𑡊 𑡋 𑡌 𑡍 𑡎 𑡏 𑡐 𑡑 𑡒 𑡓 𑡔 𑡕 𑡖 𑡗 𑡘 𑡙 𑡚 𑡛 𑡜 𑡝 𑡞 𑡟 𑡠 𑡡 𑡢 𑡣 𑡤 𑡥 𑡦 𑡧 𑡨 𑡩 𑡪 𑡫 𑡬 𑡭 𑡮 𑡯 𑡰 𑡱 𑡲 𑡳 𑡴 𑡵 𑡶 𑡷 𑡸 𑡹 𑡺 𑡻 𑡼 𑡽 𑡾 𑡿 𑢀 𑢁 𑢂 𑢃 𑢄 𑢅 𑢆 𑢇 𑢈 𑢉 𑢊 𑢋 𑢌 𑢍 𑢎 𑢏 𑢐 𑢑 𑢒 𑢓 𑢔 𑢕 𑢖 𑢗 𑢘 𑢙 𑢚 𑢛 𑢜 𑢝 𑢞 𑢟 𑢠 𑢡 𑢢 𑢣 𑢤 𑢥 𑢦 𑢧 𑢨 𑢩 𑢪 𑢫 𑢬 𑢭 𑢮 𑢯 𑢰 𑢱 𑢲 𑢳 𑢴 𑢵 𑢶 𑢷 𑢸 𑢹 𑢺 𑢻 𑢼 𑢽 𑢾 𑢿 𑣀 𑣁 𑣂 𑣃 𑣄 𑣅 𑣆 𑣇 𑣈 𑣉 𑣊 𑣋 𑣌 𑣍 𑣎 𑣏 𑣐 𑣑 𑣒 𑣓 𑣔 𑣕 𑣖 𑣗 𑣘 𑣙 𑣚 𑣛 𑣜 𑣝 𑣞 𑣟 𑣠 𑣡 𑣢 𑣣 𑣤 𑣥 𑣦 𑣧 𑣨 𑣩 𑣪 𑣫 𑣬 𑣭 𑣮 𑣯 𑣰 𑣱 𑣲 𑣳 𑣴 𑣵 𑣶 𑣷 𑣸 𑣹 𑣺 𑣻 𑣼 𑣽 𑣾 𑣿 𑤀 𑤁 𑤂 𑤃 𑤄 𑤅 𑤆 𑤇 𑤈 𑤉 𑤊 𑤋 𑤌 𑤍 𑤎 𑤏 𑤐 𑤑 𑤒 𑤓 𑤔 𑤕 𑤖 𑤗 𑤘 𑤙 𑤚 𑤛 𑤜 𑤝 𑤞 𑤟 𑤠 𑤡 𑤢 𑤣 𑤤 𑤥 𑤦 𑤧 𑤨 𑤩 𑤪 𑤫 𑤬 𑤭 𑤮 𑤯 𑤰 𑤱 𑤲 𑤳 𑤴 𑤵 𑤶 𑤷 𑤸 𑤹 𑤺 𑤻 𑤼 𑤽 𑤾 𑤿 𑥀 𑥁 𑥂 𑥃 𑥄 𑥅 𑥆 𑥇 𑥈 𑥉 𑥊 𑥋 𑥌 𑥍 𑥎 𑥏 𑥐 𑥑 𑥒 𑥓 𑥔 𑥕 𑥖 𑥗 𑥘 𑥙 𑥚 𑥛 𑥜 𑥝 𑥞 𑥟 𑥠 𑥡 𑥢 𑥣 𑥤 𑥥 𑥦 𑥧 𑥨 𑥩 𑥪 𑥫 𑥬 𑥭 𑥮 𑥯 𑥰 𑥱 𑥲 𑥳 𑥴 𑥵 𑥶 𑥷

सुधांशु कुमार रे

MIC - 111. (चित्रात्मक)

मेज़ पदाधिकारी अनाज

आफिसर मेस के लिए अनाजMIC - 337.सि. घाटी चिन्ह |     मिस्र लिपिचिन्ह |     

म ख अह द्य स प

पसधारवम = गाय-बैलों के स्वामी

फलक संख्या - ११ ख

सुधांशु कुमार रे

अ		घ		प	
आ		च		फ	
इ		ज		ब	
ई		ट		भ	
ए		ठ		म	
ओ		ड		य	
क		ण		र	
क		त		ल	
ख		द		श	
ख		ध		ष	
ग		न		स	
				ह	

फलक संख्या - ११ ग

के मतानुसार कठिनाता यह है कि जो विद्वान् सुमेर व असीरिया तथा मिस्र के विशेषज्ञ हैं, वे भारत के ज्ञाता नहीं हैं अथवा जो भारत के विशेषज्ञ (इण्डोलॉजिस्ट्स) हैं वे उन देशों से अनभिज्ञ हैं या कम ज्ञान रखते हैं । यदि ये सब विद्वान् परस्पर मिलकर शोध कार्य करते तो सम्भवतः सिन्धु - घाटी की समस्या कुछ सुलझ जाती ।

आप ने कुछ मुद्राओं का लिप्यन्तरण तथा साथ में अनुवाद भी किया है । आप ने मुद्राओं को दायें से बायें की ओर पढ़ा है (फ० सं० - ११ क, ११ ख) । मोहेंजो - दड़ो के चिह्न सिलेबिक (अक्षरात्मक) तथा हड़प्पा के ऐल्फाबेटिक (वर्णात्मक) हैं । आपने एक वर्णमाला भी बनायी है (फ० सं० - ११ ग) ।

डा० प्राणनाथ विद्यालंकार

डा० नाथ^१ का कहना है सिन्धु - घाटी - लिपि के चिह्नों का रहस्योद्घाटन करने के लिए सुमेर तथा मिस्र की लिपियों का ज्ञान होना आवश्यक है। आप ने कुछ तांत्रिक चिह्नों के आधार पर एक वर्णमाला तैयार की है जो 'फ० सं० - १२' पर दी गयी है। आपने ७८ अभिलेख^२ पढ़े। यहां के लोगों को आपने आर्य माना है।

श्री राजमोहन नाथ

श्री नाथ^३ का मत है कि आर्यों ने (ऋग्वेद के अनुसार) दस्युओं के विरुद्ध दो महायुद्ध किये और उनके दो नगर नष्ट भ्रष्ट हो गये। युद्ध का स्थान हड़प्पा था। सिन्धु - घाटी के निवासी दस्यु थे। आप ने मोहेंजो - दड़ों की परिभाषा इस प्रकार की है। महा - इंजदड़ो; महा = महान्; इंज या इंग = संकेत देना अथवा नियंत्रित करना; दड़ो = दुर्ग अर्थात् संकेत देने वाला बड़ा किला अर्थात् सैनिक मुख्यालय। आप ने कई मुद्राओं को पढ़ा तथा एक वर्णमाला भी तैयार की जो 'फ० सं० १३' पर दी गयी है।

मुद्रा-प्लेट I, MD सील नं० २४, CIV—जो श्री नाथ जी ने बायें से दायें इस प्रकार पढ़ा 'वरजिखा (देवता) तथा उनकी फौज'। इस मुद्रा में एक सींग वाला पशु भी चित्रित है।

स्वामी शंकरानन्द

स्वामी शंकरानन्द जी^४ की धारणा है कि यहां की संस्कृति वैदिक थी तथा उन आर्यों से भिन्न थी जो आक्रमणकारी थे। पर्यटनशील जाति इतने महान् ग्रन्थ (वेद) की रचना कर ही नहीं सकती। आप यह भी मानते हैं कि वेद पुजारियों के ग्रन्थ थे, जिसमें समाज के एक भाग का वर्णन है। इसके अतिरिक्त वेदों में दुखों व कठिनाइयों का वर्णन है जिससे सिद्ध होता है कि सिन्धु - घाटी के निवासी विजेता नहीं अपितु पराजित व्यक्ति थे।

भाषा व लिपि पर स्वामी जी ने बड़ा गम्भीर शोध किया है। प्राचीन पश्चिमी-एशिया के अनेक देशों की लिपियों का अध्ययन किया तथा तुलनात्मक खोज करने के पश्चात् यह निष्कर्ष निकाला कि सिन्धु-घाटी-लिपि ही पश्चिमी-एशिया के देशों की लिपियों की जन्मदाता है, क्योंकि उनमें यहाँ की लिपि के बहुत से चिह्न पाये जाते हैं। आप के कथनानुसार इस लिपि में लगभग ४०० चिह्न हैं, ११८ संश्लिष्ट वर्ण हैं तथा ४६९ शब्द हैं (फ० सं० - १४, १४ क, १४ ख, १४ ग)।

आप ने कुछ मुद्राओं का रहस्योद्घाटन तो तंत्राभिधान (तांत्रिक शब्दकोश) द्वारा किया तथा कुछ वर्षों पश्चात् एक वर्णमाला प्रस्तुत की (फ० सं० - १४ क)। उर (मेसोपोटामिया) से प्राप्त एक मुद्रा को, जो ब्रिटिश संग्रहालय में सुरक्षित है तथा जिसका क्रमांक १२२९४६ है, स्वामी जी ने पढ़ा है।

1. आप गुरुकुल की उच्चतर शिक्षा प्राप्त कर लन्दन चले गये तथा वहाँ से आर्कुर सनातन धर्म कालेज, कानपुर तथा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में १९३० में अध्यापक रहे। आप का स्वर्गवास हो गया।
2. Journal of Royal Asiatic Society, London (1931)।
3. गौहाटी विश्वविद्यालय में प्रवक्ता रहे। आपने अपना सिन्धु - घाटी - लिपि पर शोध - कार्य 'भारतीय इतिहास कांग्रेस' के वास्तव्य अधिवेशन में प्रस्तुत किया। यह अधिवेशन गौहाटी में २९ दिसम्बर १९५९ को सम्पन्न हुआ।
4. रामकृष्ण मिशन, वेदांत मठ २९ बी, राजा किशन स्ट्रीट, कलकत्ता।

डा० प्राण नाथ द्वारा प्रस्तुत की गई वर्णमाला

अ	आ	ई	ई	उ	ऊ	ए	ऐ
X+	✕	↑↑	△△	○∩<	०००	✕✕	▲
ओ	औ	अं	अः	क	कि	क्या	ख
↓□	≡	⊗		↑↑	✕	✕	○
ग	गो	गौ	घ	घो	घौ	ङ	च
√^	√	√	≡	≡	≡	✕	○
क्ष	ज	जा	ट	टा	ठ	ड	ढ
⊗	F	F	C	E	○	~	✕
ण	णा	त	द	ध	न	प	पा
		⊥	५	D	✕	└	└
पी	पै	पो	ब	भ	म	मा	य या
ΥΥ	≡	≡	○	◇	✕	✕	UW
यो	र	ल ला	व	वा	स	ह	हा
U	△	77]	□	>◇	8	8

फलक संख्या - १२

श्री राजमोहन नाथ

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ओ
ॐ, 卐	田	×	×	卐, ✓	卐	卐	ॐ
क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ट	ठ	ड	ण	त	थ	द	
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ध	न	प	फ	ब			
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
म	म	य	र	ल	व	श	
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ष	स	ह					
ॐ	ॐ	ॐ					
<div> व र श ख बग बं ता ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ </div>							

फलक संख्या - १३

स्वामी शंकरानन्द

अ	आ	इ	
११	५५५५५	⊗ ⊗ 卐	०० ८
ई	उ	ऊ	ए
००		⌞ ⌞	⌞ ⌞
ऐ	ओऔ	क	ख
⌞ ⌞	⌞ ⌞	⌞ ⌞	⌞ ⌞
ग	घ	ङ	च
△ △	⌞ ⌞	⌞ ⌞	⌞ ⌞
छ	ज	झ	ट
⌞ ⌞	⌞ ⌞	⌞ ⌞	⌞ ⌞
ठ	ड	ण	
⌞ ⌞	⌞ ⌞	⌞ ⌞	⌞ ⌞

फलक संख्या - १४

हर पी० मेरिंगो

मेरिंगी^१ ने सिन्धु - घाटी की लिपि के चिह्नों की तुलना हिंटाइट के चिह्नों से की है। चिह्न 'फ० सं० - २३' पर दिये हैं तथा उनका विवरण निम्नलिखित है :—

१ - पहाड़।	२ - राजा।	३ - नगर।	४ - मुख्य नगर।
५ - मेज।	६ - अनाज।	७ - मन्दिर।	८ - मनुष्य।
९ - घोड़ा।	१० - सामान ढोने वाला।	११ - खरल व बढ़ा।	(आगे पृष्ठ ५१ के नीचे)

एस्को परपोला, सोमो परपोला आदि

परपोला^२ आदि विद्वानों ने सिन्धु - घाटी - सभ्यता को द्रविड़ माना है और चिह्नों को उसी भाषा को आधार बनाकर पढ़ने का प्रयास किया है जिसका विवरण नीचे दिया गया है :—

१ - उटई = अपना; २ - कोटु = देना; ३ - अन = दास या मनुष्य; ४ - पेन्टी = स्त्री; ५ - आल = राज्य करना; ६ - वेल्लि = सक्रिय; ७ - वल = सत्ता; ८ - मीन = तारा या मंगल तारा; ९ - मई = काला; १० - माटी = संस्कार; ११ - टणटा = टैक्स या दण्ड; १२ - अय्या = पिता; १३ - अम्मा = माता (देवी)।

मुद्रा (क्रमसंख्या - २५१८) के अर्थ हैं 'रानी का सेवक'। इसके नीचे अंक दिये गये हैं :—

१ - अ; २ - इल; ३ - मूडू; ४ - नालकू; ५ - ऐदु; ६ - आरु; ७ - यलू; ८ - एदु; ९ - अनपत्तु; १० - पत्तु।

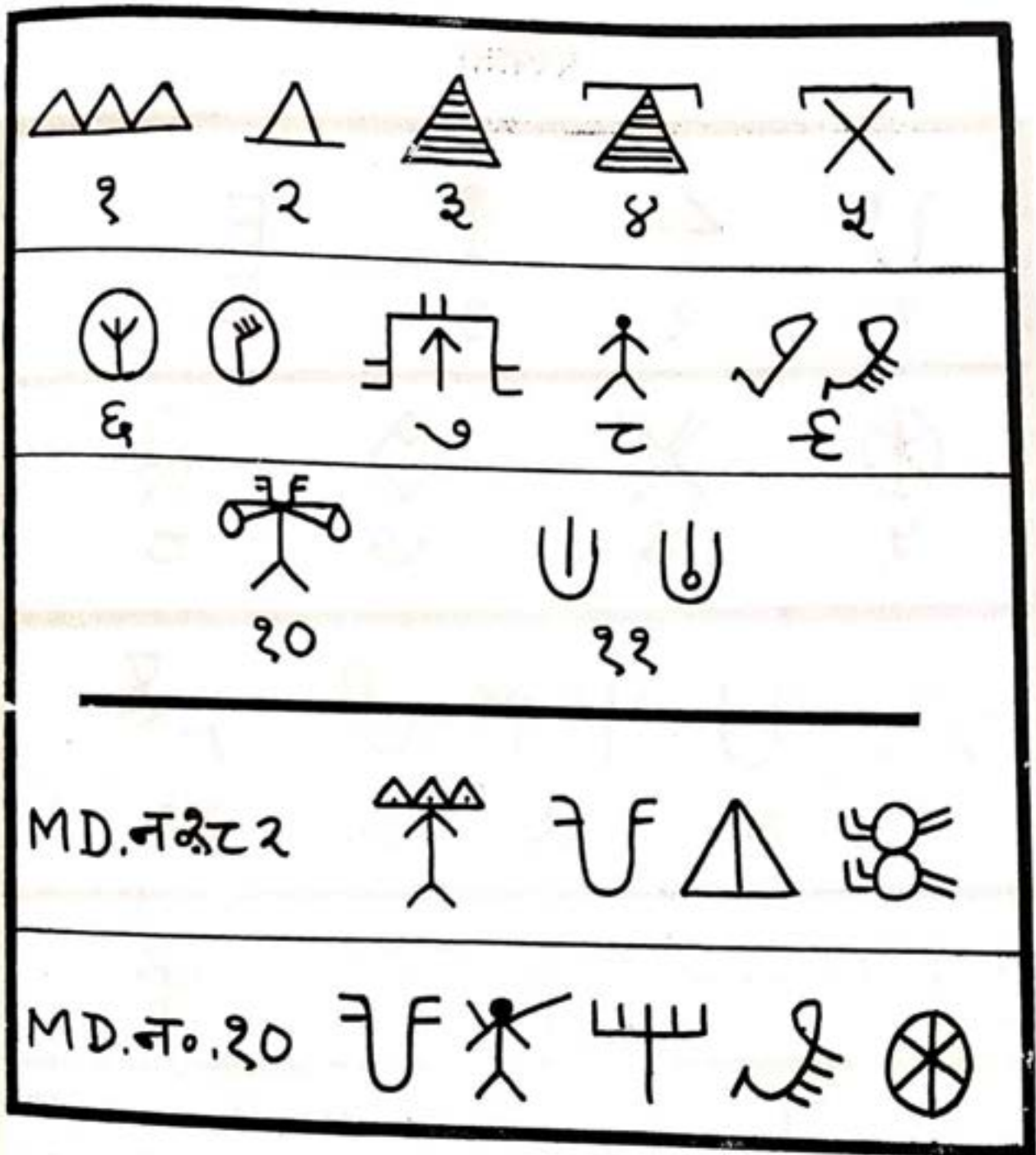
डा० फ़तेह सिंह

डा० फ़तेह सिंह^३ का पूर्ण विश्वास है कि यहाँ की संस्कृति वैदिक थी। यहाँ की मुद्रायें मुहरें (लगाने के लिए) नहीं हैं अपितु दर्शन व धर्म पर पुस्तकों के मुद्रण के लिए बने पृष्ठ हैं। आपके कथनानुसार 'मेने अभी तक लगभग दो सहस्र मुद्राओं का रहस्योद्घाटन कर लिया है, जिसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि उनकी भाषा संस्कृत है तथा विचार ब्राह्मणों तथा उपनिषदों के सदृश्य हैं।'

आप ने वैदिक साहित्य व दर्शन का बड़ा गहन अध्ययन किया है। इसके अतिरिक्त आप ने संसार की अन्य प्राचीन संस्कृतियों का भी भले प्रकार तुलनात्मक अध्ययन किया है। मुद्राओं पर अधिकांश वैदिक देवताओं के नाम — अग्नि, इन्द्र, इन्दु — मिलते हैं। इन्द्र के साथ वरुण तथा कुछ देवियों के नाम भी मिलते हैं; जैसे उमा, इन्द्रा, परा, ससंतत्पा आदि। मुद्राओं पर पशुओं के मुख अधिकतर दायीं ओर हैं, बहुत कम बायीं ओर मिलेंगे। आप का मत है कि दायीं ओर मुंह वाले पशु देवताओं से सम्बन्धित हैं तथा बायीं ओर मुंह वाले पशु असुरों से सम्बन्धित हैं। (देखिये — पृष्ठ ५३ के नीचे)

१. हर पी०. मेरिंगी एक जर्मन विद्वान् थे। आपने अपनी पुस्तक "Zur Indus Schrift" (१९५९ में) सिन्धु - घाटी लिपि का रहस्योद्घाटन किया है।
२. यह विद्वान् स्कैन्डिनेवियन इंस्टीट्यूट आफ एशियन स्टडीज़ डेनमार्क के हैं। इनका स्पेशल पब्लीकेशन 'नं० - ३' है :— 'Further Progress in the Indus Script Decipherment,' Copenhagen - Denmark (1969)।
३. भूतपूर्व निदेशक, प्राच्य भाषा प्रतिष्ठान, जोधपुर (राजस्थान)। लेखक की आप से एक भेंट, २० अक्टूबर १९६० को हुई!

हर पी० मेरिगी



फलक संख्या - १५


पृष्ठ - ५० से (पांचवीं पंक्ति के आगे से).....


दो मुद्राओं को इस प्रकार पढ़ा :—

ऊपर वाली : राजा का छत्र पकड़ने वाला ।

नीचे वाली : घोड़ों पर छाप लगाने की मुद्रा तथा कांटा ।

परपोला


१


२


३


४


५


६


७


८


९


१०






११


१२


१३


१४

मुद्रा } १५ १६ १७ १८
क्र०

१



२


३


४


५


६


७


८


९


१०

फलक संख्या - १६

आपके अनुसार पाँच गायों के चित्र भी मिलते हैं, जो सृष्टिकर्ता की नारी शक्तियाँ हैं। एक सींग वाले भैंसे या बल के विषय में आप का कथन है कि वह एक काल्पनिक अंज (अजन्मा, आदिकाल से) है, जो पशुओं व मनुष्यों का लाक्षणिक संकेत है। आपने अपने कथन को सिद्ध करने के लिए वैदिक कल्पना का सहारा लिया है, जिसमें एक सींग की गायों तथा घोड़ों का वर्णन है। वैदिक साहित्य में अग्नि, इन्द्र व सोम को भी एक सींग का बतलाया गया है।

आप का कथन है कि मुद्राओं पर चार प्रकार की लिपियाँ मिलती हैं, जिनमें से तीन बायें से दायें तथा एक दायें से बायें को ओर हैं। मुद्राओं में अन्य देशों के नाम भी मिलते हैं, जैसे हिन्दु (पश्चिम), इरा (पूर्व) अर्थात् सिन्धु से लेकर इरावती तक, अनदमा (अण्डमन द्वीप) तथा वृम (बर्मा) आदि। ये मुद्राएँ वृक्षों की छालों पर, कपड़े तथा पशुओं की खालों पर छापने के लिए बनायीं जाती थीं, क्योंकि यहाँ के निवासी मुद्रण की कला में प्रवीण थे। आप ने एक वर्णमाला प्रस्तुत की है तथा कुछ संश्लिष्ट वर्ण व अर्थ भी दिये हैं (फ० सं० - १७; १७ क; १७ ख)।

श्री एस० आर० राव

लेखक के कुछ प्रश्नों का उत्तर देते हुए श्री राव¹ ने अपने निम्नलिखित विचार स्पष्ट किये :—

उनके विचार से सिन्धु - घाटी के निवासी भारोपीय (इण्डो योरोपियन) भाषा भाषी थे और पूर्व - वैदिक - काल के थे।

उनके कथनानुसार यह तो कहना कठिन है कि यहाँ के मूल निवासी कहाँ से आये परन्तु मानव - विज्ञान (ऐन्थ्रोपॉलोजी) की खोजों द्वारा यह सिद्ध हुआ है कि उनकी संस्कृति ईरान के प्राचीन निवासियों से मिलती है, क्योंकि आर्यों की तरह वे यज्ञ, बलि, अग्नि-पूजा आदि के रीति - रिवाजों का पालन करते थे तथा उनके देवी देवता भी उसी प्रकार के थे।

उनका कहना है इस संस्कृति का विकसित काल ई० पू० २५०० से १९०० तक तथा उत्तर काल १९०० से २६०० ई० पू० तक माना जाता है। यह बात C¹⁴ परख (कार्बन १४ - टेस्ट) द्वारा प्रमाणित हो चुकी है। उसकी लिपि व भाषा अभी तक पढ़ी नहीं जा सकी है, फिर भी अभी तक बहुत से विद्वानों ने अपनी अपनी कसौटी बनाकर उन मुद्राओं को पढ़ने का प्रयत्न किया है जो सर्वमान्य न हो सका।

आरम्भ में विद्वानों ने प्रत्येक चिह्न को चित्रात्मक व भावात्मक शब्द मान लिया परन्तु कोई व्यंजन या स्वर नहीं माना, पर वड्डेल ने इस ओर सर्वप्रथम प्रयास किया, जिसका आधार था सुमेर भाषा।

पूर्व - विकसित - काल के लगभग ३९० चिह्नों को उत्तर-काल में घटा कर २० मौलिक चिह्न निर्धारित किये गये। फ़िनीशिया में तो लिपि का सरल बनाने के क्रम ने एक अक्षरात्मक रूप प्रदान कर दिया।

श्री राव के रहस्योद्घाटन के कुछ वर्ण तथा दो मुद्राओं के वर्ण 'फ० सं० - १८' पर दिये गये हैं।

लोथल मुद्रा : बायें से दायें पढ़ी जायेगी। शब्द है, "तारक महा"। अर्थ है, "एक असुर"।

मोहेँजो - दड़ो मुद्रा² : दायें से बायें पढ़ी जायेगी। शब्द है, "(फ़) त्रिला - अप - पार"। अर्थ है, "सरक्षक"।

1. आर्कैयोलॉजिकल सर्वे आफ़ इण्डिया से सम्बन्धित है। आप भारत के एक प्रसिद्ध पुरातत्त्व वेत्ता हैं, कई उत्खनन कार्य सम्पन्न किये हैं। (लेखक को १३ दिसम्बर १९७२ को आप से औरंगाबाद में भेंट हुई। कुछ वर्ष पूर्व आप ने लोथल का उत्खनन किया है।

2. The Journal of "Andhra Historical Research Society", Vol. XXXIII, Part I (1972-73)

डा० फतेह सिंह

अ	इ ई उ ऊ	ए ओ :
1,0,0	१ २ U.W	१/ २,५ "
ऋ	क ख	ग घ च
F, ८	+ ॥, ॥, X	८, ५ ८
ज	ण त द	
१, ८, १, १, १	, १, १, १, १, १, १, १	
ध	न	
१, १, १, १, १	१, १, १, १, १, १, १, १	
प	भ ब म	
१, १, १, १, १	१, १, १, १, १, १, १, १	

फलक संख्या - १७

डा० फतेह सिंह

य	र	व	स
८, ८, ८), १, १, १	U, V	E, E, E, ३
श	ह	त्र	
१, १	४, ४, ४, H	५, ७, ७, ८	

कुछ संश्लिष्ट वर्ण व अर्थ

| + ८ = ८ अन = अंतरात्मा

0 + ८ = ० अन = मध्यात्मा

0 + ० = ० अप = ज्ञान

| + □ = □ अम = ज्येष्ठ प्राण

| + □ + □ = □ अम्म = अम्बा माता

फलक संख्या - १७ क

डा० फतेह सिंह

 $\square + \wedge = \diamond$ मन, $\cup + \wedge = \checkmark$ जन

 $| + \square + \square + | + \square + \square + | = \text{卐}$ माता मही
अम्मा म्मा

 $V + \cup + F = \cup F$ वृत्र = वृत्रासुर

 $\text{C} + \text{E} = \text{८३}$ यश = प्रकाश, ज्ञान

 $\bigcirc +) + | + \wedge = \text{ॐ}$ प्राण, $| + \text{E} + V = \text{ॐ}$ अश्व

 $| + \wedge + (+ > = \text{ॐ}$ इन्द्र, $\psi + \wedge = \text{ॐ}$ ज्ञान

 $\bigcirc + \square + \wedge + | = \text{ॐ}$ अग्नि

 $| + \wedge + \wedge + || = \text{ॐ}$ अन्ना

 $\bigcirc + \wedge + \wedge + | = \text{ॐ}$ अन्ना = सूक्ष्म अन्न

 $8 + | + \wedge + \cup + \bigcirc = \text{ॐ}$ हिन्दु = सिन्दु

 $\cup + \square + | = \text{ॐ}$ उमा $\bigcirc + \cup + || = \text{ॐ}$ ॐ

फलक संख्या - १७ ख

श्री एस० आर० राव

अ U	आ ॐ	ऐ ॐ	औ ॐ	ब □	व □	न ५
बा □	प ◇	प ◇	पा ◇	ग ॥	ग ॥	
गा ॥	द D	द D	ह F	ह E	हा E	व Y
ख ॥	ख ॥	खा ॥	क V	का Y	ल ॥	ल ॥
ल ॥	ला ॥	म ॥	म ॥	मा ॥	स ॥	र ॥
र ॥	रा ॥	री ॥	इ ॥	इ ॥	इ ॥	त ॥
संश्लिष्ट वर्ण = प्त 0+X=⊗ त् 0+X+1=⊗						
ख ↓+F=॥	घ ॥+F=॥	फ ◇+F=◇	फ ◇+F=◇	क्क V+U+V=॥	व्व Y+U+Y=॥	
अ: U+F=॥	प्क = ◇+V=◇	अइ U+॥=॥				
लोथल मुद्रा :-			मोहेंजो-दड़ो मुद्रा :-			
ॐ (ॐ ॐ ॐ ॐ			ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ			
प्ता र ग आ म हा			र आ प प आ ल त्रि प्क			

फलक संख्या - १८

श्री एम० वो० एन० कृष्णा राव

श्री कृष्णाराव^१ के अनुसार सिन्धु-घाटी से लगभग २६०० मुद्राएँ प्राप्त हुई हैं, जिनमें से वे लगभग १६७५ मुद्राओं के चिह्नों का रहस्योद्घाटन करने का दावा करते हैं। इनमें लगभग चार सौ चिह्न हैं, जो चित्रात्मक, चिह्नात्मक, कुछ मूल तथा मिश्रित चिह्न हैं और जो दायें से बायें की ओर पढ़े जायेंगे। कुछ लोगों का विचार है कि मुद्राओं से चाक - मिट्टी की छापें (Sealings) तैयार करने में दिशा परिवर्तित हो जाती है परन्तु मिट्टी के बर्तनों पर तथा धातु के बर्तनों व अस्त्रों पर भी चिह्न दायें से बायें ही दिये हुए हैं।

आपने इस लिपि का रहस्योद्घाटन कार्य १९६८ के जनवरी मास से आरम्भ किया था और सबसे पहली मुद्रा 'पशुपति वाली' पढ़ी थी। चार वर्ष शोध - कार्य करने के पश्चात् कार्य स्थगित कर दिया। ऐसा प्रतीत होता है कि आरम्भ काल के चित्रों व चिह्नों में लिपि को सरल बनाने के प्रयत्न का क्रमिक विकास हुआ है।

सिन्धु घाटी की संस्कृति मिश्रित - वैदिक है, जिसमें प्राकृत व संस्कृत भाषाएँ मिलती हैं। यहाँ के निवासी फन्नी, असुर तथा आर्य थे। वरुण, इसन, पवन, सयोन आदि देवताओं के नाम मिलते हैं।

इनका अपना दृढ़ विश्वास है कि सिन्धु - घाटी के मूल निवासी मारी (पश्चिम मेसोपोटामिया का एक मुख्य नगर) से आकर यहाँ बस गये। इनको बेबीलोन, मिस्र व असीरिया के लोगों ने परास्त किया। इस प्रकार यहाँ के निवासी एक मिश्रित जाति के हो गये।

आपने इस लिपि के रहस्योद्घाटन में ऐक्रोफोनी पद्धति अपनायी है, जिसमें उस चित्र के नाम का पहला या अंतिम अक्षर ले लिया जाता है। जिस प्रकार फिनीशिया के निवासियों ने अपने अक्षरों के निर्माणार्थ ऐक्रोफोनी पद्धति अपनायी है। आपकी निर्धारित की हुई वर्णमाला 'फ० सं० - १९; १९ क' पर दी गई है।

श्री एल० एस० वाकणकर

श्री वाकणकर^२ ने इस लिपि को पढ़ने का प्रयास किया है। कुछ चिह्नों का ध्वनि निर्धारित की है, जो 'फ० सं० - २०' पर दी गयी है।

एरस्ट डब्लोफ़र एवं एम० जो० डो० हेवेसी

इन विद्वानों ने ईस्टर द्वीप की लिपि का अध्ययन करके उसकी समानता दिखायी है कि वह सिन्धु - घाटी लिपि से मिलती है (फ० सं० - २१)।

श्री बाँके बिहारी चक्रवर्ती

श्री बाँके बिहारी चक्रवर्ती^३ ने ५११ मुद्राओं को पढ़ने का प्रयत्न किया है। आपके कथनानुसार मुद्राओं पर केवल नाम खुदे हुए हैं। आपका शोध १९७५ में 'डेसिफ़रमेंट आफ़ इण्डस वैली स्क्रिप्ट (Decipherment of Indus - Valley Script)' के नाम से प्रकाशित हुआ (फ० सं० - २२)।

1. टेक्नोक्ल असिस्टेंट, आरकेयोलॉजिकल सर्वे आफ़ इण्डिया, (औरंगाबाद, महाराष्ट्र), (लेखक ने श्री कृष्णाराव से औरंगाबाद में २० दिसम्बर १९७२ को भेंट की ।)
2. श्री एल० एस० वाकणकर से लेखक की भेंट २२ दिसम्बर १९७२ को बम्बई में हुई। आप स्क्रिप्ट स्टडी ग्रुप - बम्बई (Script Study Group of Bombay) के एक शोधकर्ता रहे हैं।
3. श्री बाँके बिहारी जी कलकत्ता - विश्वविद्यालय के प्रवक्ता हैं। आपको यू० जी० सी० (युनिवर्सिटी ग्रान्ट कमोशन) ने आर्थिक सहायता प्रदान की, ताकि आप सिन्धु - घाटी - लिपि पर शोध - कार्य कर सकें।

श्री कृष्णा राव

आ = ॥	इ = ।	उ = ॥ ॥ ॥	ए = ॥ ॥ ॥ ॥	ओ = ॥ ॥ ॥ ॥
क = ॥ ॥ ॥ ॥	ख = ॥ ॥ ॥ ॥	ग = ॥ ॥ ॥ ॥	घ = ॥ ॥ ॥ ॥	ङ = ॥ ॥ ॥ ॥
च = ॥ ॥ ॥ ॥	छ = ॥ ॥ ॥ ॥	ज = ॥ ॥ ॥ ॥	झ = ॥ ॥ ॥ ॥	ञ = ॥ ॥ ॥ ॥
ट = ॥ ॥ ॥ ॥	ठ = ॥ ॥ ॥ ॥	ड = ॥ ॥ ॥ ॥	ढ = ॥ ॥ ॥ ॥	ण = ॥ ॥ ॥ ॥
त = ॥ ॥ ॥ ॥	थ = ॥ ॥ ॥ ॥	द = ॥ ॥ ॥ ॥	ध = ॥ ॥ ॥ ॥	न = ॥ ॥ ॥ ॥
प = ॥ ॥ ॥ ॥	फ = ॥ ॥ ॥ ॥	ब = ॥ ॥ ॥ ॥	भ = ॥ ॥ ॥ ॥	म = ॥ ॥ ॥ ॥
य = ॥ ॥ ॥ ॥	र = ॥ ॥ ॥ ॥	ल = ॥ ॥ ॥ ॥	व = ॥ ॥ ॥ ॥	श = ॥ ॥ ॥ ॥
ष = ॥ ॥ ॥ ॥	स = ॥ ॥ ॥ ॥	ह = ॥ ॥ ॥ ॥	ळ = ॥ ॥ ॥ ॥	ॠ = ॥ ॥ ॥ ॥
ॡ = ॥ ॥ ॥ ॥	ॢ = ॥ ॥ ॥ ॥	ॣ = ॥ ॥ ॥ ॥	। = ॥ ॥ ॥ ॥	॥ ॥ ॥ ॥

श्री कृष्णा राव

स = 

श =  ष = 

द =  द्य = 

ज =  झ = 

ल =  ग =  ब = 






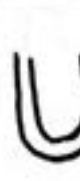


































फलक संख्या - १९ क

श्री एल० एस० वाकणकर

क X	ग ↑	ण 	प U
न १	थ O	श्री ३५	य्य Y
म २	धू ◇	इ 卄	व □
स ३	श ↑	र P	

फलक संख्या - २०

सिन्धु - घाटी व ईस्टर द्वीप चिह्नों की तुलना

सि. घा.	ई. द्वी.	सि. घा.	ई. द्वी.	सि. घा.	ई. द्वी.	सि. घा.	ई. द्वी.
							
							
							
							
							

बांके बिहारी चक्रवर्ती

क	खा	न	मा	ल	सो	यश
का	खे	ना	म	ला	श	स
कि	ग	नि	य	लि	शा	श
की	गा	प	या	व	ष	क्र
कु	गो	ब	यो	वि	शि	श्री
कू	ज	बा	र	स	शु	ता
को	त	बि	रा	सि	श	सा
कौ	ता	बी	रु	सू	क्ष	त्रा
ख	ति	म	रु	से	क्षा	न्श
F.E.M. 692 	F.E.M. 121 	M.S.Vats. 232 	बाएं से दाएं पढ़िये			
क सिसि	क लायशय	ला कस द ज रा				

फलक संख्या - २२

श्री जॉन न्यूबेरी

श्री जॉन न्यूबेरी¹ ने सिन्धु - घाटी के निवासियों को शमन (Shaman)² माना है, जो जादू टोना आदि करते थे। पेड़ों व नदियों के पुजारी थे। तंत्र विद्या के ज्ञानी थे। आपने दो पुस्तिकाएँ प्रकाशित की हैं (फ० सं० - २३)।

शंकर हाजरा द्वारा रहस्योद्घाटन

श्री हाजरा³ ने सिन्धु - घाटी के निवासियों को आर्य माना है। उन्होंने कुछ चिह्नों⁴ के रूप - भेद दिये हैं और उनकी ध्वनियाँ भी दी हैं। उन्होंने तीन मुद्राओं को इस प्रकार पढ़ा है :—(फ० सं० - २४)

१. धम्मनाग - किसी शासक का नाम है।
 २. अनार्यज⁵ - किसी अनार्य द्वारा बनाया हुआ।
 ३. धरध⁶ - एक शब्द है (उसके अर्थ स्पष्ट नहीं किये)।
- तीनों मुद्राओं की क्रम-संख्या भी दी गयी है।

होज्जो द्वारा रहस्योद्घाटन

जेकोस्लावाकिया निवासी विद्वान् होज्जो⁷ ने हित्ती लिपि से तुलना करके इसको पढ़ने का प्रयास किया, जिसको टॉमस (E. J. Thomas)⁸ ने प्रकाशित करवाया।

(मुद्राओं को सीधी ओर से पढ़ा जायेगा)
उन्होंने ऐसी चार मुद्राओं को पढ़ा :—

१. कुसी की मुद्रा।
२. संता के मन्दिर की मुद्रा।
३. कुश (नगर) की मुद्रा।
४. अक्काद (नगर) की मुद्रा (फ० सं० - २५)।

1. Mr. John Newberry कनाडा के एक विद्वान हैं।

2. Newberry, J. : 'The Shamans of Indus and Their Script' (1981) - Two Handouts.

3. शंकर हाजरा कलकत्ता के एक विद्वान् हैं, जिन्होंने सिन्धु - घाटी - लिपि को पढ़ने का प्रयास किया तथा अपनी खोज का विवरण अपनी पुस्तक :—

Sankar Hajra : The Decipherment of the Inscriptions of the Seals of Harappa and Mohenjo-daro [Cal. 1974] में प्रकाशित कराया।

4. Ibid — P. 34.

































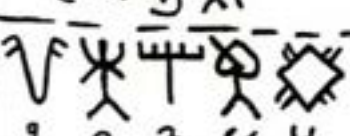
5. Ibid — P. 39.

6. Ibid — P. 43.

7. बी० होज्जो ने हित्ती लिपि [कीलाकार] के अनेक अभिलेखों का, जो बोग्जकुई (हत्तुशा) से उत्खनन में प्राप्त हुए, १९१७ में रहस्योद्घाटन किया।

8. Thomas, E. J. : Indian History Quarterly, Vol. XVI [Dec. 1940]

जॉन न्यूबेरी

 दौड़ रहा है	 एक स्त्री दोनों हाथों के साथ	 गर्म देशों की मछली
 शिक्का कर रहा है	 दो स्त्रियाँ जो पीपल पूजती हैं	 दिशा बोधक चिन्ह
 धनुष चारी	 स्त्री जो पीपल की रीतियों वाली है	 एक सींग वाला पशु
 तीर कमान	 प्रेम करना	 एक सींग वाला पशु खड़ा है
 फेंक रहा है	 देवता का चढ़ावा	 गैण्डा
 शुभ कामनायें दे रहा है	 नदी का मोड़	 पानी ले जाने वाला
 सीने से लगाना	 नदी का पानी	 नदी किनारा
 धार्मिक रीतियों करने वाला	 पीने का पानी	 उत्तर दिशा
 स्त्री के साथ पुरुष	 वृक्ष	 दक्षिण
 स्त्री	 सभापतित्व कर रहा है	 पूरब पश्चिम
 स्त्री का हाथ	 मछली	 पांच उंगलियाँ
एक मुद्रा  १ २ ३ ४ ५	१ = पश्चिम. २ = सभापतित्व करने वाला ३ = पांच उंगलियों वाला हाथ. ४ = स्त्री (पीपल) ५ = दिशा	अर्थ = पशुपति, स्त्रियाँ और पीपल सिर पर रखे शमन पश्चिम का सभापतित्व कर रहा है अपने हाथों के साथ





फलक संख्या - २३

शंकर हाजरा द्वारा रहस्योद्घाटन

अ		ध	
ऊ		न	
ग		व	
ज		म	
न		य	
ण		र	
त		स	
द			
तीन प्रति दर्श MC 89 348 ध र्म णा ग धर्मनाग ①		MC 99 684 अ न य ज अनार्यज ②	
		VT 2728 ध र ण धरध ③	







फलक संख्या - २४








हरोज्नी द्वारा रहस्योद्घाटन

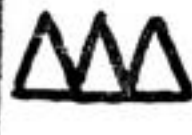






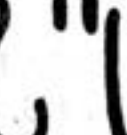

 <p>१) इ कु सी मुद्रा</p>	 <p>३) इ य त न स. मुद्रा</p>
 <p>२) इ पिरेमिड सी कु मुद्रा</p>	 <p>४) ई त क क अ मुद्रा</p>

फलक संख्या - २५

रूसी विद्वानों द्वारा रहस्योद्घाटन

					
१	२	३	४	५	६

						
७	८	९	१०	११	१२	१३

								
१४	१५	१६	१७	१८	i	ii	iii	iv

फलक संख्या - २५ क

रूसी विद्वानों द्वारा रहस्योद्घाटन

इन विद्वानों ने अपने निष्कर्ष एक पुस्तक¹ में प्रकाशित कराये ।

‘फ० सं० - २५ क’ पर चिह्नों² के नीचे क्रम-संख्या दी गयी है, जिसके अनुसार उनका निम्नलिखित स्पष्टीकरण किया है :—

१ - मनुष्य ।

२ - हरकारा ।

३ - एक स्त्री ऊपर हाथ उठाये है,
उसके वक्ष बहुत बड़े हैं ।

४ - मनुष्य, भाला पकड़े है ।

५ - मनुष्य, धनुष लिए ।

६ - मनुष्य, पात्र लिए हुए ।

७ - पक्षी ।

८ - मछली ।

९ - मछली (विशेष प्रकार) ।

१० - कर्क (केकड़ा) ।

११ - हाथ ।

१२ - अश्वत्थ वृक्ष ।

१३ - ताड़ का वृक्ष ।

१४ - पर्वत ।

१५ - पात्र ।

१६ - वीणा ।

१७ - मुट्ठी-भर ।

१८ - बोझ ढोने वाला ।

मुद्रा³, जो ‘फ० सं० - २५ क’ पर दी गई है,

का स्पष्टीकरण :—

(i) मछली,

(ii) देवी,

(iii) कुट - २,

(iv) बेल,

अनुवाद⁴ :—‘जो वह दीप्तिमान देवी, हमसे दिलवाई है,
दो बलिदान,’

भावार्थ⁵ :—दीप्तिमानदेवी ने हमसे दो बलिदान दिलवाये,

1. Zide, Arlene, R. K., Zvelebil, Kamil, V. :

The Soviet Decipherment of the Indus Valley Script (Hague - 1976).

2. Ibid-p. 105.

3. Ibid-p. 133.

4. ‘That which the shining (celestial, beautiful) Goddess, made us give (her, is equal to) two offerings.’

5. ‘Two offerings which ‘shining (beautiful) Goddess made us give her.’

पशुपति — मुद्रा के विविध स्पष्टीकरण (फ० सं० — २६) :

- मुष्ठांशु कुमार रे : दायें से बायें—य. ग. अ. ल. अ. म 'योगालयम्' — मध्य में योगी बैठा है ।
 स्वामी शंकरानन्द : दायें से ऊपर को चलकर बायें को फिर नीचे—
 भैंसा = ज; गेण्डा = ल; मनुष्य = क ;
 शेर = त ; जार = म ; मछली = ध ;
 मनुष्य = क; हाथी = श; चीता = न ;
 नीचे का बकरा = ए ;
 लिप्यन्तरण = जलः (पथ) ततम् शकुन ।
 भाषान्तर = पानी की बिड़ियों ने सारे पानी के स्रोतों को ढँक लिया है ।
- एम० वी० एन० कृष्णा राव : ऐकौजोनी पद्धति से दायें से बायें—
 महिशा (भैंसा) = म; खडग (गेंडा) = ख;
 नर (मनुष्य) = न; सद्मी (हाथी) = स;
 नर = न
 लिप्यन्तरण = मख नसन,
 भाषान्तरण = मख नाशन,
 अर्थ = मखासुरों का नाश करने वाला,
- एस्को परपोला : भगवान् शिवः—(सितारे का मनुष्य).
 डी० एम० बहआ : दायें से बायें — (केवल चिह्नों के अर्थ लगा कर पढ़ा है, चित्रों को छोड़ दिया है) इस प्रकार :—
 'अ — ज — ल — ड — प — स'
 लिप्यन्तरण : अजल उपास
 भाषान्तर : अकल उपास्य
 अर्थ : पूजने योग्य पहाड़
- राज मोहन नाथ : दायें से बायें—मीडा भाकम अर्थात् बेकर (Baker — रोटी बनाने वाला)
 कृतेह सिंह : दायें से बायें पढ़ा है ।
 लिप्यन्तरण : वृत्राग्निशुनौ प्राणा नोन्द्रेन्दु ।
 भाषान्तरण : इन्द्र और चन्द्र स्वरूप वृत्र और अग्नि शुन जीव के प्रदाता हैं ।

'फ० सं० — २६' पर नीचे दी गई मुद्रा इस प्रकार पढ़ी गई

- स्वामी शंकरानन्द : बायें से दायें — प. ण. या = पाणिर्वा = वाणिर्वा (पत्नी जाति वैदिक काल में व्यापारी थी)
 कृष्णा राव : दायें से बायें — का. व. त = तौका = —का पुत्र
 सा० जे० गंड : बायें से दायें — प. त्र. य = पुत्र
 कृतेह सिंह : दायें से बायें — अत्रि. त्रि. उमा = ऐसी उमा¹ जो अत्रि भी है और त्रै भी है ।
 एस० पर्णवितान : दायें से बायें — य. त्रि. न = यात्रा

1. उमा — ओश्म की शक्ति का नाम है ।

पशुपति - मुद्रा के विविध स्पष्टीकरण (फ० सं० - २६) :

मुद्रांशु कुमार रे स्वामी शंकरानन्द : दायें से बायें—य. ग. अ. ल. अ. म 'योगलयम्' — मध्य में योगी बैठा है ।
 : दायें से ऊपर को चलकर बायें को फिर नीचे-
 भैसा = ज; गेण्डा = ल; मनुष्य = क ;
 शेर = त ; जार = म ; मछली = ध ;
 मनुष्य = क; हाथी = श; चीता = न ;
 नीचे का बकरा = ए ;
 लिप्यन्तरण = जलः (पथ) ततम् शकुनं ।
 भाषान्तर = पानी की बिड़ियों ने सारे पानी के स्रोतों को डेँक लिया है ।

एम० वी० एन० कृष्णा राव : ऐकोःकोनी पद्धति से दायें से बायें—
 महिशा (भैसा) = म; खडग (गेँडा) = ख;
 नर (मनुष्य) = न; सत्री (हाथी) = स;
 नर = न

लिप्यन्तरण = मख नसन,
 भाषान्तरण = मख नाशन,
 अर्थ = मखानसुरों का नाश करने वाला,

एस्को परपोला : भगवान् शिवः—(सितारे का मनुष्य).
 डी० एम० बरुआ : दायें से बायें — (केवल चिह्नों के अर्थ लगाकर पढ़ा है, चिह्नों को छोड़ दिया है) इस प्रकार—
 'अ - ज - ल - उ - प - स'
 लिप्यन्तरण : अजल उपास
 भाषान्तर : अकल उपास्य
 अर्थ : पूजने योग्य पहाड़

राज मोहन नाथ : दायें से बायें—मीडा भाकम अर्थात् बेकर (Baker — रोटी बनाने वाला)
 कृतेह सिंह : दायें से बायें पढ़ा है ।
 लिप्यन्तरण : वृत्राग्निशुनी प्राणा नोन्द्रेन्दु ।
 भाषान्तरण : इन्द्र और चन्द्र स्वरूप वृत्र और अग्नि शुन जीव के प्रदाता हैं ।

'फ० सं० - २६' पर नीचे दी गई मुद्रा इस प्रकार पढ़ी गई

स्वामी शंकरानन्द : बायें से दायें — प. ण. या = पाणियाँ = वाणियाँ (पत्नी जाति वैदिक काल में व्यापारी थी)
 कृष्णा राव : दायें से बायें — का. व. त = तोका = —का पुत्र
 सां० जे० गंड : बायें से दायें — प. त्र. य = पुत्र
 कृतेह सिंह : दायें से बायें — अत्रि. त्रि. उमा = ऐसी उमा¹ जो अत्रि भी है और त्रि भी है ।
 एस० पर्णवितान : दायें से बायें — य. त्रि. न = यात्रा

1. उमा — ओश्म की शक्ति का नाम है ।

पशुपति - मुद्रा के विविध स्पष्टीकरण



MIC. Plate XII No.17

MIC.

↑ ||| U
न त्रि य

PAGE
414

फलक संख्या - २६

सुमेर की मुद्रा



फलक संख्या - २७

सुमेर की मुद्रा

यह मुद्रा जो 'फ० सं० - २७' पर दी गई है, टेल जोखा (प्राचीन उम्मा) से पुरातत्त्ववेत्ता एस० लैंग्डन (S. Langdon) द्वारा उत्खनन कार्य, जो उन्होंने उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य किया था, से प्राप्त हुई और सर्वप्रथम प्रो० शील (Prof. Scheil) द्वारा प्रकाशित^१ हुई और पुनः जान मार्शल द्वारा प्रकाशित^२ हुई, जिसका काल विद्वानों ने ई० पू० २५०० के लगभग माना है। यह मुद्रा भारत में डा० वी० एस० वाकणकर द्वारा भारत लाई गई। इसके चिह्न सिन्धु - घाटी - लिपि तथा ब्राह्मी से मिलते हैं। इसको विद्वानों ने इस प्रकार पढ़ा है :-

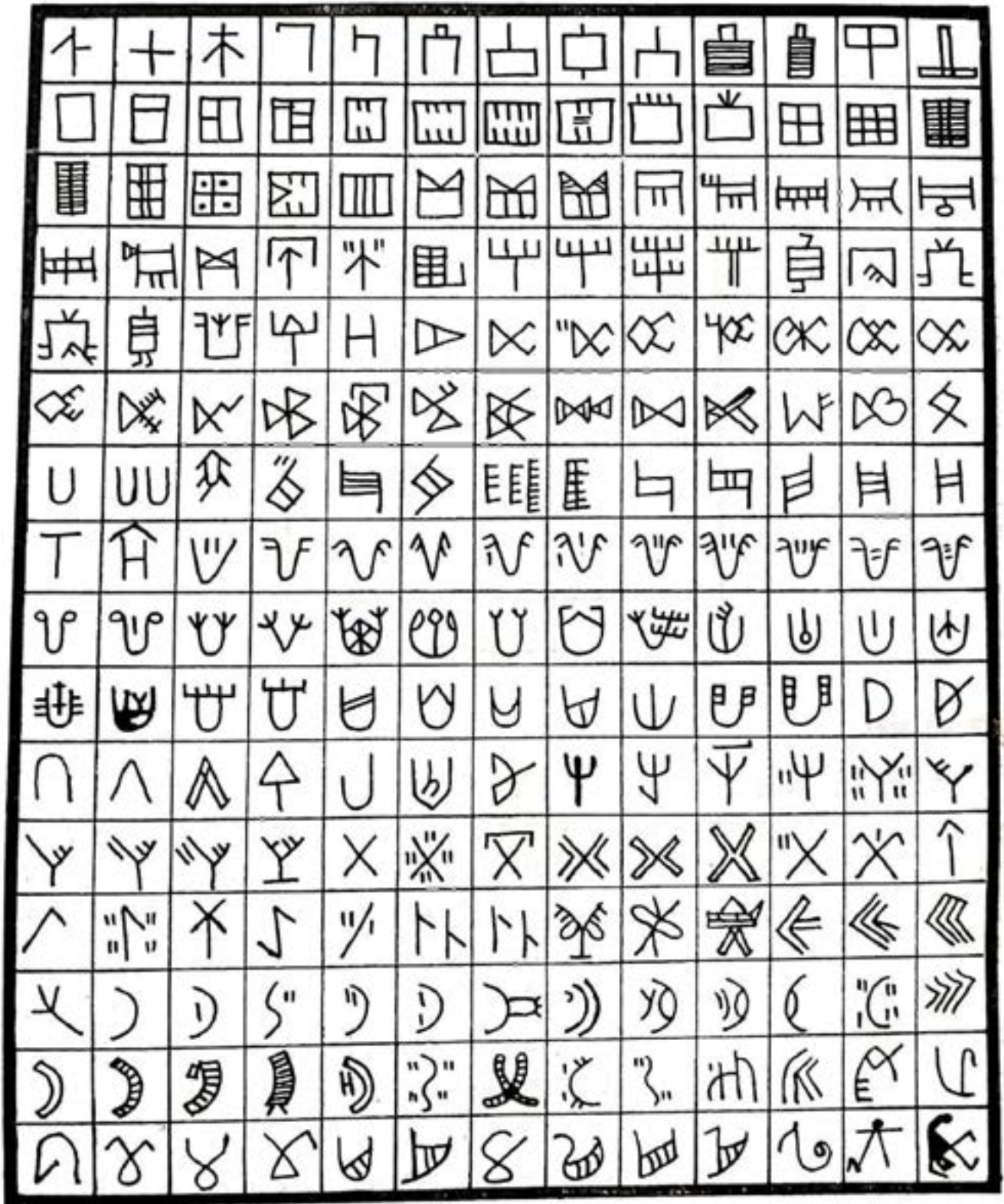
- एल० एस० वाकणकर : दायें से बायें - ब्राह्मी के चार अक्षर = मरुमाल ६ के अंक हैं - छे फिर त्रिशूल।
 तथा वालवालकर : मरु = मारी नगर; माल = पश्चिम^३ (मेसोपोटामिया के पास का) इस नगर को वस्त्र जाते थे, क्योंकि मुद्रा के दूसरी ओर कपड़े के चिह्न हैं।
 सुधांशु कुमार रे : दायें से बायें - म ग घ स ए ण ए
 डा० कृतेह सिंह : दायें से बायें - ज्ञानन्, न यजत्र तपन. अर्थ = ज्ञान ही तप है न कि यज्ञ।

1. Review de Assyriologie, Val. XXII—page 56.

2. Mohenjo - Daro and Indus Civilization, Vol. II - page 414.

3. संस्कृत भाषा में।

सिन्धु - घाटी - लिपि के चिह्न



फलक संख्या - २८

सिन्धु -- घाटी -- लिपि के चिह्न



फलक संख्या - २८ क

अभिलेखों तथा मुद्राओं का विवरण

डेनमार्क के परपोला ने तथा अन्य विद्वानों ने भी कुछ विवरण सिन्धु - घाटी - लिपि व सभ्यता के विषय में दिये हैं परन्तु उनको इतनी मान्यता प्राप्त नहीं हुई जितनी निम्नलिखित विवरण¹ को प्राप्त हुई। इसका मुख्य कारण है कम्प्यूटर, जिसके द्वारा यह विवरण ज्ञात हुये :—

कहाँ से प्राप्त	मुद्राओं की संख्या (Seals)	मुद्राओं के सांचों की संख्या (Sealings)	कुछ अन्य वस्तुएँ (Objects)	कुल (Total)
मो० दड़ो	१२३९	११९	१८२	१५४०
हड़प्पा	३५०	२८८	३४७	९८५
अन्य स्थानों से	२३२	१०४	४५	३८१
	१८२१	५११	५७४	२९०६

लिपि के चिह्नों की कुल संख्या - ४१७^२; दायें से बायें - पंक्तियों की संख्या - २९७४
 अभिलेखों की कुल पंक्तियाँ - ३५७३; बायें से दायें - पंक्तियों की संख्या - २३५
 एक अभिलेख में अधिक से अधिक पंक्तियों की संख्या - ७; ऊपर से नीचे लिखी गई पंक्तियाँ - ७
 एक अभिलेख में अधिक से अधिक चिह्नों की संख्या - २६

सिन्धु - घाटी के विषय में कुछ अन्य बातें :—

- १ — ऐसा प्रतीत होता है कि दो मुख्य नगर (मोहेंजो - दड़ो; हड़प्पा) सात बार नष्ट हुये तथा पुनः बसाये गये। नष्ट होने के कारण सम्भवतः बाढ़, महामारी तथा विदेशी आक्रमण थे।
- २ — इसका क्षेत्रफल लगभग १२ लाख वर्ग किलो मीटर है।
- ३ — इस सभ्यता के मुख्य केन्द्र :—
 क - मोहेंजोदड़ो; ख - हड़प्पा (दोनों में ७०० कि० मी० की दूरी है); ग - कालीबंगन (दिल्ली से उत्तर - पश्चिम की ओर ३१० कि० मी०); घ - लोथल^३ - अहमदाबाद से दक्षिण - पश्चिम की ओर ८० कि० मी० पर स्थित है। उत्खनन से यह सिद्ध हुआ है कि लोथल एक समुद्र - द्वार था जहाँ से सुमेर, मिस्र आदि से व्यापार होता था। च - सुकोटाडा - भुज (कच्छ, गुजरात) से उत्तर - पश्चिम की ओर १६० कि० मी० है। इसके अतिरिक्त भी इस सभ्यता के अन्य कई केन्द्र उत्खनन द्वारा ज्ञात हुये हैं।
- ४ — सिन्धु - घाटी - लिपि^४ का रहस्योद्घाटन उस समय तक प्रमाणित सिद्ध नहीं हो सकता जब तक कोई द्विभाषिक अथवा त्रिभाषिक अभिलेख प्राप्त नहीं हो जाता।

१. इसका आधार श्री महादेवन द्वारा कम्प्यूटर पद्धति से निकाले आंकड़ों पर है जिसको १९७७ में भारत के पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग, नयी दिल्ली ने प्रकाशित किया।
२. ४१७ चिह्न 'क० सं० - २८, २८ क' पर दिये गये हैं, जो महादेवन की तथा जॉन मार्शल की पुस्तकों से लिये गये हैं।
३. इसका उत्खनन श्री एस० आर० राव ने कुछ वर्ष पूर्व किया तथा 'लोथल' नाम की एक पुस्तक भी लिखी है।
४. इसको हड़प्पा - लिपि के नाम से भी सम्बोधित किया जाने लगा है।

पठनीय सामग्री

- Barua, D. M.* : Indus Script and Tantric Code.
- Chakravorty, B. B.* : Decipherment of Indus Script (1975).
- Dobhofer, E.* : Voices in Stone – The Decipherment of Ancient Scripts and Writings (1961).
- Gadd, C. J.* : Mohenjo – Daro and Indus Culture.
- Heras, Rev H.* : Studies in Proto – Indo – Mediterranean Culture.
- Hunter, Dr. G. R.* : Script of Harappa and Mohenjo – Daro.
- Mackay, E. J. H.* : Further Excavations at Mohenjo – Daro.
- Marshall, Sir John* : Mohenjo – Daro And Indus Civilization, (Vol. I and II).
- Meriggi, Herr P.* : Zur Indus Schrift (1959).
- Nath, Rajmohan* : Civilization of the Indus Valley.
- Newberry, John* : Shamans of Indus Valley (1981).
- Parpola, S. K.* : Decipherment of Indus – Valley Script.
Journal of S. I. A. S. (1969).
- Pran Nath, Dr.* : Indus Script – J. R. A. S. (1931).
- Rao, S. R.* : Harappan Script – Journal of "Andhra Historical Research Society – Vol. 33. Part I (1972 – 73).
- Ray, S. K.* : Indus Script Memos (Three).
- Sankaranand, Swami* : Last Days of Mohenjo – Daro.
- „ „ : Indus People Speak.
- „ „ : Introduction to the Decipherment of the Ancient Pictographic Script.
- „ „ : उल्खनित इतिहास
- Singh, Dr. Fateh* : सिन्धुघाटी लिपि में ब्राह्मणों और उपनिषदों के प्रतीक (संस्कृत) ।
- Shastri, N. K.* : New Light On Indus Civilization.
- Vats, M. S.* : Excavations at Harappa.
- Waddell, L. A.* : Aryan Origin of the Alphabet.
- „ „ : Indo-Sumerian Seals Deciphered.
- Wheelcr, M.* : Civilization of the Indus Valley.



भारत का इतिहास

परिचय

भारत का इतिहास इतना प्राचीन है कि उसका काल निर्धारण सरल नहीं है। भारत में धर्म, दर्शन, कला, शिल्प, स्वास्थ्य विज्ञान, नक्षत्र विज्ञान आदि का उद्गम देवताओं द्वारा माना जाता है, जिनकी कथाएँ धार्मिक ग्रन्थों में विस्तार से दी गयी हैं। रामायण, महाभारत जैसे महाकाव्य भी भारत में ऐतिहासिक ग्रन्थ मान लिये गये हैं। धार्मिक विश्वास को किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती।

इस वैज्ञानिक युग में किसी बात को सिद्ध करने के लिए प्रमाण की आवश्यकता होती है, विश्वास की नहीं। इसी कारण आज के वैज्ञानिक युग में भारत का प्रामाणिक इतिहास ईसा पूर्व की लगभग छठीं शताब्दी से माना जाता है। इस युग को इतिहासकारों ने 'क्रान्ति का युग' माना है, जिसने संसार के सभी मुख्य देशों को प्रभावित किया।

क्रान्ति युग

शून्य: शून्य: परिवर्तन को विकास परन्तु शीघ्र परिवर्तन को क्रान्ति की संज्ञा दी जाती है। इस युग में तीनों प्रकार की — धार्मिक, सामाजिक व राजनीतिक — क्रान्तियाँ हुईं। उदाहरणार्थ :—

1. ग्रीस में राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक आन्दोलन हुए। कृषकों तथा श्रमजीवियों पर सामन्तों के अत्याचार इतने बढ़े कि उनके विरुद्ध क्रान्ति आरम्भ हुई, जिसके फलस्वरूप साम्राज्यवाद का उन्मूलन हुआ और लोकतन्त्र की स्थापना हुई। इस क्रान्ति का नेता हिरेक्लीटस (Heraclitus) था।
2. इसी ई० पू० की छठीं शताब्दी में ईरान में भी एक धार्मिक व सामाजिक क्रान्ति हुई। मागी — पुजारियों ने कर्मकाण्ड (बलि, यज्ञ आदि) व मूर्ति पूजा आदि के द्वारा जनसाधारण का शोषण आरम्भ कर दिया। दुःखी जनता और दुःखी होने लगी। इस कर्मकाण्ड के विरुद्ध एक धर्म-प्रवर्तक व सुधारक ज़ारथुस्त्र (Zoroaster) ने आन्दोलन किया तथा अनेकेश्वरवाद के स्थान पर एकेश्वरवाद का प्रचार किया। सत्य, ज्ञान व न्याय को प्रधानता दी।
3. चीन में भी राजनीतिक, सामाजिक व धार्मिक क्रान्ति सामन्तों के अन्याय के विरुद्ध की गयी जिसके नेता लाउत्सी तथा, कनफ्यूशस थे जिन्होंने नैतिकता को प्रधान बताकर मानव को अच्छे कर्मों की ओर प्रेरित किया।
4. भारत में धार्मिक कर्म काण्ड के कारण जनता दुःखी थी। जीवन — मरण के दुःखों से छुटकारा पाने के लिए अर्थात् मोक्ष (भारतीय दर्शन की आधार शिला) को प्राप्त करने के लिए कर्मकाण्डों को सम्पन्न करवाना। इसके लिए पुजारी नियुक्त थे। अब रीतियों के स्थान पर कुरीतियों का प्रभाव बढ़ने लगा। इन परिस्थितियों में दो राजवंशों से दो राजकुमार, दो धर्मों के प्रवर्तक बन कर आये। एक महात्मा

बुद्ध हुए तथा दूसरे महावीर तीर्थंकर हुए। दोनों ने ही उस पुजारीवाद को मिटाने के लिए भगवान के अस्तित्व को भी नहीं माना। अच्छे कर्मों की प्रधानता पर बल दिया तथा प्रचार किया।

मौर्य वंश

चन्द्रगुप्त का जन्म ३४५ ई० पू० में मगध में ही हुआ। बड़े होने पर उसने राजा नन्द के यहाँ नौकरी कर ली और एक दिन वह सेनापति के पद पर पहुँच गया; परन्तु पदच्युत कर दिया गया। उधर चाणक्य भी राजा नन्द का विरोधी था। चन्द्रगुप्त तथा चाणक्य एक लक्ष्य होने के कारण मिल गये तथा सहयोगी बन गये। चन्द्रगुप्त ने कुछ सैनिक जमा करके मगध राज्य के कुछ भू-भागों पर अधिकार कर लिया। तत्पश्चात् मगध को भी परास्त कर एक साम्राज्य की स्थापना की। चन्द्रगुप्त का २९८ ई० पू० में स्वर्गवास हो गया। बिम्बसार सिंहासनाब्ध हुआ और २७३ में परलोक सिंघार गया।

अशोक उस समय उज्जैन का सूवेदार था। चार वर्ष के संघर्ष के पश्चात् २६९ ई० पू० में उसका राज्याभिषेक हुआ। उसने अपने राज्य का विस्तार कर एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की। इसके लिए बड़ा नरसंहार हुआ। कलिंग के युद्ध ने तो अशोक के जीवन को ही परिवर्तित कर दिया। वह वीर हो गया। भारत का वह प्रथम सम्राट था, जिसने शिलालेखों की नींव डाली, जिनके कारण आज प्राचीन काल का वृत्तान्त मिलता है। यदि शिलाएँ उत्कीर्ण न करवायी जातीं तो आज की पीढ़ी को ब्राह्मी देखने को न मिलती। सम्भव है यह पद्धति अशोक ने ईरान व मिस्र के देशों द्वारा अपनायी हो। उसने नैतिक उत्थान तथा कीर्ति के लिए कई स्तम्भ भी स्थापित करवाये। वीर होने के कारण इस काल के शिला एवं स्तम्भ — लेख पाली-प्राकृत में ही मिलते हैं, जो संस्कृत¹ से विकसित की गयीं। २३२ ई० पू० में अशोक का स्वर्गवास हो गया।

शुंग वंश

मौर्य वंश के अन्तिम सम्राट बृहद्रथ, जो १८७ ई० पू० में राजसिंहासन पर बैठा तथा सेनाध्यक्ष पुष्यमित्र शुंग ने अपने सम्राट की १८० ई० पू० में हत्या कर दी और मगध का सिंहासन प्राप्त कर लिया। इसने साम्राज्य का संगठन आरम्भ कर दिया। राज्य विद्रोहियों को दण्ड दिया तथा इधर उधर आक्रमण करके कई राजाओं को नतमस्तक करवाया। यह ब्राह्मण-धर्म का कट्टर पालक था। इसने उसी धर्म को प्रोत्साहित किया तथा वीरों का दमन किया, विहारों को जलवाया तथा श्रमणों का वध करवाया। १४८ ई० पू० में इसका स्वर्गवास हो गया। तत्पश्चात् इस वंश में ९ और शासक हुए, जिन्होंने ८० वर्ष राज्य किया तथा कई स्तूपों का निर्माण किया।

काण्व वंश

शुंग वंश का अन्तिम नरेश देवभूति ७८ ई० पू० में सिंहासन पर बैठा। विलासी और लम्पट होने के कारण ६८ ई० पू० में अपने अमात्य वसुदेव काण्व द्वारा मारा गया। इसी ने काण्व वंश की नींव डाली, जिसमें चार राजा हुए। इसके अन्तिम राजा सुशर्मा की २७ ई० पू० में, इसके एक आन्ध्र — वंशी सेवक सिमुक ने, हत्या कर दी तथा स्वयं राजा बन गया। इसी ने आन्ध्र के सातवाहन वंश की नींव डाली।

1. कुछ विद्वानों का मत है कि प्राकृत से संस्कृत भाषा का उद्भव हुआ।

आन्ध्र सातवाहन वंश

आन्ध्र राज्य मौर्य साम्राज्य का प्रांत था, परन्तु जब यह साम्राज्य पतनोन्मुख होने लगा तो आन्ध्र भी स्वतंत्र होने का प्रयत्न करने लगा। सिमुक (शिशुक या सिधुक) ने सिंहासन पर बैठ कर साम्राज्य का पुनर्मठन किया। इस वंश में कई प्रतापी राजा हुए, जिन्होंने राज्य का विस्तार किया और कई राज्यों को नतमस्तक किया। इस वंश का अंतिम प्रतापी राजा यज्ञ श्री शातकर्णि था (१६५ से १९४ ई० तक)। इसके बाद नाममात्र के शासक हुए, जो इस साम्राज्य के अधःपतन को रोक न सके और २२७ ई० में इस वंश का अंत हो गया। इसका अंतिम नरेश पुलोमावि तृतीय था।

शक वंश

शक एक पर्यटन - शील जाति थी जो मूलतः दक्षिण - पश्चिम चीन की निवासी थी। वह अन्य जातियों से संघर्ष करती हुई सिन्ध प्रदेश, जिसका नाम शकद्वीप था (आधुनिक पाकिस्तान), में पहुँची और अपने राज्य एवं वंश की स्थापना की। ११५ ई० पू० के पश्चात् इस वंश के शासकों ने मथुरा व विदिशा तक अपना राज्य स्थापित कर लिया। दूर दूर शासन करने के लिए क्षत्रप नियुक्त किये। इस वंश का प्रथम नरेश मोअ (मौएस) था तथा अंतिम शासक अय द्वितीय था, जिसको पल्लव नरेश गुदफर्न ने परास्त कर दिया।

पल्लव वंश

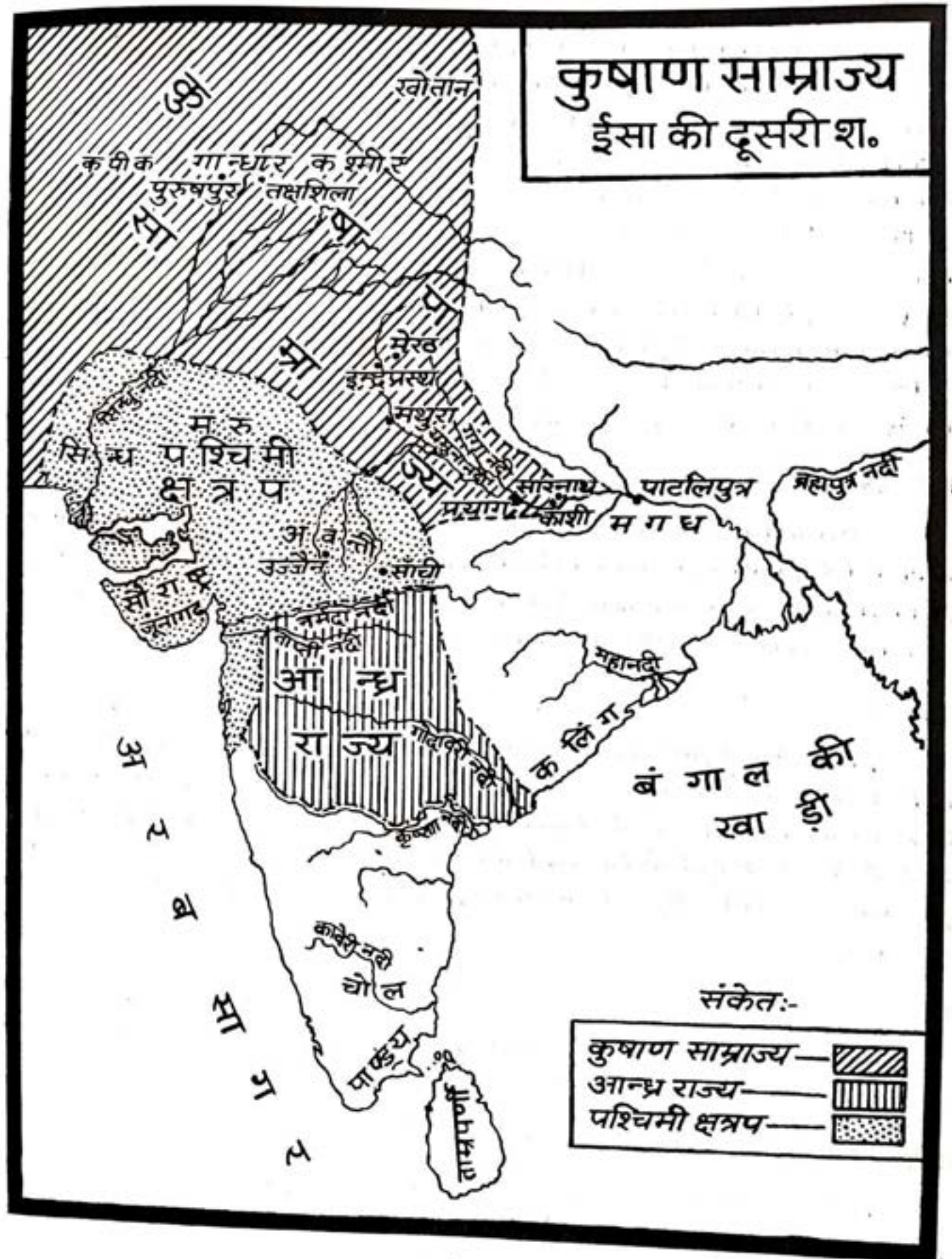
पल्लव लोग ईरान के पार्थिया प्रदेश के निवासी थे। उन्होंने अंतिम यवन राजा हर्मियस से काबुल घाटी को तथा अंतिम शक राजा अय द्वितीय से पंजाब को जीत लिया। इस वंश का संस्थापक विन्दफर्न था तथा अंतिम राजा गुदफर्न था। इसने सेण्ट टॉमस द्वारा ईसाई धर्म ग्रहण कर लिया। गुदफर्न की मृत्यु ईसा की प्रथम श० के मध्य में हो गई।

कुषाण वंश

चीन के फ़ान्सू प्रदेश में युची नामक एक जाति रहती थी। १६५ ई० पू० में एक पड़ोसी जाति हूण के विरोध के कारण युची जाति ने स्थानांतर कर लिया। इसने शकों से सर दरिया की घाटी छीन ली। पुनः युद्ध होने के कारण युची जाति के लोगों ने वैक्ट्रिया को अपने अधीन कर लिया। इस जाति के पाँच कुल थे, जिनमें से एक का नाम कुइशांग अथवा कुषाण था। इस कुषाण जाति का एक नेता कुजूल कदफ़िस था, जिसने अन्य चार शाखाओं पर अपना आधिपत्य जमा लिया और प्रथम नरेश बन बैठा। इसने गुदफर्न की मृत्यु के पश्चात् काबुल व गान्धार जीत लिया और राज्य का विस्तार किया। इस वंश का सबसे प्रतापी राजा कनिष्क था, जिसने ७८ ई० से १०२ ई० तक राज्य किया। बौद्ध धर्म को ग्रहण किया। इसने अपना विशाल साम्राज्य स्थापित किया (५० ० - २५)। दो राजधानियाँ रखीं। एक पुष्पपुर (आ० पेशावर) तथा दूसरी मथुरा। अपनी युद्धप्रियता के कारण कुछ मन्त्रियों ने इसका वध उस समय करवा डाला, जब वह रोग शय्या पर पड़ा था। इस वंश का अंतिम नरेश हुविष्क का पुत्र वामुदेव राजसिंहासन पर बैठा। सम्भवतः इसकी मृत्यु १७५ ई० में हुई। तत्पश्चात् कुषाण साम्राज्य क्षिन्न-भिन्न हो गया।

कुषाण साम्राज्य के पतन के पश्चात् भारत पुनः अनेक छोटे बड़े राज्यों में विभाजित हो गया।

1. कुछ विद्वान् १६५ ईसवी मानते हैं।



गुप्त वंश

इस वंश का प्रथम नरेश तथा संस्थापक श्रीगुप्त था। इसकी राजधानी पाटलिपुत्र थी। इसने २७५ से ३०० ई०¹ तक राज्य किया। श्रीगुप्त का पौत्र चन्द्रगुप्त साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक था। इसके मरणोपरान्त समुद्रगुप्त राजसिंहासनावृद्ध हुआ। इसने ३२५ से ३७५ ई० तक राज्य किया। तदनन्तर चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य राजगद्दी पर बैठा। इसने शक नरेशों को परास्त कर पश्चिमी भारत के राज्यों को अपने साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया (फ० सं० - ३०)। इसी के राज्य काल में विश्व विख्यात कवि कालिदास हुआ तथा चीनी यात्री फाह्यान भारत आया और उसने भारत की दशा का बड़ा सुन्दर वर्णन किया है। चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने अनेक मूल्यों को स्वर्ण - मुद्रायें प्रचलित कीं। इसने ३७५ से ४२५ तक शासन किया। तदनन्तर कुमारगुप्त, स्कन्दगुप्त आदि ने राज्य किया। स्कन्दगुप्त ने राज्य का विस्तार किया तथा हूणों से युद्ध किया। इस साम्राज्य का अंतिम सम्राट विष्णुगुप्त था। विदेशीय आक्रमण, प्रान्तीय शासकों के विद्रोह तथा राज्यपरिवार के झगड़ों ने इस विशाल साम्राज्य का ५७० ई० से पतन होने लगा। इसके पश्चात् सम्भव है नाम मात्र को रहा हो परन्तु साम्राज्य की सत्ता समाप्त हो चुकी थी।

मैत्रक वंश

गुप्त साम्राज्य की शक्ति क्षीण होने पर सौराष्ट्र में सनापति भट्टार्क द्वारा, जो पाँचवीं शताब्दी के अन्तिम चरण में गुप्त सम्राट की ओर से बलभी का नियन्ता नियुक्त हुआ था, मैत्रक वंश की स्थापना हुई। इस वंश का प्रथम स्वतंत्र नरेश सम्भवतः गुहसेन था जिसने ५५६ से ५६७ ई० तक शासन किया। ध्रुवसेन द्वितीय सम्राट हर्षवर्धन का समकालीन था। इस वंश का दूसरा नाम बलभी भी था।

गुर्जर वंश

कुछ विद्वानों के अनुसार गुर्जर लोग विदेशी थे जो छठी श० में भारत आये। आधुनिक गुर्जर इन्हीं के वंशज हैं। सर्व प्रथम ये लोग पंजाब से आकर बस गये जहाँ अब भी गुजरानवाला, गुजरात और गूजर खाँ नामक स्थान पाये जाते हैं तदनन्तर दक्षिण पश्चिम में जाकर बसे जिसके कारण वह भूभाग गुजरात कहलाने लगा। इस वंश का संस्थापक हरिचन्द्र ब्राह्मण था। इसकी पत्नी गुर्जर थी इस कारण उससे उत्पन्न वंशज गुर्जर प्रतिहार कहलाये। इनकी राजधानी माण्डव्यपुर (आ० मण्डौर, जोधपुर से पाँच मील उत्तर की ओर) थी।

गुहिलोत वंश

गुप्त वंश के पतन के पश्चात् मेवाड़ प्रदेश में गुहदत्त ने एक नये वंश की स्थापना की। इस वंश के विषय में ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं।

मौखरि वंश

यह वंश बहुत प्राचीन है। पाणिनी ने इसका उल्लेख किया है। गुप्त काल के अन्त में मौखरि वंश अधिक प्रकाश में आया। इस वंश का नाम किसी 'मुखर' नाम के पूर्वज पर पड़ा। इस वंश की सबसे प्रसिद्ध

1. इन तिथियों के प्रमाण नहीं मिलते इस कारण मतभेद होता है।

चन्द्र गुप्त विक्रमादित्य का साम्राज्य

३७६ से ४१४ ई. तक



फलक संख्या - ३०

शाखा कन्नौज की थी। इस वंश के तीन राजा गुप्त नरेशों के अधीनस्थ थे परन्तु चौथे राजा ईशान वर्मा ने स्वतन्त्रता प्राप्त कर के महाराजाधिराज का पद धारण किया। ५५४ ई० में यह वर्तमान था। इस वंश का अंतिम राजा ग्रहवर्मा था जो मालव नरेश देवगुप्त द्वारा मारा गया।

वर्धन वंश

बाण के हर्ष चरित के अनुसार पुष्यभूति नामक राजा ने श्रीकण्ठ जनपद में एक राज्य की स्थापना की जिसकी राजधानी सरस्वती नदी के पास स्थानेश्वर (आ० थानेश्वर) नामक नगर थी। अभिलेखों से अनेक राजाओं के नाम मिलते हैं जिनके अन्त में 'वर्धन' शब्द भी मिलता है। सम्भवतः इसी कारण इस वंश का नाम वर्धन वंश पड़ा। इसका पहला महाराज नरवर्धन आठवीं शताब्दी के आरम्भ में थानेश्वर का राजा था।

इस वंश के एक प्रतापी राजा प्रभाकरवर्धन के दो पुत्र राज्यवर्धन तथा हर्षवर्धन थे और एक पुत्री राज्यश्री थी। दोनों भाई हूणों के आक्रमण को दमन करने गये तो पिता की मृत्यु हो गई। हर्षवर्धन शीघ्र लौट आया। इसके पश्चात् दोनों भाइयों को समाचार मिला कि मालव नरेश देवगुप्त ने उनके बहनोई ग्रहवर्मा को मार डाला और बहन को कारागार में डाल दिया है। पिता के शोक को साथ लेकर वे दोनों भाई निकल पड़े। बड़े भाई राज्यवर्धन का धोखे से शशांक ने वध कर दिया। हर्षवर्धन अपनी बहन की खोज में निकल गया और उस समय उसको अपनी बहन मिली जब वह चिता में जाकर अपने शरीर का अंत करने जा रही थी।

इसका बहनोई ग्रहवर्मा कन्नौज का राजा था। इसके कोई पुत्र न था। इस कारण हर्ष को ही कन्नौज राज्य का मुकुट धारण करना पड़ा। १८ वर्ष की आयु में ६०६ ई० में यह राजसिंहासनावृद्ध हुआ। इसने अपनी विजय पताका प्रत्येक दिशा में फहराई। इसने नर्मदा तक अपने साम्राज्य (फ० सं० - ३१) को स्थापित किया। हर्ष, शिव, सूर्य तथा बुद्ध तीनों का उपासक था। राज्य में उच्च कोटि की धार्मिक सहिष्णुता थी। ६४८ में इस प्रभावशाली उदार शासक का परलोकवास हो गया। पुत्र तथा उत्तराधिकारी न होने के कारण राज्य छिन्न भिन्न हो गया और नये नये राज्यों का निर्माण होने लगा।

उत्तर भारत के राजपूत वंश

राजपूतों के सम्बन्ध में विद्वान् एकमत नहीं हैं। उनकी उत्पत्ति मिश्रित क्षत्रियों से मानी जाती है। उनके मुख्य राजनैतिक वंश निम्नलिखित हैं :-

१. प्रतिहार वंश : इस वंश का संस्थापक राजा नागभट्ट प्रथम (७३० से ७५६ तक) था जिसने जोधपुर को राजधानी बनाया परन्तु नागभट्ट द्वितीय ने कन्नौज के राजा चक्रायुद्ध को ८०७ ई० में परास्त कर उसको अपनी राजधानी बनाया। यशपाल इस वंश का अंतिम नरेश था जो १०८५ में एक आक्रमण में मारा गया (फ० सं० - ३२)।

२. गहड़वाल वंश : इसवंश का संस्थापक चन्द्रदेव था जिसने यशपाल को परास्त कर दिया और वाराणसी से अपनी राजधानी कन्नौज बना ली। इस वंश ने कई युद्ध किये। इस वंश का मुख्य राजा जयचन्द्र ११९४ में मुहम्मद गोरी द्वारा मारा गया। १२२५ में इस वंश का अंतिम राजा हरिश्चन्द्र अल्लमश द्वारा मारा गया।

हर्ष वर्धन का साम्राज्य

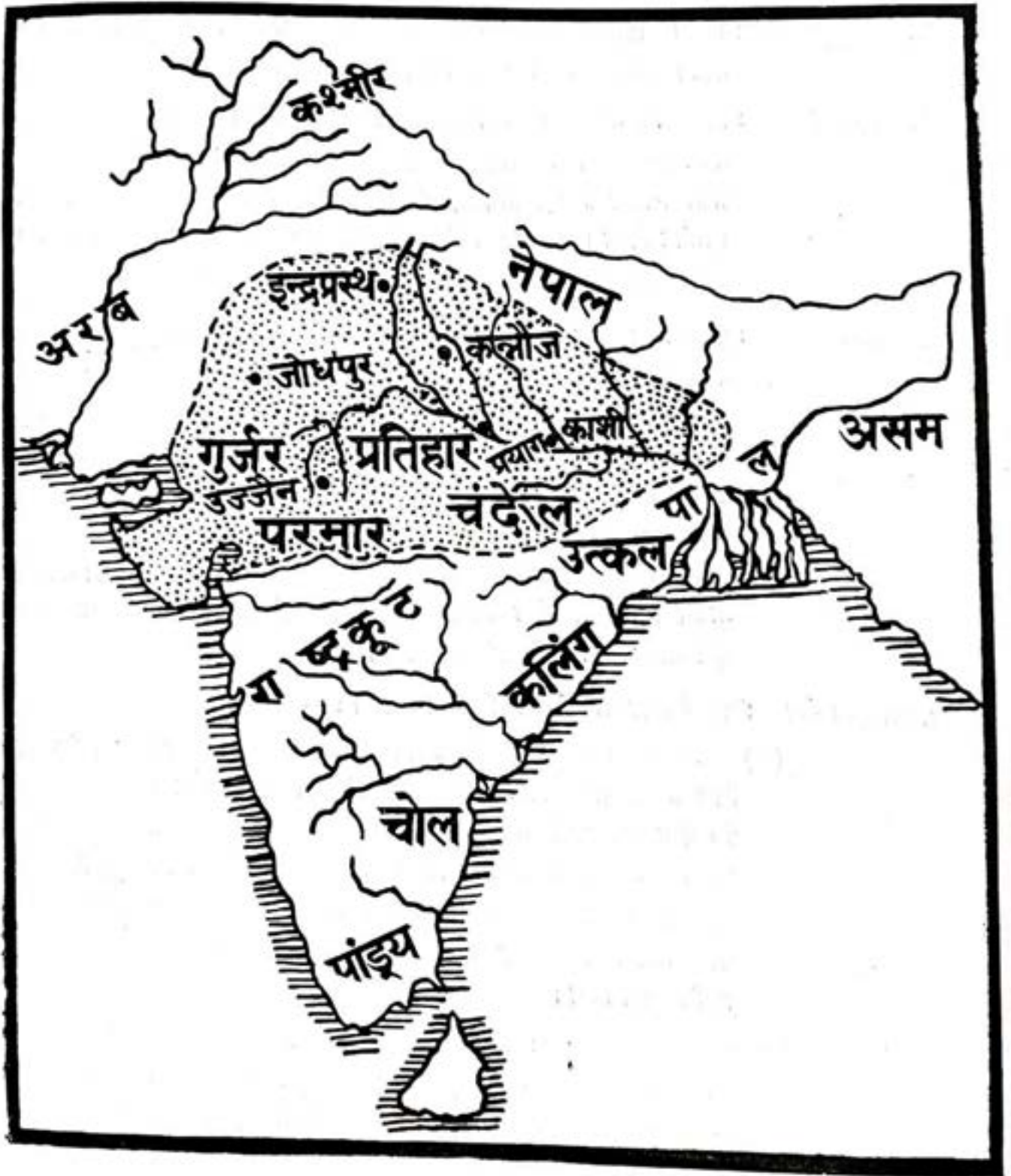
६०६ से ६४६ई.तक



फलक संख्या - ३१

३. चौहान वंश : इस वंश का संस्थापक वासुदेव था। इसने एक राज्य स्थापित किया जिसकी राजधानी शाकम्भरी (सांभर) थी। इस वंश के प्रारम्भिक राजा प्रतिहारों के सामन्त थे। तदनन्तर यह अपनी शक्ति बढ़ाते रहे तथा राज्य का विस्तार करते रहे। ११५३ में विग्रहराज चतुर्थ सिंहासन पर बैठा। उसने दिल्ली के तोमर नरेश को हराकर दिल्ली का राज्य ले लिया। ११७७ में सोमेश्वर का पुत्र पृथ्वीराज तृतीय गद्दी पर बैठा। यह इस वंश का सर्व महान् राजा था। ११९१ में गोरी हार गया परन्तु अगले वर्ष उसने पृथ्वीराज चौहान को बन्दी बना लिया।
४. पाल वंश : ७५० ई० में बंगाल की जनता ने एक वीर युवक गोपाल को राजा चुन लिया जो इस वंश का संस्थापक हो गया। इसका अंतिम शासक रामपाल था। बाद में कुछ शासक नाममात्र को बने जो पतन को न रोक सके।
५. सेन वंश : सेन मूलतः मैसूर निवासी थे। इसकी नींव सामान्त सेन ने डाली। इसके उत्तराधिकार १२६० ई० तक बंगाल में शासन करते रहे।
६. कलचुरी वंश : इस वंश का दूसरा नाम हैहय वंश था। इसकी नींव ८७५ में कोवकल्ल ने डाली जो सम्भवतः जबलपुर के आसपास राज्य करता था। उसकी राजधानी त्रिपुरी थी। इसका अन्तिम नाम मात्र नरेश गयाकर्ण चंदेल नरेश मदन वर्मा से युद्ध में हार गया और अपना राज्य खो बैठा।
७. चन्देल वंश : इस वंश का संस्थापक नन्तुक अथवा नन्तुक था तथा प्रथम प्रभावशाली राजा यशोवर्मन था। इसकी राजधानी खजूर वाहक (आधु० खजुराहो) थी। ९२५ से ९५० तक राज्य किया। इसके पुत्र धंग ने खजुराहो के मन्दिरों का निर्माण किया। परमार्दी अथवा परमल इस वंश का अंतिम राजा था। १२०३ में इस वंश का अन्त कुतुबुद्दीन ऐबक ने कर दिया परन्तु बुन्देलखण्ड में इस वंश के राजा सोलहवीं शताब्दी तक राज्य करते रहे।
८. परमार वंश : इस वंश का संस्थापक कृष्णराज (उपेन्द्र) था जिसने नवीं शताब्दी के आरम्भ में आबू पर्वत के निकट मालवा में अपना राज्य स्थापित किया। यह राजा राष्ट्रकूट नरेशों का सामन्त था। राजा सीयक द्वितीय, जिसको हर्ष भी कहते थे, इस वंश का प्रथम स्वतंत्र शासक था। इस वंश का अंतिम नरेश नरवर्मा का पुत्र यशोवर्मा ११३३ में राजगद्दी पर बैठा परन्तु सिद्धराज जयसिंह ने उसको बन्दी बना लिया।
९. सोलंकी वंश : इस वंश को चौलुक्य वंश भी कहते थे। इसके संस्थापक मूलराज ने अपने मामा के कुल का अन्त करके ९४१ में अन्हिलवाड़ में इस वंश की स्थापना की। ११९७ में ऐबक ने, इसके अन्तिमनरेश भीम द्वितीय को परास्त कर, अपना अधिकार कर लिया। इस प्रकार बारहवीं श० के अन्त तक राजपूतों के स्वतंत्र वंश परतंत्र होने लगे। कुछ वंश नाममात्र को बच गये।

गुर्जर - प्रतिहार वंश का साम्राज्य
ई० स० आठवीं - नवीं श०



फलक संख्या - ३२

दक्षिण भारत के वंश

जिस प्रकार उत्तर भारत में भिन्न-भिन्न वंशों ने अपने अपने राज्य स्थापित करके राज्य किया उसी प्रकार दक्षिण में भी विभिन्न वंशों ने राज्य किया, जो निम्नलिखित हैं :—

१. विष्णुकुण्डी वंश : माधव वर्मन ने ४४० ई० में इस वंश की स्थापना की। इस वंश के अंतिम नरेश माधव वर्मन द्वितीय ने ५५६ से ६१६ ई० तक शासन किया।
२. वाकाटक वंश : विद्यशक्ति ने २५४ ई० में इस वंश की नींव डाली। वरार इसकी राजधानी थी। प्रवर सेन प्रथम के बाद वाकाटक साम्राज्य बँट गया। इसके एक पुत्र सर्व सेन ने अकोला जिले के एक ग्राम में, जिसका प्राचीन नाम वत्सगुल्म था, एक स्वतंत्र राज्य स्थापित किया। इस वंश में भी कई नरेश हुये। दोनों शाखाओं के संघर्ष के फलस्वरूप छठी शताब्दी के आरम्भ में वाकाटकों की शक्ति का सर्वथा लोप हो गया।
३. पल्लव वंश : पल्लवों का मूल विवादग्रस्त है। सातवाहनों के पतन के पश्चात् तृतीय शताब्दी के अन्त में स्वतंत्र रूप से स्थापित हुआ। इस वंश का प्रथम राजा सिंह वर्मा था। इसकी राजधानी कांची थी। ५७४ ई० में सिंह वर्मा तृतीय का पुत्र सिंह विष्णु कांची के पल्लव सिंहासन पर बैठा। ऐतिहासिक दृष्टि से पल्लव के राजवंश का यही संस्थापक था। पाण्ड्य नरेशों से इस वंश के साथ युद्ध होते रहते थे। पल्लव वंश के अंतिम शासक अपराजित वर्मा ने पाण्ड्यों की शक्ति नष्ट की। इसका लाभ सुदूर दक्षिण के अन्य राज्यों ने उठाया और चोल नरेश आदित्य प्रथम ने अपराजित को नवीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में पराजित कर पल्लव प्रदेश पर अधिकार कर लिया तदनन्तर पल्लव वंश छोटे छोटे राज्यों में विभाजित हो गया।
४. चालुक्य वंश : इस वंश की तीन निम्नलिखित शाखाएँ थीं :—
 - (क) वातापी के चालुक्य : इस वंश के प्रथम राजा जय सिंह और रणराग थे जिन्होंने बीजापुर जिले के आसपास अपना राज्य स्थापित किया। रणराग का पुत्र पुलकेशी प्रथम ५३५ ई० में गद्दी पर बैठा और उसने वातापी (आ० वादामी) को अपनी राजधानी बनाया। इस वंश के शासकों ने राज्य का विस्तार करने के लिये अनेकों युद्ध किये। कीर्तिवर्मा इस वंश का अन्तिम महान् शासक था। इसके मरणोपरांत यह राज्य क्षीण होने लगा और आठवीं शताब्दी के मध्य में राष्ट्रकूट वंशीय दन्तिदुर्ग ने उनपर आक्रमण कर पराजित कर दिया।
 - (ख) कल्याणी के चालुक्य : वातापी चालुक्य के एक वंशज तैलप ने राष्ट्रकूट नरेश कर्क द्वितीय को पराजित कर, चालुक्य राज्य की पुनः स्थापना की। इसने ९७३ से ९९७ ई० तक राज्य किया। इसकी राजधानी कल्याणी^१ हो गई थी। इस वंश ने भी अनेक युद्ध किये। इस वंश का अन्तिम नरेश सोमेश्वर चतुर्थ था। ११८९ ई० में यादव भिल्लम ने इसको परास्त कर दिया और वंश का अन्त कर दिया।

1. १०२८ के अभिलेखों से पता चलता है।

(ग) वेंगी के चालुक्य : दक्षिणापथ के अन्य छोटे छोटे राज्यों में से एक वेंगी का राज्य भी था जो आन्ध्र देश में स्थित था। इस वंश का मूल पुरुष चालुक्य सम्राट पुलकेशी द्वितीय का भाई कुब्ज विष्णुवर्धन था। १०६० ई० में राजराज नरेश के भाई विजयादित्य ने राज राज से गद्दी छीन ली। राजराज का पुत्र १०७० ई० में कुलोत्तुंग नाम से चोल देश का राजा हो गया। उसी ने अपने चाचा विजयादित्य से राज्य छीन कर चोल राज्य में मिला लिया। इस प्रकार इस वंश का अन्त हो गया।

५. राष्ट्रकूट वंश : इनका मूल निवास स्थान कर्णाटक था। ६२५ के लगभग ये बरार की एलिचपुर नामक वस्ती में आकर चालुक्य नरेशों के सामन्तों के रूप में रहने लगे। इस कुल का सर्वप्रथम नरेश दन्ति वर्मा था परन्तु राष्ट्रकूट साम्राज्य की नींव डालने वाला दन्तिदुर्ग था। इसने ७५२ से ७५६^१ ई० तक राज्य किया। ९६५ में कृष्ण इस वंश का अन्तिम महान् नरेश था। उसने पूर्ण दक्षिणापथ पर अपना आधिपत्य जमा लिया था। इस वंश का अन्तिम राजा कर्क द्वितीय था। ९७३ में इस राज्य के एक सामन्त तैलप ने उसको हरा कर दक्षिणापथ पर कब्जा कर लिया।

६. चोल वंश : चोल राज्य बहुत प्राचीन राज्य था। इसका उल्लेख रामायण, महाभारत तथा अशोक के अभिलेखों में मिलता है। सम्भवतः ८५७ ई० में विजयालय नामक चोल राजकुमार ने पल्लव नरेश के सामन्त के रूप में उरैयुर के निकट शासन आरम्भ किया। इसने तंजावूर (तंजौर) को जीत कर उसको अपनी राजधानी बनाया। इस वंश के नरेशों ने अपने राज्य का विस्तार कर विशाल साम्राज्य का रूप दिया। इस वंश का अन्तिम नरेश राजेन्द्र तृतीय १२४६ ई० में गद्दी पर बैठा। जटावर्मा सुन्दर पाण्ड्य ने इसको परास्त कर दिया और १२८९ तक राजेन्द्र ने सामन्त के रूप में राज्य किया। राजेन्द्र के मरणोपरान्त चोल राज्य पाण्ड्य साम्राज्य में मिला लिया गया।

७. पाण्ड्य वंश : यह वंश भी बहुत प्राचीन है तथापि उसका क्रमबद्ध इतिहास सातवीं शताब्दी से पहले नहीं मिलता। कडुंगोन ने कलत्रों को पराजित कर पाण्ड्य राजवंश की नींव लगभग सातवीं श० के आरम्भ में डाली। इसकी राजधानी मधुरा अथवा मदुरा (मथुरा के नाम पर) थी। इस वंश के शासकों का चालुक्य तथा पल्लव वंशों के नरेशों से निरन्तर युद्ध होता रहा। इस वंश का अन्तिम शक्तिशाली राजा मार वर्मा था जिसने १२६८ से १३१० ई० तक राज्य किया। इसी के काल में वेनिस - यात्री मार्को पोलो यहाँ आया था। उसके पुत्रों में इतनी कलह हो गयी कि अलाउद्दीन खिलजी के सेना नायक मलिक काफूर ने मदुरा पर आक्रमण करके सारी सम्पत्ति लूट ली और राज्य का अन्त कर दिया।

८. गंग वंश : छठी शताब्दी के मध्य गंगावड़ी के सिंहासन पर बैठ कर सम्भवतः दुर्विनीत ने इस वंश की नींव डाली। उसने कई युद्ध किये और राज्य का विस्तार किया। इस राज वंश का अन्तिम नरेश शिवमार प्रथम था। यह वंश कर्णाटक का था। छठी शताब्दी में इसी वंश के इन्द्रवर्मा ने कर्लिंग देश में गंग वंश की स्थापना की और कर्लिंग नगर को

१. तिथियों के विषय में विद्वान एक मत नहीं हैं।

राजधानी बनाया। १०७८ ई० में अनन्त वर्मा चोड गंग ने राजमुकुट धारण किया। इस वंश का अन्तिम नरेश अनंग भीम का पुत्र नरसिंह था जिसको १२५५ में बंगाल के शासक ने पराजित कर दिया। इसके एक नरेश अनन्त वर्मा ने ११४५ में पुरी का मन्दिर बनवाया तथा नरसिंह ने कोणार्क का सूर्य मन्दिर बनवाया।

९. कदम्ब वंश : कर्णाटक अथवा मैसूर का उत्तरी भाग प्राचीन काल में कुन्तल कहलाता था। इस वंश की स्थापना मयूर शर्मा नामक एक ब्राह्मण ने की। वैजयन्ती अथवा बनवासी को अपनी राजधानी बनाया। इस वंश का नाम उस कदम्ब के वृक्ष के नाम से पड़ा जो मयूर शर्मा के पैतृक भवन के समक्ष खड़ा था। इसका अन्तिम नरेश हरि वर्मा था जिसके एक सामन्त पुलकेशी ने स्वतन्त्र होकर चालुक्य वंश की नींव डाली।

१०. यादव वंश : इस वंश का संस्थापक भिल्लम यादव था जिसने चालुक्य नरेश सोमेश्वर चतुर्थ को ११८९ में हरा कर एक नया राज्य स्थापित किया जिसकी राजधानी देवगिरि थी। रामचन्द्र इस वंश का अन्तिम नरेश था। मलिक काफूर ने इसके पुत्र को मार कर इस वंश का अन्त कर दिया। इसी काल में सन्त ज्ञानेश्वर ने भगवद् गीता पर अपनी प्रसिद्ध मराठी टीका लिखी।

११. काकतीय वंश : काकतीय पहले चालुक्यों के सामन्त थे। परन्तु उनके पतन के बाद तेलंगाने के स्वतन्त्र शासक हो गये। इस वंश का संस्थापक बेट्टा प्रथम था। इस वंश का प्रथम शक्तिशाली शासक गणपति ११९८ में राजगढ़ी पर बैठा। उसने शनैः शनैः गोदावरी जिले से कांचीपुरम् तक का भूभाग अपने अधीन कर लिया। इसकी राजधानी हनमकोण्डा (वारंगल) थी। इस वंश का अन्तिम शासक प्रताप रुद्र द्वितीय था।

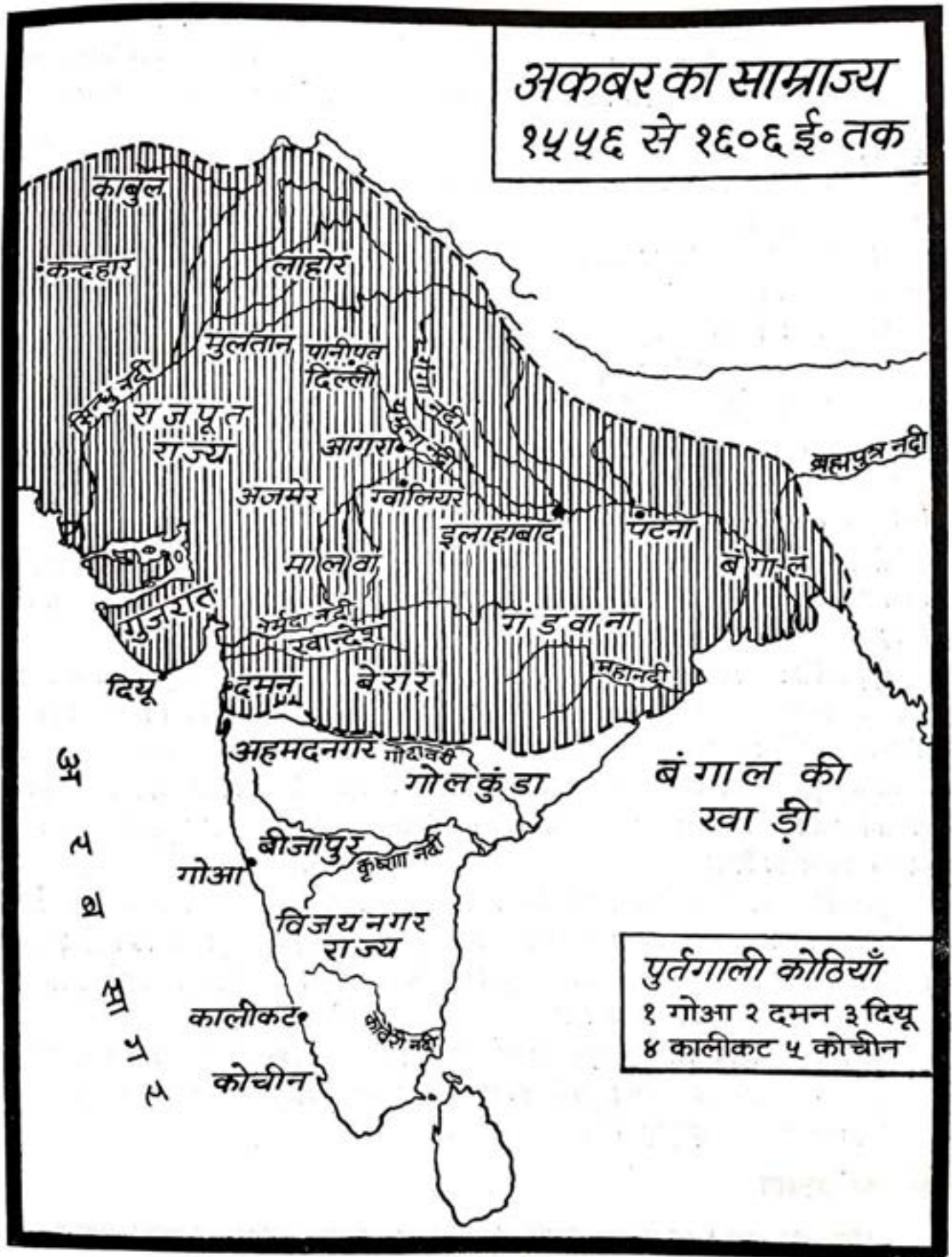
मुसलमानों का आगमन

७११ ई० में सर्वप्रथम आक्रमण १७ वर्षीय मुहम्मद बिन कासिम ने सिन्ध पर किया परन्तु राज्य स्थायी न रख सका वह खलीफा द्वारा वापस बुला लिया गया।

गजनी वंश : इस वंश के शासक सुबुक्तगीन ने जयपाल को ९९१ में हराकर पेशावर पर अधिकार कर लिया। ९९७ में महमूद गज़नवी गजनी के सिंहासम पर बैठा। इसने भारत पर लगभग १७ बार आक्रमण किये और लूट का माल अपने देश ले गया। इस वंश के अन्तिम शासक बहराम शाह की मृत्यु के पश्चात् ११५२ ई० में तुर्कों ने ले लिया।

गोर वंश : इस वंश का प्रथम शक्तिशाली व्यक्ति सैफुद्दीन था। गोर एक छोटासा राज्य गजनी के पश्चिम उत्तर में स्थित था जिसमें सूर जाति के अफ़गान रहते थे। ११७३ में गजनी पर इनका अधिकार हो गया और मुइजुद्दीन अर्थात् गोहम्मद गोरी इसका प्रथम शासक बना। इसने भारत पर कई विध्वंसक आक्रमण किये। १२०६ में गोरी की मृत्यु के साथ इस वंश का भी अन्त हो गया। गायामुद्दीन नाममात्र का उत्तराधिकारी था।

दास वंश : कुतुबुद्दीन ऐबक जो मोहम्मद गोरी का प्रांतपति था अब दास वंश का प्रथम संस्थापक तथा भारत का प्रथम सुल्तान बन गया। इस वंश में कुल दस शासक हुये। इस वंश का अन्तिम अल्प वयस्क शासक कैमूरस को १२९० में उसके संरक्षक जलालुद्दीन ने कारागार में डाल कर वह स्वयं सुल्तान बन गया।



फलक संख्या - ३३

खिलजी वंश : इसका संस्थापक जलालुद्दीन खिलजी था जो १२९० में सिंहासनारूढ़ हुआ। उसके भतीजे व दामाद अलाउद्दीन ने विश्वासघात करके जलालुद्दीन का वध करवाकर स्वयं १२९६ में दिल्ली का सुल्तान बन गया। उसने लगभग सारे भारत को अपने अधीन कर लिया। इस वंश का अन्तिम शासक मुबारक खिलजी था जो खुसरो द्वारा मारा गया। अंत में खुसरो को १३२० में गाजी तुग़लक ने परास्त किया।

तुग़लक वंश : इस वंश का संस्थापक गाजी तुग़लक था जो ग़यासुद्दीन तुग़लक के नाम से दिल्ली के सिंहासन पर बैठा था। इस वंश का प्रसिद्ध व्यक्ति जूना खां १३२५ में मोहम्मद तुग़लक के नाम से सुल्तान बना। इसकी महान् योजनाओं के सफल न होने के कारण जनता में असंतोष फैला। इसके कारण यह सुल्तान अपयश का भागी बना। इस वंश का अन्तिम सुल्तान महमूद शाह था। १४१३ में इसकी मृत्यु के साथ वंश का भी अंत हो गया।

सैयद वंश : १३९८ में तैमूर ने ९० हजार सैनिकों के साथ भारत पर आक्रमण किया और कई प्रदेशों को परास्त करता हुआ दिल्ली पहुंचा। तैमूर बहुत सा धन लेकर वापस चला गया और खिज़्र खां को अपना प्रतिनिधि नियुक्त कर गया। दिल्ली का सुल्तान महमूद शाह भाग गया। खिज़्र खां १४१४ में दिल्ली का सुल्तान तथा सैयद वंश का संस्थापक बन गया। इस वंश के अन्तिम सुल्तान अलाउद्दीन आलम शाह के वजीर हमीद खां ने उसके जीवन में ही बहलोल लोदी को १४५१ में दिल्ली के सिंहासन पर बैठने के लिये आमंत्रित किया। सुल्तान शान्तिमय जीवन बिताने बदायुं चला गया।

लोदी वंश : बहलोल लोदी, जो सरहिन्द का स्वतंत्र गवर्नर था, इस वंश का संस्थापक तथा प्रथम सुल्तान बना। इस वंश के अन्तिम सुल्तान इब्राहीम लोदी को बाबर ने १५२६ के युद्ध में परास्त किया। वह लड़ते लड़ते वीर गति को प्राप्त हुआ।

मुग़ल वंश : बाबर का जन्म का नाम ज़हीरुद्दीन मुहम्मद था। इसका पिता तुर्क तथा माता मंगोल थी। इसके आक्रमण के समय भारत छिन्न भिन्न हो रहा था। प्रांतपति स्वतंत्र हो गये थे। दिल्ली का राज्य एक प्रांत बन कर रह गया था। ऐसे समय में बाबर दिल्ली के राजसिंहासन पर बैठा। इस वंश में पन्द्रह शासक हुये जिनमें से मुख्य अकबर था। इसने सब धर्मों की एकता पर बड़ा परिश्रम किया और अपना एक 'दीन इलाही' धर्म चलाया। भारत को एक सूत्र में बांध दिया। विशाल साम्राज्य का सम्राट हुआ। इसने १५५६ से १६०५ ई० तक शासन किया।

दूसरे प्रसिद्ध सम्राट शाहजहाँ ने अपने प्रेम की स्मृति में एक ताजमहल का निर्माण करवाया जो सारे संसार में विख्यात हुआ। इसने १६२८ से १६५९ तक राज्य किया परन्तु अपने पुत्र औरंगज़ेब द्वारा कारागार में डाल दिया गया। १६६६ में इसका स्वर्गवास हो गया। १६५९ में औरंगज़ेब गद्दी पर बैठा। इसका जीवन युद्ध करने तथा विद्रोह दमन करने में ही बीता।

इस वंश का अन्तिम सम्राट बहादुर शाह था जिसने १८३७ से १८५७ तक नाम मात्र राज्य किया। १८५७ की असफल क्रांति के पश्चात् इसको अंग्रेजों ने बन्दी बना लिया और रंगून के कारागार में डाल दिया जहाँ १८६२ में इसकी मृत्यु हो गई।

मरहठों का उत्थान

मरहठा शब्द महा + रट्ट से बना जिसके अर्थ होते हैं। महाराष्ट्र बिगड़ कर मरहट्ट तथा मरहठा हो गया। यह लोग सिसोदिया वंश के थे। जब अलाउद्दीन खिलजी ने मेवाड़ पर आक्रमण किया तब यह लोग दक्षिण में आ बसे।

शाहजी का जन्म १५८४ में हुआ। बड़े होने पर इसने कई जगह नौकरी की। १६३६ में बीजापुर के सुल्तान के यहाँ नौकरी की। प्रसन्न होकर उसने पूना की जागीर दे दी।

शिवाजी का जन्म १९ फरवरी १६३० को शिवनेर के दुर्ग में हुआ। बड़े होने पर मुगल बादशाह औरंगजेब से युद्ध चलता रहा। १६६३ में उसने शाइस्ता खान को मार डालने का प्रयत्न किया परन्तु बच गया। उसने बड़ी बहादुरी से मुगलों की सेना से लोहा लिया। ५ अप्रैल १६८० को उसका स्वर्गवास हो गया। शम्भा जी ने १६८० से ८९ तक राज्य किया तत्पश्चात् उसका सौतेला भाई राजाराम सिंहासन पर बैठा और १७०० तक राज्य किया। १७०० से १७०७ तक उसका अल्प वयस्क पुत्र शिवाजी द्वितीय के नाम से ताराबाई की संरक्षकता में राज्य किया। शम्भा जी का पुत्र शाहू, औरंगजेब के मरणोपरांत, कारागार से मुक्त कर दिया गया और शाहू सतारा के राजसिंहासन पर बैठा दिया गया। १७५० में उसका स्वर्गवास हो गया। राज्य की शक्ति प्रधान मंत्री अयबा पेशवा के हाथों में चली गई। कुछ दिन पेशवाओं ने राज्य भी किया परन्तु बाद में मरहूठा राज्य छिन्न भिन्न हो गया। उसकी जगह पर सिन्धिया, होल्कर, भोंसला तथा गायकवाड़ अपने राज्य स्थापित करने में लग गये।

सिक्ख

सिक्ख शब्द शिष्य से शिष्य तथा सिक्ख बना अर्थात् चेला। गुरु गोविन्द सिंह ने एक विशेष प्रकार की वेशभूषा बनवाई, क्योंकि धर्म - रक्षा के लिए योद्धा का वेष धारण करवाया।

इनके गुरु गुरुनानक का जन्म २५ अप्रैल १४६९ को तलबन्दो नामक स्थान पर (आधुनिक नानकाना - पाकिस्तान) हुआ। २७ वर्ष की आयु में नौकरी छोड़ कर वैराग्य ले लिया। इस धर्म में दस गुरु हुये। अंतिम गुरु गोविन्द सिंह का वध एक अफगान ने कर दिया।

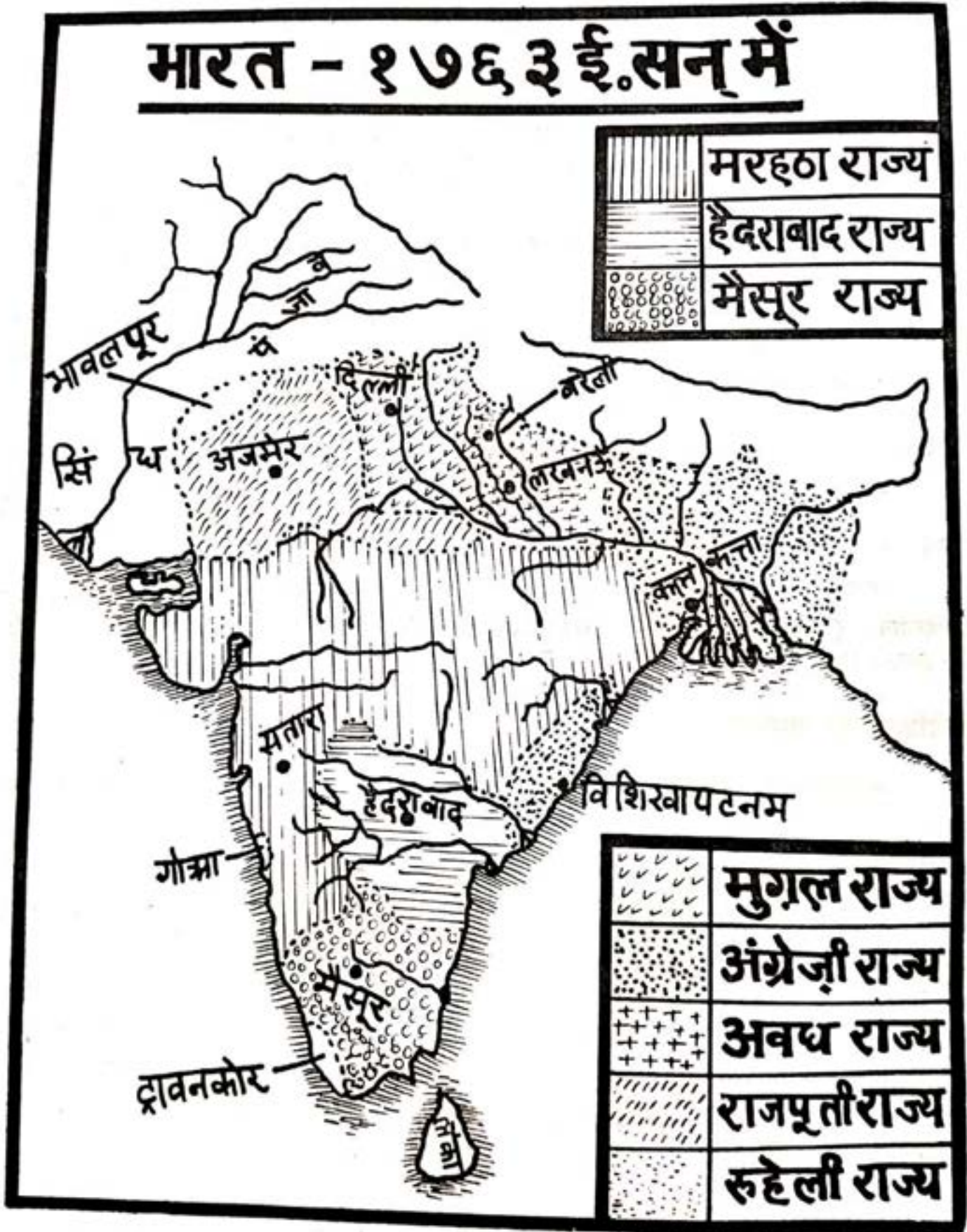
विदेशियों का आगमन

पुर्तगालियों का आगमन : भारत में वास्कोडिगामा १४९८ में कालीकट के उत्तर में अपने चार जहाजों के साथ उतरा। उसके बाद कई पुर्तगाली पदाधिकारी भारत आये और पश्चिमी किनारे पर अपना अधिकार जमाते रहे। १५३० में गोआ में उनका राज्य भी स्थापित हो गया।

अंग्रेजों का आगमन : कुछ अंग्रेज व्यापारियों ने मिलकर एक कम्पनी बनाई जिसका नाम ईस्ट इण्डिया कम्पनी था। इंग्लैण्ड की रानी एलिजाबेथ ने पूर्वी देशों के साथ व्यापार करने की अनुमति दे दी। १६१३ में उनको जहांगीर से सूरत में एक कोठी बनाने की अनुमति मिल गई। १६११ में मछलीपट्टम (आन्ध्र) में तथा १६५१ में हुगली (कलकत्ता) में कोठी बनाने की आज्ञा मिल गई। १६६८ में इंग्लैण्ड के नरेश चार्ल्स द्वितीय का विवाह पुर्तगाल की राजकुमारी कैथरीन से सम्पन्न हो गया जिसके कारण बम्बई अंग्रेजों को दहेज में मिल गया। शनैः शनैः बम्बई, मद्रास, हुगली कम्पनी के मुख्य व्यापारिक केन्द्र बन गये। एक नई कम्पनी को भी व्यापार करने की अनुमति मिल गई। १७०९ में यह दोनों कम्पनियाँ मिल गईं।

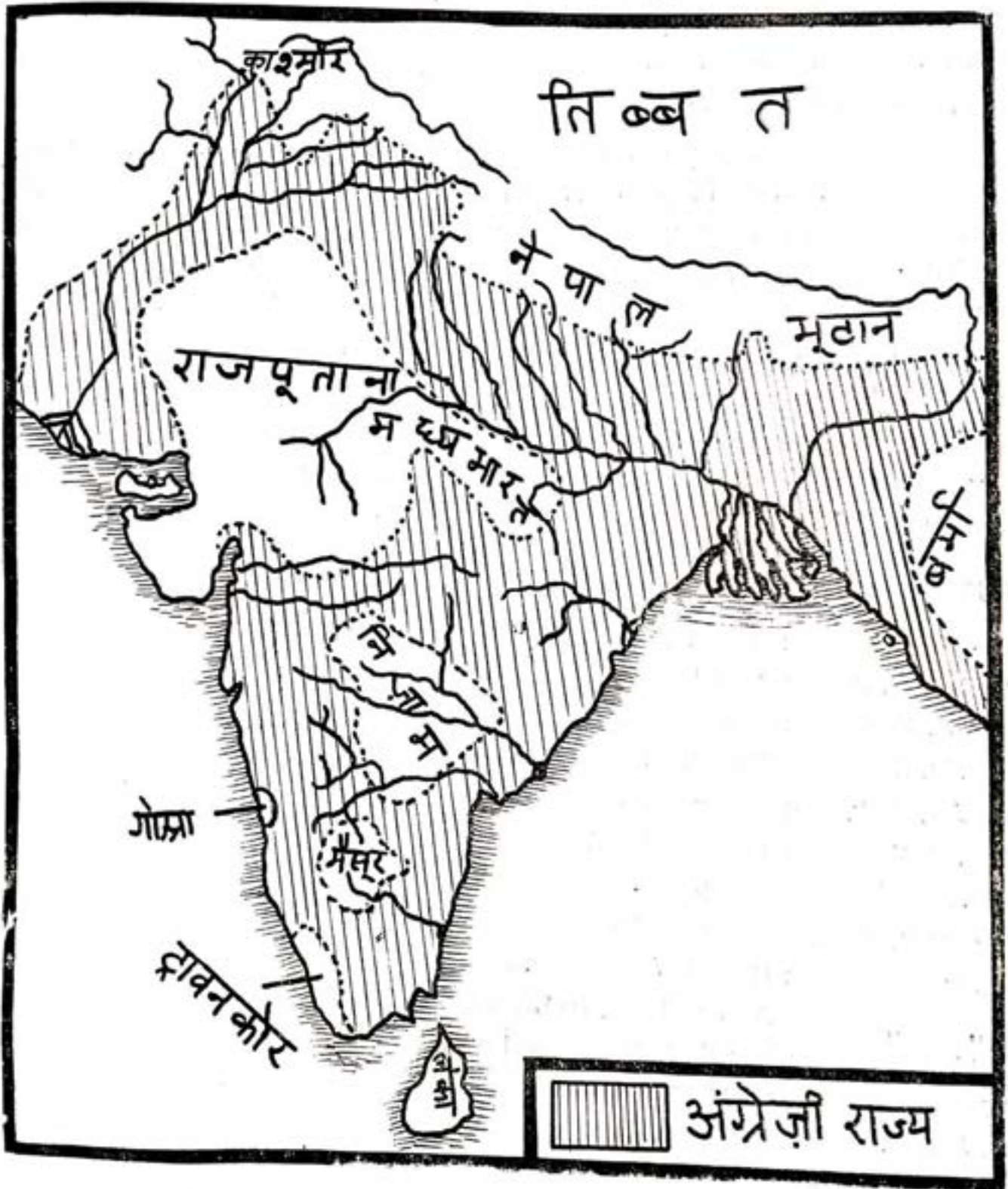
फ्रांसिसियों का आगमन : १६६८ में यह लोग सूरत आये, कोठी बनाई। फिर पाण्डीचेरी में पैर जमा लिये। तत्पश्चात् इनकी नीति बदल गई। राज्य स्थापित करना दृष्टिकोण बन गया। इसके फलस्वरूप फ्रांसीसी - अंग्रेजों में संघर्ष आरम्भ हो गये। धीरे धीरे अपने अपने क्षेत्र स्थापित हो गये।

भारत - १७६३ ई.सन् में



फलक संख्या - ३४

भारत - १८५६ में



फलक संख्या - ३५

२३ जून १७५७ को प्लासी के मैदान में क्लाइव तथा नवाब की सेना में घमासान युद्ध हुआ। विश्वासघात के कारण क्लाइव की जीत हुई। अब ईस्ट इण्डिया कम्पनी केवल व्यापारिक संस्था ही नहीं अपितु एक राजकीय संस्था भी हो गई और छोटे छोटे राजाओं को साम, दाम, दण्ड, भेद से अपनी ओर मिलाती गई। अपने प्रांतपति (गवर्नर) नियुक्त करती रही। शनैः शनैः असंतोष बढ़ता रहा जिसके फलस्वरूप १८५७ की क्रान्ति हो गई। बहुत से अंग्रेज मारे गये। अब राज्य कम्पनी के हाथों से निकल कर इंग्लैण्ड की रानी विक्टोरिया के हाथों में आ गया। भारत को दमन नीति से कुछ अंशों में छुटकारा मिला परन्तु अब भारत का अंग्रेजीकरण होना आरम्भ हो गया।

इससे लाभ यह अवश्य हुआ कि भारतियों में भारत के लिये जागृति उत्पन्न हुई। हर व्यक्ति अपने को भारतीय मानने लगा और स्वतंत्र होने के सपने देखने लगा। अपने अधिकारों की रक्षा के लिये १८८५ में एक इण्डियन नेशनल कांग्रेस स्थापित हुई जिसका पहला अधिवेशन बम्बई में हुआ। तत्पश्चात् 'होमरूल' की आवाज उठाई गई। १९०७ में इसमें दो दल नर्म तथा गर्म हो गये। उधर अंग्रेजों की घोर दमन नीति आरम्भ हो गई। १९११ में दिल्ली राजधानी बना दी गई।

जब इस दमन चक्र को रोकने के लिए महात्मा गान्धी मैदान में आये, तब सर्व प्रथम सत्याग्रह (हड़ताल) ६, अप्रैल १९१९ को की गई; जो सारे देश में सफल रही तदनन्तर भारत में जागृति की भावना प्रबल होती गई जिसके फलस्वरूप १५ अगस्त १९४७ को भारत विभाजित होकर स्वतंत्र हो गया। एक भाग पाकिस्तान और दूसरा भारत कहा जाने लगा। देश ने महा बलिदान दिये और स्वतंत्रता को रक्त से सींचा। सम्भव है हमारी आज की निर्बलतायें भावी पीढ़ी के लिये शिक्षाप्रद सिद्ध हों।

पठनीय सामग्री

- Kashyap, A. C.* : आदि भारत
Majumdar, R. C. : An Advanced History of India.
Mirashi V V. : बाकाटक राजवंश का इतिहास।
Munsht, K. M. : The History and Culture of the Indian People.
Pandey, C. B. : आन्ध्र सातवाहन साम्राज्य का इतिहास।
Puri, B. N. : India Under Kushanas.
Rao, M. R. : Glimpses of Deccan History.
Rawlinson, H. G. : A Concise History of the Indian people.
Shastri, N. K. : History of South India.
" " : Ancient India, Its Language and Religion.
Smtth, Vincent : The Early History of India.
Tripathi, Dr. R. S. : प्राचीन भारत का इतिहास।
Yazdani, G. : The Early History of Deccan.



भारत की लिपियाँ

ऐसे प्राचीन देश में, जिसमें सहस्रों वर्ष पूर्व वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् रामायण, महाभारत, गीता आदि जैसे दार्शनिक व धार्मिक विस्तीर्ण ग्रन्थों का प्रादुर्भाव हुआ हो, और वह भी एक ऐसी वैज्ञानिक भाषा संस्कृत में जो विश्व के कई देशों की भाषाओं की जन्मदात्री बन गई, कितने आश्चर्य व दुर्भाग्य की बात है कि उसी देश को आज तक यह ज्ञात न हो सका कि वे ग्रन्थ कब लिपि - बद्ध किये गये। उनका प्रामाणिक निर्माण काल भी निर्धारित न हो सका। ग्रन्थों के काल व लिपि के प्रश्न पर संसार के विद्वानों में इतना मतभेद है कि वे प्रमाणों के अभाव में केवल अनुमानों के भण्डार से एकमत होने के किसी एक सिद्धान्त को सर्वमान्य बनाने की कल्पना भी नहीं कर सकते।

फिर प्रश्न उठता है कि क्या इतने विस्तीर्ण ग्रन्थों को कई सहस्र वर्षों तक पीढ़ी दर पीढ़ी, केवल कंठस्थ करके, सुरक्षित रखा जा सकता है? नहीं, तो फिर किसी न किसी प्रकार की लिपि का वर्तमान होना अनिवार्य है। यह भी सम्भव है कि तात्कालिक विद्वानों ने इन विशाल ग्रन्थों को वृक्षों की छालों, पशुओं की खालों, भोज व ताड़ पत्रों पर लिखा हो, जो हमारे युग तक सुरक्षित न रह सके हों। इस प्रकार की शंकाओं का समाधान होना कि कौन सी लिपि कब आई — न केवल असम्भव है अपितु आज के विद्वान् अपने विकसित मस्तिष्क से नवीन प्रकार की शंकाओं को उपस्थित करके समाधान को क्षितिज की ओर ढकेल देते हैं। इस कारण इस विषय पर उस समय तक जितना चुप रहा जाये उतना ही अच्छा है, जब तक कि पुरातत्त्व वेत्ताओं के उत्खनन से भू - गर्भ में दबी कोई पुरातात्विक सामग्री प्राप्त न हो जाये जो इन प्रश्नों पर प्रामाणित प्रकाश डाल सके, अन्यथा नवीन शंकायें, नये खोज व शोध, शोध कर्ताओं की ज्ञान - वृद्धि के बजाय उनको ऐसी भूल - भुलझ्यों में जा छोड़ेंगी जिनके बाहर वे कदापि बाहर न निकल सकेंगे और शंका समाधान की उत्सुकता व प्रेरणा की ओर उदासीन हो जायेंगे।

भारत की प्राचीनतम सिन्धु - घाटी - लिपि का वर्णन तो पीछे दिया जा चुका है जिसका रहस्यो - द्घाटन अनेक विद्वानों ने इतने प्रकार से किया है कि उसके रहस्य का सर्वमान्य उद्घाटन आज तक हो ही नहीं सका। इस लिपि का अन्त उस सभ्यता के साथ ही १५०० ई० पू० में अन्त हो गया। तदोपरांत ई० पू० की सातवीं व छठीं शताब्दी में लिपि का वर्तमान होता सिद्ध करने वाले निम्नलिखित प्रमाण दिये जाते हैं :—

● पाणिनि जिसने लगभग ई० पू० की पाँचवीं शताब्दी में (विद्वानों में पाणिनि के काल में मतभेद है) एक अपूर्व, सर्वमान्य अष्टाध्यायी व्याकरण लिखी जिसमें उसने अपने से पूर्व काल के कई वैयाकरणों के नाम दिये हैं।

● पाणिनि के पूर्व यास्क ने निरुक्त लिखा और उसमें अनेक वैयाकरणों के नाम तथा उनके मर्ता का उल्लेख किया है।

● छांदोग्य उपनिषद् में 'अक्षर' शब्द मिलता है।

● तैत्तिरीय उपनिषद् में वर्ण और मात्राओं का उल्लेख मिलता है।

● जैन व बौद्ध ग्रन्थों में अनेकों लिपियों के नाम मिलते हैं।

लिपि के वर्तमान होने के प्रमाण संशयात्मक हैं प्रामाणिक प्रमाण तो हमें अशोक के शिलालेखों से मिलते हैं जिनकी लिपि ब्राह्मी के नाम से प्रसिद्ध है। भारत के लिपि इतिहास में १५०० ई० पू० से ४०० ई० पू० तक, लगभग ग्यारह सौ वर्ष का काल अन्धकारमय है। इस अन्धकारमय काल के दो सिरों — सिन्धु — घाटी — लिपि का अंत तथा ब्राह्मी का प्रारम्भ — को विद्वानों ने मिलाने की चेष्टा की है। साथ साथ इस प्रश्न का भी उत्तर देने का प्रयास किया है कि ऐसी वैज्ञानिक लिपि कहाँ से अकस्मात् दृष्टिगोचर होने लगी जो सारे भारत व दक्षिण — पूर्व — एशिया के देशों की लिपियों की जन्मदात्री बन गई। इस ब्राह्मी के उद्भव के विषय में विद्वानों के निम्नलिखित विचार हैं :—

- एल्फ्रेड : “सिकन्दर के साथ यूनानी आये थे उनसे भारतियों ने लिपि सीखी।”
 प्रिन्सेप सेनार्ट : “यूनानी लिपि से ब्राह्मी का जन्म हुआ।”
 विल्सन : “यूनानी तथा फ़िनीशिया की लिपियों से विकास हुआ।”
 हेल्वी : “यह मिश्रित लिपि है जो अरमायक, यूनानी तथा खरोंण्टी से मिलकर बनी।”
 कस्ट : “फ़िनीशिया के निवासियों से भारतीयों के सम्बन्ध रहे हैं। उन्हीं लोगों से ई० पू० की आठवीं शताब्दी में भारतीयों ने लिखना सीखकर ब्राह्मी को जन्म दिया।”

सर विलियम जोन्स तथा लेप्सियस : “सेसिटिक लिपि से तैयार की गई।”

वेवर, बेनफी, पांट, वेस्टरगार्ड, मैक्समूलर, फ्रेड्रिखमूलर, सेसी, ह्विट्ने आदि : ने भी सन्देह के साथ विलियम जोन्स के सिद्धांत का समर्थन किया।

- स्टीवेन्सन : “फ़िनीशिया तथा मिस्र की लिपियों से बनी।”
 बरनेल : “फ़िनीशियन द्वारा ब्राह्मी का उद्भव हुआ।”
 लेलोरमॉन्ट : “फ़िनीशियन तथा हेमिरायट लिपि से।”
 डिकी : “असीरिया की कीलाकार व किसी दक्षिणी सेमिटिक लिपि से बनी।”
 एडवर्ड क्लाड : “सेवियन लिपि द्वारा।”
 आयज़क टेलर : “किसी अज्ञात दक्षिणी सेमिटिक लिपि से।”
 डा० राइस डेविड्ज : “सुमेर के रेखा चित्रों से।”
 रैप्सन : “मोआव के लेख से।”

कुछ का मत है : कि सिन्धु — घाटी — सभ्यता के अंतिम चरण में जब कि चित्रात्मक व भावात्मक लिपि से वर्णात्मक बन चुकी थी उसी को शनैः शनैः आवश्यकतानुसार परिवर्तित कर के ब्राह्मी बनी।

कुछ का विचार है : कि यह फ़िनीशियन तथा सिन्धु — घाटी — लिपि द्वारा विकसित हुई।

कुछ का कहना है : कि भारत में ब्राह्मणों ने इस लिपि को ब्रह्मा से वरदान रूप में पाकर इसका विकास किया इसी कारण इसको ब्राह्मी सम्बोधित किया गया।

अन्य विद्वानों का मत है : कि अशोक ने अपने विद्वानों को एक प्रयोगात्मक — राष्ट्रीय लिपि का निर्माण करने की आज्ञा दी जिनके द्वारा यह लिपि प्रयोगात्मक बनी।

एडवर्ड टामस, डासन, लैसन, कनिंघम आदि मानते हैं कि भारत में ही इस का उद्भव हुआ।

उपर्युक्त विचारों से, जो विद्वानों ने ब्राह्मी लिपि के उद्भव के विषय में दिये हैं, क्या कोई शोधकर्ता स्नातक किसी दृढ़ निश्चयात्मक निष्कर्ष पर पहुँच सकता है? भारत की स्वतंत्रता के पश्चात् कुछ

राष्ट्रवाद आने के कारण अब यह विचार दृढ़ होता जा रहा है कि सिन्धु - घाटी - लिपि से ही इसका विकास हुआ चाहे हम उस लिपि का रहस्योद्घाटन अभी तक न कर सके हों ।

यह बात तो निश्चय है कि भारत के व्यापारिक सम्बन्ध पश्चिमी एशिया के निवासियों से सहस्रों वर्ष पूर्व से थे । यह भी सत्य है कि संसार की कोई भी लिपि ऐसी नहीं है जिसमें दूसरी लिपि का सम्मिश्रण न हो । यह अवश्य कहा जा सकता है कि ब्राह्मी लिपि का विकास सिन्धु - घाटी - लिपि तथा उत्तरी - सेमिटिक (फ़िनीशियन) लिपि व अरमायक लिपि के सम्मिश्रण से हुआ (फलक संख्या - ३६) । अब ब्राह्मी के 'अ' को लीजिये इसकी दिशा बदली गई है । फ़िनीशियन, अरमायक तथा मोआब इत्यादि लिपियाँ एक ही वंश (सेमिटिक) की हैं जो दायें से बायें लिखी जाती थीं । उन्हीं में से फ़िनीशियन लिपि के 'अ' ने भारत में आकर अपनी दिशा बदल ली । वहीं के एक अक्षर 'दलेथ' ने भारत में आकर दो पुत्रों को जन्म दिया जिनके नाम 'द' तथा 'ध' हो गये । इनकी दिशा बाद में परिवर्तित की गई । 'वेथ' अर्थात् 'व' चौकोण होने के कारण वैसा ही रहा । अरमायक के 'त' 'प' 'श' को उल्टा खड़ा कर दिया गया । इस प्रकार पश्चिम एशिया के आठ अक्षर ब्राह्मी में सम्मिलित हुये । सिन्धु - घाटी - लिपि के ४१७ चिह्नों में से कुछ चिह्न ब्राह्मी के अक्षरों के समान प्रतीत होते हैं परन्तु उनकी ध्वनियों के विषय में निश्चयात्मक रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता क्योंकि उनका रहस्योद्घाटन पूर्णरूप से सर्वमान्य नहीं हो सका ।

ब्राह्मी लिपि के गूढ़ाक्षरों का रहस्योद्घाटन

ब्राह्मी लिपि के रहस्योद्घाटन का एक अपना छोटा सा इतिहास है । मिस्र तथा मेसोपोटामिया में शैम्पोलिया तथा रालिन्सन के परिश्रम से वहाँ की प्राचीन लिपियों का रहस्योद्घाटन रोसेटा व बेहिस्तून के शिलालेखों के प्राप्त होने से पूर्ण हो चुका था, परन्तु भारत में ऐसा कोई शिलालेख प्राप्त न हो सका जिस पर ज्ञात - लिपि तथा प्राचीन लिपि में एक ही लेख अंकित हो । गूढ़ लिपियों के पढ़ने में उन देशों में तो विद्वान् प्राचीन काल से अर्वाचीन की ओर चले परन्तु भारत में अर्वाचीन से प्राचीन काल की ओर चले । जैसे अन्य देशों में पाश्चात्य विद्वानों के परिश्रम से अतीत की जानकारी हुई उसी प्रकार भारत में भी प्राचीन काल की लिपियों को पढ़ने का श्रेय वहीं के विद्वानों को मिला ।

१७८४ ई० में सर विलियम जोन्स के यत्नों से कलकत्ता में एक एशियाटिक सोसायटी तथा लन्दन में एक रॉयल एशियाटिक सोसायटी स्थापित की गई । इन दोनों का उद्देश्य प्राचीन ग्रन्थों, कलाओं, अभिलेखों, ताम्रपत्रों व सिक्कों की खोज करना था । इसी दृष्टिकोण को सामने रखते हुये १८६१ में लार्ड कनिंग (तात्कालिक भारत के वायसराय) की स्वीकृति से शासन की ओर से पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग (आर्क्योलॉजिकल सर्वे डिपार्टमेण्ट) स्थापित हुआ, जिसके अध्यक्ष संयुक्त प्रदेश (आधुनिक उत्तर प्रदेश) के मुख्य अभियन्ता (चीफ़ इंजीनियर) कर्नल ए० कनिंघम नियुक्त हुए ।

इसी पुरातत्त्व विभाग के अन्तर्गत निम्नलिखित खोज कार्य सम्पन्न हुए :—

१७८५ में : चार्ल्स विलकिन्सन द्वारा दसवीं श० का एक स्तम्भ लेख पढ़ा गया । इसको बंगाल के राजा नारायण पाल ने लिखवा कर बादल (जिला दीनाजपुर) में स्थापित कराया था ।

१७८५ में : राधाकांत शर्मा द्वारा तेरहवीं श० के कुछ अभिलेख पढ़े गये तथा दिल्ली के अशोक - स्तम्भों को पढ़ने का प्रयास किया गया । यह दोनों स्तम्भ १३५६ ई० में फीरोज़शाह तुग़लक के आदेश से दिल्ली लाये गये थे । उनमें से एक टोपरा (जिला अम्बाला) से तथा दूसरा मेरठ से लाया

सेमिटिक व सिन्धु -- घाटी के चिह्नों की ब्राह्मी के
अक्षरों से तुलना

सेमिटिक लिपियों के अक्षर		ध्वनि	ब्राह्मी
फ़िनीशिया	𐤀	अ	𑀓
"	𐤁	ब	𑀕
"	𐤂	द	𑀭, 𑀮
मोज़ाब	𐤃	ग	𑀔
हेब्रू	𐤄	त	𑀖
अरमायक	𐤅	श	𑀘
..	𐤆	प	𑀚

ध्वनि	इ	क	ग	ट	ठ	थ	ब	र
ब्राह्मी	ॐ	+	𑀔	(○	◉	𑀕	
सिन्धु	ॐ	+	𑀔.	(○	◉	𑀕	

फलक संख्या - ३६

गया था। उन्हें पढ़ने का प्रयत्न अकबर तथा तुग़लक द्वारा किया गया परन्तु तात्कालिक विद्वानों में से एक भी उन्हें पढ़ने में सफल न हो सके।

१७८५ में : जे० यच० हरिंग्टन द्वारा गुप्त लिपि के उन शिलालेखों के अक्षरों को पहचाना गया जो बुद्ध — गया (बिहार) के निकट गुफ़ाओं से प्राप्त हुए थे।

१८१८ से २३ तक : कर्नल जेम्स टाड द्वारा सातवीं से पन्द्रहवीं शताब्दी तक के उन अभिलेखों को पढ़ने का प्रयास किया गया जो काठियावाड़ (गुजरात) तथा राजपूताना (राजस्थान) से प्राप्त हुए थे।

१८२८ में : बी० जी० बबिंगटन द्वारा तमिल भाषा के उन प्राचीन अभिलेखों का रहस्योद्घाटन हुआ तथा वर्णमालायें तैयार की गईं जो दक्षिण भारत के मामलपुर से प्राप्त हुये थे।

१८३३ में : वाल्टर इलियट ने प्राचीन कन्नड़ अक्षरों को पहचान कर वर्णमाला तैयार की।

१८३४ में : कैप्टेन ट्रायर ने राजा समुद्रगुप्त के उस लेख को पढ़ने का प्रयास किया जो अशोक के प्रयाग वाले स्तम्भ पर अंकित किया गया था, जिसका पूरा रहस्योद्घाटन डॉ० मिल ने किया।

१८३५ में : डबल्यु० यच० वाथन ने छठी व सातवीं श० के बलभी राजवंश के राजाओं के दान पत्र पढ़े।

जून १८३७ में : प्रिसेप के पास कुछ छोटे छोटे अभिलेख आये जो सांची के स्तूप के चारों ओर के स्तम्भों पर उत्कीर्ण थे। प्रत्येक अभिलेख के अन्त में केवल दो ही अक्षर बारम्बार उत्कीर्ण किये गये थे। दैवयोग से प्रिसेप को संस्कृत भाषा का एक शब्द 'दान' याद आया। यही शब्द सारी ब्राह्मी लिपि के रहस्योद्घाटन की कुंजी बन गई। इसी आधार पर प्रिसेप ने दिल्ली के अशोक स्तम्भ को पढ़ने का प्रयास किया। 'पियादसि' शब्द से उसे अशोक राजा का ध्यान आया। १८३८ में उसने ग्रीक राजाओं के तीन नाम^१ पढ़े जो गिरनार के अशोक — शिलालेख में उत्कीर्ण थे। अपने शोध कार्य में व्यस्त प्रिसेप का २२ अप्रैल १८४० को स्वर्गवास हो गया। भारत के पुरातत्व विभाग में इतना परिश्रमी, इतना बुद्धिमान तथा इतना महान् खोजकर्ता कोई व्यक्ति उसके स्थान की पूर्ति नहीं कर सका। मृत्यु से पूर्व प्रिसेप ने १८३८ में चार्ल्स विल्किन्सन, कैप्टेन ट्रायर, डा० मित्र आदि के सहयोग से गुप्त एवं ब्राह्मी लिपि की वर्णमालायें तैयार कर ली थी। उसी वर्ष कैप्टेन कोर्ट, नॉरसि तथा कनिंघम के प्रयत्नों से प्रिसेप ने खरोष्ठी की भी वर्णमाला तैयार कर ली थी।

इस प्रकार १८९० तक कई विद्वानों के सहयोग से कई खोज कार्य सम्पन्न हुए तथा अनेक शिलालेखों, ताम्रपत्रों व सिक्कों के गूढ़ाक्षरों का रहस्योद्घाटन हुआ जिनके द्वारा भारत के इतिहास की बिखरी हुई कड़ियों को जोड़ कर इतिहास का क्रमबद्ध किया गया।

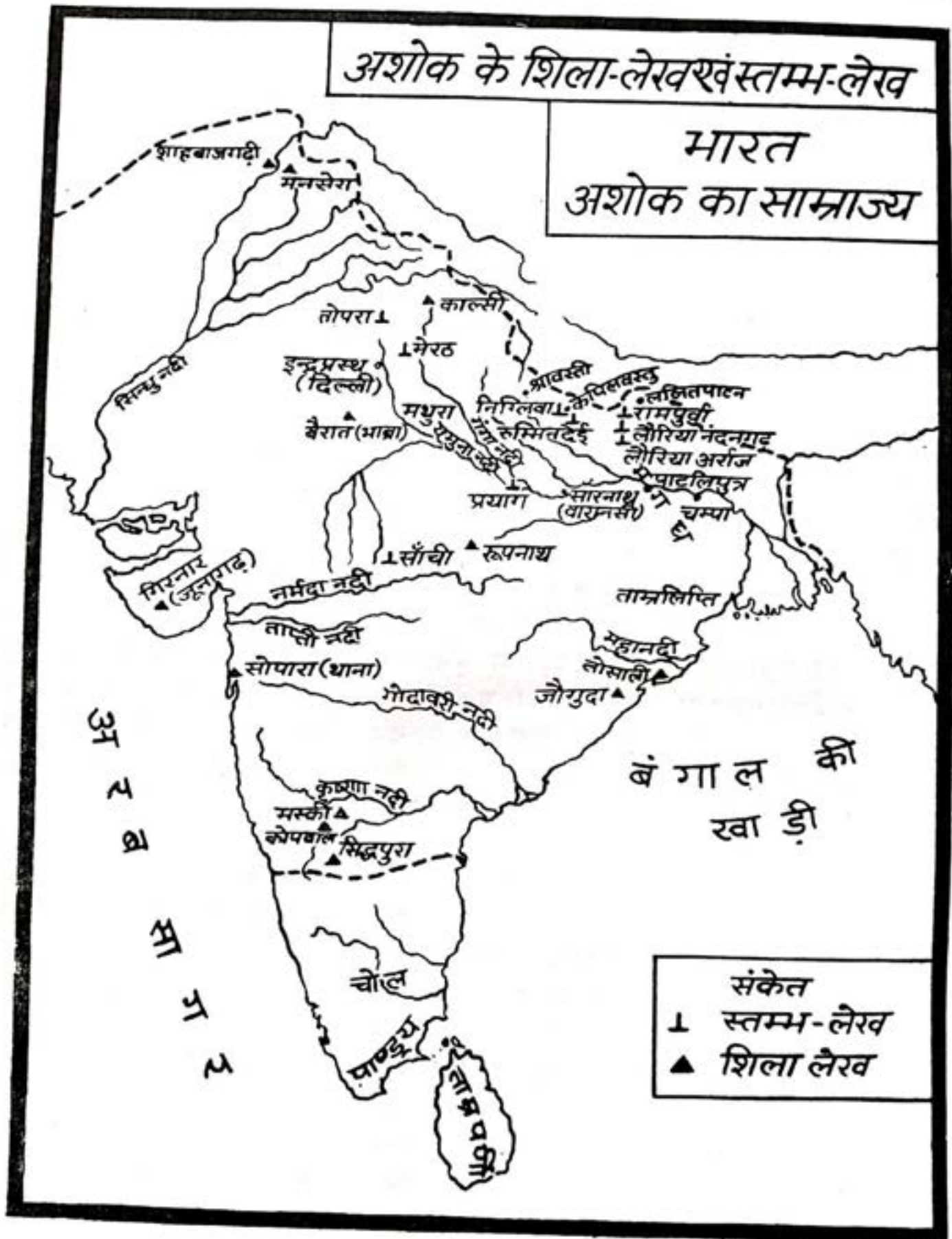
खरोष्ठी लिपि

इस लिपि का जन्म और विकास अरमायक द्वारा लगभग ई० पू० की छठी शताब्दी में उन जातियों ने किया, जो भारत (आधुनिक अफ़ग़ानिस्तान व पाकिस्तान के कुछ भाग) के पश्चिमात्तर प्रान्तों में निवास करती थीं। इनमें बैक्ट्रिया, सीथिया, पश्शिया, भारत आदि देशों के निवासी सम्मिलित थे। इन जातियों के

1. पन्दी ओक्स द्वितीय, टॉलेमी फ्लेबीकस तथा सीटिन कामगस।

अशोक के शिला-लेख एवं स्तम्भ-लेख

भारत अशोक का साम्राज्य



व्यापारियों को ईरान की राजकीय तात्कालिक कोलाकार लिपि का प्रयोग करने में बड़ी कठिनाई प्रतीत होती थी। ईरानी व्यापारी भी कोलाकार लिपि को प्रयोग न कर अरमायक का प्रयोग करते थे। व्यापारी पर्यटनशील होते थे। इस कारण अरमायक भी पर्यटनशील हो गई और विभिन्न देशों में जाकर वहाँ की भाषा व प्रचलित लिपि पर अपना प्रभाव डाल कर भिन्न-भिन्न लिपियों की जन्मदात्री बन गई। दूसरी श० में इसका स्थान ईरान की पहलवी लिपि लेने लगी।

इस लिपि का नाम खरोष्ठी क्यों पड़ा — इसके विषय में विद्वानों ने अपने निम्नलिखित अनुमानित विचार दिये हैं :—

- खरोष्ठी शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के दो शब्दों (खर = गधा + ओष्ठ = ओठ) से हुई जिसके अर्थ हैं, गधे के ओठों जैसी लिपि।
- खर पोस्ता अर्थात् गधे की खाल पर लिखी जाने वाली लिपि खरोष्ठी कहलाने लगी।
- अरमायक भाषा के एक शब्द 'खरोष्ठ' से इसका नाम खरोष्ठी पड़ा।
- हेब्रू भाषा के शब्द खरोशेय, जिसका अर्थ है लिखावट, से खरोष्ठी बना।
- काशगर (कश्मीर के उत्तर में) को संस्कृत में खरोष्ठ कहते हैं, अतः लिपि जो वहाँ अधिक प्रचलित थी, खरोष्ठी कहलाई।
- बौद्ध — ग्रन्थ ललित-विस्तर, जिसका अनुवाद चौथी शताब्दी के आरम्भ में चीनी भाषा में हुआ, के अनुसार किअ — लु — सेटो (दिव्य शक्ति रखनेवाले आचार्य) के नाम पर खरोष्ठी पड़ा।

इस लिपि के रहस्योद्घाटन की अपनी स्वयं एक कहानी है जिसमें कई पात्र हैं। कर्नल जेम्स टॉड ने बैक्ट्रिया, ग्रीक, शक, पार्थिया व कुषाण वंशीय राजाओं के कई प्राचीन सिक्कों तथा अभिलेखों का संग्रह किया था। १८३० में जनरल वेन्टूरा ने मानिकियाल के स्तूप को खुदवाया। उसमें कई सिक्के तथा दो खरोष्ठी लिपि के अभिलेख प्राप्त हुये। १८३४ में कैप्टेन कोर्ट को एक स्तूप से कई सिक्के तथा एक अभिलेख प्राप्त हुआ। १८३८ में मैसन ने अपनी जान संकट में डाल कर स्वयं शहबाजगढ़ी^१ की ८० फुट ऊँची चट्टान पर अंकित अशोक की १४ घोषणाओं की प्रतिलिपियाँ तैयार करके प्रिंसेप के पास भेजीं। साथ ही साथ उसने कई सिक्कों पर अंकित राजाओं के नाम एक ओर की ग्रीक लिपि में पढ़े जिनका नाम दूसरी ओर खरोष्ठी में अंकित था। उन नामों को भी प्रिंसेप के पास प्रमाणित कराने भेजा, जो प्रिंसेप ने ठीक बतलाये। अब इतनी प्रगति हो गई कि विद्वान् यह जान गये कि जो लिपि अंकित है वह दाएँ से बाएँ पढ़ी जायेगी तथा उसकी भाषा प्राकृत व पाली है। इन प्रयत्नों से १७ अक्षर पहचान लिये गये। नॉरिस ने अन्य ६ अक्षर पहचाने। शेष प्रिंसेप ने पहचान कर अपने सहयोगी विद्वानों द्वारा १८४० में इस लिपि के ३७ अक्षरों की एक वर्णमाला तैयार की जो 'फ० सं० — ३८, ३८ क' पर तीसरी चट्टान के कुछ शब्दों के साथ दी गई है।

अभिलेख के कुछ शब्द इस प्रकार हैं :— “देवन प्रियो प्रिय द्रशिरय सर प षड नि ग्र ह ठ नि”
अर्थात् “देवताओं के प्रिय, दर्शन करने में प्रिय, सर्व धार्मिक सम्प्रदायों प्रवरजितों और गृहस्थों”

१. शहबाज गढ़ी मकाम नदी के निकट जिला पेशावर के मर्दान उपनगर से नौ मील पर स्थित है।

खरोष्ठी लिपि — दूसरी शताब्दी

उत्तरी सिन्ध के प्रान्त (पाकिस्तान) के भावलपुर नगर के उत्तर-पश्चिम में स्थित सुइ विहार का जीर्ण स्तूप है। यहाँ से एक ताम्र - पत्र, जिसपर खरोष्ठी में चार पंक्तियाँ अंकित थीं, उत्खनन में जी० ईट्स (G. Yeats) को १८६९ में प्राप्त हुआ। जे० डाउसन ने इसका अनुवाद १८७० में किया। डा० वान् विस्क ने इस ताम्र - पत्र की तिथि ७ जून १३९ ई० निर्धारित की। कनिष्क के राज्य के ग्यारहवें वर्ष में इसको अंकित कराया गया था। कनिष्क^१ का काल (पाँच विद्वानों ने दिया है) विवादस्पद है। इस अभिलेख की भाषा पाली + प्राकृत है तथा संस्कृत का प्रभाव है।

इस लिपि के वर्ण^२ तथा ताम्र - पत्र - अभिलेख^३ 'फ० सं० - ३८ क, ३८ ख तथा ३८ ग' पर दिये गये हैं।

अभिलेख का लिप्यंतरण इस प्रकार है :— (दायें से बायें पढ़ा जायेगा)

“महरजस्य रजतिराजस्य देवपुत्रस्य कनिष्कस्य संवत्सरे एकदशे सं० १०१ दइसिकस्य मसस्य दिवसे अठविशे दि २०४४ उत्र दिवसे भिक्षुस्य नागदत्तस्य संखं केटिस्व अचर्यं दमत्रति शिष्यस्य अचर्यंभव प्रशिष्यस्य यठि अरोपयतो इहदमने। विहर स्वमिनि उपसिक बलनंदि किछुविनि बल जय मत च इमं यठि प्रतिठनं कपजं च अनुपरिवरं ददति सर्वं सत्वनं। हित सुखय भवतु।”

अभिलेख का अनुवाद :—

“देवपुत्र महाराजाधिराज कनिष्क के राज्य के ग्यारहवें वर्ष - सं (वत्) १०१ के दइसिक माह के अठ्ठाइसवें दिन, भिक्षु नागदत्त ने, जो विधि का प्रचारक, दमत्रि (गुरु) का शिष्य, गुरु भव के शिष्यों का शिष्य था, विहार की उपासिका दमनः बालनन्दी को मानने वाली और उसकी माँ, बालजय की पत्नी को यह स्थान प्रदान कर दिया ताकि सबको सुख व हर्ष प्राप्त हो।”

विवादास्पद काल की प्राचीन ब्राह्मी

ब्राह्मी के चार ऐसे अभिलेख प्राप्त हुये हैं जिनके विषय में विद्वान् अभी तक एक मत नहीं हो पाये हैं। प्रश्न है कि क्या यह प्राचीन लेख अशोक काल (ई० पू० २७३ - २३२) के पूर्व के हैं या उसके शासनकाल के हैं। इस प्रश्न का उत्तर केवल तर्क से दिया जा सकता है क्योंकि कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है। विद्वानों के विवादास्पद मतों को देना केवल विषय लम्बा करना होगा। इतना कहना पर्याप्त होगा कि प्रो० दिनेश चन्द्र सरकार इनको तीसरी शताब्दी के तथा गौरीशंकर हीरा चन्द ओझा ई० पू० की पांचवी शताब्दी के मानते हैं।

पहला एक आंशिक लेख जो एक स्तम्भ के टुकड़ों पर अंकित था और जो अजमेर के बड़ली ग्राम से प्राप्त हुआ था परन्तु अब अजमेर के संग्रहालय में सुरक्षित है। उसके अंकित शब्द हैं “बीर (।) य भगव (त),

1. Sircar, D. C. : Select Inscription - page 134 [78 A. D. - 101 A. D.]
Banerji, R. D. : I. A. Vol. XXXVII (1908) page 72 [78 A. D. - 123 A. D.]
Smith, V. A. : Early History of India (1908) page 259. [125 A. D. - 150 A. D.].
Konow, S : C. I. I. Vol. II, Part I, Plate LXXVII [128 A. D. - 151 A. D.]
Puri, B. N. : India Under The Kushanas - page 45 [144 A. D. - 167 A. D.]
2. Ojha, G. H. : भारतीय प्राचीन लिपि माला - पृष्ठ ९८, प्लेट - ६५.
3. I. A. Vol. X page 325.

खरोष्ठी लिपि के वर्ण

अ	इ	उ	ए	औ	अं	क	ख	ग
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
घ	च	छ	ज	झ	ञ	ट		
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
न	प	फ	ब	भ	म			
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
म	य	र	ल	व	श			
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ष	स	ह	कि	खि	चि			
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ठि	णि	ति	मि	शि	सि	गु	चु	तु
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ते	ने	ये	चे					
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ					
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
नि	ठ	ह	ग्र	नि	ड	ष	प	र
स	य	र	शि	द्र	य	प्रि	यो	प्रि
न	व	दे						

खरोष्ठी के कुछ अन्य संलिष्ट वर्ण

कि 𑀓𑀲	खि 𑀓𑀲	गु 𑀓𑀲	ग्र 𑀓𑀲	चि 𑀓𑀲	चु 𑀓𑀲
ट्र 𑀓𑀲	ट्रि 𑀓𑀲	ठि 𑀓𑀲	णि 𑀓𑀲	ति 𑀓𑀲	तु 𑀓𑀲
ते 𑀓𑀲	ले 𑀓𑀲	थं 𑀓𑀲	दं 𑀓𑀲	द्र 𑀓𑀲	धु 𑀓𑀲
ध्र 𑀓𑀲	मु 𑀓𑀲	ने 𑀓𑀲	नो 𑀓𑀲	पि 𑀓𑀲	ब्र 𑀓𑀲
म्र 𑀓𑀲	यु 𑀓𑀲	शि 𑀓𑀲	ये 𑀓𑀲	पो 𑀓𑀲	बु 𑀓𑀲
श्रु 𑀓𑀲	षे 𑀓𑀲	सि 𑀓𑀲	सो 𑀓𑀲	स्त 𑀓𑀲	स्त्रि 𑀓𑀲

फलक संख्या - ३८ क

खरोष्ठी लिपि -- दूसरी श०

अ ३३	ट ३	प ३	ति ३	कु ३	रे ३	सं ३
इ ३३	ठ ३	र ३	दि ३	चु ३	शे ३	त्र ३
उ ३	त ३	ल ३	नि ३	तु ३	से ३	त्व ३
ए ३	द ३	व ३	वि ३	तु ३	ते ३	प्र ३
क ३	न ३	स ३	भि ३	नु ३	शे ३	र्ष ३
ख ३	प ३	ह ३	मि ३	पु ३	ठं ३	ष्क ३
ग ३	ब ३	टि ३	शि ३	सु ३	तं ३	स्व ३
च ३	म ३	ठि ३	सि ३	दे ३	नं ३	मं ३
ज ३	म ३	णि ३	हि ३	ने ३	रं ३	व ३

फलक संख्या - ३८ ख

३३ - ३३३ ३३३

खरोष्ठी लिपि -- दूसरी श०

ገደብን ለጥፋትና ለጥፋትና ለጥፋትና ለጥፋትና ለጥፋትና

रै त्स व स स्य च्छनिक स्य त्र पु व दै स्य ज रा ति ज र स्य ज र ह म

[illegible]

शैविठअसेवदि स्यसम स्यकसिइ द ११० सं शै द क ए

21133 22544 23755 24866 25977 26088 27199 28200 29311 30422 31533 32644 33755 34866 35977 36088 37199 38200 39311 40422 41533 42644 43755 44866 45977 46088 47199 48200 49311 50422 51533 52644 53755 54866 55977 56088 57199 58200 59311 60422 61533 62644 63755 64866 65977 66088 67199 68200 69311 70422 71533 72644 73755 74866 75977 76088 77199 78200 79311 80422 81533 82644 83755 84866 85977 86088 87199 88200 89311 90422 91533 92644 93755 94866 95977 96088 97199 98200 99311 100422 101533 102644 103755 104866 105977 106088 107199 108200 109311 110422 111533 112644 113755 114866 115977 116088 117199 118200 119311 120422 121533 122644 123755 124866 125977 126088 127199 128200 129311 130422 131533 132644 133755 134866 135977 136088 137199 138200 139311 140422 141533 142644 143755 144866 145977 146088 147199 148200 149311 150422 151533 152644 153755 154866 155977 156088 157199 158200 159311 160422 161533 162644 163755 164866 165977 166088 167199 168200 169311 170422 171533 172644 173755 174866 175977 176088 177199 178200 179311 180422 181533 182644 183755 184866 185977 186088 187199 188200 189311 190422 191533 192644 193755 194866 195977 196088 197199 198200 199311 200422 201533 202644 203755 204866 205977 206088 207199 208200 209311 210422 211533 212644 213755 214866 215977 216088 217199 218200 219311 220422 221533 222644 223755 224866 225977 226088 227199 228200 229311 230422 231533 232644 233755 234866 235977 236088 237199 238200 239311 240422 241533 242644 243755 244866 245977 246088 247199 248200 249311 250422 251533 252644 253755 254866 255977 256088 257199 258200 259311 260422 261533 262644 263755 264866 265977 266088 267199 268200 269311 270422 271533 272644 273755 274866 275977 276088 277199 278200 279311 280422 281533 282644 283755 284866 285977 286088 287199 288200 289311 290422 291533 292644 293755 294866 295977 296088 297199 298200 299311 300422 301533 302644 303755 304866 305977 306088 307199 308200 309311 310422 311533 312644 313755 314866 315977 316088 317199 318200 319311 320422 321533 322644 323755 324866 325977 326088 327199 328200 329311 330422 331533 332644 333755 334866 335977 336088 337199 338200 339311 340422 341533 342644 343755 344866 345977 346088 347199 348200 349311 350422 351533 352644 353755 354866 355977 356088 357199 358200 359311 360422 361533 362644 363755 364866 365977 366088 367199 368200 369311 370422 371533 372644 373755 374866 375977 376088 377199 378200 379311 380422 381533 382644 383755 384866 385977 386088 387199 388200 389311 390422 391533 392644 393755 394866 395977 396088 397199 398200 399311 400422 401533 402644 403755 404866 405977 406088 407199 408200 409311 410422 411533 412644 413755 414866 415977 416088 417199 418200 419311 420422 421533 422644 423755 424866 425977 426088 427199 428200 429311 430422 431533 432644 433755 434866 435977 436088 437199 438200 439311 440422 441533 442644 443755 444866 445977 446088 447199 448200 449311 450422 451533 452644 453755 454866 455977 456088 457199 458200 459311 460422 461533 462644 463755 464866 465977 466088 467199 468200 469311 470422 471533 472644 473755 474866 475977 476088 477199 478200 479311 480422 481533 482644 483755 484866 485977 486088 487199 488200 489311 490422 491533 492644 493755 494866 495977 496088 497199 498200 499311 500422 501533 502644 503755 504866 505977 506088 507199 508200 509311 510422 511533 512644 513755 514866 515977 516088 517199 518200 519311 520422 521533 522644 523755 524866 525977 526088 527199 528200 529311 530422 531533 532644 533755 534866 535977 536088 537199 538200 539311 540422 541533 542644 543755 544866 545977 546088 547199 548200 549311 550422 551533 552644 553755 554866 555977 556088 557199 558200 559311 560422 561533 562644 563755 564866 565977 566088 567199 568200 569311 570422 571533 572644 573755 574866 575977 576088 577199 578200 579311 580422 581533 582644 583755 584866 585977 586088 587199 588200 589311 590422 591533 592644 593755 594866 595977 596088 597199 598200 599311 600422 601533 602644 603755 604866 605977 606088 607199 608200 609311 610422 611533 612644 613755 614866 615977 616088 6

स्यटि केखसं स्यतद गनस्यक्षुमि सेवदि त्रउः ४४२० दि

ከፋ ያልገጸጸታል፤ ስለዚህም ምሳሌው ሆኖ ለሌሎች

परोअठिं य स्यष्यशि प्र व म र्यचअस्यष्य शि ति त्रमद र्यचअ

[illegible]

किं दिनं लब्धकसि प उ निमिस्वरहविः । नेमट इ इ त्रो य

ከፍተኛ የጥናት ዕድል ለሰጡት ለሁሉም ሰላምና ጥሩ ጥገና ይገባል።

पञ्चअजं पकनं ठतिपठि य मं च वस य न न न निनि न

375577 | 375577 377

तु व म य ख स त हि ः संख सर्वस विटं र ः व णि

दक्षिण एशियाई देशों की लेखन कला ।

दूसरी पंक्ति में "चतुर । सिति व (स) । महावीर के निर्वाण का चीरासिवाँ वर्ष होना चाहिये जो ई० पू० की ४४३ वीं वर्ष होती है अर्थात् लेख ४४३ ई० पू० का है ।¹

दूसरे व तीसरे अभिलेख जो योगरा जिले (आधुनिक बंगला देश) से तथा सोहगड़ा, जिला गोरखपुर से प्राप्त हुए ।

चौथा अभिलेख नेपाल की तराई में कपिलवस्तु² के निकट पिप्रावा³ ग्राम से प्राप्त हुआ । १८९९ के मार्च के माह में बाबू पूरन चन्द्र मुकर्जी ने उत्खनन कार्य किया । १८ फुट ईंटों के चबूतरे को खोदने के पश्चात् एक बड़े पत्थर की पेटी, जिसकी लम्बाई ४ फुट ४ इंच, चौड़ाई २ फुट ८ इंच तथा ऊँचाई २ फुट २ इंच थी, दिखाई पड़ा जिसमें से पाँच कलश प्राप्त हुये । इनमें महात्मा बुद्ध की अस्थियों की राख थी । उनमें से एक कलश पर, जिसका व्यास ४ इंच तथा ऊँचाई ६ इंच थी, गोलाई में एक छोटा सा अभिलेख⁴ अंकित था (फ० सं० - ३९) । उसकी भाषा पाली - प्रकृत मिश्रित थी ।

अंकित शब्द : "सुकिति - भतिनं स - भगिनिकनं स - पुत - दलनं इयं सलिल - निधने बुध स भगवते साकियानं ।"

हिन्दी अनुवाद⁵ : "शाक्यों ने अपने भाईयों बहनों तथा पुत्रों और स्त्रियों के साथ भगवान् शाक्य मुनि बुद्ध का यह शरीर निधन (स्तूप) कीर्ति के लिए स्थापित किया ।"

दूसरा अनुवाद⁶ : "शाक्य सुकीर्ति बन्धुओं ने अपनी बहनों, पुत्रों और पत्नियों के साथ बुद्ध भगवान् की अस्थियों पर इस स्तूप (शरीर निधन) का निर्माण करवाया ।"

इसके अतिरिक्त भी कई विद्वानों ने इस अभिलेख के अनुवाद किये हैं जिनमें भिन्नता पाई जाती है । इस अभिलेख का काल भी ३४३ ई० पू० माना है ।

उत्तरी ब्राह्मी - ई० पू० तीसरी श०

डा० विन्सेन्ट स्मिथ ने अशोक के अभिलेखों का वर्गीकरण करके उनका समय भी निर्धारित किया है । जूनागढ़ (गुजरात) में गिरनार के रास्ते पर एक बड़ी चट्टान है, जिस पर सम्राट अशोक ने लगभग २५७ ई० पू० में अपनी चौदह घोषणायें ब्राह्मी अक्षरों में अंकित करवाई । यह शिला भूमि तल से बारह फुट ऊँची तथा ७५ फुट परिधि की है । यह खड़ी पंक्तियों द्वारा विभाजित की गई है । लेख सामने की ओर है । पीछे की ओर

1. गौरी शंकर दीरा चन्द ओझा की पुस्तक "भारतीय प्राचीन लिपि माला" ।
2. कपिलवस्तु को कोशला के राजा वृधुका ने ५४५ ई० पू० में नष्ट कर दिया । ५४३ में अजातशत्रु ने कोशला को नष्ट कर वृधुका को जीवित जला दिया । इसी वर्ष बुद्ध का शरीर निधन हुआ ।
3. Mukherji : A Report on Tour of Exploration of the Antiquities in the Terai (Nepal) the Region of Kapilvastu During Feb, March (1899).
4. I. A. Vol. XXXVI - page 177
5. राईज डेविड्स [Rhys Davids] के अंग्रेजी अनुवाद से "This Shrine for relics of Buddha, the august one, is that of Sakyas, the brotheren of the distinguished one, in association with their sisters and with their children and their wives"
6. डा० ब्यूलर Dr. Bühler के अंग्रेजी अनुवाद से "This relic Shrine [Sharir Nidhan] of Divine Buddha [is the donation] of Sakya Sukirti Brothers associate1 with their Sisters and wives"

विवादास्पद काल की प्राचीन ब्राह्मी



के अभिलेख क्षत्रप वंशीय राजा रुद्रदामन् ने जो जयदामन् का पुत्र था और जिसने महाक्षत्रप के रूप में सौराष्ट्र पर ४० वर्ष (१३० से १७० ई० सन् तक) राज्य किया, संस्कृत भाषा में अंकित करवाये थे । यह संस्कृत भाषा के प्राचीनतम लेख थे । वैदिक साहित्य में ६४ वर्ण थे परन्तु प्राकृत, जिसमें यह शिलालेख उत्कीर्ण है, में ४७ अक्षर व्यवहार में आते थे क्ष. व्र. ज. भी वर्ण मान लिये गये वैसे यह संयुक्त अक्षर हैं ।

इस शिलालेख का दिसम्बर १८२२ में सर्वप्रथम मेजर जेम्स टॉड ने निरीक्षण किया । उस समय वह कहीं से भी टूटा नहीं था, परन्तु गिरनार पर्वत को जाने के लिये सड़क — निर्माण कार्य में इसका कुछ भाग खण्डित हो गया । उसके बाद डा० वर्गेंस ने उस पर एक छत्रच्छाया का निर्माण कराया । इसकी सबसे पहली प्रतिलिपि कैप्टन लैंग ने १८३५ में कपड़े पर तैयार की । तदन्तर ली ग्रांड जैकब तथा वेस्टर गार्ड ने और प्रतिलिपियाँ तैयार कीं । इसके गूढ़ाक्षरों का रहस्योद्घाटन सर्वप्रथम १८३८ में अन्य विद्वानों के सहयोग से जेम्स प्रिसेप ने किया । इसकी भाषा प्राकृत है । इसकी वर्णमाला तथा लेख के कुछ संयुक्त वर्ण 'फ० सं० — ४७ — ४७ क' पर दिये गये हैं । शब्दों के अर्थ हैं :—“यह धर्म लिपि देवताओं के प्रिय व जिसका दर्शन भी प्रिय हो (ऐसे राजा अशोक) राजा द्वारा लिखा गया ।” इसके अतिरिक्त रुम्मिनदेई का स्तम्भ लेख दिया है । इसमें जो १ से ५ तक के अंक हैं वह उत्कीर्ण नहीं हैं — यह ५ पंक्तियाँ हैं । रुम्मिनदेई स्तम्भ लेख का हिन्दी अनुवाद इस प्रकार है :—(फ० सं० — ४० ख)

- १ — बीस वर्षों से अभिषेक देवानांप्रिय प्रियदर्शी राजा द्वारा ।
- २ — स्वयं आकर (स्थान का) गौरव किया गया, क्योंकि यहाँ शाक्यमुनि बुद्ध जन्म लिये थे ।
- ३ — पत्थर की दृढ़ दीवार यहाँ बनाई गई और शिलास्तम्भ खड़ा किया गया ।
- ४ — क्योंकि भगवान् यहाँ उत्पन्न हुए थे । लुम्बनी ग्राम (धर्म) कर से मुक्त किया गया ।
- ५ — और अष्टभागी बना दिया गया ।

उत्तरी ब्राह्मी — दूसरी श० (क्षत्रप)

विक्रमादित्य द्वारा शकों की पराजय के १३५ वर्ष बाद कनिष्क के आधिपत्य में काठियावाड़, गुजरात और अवन्ती में शकों का शासन फिर से स्थापित हो गया और क्षहरात वंशीय भूमक इस प्रदेश का प्रथम शक क्षत्रप हुआ । नहुपान इस वंश का अंतिम क्षत्रप था जिसने ११९ से १२४ ई० तक राज्य किया ।

कुषाणों के ही अधिपत्य में शकों के दूसरे वंश की स्थापना हुई । इस वंश का नाम सम्भवतः कार्दमक वंश था । इस वंश का प्रथम शासक जामोतिक का पुत्र चण्टक था । उस काल की रीति के अनुसार शासक महाक्षत्रप तथा उसका पुत्र, जो राज-काज में सहयोग दे, क्षत्रप कहलाता था, इस कारण चण्टक का पुत्र जयदामन् क्षत्रप था परन्तु चण्टक के शासन काल में ही जयदामन् की मृत्यु हो गई । तत्पश्चात् चण्टक का पौत्र रुद्रदामन् क्षत्रप हुआ । १३० में चण्टक की मृत्यु के पश्चात् रुद्रदामन् महाक्षत्रप हुआ । इसने अपने राज्य का विस्तार किया । अपनी कन्या का विवाह सातवाहन वंशीय वाशिष्ठीपुत्र पुल्लमायी,^१ जिसकी राजधानी, नासिक के निकट, पैठन थी, से १३७ में ही कर दिया था इसी कारण युद्ध में परास्त करने पर भी वध नहीं किया । वह केवल एक विजयी ही नहीं अपितु प्रजा का हितैषी भी था । चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा निर्मित सुदर्शन शील जिसका निर्माण पुष्यगुप्त, जो चन्द्रगुप्त का एक निकट सम्बन्धी तथा सौराष्ट्र का राज्यपाल था, ने कराया था । शील का १५० ई० में बाँध टूट जाने से प्रजा में हाहाकार मच गया । रुद्रदामन ने बिना कोई कर लगाये या

१. शातकणि तृतीय भी कहते हैं ।

उत्तरी ब्राह्मी ई० पू० तीसरी श० -- कुछ संयुक्त अक्षर

य	र	ल	व	स				
𑀮	𑀭	𑀬	𑀫	𑀪				
ह	खा	मा	रा	बा	नि	लि		
𑀩	𑀨	𑀧	𑀦	𑀥	𑀤	𑀣		
दे	वा	टि	टी	ढी	थी	पी	मी	टे
𑀲	𑀱	𑀰	𑀯	𑀮	𑀭	𑀬	𑀫	𑀪
तु	थै	गो	मू	कू	जू	के	णे	नो
𑀴	𑀳	𑀲	𑀱	𑀰	𑀯	𑀮	𑀭	𑀬
क्र	त्र	प्रा	म्य	हि	स्व	धु	नु	
𑀶	𑀵	𑀴	𑀳	𑀲	𑀱	𑀰	𑀯	
ह्य	स्त	स्म	ग्य	क्य	स्प	ध्य	ओ	
𑀸	𑀷	𑀶	𑀵	𑀴	𑀳	𑀲	𑀱	

फलक संख्या - ४० क

गिरनार शिलालेख के कुछ शब्द एवं रुम्मिनदेई का स्तम्भ लेख

इ यं धम्म लिपी दे वानं प्रिये न प्रिय दसि ना ०.॥ १४५८ ३०॥ ८३॥ ८३५८॥ रा आ लेखापि ता ॥ १४५८॥	गिरनार अभिलेख
दे वान पि ये न प्रिय दसि न लाजिन वी स ति व सा ३०॥ ८३॥ ८३५८॥ ५८॥ ०८५८॥	
मि सि ते न अत न आ गा च म ही यि ते हि द बु धे जा ते ८५८॥ ३५८॥ ५८॥ ४५८॥ ८५८॥ ८५८॥	
स क्य मु नी ति सि ला वि ग ड भी चा का ला पि त ८५८॥ ५८॥ ३५८॥ ८५८॥ ८५८॥ ८५८॥	
सि ला थ भे च उ स पा पि ते हि द भ ग वं जा ते ति ८५८॥ ८५८॥ ८५८॥ ८५८॥ ८५८॥ ८५८॥	
लुं मि नि गा मे उ ब लि के क टे अ ठ भा गि ये च ५८॥ ८५८॥ ८५८॥ ८५८॥ ८५८॥ ८५८॥	
संस्कृतः देवानां प्रियेण (देव प्रियेण) प्रिय दशिना राज्ञा विशतिं वर्षाभिषिक्तेन आत्मना आगत्य महीयतं, इह बुद्धः जातः शाक्यमुनिः इति। शिलावि (कृत) गर्दभी च करिता शिलास्तम्भः च उच्छापितः। इह भगवान् जातः इति लुम्बिनी ग्रामः उद्बलिक कृतः, आष्ट भागिकः च।	

फलक संख्या - ४० ख

दक्षिण एशियाई देशों की लेखन कला]

वेगार लिये अपने कोष से बांध का निर्माण करवाया। वह संस्कृत भाषा व साहित्य का आश्रयदाता भी था। उसके शासन काल में उज्जयनी पुनः विद्या और वैभव से पूर्ण हो गई। रुद्रदामन ने ४० वर्ष (१३० - १७० ई०)^१ राज्य किया।

रुद्रदामन के पश्चात् उसका पुत्र दामोजद श्री महाक्षत्रप हुआ परन्तु राज्य शनैः शनैः क्षीण होने लगा और अंत में नाममात्र को रह गया जिसका चन्द्रगुप्त द्वितीय ने पूर्णतया अंत कर दिया।

गिरनार का शिलालेख अशोक के शिलालेख के पिछले भाग पर इसी रुद्रदामन ने संस्कृत में उत्कीर्ण करवाया था। संस्कृत भाषा में बीस पंक्तियों में उत्कीर्ण यह शिलालेख अभी तक संस्कृत का प्राचीनतम अभिलेख माना गया है। इस अभिलेख^२ के ब्राह्मी वर्ण 'फ० सं० - ४१' पर तथा अभिलेख का कुछ अंश 'फ० सं० - ४१ क' पर दिया गया है। जिसका हिन्दी अनुवाद निम्नलिखित है :—“परम लक्ष्मणों से युक्त रूप और कान्ति की मूर्ति तथा महाक्षत्रप (की उपाधि) स्पर्श प्राप्त करने वाले राजा नरेन्द्र की कन्या स्वयंवरा ने माला प्राप्त की... ..।”

उत्तरी ब्राह्मी (कुषाण) दूसरी श०

डा० बर्गस ने १८८८ में मथुरा के पास कंकाली टीला पर उत्खनन कार्य आरम्भ किया जिसमें अनेकों छोटे बड़े अभिलेख प्राप्त हुये। उनमें से एक कुषाण वंशीय राजा कनिष्क का अभिलेख भी, जो एक मूर्ति के चरणों के पास उत्कीर्ण किया गया था, प्राप्त हुआ। उसकी भाषा प्राकृत व संस्कृत मिश्रित थी। इस अभिलेख^३ का अनुवाद डा० ब्रूलर ने किया। उसी अभिलेख के वर्ण तथा कुछ शब्द 'फ० सं० - ४२' पर दिये गये हैं।

इसमें 'इ' की तीन बिन्दियां परिवर्तित करके तीन पंक्तियां बना दी गई हैं। 'ए' देवनागरी के निकट आता प्रतीत हो रहा है 'प', 'य' 'ल' में अधिक अन्तर दिखाई नहीं देता।

उत्तरी ब्राह्मी (गुप्तलिपि) चौथी श०

गुप्तवंश का संस्थापक श्री गुप्त था परन्तु गुप्त साम्राज्य का संस्थापक चन्द्रगुप्त का विवाह लिच्छवि कुल की राजकुमारी कुमार देवी से सम्पन्न हुआ। इस विवाह को कुछ सोने के सिक्के सूचित करते हैं। इसने ३२० से ३३५ ई० तक शासन किया।

प्रयाग^४ के अशोक स्तम्भ पर उत्कीर्ण लेख से पता लगता है कि चन्द्रगुप्त ने अपने जीवन काल में ही अपने पुत्र समुद्रगुप्त को उत्तराधिकारी चुन लिया था। उसके मरणोपरांत ३३५ में समुद्रगुप्त सिंहासनारूढ़ हुआ। उसने अपना स्थान भारत के सर्वमहान् सम्राटों में बना लिया। वह एक महान् विजेता था। इसने आर्यावर्त (उत्तर भारत) के नौ छोटे बड़े राजाओं को अपने अधीन कर लिया और दक्षिण के लगभग बारह राज्यों को पराजित किया परन्तु अपने साम्राज्य में नहीं मिलाया। इसके शासन काल में साहित्य तथा ब्राह्मण धर्म का उत्थान हुआ। इसने ३३५^५ से ३७५ ई० तक शासन किया।

1. Smith, V : The Early History of India. Page - 200.

2. I. A. Vol. VII, Page - 257.

3. Bühler : E. I. Vol. 1, Page - 371, 391.

4. (एकादावाद)

5. कुछ विद्वान ३२० ई० मानते हैं।

उत्तरी ब्राह्मी (क्षत्रप) दूसरी श०

अ	आ	इ	ए	क	ख	ग	घ	च	छ
𑀅	𑀆	𑀇	𑀈	𑀉	𑀊	𑀋	𑀌	𑀍	𑀎
ज	झ	ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द
𑀏	𑀐	𑀑	𑀒	𑀓	𑀔	𑀕	𑀖	𑀗	𑀘
ध	न	प	फ	ब	भ	म	य	र	
𑀙	𑀚	𑀛	𑀜	𑀝	𑀞	𑀟	𑀠	𑀡	
ल	व	श	ष	स	ह				
𑀢	𑀣	𑀤	𑀥	𑀦	𑀧				
ळ	का	जा	टा	मा	धि	थि	की		
𑀨	𑀩	𑀪	𑀫	𑀬	𑀭	𑀮	𑀯		
पी	कु	नु	रु	मू	रु	कृ	वृ	दे	वै
𑀰	𑀱	𑀲	𑀳	𑀴	𑀵	𑀶	𑀷	𑀸	𑀹
गो	नौ	पौ	क्रि	क्ष	ज्ञ	द्र	जि	ष्	स्मा
𑀺	𑀻	𑀼	𑀽	𑀾	𑀿	𑁀	𑁁	𑁂	𑁃

उत्तरी ब्राह्मी (क्षत्रप) दूसरी श०

५५ ७६१ ५६३ ५५५

परम लक्षण व्यंजनै रुपेत

५५ ५५ ५५ ५५ ५५ ५५ ५५ ५५ ५५ ५५

कान्त मूर्तिना स्वयमधिगत

५५ ५५ ५५ ५५ ५५ ५५ ५५ ५५ ५५ ५५

महाक्षत्रप नाम्ना नरेन्द्रकन्या

५५ ५५ ५५ ५५ ५५ ५५ ५५ ५५ ५५ ५५

स्वयंवरा ने माल्य प्राप्त दाम्ना

उत्तरी ब्राह्मी (गुप्त लिपि) चौथी श०

अ	इ	उ	ए	क	ख	ग	घ	च
𑀅	𑀆	𑀇	𑀈	𑀉	𑀊	𑀋	𑀌	𑀍
ज	ट	ड	ढ	ण	त	थ		
𑀎	𑀏	𑀐	𑀑	𑀒	𑀓	𑀔	𑀕	𑀖
द	ध	न	प	फ	ब	भ		
𑀗	𑀘	𑀙	𑀚	𑀛	𑀜	𑀝	𑀞	𑀟
म	य	र	ल	व	श	ष		
𑀠	𑀡	𑀢	𑀣	𑀤	𑀥	𑀦	𑀧	𑀨
स	ह	ळ	गा	जा	टा	णा	दा	धि
𑀩	𑀪	𑀫	𑀬	𑀭	𑀮	𑀯	𑀰	𑀱
नि	की	वी	गु	नु	पु	रु	यू	भू
𑀲	𑀳	𑀴	𑀵	𑀶	𑀷	𑀸	𑀹	𑀺
वै	गो	टो	णो	कौ	दौ	पौ	क्ष	छ
𑀻	𑀼	𑀽	𑀾	𑀿	𑁀	𑁁	𑁂	𑁃
जा	झ	झा	झु	झ्य	झि			
𑁄	𑁅	𑁆	𑁇	𑁈	𑁉	𑁊	𑁋	𑁌
म	हा	रा	ज	श्री	गुप्त	प्र	पौ	न
𑁍	𑁎	𑁏	𑁐	𑁑	𑁒	𑁓	𑁔	𑁕

स्तम्भ पर सर्वप्रथम अशोक ने एक अभिलेख उत्कीर्ण करवाया। तदनन्तर उसी स्तम्भ पर चन्द्रगुप्त द्वितीय (३७५ - ४१४ ई०) ने अपने पिता समुद्रगुप्त की प्रशंसा में एक अभिलेख उत्कीर्ण करवाया। तत्पश्चात् किसी अन्य राजा ने एक अभिलेख अंकित करवाया। अन्त में १६०५ में जहाँगीर ने कुछ शब्द अंकित करवाये। यह स्तम्भ ३५ फुट ऊँचा है।

१८०१ में सर्वप्रथम स्तम्भ लेख जेम्स होरे द्वारा एशियाटिक रिसर्च में प्रकाशित हुआ। इसका रहस्योद्घाटन सर्व प्रथम कैप्टेन ट्रॉयर ने १८३४ में तथा जेम्स प्रिंसेप ने १८३८ में किया। इसकी वर्णमाला व कुछ शब्द^१ 'फ० सं० - ४३' पर दिये गये हैं। इस लिपि का नाम गुप्त - कालीन होने के कारण गुप्त लिपि पड़ गया।

दक्षिणी ब्राह्मी - ई० पू० दूसरी श०

इस लिपि के दस अभिलेख^२ भट्टीप्रोलु के उपनगर से, जो आन्ध्र प्रदेश के कृष्ण जनपद में स्थित है, प्राप्त हुये। यहाँ बुद्ध भगवान की अस्थियों का एक स्मारक - स्तूप निर्मित है, जिसमें कलशों पर तथा उनके नीचे पत्थरों पर कुछ अभिलेख उत्कीर्ण किये गये हैं। इन अभिलेखों को सर्वप्रथम ए० रिया ने १८८३ के उत्खनन में प्राप्त किये और वे १८९२ में प्रकाशित^३ हुये। वर्णमाला 'फ० सं० - ४४ तथा ४४ क' पर दी गई है और अभिलेख के शब्द संख्या १, २ तथा ९ (१, २ नीचे की गोल शिलाओं पर और ९ कलश पर उत्कीर्ण हैं) से लिये गये हैं। इनका अनुवाद^४ बुल्हर ने किया। इन अभिलेखों का काल ई० पू० की दूसरी श० माना गया है और इनकी भाषा पाली तथा प्राकृत (मिश्रित) है।

अनुवाद : "बुद्ध के शरीर की अस्थियों को सुरक्षित रखने के लिए एक चमकदार पेट्टी कुरु^५ द्वारा तथा कुरु के पिता व माता द्वारा और सिवका द्वारा तैयार करवाई गई। कुरु, जो बनव का पुत्र था, को तथा उसके पिता को अरहदिना (अरह दत्त) को पेट्टी व कलश दिये गये। (अभिलेखों) को अंकित कराने का कार्य राजा कुबिरका^६ द्वारा कराया।"

दक्षिणी ब्राह्मी - दूसरी श०

इस लिपि के शिला-लेख नासिक की गुफाओं से प्राप्त हुये हैं। यह लेख एक ताम्र - दान - पत्र से गुफा नं० ३ की दीवार पर उत्कीर्ण कराये गये थे। यह दान बौद्ध भिक्षुओं को दिया था जिसके द्वारा वे गुफाओं में

1. Fleet's C. I. I. Vol. III - Page 1 - 17.
2. E. I. Vol. II, Page - 328.
3. Vienna Oriental Journal. Vol. VI, Page - 148.
4. "By the father of Kura, the mother of Kura, Kura (himself) and Shiva (has been ordered) the preparation of a Casket and (has been given) a box of crystal in order to deposit some relics of Buddha. By Kura, the son of Banava, associated with his father (has been given) the casket by the committee of the venerable Arahadina (Arhadatta was given) a casket and a box. The work (is) by him, by whom king Kubiraka caused the carving to be done."
5. कोई ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध नहीं है।
6. कुबिरका (ई० पू० ९० - ८०) का काल मान लिया गया, प्रमाणित नहीं है।

दक्षिणी ब्राह्मी -- ई० पू० दूसरी श०

अ	आ	उ	ओ	क	ख	ग	घ	च	छ	ज	
𑀀	𑀁	𑀂	𑀃	𑀄	𑀅	𑀆	𑀇	𑀈	𑀉	𑀊	
ठ	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ	ब	भ	म
𑀋	𑀌	𑀍	𑀎	𑀏	𑀐	𑀑	𑀒	𑀓	𑀔	𑀕	𑀖
य	र	ल		व	ष	स	ह	ळ	का	खा	
𑀗	𑀘	𑀙	𑀚	𑀛	𑀜	𑀝	𑀞	𑀟	𑀠	𑀡	
जा	दा	ता	पा	रा	कि	ठि	नि	पि	बि		
𑀢	𑀣	𑀤	𑀥	𑀦	𑀧	𑀨	𑀩	𑀪	𑀫		
ळि	षी	णी	कु	खु	जु	तु	पु	बु			
𑀬	𑀭	𑀮	𑀯	𑀰	𑀱	𑀲	𑀳	𑀴			
मु	जू	बू	के	खे	जे	को	गो				
𑀵	𑀶	𑀷	𑀸	𑀹	𑀺	𑀻	𑀼				
ढे	णे	दो	नो	पो	बो	रो	लो	सो	गं		
𑀽	𑀾	𑀿	𑁀	𑁁	𑁂	𑁃	𑁄	𑁅	𑁆		

फलक संख्या - ४४

निवास कर सकें। दान कर्ता थे सातवाहन वंशीय राजा वाशिष्ठीपुत्र पुलमायी द्वितीय (१३०-१५५ ई०),^१ जिन्होंने अपने राज्य काल के उन्नीसवें वर्ष (१४९ ई०) में उत्कीर्ण करवाया। इसका सर्वप्रथम रहस्योद्घाटन भण्डारकर द्वारा १८७४ में प्रकाशित^२ हुआ। तदनन्तर ब्रूलर ने इसका अनुवाद भगवानलाल इन्द्रजी द्वारा तैयार की गई छापों से किया और जिसका सम्पादन ई० सेनार्ट^३ ने किया।

इस लेख के वर्ण तथा उनके नीचे उस लेख की एक पंक्ति उदाहरणार्थ दे दी गई है। फ. सं. ४५ उसका लिप्यन्तर निम्नलिखित है :—

“सिद्धं रजो वासिष्ठिपुतस सिरि पुलमायि संवच्छरे एकुन बीसे (१६) गिम्हाणं परवे वितीये २ दिवसे तेरसे (१३) राज रजो गोमती पुतस हिमवत मेरु मदर पवत.....”

अनुवाद : “सफल हो ! (शुभकामना) वाशिष्ठपुत्र राजा श्री पुलमायी (पुलमावी) जो ग्रीष्म के तेरहवें काल दिन, दूसरे पखवाड़े और अपने राज्य के उन्नीसवें वर्ष, महाराजा गौतमी पुत्र श्री सातकर्णी तथा माता, जो हिमवत, मण्डार तथा मेरु पर्वतों के समान शक्तिवान् थे।”

दक्षिणी ब्राह्मी - तीसरी श०

१८८२ में डा० बर्गस को जग्गयापेट (कृष्णा जनपद - आन्ध्र) के एक स्तूप से तीन अभिलेख, जो एक दूसरे से समानता रखने वाले थे प्राप्त हुये। इन अभिलेखों में कुछ स्तम्भों के विषय में उल्लेख था। यह स्तम्भ एक बौद्ध कलाकार द्वारा इक्ष्वाकु^४ राजा वीर पुरुषदत्त के राज्य काल में तीसरी श० में स्थापित किये गये थे। इन्हीं अभिलेखों का अनुवाद ब्रूलर^५ ने किया था। इनके वर्ण सुलेख में उत्कीर्ण किये गये थे।

‘फ० सं० - ४६’ में ऊपर एक वर्णमाला दी गई है तथा नीचे अभिलेखों की एक पंक्ति का प्रतिदर्श दिया गया है जिसका अनुवाद निम्नलिखित है :—

“सफल हो ! (जय हो) मठार जाति की रानी व उसका महान् शक्तिमान् इक्ष्वाकु (इक्ष्वाकु) राजा पुरुषदत्त (पुरुषदत्त), जिसने वर्षा ऋतु के छठवें पखवाड़े के दसवें दिन तथा (राजा) के राज्य काल के बीसवें वर्ष.....”

दक्षिणी ब्राह्मी - चौथी श०

दक्षिण भारत के पूर्वी तट पर ईसा की दूसरी शताब्दी में पल्लव वंश की नींव पड़ी। कांजीवरम् (कांची या दक्षिण काशी) इस राज्य की राजधानी थी। तब इस प्रदेश का नाम तोण्डेय नाडु था। चुट्ट

1. Sircar, D. C. : Select Inscriptions.....(Note) page - 203.

Yazdani : The Early History of Deccan - page 107 के अनुसार पुलमायी का काल ८६ - ११४ ई० है।

Smith : The Early History of India, page - 102 के अनुसार पुलमायी काल २३८ - २७० ई० है।

2. Bhandarkar : Transactions of London Congress, page - 506.

3. Senart. E. : E. I. Vol. VIII, page - 59.

4. इक्ष्वाकु (अभिलेख में इक्ष्वाकु) एक उत्तरी भारत की आर्य जाति थी, जिसने दक्षिण - कोसल के नाम से एक राज्य स्थापित किया था और उसी जाति का पुरुषदत्त प्रथम राजा था। यह जाति बाद में चालुक्य वंश के नाम से प्रसिद्ध हुई।

5. Bühler : I. A. Vol. XI, page - 256.

दक्षिणी ब्राह्मी -- दूसरी श०

अ	क	ज	ट	न	र	मा	सि	सु
आ	ख	झ	ण	प	ल	वा	वी	लु
इ	ग	अ	त	ब	व	गि	कु	मी
उ	घ	ट	थ	म	स	डि	खु	सू
ए	च	ठ	द	म	ह	रि	तु	खे
ओ	छ	ड	ध	य	ळ	षि	नु	ले
रु ६ १ १ १ १ १ १ १ १ सि छं र ओ वा सि ठि पु त स सि रि पुळ मा यि स लं ६ १ १ १ १ १ १ १ १ सं व छ रे ए कु न वी से १०+६ गि म्हा णं प खे बि १ १ = १ १ १ १ १ १ १ १ १ ती ये २ दि व से ते र से १०+३ रा ज र ओ गो त मी १ १ १ १ १ १ १ १ १ पु त स हि म व त मे रु म द र प व त								

दक्षिणी ब्राह्मी -- तीसरी श०

अ	ख	ड	प	ल	सि	यु
ग	ढ	ब	च	रु	पू	
आ	घ	ण	म	स	वि	पू
च	त	म	ह	कु	रु	
इ	ऊ	थ	य	धि	कु	रु
ए	अ	द	र	डि	यु	
क	ध	लि	मे	तू	णे	
ठ	न	व	च	तू	णे	
सि धं र र मा ढ ह पु स इ खा कु ना सि र विर उ र						
स द त स सं व छ र २० व सा प खं दू ट दि व सं २०						
क मा कर थे ण ड तु रे आ वै नि स ना क चं						

पल्लव इस पल्लव वंश का संस्थापक था। स्कन्द नाग द्वारा यह प्रदेश उसको उत्तराधिकार में मिला था। तदोपरांत विरुकुल पल्लव तथा स्कन्द वर्मन राजा हुये। प्रारम्भिक राजा तो आन्ध्र राज्य के सामन्त के रूप में रहे परन्तु तीसरी शताब्दी में आन्ध्र का पतन होने से पल्लव वंश स्वतंत्र हो गया। तत्पश्चात् पूरे दक्षिण पर इनका अधिकार हो गया। इस वंश का पहला स्वतंत्र राजा सिंह वर्मा था जिसका पुत्र शिवस्कन्द वर्मा¹ बड़ा प्रतापी राजा था। इसने चतुर्थ शताब्दी के आरम्भ में कृष्णा नदी तक विजय करके सात वर्ष (१२२ से १२८ तक)² राज्य किया और अश्वमेध आदि कई यज्ञ किये। इनने जैन धर्म अपनाया था परन्तु सातवीं शताब्दी में यहाँ के राजा शैवधर्म अनुयायी हो गये थे जिन्होंने जैनियों पर बड़ अत्याचार किये। इस वंश का अंतिम नरेश अपराजित था।

‘फ० सं० - ४७’ पर दी गई ब्राह्मी की वर्णमाला हरिहड़गल्ली से प्राप्त पल्लव वंशी राजा शिवस्कन्द वर्मा के दान पत्र से तैयार की गई है³। इसमें ‘इ’ तथा ‘ध’ की बिन्दियों के स्थान पर ‘+’ चिह्न का प्रयोग किया गया है।

दक्षिणी ब्राह्मी - पाचवीं श०

वाकाटकवंश⁴ की नींव विन्ध्य शक्ति ने २७५ ई० में डाली। यह सातवाहन नरेशों के अधीन बरार का राज्याधिकारी था। उनके पतन के पश्चात् विन्ध्य शक्ति स्वतंत्र हो गया। इसने २५५ से २७५ ई० तक राज्य किया। उसका पुत्र प्रवर सेन प्रथम सिंहासनारूढ़ हुआ। तदन्तर उसके पुत्र रुद्रसेन प्रथम ने ३६० ई० तक राज्य किया। उसके पश्चात् उसका पुत्र पृथ्वीसेन प्रथम शासक बना। फिर उसका पुत्र रुद्रसेन द्वितीय राजा बना। इसका विवाह चन्द्रगुप्त द्वितीय की पुत्री प्रभावती से सम्पन्न हुआ। रुद्रसेन द्वितीय की मृत्यु ३९० ई० में हो गई तदन्तर उसका पुत्र प्रवरसेन द्वि० ४१० में गद्दी पर बैठा और ४४० तक राज्य किया। उसके मरणोपरांत नरेन्द्रसेन राजा बना और ४६० तक शासन किया। तत्पश्चात् पृथ्वीसेन द्वितीय शासक बना जो इस वंश का अंतिम राजा था। फिर राज सत्ता बसीम शाखा के सर्वसेन राजा को पहुँच गई।

ददिया से तथा छिनचाड़ा जनपद के सियोनी ग्राम से कई ताम्र - दान - पत्र⁵ १८७५ से १८८० तक प्राप्त हुये। यहाँ ददिया के चार - पत्रों का विवरण है राजा प्रवरसेन द्वितीय ने अपने राज्य के तेइसवें वर्ष में उत्कीर्ण करवाये जिनमें भूमि - दान का वर्णन है। यह लिपि मध्य - प्रदेश की चौकोर - शिरो वाली एक अनोखे प्रकार की है। इन दान - पत्रों को हुत्सना ने प्राप्त किया, कलीहार्न ने सम्पादन किया और १८८३ में कूलर ने अनुवाद किया। इनकी भाषा प्राकृत - मिश्रित संस्कृत थी और चारों में २९ पक्तियाँ थीं। इसकी वर्णमाला तथा कुछ शब्द ‘फ० सं० - ४८’ पर दिये गये हैं।

कुटिल लिपि (छठीं से नवीं श० तक)

हर्ष वर्धन का जन्म ५९० ई० में हुआ। हर्ष का बाल्यकाल मालवा नरेश के दो पुत्रों के साथ थानेश्वर में व्यतीत हुआ। ६०५ ई० में उसका बड़ा भाई राज्यवर्धन सिंहासनारूढ़ हुआ। जब मालवा के राजा देवगुप्त

1. ‘वर्मन’ भी लिखा जाता है।

2. E. I. Vol. 1, page - 6.

3. Yazdaui : The Early History of Deccan.

4. Ibid, page - 177.

5. E. I. Vol - III - page 258.

दक्षिणी ब्राह्मी -- पांचवीं श०

अ	आ	इ	उ	ए	क	ख	ग
𑀀	𑀁	𑀂	𑀃	𑀄	𑀅	𑀆	𑀇
घ	च	ज	ट	ड	ण	त	थ
𑀈	𑀉	𑀊	𑀋	𑀌	𑀍	𑀎	𑀏
द	ध	न	प	फ	ब	भ	म
𑀐	𑀑	𑀒	𑀓	𑀔	𑀕	𑀖	𑀗
य	र	ल	व	श	ष	स	ह
𑀘	𑀙	𑀚	𑀛	𑀜	𑀝	𑀞	𑀟
𑀠	𑀡	𑀢	𑀣	𑀤	𑀥	𑀦	𑀧
𑀨	𑀩	𑀪	𑀫	𑀬	𑀭	𑀮	𑀯
𑀰	𑀱	𑀲	𑀳	𑀴	𑀵	𑀶	𑀷
𑀸	𑀹	𑀺	𑀻	𑀼	𑀽	𑀾	𑀿
𑁀	𑁁	𑁂	𑁃	𑁄	𑁅	𑁆	𑁇
𑁈	𑁉	𑁊	𑁋	𑁌	𑁍	𑁎	𑁏
𑁐	𑁑	𑁒	𑁓	𑁔	𑁕	𑁖	𑁗
𑁘	𑁙	𑁚	𑁛	𑁜	𑁝	𑁞	𑁟
𑁠	𑁡	𑁢	𑁣	𑁤	𑁥	𑁦	𑁧
𑁨	𑁩	𑁪	𑁫	𑁬	𑁭	𑁮	𑁯
𑁰	𑁱	𑁲	𑁳	𑁴	𑁵	𑁶	𑁷
𑁸	𑁹	𑁺	𑁻	𑁼	𑁽	𑁾	𑁿
𑂀	𑂁	𑂂	𑂃	𑂄	𑂅	𑂆	𑂇
𑂈	𑂉	𑂊	𑂋	𑂌	𑂍	𑂎	𑂏
𑂐	𑂑	𑂒	𑂓	𑂔	𑂕	𑂖	𑂗
𑂘	𑂙	𑂚	𑂛	𑂜	𑂝	𑂞	𑂟
𑂠	𑂡	𑂢	𑂣	𑂤	𑂥	𑂦	𑂧
𑂨	𑂩	𑂪	𑂫	𑂬	𑂭	𑂮	𑂯
𑂰	𑂱	𑂲	𑂳	𑂴	𑂵	𑂶	𑂷
𑂸	𑂹	𑂺	𑂻	𑂼	𑂽	𑂾	𑂿
𑃀	𑃁	𑃂	𑃃	𑃄	𑃅	𑃆	𑃇
𑃈	𑃉	𑃊	𑃋	𑃌	𑃍	𑃎	𑃏
𑃐	𑃑	𑃒	𑃓	𑃔	𑃕	𑃖	𑃗
𑃘	𑃙	𑃚	𑃛	𑃜	𑃝	𑃞	𑃟
𑃠	𑃡	𑃢	𑃣	𑃤	𑃥	𑃦	𑃧
𑃨	𑃩	𑃪	𑃫	𑃬	𑃭	𑃮	𑃯
𑃰	𑃱	𑃲	𑃳	𑃴	𑃵	𑃶	𑃷
𑃸	𑃹	𑃺	𑃻	𑃼	𑃽	𑃾	𑃿
𑄀	𑄁	𑄂	𑄃	𑄄	𑄅	𑄆	𑄇
𑄈	𑄉	𑄊	𑄋	𑄌	𑄍	𑄎	𑄏
𑄐	𑄑	𑄒	𑄓	𑄔	𑄕	𑄖	𑄗
𑄘	𑄙	𑄚	𑄛	𑄜	𑄝	𑄞	𑄟
𑄠	𑄡	𑄢	𑄣	𑄤	𑄥	𑄦	𑄧
𑄨	𑄩	𑄪	𑄫	𑄬	𑄭	𑄮	𑄯
𑄰	𑄱	𑄲	𑄳	𑄴	𑄵	𑄶	𑄷
𑄸	𑄹	𑄺	𑄻	𑄼	𑄽	𑄾	𑄿
𑅀	𑅁	𑅂	𑅃	𑅄	𑅅	𑅆	𑅇
𑅈	𑅉	𑅊	𑅋	𑅌	𑅍	𑅎	𑅏
𑅐	𑅑	𑅒	𑅓	𑅔	𑅕	𑅖	𑅗
𑅘	𑅙	𑅚	𑅛	𑅜	𑅝	𑅞	𑅟
𑅠	𑅡	𑅢	𑅣	𑅤	𑅥	𑅦	𑅧
𑅨	𑅩	𑅪	𑅫	𑅬	𑅭	𑅮	𑅯
𑅰	𑅱	𑅲	𑅳	𑅴	𑅵	𑅶	𑅷
𑅸	𑅹	𑅺	𑅻	𑅼	𑅽	𑅾	𑅿
𑆀	𑆁	𑆂	𑆃	𑆄	𑆅	𑆆	𑆇
𑆈	𑆉	𑆊	𑆋	𑆌	𑆍	𑆎	𑆏
𑆐	𑆑	𑆒	𑆓	𑆔	𑆕	𑆖	𑆗
𑆘	𑆙	𑆚	𑆛	𑆜	𑆝	𑆞	𑆟
𑆠	𑆡	𑆢	𑆣	𑆤	𑆥	𑆦	𑆧
𑆨	𑆩	𑆪	𑆫	𑆬	𑆭	𑆮	𑆯
𑆰	𑆱	𑆲	𑆳	𑆴	𑆵	𑆶	𑆷
𑆸	𑆹	𑆺	𑆻	𑆼	𑆽	𑆾	𑆿
𑇀	𑇁	𑇂	𑇃	𑇄	𑇅	𑇆	𑇇
𑇈	𑇉	𑇊	𑇋	𑇌	𑇍	𑇎	𑇏
𑇐	𑇑	𑇒	𑇓	𑇔	𑇕	𑇖	𑇗
𑇘	𑇙	𑇚	𑇛	𑇜	𑇝	𑇞	𑇟
𑇠	𑇡	𑇢	𑇣	𑇤	𑇥	𑇦	𑇧
𑇨	𑇩	𑇪	𑇫	𑇬	𑇭	𑇮	𑇯
𑇰	𑇱	𑇲	𑇳	𑇴	𑇵	𑇶	𑇷
𑇸	𑇹	𑇺	𑇻	𑇼	𑇽	𑇾	𑇿
𑈀	𑈁	𑈂	𑈃	𑈄	𑈅	𑈆	𑈇
𑈈	𑈉	𑈊	𑈋	𑈌	𑈍	𑈎	𑈏
𑈐	𑈑	𑈒	𑈓	𑈔	𑈕	𑈖	𑈗
𑈘	𑈙	𑈚	𑈛	𑈜	𑈝	𑈞	𑈟
𑈠	𑈡	𑈢	𑈣	𑈤	𑈥	𑈦	𑈧
𑈨	𑈩	𑈪	𑈫	𑈬	𑈭	𑈮	𑈯
𑈰	𑈱	𑈲	𑈳	𑈴	𑈵	𑈶	𑈷
𑈸	𑈹	𑈺	𑈻	𑈼	𑈽	𑈾	𑈿
𑈿	𑉀	𑉁	𑉂	𑉃	𑉄	𑉅	𑉆
𑉇	𑉈	𑉉	𑉊	𑉋	𑉌	𑉍	𑉎
𑉏	𑉐	𑉑	𑉒	𑉓	𑉔	𑉕	𑉖
𑉗	𑉘	𑉙	𑉚	𑉛	𑉜	𑉝	𑉞
𑉟	𑉠	𑉡	𑉢	𑉣	𑉤	𑉥	𑉦
𑉧	𑉨	𑉩	𑉪	𑉫	𑉬	𑉭	𑉮
𑉯	𑉰	𑉱	𑉲	𑉳	𑉴	𑉵	𑉶
𑉷	𑉸	𑉹	𑉺	𑉻	𑉼	𑉽	𑉾
𑉿	𑊀	𑊁	𑊂	𑊃	𑊄	𑊅	𑊆
𑊇	𑊈	𑊉	𑊊	𑊋	𑊌	𑊍	𑊎
𑊏	𑊐	𑊑	𑊒	𑊓	𑊔	𑊕	𑊖
𑊗	𑊘	𑊙	𑊚	𑊛	𑊜	𑊝	𑊞
𑊟	𑊠	𑊡	𑊢	𑊣	𑊤	𑊥	𑊦
𑊧	𑊨	𑊩	𑊪	𑊫	𑊬	𑊭	𑊮
𑊯	𑊰	𑊱	𑊲	𑊳	𑊴	𑊵	𑊶
𑊷	𑊸	𑊹	𑊺	𑊻	𑊼	𑊽	𑊾
𑊿	𑋀	𑋁	𑋂	𑋃	𑋄	𑋅	𑋆
𑋇	𑋈	𑋉	𑋊	𑋋	𑋌	𑋍	𑋎
𑋏	𑋐	𑋑	𑋒	𑋓	𑋔	𑋕	𑋖
𑋗	𑋘	𑋙	𑋚	𑋛	𑋜	𑋝	𑋞
𑋟	𑋠	𑋡	𑋢	𑋣	𑋤	𑋥	𑋦
𑋧	𑋨	𑋩	𑋪	𑋫	𑋬	𑋭	𑋮
𑋯	𑋰	𑋱	𑋲	𑋳	𑋴	𑋵	𑋶
𑋷	𑋸	𑋹	𑋺	𑋻	𑋼	𑋽	𑋾
𑋿	𑌀	𑌁	𑌂	𑌃	𑌄	𑌅	𑌆
𑌇	𑌈	𑌉	𑌊	𑌋	𑌌	𑌍	𑌎
𑌏	𑌐	𑌑	𑌒	𑌓	𑌔	𑌕	𑌖
𑌗	𑌘	𑌙	𑌚	𑌛	𑌜	𑌝	𑌞
𑌟	𑌠	𑌡	𑌢	𑌣	𑌤	𑌥	𑌦
𑌧	𑌨	𑌩	𑌪	𑌫	𑌬	𑌭	𑌮
𑌯	𑌰	𑌱	𑌲	𑌳	𑌴	𑌵	𑌶
𑌷	𑌸	𑌹	𑌺	𑌻	𑌼	𑌽	𑌾
𑌿	𑍀	𑍁	𑍂	𑍃	𑍄	𑍅	𑍆
𑍇	𑍈	𑍉	𑍊	𑍋	𑍌	𑍍	𑍎
𑍏	𑍐	𑍑	𑍒	𑍓	𑍔	𑍕	𑍖
𑍗	𑍘	𑍙	𑍚	𑍛	𑍜	𑍝	𑍞
𑍟	𑍠	𑍡	𑍢	𑍣	𑍤	𑍥	𑍦
𑍧	𑍨	𑍩	𑍪	𑍫	𑍬	𑍭	𑍮
𑍯	𑍰	𑍱	𑍲	𑍳	𑍴	𑍵	𑍶
𑍷	𑍸	𑍹	𑍺	𑍻	𑍼	𑍽	𑍾
𑍿	𑎀	𑎁	𑎂	𑎃	𑎄	𑎅	𑎆
𑎇	𑎈	𑎉	𑎊	𑎋	𑎌	𑎍	𑎎
𑎏	𑎐	𑎑	𑎒	𑎓	𑎔	𑎕	𑎖
𑎗	𑎘	𑎙	𑎚	𑎛	𑎜	𑎝	𑎞
𑎟	𑎠	𑎡	𑎢	𑎣	𑎤	𑎥	𑎦
𑎧	𑎨	𑎩	𑎪	𑎫	𑎬	𑎭	𑎮
𑎯	𑎰	𑎱	𑎲	𑎳	𑎴	𑎵	𑎶
𑎷	𑎸	𑎹	𑎺	𑎻	𑎼	𑎽	𑎾
𑎿	𑏀	𑏁	𑏂	𑏃	𑏄	𑏅	𑏆
𑏇	𑏈	𑏉	𑏊	𑏋	𑏌	𑏍	𑏎
𑏏	𑏐	𑏑	𑏒	𑏓	𑏔	𑏕	𑏖
𑏗	𑏘	𑏙	𑏚	𑏛	𑏜	𑏝	𑏞
𑏟	𑏠	𑏡	𑏢	𑏣	𑏤	𑏥	𑏦
𑏧	𑏨	𑏩	𑏪	𑏫	𑏬	𑏭	𑏮
𑏯	𑏰	𑏱	𑏲	𑏳	𑏴	𑏵	𑏶
𑏷	𑏸	𑏹	𑏺	𑏻	𑏼	𑏽	𑏾
𑏿	𑏿	𑏿	𑏿	𑏿	𑏿	𑏿	𑏿

ने मौखरी राज्य पर आक्रमण कर ग्रह वर्मन की हत्या कर दी जो उसका बहनोई भी था तब देवगुप्त को दण्ड देने हेतु वह एक सेना लेकर चल पड़ा। देवगुप्त को परास्त कर दिया परन्तु शशांक ने उसका वध कर दिया। तदोपरान्त हर्षवर्धन गद्दी पर बैठा।

उसने शशांक को दण्ड देने के लिये एक विशाल सेना के साथ कन्नौज की ओर प्रस्थान किया। शशांक भाग गया। अपने बहनोई के कोई सन्तान न होने के कारण वह कन्नौज का भी नरेश बना दिया गया। अब हर्ष की शक्ति इतनी बढ़ गई कि वह भारत को फिर एक सूत्र में बांध सकता था।

इसी उद्देश्य से उसने बलभी के राजा ध्रुवसेन द्वितीय को अपने अधीन कर लिया। दक्षिण में वह नर्मदा के आगे न बढ़ सका फिर उत्तरी भारत पर उसका अधिकार हो गया। अब वह एक विशाल साम्राज्य का सम्राट था। वह एक महान् विजेता ही नहीं अगितु कुशल शासक भी था। उसके अन्दर धार्मिक सहिष्णुता भी थी और शैव, वैष्णव व बौद्ध आदि धर्मों को राजा का आश्रय तथा संरक्षण प्राप्त था।

ह्वान सांग चीनी यात्री इसी हर्ष के काल में भारत आया था। इसी चीनी यात्री के विवरण द्वारा इस समय के इतिहास पर पर्याप्त प्रकाश पड़ा। लगभग ४२ वर्ष राज्य करने के पश्चात् हर्ष का स्वर्गवास हो गया। कोई उत्तराधिकारी न होने के कारण राज्य क्षिप्त भिन्न हो गया और नये राज्यों का निर्माण होने लगा।

कुटिल लिपि का उद्भव गुप्त लिपि द्वारा हुआ। यह गुप्त लिपि का परिवर्तित रूप है।

उत्तर प्रदेश के पीलीभीत जिले के देवल गाँव में ९९२ में एक ताम्र-पत्र प्राप्त हुआ जिस पर इस लिपि का नाम कुटिलाक्षरणि अंकित था। मेवाड़ से राजा अपराजित के समय के अभिलेखों में जो सातवीं शताब्दी के मध्य में पाये गये, विकटाक्षरणि अंकित था। इस लिपि के अक्षर कुटिल व विकट थे इसलिये कुटिल लिपि नाम पड़ा। हर्षवर्धन काल के ताम्र पत्र^१ से उपलब्ध वर्णमाला तथा कुछ शब्द दिये गये हैं (फ० सं० - ४९)।

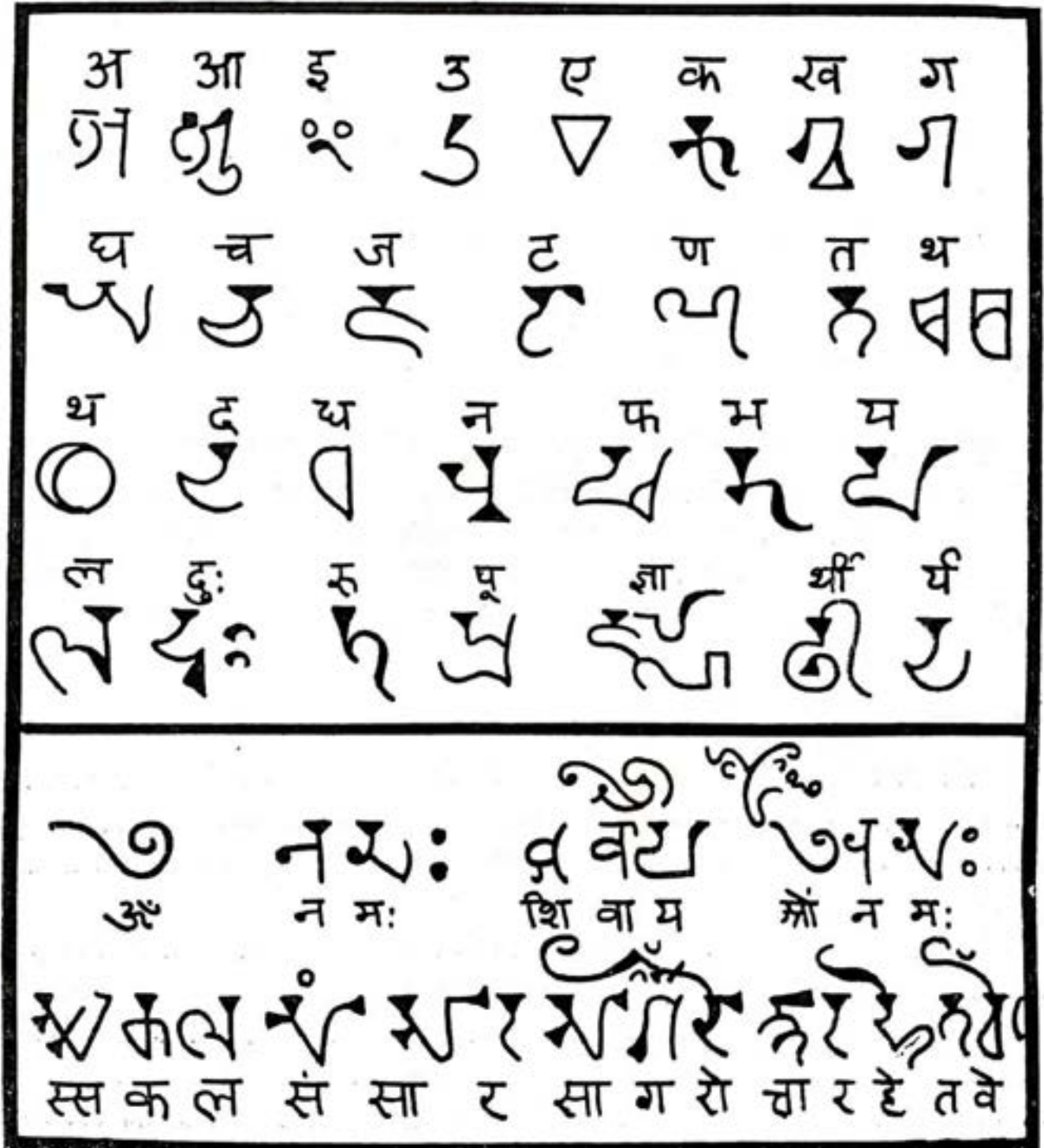
तमिळ लिपि

तमिळलिपि के विषय में तमिळनाडु के विद्वानों का मत है कि यह लिपि द्रविड़ भाषा की लिपि थी जो ब्राह्मी के पूर्व भी दक्षिण में प्रचलित थी। परन्तु जब ब्राह्मी लिपि का प्रभाव बढ़ा तब इसमें कुछ परिवर्तन आ गये जैसा कि संसार की अन्य लिपियों में दूसरी लिपियों के सम्पर्क में आने से बहुधा आ जाया करते हैं।

तमिळ लिपि में १२ स्वर तथा १८ व्यंजन हैं। इस लिपि में चार चिह्न ऐसे हैं जो दो-दो चिह्नों का कार्य करते हैं। उदाहरणार्थ 'क' का चिह्न 'ग' का भी कार्य करता है। इसी प्रकार 'ट' का 'ड' के लिये, 'त' का 'द' के लिये तथा 'प' का 'ब' के लिये भी प्रयोग किये जाते हैं। इसमें 'ए' और 'ओ' के तीन उच्चारण हैं वरन् हिन्दी में केवल दो हैं। संस्कृत के शब्दों का प्रयोग करने के लिये इस लिपि में 'ज, घ, ङ, ह और क्ष' जोड़ दिये गये हैं जो बहुधा प्रयोग में नहीं आते। इस भाषा के कुछ चिह्नों के उच्चारण के लिये देवनागरी में चिह्न उपलब्ध नहीं हैं।

इस लिपि में आधे अक्षरों का प्रयोग नहीं होता। जैसे देवनागरी 'अक्का' शब्द इस प्रकार लिखेंगे परन्तु तमिळ में 'अक्का' लिखेंगे। इसमें 'ख, घ, छ, झ, ठ, ड, थ, ध, फ तथा भ' महाप्राण नहीं होते।

कुटिल लिपि -- छठी से नवीं श० तक



तमिळ लिपि सातवीं श०

पल्लव वंश का तीसरा काल ५९० ई० में — सिंह विष्णु द्वारा स्थापित होकर आरम्भ हुआ। इसका पुत्र महेन्द्र वर्मन सातवीं शताब्दी में राजा हुआ। महेन्द्र पहले जैन धर्म का अनुयायी था परन्तु बाद में शैव हो गया। जैनियों को राज्य से निष्कासित करा दिया। उसके पश्चात् उसका पुत्र नरसिंह वर्मन प्रथम राजा हुआ। चालुक्य नरेश पुलकेशिन द्वितीय ने कांची पर आक्रमण किया। पुलकेशिन युद्ध में मारा गया। इसके पश्चात् पल्लवों की सत्ता सम्पूर्ण दक्षिण भारत में स्थापित हो गई। नरसिंह वर्मन ने बहुत से मन्दिरों का निर्माण करवाया। उसने महामल्लपुरम नगर बसाया और उसको मन्दिरों से विभूषित किया। इसकी मृत्यु के पश्चात् महेन्द्र वर्मन द्वितीय, नरसिंह वर्मन द्वितीय, नन्दिवर्मन तथा उसका पुत्र दन्तिवर्मन आदि कई राजा हुये। इस वंश का अंतिम राजा अपराजित वर्मन था जिसने ८७६ से ९१५ तक राज्य किया। चोल राजाओं द्वारा इस राज्य का अंत हो गया।

तमिळ लिपि की वर्ण माला^१ दन्तिवर्मन के दानपत्रों से तैयार की गई है जो 'फ० सं० - १५०' पर दी गई है।

तमिळ लिपि का विकास

'फ० सं० - ५१' पर तमिळ लिपि का विकास दिया गया है। दक्षिण भारत की सभी लिपियों का विकास भट्टीप्रोलु से (ईसा पूर्व की दूसरी श०) प्राप्त दक्षिण - ब्राह्मी^२ से हुआ है। लगभग सातवीं शताब्दी से इस लिपि की झलक दिखाई पड़ने लगी तदनन्तर शनैः शनैः इसका विकास निम्नलिखित शताब्दियों में, जो नीचे दिये गये खानों में दिया गया है, होता रहा :—

१. देवनागरी : के अक्षर ध्वनि के संकेतानुसार दिये गये हैं।
२. सातवीं श० के वर्ण : पल्लव वंशीय राजा परमेश्वर वर्मन प्रथम (६७० - ६९५ ई०) - कुरम^३ के अभिलेखों से लिये गये हैं।
३. आठवीं श० के वर्ण : पल्लव वंशीय राजा नन्दी वर्मन (७२७ - ७८२ ई०) के अभिलेखों^४ से लिये गये हैं।
४. दसवीं श० के वर्ण : राष्ट्रकूट वंशीय राजा कन्नरदेव नामक कृष्ण राजा तृतीय (९३९ - ९६७ ई०) के त्रिकोवलूर के अभिलेख^५ से लिये गये हैं।
५. ग्यारहवीं श० वर्ण : चोल वंशीय राजा परकेशरी वर्मन (१०१२ - १०४१ ई०) के तिरुमलाइ - शिला - लेखों^६ से लिये गये हैं।
६. तेरहवीं श० के वर्ण : तैलंग राजा मनोहरी की जेल - यात्रा से सम्बन्धित एक शिला - लेख^७ से

1. E. I. Vol. I. - page 57.

2. फ० सं० - ४४, ४४ क।

3. South Indian Inscriptions - Vol. III, Page - 95.

4. South Indian Inscriptions - Vol. Page - 172.

5. E. I. Vol. VII. Page - 144.

6. E. I. Vol. IX, Page - 232.

7. E. I. Vol. VII, Page - 194.

तमिळ लिपि - सातवीं श०

अ	आ	ई	उ		
५	५	३	१		
क	ङ	च	ट	ण	
१	२	७	८	७	
त	न	प	म	य	
१	२	५	७	५	
य	र	ल	ळ	ळ	र
५	१	७	५	१	५
ण	भ	का	ना	मा	ला
७	७	१	१	७	५

तमिळ लिपि का विकास

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	२	३	४	५	६	७	८	९
अ	म	प्र	य	र	ल	व	श	स	अ	उ	उ		उ	उ	उ	उ	उ
आ	मु	पु	यु			अ	अ	अ	ट	ट	ट	ट	ट	ट	ट	ट	ट
इ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	ण	ण	ण	ण	ण	ण	ण	ण	ण
ई				ः				ः	त	त	त	त	त	त	त	त	त
उ	र	र	र	र		२	२	२	न	न	न	न	न	न	न	न	न
ऊ		र		र				२	प	प	प	प	प	प	प	प	प
ए		७	७	७	७	७	७	७	म	म	म	म	म	म	म	म	म
ऐ								७	य	य	य	य	य	य	य	य	य
ए								२	र	र	र	र	र	र	र	र	र
ऑ								७	ल	ल	ल	ल	ल	ल	ल	ल	ल
ओ	२			२		२	३	७	व	व	व	व	व	व	व	व	व
औ								७	ळ	ळ	ळ	ळ	ळ	ळ	ळ	ळ	ळ
क	क	क	क	क	क	क	क	क	७	७	७	७	७	७	७	७	७
ङ	ङ	ङ	ङ	ङ		ङ	ङ	ङ	७	७		७	७		७	७	
च	च	च	च	च	च	च	च	च	७								७

फलक संख्या - ५१

लिये गये हैं, जो मइनपगान (ब्रह्मा देश) से १९०२ में ता - सीन - को के द्वारा प्राप्त हुआ और जिसमें पगान के राजा अनावृत के आक्रमण से राजा मनोहरी का १०५७ में परास्त होना उत्कीर्ण है ।

७. चौदहवीं श० के वर्ण : विजयनगर के प्रथम राजा वीरुपाक्ष (१३७९ - १४०६ ई०) के तीन ताम्र - दान - पत्रों^१ से, जो शोरडक्कूर रेलवे स्टेशन (तंजवूर जनपद) से प्राप्त हुये और जिनकी तिथि २० मार्च १३८७ है, लिये गये हैं ।

८. पन्द्रहवीं श० के वर्ण : एक महासामन्त महामण्डेश्वर वालककायम के दान - पत्र^२ से, जो श्रीरंगम द्वीप के जम्बूकेश्वर उपनगर से प्राप्त हुआ और जिसकी तिथि ३ फरवरी १४८२ है, लिये गये हैं ।

९. आधुनिक तमिळ के वर्ण : दिये गये हैं । आरम्भ काल में स्वरों की संख्या बहुत कम थी ।

वट्टेलुत्तु लिपि - सातवीं श०

दक्षिणी - ब्राह्मी से तमिळ की दो शाखाओं का उद्भव हुआ । चेर - पाण्ड्य - लिपि जिसको वट्टेलुत्तु के नाम से सम्बोधित किया जाता था तथा दूसरी पल्लव - चोल - लिपि जिसको कोलेलुत्तु के नाम से पुकारा जाता था । इस प्रकार की पृथक्ता लगभग सातवीं श० के आरम्भ में प्रकट हुई ।

जब शिलालेखों व ताम्रपत्रों में अक्षर उत्कीर्ण किये जाते थे तब अक्षरों को गोलाकार बनाना कठिन होता था । इस कारण कोलेलुत्तु का प्रयोग अधिक होने लगा । वट्टेलुत्तु का प्रयोग हस्त - लिखित ग्रन्थों के लिये होने लगा । यह ग्रन्थ ताड़पत्रों पर लिखे जाते थे जिसमें सीधी पंक्तियों में लिखने से ताड़पत्रों के फटने का भय रहता था । इस कारण लेखक अक्षरों को गोलाकार बनाकर, बिना लेखनी को बार बार उठाये लिखा करते थे । इससे अक्षरों की सुन्दरता बढ़ती थी तथा लेखक की प्रशंसा होती थी । जब जन साधारण को इस लिपि के पढ़ने में कठिनाई प्रतीत हुई तो चोल महाराजा राजराज महान् ने वट्टेलुत्तु को समाप्त कर कोलेलुत्तु को अधिक प्रयोगात्मक बनाया । वट्टेलुत्तु का प्रयोग भी हस्तलिखित पुस्तकों में १८वीं शताब्दी के आरम्भ तक चलता रहा । तमिळ, ग्रन्थ, मलयालम व तुळु (जिसका प्रयोग कुर्ग की रियासत में होता है) आदि लिपियाँ सब तमिळ वंश की ही हैं ।

वट्टेलुत्तु लिपि सातवीं से चौदहवीं श० तक के अभिलेखों में सुदूर दक्षिणी भागों में प्रचलित थी । 'फ० सं० - ५२' पर वट्टेलुत्तु लिपि के वर्ण दिये गये हैं जो दो ताम्र - पत्रों से लिये गये हैं । इन ताम्र - पत्रों पर उस दान का वर्णन, कोविन के राजा भास्कर रविवर्मन (१०४७ - ११०६ ई०) ने उत्कीर्ण करवाया, जो उसने जोजैक रब्बन को प्रदान किया था । यह दान ताम्र - पत्र^३ गुण्डर्ट को मुइरुकोडु (आधुनिक कोडन्नल्लूर) से १८८४ में यहूदियों द्वारा प्राप्त हुये ।

ग्रन्थ लिपि - सातवीं श०

पल्लव वंश का संस्थापक सिंह विष्णु था । उसका उत्तराधिकारी महेन्द्र वर्मन हुआ जिसने ६०० से ६३० ई० तक कांची की राजधानी से राज्य किया । वह जैन धर्म का अनुयायी था परन्तु शैव-संत अप्पर के

1. E. I. Vol. VIII, Page - 302.

2. E. I. Vol. III, Page - 72.

3. E. I. Vol. III, Page - 66.

वट्टेलुत्तु लिपि -- ग्यारहवीं श०

अ	आ	इ	उ	ए	क
𑀀	𑀁	𑀂	𑀃	𑀄	𑀅
उः	च	अ	ट	ण	त
𑀆	𑀇	𑀈	𑀉	𑀊	𑀋
न	प	म	य	र	ल
𑀌	𑀍	𑀎	𑀏	𑀐	𑀑
व	ळ	ळ	ण	टा	मा
𑀒	𑀓	𑀔	𑀕	𑀖	𑀗
ति	थ				
𑀘	𑀙				

फलक संख्या - ५२

(जो स्वयं पहले जैन था) प्रभाव में आकर शैव हो गया । उसके उपरान्त नरसिंह वर्मन राजसिंहासन पर बैठा और ६६८ ई० तक शासन किया । बड़ा प्रतापी व साहित्य प्रेमी नरेश था । उसने केरल, पाण्ड्य चालुक्य व सिंहल नरेशों को परास्त किया परन्तु चालुक्य विक्रमादित्य ने इसको परास्त किया । उसी के शासनकाल में चीनी यात्री ह्युएनत्सांग भारत आया था । तदन्तर महेन्द्र वर्मन द्वितीय ने ६९० तक, नरसिंह वर्मन द्वितीय ने ६९० से ७१५ ई० तक शासन किया । इसके पश्चात् परमेश्वर वर्मन प्रथम व द्वितीय ने ७५० ई० तक राज्य किया । ७५० में नन्दि वर्मन पल्लव मल्ल ने राजसिंहासन हस्तगत किया और ७९५ ई० तक शासन किया । इसी के शासनकाल में गुरु शंकराचार्य ने कांची प्रदेश के बौद्धों को ७८८ में बाध्य कर दिया कि वे श्री लंका को प्रस्थान करें । इसके पश्चात् कई राजा शासक बने ।

ग्रन्थलिपि का आविष्कार लगभग छठीं श० के अन्त में ब्राह्मणों द्वारा किया गया जो संस्कृत में ग्रन्थों को लिखना चाहते थे, क्योंकि तमिळ लिपि में संस्कृत भाषा के उच्चारणार्थ वर्ण नहीं थे । इसी कारण इस लिपि का नाम ग्रन्थ पड़ा ।

'फ० सं० ५३' की वर्णमाला^१ राजा परमेश्वर वर्मन (६७० - ६९५ ई०) के ताम्र - दान - पत्रों से तैयार की गई है ।

ग्रन्थ लिपि - पाण्ड्य तेरहवीं श०

पाण्ड्य वंश का राज्य ईसा की दूसरी शताब्दी में स्थापित हुआ । इसमें आधुनिक मदुरा, तिन्नेवेल्ली तथा ट्रावनकोर के जिले सम्मिलित थे । इसकी राजधानी मदुरा थी । इस वंश का प्रथम नरेश नेडुम चेलियान था । ८६२ में पल्लव राजा अपराजित ने इस वंश को पराजित किया । इस वंश के १७ नरेशों ने ११०० से १५६७ ई० तक शासन किया । इस वंश का सबसे प्रतापी नरेश जटावर्मन सुन्दर पाण्ड्य था । उसने १२५१ से १२७१ तक शासन किया । १३१० में पाण्ड्य राज्य अलाउद्दीन खिलजी के सेना नायक के आक्रमण द्वारा पराजित हुआ । अब इस राज्य में छोटे छोटे सामन्त रह गये । १३७८ में यह राज्य विजय नगर के राज्य में मिला लिया गया ।

'फ० सं० - ५४' पर श्रीरंग के अभिलेखों^२ से तैयार की गई वर्ण माला तथा कुछ शब्द, जो सुन्दर पाण्ड्य ने अंकित करवाये थे, दिये गये हैं । भाषा संस्कृत है ।

ग्रन्थ लिपि का विकास

ग्रन्थ लिपि का विकास दक्षिणी ब्राह्मी से संस्कृत के ग्रन्थ लिखने के कारण हुआ । निम्नलिखित ग्रन्थों में इसके विकास का विवरण दिया गया है (फ० सं० - ५५) :—

१. देवनागरी के वर्ण : दिये गये हैं ।

२. सातवीं श० के वर्ण : पल्लव वंशीय राजा परमेश्वर वर्मन प्रथम (६७० - ६९५ ई०) के सात, ताम्र - दान - पत्रों^३ से, जो कुरुम ग्राम से प्राप्त हुए, लिये गये हैं ।

1. Hultzsch : S.I.I. Vol. II, Part - III, Plate - 11.

2. E. I. Vol. III, Page - 14.

3. S. I. I. (Hultzsch). Vol. II, Page - 201,

ग्रन्थ लिपि -- सातवीं श०

अ	आ	इ	ई	उ	ए	क	ख
ॐ	ॠ	ॡ	ॢ	ॣ	।	॥	०
ग	घ	च	ज	ट	ड	ण	त
१	२	३	४	५	६	७	८
थ	द	ध	न	प	फ	ब	
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
भ	म	य	र	ल	व	श	ष
१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
स	ह	ळ	मा	ती	कु	णु	भृ
२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२

३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४०

नर सिं ह व र्म्म एः

ग्रन्थ लिपि -- तेरहवीं श०

अ	आ	इ	उ	ऊ	लृ	ओ	क	ख
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ग	घ	ङ	च	ज	ट	ठ	ड	ण
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
त	थ	द	ध	न	प	फ	ब	भ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
म	य	र	ल	व	श	ष	स	
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ह	ळ	रा	कि	सी	मु	मू	चै	क्ष
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
हरि	ओम्	स्व	स्ति	श्रीः				

ग्रन्थ लिपि का विकास

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	२	३	४	५	६	७	८	९
अ	𑀀	𑀁	𑀂	𑀃	𑀄	𑀅	𑀆	𑀇	𑀈	𑀉	𑀊	𑀋	𑀌	𑀍	𑀎	𑀏	𑀐
आ	𑀑	𑀒	𑀓	𑀔	𑀕	𑀖	𑀗	𑀘	𑀙	𑀚	𑀛	𑀜	𑀝	𑀞	𑀟	𑀠	𑀡
इ	𑀢	𑀣	𑀤	𑀥	𑀦	𑀧	𑀨	𑀩	𑀪	𑀫	𑀬	𑀭	𑀮	𑀯	𑀰	𑀱	𑀲
ई	𑀳				𑀴				𑀵	𑀶	𑀷	𑀸	𑀹	𑀺	𑀻	𑀼	𑀽
उ	𑀾	𑀿	𑁀	𑁁	𑁂		𑁃	𑁄	𑁅	𑁆	𑁇	𑁈	𑁉	𑁊	𑁋	𑁌	𑁍
ए	𑁎	𑁏	𑁐	𑁑	𑁒	𑁓		𑁔	𑁕	𑁖	𑁗	𑁘	𑁙	𑁚	𑁛	𑁜	𑁝
औ					𑁞		𑁟		𑁠	𑁡	𑁢	𑁣	𑁤	𑁥	𑁦	𑁧	𑁨
क	𑁩	𑁪	𑁫	𑁬	𑁭	𑁮	𑁯	𑁰	𑁱	𑁲	𑁳			𑁴		𑁵	𑁶
ख	𑁷	𑁸	𑁹	𑁺	𑁻	𑁼	𑁽	𑁾	𑁿	𑂀	𑂁	𑂂	𑂃	𑂄	𑂅	𑂆	𑂇
ग	𑂈	𑂉	𑂊	𑂋	𑂌	𑂍	𑂎	𑂏	𑂐	𑂑	𑂒	𑂓	𑂔	𑂕	𑂖	𑂗	𑂘
घ	𑂙	𑂚	𑂛	𑂜	𑂝	𑂞	𑂟	𑂠	𑂡	𑂢	𑂣	𑂤	𑂥	𑂦	𑂧	𑂨	𑂩
ङ					𑂪		𑂫		𑂬	𑂭	𑂮	𑂯	𑂰	𑂱	𑂲	𑂳	𑂴
च	𑂵	𑂶	𑂷	𑂸	𑂹	𑂺	𑂻	𑂼	𑂽	𑂾	𑂿	𑃀	𑃁	𑃂	𑃃	𑃄	𑃅
छ		𑃆			𑃇			𑃈	𑃉	𑃊	𑃋	𑃌	𑃍	𑃎	𑃏	𑃐	𑃑
ज	𑃒	𑃓	𑃔	𑃕	𑃖	𑃗	𑃘	𑃙	𑃚	𑃛	𑃜	𑃝	𑃞	𑃟	𑃠	𑃡	𑃢
झ	𑃣	𑃤			𑃥			𑃦	𑃧	𑃨	𑃩	𑃪	𑃫	𑃬	𑃭	𑃮	𑃯
ट	𑃰	𑃱	𑃲	𑃳	𑃴	𑃵	𑃶	𑃷	𑃸	𑃹	𑃺	𑃻	𑃼	𑃽	𑃾	𑃿	𑄀
ठ			𑄁	𑄂	𑄃	𑄄	𑄅	𑄆	𑄇	𑄈	𑄉	𑄊	𑄋	𑄌	𑄍	𑄎	𑄏
ड	𑄐	𑄑	𑄒		𑄓	𑄔	𑄕	𑄖	𑄗	𑄘	𑄙	𑄚	𑄛	𑄜	𑄝	𑄞	𑄟
ढ			𑄠		𑄡			𑄢	𑄣	𑄤	𑄥	𑄦	𑄧	𑄨	𑄩	𑄪	𑄫

फलक संख्या - ५५

३. आठवीं श० के वर्ण : पल्लव वंशीय राज नन्दी वर्मन द्वितीय (७३२ - ७९६ ई०) के ग्यारह ताम्र - दान - पत्रों^१ से, जो पाण्डीचेरी के एम० जुलिस द्वारा १८७९ में कपकुडी ग्राम से प्राप्त हुए, लिये गये हैं ।
४. नववीं श० के वर्ण : पल्लव वंशीय राजा नन्दी वर्मन (७४१ - ८०६ ई०) के पाँच ताम्र - दान - पत्रों^२ से, जो उदयइन्द्रम से १८५० में प्राप्त हुए, लिये गये हैं ।
५. दसवीं श० के वर्ण : गंग वंशीय राजा पृथ्वीपति द्वितीय (९०५ - ९३८ ई०) के सात ताम्र - दान - पत्रों^३ से प्राप्त हुये, लिये गये हैं ।
६. ग्यारहवीं श० के वर्ण : चोल वंशीय राजा राजाधिराज (१०४४ - १०५४ ई०) के शिला - लेख^४ से, जो मिण्डीगल - कोलर जनपद के सोमेश्वर के मन्दिर की दीवार पर उत्कीर्ण है और जिसका काल १०४७ - ४८ अंकित है, लिये गये हैं ।
७. बारहवीं श० के वर्ण : बाण वंशीय राजा विजय बाहू विक्रमादित्य द्वितीय के चार ताम्र - पत्रों^५ से, जो उदयइन्द्रम ग्राम से टी० फॉल्कीज पादरी द्वारा प्राप्त हुए, लिये गये हैं ।
८. तेरहवीं श० के वर्ण : राजा सुन्दर पाण्ड्य (१२५० - १२६७) के एक दान - पत्र^६ से, जो श्रीरंगम द्वीप के रंगनाथन के मन्दिर से प्राप्त हुआ, दिये गये हैं ।
९. पन्द्रहवीं श० के वर्ण : विजयनगर के राजा बुक्का द्वितीय (१४०४ - १४२३ ई०) अभिलेख^७ से, जो वेप्पमबट्टूर के वीरुपक्ष - मन्दिर की दीवार (वेलूर) पर उत्कीर्ण किया गया था, लिखे गये हैं ।

पश्चिमी लिपि - छठी श०

गुप्त वंश के पतन के कारण उसके प्रांतपति शर्नः शर्नः स्वतंत्र होने लगे । उन्हीं प्रांतपतियों में से एक भटार्क था जो काठियावाड़ (गुजरात) का प्रांतपति था । उसने वलभी वंश (४९० - ७७० ई०) की नींव पाँचवीं श० के अन्त में डाली । इस राज्य का मुख्य नगर वलभी (आधुनिक वाला) होने के कारण राजवंश का नामकरण भी वलभी वंश हो गया । इसको मैत्रिक जाति के कारण मैत्रकवंश भी कहते हैं । यह दो शाखाओं में विभाजित हो गया । काठियावाड़ जिसका प्रथम नरेश द्रोणसेन था तथा दूसरा पश्चिमी मालवा जिसका प्रथम नरेश शिलादित्य था ।

द्रोणसेन ने ५०६ से ५२५ ई० तक राज्य किया तदनन्तर उसका भाई ध्रुवसेन प्रथम सिंहासनारूढ़ हुआ जिसने ५२५ से ५४५ तक राज्य किया । तत्पश्चात् धरसेन प्रथम गद्दी पर बैठा जिसने ५४५ से ५५९ तक राज्य किया । उसके स्वर्गवास होने पर उसका भतीजा गुहासेन शासक बना जिसने ५६७ ई० तक शासन किया । तदोपरांत धरसेन द्वितीय राजा हुआ ।

1. S. I. I. (Hultzsch) Vol. II, Page - 235.
2. I. A. Vol. VIII, Page - 274.
3. S. I. I. Vol. I, Page - 172.
4. E. I. Vol. IV, Page - 210.
5. E. I, Vol. III, Page - 76.
6. E. I. Vol. III, Page - 14.
7. S. I. I. Vol. I, Page - 80.

पश्चिमी लिपि - छठीं स०

अ	आ	इ	उ	ए	क	ख	ग	घ	च
स	स	ॐ	।	८	३	३	८	८	३
ज	ट	ड	ण	त	थ	द	ध	न	
६	८	८	८	८	८	८	८	८	८
प	फ	ब	भ	म	य	र	ल		
८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
व	श	स	ह	जा	ना	ति	जी	णी	
८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
तु	मु	प्र	भृ	कृ	भू	गै	गो	लौ	क्षा
८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	स्व	स्ति	फ	क	प्र	स्र	व	णा	त्प्र
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ

वलभी वंश के कई ताम्र - दान - पत्र प्राप्त हुए हैं जिनके अभिलेखों में काफ़ी समानता मिलती है। इस लिपि के दो ताम्र - दान - पत्र^१ जिनमें ३६ पंक्तियाँ उत्कीर्ण थीं, जूनागढ़ रियासत के दीवान ने प्रलीट को १८८५ में भेंट - स्वरूप दीं। यह दो दान - पत्र राजा ध्रुवसेन द्वितीय^२ (५३९ - ५६७ ई०) ने उत्कीर्ण करवाये थे। इन्हीं दो दान - पत्रों के वर्ण तथा कुछ शब्द 'फ० सं० - ५६' पर दिये गये हैं।

कन्नड़ लिपि - छठी श०

कदम्ब वंश की नींव डालने वाला एक ब्राह्मण था जिसका नाम मयूरशर्मन (३४५ से ३६० तक राज्य किया) था। जब यह कांचीपुरम् में वेदों के अध्ययन के लिए पहुँचा तो इसकी लड़ाई वहाँ के एक रक्षक से हो गयी जिसके कारण वह वन में भाग गया और जंगली जातियों को अपने अधीन कर एक छोटा सा राज्य स्थापित कर लिया।

उसी वंश में एक राजा शान्तिवर्मन था जिसने ४५० से ४७५ तक राज्य किया। उसने दक्षिण प्रदेश में अपने भाई कृष्ण वर्मन को प्रांतपति नियुक्त करके भेजा जिसको पल्लव नरेशों से निरन्तर युद्ध करना पड़ा। तत्पश्चात् उसका पुत्र विष्णु वर्मन उसी प्रकार युद्ध में रत रहा। शान्ति वर्मन के मरणोपरांत उसका पुत्र मृगेश - वर्मन सिंहासनाखंड हुआ। इस वंश का अन्तिम नरेश हरी वर्मन (५३८ - ५५०) था।

तत्पश्चात् यह वंश दो भागों में विभाजित हो गया। देवगिरि इस वंश की राजधानी थी। कदम्ब वृक्ष को पूजने के कारण यह कदम्ब वंश के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

'फ० सं० - ५७' पर दिये गये वर्ण तथा कुछ शब्द देवगिरि से प्राप्त कदम्ब वंशीय राजा मृगेश वर्मन के दानपत्रों के अभिलेखों^३ से लिये गये हैं।

कन्नड़ लिपि का विकास

सातवीं श० से, जब कि बेंगी के चालुक्य राजाओं का राज्य था, बारहवीं श० तक कन्नड़ व तेलुगु का प्रयोग दोनों भाषाओं के लिए एक ही लिपि में रहा परन्तु तेरहवीं श० में इसका प्रयोग पृथक् हो गया जो शनैः शनैः बढ़ता ही रहा। यह अन्तर अठारहवीं श० के आरम्भ में परिपक्व हो गया क्योंकि मुद्रण कला इस पृथक्ता में बड़ी सहायक सिद्ध हुई।

तेलुगु - कन्नड़ लिपियों में अधिक अन्तर नहीं है। तेलुगु लिपि जानने वाला कन्नड़ लिपि को भली भाँति पढ़ सकता है यह अलग बात है कि वह भाषा का ज्ञान न रखता हो। इसके विकास का वर्णन निम्न-लिखित तेरह खानों में दिया गया है :—(फ० सं० - ५८, ५८ क)

१. देवनागरी लिपि के वर्ण दिये गये हैं।
२. ई० पू० की दूसरी श० के वर्ण, जो भट्टीप्रोलु^४ के स्तूप से प्राप्त हुए, दिये गये हैं।
३. दूसरी श० के वर्ण : जो नासिक की गुफाओं^५ से लिये गये हैं, दिये गये हैं।

1. Fleet : I. A. Vol. VIII, Page - 301.
2. Smith : Early History of India, Page - 308.
3. I. A. Vol. VII, Page - 35.
4. फ० सं० - ४४
5. फ० सं० - ४५

कन्नड़ लिपि -- छठीं श०

अ	आ	इ	उ	ए	क	ख	ग	घ	च	ज
ಅ	ಆ	ಇ	ಉ	ಎ	ಕ	ಖ	ಗ	ಘ	ಚ	ಜ
ट	ड	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ	ब
ಟ	ಡ	ಣ	ತ	ಥ	ದ	ಧ	ನ	ಪ	ಫ	ಬ
ब	व	भ	म	य	र	ल	व	श	ष	
ಬ	ವ	ಭ	ಮ	ಯ	ರ	ಲ	ವ	ಶ	ಷ	
स	ह	ह	ण	मा	हि	भू	भु	वृ		
ಸ	ಹ	ಹ	ಣ	ಮಾ	ಹಿ	ಭೂ	ಭು	ವೃ		
ते	लै	जो	थौ	स्था						
ತೆ	ಲೈ	ಜೊ	ಥೊ	ಸ್ಥಾ						
<p>ಶಿಕ್ಷಾ ದೇವಗುಪ್ತಪ್ರಿಯೆ -</p>										
<p>सिद्धम जय लहं स्त्रि लो -</p>										
<p>कैशः सर्व भू ते हि तेः रतः</p>										
<p>ಕೈಶಃ ಸರ್ವ ಭೂ ತೆ ಹಿ ತೆಃ ರತಃ</p>										

४. दूसरी से चौथी श० तक के वर्ण : पल्लव वंशीय युवराज शिवस्कन्दवर्मन (१७० - १७७ ई०) के दात्र - पत्रों^१ से, जो मड्डबोलु - नर्सारावपेट तालुक, जनपद कृष्णा, आन्ध्र प्रदेश से १८९९ में प्राप्त हुए और जिनकी भाषा प्राकृत थी, दिये गये हैं ।
 ५. पाँचवीं श० के वर्ण : कदम्ब वंशीय राजा मृगेशवर्मन (४७५ - ४९० ई०) के तीन ताम्र - दान - पत्रों^२ से, जो देवगिरि से प्राप्त हुए, दिये गये हैं ।
 ६. छठी श० के वर्ण : पश्चिमी चालुक्य वंशीय राजा मंगलेश (५९३ - ६१० ई०) के अभिलेखों^३ से, जो वातापी (बादामी), बीजापुर, की वैष्णव गुफाओं में ५९८ ई० में उत्कीर्ण कराये गये, लिये गये हैं ।
 ७. सातवीं श० के वर्ण : पूर्वी चालुक्य राजा मंगीयुवराज सर्वलिकाश्रय (६७२ - ६९६ ई०) के दान - पत्र^४ से, जो चण्डलूर, जनपद नेल्लोर (आन्ध्र), से प्राप्त हुआ और जिसकी तिथि ६ मई ६७३ ई० सन् मानी गई है, लिये गये हैं ।
 ८. आठवीं श० के वर्ण : पश्चिमी चालुक्य वंशीय राजा कीर्ति वर्मन द्वितीय (७४५ - ७५७ ई०) के पाँच ताम्र - दान - पत्रों^५ से, पूर्ण जनपद के केन्द्रूर ग्राम से भृंगारकर बाबा द्वारा लाकर डकन कालेज के प्रो० के० बी० पाठक को १९०२ में दिये गये और जिनका काल ७५० ई० माना गया, लिये गये हैं ।
 ९. नववीं श० के वर्ण : राष्ट्रकूट राठौर वंशीय राजा गोविन्द राज तृतीय (७९२ - ८१४ ई०) के ८१३ ई० में उत्कीर्ण कराये गये पाँच ताम्र - दान - पत्रों^६ से, जो कड़व ग्राम से प्राप्त हुए, लिये गये हैं ।
 १०. ग्यारहवीं श० के वर्ण : पूर्वी चालुक्य वंशीय राजा राजराज द्वितीय (१०१९ - १०६२ ई०) के ताम्र - दान - पत्र^७ से, जो ग्राम कोरुमिल्ली, राजमुन्त्री जनपद (आन्ध्र) से प्राप्त हुआ, लिये गये हैं ।
 ११. तेरहवीं श० के वर्ण : होयसाल वंशीय राजा निरसिम्ह द्वितीय (१२२२ - १२३४ ई०) के अभिलेख^८ से, जो तिरुवेन्द्रम के मन्दिर की दीवार पर १२२२ में उत्कीर्ण कराया गया और जिसमें नौ पंक्तियाँ हैं, लिये गये हैं ।
 १२. पन्द्रहवीं श० के वर्ण : विजयनगर के राजा वीर विजयराय उडियार द्वितीय (१४०९ - १४२२ ई०) के एक दान अभिलेख^९ से, जो वेलूर के मन्दिर की दीवार पर उत्कीर्ण कराया गया था, लिये गये हैं ।
- नोट : जो खाने खाली हैं उनके अक्षर अभिलेखों में प्रयोग नहीं किये गये । आरम्भ काल में स्वरों की संख्या कम थी ।

1. ओशा : भारतीय प्राचीन लिपि माला - पृष्ठ ५८ - प्लेट १३.
2. I. A. Vol. VII - page 35.
3. I. A. Vol. X - page 158.
4. E. I. Vol. VIII - page 238.
5. E. I. Vol. V - page 204.
6. I. A. Vol. XII - page 14.
7. I. A. Vol. XIV - page 50.
8. E. I. Vol. VII - page 162
9. E. R. (1912) - page 60.

कन्नड़ लिपि का विकास

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
अ	𑌀	𑌁	𑌂	𑌃	𑌄	𑌅	𑌆	𑌇	𑌈	𑌉	𑌊	𑌋
आ	𑌌	𑌍	𑌎	𑌏			𑌐	𑌑	𑌒	𑌓	𑌔	𑌕
इ	𑌖	𑌗	𑌘	𑌙		𑌚	𑌛	𑌜	𑌝	𑌞	𑌟	𑌠
ई												𑌡
उ	𑌢	𑌣	𑌤	𑌥				𑌦	𑌧	𑌨		𑌩
ऊ												𑌪
ऋ												𑌫
ए		𑌭	𑌮	𑌯		𑌰	𑌱	𑌲	𑌳	𑌴	𑌵	𑌶
ऐ												𑌷
ऎ												𑌸
औ												𑌹
ओ	𑌺											𑌻
औ												𑌼
क	𑌽	𑌾	𑌿	𑍀	𑍁	𑍂	𑍃	𑍄	𑍅	𑍆	𑍇	𑍈
ख	𑍉	𑍊	𑍋	𑍌	𑍍	𑍎	𑍏	𑍐	𑍑	𑍒	𑍓	𑍔
ग	𑍕	𑍖	𑍗	𑍘	𑍙	𑍚	𑍛	𑍜	𑍝	𑍞	𑍟	𑍠
घ	𑍡	𑍢		𑍣		𑍤	𑍥	𑍦	𑍧	𑍨		𑍩
ङ												𑍪
च	𑍫	𑍬	𑍭	𑍮	𑍯	𑍰	𑍱	𑍲	𑍳	𑍴	𑍵	𑍶
छ	𑍷	𑍸	𑍹			𑍺		𑍻	𑍼	𑍽		𑍾
ज	𑍿	𑎀	𑎁	𑎂	𑎃		𑎄	𑎅	𑎆	𑎇	𑎈	𑎉
झ		𑎊										𑎋
ञ		𑎌	𑎍									𑎎
ट	𑎏	𑎐	𑎑	𑎒	𑎓		𑎔	𑎕	𑎖	𑎗	𑎘	𑎙

कन्नड़ लिपि का विकास

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ						ॐ			ॐ
ॐ		ॐ	ॐ	ॐ	ॐ		ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ		ॐ					ॐ	ॐ	ॐ			ॐ
ण	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ		ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
त	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
थ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ		ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
द	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ध	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ		ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
न	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
प	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ		ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
फ	ॐ			ॐ	ॐ		ॐ	ॐ	ॐ	ॐ		ॐ
ब	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
भ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ		ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
म	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ		ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
य	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ		ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
र	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ल	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ		ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
व	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ		ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
श			ॐ	ॐ	ॐ		ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ष	ॐ			ॐ	ॐ		ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
स	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ह	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ						ॐ				ॐ
ॐ												ॐ

फलक संख्या - ५८ क

तेलुगु लिपि

सर्वप्रथम तेलुगु भाषा, जो आन्ध्र प्रदेश की मुख्य भाषा थी, के लिए कन्नड़ लिपि का ही प्रयोग होता था। परन्तु ग्यारहवीं श० से इसके पृथक् होने की सम्भावना लगने लगी और तेरहवीं श० के आते आते इसकी पृथक्ता स्पष्ट होने लगी।

दसवीं श० में इसका प्रयोग पूर्वी चालुक्य वंशीय राजाओं द्वारा किया गया। 'फ० सं० - ५९' पर दिये गये वर्ण व कुछ शब्द राजा भीम द्वितीय (९३५ - ९४६ ई०) के दान - पत्रों^१ से लिये गये हैं, जो पागनवरम् से प्राप्त हुए।

ग्यारहवीं श० के वर्ण व कुछ शब्द कोरुमेल्लि^२ से प्राप्त एक दान - पत्र से लिये गये हैं (फ० सं० - ६)।

तेरहवीं श० के वर्ण व कुछ शब्द काकतिया वंशीय राजाओं के दान - पत्रों^३ से तथा चेन्नलु के शिलालेख से लिये गये हैं (फ० सं० - ६१)।

तेलुगु लिपि का विकास

तेलुगु लिपि का विकास दक्षिणी - ब्राह्मी द्वारा हुआ। सातवीं श० में इसकी झलक दृष्टिगोचर होने लगती है। इसका समावेश कन्नड़ लिपि में था परन्तु ग्यारहवीं से यह प्रथक रूप धारण करने लगी। निम्न-लिखित खानों में इसके विकास विवरण दिया गया है (फ० सं० - ६२)।

१. देवनागरी के अक्षर : दिये गये हैं।
२. सातवीं श० के वर्ण : राजा मंगी युवराज के अभिलेखों^४ से, जो चण्डलूर से प्राप्त हुये और जिनका काल ६७३ ई० माना गया है, लिये गये हैं।
३. दसवीं श० के वर्ण : राजा भीम द्वितीय नामक विष्णुवर्धन (९३५ - ९४६ ई०) के पाँच ताम्र - दान - पत्रों^५ से, जो पगनावरम से प्राप्त हुये, लिये गये हैं।
४. ग्यारहवीं श० के वर्ण : राजा प्रताप रुद्र प्रथम (१०६३ - १०९२ ई०) द्वारा दिये गये भूमि - दान के शिलालेख^६ से, जो अरलुरु से प्राप्त हुआ, लिये गये हैं।
५. तेरहवीं श० के वर्ण : काकतिया राजा गणपति (११९९ - १२६२ ई०) के शिला - लेख^७ से, जो चेन्नलु, जिला कृष्ण के नागेश्वर मन्दिर में उत्कीर्ण है, लिये गये हैं।
६. चौदहवीं श० के वर्ण : सामंत राजा नामानायक के दानपत्रों^८ से, जो दोनेपुण्डी से प्राप्त हुये (संख्या पाँच थी) और जिनकी तिथि ३० अगस्त १३३८ थी, लिये गये हैं।

1. I. A. Vol. XIII, Page - 214.
2. E. I. Vol. XIV, Page - 50.
3. E. I. Vol. V, Page - 146.
4. E. I. Vol. IV, Page - 196.
5. I. A. Vol. VIII, Page - 214.
6. I. M. P. Vol. II, Page - 782.
7. E. I. Vol. V, Page - 146.
8. E. I. Vol. IV, Page - 356.

तेलुगु लिपि -- दसवीं श०

अ	आ	इ	उ	ए	क	ख	ग	घ	
అ	ఆ	ఇ	ఉ	ఎ	క	ఖ	గ	ఘ	
च	ज	ट	ड	ण	त	थ	द	द	
చ	జ	ట	డ	ణ	త	థ	ద	ద	
ध	ध	न	फ	प	ब	भ	म	य	र
ధ	ధ	న	ఫ	ప	బ	భ	మ	య	ర
ल	ल	व	व	श	ष	स	ह	ळ	
ల	ల	వ	వ	శ	ష	స	హ	ఱ	
या		से		क्ष					
य		सु		क्ष					
ॐ		श्री		म		तां		सकल भुवन	
स्वस्ति		श्री		మ		తాం		సకల భువన	

तेलुगु लिपि -- ग्यारहवीं श०

अ	आ	इ	ई	उ	ए	क	ख	ग	
అ	ఆ	ఇ	ఈ	ఉ	ఏ	క	ఖ	గ	
घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ	ड	ण	
ఘ	చ	ఛ	జ	ఝ	ట	ఠ	డ	ణ	
त	थ	द	ध	न	प	फ	ब	म	य
త	థ	ద	ధ	న	ప	ఫ	బ	మ	య
र	ल	व	श	ष	स	ह	क्रो	क्ष	णो
ర	ల	వ	శ	ష	స	హ	క్రో	క్ష	ణో
ॐ									
श्री धाम्नः पुरुषोत्तम									
श्री नमस्तु नमो नमस्तु									
स्य	म	ह	तो	ना	रा	य	ण	स्य	

तेलुगु लिपि -- तेरहवीं श०

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ओ
అ	ఆ	ఇ	ఈ	ఉ	ఊ	ఏ	ఒ
क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ
క	ఖ	గ	ఘ	చ	ఛ	జ	झ
ट	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध
ట	డ	ఢ	ణ	త	థ	ద	ధ
ब	भ	म	य	र	ल	व	श
బ	భ	మ	య	ర	ల	వ	శ
ह	ळ	र	का	टा	ला	कि	रि
హ	ఱ	ర	కా	టా	లా	కి	రి
व	वौ	वं	वं	र	र्यु	णां	
వ	వౌ	వం	వం	ర	ర్యు	ణాం	

तेलुगु लिपि का विकास

१	२	३	४	५	६	७	८	१	२	३	४	५	६	७	८
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	र			र		ॠ		र
आ	ऊ	उ	ऊ	उ	ऊ	उ	उ	र	ॠ	ॠ	ॠ		ॠ	ॠ	ॠ
इ	ई	ई	ई	ई	ई	ई	ई	र				ॠ		ॠ	ॠ
ई							ॠ	ण		ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ
उ		ॠ	ॠ	ॠ	ॠ		ॠ	त	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ
ऊ							ॠ	थ		ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ
ॠ							ॠ	द	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ
ए	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ध		ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ
ऐ							ॠ	न	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ
ऐ							ॠ	प		ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ
ऑ							ॠ	फ		ॠ	ॠ	ॠ	ॠ		ॠ
ओ							ॠ	ब	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ
औ							ॠ	म		ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ
क	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	म		ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ
ख	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	य		ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ
ग	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	र	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ
घ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ			ॠ	ल		ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ
ङ							ॠ	व		ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ
च	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	श		ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ
छ	ॠ		ॠ	ॠ			ॠ	ष		ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ
ज		ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	स	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ
झ							ॠ	ह	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ
ञ							ॠ	ॠ		ॠ		ॠ	ॠ		ॠ
ट	ॠ	ॠ		ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	र							ॠ

७. पन्द्रहवीं श० के वर्ण : विजयनगर के राजा अच्युत महाराज के ताम्र - दान - पत्र^१ से, जो कड़पा (आन्ध्र प्रदेश) से प्राप्त हुआ और जिसकी तिथि ५ अप्रैल १४४२ थी, लिये गये हैं।

८. आधुनिक तेलगु के वर्ण : दिये गये हैं।

बंगला लिपि बारहवीं श०

सेनवंश : का संस्थापक सामन्त सेन था। सेन लोग कर्नाटक (मैसूर) के मूल निवासी थे। वे जन्म से ब्राह्मण थे परन्तु कर्म से क्षत्रिय थे और सामन्त सेन स्वयं को चन्द्रवंशीय क्षत्रिय वीर सेन का वंशज मानता था। उसके पुत्र हेमन्त सेन ने एक छोटे से राज्य की स्थापना की। तत्पश्चात् हेमन्त सेन का पुत्र विजयसेन राजा बना और उसने १०९५ से ११५८ तक शासन किया। उसने अपने राज्य का विस्तार कामरूप, तिरहुत तथा कलिंग तक किया। यह शैव धर्म का अनुयायी था। इसने देवपाड़ा जिला राजशाही में एक शिव - मन्दिर निर्माण करवाया।

इसी राजा के दानपत्र की वर्णमाला^२ तथा कुछ शब्द 'फ० सं० - ६३' पर दिये गये हैं।

कामरूप की बंगला लिपि - बारहवीं श०

कामरूप (असम = जो सम न हो) का इतिहास चार भागों में बांटा जा सकता है। पहला पौराणिक काल, दूसरा पूर्व काल (३०० - १३०० ई०), तीसरा काल अहोम तथा चौथा आधुनिक १८२६ से।

पुष्यवर्मन १३ नरेशों के एक वंश का प्रथम नरेश तथा भास्करवर्मन अन्तिम नरेश था। उसकी मृत्यु ६४९ ई० में हो गई। दूसरा वंश मलेच्छों का था जिसका प्रथम नरेश सलस्तम्भ था। उसने प्रागज्योतिषपुर (गौहाटी) से स्थानान्तर कर हरपेश्वर (तेजपुर) को अपनी राजधानी बनाया। इसमें भी १३ नरेश हुये और इसका अन्तिम नरेश त्याग सिंह लगभग ९५६ में स्वर्ग सिधार गया। पुत्र न होने से एक नया नरेश (ब्रह्मपाल) चुन लिया गया। इस वंश में छः नरेश हुये। लगभग ११२० ई० तक राज्य किया। इस वंश का अन्तिम नरेश जयपाल बंगाल के राजा राम पाल द्वारा पराजित कर दिया गया और कामरूप में अपना एक सामन्त टिगयादेव नियुक्त कर दिया जिसने राजा राम पाल ही को पराजित किया परन्तु कुमार पाल के सेनानायक वैद्य देव ने टिगया देव को पराजित किया और इस प्रकार सौ वर्ष तक अराजकता रही। तत्पश्चात् बंगाल का सेन वंश आया जिसको ११९८ में प्रथम मुसलमान आक्रमणकारी इल्तुतमिश ने पराजित कर दिया, तदोपरान्त कामरूप छोटे-छोटे राज्यों में विभाजित हो गया।

'फ० सं० - ६४' पर वैद्य देव के दानपत्र^३ की वर्णमाला तथा कुछ शब्द दिये गये हैं।

बंगला लिपि का विकास

बंगला लिपि का विकास देवनागरी से लगभग ग्यारहवीं श० से हुआ है। 'फ० सं० - ६५' पर दिये गये बंगला के विकास की सातवीं श० से कुछ झलक दृष्टिगोचर होने लगती है जो ग्यारहवीं श० से स्पष्ट हो जाती है। विकास के निम्नलिखित खानों का वर्णन दिया है :—

1. I. M. P. Vol. 1, Page - 142.
2. E. I. Vol. I, Page - 308.
3. E. I. Vol. II, Page - 350.

बंगला लिपि -- बारहवीं श०

अं	आ	इ	उ	ए	अं						
অ	আ	ই	উ	এ	অঁ						
क	ख	ग	घ	च	ज	ट					
ক	খ	গ	ঘ	চ	জ	ট					
ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ		
ড	ঢ	ণ	ত	থ	দ	ধ	ন	প	ফ		
भ	म	य	र	ल	व	श	ष	स	ह		
ম	ম	য	র	ল	ব	শ	ষ	স	হ		
उ	मि	न	मे	न	व	वा	य	यु	डि		
ত	মি	ন	মে	ন	ব	বা	য	যু	ডি		
मनु	ह	ग	ज	ल	द	न	व	इ	वादी	य	
মনু	হ	গ	জ	ল	দ	ন	ব	ই	বা	দী	য

कामरूप की बंगला की असम लिपि

अ	आ	इ	ई	उ	ए	ऐ	ॐ			
𑒐	𑒑	𑒒	𑒓	𑒔	𑒕	𑒖	𑒗			
क	ख	ग	घ	च	ज	झ	ड	ढ	ण	
𑒘	𑒙	𑒚	𑒛	𑒜	𑒝	𑒞	𑒟	𑒠	𑒡	
त	थ	द	ध	न	प	फ	भ	म	य	र
𑒢	𑒣	𑒤	𑒥	𑒦	𑒧	𑒨	𑒩	𑒪	𑒫	𑒬
ल	व	ब	श	ष	स	ह	मा	मि		
𑒭	𑒮	𑒯	𑒰	𑒱	𑒲	𑒳	𑒴	𑒵	𑒶	𑒷
वी	कु	रु	प्र	गे	दे	तै	लो	पौ	क्षा	
𑒸	𑒹	𑒺	𑒻	𑒼	𑒽	𑒾	𑒿	𑓀	𑓁	𑓂
ख्या	छ	त्रा	त्त	ओं	स्थ	स्ति				
𑓃	𑓄	𑓅	𑓆	𑓇	𑓈	𑓉	𑓊	𑓋	𑓌	𑓍
ॐ	ॐ	न'मा	द्वा'त'न	वाञ्च'द'वाय						
ॐ	ओं	न मो	भ ग व ते	वासु दे वा य						

फलक संख्या - ६४

बंगला लिपि का विकास

१	२	३	४	५	६	७	८	१	२	३	४	५	६	७	८
अ	अ	अ	अ	अ	अ	अ	अ	ण	२	३	४	५	६	७	८
आ	आ	आ	आ	आ	आ	आ	आ	त	२	३	४	५	६	७	८
इ	इ	इ	इ	इ	इ	इ	इ	थ	२	३	४	५	६	७	८
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	द	२	३	४	५	६	७	८
ए			१	२	३	४	५	ध	१	२	३	४	५	६	७
ओ			३	३	३	३	३	न	१	२	३	४	५	६	७
क	क	क	क	क	क	क	क	प	१	२	३	४	५	६	७
ख	ख	ख	ख	ख	ख	ख	ख	फ	१	२	३	४	५	६	७
ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ब	१	२	३	४	५	६	७
घ	घ	घ	घ	घ	घ	घ	घ	म	१	२	३	४	५	६	७
च	च	च	च	च	च	च	च	म	१	२	३	४	५	६	७
छ	छ				क	७	छ	य	१	२	३	४	५	६	७
ज	२	३	४	५	६	७	८	र	१	२	३	४	५	६	७
झ					१	२	३	ल	१	२	३	४	५	६	७
ञ		३	४		३	४	५	व	१	२	३	४	५	६	७
ट		८	९	१०	११	१२	१३	श	१	२	३	४	५	६	७
ठ			०		०	१	२	ष	१	२	३	४	५	६	७
ड		२	३	४	५	६	७	स	१	२	३	४	५	६	७
ढ			८	९	१०	११	१२	ह	१	२	३	४	५	६	७

फलक संख्या - ६५

१. देवनागरी के अक्षर : ध्वनि की सुविधा के लिये दिये गये हैं ।
२. सातवीं श० के वर्ण : महासामन्त शपांक के विषय में उत्कीर्ण एक शिलालेख से, जो रोहतासगढ़ के पर्वतीय किले में स्थित है (यह सहसराम - आराह से २४ मील है । इस शिलालेख^१ का काल ६०६ ई० है ।), लिये गये हैं ।
३. नवीं श० के वर्ण : राजा नरायण पाल (८५८ - ९१२ ई०) के दान - पत्र^२ से, जो भागलपुर से प्राप्त हुआ, लिये गये हैं ।
४. दसवीं श० के वर्ण : राजा राज्यपाल (९१२-९३६ ई०) के स्तम्भ - अभिलेख^३ से, जो नालन्दा के एक खण्डहर से पूरन चन्द नाहर ने प्राप्त किया, लिये गये हैं ।
५. ग्यारहवीं श० के वर्ण : राजा विजय सेन (राज्याभिषेक १११९) के एक शिलालेख^४ से, जो देवपारा (राजाशाही जनपद) से श्री मेटकॉफ़ द्वारा प्राप्त हुआ, लिये गये हैं ।
६. बारहवीं श० के वर्ण : राजा वैद्यदेव - कामरूप के तीन दान-पत्रों^५ से, जो राज्य संग्रहालय - लखनऊ में सुरक्षित हैं और जिनका काल ११४२ ई० माना गया है, लिये गये हैं ।
७. पन्द्रहवीं श० के वर्ण^६ : कृष्ण कीर्तन पाण्डुलिपि से लिये गये हैं ।
८. आधुनिक बंगला के वर्ण : दिये गये हैं ।

उड़िया लिपि - ग्यारहवीं श० - गंगवंश

पूर्वी गंगवंश : का इतिहास वज्रहस्त पंचम के काल से प्रारम्भ होता है । चोल सम्राट राजेन्द्र प्रथम की अधीनता से वज्रहस्त पंचम (१०३८ - १०६० ई०) ने अपने को मुक्त कर लिया और स्वतन्त्र रूप से शासन करने लगा । इसका अधिकार आधुनिक गंजाम और विशाखापटनम् के जिलों की भूमि पर था । उसके पुत्र राजाराम गंग - प्रथम ने केवल दस वर्ष शासन किया । उसका पुत्र अनन्त वर्मन चौडगंग पूर्वीय गंगवंश का सबसे प्रसिद्ध शासक था । इसी ने जगन्नाथ पुरी का मन्दिर बनवाया था । तेलुगु व संस्कृत को आश्रय दिया तथा सत्तर वर्ष तक शासन किया । पन्द्रहवीं श० के आरम्भ में मुस्लिम शासकों द्वारा इस वंश का नाश हो गया ।

इस लिपि की वर्णमाला वज्रहस्त पंचम के लेखों^७ से तैयार की गई है जो 'फ० सं० ६६, ६६ क' पर दी गई है ।

1. C. I. I. Vol. III, page - 284.
2. I. A. Vol. XV, page 304.
3. I. A. Vol. XLVII, page - 112.
4. E. I. Vol. I, page - 308.
5. E. I. Vol. II, page - 350.
6. Indian Systems of Writing (Govt, Pub. - 1965)
7. E. I. Vol. III, Page - 223

उड़िया लिपि - ग्यारहवीं श०

अ	आ	इ	ई	उ	ए	क
କ	ଌ	ୠ	ୡ	ୣ	୤	୦
ख	ग	च	ज			
ଌ	ୡ	ୣ	୤			
ज	ट	ड	ण	त		
ୠ	ୡ	ୢ	ୣ	୤		
थ	द	ध	न	प	फ	ब
୤	୥	୦	ୠ	ୡ	ୢ	ୣ
म	य	र	ल			
୦	ୠ	ୡ	ୢ			
व	श	ष				
ୠ	ୡ	ୢ				
स	ह					
ୠ	ୡ					

उड़िया लिपि -- ग्यारहवीं श०

ॐ	ॐ	ॐ	र	टा	धा	वा
रा	धि	गु	चू	पू	को	
कौ	जा	त्य	त			
म	श्री					
ॐ	स्व	स्त्य	मर			
पु	रा	नु	का	रि	णः	

फलक संख्या - ६६ क

उड़ीया लिपि — पन्द्रहवीं श०

कपिलेन्द्र वंश : का संस्थापक नरेश कपिलेन्द्र था जिसने उड़ीसा के गंग बंशीय नरेश को १४५३ में पराजित कर राज्य को हस्तगत किया तथा १४७० ई० तक राज्य किया। इसकी मृत्यु के पश्चात् पुरुषोत्तम गजपति उड़ीसा का नरेश हुआ और १४९७ तक शासन किया। इस राज्य का विस्तार गंगा से कावेरी तक हो गया था। इस वंश को भोई वंश ने पराजित किया था।

पुरुषोत्तम गजपति के दान पत्र^१ से (जो १४३८ में अंकित किया गया) एक वर्णमाला तथा कुछ शब्द 'फ० सं० - ६७' पर दिये गये हैं।

शारदा लिपि का विकास

शारदा लिपि : का नाम कश्मीर की सुप्रसिद्ध देवी शारदा के नाम से प्रचलित हुआ। इस लिपि का उद्भव ब्राह्मी से कुटिल लिपि द्वारा दसवीं श० में हुआ। इसका प्रचलन मुख्यतः चम्बा, कश्मीर तथा पंजाब में अधिक रहा। इसी लिपि से टाकरी का उद्भव माना जाता है। अब इसका प्रयोग बहुत कम रह गया है। इसकी जगह देवनागरी व उर्दू लिपियों ने लेली है।

इसका विकास 'फ० सं० - ६८' पर दिया गया है जिसके खानों का विवरण निम्नलिखित है :—

१. देवनागरी के वर्ण : दिये गये हैं।
२. दसवीं श० के वर्ण : सराहां (चम्बा से ८ मील है) के सामान्त सत्यकी के शिलालेख^२ से, जो एक शिव - मन्दिर की दीवार पर उत्कीर्ण है, लिये गये हैं।
३. ग्यारहवीं श० के वर्ण : राजा विदग्ध के ताम्र - पत्र^३ से, जो सुंगल में प्राप्त हुआ, लिये गये हैं।
४. बारहवीं श० के वर्ण : राजा नागपाल के अभिलेख^४ से, जो डेबरी - कोटी से प्राप्त हुआ और जिसकी सन् ११६० ई० मानी गई है, लिये गये हैं।
५. तेरहवीं श० के वर्ण : जलन्धर के राजा जयचन्द्र (११९७ - १२२४ ई०) के शिलालेख^५ से, जो बैजनाथ के मन्दिर से प्राप्त हुआ और जिसकी सन् १२०४ मानी गई, लिये गये हैं।
६. चौदहवीं श० के वर्ण : कश्मीर के पण्डित श्री मुकुन्द राम द्वारा १८९६ में अभिलेख^६ प्राप्त हुआ। उसी के वर्ण लिये गये हैं।
७. सोलहवीं श० के वर्ण : राजा बहादुर सिंह के ताम्र - दान - पत्र^७ से, जिसकी सन् १५५९ मानी गई है, लिये गये हैं।

1. E. I. Vol. I, Page - 354.

2. Vogel's : Chamba Antiquities, Page - 152 - Plate XIII.

3. " " " Plate XV.

4. " " " Page - 208.

5. Bühler : E. I. Vol. I, Page - 97.

6. Grierson : L. S. I., Vol. VIII, Part, II, Page - 255.

7. A. S. I. Report : 1903, Page - 261.

उड़िया लिपि - पन्द्रहवीं श०

अ उ ए क ग च ज ट
ଌ ଊ ୱ କ ଗ ଘ ଙ ଟ
ण त थ द ध न प भ म य
ଣ ତ ଥ ଦ ଧ ନ ପ ଭ ମ ଯ
र ल व श ष ह जा
ର ଲ ବ ଶ ଷ ହ ଜା
रा ति वी पु रु भू क्र क्ष त्र
ରା ତି ବୀ ପୁ ରୁ ଭୂ କ୍ର କ୍ଷ ତ୍ର
॥ इथ दूर्गात्रै नमः
श्री जय दुर्गायै नमः

शारदा लिपि का विकास

१	२	३	४	५	६	७	१	२	३	४	५	६	७
अ	आ	इ	उ	ए	ओ	क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ
अ	आ	इ	उ	ए	ओ	क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ
इ	उ	ए	ओ	क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ज	झ
उ	ए	ओ	क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ज	झ	ज
ए	ओ	क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ज	झ	ज	झ
ओ	क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ज	झ	ज	झ	ज
क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ज	झ	ज	झ	ज	झ
ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ज	झ	ज	झ	ज	झ	ज
ग	घ	च	छ	ज	झ	ज	झ	ज	झ	ज	झ	ज	झ
घ	च	छ	ज	झ	ज	झ	ज	झ	ज	झ	ज	झ	ज
च	छ	ज	झ	ज	झ	ज	झ	ज	झ	ज	झ	ज	झ
छ	ज	झ	ज	झ	ज	झ	ज	झ	ज	झ	ज	झ	ज
ज	झ	ज	झ	ज	झ	ज	झ	ज	झ	ज	झ	ज	झ
झ	ज	झ	ज	झ	ज	झ	ज	झ	ज	झ	ज	झ	ज
ञ	ट	ठ	ड	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ	ब	भ
ट	ठ	ड	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ	ब	भ	भ
ठ	ड	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ	ब	भ	भ	भ
ड	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ	ब	भ	भ	भ	भ
ण	त	थ	द	ध	न	प	फ	ब	भ	भ	भ	भ	भ
त	थ	द	ध	न	प	फ	ब	भ	भ	भ	भ	भ	भ
थ	द	ध	न	प	फ	ब	भ	भ	भ	भ	भ	भ	भ
द	ध	न	प	फ	ब	भ	भ	भ	भ	भ	भ	भ	भ
ध	न	प	फ	ब	भ	भ	भ	भ	भ	भ	भ	भ	भ
न	प	फ	ब	भ	भ	भ	भ	भ	भ	भ	भ	भ	भ
प	फ	ब	भ	भ	भ	भ	भ	भ	भ	भ	भ	भ	भ
फ	ब	भ	भ	भ	भ	भ	भ	भ	भ	भ	भ	भ	भ
ब	भ	भ	भ	भ	भ	भ	भ	भ	भ	भ	भ	भ	भ
भ	भ	भ	भ	भ	भ	भ	भ	भ	भ	भ	भ	भ	भ

मोड़ी लिपि — सतरहवीं श०

शिवाजी : का जन्म १६२७ में पूना से ५० मील दूर शेनी के किले में हुआ था। इनके पिता शाहजी भोंसले को पूना का प्रदेश जागीर में मिला था। १९ वर्ष की आयु में शिवाजी ने बीजापुर के एक किले पर अधिकार कर लिया। इसने अपने राज्य का विस्तार किया और मुगल सम्राट औरंगजेब को चैन से नहीं बैठने दिया।

शिवाजी के शासन काल में मोड़ी लिपि का जन्म हुआ। अक्षरों को मोड़कर बनाने के कारण इस लिपि का नाम मोड़ी पड़ गया। इसके जन्मदाता शिवाजी के एक मंत्री (सरिस्तेदार) बाला आवाजी चितनीस^१ थे। पेशवाओं के समय में बिबलकर नामक विद्वान् ने इसमें कुछ और हेर फेर करके अक्षरों को अधिक गोल किया। इसमें 'ख. प. व. र.' प्राचीन तेलुगु - कन्नड़ के तथा 'ई' व 'ज' गुजराती लिपि के समान हैं। इसकी वर्णमाला^२ 'फ० सं० - ६९' पर दी गयी है।

उत्तर - पूर्व की मध्य - कालीन लिपियाँ

मैथिल^३ : इसका प्रयोग मिथिला प्रदेश में ब्राह्मणों द्वारा किया जाता था और उन्हीं के द्वारा इसका विकास देवनागरी से पन्द्रहवीं श० में किया गया (फ० सं० - ७०)।

तिरहुतिया^४ : इसका प्रयोग सोलहवीं श० में बिहार के चम्पारन, मुजफ्फरपुर, दरभंगा आदि जिलों में किया जाता था (फ० सं० - ७१)।

भोजपुरी^५ : बिहार के चम्पारन और सारन जिलों में इसका प्रयोग पन्द्रहवीं श० से होने लगा (फ० सं० - ७२)।

मागधी^६ : इसको मगही भी कहते थे। गया व पटना के जिलों में प्रचलित थी (फ० सं० - ७३)।

कैथी^७ : इसका विकास कायस्थों द्वारा लगभग चौदहवीं श० में किया गया। इसमें शिरोरेखा का प्रयोग नहीं किया जाता था (फ० सं० - ७४)।

अहोम^८ : अहोम थाई जाति की एक उप - जाति थीं, जिसने १२२८ में असम पर आक्रमण किया और वहीं बस गई^९। १६९५ में हिन्दू धर्म में दीक्षा ले ली। अठारहवीं श० में ब्रह्मा ने इस जाति को परास्त किया तथा १८२४ में अंग्रेजों ने परास्त किया और उनके राज्य की नागरिक हो गई। लिपि का आविष्कार लगभग चौदहवीं श० में किया गया। १९२० तक जीवित रही तदनन्तर लोप हो गई (फ० सं० - ७५)।

1. इस शब्द की उत्पत्ति चिट्ठी - नबीस से (चिट्ठी = पत्र) चिट - नबीस व चिटनीस हुई इसी प्रकार फर्द - नबीस (फर्द = सरकारी कर) से फदनबीस तथा फडनीस बना। अब चिटनीस व फडनीस गोत्र बन गये।
2. I. A. Vol. XXXIV, page - 27.
3. Grierson : L, S. I. Vol. V. Part II, Page - 20.
4. " " " Page - 31.
5. " " " Page - 54.
6. " " " Page - 62.
7. " " " Page - 102.
8. " " Vol. III, " Page - 32.
9. According to Gait's Census Report (1891), Page - 280.

मौड़ी लिपि -- सत्तरहवीं श०

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ
𑀀	𑀁	𑀂	𑀃	𑀄	𑀅	𑀆	𑀇
ओ	औ	क	ख	घ	ग	च	छ
𑀈	𑀉	𑀊	𑀋	𑀌	𑀍	𑀎	𑀏
झ	ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ
𑀐	𑀑	𑀒	𑀓	𑀔	𑀕	𑀖	𑀗
न	प	फ	ब	भ	म	य	र
𑀘	𑀙	𑀚	𑀛	𑀜	𑀝	𑀞	𑀟
ल	व	श	ष	स	ह	अ	
𑀠	𑀡	𑀢	𑀣	𑀤	𑀥	𑀦	
का	का						
𑀧	𑀨						

फलक संख्या - ६९

मैथिल लिपि

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऌ
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऌ
ए	ओ	औ	क	ख	ग	घ
इ	च	छ	ज	झ	ञ	ट
ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द
ध	न	प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	श	ष	स
ह						

एक ओटा के दुई बेटे रहन

एक गोटा के दुई बेटा रहन
अर्थ: एक मनुष्य के दो बेटे थे।

तिरहुतिया लिपि

अ	आ	इ	उ	ऊ	ए
अ	आ	ई	उ	ऊ	ओ
ऐ	औ	औ	क	ख	ग
ऐ	औ	औ	क	ख	ग
च	छ	ज	झ	ञ	ट
च	छ	ज	झ	ञ	ट
ड	ढ	ण	त	थ	द
ड	ढ	ण	त	थ	द
न	प	फ	ब	भ	म
न	प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	श	ष
य	र	ल	व	श	ष

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

एक मनार दुई कुप्रा चित्त

भोजपुरी लिपि

अ ॐ	आ ॐा	इ ८	उ ३	ऊ ७	ए ८
ऐ ८	ओ ॐो	औ ॐौ	क ०	ख ५	ग ३
घ ५	ङ ३	च ५	छ ५	ज ५	झ ५
ञ ८	ट ५	ठ ०	ड ३	ढ ३	ण ५
त १	थ ५	द ८	ध ५	न १	प ५
फ ५	ब ५	भ १	म ५	य १	र १
ल ८	व ५	श ५	ष ५	स ५	ह ८
८० ॐा ८ ॐो ८ १ ८ वा ८ १ ८ ८ गो वे ८ १ ८ एक आदमी कोई रहे ओकरा दुइ गो बेटा रहे					

मागधी (मगही) लिपि

अ 𑂀	आ 𑂁	इ 𑂂	उ 𑂃	ऊ 𑂄	ए 𑂅
ऐ 𑂆	ओ 𑂇	औ 𑂈	क 𑂉	ख 𑂊	ग 𑂋
घ 𑂌	ङ 𑂍	च 𑂎	छ 𑂏	ज 𑂐	झ 𑂑
ञ 𑂒	ट 𑂓	ठ 𑂔	ड 𑂕	ढ 𑂖	ण 𑂗
त 𑂘	थ 𑂙	द 𑂚	ध 𑂛	न 𑂜	प 𑂝
फ 𑂞	ब 𑂟	भ 𑂠	म 𑂡	य 𑂢	र 𑂣
ल 𑂤	व 𑂥	श 𑂦	ष 𑂧	स 𑂨	ह 𑂩

𑂢𑂣𑂤𑂥𑂦𑂧𑂨𑂩𑂪𑂫𑂬𑂭𑂮𑂯𑂰𑂱𑂲𑂳𑂴𑂵𑂶𑂷𑂸𑂺𑂹𑂻𑂼𑂽𑂾𑂿𑃀𑃁𑃂𑃃𑃄𑃅𑃆𑃇𑃈𑃉𑃊𑃋𑃌𑃍𑃎𑃏𑃐𑃑𑃒𑃓𑃔𑃕𑃖𑃗𑃘𑃙𑃚𑃛𑃜𑃝𑃞𑃟𑃠𑃡𑃢𑃣𑃤𑃥𑃦𑃧𑃨𑃩𑃪𑃫𑃬𑃭𑃮𑃯𑃰𑃱𑃲𑃳𑃴𑃵𑃶𑃷𑃸𑃹𑃺𑃻𑃼𑃽𑃾𑃿𑄀𑄁𑄂𑄃𑄄𑄅𑄆𑄇𑄈𑄉𑄊𑄋𑄌𑄍𑄎𑄏𑄐𑄑𑄒𑄓𑄔𑄕𑄖𑄗𑄘𑄙𑄚𑄛𑄜𑄝𑄞𑄟𑄠𑄡𑄢𑄣𑄤𑄥𑄦𑄧𑄨𑄩𑄪𑄫𑄬𑄭𑄮𑄯𑄰𑄱𑄲𑄳𑄴𑄵𑄶𑄷𑄸𑄹𑄺𑄻𑄼𑄽𑄾𑄿𑅀𑅁𑅂𑅃𑅄𑅅𑅆𑅇𑅈𑅉𑅊𑅋𑅌𑅍𑅎𑅏𑅐𑅑𑅒𑅓𑅔𑅕𑅖𑅗𑅘𑅙𑅚𑅛𑅜𑅝𑅞𑅟𑅠𑅡𑅢𑅣𑅤𑅥𑅦𑅧𑅨𑅩𑅪𑅫𑅬𑅭𑅮𑅯𑅰𑅱𑅲𑅳𑅴𑅵𑅶𑅷𑅸𑅹𑅺𑅻𑅼𑅽𑅾𑅿𑆀𑆁𑆂𑆃𑆄𑆅𑆆𑆇𑆈𑆉𑆊𑆋𑆌𑆍𑆎𑆏𑆐𑆑𑆒𑆓𑆔𑆕𑆖𑆗𑆘𑆙𑆚𑆛𑆜𑆝𑆞𑆟𑆠𑆡𑆢𑆣𑆤𑆥𑆦𑆧𑆨𑆩𑆪𑆫𑆬𑆭𑆮𑆯𑆰𑆱𑆲𑆳𑆴𑆵𑆶𑆷𑆸𑆹𑆺𑆻𑆼𑆽𑆾𑆿𑇀𑇁𑇂𑇃𑇄𑇅𑇆𑇇𑇈𑇉𑇊𑇋𑇌𑇍𑇎𑇏𑇐𑇑𑇒𑇓𑇔𑇕𑇖𑇗𑇘𑇙𑇚𑇛𑇜𑇝𑇞𑇟𑇠𑇡𑇢𑇣𑇤𑇥𑇦𑇧𑇨𑇩𑇪𑇫𑇬𑇭𑇮𑇯𑇰𑇱𑇲𑇳𑇴𑇵𑇶𑇷𑇸𑇹𑇺𑇻𑇼𑇽𑇾𑇿𑈀𑈁𑈂𑈃𑈄𑈅𑈆𑈇𑈈𑈉𑈊𑈋𑈌𑈍𑈎𑈏𑈐𑈑𑈒𑈓𑈔𑈕𑈖𑈗𑈘𑈙𑈚𑈛𑈜𑈝𑈞𑈟𑈠𑈡𑈢𑈣𑈤𑈥𑈦𑈧𑈨𑈩𑈪𑈫𑈬𑈭𑈮𑈯𑈰𑈱𑈲𑈳𑈴𑈶𑈵𑈷𑈸𑈹𑈺𑈻𑈼𑈽𑈾𑈿𑉀𑉁𑉂𑉃𑉄𑉅𑉆𑉇𑉈𑉉𑉊𑉋𑉌𑉍𑉎𑉏𑉐𑉑𑉒𑉓𑉔𑉕𑉖𑉗𑉘𑉙𑉚𑉛𑉜𑉝𑉞𑉟𑉠𑉡𑉢𑉣𑉤𑉥𑉦𑉧𑉨𑉩𑉪𑉫𑉬𑉭𑉮𑉯𑉰𑉱𑉲𑉳𑉴𑉵𑉶𑉷𑉸𑉹𑉺𑉻𑉼𑉽𑉾𑉿𑊀𑊁𑊂𑊃𑊄𑊅𑊆𑊇𑊈𑊉𑊊𑊋𑊌𑊍𑊎𑊏𑊐𑊑𑊒𑊓𑊔𑊕𑊖𑊗𑊘𑊙𑊚𑊛𑊜𑊝𑊞𑊟𑊠𑊡𑊢𑊣𑊤𑊥𑊦𑊧𑊨𑊩𑊪𑊫𑊬𑊭𑊮𑊯𑊰𑊱𑊲𑊳𑊴𑊵𑊶𑊷𑊸𑊹𑊺𑊻𑊼𑊽𑊾𑊿𑋀𑋁𑋂𑋃𑋄𑋅𑋆𑋇𑋈𑋉𑋊𑋋𑋌𑋍𑋎𑋏𑋐𑋑𑋒𑋓𑋔𑋕𑋖𑋗𑋘𑋙𑋚𑋛𑋜𑋝𑋞𑋟𑋠𑋡𑋢𑋣𑋤𑋥𑋦𑋧𑋨𑋩𑋪𑋫𑋬𑋭𑋮𑋯𑋰𑋱𑋲𑋳𑋴𑋵𑋶𑋷𑋸𑋹𑋺𑋻𑋼𑋽𑋾𑋿𑌀𑌁𑌂𑌃𑌄𑌅𑌆𑌇𑌈𑌉𑌊𑌋𑌌𑌍𑌎𑌏𑌐𑌑𑌒𑌓𑌔𑌕𑌖𑌗𑌘𑌙𑌚𑌛𑌜𑌝𑌞𑌟𑌠𑌡𑌢𑌣𑌤𑌥𑌦𑌧𑌨𑌩𑌪𑌫𑌬𑌭𑌮𑌯𑌰𑌱𑌲𑌳𑌴𑌵𑌶𑌷𑌸𑌹𑌺𑌻𑌼𑌽𑌾𑌿𑍀𑍁𑍂𑍃𑍄𑍅𑍆𑍇𑍈𑍉𑍊𑍋𑍌𑍍𑍎𑍏𑍐𑍑𑍒𑍓𑍔𑍕𑍖𑍗𑍘𑍙𑍚𑍛𑍜𑍝𑍞𑍟𑍠𑍡𑍢𑍣𑍤𑍥𑍦𑍧𑍨𑍩𑍪𑍫𑍬𑍭𑍮𑍯𑍰𑍱𑍲𑍳𑍴𑍵𑍶𑍷𑍸𑍹𑍺𑍻𑍼𑍽𑍾𑍿𑎀𑎁𑎂𑎃𑎄𑎅𑎆𑎇𑎈𑎉𑎊𑎋𑎌𑎍𑎎𑎏𑎐𑎑𑎒𑎓𑎔𑎕𑎖𑎗𑎘𑎙𑎚𑎛𑎜𑎝𑎞𑎟𑎠𑎡𑎢𑎣𑎤𑎥𑎦𑎧𑎨𑎩𑎪𑎫𑎬𑎭𑎮𑎯𑎰𑎱𑎲𑎳𑎴𑎵𑎶𑎷𑎸𑎹𑎺𑎻𑎼𑎽𑎾𑎿𑏀𑏁𑏂𑏃𑏄𑏅𑏆𑏇𑏈𑏉𑏊𑏋𑏌𑏍𑏎𑏏𑏐𑏑𑏒𑏓𑏔𑏕𑏖𑏗𑏘𑏙𑏚𑏛𑏜𑏝𑏞𑏟𑏠𑏡𑏢𑏣𑏤𑏥𑏦𑏧𑏨𑏩𑏪𑏫𑏬𑏭𑏮𑏯𑏰𑏱𑏲𑏳𑏴𑏵𑏶𑏷𑏸𑏹𑏺𑏻𑏼𑏽𑏾𑏿𑐀𑐁𑐂𑐃𑐄𑐅𑐆𑐇𑐈𑐉𑐊𑐋𑐌𑐍𑐎𑐏𑐐𑐑𑐒𑐓𑐔𑐕𑐖𑐗𑐘𑐙𑐚𑐛𑐜𑐝𑐞𑐟𑐠𑐡𑐢𑐣𑐤𑐥𑐦𑐧𑐨𑐩𑐪𑐫𑐬𑐭𑐮𑐯𑐰𑐱𑐲𑐳𑐴𑐵𑐶𑐷𑐸𑐹𑐺𑐻𑐼𑐽𑐾𑐿𑑀𑑁𑑂𑑃𑑄𑑅𑑆𑑇𑑈𑑉𑑊𑑋𑑌𑑍𑑎𑑏𑑐𑑑𑑒𑑓𑑔𑑕𑑖𑑗𑑘𑑙𑑚𑑛𑑜𑑝𑑞𑑟𑑠𑑡𑑢𑑣𑑤𑑥𑑦𑑧𑑨𑑩𑑪𑑫𑑬𑑭𑑮𑑯𑑰𑑱𑑲𑑳𑑴𑑵𑑶𑑷𑑸𑑹𑑺𑑻𑑼𑑽𑑾𑑿𑒀𑒁𑒂𑒃𑒄𑒅𑒆𑒇𑒈𑒉𑒊𑒋𑒌𑒍𑒎𑒏𑒐𑒑𑒒𑒓𑒔𑒕𑒖𑒗𑒘𑒙𑒚𑒛𑒜𑒝𑒞𑒟𑒠𑒡𑒢𑒣𑒤𑒥𑒦𑒧𑒨𑒩𑒪𑒫𑒬𑒭𑒮𑒯𑒰𑒱𑒲𑒳𑒴𑒵𑒶𑒷𑒸𑒻𑒻𑒼𑒽𑒾𑒿𑓀𑓁𑓃𑓂𑓄𑓅𑓆𑓇𑓈𑓉𑓊𑓋𑓌𑓍𑓎𑓏𑓐𑓑𑓒𑓓𑓔𑓕𑓖𑓗𑓘𑓙𑓚𑓛𑓜𑓝𑓞𑓟𑓠𑓡𑓢𑓣𑓤𑓥𑓦𑓧𑓨𑓩𑓪𑓫𑓬𑓭𑓮𑓯𑓰𑓱𑓲𑓳𑓴𑓵𑓶𑓷𑓸𑓹𑓺𑓻𑓼𑓽𑓾𑓿𑔀𑔁𑔂𑔃𑔄𑔅𑔆𑔇𑔈𑔉𑔊𑔋𑔌𑔍𑔎𑔏𑔐𑔑𑔒𑔓𑔔𑔕𑔖𑔗𑔘𑔙𑔚𑔛𑔜𑔝𑔞𑔟𑔠𑔡𑔢𑔣𑔤𑔥𑔦𑔧𑔨𑔩𑔪𑔫𑔬𑔭𑔮𑔯𑔰𑔱𑔲𑔳𑔴𑔵𑔶𑔷𑔸𑔹𑔺𑔻𑔼𑔽𑔾𑔿𑕀𑕁𑕂𑕃𑕄𑕅𑕆𑕇𑕈𑕉𑕊𑕋𑕌𑕍𑕎𑕏𑕐𑕑𑕒𑕓𑕔𑕕𑕖𑕗𑕘𑕙𑕚𑕛𑕜𑕝𑕞𑕟𑕠𑕡𑕢𑕣𑕤𑕥𑕦𑕧𑕨𑕩𑕪𑕫𑕬𑕭𑕮𑕯𑕰𑕱𑕲𑕳𑕴𑕵𑕶𑕷𑕸𑕹𑕺𑕻𑕼𑕽𑕾𑕿𑖀𑖁𑖂𑖃𑖄𑖅𑖆𑖇𑖈𑖉𑖊𑖋𑖌𑖍𑖎𑖏𑖐𑖑𑖒𑖓𑖔𑖕𑖖𑖗𑖘𑖙𑖚𑖛𑖜𑖝𑖞𑖟𑖠𑖡𑖢𑖣𑖤𑖥𑖦𑖧𑖨𑖩𑖪𑖫𑖬𑖭𑖮𑖯𑖰𑖱𑖲𑖳𑖴𑖵𑖶𑖷𑖸𑖹𑖺𑖻𑖼𑖽𑖾𑗀𑖿𑗁𑗂𑗃𑗄𑗅𑗆𑗇𑗈𑗉𑗊𑗋𑗌𑗍𑗎𑗏𑗐𑗑𑗒𑗓𑗔𑗕𑗖𑗗𑗘𑗙𑗚𑗛𑗜𑗝𑗞𑗟𑗠𑗡𑗢𑗣𑗤𑗥𑗦𑗧𑗨𑗩𑗪𑗫𑗬𑗭𑗮𑗯𑗰𑗱𑗲𑗳𑗴𑗵𑗶𑗷𑗸𑗹𑗺𑗻𑗼𑗽𑗾𑗿𑘀𑘁𑘂𑘃𑘄𑘅𑘆𑘇𑘈𑘉𑘊𑘋𑘌𑘍𑘎𑘏𑘐𑘑𑘒𑘓𑘔𑘕𑘖𑘗𑘘𑘙𑘚𑘛𑘜𑘝𑘞𑘟𑘠𑘡𑘢𑘣𑘤𑘥𑘦𑘧𑘨𑘩𑘪𑘫𑘬𑘭𑘮𑘯𑘰𑘱𑘲𑘳𑘴𑘵𑘶𑘷𑘸𑘹𑘺𑘻𑘼𑘽𑘾𑘿𑙀𑙁𑙂𑙃𑙄𑙅𑙆𑙇𑙈𑙉𑙊𑙋𑙌𑙍𑙎𑙏𑙐𑙑𑙒𑙓𑙔𑙕𑙖𑙗𑙘𑙙𑙚𑙛𑙜𑙝𑙞𑙟𑙠𑙡𑙢𑙣𑙤𑙥𑙦𑙧𑙨𑙩𑙪𑙫𑙬𑙭𑙮𑙯𑙰𑙱𑙲𑙳𑙴𑙵𑙶𑙷𑙸𑙹𑙺𑙻𑙼𑙽𑙾𑙿𑚀𑚁𑚂𑚃𑚄𑚅𑚆𑚇𑚈𑚉𑚊𑚋𑚌𑚍𑚎𑚏𑚐𑚑𑚒𑚓𑚔𑚕𑚖𑚗𑚘𑚙𑚚𑚛𑚜𑚝𑚞𑚟𑚠𑚡𑚢𑚣𑚤𑚥𑚦𑚧𑚨𑚩𑚪𑚫𑚬𑚭𑚮𑚯𑚰𑚱𑚲𑚳𑚴𑚵𑚷𑚶𑚸𑚹𑚺𑚻𑚼𑚽𑚾𑚿𑛀𑛁𑛂𑛃𑛄𑛅𑛆𑛇𑛈𑛉𑛊𑛋𑛌𑛍𑛎𑛏𑛐𑛑𑛒𑛓𑛔𑛕𑛖𑛗𑛘𑛙𑛚𑛛𑛜𑛝𑛞𑛟𑛠𑛡𑛢𑛣𑛤𑛥𑛦𑛧𑛨𑛩𑛪𑛫𑛬𑛭𑛮𑛯𑛰𑛱𑛲𑛳𑛴𑛵𑛶𑛷𑛸𑛹𑛺𑛻𑛼𑛽𑛾𑛿𑜀𑜁𑜂𑜃𑜄𑜅𑜆𑜇𑜈𑜉𑜊𑜋𑜌𑜍𑜎𑜏𑜐𑜑𑜒𑜓𑜔𑜕𑜖𑜗𑜘𑜙𑜚𑜛𑜜𑜝𑜞𑜟𑜠𑜡𑜢𑜣𑜤𑜥𑜦𑜧𑜨𑜩𑜪𑜫𑜬𑜭𑜮𑜯𑜰𑜱𑜲𑜳𑜴𑜵𑜶𑜷𑜸𑜹𑜺𑜻𑜼𑜽𑜾𑜿𑝀𑝁𑝂𑝃𑝄𑝅𑝆𑝇𑝈𑝉𑝊𑝋𑝌𑝍𑝎𑝏𑝐𑝑𑝒𑝓𑝔𑝕𑝖𑝗𑝘𑝙𑝚𑝛𑝜𑝝𑝞𑝟𑝠𑝡𑝢𑝣𑝤𑝥𑝦𑝧𑝨𑝩𑝪𑝫𑝬𑝭𑝮𑝯𑝰𑝱𑝲𑝳𑝴𑝵𑝶𑝷𑝸𑝹𑝺𑝻𑝼𑝽𑝾𑝿𑞀𑞁𑞂𑞃𑞄𑞅𑞆𑞇𑞈𑞉𑞊𑞋𑞌𑞍𑞎𑞏𑞐𑞑𑞒𑞓𑞔𑞕𑞖𑞗𑞘𑞙𑞚𑞛𑞜𑞝𑞞𑞟𑞠𑞡𑞢𑞣𑞤𑞥𑞦𑞧𑞨𑞩𑞪𑞫𑞬𑞭𑞮𑞯𑞰𑞱𑞲𑞳𑞴𑞵𑞶𑞷𑞸𑞹𑞺𑞻𑞼𑞽𑞾𑞿𑟀𑟁𑟂𑟃𑟄𑟅𑟆𑟇𑟈𑟉𑟊𑟋𑟌𑟍𑟎𑟏𑟐𑟑𑟒𑟓𑟔𑟕𑟖𑟗𑟘𑟙𑟚𑟛𑟜𑟝𑟞𑟟𑟠𑟡𑟢𑟣𑟤𑟥𑟦𑟧𑟨𑟩𑟪𑟫𑟬𑟭𑟮𑟯𑟰𑟱𑟲𑟳𑟴𑟵𑟶𑟷𑟸𑟹𑟺𑟻𑟼𑟽𑟾𑟿𑠀𑠁𑠂𑠃𑠄𑠅𑠆𑠇𑠈𑠉𑠊𑠋𑠌𑠍𑠎𑠏𑠐𑠑𑠒𑠓𑠔𑠕𑠖𑠗𑠘𑠙𑠚𑠛𑠜𑠝𑠞𑠟𑠠𑠡𑠢𑠣𑠤𑠥𑠦𑠧𑠨𑠩𑠪𑠫𑠬𑠭𑠮𑠯𑠰𑠱𑠲𑠳𑠴𑠵𑠶𑠷𑠸𑠺𑠹𑠻𑠼𑠽𑠾𑠿𑡀𑡁𑡂𑡃𑡄𑡅𑡆𑡇𑡈𑡉𑡊𑡋𑡌𑡍𑡎𑡏𑡐𑡑𑡒𑡓𑡔𑡕𑡖𑡗𑡘𑡙𑡚𑡛𑡜𑡝𑡞𑡟𑡠𑡡𑡢𑡣𑡤𑡥𑡦𑡧𑡨𑡩𑡪𑡫𑡬𑡭𑡮𑡯𑡰𑡱𑡲𑡳𑡴𑡵𑡶𑡷𑡸𑡹𑡺𑡻𑡼𑡽𑡾𑡿𑢀𑢁𑢂𑢃𑢄𑢅𑢆𑢇𑢈𑢉𑢊𑢋𑢌𑢍𑢎𑢏𑢐𑢑𑢒𑢓𑢔𑢕𑢖𑢗𑢘𑢙𑢚𑢛𑢜𑢝𑢞𑢟𑢠𑢡𑢢𑢣𑢤𑢥𑢦𑢧𑢨𑢩𑢪𑢫𑢬𑢭𑢮𑢯𑢰𑢱𑢲𑢳𑢴𑢵𑢶𑢷𑢸𑢹𑢺𑢻𑢼𑢽𑢾𑢿𑣀𑣁𑣂𑣃𑣄𑣅𑣆𑣇𑣈𑣉𑣊𑣋𑣌𑣍𑣎𑣏𑣐𑣑𑣒𑣓𑣔𑣕𑣖𑣗𑣘𑣙𑣚𑣛𑣜𑣝𑣞𑣟𑣠𑣡𑣢𑣣𑣤𑣥𑣦𑣧𑣨𑣩𑣪𑣫𑣬𑣭𑣮𑣯𑣰𑣱𑣲𑣳𑣴𑣵𑣶𑣷𑣸𑣹𑣺𑣻𑣼𑣽𑣾𑣿𑤀𑤁𑤂𑤃𑤄𑤅𑤆𑤇𑤈𑤉𑤊𑤋𑤌𑤍𑤎𑤏𑤐𑤑𑤒𑤓𑤔𑤕𑤖𑤗𑤘𑤙𑤚𑤛𑤜𑤝𑤞𑤟𑤠𑤡𑤢𑤣𑤤𑤥𑤦𑤧𑤨𑤩𑤪𑤫𑤬𑤭𑤮𑤯𑤰𑤱𑤲𑤳𑤴𑤵𑤶𑤷𑤸𑤹𑤺𑤻𑤼𑤽𑤾𑤿𑥀𑥁𑥂𑥃𑥄𑥅𑥆𑥇𑥈𑥉𑥊𑥋𑥌𑥍𑥎𑥏𑥐𑥑𑥒𑥓𑥔𑥕𑥖𑥗𑥘𑥙𑥚𑥛𑥜𑥝𑥞𑥟𑥠𑥡𑥢𑥣𑥤𑥥𑥦𑥧𑥨𑥩𑥪𑥫𑥬𑥭𑥮𑥯𑥰𑥱𑥲𑥳𑥴𑥵𑥶𑥷𑥸𑥹𑥺𑥻𑥼𑥽𑥾𑥿𑦀𑦁𑦂𑦃𑦄𑦅𑦆𑦇𑦈𑦉𑦊𑦋𑦌𑦍𑦎𑦏𑦐𑦑𑦒𑦓𑦔𑦕𑦖𑦗𑦘𑦙𑦚𑦛𑦜𑦝𑦞𑦟𑦠𑦡𑦢𑦣𑦤𑦥𑦦𑦧𑦨𑦩𑦪𑦫𑦬𑦭𑦮𑦯𑦰𑦱𑦲𑦳𑦴𑦵𑦶𑦷𑦸𑦹𑦺𑦻𑦼𑦽𑦾𑦿𑧀𑧁𑧂𑧃𑧄𑧅𑧆𑧇𑧈𑧉𑧊𑧋𑧌𑧍𑧎𑧏𑧐𑧑𑧒𑧓𑧔𑧕𑧖𑧗𑧘𑧙𑧚𑧛𑧜𑧝𑧞𑧟𑧠𑧡𑧢𑧣𑧤𑧥𑧦𑧧𑧨𑧩𑧪𑧫𑧬𑧭𑧮𑧯𑧰𑧱𑧲𑧳𑧴𑧵𑧶𑧷𑧸𑧹𑧺𑧻𑧼𑧽𑧾𑧿𑨀𑨁𑨂𑨃𑨄𑨅𑨆𑨇𑨈𑨉𑨊𑨋𑨌𑨍𑨎𑨏𑨐𑨑𑨒𑨓𑨔𑨕𑨖𑨗𑨘𑨙𑨚𑨛𑨜𑨝𑨞𑨟𑨠𑨡𑨢𑨣𑨤𑨥𑨦𑨧𑨨𑨩𑨪𑨫𑨬𑨭𑨮𑨯𑨰𑨱𑨲𑨳𑨴𑨵𑨶𑨷𑨸𑨹𑨺𑨻𑨼𑨽𑨾𑨿𑩀𑩁𑩂𑩃𑩄𑩅𑩆𑩇𑩈𑩉𑩊𑩋𑩌𑩍𑩎𑩏𑩐𑩑𑩒𑩓𑩔𑩕𑩖𑩗𑩘𑩙𑩚𑩛𑩜𑩝𑩞𑩟𑩠𑩡𑩢𑩣𑩤𑩥𑩦𑩧𑩨𑩩𑩪𑩫𑩬𑩭𑩮𑩯𑩰𑩱𑩲𑩳𑩴𑩵𑩶𑩷𑩸𑩹𑩺𑩻𑩼𑩽𑩾𑩿𑪀𑪁𑪂𑪃𑪄𑪅𑪆𑪇𑪈𑪉𑪊𑪋𑪌𑪍𑪎𑪏𑪐𑪑𑪒𑪓𑪔𑪕𑪖𑪗𑪘𑪙𑪚𑪛𑪜𑪝𑪞𑪟𑪠𑪡𑪢𑪣𑪤𑪥𑪦𑪧𑪨𑪩𑪪𑪫𑪬𑪭𑪮𑪯𑪰𑪱𑪲𑪳𑪴𑪵𑪶𑪷𑪸𑪹𑪺𑪻𑪼𑪽𑪾𑪿𑫀𑫁𑫂𑫃𑫄𑫅𑫆𑫇𑫈𑫉𑫊𑫋𑫌𑫍𑫎𑫏𑫐𑫑𑫒𑫓𑫔𑫕𑫖𑫗𑫘𑫙𑫚𑫛𑫜𑫝𑫞𑫟𑫠𑫡𑫢𑫣𑫤𑫥𑫦𑫧𑫨𑫩𑫪𑫫𑫬𑫭𑫮𑫯𑫰𑫱𑫲𑫳𑫴𑫵𑫶𑫷𑫸𑫹𑫺𑫻𑫼𑫽𑫾𑫿𑬀𑬁𑬂𑬃𑬄𑬅𑬆𑬇𑬈𑬉𑬊𑬋𑬌𑬍𑬎𑬏𑬐𑬑𑬒𑬓𑬔𑬕𑬖𑬗𑬘𑬙𑬚𑬛𑬜𑬝𑬞𑬟𑬠𑬡𑬢𑬣𑬤𑬥𑬦𑬧𑬨𑬩𑬪𑬫𑬬𑬭𑬮𑬯𑬰𑬱𑬲𑬳𑬴𑬵𑬶𑬷𑬸𑬹𑬺𑬻𑬼𑬽𑬾𑬿𑭀𑭁𑭂𑭃𑭄𑭅𑭆𑭇𑭈𑭉𑭊𑭋𑭌𑭍𑭎𑭏𑭐𑭑𑭒𑭓𑭔𑭕𑭖𑭗𑭘𑭙𑭚𑭛𑭜𑭝𑭞𑭟𑭠𑭡𑭢𑭣𑭤𑭥𑭦𑭧𑭨𑭩𑭪𑭫𑭬𑭭𑭮𑭯𑭰𑭱𑭲𑭳𑭴𑭵𑭶𑭷𑭸𑭹𑭺𑭻𑭼𑭽𑭾𑭿𑮀𑮁𑮂𑮃𑮄𑮅𑮆𑮇𑮈𑮉𑮊𑮋𑮌𑮍𑮎𑮏𑮐𑮑𑮒𑮓𑮔𑮕𑮖𑮗𑮘𑮙𑮚𑮛𑮜𑮝𑮞𑮟𑮠𑮡𑮢𑮣𑮤𑮥𑮦𑮧𑮨𑮩𑮪𑮫𑮬𑮭𑮮𑮯𑮰𑮱𑮲𑮳𑮴𑮵𑮶𑮷𑮸𑮹𑮺𑮻𑮼𑮽𑮾𑮿𑯀𑯁𑯂𑯃𑯄𑯅𑯆𑯇𑯈𑯉𑯊𑯋𑯌𑯍𑯎𑯏𑯐𑯑𑯒𑯓𑯔𑯕𑯖𑯗𑯘𑯙𑯚𑯛𑯜𑯝𑯞𑯟𑯠𑯡𑯢𑯣𑯤𑯥𑯦𑯧𑯨𑯩𑯪𑯫𑯬𑯭𑯮𑯯𑯰𑯱𑯲𑯳𑯴𑯵𑯶𑯷𑯸𑯹𑯺𑯻𑯼𑯽𑯾𑯿𑰀𑰁𑰂

कैथी लिपि

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ
𑀅	𑀆	𑀇	𑀈	𑀉	𑀊	𑀋	𑀌	𑀍
क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ञ
𑀎	𑀏	𑀐	𑀑	𑀒	𑀓	𑀔	𑀕	𑀖
ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध
𑀗	𑀘	𑀙	𑀚	𑀛	𑀜	𑀝	𑀞	𑀟
प	फ	ब	भ	म	य	र	ल	व
𑀠	𑀡	𑀢	𑀣	𑀤	𑀥	𑀦	𑀧	𑀨
श	ष	स	ह					
𑀩	𑀪	𑀫	𑀬					

फलक संख्या - ७४

अहोम लिपि

अ	आ	आँ	इ	ई	उ
𑜀	𑜁	𑜂	𑜃	𑜄	𑜅
ऊ	ए	ऐ	अँ	ओ	औ
𑜆	𑜇	𑜈	𑜉	𑜊	𑜋
अइ	आउ	आओ	इउ	आई	आए
𑜌	𑜍	𑜎	𑜏	𑜐	𑜑
क	ख	खं	ग	घ	ण
𑜒	𑜓	𑜔	𑜕	𑜖	𑜗
च	ज	झ	ञ	त	थ
𑜘	𑜙	𑜚	𑜛	𑜜	𑜝
द	ध	न	प	फ	ब व
𑜞	𑜟	𑜠	𑜡	𑜢	𑜣
भ	म	र	ल	श	ह
𑜤	𑜥	𑜦	𑜧	𑜨	𑜩
𑜀 𑜁 𑜂 𑜃 𑜄 𑜅 𑜆 𑜇 𑜈 𑜉 𑜊 𑜋 𑜌 𑜍 𑜎 𑜏 𑜐 𑜑 𑜒 𑜓 𑜔 𑜕 𑜖 𑜗 𑜘 𑜙 𑜚 𑜛 𑜜 𑜝 𑜞 𑜟 𑜠 𑜡 𑜢 𑜣 𑜤 𑜥 𑜦 𑜧 𑜨 𑜩 ई ऊ शो खं णं उ कोई } यह शिवायत यह शिवायत शब्द भूरी हुई है } भूरी हुई है					

खाम्ती¹ : यह भी थाई की एक उप-जाति थी जो अहोम जाति के साथ आकर भारत में बस गई। इसने अपनी लिपि लगभग साथ साथ बनाई। 'फ० सं० - ७६' में दिये गये वर्ण लखीमपुर (असम) के जिलाधीश श्री नीधम द्वारा १८९६ में प्राप्त हुए।

इन सभी लिपियों का विकास चौदहवीं से सोलहवीं श० के बीच देवनागरी से हुआ था। बीसवीं श० के चौथे शतक तक इन सब का लोप हो गया और देवनागरी पुनः प्रयोग में आने लगी।

मेई - थेई लिपि

मणिपुर का इतिहास १७१४ ई० से आरम्भ होता है। इससे पूर्व का इतिहास ज्ञात नहीं। उस समय एक हिन्दू राजा पमहीबा राज्य करता था जिसको वहाँ के निवासी आदर से 'गरीब नवाज' (अर्थात् गरीबों की सहायता करने वाला) के नाम से सम्बोधित करते थे। इस राजा के उत्तराधिकारी ब्रह्मा निवासी लोगों से युद्ध में फँसे रहते थे क्योंकि वे बहुधा मणिपुर पर आक्रमण करते रहते थे। अन्त में १८२५ में ब्रह्मा ने देश को अधीन कर लिया। अंग्रेजों ने इस राज्य को ब्रह्मा की अधीनता से छुड़ा दिया और एक सन्धि पर हस्ताक्षर हो गये जिसके कारण मणिपुर रियासत ब्रिटिश की संरक्षणता में आ गई तथा अर्ध स्वतंत्र हो गई। इस समय गम्भीर सिंह इसका राजा था।

इस राज्य का टिकेन्द्र सिंह सेनापति था और वह तात्कालिक शासक का भाई भी था। टिकेन्द्र सिंह के कहने पर अंग्रेजों ने राजा को गद्दी से हटा दिया और एक नया शासक बना दिया गया परन्तु टिकेन्द्र सिंह को हटाने का भी निश्चय कर लिया गया। जब क्वीटन तथा कुछ अन्य पदाधिकारी उसको मणिपुर से हटाने के लिए गये तब उनको मार डाला गया। फलस्वरूप एक सेना भेज दी गई जिसने शासक तथा सेनापति का वध कर दिया और एक पाँच वर्षीय बालक चूड़ा चन्द को सिंहासन पर बिठा दिया। १९०७ में राजा को पूर्ण - शासन अधिकार सौंप दिये गये। तब से ब्रिटिश सरकार के अधीन मणिपुर एक राज्य बना रहा। १९४८ में राज्य भारत सरकार द्वारा विजय कर लिया गया।

मणिपुर को प्राचीन काल में मेइथेई कहते थे। इसकी भाषा कुकीचिन (कुकी - बंगला शब्द है तथा चिन बर्मी भाषा का शब्द है जिसके अर्थ है पहाड़ी जातियाँ) थी। कुकी तथा चिन आदि जातियाँ निवास करती थीं। यह लोग अपने को अर्जुन के वंशज मानते हैं। सारा व्यापार स्त्रियाँ ही करती हैं।

श्री दामन्त के अनुसार यहाँ की लिपि का विकास बंगला लिपि द्वारा लगभग १७०० ई० में किया गया। 'फ० सं० - ७७' की वर्ण माला व कुछ शब्द दामन्त द्वारा प्रस्तुत किये गये थे परन्तु प्रियसन्² के अनुसार इस लिपि का आविष्कार एक हिन्दू राजा चराइरोंगवा ने किया, जिसने १७१० से १७३८ तक मणिपुर पर राज्य किया। वर्णमाला तथा लिपि के वाक्य का अनुवाद बिहारूप सिंह ने किया।

उत्तर पश्चिम की मध्य - कालीन लिपियाँ

उर्दू भाषा को लश्करी जुबान के नाम से भी सम्बोधित किया जाता था। लश्कर के अर्थ सेना हैं। तुर्की भाषा में उर्दू के अर्थ हैं सैनिक पड़ाव। जब मुसलमानों के आक्रमण होते थे तो सैनिकों को तात्कालिक नगर - निवासियों से अपनी दैनिक आवश्यकताओं के कारण बातचीत करनी पड़ती थी। शनैः शनैः अरबी -

1. Grierson : L. S. I. Vol. V Part II, Page - 115.

2. Ibid Vol. III, page - 22

खाम्ती लिपि

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ
इउ	अए	ए	एइ	आँ	आँ
इउ	अए	ए	एइ	आँ	आँ
औ	अऊ	अउ	अइ	अँ	ओइ
औ	अऊ	अउ	अइ	अँ	ओइ
अ	क	ख	च	ज	त
अ	क	ख	च	ज	त
थ	न	प	फ	ब	म
थ	न	प	फ	ब	म
य	र	ल	श	ह	का
य	र	ल	श	ह	का
कि	की	कु	कू	के	कै
कि	की	कु	कू	के	कै
<p>ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय</p> <p>मुना न कोन को लुं ज मां ज लुं न कू</p> <p>अर्थ - बहुत पहले एक मनुष्य के दो लड़के थे</p>					

मेई थेई लिपि

क ख ग घ अ च छ ज झ
 ङ ट ठ ड ढ ण त थ द
 ध न प फ ब भ म अ य र
 ल व उ श स ष ह क्ष का कि
 त की के कु कू कोइ कै कौ को
 कं कोंग कांग किंग कींग केंग कुंग कुंग

मी अ मा गी मा चा नी पा अ नी
 मनुष्य का एक उसका बच्चा नर दो
 लड़ थे मू मी एक मनुष्य के दो लड़के थे

उर्दू लिपि

अ	ब	प	त	ट	स
ا	ب	پ	ت	ٹ	ث
ज	च	ह	ख	द	ड
ج	چ	ح	خ	د	ڈ
ज	श	स	स	ज	त
ز	ث	س	ش	ص	ض
अ	ग	फ़	क़	ग	ल
ع	غ	ف	ق	ک	گ
व	ह	ह	ए	इ	ई
و	ھ	ہ	ی	د	ے
<p>علم سے بہتر کوئی دولت نہیں علم سے بہتر کوئی دولت نہیں</p>					

फ़ारसी — भारती भाषाओं के मिश्रण से एक नई भाषा उर्दू का जन्म लगभग चौदहवीं शताब्दी में हुआ। अरबी में मूलतः २८ अक्षर थे। फ़ारसी भाषा के मिश्रण से चार नई ध्वनियों के लिए 'पे' 'चे' 'झाल' 'गाफ़' जिनकी ध्वनि 'प' 'च' 'झ' 'ग' है अरबी में जोड़ दिये गये। उर्दू लिपि में ध्वनि की आवश्यकता की पूर्ति के लिए पांच चिह्न और जोड़ दिये गये। इस प्रकार उर्दू में ३७ अक्षर हो गये। इसमें स्वरों के उच्चारणार्थ ज़ेर, ज़बर, पेश आदि लगाने का भी प्रबन्ध किया गया परन्तु इनको घसीट लिपि में प्रयोग नहीं किया जाता (फ० सं० — ७८)।

इस लिपि में कठिनाई यह है कि कुछ उच्चरित शब्द व्यक्त नहीं किये जा सकते 'चन्द्र' को 'चन्दर' लिखना पड़ता है। इसके अतिरिक्त इसमें चिह्न कई हैं परन्तु उनकी ध्वनि एक है, जैसे 'से', 'सीन' 'स्वाद' की ध्वनि 'स' है, 'तो' व 'ते' की ध्वनि भी केवल 'त'। अक्षरों का प्रयोग अभ्यास पर निर्भर है। इसका प्रयोग कश्मीर में तथा उत्तर प्रदेश में किया जाता है।

अरबी — सिन्धी लिपि का उद्भव लगभग आठवीं शताब्दी में मोहम्मद बिन कासिम के सिन्धु देश के परास्त करने के पश्चात् हुआ। सिन्ध के निवासियों ने अपनी भाषा की ध्वनियों के अनुसार नये अक्षरों का निर्माण कर अरबी को प्रयोगात्मक बना कर इस लिपि का नाम अरबी — सिन्धी रखा। प्राचीन सिन्धी से आधुनिक सिन्धी बीसवीं श० के आरम्भ में पृथक् हो गयी और उसके लेखन में थोड़ा सा परिवर्तन, जो उल्लेखनीय नहीं है, कर दिया गया।

अरबी लिपि के २८ चिह्नों में २४ नये आविष्कारिक चिह्न जोड़ कर सिन्धी भाषा की ध्वनियों के उपयुक्त बनाया गया। इस प्रकार अरबी — सिन्धी — लिपि में ५२ चिह्नों का प्रयोग होने लगा। इसका विकास लगभग पन्द्रहवीं श० में हुआ अब इसका क्षेत्र केवल पाकिस्तान के सिन्ध प्रांत में रह गया। भारत में सिन्ध के निवासी इसको जीवित रखने का निरन्तर प्रयत्न करते चले आ रहे हैं परन्तु समय के साथ इसका प्रयोग भी कम होता जा रहा है (फ० सं० — ७९)।

वनियाकर लिपि का सिन्ध के महाजन लोग अथवा व्यापारी इसका प्रयोग अपना लेखा — जोखा गुप्त रखने के लिए किया करते थे, जिस प्रकार भारत में महाजन मुड़िया का प्रयोग करते थे। इस लिपि में शिरोरेखा का प्रयोग नहीं होता था। पाकिस्तान का जन्म होने से सिन्ध के महाजन भारत आ गये। अब वही लोग इसका प्रयोग यहाँ करते हैं परन्तु यह भी समय के साथ लोप होती जा रही है। इसमें केवल ३० अक्षर होते हैं परन्तु मात्राओं का अभाव होता है। वनियाकर की परिभाषा है, वनिया + आकर (अक्षर) अर्थात् वनियों (महाजनों) के अक्षर। इसका जन्म सत्रहवीं श० में हुआ और १८६८ में मान्यता प्राप्त हो गयी तथा इसमें स्वरों के चिह्न भी जोड़े गये (फ० सं० — ८०)।

हिन्दी — सिन्धी लिपि^१ को कुछ ब्राह्मणों ने अपने आपको अरबी भाषा से अलग रखने के लिए इसका विकास भी पन्द्रहवीं श० में किया (फ० सं० — ८१)।

टाकरी लिपि^२ शारदा लिपि का घसीट रूप है। 'टाकरी' शब्द ठाकुर (भगवान) से बन कर ठाकुरी तदनन्तर टाकरी हो गया। इसका प्रयोग कश्मीर के डोंगरी द्वारा, चम्बा व हिमाचल प्रदेश के कई भागों में होता था (फ० सं० — ८२)।

1. Grierson : L. S. I. Vol. VIII, Part I, page — 20.

2. Ibid, „ Part, II, Page — 719.

अरबी -- सिन्धी लिपि

फ	थ	स	ट	ठ	त	भ	प	ब	व	अ
ا	ب	پ	ت	ث	ث	ث	ث	ث	ف	
ध	झ	द	य	ख	ग	ग	ग	फ		
ق	گ	گ	ک	ی	د	ذ	ت			
ख	छ	च	या (ज)	ज	ह	द	ड	इ		
خ	ج	چ	ج	ج	ح	ی	ب	ن		
स	ल	न	म	इ	ज	र	ग	घ		
س	ل	ن	م	ز	ر	غ	ع			
ज	त	ण	झ	स	क	व	श			
ظ	ط	ر	ض	ص	ف	و	ش			
				ह	क	घ	झ			
				ه	ک	گ	ج			
ن	سلسلی	موجب	بنا	ذیر	اکر					
نہیں	سلسلے	موجب	بنا	ذیر	اکر					

वनियाकर लिपि

अ	इ	उ	ए	ऌ			
m	oo)	उ	c	c			
क	ख	ग	घ	ङ			
n	v	9L	5	2o			
च	छ	ज	झ	ण	त	थ	
V	६	u	≡		१	छ	
ड	ढ	न	प	फ	ब	भ	म
६	2	J	ट	>	०	u	n
य	र	ल	व	ह			
१		2	0	—			

फलक संख्या - ८०

हिन्दी -- सिन्धी लिपि

अ म	आ म।	इ 6	ई 6	उ 3	ऊ 3
ए मे	ऐ मे	ओ मे	औ मे	क म	ख 8
ग 7।	ग 7।	ग 13	ङ 2:	च 8	छ 6
ज 9	ज 14	झ 9	ञ 20	ट 7	ठ e
ड 7	ड 6	ढ 6	ड़ e	ण 11	त 9
थ 11	द 2	ध 2	न ✓	प 12	फ 12
ब 12	ब 12	ब 12	भ 12	म 12	य 12
र 1	ल 2	व 0	श 14	स 14	ह 7

फलक संख्या - ८१

टाकरी लिपि

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ
𑂀	𑂁	𑂂	𑂃	𑂄	𑂅	𑂆	𑂇
औ	औ	अं	अः	क	ख	ग	
𑂈	𑂉	𑂊	𑂋	𑂌	𑂍	𑂎	
घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट
𑂏	𑂐	𑂑	𑂒	𑂓	𑂔	𑂕	𑂖
ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न
𑂗	𑂘	𑂙	𑂚	𑂛	𑂜	𑂝	𑂞
प	फ	ब	भ	म	य	र	ल
𑂟	𑂠	𑂡	𑂢	𑂣	𑂤	𑂥	𑂦
ष	स	ह	का	कि	की	१२३४	५६७८
𑂧	𑂨	𑂩	𑂪	𑂫	𑂬	𑂭	𑂮

लाण्डा लिपि का उद्भव लगभग पन्द्रहवीं श० में अपभ्रंश प्राकृत भाषा 'वृच्छा' से हुआ। १८६८ में इसका संशोधन हुआ। इसको जाटकी (जाटों की) और हिन्दुकी (हिन्दुओं की) भी कहते थे। इसका प्रयोग सिन्ध, मुल्तान व सारे पंजाब में किया जाता था। इस लिपि के वर्ण तथा कुछ शब्द^१ 'फ० सं० - ८३' पर दिये गये हैं। शब्दों का अनुवाद ग्राहम बेली ने १९०८ में किया।

गुरमुखी को गुरु के मुख से निकली भाषा कहते हैं। इसका उपनाम 'पंजाबी' है। सिक्ख धर्म के गुरु श्री अंगद जी ने इसका आविष्कार, बोली की शुद्धता के लिए, ताकि गुरुवाणी का सही उच्चारण हो सके, शारदा व लाण्डा लिपि के वर्णों द्वारा सोलहवीं श० में किया। जब मुसलमानों का आगमन हुआ तो सर्वप्रथम पंजाब निवासी उनकी भाषा के सम्पर्क में आये। उनकी फ़ारसी भाषा में कई ध्वनियाँ नयी थीं, जैसे क़, ग़, ज़, ख़, फ़, ड़ आदि। अब नये चिह्न बनाना कठिन था इस कारण पंजाब के विद्वानों ने अपने गुरमुखी वर्णों के नीचे बिन्दी लगाकर फ़ारसी वर्णों की ध्वनियों का आविष्कार कर लिया जो शनैः शनैः देवनागरी लिपि में भी उर्दू व फ़ारसी के शब्दों के लिए प्रयोगात्मक बन गई। भारत के स्वतंत्र होने के पश्चात् जब हिन्दी भाषा के फ़ारसी शब्दों का हिन्दीकरण हुआ तब 'गलत' को 'गलत', 'जहाज' को 'जहाज', 'ख़बर' को 'खबर', 'ज़रूर' को 'जरूर' बोलने व लिखने लगे। इस लिपि के वर्णों का क्रम भी भिन्न है। इस लिपि में संयुक्त वर्ण नहीं होते, इसी कारण पंजाबी 'स्कूल' को 'सकूल', 'स्टोर' को 'सटोर', 'स्कूल' को 'सटूल' कहते हैं। इसकी मात्राओं में भी भिन्नता है। इसके वर्ण 'फ० सं० - ८४' पर दिये गये हैं।

कुछ आधुनिक लिपियाँ

मलयालम लिपि^२ : यह ग्रन्थ लिपि का घसीट रूप है। 'मलयालम' दो शब्दों 'मल' (पर्वत) + 'आल' (स्थान) अर्थात् पर्वतीय स्थान से बना है। इसका आविष्कार लगभग दसवीं श० में हुआ। इसका प्रयोग केरल प्रान्त में किया जाता है (फ० सं० - ८५)।

तुळु लिपि : इसका उद्भव मलयालम लिपि से हुआ। इसका प्रयोग कन्नड़ प्रान्त के दक्षिणी भाग कुर्ग में किया जाता है। शनैः शनैः इसकी जगह कन्नड़ लिपि ले रही है (फ० सं० - ८६)।

उड़िया लिपि : इसका उद्भव देवनागरी व बंगला द्वारा हुआ। इस लिपि में तेलुगु लिपि का भी समावेश है। उड़ीसा प्रान्त में इसका प्रयोग किया जाता है (फ० सं० - ८७)।

गुजराती : इसका विकास देवनागरी द्वारा लगभग सतरहवीं श० में हुआ। इसमें शिरो रेखा का प्रयोग नहीं किया जाता। यह गुजरात प्रान्त में प्रयोग की जाती है (फ० सं० - ८८)।

भारत की मुख्य लिपियों के कुछ शब्द 'फ० सं० - ८९' पर दिये गये हैं।

देवनागरी लिपि

देवनागरी लिपि का लगभग आधे भारत में प्रयोग किया जाता है। संस्कृत भाषा की भी यह मुख्य लिपि बन गई। इसका विकास उत्तर में गुप्त व कुटिल लिपि द्वारा हुआ परन्तु जन्म दक्षिण में हुआ।

1. Grierson : L. S. I. Vol. VIII, Part II, page - 311.
2. Guernon : L. S. I. Vol. IV, Page - 348.

लाण्डा लिपि

अ ऋ	आ ऌ	इ ८	उ ६	ए ८
औ ऋँ	क प	ख ध	ग ण	घ ५
च ष	छ क	ज अ	झ ऋ	ट ८
ठ ०	ड म	ढ ८	ण ऋ	त ३
थ ष	द म	ध ऋ	न म	प म
फ ०	ब व	भ ऋ	स म	य व
र १	ल ऋ	व यँ	श स ह	स ८

८ णी मी नृ ४॥ १ मूँ गी ८ ८ ८ ८
 ए की मानु खा रे दुइ गाभ रु थे
 अर्थः एक मनुष्य के दो पुत्र थे

फलक संख्या - ८३

गुरुमुखी लिपि

उ	अ	इ	स	ह	क	ख	ग
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
य	ड	व	ळ	ज	झ	अ	ट
ॡ	ॡ	ॡ	ॡ	ॡ	ॡ	ॡ	ॡ
ठ	ड	ढ	प	त	थ	द	ध
ॢ	ॢ	ॢ	ॢ	ॢ	ॢ	ॢ	ॢ
न	प	फ	ब	भ	म	य	र
ॣ	ॣ	ॣ	ॣ	ॣ	ॣ	ॣ	ॣ
ल	व	द	श	ख	ग	ज	झ
॥	॥	॥	॥	॥	॥	॥	॥
मात्रायेँ { दे०= । ि ि ॆ ॊ ॒ ॑ ॒ ॑ प०= । ि ि - = ॒ ॑ ॒ ॑							
का	कि	की	कु	कू	के	कै	को
॥	॥	॥	॥	॥	॥	॥	॥

मलयाळम लिपि

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ		
അ	ആ	ഇ	ഈ	ഉ	ഊ		
ഋ	എ	ഈ	ഐ	ഓ	ഔ		
ക	ഖ	ഗ	ഘ	ങ	ച	ഛ	ജ
ക	ഖ	ഗ	ഘ	ങ	ച	ഛ	ജ
ട	അ	ത	ത	ദ	ധ	ന	ത
ട	അ	ത	ത	ദ	ധ	ന	ത
ദ	ധ	ന	പ	ഫ	ബ	മ	മ
ദ	ധ	ന	പ	ഫ	ബ	മ	മ
യ	ര	ല	വ	ശ	ഷ	ഹ	
യ	ര	ല	വ	ശ	ഷ	ഹ	
ഓ	ഐ	സ	ഘ	ര	ര		
ഓ	ഐ	സ	ഘ	ര	ര		

तुळु लिपि

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ		
ಅ	ಆ	ಇ	ಀ	ಁ	ಃ		
ए	ऐ	ओ	औ	क	ख	ग	
ಀ	ಁ	ಃ	಄	ಕ	ಖ	ಗ	
घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ	ड
ಘ	ಚ	ಛ	ಜ	ಝ	ಟ	ಠ	ಡ
ढ	ण	त	थ	द	ध	न	प
ಢ	ಣ	ತ	ಥ	ದ	ಧ	ನ	ಪ
फ	ब	भ	म	य	र		
ಫ	ಬ	ಭ	ಮ	ಯ	ರ		
ल	व	श	स	ह			
ಲ	ವ	ಶ	ಸ	ಹ			

फलक संख्या - ८६

उड़िया लिपि

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ			
ଅ	ଆ	ଇ	ଈ	ଉ	ଊ	ଋ			
ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः				
ଏ	ଐ	ଓ	ଔ	ଅଂ	ଅଃ				
क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	
କ	ଖ	ଗ	ଘ	ଙ	ଚ	ଛ	ଜ	ଝ	
भ	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द		
ଭ	ଠ	ଡ	ଢ	ଣ	ତ	ଥ	ଦ		
ध	न	प	फ	ब	भ	म	य	र	
ଧ	ନ	ପ	ଫ	ବ	ଭ	ମ	ଯ	ର	
ळ	ल	व	श	ष	स	ह	क्ष		
ଲ	ଳ	ବ	ଶ	ଷ	ସ	ହ	କ୍ଷ		
		ड़	ढ़						
		ଡ଼	ଢ଼						

गुजराती लिपि

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ			
અ	આ	ઇ	ૈ	ઉ	ઊ	ઋ			
ऐ	है	ओ	औ	अं	अः				
ૈ	૬ૈ	ૐ	ૐ	અં	અઃ				
क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	
ક	ખ	ગ	ઘ	ઙ	ચ	છ	જ	ઝ	
अ	ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध
અ	ટ	ઠ	ડ	ઢ	ણ	ત	થ	દ	ધ
न	प	फ	ब	भ	म	य	र	ल	व
ન	પ	ફ	બ	ભ	મ	ય	ર	લ	વ
श	ष	स	ह	ळ	क्ष	त्र	ज्ञ		
શ	ષ	સ	હ	ળ	ક્ષ	ત્ર	જ્ઞ		

मुख्य भारतीय लिपियों के कुछ शब्द

तमिल	உங்களுடைய பெயர் என்ன उङ्गळ् पेंयर् एन्न - आपका नाम क्या है
मलयालम	നി കളുടേ പേര് എന്താണു नि कलुडे पेरं एन्ताणं = तुम्हारा नाम क्या है
कन्नड़	ನಿಮ್ಮ ಹೆಸರು ಏನು निम्म हैसरु एनु = आपका नाम क्या है
तेलुगु	నీ పేరు ఏమి नि पेरु एमि = आपका नाम क्या है
बंगला	আপনার নাম কি आपनार नाम कि = आपका नाम क्या है
उड़िया	ସତ୍ୟ ମେଘ ଜୟତେ सत्य मेव जयते
गुजराती	સત્ય મેઘ જયતે सत्य मेव जयते
पंजाबी	ਮਕਾਨ ਦੀ ਕਚੀ ਮਾਂ ਵੀ मकान दिया कचियां कंधां
	मकान की कच्ची दीवारें

मानचित्र भारत की भाषाओं का



देवनागरी का जन्म : देवनागरी की प्रथम स्पष्ट झलक आठवीं शताब्दी के राजा दन्तिदुर्ग द्वितीय (इसको दन्तिवर्मन के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है) के दान-पत्रों में दृष्टिगोचर हुई । इस राजा ने ७४७-७५३ तक दक्षिण में राज्य किया । यह मनसेख राष्ट्रकूट वंश का संस्थापक था । इसने ७५३ में अपने तीन ताम्र - दान - पत्र अंकित करवाये जो समनगढ़ के पहाड़ी दुर्ग से प्राप्त हुए । यह दुर्ग बेलगाँव से २४ मील दूर कोल्हापुर जनपद में स्थित है । इस दक्षिणी देवनागरी को 'नन्दीनागरी' के नाम से सम्बोधित करते थे । नन्दीनगर बंगलीर से ३६ मील उत्तर की ओर स्थित है । इस देवनागरी का नन्दीनगर में अधिक प्रयोग रहा हो, इस कारण नन्दीनागरी कहलाने लगी हो । उपर्युक्त दान पत्रों^१ की प्रथम दो पंक्तियाँ 'फ० सं० - ९१' पर दी गई हैं ।



फलक संख्या - ९१

पाठ का लिप्यंतरण : "स्वस्ति स वो व्याद्वेधसा धाम यन्नाभिकमलं कृतं हरश्च यस्य कान्तेन्दकलया कमलं कृतं..."

इसी का अनुवाद : "वह (भगवान) आप की रक्षा करे जिसकी नाभि से कमल उत्पन्न हुआ है और (वह) हर जिसके सिर को द्विज का सुन्दर चन्द्रमा सुशोभित करता है..."

दशवीं शताब्दी में इस लिपि ने अपना वयस्क रूप धारण कर लिया और बारहवीं शताब्दी में यह विकसित हो गई । तदनन्तर इसमें कुछ परिवर्तन किये गये, उदाहरणार्थ, शिरोरेखा का प्रयोग प्रत्येक शब्द पर कुछ दूरी रख कर किया जाने लगा, स्वरों की मात्रायें बढ़ गईं आदि । यह परिवर्तन नाम मात्र के थे । पन्द्रहवीं शताब्दी में इसका विकास पूर्ण हो गया । जिस प्रकार भारत तथा अन्य देशों की प्राचीन लिपियों के नाम कल्पित हैं, उसी प्रकार 'देवनागरी' का नाम भी कल्पित है ।

1. Fleet : I. A. Vol. XI, Page - 119.

देवनागरी नामकरण के विविध कारण :

१. सम्भवतः इसका प्रचार नगरों में रहा हो ।
२. गुजरात के नागर ब्राह्मणों में अधिक प्रचलित रही हो ।
३. तांत्रिक - यंत्रों में बनने वाले चिह्न देवनागरी से समानता रखते हों ।
४. देव - भाषा संस्कृत लिखने के लिये प्रयोग की जाती थी इससे यह नाम पड़ा हो ।
५. काशी को देवनगर कहा जाता था और इसका प्रयोग यहाँ अधिक रहा हो ।
६. प्राचीन काल में राजाओं को 'देव' के उपनाम से सम्बोधित करते थे, सम्भवतः यह नाम "देव" क नाम से पड़ गया हो ।
७. दक्षिण में नन्दिनागरी, नन्दी नगर के कारण, कहलाई ।

देवनागरी लिपि की कुछ विशेषतायें :—

१. पूर्णता के निकट : जो बोला जाये वह लिखा जाये, जो लिखा जाये वह पढ़ा जाये । यह बात संसार की अन्य लिपियों में नहीं पाई जाती, जैसे....
(क) रोमन में लिखते हैं 'बुट (But)' पढ़ते हैं बट, लिखते हैं 'क्नोव (Know)' पढ़ते हैं 'नो' । फ्रेंच भाषा में लिखते हैं लुईस (Louis) या लाओस (Laos) पढ़ते हैं लुई या लाओ ।
(ख) उर्दू में वे + काफ़ को मिलाकर लिखने में बुक, बक, बिक तीनों पढ़े जाते हैं ।
२. एक चिह्न एक ध्वनि : यह अन्य लिपियों में (भारत की लिपियों को छोड़कर) नहीं पाया जाता, जैसे — रोमन लिपि के चिह्न 'A = अ, आ, ए, ऐ'; 'C = स, क'; 'O = उ, ऊ, ओ, आ' की विविध ध्वनियाँ हैं ।
३. एक ध्वनि एक चिह्न : उर्दू में 'स' ध्वनि के लिये तीन (सीन, स्वाद, से) तथा 'त' की ध्वनि के लिये दो (तो, ते) अक्षर होते हैं । रोमन में 'स' के लिये 'C, S, SS, (Discuss)' और 'Sc (Science)' तथा 'क' के लिये 'C (Cut), K (Kite), Ch (Chemist), ck (Stock)' और 'Q (Quite)' होते हैं जो देवनागरी में नहीं हैं ।
४. वर्णों के नामों व ध्वनियों में साम्य : 'क', नाम भी 'क' ध्वनि भी 'क' परन्तु रोमन में नाम 'की', 'एस' ध्वनि व, स । उर्दू में नाम अलिफ़, काफ़, स्वाद ध्वनि अ, क, स ।
५. वर्ण मूक नहीं बनाये जाते : इस लिपि में वर्णों का प्रयोग मूक बना कर नहीं करते जैसे रोमन में नी और नो (Knee, Know) का 'K', लुई (Louis) का 'S' शांत है, इसी प्रकार सायकालोजी (Psychology) का 'P' और काम (Calm) का 'L' ।
६. वैज्ञानिक लिपि : संसार की कोई भी लिपि उच्चारण तथा प्रयोग की दृष्टि से इतनी वैज्ञानिक नहीं है । इसमें सब स्वर और व्यंजन मिलाये जायें तो ४७ या ४८ चिह्न पाये जाते हैं जो लगभग भारत की सभी लिपियों में विद्यमान हैं ।

स्पर्श	ह्रस्व	प्रह	अं	अः	नासिकः	क + ह = ख = महा प्राण
व्यंजन	ह्रस्व	महा	अं	अः	नासिकः	नाक से ध्वनि आना = नासिक या अनुनासिक
कंठ्य	क्	ख	ग	घ	ङ	जिह्वा को हलक में लगाकर
तालव्य	च्	छ	ज	झ	ञ	„ तालू में
मूर्धन्य	ट्	ठ	ड	ढ	ण	„ मूर्धा „
दंत्य	त्	थ	द	ध	न	„ दाँतों „
ओष्ठ्य	प्	फ	ब	भ	म	ओठों को मिला कर खोलना
अलस्य	य्	र	ल्	व्		स्वर = अ आ इ ई
अघोष ऊ०	श्	ष्	स्			उ ऊ ए ऐ
सघोष ऊ०	ह्					ओ औ अं अः
शुद्ध अनुस्वार		ं				ऋ ॠ

७. व्यक्त करने की क्षमता : संसार की अनेक भाषाओं को व्यक्त करने की क्षमता रखती है ।

देवनागरी लिपि के कुछ दोष :

देवनागरी लिपि में इतनी विशेषतायें होने पर भी कुछ ऐसे दोष हैं जो इसके व्यापक होने में बाधक हैं, जैसे.....

१. चारों ओर मात्रायें लगने के और शिरोरेखा के कारण लिखने में जटिल तथा गतिरोधक है ।
२. कुछ संयुक्ताक्षरों में पढ़ी जाने वाली ध्वनि लिखी पहले जाती है, उदाहरणार्थ, 'प्रेम, द्रोह' आदि में ।
३. 'ङ' 'ञ' का प्रयोग केवल संयुक्ताक्षरों में ही होता है । जिसका प्रयोग अनुस्वार के द्वारा हो सकता है । दो अक्षर निरर्थक हैं ।
४. 'ब' द्वयोष्ठ्य और दत्योष्ठ्य दोनों ही है । 'स्वर' में द्वयोष्ठ्य है तथा 'वीर' में दत्योष्ठ्य है ।
५. 'र' संयुक्ताक्षरों में तीन रूप धारण करता है - 'पूर्व', क्रम तथा कृमि' आदि शब्दों में ।
६. 'इ' का प्रयोग लिखने में पहले पढ़ने में बाद में होता है, जैसे - 'पिटना, टिकना' आदि ।
७. कुछ अक्षरों के दो रूप हैं, जैसे, 'अ, अ, ण, ण, ल, ल, झ, झ; ख, ख' आदि ।
८. कुछ शब्दों के दो रूप हैं, जैसे, गयी (गया से) गई; गये, गए; कौवा, कौआ आदि ।
९. कुछ शब्दों में लिखने व पढ़ने में अन्तर हो जाता है :—
लिखना = बनना, मिलना, यमुना, रखा, करता आदि ।
पढ़ना = बन्ना, मिलना, जमुना, रखा, कर्ता आदि ।
१०. इसके अक्षर अधिक जगह घेरते हैं ।
११. मुद्रण के लिये तीन से अधिक चिह्नों का प्रयोग करना पड़ता है ।

देवनागरी - ग्यारहवीं श०

परमार वंश : का संस्थापक कृष्ण राज (उपेन्द्र) था । यह पहले गुजरात में रहता था परन्तु बाद में आबू पर्वत के निकट अपने स्वतंत्र राज्य की स्थापना की जिसका सर्वप्रथम स्वतंत्र शासक हर्ष था । इसके पश्चात् मालवा के दो शासक वाक्पति मुंज तथा सिन्धु राज हुये और फिर भोज राजा हुआ जिसने १०१० से १०५५ ई० तक राज्य किया । तत्पश्चात् जयसिंह और उसका उत्तराधिकारी उदयादित्य शासक बना जिसने १०५९ से १०८८ ई० तक राज्य किया । इसके बाद इस वंश के कई निर्बल राजा हुये जो राज्य को सुरक्षित न रख सके । अन्त में अलाउद्दीन खिलजी के सेनापति ऐनलमुल्क ने मालवा पर विजय प्राप्त कर ली ।

उदयादित्य के अभिलेखों के वर्ण तथा कुछ शब्द 'फ० सं० - ९२' पर दिये गये हैं ।

देवनागरी - बारहवीं श०

कलिग राज : ने दक्षिण कोशल को विजय करके अपने पुत्र रतन राज प्रथम को वहाँ का प्रांत पति बना दिया । पिता की मृत्यु के पश्चात् वह स्वतंत्र हो गया । यह कलचुरी वंश का था जिसको हैहय वंश के नाम से भी सम्बोधित करते हैं । इसी ने रतनपुर नगर की स्थापना की । उसने बहुत से मन्दिर भी बनवाये । उसके पश्चात् उसका पुत्र पृथ्वी देव प्रथम राजगद्दी पर बैठा । तदोपरान्त उसका पुत्र जाजल देव शासक बना जिसने जाजलपुर नगर बनवाया । रतनपुर से एक ३१ पंक्तियों का शिलालेख प्राप्त हुआ । रतनपुर बिलासपुर से १६ मील उत्तर की ओर है । इसकी प्रतिलिपि तथा अनुवाद डॉ० कलिहान ने किया । यह शिलालेख नागपुर के संग्रहालय में सुरक्षित है । इसकी भाषा संस्कृत है । इसकी वर्णमाला तथा कुछ शब्द^१ 'फ० सं० - ९३' पर दिये गये हैं । उसी के अनुसार कलचुरी संवत् ८६६ है । जाजलदेव का शासन काल था, ईसा की १११४ से मिलता है ।

देवनागरी का विकास

देवनागरी लिपि का शनैः शनैः विकास, जो ब्राह्मी से हुआ, 'फ० सं० - ९४ तथा ९४ क' पर दिया गया है । उसका विवरण निम्नलिखित है :—

१. ब्राह्मी : अशोक के गिरनार के शिलालेख से लिये गये वर्ण दिये गये हैं ।
२. दूसरी श० : मथुरा से प्राप्त एक अभिलेख^२ से लिये गये वर्ण हैं । यह अभिलेख एक शिला पर उत्कीर्ण था और कंकाली - टीला (मथुरा) के उत्खनन से प्राप्त हुआ था । यह उत्खनन कार्य १८८८ में बर्गस द्वारा किया गया था । यह कुषाण वंशीय राजा कनिष्क से सम्बन्धित था । इसको बुह्लर ने पढ़ा था । इसकी भाषा संस्कृत व प्राकृत मिश्रित थी ।
३. चौथी श० : गुप्त लिपि^३ के वर्ण दिये गये हैं । यह वर्ण इलाहाबाद के स्तम्भ पर ३३ पंक्तियों में गुप्त वंशीय राजा समुद्र गुप्त की प्रशंसा में राजा चन्द्र गुप्त द्वितीय (c. ३७५ - ४१४ ई०) द्वारा उत्कीर्ण कराये गये थे । इसको पहले कैप्टेन ट्रायर ने १८३४ में पढ़ा तदनन्तर इसको जेम्स प्रिसेप ने पूर्ण

1. E. I. Vol. 1, Page - 14.

2. E. I. Vol. I, Page - 371.

3. C. I. I. Vol. III, Page - 1.

देवनागरी -- ग्यारहवीं श०

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ
अ	आ	इं	ईं	उ	ऊ	ए	ऐ
ओ	औ	ः	:	क	ख	ग	घ
ऊ	अ	०	:	क	ख	ग	घ
ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट	ठ
ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट	ठ
ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न
ट	ढ	ण	त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म	य	र	ल व
प	फ	ब	भ	म	य	र	ल व
श	ष	स	ह				
श	ष	स	ह				

देवनागरी -- बारहवीं श०

अ	आ	इ	ई	उ	ए	ऐ	क	ख	ग	
अ	आ	इ	ई	उ	ए	ऐ	क	ख	ग	
घ	ङ	ट	ठ	ड	ण	त	थ	द	ध	न
घ	ङ	ट	ठ	ड	ण	त	थ	द	ध	न
प	फ	भ	म	य	र	ल	व	श	ष	
प	फ	भ	म	य	र	ल	व	श	ष	
स	ह	लै	क्षि	क्ष्य	प्रे	श्री				
स	ह	लै	क्षि	क्ष्य	प्रे	श्री				
तद्वं	म्यो	द्वि	दय	आ	सी	द्य				
तद्वं	म्यो	द्वि	दय	आ	सी	द्य				
ता	जाय	त्र	द्वि	दयाः						
तो	जाय	न्त	द्वि	दयाः						

देवनागरी का विकास

ब्रा०	दू०श०	चौ०श०	छ०श०	सा०श०	आ०श०	न०श०	द०श०	ग्रा०श०	बा०श०	ते०श०	प०श०	आध०
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ		ॐ			ॐ		ॐ	ॐ	ॐ
इ	इ	इ	इ	इ	इ	इ	इ	इ	इ	इ	इ	इ
ऋ	ऋ	ऋ	ऋ	ऋ	ऋ	ऋ	ऋ	ऋ	ऋ	ऋ	ऋ	ऋ
ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ	ॠ
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ
ॡ	ॡ	ॡ	ॡ	ॡ	ॡ	ॡ	ॡ	ॡ	ॡ	ॡ	ॡ	ॡ
ए	ए	ए	ए	ए	ए	ए	ए	ए	ए	ए	ए	ए
ॳ	ॳ	ॳ	ॳ	ॳ	ॳ	ॳ	ॳ	ॳ	ॳ	ॳ	ॳ	ॳ
ॴ	ॴ	ॴ	ॴ	ॴ	ॴ	ॴ	ॴ	ॴ	ॴ	ॴ	ॴ	ॴ
ॵ	ॵ	ॵ	ॵ	ॵ	ॵ	ॵ	ॵ	ॵ	ॵ	ॵ	ॵ	ॵ
ॶ	ॶ	ॶ	ॶ	ॶ	ॶ	ॶ	ॶ	ॶ	ॶ	ॶ	ॶ	ॶ
ॷ	ॷ	ॷ	ॷ	ॷ	ॷ	ॷ	ॷ	ॷ	ॷ	ॷ	ॷ	ॷ
ॸ	ॸ	ॸ	ॸ	ॸ	ॸ	ॸ	ॸ	ॸ	ॸ	ॸ	ॸ	ॸ
ॹ	ॹ	ॹ	ॹ	ॹ	ॹ	ॹ	ॹ	ॹ	ॹ	ॹ	ॹ	ॹ
ॺ	ॺ	ॺ	ॺ	ॺ	ॺ	ॺ	ॺ	ॺ	ॺ	ॺ	ॺ	ॺ
ॻ	ॻ	ॻ	ॻ	ॻ	ॻ	ॻ	ॻ	ॻ	ॻ	ॻ	ॻ	ॻ
ॼ	ॼ	ॼ	ॼ	ॼ	ॼ	ॼ	ॼ	ॼ	ॼ	ॼ	ॼ	ॼ
ॽ	ॽ	ॽ	ॽ	ॽ	ॽ	ॽ	ॽ	ॽ	ॽ	ॽ	ॽ	ॽ
ॿ	ॿ	ॿ	ॿ	ॿ	ॿ	ॿ	ॿ	ॿ	ॿ	ॿ	ॿ	ॿ
॰	॰	॰	॰	॰	॰	॰	॰	॰	॰	॰	॰	॰
ॱ	ॱ	ॱ	ॱ	ॱ	ॱ	ॱ	ॱ	ॱ	ॱ	ॱ	ॱ	ॱ
ॲ	ॲ	ॲ	ॲ	ॲ	ॲ	ॲ	ॲ	ॲ	ॲ	ॲ	ॲ	ॲ
ॳ	ॳ	ॳ	ॳ	ॳ	ॳ	ॳ	ॳ	ॳ	ॳ	ॳ	ॳ	ॳ
ॴ	ॴ	ॴ	ॴ	ॴ	ॴ	ॴ	ॴ	ॴ	ॴ	ॴ	ॴ	ॴ
ॵ	ॵ	ॵ	ॵ	ॵ	ॵ	ॵ	ॵ	ॵ	ॵ	ॵ	ॵ	ॵ
ॶ	ॶ	ॶ	ॶ	ॶ	ॶ	ॶ	ॶ	ॶ	ॶ	ॶ	ॶ	ॶ
ॷ	ॷ	ॷ	ॷ	ॷ	ॷ	ॷ	ॷ	ॷ	ॷ	ॷ	ॷ	ॷ
ॸ	ॸ	ॸ	ॸ	ॸ	ॸ	ॸ	ॸ	ॸ	ॸ	ॸ	ॸ	ॸ
ॹ	ॹ	ॹ	ॹ	ॹ	ॹ	ॹ	ॹ	ॹ	ॹ	ॹ	ॹ	ॹ
ॺ	ॺ	ॺ	ॺ	ॺ	ॺ	ॺ	ॺ	ॺ	ॺ	ॺ	ॺ	ॺ
ॻ	ॻ	ॻ	ॻ	ॻ	ॻ	ॻ	ॻ	ॻ	ॻ	ॻ	ॻ	ॻ
ॼ	ॼ	ॼ	ॼ	ॼ	ॼ	ॼ	ॼ	ॼ	ॼ	ॼ	ॼ	ॼ
ॽ	ॽ	ॽ	ॽ	ॽ	ॽ	ॽ	ॽ	ॽ	ॽ	ॽ	ॽ	ॽ
ॿ	ॿ	ॿ	ॿ	ॿ	ॿ	ॿ	ॿ	ॿ	ॿ	ॿ	ॿ	ॿ

फलक संख्या - १४ क

रूप से १८३७ में पढ़ा और यह रहस्योद्घाटन बंगाल एशियाटिक सोसायटी के जर्नल के (Vol. III) पृष्ठ ९६९ पर प्रकाशित हुआ ।

४. छठी श० : के वर्ण^१ मन्दसौर के यशोधर्मन् (५२५ - ५३५ ई०) के शिलालेख से लिये गये हैं । इसका काल ५३२ ई० निर्धारित किया गया है ।
५. सातवीं श० : के वर्ण^२ ताम्र - पत्र पर उत्कीर्ण अभिलेख से लिये गये हैं । यह वर्ण कन्नौज के राजा हर्षवर्धन (६०६ - ६४७ ई०) ने उत्कीर्ण कराये थे ।
६. आठवीं श० : के वर्ण^३ राष्ट्रकूट वंशीय राजा गोविन्द राज तृतीय (७९३ - ८१४ ई०) ने अपने तीन ताम्र - दान - पत्रों में अंकित करवाये थे । इनकी तिथि अभिलेख के अनुसार ४ मई ७९४ है ।
७. नवीं श० : के वर्ण^४ बचकुला (जोधपुर) से प्राप्त एक अभिलेख से लिये गये हैं जो प्रतिहार वंशीय राजा नाग भट्ट द्वारा उत्कीर्ण कराये गये थे । इस अभिलेख का काल ८१० ई० माना गया है । नागभट्ट ने ८०५ से ८३३ तक जोधपुर में राज्य किया ।
८. दसवीं श० : के वर्ण^५ अलवर से प्राप्त एक शिलालेख से, जो प्रतिहार वंशीय राजा विजय पाल (९५९ - ९८९ ई०) द्वारा उत्कीर्ण कराये गये थे ।
९. ग्यारहवीं श० : में एक अभिलेख परमार वंशीय राजा उदयादित्य की प्रशंसा में एक मन्दिर की दीवार पर उत्कीर्ण कराया गया था । उत्कीर्ण करने वाले ने स्वयं एक वर्ण माला उत्कीर्ण कर दी । वही वर्णमाला यहाँ दे दी गई है ।
१०. बारहवीं श० : के वर्ण^६ रतनपुर से एक ३१ पंक्तियों का शिलालेख, जो कलचुरी वंशीय राजा जाजल्लदेव (११६५ - ११७० ई०) ने ८ नवम्बर १११४ ई० में उत्कीर्ण कराया था, से लिये गये हैं ।
११. तेरहवीं श० : के वर्ण परमार वंशीय राजा धारा वर्ण द्वारा १२०८ ई० में उत्कीर्ण कराये गये एक अभिलेख से लिये गये हैं । यह अभिलेख अजमेर के संग्रहालय में सुरक्षित है । इसको वर्णमाला ओशा जी ने स्वयं तैयार की थी ।
१२. पन्द्रहवीं श० : इसके वर्ण विजयनगर के राजाओं के अनेक दानपत्रों से, जो संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण कराये जाते थे, लिये गये हैं ।

देवनागरी में संशोधन

स्वामी सत्यभक्त^७ द्वारा : बोर गाँव, वर्धा में आपने एक 'सत्याश्रम' स्थापित किया है । आप महान् विचारक व सुधारक हैं । आपने देवनागरी लिपि को सरल बनाने के लिये अपने संशोधन प्रस्तुत करके उसका नाम भी भारती लिपि रखा है (फ० सं० - ९५) ।

1. E. I. Vol. I, Page - 150.
2. „ „ „ Page - 220.
3. E. I. Vol. III, Page - 106.
4. E. I. Vol. IX, Page - 198.
5. गौरी शंकर जी० ओशा : भारतीय प्राचीन लिपि माला, Plate - 25.
6. E. I. Vol. I, Page - 14.
7. स्वामी सत्यभक्तजी के सौजन्य से लेखक द्वारा प्राप्त ।

स्वामी सत्यभक्त द्वारा सुधार

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ
 ँ गा ण ण ण ण ण ण ण ण

क ख ग घ ङ च छ ज्ञ थ द्य
 ञ ञगग ञ ञ ञ ञ ञ ञ

फ ब म श ह ट ठ ड शं द प
 ष ञ ञ स ञ टं ठं डं ञ द ए

ग गा गि गी गु गू गे गै गो गौ गृ
 ग गा गृ गृ गृ गृ गृ गृ गृ गृ

सत्य भक्त . सत्याश्रम . वरदा . मं प्र .
 सत्यभक्त , सत्याश्रम , वरदा , मं प्र .

श्री श्रवण कुमार गोस्वामी^१ द्वारा : आपने भी अपने विचार उसको सरल बनाने तथा टंकण में गति बढ़ाने के लिये दिये हैं (फ० सं० - ९६) ।

श्री रामनिवास द्वारा : 'ह' का चिह्न निर्धारित करके परिवर्तन किया (फ० सं० - ९७) ।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन^२ द्वारा : चिह्नों को कम करके सरल बनाने का प्रयास किया (फ० सं० - ९७) ।

श्री बी० बी० लाल द्वारा : आपने अन्य भारतीय लिपियों के सब अक्षरों में से कुछ अक्षर लेकर एक नवीन लिपि का निर्माण करने का प्रयास किया है (फ० सं० - ९७) ।

कुछ अन्य सुधारकों द्वारा : 'ख, भ, घ' की आकृतियों में परिवर्तन किया गया है ताकि लिखने में अन्तर स्पष्ट हो जाये (फ० सं० - ९७) ।

शासकीय सुधार द्वारा : मात्राओं को सीधी ओर लगाने का तथा मात्राओं को छोटा बड़ा करके सरल बनाने का प्रयास किया है (फ० सं० - ९७) ।

सरलता की ओर जितने संशोधन हुए हैं उनका प्रयोग अभी तक व्यापक नहीं हो सका, कुछ तो लिखने के अभ्यास के कारण तथा कुछ कठिनाईयों के कारण जो मुद्रण तथा टंकण मशीनों में करना अनिवार्य हो जायेगा । इन संशोधनों से भविष्य सुधरेगा परन्तु भूत बिगड़ेगा ।

देवनागरी - ब्रेल - लिपि

इस लिपि का जन्म फ्रांस देश के एक नेत्रहान अध्यापक लुई ब्रेल (Louis Braille) द्वारा १८२९ में हुआ । ब्रेल का जन्म १८०९ में तथा स्वर्गवास १८५२ में हुआ । १९५१ में भारत सरकार ने हिन्दी - ब्रेल का निर्माण किया । इस लिपि में छः बिन्दु :: इस प्रकार होते हैं । इसकी गणना बाईं ओर से नीचे से ऊपर की ओर १, २, ३ की जाती है । तत्पश्चात् सीधी ओर के बिन्दु ऊपर से नीचे की ओर गिने जाते हैं ४, ५, ६ । यह बिन्दु बाईं ओर के किनारे पर मोटे कागज में उभरे हुये होते हैं जिनको छू कर नेत्रहीन विद्यार्थी पढ़ लेता है । इन छः बिन्दुओं की सहायता से कोई भी लिपि पढ़ी जा सकती है (फ० सं० - ९८) ।

देवनागरी - आशु - लिपि

इसको अंग्रेजी में शार्ट हैण्ड (Short Hand) कहते हैं । इसके आविष्कर्ता सर आइजक पिटमैन (Sir Issac Pitman) थे जिन्होंने बड़े परिश्रम से इसको १८३७ में तैयार किया । इसी प्रणाली के आधार पर १९२५ में श्री राघोलाल त्रिवेदी ने और १९३७ में श्री एस० पी० सिन्हा ने हिन्दी व उर्दू की आशु - लिपि तैयार की ।

१९२२ में श्री ऋषि लाल अग्रवाल के मन में एक हिन्दी की आशु - लिपि तैयार करने का विचार उठा । उस समय आप अंग्रेजी शार्ट हैण्ड के अच्छे ज्ञाता थे । अन्त में परिश्रम करते करते आपने 'ऋषि प्रणाली' के नाम से एक आशु - लिपि तैयार कर ली जो १९३८ में प्रकाशित हुई तथा भारत सरकार ने १९४७ में इसको मान्यता प्रदान की ।

1. साप्ताहिक हिन्दुस्तान - २७ जुलाई १९६९ - के सौजन्य द्वारा प्राप्त ।
2. श्री भोलानाथ तिवारी के सौजन्य से प्राप्त ।

श्रवण कुमार गोस्वामी द्वारा सुधार

ऐ	ओ	औ	अं	अः				
ए	अ५	अ५	अं	अः				
मात्रायेः :-								
आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ
।	५	५	७	९	८	८	५	५
का	क५	क५	क७	क९	क८	क८	क५	क५
अन्य चिन्ह :-								
क्र	कृ	की	की	कु	कै			
क	कट	क	क	क	क७			
ज०म०मन श०ख अ०र अलग०								
च०धर० म० गा० म०त्रता थ०								
जुम्मन शेख और अलगू चौधरी में गाड़ी मित्रता थी								

फलक संख्या - ९६

देवनागरी के कुछ अन्य संशोधित रूप

हिन्दी साहित्य सम्मेलन - प्रयाग, द्वारा....

अ आ ञि औ अं अ ए ऐ ओ औ
कट्टर = कट्टर, ज्ञ=ग्य, ज्ञान=ग्यान

श्री राम निवास द्वारा.....

'ह' का चिन्ह = c, क+ह = कृ (ख), घ = गृ

श्री बी० बी लाल द्वारा.... नवीन अक्षर..

भ भा भी भी . ठ ध ण द छ

कुछ अन्य सुधार ---

ख = ख, भ = भ, ध = ध.

शासकीय सुधार : ----

'इ' की मात्रा कि = की, गी और ईकी = गी

नेत्र हीनों के लिए ब्रेल लिपि

300४ २००५ १००६	अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ
क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ	
ट ठ ड ढ ण त थ द ध न	
प फ ब भ म य र ल व	
श ष स ह क्ष ज ङ ढ ऋ ॰ ॱ	
१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०	

'फ० सं०- ९९' पर यह बतलाया गया है कि कौन सी रेखा किस ओर जाती है। मोटी तथा पतली रेखाओं द्वारा ही वर्णों में परिवर्तन आ जाता है। इसमें 'व' का उच्चारण 'ख' से, 'श' का 'स' से तथा 'ण' का 'न' से बना लिया जाता है। पढ़ने पर जिसकी आवश्यकता हो उच्चारण कर लिया जाता है। इस कारण 'ष - श - ण' के लिये कोई अन्य चिह्न नहीं हैं। स्वरों के लिये केवल बिन्दु व डंश प्रयोग में लाये जाते हैं, जो इस प्रकार हैं :—१ - 'अ • आ -', २ - 'ए • ओ -' तथा ३ - 'ई • ऊ -'। इनके समझने के लिये इनका उचित स्थान पर प्रयोग ही ठीक उच्चारण कराता है।

आशु - लिपि की परिभाषा : संसार की कोई भी भाषा व लिपि क्यों न हो, भाषा की गति लिपि की गति से बहुत अधिक होती है। मनुष्य चाहे कितनी भी शीघ्रता से लिखे परन्तु वह उन शब्दों व वाक्यों को जो उसने सुने हैं उस गति से नहीं लिख सकता जितनी गति से वह सुन रहा है। इस लिपि का आविष्कार सुनने व लिखने की शक्ति में साम्य लाने के लिये किया गया है। इससे सुना गया कोई शब्द भी छूट नहीं सकता और न ही बोलने वाले के शब्दों के आशय में कोई परिवर्तन आ सकता है। इसको सीखने के लिये व्याकरण का अच्छा ज्ञान होना अनिवार्य है। इसमें शब्दों के चिह्न भी पृथक् होते हैं।

इस लिपि के वर्णन से पाठक आशु - लिपि कदापि नहीं सीख सकते। यहाँ तो केवल इस बात का बोध कराया गया है कि इस प्रकार की लिपि भी विद्यमान है।

अंक

भारत में अंकों का प्रयोग कब आरम्भ हुआ तथा इनका जन्म कैसे हुआ कोई नहीं जानता। संसार के लगभग सभी विद्वान् एक मत हैं कि गणना का जन्म डँगलियों द्वारा हुआ होगा और लिखने में लकीरों का प्रयोग किया गया था जिसके प्रमाण प्राचीन लिपियों के रहस्योद्घाटन से विदित होते हैं। रेखायें, खड़ी व लेटी दोनों ही प्रकार की बनाई गईं।

आज से लगभग दो सौ वर्ष पूर्व एक साधारण अशिक्षित नागरिक बीस के आगे नहीं गिन पाता था। बीस को कोड़ी या कोरी कहते थे। यदि ८५ गिनना है तो उनको ८५ नहीं अपितु चार कोरी पाँच कहा जाता था।

आरम्भ में अंकों का प्रयोग अक्षरों द्वारा किया जाता था। अक्षरों को अंकों के समान निर्धारित कर लिया जाता था।

शून्य का निर्माण भारत में ही हुआ। किस काल में हुआ, ज्ञात नहीं। परन्तु कुषाण काल के अंकों में शून्य का अभाव है। शून्य निर्माण का काल नवीं श० निर्धारित किया गया है। भारतीय लिपियों के अंक 'फ० सं० - १००' पर दिये गये हैं। देवनागरी के कुछ अंकों का विकास नोचे की ओर दिया गया है।

देवनागरी आशु -- लिपि के कुछ चिह्न

अ . . .	आ - - १	ट	ल	र
ए . . .	ओ - - २	प	च	स
ई . . .	ऊ - - ३	क	स	स
→ क + ख — ग + घ	(आध (ऊद			
↙ च / छ / ज / झ) द) - दो) थी			
↓ । ट + ठ । ड + ढ	(आधा (ईदू			
() त () थ () द () ध	- (ओदा) थू			
↘ प × फ ↘ ब × म	शब्द - चिन्ह			
य र ल व	पास पेश आपस पेशतर			
स ह म न	स्थर			
२ इ २ ढ २ ड	उपर किधर जिधर			
८ सक्र . ८ टक . ८ पक .	खाना गिरना गिराना			
{ } तत				
दोनों ओर से लिखा जाता है				

फलक संख्या - ९९

अंक

देवनागरी	१	२	३	४	५	६	७	८	९	
दूसरी श०	-	=	≡	५	८	९	१	७	२	८=कुषाण जगद्व्यापित वलभी
तीसरी श०	-	=	२	५	८	९	१	७	३	
छठी श०	-	=	≡	५	८	९	१	७	९	
खरोष्ठी	I	II	III	X	IX	IIIX	IIIX	XX	IXX	
शारदा	०	३	७	५	५	७	१	५	७	
टाकरी	०	३	२	४	५	७	१	५	६	
बंगला	०	२	७	४	७	७	१	४	७	
मैथिली	०	२	३	४	५	७	१	४	७	
कैथी	१	२	३	४	५	६	७	८	९	
उड़िया	१	२	३	४	५	६	७	८	९	
गुजराती	१	२	३	४	५	६	७	८	९	
तेलुगु	१	२	३	४	५	६	७	८	९	
कन्नड़	१	२	३	४	५	६	७	८	९	
तमिल	०	२	३	४	५	६	७	८	९	७ ८ ९
मलयालम	०	२	३	४	५	६	७	८	९	
उर्दू	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	
देवनागरी अंकों का विकास	= = २ २					≡ ≡ ≡ ३				

पठनीय सामग्री

- Bhattacharya, S.* : A Dictionary of Indian History (1967).
- Bühler, G.* : Origin of Brahmi Alphabet.
- Ibid* : The origin of the Indian Alphabet & Numerals.
- Burnell, A. C.* : Elements of South Indian Palaeography, (1968).
- Dani, A. H.* : Indian Palaeography. (1963).
- Dowson, John* : The Invention of Indian Alphabets (J. RAS – XIII, 1881).
- Diringer, David* : The Alphabet. – A key to the History of Mankind. (1953).
- Ibid* : Writing. (1962).
- Fleet, J. F.* : Corpus Inscriptionum Indicarum Vol. III.
- Gelb, I. J.* : A study of Writing. (1963).
- Grierson, G.* : Linguistic Survey of India.
- Hultzsch, E.* : Corpus Ins. Ind. Vol. I.
- Konow, S.* : Corpus Ins. Ind. Vol. II.
- Mahalingam, T. V.* : Early South Indian Palaeography. (1967).
- Mirashi, V. V.* : Corpus Ins. Ind. Vol. IV.
- Narain, A. K. & Verma, T. P.* : प्राचीन भारतीय लिपि शास्त्र और अभिलेखाङ्की. (1970).
- Ojha, G. H.* : भारतीय प्राचीन लिपि माला (3rd. Ed. 1959).
- Pandey, R. B.* : Indian Palaeography.
- Ibid* : अशोक के अभिलेख.
- Roy, S.* : The Story of Indian Archaeology – From. 1784 – 1947. (1961).
- Sivaramamurti, C.* : Indian Epigraphy and South Indian Scripts. (1952).
- Sircar, D. C.* : Select Inscriptions – Bearing on Indian History and Civilization.
- Ibid* : Indian Epigraphy.
- Subramanian, T. N.* : South Indian Temple Inscriptions.
- Taylor, Issac* : The Alphabet. 2 Vols. (1882).
- Upasak, C. S.* : The History of Palaeography of Mauriyan Brahmi Script. (1960).
- Vasu, N. N.* : Origin of Devnagri Alphabet — (J. A. S. B. Vol. LXV 1896).
- Verma, T. P.* : The Palaeography of Brahmi Script in North India. (1971).
- Ibid* : The Origin of Brahmi Script. (1979).



नेपाल

इतिहास

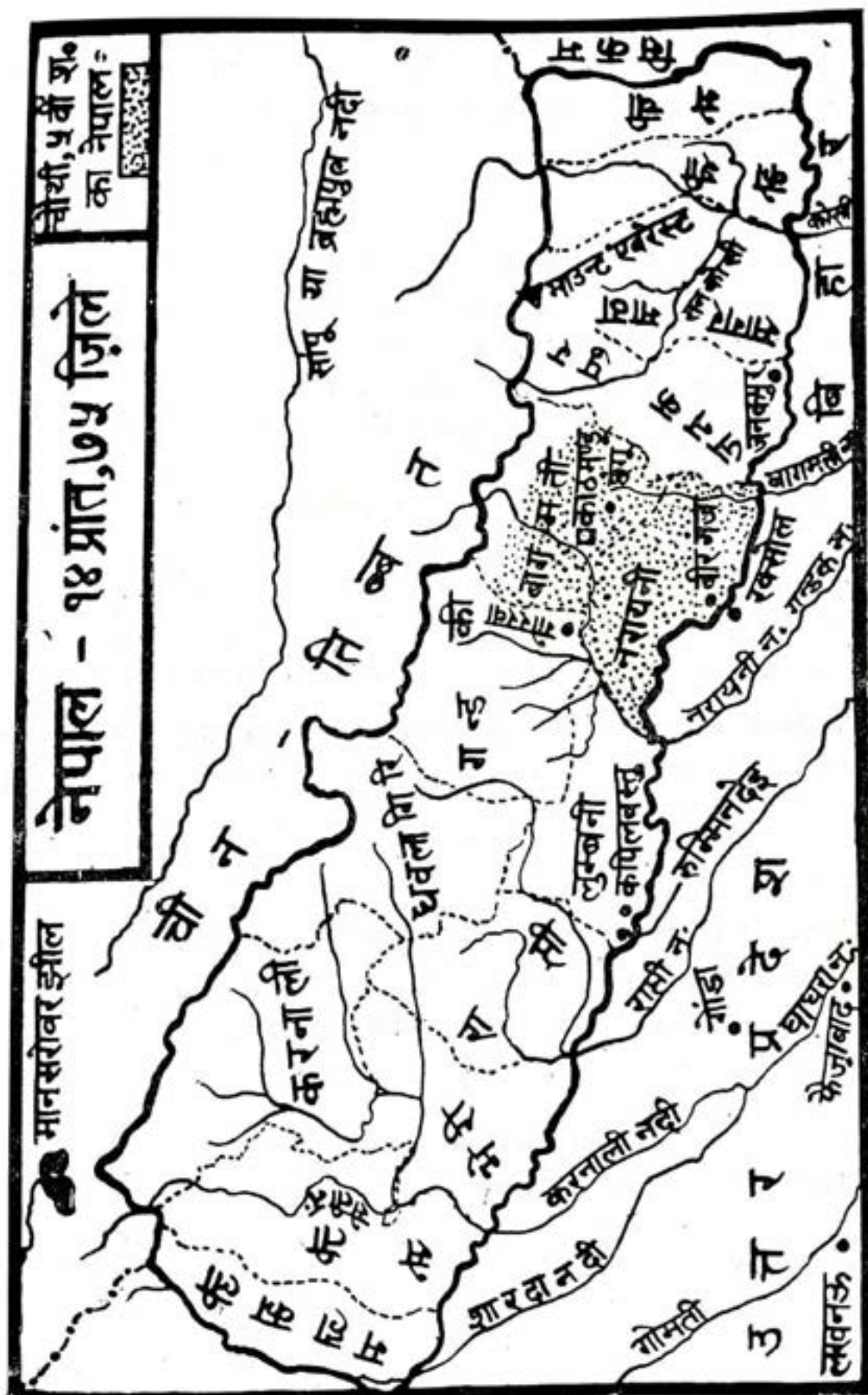
ई० पू० की लगभग छठी शताब्दी में उत्तर, दक्षिण व पूर्व से अनेक जातियाँ यहाँ आकर बसने लगीं। इसमें मुख्य थीं किरात, लिम्बू, खिम्बू तथा नेवार। किरात शैव थे। नेवारी शैव तथा बौद्ध दोनों ही थे। नेवारी व्यापारी थे। नेपाल का अर्थ (ने = पवित्र; बाल = मुलायम ऊन अर्थात् नेवाल = नेपाल) है सुन्दर ऊन मिलने का पवित्र स्थान।

के० पी० जायसवाल के अनुसार लगभग दूसरी श० में वैशाली के लिच्छवि राजाओं ने नेपाल पर अधिकार कर लिया तथा सात पीढ़ी तक राज्य करते रहे। जयदेव प्रथम (३४० - ३५० ई०) ने अपनी राजधानी वैशाली से काठमाण्डू बना ली। इससे पूर्व ३२० में चन्द्रगुप्त प्रथम का लिच्छवि वंश की राजकुमारी कुमार देवी के साथ विवाह हुआ।

छांगू से प्राप्त एक स्तम्भ लेख से ज्ञात हुआ कि पाँचवीं श० के अन्त में मानदेव काठमाण्डू का नरेश था, यहीं से नेपाल का प्रामाणिक इतिहास आरम्भ होता है। छठी शताब्दी के अन्त में अंगुवर्मा नेपाल का राजा बना। इसने अपनी पुत्री का विवाह तिब्बत के तत्कालीन नरेश स्रोंगसांग गामपो (Srong Tsang Sgam Po) से कर दिया। चीन की एक राजकुमारी का विवाह भी इसी तिब्बत नरेश के साथ हुआ। यह दोनों राजकुमारियाँ बौद्ध धर्म की अनुयायी थीं इस कारण तिब्बत में बौद्ध धर्म का प्रचार बढ़ने लगा।

लिच्छवि वंश ने बारहवीं श० तक राज्य किया तत्पश्चात् मल्ल वंश शासन करने लगा जिसका प्रथम नरेश राघवदेव मल्ल था। १३८० में जयस्थिति मल्ल राजा बना जिसने बहुत से सुधार किये। १४२८ में यक्ष मल्ल शासक बना जिसने अपने राज्य को अपने तान पुत्रों में विभाजित कर दिया। अन्त में विभाजित होते सत्रहवीं श० में लगभग ५० छोटे छोटे राज्यों में विभाजित हो गया।

नेपाल की क्षीणता के काल में गोरखा राज्य के एक प्रभावशाली राजा पृथ्वीनारायण शाह ने नेपाल को एक सूत्र में बांधने का बीड़ा उठाया। छोटे छोटे राज्यों का परास्त करता हुआ १७६८ में वह काठमाण्डू के महल में घुस पड़ा और मल्ल वंश के अन्तिम नरेश जयप्रकाश मल्ल को बन्दी बना लिया। १७७१ में एक विशाल राज्य का शासक बना तथा १७७४ में परलोक सिधारा। उसके उत्तराधिकारियों ने भी उसके उद्देश्य को जीवित रखा। इधर ईस्ट इण्डिया कम्पनी की शक्ति बढ़ती चली जा रही थी। उसने १८१४ में नेपाल राज्य पर आक्रमण कर दिया तथा १८१६ में सन्धि कर ली। देश की राजनीति पतन की ओर जा रही थी। जनता का शोषण तथा उस पर अन्याय हो रहा था। ऐसे आपत्ति काल में १८६४ की १५ सितम्बर को अपने भाइयों के सहयोग से जंगबहादुर ने राजगद्दी पर अधिकार कर लिया और राजसत्ता का वितरण किया ताकि भाई सन्तुष्ट रहें। अपने एक भाई को बहुत से अधिकार सौंप कर प्रधानमन्त्री बना दिया और वह भी इस प्रकार कि राजघराने का ज्येष्ठ पुत्र राजा तथा उसका भाई राना प्रधानमन्त्री बनेगा। अन्य उच्च पदाधिकारी भी राजघराने के ही होते थे।



फलक संख्या - १०१

शनैः शनैः राजसत्ता प्रधानमन्त्री के हाथों में आ गई और राजा केवल नाममात्र को ही रह गया । इसका विरोध महाराजा त्रिभुवन वीर विक्रम शाह देव अपने सारे राज — कुटुम्ब के साथ ६ नवम्बर १९५० को किया जो १८ फरवरी १९५१ को सफल हुआ । तब से राज्य की पूरी सत्ता का वितरण प्रजा में पंचायत राज्य के नाम से कर दिया गया परन्तु विशेष अधिकार राजा के हाथ में ही रहे । नेपाल की जनता महाराजा त्रिभुवन को राष्ट्र का पिता मानती है ।

लेखन कला

जिस प्रकार भारत की भिन्न भिन्न लिपियों की जन्मदात्री ब्राह्मी है उसी प्रकार नेपाल में भी ब्राह्मी ही सब लिपियों की जन्मदात्री बनी । भारत में ब्राह्मी से गुप्त व कुटिल आई उसी प्रकार नेपाल में भी ब्राह्मी से पूर्व लिच्छवि तथा उत्तर लिच्छवि आई । 'फ० सं० — १०२' पर निम्न प्रकार लिपियों के अक्षर दिये गये हैं :—१. देवनागरी वर्णमाला : वर्णों की ध्वनि के लिये दी गई है ।

२. किरात लिपि : जो किरात प्रदेश (सगर माथा — प्रात) में अब भी प्रयोग की जाती है । इसका उद्भव लगभग आठवीं श० में हुआ ।
३. रञ्जना लिपि : जो कुटिल लिपि से विकसित हुई । इसका काल विद्वानों ने लगभग दसवीं श० निर्धारित किया है ।
४. भुजि मोल : (अर्थ = मक्खी का सर) का विकास लगभग चौदहवीं श० में हुआ । इस पर मैथिली लिपि का प्रभाव पड़ा ।
५. नेवारी लिपि : का प्रयोग नेवारी करते हैं । इसका विकास सत्रहवीं श० में हुआ था ।

कुछ और लिपियों के अक्षर दिये गये हैं जो सत्रहवीं से बीसवीं श० तक नुलेख के लिये विकसित की गई । इनके केवल 'क — ख — ग — घ — ङ' अक्षर ही दिये गये हैं । नीचे अंक भी दिये गये हैं (फ० सं० — १०३) ।

संयुक्त वर्ण

निम्नलिखित प्राचीन लिपियों के संयुक्त अक्षर तथा अभिलेखों के आरम्भिक शब्द निम्नलिखित फलक संख्याओं पर दिये गये हैं :—१. किरात लिपि : (फ० सं० १०४) ।

२. रञ्जना लिपि : (फ० सं० १०५) ।
३. भुजि मोल लिपि : (फ० सं० १०६) ।

पठनीय सामग्री

<i>Bendell</i>	: Journey in Nepal.
<i>Hemraj Shakya Vansh</i>	: नेपाल लिपि संग्रह.
<i>Regmi</i>	: Ancient Nepal.
श्री ५ को सरकार पुरातत्व र संस्कृति विभाग, नेपाल	: प्राचीन लिपि वर्ण माला ।

नेपाल की लिपियाँ

१	२	३	४	५	१	२	३	४	५	१	२	३	४	५
अ	इ	उ	ए	ऐ	क	ख	ग	घ	ङ	ब	ड	ध	व	व
आ	ई	ऊ	औ	अ	ज	झ	ञ	ट	ठ	म	प	फ	ब	भ
इ		उ	ए	ऐ	भ	भ	भ	अ	अ	म	प	म	म	म
ई	ई	ऊ	औ	अ	अ	अ	अ	अ	अ	य	र	ल	व	य
उ		उ	उ	उ	ट		स	ट	ट	र	र	व	व	प
ऊ	इ	उ	उ	उ	ठ		व	ठी	ठ	ल	ल	ल	ल	ल
ए	इ	व	उ	उ	ड		उ	उ	उ	व	प	व	व	व
ऐ	इ	व	उ	उ	ढ		स	र	र	श	उ	ल	ल	अ
औ	ई	आ	उ	अ	रा		ल	ल	ल	ष	प	व	व	व
औ	ई	आ	उ	अ	त	उ	न	न	न	स	उ	स	स	स
क	उ	क	क	क	थ	क	थ	थ	थ	ह	उ	ह	ह	ह
ख	उ	ख	ख	ख	द	द	ख	द	द	क्ष		क्ष	क्ष	क्ष
ग	उ	ग	ग	ग	घ	घ	व	घ	घ	त्र	र	व	व	व
घ	य	घ	घ	घ	न	उ	न	न	न	श	र	क्ष	क्ष	क्ष
ङ	उ	ङ	ङ	ङ	प	उ	य	य	य	ह	उ	क्ष	क्ष	क्ष
च	ग	च	च	च	फ	उ	य	य	य	श्री	र	क्ष	क्ष	क्ष

सुलेख के लिए कुछ सुन्दर लिपियाँ

कुंमोल	के ख ग घ ङ									
क्वेमोल	के ख ख ध इ									
गोलमोल	के ख ग घ ङ									
पाचूमोल	के ख ग घ ङ									
हिंमोल	के ख ख ध इ									
लितुमोल	के ख ग घ इ									
थीकन्हे	के ख ग घ ङ									
कूटाक्षर	का ख ग घ ङ									
देव नागरी अंक	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
किरात अंक	७	८	९	४	५	६	७	८	९	१०
रअना अंक	७	८	९	४	५	६	७	८	९	१०
भुजिमी अंक	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
नेवारी अंक	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०

किरात लिपि के संयुक्त वर्ण

का 𑌕	कि-की 𑌕𑌃	कु-कू 𑌕𑌃	के 𑌕𑌃	कै 𑌕𑌃𑌃	को 𑌕𑌃	कौ 𑌕𑌃𑌃
क् 𑌕	क्र 𑌕	ख 𑌕	घ 𑌕	ग्र 𑌕	च 𑌕	छ 𑌕
ज 𑌕	झ 𑌕	व्य 𑌕	र्य 𑌕	ग्य 𑌕	ध्य 𑌕	च्य 𑌕
ज्य 𑌕	म्य 𑌕	त्य 𑌕	ल्य 𑌕	क्क 𑌕	न्न 𑌕	च्च 𑌕
ज्ज 𑌕	त्त 𑌕	प्प 𑌕	प्फ 𑌕	म्म 𑌕	ल्ल 𑌕	ग्ग 𑌕

फलक संख्या - १०४

रंजना लिपि के संयुक्त वर्ण

का 𑂔𑂲	कि 𑂔𑂰	की 𑂔𑂱	कु 𑂔𑂰	कू 𑂔𑂰	के 𑂔𑂰	कै 𑂔𑂰
को 𑂔𑂰	कौ 𑂔𑂰	चू 𑂔𑂰	जू 𑂔𑂰	धू 𑂔𑂰	फू 𑂔𑂰	क्य 𑂔𑂰
ख्य 𑂔𑂰	च्य 𑂔𑂰	ध्य 𑂔𑂰	न्य 𑂔𑂰	क 𑂔𑂰	प्र 𑂔𑂰	भ्र 𑂔𑂰
र्ष 𑂔𑂰	क्ष 𑂔𑂰	ष्ठ 𑂔𑂰	न्ध 𑂔𑂰	शा 𑂔𑂰	क्त 𑂔𑂰	क्स 𑂔𑂰

रंजना लिपि के कुछ शब्द

म ह राजाधिराज परमेश्वर

महाराजाधिराज परमेश्वर

भुजिमोल लिपि के संयुक्त वर्ण

का	कि	कु	कू	के	कै	को
की	किं	की	कु	की	कै	को
कौ	क्य	क्य	क्ष्य	षा	क्स	क्ष
को	की	व्य	क्षी	फु	क्षी	क्ष
क्ते	ण्ड	भ्र	त्त	ध्य	क्षण	न्य
क	डु	इ	के	ष	क्षी	न्य
भ्य	स्प	कु	क्ष्म	त्त	द्य	शु
थ	स्प	की	क्षी	न	द्य	शु

भुजिमोल लिपि के कुछ शब्द

वै शांती महानगरी
वै शाली महानगरी

सिक्किम

इतिहास

१६४१ में जब पाँचवाँ धार्मिक - शासक (लामा = पूजनीय) लाब - सांग ग्यात्सो (Lob - Sang Gya - Tso) राजसिंहासनाखंड हुआ तब एक राजवंशीय कुमार ने लहासा छोड़ दिया और सिक्किम पहुँच गया। उस समय यहाँ के मूल निवासी राज्य करते थे। उसने (राजकुमार) यहाँ के राजा को परास्त कर अपना राज्य स्थापित किया तथा लामा - धर्म की नींव डाली। तब से और अठारहवीं शताब्दी तक सिक्किम का राज्य तिब्बत के अन्तर्गत माना गया तथा यहाँ का शासक प्रांतपति माना गया।

१८१६ से अंग्रेजों ने इधर भी अपनी दृष्टि डाली। १८३९ में उन्होंने दार्जिलिंग की कुछ भूमि एक सैनोटोरियम के लिये सिक्किम के राजा से माँगी। १८४९ में ब्रिटिशों ने पूरी तराई (हिमालय पहाड़ का सबसे निचला भाग जो जंगलों से भरा पड़ा है और जहाँ से लकड़ी धन राशि के रूप में प्राप्त होती है) पर अपना अधिकार कर लिया। ब्रिटिशों के प्रति सिक्किम में घृणा के भाव उत्पन्न होने लगे। इसी क्रोध की अग्नि में दार्जिलिंग के उच्चपदाधिकारी आर्चीबाल्ड कैम्पबेन (Archibald Campbell) तथा जोसेफ हुकर (Joseph Hooker), जो सिक्किम में यात्रा पर गये थे, बध कर दिया गया।

१८६१ में ब्रिटिश सरकार के पदाधिकारियों ने सिक्किम के महाराजा को बाध्य किया कि वह सन्धि पत्र पर अपने हस्ताक्षर करें। महाराजा तिब्बत गया और सहायता की याचना की जो तिब्बत सरकार ने ब्रिटिशों से युद्ध करने के लिये प्रदान की। १८८८ में युद्ध हुआ और सिक्किम परास्त हुआ।

१८९३ में एक और सन्धि - पत्र प्रस्तुत किया गया जिसके अन्तर्गत सिक्किम ब्रिटेन के संरक्षण में आ गया। इस सन्धि पत्र पर हस्ताक्षर तो हुए परन्तु महाराजा ने इसको मान्यता नहीं दी और न अपना सहयोग दिया। महाराजा फिर तिब्बत की ओर जाने लगा। इस बार नेपाल के मार्ग से जाने पर नेपाल सरकार ने उसको रोक कर ब्रिटिश सरकार के हाथों सौंप दिया। तब से सिक्किम का महाराजा अपने सारे जीवन एक बन्दी के रूप में रहा। १९१४ में उसका स्वर्गवास हो गया। तत्पश्चात् उसका उत्तराधिकारी ताशी नंग्याल सिंहासन पर बैठा।

१९४७ में ब्रिटिश राज्य समाप्त हो गया। भारत स्वतन्त्र हो गया और ब्रिटिश सरकार की पिछली सारी सन्धियाँ निरर्थक हो गईं और एक नई सन्धि हो गई। १९४९ में एक आंदोलन हुआ। भारत सरकार से सिक्किम द्वारा सहायता की याचना की गई। सहायता दी गई। आन्दोलन का दमन कर दिया गया। तत्पश्चात् एक और सन्धि - पत्र भारत सरकार द्वारा प्रस्तुत किया गया जिस पर १९५० में हस्ताक्षर हो गये। कुछ दिनों सिक्किम एक स्वतन्त्र राज्य रहा परन्तु विदेशी मामलों में भारत सरकार की सम्मति अनिवार्य रही, तदनन्तर भारत का एक राज्य बन गया।

सिक्किम



फलक संख्या - १०७

सिक्किम की लेप्चा या रोंग लिपि

क 𑌕	ख 𑌖	ग 𑌗	ङ 𑌘	च 𑌙	छ 𑌚	ज 𑌛
त 𑌜	थ 𑌝	द 𑌞	न 𑌟	प 𑌠	फ 𑌡	ब 𑌢
म 𑌣	त्स 𑌤	थ्स 𑌥	व 𑌦	ज्य 𑌧	स 𑌨	य 𑌩
र 𑌪	ल 𑌫	श 𑌬	स 𑌭	ह 𑌮	अ 𑌯	फ़ 𑌰

स्वर-युक्त व्यंजन

न 𑌟	ना 𑌠	नाऽ 𑌡	नि 𑌢	नी 𑌣
नो 𑌤	नौ 𑌥	नु 𑌦	नू 𑌧	ने 𑌨

फलक संख्या - १०८

लिपि

यहाँ की लिपि का नाम लेप्चा या रोंग है । सिक्किम के मूल निवासी लेप्चा थे, उन्हीं के नाम पर इस लिपि का नाम भी रखा गया । इसमें २८ वर्ण हैं । १६८६ में इस लिपि का सिक्किम के राजा चकदोर नांगे ने आविष्कार किया (फ० सं० - १०८) ।

पठनीय सामग्री

- Grierson, G.* : Linguistic Survey of India Vol. III, Part 1 (1966).
Morris, J. : Living with Lepchas (1938).
White, J. C. : Sikkim and Bhutan (1908).



श्रीलंका

इस देश को समय - समय पर विभिन्न नामों से पुकारा गया है। प्राचीन काल में सिंहल द्वीप या लंका, ग्रीक निवासी इसको टप्रोबेन (Taprobane), अरब - निवासी सेरनदीव, पुर्तगाल के निवासी जीलोन जिससे अंग्रेजों के लिये हो गया सीलोन (Ceylon) और कुछ दिनों पूर्व इसका नामकरण हो गया श्रीलंका।

इतिहास

पौराणिक वंशावली के अनुसार, जिसको महावंश कहते हैं, ४८३ ई० पू० में सर्वप्रथम सिंहली राजा विजय आर्यों के साथ आया, जिनकी भाषा संस्कृत थी। यहाँ के तात्कालिक मूल निवासी वेङ्गा लोग थे। इन्हीं वेङ्गा लोगों के राजा की एक पुत्री से राजा विजय ने विवाह किया। यह महावंश पाली भाषा में लिखा गया था। उस समय यहाँ की राजधानी राजारत्ते थी। तत्पश्चात् सिंहली राजाओं ने अनुराधापुर में स्थापित कर ली।

२४६ ई० पू० में भारत के सम्राट अशोक ने अपने भिक्षु पुत्र महिन्द को लंका भेजा जिसने बौद्ध धर्म के विषय में लंका निवासियों को ज्ञान प्रदान किया। १३० ई० पू० में अनुराधापुर के राजसिंहासन पर एक तमिळ इलाला ने अपना अधिकार जमा लिया परन्तु एक नेता दुत्ते गुम्मु ने उसका वध कर दिया।

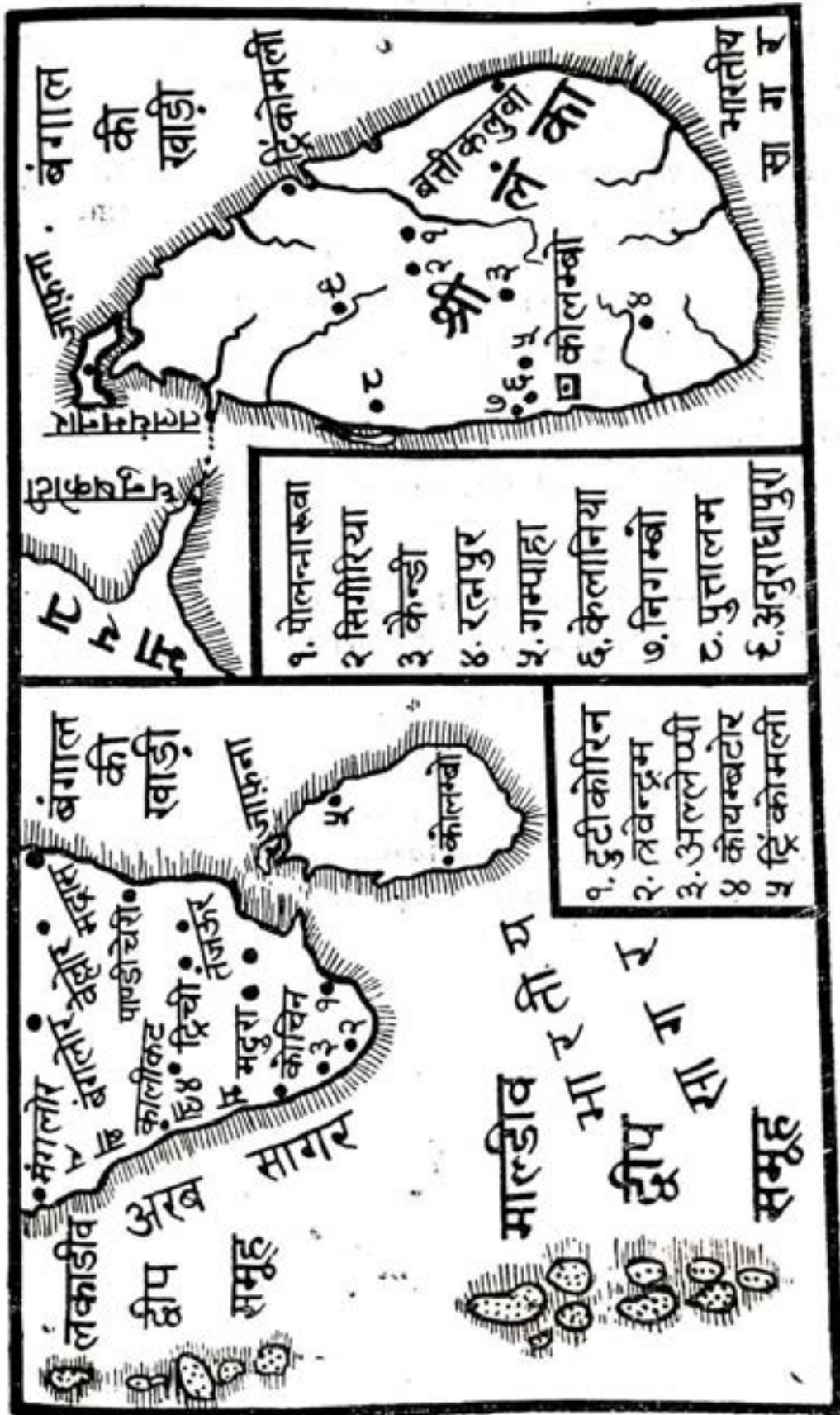
सर विलियम ग्रेगरी (Sir William Gregory - १८७२ - ७७) ने एक पुरातत्त्व विभाग स्थापित किया जिसके अन्तर्गत लंका के शासकों की एक वंशावली तैयार की गई जिसमें राजाओं के अच्छे बुरे कर्मों तथा उनके आपसी - युद्धों का वर्णन किया गया।

११५३ में पिहिति (आधु० जाफना) का एक राजा प्राक्रम बाहू राज्य करता था। ११५५ में इसने रोहूना के राजा के साथ युद्ध किया तथा उसको परास्त किया। उसने पुजारियों को अपनी छत्र - छाया प्रदान की परन्तु बौद्धों को बहुत सताया। उसने बर्मा (ब्रह्मा देश) पर भी आक्रमण किया। उसने मजदूरों से बेगार करवा कर सुन्दर महलों तथा भवनों का निर्माण करवाया।

उत्तर की ओर से भारतीय राजाओं ने पिहिति पर कई आक्रमण किये। १४०८ में चीनियों ने आक्रमण किया तथा तत्कालीन शासक विजय बाहू चतुर्थ को बन्दी बना कर ले गये। लंका पर ३० वर्ष तक चीनियों का राज्य रहा। तत्पश्चात् विदेशी व्यापारियों का पश्चिम से आगमन आरम्भ हो गया।

सर्वप्रथम एक पुर्तगाली फ्रान्सिस्को डि अलमेडा (Fransico de Almeida) १५०५ में लंका पहुँचा। उस समय लंका सात राज्यों में विभाजित था। १५१७ में एक कोठी कोट्टा की राजाज्ञा से, कोलम्बो में बना ली गई और उसी के साथ एक छोटा सा दुर्ग भी। उस समय से पुर्तगालियों का किसी न किसी राज्य से युद्ध चलता ही रहा। जब उन्होंने जाफना पर आक्रमण किया तब उन्होंने महात्मा बुद्ध का दांत प्राप्त कर लिया जिसको उन्होंने गोआ में जलाया परन्तु बाद में ज्ञात हुआ कि वह असली नहीं था। वह तो आज भी सुरक्षित रखा है।

माल्डीव द्वीप समूह तथा श्रीलंका



फलक संख्या - १०९

एक डच कैप्टेन योरिस स्पिल बर्ग (Joris Spilberg) १६०२ में पूर्वी किनारे पर उतरा और वहाँ के राज्य कैंडी के राजा ने उसका स्वागत किया तथा उससे पुर्तगालियों के विरुद्ध सहायता की याचना की ताकि वे लंका के बाहर निकाल दिये जायें। इसी याचना के अनुसार डचों (हालैण्ड देश के निवासी) ने लंका पर आक्रमण कर पूर्वी किनारे की कोठियों को नष्ट कर दिया। १६४४ में निगाम्बो पर, १६५७ में जाफना पर तथा कोलम्बो पर डचों का अधिकार हो गया।

१७९५ में ब्रिटिशों ने पूर्वी किनारे पर आक्रमण करके डचों को परास्त कर दिया तथा कुछ दिनों पश्चात् पूरे देश पर अधिकार कर लिया। १८०२ में इसका शासनाधिकार इंगलैण्ड के सम्राट को मिल गया और उपनिवेश बन गया।

कैंडी के निवासी बौद्ध हैं वे सिंहल द्वीप निवासियों को गिरी हुई दृष्टि से देखते हैं क्योंकि उन्होंने देश पर आक्रमण के लिये विदेशियों को बुलाया था। बाद में सिंहलद्वीप निवासियों तथा तमिल लोगों ने मिलकर १९२१ में एक राष्ट्रीय कांग्रेस बनायी।

४ फरवरी १९४८ को यह देश स्वतंत्र हो गया परन्तु ब्रिटिशों का एक स्वतंत्र उपनिवेश (Dominion) जैसे ऑस्ट्रेलिया, कनाडा आदि माना गया। तदनन्तर गणतन्त्र हो गया और श्रीलंका नाम हो गया।

लिपि

'फ० सं० - ११० - ११० क' पर दी गई वर्णमाला के वर्ण दक्षिण भारत की लिपियों द्वारा लगभग अठारहवीं शताब्दी में विकसित किये गये। इस देश की प्राचीनता भारत देश से पृथक् नहीं है क्योंकि भारत की संस्कृति का पर्याप्त प्रभाव इस देश पर पड़ा है।

पठनीय सामग्री

- Codrington, H. W.* : A short History of Ceylon (1939).
Hussey, D. M. : Ceylon and World History - 3 Vols. (1938).
Nicholas, S. E. N. : Handbook on Ceylon. (1939).

सिंहली लिपि

अ අ	आ ආ	इ ඇ	ई ඈ	उ ඊ	ऊ උ	ए ඌ	ऐ ඍ
ऐ ඎ	ऑ ඏ	ओ ඐ	औ එ	अं අං	अः අඃ	क ක	ख ඛ
ग ග	घ ඝ	ङ ඟ	च ච	छ ඡ	ज ජ	झ ඣ	अ ඤ
ट ඨ	ठ ඪ	ड ඳ	ढ ඬ	ण ඹ	त ත	थ ථ	द ද
ध ධ	न න	प ප	फ ආ	ब බ	भ භ	म ම	य ය
र ර	ल ල	व ව	श ශ	ष ඡ	स ස	ह හ	झ ඞ

फलक संख्या - ११०

सिंहली लिपि के शब्द व संयुक्त अक्षर

प्र	पृ	त्र	ज्ञ	क्ष
ପ୍ର	ପୃ	ତ୍ର	ଜ୍ଞ	କ୍ଷ
भि	नु	न(भिन्न)	मातृत्व	
ଭି	ନୁ	ନ(भिन्न)	ମାତୃत्व	
स्वतंत्र	मिश्रित			
ସ୍ୱତନ୍ତ୍ର	ମିଶ୍ରିତ			
ପିରୁनु = भरा हुआ	कले (घड़ा)	दिय (जल)	नो (नहीं)	
ସିରୁନୁ	କାଲେ	ଦିଏ	ନୋ	
सेले (हिलना)	अर्थातः भरे हुये घड़े का पानी नहीं छलकता			

माल्डीव द्वीप -- समूह

इतिहास

इस द्वीप समूह में लगभग ३०० द्वीप हैं जिनमें से १७ द्वीपों पर लोग निवास करते हैं।

सर्वप्रथम यहाँ पुर्तगाली १५७८ में पहुँचे परन्तु अपना राज्य स्थापित न कर सके। भारत के मलाबार के पश्चिमी किनारे पर निवास करने वाले मोपला इन द्वीपों पर लूट-मार करने के लिए आक्रमण करते रहते थे। १६४५ में माल्डीव के निवासियों ने लंका के राजा से निवेदन किया कि उनकी रक्षा की जाये। तब यह लंका के संरक्षण में आ गया, परन्तु माल्डीव पर राज्य सुलतान का ही बना रहा जो पैतृक होता था।

१९५२ में यह देश गण-तंत्र हो गया और अन्तिम सुलतान शासक का चचेरा भाई अमीन - दीदी इसका राष्ट्रपति बना।

इस द्वीप के तीन सांस्कृतिक खण्ड माने जाते हैं। पहला उत्तरी खण्ड जो भारत से सम्बन्धित है, दूसरा मध्य भाग जहाँ शासनाधिकारी आदि निवास करते हैं अरब - संसार से सम्बन्धित है तथा तीसरा खण्ड दक्षिण का है जिसमें आदिवासी अधिक संख्या में रहते हैं जिनका लंका से सम्बन्ध रहता है।

माले इसकी राजधानी है। यहाँ के आदिवासी भी माले ही कहलाते हैं। ६ अगस्त १९६५ को यह देश स्वतंत्र हो गया।

लिपियों का जन्म

इस द्वीप समूह में दो प्रकार की लिपियाँ मिली हैं।

देवेही लिपि : जो दक्षिण भारत तथा सिंहली से मिल कर बनी है जो दक्षिण के द्वीप समूह से प्राप्त हुई। इसका काल ईसा की १२वीं शताब्दी निर्धारित किया गया है।

जवालीदूरा : जो उत्तर के द्वीप समूह से प्राप्त हुई। इसमें अरबी तथा तेलुगु - कन्नड़ के अंक पाये जाते हैं। ९ अंक अरबी के तथा ९ अंक तेलुगु - कन्नड़ के लेकर बनाई गई।

इन दोनों लिपियों को प्रिंसेप तथा टेलर ने पहचाना है। प्रिंसेप ने एशियाटिक सोसायटी आफ बंगाल के जर्नल न० ५ (Journal of Asiatic Society of Bengal No. 5) में तथा टेलर ने अपनी पुस्तक "एल्फाबेट" - पृष्ठ ३५८ (Alphabet II - P. 358) में प्रकाशित करवा कर यह लिखा है कि यह लिपियाँ कई लिपियों के मिश्रण से प्रयोगात्मक बनाई गई हैं।

इन दोनों लिपियों के वर्ण 'फ० सं० - १११' पर दिये गये हैं। इन दोनों में ही केवल १८ वर्ण पाये जाते हैं।

देवेही हकूरा बायें से दायें लिखी जाती थी तथा जवाली दूरा दायें से बायें। स्वरों का प्रयोग हर वर्ण के साथ भारतीय पद्धति से ही किया जाता है।

पठनीय सामग्री

Hockley, F. W. : A Short Account of the People, History and Culture of Maldivian Archipelago (1935).

Prinsep, James : JASB - No. 5.

Taylor, Issac : Alphabet, Vol II, Page - 358.

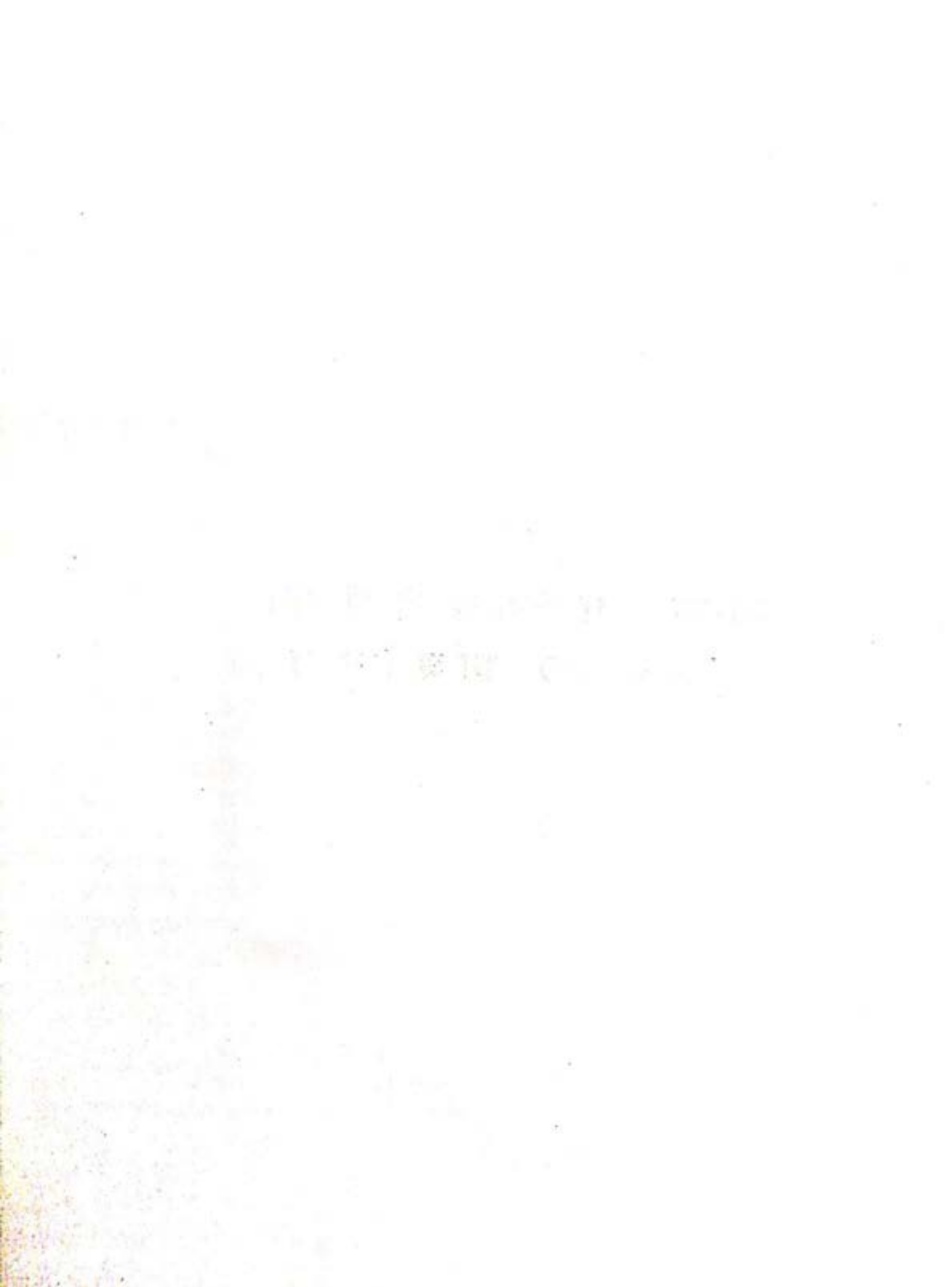


माल्डीव की लिपियाँ

ध्वनियां →	ह	थ	ण	र	ब	ल
देवेही हकूरा	𑌀	𑌁	𑌂	𑌃	𑌄	𑌅
जबाली दूरा	।	२	३	𑌆	𑌇	𑌈
ध्वनियां →	क	अ	व	म	फ	ध
देवेही हकूरा	𑌉	𑌊	𑌋	𑌌	𑌍	𑌎
जबाली दूरा	𑌏	𑌐	𑌑	𑌒	𑌓	𑌔
ध्वनियां →	ट	ल	ज	न	स	ड
देवेही हकूरा	𑌕	𑌖	𑌗	𑌘	𑌙	𑌚
जबाली दूरा	𑌛	𑌜	𑌝	𑌞	𑌟	𑌠
जबाली दूरा में स्वरों का प्रयोग						
बं बू बु बी बो बी बि बै बे बा ब 𑌡 𑌢 𑌣 𑌤 𑌥 𑌦 𑌧 𑌨 𑌩 𑌪 𑌫						

अध्याय : ३

**पश्चिम एशियाई देशों की
लेखन कला का इतिहास**



मेसोपोटामिया : १

इतिहास

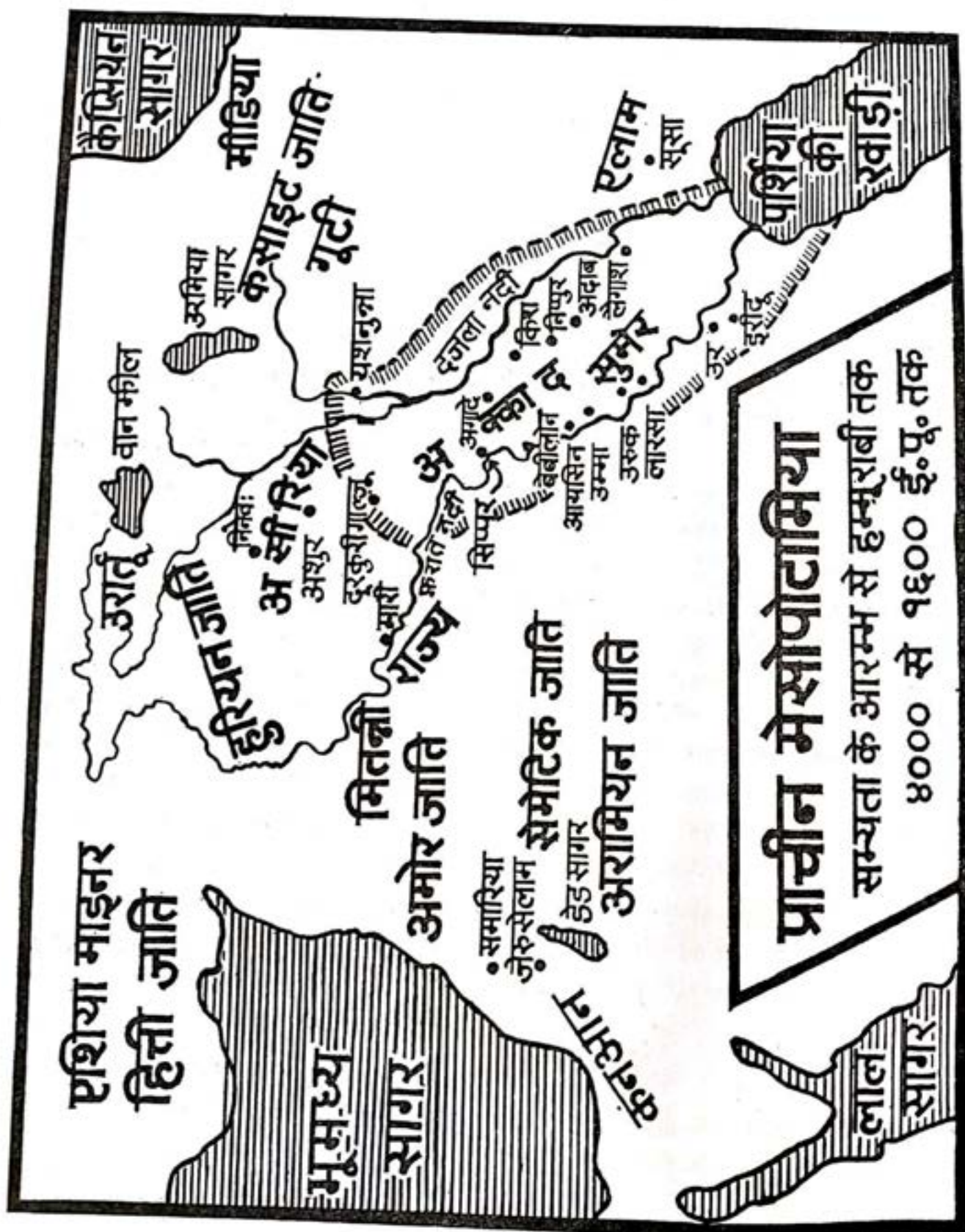
मेसोपोटामिया का अर्थ है, 'दो नदियों के मध्य की भूमि'। इसी कारण यूनानियों (ग्रीस निवासी) ने इस देश का नाम "मेसोपोटामिया" रखा, क्योंकि यह दो नदियों — दजला (Tigris) और फ़रात (Euphrates) — के मध्य स्थित था। इसका आधुनिक नाम 'ईराक़' है। यहाँ लगभग ६००० से ४००० वर्षों के मध्य काल में तीन — सुमेर, बेबीलोन तथा असीरिया की सभ्यताओं ने जन्म लिया। इसी देश को बाइबिल में 'ईडिन का उपवन (Garden of Edin)' कहा गया है। यहूदी व ईसाई धर्मों के मतानुसार सृष्टि की उत्पत्ति में सर्वप्रथम मानव ने पृथ्वी पर आकर यहीं निवास किया।

मेसोपोटामिया के दक्षिणी भाग के मूल निवासी सेमिटिक (Semitic)¹ थे। सुमेर जाति के लोगों ने आकर इन मूल निवासियों को अपने अधीन कर लिया। उनकी संस्कृति व राजनीति नष्ट करके अपनी धार्मिक व राजनैतिक नीतियाँ चलाई। सुमेर जाति के लोग कौन थे तथा कहाँ से आये यह कोई नहीं जानता। विभिन्न विद्वानों ने अपनी अपनी कल्पनायें की हैं, जिनके विषय में यहाँ उल्लेख करना तथा किसी निश्चय पर न पहुँचना केवल विषय का विस्तार करना होगा। इतना अवश्य है कि सुमेर जाति के लोगों के आने से तथा मूलनिवासियों के साथ सम्मिश्रण होने से एक नये प्रकार की तथा एक उच्चकोटि की संस्कृति ने जन्म लिया। ईसा के लगभग चार हजार वर्ष पूर्व सुमेर जाति के लोग पूर्णतया बस गये, जिनके कारण इस देश का नाम सुमेर (जिसको अरबी में 'सूमर' कहते हैं) पड़ गया।

इस जाति का इतिहास आक्रमणों, युद्धों तथा नगर — राज्यों के निर्माणों से भरा पड़ा है। कितने नगर — राज्य बने तथा नष्ट हो गये कहना कठिन है। ३५०० ई० पू० तक कुछ स्थिरता आयी और सुमेर की भूमि पर लगभग १३ नगर राज्य स्थापित हो गये जिनके नाम निम्नलिखित थे :—सिप्पर, उर, उरुक, किश, अशकाव, लराक, निप्पुर, अदाब, उम्मा, लंगाश, बद — तिबिरा, लारसा और इरीदु।

प्रत्येक नगर — राज्य के चारों ओर लगभग १६००० वर्गमील का हरा भरा क्षेत्र होता था। इन नगर — राज्यों का एक मुख्य देवता होता था। इनका एक शासक होता था जो दिव्य — रक्षक, राज्याध्यक्ष तथा नगर — देवता का मुख्य सेवक होता था।

1. 'सेमिटिक' शब्द का प्रयोग शिलोज़र (Schlozer) ने १७८१ ई० में किया। इस जाति का सम्बन्ध नूह (Noah) के पुत्र शाम (Shem) के कुटुम्ब से माना गया है।



एलाम (Elam)^१ के निवासी जो सुमेर के पूर्वी पहाड़ों में निवास करते थे जब तब आकर सुमेर की भूमि पर आक्रमण करते रहते थे परन्तु लगभग २५५० ई० पू० में लैगाश (आधुनिक टेल्लों) के एन्सी (Governor) एन्नातुम्मे ने उनको परास्त कर के तथा उरुक (आ० वरक), उर (आ० मुक्य्यर) तथा किश (आ० एल घेमिर) नगर — राज्यों को भी पराजित करके किश के राजसिंहासन पर आरुढ़ हो गया ।

सुमेर के उत्तर — पश्चिम में हुरियन जाति का मितन्नी राज्य था जिसकी राजधानी मारी (आ० हुरीरी) थी । मारी के निवासियों ने सुमेर की भूमि पर आक्रमण आरम्भ कर दिये और कुछ दिनों के पश्चात् राज्य भी करने लगे । इनका राज्य लगभग १३६ वर्ष तक रहा । २४१० ई० पू० में एन्तेमना ने उनको मार भगाया और सुमेर को स्वतंत्र कर लिया ।

तत्पश्चात् सुमेर के नगर — राज्यों में आपस में झगड़े तथा गृह — युद्ध चलते रहे । इन्हीं दिनों लगभग २४०० ई० पू० में उम्मा (आ० टेल^२ जोखा) के एन्सी लुगाल जग्गेसी (लू के अर्थ हैं 'पुरुष' तथा 'गाल' के अर्थ हैं 'महान्' अर्थात् महान् पुरुष अथवा राजा) ने लैगाश के राजा उरकगीन को परास्त कर २३७० ई० पू० तक राज्य किया । इस राजा को मेसोपोटामिया के इतिहास में एक बड़ा शासक माना गया है । इसकी राजधानी उरुक थी ।

इन्हीं दिनों एक पर्यटन — शील सेमिटिक जाति शनैः शनैः अक्कादे या अक्काद (आ० एल दीर) तथा किश के नगर — राज्यों में आकर बसने लगी । राजनीति में कुछ हस्ताक्षेप करने के पश्चात् इस जाति ने अपना राज्य भी स्थापित कर लिया । अक्काद में निवास करने के कारण यह जाति भी अक्कादियन कहलाने लगी । इसी जाति में एक भाग्यशाली वीर उत्पन्न हुआ जो सरगोन के नाम से संसार के प्राचीन इतिहास में विख्यात हुआ । इसकी माँ एक पुजारिन थी जिसको तात्कालिक धार्मिक एवं सामाजिक बन्धनों के कारण आजीवन अविवाहित रहना पड़ा । फिर भी दुर्भाग्य से इसके एक पुत्र पैदा हुआ । अपयश के भय से इसने अपने पुत्र को त्याग दिया । सरगोन को बचपन में बड़े कष्टों का सामना करना पड़ा । बड़े होने पर यह किश नगर के राजा उर-ज्जबाबा का मुख्य — साक्री (cup — bearer — in — chief) बन गया । उस समय महल में राजा के विरुद्ध चारों ओर एक षडयन्त्रों का जाल बिछा हुआ था । ऐसे अवसर को सरगोन ने हाथ से न जाने दिया और अवसर पाकर राजसिंहासन पर अपना अधिकार कर लिया । इसी समय से अक्काद की सेमिटिक जाति का प्रभुत्व स्थापित होने लगा । इस जाति के लोग तत्कालीन सुमेर निवासियों से देखने में तथा भाषा आदि में भिन्न थे । इसी काल से कीलाकार लिपि का प्रयोग अक्कादियन भाषा के लिये किया जाने लगा ।

सरगोन ने उरुक पर अचानक आक्रमण कर दिया और लुगाल जग्गेसी को जीवित पकड़ कर कुत्ते की तरह गले में जंजीर बांध कर निप्पुर (नूफ़र) ले गया । तत्पश्चात् उसने उर को भी जीत लिया और एक विशाल राज्य की आधार शिला रखी । अब उसका नाम सरगोन से महान् सरगोन हो गया जिसको अक्कादियन भाषा में सारु केनु (उचित तथा योग्य राजा) कहते थे । इसका राज्य २३६९ से २३१६ ई० पू० तक स्थित रहा । इसके मरणोपरांत उसका पुत्र मनीशतुम राजसिंहासनारुढ़ हो गया जिसने २२९२ ई० पू० तक राज्या किया । तत्पश्चात् उसके पौत्र नरमसिन ने लगभग २२५५ ई० पू० तक शासन किया । इसने एलाम को

1. बेबीलोनियन भाषा में एलाम कहा जाता था परन्तु पर्सियन भाषा में इसका नाम सुसियाना था । इसकी राजधानी का नाम सुसा एवं सुस था ।
2. टेल के अर्थ हैं टीला ।

परास्त कर अपने अधीन कर लिया तथा अपने अधीन एक एलाम - निवासी को एन्सी (गवर्नर) नियुक्त कर दिया जिसका नाम शिलहक इन्शुशिनाक था। इसी एन्सी ने अपनी शक्ति को बढ़ा कर अवसर पाकर नरमसिन पर ही आक्रमण कर दिया। इस युद्ध में नरमसिन परास्त हुआ। इन्शुशिनाक ने अपने देश एलाम को पुनः स्वतन्त्र कर लिया तथा पड़ोस के नगर - राज्यों को भी अपने अधीन कर लिया और अपना उपनाम शरगाली शरी (जिसके अर्थ हैं — राजाओं का राजा) रख लिया। इसने २२५४ से २२३० ई० पू० तक राज्य किया। इसके स्वर्गवास हो जाने पर इसके पुत्र दूदू तथा पीत्र शुदरल सिंहासन पर बैठे परन्तु उनका शासन अधिक दिनों तक न चल सका।

सरगोन राज्य के पतन के दिनों में जब राज्य अशक्त होने लगा तब उत्तर के पहाड़ों में निवास करने वाली एक जाति के आक्रमण होने लगे। यह जाति असभ्य थी, लूटमार किया करती थी तथा इसका नाम गूटी था। इसने सुमेर व अक्काद के नगर - राज्यों को परास्त कर अपना राज्य स्थापित कर लिया तथा लगभग सौ वर्ष तक राज्य किया। इसका राज्य फिर भी दृढ़ तथा स्थिर न हो सका। सुमेर के निवासियों पर अत्याचार होने के कारण व्यापार में कमी तथा कृषि की उपेक्षा होने लगी। इस जाति का सबसे प्रसिद्ध व उल्लेखनीय राजा गूडिया (गूडिया Gudea) था। वह बड़ा प्रतापी नरेश था।

गूटी जाति के राज्य को समाप्त करने वाला उर नगर - राज्य का राजा उर नम्मू था जिसने कुछ अन्य नगर - राज्यों को अपने अधीन कर एक विशाल राज्य की स्थापना की। इसने २११२ से २०९६ ई० पू० तक राज्य किया। इसी उर नम्मू ने संसार के सर्वप्रथम न्याय शास्त्र (Law Code) को पाँच इंच चौड़ी तथा आठ इंच लम्बी ईंटों पर उत्कीर्ण करवा कर निर्माण किया।

सम्भवतः इसी के शासन काल में इब्राहिम¹ ने उर नगर से हेबरोन (कनआन देश में स्थित) नगर को स्थानान्तरण किया। इब्राहिम (हेब्रू में अब्राहम) एक मूर्तिकार तथा मूर्ति - पूजक टेरा का पुत्र था। उसके मन में एकेश्वरवादी विचार उत्पन्न हुए जो उर के निवासियों के विचारों से विरुद्ध थे। इसी कारण इब्राहिम अपने कुछ मतानुयायियों के तथा कुटुम्बियों के साथ कनआन चला गया। बाद में यही संसार के दो महान् धार्मिक मतों (इस्लाम तथा जूडावाद) का पैगम्बर माना जाने लगा।

उर नम्मू के वंश में निम्नलिखित शासक हुये :—

१. उर नम्मू	संस्थापक	२११२ से २०९६ ई० पू० तक
२. शुलगी	उर नम्मू का पुत्र	२०९५ से २०४८ " "
३. अमर सिन	शुलगी का पुत्र	२०४७ से २०३९ " "
४. शू सिन	अमर सिन का पुत्र	२०३८ से २०३० " "
५. इब्बी सिन	शू सिन का पुत्र	२०२९ से २००६ " "

एलाम के आक्रमणकारियों ने इस वंश के अंतिम शासक इब्बी सिन को बन्दी बना लिया तथा अपने देश ले गये। इस प्रकार इस वंश का अंत हो गया। इन आक्रमणों के फलस्वरूप उर नगर नष्ट - भ्रष्ट हो गया।

पश्चिम से ई० पू० की बीसवीं श० में एक अन्य सेमिटिक जाति के लोग हुरियन जाति के आक्रमणों के कारण अपनी जन्म भूमि काडेस (कनआन) छोड़कर सुमेर तथा अक्काद की भूमि में आकर बसने लगे। इस

1. इब्राहिम अलद सलाम अर्थात् अल्लाह की इन पर सलामती हो।

जाति का नाम अमोर (अमूरु - Amorites) था । यह लोग या तो व्यापार करते थे या सेना में भर्ती होकर युद्ध करते थे । ये शनैः शनैः नगर - राज्यों की राजनीति में बाधा डालने लगे, अपनी सत्ता को बढ़ाने लगे और एक दिन ऐसा आया कि सुमेर निवासी अपना अस्तित्व खो बैठे ।

अब दो राज्य स्थापित हुए । पश्चिम के राज्य में तीन नगर, बेबीलोन (आ० हिल्ला), आइसिन (आ० बहरियत) और लारसा (आ० सेनखर्ब) तथा उत्तर के राज्य में दो नगर, अशुर (आ० शरकात) और एशनुन्ना (आ० टेल असमार) इन दोनों राज्यों ने मिलकर लगभग तीन सौ वर्ष राज्य किया ।

इन राज्यों का प्रथम शासक सुम्मू अबूम था जिसने लगभग १८२६ से १८१३ ई० पू० तक राज्य किया । इसने दोनों राज्यों के मध्य एक नई राजधानी का निर्माण करवाया जिसका नाम सुमेर की भाषा में का - डिगर - रा तथा अक्काद की भाषा में बाब - इलिम रखा गया । इन दोनों शब्दों का अर्थ था 'भगवान् का द्वार' । बाद में बाइबिल तथा वेबिल हो गया । ग्रीक लोगों ने 'यन' [N] अक्षर को जोड़ दिया जिस कारण वेबिलन तथा बेबीलोन कहलाने लगा । इस नगर ने निर्माण - कर्त्ताओं द्वारा कितने अच्छे दिन तथा आक्रमण - कर्त्ताओं द्वारा कितने बुरे दिन देखे हैं । लगभग ई० पू० की सातवीं श० में यह विश्वविख्यात नगर था जो आज केवल मिट्टी के तीन टीलों द्वारा दृष्टिगोचर होता है । उसी के निकट एक गाँव हिल्ला बसा है जो बेबीलोन का प्रतिनिधित्व करता है ।

इन दो राज्यों के शासकों का वंश बेबीलोन के प्रथम वंश के नाम से ज्ञात है । इस वंश के निम्नलिखित शासक हुए :—

१. सुम्मू अबूम	१८२६ से १८१३ ई० पू० तक
२. सुम्मू ला इलुम	१८१२ ,, १७७७ ,, ,,
३. अबूम	१७७६ ,, १७६३ ,, ,,
४. अपिल सिन	१७६२ ,, १७४५ ,, ,,
५. सिन मुबालित	१७४४ ,, १७२५ ,, ,,
६. हम्मू राबी ^१	१७२४ ,, १६८२ ,, ,,
७. सम्सू इलूना	१६८१ ,, १६४४ ,, ,,
८. अबी - एशु	१६४३ ,, १६१६ ,, ,,
९. अम्मी दिताना	१६१५ ,, १५७९ ,, ,,
१०. अम्मी जद्गुगा	१५७८ ,, १५५८ ,, ,,
११. सम्सू दिताना	१५५७ ,, १५२६ ,, ,,

इस वंश के राजा हम्मू राबी ने^१ अपनी प्रजा की भलाई के लिए बहुत कार्य किये । यह संसार के प्रसिद्ध शासकों की सूची में गिना जाता है । इसके नाम की व्याख्या इस प्रकार की जाती है :—

१. विभिन्न विद्वानों ने हम्मूराबी के निम्नलिखित शासन काल निर्धारित किये हैं :—

—सिडनी स्मिथ (Sydney Smith) ने १७९२ - १७५० ई० पू० ।

—एडवर्ड मियर (Edward Meyer) ने तथा

—एल० डबल्यु० किंग (L. W. King) ने २१२३ - २०८१ ई० पू०

'Cambridge Ancient History'. Vol. I, p. - 156.

—'Encyclopaedia Britannica Vol. II, p. - 42.

२०६७ - २०२५ ई० पू०

—ए० मूरगट (A. Moorgat) ने १७२४ - १६८२ ई० पू०

‘हम्मू या अम्मू = चाचा तथा राबी = बड़ा अर्थात् बड़ा चाचा’। दूसरी व्याख्या द्वारा ‘खम्मू से हम्मू बना’। खम्मू एक देवता का नाम था। इस नरेश का काल — निर्धारण में इतिहासकार एकमत नहीं हैं। इस पुस्तक में मूरगट वाला काल ठीक मान लिया गया है।

हम्मू राबी का ‘आँख के बदले आँख’ का विधान, जिसमें लगभग दो सौ कानून थे, संसार का एक महान् कृत्य माना जाता है। उसने इस विधान के कई शिलालेख उत्कीर्ण करवा कर लगवाये। वह कहता था कि उसके परम पूज्य सूर्य देवता ने उसको यह कानून प्रदान किये हैं (बहुधा लोगों ने देवताओं व भगवान के नाम पर ही अपने बनाये कानून चलाये)। इस विधान का एक शिलालेख एलाम का एक आक्रमणकारी ई० पू० की सोलहवीं श० में सूसा ले गया जो १९०१ ई० के उत्खनन में जे० डी० मॉर्गन द्वारा प्राप्त हुआ।

इस वंश का अन्तिम राजा शम्मू दिताना था जिसके मरणोपरांत यह वंश समाप्त हो गया। एशिया माइनर की ओर से हित्ति जाति के आक्रमणों के कारण यह राज्य क्षीण अवस्था को प्राप्त होने लगा। हित्ति लोग राज्य में घुस पड़ कर एवं लूट मार कर चले जाया करते थे। उनको इतनी दूर से राज्य की व्यवस्था करना कठिन था। ऐसे संकट काल में एलाम के उत्तर की ओर पर्वतों में निवास करने वाली एक कसाइट जाति के लोगों ने १७४० ई० पू० में बेबीलोनिया के देश पर विनाशकारी आक्रमण आरम्भ कर दिये थे। १५२६ ई० पू० में इस जाति ने बेबीलोनिया पर अपना पूर्ण अधिकार स्थापित कर लिया। बेबीलोन नगर का नाम कार — दुनियाश रखा। इसी वंश के एक नरेश कुरी गाल्जू द्वितीय ने अपने राज्य काल (१३३७ से १३१३ ई० पू० तक) में एक नई राजधानी दुर — कुरी गाल्जू के नाम से निर्माण करवाई। इस जाति के राजाओं ने लगभग चार सौ वर्ष राज्य किया।

सुमेर के उत्तर की ओर के एक छोटे से राज्य का नाम, अशुर देवता के नाम पर, एक ग्रीक इतिहासकार हेरोडोटस (Herodotus) के अनुसार जो इतिहास का जन्मदाता माना जाता है, असीरिया (Assyria) रखा। अशुर नूह (Noah) के पुत्र साम का पुत्र था जो इस राज्य का मुख्य देवता था तथा जिसके नाम पर असीरिया का मुख्य नगर अशुर भी बसाया गया था। यहाँ के शासक अपने नाम के पूर्व इस देवता का नाम जोड़ दिया करते थे। आरम्भ में यह मितन्नी राज्य का एक प्रान्त था। जब हित्ति राज्य के एक शासक शुप्पी लूली उम्मा (या शुप्पिलूली माश) ने मितन्नी राज्य का पश्चिमी भाग अपने अधीन कर लिया तब असीरिया का शासक अशुर उबालित प्रथम ने अपने राज्य को स्वतंत्र घोषित कर दिया।

वैसे तो असीरिया के कई शासक हुए परन्तु प्राचीन इतिहास में उन्हीं राजाओं का उल्लेख मिलता है जिन्होंने या तो कुछ स्मारकों का निर्माण करवाया अथवा शिलालों पर कुछ लेख उत्कीर्ण करवाये। क्योंकि इतिहास की आधार शिला के लिये इसी प्रकार के प्रमाणों की आवश्यकता पड़ती है।

कुछ उल्लेखनीय शासकों के निम्नलिखित नाम :—

१. तिघलत पलेशर प्रथम : जिसने १११४ से १०७६ ई० पू० तक राज्य किया। कसाइट जाति का राज्य समाप्त किया। छोटे — छोटे राजाओं को अधीन करके एक विशाल राज्य की नींव डाली।
२. अदाद निरामी द्वितीय : ने ९१० से ८९० ई० पू० तक राज्य किया।
३. तुकुल्टी निनुरता द्वितीय : ने ८८९ से ८८४ तक।
४. अशुर नसीर पास द्वितीय : ने ८८४ से ८५९ तक राज्य किया। राज्य का विस्तार किया तथा कुछ उपनिवेशों पर अधिकार कर लिया।

५. शलमनेसर तृतीय : ने ८५८ से ८२७ ई० पू० तक राज्य किया ।
६. तिघलत पञ्चम तृतीय : ने ७४५ से ७२७ तक ।
७. शलमनेसर चतुर्थ : ने ७२६ से ७२२ ई० पू० तक राज्य किया । अपने राज्य काल के चार वर्ष युद्ध के मैदान में ही बिताये । राज्य का और विस्तार किया । ७२५ ई० पू० में इसने इस्राइल देश की राजधानी समारिया (आ० सिबास्तीया) को, जो एक पहाड़ी पर स्थित थी, घेर लिया । तीन वर्ष तक युद्ध करते रहने पर भी विजय प्राप्त न कर सका और युद्ध काल में ही वीरगति को प्राप्त हुआ ।
८. सरगोन द्वितीय : ने ७२२ से ७०५ ई० पू० तक राज्य किया । यह शलमनेसर चतुर्थ का सेनापति था और शलमनेसर की सेना का परिचालन कर रहा था । राजा के मरणोपरांत यह राजा बन बैठा । इसने केवल समारिया को ही परास्त नहीं किया अपितु इस्राइल जाति को ही समूल नष्ट कर दिया । इसने इस्राइल की दस जातियों के लगभग सत्ताइस हजार व्यक्तियों को बन्दी बना कर असीरिया व मीडिया भेज दिया । सरगोन ने अपने मुख्य विरोधी उरार्तू राज्य को भी परास्त कर दिया ।
९. सेन्नाखरिब : ने ७०४ से ६८१ तक राज्य किया । अपनी एक नई राजधानी का निर्माण करवाया और उसका नाम निनेव (आ० कुर्येजिक) रखा । इसने बेबीलोन के नगर को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया ।
१०. अशुर हेदन : ने ६८० से ६६९ ई० पू० तक राज्य किया तथा मिस्र को परास्त किया ।
११. अशुर बनी पाल : ने ६६९ से ६२६ ई० पू० तक राज्य किया । इसने विश्व के इतिहास में पर्याप्त ख्याति अर्जित की । यह साहित्य, ज्ञान, विज्ञान व कला का बड़ा प्रेमी था । इसने एक विशाल पुस्तकालय का निर्माण करवाया । इसके पुस्तकालय में पुस्तकें न थीं परन्तु मिट्टी की बनी तथा पकी हुई ईंटें या पाटियाँ थीं जिन पर इसने बारीक कीलाकार लिपि में धार्मिक कथाएँ, तात्कालिक विधि-विधान, इतिहास, जादू-टोना, विज्ञान, गणित, चिकित्सा-शास्त्र तथा खगोल-शास्त्र जैसे गूढ़ विषय उत्कीर्ण करवाये । जब यह ईंटें गीली होती थीं उस समय (पकने से पूर्व) बहुत मुलायम होती थीं । कीलाकार लिपि को विशेष लेखनी या नाखून द्वारा दबा दबा कर अंकित किया जाता था । तदनन्तर वे ईंटें पका ली जाती थीं । ऐसी सहस्रों ईंटें निनेवः के उत्खनन से प्राप्त हुईं । यह उत्खनन सर आस्टिन लेयर्ड (Sir Austin Layard) द्वारा १८४५ ई० में सम्पन्न हुआ । ऐसी ही लगभग तीस सहस्र ईंटें आज भी ब्रिटिश संग्रहालय में सुरक्षित हैं ।

अशुर बनी पाल ने युद्ध से सदैव घृणा की परन्तु फिर भी अपनी प्रजा के लिए, देश की सुरक्षा के लिए तथा बाहर के आक्रमणकारियों को परास्त करने के लिए इसको युद्ध में भाग लेना ही पड़ा । इसने बेबीलोनिया व मीडिया आदि के आक्रमणों को कितनी बार विफल किया । अन्त में विरोधी देशों ने मिलकर एक बड़ा विध्वंसक आक्रमण किया और देश व राजधानी को नष्ट-भ्रष्ट किया । अशुर बनी पाल के मरणोपरान्त भी आक्रमण होना बन्द नहीं हुये । ६१२ ई० पू० में असीरिया राज्य का अन्तिम शासक सियुरिश कुन इन्हीं आक्रमणों की ज्वाला में कूद कर भस्म हो गया । सुन्दर व भव्य राजधानी निनेवः धूल में मिल गई जो आज मिट्टी के बड़े टीलों के रूप में दिखाई देती है ।

कैल्डियन जाति के लोग अरबी भाषा में खालेदीन के नाम से पुकारे जाते थे । इनकी दो शाखाएँ थीं । एक तो वे लोग थे जो उर नगर में लगभग चार सहस्र वर्ष पूर्व निवास करते थे जिनमें से हज़रत इब्राहिम भी थे । दूसरे इस जाति के वे लोग थे जो अरारत के पहाड़ के आसपास रहते थे ।

अरारत का नाम उरार्तू हो गया था। उरार्तू राज्य की राजधानी वान झील पर बसा वान नगर था। यह जाति ई० पू० की आठवीं श० में बड़ी शक्तिशाली हो गई थी और असीरिया के राज्य पर बहुधा आक्रमण करती रहती थी। सम्भव है इसी जाति के कुछ वीर व उच्चवंश के लोग आकर बेबीलोन में बस गये हों और इन्हीं लोगों में से एक वीर ने नये बेबीलोन साम्राज्य की नींव डाली हो। इस नये वंश का संस्थापक — राजा का नाम नेबू पलासर था। जिस प्रकार असीरिया के राजा अपने मुख्य देवता के नाम को अपने नाम के आरम्भ में अशुर का प्रयोग करते थे ठीक उसी प्रकार नब — बेबीलोनिया साम्राज्य के शासक अपने मुख्य देवता 'नेबू' का नाम अपने नाम के पूर्व प्रयोग करते थे। यह नेबू देवता ज्ञान व साहित्य का देवता था। नेबू पलासर ने मिडिया के राजा सियाक्सरीज़ (Cyaxares) के साथ असीरिया पर विनाशकारी आक्रमण करके उसकी राजधानी निनेवः को धूल में मिला दिया।

नेबू पलासर के मरणोपरांत उसका पुत्र नेबू कदनेज़ार (Nebuchadnezzar) ६०५ ई० पू० में राजसिंहासनारूढ़ हुआ। इसी शासक के शासनकाल में बेबीलोन ने असाधारण प्रतिष्ठा प्राप्त की। नेबू कदनेज़ार ने मीडिया की राजकुमारी से विवाह किया। अपनी इसी सुन्दर रानी को प्रसन्न करने के लिये राजा ने एक भव्य सीढ़ीदार उद्यान का निर्माण करवाया जो प्राचीन संसार के सात आश्चर्यजनक भव्य निर्माणों में से एक माना जाता था और जो हैंगिंग गार्डेन्स के नाम से विख्यात था।

५९९ ई० पू० में नेबू कदनेज़ार ने दक्षिण की दो इस्राइल जातियों (जूडा और बेंजिमन) की राजधानी जेरुसलाम पर विध्वंसक आक्रमण कर दिया। जेरुसलाम के भव्य मन्दिर को नष्ट कर दिया और जूडा की दस व बेंजिमन की दो जातियों के लोगों को तथा उनके राजा जेहोर्श्याकिस^१ को बन्दी बना कर बेबीलोन ले आया। इस प्रकार इस्राइल की १२ जातियाँ छिन्न — भिन्न हो गईं। इस शासक के अंतिम दिनों में बेबीलोन के मन्दिरों के पुजारियों ने यहाँ की राजनीति में हस्तक्षेप करना आरम्भ कर दिया था। इसी कारण नेबू कदनेज़ार के मरणोपरांत एक शक्तिशाली पुजारी नेबू नयद (Nebu Nedus) शासक बन गया। तत्पश्चात् उसका पुत्र निदिन्तू बेल (Nidintu Bel) शासक बना।

पशिया राज्य का संस्थापक राजा सायरस, जिसको पशिया की भाषा में किरूश के नाम से सम्बोधित किया जाता है, ने बेबीलोन पर आक्रमण कर दिया तथा उसके अंतिम राजा निदिन्तू बेल का वध करवा दिया और बेबीलोन को अपने राज्य में सम्मिलित कर लिया। सायरस ने इस्राइल की उन दो जातियों को, जो नेबू कदनेज़ार द्वारा ५९९ ई० पू० के आक्रमण में बन्दी बना ली गई थीं, साठ वर्ष के बन्दी — जीवन बिताने के पश्चात् स्वतंत्र कर दिया परन्तु अब इन दो जातियों का नाम जूडा से जूडी, यूडी तथा यहूदी पड़ गया। अरेबिया में यहूदी नाम से और योरोप में यह ज्यूज़ (Jews) के नाम से विख्यात हुए।

३३१ ई० पू० में सिकन्दर (Alexander) ने बेबीलोनिया को अपने अधीन कर लिया। तत्पश्चात् ५० ई० पू० में रोमन साम्राज्य का एक प्रान्त बन गया। सातवीं श० में अरब के मुसलमानों ने इसको अपने अधीन कर लिया और इसको अल — ईराक (जिसके अर्थ अरबी भाषा में 'किनारा' होते हैं) के नाम से इस कारण सम्बोधित करने लगे कि यह देश अरब के किनारे पर था।

1. जेहोर्श्याकिस; जेहोवा + आकिस, जेहोवा (यहोवा) = यहूदियों के भगवान् का नाम; आकिस (अवस = प्रतिरूप) अर्थात् 'जेहोवा का प्रतिरूप'।

तेरहवीं श० में यह मंगोल शासकों के अस्तंगत चला गया। तदनन्तर कभी टर्की तथा कभी पर्शिया के अधीन रहा और अंत में (१८३१ में) पूर्णतया टर्की के अधीन हो गया। प्रथम महायुद्ध के अंत में (१९१८ में) इसका नाम ईराक पड़ गया और ब्रिटिश सरकार के संरक्षण में दे दिया गया। १९२१ में हेजाज (अरेबिया) के शासक हुसैन के पुत्र फैजल (Feisal) को ईराक का बादशाह बना दिया गया। १९५८ में एक सैनिक पदाधिकारी अब्दुल करीम कासिम ने बादशाह का वध कर डाला और एक सैनिक शासन स्थापित किया तत्पश्चात् एक गणतंत्र राज्य स्थापित हो गया।

पठनीय सामग्री

- Barton, G. A.* : The Origin and Development of Babylonian Writing (1913).
Bork, F. : Elamische Studien (1932).
Brice, W. C. : The Writing System of the Proto - Elamite Account Tablets of Susa (1962).
Clark, C. : The Art of Early Writing - With Special Reference to the Cuneiform Writing (Lond. 1938).
Chiera, E. : They Wrote On Clay (1938).
Finegan, J. : Archaeological History of the Ancient Middle East (1979).
Ibid : Light from Ancient Past (Lond. 1946).
Frankfort, H. : The Birth of Civilization in the Near East (1956).
Gadd, C. J. : Fall of Nineveh (1921).
Gyles, M. F. : Ancient World (1937).
Hamlyn, P. : The River Peoples of Long Ago (1932).
King, L. W. : The History of Sumer and Accad (1910).
Loftus, W. K. : Travels and Researches in Chaldea and Susiana (London - 1957)
Luckenbill, D. D. : Ancient Records of Assyria and Babylonia (Chicago -- 1926).
Oppenheim, A. L. : Ancient Mesopotamia - Portrait of the Dead Civilization (1964).
Pallis, S. A. : The Antiquity of Iraq (1956).
Pike, E. R. : Finding out about Assyrians. (1963).
Rogers, R. W. : A History of Babylonia and Assyria (1901).
Roux, G. : Ancient Iraq.
Saggs, H. W. F. : The Greatness that was Babylon (NY - 1962)
Smith, S. : Early History of Assyria (London - 1928).
Swain, J. E. : History of World Civilization (1961).
Woolley, C. L. : The Sumerians (1928).
Ibid : History Unearthed (1926).



मेसोपोटामिया : २

लेखन कला

लगभग ३५०० ई० पू० में सुमेर के निवासियों ने कुछ रेखाओं को अंकित कर लिपि को जन्म दिया। यह रेखाएँ नगर — राज्यों के स्थानीय देवी — देवताओं के आकार मात्र थे। शनैः शनैः यही रेखाचित्र दैनिक प्रयोग में आने वाली वस्तुओं तथा विचारों को भी व्यक्त करने लगे, जिनसे चित्रात्मक एवं चिह्नात्मक (मिली जुली) लिपि बन गयी। इसका प्रयोग ३००० ई० पू० में पुजारियों, राजाओं तथा उच्चपदाधिकारियों द्वारा किया जाता था। इस प्रकार की लिपि की लगभग एक सहस्र मुद्रायें (Seals) तथा पाटिया (Tablets) और उनके टुकड़े (fragments) उरुक (आ० बरक) से उत्खनन द्वारा प्राप्त हुए। यह उत्खनन कार्य जर्मनी के पुरातत्त्व — वेत्ताओं द्वारा १९२८ से १९३१ तक किया गया।

सुमेर की रेखा चित्रात्मक लिपि : १८७८ में फ्रांस के राजदूत अर्नेस्ट दि सार्जेक (Ernest de Sarzec) ने लैगाश (आ० टेल्लो) के प्राचीन नगर के टीले पर उत्खनन आरम्भ किया। उस उत्खनन में अनेक पाटियाँ निकलीं। इन पाटियों पर रेखाचित्र अंकित थे। यह रेखाचित्र सूखी मिट्टी की पाटियों पर अंकित किये जाते थे। उनमें से एक पाटिया ऐसी प्राप्त हुई जिस पर लैगाश के शासक एन्नातुम का नाम अंकित था। इसका अनुवाद दाइमल (Deimal) ने अपनी पुस्तक¹ में किया है। उस पाटिया का चित्र भी उसी पुस्तक से लेकर 'फ० सं० — ११४' पर दिया गया है। इसका काल लगभग ३००० ई० पू० माना गया है। इसको ऊपर से नीचे पढ़ा जायेगा तथा प्रथम कालम सीधे की ओर से आरम्भ होगा। इसका लिप्यन्तरण इस प्रकार है :—

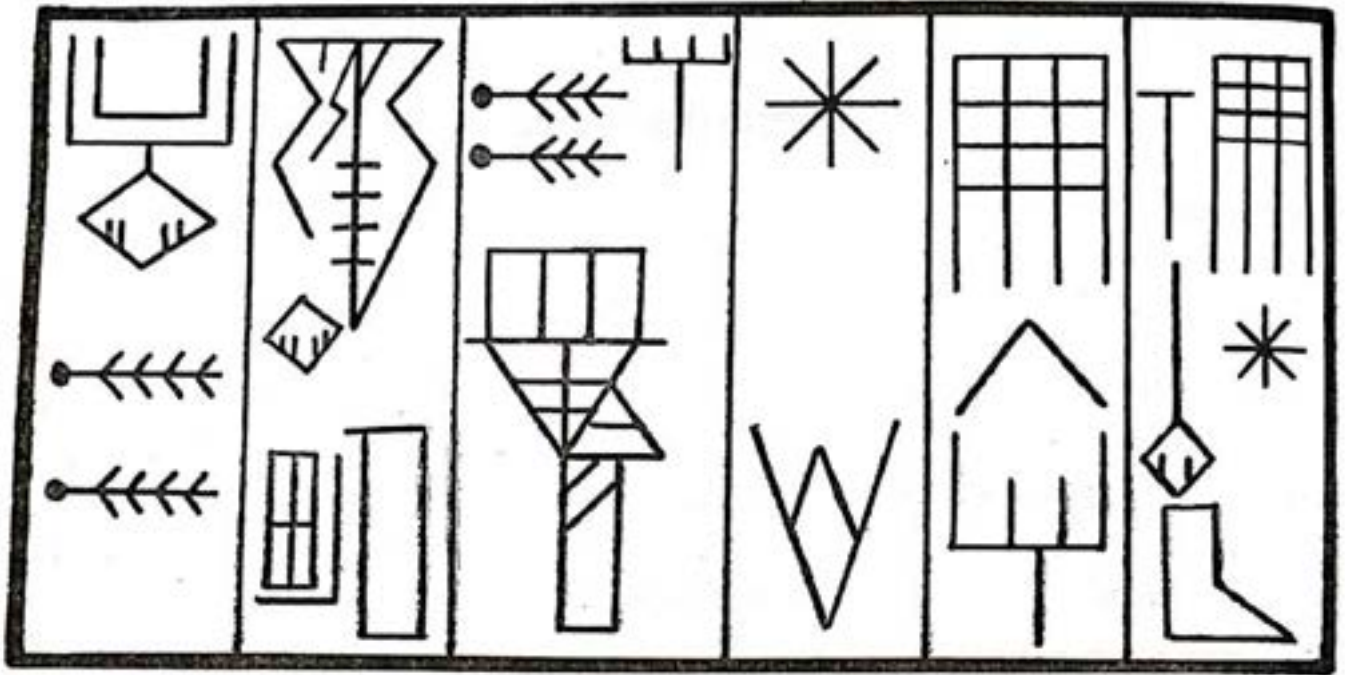
१ — ए — अन — न — तुम — मे; २ — सूस (दिव्य अस्त्र) गाल (महान्); ३ — बब्वर (सूर्य देव); ४ — लुगाल जल — सी — ग — क; ५ — लू गिस — हू — र; ६ — ए — म — सूम। अनुवाद "मैं नरेश एन्नातुम, बब्वर का, जो बड़ा शक्तिशाली तथा महान् है, बड़ा जाल उम्मा नगर के निवासियों पर फेंकता हूँ।"

सुमेर के अन्य रेखा — चित्र : इस चित्रात्मक — चिह्नात्मक रूपी मिश्रित लिपि में कुछ सुधार किये गये। उसको सरल बनाने के प्रयत्न किये गये ताकि इसका प्रयोग अधिक से अधिक निवासी कर सकें। इस प्रयास के क्रम द्वारा लगभग ९०० चिह्न निर्धारित कर लिये गये और उनको प्रयोगात्मक बनाया गया। इस प्रकार रेखाचित्र चिह्नात्मक — लिपि द्वारा प्रयोग में आने लगे। इस लिपि का काल ३००० से २५०० ई० पू० निर्धारित किया गया है। इसी लिपि के ९०० चिह्नों में से कुछ चिह्न 'फ० सं० — ११५' पर दिये गये हैं। पहले

1. Diemal : Sumer Grammar der Archaist Texte — (Rome — 1924), page — 45.

* ग्रेजी का अनुवाद : "I Enbatum, the great net of Babbar, of the King, of he, who is filled with high over the inhabitants of Umma, I threw it.

सुमेर की रेखा -- चित्रात्मक लिपि, एक पाटिया पर अंकित














फलक संख्या - ११४

कॉलम में चित्र बनाये गये हैं। दूसरे कॉलम में तात्कालिक भाषा में उन चित्रों के नाम दिये गये हैं तथा तीसरे कॉलम में उस चित्र का प्रतिनिधित्व करने वाला शब्द लिखा गया है। उदाहरणार्थ तारे के चित्र के कॉलम में तारा लिख दिया गया है और साथ ही साथ वह किस भाव को प्रकट करता है, लिख दिया गया है, जैसे तारे का चित्र वहाँ की भाषा में "अन" कहलाता था परन्तु 'आकाश' तथा 'देवता' का भाव व्यक्त करता था।

इस लिपि के दो तीन उदाहरण और प्रस्तुत किये जा सकते हैं। जैसे सिर के सामने प्याला बनाने से 'भोजन करना' व्यक्त किया जाता था। इस भाव में काल (भूत, वर्तमान व भविष्य) व्यक्त नहीं किया जाता था। यह मनुष्य अपनी ओर से प्रयोग कर लिया करते थे। इसी प्रकार सिर के सामने पानी का चिह्न बनाने से 'पानी पीना' व्यक्त किया जाता था। पुरुष व स्त्री को उनके लिंगों के चित्र बनाकर व्यक्त किया जाता था। इस प्रकार के चित्रों व चिह्नों के अंकित करने के लिए अच्छी धार वाली तथा नोक वाली चाकू जैसी लेखनी का प्रयोग किया जाता था जिसके द्वारा चाक - मिट्टी की सूखी पाटियों पर खुरेच खुरेच कर चिह्न उत्कीर्ण होते थे। 'फ० सं० - १२१' इस प्रकार के प्रयोगात्मक चिह्न उत्खनन सामग्री में प्राप्त हुए। यह उत्खनन कार्य फ्रांस के अन्तर्गत de Sarzec द्वारा १८७८ में उत्क में किया गया।

जब मानव का विकास हुआ और उसकी आवश्यकतायें बढ़ीं तो शब्दों का प्रयोग भी बढ़ा। इस प्रगति के साथ साथ कदम बढ़ाने के लिए लिपि में भी प्रगति व सुधार होने लगे। लगभग २६०० ई० पू० में इस प्रकार की प्रगति की ओर अनुसन्धान होने लगे। खुरेच खुरेच कर सूखी मिट्टी की पाटियों पर चित्र अंकित करने में बहुत समय लगने लगा। इस कारण गीली मिट्टी की पाटियों पर यह चित्र अंकित करने के प्रयोग होने लगे। इसमें लिपिकारों को गोलाकार चित्र बनाने में कष्ट होने लगा तो वे गीली मिट्टी पर अपने नाखूनों की दाव

सुमेर के रेखाचित्र

	अन	तारा = आकाश, देवता		कू	सिर व प्याला = भोजन करना
	की	पृथ्वी		आ	नदी = पानी
	लू	पुरुष लिंग = पुरुष		नाग	सिर व नदी = पीना
	साल	स्त्री लिंग = स्त्री		दू	पैर = चलना
	कुर	तीन टीले = पहाड़		मुशेन	चिड़िया = उड़ना
	जिमे	पहाड़ व स्त्री = दास-स्त्री		हा	मछली
	साग	सिर		गुद	बैल
	का	मुंह		अब	गाय
	मिन्हा	प्याला = भोजन		शी	अनाज

फलक संख्या - ११५

देकर चिह्न — चित्र अंकित करने लगे और जब इस प्रकार से भी काम न चल सका तो उन लोगों ने ऊपर से चौड़ी तथा नीचे की पतली होती गई लेखनी (Stylus) का प्रयोग किया जिसका रूप कुछ कोल जंसा था । अब इसी प्रकार की लेखनी द्वारा गीली मिट्टी की पाटियों पर लेटे, खड़े, आड़े व तिरछे निशान अंकित किये जाने लगे । इस लिपि में कुछ चित्रात्मक, कुछ चिह्नात्मक तथा कुछ भावमूलक शब्दों का प्रयोग किया जाने लगा और उस तत्कालीन जीवन की सारी उपलब्धियों, आवश्यक वस्तुओं तथा विचारों को व्यक्त करने में यह लिपि दिन पर दिन समर्थ होने लगी । यहाँ तक की असीरिया के राजा अशुर बनी पाल के पुस्तकालय से इस लिपि की लगभग तीस हजार की पकी हुई पाटियाँ प्राप्त हुई । इन पाटियों पर गणित, खगोल — शास्त्र, धर्म, दर्शन, विधि, इतिहास आदि अंकित पाये गये ।

वेबीलोनिया में इस लिपि का जन्म हुआ था परन्तु असीरिया निवासियों ने इसको अच्छी तरह से विकसित किया । इसका विकसित रूप लौट कर फिर वेबीलोनिया नव — वेबीलोनी लिपि के नाम से आ गया ।

इस लिपि का जन्म तो २५०० ई० पू० में हुआ परन्तु इसका नामकरण^१ संस्कार ४२०० वर्ष पश्चात् अठारहवीं श० में हुआ ।

पश्चिम — एशिया में लगभग २००० ई० पू० में इस लिपि का प्रयोग प्रचलित हो चला था । विभिन्न देशों की विभिन्न भाषाओं को व्यक्त करने के लिए इस कीलाकार लिपि का प्रयोग उपयुक्त समझा गया । इसी कारण सुमेरियन, अक्कादियन, हुरियन, हित्ती एलामी तथा उरार्ती भाषायें इसी लिपि में लिखी जाने लगीं । इस लिपि का एक चिह्न सभी भाषाओं में एक अर्थ अथवा एक ही भाव व्यक्त करता था, केवल उच्चारणों तथा नामों में अन्तर था । उदाहरणार्थ तारे के चित्र का प्रत्येक भाषा में अर्थ स्वर्ग ही था परन्तु इसको सुमेरियन भाषा में 'अन', अक्कादियन भाषा में 'समू', हित्ती में 'नेपिस' आदि कहते थे । इस तारे के चिह्न से देवता का भाव भी व्यक्त किया जाता था । इस लिपि का प्रयोग पाँचवीं श० में इतना कम रह गया कि आँखों से ही ओझल हो गया परन्तु फिर भी १५०० ई० सन् तक इस लिपि का प्रयोग सिसकियाँ लेता रहा । तत्पश्चात् इसका प्रयोग सदैव के लिए लोप हो गया ।

ई० पू० की आठवीं श० में एक पर्यटनशील सेमिटिक जाति सीरिया में स्थिर हो गई । अपना राज्य स्थापित कर लिया । उसी जाति के सहस्रों लोग धीरे — धीरे आकर मेसोपोटामिया में जमने लगे । यह लोग अरामियन थे जो अपने साथ एक भाषा तथा एक लिपि लाये जिसका नाम था अरमायक । यह उत्तरी सेमिटिक लिपि की एक शाखा थी तथा २२ व्यंजनों की वर्णात्मक लिपि थी । इसका प्रयोग व्यापारियों में अधिक बढ़ता गया । अब कीलाकार लिपि केवल राजकीय होकर रह गई ।

उत्खनन तथा रहस्योद्घाटन

इस प्राचीन मेसोपोटामिया देश में अर्वाचीन पाश्चात्य देशों के अनेक पुरातत्त्व वेत्ताओं द्वारा लगभग ६४०० उत्खनन कार्य सम्पन्न हुए जिनके फलस्वरूप सहस्रों मुद्रायें, पाटियाँ, उत्कीर्ण ईंटें, मिट्टी के चित्रकारी किये हुए बर्तन तथा उनके टुकड़े, उभरे हुए मिट्टी या पत्थर पर बने चित्र (Basreliefs) मानव कंकाल तथा उत्कीर्ण समाधियों — के — पत्थर एवं शिलालेख (Stele and Rock inscriptions) और उनके अनेक टुकड़े भूगर्भ से प्राप्त हुए जो संसार के सैकड़ों संग्रहालयों में सुरक्षित रखे हैं ताकि भावी पीढ़ियाँ अपने अतीत काल का ज्ञान प्राप्त कर एकता का भाव जीवित रख सकें ।

1. विवरण पश्चिमा के अभिलेखों के रहस्योद्घाटन की कहानी में देखिये ।

इस कीलाकार लिपि के रहस्योद्घाटन कार्य को योरोप निवासी विद्वानों ने बड़ी संलग्नता के साथ किया। किस प्रकार यह शोध आरम्भ हुआ तथा किस प्रकार सारे संसार के विद्वानों ने इस कार्य की सराहना की और एकमत होकर मान्यता प्रदान की, जिसमें किसी प्रकार का भ्रम शेष न रहा, यह पश्चिम के पाठ में पूर्ण विवरण सहित दिया गया है।















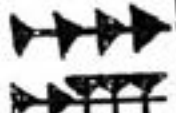





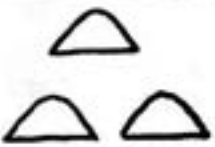
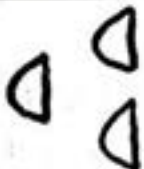












१८४३ में ईरान स्थित फ्रांसीसी - दूतावास के एक उच्च पदाधिकारी पाल एमाइल बोत्ता (Paul Emile Botta) ने असीरिया में सरगोन द्वितीय के राजभवन का उत्खनन किया। यह मेसोपोटामिया में उत्खनन के जन्मदाता समझे जाते हैं। इसके पश्चात् ब्रिटेन के सर आस्टिन लेयाड (Sir Austin Layard, १८१७ - १८९४) ने १८४५ में निनेवः का उत्खनन किया और अशुर बनी पाल के पुस्तकालय से बारीक कीलाकार लिपि में उत्कीर्ण की हुई तीस हजार ईंटें प्राप्त कीं जो आज भी ब्रिटिश संग्रहालय - लन्दन में सुरक्षित हैं। १८५० में एक आयरलैण्ड निवासी विद्वान् एडवर्ड हिन्क्स (Edward Hincks) ने असीरिया के अभिलेखों का रहस्योद्घाटन किया। (असीरियाई कीलाक्षरों का विकास) हिन्क्स ने सुमेरियन रेखाचित्रों से कीलाकार लिपि का विकास दिखाने के लिए चार्ट तैयार किये जिसके कुछ चित्र 'फ० सं० - ११६' पर दिये गये हैं। इस चार्ट में छः कॉलम बनाये गये हैं, जो निम्नलिखित हैं :—

१. मूल चित्र दिये गये हैं जिनको सुमेर निवासियों ने लगभग ३००० ई० पू० में बनाये थे।
२. उनकी दिशा का परिवर्तन किया अर्थात् जो शिरोवृत्त (Vertical) बनाये गये थे उनको क्षैतिज (Horizontal) बनाया।
३. उन चित्रों के सुमेरियन भाषा में नाम तथा उनका हिन्दी में अनुवाद दिया गया है।
४. उन शब्दों को कीलाकार लिपि का प्रथम रूप दिया गया। यह २५०० ई० पू० में सुमेर में हुआ।
५. उन शब्दों को कीलाकार लिपि में अधिक सरल बनाने का प्रयास किया गया। यह बेबीलोन तथा अशुर में हुआ। इसको प्राचीन असीरियाई माना जाता है।
६. यह कीलाकार लिपि का उच्चतम विकसित रूप है जिसको अशुर एवं निनेवः में तैयार करके सब विषयों के लिये प्रयोगात्मक बनाया गया। इस लिपि को बाद में बेबीलोनियन, अक्कादियन तथा असीरियन लिपियों के नाम से भी सम्बोधित करने लगे। इस लिपि में ६४२ आधार चिह्न थे।

१८६० में फ्रांस के विद्वान् जूलिस ओपर्ट (Jules Oppert, १८२५ - १९०५) ने असीरिया के प्राचीन लेखों से एक व्याकरण तैयार किया।

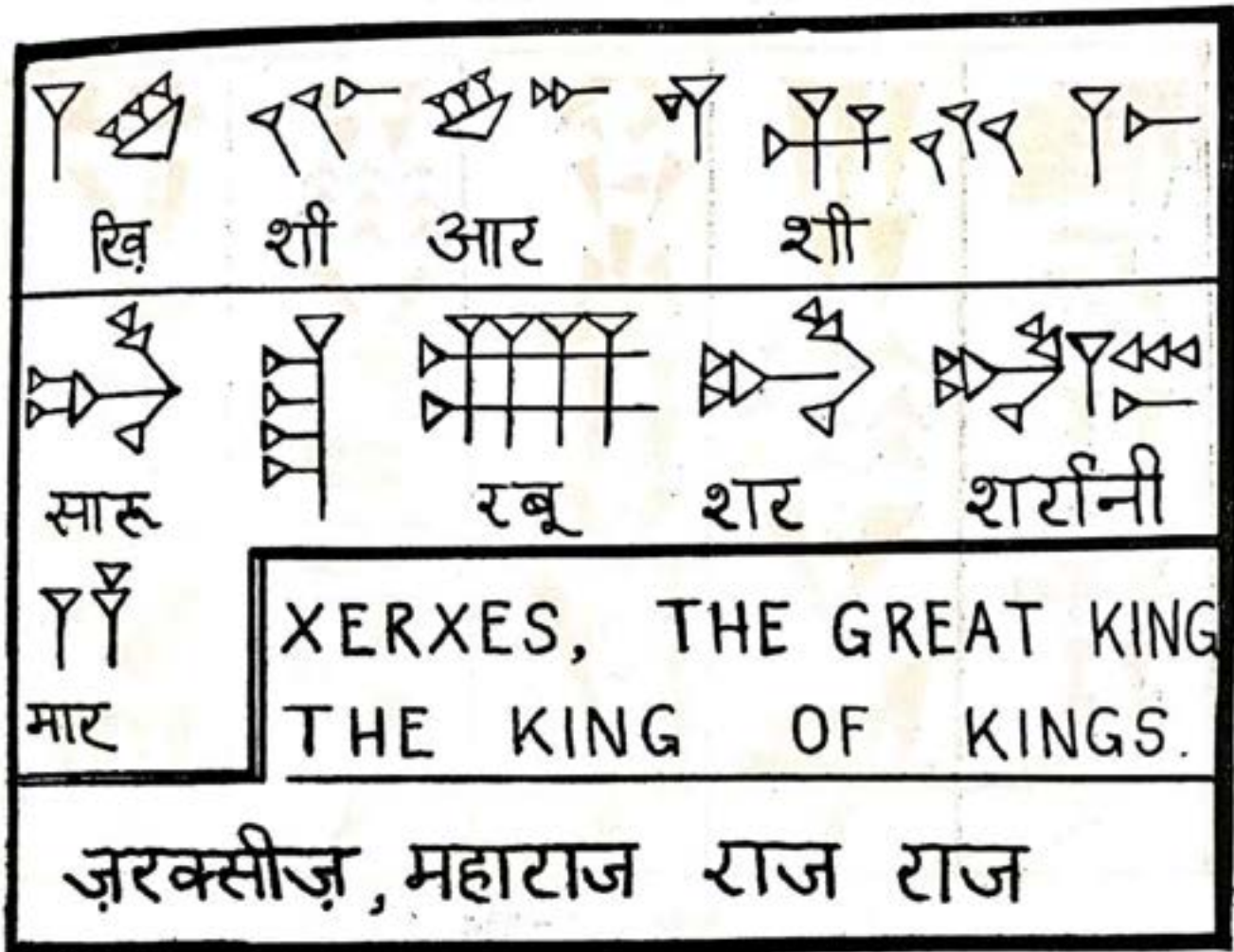
तत्पश्चात् भिन्न भिन्न देशों से पुरातत्त्व तथा भाषा - विज्ञान - वेत्ता मेसोपोटामिया में आये और उत्खनन कार्य किये। अभिलेखों का रहस्योद्घाटन किया तथा इस देश के प्राचीन इतिहास की कड़ियों को क्रमबद्ध किया। इन्हीं विद्वानों के परिश्रम के फलस्वरूप इस देश का अन्धकारमय अतीत प्रकाशमय हो गया। इस लिपि के गूढ़ चिह्नों का रहस्योद्घाटन सर हेनरी रॉल्लिन्सन ने सन् १८५१ ई० में किया। इस लिपि में २४२ चिह्न निश्चित किये गये हैं। यह प्राचीन बेबीलोन से कुछ भिन्नता रखती है। नीचे दी गई पंक्तियाँ पश्चिम के विशाल व प्रसिद्ध शिलालेखों से ली गई हैं। साथ में अर्थ भी लिखे हैं।

असीरियाई कीलाक्षरों का विकास

१	२	३	४	५	६
		अन = स्वर्ग			
		की = पृथ्वी			
		लू = पुरुष			
		मुन्नुस = स्त्री			
		कुर = पर्वत			
		मिन्डा = भोजन			
		गुद = बैल			

फलक संख्या - ११६

बेबीलोन की कीलाकार लिपि








फलक संख्या - ११७

हम्मूराबी का प्रसिद्ध शिलालेख

हम्मूराबी ने अपने शासन काल में एक विधि - संहिता का निर्माण किया जिसको वह सूर्य देवता 'शम्स' का वरदान मानता था। संसार का यह सर्वप्रथम उच्चकोटि का विधान था जिसके कारण हम्मूराबी विश्व - विख्यात राजा हो गया। उसने इन कानूनों को शिलाओं पर उत्कीर्ण करवा कर मुख्य मुख्य स्थानों पर स्थापित करवाया। हम्मूराबी के शिलालेख प्राचीन बेबीलोनी (अक्कादी) कीलाकार लिपि में उत्कीर्ण कराये गये थे।

ई० पू० की अठारहवीं श० में कीलाकार लिपि ऊपर से नीचे अंकित की जाती थी। पहली पंक्ति समाप्त होने पर दूसरी ऊपर से नीचे वाली पंक्ति पहली पंक्ति के बाईं ओर अंकित की जाती थी। ऊपर से नीचे लिखी जाने वाली पंक्तियाँ दाएँ से बाएँ अंकित होती थीं। सत्पश्चात् यह खड़ी पंक्तियाँ परिवर्तित होकर क्षतिज (दायें से बायें) अंकित की जाने लगीं। परन्तु ई० पू० की पन्द्रहवीं श० में जब कि बेबीलोनिया पर कसाइट जाति के शासक शासन कर रहे थे इस लिपि की दिशा परिवर्तित होकर बायें से दायें हो गई।

हम्मू राबी (१७२४ - १६८२ ई० पू०) की विधि - संहिता (LAW - CODE)

				
५	४	३	२	१

फलक संख्या - ११८

यह शिलालेख ऊपर से नीचे तथा सीधी ओर से इस प्रकार पढ़ा जायेगा :—

१. सूम - मा अ - वी - लूम ।
२. ईन - इन - मार अबी - लोम ।
३. उह - ताब - बी - इत ।
४. ई - इन - सू ।
५. ऊ - हा - अप - पो - दू ।

इसके अर्थ हैं :—“यदि कोई मनुष्य किसी की आँख नष्ट करता है तो वे उसकी आँख नष्ट कर देंगे ।”

१२२० ई० पू० में सूसा (एलाम) के राजा शुत्रुक नाबुन्टे ने बेबीलोन पर एक विनाशकारी आक्रमण किया तथा सिप्पर (आ० अबू हवा) को भी बिना नष्ट किये नहीं छोड़ा, जहाँ से हम्मूराबी की विधि संहिता वाली काली शिला भी लूट के माल के साथ सूसा ले गया । इसी सूसा के उजड़े स्थान को, जिस पर एक दिन एलाम देश की भव्य राजधानी खड़ी थी, डबल्यू० के० लोफ़तस (W. K. Loftus) ने सर्वप्रथम पहचाना ।

उसके एक टीले पर एम० दियुलाफो (M. Dieulafoy) ने उत्खनन कार्य आरम्भ किया तथा १८९७ में जे० डी मॉरगन (J. de Morgan) ने दूसरी बार इस प्राचीन नगर में उत्खनन कार्य आरम्भ किया। १९०१ में नरमसिन तथा हम्मूराबी के दो शिलालेख प्राप्त हुए। हम्मूराबी की शिला सात फिट छः इंच ऊँची थी तथा उसमें २८२ प्रकार के नियम एवं उपनियम उत्कीर्ण थे। आज यह शिलालेख फ्रांस के प्रसिद्ध लूवे संग्रहालय (Louvre Museum)¹ में सुरक्षित है। इसी शिला लेख की पाँच ऊपर से नीचे उत्कीर्ण पंक्तियाँ 'फ० सं० - ११८' पर दी गई हैं और उनके नीचे उनके उच्चारण लिप्यान्तरण तथा अनुवाद भी दिया गया है।

असीरियन लिपि के व्यंजन व स्वर : सुमेरियन कीलाकार लिपि से प्राचीन बेबीलोनियन का विकास हुआ तत्पश्चात् लगभग २००० ई० पू०² में असीरियन कीलाकार लिपि का विकास आरम्भ होने लगा। इस समय तक लगभग ६०० निर्धारक चिह्नों का प्रयोग किया जाता था जो शनैः शनैः कम होकर लगभग १००० ई० पू० तक केवल १००³ निर्धारक शब्द रह गये। 'फ० सं० - ११९' पर, ऊपर की ओर व्यंजन व स्वर दिये गये हैं।

असीरियन लिपि के कुछ निर्धारक शब्द⁴ : उसी के नीचे 'फ० सं० - ११९' पर कुछ निर्धारक शब्द दिये गये हैं। उन पर क्रम संख्या दी गई है जिसका विवरण नीचे दिया गया है :—

- | | |
|------------------------|--------------------|
| १. ईलू = देवता। | ७. अलू = स्थान। |
| २. अशरू = स्थान। | ८. अमेलू = पुरुष। |
| ३. शीना = दो। | ९. शम्मू = पौधा। |
| ४. सुवातू = वस्त्र। | १०. नुनू = मत्स्य। |
| ५. ईसू = लकड़ी, वृक्ष। | ११. अरखू = माह। |
| ६. शरू = आँधी। | |

प्राचीन तथा नव - बेबीलोनी लिपि : 'फ० सं० - ११९' पर नीचे की ओर प्रथम पंक्ति में प्राचीन बेबीलोनी कीलाकार लिपि (लगभग २२०० ई० पू०) में हम्मूरबी⁵ का नाम लिखा है और अन्त में नृप का एक निर्धारक चिह्न भी लिखा है जिसको 'लुगल' कहते हैं (लु = पुरुष; गल = महान्) अर्थात् 'नृप'। नीचे की पंक्ति में संशोधित असीरियन कीलाकार लिपि है (लगभग १२०० ई० पू० काल की)।

कीलाकार लिपि का कालानुसार परिवर्तन⁶ : आदि काल से ई० पू० की तृतीय शताब्दी तक यह लिपि निम्नलिखित काल में परिवर्तनशील रही :—

१. रेखा - चित्र : इस लिपि के लगभग ३००० से २५०० ई० पू० तक अनेक अभिलेख उरुक, किश, उर तथा जेम्द नन्न से प्राप्त हुये। इसमें सर्वप्रथम लगभग ८०० शब्द रेखा - चित्रों द्वारा अंकित किये जा सकते थे। इनको सूखी पाटियों पर या शिलाओं पर अंकित किया जाता था।

1. लूवे संग्रहालय (पेरिस) में अपनी विश्व सायकिल यात्रा काल में लेखक ने स्वयं इसको देखा है। (१९७५)

2. Breasted, J. H. : Semitic Writing (London, 1948), p. - 22.

3. Friedrich, D. : Sumerische Grammatik (Leipzig, 1914), p. - 107.

4. Deimal, A. : Keilschrift Palaeographic (Rome, 1929), p. - 134.

5. Friedrich, J. : Entzifferung Verschollener Schriften and Sprachen (Berlin, 1954), p. - 34.

6. Jensen, H. : Syn, Symbol, Script (London, 1970), p. - 90.



असीरियन लिपि के व्यंजन तथा स्वर


ब	द	ग	ख	क	ल		
							
क	म	न	प	र	स	श	त
							
श	व	ज	अ	ए	इ	ओ	उ
							
असीरियन लिपि के कुछ निर्धारक शब्द							
१	२	३	४	५	६		
							
७	८	९	१०	११			
							
प्राचीन तथा नव-बेबीलोनी लिपि							
							
							
ह	अम	मू	र	बी	लुगाल		
							

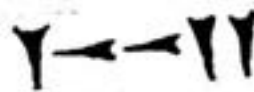
२. रेखा — चित्रों से कीलाकार लिपि का विकास : लगभग २५०० से २३०० ई० पू० तक अन्तर्कालीन रही।
ज्ञानः ज्ञानः परिवर्तन आये।
३. कीलाकार लिपि : लगभग २३०० से १८०० ई० पू० तक चिकनी मिट्टी की पाटियों पर अंकित की जाती रही।
४. कीलाकार लिपि : (१८०० से १७५० ई० पू० तक) हममूरबी काल में यह लिपि पाटियों तथा शिलाओं पर अंकित की जाती रही।
५. कीलाकार लिपि का घसीट रूप : आरम्भ होने लगा। लगभग १७५० से १२५० ई० पू० तक रहा।
६. असीरियन लिपि : यह तो २००० ई० पू० से ही आरम्भ होने लगी थी जो २०० वर्षों के पश्चात् दृष्टिगोचर होने लगी और लगभग १२५० ई० पू० तक पूर्ण विकसित हो चुकी थी। इसका प्रयोग ६०० ई० पू० तक होता रहा।
७. नव — बेबीलोनियन : ६०० ई० पू० से इसका पतन आरम्भ हो गया परन्तु इसका प्रयोग पश्चिम के साम्राज्य के अन्त तक (ई० पू० की तीसरी श० तक) एक राज्य लिपि के रूप में जीवित रही। इसके पश्चात् इसका लोप होने लगा।

सुमेर की संख्या पद्धति

लिपि के साथ साथ अंकों का भी निर्माण लगभग २५०० ई० पू० में हुआ। जिस प्रकार संसार के सभी सभ्य प्राचीन देशों में खड़ी या लेटी रेखायें बना कर अंकों का जन्म हुआ उसी प्रकार मेसोपोटामिया में भी अंकों का जन्म तथा प्रयोग हुआ। अन्तर केवल इतना था कि यहाँ लकीरों के स्थान पर पञ्चड़ों (Wedges) के प्रकार की अथवा कीलों के प्रकार की लकीरों का प्रयोग हुआ। अन्य देशों में १०० तक गणना होती थी परन्तु यहाँ की गणना पद्धति केवल ६० पर आधारित थी इसलिए अंक भी ६० ही थे। वे १ से ५९ तक की सभी संख्याओं को जोड़ की योजना से लिखते थे। केवल दो चिह्नों का प्रयोग करते थे।

खड़ी कील  १ को व्यक्त करने के लिए और लेटी कील  १० को व्यक्त करने के लिए।

संख्या ४३ इस प्रकार लिखी जाती थी  ६० का चिह्न वही होता था जो १ का

होता था। यदि ८२ लिखना हो तो इस प्रकार  लिखा जाता था। ६० वाली

पद्धति हमको आज भी घण्टा, मिनट, सेकण्ड में मिलती है।

असोरिया की संख्या पद्धति

इस पद्धति में सैकड़ा व हजार भी सम्मिलित थे और उसके चिह्न भी निर्धारित कर लिये गये थे। इन दोनों पद्धतियों में शून्य का पता नहीं था। शून्य भारत से गया इसी कारण 'हिन्दसा' अर्थात् 'हिन्द जैसा' सम्बोधित किया गया। असोरिया की संख्या इस प्रकार है :—



फलक संख्या - १२०

पठनीय सामग्री

- Allen, A. B. : Romance of Alphabet (1937)
- Barton, G. A. : The Origin and Development of Babylonian Writing (1913)
- Budge, E. A. W. : Rise and Progress of Assyriology (London 1925)
- Chiera, E. : They Wrote on Clay (1938)
- Clark, C. : The Art of Early Writing With special Reference to the Cuneiform Writing (London. 1938)
- Clodd, E. : The Story of the Alphabet (N. Y - 1938)
- Cottrell, L. : Reading of the Past - the Story of Deciphering Ancient Languages (London - 1972)
- Doblhofer, E. : Voices in Stone (1961)
- Gelb, I. J. : A Study of Writing (London - 1963)
- Jensen, H. : Syn, Symbol and Script. (1970)
- King, L. W. : Assyrian Language (1901)
- Luckenbill, D. D. : Ancient Records of Assyria and Babylonia (Chicago - 1926)
- Mercer, S. A. B. : A Sumerian-Babylonian Sign List.
- Moorhouse, A. C. : The Triumph of the Alphabet - A History of Writing (NY - 1953)
- Pallis, S. A. : The Antiquity of Iraq (Copen - 1956)

पर्शिया (ईरान)

इतिहास

मेसोपोटामिया के दक्षिण - पूर्व में एक प्राचीन देश सूसियाना, जो बाइबिल में एलाम (Elam) कहलाता है, स्थित था। इस देश की राजधानी सूसा (शूशा) थी। सुमेर की भाषा में इस का नाम एलामतू तथा ऐलामू था। बेबीलोन के नरेश सरगोन - प्रथम ने लगभग २३६० ई० पू० में एलाम को परास्त किया परन्तु २२८० में यह फिर स्वतंत्र हो गया। एलाम के तत्कालीन शासक कुतुर नाखुन्टे (Kutur Nakhunte) ने बेबीलोन पर आक्रमण किया परन्तु परास्त न कर सका। लगभग २२६१ ई० पू० में बेबीलोन के राजा नरमसिन (२२९१ - २२५५ ई० पू०) ने एलाम को परास्त कर एक स्थानीय राजा शिलक इन्शु शिनाक (Shilak Inshushinak) को अपना प्रान्तपाल बना कर एलाम का शासक नियुक्त कर दिया। कुछ समय के पश्चात् इसी प्रान्तपाल ने नरमसिन को परास्त कर एलाम तथा बेबीलोन का शासक बन बैठा। इसके पश्चात् एलाम इतिहास के पृष्ठों से लगभग ९०० वर्ष के लिये लोप हो गया।

लगभग १३३० ई० पू० में बेबीलोनिया के कसायट शासक कुरी गाल्जू तृतीय ने एलाम के शासक खुर्बानिला को परास्त किया। १३०० ई० पू० में एलाम देश में एक नये राज - वंश की नींव पड़ी जिसका प्रथम राजा उन्ताश उबन (१२६५ - १२४५ ई० पू०) था। लगभग १२२० ई० पू० में शुत्रुक नाखुन्टे नामक शासक ने बेबीलोनिया देश पर फिर आक्रमण किया, नष्ट - भ्रष्ट किया, बेबीलोन नगर में अग्निकाण्ड मचा दिया तथा वहाँ के तत्कालीन शासक जमामा सुमुदीन का वध करवा डाला। नरमसिन का शिलालेख तथा सिप्पार (आ० अबू हवा) से हम्मूराबी (१७२४ से १६८२ तक) के विधि संहिता के शिलालेख भी अपने साथ सूसा ले गया। एलाम का साम्राज्य राजा शिलक इन्शुशिनाक के शासन काल (११६५ - ११५१ ई० पू०) में उन्नति की चरम सीमा पर पहुँच गया था परन्तु उसकी मृत्यु के पश्चात् छिन्न - भिन्न हो गया। एलाम ने फिर ४०० वर्षों के लिए इतिहास के पृष्ठों से अवकाश ग्रहण कर लिया।

लगभग ७५० ई० पू० में एलाम का इतिहास फिर एक शासक उम्बा दारा के शासन से आरम्भ हुआ। ७४२ में खुम्बा निगस उम्बा दारा का उत्तराधिकारी बना। ७२० में सरगोन द्वितीय ने एलाम पर आक्रमण कर दिया तथा ७१५ में मीडिया के राजा को परास्त कर बन्दी बना लिया और अधीन राजा से कर वसूल करता रहा। ७०० ई० पू० में एलाम का राजा भी बन्दी बना लिया गया। तदनन्तर उसका भाई खल्लूसू करता रहा। ६९४ ई० पू० में बेबीलोन पर आक्रमण कर दिया तथा वहाँ के उसका उत्तराधिकारी बना। खल्लूसू ने ६९४ ई० पू० में बेबीलोन पर आक्रमण कर दिया तथा वहाँ के तत्कालीन शासक सेनाखरिव के पुत्र को बन्दी बना लिया। उसने अपने अधीन एक अपने प्रतिनिधि नगल युसेखिव को बेबीलोन का शासक नियुक्त कर दिया। खल्लूसू का वध एलाम में करवा दिया गया। उसके मरणोपरांत कुदुर नाखुन्टे ने, जो शासक बन गया था, पुनः बेबीलोन पर आक्रमण कर दिया परन्तु दस माह पश्चात् उसका भी वध करवा दिया गया। उसके पश्चात् उसका भाई उम्मान मेनान उत्तराधिकारी बना। इसने एक विशाल सेना का संगठन किया और असीरिया पर आक्रमण कर दिया परन्तु परास्त न कर सका।

एलाम का राज्य निर्बल हो कर पतन की ओर अग्रसर होने लगा। लगभग ६८९ ई० पू० खुम्बा खालदस द्वितीय सिंहासनारूढ़ हुआ। असीरिया तथा एलाम के सैनिक — झगड़े निरन्तर चलते रहे और एलाम फिर एक बार ६४० में पराजित हुआ। शासक तथा अन्य कई उप — शासक बन्दी बना लिये गये।

अख़मेनिज (ग्रीक — Achamenes; पर्शियन — हख़मनिश) ने लगभग ६७० ई० पू० में, जब मीडिया, असीरिया का एक उपनिवेश था, अपनी मातृभूमि छोड़ दी। कुछ दिनों में कुछ भूमि पर अधिकार करके एक छोटे से राज्य को स्थापित कर लिया जिसका नाम था परसूमाश और जिसको पारसा व अनशान भी कहते थे। उसके पुत्र तिशपिश (ग्रीक — Teispes; पर्शियन — किशपिश) ने अपने राज्य को अपने दो पुत्रों आर्यारमिनिज (Ariyaramnes) तथा सायरस (लैटिन — Cyrus; पर्शियन — किरुश; हेब्रू — कुरेश) में विभाजित कर दिया।

इतिहासकारों को असीरिया की पराजय के विषय में कुछ ज्ञात नहीं था परन्तु भाग्यवश १९२३ ई० में सी० जे० गैड^१ (C. J. Gadd) का 'फ़ाल आफ़ निनेव' के नाम से एक इतिहास (ब्रिटिश संग्रहालय में सुरक्षित है) हस्तगत हुआ जिसमें घटनाओं की सही तिथियाँ भी दी हुई थीं। तब संसार को वहाँ के इतिहास का ज्ञान प्राप्त हुआ।

उसी के अनुसार ६१६ ई० पू० में बेबीलोन के राजा नेबू पलासर (Nebu Palaser) तथा मीडिया उपनिवेश के अर्ध — स्वतन्त्र राजा सियाक्सरीज (ग्रीक — Cyaxares; पर्शियन — सिअक्शरीज व उवाकिश्तर) ने मिलकर असीरिया पर आक्रमण कर दिया। इस युद्ध में मिस्र ने भी सहयोग दिया। ६१२ में असीरिया की राजधानी निनेव को जला कर भस्म कर दिया गया। मीडिया के राजा को इतने ही से संतोष न मिला। वह आगे बढ़ा। उसने अर्मेनिया, एशिया माइनर के राज्यों को तथा पूरे ईरान को अपने अधीन कर लिया और एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की जो अधिक दिनों तक स्थित न रह सका। इस साम्राज्य की राजधानी एकबहान (आ० हमादान; प्राचीन पर्शियन — हगमतान) थी। सियाक्सरीज ने परसूमाश राज्य के दो छोटे राजाओं (सायरस और आर्यारमिनिज) को भी अपने अधीन कर लिया।

सियाक्सरीज की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र अश्तेगीज (ग्रीक Astyages; पर्शियन — अश्तुवेगु) मीडिया का नरेश बना। क्योंकि मीडिया की शक्ति दिन पर दिन क्षीण हो रही थी, सायरस ने अवसर पाकर ५५३ ई० पू० में मीडिया की अधीनता के विरुद्ध क्रान्ति कर दी। अश्तेगीज ने इस क्रान्ति का दमन करने के लिये परसूमाश पर आक्रमण कर दिया। तीन वर्ष बिरन्तर युद्ध के पश्चात् एक छोटे से नगर के निकट, जिसका नाम पसरगादे^२ था, सायरस की विजय हुई। उसने अश्तेगीज को बन्दी बना लिया, हमादान को लूटा और नष्ट कर दिया। तदोपरांत उसने ५४६ ई० पू० में मीडिया के नरेश क्रोशस (Croesus) तथा ५३८ में बेबीलोनिया के एक पुरोहित — राजा नेबुनिडस को परास्त कर एक विशाल पर्शियन साम्राज्य की नींव डाली। इस साम्राज्य की एक नई राजधानी उसी स्थान (पसरगादे के निकट) पर बनवाई गई जहाँ पर सायरस ने अश्तेगीज को परास्त किया था। उसका नाम भी पसरगादे (आधुनिक मुरगाब) ही रखा गया। मीडिया के निवासी पर्शिया के निवासियों से इतने घुल मिल गये कि वे अपनी पृथक्ता स्थिर न रख सके और पसरगादे^२ कहलाने लगे।

1. C. J. Gadd — Fall of Nineveh, (1923).

2. पर्शिया की एक जाति का नाम पसरगादे था।

५२९ ई० पू० में सायरस के मरणोपरांत उसका पुत्र कैम्बेसिज (Cambyes) शासक बना । उसने ५२५ में मिस्र देश पर विजय प्राप्त की और वहाँ रह कर कुछ वर्ष राज्य भी किया । ५२२ ई० पू० में जब वह मिस्र से लौट रहा था तब हुमादान के निकट उसका देहांत हो गया । इसका कोई शक्तिशाली उत्तराधिकारी न था ।

कैम्बेसिज के मरणोपरांत एक मागी^१ पुरोहित गीमाता (Smerdes)^२ ने क्रांति करके राजसिंहासन पर आरुढ़ हो गया । इस राजद्रोह का अन्त अखमिनी कुल के वंशज डैरियस प्रथम (Darius - I प्राचीन पर्शियन - दरयूश; आ० दारा) ने किया । डैरियस ने कुछ अन्य साधियों के सहयोग से गीमाता को पकड़ कर वध कर दिया और स्वयं पर्शिया के विशाल साम्राज्य का १ जनवरी ५२१ ई० पू० को सम्राट बन गया । इसने एशिया माइनर व बासफ़ोरस आदि को पार कर ग्रीस पर आक्रमण कर दिया । ४९२ से ४९० ई० पू० अर्थात् दो वर्ष तक युद्ध होता रहा जो मराथन नगर के पास डैरियस की पराजय में समाप्त हुआ । ४८६ में इसका स्वर्गवास हो गया ।

इसके पश्चात् डैरियस का पुत्र जरक्सीज (ग्रीक Xerxes - I; प्राचीन पर्शियन - ख़िशियारशा; बाइबिल अख़शवेरोश या अक्शावर्शी और अरमायक में ख़िशायाश) प्रथम, जो सायरस की पुत्री अतोशा द्वारा हुआ था, सम्राट की पदवी से सुशोभित हुआ । ४८० ई० पूर्व में इसने एक विशाल सेना का संगठन किया जिसमें लाखों जल व थल सेना के योद्धा थे और ग्रीस पर आक्रमण कर दिया । ग्रीस के मुख्य नगर एथेन्स को नष्ट - भ्रष्ट करके आग लगवा दी । सलामिस नगर के पास उसकी नौसेना को थेमिस्टाकिल्स (Themistocles) ने नष्ट कर दिया । जरक्सीज ने अपने तीन लाख सैनिकों को मारडोनियस की अध्यक्षता में युद्ध करते रहने के लिए वहीं छोड़ दिया और जिस रास्ते गया था उसी रास्ते से वापस आ गया । इसकी सेना बुरी तरह परास्त हुई । ४६५ ई० पू० में जरक्सीज के एक अंग - रक्षक आर्त बेनस (Artabanus) ने उसका वध कर दिया ।

उसके मरणोपरांत उसका बेटा आर्तजरक्सीज प्रथम^३ (ग्रीक - Artaxerxes I; प्राचीन पर्शि० आर्त ख़शास्त्र तथा अख़ज़ेराख़) ने ग्रीस से सन्धि कर ली और थेमिस्टाकिल्स को दरबार में बुला कर सम्मानित किया । ४२४ ई० पू० में इसका देहांत हो गया और इसका पुत्र जरक्सीज द्वितीय सिंहासनारुढ़ हुआ परन्तु ४५ दिन के पश्चात् ही उसके भाई ने वध कर दिया । तत्पश्चात् उसका पुत्र डैरियस द्वितीय शासक बना । ४०४ में इसका देहांत हो गया । तदनन्तर आर्तजरक्सीज द्वितीय (४०४ से ३५८ ई० पू० तक), आर्तजरक्सीज तृतीय (३५८ से ३३८ तक), अर्साकीज (Arsaces) (३३८ से ३३६ ई० पू० तक) तथा इस विशाल साम्राज्य का अंतिम और भीरु सम्राट् डैरियस तृतीय था, जो सिकन्दर के आक्रमण के समय ३३१ ई० पू० में, अपने ही कर्मचारियों द्वारा मार डाला गया । सिकन्दर ने एथेन्स के बदले की भावना से राजधानी के कुछ भाग को जलवा दिया । एक विशाल साम्राज्य ही नष्ट - भ्रष्ट नहीं हुआ अपितु उसकी संस्कृति भी ग्रीक की संस्कृति के रंग में डूबोई जाने लगी ।

1. मागी मीडिया की एक पुजारी जादू - टोना करने वाली जाति का नाम था । इस जाति का बड़ा आदर होता था । यह जाति सारे धार्मिक रीति रिवाज किया करती थी ठीक उसी प्रकार जैसे भारत में कर्मकाण्ड करने वाली ब्राह्मण जाति । 'मागी' (Magi) शब्द से ही मैजिक (Magic) बना ।
2. इसने अपना नाम स्मर्डीज रख कर लोगों को धोखा दिया ।
3. 'आर्त' एवस्त भाषा के 'अश' शब्द से, जिसके अर्थ हैं दिव्यसत्त्व, बना ।

डेरियस का विशाल साम्राज्य

ई० पू० की ५२९ से ४८५ तक



फलक संख्या - १२२

सिकन्दर के स्वर्गवास होने के पश्चात् उसका जीता हुआ भू - भाग उसके उच्च - सैनिक - पदाधि - कारियों में विभाजित कर दिया गया। उन्हीं में से एक सेल्युकस (Seleucus) था जो बड़ा वीर और प्रतापी था। उसने अपने सारे प्रतिद्वन्दियों को परास्त कर सम्पूर्ण पश्चिमी तथा मध्य - एशिया पर अपना अधिकार करके एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की जिसका केन्द्र था सीरिया। जब भारत के मौर्य वंश का पतन २३० ई० पू० में आरम्भ हुआ तो इधर सेल्युकस के साम्राज्य का भी पतन आरम्भ हुआ।

कैस्पियन सागर के दक्षिण में एक पहाड़ी देश स्थित था जिसमें पार्थव जाति के लोग निवास करते थे। उसका नाम (डैरियस के अभिलेखों के अनुसार) पार्थिया था। यह देश ३३० ई० पू० तक पर्शिया के साम्राज्य का अंग था और बाद में सेल्युकस साम्राज्य का प्रान्त बन गया। कुछ पूर्व - उत्तर की ओर बैक्ट्रिया (बाख्त्रिया), जिसकी राजधानी बल्ख थी, यूनानी संस्कृति का मुख्य केन्द्र था। जब २५५ ई० पू० में बैक्ट्रिया प्रान्त का अर्ध-स्वाधीन डायडोटस (Diodotus दयोदत) शासक बना और उसने दमन नीति का अनुसरण करके अत्याचारों का श्रीगणेश किया उस समय ईरान की एक पर्यटन - शील जाति पर्नी (पर्ण) बैक्ट्रिया छोड़कर पार्थिया में आकर बस गई। उसी जाति के एक वीर नायक आर्साकिज (ग्रीक Arsaces; पर्शियन - अरशाक) ने अपने भाई तिरिदेतिज (ग्रीक Tiridates, पर्शि० तिरिदात) के सहयोग से राजनैतिक क्रान्ति कर दी। पार्थिया के यूनानी प्रान्तपाल ऐन्द्रागोरस (Androgorus) का वध कर दिया और २४७ ई० पू० में एक स्वतन्त्र राज्य की एवं आर्सासिड वंश की स्थापना की जिसने पर्शिया में लगभग ५०० वर्ष तक राज्य किया। इस राज्य का अन्तिम नरेश आर्त बेनस चतुर्थ (Artabenus IV) था जिसका देहान्त २२४ ई० में हो गया।

तत्पश्चात् पर्शिया के निवासी ससान के पौत्र आर्देशर प्रथम (ग्रीक में इसको आर्तज्जरक्सिज् चतुर्थ के नाम से सम्बोधित करते हैं) ने पार्थिया साम्राज्य का तख्ता उलट दिया और एक नये पर्शियन साम्राज्य की स्थापना की। इसके शासकों से रोम व बैजैन्ताइन राज्यों से युद्ध होते ही रहे। इस वंश का अन्तिम नरेश यज्जदगर्द तृतीय था। इसने ६३२ से ६५१ ई० तक शासन किया।

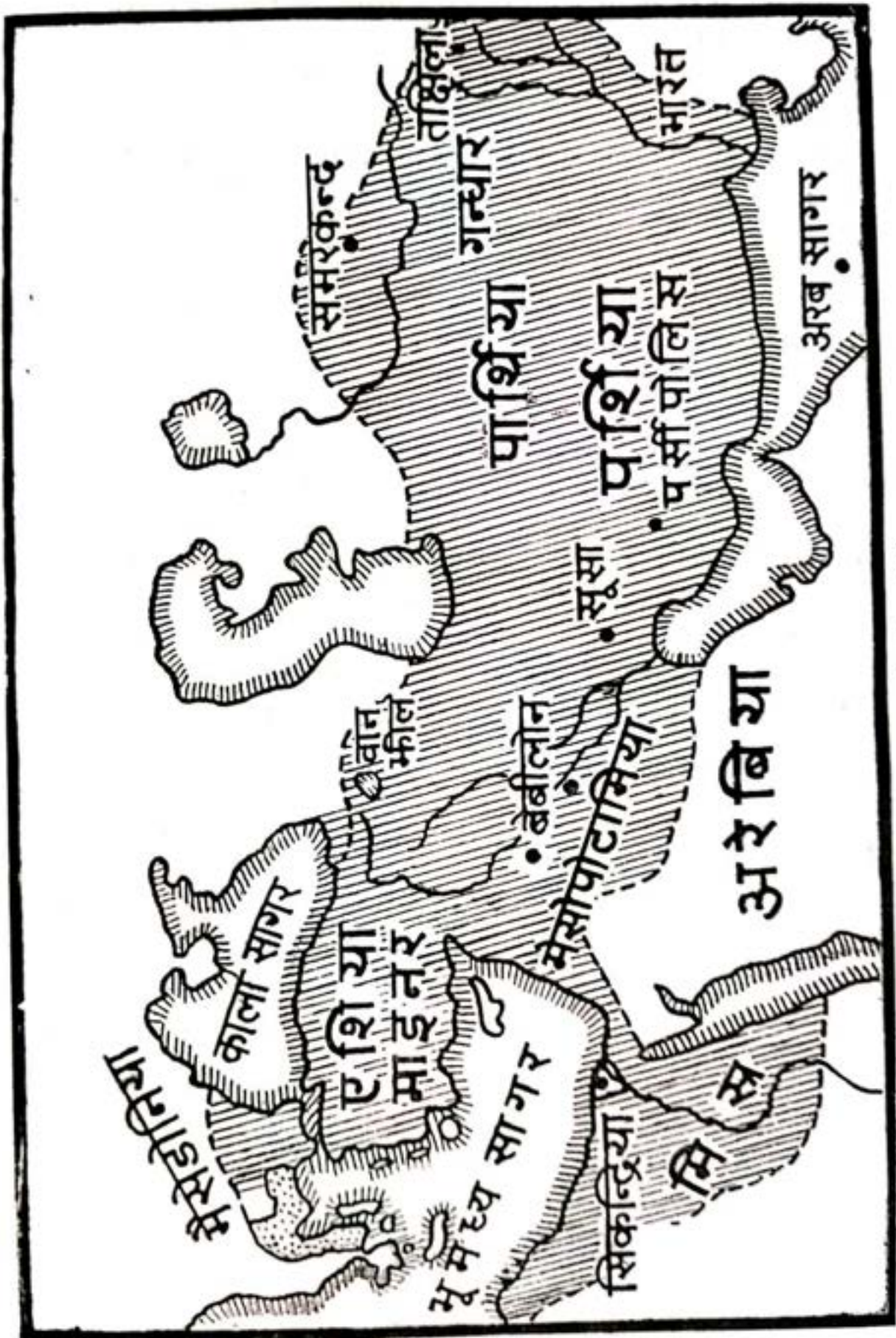
तदोपरान्त अरब के मुसलमानों ने सम्राट का वध करके अपना पूर्ण अधिकार कर लिया। अब पर्शिया निवासी अग्नि पूजक न रहकर एक ख़ुदा के मानने वाले मुसलमान बन गये। इनमें से कुछ अग्नि - पूजक अपने देश से भाग कर भारत में बम्बई के उत्तर में (सौ मील पर) आकर संजान में निवास करने लगे जिनको 'पारसी' के नाम से सम्बोधित किया जाता है। वह अपने अग्नि-पूजन के धर्म को अब भी उसी प्रकार मानते हैं।

ईसवी सन् की चौदहवीं श० से मंगोल जातियों के आक्रमणों से पर्शिया नष्ट-भ्रष्ट होने लगा।

सूफ़ी धर्म के प्रवर्तक सफ़ीउद्दीन के अनुयायी सफ़ावीस कहलाते थे। उन्होंने संगठित होकर तथा मंगोलों को देश से निकाल कर १५०२ में राजसत्ता अपने हाथ में ले ली और १७३६ तक राज्य किया।

नादिरशाह एक बड़ा साहसी तथा महत्वाकांक्षी व्यक्ति था। यह ख़ुरासानी तुर्क था। इसका नाम नादिरकुली था सफ़ावी वंश के अन्तिम व अयोग्य शासक तहमास्प को राजगद्दी से उतार कर १७३६ में स्वयं नादिरशाह के नाम से पर्शिया के सिंहासन पर बैठ गया। उसने अफ़ग़ानिस्तान एवं भारत पर बड़े विध्वंसक आक्रमण किये। दिल्ली में क़त्लेआम करवाया। इसके उत्तराधिकारियों ने १९०६ तक निरंकुश राज्य किया। तत्पश्चात् एक क्रान्ति हुई जिसने तत्कालीन शाह मुज़फ़्फ़रउद्दीन को एक राजनैतिक विधान मानने पर विवश किया। विधान के अनुसार शासक के पास नाममात्र की सत्ता रह गई।

सिकन्दर का साम्राज्य -- ई० पू० की चौथी शती



फलक संख्या - १२३

पर्शिया से दो बड़े देश ब्रिटेन और रूस मंत्री — सम्बन्ध रखना चाहते थे । प्रथम महायुद्ध के पश्चात् १९२० में रूस से सन्धि हो गई । १९२५ में शाह सुल्तान अहमद को राजसिंहासन से उतार दिया गया और तत्कालीन प्रधान मंत्री रजा शाह पहलवी पर्शिया का शासक निर्वाचित हो गया और एक नये पहलवी राजवंश की स्थापना हो गई ।

१९३५ में इस देश का नाम पर्शिया से ईरान (आर्य, एरियन, इरियन व ईरान) पड़ गया । १९४२ में जब द्वितीय महायुद्ध चल रहा था रजा शाह पहलवी ने स्वयं राजगद्दी को छोड़कर अपने सुपुत्र मुहम्मद रजा पहलवी को ईरान का शाह बनाया जो अब तक सिंहासनारूढ़ रहा परन्तु खुर्मेनी के आने से एक क्रान्ति हुई जिसमें ईरान के शाह को देश छोड़कर भागना पड़ा । १९८१ में उसकी मृत्यु मिस्र में हो गई । ईरान एक इस्लामिक प्रजातन्त्र बना दिया गया परन्तु देश में विद्रोहात्मक तत्त्वों के कारण पूर्ण शान्ति स्थापित न हो सकी ।

पठनीय सामग्री

- | | |
|---------------------------|--|
| <i>Arberry, A. J.</i> | : Legacy of Persia (1931). |
| <i>Camerson, G. C.</i> | : History of Early Iran (1936). |
| <i>Colledge, M. A. E.</i> | : The Parthians (London — 1967). |
| <i>Ghirshman, R.</i> | : Iran — Parthians and Sassanians (London — 1962). |
| “ “ | : Persia — From the Origin to Alexander the Great (London — 1964). |
| <i>Schmidt, E. F.</i> | : Persepolis (1953). |
| <i>Vaux, W. S. W.</i> | : Ancient History from the Monuments — Persia (1911). |
| <i>Wilber, D. N.</i> | : Iran — Past and Present (1955). |



पर्शिया की लेखन कला

आरम्भिक काल

जिस प्रकार अन्य प्राचीन देशों में चित्रों एवं रेखा-चित्रों से लिपियों का उद्भव हुआ उसी प्रकार यहाँ भी रेखा-चित्रों से हुआ। अन्य प्राचीन देशों में विद्वानों ने आरम्भ काल की लिपियों का रहस्योद्घाटन करने के लिए बड़ा गहन अध्ययन व अथक परिश्रम किया परन्तु यहाँ सूसा के उत्खनन में एक द्वि-भाषिक पाटिया प्राप्त हो गई जिस पर प्राचीन बेबीलोन (अक्काद) की भाषा तथा एलाम के प्रारम्भिक काल की लिपि अंकित थी। यह उत्खनन फ्रांस की सरकार के पुरातत्त्व विभाग की ओर से आरम्भ किया गया था। यह पाटिया शिलहाक इन्शु शिनाक के काल की (लगभग २७०० ई० पू०)^१ मानी गई है। इस अभिलेख^२ के गूढ़ाक्षरों का रहस्योद्घाटन जी० हूसिंग (G. Hüsing)^३ तथा एफ० बोक (F. Bork)^४ बेबीलोन की भाषा की सहायता से किया। इसमें कई शासकों के नाम दिये थे जो तुलना करने से पहचाने जाने लगे। इस प्रकार उन दोनों विद्वानों ने उस द्विभाषिक पाटिया को निम्नलिखित प्रकार से पढ़ लिया :—

(१) “अपने देवता इन्दुशिनाक, जो मनुष्य को बनाने वाला; (२) मैं शिलहाक इन्दुशिनाक; (३) सूसा का प्रांतपाल; (४) एलाम देश का राजा; (५) शेम्पी शुकियान; (६) एक स्तम्भ को समर्पित करता है।

इसका अर्थ है :—“मैं शिलहाक इन्दुशिनाक, एलाम देश का राजा तथा सूसा का प्रांतपाल, शेम्पी शुकियान में, मनुष्यों की उत्पत्ति कर्ता भगवान इन्दुशिनाक के नाम पर यह स्तम्भ स्थापित करता हूँ।” (फ० सं० - १२४)।

इसके चिह्न अक्षरात्मक (Syllabic) हैं। इस लिपि का कोई सम्बन्ध सुमेर के रेखा चित्रों से नहीं है। इसका उद्भव स्वतंत्र रूप से हुआ।

कीलाकार लिपि का रहस्योद्घाटन

संसार की यही एक प्राचीनतम लिपि है जिसका रहस्योद्घाटन बिना किसी द्विभाषिक एवं त्रिभाषिक अभिलेख के सहारे स्वतंत्र रूप से कर लिया गया^५। इस रहस्योद्घाटन कार्य का शुभारंभ पर्शिया (आ० ईरान) से हुआ।

1. कुछ विद्वान् इस काल का समर्थन नहीं करते। वे २२०० ई० पू० मानते हैं।

2. यह अभिलेख बोक की पुस्तक “Zur protoelamischen Schrift” in ‘Orientalist – Literary zeitung.’ Vol. VIII (1905), Page – 323.

3. Hüsing, G. : Elamische Studien (1932), Page – 203.

4. Bork, F. : ‘Zur protoelamischen schrift’ – Orientalist, VII (1905), Page – 323.

5. Pope, Maurice : The Story of Decipherment (1975), page – 99.

एलाम की प्राचीन रेखा -- चित्र -- लिपि

१	२	३	४	५	६
ते	शिल	क्वा	चक	ली	उक
इय	अ	ति	किन	इन	कि
तुन	केन	ल	अक	पिस	चुक
की	लू	अक	इक	उक	कर
इन	लि	लि	कि	कुर	रु
लू	मा	लू		ही	उक
लि	अक	लू		अक	इक
मा	कि	उंकी			अ
अक	इक				तू
रु	अ				ल
र					अह
ति					
कर					
रि					
कि					

फलक संख्या - १२४

सायरस ने ५४६ ई० पू० तक लीडिया, मीडिया तथा वेबीलोनिया के राज्यों को अपने अधीन करके संसार के सर्वप्रथम विशाल साम्राज्य की नींव डाली। इसने पसरगादे^१ (आ० मुरसाब) के एक छोटे से नगर के निकट, जहाँ तीन वर्षीय युद्ध में इसको विजय प्राप्त हुई थी, अपने साम्राज्य की एक भव्य राजधानी, पसरगादे के नाम से ही, का निर्माण कराया।

डैरियस ने अपनी विजय (५२१ ई० पू०) के स्मरणार्थ दो स्मारकों का निर्माण करवाया। प्रथम ५१८ ई० पू० में पसरगादे से ४५ किलोमीटर दूर दक्षिण की ओर एक पहाड़ी के नीचे मर्वदशत के चौरस मैदान में एक नई राजधानी का निर्माण^२ करवाया, जिसके सम्पूर्ण होने में ५६ वर्ष लगे। इसका आद्य नाम तो कोई जानता नहीं परन्तु यूनानी इसको पर्सीपोलिस (पशिया का नगर राज्य) के नाम से सम्बोधित करते थे, जो सारे संसार के लिये प्रसिद्ध हो गया। आधुनिक पशियन (फ़ारसी) में इसका नाम तख्ते - जमशीद^३ है।

द्वितीय स्मारक डैरियस ने ५१६ ई० पू०^४ में बेहिस्तून^५ (बिसीतून; बिसूतून) ग्राम के निकट कुडिस्तान^६ की पहाड़ियों में एक शिलालेख^७ के रूप में निर्माण करवाया। यह शिलालेख सागर - तल से ३८०० फुट तथा भूमि - तल से ५०० फुट ऊँचा है। पूरे शिलालेख की लम्बाई ५८ फुट ६ इंच^८ है तथा पूरे शिला^९ की लम्बाई १५० फुट तथा ऊँचाई १०० फुट है। इस शिलालेख में कीलाकार लिपि की तीन भाषाएँ उत्कीर्ण की गई हैं जो इस प्रकार हैं :— (फ० सं० - १२५)।

१. नीचे सीधी ओर के पाँच कालम : इनमें प्राचीन पशियन भाषा में ४१४ पंक्तियाँ अंकित हैं। सामान्यतया इनमें से चार की ऊँचाई ११ तथा १२ फुट के मध्य है। पाँचवें कालम की ऊँचाई ५ फुट ८ इंच है। चार कालम की चौड़ाई सामान्यतया ६ फुट २ इंच है तथा पाँचवें की ५ फुट है।
२. नीचे बायीं ओर के तीन कालम : इनमें सूसियन (नव - एलामाइट; खूजियन भी कहते हैं) भाषा में २६३ पंक्तियाँ अंकित हैं। सामान्यतः इनकी ऊँचाई भी उपर्युक्त चार कालम के समान है। अन्तर बहुत कम है।
३. ऊपर बायीं ओर के दो कालम : इन दो कालम में :—
 - पहला बायीं ओर का जिसकी ऊपरी चौड़ाई ३ फुट ३ इंच तथा नीचे की चौड़ाई ५ फुट ६ इंच है।
 - दूसरा सामने का जिसकी ऊपरी चौड़ाई ७ फुट ८ इंच तथा नीचे की चौड़ाई ८ फुट १० इंच है।

इसके अतिरिक्त ऊपर सीधी ओर चार कालम परिशिष्ट पाठ (Supplementary Texts) के हैं।

1. पसरगादे पशिया की एक जनजाति का नाम है।
2. Frankfort, H : The Art and Architecture of the Ancient Orient (1954), Page - 218.
3. जमशीद पौराणिककालीन पशिया का एक नरेश था। २००० ई० पू० में एक अरब जोड़क ने इसको सिंहासनच्युत कर दिया था।
4. Pike, E. R. : Finding out Assyrians (1963), page - 126.
5. इसका प्राचीन नाम 'बागस्तान' (बाग=देवता, खेण्ड भाषा में; स्तान=स्थान) अर्थात् देवता का पवित्र स्थान।
6. कुई एक पहाड़ी जाति का नाम है जिससे कुडिस्तान बना।
7. सारे विश्व में 'बेहिस्तून शिलालेख' के नाम से प्रसिद्ध है।
8. Budge, E. A. W. : Sculptures and Inscriptions of Behistun (London - 1907), Page - XXII.
9. Cleater, P. E. : Lost Languages (1950), Page - 91.

अभिलेखों के ऊपर एक कुशल शिल्पकार ने १४ मूर्तियों को उत्कीर्ण किया है जिनका निम्नलिखित वर्णन है :—(फ० सं० - १२६ के बायीं ओर से) ।

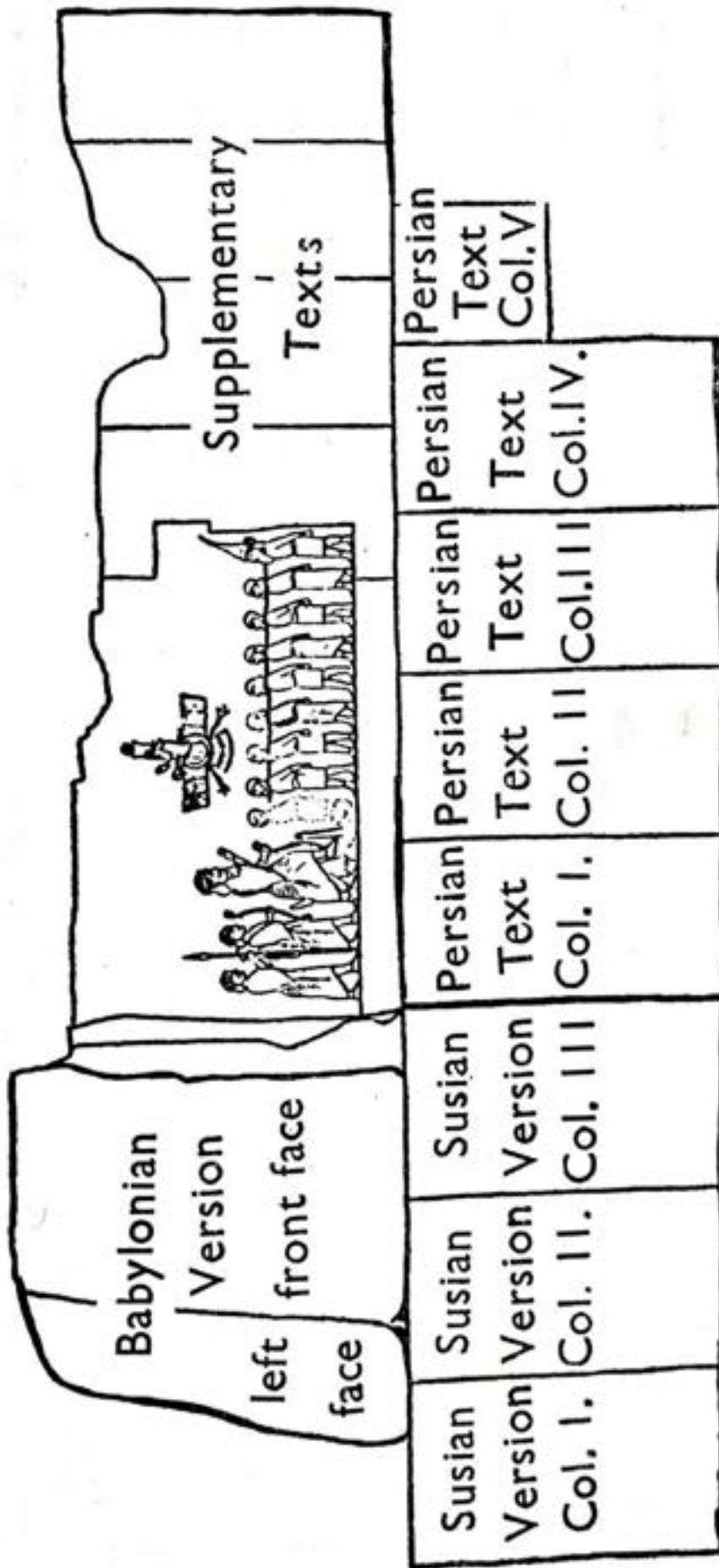
१. पहले सेवक के हाथ में भाला है ।
२. दूसरे सेवक के हाथ में धनुष है ।
३. सम्राट डेरियस की ५ फुट ८ इंच की मूर्ति उत्कीर्ण है ।
४. सम्राट के चरणों से दबा हुआ तथा क्षमा याचना करता हुआ मुख्य क्रान्तिकारी गोमाता है जो सम्राट बन बैठा ।
५. सबसे ऊपर अहुरामज्द देवता की मूर्ति है ।
६. इसके अतिरिक्त ९ मूर्तियाँ अन्य क्रान्तिकारियों की हैं । उनके गले में एक रस्ती का फन्दा पड़ा है और बन्दी के रूप में लज्जित हुए खड़े हैं इस प्रकार १० क्रान्तिकारियों को 'B' से लेकर 'K' तक रोमन वर्ण लिख कर दिखाया गया है । प्रत्येक बन्दी का नाम तथा स्थान तीनों भाषाओं^१ में अंकित किया गया है । जिसका वर्णन 'पृष्ठ - २५९ - २६०' पर दिया गया है ।

फलक संख्या - १२६ का विवरण

क्र० सं०	विवरण	Per.	Sus.	Bab.
१	सम्राट डेरियस की वंशावली ।	A	A	
२	गोमाता, मुख्य क्रान्तिकारी है ।	B	B	B
३	बाईं ओर से प्रथम बन्दी सूसा का बन्दी अत्रीना है ।	C	C	C
४	दूसरा बन्दी निदिस्तू वेल है, जो बेबीलोनिया का क्रान्तिकारी था ।	D	D	D
५	तीसरा बन्दी मिडिया का क्रान्तिकारी फ़ाबोर्तज है ।	E	E	E
६	चौथा बन्दी सूसा का मार्टिया है ।	F	F	F
७	पाँचवाँ बन्दी सित्रान्तख्मा है ।	G	G	G
८	छठवाँ बन्दी फ़ारस का वहयाज्दा है ।	H	H	H
९	सातवाँ बन्दी बेबीलोनिया का अरख है ।	I	I	I
१०	आठवाँ बन्दी फ़ाद है ।	J	J	J
११	नवाँ बन्दी सीथिया का स्कुन्खा है (लम्बी टोपी में) ।	K	K	K
१२	बाईं ओर ऊपर के एक कॉलम में प्रकाशन का आलेख है ।		L	

1. Per.=Persian; Sus.=Susian; Bab.=Babylonian.

बेहिस्तून का शिलालेख । मध्य में शिल्प कला में मूर्तियाँ ।



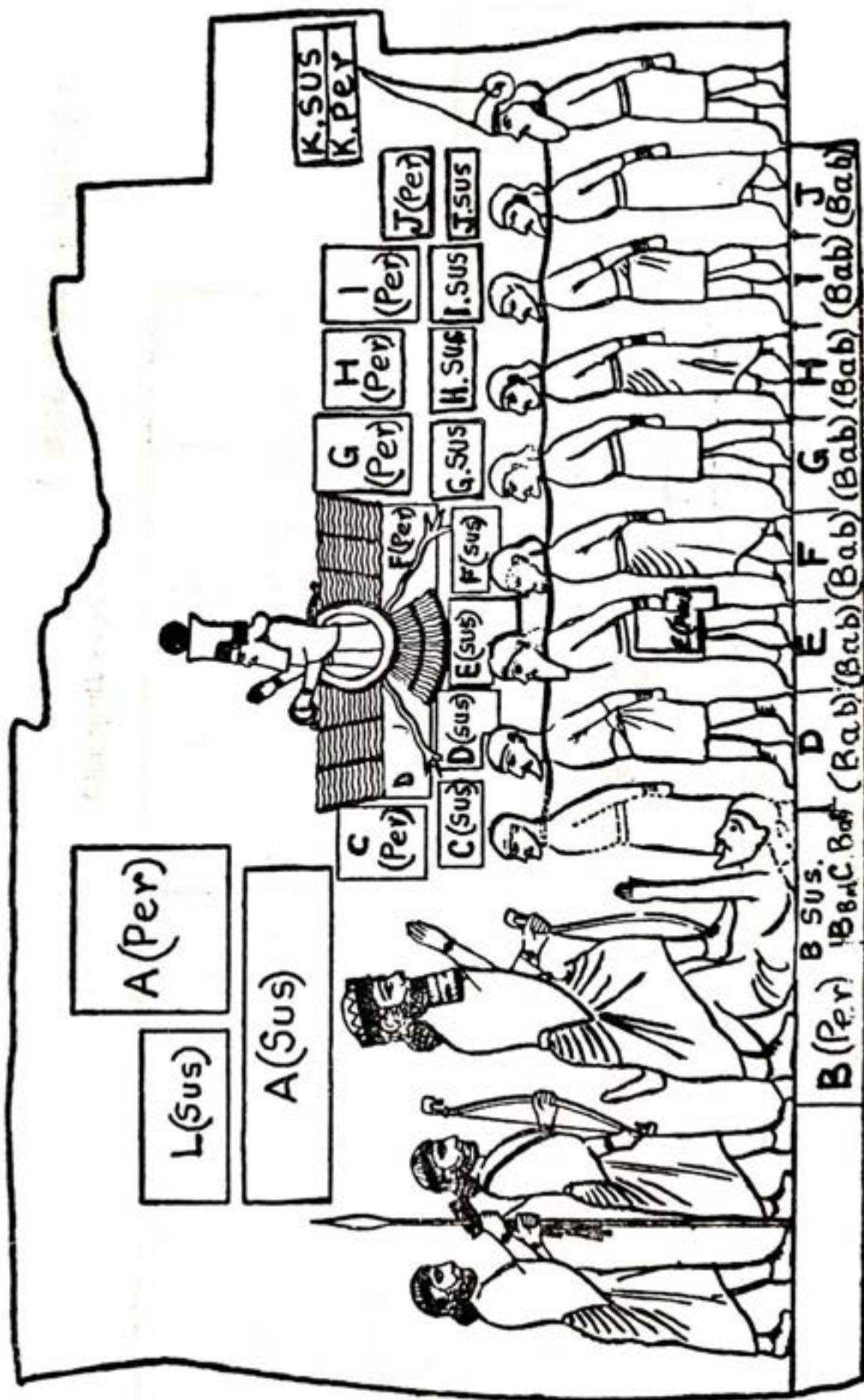
फलक संख्या - १२५

(ब्रिटिश संग्रहालय के सौजन्य से)

बेहिस्तुन की शिला पर मूर्तियों का विवरण

२६०]

[लेखन कला का इतिहास



फलक संख्या - १२६

(ब्रिटिश संग्रहालय के सौजन्य से)

पर्सोपोलिस के खण्डहरों के निकट सस्सानी शासकों ने 'इस्तखर' के नाम से अपनी नई राजधानी का निर्माण ईसा की प्रथम शताब्दी में करवाया था। जब ६३२ ई० में खलीफा उमर ने इसको नष्ट करके ४० मील पर एक नवीन नगर 'शीराज' बसाया, तब इसका नाम प्राचीन शीराज तथा चेलेल मीनार (चालीस स्तम्भ) पड़ गया।

पर्सिया में अरबों के आने से २५० वर्ष तक अरबी लिपि का प्रयोग होता रहा। इस काल में पर्शियन भाषा का तथा अरबी लिपि का समावेश हो गया और एक नई लिपि नस्तालिख (नसख = अरबी खत या लिपि; तालीक = प्राचीन फ़ारसी) का उद्भव हुआ जिसको आधुनिक युग में पर्शियन (फ़ारसी) कहा जाता है।

उपर्युक्त स्मारकों के अतिरिक्त हमदान^१ के दक्षिण में एक पहाड़ी, माउण्ट अलवेन्द^२ पर, दो अभिलेख ज़रक्सीज ने तथा डैरियस ने उत्कीर्ण करवाये जिनको ईरानी गंजे - नामः^३ के नाम से सम्बोधित करते हैं।

पर्सोपोलिस तथा परसगादे के मध्य पहाड़ियों की चट्टानों में अख़मेनीज वंशीय चार शासकों - डैरियस, ज़रक्सीज, अतज़रक्सीज तथा डैरियस द्वितीय - की समाधियाँ निर्मित हैं। इनकी दीवारों पर सस्सानी शासकों के उभरे चित्र भी अंकित हैं। इनको ईरानी नक्शे - रस्तम^४ कहते हैं।

पर्सिया के उपर्युक्त भव्य स्मारकों के समाचार निम्नलिखित प्राचीन इतिहासकारों - कुइन्टस कर्टियस (Quintus Curtius), डायडोरस (Diodorus),^५ अथेनियस (Athenaeus) आदि - द्वारा योरोप निवासियों तक पहुँच चुके थे। इसके पश्चात् कुछ यात्री आये और उनके द्वारा कुछ अन्य विवरण मिले। शनैः शनैः पन्द्रहवीं श० से इन स्मारकों को देखने तथा लिपियों को पढ़ने का प्रयास करने के लिए विद्वानों का जाना आरम्भ हो गया। उनका परिचय तथा योगदान निम्नलिखित है :—

१४७२ में : सर्वप्रथम ज़ासोफ़त बारबरो (Giasofat Barbaro - जन्म १४३१, मृत्यु १४९३) वेनिस राज्य के राजदूत बन कर पर्शिया आये। इन्होंने नक्शे - रस्तम में सस्सानी शासक शापुर प्रथम (Shapur - I, २४१ - ७२) के उभरे चित्र को सालोमन (Solomon) समझ लिया। इनका यात्रा विवरण १५४३ में प्रकाशित हुआ।

१४७९ में : स्पेन देश के एक प्रतिनिधि दॉन गार्शिया दि सिल्वा फ़िग्युरोआ (Don Garcia de Silva Figueroa - १४२६ - १४९१) पर्शिया आये। इन्होंने पर्सोपोलिस के खण्डहरों को डैरियस का एक प्राचीन नगर बताया। यह अपने साथ एक चित्रकार भी लाये थे जिसने कीलाकार लिपि की कुछ पंक्तियाँ उतारीं, जो प्रकाशित नहीं हुईं।

१६१९ में : इटली निवासी एक यात्री पेत्रो देल्ला वल्ले (Pietro della Valle - १५८६ - १६५१)^६ वेनिस से कान्स्टैण्टिनोपल जल - यात्रा द्वारा आया और १६२१ में पर्शिया पहुँचा। इसने अपने मित्र मैरियो शीपान्स (Mario Schipans) को एक पत्र २१ अक्टूबर १६२१ को लिखा। इसमें

1. प्राचीन एकबटान, जो मिडिया की राजधानी थी।
2. अलवेन्द को जेण्ट - अवेस्त भाषा में औरन्त; यूनानी भाषा में ओरीण्टीज (Orontes) कहते हैं।
3. इसका अर्थ है 'खज़ाने की पुस्तक' अर्थात् धनराशि मिलने की कुंजी।
4. "रस्तम के चित्र" रस्तम पर्शियन राष्ट्र का एक महान् शूरवीर हुआ है।
5. सर्वप्रथम प्रथम शताब्दी में इसी इतिहासकार ने इस डैरियस के बेहिस्तुन शिलालेख को सेमीरामिस का स्मारक समझा।
6. Cleaver, P. E. : Lost Languages (1962). p. - 71.

कीलाकार लिपि के चार वर्ण भी बना कर भेजे 'फ० सं० - २७' और लिपि की दिशा बाएँ से दाएँ बतलाई। यह भारत भी आया था। सात वर्ष पश्चात् १६२६ में रोम पहुँचा। इसका यात्रा विवरण १६५७ में प्रकाशित हुआ।



फलक संख्या - १२७

१६२६ में : एक इंग्लैण्ड निवासी टॉमस हर्बर्ट (Thomas Herbert) केवल दो दिन के लिए पर्सिया आया। इसी ने सर्वप्रथम पर्सिपोलिस के महल के चित्र खींचे तथा लिपि की तीन पंक्तियों को उतारा। इसने लिपि को रहस्यपूर्ण कहा। अपनी यात्रा के वृत्तान्त को १६३४ में प्रकाशित कराया। पश्चात्य देशवासियों में एक नई जागृति उत्पन्न हुई।

१६६४ में : एक फ्रांसिसी जौहरी ईयन चार्दिन (Jean Chardin, १६४३ - १७१३) आया। पुनः १६७० में आया। यह इंग्लैण्ड का नागरिक तथा चार्ल्स द्वितीय (Charles - II) के राजदरबार का जौहरी बन गया। इसने १६८१ तक यात्रा की और अपने विवरण में, जो १७११ में प्रकाशित हुए, पर्सिया के प्राचीन अभिलेखों को धार्मिक बताया। उसने यह भी कहा कि "यह कीलों जैसी लिखावट कोई सजावटी कला नहीं है अपितु सुलिखित वर्ण हैं।"

१६८६ में : एक जर्मन भौतिक शास्त्री एङ्गेलबर्ट कैम्फर (Engelbert Kämpfer)¹ ने जब इस लिपि का निरीक्षण किया तो सर्वप्रथम इस लिपि के लिए एक नाम, "पच्चड़ - आकार लिपि" (Wedge - Shape Writing - "Litterae cuneatae"), का आविष्कार किया। दुर्भाग्य से इसका यात्रा - विवरण १२ वर्ष बाद प्रकाशित हुआ, जिसमें यह नाम मुद्रित हुआ था। अभिलेखों की कुछ प्रतिलिपियाँ भी तैयार कीं।

१७०४ में : एक डच (हॉलैण्ड निवासी) कर्नेलियस वान ब्रूइन² (Cornelius Van Bruyn), जो बाद में फ्रांस का नागरिक हो गया और ली ब्रून (Le Brun) के नाम से प्रसिद्ध हुआ, पर्सिया आया। इसने इस लिपि को क्षैतिज (Horizontal) प्रतिपादित किया।

१७१८ में : एक ईस्ट इण्डिया कम्पनी का अधिकारी सैमुयल फ्लोवर (Samuel Flower) आया जिसने कुछ प्रतिलिपियाँ तैयार कीं तथा सर्वप्रथम प्रत्येक कीलाकार वर्ण के मध्य एक बिन्बी लगाने की पद्धति आरम्भ की।


१७६२ में : काउण्ट कैलस (Count Caylus) ने एक लघु - अभिलेख प्रकाशित किया। यह अभिलेख मिस्र के एक एलाबस्तर कलश पर चार भाषाओं में प्राचीन पर्सियन, एलामाइट, बेबीलोनियन तथा मिस्री - अंकित था। इसमें 'जरक्सिज' का नाम भी अंकित था। यह अभिलेख प्राचीन पर्सियन पढ़ने के कार्य में बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ।

1. Lemgo K. M. : Engelbert Kämpfer (1937), p. - 116.

2. Bruyn C. Van : Reizen : Amsterdam - 1708.

१७६५ में : एक डेन (डेनमार्क निवासी) कर्स्टेन नीबुहुर (Cursten Niebuhr, १७३३ - १८१५) पश्चिमिया आया । नीबुहुर १७६० तक सेना के अभियन्ता के पद पर रहा । १७६१ में डेनमार्क के महाराजा फ्रेड्रिक पंचम ने कोपेनहेगेन से पाँच साहसिक - यात्री विद्वानों को पश्चिमिया भेजा जिनमें एक नीबुहुर भी था । यह मिस्र, अरेबिया तथा भारत (बम्बई) होता हुआ अकेले १७६५ में पश्चिमिया पहुँचा क्योंकि इसके चारों सहयात्री रास्ते में ही — दो अरेबिया में और दो बम्बई में — मृत्यु के ग्रास हो गये । नीबुहुर लिपि - विशेषज्ञ तो नहीं था परन्तु इसके सुझाव व प्रयास से लिपि के रहस्योद्घाटन कार्य में न्यास बन गये । इसी ने सर्वप्रथम कहा कि अभिलेख त्रैभाषिक हैं तथा बाएँ से दाएँ की ओर लिखे गये हैं । इसने अनेक प्रतिलिपियाँ तैयार करके विद्वानों के पास भेजीं । ४२ वर्णों की एक वर्णमाला भी तैयार की, जिसमें से १० अशुद्ध निकलीं । इसका यात्रा वृत्तान्त^१ १७७४ में प्रकाशित हुआ । इसी वृत्तान्त से प्रेरित होकर नैपोलियन ने १७९९ में मिस्र पर आक्रमण करने की योजना बनाई ।

१७६५ में : एक ऑक्सफोर्ड का हेब्रू भाषा का प्राध्यापक टॉमस हाइड^२ (Thomas Hyde) आया । लिपि को देख कर इसने इसका नाम 'क्यूनीफार्म' (Cuneiform) रखा । यह शब्द लैटिन (इटली की प्राचीन भाषा) के शब्द क्यूनियस (Cuneus) से, जिसके अर्थ पच्चड़ (wedge) या कील हैं, बना तथा 'फार्मा' (forma) जिसके अर्थ हैं आकार (shape), अर्थात् कीलाकार लिपि अथवा

कीलाक्षर  (Cuneiform) के नाम से प्रसिद्ध हो गई । अरबी में ख़त्ते - मेखी (मेख के अर्थ भी कील या पच्चड़ हैं) ।

१७९६ में : एक फ्रांसिसी विद्वान् अनकुयेतिल दूपेरो (Anquetil Duperron, १७३१ - १८०५) यहाँ आया । यह बड़ा साहसिक यात्री था । अपनी सात वर्षीय भारत यात्रा काल में ही पश्चिमिया गया था । यह सर्वप्रथम १७५४ में पॉण्डीचेरी आया और वहाँ से बंगाल होता हुआ सूरत, जो फ्रांस के अधिकार में था, पहुँचा । यहाँ पर इसने एक पारसी पुरोहित (दस्तूर) द्वारा से परिचय प्राप्त किया तथा जेण्ड - अवेस्त भाषा सीखने के लिए निवेदन किया । दस्तूर ने छिप कर (पारसियों के अतिरिक्त उनकी धार्मिक पुस्तक पढ़ने का किसी अन्य को अधिकार नहीं है) धार्मिक पुस्तक के एक एक शब्द का अनुवाद दूपेरो को पश्चिमियन में करवाया, क्योंकि यह पश्चिमियन भाषा का विद्वान् था । यह अनुवाद^३ १७७१ में प्रकाशित हुआ तथा रहस्योद्घाटन कार्य में बहुत सहायक सिद्ध हुआ ।

१७७० में : एक अन्य फ्रांसिसी विद्वान् सिल्वेस्ट्रे दि सेसी (Silvestre de Sacy, १७५८ - १८३८) ने अपने शोध किये तथा उनको अपनी एक पुस्तक^४ में प्रकाशित कराया । इससे विद्वानों को एक नया उत्साह तथा मार्गदर्शन प्राप्त हुआ ।

१७६५ में : एक जर्मन विद्वान् ओलाव गेरहार्ड टाइख्सेन (Olav Gerhard Tychsen, १७३४ - १८१३), जिसको आरम्भ से ही प्राच्य भाषाओं में रुचि थी, ने हेब्रू तथा पुरा - अरबी लिपियों का गहन

1. "Description of a Voyage to Arabia and Neighbouring Lands."
2. Hyde, Thomas : Historia religionis veterum Persarum (1768), page - 121.
3. "Zend - Avesta", Paris - (177).
4. "Memoires Sur diverses antiquites de Perse" — Paris (1793).

अध्ययन किया। १७९० में यह रॉस्टॉक नगर के प्राच्य - भाषा पुस्तकालय का अध्यक्ष बन गया। इसने पर्शिया के अभिलेखों पर अपना शोध आरम्भ कर दिया। इसने इनको त्रैभाषिक - पर्शियन, मीडियन तथा बैक्ट्रियन - माना। कीलाकार लिपि के एक शब्द 'अ - क - स - क' को पढ़कर इसका अर्थ पर्शियन राज्य के संस्थापक - शासक असीकीज प्रथम मान लिया तथा सारे अभिलेखों को इसी शासक से सम्बन्धित बतलाया। अपनी एक पुस्तक^१ भी १७९८ में प्रकाशित की। इसी ने तिरछे



कीलाकार चिह्न को शब्दों को पृथक् करने (Word - divider) वाला चिह्न

फलक सं० - १२८

पहचाना। यह पद्धति प्राचीन पर्शियन की कीलाकार लिपि में पाई जाती है।

१७६६ में : आर्नॉल्ड हरमन लुडविग हीरेन (Arnold Hermann Ludwig Heeren) ने इन अभिलेखों को अख़मेनीज वंशीय शासकों के बतलाये तथा एक पुस्तक^२ भी प्रकाशित की।

१७६७ में : जे० जी० हर्डर (J. G. Herder) ने इस लिपि को अख़मेनीज शासकों की नहीं मानी।

१७६८ में : फ्रेडरिख क्रिश्चियन कार्ल हाइनरिख मुण्टर^३ (Friedrich Christian Carl Heinrich Münter, १७६१ - १८२०) ने अपना शोध कार्य नीबुर की भेजी हुई प्रतिलिपियों के आधार पर आरम्भ कर दिया। अपने निष्कर्षों को रॉयल अकादमी, कोपेनहेगन के समक्ष पड़ा। इसने तीन अक्षरों - 'अ, य, ई' को पहचान कर इनके प्रयोग की संख्या निर्धारित की 'फ० सं० - १२९' 'अ' - १८३ बार;

अ

य

ई

फलक संख्या - १२६

'य' - १४६ बार तथा 'ई' - १०७ बार। इसने भी इन लिपियों को निम्नलिखित प्रकार से त्रैभाषिक माना :

१. जेण्ड (प्राचीन पर्शियन) - वर्णात्मक।
२. पहलेवी (मध्य पर्शियन) - अक्षरात्मक।
३. असीरियन (नव पर्शियन) - भावात्मक।

1. "de Cuneatis Inscriptionibus Persepolitanis Lucubraito" — Rostock (1798).

2. "Asiatic Nations" — Vol. II., Page - 350.

3. Münter, F. G. C. H. : Researches into Persepolitan Inscriptions (1803).

天.地.人.天.地.人

द (ए) र (ह) (इ) ऊ श

《叶.《.叶.而.叶.叶.而

(ख) श (ह) (ए) र श (ए)

青.竹.友.州.西.江.集

(ग) (ऊ) श त (ए) स प

दूसरी पंक्ति में 'ख' को 'ख'; 'य' को 'ह'; 'अ' को 'ए'; तथा तीसरी पंक्ति में 'वि' को 'ग'; 'इ' को 'ऊ' या 'ओ' पढ़ा। इस प्रकार इसने १३ अक्षरों को पढ़ लिया। इसके प्रयास आंशिक रूप में प्रकाशित हुए परन्तु पूरे निष्कर्ष दि सेसी ने एक विश्वकोष^३ में प्रकाशित कराये। निष्कर्षों की कड़ी आलाचना होने के कारण इसने अपना प्रयास स्थगित कर दिया।

१८१० में : जेम्स जस्टिन मोरियर (James Justine Morier) पर्सीपोलिस, सायरस की समाधि देखने आया। इमने यूनानी इतिहासकार एरियन (Arrian) की पुस्तक में पढ़ा था कि सायरस की ब सालोमन की माँ की समाधि एक जैसी हैं। उसने भी कुछ प्रतिलिपियाँ तैयार कीं।

1. Maurice Pope : The story of Decipherment (London, 1975), page - 99.

2. Millin : "Magasin encyclopedique."

१८११ में : क्लाडियस जेम्स रिच (Claudius James Rich, १७६५ - १८२१) इंग्लैण्ड का मुख्य प्रदूत बनकर बग़दाद आया । इसने अभिलेखों की प्रतिलिपियाँ बनवाकर कई विद्वानों के पास भेजता रहा, मुख्यतया ग़ोटेफ्रेण्ड के पास भेजीं । एक महामारी में इसका स्वर्गवास हो गया ।

१८१२ के अन्त में : एक प्राच्य - वेत्ता विलियम गोरे आउस्ले (William Gore Ouseley) पर्सीपोलिस के खण्डहरों को देखने आया । इसने खिड़की के १८ अभिलेखों का निरीक्षण किया । मोरियर इसका पथप्रदर्शक बन गया ।

१८२३ में : फ्रांस का एक प्राच्यवेत्ता ऐन्तोने यान सेन्त मार्टिन (Antoine Jean St. Martin, १७९५ - १८७३) ने लिपि को पढ़ने के प्रयास में तीन वर्णों 'व' 'य' 'ई' को पहचाना । इसने भी मिस्र में एक अलंकृत कलश देखा जिस पर मिस्री व कीलाक्षरों में "ज़रक्सीज़" का नाम अंकित था ।

१८२६ में : विद्वानों द्वारा यह बात प्रचलित हो गई कि प्राचीन पर्शियन अभिलेखों को पढ़ने के लिए ज़ेण्ड - अवेस्त का ज्ञान होना अनिवार्य है । इस वर्ष एक डेन विद्वान् रासमुस क्रिश्चियन रस्क (Rasmus Christian Rask, १७८७ - १८३२) जिसने ज़ेण्ड, पहलवी, संस्कृत, अरबी, हिन्दुस्तानी, पाली आदि का पर्याप्त अध्ययन किया था, कोपेनहेगेन से पर्शिया आया । इसने ग़ोटेफ्रेण्ड के निष्कर्षों का अध्ययन किया तथा एक शब्द 'अनाम' 'फ० सं० - १३१' पढ़ लिया जिससे दो नये अक्षर 'न' और 'म' पहचान लिये गये ।



फलक संख्या - १३१

१८३२ में : एक फ्रांसिसी युगेन बर्नोफ़ (Eugene Burnouf, १८०१ - १८५२) की 'कालेज दि फ्रांस' में संस्कृत के अध्यक्ष - पद पर नियुक्ति हो गई । यहाँ इसको दो ग्रन्थ — दुपेरो की ज़ेण्ड - अवेस्त, जो आंशिक अशुद्ध थी तथा 'यास्न', जो ज़ेण्ड - अवेस्त का एक भाग था और जिसमें पार्सियों के पूजा - पाठ - विधि का वर्णन था — प्राप्त हुए । इसने 'यास्न' का अनुवाद^१ फ़र्ख भाषा में किया । यह पुस्तक कीलाकार लिपि के विद्यार्थियों को अमूल्य सिद्ध हुई । अब यह पर्शियन भाषा का एक विद्वान् माना जाने लगा । इसके पश्चात् इसको दो श्रैभाषिक अभिलेख — एक तो वान (अर्मेनिया) से तथा एक हमादान^२ (मीडिया) से प्राप्त हुए । हमादान के अभिलेख एलवेन्द की पहाड़ी की दो शिलाओं पर उत्कीर्ण थे । इन अभिलेखों को हमादान के निवासी गंजे - नामा ('कोष की किताब' अर्थात् 'कुञ्जी') के नाम से सम्बोधित करते थे । एक शिला डेरियस के नाम पर तथा दूसरी ज़रक्सीज़

1. Commentaire Sur le Yasna (Paris), 1834.

2. मीडिया की प्राचीन राजधानी 'एकबटान' का आधुनिक नाम हमादान है ।

के नाम पर उत्कीर्ण थी। दोनों त्रैभाषिक अभिलेख बर्नोफ़ की पुस्तक¹ में प्रकाशित हुए। इसके पश्चात् इसने ३३ अक्षरों की एक वर्णमाला बनाई जिसमें से आठ अशुद्ध सिद्ध हुए। इसने दो नये अक्षर 'क' तथा 'ज' ठीक पहचाने।

१८३३ में : एक नॉर्वे निवासी विद्वान् क्रिश्चियन लासेन (Christian Lassen, १८०० - १८७६) पेरिस आया और बर्नोफ़ का एक सहयोगी मित्र बन गया। यह भी एक प्राच्य - वेत्ता था। १८२६ में यह बॉन चला गया। इसने भी अपना शोध - कार्य एक पुस्तक² में प्रकाशित किया।

१८३५ में : फ़र्ग्यूसन (Fergusson)³ आया, जो पर्सीपोलिस के खण्डहरों को देख कर चकित रह गया और कहा कि "इतने भव्य महल इंग्लैण्ड, फ़्रांस तथा जर्मनी में भी नहीं हैं।"

१८३७ में : दो विद्वान् ई० ई० यफ़ बियर (E. E. F. Beer, १८०५ - १८४१) तथा ई० वी० यस० जैक्युएट (E. V. S. Jacquet, १८११ - १८३८) पश्चिम आये। अपने शोध कार्य द्वारा क्रमशः दो और चार अक्षरों को पहचाना।

१८३६ में : फ़्रांस के तीन विद्वान् (राजनैतिक प्रतिनिधि बनकर) - काउन्त दि सारजी (Count de Sarzy), पासकल कोस्ते (Pascal Coste) तथा युगेन फ़्लान्दीन (Eugene Flandin) आये और बेहिस्तून शिलालेख की प्रतिलिपियाँ तैयार करने के प्रयत्न किये परन्तु असफल रहे। कोस्ते और फ़्लान्दीन ने अपने यात्रा विवरण प्रकाशित⁴ किये।

१८४३ में : एक डेन नील्स लुडविग वेस्टरगार्ड (Neils Ludwig Westergaard, १८१५ - १८७८) अपने दो सहयोगियों — लुई कैगनार्त दि सालसी (Louis Caignart de Saulcy) तथा एडवर्ड हिंक्स (Edward Hincks) के साथ पश्चिम उन अभिलेखों की खोज में आया, जो अभी तक प्रकाशित नहीं हुये थे। उसको दो अभिलेख - एक पर्सीपोलिस में तथा दूसरा नक्शे - रस्तम में - मिल गये। इसने एलामाइट के ९० शब्द पहचान लिये। एलामाइट भाषा का नाम मार्टिन तथा वेस्टरगार्ड ने मोर्डियन, मोर्डमान (Mordtmann) ने मूर्सियन, सेसी ने अमारदियन तथा हुसिंग (Hüsing) ने नव - एलामाइट रखा। १८४६ में वेस्टरगार्ड ने अपना शोध - लेख रॉयल आयरिश अकादमी के समक्ष पढ़ा।

१८४६ में : एक स्वेड (स्वीडन निवासी) लोवेनस्टर्न (Löwenstern) ने सर्वप्रथम जरक्सीज के अभिलेखों को पढ़ने का प्रयास किया।

अब तक पर्सीपोलिस, नक्शे - रस्तम तथा पसरगादे के अभिलेखों का निरीक्षण तथा लिपि के रहस्यों - द्घाटन के प्रयास अनेक विद्वान् कर चुके थे तथा कई चिह्न पहचान भी लिये गये थे परन्तु अभी तक बेहिस्तून शिलालेख अछूता रह गया था। इसका मुख्य कारण यह था कि इसको स्थानीय निवासी धार्मिक दृष्टिकोण से पवित्र मानते थे और किसी विदेशी को उसके निकट जाने की अनुमति नहीं देते थे। फिर भी निम्नलिखित विद्वानों ने दूर से ही देख कर अपने मत प्रगट किये: —

1. "Memoire Sur deux inscriptions Cuneiformes trouvees Pres d' Hamadan" (Paris) 1836.
2. "Die altpersischen kielin schriften-(Bonn), 1836.
3. "Palaces of Nineveh and Persepolis"—page 214.
4. "Voyage en Perse."

१. पाल आंगे लुई दि गार्दने (Paul Ange Louis de Gardanne) : अपने भाई का, जो तेहरान में फ्रांसिसी राजदूत था, सचिव बन कर १८०७ में आया। इसने डेरियस के उभरे चित्र को फ्रांस पर ईसा की मूर्ति मानकर दस बन्दियों को धर्मदूत (10. Apostles) माना।
२. राबर्ट कर पोर्टर (Robert Ker Porter) : ने डेरियस को शलमनेसर तृतीय (८५९ - ८२४ ई० पू०) समझा और दस बन्दियों को इस्त्रायल की दस जातियाँ समझीं।
३. जे० एम० किन्नाइर (J. M. Kinneir) : ने शिलालेख को पर्सीपोलिस से सम्बन्धित बतलाया। इसके अतिरिक्त भी यात्री आये परन्तु वे उल्लेखनीय नहीं हैं।

अंत में एक इंगलैण्ड निवासी हेनरी क्रेसविक रॉल्लिन्सन (Henry Creswick Rawlinson, १८१० - १८९५) को इस कीलाकार लिपि के रहस्योद्घाटन करने का श्रेय प्राप्त हुआ। इसी के निष्कर्षों द्वारा पश्चिम एशियाई देशों के समस्त कीलाकार अभिलेख पढ़ लिये गये। रहस्योद्घाटन कार्य भी इसने अपने निजी प्रयास तथा ज्ञान से आरम्भ कर दिया तथा आंशिक सफलता प्राप्त होने के पश्चात् इसने अपने पूर्व के विद्वानों के निष्कर्षों का अवलोकन किया। किस प्रकार इसने अपना जीवन दाँव पर लगा कर सफलता प्राप्त की, एक वृत्तान्त के रूप आगे की पंक्तियों में प्रस्तुत है।

रॉल्लिन्सन का जन्म १८१० में इंगलैण्ड के एक नगर ऑक्सफोर्डशायर में हुआ। इसने यूनानी (Greek) व लातीनी (Latin) भाषाओं का गहन अध्ययन किया। सोलह वर्ष की आयु तक पहुँचते पहुँचते यह छः फुट लम्बा एक स्वस्थ नवयुवक हो गया। तदनन्तर इसने सेना में प्रशिक्षण प्राप्त किया तथा १८२७ में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के सेना विभाग का पदाधिकारी होकर भारत की ओर प्रस्थान किया। जल - यात्रा काल में इसका परिचय सर जॉन मैल्कॉम (Sir John Malcolm) से हुआ, जो बम्बई के राज्यपाल नियुक्त होकर भारत आ रहे थे। इन्होंने रॉल्लिन्सन को पर्शियन (फ़ारसी) भाषा सीखने के लिये प्रेरित किया। आठ साल भारत में रह कर इसने अरबी व फ़ारसी का गहन अध्ययन किया।

१८३५ में रॉल्लिन्सन एक सैनिक परामर्श - दाता के रूप में कुर्दिस्तान के गवर्नर के पास करमनशाह पहुँचा। जब रास्ते में इसने हमादान के त्रैमासिक शिलालेखों के विषय में सुना तो उनको देखने माउण्ट एलवेन्ड पर चला गया तथा सर्वप्रथम उनकी प्रतिलिपियाँ तैयार कीं तथा अध्ययन करने बैठ गया। तत्पश्चात् इसने बेहिस्तून शिलालेख के विषय में सुना, जो करमनशाह से ३५ किलो मीटर दूर था। अब जब भी उसे अवसर मिलता वह उसी ओर अपने घोड़े पर निकल जाता। अभी तक न तो इसको गोटोफ्रेण्ड के निष्कर्षों का पता था और न ही बर्नोफ़ के निष्कर्ष प्रकाशित हुये थे। १८३६ में इसने गंजे - नामा के तीन नाम — बिश्ता - स्पीज (Hystaspes), डेरियस तथा जरक्सीज — पढ़ लिये तथा १३ अक्षर पहचान लिये। अपने इन निष्कर्षों को १८३७ के रॉयल एशियाटिक सोसायटी के तत्कालीन उप - सचिव एडविन नॉरिस (Edwin Norris, १७९५ - १८७२) के पास भेज दिये। अब इसने समझ लिया कि यह लिपि वर्णात्मक है।

इसी बीच रॉल्लिन्सन ने अपनी जान पर खेलकर बेहिस्तून के शिलालेख के प्राचीन पर्शियन तथा सूसियन कॉलमों की प्रतिलिपियाँ तैयार कीं और उन पर अपना शोध आरम्भ कर दिया। फलस्वरूप उसने १८३८ के अन्त तक पाँच नाम तथा १८ वर्ण पहचान लिये। यह नाम थे :—(फ० सं० - १३२)^१।

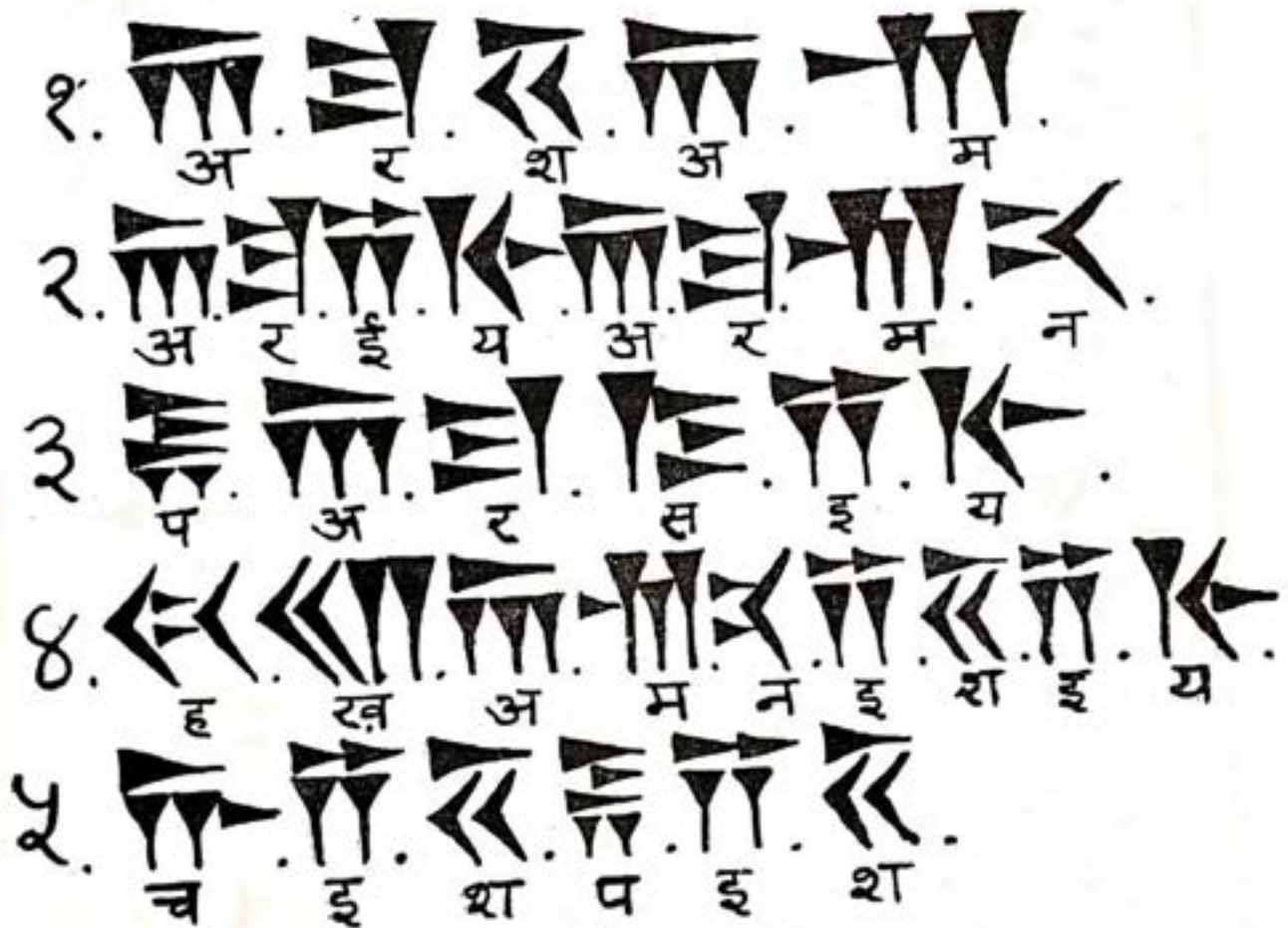
1. Cleater, P. E. : Lost Languages. p. - 87.

यूनानी भाषा

१. अर्सामीज (Arsames)
२. आर्यरमेनीज (Aryaramnes)
३. पर्शिया (Persia)
४. अख़मेनीज (Achaemenes)
५. तेस्पीज (Teispes)

पर्शियन भाषा

- अरशाम
अर्यारमन
पारसिय
हख़ामनिशे
विशपिश



फलक संख्या - १३२

इस प्रकार रॉल्लिन्सन ने शोध करके अपना यह निबन्ध भी एडविन नॉरिस के पास लन्दन भेज दिया। इस निबन्ध को जब निरीक्षणार्थ नॉरिस ने पेरिस भेजा तो इसका बड़ा स्वागत हुआ और रॉल्लिन्सन को फ्रेंच एशियाटिक सोसायटी का एक सम्मानित अवैतनिक सदस्य बना लिया गया। इसका परिचय बर्नोऊ, लासेन आदि विद्वानों से कराया गया जिनके सामूहिक सहयोग से प्राचीन पर्शियन की एक वर्णवली बना ली गई (फ० सं० - १३३)।

१८३९ में अफ़ग़ान युद्ध आरम्भ होने के कारण रॉल्लिन्सन को कन्धार भेज दिया गया। वहाँ उसने एक मुठभेड़ में भाग लेकर विजय प्राप्त की। जब कर्नल टेलर (Col. Taylor) जो ब्रिटेन का राजनैतिक प्रतिनिधि था १८४३ में वापस इंग्लैण्ड चला गया, तो रॉल्लिन्सन को पुनः १८४४ में राजनैतिक प्रतिनिधि के पद पर नियुक्त करके पर्शिया भेज दिया गया। उसने बचे हुये अभिलेख के पर्शियन तथा एलामाइट के पाठों की

पश्चिमी की कोलाकार वर्णवली - ई० पू० छठी श०

	अ	ई	ऊ		अ	ई	ऊ	निष्पत्ति
कु	𑀓	𑀔	𑀕	न	𑀖		𑀗	𑀘 𑀙
ब	𑀚			प	𑀛			१
च	𑀜			र	𑀝		𑀞	𑀟 𑀠 𑀡
क	𑀣			स	𑀤			२
द	𑀦	𑀧	𑀨	श	𑀩			𑀪 𑀫 ३
फ	𑀬			त	𑀭		𑀮	𑀯 𑀰 𑀱
ग	𑀲		𑀳	थ	𑀴			𑀵 𑀶 ४
ह	𑀸			व	𑀹	𑀺		𑀻 𑀼 ५
ख	𑀽			घ	𑀾			
ज	𑀿	𑁀		ञ	𑁁			𑁂 𑁃 𑁄
क	𑁅		𑁆	द अ र य व ऊ श 𑁇 𑁈 𑁉 𑁊 𑁋 𑁌 𑁍 दरयूश = डेरियस				
ल	𑁎							
म	𑁏	𑁐	𑁑					

भी प्रतिलिपियाँ तैयार कर लीं। किन्तु किन कठिनाईयों का सामना करना पड़ा इसका पूर्ण विवरण अनेक पुस्तकों में प्रकाशित हुआ। अब केवल बेबीलोनियन लिपि का पाठ शेष बच गया जिसकी प्रतिलिपि तैयार करना असम्भव था। क्योंकि उस स्थान पर सीढ़ी आदि द्वारा पहुँचना सरल नहीं था। सीमाध्य से रॉल्लिन्सन को एक फूर्तीला कुर्डी नवयुवक मिल गया जिसने अपनी जान पर खेल कर उस अभिलेख की प्रतिलिपियाँ भी तैयार करवा दीं। १८४७ में रॉल्लिन्सन ने हेब्रू तथा सिरियाई भाषायें भी सीख लीं।

अब बेहिस्तून के शिलालेख की तीनों भाषाओं — प्राचीन फ़ारसी, नव एलामाइट (सूसियन) तथा नव बेबीलोनियन (अक्कादियन) — की कीलाकार लिपि की प्रतिलिपियाँ तैयार थीं। इसमें से प्राचीन फ़ारसी तो रॉल्लिन्सन ने पूर्णतया पढ़ ली थी। एलामाइट को पढ़ने का भार एडविन नॉरिस ने ले लिया था। रॉल्लिन्सन पुनः अक्कादियन पाठ का रहस्योद्घाटन करने बैठ गया।

(नव एलामाइट का रहस्योद्घाटन) : इस भाषा में कीलाकार लिपि के १११ चिह्नों की वर्णवली थी। इसमें कोई शब्दों को पृथक् करने वाला चिह्न नहीं था। इसको पढ़ने में सर्वप्रथम वेस्टरगार्ड ने १८४३ में नक्शे-रुस्तम के अभिलेखों से इस भाषा की कुछ प्रतिलिपियाँ तैयार कीं और उनको भले प्रकार समझा। उसने कुछ नाम पढ़े तथा एक लघुपाठ का अनुवाद भी किया। भाषा के दृष्टिकोण से एलामाइट एक विलगित भाषा है। किसी अन्य भाषा से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है। तत्पश्चात् नॉरिस ने १८५४ में इसका पूर्णतया रहस्योद्घाटन कर दिया (फ० सं० - १४०)।

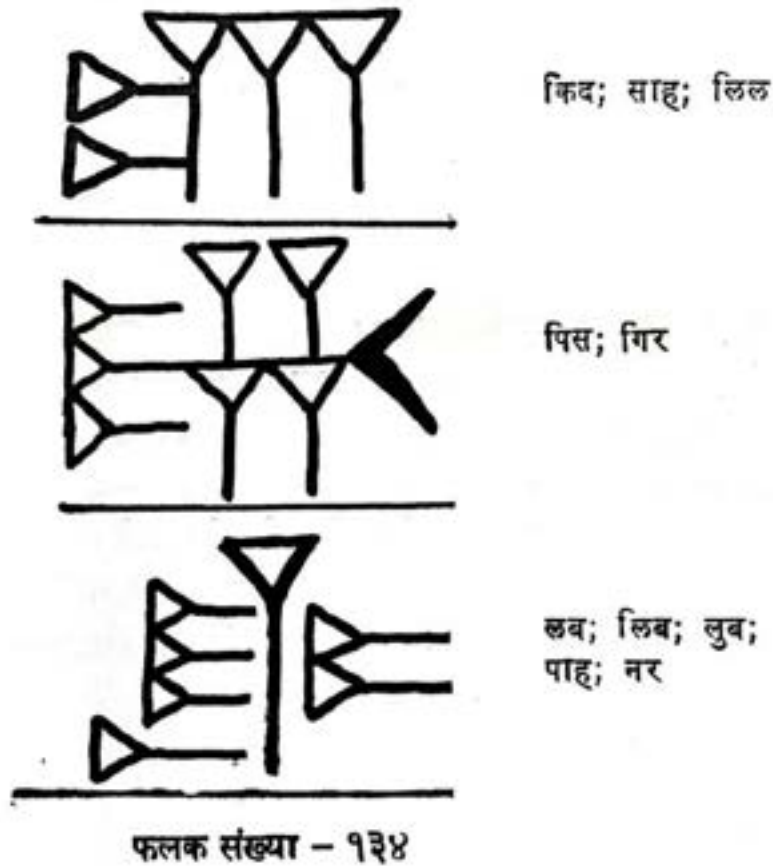
अक्कादियन भाषा का रहस्योद्घाटन : अब त्रैमासिक बेहिस्तून के शिलालेख में केवल यही भाषा शेष रह गई। जिसका भार पुनः रॉल्लिन्सन पर आया। जब शोध कार्य के भँवर में रॉल्लिन्सन फँसकर हताश हो गया और यह कार्य छोड़ने का विचार करने लगा तब इसका परिचय आयरलैण्ड निवासी एडवर्ड हिन्क्स (Edward Hincks, १७९२ - १८६६) से हो गया जो १८४६ - ५० के मध्य अपने अध्ययन कक्ष में बैठे-बैठे युद्ध करता रहा। अन्त में उसको कुंजी मिल ही गई और उसने घोषित किया कि अक्कादियन (नव-बेबीलोनियन) भाषा में प्राचीन फ़ारसी की तरह पृथक् व्यंजन चिह्न नहीं हैं। उसने यह भी सिद्ध किया कि चिह्न या तो स्वर + व्यंजन है या व्यंजन + स्वर है अर्थात् यह अक्षरात्मक (Syllabic) भाषा है। इस भाषा में निम्नलिखित कालानुसार परिवर्तन आते गये :—

- सुमेरियन — लगभग ३००० ई० पू०
- प्राचीन अक्कादियन — लगभग २५०० ई० पू०
- मध्य एलामाइट } लगभग २००० ई० पू०
- प्राचीन बेबीलोनियन } से १५०० ई० पू० तक
- प्राचीन असीरियन }
- मध्य बेबीलोनियन } लगभग १५०० से
- मध्य असीरियन } १००० ई० पू० तक
- नव - बेबीलोनियन } लगभग १००० से
- नव - असीरियन } ५०० ई० पू० तक
- अख़मेनियन एलामाइट } ५०० से
- विलम्बित बेबीलोनियन } २०० ई० पू० तक

इसमें भी नव - बेबीलोनियन शाता प्राचीन बेबीलोनियन को पढ़ नहीं सकता था । अक्कादी लोगों ने, जो सेमाइट थे, कीलाकार का आविष्कार नहीं किया अपितु उनको यह लिपि सुमेरी लोगों से, जो निर्धारक चिह्नों का बहुतायत से प्रयोग करते थे, बनी बनाई मिली । इसी कारण अक्कादी, सुमेरी भाषा को अपनी शास्त्रीय भाषा मानते हैं ।

उधर स्वीडन में एक अन्य विद्वान् इसीदर लोवेनस्टर्न (Isidor Löwenstern) ने, जो अक्कादी भाषा पर अपना शोध कर रहा था, १८४५ में घोषित किया कि अक्कादी के कीलाकार - लिपि चिह्न पृथक व्यंजन नहीं हैं । उनमें तीन प्रकार के चिह्न पाये जाते हैं, उदाहरणार्थ : व्यंजन + स्वर, स्वर + व्यंजन, व्यंजन + स्वर + व्यंजन । उसने यह भी घोषित किया कि एक चिह्न बहु - ध्वनीय (Poly phonous) हो सकता है तथा वही चिह्न निर्धारक भी हो सकता है (फ० सं० - १३४) ।

बहु - ध्वनीय चिह्न



यह बहु - ध्वनीय पद्धति एक पाठक को अत्यन्त कष्टदायक सिद्ध होती थी । इसमें ३०० चिह्न निर्धारक (Determinatives) तथा भावात्मक (Ideographic) थे । किसी भी पाठक को यह समझने में देर लगती थी कि अमुक चिह्न निर्धारक है या बहु - ध्वनीय है । यह भाषा इतनी अस्पष्ट होने पर भी ई० पू० की पन्द्रहवीं शताब्दी में समस्त पश्चिम - एशिया की एक राजनयिक भाषा हो गई । जब इस प्रकार की अस्पष्टता स्वयं प्राचीन बेबीलोनिया तथा असीरियाई विद्वानों को कष्टदायक सिद्ध होने लगी तब उन्होंने मिली लिपि की भाँति अपनी भाषा में भी निर्धारक चिह्नों तथा अक्षरात्मक चिह्नों 'फ० सं० - १४१ नीचे का भाग' को पृथक कर दिया और एक शब्द के साथ दोनों का प्रयोग आरम्भ कर दिया, जैसे मातू (देश) - मा + तू; अन (देवता) - अ + नू; अलू (नगर) आदि । (फ० सं० - १३६ ऊपर का भाग) ।

हिन्क्स ने कुछ निर्धारक चिह्नों को पहचाना जो प्राचीन सुमेरी तथा नवअसीरियाई भाषाओं में प्रयानुसार प्रयोग किये जाते थे^१। उदाहरणार्थ :—(फ० सं० - १३७) ।

- 'लू' का प्रयोग मनुष्यों तथा इनके आजीविकाओं के नामों के पूर्व किया जाता था ।
- 'गिश' तथा 'ऊ' का प्रयोग वृक्षों तथा लकड़ी के उपकरणों के नामों के पूर्व किया जाता था ।
- 'दुग' का प्रयोग मिट्टी के बर्तनों के नामों के पूर्व किया जाता था ।
- 'तुग' का प्रयोग पोशाकों के नामों के पूर्व किया जाता था ।
- 'की' का प्रयोग देश तथा स्थानों के नामों के पूर्व किया जाता था ।
- 'ख' का प्रयोग मछलियों के नामों के पूर्व किया जाता था ।

भावात्मक, निर्धारक, अक्षरात्मक चिह्न



भावात्मक : है तो 'ईसू' कहेंगे अर्थ — 'लकड़ी' ।

निर्धारक : है तो वृक्ष तथा लकड़ी की बनी वस्तुओं के पूर्व प्रयोग किया जायेगा ।

अक्षरात्मक : है तो ध्वनि होगी 'इज' ।



भावात्मक : है तो 'मातू' कहेंगे । अर्थ — 'देश' ।

निर्धारक : है तो 'शादू' कहेंगे तथा देश के नाम के पूर्व प्रयोग किया जायेगा ।

अक्षरात्मक : है तो ध्वनि होगी 'कुर, मात, शात, नात, गीन'

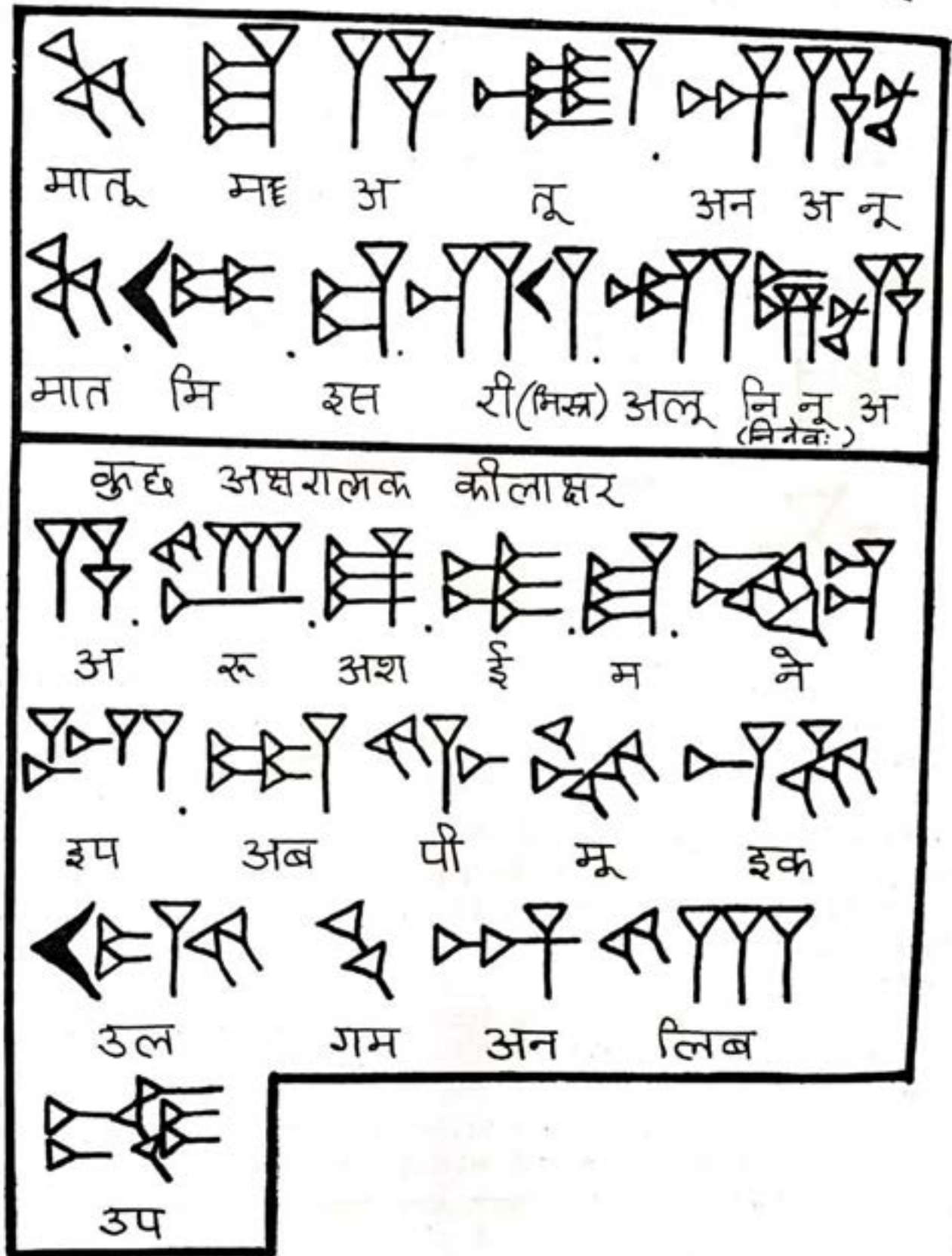
फलक संख्या - १३५

जब रॉलिन्सन ने हिन्क्स के निष्कर्षों का अध्ययन कर लिया तब उसने अक्कादी लिपि तथा प्राचीन फारसी लिपि के नामों को तुलनात्मक दृष्टि से परीक्षण करके अपना शोध पुनः आरम्भ किया । शनैः शनैः वह सफलता के मार्ग पर अब अग्रसर होने लगा । १८५० तक उसने बेहिस्तून के शिलालेख के अक्कादियन (नव - बेबीलोनियन) पाठ के १५० वर्णों को तथा ५०० शब्दों को पढ़ लिया । अब यह हिन्क्स का अभिन्न मित्र बन गया । तत्पश्चात् उसने असीरियाई भाषा तथा कीलाकार लिपि में अंकित एक चीनी-मिट्टी के १५३ ईश्व ऊँचा सिलेण्डर, जो तिगलत पिलेसर प्रथम (असीरिया का एक नृप) के काल का था, को भी पढ़ लिया । जब रॉलिन्सन ने अपने शोध कार्य के निष्कर्षों को नॉरिस के पास लन्दन भेजा तो उसका निरीक्षण किया गया । तदोपरान्त कुछ विद्वान् उससे सहमत तथा कुछ असहमत हो गये । अब यह एक विवादस्पद समस्या बन गई ।

उनमें से एक गणितज्ञ विलियम हेनरी फ़ाक्स टैलबोट (William Henry Fox Talbot, १८०० - १८७७) ने नॉरिस को प्रेरित किया कि कीलाकार लिपि के रहस्योद्घाटन करने वाले कुछ विद्वानों को रॉयल एशियाटिक सोसायटी की ओर से आमन्त्रित करें और उनको कीलाकार का एक तिगलत पिलेसर प्रथम वाली बहु - कोणिक पाटिया का पाठ पढ़ने के लिए दिया जाये । तदनन्तर वे विद्वान् अपने अपने निष्कर्षों को बन्द करके भेद दें । इससे एक तुलनात्मक निरीक्षण हो जायेगा और सत्यता का पता लग जायेगा । नॉरिस इस बात से सहमत हो गया और चार विद्वान् — टैलबोट, ओपर्ट, हिन्क्स तथा रॉलिन्सन - इस परीक्षा में सम्मिलित हुए ।

1. Delitzsch, F. : Assyrische lesestücke (1912) - p. 109.

असीरियाई -- बेबीलोनी लिपि के निर्धारक -- अक्षरात्मक चिह्न



फलक संख्या - १३६

प्राचीन सुमेर तथा नव -- असीरियाई लिपियाँ

निर्धारक चिन्ह सुमेरी				
नव-असीरियाई द्वानि अर्थ				
निर्धारक चिन्ह सुमेरी				
नव-असीरियाई द्वानि अर्थ				

फलक संख्या - १३७

जब सबके निष्कर्षों का निरीक्षण किया गया तो अधिक अन्तर नहीं पाया गया ।

इस प्रकार उपर्युक्त विद्वानों के अथक परिश्रम, निष्ठा तथा त्याग ने कीलाकार लिपि में अंकित पूरे पश्चिमी एशियाई देशों का इतिहास, गणित, विज्ञान, साहित्य, धार्मिक तथा पौराणिक ग्रन्थ आदि को, जो सहस्रों वर्ष भूमिगत पड़े रहे, संसार के शिक्षार्थियों के समक्ष प्रस्तुत कर दिये । इससे न केवल वर्तमान पीढ़ी का अपितु भावी पीढ़ी का भी ज्ञानवर्धन होगा । तत्कालीन विद्वानों ने रालिन्सन की भूरि भूरि प्रशंसा की तथा उसको 'सर' (नाइटहुड) की पदवी से विभूषित किया गया और उसको 'कीलाकार लिपि का पिता' भी घोषित कर दिया ।

बेहिस्तून शिलालेख का आंशिक पाठ

यह पाठ प्राचीन पर्शियन के प्रथम कालम का प्रथम वाक्य है जिसको चार प्रकार से निम्नलिखित पंक्तियों में दिया गया है :—(फ० सं० - १३८) ।

१. जिस प्रकार अंकित है : "अदम

द अ र य व ऊश

ख श अ य थ ई य

ख श अ य थ ई य

द ह य ऊ न अ म

अ र श अ म ह य अ

ख श अ य थ ई य वजरक

ख श अ य थ ई य अ नअम

प अ र स ई य ख श अ य थ ई य

व श त अ स प ह य अ पतर

न प अ ह ख अ म न ई श ई य"

२. इस प्रकार पढ़ा जावेगा :

"अदम दारयवूश खशायथीय वजरक खशायथीय खशायथीयानाम खशायथीय पारसईय खशायथीय दहयूनाम विश्तास्पहया पतर अशमिहया नपा हखानीशीय"

३. हिन्दी में इस प्रकार अनुवाद होगा : "मैं शक्तिशाली नरेश, नरेशों का नरेश, देशों का नरेश, पर्शिया का नरेश, विश्तास्प का पुत्र, अशमि का पौत्र, हखमनी वंश का डेरियस हूँ ।"

< 𐎠 𐎡 𐎢 𐎣 𐎤 𐎥 𐎦 𐎧 𐎨 𐎩 𐎪 𐎫 𐎬 𐎭 𐎮 𐎯 𐎰 𐎱 𐎲 𐎳 𐎴 𐎵 𐎶 𐎷 𐎸 𐎹 𐎺 𐎻 𐎼 𐎽 𐎾 𐎿 𐏀 𐏁 𐏂 𐏃 𐏄 𐏅 𐏆 𐏇 𐏈 𐏉 𐏊 𐏋 𐏌 𐏍 𐏎 𐏏 𐏐 𐏑 𐏒 𐏓 𐏔 𐏕 𐏖 𐏗 𐏘 𐏙 𐏚 𐏛 𐏜 𐏝 𐏞 𐏟 𐏠 𐏡 𐏢 𐏣 𐏤 𐏥 𐏦 𐏧 𐏨 𐏩 𐏪 𐏫 𐏬 𐏭 𐏮 𐏯 𐏰 𐏱 𐏲 𐏳 𐏴 𐏵 𐏶 𐏷 𐏸 𐏹 𐏺 𐏻 𐏼 𐏽 𐏾 𐏿 𐐀 𐐁 𐐂 𐐃 𐐄 𐐅 𐐆 𐐇 𐐈 𐐉 𐐊 𐐋 𐐌 𐐍 𐐎 𐐏 𐐐 𐐑 𐐒 𐐓 𐐔 𐐕 𐐖 𐐗 𐐘 𐐙 𐐚 𐐛 𐐜 𐐝 𐐞 𐐟 𐐠 𐐡 𐐢 𐐣 𐐤 𐐥 𐐦 𐐧 𐐨 𐐩 𐐪 𐐫 𐐬 𐐭 𐐮 𐐯 𐐰 𐐱 𐐲 𐐳 𐐴 𐐵 𐐶 𐐷 𐐸 𐐹 𐐺 𐐻 𐐼 𐐽 𐐾 𐐿 𐑀 𐑁 𐑂 𐑃 𐑄 𐑅 𐑆 𐑇 𐑈 𐑉 𐑊 𐑋 𐑌 𐑍 𐑎 𐑏 𐑐 𐑑 𐑒 𐑓 𐑔 𐑕 𐑖 𐑗 𐑘 𐑙 𐑚 𐑛 𐑜 𐑝 𐑞 𐑟 𐑠 𐑡 𐑢 𐑣 𐑤 𐑥 𐑦 𐑧 𐑨 𐑩 𐑪 𐑫 𐑬 𐑭 𐑮 𐑯 𐑰 𐑱 𐑲 𐑳 𐑴 𐑵 𐑶 𐑷 𐑸 𐑹 𐑺 𐑻 𐑼 𐑽 𐑾 𐑿 𐒀 𐒁 𐒂 𐒃 𐒄 𐒅 𐒆 𐒇 𐒈 𐒉 𐒊 𐒋 𐒌 𐒍 𐒎 𐒏 𐒐 𐒑 𐒒 𐒓 𐒔 𐒕 𐒖 𐒗 𐒘 𐒙 𐒚 𐒛 𐒜 𐒝 𐒞 𐒟 𐒠 𐒡 𐒢 𐒣 𐒤 𐒥 𐒦 𐒧 𐒨 𐒩 𐒪 𐒫 𐒬 𐒭 𐒮 𐒯 𐒰 𐒱 𐒲 𐒳 𐒴 𐒵 𐒶 𐒷 𐒸 𐒹 𐒺 𐒻 𐒼 𐒽 𐒾 𐒿 𐓀 𐓁 𐓂 𐓃 𐓄 𐓅 𐓆 𐓇 𐓈 𐓉 𐓊 𐓋 𐓌 𐓍 𐓎 𐓏 𐓐 𐓑 𐓒 𐓓 𐓔 𐓕 𐓖 𐓗 𐓘 𐓙 𐓚 𐓛 𐓜 𐓝 𐓞 𐓟 𐓠 𐓡 𐓢 𐓣 𐓤 𐓥 𐓦 𐓧 𐓨 𐓩 𐓪 𐓫 𐓬 𐓭 𐓮 𐓯 𐓰 𐓱 𐓲 𐓳 𐓴 𐓵 𐓶 𐓷 𐓸 𐓹 𐓺 𐓻 𐓼 𐓽 𐓾 𐓿 𐔀 𐔁 𐔂 𐔃 𐔄 𐔅 𐔆 𐔇 𐔈 𐔉 𐔊 𐔋 𐔌 𐔍 𐔎 𐔏 𐔐 𐔑 𐔒 𐔓 𐔔 𐔕 𐔖 𐔗 𐔘 𐔙 𐔚 𐔛 𐔜 𐔝 𐔞 𐔟 𐔠 𐔡 𐔢 𐔣 𐔤 𐔥 𐔦 𐔧 𐔨 𐔩 𐔪 𐔫 𐔬 𐔭 𐔮 𐔯 𐔰 𐔱 𐔲 𐔳 𐔴 𐔵 𐔶 𐔷 𐔸 𐔹 𐔺 𐔻 𐔼 𐔽 𐔾 𐔿 𐕀 𐕁 𐕂 𐕃 𐕄 𐕅 𐕆 𐕇 𐕈 𐕉 𐕊 𐕋 𐕌 𐕍 𐕎 𐕏 𐕐 𐕑 𐕒 𐕓 𐕔 𐕕 𐕖 𐕗 𐕘 𐕙 𐕚 𐕛 𐕜 𐕝 𐕞 𐕟 𐕠 𐕡 𐕢 𐕣 𐕤 𐕥 𐕦 𐕧 𐕨 𐕩 𐕪 𐕫 𐕬 𐕭 𐕮 𐕯 𐕰 𐕱 𐕲 𐕳 𐕴 𐕵 𐕶 𐕷 𐕸 𐕹 𐕺 𐕻 𐕼 𐕽 𐕾 𐕿 𐖀 𐖁 𐖂 𐖃 𐖄 𐖅 𐖆 𐖇 𐖈 𐖉 𐖊 𐖋 𐖌 𐖍 𐖎 𐖏 𐖐 𐖑 𐖒 𐖓 𐖔 𐖕 𐖖 𐖗 𐖘 𐖙 𐖚 𐖛 𐖜 𐖝 𐖞 𐖟 𐖠 𐖡 𐖢 𐖣 𐖤 𐖥 𐖦 𐖧 𐖨 𐖩 𐖪 𐖫 𐖬 𐖭 𐖮 𐖯 𐖰 𐖱 𐖲 𐖳 𐖴 𐖵 𐖶 𐖷 𐖸 𐖹 𐖺 𐖻 𐖼 𐖽 𐖾 𐖿 𐗀 𐗁 𐗂 𐗃 𐗄 𐗅 𐗆 𐗇 𐗈 𐗉 𐗊 𐗋 𐗌 𐗍 𐗎 𐗏 𐗐 𐗑 𐗒 𐗓 𐗔 𐗕 𐗖 𐗗 𐗘 𐗙 𐗚 𐗛 𐗜 𐗝 𐗞 𐗟 𐗠 𐗡 𐗢 𐗣 𐗤 𐗥 𐗦 𐗧 𐗨 𐗩 𐗪 𐗫 𐗬 𐗭 𐗮 𐗯 𐗰 𐗱 𐗲 𐗳 𐗴 𐗵 𐗶 𐗷 𐗸 𐗹 𐗺 𐗻 𐗼 𐗽 𐗾 𐗿 𐘀 𐘁 𐘂 𐘃 𐘄 𐘅 𐘆 𐘇 𐘈 𐘉 𐘊 𐘋 𐘌 𐘍 𐘎 𐘏 𐘐 𐘑 𐘒 𐘓 𐘔 𐘕 𐘖 𐘗 𐘘 𐘙 𐘚 𐘛 𐘜 𐘝 𐘞 𐘟 𐘠 𐘡 𐘢 𐘣 𐘤 𐘥 𐘦 𐘧 𐘨 𐘩 𐘪 𐘫 𐘬 𐘭 𐘮 𐘯 𐘰 𐘱 𐘲 𐘳 𐘴 𐘵 𐘶 𐘷 𐘸 𐘹 𐘺 𐘻 𐘼 𐘽 𐘾 𐘿 𐙀 𐙁 𐙂 𐙃 𐙄 𐙅 𐙆 𐙇 𐙈 𐙉 𐙊 𐙋 𐙌 𐙍 𐙎 𐙏 𐙐 𐙑 𐙒 𐙓 𐙔 𐙕 𐙖 𐙗 𐙘 𐙙 𐙚 𐙛 𐙜 𐙝 𐙞 𐙟 𐙠 𐙡 𐙢 𐙣 𐙤 𐙥 𐙦 𐙧 𐙨 𐙩 𐙪 𐙫 𐙬 𐙭 𐙮 𐙯 𐙰 𐙱 𐙲 𐙳 𐙴 𐙵 𐙶 𐙷 𐙸 𐙹 𐙺 𐙻 𐙼 𐙽 𐙾 𐙿 𐚀 𐚁 𐚂 𐚃 𐚄 𐚅 𐚆 𐚇 𐚈 𐚉 𐚊 𐚋 𐚌 𐚍 𐚎 𐚏 𐚐 𐚑 𐚒 𐚓 𐚔 𐚕 𐚖 𐚗 𐚘 𐚙 𐚚 𐚛 𐚜 𐚝 𐚞 𐚟 𐚠 𐚡 𐚢 𐚣 𐚤 𐚥 𐚦 𐚧 𐚨 𐚩 𐚪 𐚫 𐚬 𐚭 𐚮 𐚯 𐚰 𐚱 𐚲 𐚳 𐚴 𐚵 𐚶 𐚷 𐚸 𐚹 𐚺 𐚻 𐚼 𐚽 𐚾 𐚿 𐛀 𐛁 𐛂 𐛃 𐛄 𐛅 𐛆 𐛇 𐛈 𐛉 𐛊 𐛋 𐛌 𐛍 𐛎 𐛏 𐛐 𐛑 𐛒 𐛓 𐛔 𐛕 𐛖 𐛗 𐛘 𐛙 𐛚 𐛛 𐛜 𐛝 𐛞 𐛟 𐛠 𐛡 𐛢 𐛣 𐛤 𐛥 𐛦 𐛧 𐛨 𐛩 𐛪 𐛫 𐛬 𐛭 𐛮 𐛯 𐛰 𐛱 𐛲 𐛳 𐛴 𐛵 𐛶 𐛷 𐛸 𐛹 𐛺 𐛻 𐛼 𐛽 𐛾 𐛿 𐜀 𐜁 𐜂 𐜃 𐜄 𐜅 𐜆 𐜇 𐜈 𐜉 𐜊 𐜋 𐜌 𐜍 𐜎 𐜏 𐜐 𐜑 𐜒 𐜓 𐜔 𐜕 𐜖 𐜗 𐜘 𐜙 𐜚 𐜛 𐜜 𐜝 𐜞 𐜟 𐜠 𐜡 𐜢 𐜣 𐜤 𐜥 𐜦 𐜧 𐜨 𐜩 𐜪 𐜫 𐜬 𐜭 𐜮 𐜯 𐜰 𐜱 𐜲 𐜳 𐜴 𐜵 𐜶 𐜷 𐜸 𐜹 𐜺 𐜻 𐜼 𐜽 𐜾 𐜿 𐝀 𐝁 𐝂 𐝃 𐝄 𐝅 𐝆 𐝇 𐝈 𐝉 𐝊 𐝋 𐝌 𐝍 𐝎 𐝏 𐝐 𐝑 𐝒 𐝓 𐝔 𐝕 𐝖 𐝗 𐝘 𐝙 𐝚 𐝛 𐝜 𐝝 𐝞 𐝟 𐝠 𐝡 𐝢 𐝣 𐝤 𐝥 𐝦 𐝧 𐝨 𐝩 𐝪 𐝫 𐝬 𐝭 𐝮 𐝯 𐝰 𐝱 𐝲 𐝳 𐝴 𐝵 𐝶 𐝷 𐝸 𐝹 𐝺 𐝻 𐝼 𐝽 𐝾 𐝿 𐞀 𐞁 𐞂 𐞃 𐞄 𐞅 𐞆 𐞇 𐞈 𐞉 𐞊 𐞋 𐞌 𐞍 𐞎 𐞏 𐞐 𐞑 𐞒 𐞓 𐞔 𐞕 𐞖 𐞗 𐞘 𐞙 𐞚 𐞛 𐞜 𐞝 𐞞 𐞟 𐞠 𐞡 𐞢 𐞣 𐞤 𐞥 𐞦 𐞧 𐞨 𐞩 𐞪 𐞫 𐞬 𐞭 𐞮 𐞯 𐞰 𐞱 𐞲 𐞳 𐞴 𐞵 𐞶 𐞷 𐞸 𐞹 𐞺 𐞻 𐞼 𐞽 𐞾 𐞿 𐟀 𐟁 𐟂 𐟃 𐟄 𐟅 𐟆 𐟇 𐟈 𐟉 𐟊 𐟋 𐟌 𐟍 𐟎 𐟏 𐟐 𐟑 𐟒 𐟓 𐟔 𐟕 𐟖 𐟗 𐟘 𐟙 𐟚 𐟛 𐟜 𐟝 𐟞 𐟟 𐟠 𐟡 𐟢 𐟣 𐟤 𐟥 𐟦 𐟧 𐟨 𐟩 𐟪 𐟫 𐟬 𐟭 𐟮 𐟯 𐟰 𐟱 𐟲 𐟳 𐟴 𐟵 𐟶 𐟷 𐟸 𐟹 𐟺 𐟻 𐟼 𐟽 𐟾 𐟿 𐠀 𐠁 𐠂 𐠃 𐠄 𐠅 𐠆 𐠇 𐠈 𐠉 𐠊 𐠋 𐠌 𐠍 𐠎 𐠏 𐠐 𐠑 𐠒 𐠓 𐠔 𐠕 𐠖 𐠗 𐠘 𐠙 𐠚 𐠛 𐠜 𐠝 𐠞 𐠟 𐠠 𐠡 𐠢 𐠣 𐠤 𐠥 𐠦 𐠧 𐠨 𐠩 𐠪 𐠫 𐠬 𐠭 𐠮 𐠯 𐠰 𐠱 𐠲 𐠳 𐠴 𐠵 𐠶 𐠷 𐠸 𐠹 𐠺 𐠻 𐠼 𐠽 𐠾 𐠿 𐡀 𐡁 𐡂 𐡃 𐡄 𐡅 𐡆 𐡇 𐡈 𐡉 𐡊 𐡋 𐡌 𐡍 𐡎 𐡏 𐡐 𐡑 𐡒 𐡓 𐡔 𐡕 𐡖 𐡗 𐡘 𐡙 𐡚 𐡛 𐡜 𐡝 𐡞 𐡟 𐡠 𐡡 𐡢 𐡣 𐡤 𐡥 𐡦 𐡧 𐡨 𐡩 𐡪 𐡫 𐡬 𐡭 𐡮 𐡯 𐡰 𐡱 𐡲 𐡳 𐡴 𐡵 𐡶 𐡷 𐡸 𐡹 𐡺 𐡻 𐡼 𐡽 𐡾 𐡿 𐢀 𐢁 𐢂 𐢃 𐢄 𐢅 𐢆 𐢇 𐢈 𐢉 𐢊 𐢋 𐢌 𐢍 𐢎 𐢏 𐢐 𐢑 𐢒 𐢓 𐢔 𐢕 𐢖 𐢗 𐢘 𐢙 𐢚 𐢛 𐢜 𐢝 𐢞 𐢟 𐢠 𐢡 𐢢 𐢣 𐢤 𐢥 𐢦 𐢧 𐢨 𐢩 𐢪 𐢫 𐢬 𐢭 𐢮 𐢯 𐢰 𐢱 𐢲 𐢳 𐢴 𐢵 𐢶 𐢷 𐢸 𐢹 𐢺 𐢻 𐢼 𐢽 𐢾 𐢿 𐣀 𐣁 𐣂 𐣃 𐣄 𐣅 𐣆 𐣇 𐣈 𐣉 𐣊 𐣋 𐣌 𐣍 𐣎 𐣏 𐣐 𐣑 𐣒 𐣓 𐣔 𐣕 𐣖 𐣗 𐣘 𐣙 𐣚 𐣛 𐣜 𐣝 𐣞 𐣟 𐣠 𐣡 𐣢 𐣣 𐣤 𐣥 𐣦 𐣧 𐣨 𐣩 𐣪 𐣫 𐣬 𐣭 𐣮 𐣯 𐣰 𐣱 𐣲 𐣳 𐣴 𐣵 𐣶 𐣷 𐣸 𐣹 𐣺 𐣻 𐣼 𐣽 𐣾 𐣿 𐤀 𐤁 𐤂 𐤃 𐤄 𐤅 𐤆 𐤇 𐤈 𐤉 𐤊 𐤋 𐤌 𐤍 𐤎 𐤏 𐤐 𐤑 𐤒 𐤓 𐤔 𐤕 𐤖 𐤗 𐤘 𐤙 𐤚 𐤛 𐤜 𐤝 𐤞 𐤟 𐤠 𐤡 𐤢 𐤣 𐤤 𐤥 𐤦 𐤧 𐤨 𐤩 𐤪 𐤫 𐤬 𐤭 𐤮 𐤯 𐤰 𐤱 𐤲 𐤳 𐤴 𐤵 𐤶 𐤷 𐤸 𐤹 𐤺 𐤻 𐤼 𐤽 𐤾 𐤿 𐥀 𐥁 𐥂 𐥃 𐥄 𐥅 𐥆 𐥇 𐥈 𐥉 𐥊 𐥋 𐥌 𐥍 𐥎 𐥏 𐥐 𐥑 𐥒 𐥓 𐥔 𐥕 𐥖 𐥗 𐥘 𐥙 𐥚 𐥛 𐥜 𐥝 𐥞 𐥟 𐥠 𐥡 𐥢 𐥣 𐥤 𐥥 𐥦 𐥧 𐥨 𐥩 𐥪 𐥫 𐥬 𐥭 𐥮 𐥯 𐥰 𐥱 𐥲 𐥳 𐥴 𐥵 𐥶 𐥷 𐥸 𐥹 𐥺 𐥻 𐥼 𐥽 𐥾 𐥿 𐦀 𐦁 𐦂 𐦃 𐦄 𐦅 𐦆 𐦇 𐦈 𐦉 𐦊 𐦋 𐦌 𐦍 𐦎 𐦏 𐦐 𐦑 𐦒 𐦓 𐦔 𐦕 𐦖 𐦗 𐦘 𐦙 𐦚 𐦛 𐦜 𐦝 𐦞 𐦟 𐦠 𐦡 𐦢 𐦣 𐦤 𐦥 𐦦 𐦧 𐦨 𐦩 𐦪 𐦫 𐦬 𐦭 𐦮 𐦯 𐦰 𐦱 𐦲 𐦳 𐦴 𐦵 𐦶 𐦷 𐦸 𐦹 𐦺 𐦻 𐦼 𐦽 𐦾 𐦿 𐧀 𐧁 𐧂 𐧃 𐧄 𐧅 𐧆 𐧇 𐧈 𐧉 𐧊 𐧋 𐧌 𐧍 𐧎 𐧏 𐧐 𐧑 𐧒 𐧓 𐧔 𐧕 𐧖 𐧗 𐧘 𐧙 𐧚 𐧛 𐧜 𐧝 𐧞 𐧟 𐧠 𐧡 𐧢 𐧣 𐧤 𐧥 𐧦 𐧧 𐧨 𐧩 𐧪 𐧫 𐧬 𐧭 𐧮 𐧯 𐧰 𐧱 𐧲 𐧳 𐧴 𐧵 𐧶 𐧷 𐧸 𐧹 𐧺 𐧻 𐧼 𐧽 𐧾 𐧿 𐨀 𐨁 𐨂 𐨃 𐨄 𐨅 𐨆 𐨇 𐨈 𐨉 𐨊 𐨋 𐨌 𐨍 𐨎 𐨏 𐨐 𐨑 𐨒 𐨓 𐨔 𐨕 𐨖 𐨗 𐨘 𐨙 𐨚 𐨛 𐨜 𐨝 𐨞 𐨟 𐨠 𐨡 𐨢 𐨣 𐨤 𐨥 𐨦 𐨧 𐨨 𐨩 𐨪 𐨫 𐨬 𐨭 𐨮 𐨯 𐨰 𐨱 𐨲 𐨳 𐨴 𐨵 𐨶 𐨷 𐨸 𐨹 𐨺 𐨻 𐨼 𐨽 𐨾 𐨿 𐩀 𐩁 𐩂 𐩃 𐩄 𐩅 𐩆 𐩇 𐩈 𐩉 𐩊 𐩋 𐩌 𐩍 𐩎 𐩏 𐩐 𐩑 𐩒 𐩓 𐩔 𐩕 𐩖 𐩗 𐩘 𐩙 𐩚 𐩛 𐩜 𐩝 𐩞 𐩟 𐩠 𐩡 𐩢 𐩣 𐩤 𐩥 𐩦 𐩧 𐩨 𐩩 𐩪 𐩫 𐩬 𐩭 𐩮 𐩯 𐩰 𐩱 𐩲 𐩳 𐩴 𐩵 𐩶 𐩷 𐩸 𐩹 𐩺 𐩻 𐩼 𐩽 𐩾 𐩿 𐪀 𐪁 𐪂 𐪃 𐪄 𐪅 𐪆 𐪇 𐪈 𐪉 𐪊 𐪋 𐪌 𐪍 𐪎 𐪏 𐪐 𐪑 𐪒 𐪓 𐪔 𐪕 𐪖 𐪗 𐪘 𐪙 𐪚 𐪛 𐪜 𐪝 𐪞 𐪟 𐪠 𐪡 𐪢 𐪣 𐪤 𐪥 𐪦 𐪧 𐪨 𐪩 𐪪 𐪫 𐪬 𐪭 𐪮 𐪯 𐪰 𐪱 𐪲 𐪳 𐪴 𐪵 𐪶 𐪷 𐪸 𐪹 𐪺 𐪻 𐪼 𐪽 𐪾 𐪿 𐫀 𐫁 𐫂 𐫃 𐫄 𐫅 𐫆 𐫇 𐫈 𐫉 𐫊 𐫋 𐫌 𐫍 𐫎 𐫏 𐫐 𐫑 𐫒 𐫓 𐫔 𐫕 𐫖 𐫗 𐫘 𐫙 𐫚 𐫛 𐫜 𐫝 𐫞 𐫟 𐫠 𐫡 𐫢 𐫣 𐫤 𐫥 𐫦 𐫧 𐫨 𐫩 𐫪 𐫫 𐫬 𐫭 𐫮 𐫯 𐫰 𐫱 𐫲 𐫳 𐫴 𐫵 𐫶 𐫷 𐫸 𐫹 𐫺 𐫻 𐫼 𐫽 𐫾 𐫿 𐬀 𐬁 𐬂 𐬃 𐬄 𐬅 𐬆 𐬇 𐬈 𐬉 𐬊 𐬋 𐬌 𐬍 𐬎 𐬏 𐬐 𐬑 𐬒 𐬓 𐬔 𐬕 𐬖 𐬗 𐬘 𐬙 𐬚 𐬛 𐬜 𐬝 𐬞 𐬟 𐬠 𐬡 𐬢 𐬣 𐬤 𐬥 𐬦 𐬧 𐬨 𐬩 𐬪 𐬫 𐬬 𐬭 𐬮 𐬯 𐬰 𐬱 𐬲 𐬳 𐬴 𐬵 𐬶 𐬷 𐬸 𐬹 𐬺 𐬻 𐬼 𐬽 𐬾 𐬿 𐭀 𐭁 𐭂 𐭃 𐭄 𐭅 𐭆 𐭇 𐭈 𐭉 𐭊 𐭋 𐭌 𐭍 𐭎 𐭏 𐭐 𐭑 𐭒 𐭓 𐭔 𐭕 𐭖 𐭗 𐭘 𐭙 𐭚 𐭛 𐭜 𐭝 𐭞 𐭟 𐭠 𐭡 𐭢 𐭣 𐭤 𐭥 𐭦 𐭧 𐭨 𐭩 𐭪 𐭫 𐭬 𐭭 𐭮 𐭯 𐭰 𐭱 𐭲 𐭳 𐭴 𐭵 𐭶 𐭷 𐭸 𐭹 𐭺 𐭻 𐭼 𐭽 𐭾 𐭿 𐮀 𐮁 𐮂 𐮃 𐮄 𐮅 𐮆 𐮇 𐮈 𐮉 𐮊 𐮋 𐮌 𐮍 𐮎 𐮏 𐮐 𐮑 𐮒 𐮓 𐮔 𐮕 𐮖 𐮗 𐮘 𐮙 𐮚 𐮛 𐮜 𐮝 𐮞 𐮟 𐮠 𐮡 𐮢 𐮣 𐮤 𐮥 𐮦 𐮧 𐮨 𐮩 𐮪 𐮫 𐮬 𐮭 𐮮 𐮯 𐮰 𐮱 𐮲 𐮳 𐮴 𐮵 𐮶 𐮷 𐮸 𐮹 𐮺 𐮻 𐮼 𐮽 𐮾 𐮿 𐯀 𐯁 𐯂 𐯃 𐯄 𐯅 𐯆 𐯇 𐯈 𐯉 𐯊 𐯋 𐯌 𐯍 𐯎 𐯏 𐯐 𐯑 𐯒 𐯓 𐯔 𐯕 𐯖 𐯗 𐯘 𐯙 𐯚 𐯛 𐯜 𐯝 𐯞 𐯟 𐯠 𐯡 𐯢 𐯣 𐯤 𐯥 𐯦 𐯧 𐯨 𐯩 𐯪 𐯫 𐯬 𐯭 𐯮 𐯯 𐯰 𐯱 𐯲 𐯳 𐯴 𐯵 𐯶 𐯷 𐯸 𐯹 𐯺 𐯻 𐯼 𐯽 𐯾 𐯿 𐰀 𐰁 𐰂 𐰃 𐰄 𐰅 𐰆 𐰇 𐰈 𐰉 𐰊 𐰋 𐰌 𐰍 𐰎 𐰏 𐰐 𐰑 𐰒 𐰓 𐰔 𐰕 𐰖 𐰗 𐰘 𐰙 𐰚 𐰛 𐰜 𐰝 𐰞 𐰟 𐰠 𐰡 𐰢 𐰣 𐰤 𐰥 𐰦 𐰧 𐰨 𐰩 𐰪 𐰫 𐰬 𐰭 𐰮 𐰯 𐰰 𐰱 𐰲 𐰳 𐰴 𐰵 𐰶 𐰷

यजुरक —

शक्तिशाली — बख्तकः

खण्डायथीय —

नृप — क्षत्रियः

खशाय वीयानाम—

नृपों का — क्षत्रियाणां

अ न अ म

खशाययीय —

नृपे — क्षत्रियः

पारसईय —

पश्चिमा (क्रारस) पार्से

खसायणीय —

नृप — क्षत्रियः

दहयूनाम —

देशों का — दस्त्युना

Scanned by CamScanner

व श त अ स प ह य अ

विश्तास्पहया — विश्तास्प का — विश्तास्पस्य

प त र

पतर —

पुत्र — पुत्रः

अ र श अ म ह य अ

अरशमहया — अरशम का — अरशमस्य

न प अ

नपा —

पौत्र — नप्ता

ह ख अ म न ई श ई य

हखामनीशिय — हखमनी वंश का — हखामनिशियः

फलक संख्या - १३८ ख

‘फ० सं० - १३८’ पर प्राचीन पर्शियन कीलाकार लिपि में दिये हुए वाक्य का संस्कृत^१ में भी अनुवाद किया गया है जिसको इस प्रकार पढ़ा जायेगा, “अहं दारयवहु क्षत्रियः वज्रकः क्षत्रियः क्षत्रियाणां क्षत्रियः पार्से क्षत्रियः दस्युनां विश्तास्पस्य पुत्रः अरशमस्य नप्ता हखामनिशियः” ।

उपर्युक्त अनुवाद अंग्रेजी के अनुवाद से, जो बूथ ने अपनी पुस्तक^२ में दिया है, लिये गये हैं ।

1. संस्कृत का शाब्दिक अनुवाद शापुरजी कावसजी होडीवाला (नाव वाला) ने अपनी पुस्तक ‘Cuneiform Incriptions Transcribed into Sanskrit and Avesta’ (Bombay - 1931), page - 2 में दिया है ।
2. Booth, A. J. : The Discovery and Decipherment of the Trilingual Cuneiform Incriptions (London - 1902), page - 149.
“I am Darius, the mighty King of Kings, King of the Countries, King of Persia, Son of Hystaspes, grandson of Arsames, the Achaemenes.....”

बेहिस्तून शिलालेख का सूसियन पाठ : इसका अनुवाद एडविन नॉरिस ने किया है। इसका लिप्यन्तरण है :— (फ० सं० - १३९) ।

“(म) ऊ (म) तरियमऊश (म) जुनकुक इरशरूर (म) जुनकुक (म) जुनकुक - इप - इन्न (म) जुनकुक (निर्धारक) पर्शिन - इक्क (म) जुनकुक (म) इरशम (म) रह्शकरी (म) अकमन्नीशीय ।”

इसका हिन्दी में अनुवाद :—

“मैं तरियमूश (डेरियस) शक्तिशाली नृप, नृपों का नृप, पर्शिन (पर्शिया) का नृप, देशों का नृप, इरशम (अर्शम) का पौत्र, अकमन्नीशीय (हखामनीय) वंश का हूँ ।”

बेहिस्तून शिलालेख का बेबीलोनी पाठ : इसका अनुवाद रॉलिनसन ने किया है। इसका लिप्यन्तरण है :— (फ० सं० - १४०) ।

“अनकू (म) दरियमुश शरूड रबू शर माताती (म) अखमनी श शर [?] शररानी (बहु - वचन) (अमेलू) परसा - अ शर (मातृ) परसू” ।

इसका हिन्दी अनुवाद¹ है :—

“मैं डेरियस, महाराजा, देशों का राजा, अखमेनी वंशोय, नृपों का नृप, पर्शियन, पर्शिया का नृप हूँ ।”

बेहिस्तून के शिलालेख की त्रैभाषिक कीलाकार लिपियों (प्राचीन फ़ारसी, सूसियन अथवा नव एलामाइट, नव बेबीलोनी अथवा अक्कादियन) का उद्भव किस प्रकार हुआ ? यह विषय आज तक विवादास्पद है जिसमें से नव बेबीलोनी के विषय में तो निश्चित हो चुका है कि इसका उद्भव तथा विकास प्राचीन सुमेरी कीलाकार से प्राचीन अक्कादी अथवा प्राचीन बेबीलोनी का विकास तथा सरलीकरण हुआ तत्पश्चात् नव - बेबीलोनी बनी। सूसियन लिपि का विकास एक पृथक् राह से आद्य एलामाइट से हुआ। इसका सम्बन्ध किसी अन्य लिपि से नहीं रहा। अब सबसे अधिक विवादास्पद विषय प्राचीन फ़ारसी लिपि का रह गया। जिस प्रकार भारत में ब्राह्मी लिपि के उद्भव के विषय में कोई निश्चयपूर्ण तथ्य सामने नहीं आया इसी प्रकार प्राचीन फ़ारसी का, जो दोनों ही अक्षरात्मक तथा वर्णात्मक है, साथ में पांच चिह्न निर्धारक भी हैं, अभी तक निश्चय नहीं हो सका। अनुमान से विद्वान् यही मानते हैं कि इसका उद्भव ई० पू० की छठवीं शताब्दी में हुआ होगा। इसका अवधि काल अत्यन्त कम रहा क्योंकि अखमेनी वंश के अन्त के साथ इसका भी अन्त हो गया। इसका स्थान शनैः शनैः अरामायक से जन्मी पहलवी ने ले लिया।

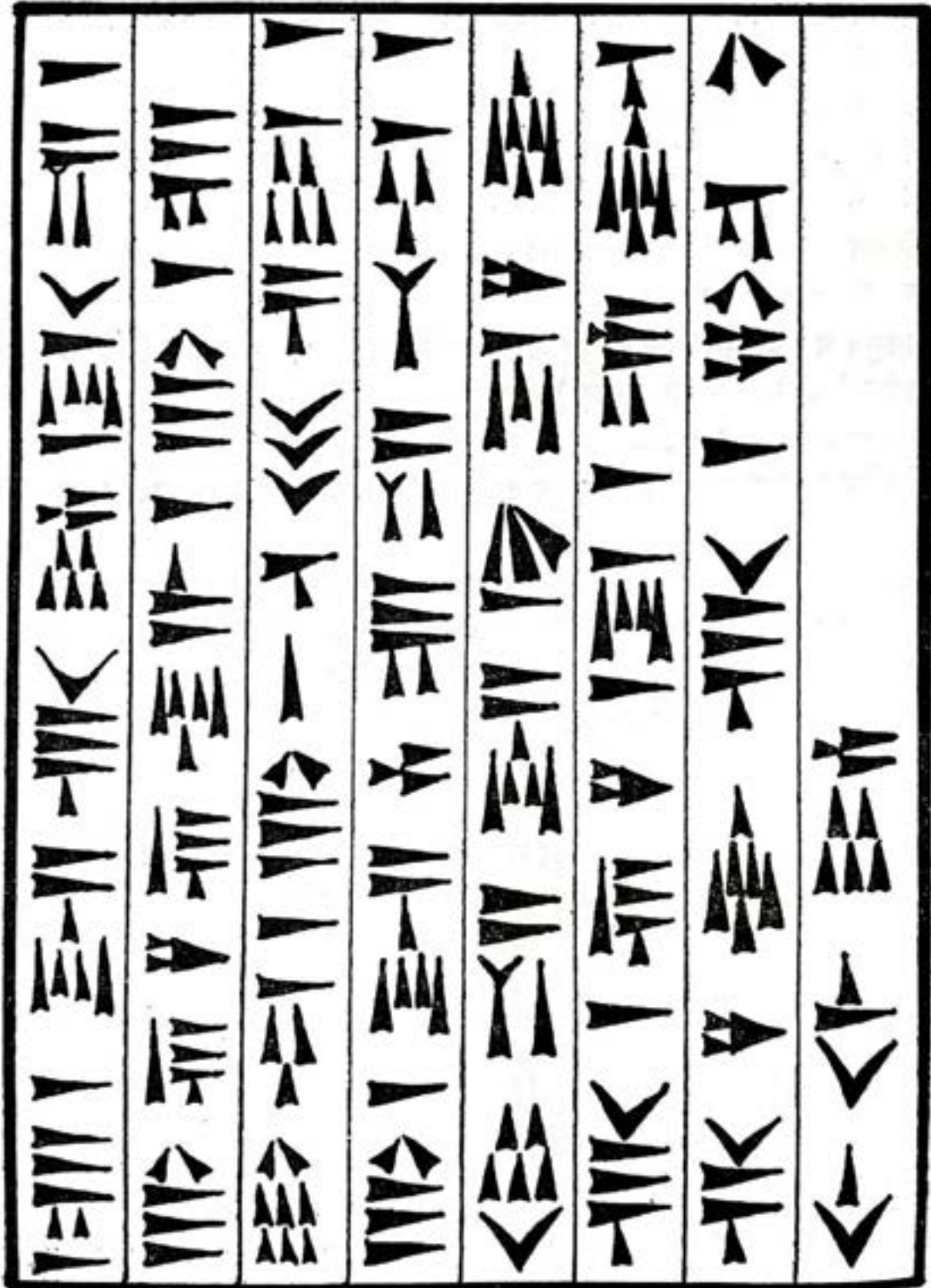
पहलवी लिपि

जब सिकन्दर के आक्रमण से अखामेनीय वंश का अन्त हो गया, तब उस वंश की लिपि ‘प्राचीन - पर्शियन’ का भी लोप होना आरम्भ हो गया और उसका स्थान यूनानी भाषा ने ले लिया। परन्तु शनैः शनैः यूनानी शासकों के अत्याचार बढ़ने लगे जिसने क्रान्ति की अग्नि प्रज्वलित कर दी। एक वीर अर्साकीज ने

1. अंग्रेजी के अनुवाद से लिया गया है —

“I am Darius, the great King, the King of lands, the Achæmenian, the King of Kings, the Persian, the King of Persia.” Taken from - E. A. Wallis Budge : Sculptures and Inscription of Behistun (1907), page - 159.

बेहिस्तून शिलालेख का सुसियन पाठ



फलक संख्या, - १३६

॥ २१ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥	अ न कू [मैं हूँ] (म) द अ री
॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥	य अ मुश [डैरियस] शारु [वृष] र बू [बड़ा]
॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥	शर मात मात (म) अ खं म नी
॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥	इश [?] शर शारु नी
॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥	[अमेलू] पर स अ अ शर [मातू] पर सू

पश्चिम का राज्य हस्तगत करके अरसासिड वंश की नींव २४७ ई० पू० में डाली। साथ साथ यूनानी भाषा समाप्त कर अरमायक लिपि द्वारा एक नई लिपि का आविष्कार भी किया जिसका नाम पहलवी^१ रखा गया। इसके दो काल माने जाते हैं, पहला अरसाकिड पहलवी (२५० ई० पू० से २५० ई० सन् तक) तथा दूसरा ससानिड पहलवी (२५० ई० सन् से ६५० तक)।

अरसाकिड पहलवी : यह व्यंजनात्मक लिपि है। इसमें स्वर नहीं होते। इसमें बीस अक्षर होते हैं। अरमायक के प्रभाव के कारण दाएँ से बाएँ लिखी जाती थी। इसमें स्वरों का कार्य अलेफ़ (अ, आ) से, 'ज' (इ, ई, ए) से तथा 'व' (उ, ऊ, ओ) से ले लिया जाता है। 'फ० सं० - १४१ प्रथम कॉलम' आरम्भ किया तथा एक वर्णमाला भी प्रस्तुत की। (फ० सं० - १४१)।

ससानिड लिपि : कालानुसार इसमें कुछ परिवर्तन हुए, परन्तु अधिक नहीं। इन दोनों लिपियों^२ के अभिलेख १८४८ से १८५५ तक के उत्खनन कार्य से लगभग एक सहस्र अभिलेख प्राप्त हो चुके हैं। सबसे प्राचीन अभिलेख, जिसका काल ५३ ई० सन् माना गया है, एब्रोमन (कुडिस्तान) से तथा इसी शताब्दी का एक अन्य अभिलेख निशा^३ से प्राप्त हुआ। (फ० सं० - १४१ द्वितीय कॉलम)।

ससानिड ग्रन्थ लिपि : इस लिपि का प्रयोग केवल हस्त - लिखित ग्रन्थों में किया जाता था। इसका रूप शीघ्रता से लिखने वाली घसीट हो गया। 'फ० सं० - १४१ तृतीय कॉलम'। इन लिपियों का रहस्योद्घाटन^४ सर्वप्रथम दि सेसी तथा अन्द्रियास ने तत्पश्चात् लांग पेरियर (Longperier), ओल्शान्सेन (Olshansen), टॉमस, मोर्दमान तथा द्रोनिन ने किया।

'अवेस्त' : मध्य - पश्चिम भाषा का प्राचीनतम रूप 'अवेस्तक' से बना जिसके अर्थ सम्भवतः 'आधार' हैं परन्तु मध्यकाल की पश्चिम भाषा में इसको 'जेन्द' या 'जेन्द' कहते हैं। पश्चिमी विद्वानों ने दोनों शब्दों को मिलाकर 'जेन्द अवेस्त' इस लिपि का नामकरण कर दिया।

अद्वैतकाल (२२६ - २४२ ई०) में जोरोआस्ट्र^५ के धर्म की प्राचीन पुस्तकों की खोज आरम्भ हुई। जहाँ से जो भाग मिले एकत्रित किये गये और फ़ारसी भाषा को एक रूप दिया गया। इस कार्य को शापुर नरेश तृतीय (३१० - ३७९ ई०) के शासन में पूरा किया गया। ग्रीस की भाषा के प्रभाव से इसमें और स्वर जोड़े गये। इस प्रकार जेन्द - अवेस्ता एक मिश्रित लिपि लगभग ५२ वर्णों की प्रस्तुत की गई।

१७६२ में एन्कुईतिल दुपेरो (Anquetil Duperron) भारत में अवेस्ता का मूल ग्रन्थ पेरिस ले गया जो सात मोहरों में बन्द थी। डेनमार्क निवासी रस्क (मृ० १८३२) और फ्रांस निवासी बर्नाफ (मृ० १८५२) ने सर्वप्रथम इसका अनुवाद किया जो कुछ संतोषजनक नहीं हुआ। फिर अन्य विद्वान् आये और कार्य को सम्पन्न किया। अब केवल अवेस्त धार्मिक पुस्तक का चौथाई भाग सुरक्षित है। अवेस्त लिपि का उद्भव अरमायक से हुआ है। यह खरोष्ठी की तरह लगती है। इस लिपि में ४९ वर्ण होते हैं।^६ (फ० सं० - १४२)।

1. 'पहलवी' शब्द की उत्पत्ति 'पार्थियन', 'पार्थवी', 'पहलवीक' शब्दों द्वारा हुई।

2. Ghirsham, R : Iran - Parthians and Sassanians (London - 1962), p. - 15 .

3. Jensen, H. : Syn, Symbol and Script (1970), p. - 431 .

4. Frye, R. N. : The Heritage of Persia (London - 1962), p. - 177 .

5. 'जोरोआस्ट्र' दो शब्दों से — जोरू + इस्तर — बना, जिसके अर्थ है 'अस्टेरिया का बोज'। इस शब्द की व्याख्या Journal of Royal Asiatic Society - Vol. XV. (1855), p. - 246 से ली गई है।

6. इस लिपि के वर्ण नीचे लिखी पुस्तक से लिये गये हैं :—

Jackson, A. V. W. : The Avestan Alphabets and Its Transcription (1890), p. - 215 .

पहलवी लिपि के रूप

ध्वनि	२५० ई.पू. तक	२५० ई.पू. तक	२५० ई.पू. तक	२५० ई.पू. तक	ध्वनि	अरसासिड काल	ससासिड काल	पुस्तक लिपि
अ	𐎠	𐎡	𐎢	𐎣	म	𐎤	𐎥	𐎦
ब	𐎧	𐎨	𐎩	𐎪	न	𐎫	𐎬	𐎭
ग	𐎮	𐎯	𐎰	𐎱	स	𐎲	𐎳	𐎴
द	𐎶	𐎷	𐎸	𐎹	च	𐎺		𐎻
ह	𐎼	𐎽	𐎾	𐎿	फ	𐏀	𐏁	𐏂
व	𐏃	𐏄	𐏅	𐏆	ग			𐏇
ज	𐏈	𐏉	𐏊	𐏋	क	𐏌		
ख	𐏍	𐏎	𐏏	𐏐	र	𐏑	𐏒	𐏓
ज	𐏕	𐏖	𐏗	𐏘	श	𐏙	𐏚	𐏛
क	𐏜	𐏝	𐏞	𐏟	त	𐏠	𐏡	𐏢
अ	𐏣	𐏤	𐏥	𐏦	-	-	-	-

फलक संख्या - १४१

जैन्द - अवेस्ता लिपि

अ	आ	ये	यै	ए	ऐ	ओ	औ	अं
u	uu	ru	lu	ε	ε	u	u	εu
अं	इ	ई	उ	ऊ	क	ग	ख	र
19	u	u	u	u	9	ε	u	u
च	ज	त	द	प	फ	ट	प	ब
u	u	u	u	u	u	u	u	u
व	व	र	स	ज	श	ष	श	ज़
u	u	u	u	u	u	u	u	u
ह	ख	ह	प	स्त	स्व	सा		
u	u	u	u	u	u	u		

फलक संख्या - १४२

ससानिड पहलवी (ग्रन्थ) तथा जेण्ड - अवेस्त के पाठ 'फ० सं० - १४३' पर उनके लिप्यन्तरण तथा हिन्दी में अर्थ के साथ दिये गये हैं । ऊपर ससानिड^१ का पाठ है :—

“ओहरमज्द पेशमन दामदहशनीह राव बुत खुताइ उ खुर (पस) मन दाम दहशनीह खुताइ, सूत - खास्तार उ फ़ज़ानक उ युत - बेश, आस्कारक उ हमेरा ओयनितार उ अफ़ज़ोनिक उ हरविस्प - कीरीतार बुत” ।

1. अर्थ अंग्रेज़ी के अनुबाद से लिये गये हैं जो हन्स येनसेन की पुस्तक (Syn, Symbol and Script, p. - 431) में इस प्रकार दिये गये हैं :—

“Before the creation Ohrmazd was not a ruler, but after the creation he became ruler, patron, wise, free from suffering, manifest, All - Caring, Benefactor and all - Seeing”.

अर्थ : — (संसार की) उत्पत्ति के पूर्व ओहरमज्द शासक नहीं था, परन्तु उत्पत्ति के पश्चात् वह शासक, संरक्षक, बुद्धिमान्, कष्टों से स्वतन्त्र, अभिव्यक्त, सर्वपालक, उपकारी तथा सर्वद्रष्टा हो गया ।

इसी के नीचे खेण्ड — अवेस्त¹ का पाठ है :—

लिप्यन्तरण :—

“अहमात मनोयुश रारेशयन्ती द्रुगवन्तू मज्दा स्पेन्ताट नोइट इथाशाउनो कसेडश्चीटना अशाउने काथे अनहट इस्वाचीत हास परोश अको द्रुगवायते” ।

अर्थ :—इस पवित्र आत्मा से, अय मज्द, असत्य (बोलने वाले) जो सच्चे नहीं हैं, दूर हो जायें । जो थोड़ा भी (सत्यवादी) है उसको सत्य विश्वासी के पास विसर्जित करना, जो अधिक (असत्य) रखता है उसको मत के अरि के पास कुव्यवस्थ करना ।

पठनीय सामग्री

- | | |
|--------------------------|--|
| <i>Arbery, A. J.</i> | : Specimens of Arabic And Persian Palaeography (1929). |
| <i>Bork, F.</i> | : Elamisch Studien (1932). |
| <i>Barton, G. A.</i> | : The Origin and Development of Babylonian Writing (1913). |
| <i>Booth, A. J.</i> | : The Discovery and Decipherment of the Trilingual Cuneiform Inscriptions (London - 1902). |
| <i>Brice, W. C.</i> | : The writing System of the Proto - Elamite Account Tablets of Susa (1962). |
| <i>Budge, E. A. W.</i> | : Sculptures and Inscriptions of Behistun (London - 1907). |
| <i>Cleater, P. E.</i> | : Lost Languages (1959). |
| <i>Gelb, I. J.</i> | : A Study of Writing (1952). |
| <i>Gordon, C. H.</i> | : Forgotten Scripts (1968). |
| <i>Jackson, A. V. W.</i> | : The Avestan Alphabets And Its Transcription, (1890). |
| <i>King, L. W.</i> | : The Sculptures And Inscriptions of Darius The Great (1952). |
| <i>Kent, R.</i> | : Old Persian (1950). |
| <i>König, F. W.</i> | : Corpus Inscriptionum Elamitarum (Hannover - 1928). |
| <i>Lofius, W. K.</i> | : Travels and Researches in Chaldea and Susiana (1957). |
| <i>Moorhouse, A. C.</i> | : Writing and the Alphabet (1946). |
| <i>Massey, W.</i> | : Origin And Progress of Letters. |
| <i>Sen, Sukumar</i> | : Old Persian Inscriptions of The Achaemenian Emperors. |
| <i>Thomas, E.</i> | : Sassanion Inscriptions (Journal of Royal Asiatic Society - 1868). |

1. येनसेन की पुस्तक से : “From this holy spirit, O Mazda, the liars fall away; not so truthful. One who has little should be well - disposed to a true believer; One who has much should be ill - disposed to an enemy of the faith.”

फिनीशिया

इतिहास

फिनीशिया (Phoenicia) का शब्द सबसे पहले होमर के दो महाकाव्यों (Illiad & Odyssey - 1000 to 800 B. C.) में फ़िनिक्स (Phoenix) के नाम से दृष्टिगोचर होता है। जिसका अर्थ है 'भूरे व हल्के लालरंग के मनुष्य'। रोम के निवासी इस देशको फ़िनीकेस, प्युनीकस एवं प्युनी (Phoenices, Punicus and Peoni) और ब्रिटेन के निवासी फ़िनीशिया के नाम से सम्बोधित करते थे। यह भूमध्यसागर के पूर्वी किनारे के उत्तर में स्थित था। यह लोग किस जाति से सम्बन्धित थे अथवा कहाँ से आकर बसे? इन प्रश्नों पर विचार करना केवल पुस्तक के पृष्ठों को अधिक बढ़ाने के अतिरिक्त और कोई लाभ न होगा। क्योंकि विद्वानों ने इन प्रश्नों पर अपनी कल्पनाओं का सहारा लिया है जिसके कारण वे एकमत नहीं हैं। अब यह सर्वमान्य हो गया है कि यह लोग पर्यटनशील थे तथा सेमिटिक जाति से सम्बन्ध रखते थे जो लगभग ३००० ई० पू० में आकर बस गये, जिसको कनआन कहते थे और निवासियों को कनआनी (Canaanites)।

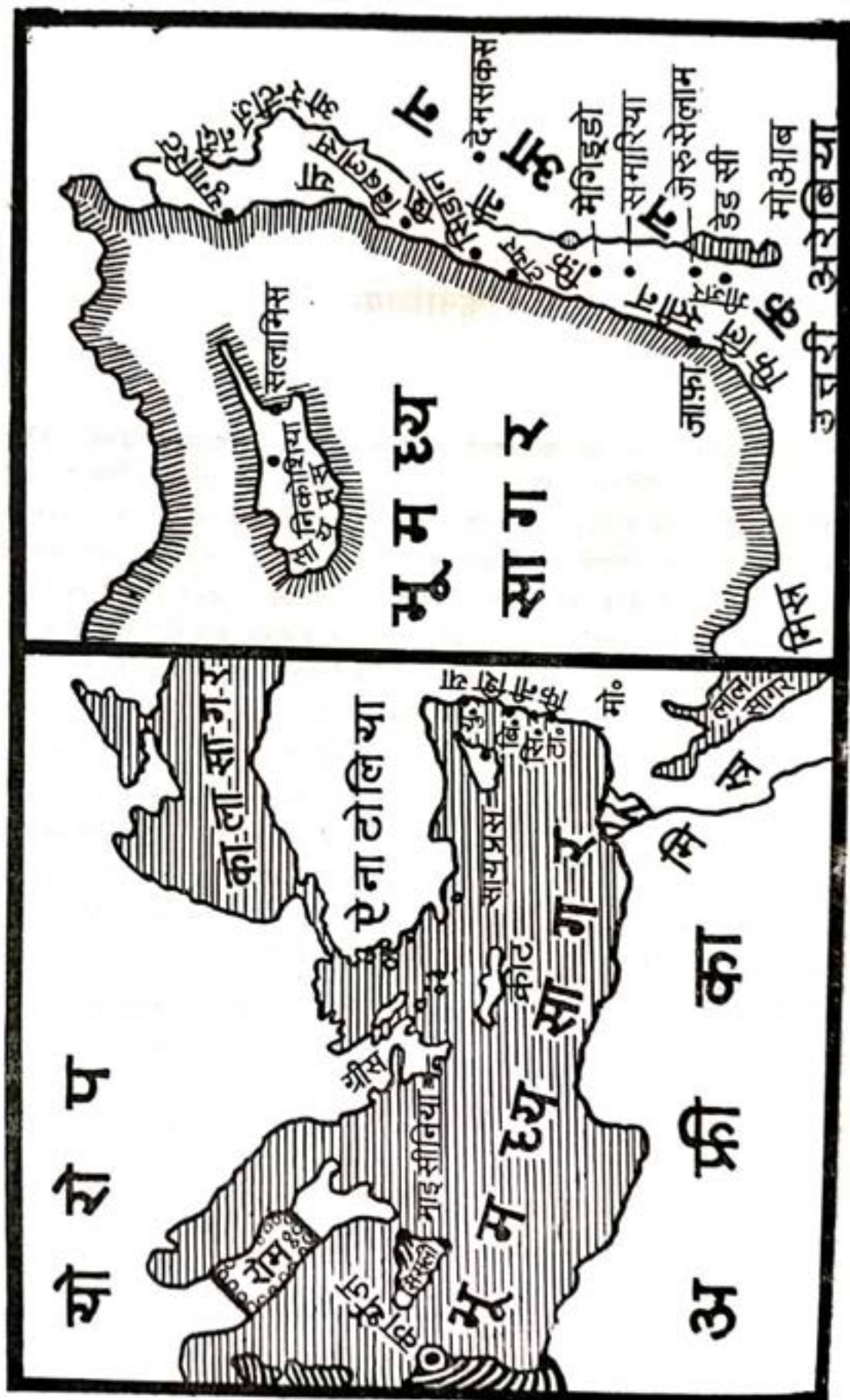
लगभग २२०० से १४०० ई० पू० तक क्रीट के व्यापारी — जलपोत द्वारा समुद्र में फिरा करते थे और अपने व्यापार की उन्नति करते थे। १४०० ई० पू० में क्रीट तथा ११०० ई० पू० माइसीनिया के पतन ने ग्रीस की सामुद्रिक सत्ता का अन्त कर दिया। मिस्र के फेराओ टोटमिस तृतीय (Thothmes III) ने सीरिया की एक बड़ी सेना को मेग्गिडो के निकट १४७१ ई० पूर्व में परास्त किया तथा सब छोटे-छोटे राज्यों को अपने अधीन कर एवं मिलाकर एक उपनिवेश स्थापित कर लिया।

अब कनआन निवासियों में से एक नये प्रकार की संस्कृति का प्रादुर्भाव आरम्भ हो गया। इसने क्रीट व माइसीनिया की सामुद्रिक शक्ति के पतन से लाभ उठाकर अपनी सामुद्रिक सत्ता इतनी प्रबल बना ली कि ८०० ई० पू० में वह ग्रीस को भी अपने अधीन करने का प्रयास करने लगी। अब इन लोगों को फ़िनीशियन तथा इनके निवास स्थान को फ़िनीशिया कहा जाने लगा। उनके मुख्य नगर — राज्य व नौकाश्रय टायर^१, सीडान^२, बिबलोस^३ एवं युगारिट^४ थे। टायर में एक प्रकार की समुद्री सोप से वैजनी रंग बनाया जाता था तथा सिडान में कांच के बर्तन बनाये जाते थे। इसके अतिरिक्त इन नौकाश्रयों से यहाँ की प्रसिद्ध लकड़ी सेडार का भी निर्यात होता था। इन्हीं कारणों से देश की प्रसिद्धि व समृद्धि दिन प्रतिदिन उन्नति के शिखर की ओर पहुँच रही थी।

ई० पू० की तेरहवीं श० में फ़िनीशिया ने अपनी सत्ता का प्रभाव बढ़ाना आरम्भ कर दिया था और प्यारहवीं से आठवीं श० तक उन्होंने भूमध्य सागर में कई नौकाश्रय स्थापित कर लिये थे। ८१४ ई० पू० में

आधुनिक नाम : — १. सूर; २. सैदा; ३. जेबेल; ४. रास शमरा।

द्वीं श० पश्चात् = फिनीशिया = ई० पू० की द्वीं श० पूर्व



कलक संख्या - १४४

टायर नगर - राज्य की रानी ने अफ्रीका के उत्तरी किनारे पर फ़िनीशिया की संस्कृति का एक नया केन्द्र कार्यें के नाम से स्थापित किया। उधर ग्रीस इधर फ़िनीशिया भूमध्यसागर में अपने अपने व्यापारिक केन्द्र तथा उपनिवेश स्थापित करने में रत थे।

फ़िनीशिया के नगर-राज्यों पर पूरव की ओर से कई आक्रमण हुये। पहला आक्रमण असीरिया - नरेश तिगलत पलेसर तृतीय ने ७३४ ई० पू० में किया। दूसरा सेन्नाख़रिब ने सिडान पर किया तथा उसके राजा तुल्ली को ७०१ ई० पू० में सायप्रस की ओर भाग जाने पर विवश किया। ६७७ में अशुरहेदन ने तथा ६६५ में अशुरबनीपाल ने विध्वंसक आक्रमण किये। असीरिया के पतन से बेबीलोनिया के आक्रमण तक (६२६ से ५७४ ई० पू० तक) फ़िनीशिया ने स्वतन्त्रता की साँस ली परन्तु पुनः बेबीलोन के अधिकार में चला गया। ५३९ ई० पू० में पशिया के प्रथम सम्राट सायरस ने बेबीलोन को परास्त कर फ़िनीशिया को भी अपने साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया तथा फ़िनीशिया के साथ सीरिया व सायप्रस को मिलाकर पाँचवाँ प्रान्त बना लिया।

३३२ ई० पू० में सिकन्दर ने आक्रमण करके अपने साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया। २८६ से १९७ ई० पू० तक यह मिस्र के टॉलमी वंश के नरेशों के अधीन रहा। इसी बीच फ़िनीशिया निवासी अपने नव - निमित्त केन्द्र कार्यें में जाकर बसने लगे और अपनी सत्ता व संस्कृति को सुरक्षित रखने का प्रयास करने लगे।

भूमध्य सागर में अब इनका मुख्य प्रतिद्वन्द्वी ग्रीस न होकर रोम हो गया था क्योंकि रोम भी अपने व्यापारिक केन्द्र तथा उपनिवेश स्थापित करने में संलग्न था। रोम तथा फ़िनीशिया में निरन्तर युद्ध होते रहे जिनमें से तीन बड़े प्रसिद्ध हैं और इतिहास में प्युनिक युद्धों के नाम से ज्ञात हैं, क्योंकि रोम निवासी इनको प्युनी कहा करते थे। पहला युद्ध २६१ से २४१ तक, दूसरा युद्ध २१८ से २०१ तक तथा तीसरा युद्ध १४९ से १४६ ई० पू० तक चलता रहा। तीसरे युद्ध में रोम ने कार्यें^१ को नष्ट भ्रष्ट करके भूमि - तल के समान कर दिया। १९७ से ८२ ई० पू० तक कार्यें का क्षेत्र रोमन राज्य के अधीन सीरिया उपनिवेश का एक प्रान्त बना रहा। तत्पश्चात् बैजेन्ताइन के अधिकार में और अन्त में मुसलमानों के अधिकार (सातवीं ई०) में आ गया।

इस प्रकार फ़िनीशिया की वह संस्कृति, जिसने लगभग ३५०० वर्ष पूर्व २२ व्यंजनों की वर्णमाला का आविष्कार करके लगभग आधे विश्व को लाभान्वित किया, लिखने को कागज व रंग प्रदान किया, संसार से लोप हो गयी।

लेखन कला

अब यह बात तो सर्वमान्य होकर निर्धारित हो चुकी है कि फ़िनीशियन लोग सेमिटिक जाति के थे तथा इनकी भाषा भी सेमिटिक थी। संसार के यही सर्वप्रथम लोग थे जिन्होंने ध्वन्यात्मक वर्णों का निर्माण किया और यही वर्ण पाश्चात्य देशों के वर्णों के जन्मदाता बने। ऐसा प्रतीत होता है कि शब्द 'फ़ोन' फ़िनीशिया के (Phoenicia) नाम से निकाला गया क्योंकि इन्हीं लोगों ने सर्वप्रथम फोनोग्राम (Phonogram = Phone ध्वनि; Gramma = Letter अक्षर) अर्थात् ध्वन्यात्मक वर्णों का निर्माण किया।^२

१. लेखक ने स्वयं जाकर यहाँ की लिपियों का ज्ञान संग्रहालय से प्राप्त किया।

२. लेखक का अपना विचार है।

फ़िनीशिया की लिपि का उद्भव और विकास किस लिपि से हुआ ? इस प्रश्न का उत्तर निम्नलिखित लिपि वेत्ताओं तथा पुरातत्त्व वेत्ताओं ने अपने अपने अनुमानों के तथा कुछ ने प्रमाणों के आधारों पर दिया है :—

१. १८५६ में : डी रोज़े (de Roughe) ने मिस्र की प्राचीन चित्रात्मक लिपि से ।
२. १८७४ में : हेल्वी (Halvey) ने इसका समर्थन किया ।
३. १८७७ में : डिके (Deecke) ने असीरिया की लिपि से ।
४. १८६७ में : फ्रेड्रिक डी लिश (Frederich de Lieche) ने मिस्र तथा बेबीलोनिया की लिपियों से ।
५. १६०० में : पीज़र (Pieser) ने प्राचीन बेबीलोनियन से ।
६. १६०४ में : हैनमेल (Hanmel) ने सुमेर के रेखाचित्रों से ।
७. १६०५ में : फ्लिण्डर्स पेट्री (Flinders Petrie) ने सिनाइ की उत्खनित चित्रात्मक लिपि से ।
८. १६१३ में : यच० शनीदर (H. Schneider) ने क़्रीत के रेखाचित्रों से । (चिह्न - चित्र सुण्डवल ने १९३१ में बनाये)^१
९. १६१६ में : सेथे (Sethe) ने मिस्र से ।
१०. १६१६ में : ए० यच० गार्डिनर (A. H. Gardiner) ने सिनाइ की लिपि से ।
११. १६१६ में : सेसी (Sayce) ने किसी व्यक्ति द्वारा जो मिस्र तथा हिटायट लिपियों का ज्ञाता होगा ।
१२. १६१८ में : लेमान, हौप्ट, गार्डथौसर, (Lehmann, Haupt, Gardthausen) ने बारहवीं श० में हेब्रू से ।
१३. १६२० में : कलिन्क (Kalinka) ने किसी एक व्यक्ति द्वारा ।
१४. १६२१ में : यच० बावर (H. Bauer) ने क़्रीत के चिह्नों से ।
१५. १६२६ में : ई० ग्रिम (E. Grimme) ने क़्रीत व सिनाइ के रेखा - चित्रों से ।
१६. १९३२ में : लिण्डब्लम (Lindblom) ने सिनाइ से ।
१७. १९३६ में : मेंज (Mentz) ने ऐक्रोफ़ोनिक पद्धति द्वारा मिस्र के चिह्नों से ।

विख्यात पुरातत्त्व वेत्ता फ्लिण्डर्स पेट्री (Flinders Petrie) ने सिनाइ की तंबे की खानों से कुछ शिलालेख प्राप्त किये । ई० पू० की सत्रहवीं श० में यहाँ एक सेमिटिक जाति के हिकसास (Hyksos) लोग तथा कनआन निवासी इन्हीं खानों में काम करते थे । उन्होंने मिस्र की चित्रात्मक लिपि के चिह्नों को हेब्रू नाम प्रदान किये । हिकसास लोग उस काल में मिस्र पर शासन करते थे । सिनाइटिक लिपि के सोलह छोटे छोटे अभिलेखों को, जो उत्खनन से प्राप्त हुये और जिनका काल ई० पू० की अठारहवीं श० निर्धारित किया गया, आधार मान कर ए० यच० गार्डिनर^२ (A. H. Gardiner) ने ऐक्रोफ़ोनिक पद्धति^३ (Acrophonic System) से एक चार्ट बनाया । इसमें मिस्र की लिपि के चित्रों को सेमिटिक नाम दिये गये और उन नामों का पहला अक्षर लेकर एक ध्वन्यात्मक लिपि (Phonographic Script) का रूप दिया । तदनन्तर फ़िनीशिया

१. चिह्नों की तुलना का चार्ट फ० सं० - १४५ पर दिया गया है ।
२. 'फ० सं० १५२' पर चार्ट दिया गया है जो गार्डिनर की 'The Egyptian Origin of the Semitic Alphabet (Journal of Egyptian Archaeology III - 1916. Fig. 1.) से लिया गया है ।
३. इस प्रद्धति में जब चित्रों से अक्षरों का निर्माण किया जाता है तो चित्र का कुछ भाग लेकर तथा उस भाग को एक चिह्न मानकर उसी चित्र के नाम की पहली या अन्तिम ध्वनि को अक्षर मान लिया जाता है ।

प्राचीन फ़िनीशियन चिह्नों की तुलना, क्रीट के चिह्नों से
सुण्डवल (SUNDWALL) द्वारा १६३१ में

ध्वनि	क्रीट के	प्रा० फ़ि० के	ध्वनि	क्रीट के	प्रा० फ़ि० के
अ	𐀀	𐀁𐀂	ल	𐀃𐀄	𐀅𐀆
ब	𐀇𐀈	𐀉	म		𐀊
ग	𐀋	𐀌	न	𐀍	𐀎
द	𐀏	𐀐	स	𐀑	𐀒
ह	𐀓	𐀔	ओ	𐀕	𐀖
व	𐀗	𐀘	प	𐀙	𐀚𐀛
ज	𐀜	𐀝	श	𐀞	𐀟
ख	𐀠	𐀡	क	𐀢	𐀣
त	𐀤	𐀥	र	𐀦	𐀧
ड	𐀨	𐀩	श	𐀪	𐀫
क	𐀬	𐀭𐀮	त	𐀯	𐀰𐀱

फलक संख्या - १४५

फिनीशिया लिपि के वर्ण -- गार्डिनर व सेथे द्वारा

मिस्र	सिनाइ	नाम	अक्षर	नाम	ध्वनि
		बैल का सिर		अलिफ़	अ
		घर		बेथ	ब
		हुक - कील		वाव	व
		अस्त्र-हंसिया		ज़ाजिन	ज़
		हाथ		योथ	ज
		हथेली		काफ़	क
		बैल का अंकुश		लामेद	ल
		पानी		मीम	म
		मछली सांप		नून-नहास	न
		आंख		ऐजिन	ओ
		मुंह		पी	प
		सिर		रीश	र
		दांत		शिन	श
		निशान		ताव	त
		अंट की गर्दन		गिमेल	ग
		द्वार		दलेथ	द
				तेथ	त

की लिपि, जिसको उत्तरी - सेमिटिक - लिपि (North Semitic Script) भी कहते हैं, से उसकी तुलना की जिसकी प्रमाणिकता ठीक सिद्ध हुई।

सेथे (Sethe) ने जो स्वयं गाडिनर के सिद्धान्त पर १९१६ से शोध कार्य कर रहा था, जब गाडिनर का चार्ट देखा तो बहुत प्रसन्न हुआ और उसने अपने तीन अक्षरों को उस चार्ट में जोड़ दिया। इस सेथे - गाडिनर सिद्धान्त को लिटमन (Littman), लिड्जबार्स्की (Lidzbarski) तथा बिस्सिंग (Bissing) ने १९२१ में मान्यता प्रदान की परन्तु फिर भी कुछ विद्वानों ने इस सिद्धान्त की समालोचना की।

बिबलास (Byblos) : ई० पू० की पन्द्रहवीं श० में मिस्र देश का एक सूक्ष्म रूप था। तत्कालीन स्थानीय राजा मिस्र के अधीन वैतनिक होते थे। उसी प्रकार का एक वैतनिक राजा अहिराम (अखिराम) बिबलास के एक नगर - राज्य जेबाल (आ० जबाइल - जिब्राईल से बना है) पर शासन करता था। बिबलास को पहले सीडान के तत्पश्चात् टायर के राजाओं ने पराजित किया। ३३० ई० पू० में सिकन्दर ने परास्त किया। तदोपरांत यह सेल्युकस के वंशजों के अधीन फिर रोम के अधीन तथा ११०३ ई० से धर्म - युद्ध - कर्ताओं (क्रूसेडर्स) के अधीन और अंत में मुसलमानों के अधीन रहा।

बिबलास से एक फ़िनीशियन (उत्तरी सेमिटिक) लिपि का प्राचीनतम अभिलेख प्रकाशित हुआ जो १९२९ में डुनान्ड (Dunand) को पन्द्रहवीं श० का प्राप्त हुआ। दूसरा अभिलेख फ्रांस के पुरातत्ववेत्ता मोन्तेत (Montet) को सीडान से १९२३ में तेरहवीं श० का प्राप्त हुआ। यह अभिलेख अहिराम (अखिराम) नरेश की समाधि - शिला (Sarcophagus of Lime - Stone) पर अंकित था। यह अभिलेख एक पुस्तक^१ में प्रकाशित हुआ। इसका अनुवाद लिड्जबार्स्की (Lidzbarski)^२ ने किया तथा उसी से एक वर्णमाला तैयार की जो 'फ० सं० - १४९' पर पहले कॉलम में दी गई है। इस अभिलेख के कुछ आरम्भिक शब्द 'फ० सं० - १५०' पर दिये गये हैं। अक्षरों के नीचे उनके उच्चारण भी दिये गये हैं। इसको सीधी ओर से पढ़ा जायेगा। हिन्दी लिप्यन्तरण : (बाई ओर से)।

'अरन ज पॉल त बाँल बिन अहिरम मालिक (नरेश) जेबाल लेहरम अबह कशतह बाँल म' हिन्दी अनुवाद^३ (लेखक ने अंग्रेजी के अनुवाद से किया) "यह कब्र (समाधि) का पत्थर जेबाल के राजा अहिराम के पुत्र एता बाँल ने अपने पिता के लिये यहाँ लगवाया, जहाँ से वह स्वर्ग को गया"।

बिबलास के वर्ण तथा उनके रूप भेद : २००० से १५०० ई० पू० के मध्य १९२३ से अब तक जितने अभिलेख प्राप्त हुये हैं वे सब प्रकाशित^४ हो चुके हैं। यह वर्णमाला^५ 'फ० सं० - १४७' जिसमें अनेक रूप - भेद दिये गये हैं पन्द्रहवीं श० के अभिलेख से लिये गये हैं। इस अभिलेख को धोरमे ने पढ़ कर इसका

1. Diringer, D., 'Problems of the Present Day on the Origin of the Phoenician Alphabet' - Journal of World History IV/1 (1957), p. - 40.

2. Lidzbarski : Oriental Literary Zeitung No. 28 (1925), p. - 129.

3. Torrey, A. : Journal of American Oriental Society - No. 45 (1925), p. - 269.

Dussaud : Journal 'Syria' No. V. (1924), P. - 135.

"This Sarcophagus (was) made (by) Eth. Baal, son of Aḥiram, king of Gebal, for Aḥiram his father, here did he lay him down for eternity.....".

4. 'Byblia Grammata' (Beirut - 1945), p. - 78 पर प्रकाशित हुए।

5. वर्णमाला तथा रूप भेद धोरमे द्वारा तैयार किये गये।

बिबलास का एक लघु अभिलेख



फलक संख्या - १४८

लिप्यंतरण, तथा अनुवाद भी किया जो एक पाक्षिक^१ में इनाम्द द्वारा प्रकाशित हुआ। यह अभिलेख 'क० सं० - १४८' पर दिया गया है। इसका अंग्रेजी भाषा का अनुवाद येनसेन की पुस्तक^२ से लिया गया है। उसका हिन्दी अनुवाद^३ निम्नलिखित है :

'लेल' ने कहा 'कासे की (कलाकृति) टोपेथ (मन्दिर का पिछला कक्ष) में मैंने बनाई है तथा सोह - लेखनी से (उस पर) उत्कीर्ण किया है'।

यह लिपि अन्तर्बर्तीय काल की मानी जाती है जिस काल में फ़िनीशिया लिपि का निर्माण हो रहा था। ई० पू० की चौदहवीं श० के अंत में फ़िनीशिया की लिपि में पर्याप्त परिपक्वता आ चुकी थी। इसमें केवल २० अक्षर^४ हैं। इसके पढ़ने की दिशा सीधी ओर से आरम्भ होती है।

1. 'Syria' XXV (1948), p. - 201.

2. 'Syn, Symbol and Script' (1970), p. - 275.

3. लेखक ने स्वयं हिन्दी - अनुवाद किया है।

English Version : 'Thus says 'Lel', 'The Bronze of The Topheth (temple ante-room) did I fashion; with iron stylus I engraved'.

4. Sobelman, H. : 'The Proto - Byblian Inscriptions - A Fresh Approach' - Journal of Semitic Studies - VI (1961), p. - 22०.

फिनीशियन लिपि के कालानुसार रूप

एवनि	प्राचीन २३वीं श०	मोआबकी ९वीं श०	मध्य कालीन २३वीं श०	एवनि	प्राचीन २३वीं श०	मोआबकी ९वीं श०	मध्य कालीन २३वीं श०
अ	K	✱	K	अ	l	l	h h
ब	9	∇	9	म	६	५	५ ५ ५
ग	^	^	^	न	५	५	५ ५ ५
द	△	△	△ △	स	≡	≡	६ ६
ह	≡	≡	≡	ऑ	o	o	o o
व	Y	Y	4 7 T 4	प	7	1	7
ज	I	I	Z H	स		W	W H I
ख	H	H	H 7	क		P	५ ५
त	⊕	⊗	⊕ ①	र	∇	∇	9 9 4
ज	3	7	7 7 7	श	W	W	W 7 4
क	v	7	4 4 7	त	+ x	x	r h p

मोआब की लिपि : मोआब और एमोन, लूत (Lot) के दो पुत्र थे जिनके नाम पर दो नगर बसाये गये जो बाद में नगर - राज्य बन गये । ई० पू० की नवीं श० के असीरिया तथा मोआब के अभिलेखों द्वारा यह दोनों नगर इतिहास में दृष्टिगोचर हुए । मोआब का शिलालेख डिवान से १८६८ में प्राप्त हुआ जो अब फ्रांस के प्रसिद्ध लूवे संग्रहालय (Louvre Museum) में रखा है । इस शिला पर मोआब के राजा मेशा की इस्रायल के विरुद्ध सैनिक सफलतायें अंकित हैं । इस्रायल की दस जातियों के राजा उमरी ने मोआब के कई उपनगर अपने अधीन कर लिये थे । तत्पश्चात् मेशा ने प्रतिकार के रूप में इस्रायल के एक छोटे नगर एतराय पर अपना अधिकार कर लिया । मेशा ने अपने देश के मुख्य - देवता केमोश को प्रसन्न करने के लिये पराजित नगर निवासियों की बलि चढ़ाई और आक्रमण करके अपनी सारी पराजित भूमि वापस ले ली । मोआब के शिलालेख की तिथि ८४२ ई० पू० निर्धारित की गई है । इसकी भाषा हेब्रू है तथा लिपि फ़िनीशियन (उत्तरी सेमिटिक) है । इसमें ३४ पंक्तियाँ अंकित हैं जिसमें से 'फ० सं० - १५० क' पर केवल ऊपर की पंक्ति उदाहरणार्थ दी गई है । इसकी वर्णमाला भी 'फ० सं० - १४९' के दूसरे कालम में दे दी गई है जो एक पुस्तक^१ से ली गई है । शिलालेख का अनुवाद^२ लिड्ज़ बासंकी ने १८९८ में किया ।

हिन्दी लिप्यन्तरण : "अनक मेशा बिन केमोशमलिक मालिक मोआब" ।

शब्दार्थ : अनक = मैं हूँ ; बिन = सुत ; केमोशमलिक = केमोश भगवान् ।

हिन्दी अनुवाद : 'मैं मोआब का राजा, केमोश भगवान का पुत्र, मेशा हूँ ।'

मध्य काल की फ़िनीशियन लिपि :—'फ० सं० - १४९' के तीसरे कालम में ई० पू० की पाँचवीं श० के वर्ण दिये गये हैं । यह वर्ण फ़िनीशिया के एक नगर - राज्य सोडान के राजा ईशुमुनाज़ार (ई० पू० की चौथी श०) के समाधि - शिलालेख से लिये गये हैं । इसी प्रकार के वर्ण अबूसिम्बल की विशाल मूर्तियों की जाँघों पर, फ़िनीशिया के भूतक सैनिकों द्वारा, मिस्र के फ़ैरो सामर्थक द्वितीय (Psamthek II - 650 - 595 B. C.) के राज्यकाल में उत्कीर्ण किये गये थे । जाँघों पर अंकित अभिलेख के कुछ शब्द एक प्रतिदर्श के रूप में फ० सं० १५० ख पर दिये गये हैं, यह अभिलेख एक पुस्तक^३ से लिया गया है जिसका अनुवाद दुसाउद (Dussaud) ने १८७८ में किया :—

हिन्दी अनुवाद : (लेखक द्वारा)

'केशज सूत अबद पाम एक सर्वेक्षक था' ।

प्युनिक लिपि : अभी तक पाँच प्रकार की फ़िनीशियन लिपि दी जा चुकी है । इसका छठा तथा अन्तिम रूप, प्युनिक (Punic) लिपि से सम्बोधित किया जाता है । इसका परिवर्तित रूप कार्थेज के उत्खनन से सैकड़ों अभिलेखों व सिक्कों में तथा १८४५ में माल्टा, सार्डीनिया व मार्सेइ से प्राप्त अभिलेखों में मिलता है । इस शाखा का विकास कार्थेज^४ (कार्थेदशत) में हुआ । आज इस नगर के खण्डहर टियूनिस - टियूनिशिया की राजधानी से लगभग ३५ किलोमीटर उत्तर की ओर स्थित हैं । यह भू - मध्य - सागर के दक्षिणी तट पर एक मुख्य व्यापारिक केन्द्र था ।

1. Lidzbarski : Handbuch der nordsemitique Epigraphia (1902), p. - 175.

2. Ibid : p. - 103.

'I am Mesha, king of Moab, son of Kameshmalik...'

3. Corpus Inscriptionum Semiticarum (Paris 1881), p. - 301.

4. लेखक ने अपनी साइकिल - यात्रा में इस स्थान को देखा है तथा इस संस्कृति के अवशेषों का तथा लिपि का, वहाँ के संग्रहालय द्वारा, अध्ययन किया है ।

अहिराम का अभिलेख -- तेरहवीं श०

५९.८०९. + ८०८. I. ५९८

न ब लऑब त लऑप ज न र अ

३९८.६९८. ८९३. V८६. ६९८

ह बअ मरह ल लब ज कलम मरह अ

... ६८०९. ३ + W V

म ल ऑ ब ह त श क

फलक संख्या - १५०

मेशा का अभिलेख -- नवीं श०



फलक संख्या - १५० क

मध्यकालीन फ़िनीशियन का प्रतिदर्श



फलक संख्या - १५० ख

इस नगर की आधार - शिला फ़िनीशिया के एक नगर - राज्य टायर के राजा मट्टन प्रथम की पुत्री एलिसा द्वारा ८१४ ई० पू० में रखी गयी थी। राजकुमारी एलिसा अपने भाई पिगमैलियन के अत्याचारों से दुःखित होकर अपने कुछ सहयोगियों के साथ अफ्रीका के उत्तरी भू भाग में आकर बस गई और एक नई संस्कृति एवं एक नये राज्य की स्थापना कर दी गई। ५५० ई० पू० में यह राज्य इतना शक्तिशाली हो गया कि इसने सिसली पर आक्रमण कर दिया तथा ५३६ में ग्रीस की सेना को पराजित कर भू - मध्य - सागर के तटवर्तीय राज्यों पर अपना एकाधिकार जमा लिया।

रोमन राज्य से तीन बार युद्ध होने के पश्चात् इसको परास्त होना पड़ा। १२२ ई० पू० में इसका विजेताओं द्वारा पुनरुत्थान हुआ परन्तु ६६८ ई० में मुस्लिम आक्रमणों ने इसको सदा के लिए लोप कर दिया।

प्युनिक लिपि की वर्णमाला तथा एक अभिलेख के कुछ शब्द 'फ० सं० - १५१' पर दिये गये हैं। इस अभिलेख का अनुवाद लिङ्गवार्सकी ने किया है। इसको चैबोट (Chabot) ने प्रकाशित^१ किया। इसका हिन्दी - अनुवाद 'फ० सं० - १५१' पर ही दिया गया है जो लेखक ने अंग्रेजी अनुवाद^२ से किया है। इस अभिलेख की दिशा सीधी ओर से आरम्भ होती है।

कनआन की लिपि

पैलेस्टाइन (फ़िलिस्तीन) व फ़िनीशिया के निकट की सारी भूमि का नाम कनआन^३ था। इस देश को दूध मधु का देश कहा गया है। यहाँ हेब्रू, सेमिटिक व अरामियन जातियाँ आकर बस गई थीं। इस देश का न कोई राज्य था और न राजधानी। भिन्न भिन्न नगर तथा भिन्न भिन्न राज्य यहाँ बने और बिगड़े।

1. Chabot, J. B. : Punica XXV and 'Inscriptions punicolibyques'; Journal Asiatic (March/April 1918), p. - 259.

2. Ibid : p. - 262.

'To goddess and mother - goddess, who is the mistress of the most sacred ritualistic Codes (offered) from the son of Baalhana.....'

3. फ़िलिस्तीन को ही वाश्बिल में कनआन कहा जाता था।

प्युनिक लिपि के कागज़ पर लिखे लेख से

अक्षर	अक्षर	अक्षर	अक्षर		
अ	𑀓 𑀔 𑀕 𑀖 𑀗	ख	𑀘 𑀙 𑀚 𑀛 𑀜	आ	𑀝 𑀞
ब	𑀟 𑀠 𑀡 𑀢	ट	𑀣 𑀤 𑀥 𑀦	प	𑀧 𑀨
ग/ज	𑀩 𑀪 𑀫	ज	𑀬 𑀭 𑀮 𑀯 𑀰	स	𑀱 𑀲 𑀳 𑀴 𑀵
द	𑀶 𑀷 𑀸	क	𑀹 𑀺 𑀻 𑀼	क	𑀽 𑀾 𑀿
ह	𑁀 𑁁 𑁂 𑁃	ल	𑁄 𑁅 𑁆 𑁇 𑁈	र	𑁉 𑁊 𑁋 𑁌
व	𑁍 𑁎 𑁏 𑁐	म	𑁑 𑁒 𑁓 𑁔 𑁕	श	𑁖 𑁗 𑁘 𑁙
ज़	𑁚 𑁛 𑁜 𑁝	न	𑁞 𑁟 𑁠 𑁡 𑁢	त	𑁣 𑁤 𑁥 𑁦 𑁧

𐤀𐤁𐤂𐤃𐤄𐤅𐤆𐤇𐤈𐤉𐤊𐤋𐤌𐤍𐤎𐤏𐤐𐤑𐤒𐤓𐤔𐤕𐤖𐤗𐤘𐤙𐤚𐤛𐤜𐤝𐤞𐤟𐤠𐤡𐤢𐤣𐤤𐤥𐤦𐤧𐤨𐤩𐤪𐤫𐤬𐤭𐤮𐤯𐤰𐤱𐤲𐤳𐤴𐤵𐤶𐤷𐤸𐤹𐤺𐤻𐤼𐤽𐤾𐤿𐥀𐥁𐥂𐥃𐥄𐥅𐥆𐥇𐥈𐥉𐥊𐥋𐥌𐥍𐥎𐥏𐥐𐥑𐥒𐥓𐥔𐥕𐥖𐥗𐥘𐥙𐥚𐥛𐥜𐥝𐥞𐥟𐥠𐥡𐥢𐥣𐥤𐥥𐥦𐥧𐥨𐥩𐥪𐥫𐥬𐥭𐥮𐥯𐥰𐥱𐥲𐥳𐥴𐥵𐥶𐥷𐥸𐥹𐥺𐥻𐥼𐥽𐥾𐥿𐦀𐦁𐦂𐦃𐦄𐦅𐦆𐦇𐦈𐦉𐦊𐦋𐦌𐦍𐦎𐦏𐦐𐦑𐦒𐦓𐦔𐦕𐦖𐦗𐦘𐦙𐦚𐦛𐦜𐦝𐦞𐦟𐦠𐦡𐦢𐦣𐦤𐦥𐦦𐦧𐦨𐦩𐦪𐦫𐦬𐦭𐦮𐦯𐦰𐦱𐦲𐦳𐦴𐦵𐦶𐦷𐦸𐦹𐦺𐦻𐦼𐦽𐦾𐦿𐧀𐧁𐧂𐧃𐧄𐧅𐧆𐧇𐧈𐧉𐧊𐧋𐧌𐧍𐧎𐧏𐧐𐧑𐧒𐧓𐧔𐧕𐧖𐧗𐧘𐧙𐧚𐧛𐧜𐧝𐧞𐧟𐧠𐧡𐧢𐧣𐧤𐧥𐧦𐧧𐧨𐧩𐧪𐧫𐧬𐧭𐧮𐧯𐧰𐧱𐧲𐧳𐧴𐧵𐧶𐧷𐧸𐧹𐧺𐧻𐧼𐧽𐧾𐧿𐨀𐨁𐨂𐨃𐨄𐨅𐨆𐨇𐨈𐨉𐨊𐨋𐨌𐨍𐨎𐨏𐨐𐨑𐨒𐨓𐨔𐨕𐨖𐨗𐨘𐨙𐨚𐨛𐨜𐨝𐨞𐨟𐨠𐨡𐨢𐨣𐨤𐨥𐨦𐨧𐨨𐨩𐨪𐨫𐨬𐨭𐨮𐨯𐨰𐨱𐨲𐨳𐨴𐨵𐨶𐨷𐨹𐨺𐨸𐨻𐨼𐨽𐨾𐨿𐩀𐩁𐩂𐩃𐩄𐩅𐩆𐩇𐩈𐩉𐩊𐩋𐩌𐩍𐩎𐩏𐩐𐩑𐩒𐩓𐩔𐩕𐩖𐩗𐩘𐩙𐩚𐩛𐩜𐩝𐩞𐩟𐩠𐩡𐩢𐩣𐩤𐩥𐩦𐩧𐩨𐩩𐩪𐩫𐩬𐩭𐩮𐩯𐩰𐩱𐩲𐩳𐩴𐩵𐩶𐩷𐩸𐩹𐩺𐩻𐩼𐩽𐩾𐩿𐪀𐪁𐪂𐪃𐪄𐪅𐪆𐪇𐪈𐪉𐪊𐪋𐪌𐪍𐪎𐪏𐪐𐪑𐪒𐪓𐪔𐪕𐪖𐪗𐪘𐪙𐪚𐪛𐪜𐪝𐪞𐪟𐪠𐪡𐪢𐪣𐪤𐪥𐪦𐪧𐪨𐪩𐪪𐪫𐪬𐪭𐪮𐪯𐪰𐪱𐪲𐪳𐪴𐪵𐪶𐪷𐪸𐪹𐪺𐪻𐪼𐪽𐪾𐪿𐫀𐫁𐫂𐫃𐫄𐫅𐫆𐫇𐫈𐫉𐫊𐫋𐫌𐫍𐫎𐫏𐫐𐫑𐫒𐫓𐫔𐫕𐫖𐫗𐫘𐫙𐫚𐫛𐫜𐫝𐫞𐫟𐫠𐫡𐫢𐫣𐫤𐫦𐫥𐫧𐫨𐫩𐫪𐫫𐫬𐫭𐫮𐫯𐫰𐫱𐫲𐫳𐫴𐫵𐫶𐫷𐫸𐫹𐫺𐫻𐫼𐫽𐫾𐫿𐬀𐬁𐬂𐬃𐬄𐬅𐬆𐬇𐬈𐬉𐬊𐬋𐬌𐬍𐬎𐬏𐬐𐬑𐬒𐬓𐬔𐬕𐬖𐬗𐬘𐬙𐬚𐬛𐬜𐬝𐬞𐬟𐬠𐬡𐬢𐬣𐬤𐬥𐬦𐬧𐬨𐬩𐬪𐬫𐬬𐬭𐬮𐬯𐬰𐬱𐬲𐬳𐬴𐬵𐬶𐬷𐬸𐬹𐬺𐬻𐬼𐬽𐬾𐬿𐭀𐭁𐭂𐭃𐭄𐭅𐭆𐭇𐭈𐭉𐭊𐭋𐭌𐭍𐭎𐭏𐭐𐭑𐭒𐭓𐭔𐭕𐭖𐭗𐭘𐭙𐭚𐭛𐭜𐭝𐭞𐭟𐭠𐭡𐭢𐭣𐭤𐭥𐭦𐭧𐭨𐭩𐭪𐭫𐭬𐭭𐭮𐭯𐭰𐭱𐭲𐭳𐭴𐭵𐭶𐭷𐭸𐭹𐭺𐭻𐭼𐭽𐭾𐭿𐮀𐮁𐮂𐮃𐮄𐮅𐮆𐮇𐮈𐮉𐮊𐮋𐮌𐮍𐮎𐮏𐮐𐮑𐮒𐮓𐮔𐮕𐮖𐮗𐮘𐮙𐮚𐮛𐮜𐮝𐮞𐮟𐮠𐮡𐮢𐮣𐮤𐮥𐮦𐮧𐮨𐮩𐮪𐮫𐮬𐮭𐮮𐮯𐮰𐮱𐮲𐮳𐮴𐮵𐮶𐮷𐮸𐮹𐮺𐮻𐮼𐮽𐮾𐮿𐯀𐯁𐯂𐯃𐯄𐯅𐯆𐯇𐯈𐯉𐯊𐯋𐯌𐯍𐯎𐯏𐯐𐯑𐯒𐯓𐯔𐯕𐯖𐯗𐯘𐯙𐯚𐯛𐯜𐯝𐯞𐯟𐯠𐯡𐯢𐯣𐯤𐯥𐯦𐯧𐯨𐯩𐯪𐯫𐯬𐯭𐯮𐯯𐯰𐯱𐯲𐯳𐯴𐯵𐯶𐯷𐯸𐯹𐯺𐯻𐯼𐯽𐯾𐯿𐰀𐰁𐰂𐰃𐰄𐰅𐰆𐰇𐰈𐰉𐰊𐰋𐰌𐰍𐰎𐰏𐰐𐰑𐰒𐰓𐰔𐰕𐰖𐰗𐰘𐰙𐰚𐰛𐰜𐰝𐰞𐰟𐰠𐰡𐰢𐰣𐰤𐰥𐰦𐰧𐰨𐰩𐰪𐰫𐰬𐰭𐰮𐰯𐰰𐰱𐰲𐰳𐰴𐰵𐰶𐰷𐰸𐰹𐰺𐰻𐰼𐰽𐰾𐰿𐱀𐱁𐱂𐱃𐱄𐱅𐱆𐱇𐱈𐱉𐱊𐱋𐱌𐱍𐱎𐱏𐱐𐱑𐱒𐱓𐱔𐱕𐱖𐱗𐱘𐱙𐱚𐱛𐱜𐱝𐱞𐱟𐱠𐱡𐱢𐱣𐱤𐱥𐱦𐱧𐱨𐱩𐱪𐱫𐱬𐱭𐱮𐱯𐱰𐱱𐱲𐱳𐱴𐱵𐱶𐱷𐱸𐱹𐱺𐱻𐱼𐱽𐱾𐱿𐲀𐲁𐲂𐲃𐲄𐲅𐲆𐲇𐲈𐲉𐲊𐲋𐲌𐲍𐲎𐲏𐲐𐲑𐲒𐲓𐲔𐲕𐲖𐲗𐲘𐲙𐲚𐲛𐲜𐲝𐲞𐲟𐲠𐲡𐲢𐲣𐲤𐲥𐲦𐲧𐲨𐲩𐲪𐲫𐲬𐲭𐲮𐲯𐲰𐲱𐲲𐲳𐲴𐲵𐲶𐲷𐲸𐲹𐲺𐲻𐲼𐲽𐲾𐲿𐳀𐳁𐳂𐳃𐳄𐳅𐳆𐳇𐳈𐳉𐳊𐳋𐳌𐳍𐳎𐳏𐳐𐳑𐳒𐳓𐳔𐳕𐳖𐳗𐳘𐳙𐳚𐳛𐳜𐳝𐳞𐳟𐳠𐳡𐳢𐳣𐳤𐳥𐳦𐳧𐳨𐳩𐳪𐳫𐳬𐳭𐳮𐳯𐳰𐳱𐳲𐳳𐳴𐳵𐳶𐳷𐳸𐳹𐳺𐳻𐳼𐳽𐳾𐳿𐴀𐴁𐴂𐴃𐴄𐴅𐴆𐴇𐴈𐴉𐴊𐴋𐴌𐴍𐴎𐴏𐴐𐴑𐴒𐴓𐴔𐴕𐴖𐴗𐴘𐴙𐴚𐴛𐴜𐴝𐴞𐴟𐴠𐴡𐴢𐴣𐴤𐴥𐴦𐴧𐴨𐴩𐴪𐴫𐴬𐴭𐴮𐴯𐴰𐴱𐴲𐴳𐴴𐴵𐴶𐴷𐴸𐴹𐴺𐴻𐴼𐴽𐴾𐴿𐵀𐵁𐵂𐵃𐵄𐵅𐵆𐵇𐵈𐵉𐵊𐵋𐵌𐵍𐵎𐵏𐵐𐵑𐵒𐵓𐵔𐵕𐵖𐵗𐵘𐵙𐵚𐵛𐵜𐵝𐵞𐵟𐵠𐵡𐵢𐵣𐵤𐵥𐵦𐵧𐵨𐵩𐵪𐵫𐵬𐵭𐵮𐵯𐵰𐵱𐵲𐵳𐵴𐵵𐵶𐵷𐵸𐵹𐵺𐵻𐵼𐵽𐵾𐵿𐶀𐶁𐶂𐶃𐶄𐶅𐶆𐶇𐶈𐶉𐶊𐶋𐶌𐶍𐶎𐶏𐶐𐶑𐶒𐶓𐶔𐶕𐶖𐶗𐶘𐶙𐶚𐶛𐶜𐶝𐶞𐶟𐶠𐶡𐶢𐶣𐶤𐶥𐶦𐶧𐶨𐶩𐶪𐶫𐶬𐶭𐶮𐶯𐶰𐶱𐶲𐶳𐶴𐶵𐶶𐶷𐶸𐶹𐶺𐶻𐶼𐶽𐶾𐶿𐷀𐷁𐷂𐷃𐷄𐷅𐷆𐷇𐷈𐷉𐷊𐷋𐷌𐷍𐷎𐷏𐷐𐷑𐷒𐷓𐷔𐷕𐷖𐷗𐷘𐷙𐷚𐷛𐷜𐷝𐷞𐷟𐷠𐷡𐷢𐷣𐷤𐷥𐷦𐷧𐷨𐷩𐷪𐷫𐷬𐷭𐷮𐷯𐷰𐷱𐷲𐷳𐷴𐷵𐷶𐷷𐷸𐷹𐷺𐷻𐷼𐷽𐷾𐷿𐸀𐸁𐸂𐸃𐸄𐸅𐸆𐸇𐸈𐸉𐸊𐸋𐸌𐸍𐸎𐸏𐸐𐸑𐸒𐸓𐸔𐸕𐸖𐸗𐸘𐸙𐸚𐸛𐸜𐸝𐸞𐸟𐸠𐸡𐸢𐸣𐸤𐸥𐸦𐸧𐸨𐸩𐸪𐸫𐸬𐸭𐸮𐸯𐸰𐸱𐸲𐸳𐸴𐸵𐸶𐸷𐸸𐸹𐸺𐸻𐸼𐸽𐸾𐸿𐹀𐹁𐹂𐹃𐹄𐹅𐹆𐹇𐹈𐹉𐹊𐹋𐹌𐹍𐹎𐹏𐹐𐹑𐹒𐹓𐹔𐹕𐹖𐹗𐹘𐹙𐹚𐹛𐹜𐹝𐹞𐹟𐹠𐹡𐹢𐹣𐹤𐹥𐹦𐹧𐹨𐹩𐹪𐹫𐹬𐹭𐹮𐹯𐹰𐹱𐹲𐹳𐹴𐹵𐹶𐹷𐹸𐹹𐹺𐹻𐹼𐹽𐹾𐹿𐺀𐺁𐺂𐺃𐺄𐺅𐺆𐺇𐺈𐺉𐺊𐺋𐺌𐺍𐺎𐺏𐺐𐺑𐺒𐺓𐺔𐺕𐺖𐺗𐺘𐺙𐺚𐺛𐺜𐺝𐺞𐺟𐺠𐺡𐺢𐺣𐺤𐺥𐺦𐺧𐺨𐺩𐺪𐺫𐺬𐺭𐺮𐺯𐺰𐺱𐺲𐺳𐺴𐺵𐺶𐺷𐺸𐺹𐺺𐺻𐺼𐺽𐺾𐺿𐻀𐻁𐻂𐻃𐻄𐻅𐻆𐻇𐻈𐻉𐻊𐻋𐻌𐻍𐻎𐻏𐻐𐻑𐻒𐻓𐻔𐻕𐻖𐻗𐻘𐻙𐻚𐻛𐻜𐻝𐻞𐻟𐻠𐻡𐻢𐻣𐻤𐻥𐻦𐻧𐻨𐻩𐻪𐻫𐻬𐻭𐻮𐻯𐻰𐻱𐻲𐻳𐻴𐻵𐻶𐻷𐻸𐻹𐻺𐻻𐻼𐻽𐻾𐻿𐼀𐼁𐼂𐼃𐼄𐼅𐼆𐼇𐼈𐼉𐼊𐼋𐼌𐼍𐼎𐼏𐼐𐼑𐼒𐼓𐼔𐼕𐼖𐼗𐼘𐼙𐼚𐼛𐼜𐼝𐼞𐼟𐼠𐼡𐼢𐼣𐼤𐼥𐼦𐼧𐼨𐼩𐼪𐼫𐼬𐼭𐼮𐼯𐼰𐼱𐼲𐼳𐼴𐼵𐼶𐼷𐼸𐼹𐼺𐼻𐼼𐼽𐼾𐼿𐽀𐽁𐽂𐽃𐽄𐽅𐽆𐽇𐽋𐽍𐽎𐽏𐽐𐽈𐽉𐽊𐽌𐽑𐽒𐽓𐽔𐽕𐽖𐽗𐽘𐽙𐽚𐽛𐽜𐽝𐽞𐽟𐽠𐽡𐽢𐽣𐽤𐽥𐽦𐽧𐽨𐽩𐽪𐽫𐽬𐽭𐽮𐽯𐽰𐽱𐽲𐽳𐽴𐽵𐽶𐽷𐽸𐽹𐽺𐽻𐽼𐽽𐽾𐽿𐾀𐾁𐾃𐾅𐾂𐾄𐾆𐾇𐾈𐾉𐾊𐾋𐾌𐾍𐾎𐾏𐾐𐾑𐾒𐾓𐾔𐾕𐾖𐾗𐾘𐾙𐾚𐾛𐾜𐾝𐾞𐾟𐾠𐾡𐾢𐾣𐾤𐾥𐾦𐾧𐾨𐾩𐾪𐾫𐾬𐾭𐾮𐾯𐾰𐾱𐾲𐾳𐾴𐾵𐾶𐾷𐾸𐾹𐾺𐾻𐾼𐾽𐾾𐾿𐿀𐿁𐿂𐿃𐿄𐿅𐿆𐿇𐿈𐿉𐿊𐿋𐿌𐿍𐿎𐿏𐿐𐿑𐿒𐿓𐿔𐿕𐿖𐿗𐿘𐿙𐿚𐿛𐿜𐿝𐿞𐿟𐿠𐿡𐿢𐿣𐿤𐿥𐿦𐿧𐿨𐿩𐿪𐿫𐿬𐿭𐿮𐿯𐿰𐿱𐿲𐿳𐿴𐿵𐿶𐿷𐿸𐿹𐿺𐿻𐿼𐿽𐿾𐿿𐀀𐀁𐀂𐀃𐀄𐀅𐀆𐀇𐀈𐀉𐀊𐀋𐀌𐀍𐀎𐀏𐀐𐀑𐀒𐀓𐀔𐀕𐀖𐀗𐀘𐀙𐀚𐀛𐀜𐀝𐀞𐀟𐀠𐀡𐀢𐀣𐀤𐀥𐀦𐀧𐀨𐀩𐀪𐀫𐀬𐀭𐀮𐀯𐀰𐀱𐀲𐀳𐀴𐀵𐀶𐀷𐀸𐀹𐀺𐀻𐀼𐀽𐀾𐀿𐁀𐁁𐁂𐁃𐁄𐁅𐁆𐁇𐁈𐁉𐁊𐁋𐁌𐁍𐁎𐁏𐁐𐁑𐁒𐁓𐁔𐁕𐁖𐁗𐁘𐁙𐁚𐁛𐁜𐁝𐁞𐁟𐁠𐁡𐁢𐁣𐁤𐁥𐁦𐁧𐁨𐁩𐁪𐁫𐁬𐁭𐁮𐁯𐁰𐁱𐁲𐁳𐁴𐁵𐁶𐁷𐁸𐁹𐁺𐁻𐁼𐁽𐁾𐁿𐂀𐂁𐂂𐂃𐂄𐂅𐂆𐂇𐂈𐂉𐂊𐂋𐂌𐂍𐂎𐂏𐂐𐂑𐂒𐂓𐂔𐂕𐂖𐂗𐂘𐂙𐂚𐂛𐂜𐂝𐂞𐂟𐂠𐂡𐂢𐂣𐂤𐂥𐂦𐂧𐂨𐂩𐂪𐂫𐂬𐂭𐂮𐂯𐂰𐂱𐂲𐂳𐂴𐂵𐂶𐂷𐂸𐂹𐂺𐂻𐂼𐂽𐂾𐂿𐃀𐃁𐃂𐃃𐃄𐃅𐃆𐃇𐃈𐃉𐃊𐃋𐃌𐃍𐃎𐃏𐃐𐃑𐃒𐃓𐃔𐃕𐃖𐃗𐃘𐃙𐃚𐃛𐃜𐃝𐃞𐃟𐃠𐃡𐃢𐃣𐃤𐃥𐃦𐃧𐃨𐃩𐃪𐃫𐃬𐃭𐃮𐃯𐃰𐃱𐃲𐃳𐃴𐃵𐃶𐃷𐃸𐃹𐃺𐃻𐃼𐃽𐃾𐃿𐄀𐄁𐄂𐄃𐄄𐄅𐄆𐄇𐄈𐄉𐄊𐄋𐄌𐄍𐄎𐄏𐄐𐄑𐄒𐄓𐄔𐄕𐄖𐄗𐄘𐄙𐄚𐄛𐄜𐄝𐄞𐄟𐄠𐄡𐄢𐄣𐄤𐄥𐄦𐄧𐄨𐄩𐄪𐄫𐄬𐄭𐄮𐄯𐄰𐄱𐄲𐄳𐄴𐄵𐄶𐄷𐄸𐄹𐄺𐄻𐄼𐄽𐄾𐄿𐅀𐅁𐅂𐅃𐅄𐅅𐅆𐅇𐅈𐅉𐅊𐅋𐅌𐅍𐅎𐅏𐅐𐅑𐅒𐅓𐅔𐅕𐅖𐅗𐅘𐅙𐅚𐅛𐅜𐅝𐅞𐅟𐅠𐅡𐅢𐅣𐅤𐅥𐅦𐅧𐅨𐅩𐅪𐅫𐅬𐅭𐅮𐅯𐅰𐅱𐅲𐅳𐅴𐅵𐅶𐅷𐅸𐅹𐅺𐅻𐅼𐅽𐅾𐅿𐆀𐆁𐆂𐆃𐆄𐆅𐆆𐆇𐆈𐆉𐆊𐆋𐆌𐆍𐆎𐆏𐆐𐆑𐆒𐆓𐆔𐆕𐆖𐆗𐆘𐆙𐆚𐆛𐆜𐆝𐆞𐆟𐆠𐆡𐆢𐆣𐆤𐆥𐆦𐆧𐆨𐆩𐆪𐆫𐆬𐆭𐆮𐆯𐆰𐆱𐆲𐆳𐆴𐆵𐆶𐆷𐆸𐆹𐆺𐆻𐆼𐆽𐆾𐆿𐇀𐇁𐇂𐇃𐇄𐇅𐇆𐇇𐇈𐇉𐇊𐇋𐇌𐇍𐇎𐇏𐇐𐇑𐇒𐇓𐇔𐇕𐇖𐇗𐇘𐇙𐇚𐇛𐇜𐇝𐇞𐇟𐇠𐇡𐇢𐇣𐇤𐇥𐇦𐇧𐇨𐇩𐇪𐇫𐇬𐇭𐇮𐇯𐇰𐇱𐇲𐇳𐇴𐇵𐇶𐇷𐇸𐇹𐇺𐇻𐇼𐇽𐇾𐇿𐈀𐈁𐈂𐈃𐈄𐈅𐈆𐈇𐈈𐈉𐈊𐈋𐈌𐈍𐈎𐈏𐈐𐈑𐈒𐈓𐈔𐈕𐈖𐈗𐈘𐈙𐈚𐈛𐈜𐈝𐈞𐈟𐈠𐈡𐈢𐈣𐈤𐈥𐈦𐈧𐈨𐈩𐈪𐈫𐈬𐈭𐈮𐈯𐈰𐈱𐈲𐈳𐈴𐈵𐈶𐈷𐈸𐈹𐈺𐈻𐈼𐈽𐈾𐈿𐉀𐉁𐉂𐉃𐉄𐉅𐉆𐉇𐉈𐉉𐉊𐉋𐉌𐉍𐉎𐉏𐉐𐉑𐉒𐉓𐉔𐉕𐉖𐉗𐉘𐉙𐉚𐉛𐉜𐉝𐉞𐉟𐉠𐉡𐉢𐉣𐉤𐉥𐉦𐉧𐉨𐉩𐉪𐉫𐉬𐉭𐉮𐉯𐉰𐉱𐉲𐉳𐉴𐉵𐉶𐉷𐉸𐉹𐉺𐉻𐉼𐉽𐉾𐉿𐊀𐊁𐊂𐊃𐊄𐊅𐊆𐊇𐊈𐊉𐊊𐊋𐊌𐊍𐊎𐊏𐊐𐊑𐊒𐊓𐊔𐊕𐊖𐊗𐊘𐊙𐊚𐊛𐊜𐊝𐊞𐊟𐊠𐊡𐊢𐊣𐊤𐊥𐊦𐊧𐊨𐊩𐊪𐊫𐊬𐊭𐊮𐊯𐊰𐊱𐊲𐊳𐊴𐊵𐊶𐊷𐊸𐊹𐊺𐊻𐊼𐊽𐊾𐊿𐋀𐋁𐋂𐋃𐋄𐋅𐋆𐋇𐋈𐋉𐋊𐋋𐋌𐋍𐋎𐋏𐋐𐋑𐋒𐋓𐋔𐋕𐋖𐋗𐋘𐋙𐋚𐋛𐋜𐋝𐋞𐋟𐋠𐋡𐋢𐋣𐋤𐋥𐋦𐋧𐋨𐋩𐋪𐋫𐋬𐋭𐋮𐋯𐋰𐋱𐋲𐋳𐋴𐋵𐋶𐋷𐋸𐋹𐋺𐋻𐋼𐋽𐋾𐋿𐌀𐌁𐌂𐌃𐌄𐌅𐌆𐌇𐌈𐌉𐌊𐌋𐌌𐌍𐌎𐌏𐌐𐌑𐌒𐌓𐌔𐌕𐌖𐌗𐌘𐌙𐌚𐌛𐌜𐌝𐌞𐌟𐌠𐌡𐌢𐌣𐌤𐌥𐌦𐌧𐌨𐌩𐌪𐌫𐌬𐌭𐌮𐌯𐌰𐌱𐌲𐌳𐌴𐌵𐌶𐌷𐌸𐌹𐌺𐌻𐌼𐌽𐌾𐌿𐍀𐍁𐍂𐍃𐍄𐍅𐍆𐍇𐍈𐍉𐍊𐍋𐍌𐍍𐍎𐍏𐍐𐍑𐍒𐍓𐍔𐍕𐍖𐍗𐍘𐍙𐍚𐍛𐍜𐍝𐍞𐍟𐍠𐍡𐍢𐍣𐍤𐍥𐍦𐍧𐍨𐍩𐍪𐍫𐍬𐍭𐍮𐍯𐍰𐍱𐍲𐍳𐍴𐍵𐍶𐍷𐍸𐍹𐍺𐍻𐍼𐍽𐍾𐍿𐎀𐎁𐎂𐎃𐎄𐎅𐎆𐎇𐎈𐎉𐎊𐎋𐎌𐎍𐎎𐎏𐎐𐎑𐎒𐎓𐎔𐎕𐎖𐎗𐎘𐎙𐎚𐎛𐎜𐎝𐎞𐎟𐎠𐎡𐎢𐎣𐎤𐎥𐎦𐎧𐎨𐎩𐎪𐎫𐎬𐎭𐎮𐎯𐎰𐎱𐎲𐎳𐎴𐎵𐎶𐎷𐎸𐎹𐎺𐎻𐎼𐎽𐎾𐎿𐏀𐏁𐏂𐏃𐏄𐏅𐏆𐏇𐏈𐏉𐏊𐏋𐏌𐏍𐏎𐏏𐏐𐏑𐏒𐏓𐏔𐏕𐏖𐏗𐏘𐏙𐏚𐏛𐏜𐏝𐏞𐏟𐏠𐏡𐏢𐏣𐏤𐏥𐏦𐏧𐏨𐏩𐏪𐏫𐏬𐏭𐏮𐏯𐏰𐏱𐏲𐏳𐏴𐏵𐏶𐏷𐏸𐏹𐏺𐏻𐏼𐏽𐏾𐏿𐐀𐐁𐐂𐐃𐐄𐐅𐐆𐐇𐐈𐐉𐐊𐐋𐐌𐐍𐐎𐐏𐐐𐐑𐐒𐐓𐐔𐐕𐐖𐐗𐐘𐐙𐐚𐐛𐐜𐐝𐐞𐐟𐐠𐐡𐐢𐐣𐐤𐐥𐐦𐐧𐐨𐐩𐐪𐐫𐐬𐐭𐐮𐐯𐐰

Scanned by CamScanner

उत्तरी सेमिटिक भाषा के दो भाग हो गये — एक कनआनी दूसरी अरामी । कनआनी से पूर्व हेब्रू, फ़िनीशिया तथा मोआब की भाषायें बनीं तथा अरामी स्थिर रही ।

यहाँ का प्राचीनतम अभिलेख¹ गीज़र से प्राप्त हुआ जिस को गीज़र - प्लेट अथवा कृपक - पश्चात्त² के नामों से सम्बोधित किया जाता है । यह १९०८ में मैकालिस्टर (Macalister) को गीज़र में मिला था जिसका काल ई० पू० की नवीं श० निर्धारित किया गया ।

अन्य अभिलेख प्राचीन समारिया के उत्खनित — सामग्री से, जो ६३ मिट्टी के बर्तनों के टुकड़ों पर एक प्रकार की स्याही से अंकित थे, प्राप्त हुए । यह उत्खनन १९०८ से १९१० तक किया गया । इन टुकड़ों पर समारिया — नरेश अहाब के बीजक (Bills) मिलते हैं जब वह सेडार की सुन्दर लकड़ी मिस्र को भेजा करता था । उसके बदले में उसको मिस्र का कागज प्राप्त होता था ।

‘फ० सं० — १५२’ पर अक्षरों को वर्णमाला तथा बर्तनों के एक टुकड़े पर का अभिलेख³ दिया गया है ।

युगारिट (आधुनिक रासशमरा)

इतिहास : युगारिट एक प्राचीन नगर राज्य था जिसका आधुनिक नाम रासशमरा है । यह भूमध्यसागर के पूर्वी किनारे पर उत्तर में स्थित है ‘दि० फ० सं० — १३३’ । इस नगर का सम्पर्क ई० पू० उन्नतवीं श० में क्रीट से रहा परन्तु चौदहवीं श० में माइसीनिया ने न केवल क्रीट को नष्ट किया अपितु युगारिट पर भी अपना अधिकार कर लिया । उस समय युगारिट राज्य का निकमद शासक था जो हित्ती सम्राट् शुप्प लूलीमाश को अधीनता में राज्य करता था । शुप्प लूलीमाश ई० पू० की चौदहवीं श० में हित्ती साम्राज्य का शासक था । ई० पू० की बारहवीं श० में समुद्री डाकुओं ने इसको नष्ट — भ्रष्ट करके इसके भावी इतिहास को सदैव के लिए अन्धकारमय बना दिया । क्या मालूम था कि एक दिन सारा संसार इसको पुनः मान्यता प्रदान करेगा ।

लिपि तथा रहस्योद्घाटन : २५ अप्रैल १९२८ को सीरिया के एक कृपक को, जो अपने खेत में हल चला रहा था, एक पत्थर की पटिया मिली । उसका खेत भूमध्यसागर के किनारे पर था । इस किनारे का नाम मिनेत — एल — वैदा⁴ था । १९२९ के मई माह में फ्रांस के एक निवासी क्लाड एफ० ए० शेफ़र (Claude F. A. Schaeffer) ने अपने एक सहयोगी जार्ज चेनेत (Georges Chenet) के साथ उसी खेत के एक ७० फ़ुट ऊँचे टीले पर उत्खनन कार्य आरम्भ कर दिया । इसके फलस्वरूप अनेक चिकनी मिट्टी की पाटियाँ प्राप्त हुईं । एक बड़ा कमरा भी निकला जो तीन स्तम्भों द्वारा विभाजित था । यह स्थान स्थानीय शासक का पुस्तकालय था । कुछ पाटियों पर अक्कादियन लिपि अंकित थी तथा अन्य ४००० पाटियों पर युगारिट की कीलाकार लिपि थी । कुछ पाटियाँ द्विभाषिक भी थीं जिन पर युगारिट तथा मिस्र की लिपियाँ अंकित थीं । शेफ़र को १९४९ में एक पाटिया ऐसी भी प्राप्त हुई जिस पर एक वर्णमाला भी

1. Dussaud : "Syria". Vol. VI, page - 328 (1925).

2. Lidzbarski : 'An Old Hebrew Calendar - Inscription From Gezer' Quarterly State - ment (1909), p. - 26.

3. Noth, M. : Die Welt des Alten Testaments (1940), p. - 153.

4. यूनानी इसको 'White harbour' कहते थे ।

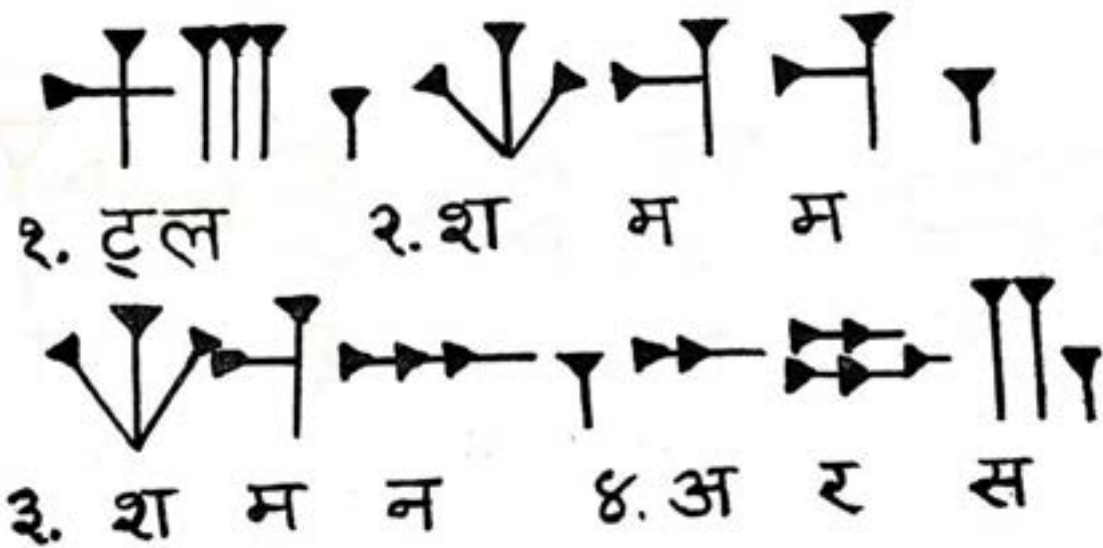
5. Jensen, H. : Syn, Symbol and Scripts (London -), page - 119.

अंकित थी परन्तु वह सेमिटिक भाषा की पद्धति से बनी थी। 'फ० सं० - १५२' इस वर्णमाला का काल १४०० ई० पू० था।

युगारिट का नाम सर्वप्रथम मिस्र की अमरना - पाटियों पर दृष्टिगोचर हुआ। अरबी में इसका आधुनिक नाम रास - एश पामरा अथवा रास शमरा था।

इन पाटियों को असीरिया - भाषा - वेत्ता चार्ल्स वीरोलियूद (Charles Virolleaud) को प्रकाशनार्थ दे दी गई। इसने इनकी प्रतिलिपियाँ तैयार कीं तथा प्रकाशित^१ किया। हन्स बावर (Hans Bauer, १८७८ - १९३७), जो एक जर्मन सेमिटिक भाषा का ज्ञाता था, ने रहस्योद्घाटन करने का प्रयास किया। इसने २० अक्षर पढ़ लिये जिसमें ३ अशुद्ध थे।

तदनन्तर एक फ्रांसीसी प्राच्यवेत्ता एदुअर्द धोरमे (Edouard Dhorme, १८८१ - १९६६) ने पढ़ने का प्रयास किया। इसने न केवल बावर की ध्वनियों को शुद्ध किया अपितु कुछ चिह्नों को पढ़ भी लिया। चार्ल्स वीरोलियूद ने इस लिपि को इस प्रकार पढ़ने का प्रयास किया (फ० सं० - १५३)^२ :—



फलक संख्या - १५३

उपर्युक्त रहस्योद्घाटन^३ का निम्नलिखित अर्थ है :—

१. टल = ओस

२. शम्म = आकाश

३. शम्न = चर्वी

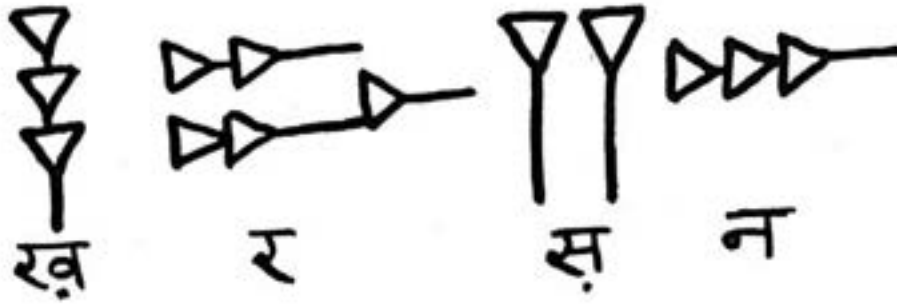
४. अर्स = पृथ्वी

अनुवाद : आकाश की ओस तथा पृथ्वी की चर्वी।

अर्थ : उर्वरता की अभिव्यक्ति।

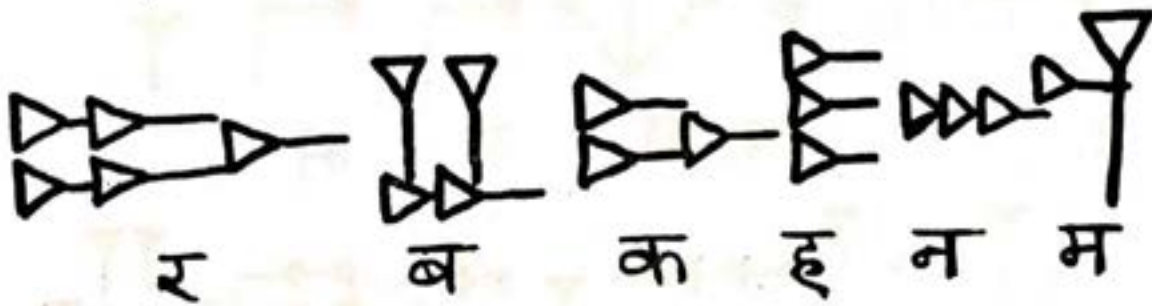
1. 'Les inscriptions cuneiformes de Ras shamra - Journal of Syria (1930) Vol. X page - 304.
2. Gordon, C. H. : Forgotten Scripts (1968), p. - 112.
3. Virolleaud, C. : Le déchiffrement des tablettes alphabetiques de Ras Shamra 'Syria' Vol. XII. (1931), p. - 190.

बाबर ने एक शब्द इस प्रकार पढ़ा — “खरसन” जिसके अर्थ हैं ‘कुल्हाड़ी’ ‘फ० सं० - १५४’ दोनों लघु अभिलेख कुल्हाड़ियों पर अंकित थे।¹



फलक संख्या - १५४

घोरमे ने दो शब्द इस प्रकार पढ़े — “रब (क + ह = ख) खनम” अर्थात् ‘मुख्य पुरोहित’। (फ० सं० - १५५)।



फ० सं० - १५५

इस उत्खनन कार्य में सैकड़ों द्विभाषिक (हेब्रू - युगारिट) पाटियाँ प्राप्त हुईं जिन्होंने बाइबिल के ओल्ड टेस्टामेण्ट (Old Testament) में एक प्रकार की क्रान्ति² ला दी और उसमें बड़ा हेर - फेर हो गया।

इसके अतिरिक्त एक और उदाहरण उत्खनन से एक महाकाव्य का मिला जिसका अनुवाद जार्डन ने किया तथा अपनी पुस्तक³ में प्रकाशित किया। उसी की एक पंक्ति ‘फ० सं० - १५६’ पर दी गई है। इसका अनुवाद इंगलिश⁴ में किया गया है जिसका हिन्दी में इस प्रकार अनुवाद होगा :—

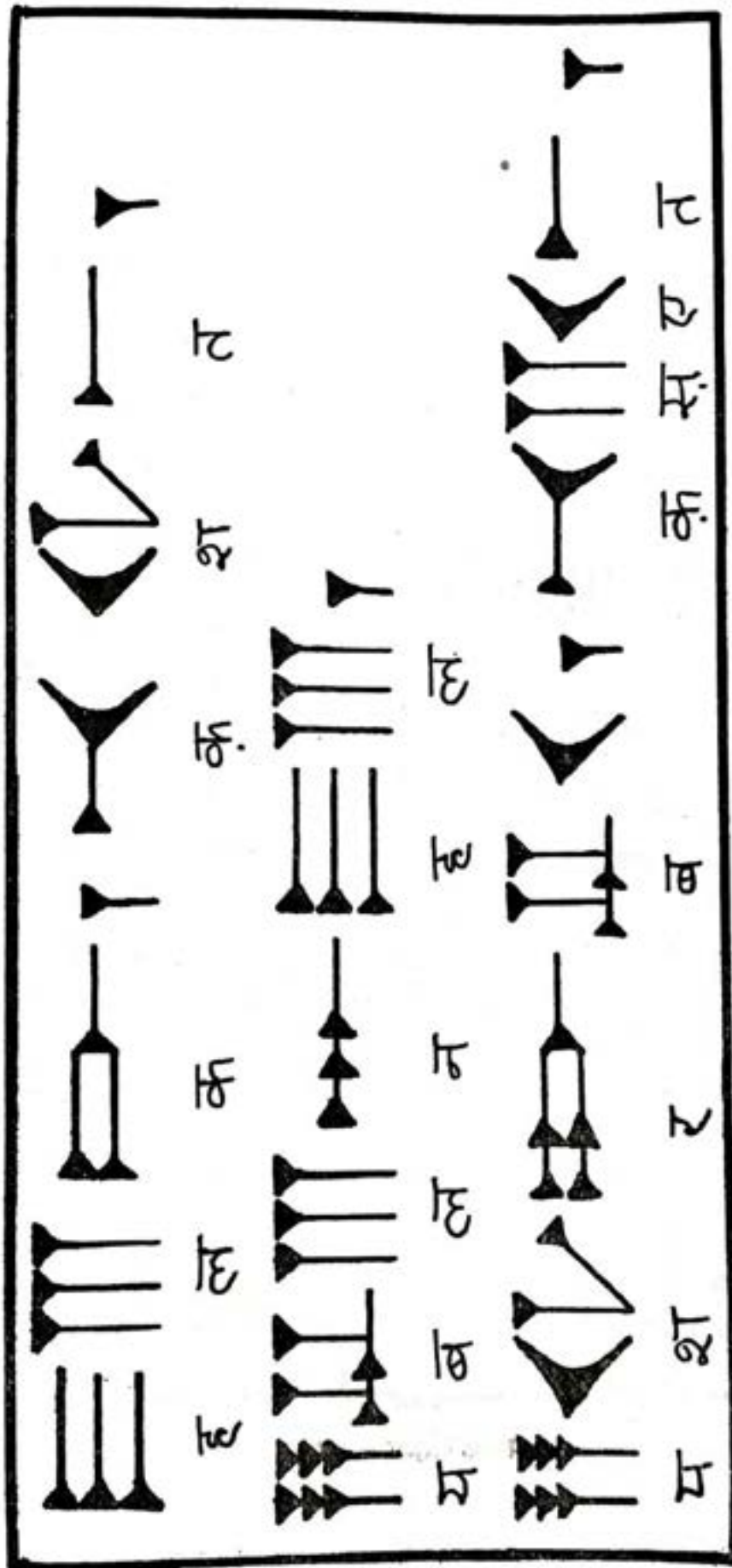
“देखो वह एक धनुष लाता है।
देखो देखो वह एक चाप लाता है।”

1. Daniel, G. : The Story of Decipherment (1975), p. - 118.

2. Gordon, C. H. : Forgotten Scripts (1968), p. - 105.

3. „ „ „ : Ugaritic Manual (1955), p. - 114.

4. जार्डन का किया हुआ इंगलिश अनुवाद : “Behold a bow he brings; Lo he fetches an arc.”



फलक संख्या - १५६

युगारिट की वर्णात्मक लिपि

१	२	३	१	२	३	१	२	३	१	२	३
अ	व		व	व		म	म		स	स	
इ	ि		ज	ज		न	न		क	क	
ऊ	उ		ह	ह		स	स		र	र	
ऑ	ओ		त	त		स	स		श	श	
ज	ज		य	य		क	क		श	श	
द	द		ख	ख		ग	ग		श	श	
ज	ज		क	क		प	प		ज	ज	
ह	ह		ल	ल		स	स		त	त	
ब	ब										

फलक संख्या - १५७

इस लिपि को बाएँ से दाएँ लिखा जाता था। इसके उद्भव के विषय में यह अनुमान लगाया जाता है कि यह एक तत्कालीन विद्वान् का कार्य है। जब कीलाकार लिपि में वह अपनी भाषा व्यक्त नहीं कर सका तो उसने पद्धति का आविष्कार किया होगा। इसमें ३२ ध्वनियाँ हैं जो वर्णमाला के साथ दी गई हैं परन्तु उनका शुद्ध उच्चारण व्यक्त करना संभव नहीं है। संसार की यही एक सबसे प्राचीन वर्णात्मक लिपि है जिसमें न भावात्मक चिह्न हैं, न चित्र हैं और न निर्धारक (Determinatives) हैं इसकी वर्णमाला¹, जो दि लॅंगे (De Langhe) ने तैयार की, 'फ० सं० - १७१' पर दी गई है। पहले कॉलम में हिन्दी ध्वनि, दूसरे में इंगलिश ध्वनि तथा तीसरे में कीलाकार वर्ण हैं।

पठनीय सामग्री

- Albright, W. F.* ; The Archaeology of Palestine (1949).
- " " " : 'The Phoenician Inscriptions of the Tenth Century B. C. from Byblos,' Journal of the American Oriental Society - No. ixvii (1947).
- Bradley, H.* ; Story of Nations (1888).
- Burckhardt, J. L.* : Travels in Syria and Holy Land (London - 1872).
- Bauer, H.* ; Das Alphabet Von Ras Shamra (1932).
- Ceram, C. W.* ; Hands on the Past (NY - 1966).
- Cooke, Rev. G. A.* : A Text Book of North Semitic Inscriptions (1903).
- Cock, Hand* : The Archaeology of the Holy Land (1916).
- Cross, F. M.* : 'The Evolution of the Proto - Canaanite Alphabet' - Bulletin of the American Schools of Oriental Researches (No. 134 - 1954).
- Cleater, P. E.* ; Lost Languages (1959).
- Diringer, D.* : 'Problems of the Present Day on the Origin of the Phoenician Alphabet'—Journal of World History IV/1 (1957).
- Driver, G. R.* : Semitic Writing From Pictography to Alphabet (1948).
- Dantel, G.* ; The Story of Decipherment (1975).
- Dobhofer, E.* ; Voices in Stone - the Decipherment of Ancient Scripts and Writings (1961).
- Finegan, J.* ; Light from Ancient Past (1946).
- Friedrich, J.* ; Extinct Languages (1962).
- Gardiner, A. H.* : 'The Egyptian Origin of the Semitic Alphabet' Journal of Egyptology Archaeology III (1916).
- Gelb, I. J.* : 'New Evidence in Favour of the Syllabic Character of West Semitic Writing' — Bibliotheca Orientalis XV (1958).

1. Friedrich, J. : Extinct Languages (1962), p. - 49.

- Gordon, C. H.* ; *Forgotten Scripts* (1968).
 " " " ; *Ugarit, Minoan Crete* (1966).
 " " " ; *Ugaritic Literature* (1949).
 " " " ; *Ugaritic Manual* (1955).
Harden, D. ; *The Phoenicians* – (1922).
Hitti, P. K. ; *Lebanon in History* (Lond. 1957).
Harris, Z. S. ; *A Grammar of Phoenician Language* (1936).
Jack, J W. ; *The Ras – Shamra Tablets* (1935).
Lidzbarski ; *Handbuch der nord semitische Epigraphie*.
 " ; *Kanaan Inschriften* (1907).
Langhe, De. ; *Les textes de Ras – Shamra Ugarit*.
Martin, W. J. ; *The Origin of Writing* (1943).
Mocalister, R. A. S. ; *A Century of Excavation in Palastine* (1926).
Moorhouse, A. C. ; *Writing and the Alphabet* (1946).
Oberman, J. ; *Ugarit Mythology* (1951).
Sobelman, H. ; 'The Proto – Byblian Inscriptions. A Fresh Approach' *Journal of Semitic Studies* VI (1961).
Schaeffer, C. F. A. ; *The Cuneiform Texts of Ras Shamra – Ugarit* (1939).
Vitrolleaud, C. ; 'Le déchiffrement des tablettes, alphabetiques de Ras Shamra' – I. of 'Syria' – XII. (1931).



हत्तुशा

इतिहास

कनआन के पुत्र हेय के वंशज आरम्भ में हेबरोन की पहाड़ियों में निवास करते थे। यह लोग सिमायट थे। इतिहासकारों ने इनको हिती या हिटायट के नाम से सम्बोधित किया है। अधिकतर विद्वान् इनको सीरिया के मूल निवासी मानते हैं।

ई० पू० की अठारहवीं श० के अन्तिम चरणों में हत्तूशा (खत्तूशा) को, जहाँ पिजुश्तिश शासक था, कुशशार के हित्ती - नरेश अनित्ताश ने परास्त करके हित्ती राज्य की नींव डाली। उस समय राजधानी का नाम लवरनाश (तबरनाश) कहते थे। पिजुश्तिश के पुत्र मुरसली प्रथम (Mursilis - I) ने एक नया मुख्य नगर हत्तुशाश (आ० बोगज कुई - गोंगें ग्राम) के नाम से बसाया। अब इसकी राजधानी हत्ती या खत्ती हो गया। ई० पू० की सोलहवीं श० से राज्य का विस्तार होने लगा जो लगभग तीन शताब्दियों तक जीवित रहा। शनैः शनैः यह राज्य इतना शक्तिशाली हो गया कि मिस्र व असीरिया का प्रतिद्वन्दी बन गया और कई बार उन देशों पर आक्रमण भी किये परन्तु यातायात के साधन न होने के कारण उन पर शासन न कर सका।

इसी राज्य के एक शूर वीर राजा शुप्पुलुलीमाश (Shuppululimash) ने १३५० ई० पू० में हुरियन के मित्तानी राज्य को, जिसकी राजधानी मारी थी, नष्ट कर दिया। उसके मरणोपरांत उसके पुत्र मुरसली द्वितीय (Mursuli) ने १३४५ से १३१५ ई० पू० तक राज्य किया तथा राज्य का विस्तार भी किया। तत्पश्चात् मुवात्तलीस (१३०६ - १२८२ ई० पू०) ने मिस्र के नरेश सेती प्रथम (१३०३ - १२९० तक) को परास्त किया। तदनन्तर खत्तुसिली (अथवा हत्तुसिली तृतीय) ने रेमेसीज द्वितीय (मिस्र का शासक १२९० - १२२३ ई० पू०) को १२७२ में काडेस के मैदान में परास्त किया परन्तु रेमेसीज ने इस विजेता से सन्धि कर ली तथा उसकी एक कन्या से विवाह भी कर लिया। तेरहवीं श० में यह विशाल साम्राज्य अपनी चरम सीमा पर था।

ई० पू० की बारहवीं श० से इस साम्राज्य पर सामुद्रिक डाकुओं के विध्वंसक आक्रमण होने लगे और यह पतन की ओर अग्रसर होने लगा। संकीर्ण होकर केवल दो (कारकेमिश एवं अलेपू) केन्द्रों पर वर्तमान रहा जिसको सरगोन द्वितीय ने ७१७ ई० पू० में विलकुल समाप्त कर दिया। फिर नेबूकदनेज़ार ने छठी श० में सीरिया को ही खत्ती के नाम से सम्बोधित किया है। इस प्रकार हिती जाति का राज्य लगभग ६०० वर्ष रहा।

हत्तुशा अथवा हिती राज्य ई० पू० की चौदहवीं श०



फलक संख्या - १५८

हिती लिपि का रहस्योद्घाटन

हिती भाषा संसार की सर्वप्रथम तथा प्राचीनतम भारोपीय भाषा है जिसके अभिलेख प्राप्त हुए हैं^१। इस लिपि का जन्म ई० पू० की चौदहवीं शताब्दी में हुआ और सातवीं श० तक प्रचलित रही। इसमें दो प्रकार की लिपियों का समावेश है, एक कीलाकार तथा दूसरी भावात्मक चित्र - लिपि। इस लिपि का रहस्योद्घाटन निम्नलिखित प्रकार से सम्पन्न हुआ :—

१८१२ में : सर्वप्रथम एक ऐङ्गलो - स्वीज गवेषक योहान लुडविग बर्कहार्ट (Johann Ludwig Burckhardt, १७८४ - १८१७) ने हम्रा^२ के बाजार में एक मकान की दीवार में लगा एक पत्थर देखा जिस पर एक विलक्षण लिपि अंकित^३ थी। इसने अरेबिया, सीरिया तथा पश्चिम एशिया के अनेक देशों की यात्रा की। यह कार्य वह कदापि पूरा नहीं कर सकता था यदि इस्लाम धर्मानुयायी न बन जाता। इस कारण इसने १८०९ में माल्टा पहुँच कर अरबी पोषाक ग्रहण की। १८१५ में जेद्दा आकर इस्लाम में ईमान लाया। तत्पश्चात् इसने मक्का व मदीना के पवित्र स्थानों को देखा। अब इसका नाम शेख इब्राहिम हाजी हो गया। इसके मरणोपरान्त इसकी पुस्तक^४ प्रकाशित हुई जिससे यह वृत्तान्त लिया गया है।

१८१९ में : सर्वप्रथम जॉर्ज पेरट (George Perrot) ने हिती की चित्र - लिपि में उत्कीर्ण एक शिलालेख का, जो बोगज़कुई के निकट स्थित था तथा जिसमें बीस सेण्टीमीटर लम्बी दस पंक्तियाँ अंकित थीं, चित्र प्रकाशित कराया।

१८६३ में : एक जर्मन राजदूत तथा प्राच्य - वेत्ता डा० ए० डी० मोर्दमान (Dr. A. D. Mordtmann) को एक चाँदी की राजकीय मुद्रा^५ प्राप्त हुई। 'फ० सं० - १५९' इस पर गोलाई में उभरी हुई कीलाकार लिपि तथा भावात्मक चित्र - लिपि में हिती भाषा अंकित थी। इसका व्यास चार सेण्टी - मीटर था। यह मुद्रा एक व्यापारी ने स्मर्ना के नगर से प्राप्त की थी। वह व्यापारी इसको ब्रिटिश संग्रहालय बेचने के लिये ले गया। वहाँ के एक अधिकारी सैमुयल बर्क (Samuel Birch) ने उसको कृत्रिम तथा रॉल्लिन्सन ने उसको नकली बता कर वापस कर दी^६, परन्तु बर्क ने उसकी मोम पर कुछ प्रतिलिपियाँ तैयार कर लीं। मोर्दमान ने इसके चित्र को प्रकाशित किया।

१८७२ में : दो सीरिया स्थित अमेरिकी राजदूत अगस्टस जॉन्सन (Augustus Johnson) तथा डॉ० जेसप (Dr. Jessup) ने उस पत्थर का निरीक्षण किया जो बर्कहार्ट ने हम्रा में १८१२ में देखा था। स्थानीय निवासियों से पता लगा कि इस प्रकार तीन अन्य शिलायें कुछ दूर पर पड़ी हैं। जब उन्होंने

1. Gordon, C. H. : *Forgotten Scripts - The story of their decipherment* (London - 1968), page - 87.
 2. बाईबिल में 'हमाथ'; रोमन में 'एपीक्रेनिया तथा सीरियार्स' में 'हमा'।
 3. Doblhofer, E. : *Voices in Stone* (1961), page - 151.
 4. "Travels in Syria and the Holy Land" (1822), page - 146.
 5. Moorhouse, A. C. : *Writing And The Alphabet.* (1946), p. - 24.
 6. Gordon, C. H. : *Western Asiatic Seals in the Walters Art Gallery.* 'Iraq' - No. 69. (1939), page. - 24.
- Doblhofer, E. *Voices in Stone* (1961), page - 156.

उन शिलाओं की प्रतिलिपियाँ तैयार करने का प्रयत्न किया तो वहाँ के निवासियों ने अनुमति नहीं दी।

१८७३ में : अमेरिका - पैलेस्टीनियन एक्सप्लोरेशन सोसायटी के दो अधिकारी ड्रेक (Drake) तथा पालमर (Palmer) उसी शिला को देखने हमा आये तो उनको भी प्रतिलिपियाँ तैयार करने की अनुमति नहीं मिली।

१८७४ में : कैप्टेन रिचर्ड बर्टन (Capt. Richard Burton) ने किसी प्रकार उन पत्थरों के कुछ रेखा चित्र बना लिये। इस कारण स्थानीय निवासी बिगड़ गये और उन शिलाओं को नष्ट करने की धमकी देने लगे।

—इसी वर्ष तुर्की के एक नये गवर्नर सुभी पाशा की नियुक्ति हमा^१ में हुई। यह एक सुसंस्कृत सज्जन था। इसने दमिष्क से दो ब्रिटिश राजदूत - कर्बी ग्रीन (Kirby Green) तथा ईसाई - प्रचारक विलियम राईट (William Wright, १८३७ - १८९९) को हमा आमन्त्रित किया। विलियम राईट ने प्रतिलिपियाँ, तैयार करके ब्रिटिश संग्रहालय को भेज दीं तथा शिलायें कान्सटैण्टी - नोपिल (आ० इस्तम्बोल) भेज दो गईं। इनको अपनी पुस्तक^२ में प्रकाशित भी किया।

—इसी वर्ष निम्नलिखित विद्वानों को इस विलक्षण लिपि के शिलालेख एशिया माइनर के कई प्राचीन नगरों के खण्डहरों से प्राप्त हुए :—

(क) चार्ल्स टेक्सियर^३ (Charles Texier) तथा डब्ल्यू० हैमिल्टन (W. Hamilton) को बोगजकुई^४ से।

(ख) ई० जे० डेविस (E. J. Davis) को इवरिज से।

(ग) अन्य को बोर, एयुक, बुल्हरमैदेन, सिपीलोस आदि से।^५

१८७८ में : ब्रिटिश संग्रहालय के असीरियाई - कक्ष के एक अधिकारी जॉर्ज स्मिथ (George Smith, १८४० - १८७६) ने कारकेमिश (आ० जेराल्डस) के निकट कुछ उत्खनन कार्य भी किया जहाँ से हमा के प्रकार की अनेक शिलायें प्राप्त हुईं। स्मिथ ने ही १८७६ में एक टीले को पहचाना^६ था और बताया था कि इस टीले के नीचे कारकेमिश दबा है।

१८८० में : मोर्दमान ने उस चाँदी की मुद्रा (कीलाकार) को इस प्रकार पढ़ा 'फ० सं० - १५९' जिसका विवरण इस प्रकार है :—

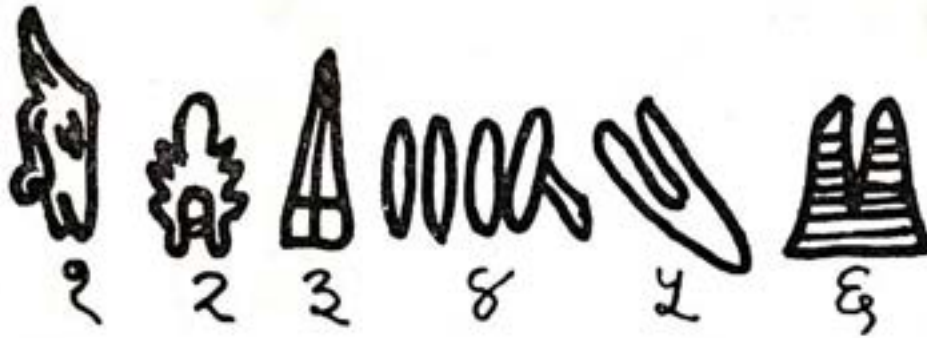
१. निर्धारक चिह्न है, जो किसी निजी (अमुक) नाम के पूर्व प्रयोग होता था। मिस्त्री लेखाकार अपने निर्धारक चिह्न को सीधी ओर लगाते थे।

१. हमा संजक प्रांत की राजधानी थी। संजक उत्तरी सीरिया का एक प्रांत था। सीरिया तुर्की साम्राज्य का एक उपनिवेश था, जो तुर्की का विलायत कहलाता था। सीरिया देश की राजधानी दमिष्क (डैमसकस) थी और अब भी है।
२. "The Empire of Hitties" (1884).
३. टेक्सियर ने अपनी पुस्तक "Description de l' Asie Mineure" in 3. Vols. में १८८० में प्रकाशित की।
४. प्राचीन इत्तुशाश, जो हित्ती शासकों की राजधानी लगभग १६५० से १२५० ई० पू० तक रही। यह अंकारा से १४५ कि० मी० पूर्व की ओर है।
५. Cleater, P. E. : Lost Languages (1961), pag: - 116.
६. Doblhofer, E. : Voices in Stone (1961), p. - 155.

२. तार; ३. कु; ४. दिम; ५. मी।
६. यह कीलाकार लिपि का सामूहिक चिह्न बेबीलोनिया में नृप के लिए प्रयोग होता था। निर्धारक चिह्न है।
७. यह चिह्न भी 'देश' के लिए निर्धारित है।
८. तार; ९. सुन। यही दो शब्द अशुद्ध पढ़े गये। शुद्ध है 'मी + रा' अर्थात् मीरा।

मुद्रा के अन्दर वाले भाग भावात्मक चित्र - चिह्नों को इस प्रकार पढ़ा गया :—

१. तारकू; २. मूवा; ३. नृप; ४. मर; ५. इ; ६. देश। 'मीरा देश का राजा तारकूमूवा।' (फ० सं० - १५९ क)।



फ० सं० - १५९ क

'तारकुदीम्मी—तारसुन का राजा' इसी वर्ष आर्कीबाल्ड हेनरी सेसी (Archibald Henry Sayce, १८६९ - १९३३) ने, जो हेब्रू, मिस्री, फ़ारसी, संस्कृत तथा असीरियाई भाषाओं का प्रकाण्ड विद्वान् था, चांदी की मुद्रा को इस प्रकार पढ़ा :—

'तार - रिक - तिम - मे सर मत एर - मी - इ' अर्थात् 'तारिकतिम्मे एरमी देश का राजा'^१।

अब इसको इस प्रकार पढ़ा जाता है :—

'तारकू - मूवा राजा मी + र + अ देश' अर्थात् 'तारकूमूवा - मीरा देश का राजा'^२ इसी वर्ष सेसी ने 'सोसायटी आफ़ बिबलीकल आर्कैयोलॉजी' के समक्ष एक शोध - पत्र पढ़ा, जिसके द्वारा यह सिद्ध किया कि लिपि का नाम 'हमाथी'^३ नहीं बरन् 'हिती' है। असीरियाई तथा मिस्री लिपियों में 'हिती' शब्द का वर्णन दिया हुआ है। इसी वर्ष कई खोजकर्ताओं — मेसरस्मिद (Messerschmidt), ऑल्मस्टेड (Olmstead), चार्ल्स (Charles), रेंच (Wrench), होगर्थ - वूली (Hogarth - Woolley) तथा आई० जे० गेल्ब आदि ने हिती लिपि के अनेक अभिलेखों का संग्रह कर लिया।

1. Jensen, H. : Syn, Symbol, Script (1970), p. - 146.

2. Gordon, C. H. : Forgotten Scripts - The Story of Their Decipherment (London - 1968), page - 97.

3. बहुत से विद्वान् 'हमाथी' के नाम से ही इस लिपि को सम्बोधित करने लगे थे।

तारकोण्डेमस की मुद्रा



कुछ
निर्धारिक
चिन्ह



आकाश



वृष



देवता



मार्ग

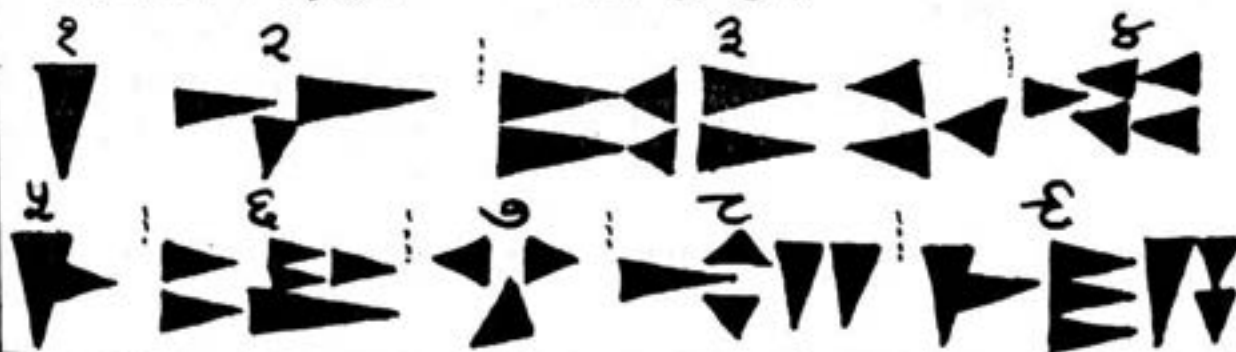


नदी

यह
मुद्रा

चांदी की है। इसका व्यास ४ सेंटीमीटर है।

बाण के चिन्ह से नीचे की ओर पढ़ा जायेगा। इसमें ८ चिन्ह हैं।



हिती चित्रात्मक लिपि

	अ	इ	ए	उ		अ	इ	ए	उ
ध्वनि	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ध्वनि	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
व/प	ॐ	ॐ		ॐ	क	ॐ	ॐ	ॐ	
		बी पी		बु पु			बी कै		
ज	ॐ				अ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
						ली	ले	लु	
ग	ॐ			ॐ	म	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
				मु			मे	मु	
द	ॐ			ॐ	न	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
				डु		नी	ने	नु	
ह	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	स	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ख		ही	हे	हु		सी	से	सु	
व	ॐ	ॐ	ॐ		र	ॐ		ॐ	ॐ
		वी	वे					रु	
ञ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	त	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
		जी	जे	तु		ती		उ	

फलक संख्या - १६०

१८८७ में : मिस्स के तेल^१ - एल - अमर्ना^२ में अवसमात एक ग्रामीण स्त्री को एक पाटिया दृष्टिगोचर हुई । जब यह बात पुरातत्त्व - वेत्ताओं को विदित हुई तो वहाँ उत्खनन कार्य किया गया जिसके द्वारा ३२० पाटियाँ^३ प्राप्त हुई । यह पाटियाँ एक प्रकार के पत्रक^४ थे जिन पर मिस्स, असीरिया, मित्तानी, हिती आदि राज्यों के मध्य जो पत्रव्यवहार हुआ था, अंकित था । इन पाटियों पर अधिकतर दो प्रकार की लिपियाँ - मिस्सी (चित्रात्मक) तथा कीलाकार - अंकित थीं । यदि यह कोष प्राप्त न होता तो हिती के इतिहास की कड़ियाँ अधूरी रह जातीं तथा लिपि के रहस्योद्घाटन कार्य में भी पूर्ण सफलता मिलना सम्भव न होता । इसी कोष में दो ऐसे पत्रक मिले जो एक विलक्षण लिपि में अंकित थे तथा मिस्स से अरजवा^५ के राजा तारकुण्डरीस को भेजे गये थे ।

१८६० में : एक फ्रांसीसी असीरियाई लिपि - वेत्ता योकिम मेनान्त^६ (Jochim Menant, १८२० - १८९९) ने हिती चित्र - लिपि के एक चिह्न 'फ० सं० - १६३ क' को पहचान लिया । इसमें मनुष्य अपनी ओर संकेत करता है । ऐसा चिह्न 'फ० सं० - १६३ ख' मिस्सी भाषा में पाया गया है । इसके अर्थ मेनान्त ने सर्वनाम 'अर्थात् मैं हूँ.....' अथवा 'मैं कहता हूँ.....' बतलाये हैं ।



क



ख

फलक संख्या - १६३

१८९२ में : एक जर्मन असीरियाई लिपि - वेत्ता पाइजर (Peiser) ने इन दो चिह्नों 'फ० सं० - १६४' को भावात्मक हिती लिपि के चिह्न बतलाये । अभी तक विद्वानों ने हिती की भावात्मक चित्र - लिपि के ३५० चिह्नों को पहचान लिया था ।

फ० सं० - १६४

IC II

१. 'तेल' के अर्थ 'टीला' है (Tell - el - Amarna) ।

२. 'अमर्ना' भरबी भाषा में उस ग्राम का नाम है जिसके निकट वे खण्डहर स्थित हैं जो प्राचीन काल में एक नगर, मन्दिर व महल थे । नगर का नाम खू - अतेन था जो मेम्फिस से १८० मील दक्षिण की ओर स्थित था । इसको मिस्स के एक नरेश अमेनोफिस चतुर्थ ने १५०० ई० पू० में नील नदी के पूरव की ओर बनवाया था । ३२० पत्रकों में से, जो १८८८ में पृथ्वी के नीचे से निकले, ८२ ब्रिटिश संग्रहालय ने, १६० बर्लिन तथा ६० गीजा के संग्रहालयों ने मोल ले लिये ।

३. Budge, E. A. W. : Sculptures and Inscriptions of Behistun (1907), page - VII.

४. Gordon, C. H. : Forgotten Scripts (1968), page - 88.

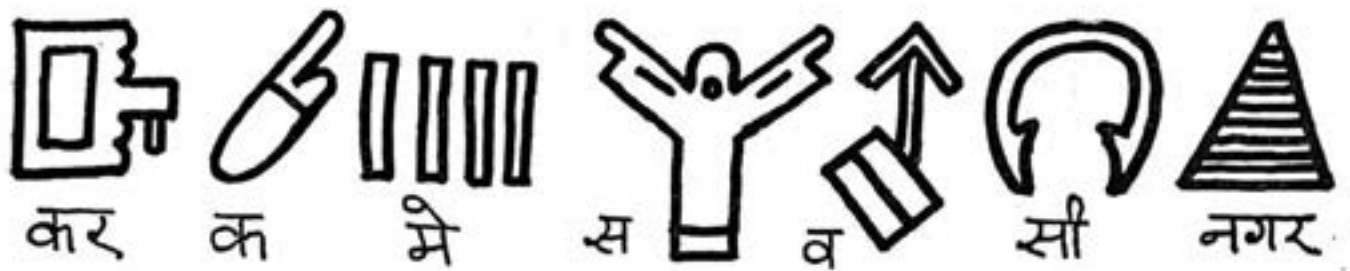
५. अरजवा भूमध्यसागर के किनारे पर एशिया माइनर में स्थित था ।

६. Doblhofer, E. : Voices in Stone (1961), p. - 161.

७. H. Jensen : Syn Symbol Script (1970), p. - 148.

१८६३ में : ई० चान्त्रे (E. Chantre) को कुछ पाटियों के टुकड़े बाग़जकुई के निकट प्राप्त हुए। इन टुकड़ों पर अरजवा लेख - पत्रों के चिह्न पाये गये। इससे स्पष्ट हो गया कि यह चिह्न हित्ती की भावात्मक चित्र - लिपि है।

१८६४ में : एक असीरियाई लिपि - वेत्ता पीटर येनसेन (Peter Jensen) ने हित्ती लिपि के रहस्योद्घाटन पर एक लेखमाला लिख दी। इसको पुनः अपनी पुस्तक^१ में १८९८ में प्रकाशित करवाया परन्तु उसने हित्ती लिपि को आर्मेनियन लिपि से सम्बन्धित बता कर एक भूल की। इसी वर्ष येनसेन ने एक शब्द^२ पढ़ा, जिसके अर्थ हैं 'कारकेमिश नगर' 'फ० सं० - १६५'। इस प्रकार की चित्रात्मक लिपि शिलाओं तथा मन्दिरों पर उत्कीर्ण की जाती थी।



फलक संख्या - १६५

१९०० में : एक जर्मन पुरा - वेत्ता लियोपोल्ड मेसरस्मिड (Leopold Messerschmidt) ने ३६ बड़े अभिलेखों को एकत्र किया, उनका सम्पादन किया तथा उनका परीक्षण करके अपने एक ग्रन्थ^३ में प्रकाशित किया। इस महान् शोध के द्वारा संसार के विद्वानों को इस लिपि के रहस्योद्घाटन करने की प्रेरणा प्राप्त हुई।

१९०० : इसी वर्ष सेसी ने हित्ती की भावात्मक चित्र - लिपि के कई चिह्न पहचान लिये (फ० सं० - १६२)

१९०२ में : एक नार्वे निवासी असीरियाई लिपि - वेत्ता जे० ए० क्नुड्जोन^४ (J. A. Knudtzon) ने अपने दो स्कैण्डिनेवियन सहयोगियों यस० बुग्गे (S. Bugge) तथा ए० टोर्प (A. Torp) के साथ अरजवा लेख - पत्रों को पढ़ने का प्रयास किया, उनको प्रकाशित किया तथा घोषित किया कि हित्ती भाषा एक भारोपीय भाषा है। उदाहरणार्थ, हित्ती लिपि में 'ए - स - तू' 'एस्तू' संस्कृत का 'अस्तु' अर्थात् 'ऐसा ही हो'^५ है। इस घोषणा को कई विद्वानों ने अशुद्ध बतलाया तथा उसकी कटु आलोचना की। इससे हताश होकर क्नुड्जोन ने अपना रहस्योद्घाटन - शोध स्थगित कर दिया अतथा यह विद्वान् विश्व प्रसिद्ध हो जाता।

१९०६ में : दो स्थानों - बाग़जकुई^६ तथा कारकेमिश - पर उत्खनन कार्य प्रारम्भ करने की योजना बनी। बाग़जकुई ब्रिटिश द्वारा तथा कारकेमिश अमेरिका द्वारा उत्खनित किये जाने की सम्भावना हो गई।

1. "Hittites and Armenians".

2. Cleater, P. E. : Lost Languages (1961), page - 123.

3. "Corpus Inscriptionum Hettiticarum" (1900).

4. E. Doblhofer : Voices in Stont (1961), page - 164.

5. Gordon, C. H. : Forgotten Scripts (1968), p. - 90.

6. तुर्की की राजधानी अंकारा से यह पूरब की ओर १४१ किलो मीटर पर स्थित है।

इसी बीच जर्मनी के कैंसर के आदेशानुसार तुर्की स्थित जर्मन राजदूत ने अपने व्यक्तिगत प्रभाव द्वारा योजना को पलट दिया। इस कारण जॉन गारस्टांग (John Garstang, १८७६ - १९५६) ने, जो ब्रिटिश स्कूल आफ आर्कैयोलॉजी का सर्वप्रथम निदेशक था, अपने ब्रिटिश अभियान को कारकेमिश (आ० जेराब्लूस) के उत्खनन में लगा दिया। दूसरे बर्लिन ओरिएण्टल सोसायटी^१ के अभियान ने ह्यूगो विन्कलर^२ (Hugo Winckler, १८६३ - १९१३) के अन्तर्गत अपना उत्खनन बोगाजकुई में आरम्भ कर दिया। इसने दो बार (१९०६ - ७ तथा १९११ - १२) में अपना कार्य किया। जब १९१३ में विन्कलर की मृत्यु हो गई, तो बर्लिन से आये हुए दो अन्य विद्वानों — एच० एच० फ़िगूला (H. H. Figulla) तथा बेदरिख हरोज़नी (Bedrich Hrozný, १८७९ - १९५२) द्वारा उत्खनन कार्य कुछ अंशों में चलता रहा।

इस उत्खनन द्वारा लगभग दस सहस्र पकी हुई ईंटों जैसी पाटियाँ तथा उनके टुकड़े प्राप्त हुए। इन्हीं पाटियों में एक अक्कादियन भाषा तथा कीलाकार लिपि में अंकित ऐसा अभिलेख प्राप्त हुआ जो एक सन्धि - पत्र के रूप में था। यह सन्धि हत्तसिलिस तृतीय तथा रामेसीज द्वितीय के मध्य C १२८० ई० पू० में हुई थी^३। इसी का दूसरा भाग मिस्र की भावात्मक चित्र - लिपि में उत्कीर्ण किया गया था जो कोनार्क^४ के विशाल मन्दिर में स्थित है।

१९११ में : आर० एस० टॉम्पसन (R. S. Thompson) ने कारकेमिश के उत्खनन से प्राप्त कुछ अभिलेखों को पढ़कर उनको प्रकाशित कराया। इससे ज्ञात हुआ कि अन्य विद्वानों केसेसी, रुश, येनसेन, कोण्डर, ग्लेई आदि — निष्कर्षों में प्रयाप्त समानता है।

१९१५ में : १५ नवम्बर को हरोज़नी ने अपने रहस्योद्घाटन के निष्कर्ष — लेख जर्मन मिडिल - ईस्ट सोसायटी, बर्लिन, के समक्ष पढ़े। विद्वानों ने इस दिवस को हित्ती - लिपि के ज्ञान का जन्म दिवस निर्धारित करके हरोज़नी को हित्ती - लिपि - वेत्ता के शब्दों से विभूषित किया। इसकी एक पुस्तक^५ भी इसी वर्ष प्रकाशित हुई।

इस प्रकार हित्ती इतिहास तथा लिपि का ज्ञान प्रकाशमय हो गया और संसार के विद्वान् उससे अवगत हो गये।

बोगाजकुई में कुछ दिन ओर उत्खनन चलता रहा और उससे निम्नलिखित बातें ज्ञात हुई^६ :—

- पाटियों पर पाठशालाओं के पाठ सुमेरियन तथा अक्कादियन भाषा में प्राप्त हुए।
- हित्ती के लिपिकार शब्द के आरम्भ में शब्द के अर्थ को बताने के लिए एक निर्धारित चिह्न का प्रयोग करते थे जब कि मिस्र के लिपिकार शब्द के लिखने के पश्चात् प्रयोग करते थे।

1. Deutsche Orient - Gesellschaft.

2. विन्कलर की पूरी कहानी लियो की इस पुस्तक में दी है—

Deuel, Leo : The Treasures of Time (1961), p. - 256.

3. Gordon, C. H. : Forgotten Scripts (1968), page - 88.

4. लेखक ने स्वयं जाकर इस शिलालेख को जनवरी १९७५ में देखा है।

5. "The Solution of Hittite Problem" (Berlin).

6. Hrozný : Ancient History of Western Asia, India and Crete (Prague 1944), p. - 115.

- कुछ ऐतिहासिक पाठ द्विभाषिक अनुवादों में, जैसे हित्ती फ़िनीशियन, हित्ती अक्कादियन आदि ।
- कुछ पाटियों पर समान कॉलमों में त्रैभाषिक — सुमेरियन, अक्कादियन तथा हित्ती — शब्दकोष भी प्राप्त हुए ।
- कुछ राजकीय मुद्रायें प्राप्त हुईं जिनका काल लगभग १४०० से १२०० ई० पू० निर्धारित किया गया है । इन मुद्राओं पर कीलाकार तथा भावात्मक चित्र — लिपियाँ अंकित पाई गईं । कीलाकार लिपि की दिशा अधिकतर बायें से दायें हैं परन्तु चित्र — लिपि हल — पद्धति में अंकित की गई है । इसकी चित्र — लिपि में ३५० चिह्न^१ हैं ।

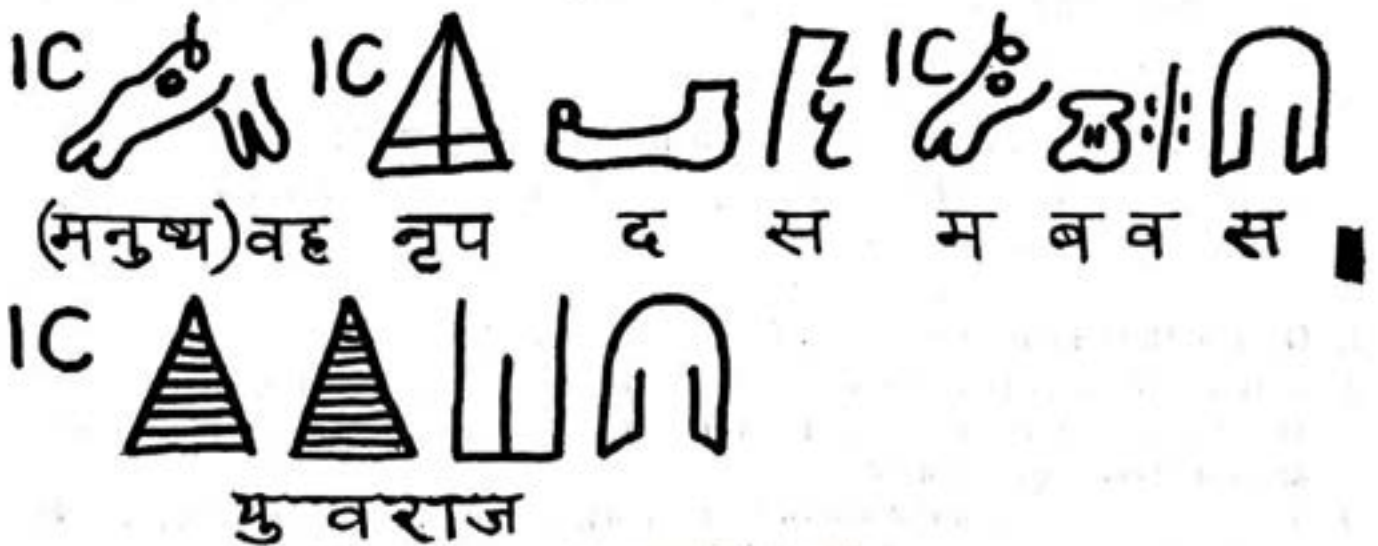
जब पाश्चात्य विद्वानों को ज्ञात हो गया कि हित्ती लिपि का रहस्योद्घाटन हो गया तो उनकी एक बाढ़ सी एशिया माइनर आने लगी । उनमें उल्लेखनीय नाम हैं :—

- इंग्लैण्ड के निवासी विलियम रामसे (William Ramsay) ।
- जर्मनी के निवासी कार्ल हियूमान (Karl Heumann) तथा आटो पुखस्टाइन (Otto Puchstein) ।
- आस्ट्रिया के निवासी फेलिक्स वॉन लूशर (Felix Von Luschar) तथा लैन्कोरन स्की (Lanckorran Ski) ।
- अमेरिका निवासी वुल्फ (Wolfe) तथा आई० जे० गेल्ब (I. J. Gelb) ।
- इटली निवासी पी० मेरिग्गी (P. Meriggi) ।
- स्वीट्जरलैण्ड निवासी ई० फ़ोरर (E. Forrer) ।

१६२४ में : येनसेन ने अपने एक भाषण में घोषित किया कि जब तक कोई द्विभाषिक अभिलेख प्राप्त नहीं होता तब तक हित्ती लिपि का शुद्ध रहस्योद्घाटन होना सम्भव नहीं है ।

१६२५ में : फ़ोरर ने बोगज़कुई के पत्रकों में आठ भाषाओं का समावेश बताया । उसने एक पाटिया के पाठ^२ को 'फ० सं० - १८०' इस प्रकार पढ़ा :—

‘(मनुष्य) चाहे वह नृप हो या युवराज हो’ । उसने एक पुस्तक^३ भी लिखी ।



फ० सं० - १६६

1. Jensen, H. : Syn, Symbol, Script (1970). p. - 148.
2. Doblhofer, E. : Voices in Stone (1961), p. - 184.
3. Forrer, E. : The Hittite Hieroglyphic Writing (Chicago - 1932).

१९३० में : चार विद्वानों^१ ने मेरिंगी, गेल्ब, फ़ोरर तथा बोस्साट ने हित्ती की चित्र-लिपि की कुछ पाटियों को इस प्रकार पढ़ा :—

१. कुरकुम नगर; २. अमतू देश; ३. तुवानूब अर्थात् 'तयान' नगर; ४. मुवातली (गुरगम्मा का); ५. उरखिलीनू (हमथ का); ६. देवता खेबत (अर्थात् हेबत देवता) (फ० सं० - १६२) ।

१९३३ में : हेलमुथ थ्योडोर बोस्साट (Helmuth Theodor Bossert, १८८९ - १९६२) कुछ शिलालेखों की खोज में तुर्की आया । १९३४ में इसको इस्तम्बूल विश्वविद्यालय में नियर - ईस्टर्न स्टडीज (Near - Eastern Studies) के विभाग का निदेशक बना दिया गया । १९४५ में कुछ प्राचीन सभ्यताओं के अवशेषों की खोज में दक्षिणी तुर्की की यात्रा पर चल दिया । १९४६ में कारटेपे के काले पहाड़ों पर (इस स्थान का नाम अस्लान्तश - प्राचीन नाम किलीशिया^२ था) कई द्विभाषिक अभिलेख प्राप्त किये उनमें से एक 'फ० सं० - १६१' पर दिया गया है । इसमें ऊपर की ओर उत्तरी सेमिटिक (फ़िनीशियन) लिपि है तथा नीचे हित्ती की चित्र - लिपि है । ऊपर की लिपि को दाएँ से बाएँ इस प्रकार डुपोन्ट (Dupont) तथा सोमर (Somer) ने पढ़ा :— "मेरे सारे जीवन में स्वादिष्ट भोजन तथा आनन्ददायक स्थानों की प्रचुरता रही है"^३ । नीचे की लिपि को हल - पद्धति से (दाएँ से बाएँ तथा पुनः बाएँ से दाएँ) इस प्रकार बोस्साट ने पढ़ा — "मेरे दिन सन्तुष्टता, कुशलता तथा आनन्दमय जीवन के थे ।"^४ इस अभिलेख का काल ई० पू० की आठवीं शताब्दी माना गया है । इसका पूर्ण विवरण एक पुस्तक^५ में दिया गया है । अब ऐसे द्विभाषिक अभिलेख कारटेपे के एक किले से लगभग ८९ प्राप्त हुए ।

१९३७ तक मेरिंगी द्वारा एक पूर्ण वर्णमाला इस लिपि की तैयार कर ली गयी थी । इस कार्य में गेल्ब ने १९३२ - ३५ में तुर्की में घूम घूम कर अभिलेखों को एकत्रित करने में तथा उनको पढ़ने में बड़ा सहयोग प्रदान किया । गेल्ब ने एक वर्णवली^६ भी तैयार की जो 'फ० सं० - १६०' पर दी गई है ।

इस प्रकार हित्ती लिपि तथा हित्ती साम्राज्य का इतिहास, जो अज्ञानता के अथाह सागर में अज्ञात हो गया था, सारे संसार को ज्ञात हो गया । धन्य हैं वे विद्वान् जिन्होंने अपने जीवन की आहुति भावी पीढ़ी के उपकार में दे दी ।

1. Gordon, C. H. : *Forgotten Scripts* (1968), p. - 98.
2. कारटेपे के अभिलेखों में एक नृप का नाम अबारकुस था । वह किलिशिया का नरेश था । असीरिया के शासक तियलत पलेसर ने उसको परास्त कर दिया । किलिशिया हित्ती तथा फ़िनीशिया की सभ्यताओं का एक सम्मिश्रण था । इसका काल लगभग १००० ई० पू० माना गया है ।
3. इसका सर्वप्रथम अनुवाद जर्मन भाषा में तथा इंग्लिश में किया गया था । यहाँ इंग्लिश का पाठ दिया गया है—*"In all my days there was abundance of delicacies and pleasant abode"*.
4. *"My days were satiety and well being and pleasant living."*
5. दोनों पाठ इस पुस्तक से लिये गये हैं :—
Ceram, C. W. : *Hands on the Past* (1966), p. - 288.
6. Gelb, I. J. : *Hittite Hieroglyphs*. Vol. III. (1942), Frontis piece.

शिव		ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
पुरुष	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
वृष	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
देवता	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
बैल	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
मंड.	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
आकाश	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
तारा	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ

फलक संख्या - १६७

चार देशों की चित्रात्मक लिपियों की तुलना

'फ० सं० - १६७' पर चार देशों - सुमेर, मिस्र, हतुशा तथा चीन - के कुछ चित्रात्मक चिह्न^१ दिये गये हैं जो दैनिक जीवन में उपयोगी होती थीं। उन देशों में इन चिह्नों की संख्या निम्नलिखित थी :—

देश	अक्षरात्मक चिह्न	चित्रात्मक चिह्न
१. सुमेर	लगभग १५०	लगभग ६००
२. मिस्र	" १००	" ७००
३. हतुशा	" ६०	" ४५०
४. चीन	" ६२	" ५०,०००

पठनीय सामग्री

- Barnett, R. D.* : "Karatepe, the Key to the Hittite Hieroglyphs" - Anatolian Studies - (1953).
- Brown, P.* : The World of Late Antiquity (1971).
- Ceram, C. W.* : Hands on the Past (1966).
- Cleater, P. E.* : Lost Languages (1959).
- Cowley, A. E.* : "Notes on Hittite Hieroglyphic Inscriptions" - J. RAS - (1917).
- Ibid.* : The Hittites (1920).
- Daniel, G.* : The Story of Decipherment (1975).
- Doblhofer, E.* : Voices in Stone - the Decipherment of Ancient Scripts and Writings (1961).
- Finegan, J.* : Light from Ancient Past (1946).
- Friedrich, J.* : Extinct Languages (1962).
- Gelb, I. J.* : Hittite Hieroglyphs, I (1931), II (1935), III (1942).
- Gordon, C. H.* : Forgotten Scripts (1968).
- Gurney, O. R.* : The Hittites (1954).
- Hrozny, B.* : Les inscriptions hittites hieroglyphiques - (1933).
- Jensen, H.* : Syn, Symbol and Script (Translated in English by George Unwin - 1970).
- Palmer, G.* : Archaeology - A to Z (1988).
- Sayce, A. H.* : The Hittites - (1888).
- Sturtevant, E. H.* : A Hittite Glossary - (1936).
- " " " : A Comparative Grammar of the Hittite Language - (1933)
- Thompson, R. C.* : "A New Decipherment of the Hittite Hieroglyphs" - Archaeologia (64 - 1912).

□

1. Gelb, I. J. : A Study of Writing (1963) p. - 98.

इस्रायल

इतिहास

लगभग चार सहस्र वर्ष पूर्व सुमेर के उर नगर - राज्य में कैल्डियन जाति का एक मूर्तिकार टेरा रहता था। उसको एक पुत्र इब्राहीम (Abraham) था। एक दिन उसने अपने पिता की मूर्तियों को तोड़ डाला। जब पिता ने आकर पूछा कि यह मूर्तियाँ किसने तोड़ी हैं तो उसने उत्तर दिया कि मूर्तियों में झगड़ा हो गया। बड़ी मूर्ति ने छोटी मूर्तियों को डण्डे से तोड़ डाला। पिता ने कहा कि कहीं मूर्तियाँ भी लड़ सकती हैं। तो उसने उत्तर दिया कि जब वह लड़ नहीं सकती तो किसी का बुरा या भला कैसे कर सकती हैं तो फिर इनको पूजने से क्या लाभ? यह बातें विद्रोह उत्पन्न करने वाली थीं। जब राजा तथा प्रजा मूर्ति पूजक थे तो इब्राहीम के यह विचार बड़े क्रान्तिकारी प्रतीत हुए। पिता ने कहा कि अच्छा होगा यदि इस राज्य को छोड़ कर चले जाओ और तब इब्राहीम अपने कुछ सम्बन्धियों तथा मित्रों के साथ, जिनके विचारों में साम्य था, पश्चिम की ओर चल दिये।

चलते चलते वे कनआन देश के हेब्रोन नगर में पहुँचे। वहाँ के निवासी इसको इब्री (अर्थात् उस पार से आने वाले) सम्बोधित करने लगे। उस समय कनआन में उत्तर की ओर अमोर जाति का राज्य था जिनकी राजधानी काडेश थी। पूर्व की ओर अराम जाति का तथा मोआब व एमोन जाति का राज्य था। इब्राहीम की दो पत्नियाँ थीं और उनसे दो पुत्र थे। एक का नाम ईसाक तथा दूसरे का इस्माइल था। ईसाक के पुत्र का नाम जैकब¹ (याकूब) था। याकूब के कई पुत्र थे। उनमें से एक का नाम यूसुफ़ था जो अपने भाइयों के अत्याचारों के कारण एक काफ़िले के साथ मिस्र चला गया। काफ़िले वालों ने उसको मिस्र के एक पदाधिकारी के हाथ बेच दिया।

पदाधिकारी यूसुफ़ की सच्चाई पर मुग्ध हो गया और मिस्र के राजा² के यहाँ उसको अच्छी नौकरी दिलवा दी। इन्हीं दिनों कनआन में अकाल पड़ा जिसके कारण उसके भाई तथा अन्य सम्बन्धी स्थानान्तरण करके मिस्र पहुँच गये और वहीं स्थायी रूप से निवास करने लगे। अब इनकी संख्या दिन पर दिन बढ़ने लगी परन्तु यह लोग मिस्र के धार्मिक विचारों से सदैव पृथक् रहे। मिस्र निवासी मूर्ति - पूजक थे परन्तु यह एकेश्वरवादी थे। मिस्रियों ने इनका नाम इब्री से हिब्रू (हेब्रू) कर दिया तथा इनको अपने सामाजिक स्तर से निम्न समझा। यही नहीं उनको अपना दास समझ कर हर प्रकार का निम्न कार्य उनसे करवाया। उनके नवशिशुओं को मौत के घाट उतारा। उन्हीं हिब्रू लोगों का एक शिशु को, जो उसकी माता ने एक टोकरी में रख कर नदी में बहा दिया था वहाँ के शासक फ़ेराओं की बहन ने पाल लिया। उसका नाम मोजेज़ (मूसा)

1. यह भी अरमायक भाषा का प्रयोग करते थे।

2. इस काल में हिकसास जाति का शासन था। हेब्रू जाति को अधिक कष्ट सहन नहीं करने पड़ते थे।

पड़ा। अमोजेजको जब मालूम हुआ कि वह हेब्रू है तो वह उनकी सहायता करने लगा तथा उनको फ़ेराओ के अत्याचारों से बचाने की सोचने लगा। तब एक दिन आया कि वह अपनी जाति के सब लोगों को १२६० ई० पू० में मिस्र से निकाल कर ले चला। इस समय मिस्र का शासक रेमेसीज द्वितीय था।

सिनाइ के रेगिस्तान के कण्टों का सामना करते हुए यह लोग फिर कनआन पहुँचे। जब यह लोग सिनाइ में पड़ाव डाले हुए थे तब मोजेज एक पहाड़ी पर, जिसका नाम माउण्ट सिनाइ (कोहेत्तूर) था चढ़ गया, जहाँ खूदा से दस आज्ञायें हेब्रू (भाषा व लिपि) में प्राप्त कीं। इसी पैग़ाम के कारण वह पैग़म्बर हो गया। मोजेज के पश्चात् जशुआ इनका नेता बना और उसी के कारण इस जाति के लोगों के पैर जम सके। शनैः शनैः इन लोगों ने अपना एक राज्य स्थापित कर लिया। अब यह लोग बारह जातियों में विभाजित हो गये और प्रत्येक जाति का एक न्यायाधीश (जज) होने लगा। क्योंकि इन लोगों को अन्य जातियों तथा राज्यों से युद्ध करना पड़ता था। इस कारण इनको एक राज्य, एक राजधानी तथा एक राजा की आवश्यकता प्रतीत हुई जो सबको अपनी आज्ञा में रख सके तथा दूसरी जातियों से युद्ध करने की क्षमता रखे। ऐसे मनुष्य की तलाश होने लगी और उनको एक ग्राम निवासी वीर मिल ही गया जिसका नाम साल था जो इस जाति का प्रथम शासक बना और इसने १०२० से ९८९ ई० पू० तक राज्य किया। इसने आत्महत्या कर ली।

९९० ई० पू० में डेविड (दाऊद) राजा हुआ तथा उसके स्वर्गवास हो जाने पर ९६६ में उसका पुत्र सालोमन (सुलेमान) शासक बना जो उस समय का एक महान् तथा बहुत धनी राजा समझा जाता था। इसी ने जेरुसेलम की राजधानी का बहुत सुन्दर निर्माण कराया तथा जेहोवा का एक भव्य मन्दिर बनवाया। राज्य का विस्तार किया। प्रजा को समृद्ध बनाया और संसार के इतिहास में एक प्रसिद्ध राजा हो गया। ९२७ ई० पू० में इस धनवान् राजा की मृत्यु हो गई।

इसके मरणोपरान्त इस्रायल का राज्य तथा उनकी बारह जातियाँ ९३७ में विभाजित हो गये। उत्तर का भाग इस्रायल कहलाया जिसमें दस जातियाँ थीं तथा दक्षिण का राज्य जूडा कहलाया जिसमें दो जातियाँ थीं। सालोमन का एक सैनिक उच्च पदाधिकारी जेरोबोम इस्रायल का शासक बना तथा दक्षिण में जूडा राज्य का शासक सालोमन का पुत्र रेहोबोम बना। इस्रायल के सहयोगी अरामी बने तथा जूडा के सहायक एडोम तथा दक्षिण फ़िलिस्तीन (Palestine) के निवासी बने।

इस्रायल के राजा जेरोबोम की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र नदाब शासक बना। इसने फ़िलिस्तीन के नगर जिब्बेथोन (Gibbethon) पर आक्रमण कर दिया परन्तु विजय न कर सका और वीर गति को प्राप्त हुआ। इस्रायल के राजसिंहासन पर बाशा आरुढ़ हो गया। अब इसी बीच रेहोबोम के पुत्र अबीजाह ने इस्रायल पर आक्रमण कर दिया। अबीजाह की मृत्यु हो गई और उसका पुत्र असा जूडा का राजा बना। इस्रायल के बाशा की मृत्यु होने पर उसका पुत्र एलाह राजा बना जिसने केवल दो वर्ष शासन किया और दो वर्ष पश्चात् इसका वध एक सैनिक अधिकारी जिमरी ने कर दिया और स्वयं शासक बन गया। तब एक दूसरे सैनिक अधिकारी उमरी ने जिमरी का वध कर दिया। तत्पश्चात् एक और सैनिक उमरी के विरुद्ध हो गया उसका भी वध कर दिया गया। अब उमरी का कोई प्रतिद्वन्द्वी न रहा और वह इस्रायल की दस जातियों द्वारा राजा चुन लिया गया। इसने एक पहाड़ी पर राजधानी का निर्माण किया जिसका नाम समारिया पड़ा। इस्रायल की दस जातियों पर शलमनेसर चतुर्थ ने आक्रमण कर दिया और उसकी मृत्यु के पश्चात् सरगोन द्वितीय ७२१ ई० पू० में इन दस जातियों को परास्त कर एवं बन्दी बना कर

असीरिया ले गया। बहुत से लोगों को इसने मीडिया राज्य को भेज दिया। इस प्रकार इस्रायल की दस जातियाँ इतिहास के पृष्ठों से लोप हो गईं।

कैलिडियन साम्राज्य के, जिसको नवीन बेबीलोनिया के नाम से भी सम्बोधित करते हैं, शासक नेबूकदनेज़ार ने अपने पुत्र नेबूकदनेज़ार को कारकिर्षि में मिस्र की सेना को परास्त करने भेजा। तदोपरान्त नेबूकदनेज़ार ने ६०७ में जूडा के राज्य पर आक्रमण कर दिया। उस समय जेहोइयाकिम (Jehoiachim — यह लोग भी अपने एक ख़ुदा का नाम जेहोवा अपने नाम के पूर्व लगाते थे) शासक था। आक्रमण से पूर्व ही वह चल बसा। तत्पश्चात् उसका पुत्र शासक बना जिसका नाम जेहोइयाकिन (Jehoiachin) था। आक्रमण के पश्चात् तीन माह तक युद्ध करता रहा और बाद में समर्पण कर दिया। जेहोइयाकिन अपनी माँ तथा शासन के उच्च पदाधिकारियों के साथ बन्दी बना लिया गया। नेबूकदनेज़ार ने कई शिल्पकार भी बन्दी बनाये और इन सबको वह बेबीलोन ले गया।

५९९ ई० पू० में नेबूकदनेज़ार बेबीलोनिया का शासक बनने के पश्चात्, जब कि जेहोइयाकिम का भाई जेडेकिया राज्य कर रहा था, जेरुसलम पर फिर आक्रमण कर दिया। इसका मुख्य कारण था जेडेकिया का बेबीलोन से विरुद्ध होकर मिस्र से मित्रता करना। चार माह के पश्चात् जूडा की पराजय हुई। जेडेकिया भाग गया परन्तु पकड़ा गया। उसके दो पुत्रों का उसी के समक्ष वध कर दिया गया तथा उसको अन्धा बना दिया गया और बेबीलोन ले जाया गया। एक माह पश्चात् फिर एक सैनिक नेबू ज़रादन को भेजा गया जिसने और नरसंहार किया, जेरुसलम के पवित्र मन्दिर को नष्ट कर दिया तथा जूडा व बेंजामिन की दो जातियों के लोगों को बन्दी बना कर बेबीलोन ले गया।

लगभग पैंसठ वर्ष बन्दी रह कर जब यह जूडा जाति अपनी पवित्र जन्म भूमि पर लौटी तो फिर से जेरुसलम के मन्दिर को बनवाकर उसके चारों ओर की भूमि को लेकर राज्य करने लगी। परन्तु इस जाति को शान्ति न मिली। किसी न किसी राज्य या जाति का इस पर कोप होता ही रहा। अन्त में सिकन्दर के आक्रमण तथा रोम के आक्रमणों ने इस जाति के लोगों को निर्वासित होने पर बाध्य कर दिया और शनैः शनैः यह लोग अपनी जन्मभूमि छोड़ कर सारे विश्व में फैल गये और अपने सीने में उसकी याद दबाये रहे।

दूसरे महायुद्ध के पश्चात् अमरीका ने इनको वचन दिया कि वह इनकी पवित्र भूमि वापस दिलवायेगा। १४ मई १९४८ को पैलेस्टाइन को विभाजित कर इस्रायल को पवित्र भूमि का टुकड़ा दिलवा दिया गया और देश उन्हीं के नाम पर इस्रायल कहलाने लगा। विछुड़े फिर मिल गये।

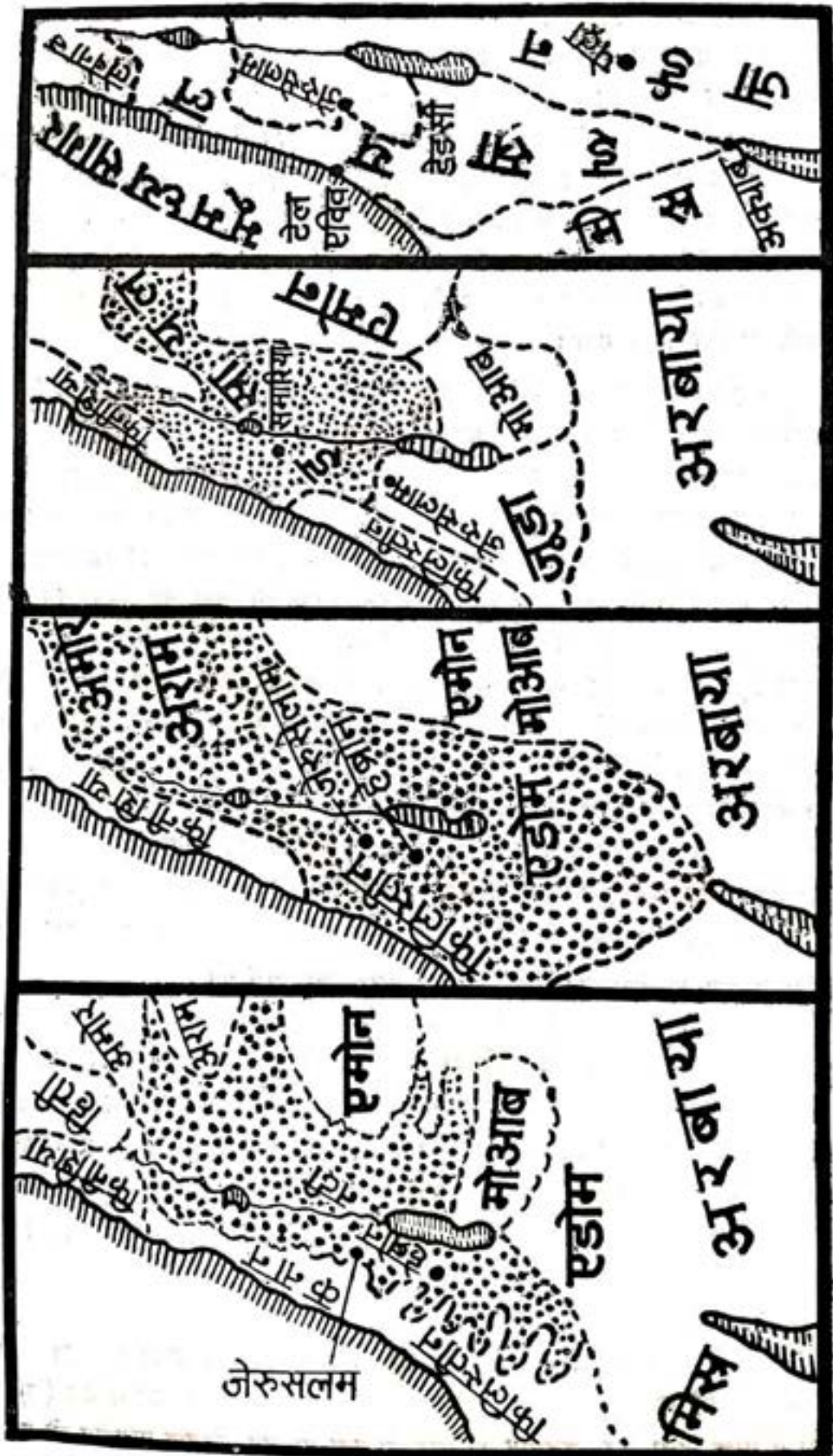
फिर भी इस देश को शान्ति न मिली। चारों ओर से मुस्लिम राज्यों द्वारा घिरा हुआ यह देश सदैव काँटे की तरह खटकता रहा। छोटे मोटे झगड़े बराबर चलते रहे। सभी देश युद्ध की तैयारियाँ करने लगे। मिस्र के नासिर (स्वर्गवासी हो चुके) ने कई प्रकार की रोकें लगाईं और एक दिन इस्रायल ने अचानक मिस्र पर आक्रमण कर दिया तथा स्वेज नहर तक सारे सिनाइ प्रान्त पर अधिकार कर लिया जिसको अवैध माना जाता है। १९८१ में मिस्र के राष्ट्रपति अनवर सादात ने इस्रायल से सन्धि कर ली जिससे अनेक मुस्लिम राज्य उनके विरुद्ध हो गये और उनका वध कर दिया गया। १९८२ में सिनाइ पुनः मिस्र को वापस मिल गया।

इस्रायल की लिपियाँ

हेब्रू लोगों की भाषा हेब्रू थी। इस भाषा की लिपि भी हेब्रू कहलाती है। इन लोगों का यह पूर्ण विश्वास है कि इस लिपि का जन्म जेहोवा (भगवान्) द्वारा उस समय हुआ जब मोशेज (मूसा) उनको मिस्र के अत्याचारों से मुक्ति दिला कर कनआन की ओर ला रहा था तब सिनाइ प्रायद्वीप की एक पहाड़ी माउण्ट

इस्रायल जाति का इतिहास - आदि से आज तक

११५० - ११२५ ई० पू० १०२५ - ८५३ ई० पू० ८५३ - ७२३ ई० पू० १४ मई - १८४८



फलक संख्या - १६८

हेब्रू लिपि की वर्णमाला (बायें से)

ध्वनि	ख़	ज़	व	ह	द	ग/ज	ब	अ
नाम	ख़ैथ	ज़ैन	वाव	हे	दलेथ	गिमेल	बेथ	अलेफ़
प्राचीन	𐤁	𐤂	𐤃	𐤄	𐤅	𐤆	𐤇	𐤈
आधु०	א	ב	ג	ד	ה	ו	ז	ח
ध्वनि	ऑ	स	न	म	ल	क	इए	त
नाम	ऐन	समेख़	नून	मीम	लैमेद	काँफ़	योद	तेथ
प्राचीन	𐤉	𐤊	𐤋	𐤌	𐤍	𐤎	𐤏	𐤐
आधु०	ט	ס	נ	מ	ל	כ	ק	ת
ध्वनि	त	श	स	र	क़	त्स	फ़	प
नाम	ताव	शीन	सीन	रेश	क्राफ़	त्सादी	फ़े	पे
प्राचीन	𐤑	𐤒	𐤓	𐤔	𐤕	𐤖	𐤗	𐤘
आधु०	י	שׁ	שׂ	ר	ק	צ	פ	צ

फलक संख्या - १६९

सिनाई (कोहेतूर) पर जेहोवा ने मोजेज़ को एक पत्थर की पाटिया पर दस आज्ञायें प्रदान कीं, परन्तु इस बात को सिद्ध करने के लिए अभी तक कोई वैज्ञानिक प्रमाण प्राप्त नहीं हो सका ।

जब ई० पू० की आठवीं श० में सरगोन द्वितीय द्वारा तथा सातवीं श० के आरम्भ में नेबूकदनेज़ार द्वारा इस्रायल की दोनों जातियाँ निर्वासित कर दी गईं तो सम्भव है कि पौराणिक हेब्रू लिपि लोप हो गई हो, परन्तु इस्रायल की दो जातियों को सातवीं श० के अन्त में सायरस ने बन्दीगृह से मुक्त कर दिया । जूड़ा जाति के लोग, जो अब यहूदी कहलाने लगे थे, अपनी जन्म भूमि पर पुनः आकर बसने लगे । इन्हीं लोगों ने शनः अरमायक लिपि से एक नवीन लिपि का आविष्कार किया जो पुरातत्त्व वेत्ताओं को उन्नतवीं श० में 'किताब मुरब्बा' (Square Hebrew) अर्थात् चौकोर - हेब्रू के नाम से ज्ञात हुई ।

हेब्रू लिपि के प्रतिदर्श (दाये से)

. 5 L P 5 J . 7 L H 7 . 1 7 1

. म व क म ब . म व ल श ज ह ज

. 7 L P 5 . 7 7 L . 7 7 7

त व म व क म ल क ब व . ह ज ह

7 7 5 5 0

ह ज ब र अँ

. 7 7 7 7

ल अ र श ज

फलक संख्या - १७०

यह लिपि ई० पू० की चौथी व तीसरी श० में किलिशिया से प्राप्त अरमायक अभिलेखों द्वारा विकसित की गई जो वास्तव में प्रामाणिक हेब्रू मानी गई तथा कुछ संशोधन के साथ आज तक प्रचलित है । इस लिपि का प्राचीनतम तथा सबसे छोटा अभिलेख अरक़ - अल - अमीर (Araq - el - Amir) से प्राप्त हुआ । अरक़ - अल - अमीर की चट्टान पर निर्मित एक प्राचीन महल है जो जार्डन नदी व डेड सी (Dead Sea) के संगम से १५ मील उत्तर - पूर्व में स्थित है । इस अभिलेख का काल १८० ई० पू० निर्धारित किया गया है ।

एक दूसरा लेख गैलिली (पैलेस्टाइन का उत्तरी ६० मील लम्बा तथा ३० मील चौड़ा मण्डल या खण्ड) के एक नगर कफ़ बिराईम (Kafr Bir - a - im) के यहूदी - मन्दिर (Synagogue) से प्राप्त हुआ । इसका काल ईसा की प्रथम शताब्दी निर्धारित किया गया है ।

इन दोनों अभिलेखों का रहस्योद्घाटन लिडज़बार्स्की (Lidzbarski) ने किया । इन दोनों अभिलेखों के वर्ण, आधुनिक हेब्रू^१ की वर्णमाला व ध्वनि के साथ 'फ० सं० - १६९' पर दिये गये हैं ।

नीचे बाईं ओर 'अरबजह'^२ लिखा है अर्थात् अरबजहा = अरबिया - प्राचीन महल के अभिलेख से तथा (इसको दाएँ से बाएँ) यहूदी - मन्दिर के अभिलेख से लिये गये शब्द जिसके अर्थ हैं :— इस निवास स्थान पर तथा इस्त्रायल के सब निवास स्थानों पर (भगवान् करे) शान्ति हो^३ (फ० सं० - १७०) ।

आधुनिक हेब्रू लिपि के वर्णों की ध्वनियाँ तथा नाम व अर्थ जो 'फ० सं० - १४५' पर दिये गये हैं ।

ध्वनि	नाम	अर्थ
अ	अलेफ़	बैल
ब	बेथ	घर
ग/ज	गिमेल (जमल)	ऊँट
द	दलेथ	द्वार
इ	हे	खिड़की
व	वान	टुक (काँटा)
ज़	ज़ेन	अस्त्र
ह	हेथ	बाढ़
थ	तथ	साँप
ई/ज/य ^४	योध	हाथ
क	काफ़	हथेली
ल	लमेद	बैल का अंकुश
म	मीम	पानी
न	नून	मछली
क्स	समेख	पोट (Port)
ऑ	ऐन	आँख

1. Rabbi Joseph Zeitlin : *Hebrew Made Easy* (1955), p. - 12.
2. दूसरा अर्थ 'अरबिजह' भी आते हैं । अरबिजह सालोमन राजा का पौत्र था । इसको लिटमान ने 'तोबिजह' पढ़ा तथा लिडज़बार्स्की ने 'अरबिजह' पढ़ा । दोनों अभिलेख निम्नलिखित पुस्तक में दिये हैं ।
Lidzbarski : *Handbuch der nord semitique Epigraphes*. Vol. 1., p. - 185.
3. इसका अनुवाद लिया गया है :—
Neubauer : *Facsimiles of Hebrew Manuscripts with Transcriptions*. (Oxford - 1886), p. - 321.
4. Jordon
Jacob

जार्डन
जैकब

यार्दानिया
याकूब

हबनि	नाम	अर्थ
प	पे	मुंह
स	सादे	बल्लम
क्र	क्रॉफ	गाँठ
र	रेश	सिर
श	शीन	दाँत
त	ताउ	निशान

समारिया की लिपियाँ

समारिया पैलेस्टाइन का एक छोटा सा प्रान्त था। इस्रायल की दस जातियाँ (उत्तर की) जो जूड़ा वाली दो जातियों (दक्षिण की) से पृथक् हो गई थीं निरन्तर युद्ध में रत रहती थीं। उस समय न उनका कोई राज्य था और न राजा। उनका एक उच्च सैनिक पदाधिकारी उमरी ८८४ ई० पू० में राजा निर्वाचित हुआ। उमरी ने शिमिर से एक पहाड़ी (माउण्ट गिरजिन) खरीद ली और उस पर अपनी नई राजधानी का निर्माण किया। उमरी के मरणोपरान्त उसका पुत्र जेहू फिर पौत्र अहाब शासक बना। अहाब के पश्चात् जेरोबोम द्वितीय ८२३ में सिंहासनारूढ़ हुआ, उसने अपने राज्य का विस्तार किया। इसने ७७२ ई० पू० तक राज्य विस्तार किया। तदनन्तर कुछ छोटे छोटे राजा राज्य करते रहे।

असीरिया के राजा शलमनेसर चतुर्थ ने ७२५ ई० पू० में तीन वर्ष तक समारिया का घेरा डाले रखा। ७२२ में उसकी वहीं मृत्यु हो गई। तत्पश्चात् सरगोन द्वितीय असीरिया का शासक बना तथा समारिया को परास्त कर वहाँ के २७००० निवासियों को निर्वासित कर एक दूसरी जाति को, जो उमरी के पूर्व यहाँ निवास करती थी, यहाँ बसाया। इस प्रकार इस्रायल की दस जातियाँ लोप हो गईं। इसके पश्चात् ग्रीस से सिकन्दर ने ३३२ ई० पू० में तथा रोम के राजा हिरकैनस ने १०७ ई० पू० में इसको और नष्ट किया।

ई० पू० की चौथी श० में कुछ बचे हुए यहूदी जाति के लोगों ने एक नई धार्मिक जाति की आधार शिला रखी तथा उसी पहाड़ी पर पुरानी ईंटों से एक मन्दिर का निर्माण किया तथा सेबास्टिया के नाम से एक गाँव बसाया। इसका दूसरा केन्द्र नेबलस (आ० शिकिम) के पास बना है। इसी धार्मिक जाति के पास समारिया की प्राचीन तीन प्रकार (शिलालेख, पुस्तक - लेख तथा शीघ्र - लेख) की लिपियाँ¹ इसवी सन् की पाँचवीं श० की आज तक सुरक्षित हैं, जिनको 'फ० सं० - १७१' पर दिया गया है। इसका उत्खनन हार्वर्ड विश्वविद्यालय के तीन विद्वानों (राइसनर, फ़िशर, लेयान) ने १९०८ - १० में सम्पन्न किया तथा उसको एक पुस्तक² में प्रकाशित किया। यह कनयानी लिपि की एक शाखा³ है।

1. Lidzbarski : Handbuch der nordsemitique Epigraphic, Part 1, p. - 185.
2. Reissner, Fisler, Lyon: Harvard Excavations at Samaria (1924), p. - 227.
3. Ibid. p. - 439.

समारिया की लिपियाँ -- चौथी श० ई०

द्व०	शिलालेख	बाइबिल	शीघ्र ले०	द्व०	शिलालेख	बाइबिल	शीघ्र ले०
अ	𐤀 𐤁	𐤁	𐤀	ल	𐤋 𐤌	𐤌	𐤋
ब	𐤂	𐤂	𐤂	म	𐤍 𐤎	𐤎	𐤍
ज		𐤇	𐤇𐤈	न	𐤏 𐤐	𐤐	𐤏𐤐
द	𐤑 𐤒	𐤑	𐤑	स		𐤓	𐤓𐤔
ह	𐤕	𐤕	𐤕	अ	𐤔 𐤕	𐤕	𐤕
व	𐤖 𐤗 𐤘	𐤖	𐤖	प	𐤙	𐤙	𐤙
ज	𐤚	𐤚	𐤚	स	𐤛	𐤛	𐤛
ख	𐤜	𐤜	𐤜𐤝	क	𐤞	𐤞	𐤞
ट	𐤟	𐤟	𐤟	र	𐤠	𐤠	𐤠
ज	𐤡	𐤡	𐤡	श	𐤢 𐤣	𐤣	𐤣
क	𐤤 𐤥	𐤤	𐤤	त	𐤦 𐤧	𐤧	𐤧

फलक संख्या - १७१

पठनीय सामग्री

- Burney, C. F.* : Israel's Settlement in Canaan (Lectures of 1917).
- Carleton, P.* : Buried Empires.
- Chwolson* : Corpus inscriptionum Hebraicarum (St. Petersburg - 1882).
- Clodd, E.* : The Story of the Alphabet (NY - 1938).
- Cooke, G. A.* : A Text Book of North Semitic Inscriptions (1903).
- Cross, F. M.* : 'The Evolution of the Proto - Canaanite Alphabet' - Bulletin of the American Schools of Oriental Researches, No. 134 (1954).
- Driver, G. R.* : Semitic Writing (London - 1948).
- Finegan, J.* : Light from Ancient Past (1946).
- " : Archaeological History of Ancient Middle - East (1979).
- Jensen, H.* : Syn, Symbol and Script (1970).
- Keans* : Man's Past and Present.
- Koestler, A.* : Birth of Israel (1949).
- Lidzbarski* : Kanaan Inschriften (1907).
- Martine, W. J.* : The Origin of Writing (1943).
- Neubauer* : Facsimiles of Hebrew Manuscripts with Transcriptions (Oxford - 1886).
- Nöldeke* : Beitr. z. Semit. Sprachwiss (1904).
- Noth, M.* : Die Welt des Alten Testaments (1940).
- Ullman, B. L.* : Ancient Writing and its Influence (NY. - 1932).



सीरिया

इतिहास

सीरिया (सूरिया) के देश पर आक्रमण करने वालों में से सर्वप्रथम सुमेर निवासी थे । तत्पश्चात् अक्काद - नरेश नरमसिन (२२९१ - २२५५ ई० पू०) ने इस देश पर शासन किया । ई० पू० की पन्द्रहवीं श० से हुरियन जाति के शासकों के अधीन रहा । १३५० ई० पू० में हिती जाति के एक प्रतापी नरेश शुपीलूलीमाश ने हुरियनों को परास्त कर सीरिया को अपने अधीन कर लिया और लगभग २०० वर्ष तक हिती राज्य में रहा परन्तु इनका राजनैतिक केन्द्र कारकेमिश था । अन्त में असीरिया के नरेश अशुर - उबालित प्रथम के अधीन रहा ।

ई० पू० की तेरहवीं श० में सीरिया का दक्षिणी भाग अरामियों के अधीन था जिसकी राजधानी डेमसकस (दमिश्क) थी । इसी बीच मिस्र को छोड़ कर शान्ति तथा स्वतन्त्र जीवन बिताने की आशा से हेब्रू जाति के लोग पैलेस्टाइन के पास बसने लगे । ९०० ई० पू० में यह जूडा (दक्षिण में दो जातियाँ) तथा इस्रायल (उत्तर में दस जातियाँ) के नाम से ज्ञात होने लगे । इनमें तथा अरामियों में सदैव युद्ध होते रहे । इन जूडा व इस्रायलों के मुख्य केन्द्र जेरुसेलम और समारिया थे ।

डैमसकस को ७३२ ई० पू० में तिघलतपलेसर ने परास्त किया तत्पश्चात् समारियों ने परास्त किया । ५८६ ई० पू० में यह बेबीलोनिया के राज्य में नेबूकदनेजार द्वारा सम्मिलित कर लिया गया । ५३९ में पर्शिया नरेश सायरस ने पराजित किया तथा डैरियस ने इसको अपने साम्राज्य का एक प्रान्त बना लिया । ३३२ ई० पू० में यह ग्रीस के अधीन (सिकन्दर द्वारा) हो गया । अब उत्तरी भाग सेल्युकस के तथा दक्षिणी भाग मिस्र के टॉलेमी राजाओं के अधीन हो गया । रोम नरेश ऐण्टीओकस तृतीय ने लगभग २०० ई० पू० में टॉलेमी को हरा कर इसका दक्षिणी भाग अपने अधीन कर लिया तदनन्तर सेल्युकस के वंशज - नरेश को हरा कर पूर्ण सीरिया अपने अधीन कर लिया जो ६३६ ई० तक रोम साम्राज्य का एक प्रान्त बन कर रहा । तत्पश्चात् यह मुसलमानों के अधीन रहा ।

तदुपरान्त १५१६ में यह तुर्कों के हाथ में आ गया जो १९१८ तक रहा । प्रथम महायुद्ध के पश्चात् इस देश की देखरेख फ्रांस ने की और १७ अप्रैल १९४६ को पूर्ण स्वतन्त्र हो गया ।

इस देश की कोई मुख्य लिपि न थी । काल - परिस्थिति के अनुसार यह दूसरों की लिपियों को अपनाता गया । यहाँ कई प्रकार की लिपियाँ आईं और परिवर्तित होती रहीं । प्राचीनतम् अरमायक विदित होती है जो फ़िनशियन लिपि (या जिसका दूसरा नाम उत्तरी सेमेटिक लिपि) से विकसित हुई । परन्तु ग्रीस के पूर्वी चर्च से सम्बन्धित होने के कारण तथा उनमें भी कई मत - मतान्तर होने के कारण ईसा की पाँचवीं श० से कई प्रकार की लिपियाँ दृष्टिगोचर होती हैं जिनकी चर्चा आगे विस्तार से की गई है । इनका मुख्य नगर एडेसा था ।

सीरिया

आधुनिक सीमा



फलक संख्या - १७२

सीरिया की लिपियाँ

अरमायक लिपि : उत्तरी — सेमिटिक भाषा — भाषी जातियों का एक संघसमुदाय शनैः शनैः ई० पू० की बारहवीं श० से अरम (डेमसकस — दमिश्क) में आकर बसने लगे । असीरिया नरेश तिगलत पलेसर प्रथम (१११६ — १०७६ ई० पू०) ने लगभग २८ बार इन पर आक्रमण किया । ग्यारहवीं श० के अन्त तक अरामियन लोगों ने कारकेमिश के निकट अपना एक राज्य बित — अदीनी के नाम से स्थापित कर लिया^१ । तत्पश्चात् इन्होंने अपने राज्य का विस्तार समाल (जिन्जर्ली) तथा हमाथ तक कर लिया ।

१०३० ई० पू० में जोबाह के नरेश हदादेजेर^२ ने अन्य सेमिटिक जातियों के सहयोग से इस्त्रायल पर तीन बार आक्रमण किया परन्तु तीनों बार डेविड (दाऊद) द्वारा पराजित हुए । बर हदाद द्वितीय ने इस्त्रायल के राजा अहाब (८७५ — ८५२ ई० पू०) से सन्धि कर ली ।

ग्यारहवीं श० के अन्त तक अरामियन जातियों ने — जो अब कलू, कश्डू, कैलिडियन आदि के नाम से सम्बोधित किये जाने लगे थे — बेबीलोनिया से भू — मध्य — सागर तक के राज्यों को अपने अधीन कर लिया था । इस प्रकार असीरिया भी इसी घेरे में आ गया था । परन्तु अशुर बनी पाल द्वितीय (८८४ से ८५९ तक राज्य किया) ने आक्रमण कर दिया । शलमनासिर तृतीय ने ८५६ में बित अदीनी पर आक्रमण किया जिसमें उसको अरम, हमाथ, फिनीशिया तथा इस्त्रायल की सेनाओं का सामना करना पड़ा और युद्ध निष्कर्ष रहित रहा । परन्तु शलमनासिर ने पुनः ८३८ में आक्रमण करके अपनी भूमि वापस ले ली । लगभग सौ वर्ष तक सन्धियाँ तथा युद्ध होते रहे ।

७४० ई० पू० में तिगलत पलेसर तृतीय ने अरामियन केन्द्र अपंद का भूभाग ले लिया । ७३४ में समारिया तथा ७३२ में अरम भी अपने अधीन कर लिया । अन्तिम बार ७२० ई० पू० में सरगीन द्वितीय ने हमाथ पर आक्रमण करके अरामियन राज्य का अन्त कर दिया । राज्य के अन्त होने से भी अरामियन जाति का अन्त नहीं हुआ । वे लोग अब बेबीलोनिया में बस गये और कैलिडियन कहलाने लगे । उनका शासक मेरोदोख बलादन असीरिया के आक्रमणों का ७२२ से ७१० तक सामना करता रहा । उसके मरणोपरान्त लगभग लाखों अरामियन लोगों को बेबीलोनिया से खदेड़ दिया गया तथा ६८९ में बेबीलोनिया नष्ट — भ्रष्ट कर दिया गया । इसी बीच ६२६ में एक शूरवीर सैनिक पदाधिकारी नेवूपलासर बेबीलोनिया का नृप बन गया और सीथियन तथा मीडोज लोगों की सहायता से असीरिया को सदा के लिए समाप्त कर दिया । अब अरामियन बेबीलोनियन हो गये ।

इस लिपि का जन्म तथा विकास उत्तरी सेमिटिक लिपि (फिनीशियन) द्वारा लगभग दसवीं श० ई० पू० में हुआ । इसके प्राचीनतम अभिलेख सीरिया के उत्तर में कर्जोन व जेनजर्ली के नगरों से १८९० में प्राप्त हुए । यह अभिलेख मुख्य देवता हदाद की विशाल मूर्ति पर उत्कीर्ण किये गये थे । इन अभिलेखों का काल ई० पू० की नवीं श० निर्धारित किया गया है । 'फ० सं० — १७३' के प्रथम कॉलम में इसकी वर्णमाला^३ दी गई है । इसके लिखने की दिशा दायें से बायें थी । इसका रहस्योद्घाटन यस० ए० कुक ने १८९७ में किया ।

1. Encyclopaedia Britannica, Vol. II., p. — 207.

2. असीरिया के अभिलेखों में 'हदादेजेर' नाम है ।

हेम भाषा में—वेन हदाद ।

अक्कादियन भाषा में—बर हदाद ।

अरमायक भाषा में—अदाद इदरी ।

3. Cook, S. A. : A Glossary of Aramaic Inscriptions (1898), p. — 203 से इसकी वर्णमाला ली गई है ।

पालमीरा लिपि : लैटिन (लातीनी) भाषा में इसको 'पालमीरा' तथा स्थानीय भाषा में इसको 'टेडमोर' (आ० तादमूर) कहते हैं । यह डैमसकस (दमिश्क - सीरिया की राजधानी) से पूरब की ओर १३५ मील पर सीरिया के मरुस्थल में एक मरुस्थान के निकट स्थित है । ई० पू० की ग्यारहवीं श० में इसकी चर्चा तिगलत पलेसर प्रथम (१११४ - १०१६ ई० पू०) के अभिलेखों में दृष्टिगोचर होती है । यह एक नगर - राज्य था । पश्चिमी एशिया के अन्य देशों की तरह यह भी असीरिया, बेबीलोनिया तथा पर्शिया आदि के आक्रमणों की ज्वाला में धधकता रहा, परन्तु ईसा की द्वितीय श० में समृद्ध हो गया । यह काल रोमन राज्य का था । इस पर पुबलियस अक्विलियस हैद्रियानस (Publius Aelius Hadrianus) का राज्य था ।

२६० ई० में उदेनाथस (उदयनाथ - Odenathus) ने, जो अब तक हैद्रियन के अन्तर्गत एक अधीन नृप था, पालमीरा को अपने एक नये राज्य के रूप में स्थापित किया और स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी परन्तु उसका वध करवा दिया गया । तत्पश्चात् २७३ में उसकी पत्नी जेनोबिया (Zenobia - बाथ जेबाज) शासक बनी । उसको बन्दी बना कर रोम ले जाया गया तथा पालमीरा पुनः रोमन राज्य का एक अंग बन गया । शनैः शनैः यह पतन की ओर बढ़ता रहा तथा एक दिन इतना गिर गया कि उठ न सका ।

इसकी दो प्रकार की लिपियाँ थीं । एक अलंकृत तथा दूसरी हस्त - लेखन^१ । अलंकृत लिपि का प्रयोग अधिकतर स्मारकों पर उत्कीर्ण करने के लिए किया जाता था तथा हस्त - लेखन का प्रयोग हस्त - लिखित पुस्तकों तथा पत्रों आदि के लिए किया जाता था । अलंकृत लिपि का प्राचीनतम अभिलेख १६७= में प्राप्त हुआ जिसका काल ई० पू० की नवीं श० माना गया है । इस अभिलेख^२ की भाषा अरमायक थी ।

हस्त - लिखित अभिलेख पालमीरा से प्राप्त नहीं हुए बल्कि इटली से प्राप्त हुए । सम्भवतः रोमन राज्य काल में पाण्डुलिपियों को रोम ले जाया गया होगा । अलंकृत लिपि की वर्णमाला^३ 'फ० सं० - १७३' के द्वितीय कॉलम में दी गई है तथा हस्त - लिखित की तृतीय कॉलम में दी गई है ।

अलंकृत लिपि^४ का रहस्योद्घाटन स्विण्टन (Swinton) ने स्वतन्त्र रूप से किया और अपना शोध - लेख ऑक्सफ़ोर्ड की रॉयल सोसायटी के समक्ष २० जून १७५४ में पढ़ा । हस्त - लिखित^५ लिपि का बन्ने बारथेलेमी (Abbe Barthelemy) ने रहस्योद्घाटन पेरिस में किया तथा अपना शोध - लेख अकादमी दि इन्सक्रिप्शन्स (Academie de Inscriptions) के समक्ष १२ फ़रवरी १७५४ को पढ़ा ।

'फ० सं० - १७३' पर नीचे की ओर एक लघु अभिलेख^६ भी लिप्यन्तरण तथा अनुवाद (लेखक ने किया है) सहित दिया गया है ।

अरमायक लिपि की एक विशिष्ट शाखा : ई० पू० की पाँचवीं से तीसरी शताब्दी के अभिलेखों में दृष्टिगोचर हुई । यह अभिलेख किलिशिया (एशिया माइनर के दक्षिण में स्थित) तथा मिस्र से प्राप्त हुए । इसका उद्भव प्राचीन अरमायक से हुआ । इसका रहस्योद्घाटन नोल्डेकी (Nöldeke) ने १८९२ में किया था । इस लिपि की वर्णमाला तथा एक अभिलेख 'फ० सं० - १७४' पर दिये गये हैं ।

1. इन दोनों लिपियों का वर्णन इस पुस्तक से लिया गया है :-

De Vogüe : Syriac Centrale, Inscriptions Semitique (1858), p. - 235.

2. Chabot : Choix d' inscriptions de Palmyre (1924), p. - 202.

3. Littmann : Syriac Inscriptions (1934), p. - 57.

4. Pope, M. : The Story of Decipherment (London - 1975), p. - 94.

5. Lidzbarski : Hand buch der nord semitique Epigraphic. Part I. (1908), p. - 309.

6. Cantineu : Inventaire des inscriptions de Palmyre (1922), p. - 198.

अरमायक व पालमीरी लिपियाँ

ध्व	अरमायक	पाल०	पा० हस्त	ध्व	अरमायक	पाल०	पा० हस्त
अ	५	५	५	क	५	५	५
ब	५	५	५	ख	५	५	५
ग	५	५	५	ग	५	५	५
घ	५	५	५	घ	५	५	५
ङ	५	५	५	ङ	५	५	५
च	५	५	५	च	५	५	५
छ	५	५	५	छ	५	५	५
ज	५	५	५	ज	५	५	५
झ	५	५	५	झ	५	५	५
ञ	५	५	५	ञ	५	५	५
ट	५	५	५	ट	५	५	५
ठ	५	५	५	ठ	५	५	५
ड	५	५	५	ड	५	५	५
ढ	५	५	५	ढ	५	५	५
ण	५	५	५	ण	५	५	५
त	५	५	५	त	५	५	५
थ	५	५	५	थ	५	५	५
द	५	५	५	द	५	५	५
ध	५	५	५	ध	५	५	५
न	५	५	५	न	५	५	५
प	५	५	५	प	५	५	५
फ	५	५	५	फ	५	५	५
ब	५	५	५	ब	५	५	५
भ	५	५	५	भ	५	५	५
म	५	५	५	म	५	५	५

$\wedge \tau_1 b^{\wedge} \tau_2 z - c_1 y + h_1 x + \tau_1 \tau_2 yz$

व ल ज ह क . न ब . न त न त रे . ज द ह न द . र ब क
अर्थ :- यह कुहेलू के पुत्र अतैनातन की कब्र है।

इसी लिपि से हेब्रू लिपि का भी जन्म हुआ जिसका वर्णन इस्त्रायल की लिपियों में किया गया है ।¹

अभिलेख² का अनुवाद भी नोल्डेकी (Nöldeke) ने इस प्रकार किया है :— “I (am) W SH W N SH³ Son of A P W S J, grandson of W SH W N SH and my mother (is) A SH W L K R T J A N D When I hunt here, I eat in this place.”

हिन्दी में अनुवाद : “मैं अपवसज का पुत्र (तथा) वशवंश का पौत्र वशवंश हूँ और मेरी माँ अशवलकर्तज (है) और जब मैं यहाँ शिकार खेलता हूँ तो मैं यहीं खाना खाता हूँ ।”³

जेबेद लिपि : (कॉलम सं० - १)

जेबेद में प्राप्त होने के कारण इसका नाम जेबेद लिपि पड़ा । यहाँ एक त्रै - लिपि - अभिलेख १८७९ में प्राप्त हुआ जिस पर सीरिया, ग्रीस व अरेबिया की लिपियाँ अंकित थीं । इसकी तिथि ५१२ ई० है । इससे भी प्राचीन एडेसा (Edessa) से ४११ ई० की प्राप्त हुई है । ग्रीस के प्रभाव के कारण सेमिटिक होने पर भी इसकी दिशा बायें से दायें की ओर है । इस लिपि के अभिलेख बहुत कम हैं । (फ० सं० - १७५) ।

ऐस्ट्रेंजलो लिपि : (कॉलम सं० - २)

यह सीरिया की मुख्य लिपि ईसा की दूसरी से पाँचवीं श० तक रही है । ग्रीक भाषा में ऐस्ट्रेंजलो (Estrangelo) का अर्थ गोल होता है । गोल होने के कारण ही यह नामकरण हुआ । बाद में इसकी कई शाखायें हो गई । (फ० सं० - १८९) ।

नेस्टोरियन लिपि : (कॉलम सं० - ३)

इसका दूसरा नाम पूर्वी - सीरियाक - लिपि है । सीरिया के कुछ (लगभग एक लाख) ईसाई व यहूदी पर्शिया में वान व उर्मिया झीलों के निकट तथा मुसल (मेसोपोटामिया) में जाकर बन गये, जिस कारण उनकी लिपि पश्चिमी निवासियों से पृथक् हो गई । लगभग ई० की नवीं श० में इसमें बहुत अन्तर आ गया । (फ० सं० - १७५) ।

जैकोबाइट लिपि : (कॉलम सं० - ४ व ५)

इसकी दो शाखायें हो गईं । उत्तर के निवासी रोमन राज्य में थे और इनके पादरी जैकोबस बराडियस (Jacobus Baradacus) थे जो एडेसा के बीशप (गिर्जा का उच्च पदाधिकारी) थे । इस लिपि का विकास ईसा की छठवीं श० में हुआ । इस लिपि को पश्चिमी - सीरियाक - लिपि के नाम से भी सम्बोधित करते हैं । इसकी दूसरी शाखा उन सीरिया के निवासियों द्वारा निर्मित हुई जो पेलैस्टाइन में जाकर बस गये तथा अपना सम्बन्ध पादरी जैकोबस के गिर्जा से तोड़ दिया । इसका नया रूप ग्यारहवीं श० में दृष्टिगोचर हुआ । (फ० सं० - १८९) ।

1. Nöldeke : Beitr. Z. Semitique Sprachwiss (1904), p. - 124.

2. इस लिपि में स्वरों का प्रयोग नहीं है इस कारण अभिलेख का पढ़ने वाला स्वयं स्वरों का प्रयोग करता है । किसी का नाम ठीक ठीक पढ़ना असम्भव है । इसी कारण नोल्डेकी ने भी कोई अनुमान का प्रयोग न कर जैसा अभिलेख में था वैसा ही दे दिया ।

3. लेखक ने इसका अनुवाद किया है ।

अरमायक लिपि की एक विशिष्ट शाखा

त ख ज व ह द ज/ब अ	ब.ज.ख.21.ज.व.ह.द.ज/ब.अ
क स प ओ स न म ल क य/ज	प.प.क.2.उ.व.3.4.5.6.7.8.9
नीचे अभिलेख दिया है दाएँ से बाएँ पढ़ा जाएगा	त श र क.ख.ग.घ
ह.र.ब. र.ब. ज.श.व.प.अ. र.ब. श.न.व. श.व. ह. न. अ	क.ख.ग.घ.ङ.च.ज.ट.ड.ढ.ण.त.थ.द.ध.न.प.फ.ब.भ.म.य.र.ल.व.श.स.ह.ज.झ.ञ.ट.ड.ढ.ण.त.थ.द.ध.न.प.फ.ब.भ.म.य.र.ल.व.श.स.ह.ज.झ.ञ.
ह. न. त. ह. न. अ. द. ब. अ. अ. द. ज. स. ज. ज. क. व	क.ख.ग.घ.ङ.च.ज.ट.ड.ढ.ण.त.थ.द.ध.न.प.फ.ब.भ.म.य.र.ल.व.श.स.ह.ज.झ.ञ.
ह. न. अ. ह. र. त. श. म. ह. न. ज. ओ. र. त. अ. ब. व	क.ख.ग.घ.ङ.च.ज.ट.ड.ढ.ण.त.थ.द.ध.न.प.फ.ब.भ.म.य.र.ल.व.श.स.ह.ज.झ.ञ.

१. जेबेद, २. ऐस्ट्रेंजलो, ३. नेस्टोरियन आदि

वर्क	१	२	३	४	५	वर्क	१	२	३	४	५
अ	५	५	२	१	५	ल	५	५	५	५	५
ब	३	३	५	५	२	म	५	५	५	५	५
ज		५	५	५	५	न	५	५	५	५	५
द	५	५	५	५	५	स	५	५	५	५	५
ह	५	५	५	५	५	ले	५	५	५	५	५
व	५	५	५	५	५	प	५	५	५	५	५
ज		५	५	५	५	स		५	५	५	५
ह	५	५	५	५	५	क	५	५	५	५	५
त	५	५	५	५	५	र	५	५	५	५	५
य	५	५	५	५	५	श	५	५	५	५	५
क	५	५	५	५	५	त	५	५	५	५	५

फलक संख्या - १७५

सीरिया की कर्शुनी या मलाबारी लिपि : जब नेस्टोरियन^१ पादरी सीरिया से सातवीं श० में दक्षिण - पश्चिमी भारत के किनारे पर, जिसको मलाबार कहते हैं उतरे, उस समय वह अपनी लिपि भी लाये। इस भूमि पर मलयालम भाषा बोली जाती थी और सीरिया लिपि के २२ वर्णों द्वारा मलयालम भाषा के उच्चारण पूर्णतया व्यक्त नहीं हो सकते थे। अतः आठ नये वर्णों का आविष्कार करके इस लिपि को मलयालम भाषा के उच्चारणों के अनुसार बनाया गया। इसका प्रयोग अब केवल सन्त टॉमस के ईसाईयों द्वारा धार्मिक क्षेत्र में किया जाता है।

इसके ३० वर्ण 'फ० सं० - १७६' पर दिये गये हैं।

फ्रीजिया

इतिहास : ईसा पूर्व की लगभग तेरहवीं श० में ग्रीस देश के थ्रेस व उत्तरी मैसेडोनिया के निवासियों ने ऐनाटोलिया (आ० टर्की) के हिस्सी राज्य पर विज्वंसक आक्रमण करके फ्रीजिया^२ में बस गये और एक नई राजधानी का निर्माण किया जिसका नाम जाडियन या जाडियम रखा।

इस देश के वैभवशील काल (ई० पू० की सातवीं श०) में राजाओं का उपनाम मिडास होता था। जिनके विषय में कई प्रचलित कहानियाँ प्रसिद्ध हैं कि वे जो कुछ छू देते थे वह स्वर्ण में परिवर्तित हो जाता था। लगभग ई० पू० की चौथी शताब्दी में यह देश दो भागों में विभाजित हो गया। एक ओर की भूमि को महा - फ्रीजिया तथा हेलेस्पण्टस के ओर वाले भाग को अल्प - फ्रीजिया कहने लगे। ५६० ई० पू० में इस देश पर लीडिया (Lydia) ने, ५४६ में पर्शिया ने तथा ३३३ में सिकन्दर ने आक्रमण किये। तदुपरान्त सिल्युकिड^३ वंशीय राजाओं ने इस पर शासन किया और १३३ ई० पू० से रोम - नरेशों ने राज्य किया जो चौथी शताब्दी तक रहा तत्पश्चात् बैजेंटाइन साम्राज्य ने इसको सदा के लिए लोप कर दिया।

लिपि : लगभग पच्चीस अभिलेख जो सातवीं एवं छठी शताब्दियों के माने जाते हैं और जो दोगीलू के मकबरों से लीक (Leake) द्वारा प्राप्त किये गये। १८८३ ई० सन् में रामसे (Ramsay) द्वारा प्रकाशित किये गये। इसके अतिरिक्त लगभग सौ अभिलेख ईसा की प्रथम श० के भी प्राप्त हुए हैं। इनकी वर्णमाला 'फ० सं० - १७८' पर दी गई है।

लीकिया

इतिहास : ई० पू० की चौदहवीं शताब्दी में लीकिया का नाम मिस्र की प्रसिद्ध डेल - एल - अमरना पाटियों में दृष्टिगोचर हुआ है। आरम्भ में यह लोग सामुद्रिक व्यापारियों को तथा समुद्री किनारे के नगरों

१. ४२८ से ४३१ ई० तक कान्स्टैण्टिनोपल (Constantinople) के एक गिर्जाघर में एक उच्च सीरिया का पादरी (Syrian Patriarch) नेस्टोरियस (Nestorius) था जो एशिया माइनर के नगर एफ़ीसस (Ephesus) की धार्मिक समिति (Council) से पृथक् कर दिया गया था। नेस्टोरियस का कहना था कि ईशू की मानवीय तथा दैवीय शक्तियाँ बिल्कुल पवित्र दृष्टिगोचर होती हैं इस कारण उसने मेरी (Mary) की पदवी 'भगवान् की माता (Mother of God)' को नहीं माना। नेस्टोरियस के अनुयायी नेस्टोरियन्स (Nestorians) कहलाते थे। वे मुख्य गिर्जाघर से पृथक् होने के पश्चात् भी एक धार्मिक जाति के रूप में सीरिया व पैलेस्टाइन आदि देशों में अपनी स्थिति को स्थिर किये रहे और अब भी जीवित हैं।
२. इसको फ्रीजिया भी कह सकते हैं।
३. सिकन्दर के देहान्त के पश्चात् उसके सेनापति ही उसके विजय किये गये देशों के शासक हो गये और उनका वंश प्रचलित हो गया।

सीरिया की कर्शुनी या मलाबारी लिपि

व ०	ह १	द २	ग ३	ब ४	अ ५
अ ६	क ७	ज ८	ट ९	छ १०	झ ११
झ १२	प १३	अ १४	स १५	न १६	म १७
झ १८	ण १९	त २०	श २१	र २२	ख २३
झ २४	ष २५	व २६	ब २७	ठ २८	अ २९

फलक संख्या - १७६

एशिया साइनर के देश

फ्रीजिया १२०० से ७०० ई० पू० तक



फलक संख्या - १७७

फ्रीजिया की लिपि

अ A	ब B	ग/ज Γ	द Δ	इ/ए E
थ Θ	ज़ J	ई H.I.	क K	ल Λ
म M	न N	ओ O	प Π	र P
स Ξ	त T	ऊ Υ	फ़ Φ	ख X
प्स Ψ	व Ω			

फलक संख्या - १७८

लीकियन लिपि

अ	आ	इ	ऐ	ब	व	ग	ग	ग	द
P	Y	↑	Y	B.b.	β	Y	Y	V	Δ
(हे)ई	फ	ज	ह	थ	ज	क			
E	F	I	+X	X	I	K			
ल	म	न	मा	ना	ओ	प	स्वस		
^	~	~	X	≡	O	∩	◇		
क	र	सस	त	व	का				
X	P	Ss	T	Y	Y				

फलक संख्या - १७९

को लूट कर अपनी जन्म भूमि क्रीट को लौट जाते थे। शनैः शनैः वह एशिया माइनर के दक्षिणी किनारे पर बसने लगे और अपना एक राज्य स्थापित कर लिया जिसका मुख्य नगर एक्जेन्थस था।

लीडिया निवासी इन पर अपना अधिकार जमाना चाहते थे परन्तु जब पर्शिया ने लीडिया पर अधिकार कर लिया तब सायरस के एक जनरल हेर्पागस ने इस पर भी अधिकार कर लिया फिर भी लीकिया स्वतन्त्रता का जीवन व्यतीत करता रहा।

३३४ ई० पू० में इसे सिकन्दर ने अपने राज्य में सम्मिलित कर लिया। ४५ ई० सन् में रोम के नरेश क्लाडियस प्रथम (Claudius) ने इसको पैम्फीलिया के साथ मिला कर अपने रोमन साम्राज्य में मिला लिया। तदनन्तर यह देश लोप हो गया।

लेखन कला : इसके १५० से अधिक अभिलेख १८८४ से १८८९ के मध्य कलिन्क (Kalinka) एवं जे० फ्रेडरिक (J. Friedrich - 1901) को ई० पू० की चौथी व पाँचवीं शताब्दी के प्राप्त हुए। इसकी वर्णमाला कलिन्क और बोर्क (Bork) ने तैयार की। इसमें २९ अक्षर मिलते हैं जिसमें १७ ग्रीक लिपि से

लीकिया का एक द्विभाषिक अभिलेख

↑B↑EIP:↑PPPP↑EIP:

इ ब इ ई जअ इ र अवअ ज ई जअ

^↑TE:PP≡NPP↑TY:

म इ त ई पर ना न अ अ त ऐ

SEΔ↑REIP:PPPM N:TEΔ

स ई द इ र ई जअ प अ र म न त ई द

↑EMER↑E:ET^E↑BBE:

इ ई म ई र प प ई ई त ल ई इ ब ब ई

S↑^PΔE:↑BBE:S↑TEΔ↑E

स इ ल अ द ई इ ब ब ई स इ त ई द इ ई

ME:POBE↑^↑↑↑:

म ई प ओ ब ई इ ल इ ज इ

तथा ६ सायप्रस की लिपि से लिये गये हैं, परन्तु डेलर, सेसी तथा इवान्स मानते हैं कि वे क्रीट की लिपि से लिये गये हैं। इसकी वर्णमाला^१ 'फ० स० - १७९' पर दी गई है।

लीकिया का एक द्विभाषिक अभिलेख : लीकिया से एक द्विभाषिक अभिलेख प्राप्त हुआ, जिस पर यूनानी तथा लीकियन लिपि अंकित थी। इसको कलिनक (Kalinka) ने अपनी पुस्तक^२ में प्रकाशित किया। इसको जे० फ्राइदरिख (J. Freidrich) की पुस्तक^३ से लिया गया है। इसका लिप्यन्तरण तथा अनुवाद कलिनक ने किया है। इसका अंग्रेजी^४ का पाठ फुटनोट में दिया है जिसका हिन्दी अनुवाद लेखक ने इस प्रकार किया है :— “यह स्मारक अब परमेना के पुत्र सिदेरिज ने अपने लिये, अपनी पत्नी तथा अपने पुत्र पुबीले के लिए बनवाया (है)।”

लिप्यन्तरण :— “इविईजा : इरावाजीजा :

मिती : प्रन्नाअतै : सीदिरीजा :

पारमीन [ई] : तीदिईमीरपी :

ईतलीइब्बी : सिलादी : इब्बी :

सितीदिईमी : पोबीलिजिई :”

इस लिपि की दिशा बाईं ओर से आरम्भ होती है।

लीडिया

इतिहास : सर्वप्रथम लीडिया का नाम अशुर बनीपाल के लेखों में ६६० ई० पू० में लुड्डी के नाम से मिलता है। फ्रीजिया के अन्तिम दिनों में लीडिया के निवासियों ने सत्ता को अपने हाथ में लेकर एक बड़ा राज्य स्थापित किया जिसकी राजधानी सार्डिस थी। हेरोडोटस के अनुसार जायगीज (Gyges) सर्वप्रथम नरेश था जिसने राजगद्दी पर ६८५ ई० पू० में अधिकार करके लीडिया की नौसेना को शक्तिशाली बनाया। जायगीज और सिमेरी मिल गये और असीरिया के विरुद्ध एक क्रान्ति कर दी जिसके फलस्वरूप ६५२ ई० पू० के एक युद्ध में जायगीज वीरगति को प्राप्त हुआ। तत्पश्चात् उसका पुत्र आर्डिस शासक बना जिसने निनेवः से मित्रता कर ली। तदनन्तर आर्डिस (Aryds) का पौत्र अलियातीज (Alyattes) सिंहासनारूढ़ हुआ जिसने ५७ वर्ष राज्य किया तथा कई छोटे राज्य अपने विशाल राज्य में मिला लिये। इस राज्य का अंतिम नरेश अलियातीज का पुत्र क्रोशस (Croesos) था जो बहुत धनवान था। इसी ने आदान - प्रदान की सुविधा के लिए मुद्रा पद्धति को जन्म दिया।

५८५ ई० पू० में लीडिया व लीडिया के राज्यों ने अपनी सीमा हेलिस (Halis) नदी को बना लिया, परन्तु जब मायरस को ज्ञात हुआ कि क्रोशस ने सीमा उल्लंघन कर दी तो उसने क्रोशस को परास्त कर पहले तो बंध करने का निश्चय किया फिर बाद में ५४७ में उसको अपना मन्त्री बना लिया। अब लीडिया की राजधानी सार्डिस पशिया की पश्चिमी राजधानी बन गई। सिकन्दर की मृत्यु के पश्चात् एक - आँख - वाला

1. Friedrich, J. : Kleinasiatische Sprachdenkmäler (1901), p. - 157.

2. 'Tituli Lyciae Lingua' No. 117.

3. 'Lycian and Lydian Alphabet' - Kleinasiatische Sprachdenkmäler, p. - 157.

4. "This monument, now he built (it), (is) Siderija, son of Parmena, for ownself and his own wife and the son, Pubiele".

लीडिया तथा फ्रीजिया

लीडिया

७०० से ४५० ई.पू. तक

सीमा

8205.50

५३०५५

र
ग
ह
क



फलक संख्या - १८१

जनरल ऐण्टोगोनस पूरे एशिया - माइनर का स्वामी बन गया परन्तु द्वेष के कारण ३०१ ई० पू० में इसका वध कर दिया गया । तत्पश्चात् ऐकियस सार्डिस का नरेश बन गया ।

लिपि : इस लिपि का उद्भव ग्रीस द्वारा लगभग ई० पू० की छठी शताब्दी में हुआ । इसमें २५ अक्षर हैं जिसमें १३ तो ग्रीक लिपि के हैं । ९ अक्षरों का निश्चय नहीं हो सका है ।

इस लिपि का सर्वप्रथम पाँच अक्षरों का अभिलेख आर्तेमिसदेवी के मन्दिर से प्राप्त हुआ जो एफिसस में स्थित था । परन्तु आज नष्ट - भ्रष्ट पड़ा है । इसके प्राप्तकर्ता वुड (Wood) हैं जिनको यह १९७३ में मिला था ।

१९१० और १९१३ के बीच एक अमरीका की साहसी टोली ने सार्डिस में उत्खनन किया जिसमें ३० से अधिक लम्बे लम्बे अभिलेख प्राप्त हुए, जिनको लिटमन और वकलर ने १९१६ और १९२४ में प्रकाशित किया ।

आरम्भ में लिटमन ने इन अभिलेखों को पढ़ने का प्रयास किया । इसके पश्चात् सेसी ने १९२५ में, सोमर ने १९२७ में तथा ब्रांडेस्टीन ने १९२९ में इस लिपि के पढ़ने के प्रयास को प्रगति प्रदान की ।

इस लिपि के एक अभिलेख पर अरामायक लिपि भी अंकित थी जिस कारण इसके रहस्योद्घाटन का कार्य सरल हो गया । इस द्वि - लिपि अभिलेख का काल ई० पू० की पाँचवीं श० निर्धारित किया गया है । इसकी दिशा दायें से बायें थी अन्यथा और अभिलेख बायें से दायें प्राप्त हुए हैं । (फ० सं० - १८२ नीचे की ओर) ।

इसकी वर्णमाला^१ 'फ० सं० - १८२' पर दी गई है ।

अभिलेख^२ का लिप्यन्तरण इस प्रकार है :—

‘वाकीवालीज अरतीम्यू नान्नास’

हिन्दी अनुबाध : ‘नान्नास (सुत) वाकीवालीज (ने यह मूर्ति) आर्तेमिस (देवी) को (अर्पण करके स्थापित की है) ।’

कैरिया

इतिहास : कैरिया^३ (कारिया) तुर्कीके दक्षिणी तट पर स्थित एक प्राचीन देश था । यह टारस पर्वत - माला की उच्च समभूमि पर, ८००० फुट ऊँचाई पर बसा था । इसके शासक का नाम ललेगीज था । लगभग तेरहवीं श० ई० पू० में ग्रीस के डोरियन्स ने अपने अधीन कर लिया । तत्पश्चात् यह लीडिया के अधीन रहा । इसका अन्तिम शासक पिखोडारस (Pixodarus) था, जिसका वध करके पर्सिया के एक सेना - नायक ओरोंतोबतीज (Orontobates) ने अपने अधीन कर लिया । इसकी राजधानी हाली - कार्नेसस थी ।

1. Littmann : Lydian Inscriptions (1916), p. - 251.
2. Buckler : 'Lydian inschriften' - Journal of Sardis. Vol. VI, Part II, No. 20 (1924), p. - 197.
3. कैरिया के निवासियों को पर्सिया निवासों कुर्का (मुर्गा) कहा करते थे क्योंकि कैरिया निवासी कलपीदार टोपी पहनते थे ।

लीडिया की लिपि

अ	ब	ग	द	ए	फ़	ज	हे
A	B	1	1	√	8	F	Y
प	ई	क	ल	म	न	क्स	ओ क
+		KK	11	1	1	±	0 ↑
र	स	त/ट	व(w) २	व(v)	यु	आ	
9	3	T	Y	D	u	Y	M

इसी लिपि का एक प्रतिदर्श

F	1	A	Y		K	A	8
ज	ई	ल	अ	व	ई	क	अ ब
3	A	Y	Y	A	Y	Y	Y
स	अ	न	न	अ	न	यु	म ई त र अ

फलक संख्या - १८२

ई० पू० की चौथी शताब्दी के अन्तिम काल में सिकन्दर (Alexander) ने इसको परास्त कर यहाँ की एक राजकुमारी आदा (Ada) को रानी बना दिया ।

कुछ दिनों पश्चात् यह सीरिया के साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया गया । तदनन्तर यह रोमन राज्य के अधीन रह कर लोप हो गया ।

लिपि : इसकी भाषा भारोपीय नहीं है । सर्वप्रथम सी० टी० न्यूटन (C. T. Newton) ने हैलीकानैसस में १८५७ में उत्खनन किया । तदनन्तर डब्ल्यू० आर० पैटन (W. R. Paten) ने असारलिक में तथा यफ़० विन्टर (F. Winter) ने इदरियास में उत्खनन किया । इसकी लिपि यूनानी लिपि से मिलती — जुलती है ।

इस लिपि के सात अभिलेख अबूसिम्बल की रामेसीज द्वितीय की विशाल मूर्तियों की जाँघों पर उत्कीर्ण^१ पाये गये । यह अभिलेख कैरिया (कारी) के भूतक सैनिकों ने मिस्र के शासक सामथेक द्वितीय (Psamthek II — ५९४ — ५८८ ई० पू०) के शासनकाल में उत्कीर्ण किये थे । इसके अन्य अभिलेख नूबिया तथा इथियोपिया से भी प्राप्त हुए । इसके अतिरिक्त बोसार्ट को कैरिया के छोटे से नगर कोनस से, कुछ सेसी^२ को तथा कुछ लेपसियस को प्राप्त हुए, जो उसने १८४९ व १८६० में प्रकाशित^३ किये । यह सब अभिलेख भिन्न भिन्न पुस्तकों में प्रकाशित हुए । यल० रावर्ट ने भी अनेक अभिलेख प्रकाशित^४ किये । बार्क ने इसकी वर्णमाला^५ प्रकाशित की (फ० सं० — १८३) ।

सिडेटिक भाषा

परिचय : सिडे (आधु० एस्की अदालिया — Eski Adalia) एक प्राचीन नगर — राज्य था, जो तुर्की के दक्षिण — पश्चिमी तट पर पम्फ़ेलिया के भू — भाग में स्थित था । एक यूनानी इतिहासकार अर्यन (Arrian) के अनुसार यह ई० पू० की छठवीं श० में अपनी समृद्धि शिखर पर था । चौथी श० में सिकन्दर महान् ने इसको अपने अधीन कर लिया । भावी शताब्दियों में किलीशिया के समुद्री — डाकू इसमें लूटपाट मचाते रहे तत्पश्चात् यहूदियों ने अपने अधिकार में रखा । शनैः शनैः यह इतिहास के पृष्ठों से लोप हो गया ।

लिपि : यहाँ की भाषा एक भिन्न प्रकार की थी जो किसी अन्य भाषा से सम्बन्धित नहीं थी । इस लिपि का पता उन्नीसवीं श० में कुछ लघु — अभिलेखों द्वारा लगा, जो सिक्कों पर अंकित पाये गये, जिनका काल विद्वानों ने ई० पू० की पाँचवीं व चौथी श० माना है । एक सिक्के पर द्विभाषिक — ग्रीक, सिडेटिक — लघु — अभिलेख अंकित था । यह १९१४ में सिडे के उत्खनन में प्राप्त हुआ । इसका नाम 'आर्तेमोन-अभिलेख' के नाम से ज्ञात हुआ । एक अन्य अभिलेख, जो थोड़ा लम्बा था, यह भी द्विभाषिक था, उत्खनन से १९२९ में प्राप्त हुआ । यह दोनों उत्खनन कार्य इटली के दो विद्वानों — परीबेनी (Paribeni) तथा रोमनेली (Romanelli) द्वारा सम्पन्न हुए ।

1. "Sprachdenkmäler, (Berlin 1932), p. — 109.
2. Steinberr, 'Zu der neuen Karschen Inschriften' Jahrb. F. Klenas. Forsch. 1. (1951) p. — 328.
3. Friedrich, J. : Entziffering Ver Schollener Schriften und Sprachen (Berlin 1954), p. — 92.
4. 'Inscriptions inedites en langue Carienne in the J. Hellenica recueil d' epigraphie VIII (1950), p. — 5.
5. 'Die Schrift der Karer' — Arch. F. Schreib und Buchwesen IV (1930), p. — 14.

कैरियन (कारो) लिपि के अक्षर

अ	A A P A λ	प	∩ ∇ Φ	संयुक्ताक्षर	
इ	⊕ ⊕ E ⊕ III	च	W	को	Ω
ई	III	र	P R 9 9 0	ती	↑
ए	□	ह	X ✕	तौ	⌞ ⌞
उ	□ □	स	M M M	पै	⚡ ⚡
ऊ	V Y Y Y	ब	B ∨	रै	⋈
व	F F F X	थ	⊕ ⊗	रौ	⌞ ⌞
क	K ✕	त	+ ↑ T T	मौ	⌞ ⌞
ख	↑ ↑ ↑ ↑	द	Δ ज) (जा	□
म	M	ख	V Y Y Y	वौ	Y ∪ B
न	N N Y	ख	X ग C	फ़	d b
औ	O O	ज	I नं H	क़	< [()

पश्चिम एशियाई देशों की लेखन कला]

रहस्योद्घाटन : इस लिपि के पढ़ने के प्रयास निम्नलिखित विद्वानों ने किये :—

१८६१ में : वाडिंगलन (Waddington) ने असफल प्रयास किया ।

१८७७ में : फ्राइड (Fried) ने ।

१८८३ में : लैंडर (Lander) ने ।

१८८७ में : सिक्स (Six) ने ।

ये सभी लोग असफल रहे ।

१९३२ में : बोसार्ट ने द्विभाषिक अभिलेख^१ को पढ़ लिया । पढ़ने का निष्कर्ष एक पुस्तक^२ में प्रकाशित हुआ ।
इसने सर्वप्रथम ग्रीक अभिलेख पढ़ा, तब सिडेटिक पढ़ी । इसी का लिप्यन्तरण तथा अनुवाद
'फ० सं० - १८४' पर दिया गया है, जो अंग्रेजी के पाठ से लिया गया है ।

हिन्दी अनुवाद :—'अपोलोनियस के पुत्र अपोलोडोरस के पुत्र अपोलोनियस^३ ने अपनी मूर्ति को
भगवान् के लिए (अर्पित) स्थापित किया (है) ।'

सिडेटिक लिपि - पाँचवीं श० ई० पू०

499 K 9 K I A 9 4 A 9 K

इ न उ ल उ प स र उ द र उ प

X 4 ↑ 4 A 4 N 4 < 1 7 X

ओ ए अ र अ म स अ ओ

X 4 9 9 K 9 K

ओ इ न उ ल उ प

फलक संख्या - १८४

1. Bossert : Belleten No. 14. Fig. 2. (1933).
2. Friedrich, J. : Entzifferung verschollener Schriften und sprachen (Berlin - 1954), p. - 95.
3. 'Apollonius (son) of Apollodorus (son) of Apollonius, set up this image of himself for the God'.

यजीदी लिपि -- उन्नीसवीं श०

ध्व०	अ०	ध्व०	अ०	ध्व०	अ०	
अ	।	र	П	फ़	//	मप३७ प>।
ब	V	ज़	<	व	└	श घ प ला य व अ
प	3	श	XX	क़	T	10>VJΔPLO
त	└	स	Ш	क	ε	महवबल्क ख घ म ह
स	<	श	П	ग	✕	0> 0Ш>> 7ध
ज	Δ	स	+	ल	J	हवअह स व व अ कल
च	Δ	झ	X	म	U	Ш>> 7<U0ε
ह	▽	त	3	न	U	स व व अ अन ह क
ख	Δ	तज़	++	व	>	П।U0U+ >Vप
द	□	ऐन अ	J	ह	0	र अन ह ग ल म अ व ब य
ज़	P	ग	#	य	प	

यज़ीदी लिपि

इतिहास : यज़ीदी¹ एक मतावलम्बी लोग हैं जिनकी गणना लगभग पचास सहस्र है। यह लोग ईरान के मोसुल नगर के निकट निवास करते हैं। इनका अपना नाम तो 'दसनी' है परन्तु अन्य पड़ोसी इनको यज़ीदी के नाम से सम्बोधित करते हैं। यज़ीदी पर्शियन शब्द 'यज़दान' (देवता) से बना है। यह मत मज़्दावाद की एक शाखा है जिसमें इस्लाम व ईसाई धर्मों का मिश्रण है।² इन लोगों का विश्वास है कि शैतान (डेविल) ने इस संसार का निर्माण किया जो सर्वशक्तिमान् है। खुदा की इबादत को पाप समझते हैं। वह अपने इष्ट का नाम नहीं बताते परन्तु वे मयूर³ को अपने देवता का प्रतिनिधि मानते हैं।

लिपि : यज़ीदी कुर्दिश⁴ भाषा — भाषी हैं। इन्होंने अपनी लिपि का आविष्कार पर्शियन लिपि से लगभग अठारहवीं श० के अन्त में किया। इसमें ३३ अक्षर हैं जो 'फ० सं० — १८५' पर दिये गये हैं। इसका रहस्योद्घाटन बिटनर (Bittner) ने १८८० में किया जो १९१३ में प्रकाशित हुआ। इसकी वर्णमाला भी बिटनर ने तैयार की तथा अभिलेख का लिप्यन्तरण⁵ भी किया परन्तु उसके अर्थ स्पष्ट नहीं हो सके।

पठनीय सामग्री

- | | |
|----------------------------|--|
| <i>Allen, A. B.</i> | : Romance of Alphabet (1937). |
| <i>Arkwright, W.</i> | : Lycian Epitaphs (Anatolian Studies — 1923). |
| <i>Burckhardt, J. L.</i> | : Travels in Syria and the Holy Land (1822). |
| <i>Burton, R.</i> | : Unexplored Syria (1872). |
| <i>Buresch, K.</i> | : Aus Lydien (1898). |
| <i>Cooke, G. A.</i> | : A Text Book of North Semitic Inscriptions (1903). |
| <i>Cook, S. A.</i> | : Glossary of Aramaic Inscriptions (1903). |
| <i>Cowley, A. E.</i> | : Aramaic Papyri of the Fifth Century B. C. (1923). |
| <i>Fraser, J.</i> | : Phrygian Studies (Transaction of the Cambridge Philological Society — 1913). |
| <i>Gyles, Mary Francis</i> | : Ancient World. |
| <i>Harrer, A.</i> | : Studies in the History of the Roman Province of Syria (1915). |
| <i>Hitti, P. K.</i> | : History of Syria (1951). |
| <i>Hogarth, D. C.</i> | : Cambridge Ancient History Vol. II and III (1924). |

1. Menant, L. : Les Yezidis (1892), p. — 173.
2. Lescot, R. : 'Enquete sur les Yezidis de Syrie et du Diebel Sindjar' — Memoire de l' institute francaise. de Damas. V. Heirut (1938), p. — 221.
3. Empson, R. H. W. : The Cult of Peacock Angel (1928), p. — 257.
4. Anastase, P. and Marie : 'La deconverte recente des deux livres Sacres des Yezids' Journal 'Anthropos VI (1911), p. — 109.
5. Bittner : 'Die heiligen Bücher der Jeziden Oder Teufelsanbeter', Denkschr. d. Wiener Akadami No. 55. (1913), p. — 285.

- Jansen, H.* : Sign Symbols and Scripts (1965).
Kalinka, E. and Heberdey, R. : Tituli Asiae Minoris (1901).
Lidzbarski : 'Epigraphisches aus Syrien' Phil - History (1924).
Littmann, E. : Syriac Inscriptions (1934).
Luckenbill, D. D. : Ancient Records of Assyria and Babylonia - 2 Vols. (1927).
Maspero, G. : Dawn of Civilization, p. - 232, (1892).
Nöldeke : Veröffentlicht - Ungen (1939).
Perrot : Cities and Bishoprics of Phrygia (1897).
Sayce, A. H. : The decipherment of the Lydian Language (American Journal of Philology - 1925).
Schiffer, S. : Die Aramaer (1911).
Schubert, R. : Cambridge Ancient History Vol. III.
Swain, J. Edger : History of World Civilization.
Treuber, O. : Geschichte der Lykier.
Woolley, Sir Leonard : History Unearthed.

अरेबिया

इतिहास

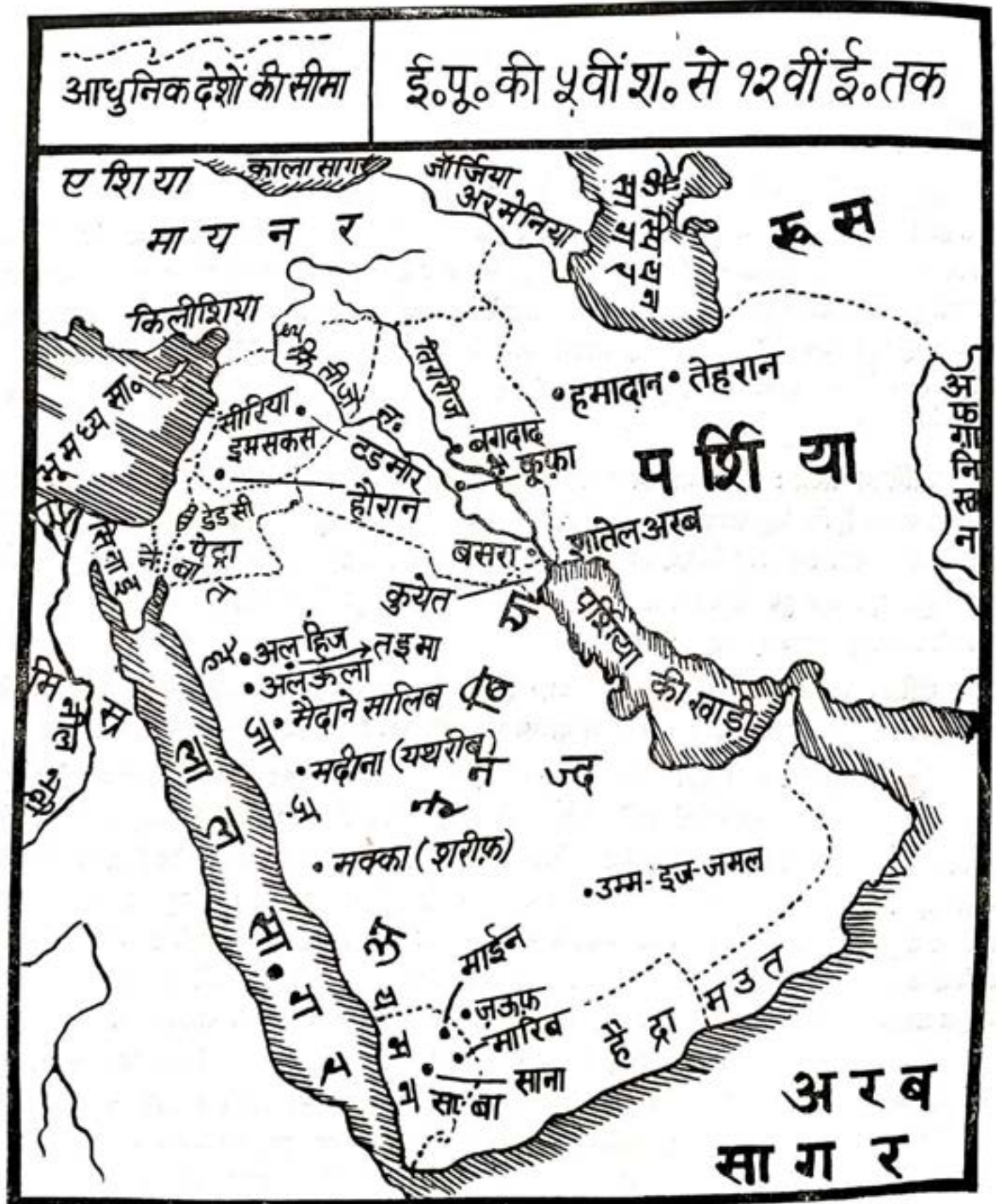
हेब्रू भाषा में इसका नाम अराबाह अर्थात् रेगिस्तान तथा प्राचीन फ़ारसी में इसका नाम अरबाया था जिनके द्वारा आधुनिक नाम अरेबिया पड़ा। इसका क्षेत्रफल भारत से कुछ ही कम है परन्तु जनसंख्या केवल दो नगरों - बम्बई व कलकत्ता - के बराबर है। आरम्भ काल में यातायात के साधन न होने से यह देश कभी एक सूत्र में न बँध सका। जीवनोपाजन के साधनों की कमी के कारण लूटमार तथा व्यापार प्रचलित कार्य थे। दूर दूर लोग बसे थे जहाँ कुछ साधन प्राप्त थे। इस कारण यहाँ छोटे बड़े बहुत से राज्य थे। अरेबिया का इतिहास आरम्भ काल में इन्हीं राज्यों का इतिहास रहा परन्तु इस्लाम आने के पश्चात् इस देश ने बहुत उन्नति की।

मीनियन राज्य : इसको माईयन राज्य के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है। अरबी विशेषज्ञों द्वारा पता लगता है कि यह राज्य १२०० से ६५० ई० पू० तक बड़ा समृद्ध रहा और इसका केन्द्र यमन के जल्ल में स्थित था। इस राज्य में २५ शासकों ने शासन किया। इस बात का प्रमाण अल - ऊला के अभिलेखों से प्राप्त हुआ है। ई० पू० की दसवीं से सातवीं श० तक मुकारिब - पुजारी - शासकों का राज्य रहा जिनकी राजधानी सिरवाह (आ० खरीबा) थी।

सैबियन राज्य : इस राज्य का काल ६५० ई० पू० से आरम्भ होता है और इसके शासक सब के राजा कहलाते थे। इनकी राजधानी मारवी या मारिब थी। इस राज्य ने ११५ ई० पू० तक शासन किया।

हिमारी राज्य : इन हिमारी लोगों (Himyarites) का शासन ११५ ई० पू० से आरम्भ होता है। इनके शासन काल में निरन्तर लड़ाई झगड़े होते ही रहे। इस राज्य के निकट दो और राज्य, कताबान और हैदरामौत थे। इस राज्य का आरम्भ सैबियन लोगों के स्थानान्तरण से हुआ। भारत और मिस्र के बीच जब व्यापार होता था तो सब के निवासी ही माल को थल के रास्ते पहुँचाया करते थे। परन्तु जब टॉलेमी शासक भारत से समुद्री - मार्ग से सीधा माल मंगवाने लगे तो सब के लोग इधर उधर बिखर गये। तत्पश्चात् अरेबिया के दक्षिणी - पश्चिमी कोने पर निवास करने वाले हिमारी लोगों ने राज्याधिकार प्राप्त कर लिया। उपर्युक्त झगड़ों के कारण कताबान राज्य समाप्त हो गया। ई० पू० की प्रथम श० में रोमन राज्य की दृष्टि इस ओर पड़ी और शासन करने की प्रबल इच्छा के कारण रोम के कारण सम्राट् ने एक फौजी-टुकड़ी को ऐलियस गैलस (Aelius Gallus) के अन्तर्गत २४ ई० पू० में भेजी। इसके पथ - प्रदर्शकों ने उसको गलत रास्ते पर ले जाकर छोड़ दिया जिसके कारण पूरी टोली मृत्यु का ग्रास बन गई। अब हिमारी राज्य के झगड़े एबीसीनिया के राज्य से, जो अफ्रीका देश में स्थित था, चलने लगे। हिमारी शासकों ने यहूदी धर्म (Judaism) अपना कर एबीसीनिया से दुश्मनी कर ली। इस कारण हिमारी राज्य ने पर्शिया राज्य की सहायता प्राप्त करके यह युद्ध समाप्त किया। एबीसीनिया राज्य को ईसाई उकसाते थे क्योंकि इसके राजा ने ईसाई धर्म अपना लिया था। ११६ ई० में पर्शिया का एक प्रान्तपाल नियुक्त कर दिया गया था।

प्राचीन अरेबिया



पश्चिम एशियाई देशों की लेखन कला]

हीरा राज्य : ईसा की तीसरी शताब्दी में तिहामा और नज्द के अरब - फ़रात नदी (R. Euphrates) और अरेबिया के मध्य बस गये । आरम्भ में तो यह लोग पर्यटनशील होने के कारण डेरों में रहते थे परन्तु बाद में इन लोगों ने अपने घर का निर्माण कर लिया । इन लोगों ने ईसाई धर्म अपना लिया । इनकी धार्मिक भाषा सीरियाक थी परन्तु बातचीत की भाषा अरबी थी । पाँचवीं श० में यह लोग नेस्टोरियन (Nestorians) हो गये ।

इस्लाम राज्य : इस्लाम संसार में ऐसी जगह आरम्भ हुआ जहाँ परिस्थितियोंवश सभ्यता कम तथा असभ्यता अधिक थी । आपस में झगड़े होते थे । समाज कबीलों में विभाजित था । प्रत्येक कबीला अपने इष्ट की पूजा करता था । एकता तथा प्रेम आदि का नाम न था । स्वार्थपूर्ति के लिए हत्या करना साधारण बात थी । ऐसी परिस्थितियों में एक महान् विचारक एवं सुधारक, सर्वगुण सम्पन्न व्यक्ति आया जो बाद में पैगम्बर (पैगाम लाने वाला, खुदा से) हजरत मोहम्मद (रसूल अल्लाह सलल्लाहो अलहिक्सल्लम) के नाम से प्रसिद्ध हुआ । आपका जन्म मक्का में ५७० ई० में हुआ । जब तक आप इस्लाम धर्म का प्रचार करते रहे (इस्लाम का अर्थ है समर्पण करना - अर्थात् खुदा की आज्ञा व इच्छा के समक्ष समर्पण) तब तक यह केवल धर्म कहलाया परन्तु जब हजरत ने मदीना को कूच किया, मक्का निवासियों के साथ कई युद्ध हुए, तब से मदीना इस्लाम का, अर्थात् इस्लाम राज्य का सर्वप्रथम केन्द्र हो गया । आपके स्वर्गवास हो जाने के पश्चात् चार खलीफ़ा हुए ।

१. हजरत अबू बकर	६३२ - ६३४ तक
२. ह० उमर	६३४ - ६४४ तक
३. ह० उसमान	६४४ - ६५६ तक
४. ह० अली	६५६ - ६६१ तक

हजरत मोहम्मद के काल में ही कई राज्यों ने आत्मसमर्पण कर दिया था । तत्पश्चात् कई देशों ने समर्पण किया अर्थात् इस्लाम धर्म अपनाया । इसके कारण खलीफ़ाओं ने युद्ध भी किये ।

कूफ़ा का नगर (ईराक़ में) ६३५ में केवल एक सैनिक कैम्प था जो बाद में इस्लाम की शिक्षा का एक विश्वविख्यात केन्द्र हो गया । तत्पश्चात् इस्लाम के मानने वालों में आपस में केवल सत्ता प्राप्त करने के लिए युद्ध आरम्भ हो गये । बाद में मंगोलों से तथा ईसाईयों से युद्ध होते रहे । शनैः शनैः कई देशों पर इस्लाम का राज्य स्थापित हो गया । स्पेन से मंगोलिया तक इस्लाम के राज्य का विस्तार हुआ । इधर भारत में (अकबर के काल में) इस्लाम छा गया और दक्षिण - पूर्व - एशिया के देशों तक पहुँचा ।

ईसा की सातवीं शताब्दी के मध्य हजरत मोहम्मद के दो वंशों (बनी उम्मिया अर्थात् उम्मिया का वंश तथा बनी अब्बास अर्थात् अब्बास का वंश) में शत्रुता हो गई । एक दूसरे के इतने रक्त के प्यासे हुए कि चुन चुन कर बध करवाये गये । इस्लाम के तीन बड़े राजनैतिक केन्द्र हो गये जहाँ से मुस्लिम संस्कृति का सूर्योदय होने लगा । पहला ईराक़ में बग़दाद, मिस्र में काहिरा तथा स्पेन में काडोबा या कारतूबा । इन्हीं केन्द्रों से इस्लाम ने संसार को (मुख्यतया पश्चिमी देशों को) बीजगणित (अलजेब्रा) (अल - जब्र Algebra), खगोलशास्त्र (जो इन्होंने भारत से सीखा - नवीं शताब्दी में) तथा अंकगणित आदि प्रदान किये ।

अन्त में ईसाईयों और मंगोलों ने इनकी संस्कृति को बहुत क्षति पहुँचाई । बग़दाद को, जो कभी एक सुन्दर नगर था, १२५८ में मंगोलों ने नष्ट - भ्रष्ट करके एक ढेर बना दिया । आपस के युद्धों ने भी इस्लाम



की संस्कृति को बड़ी हानि पहुँचाई। मुसलमानों ने जितना विदेशों को प्रभावित किया उतनी तीव्रता से वह अपनी जन्म भूमि पर कार्य न कर सके, क्योंकि उनका विशाल देश एक रेतीला देश है, जहाँ यातायात के साधन नहीं पनप सके।

अरेबिया में इस्लाम के पूर्व कई राज्य तथा अनेकों कबीले (जातियाँ) थे। प्रथम महायुद्ध के पूर्व लगभग पूरा अरब देश तुर्कों के अन्तर्गत था। इसमें दो मुख्य अधीन राज्य — नज्द जो फारस की खाड़ी के किनारे था तथा दूसरा हेजाज, जो लाल सागर के किनारे पर था। एक तीसरा मुख्य राज्य इसके पश्चिम दक्षिण में यमन का था। नज्द का अमीर इब्न सऊद स्वतंत्र होने का प्रयास करने लगा। यह अमीर एक इस्लाम की सुधारक शाखा 'वाहबी' का मतानुयायी था। इस शाखा का संस्थापक (१८वीं शताब्दी में) अब्दुलवहाब था। अब्दुलवहाब ने मुस्लिम सन्तों के मजारों पर सिद्धा करने के विरुद्ध आवाज उठाई थी। वह यह मूर्तिपूजन के समान समझता व मुसलमानों को समझाता था। इस कारण वहाबियों तथा अन्य मुसलमानों में द्वेष व झगड़े उत्पन्न हो गये।

प्रथम महायुद्ध के काल में ब्रिटेन ने अपना जाल यहाँ फैलाया। टर्की के विरुद्ध अरेबिया के राज्यों को लालच दिया तथा अनेकों प्रकार के वचन दिये। युद्ध के पश्चात् अवसर पाकर इब्न सऊद ने हेजाज के शासक हुसैन के विरुद्ध षड्यन्त्र रचा और मक्का को हाथ में लेकर वहाँ के मजारों को, इस्लाम से बुराइयाँ निकालने के बहाने, नष्ट किया। अरब व अन्य देशों के मुसलमानों ने इस पवित्र कार्य का समर्थन किया और इस प्रकार इब्न सऊद अरेबिया के एक बड़े खण्ड का शासक बन गया।

आज अरेबिया का देश कई देशों में विभाजित हो गया है। अब एक राज्य दूसरे राज्य को हड़प नहीं सकता। इस वैज्ञानिक युग में जहाँ वैमनस्य फैल रहे हैं, झगड़े भी हो रहे हैं, वहाँ अब बड़े देशों द्वारा छोटे देशों को उपनिवेश बनाने की प्रथा का भी अन्त हो रहा है तथा जनता जनार्दन में एकता का भाव भी जागृत हो रहा है। वह देश निम्नलिखित हैं :—

१. सऊदी अरेबिया; २. यमन; ३. दक्षिणी यमन; ४. कटार; ५. कुयेत; ६. मसकट — ओमान; ७. ट्रूशल ओमान तथा ८. जार्डन (दक्षिणी भाग)।

अरेबिया की लिपियाँ

नब्ती लिपि : नबात देश की आयु लगभग ३०० वर्ष की रही। यह सिनाइ के पूर्व में तथा अरेबिया के उत्तर — पश्चिम में स्थित था। मध्य अरेबिया में ई० पू० की पाँचवीं श० में एक पर्यटनशील जाति निवास करती थी। इसके मुख्य केन्द्र तैमा तथा मैदाने — सालिब थे। इन्होंने सिनाइ की ओर स्थानान्तरण किया और एडोम के निवासियों से युद्ध करके तथा उनको वहाँ से निकाल कर स्वयं बस गये। पेद्रा की एक पहाड़ी पर दुर्ग का निर्माण किया। अपना व्यापार तथा कुछ लूटमार का कार्य अपनी उदरपूर्ति के लिए आरम्भ कर दिया।

३१२ ई० पू० में सिकन्दर के एक सेनापति एण्टीगोनस ने इस दुर्ग पर तथा पेद्रा के नगर पर आक्रमण किया। तत्पश्चात् जब यह जाति सम्पन्न होने लगी तो इस जाति के लोगों ने एक राज्य का निर्माण किया। इसकी स्थापना १६९ ई० पू० में हुई तथा पेद्रा इसकी राजधानी बना। ८५ ई० पू० में इस नबात देश के शासक अरतास ने हौरन (Hauran) तथा सीरिया की राजधानी दमिश्क या डैमसकस (Damascus) को कुछ समय के लिए अपने अधीन रखा। १०६ ई० सन् में रोम देश ने इस पर आक्रमण किया तथा भविष्य के लिए इसको इतिहास के पृष्ठों से लोप कर दिया। परन्तु इस देश की लिपि जीवित रही।

यहाँ की लिपि का नामकरण नवात देश से नब्ती हुआ। इसका विकास अरमायक द्वारा हुआ और यही आगे चल कर अरबी की जन्मदात्री बनी। जे० यल बर्कहार्ड (J. L. Burckhardt) ने सर्वप्रथम १८३० में पेट्रा के दर्शन किये। १८३५ में इटली का एक पर्यटक कार्लो गुरमानी (Carlo Gurmani) तैमा पहुँचा। १८३७ में वेल्स्टेड (Wellsted) नक्व अलहिजर से कुछ अभिलेखों की छापें लाया। १८७५ में एक ब्रिटेन निवासी यात्री चार्ल्स डाउटी (Charles Doughty) अलहिजर आया और इसने चट्टानों पर उत्कीर्ण लेखों की प्रतिलिपियाँ तैयार कीं। इस लिपि के कुछ अभिलेख जेबेल द्रुज से भी प्राप्त हुए। इनको एमिल रोडिगर (Emile Rodiger) ने पढ़ा जो एक पुस्तक^१ में प्रकाशित हुआ।

इस लिपि के अक्षर^२ 'फ० सं० - १८८' पर दिये गये हैं, तथा उसका एक प्रतिदर्श 'फ० सं० - १८८क' पर दिया गया है। यह प्रतिदर्श एक द्विभाषिक - ग्रीक, नब्ती - अभिलेख से लिया गया है। यह हीरन में दि वोग (De Vogüe) तथा वॉडिंगटन (Waddington) को १८६१ में प्राप्त हुआ। इसका काल ई० पू० की अन्तिम शताब्दी निर्धारित किया गया है। इसका अंग्रेजी का अनुवाद^३ फ्रुटनोट में दिया गया है जिससे हिन्दी का अनुवाद लेखक ने किया है।

हिन्दी अनुवाद : "(यह) स्मारक हमरात (की याद में) उदयनात के (द्वारा) बनाया गया, जो उसका देवता (स्वरूप) था"।

नब्ती लिपि का प्रतिदर्श

𐤀 𐤁 𐤂 𐤃 𐤄 𐤅 𐤆 𐤇 𐤈 𐤉 𐤊 𐤋 𐤌 𐤍 𐤎 𐤏 𐤐 𐤑 𐤒 𐤓 𐤔 𐤕 𐤖 𐤗 𐤘 𐤙 𐤚 𐤛 𐤜 𐤝 𐤞 𐤟 𐤠 𐤡 𐤢 𐤣 𐤤 𐤥 𐤦 𐤧 𐤨 𐤩 𐤪 𐤫 𐤬 𐤭 𐤮 𐤯 𐤰 𐤱 𐤲 𐤳 𐤴 𐤵 𐤶 𐤷 𐤸 𐤹 𐤺 𐤻 𐤼 𐤽 𐤾 𐤿 𐥀 𐥁 𐥂 𐥃 𐥄 𐥅 𐥆 𐥇 𐥈 𐥉 𐥊 𐥋 𐥌 𐥍 𐥎 𐥏 𐥐 𐥑 𐥒 𐥓 𐥔 𐥕 𐥖 𐥗 𐥘 𐥙 𐥚 𐥛 𐥜 𐥝 𐥞 𐥟 𐥠 𐥡 𐥢 𐥣 𐥤 𐥥 𐥦 𐥧 𐥨 𐥩 𐥪 𐥫 𐥬 𐥭 𐥮 𐥯 𐥰 𐥱 𐥲 𐥳 𐥴 𐥵 𐥶 𐥷 𐥸 𐥹 𐥺 𐥻 𐥼 𐥽 𐥾 𐥿 𐦀 𐦁 𐦂 𐦃 𐦄 𐦅 𐦆 𐦇 𐦈 𐦉 𐦊 𐦋 𐦌 𐦍 𐦎 𐦏 𐦐 𐦑 𐦒 𐦓 𐦔 𐦕 𐦖 𐦗 𐦘 𐦙 𐦚 𐦛 𐦜 𐦝 𐦞 𐦟 𐦠 𐦡 𐦢 𐦣 𐦤 𐦥 𐦦 𐦧 𐦨 𐦩 𐦪 𐦫 𐦬 𐦭 𐦮 𐦯 𐦰 𐦱 𐦲 𐦳 𐦴 𐦵 𐦶 𐦷 𐦸 𐦹 𐦺 𐦻 𐦼 𐦽 𐦾 𐦿 𐧀 𐧁 𐧂 𐧃 𐧄 𐧅 𐧆 𐧇 𐧈 𐧉 𐧊 𐧋 𐧌 𐧍 𐧎 𐧏 𐧐 𐧑 𐧒 𐧓 𐧔 𐧕 𐧖 𐧗 𐧘 𐧙 𐧚 𐧛 𐧜 𐧝 𐧞 𐧟 𐧠 𐧡 𐧢 𐧣 𐧤 𐧥 𐧦 𐧧 𐧨 𐧩 𐧪 𐧫 𐧬 𐧭 𐧮 𐧯 𐧰 𐧱 𐧲 𐧳 𐧴 𐧵 𐧶 𐧷 𐧸 𐧹 𐧺 𐧻 𐧼 𐧽 𐧾 𐧿 𐨀 𐨁 𐨂 𐨃 𐨄 𐨅 𐨆 𐨇 𐨈 𐨉 𐨊 𐨋 𐨌 𐨍 𐨎 𐨏 𐨐 𐨑 𐨒 𐨓 𐨔 𐨕 𐨖 𐨗 𐨘 𐨙 𐨚 𐨛 𐨜 𐨝 𐨞 𐨟 𐨠 𐨡 𐨢 𐨣 𐨤 𐨥 𐨦 𐨧 𐨨 𐨩 𐨪 𐨫 𐨬 𐨭 𐨮 𐨯 𐨰 𐨱 𐨲 𐨳 𐨴 𐨵 𐨶 𐨷 𐨸 𐨹 𐨺 𐨻 𐨼 𐨽 𐨾 𐨿 𐩀 𐩁 𐩂 𐩃 𐩄 𐩅 𐩆 𐩇 𐩈 𐩉 𐩊 𐩋 𐩌 𐩍 𐩎 𐩏 𐩐 𐩑 𐩒 𐩓 𐩔 𐩕 𐩖 𐩗 𐩘 𐩙 𐩚 𐩛 𐩜 𐩝 𐩞 𐩟 𐩠 𐩡 𐩢 𐩣 𐩤 𐩥 𐩦 𐩧 𐩨 𐩩 𐩪 𐩫 𐩬 𐩭 𐩮 𐩯 𐩰 𐩱 𐩲 𐩳 𐩴 𐩵 𐩶 𐩷 𐩸 𐩹 𐩺 𐩻 𐩼 𐩽 𐩾 𐩿 𐪀 𐪁 𐪂 𐪃 𐪄 𐪅 𐪆 𐪇 𐪈 𐪉 𐪊 𐪋 𐪌 𐪍 𐪎 𐪏 𐪐 𐪑 𐪒 𐪓 𐪔 𐪕 𐪖 𐪗 𐪘 𐪙 𐪚 𐪛 𐪜 𐪝 𐪞 𐪟 𐪠 𐪡 𐪢 𐪣 𐪤 𐪥 𐪦 𐪧 𐪨 𐪩 𐪪 𐪫 𐪬 𐪭 𐪮 𐪯 𐪰 𐪱 𐪲 𐪳 𐪴 𐪵 𐪶 𐪷 𐪸 𐪹 𐪺 𐪻 𐪼 𐪽 𐪾 𐪿 𐫀 𐫁 𐫂 𐫃 𐫄 𐫅 𐫆 𐫇 𐫈 𐫉 𐫊 𐫋 𐫌 𐫍 𐫎 𐫏 𐫐 𐫑 𐫒 𐫓 𐫔 𐫕 𐫖 𐫗 𐫘 𐫙 𐫚 𐫛 𐫜 𐫝 𐫞 𐫟 𐫠 𐫡 𐫢 𐫣 𐫤 𐫥 𐫦 𐫧 𐫨 𐫩 𐫪 𐫫 𐫬 𐫭 𐫮 𐫯 𐫰 𐫱 𐫲 𐫳 𐫴 𐫵 𐫶 𐫷 𐫸 𐫹 𐫺 𐫻 𐫼 𐫽 𐫾 𐫿 𐬀 𐬁 𐬂 𐬃 𐬄 𐬅 𐬆 𐬇 𐬈 𐬉 𐬊 𐬋 𐬌 𐬍 𐬎 𐬏 𐬐 𐬑 𐬒 𐬓 𐬔 𐬕 𐬖 𐬗 𐬘 𐬙 𐬚 𐬛 𐬜 𐬝 𐬞 𐬟 𐬠 𐬡 𐬢 𐬣 𐬤 𐬥 𐬦 𐬧 𐬨 𐬩 𐬪 𐬫 𐬬 𐬭 𐬮 𐬯 𐬰 𐬱 𐬲 𐬳 𐬴 𐬵 𐬶 𐬷 𐬸 𐬹 𐬺 𐬻 𐬼 𐬽 𐬾 𐬿 𐭀 𐭁 𐭂 𐭃 𐭄 𐭅 𐭆 𐭇 𐭈 𐭉 𐭊 𐭋 𐭌 𐭍 𐭎 𐭏 𐭐 𐭑 𐭒 𐭓 𐭔 𐭕 𐭖 𐭗 𐭘 𐭙 𐭚 𐭛 𐭜 𐭝 𐭞 𐭟 𐭠 𐭡 𐭢 𐭣 𐭤 𐭥 𐭦 𐭧 𐭨 𐭩 𐭪 𐭫 𐭬 𐭭 𐭮 𐭯 𐭰 𐭱 𐭲 𐭳 𐭴 𐭵 𐭶 𐭷 𐭸 𐭹 𐭺 𐭻 𐭼 𐭽 𐭾 𐭿 𐮀 𐮁 𐮂 𐮃 𐮄 𐮅 𐮆 𐮇 𐮈 𐮉 𐮊 𐮋 𐮌 𐮍 𐮎 𐮏 𐮐 𐮑 𐮒 𐮓 𐮔 𐮕 𐮖 𐮗 𐮘 𐮙 𐮚 𐮛 𐮜 𐮝 𐮞 𐮟 𐮠 𐮡 𐮢 𐮣 𐮤 𐮥 𐮦 𐮧 𐮨 𐮩 𐮪 𐮫 𐮬 𐮭 𐮮 𐮯 𐮰 𐮱 𐮲 𐮳 𐮴 𐮵 𐮶 𐮷 𐮸 𐮹 𐮺 𐮻 𐮼 𐮽 𐮾 𐮿 𐯀 𐯁 𐯂 𐯃 𐯄 𐯅 𐯆 𐯇 𐯈 𐯉 𐯊 𐯋 𐯌 𐯍 𐯎 𐯏 𐯐 𐯑 𐯒 𐯓 𐯔 𐯕 𐯖 𐯗 𐯘 𐯙 𐯚 𐯛 𐯜 𐯝 𐯞 𐯟 𐯠 𐯡 𐯢 𐯣 𐯤 𐯥 𐯦 𐯧 𐯨 𐯩 𐯪 𐯫 𐯬 𐯭 𐯮 𐯯 𐯰 𐯱 𐯲 𐯳 𐯴 𐯵 𐯶 𐯷 𐯸 𐯹 𐯺 𐯻 𐯼 𐯽 𐯾 𐯿 𐰀 𐰁 𐰂 𐰃 𐰄 𐰅 𐰆 𐰇 𐰈 𐰉 𐰊 𐰋 𐰌 𐰍 𐰎 𐰏 𐰐 𐰑 𐰒 𐰓 𐰔 𐰕 𐰖 𐰗 𐰘 𐰙 𐰚 𐰛 𐰜 𐰝 𐰞 𐰟 𐰠 𐰡 𐰢 𐰣 𐰤 𐰥 𐰦 𐰧 𐰨 𐰩 𐰪 𐰫 𐰬 𐰭 𐰮 𐰯 𐰰 𐰱 𐰲 𐰳 𐰴 𐰵 𐰶 𐰷 𐰸 𐰹 𐰺 𐰻 𐰼 𐰽 𐰾 𐰿 𐱀 𐱁 𐱂 𐱃 𐱄 𐱅 𐱆 𐱇 𐱈 𐱉 𐱊 𐱋 𐱌 𐱍 𐱎 𐱏 𐱐 𐱑 𐱒 𐱓 𐱔 𐱕 𐱖 𐱗 𐱘 𐱙 𐱚 𐱛 𐱜 𐱝 𐱞 𐱟 𐱠 𐱡 𐱢 𐱣 𐱤 𐱥 𐱦 𐱧 𐱨 𐱩 𐱪 𐱫 𐱬 𐱭 𐱮 𐱯 𐱰 𐱱 𐱲 𐱳 𐱴 𐱵 𐱶 𐱷 𐱸 𐱹 𐱺 𐱻 𐱼 𐱽 𐱾 𐱿 𐲀 𐲁 𐲂 𐲃 𐲄 𐲅 𐲆 𐲇 𐲈 𐲉 𐲊 𐲋 𐲌 𐲍 𐲎 𐲏 𐲐 𐲑 𐲒 𐲓 𐲔 𐲕 𐲖 𐲗 𐲘 𐲙 𐲚 𐲛 𐲜 𐲝 𐲞 𐲟 𐲠 𐲡 𐲢 𐲣 𐲤 𐲥 𐲦 𐲧 𐲨 𐲩 𐲪 𐲫 𐲬 𐲭 𐲮 𐲯 𐲰 𐲱 𐲲 𐲳 𐲴 𐲵 𐲶 𐲷 𐲸 𐲹 𐲺 𐲻 𐲼 𐲽 𐲾 𐲿 𐳀 𐳁 𐳂 𐳃 𐳄 𐳅 𐳆 𐳇 𐳈 𐳉 𐳊 𐳋 𐳌 𐳍 𐳎 𐳏 𐳐 𐳑 𐳒 𐳓 𐳔 𐳕 𐳖 𐳗 𐳘 𐳙 𐳚 𐳛 𐳜 𐳝 𐳞 𐳟 𐳠 𐳡 𐳢 𐳣 𐳤 𐳥 𐳦 𐳧 𐳨 𐳩 𐳪 𐳫 𐳬 𐳭 𐳮 𐳯 𐳰 𐳱 𐳲 𐳳 𐳴 𐳵 𐳶 𐳷 𐳸 𐳹 𐳺 𐳻 𐳼 𐳽 𐳾 𐳿 𐴀 𐴁 𐴂 𐴃 𐴄 𐴅 𐴆 𐴇 𐴈 𐴉 𐴊 𐴋 𐴌 𐴍 𐴎 𐴏 𐴐 𐴑 𐴒 𐴓 𐴔 𐴕 𐴖 𐴗 𐴘 𐴙 𐴚 𐴛 𐴜 𐴝 𐴞 𐴟 𐴠 𐴡 𐴢 𐴣 𐴤 𐴥 𐴦 𐴧 𐴨 𐴩 𐴪 𐴫 𐴬 𐴭 𐴮 𐴯 𐴰 𐴱 𐴲 𐴳 𐴴 𐴵 𐴶 𐴷 𐴸 𐴹 𐴺 𐴻 𐴼 𐴽 𐴾 𐴿 𐵀 𐵁 𐵂 𐵃 𐵄 𐵅 𐵆 𐵇 𐵈 𐵉 𐵊 𐵋 𐵌 𐵍 𐵎 𐵏 𐵐 𐵑 𐵒 𐵓 𐵔 𐵕 𐵖 𐵗 𐵘 𐵙 𐵚 𐵛 𐵜 𐵝 𐵞 𐵟 𐵠 𐵡 𐵢 𐵣 𐵤 𐵥 𐵦 𐵧 𐵨 𐵩 𐵪 𐵫 𐵬 𐵭 𐵮 𐵯 𐵰 𐵱 𐵲 𐵳 𐵴 𐵵 𐵶 𐵷 𐵸 𐵹 𐵺 𐵻 𐵼 𐵽 𐵾 𐵿 𐶀 𐶁 𐶂 𐶃 𐶄 𐶅 𐶆 𐶇 𐶈 𐶉 𐶊 𐶋 𐶌 𐶍 𐶎 𐶏 𐶐 𐶑 𐶒 𐶓 𐶔 𐶕 𐶖 𐶗 𐶘 𐶙 𐶚 𐶛 𐶜 𐶝 𐶞 𐶟 𐶠 𐶡 𐶢 𐶣 𐶤 𐶥 𐶦 𐶧 𐶨 𐶩 𐶪 𐶫 𐶬 𐶭 𐶮 𐶯 𐶰 𐶱 𐶲 𐶳 𐶴 𐶵 𐶶 𐶷 𐶸 𐶹 𐶺 𐶻 𐶼 𐶽 𐶾 𐶿 𐷀 𐷁 𐷂 𐷃 𐷄 𐷅 𐷆 𐷇 𐷈 𐷉 𐷊 𐷋 𐷌 𐷍 𐷎 𐷏 𐷐 𐷑 𐷒 𐷓 𐷔 𐷕 𐷖 𐷗 𐷘 𐷙 𐷚 𐷛 𐷜 𐷝 𐷞 𐷟 𐷠 𐷡 𐷢 𐷣 𐷤 𐷥 𐷦 𐷧 𐷨 𐷩 𐷪 𐷫 𐷬 𐷭 𐷮 𐷯 𐷰 𐷱 𐷲 𐷳 𐷴 𐷵 𐷶 𐷷 𐷸 𐷹 𐷺 𐷻 𐷼 𐷽 𐷾 𐷿 𐸀 𐸁 𐸂 𐸃 𐸄 𐸅 𐸆 𐸇 𐸈 𐸉 𐸊 𐸋 𐸌 𐸍 𐸎 𐸏 𐸐 𐸑 𐸒 𐸓 𐸔 𐸕 𐸖 𐸗 𐸘 𐸙 𐸚 𐸛 𐸜 𐸝 𐸞 𐸟 𐸠 𐸡 𐸢 𐸣 𐸤 𐸥 𐸦 𐸧 𐸨 𐸩 𐸪 𐸫 𐸬 𐸭 𐸮 𐸯 𐸰 𐸱 𐸲 𐸳 𐸴 𐸵 𐸶 𐸷 𐸸 𐸹 𐸺 𐸻 𐸼 𐸽 𐸾 𐸿 𐹀 𐹁 𐹂 𐹃 𐹄 𐹅 𐹆 𐹇 𐹈 𐹉 𐹊 𐹋 𐹌 𐹍 𐹎 𐹏 𐹐 𐹑 𐹒 𐹓 𐹔 𐹕 𐹖 𐹗 𐹘 𐹙 𐹚 𐹛 𐹜 𐹝 𐹞 𐹟 𐹠 𐹡 𐹢 𐹣 𐹤 𐹥 𐹦 𐹧 𐹨 𐹩 𐹪 𐹫 𐹬 𐹭 𐹮 𐹯 𐹰 𐹱 𐹲 𐹳 𐹴 𐹵 𐹶 𐹷 𐹸 𐹹 𐹺 𐹻 𐹼 𐹽 𐹾 𐹿 𐺀 𐺁 𐺂 𐺃 𐺄 𐺅 𐺆 𐺇 𐺈 𐺉 𐺊 𐺋 𐺌 𐺍 𐺎 𐺏 𐺐 𐺑 𐺒 𐺓 𐺔 𐺕 𐺖 𐺗 𐺘 𐺙 𐺚 𐺛 𐺜 𐺝 𐺞 𐺟 𐺠 𐺡 𐺢 𐺣 𐺤 𐺥 𐺦 𐺧 𐺨 𐺩 𐺪 𐺫 𐺬 𐺭 𐺮 𐺯 𐺰 𐺱 𐺲 𐺳 𐺴 𐺵 𐺶 𐺷 𐺸 𐺹 𐺺 𐺻 𐺼 𐺽 𐺾 𐺿 𐻀 𐻁 𐻂 𐻃 𐻄 𐻅 𐻆 𐻇 𐻈 𐻉 𐻊 𐻋 𐻌 𐻍 𐻎 𐻏 𐻐 𐻑 𐻒 𐻓 𐻔 𐻕 𐻖 𐻗 𐻘 𐻙 𐻚 𐻛 𐻜 𐻝 𐻞 𐻟 𐻠 𐻡 𐻢 𐻣 𐻤 𐻥 𐻦 𐻧 𐻨 𐻩 𐻪 𐻫 𐻬 𐻭 𐻮 𐻯 𐻰 𐻱 𐻲 𐻳 𐻴 𐻵 𐻶 𐻷 𐻸 𐻹 𐻺 𐻻 𐻼 𐻽 𐻾 𐻿 𐼀 𐼁 𐼂 𐼃 𐼄 𐼅 𐼆 𐼇 𐼈 𐼉 𐼊 𐼋 𐼌 𐼍 𐼎 𐼏 𐼐 𐼑 𐼒 𐼓 𐼔 𐼕 𐼖 𐼗 𐼘 𐼙 𐼚 𐼛 𐼜 𐼝 𐼞 𐼟 𐼠 𐼡 𐼢 𐼣 𐼤 𐼥 𐼦 𐼧 𐼨 𐼩 𐼪 𐼫 𐼬 𐼭 𐼮 𐼯 𐼰 𐼱 𐼲 𐼳 𐼴 𐼵 𐼶 𐼷 𐼸 𐼹 𐼺 𐼻 𐼼 𐼽 𐼾 𐼿 𐽀 𐽁 𐽂 𐽃 𐽄 𐽅 𐽆 𐽇 𐽈 𐽉 𐽊 𐽋 𐽌 𐽍 𐽎 𐽏 𐽐 𐽑 𐽒 𐽓 𐽔 𐽕 𐽖 𐽗 𐽘 𐽙 𐽚 𐽛 𐽜 𐽝 𐽞 𐽟 𐽠 𐽡 𐽢 𐽣 𐽤 𐽥 𐽦 𐽧 𐽨 𐽩 𐽪 𐽫 𐽬 𐽭 𐽮 𐽯 𐽰 𐽱 𐽲 𐽳 𐽴 𐽵 𐽶 𐽷 𐽸 𐽹 𐽺 𐽻 𐽼 𐽽 𐽾 𐽿 𐾀 𐾁 𐾂 𐾃 𐾄 𐾅 𐾆 𐾇 𐾈 𐾉 𐾊 𐾋 𐾌 𐾍 𐾎 𐾏 𐾐 𐾑 𐾒 𐾓 𐾔 𐾕 𐾖 𐾗 𐾘 𐾙 𐾚 𐾛 𐾜 𐾝 𐾞 𐾟 𐾠 𐾡 𐾢 𐾣 𐾤 𐾥 𐾦 𐾧 𐾨 𐾩 𐾪 𐾫 𐾬 𐾭 𐾮 𐾯 𐾰 𐾱 𐾲 𐾳 𐾴 𐾵 𐾶 𐾷 𐾸 𐾹 𐾺 𐾻 𐾼 𐾽 𐾾 𐾿 𐿀 𐿁 𐿂 𐿃 𐿄 𐿅 𐿆 𐿇 𐿈 𐿉 𐿊 𐿋 𐿌 𐿍 𐿎 𐿏 𐿐 𐿑 𐿒 𐿓 𐿔 𐿕 𐿖 𐿗 𐿘 𐿙 𐿚 𐿛 𐿜 𐿝 𐿞 𐿟 𐿠 𐿡 𐿢 𐿣 𐿤 𐿥 𐿦 𐿧 𐿨 𐿩 𐿪 𐿫 𐿬 𐿭 𐿮 𐿯 𐿰 𐿱 𐿲 𐿳 𐿴 𐿵 𐿶 𐿷 𐿸 𐿹 𐿺 𐿻 𐿼 𐿽 𐿾 𐿿 𐻀 𐻁 𐻂 𐻃 𐻄 𐻅 𐻆 𐻇 𐻈 𐻉 𐻊 𐻋 𐻌 𐻍 𐻎 𐻏 𐻐 𐻑 𐻒 𐻓 𐻔 𐻕 𐻖 𐻗 𐻘 𐻙 𐻚 𐻛 𐻜 𐻝 𐻞 𐻟 𐻠 𐻡 𐻢 𐻣 𐻤 𐻥 𐻦 𐻧 𐻨 𐻩 𐻪 𐻫 𐻬 𐻭 𐻮 𐻯 𐻰 𐻱 𐻲 𐻳 𐻴 𐻵 𐻶 𐻷 𐻸 𐻹 𐻺 𐻻 𐻼 𐻽 𐻾 𐻿 𐼀 𐼁 𐼂 𐼃 𐼄 𐼅 𐼆 𐼇 𐼈 𐼉 𐼊 𐼋 𐼌 𐼍 𐼎 𐼏 𐼐 𐼑 𐼒 𐼓 𐼔 𐼕 𐼖 𐼗 𐼘 𐼙 𐼚 𐼛 𐼜 𐼝 𐼞 𐼟 𐼠 𐼡 𐼢 𐼣 𐼤 𐼥 𐼦 𐼧 𐼨 𐼩 𐼪 𐼫 𐼬 𐼭 𐼮 𐼯 𐼰 𐼱 𐼲 𐼳 𐼴 𐼵 𐼶 𐼷 𐼸 𐼹 𐼺 𐼻 𐼼 𐼽 𐼾 𐼿 𐽀 𐽁 𐽂 𐽃 𐽄 𐽅 𐽆 𐽇 𐽈 𐽉 𐽊 𐽋 𐽌 𐽍 𐽎 𐽏 𐽐 𐽑 𐽒 𐽓 𐽔 𐽕 𐽖 𐽗 𐽘 𐽙 𐽚 𐽛 𐽜 𐽝 𐽞 𐽟 𐽠 𐽡 𐽢 𐽣 𐽤 𐽥 𐽦 𐽧 𐽨 𐽩 𐽪 𐽫 𐽬 𐽭 𐽮 𐽯 𐽰 𐽱 𐽲 𐽳 𐽴 𐽵 𐽶 𐽷 𐽸 𐽹 𐽺 𐽻 𐽼 𐽽 𐽾 𐽿 𐾀 𐾁 𐾂 𐾃 𐾄 𐾅 𐾆 𐾇 𐾈 𐾉 𐾊 𐾋 𐾌 𐾍 𐾎 𐾏 𐾐 𐾑 𐾒 𐾓 𐾔 𐾕 𐾖 𐾗 𐾘 𐾙 𐾚 𐾛 𐾜 𐾝 𐾞 𐾟 𐾠 𐾡 𐾢 𐾣 𐾤 𐾥 𐾦 𐾧 𐾨 𐾩 𐾪 𐾫 𐾬 𐾭 𐾮 𐾯 𐾰 𐾱 𐾲 𐾳 𐾴 𐾵 𐾶 𐾷 𐾸 𐾹 𐾺 𐾻 𐾼 𐾽 𐾾 𐾿 𐿀 𐿁 𐿂 𐿃 𐿄 𐿅 𐿆 𐿇 𐿈 𐿉 𐿊 𐿋 𐿌 𐿍 𐿎 𐿏 𐿐 𐿑 𐿒 𐿓 𐿔 𐿕 𐿖 𐿗 𐿘 𐿙 𐿚 𐿛 𐿜 𐿝 𐿞 𐿟 𐿠 𐿡 𐿢 𐿣 𐿤 𐿥 𐿦 𐿧 𐿨 𐿩 𐿪 𐿫 𐿬 𐿭 𐿮 𐿯 𐿰 𐿱 𐿲 𐿳 𐿴 𐿵 𐿶 𐿷 𐿸 𐿹 𐿺 𐿻 𐿼 𐿽 𐿾 𐿿 𐻀 𐻁 𐻂 𐻃 𐻄 𐻅 𐻆 𐻇 𐻈 𐻉 𐻊 𐻋 𐻌 𐻍 𐻎 𐻏 𐻐 𐻑 𐻒 𐻓 𐻔 𐻕 𐻖 𐻗 𐻘 𐻙 𐻚 𐻛 𐻜 𐻝 𐻞 𐻟 𐻠 𐻡 𐻢 𐻣 𐻤 𐻥 𐻦 𐻧 𐻨 𐻩 𐻪 𐻫 𐻬 𐻭 𐻮 𐻯 𐻰 𐻱 𐻲 𐻳 𐻴 𐻵 𐻶 𐻷 𐻸 𐻹 𐻺 𐻻 𐻼 𐻽 𐻾 𐻿 𐼀 𐼁 𐼂 𐼃 𐼄 𐼅 𐼆 𐼇 𐼈 𐼉 𐼊 𐼋 𐼌 𐼍 𐼎 𐼏 𐼐 𐼑 𐼒 𐼓 𐼔 𐼕 𐼖 𐼗 𐼘 𐼙 𐼚 𐼛 𐼜 𐼝 𐼞 𐼟 𐼠 𐼡 𐼢 𐼣 𐼤 𐼥 𐼦 𐼧 𐼨 𐼩 𐼪 𐼫 𐼬 𐼭 𐼮 𐼯 𐼰 𐼱 𐼲 𐼳 𐼴 𐼵 𐼶 𐼷 𐼸 𐼹 𐼺 𐼻 𐼼 𐼽 𐼾 𐼿 𐽀 𐽁 𐽂 𐽃 𐽄 𐽅 𐽆 𐽇 𐽈 𐽉 𐽊 𐽋 𐽌 𐽍 𐽎 𐽏 𐽐 𐽑 𐽒 𐽓 𐽔 𐽕 𐽖 𐽗 𐽘 𐽙 𐽚 𐽛 𐽜 𐽝 𐽞 𐽟 𐽠 𐽡 𐽢 𐽣 𐽤 𐽥 𐽦 𐽧 𐽨 𐽩 𐽪 𐽫 𐽬 𐽭 𐽮 𐽯 𐽰 𐽱 𐽲 𐽳 𐽴 𐽵 𐽶 𐽷 𐽸 𐽹 𐽺 𐽻 𐽼 𐽽 𐽾 𐽿 𐾀 𐾁 𐾂 𐾃 𐾄 𐾅 𐾆 𐾇

नबात की नब्ती लिपि

द	द	ग/ज	ब	ब	अ	अ
दलेथ	जमल	बेथ	अलिफ			
त	ह	ह	ज़	ज़	व	व
तेथ	हेथ	ज़ैन	वाव	ह	ह	
म	म	ल	ल	क	क	य
मीम	लमेथ	काफ़	पोथ	तेथ		
थ	श	श	र	र	प	अँ.ए
थो	शीन	रेष	पे	ऐन	नून	
त	क	क	स	स		
ताव	काफ़	सामेरव				

फलक संख्या - १८८

१. हेजाज का एक राज्य लाल सागर के किनारे पर अरेबिया में स्थित था जिसमें दो धार्मिक मुख्य नगर थे — मक्का व मदीना । लाखों की संख्या में समस्त देशों से मुसलमान इन पवित्र स्थानों के दर्शनार्थ यहाँ आते थे । बनी अब्बास (के वंश) के खलीफा के अन्त होने से यह राज्य मिस्र के अधीन हो गया तथा १५१७ में तुर्की के अधीन हो गया । इस राज्य के शासक हुसैन के दो पुत्र थे । ब्रिटिश सरकार ने इसको प्रसन्न करने के कारण उनको दो देशों का बादशाह बना दिया । अब्दुल्ला को ट्रांस जॉर्डन (Trans Jordan) का तथा फैजल को ईराक का । इस राज्य की लिपि के अभिलेख यहाँ मिलने से उसका नाम इस देश पर रख दिया गया ।

२. दूसरी शाखा का नाम नज्द था, क्योंकि यह इस राज्य में तथा अन्य स्थानों से भी प्राप्त की गई । नज्द अरेबिया के पूर्व की ओर था । यह भी तुर्कों के अधीन था । १९०५ में एक वहाबी शासक इब्न सऊद द्वारा यह राज्य स्वतन्त्र हो गया । १९२६ में यह हेजाज का भी शासक बन गया, जिसके लिए इसने हेजाज पर आक्रमण किया था । १९३२ में यह दो राज्य मिल कर सऊदी अरेबिया के नाम से प्रचलित हो गया ।

थामुडिक लिपि की उपर्युक्त दो प्रकार की लिपियों के लगभग १७५० अभिलेख हेजाज व नज्द से तथा कुछ सिनाइ व सफ्रा (दमिश्क के उत्तर में) से भी प्राप्त हुए हैं । इन अभिलेखों को बड़े प्रयासों व कठिनाइयों द्वारा हूबर (Huber), एण्टिंग (Enting), लिटमन (Littmann), याओसन (Jaussen), सैविगनाक (Savignac) और डाउटी (Doughty) ने एकत्रित किये ।

इन अभिलेखों का काल ई० पू० की छठी से पाँचवीं शताब्दी, ग्रिम (Grimme — १९२६) व विनेट (Winnett — १९३८) द्वारा निर्धारित किया गया है । इनकी दिशा सीधे से बाईं ओर है ।

इनमें २२ वर्ण थे जैसे कि अधिकतर प्राचीन सेमिटिक लिपियों में पाये जाते थे परन्तु आवश्यकता के अनुसार ६ वर्ण जोड़ कर २८ बना दिये गये । यह दायें से बायें तथा हल चलाने की पद्धति (Ploughing style) में भी प्रयोग की जाती थीं ।

प्राचीन थामुडिक (हेजाज) -- प्रतिदर्श

𐤀 𐤁 𐤂 𐤃 𐤄 𐤅 𐤆 𐤇 𐤈 𐤉 𐤊 𐤋 𐤌 𐤍 𐤎 𐤏 𐤐 𐤑 𐤒 𐤓 𐤔 𐤕 𐤖 𐤗 𐤘 𐤙 𐤚 𐤛 𐤜 𐤝 𐤞 𐤟 𐤠 𐤡 𐤢 𐤣 𐤤 𐤥 𐤦 𐤧 𐤨 𐤩 𐤪 𐤫 𐤬 𐤭 𐤮 𐤯 𐤰 𐤱 𐤲 𐤳 𐤴 𐤵 𐤶 𐤷 𐤸 𐤹 𐤺 𐤻 𐤼 𐤽 𐤾 𐤿 𐥀 𐥁 𐥂 𐥃 𐥄 𐥅 𐥆 𐥇 𐥈 𐥉 𐥊 𐥋 𐥌 𐥍 𐥎 𐥏 𐥐 𐥑 𐥒 𐥓 𐥔 𐥕 𐥖 𐥗 𐥘 𐥙 𐥚 𐥛 𐥜 𐥝 𐥞 𐥟 𐥠 𐥡 𐥢 𐥣 𐥤 𐥥 𐥦 𐥧 𐥨 𐥩 𐥪 𐥫 𐥬 𐥭 𐥮 𐥯 𐥰 𐥱 𐥲 𐥳 𐥴 𐥵 𐥶 𐥷 𐥸 𐥹 𐥺 𐥻 𐥼 𐥽 𐥾 𐥿 𐦀 𐦁 𐦂 𐦃 𐦄 𐦅 𐦆 𐦇 𐦈 𐦉 𐦊 𐦋 𐦌 𐦍 𐦎 𐦏 𐦐 𐦑 𐦒 𐦓 𐦔 𐦕 𐦖 𐦗 𐦘 𐦙 𐦚 𐦛 𐦜 𐦝 𐦞 𐦟 𐦠 𐦡 𐦢 𐦣 𐦤 𐦥 𐦦 𐦧 𐦨 𐦩 𐦪 𐦫 𐦬 𐦭 𐦮 𐦯 𐦰 𐦱 𐦲 𐦳 𐦴 𐦵 𐦶 𐦷 𐦸 𐦹 𐦺 𐦻 𐦼 𐦽 𐦾 𐦿 𐧀 𐧁 𐧂 𐧃 𐧄 𐧅 𐧆 𐧇 𐧈 𐧉 𐧊 𐧋 𐧌 𐧍 𐧎 𐧏 𐧐 𐧑 𐧒 𐧓 𐧔 𐧕 𐧖 𐧗 𐧘 𐧙 𐧚 𐧛 𐧜 𐧝 𐧞 𐧟 𐧠 𐧡 𐧢 𐧣 𐧤 𐧥 𐧦 𐧧 𐧨 𐧩 𐧪 𐧫 𐧬 𐧭 𐧮 𐧯 𐧰 𐧱 𐧲 𐧳 𐧴 𐧵 𐧶 𐧷 𐧸 𐧹 𐧺 𐧻 𐧼 𐧽 𐧾 𐧿 𐨀 𐨁 𐨂 𐨃 𐨄 𐨅 𐨆 𐨇 𐨈 𐨉 𐨊 𐨋 𐨌 𐨍 𐨎 𐨏 𐨐 𐨑 𐨒 𐨓 𐨔 𐨕 𐨖 𐨗 𐨘 𐨙 𐨚 𐨛 𐨜 𐨝 𐨞 𐨟 𐨠 𐨡 𐨢 𐨣 𐨤 𐨥 𐨦 𐨧 𐨨 𐨩 𐨪 𐨫 𐨬 𐨭 𐨮 𐨯 𐨰 𐨱 𐨲 𐨳 𐨴 𐨵 𐨶 𐨷 𐨸 𐨹 𐨺 𐨻 𐨼 𐨽 𐨾 𐨿 𐩀 𐩁 𐩂 𐩃 𐩄 𐩅 𐩆 𐩇 𐩈 𐩉 𐩊 𐩋 𐩌 𐩍 𐩎 𐩏 𐩐 𐩑 𐩒 𐩓 𐩔 𐩕 𐩖 𐩗 𐩘 𐩙 𐩚 𐩛 𐩜 𐩝 𐩞 𐩟 𐩠 𐩡 𐩢 𐩣 𐩤 𐩥 𐩦 𐩧 𐩨 𐩩 𐩪 𐩫 𐩬 𐩭 𐩮 𐩯 𐩰 𐩱 𐩲 𐩳 𐩴 𐩵 𐩶 𐩷 𐩸 𐩹 𐩺 𐩻 𐩼 𐩽 𐩾 𐩿 𐪀 𐪁 𐪂 𐪃 𐪄 𐪅 𐪆 𐪇 𐪈 𐪉 𐪊 𐪋 𐪌 𐪍 𐪎 𐪏 𐪐 𐪑 𐪒 𐪓 𐪔 𐪕 𐪖 𐪗 𐪘 𐪙 𐪚 𐪛 𐪜 𐪝 𐪞 𐪟 𐪠 𐪡 𐪢 𐪣 𐪤 𐪥 𐪦 𐪧 𐪨 𐪩 𐪪 𐪫 𐪬 𐪭 𐪮 𐪯 𐪰 𐪱 𐪲 𐪳 𐪴 𐪵 𐪶 𐪷 𐪸 𐪹 𐪺 𐪻 𐪼 𐪽 𐪾 𐪿 𐫀 𐫁 𐫂 𐫃 𐫄 𐫅 𐫆 𐫇 𐫈 𐫉 𐫊 𐫋 𐫌 𐫍 𐫎 𐫏 𐫐 𐫑 𐫒 𐫓 𐫔 𐫕 𐫖 𐫗 𐫘 𐫙 𐫚 𐫛 𐫜 𐫝 𐫞 𐫟 𐫠 𐫡 𐫢 𐫣 𐫤 𐫥 𐫦 𐫧 𐫨 𐫩 𐫪 𐫫 𐫬 𐫭 𐫮 𐫯 𐫰 𐫱 𐫲 𐫳 𐫴 𐫵 𐫶 𐫷 𐫸 𐫹 𐫺 𐫻 𐫼 𐫽 𐫾 𐫿 𐬀 𐬁 𐬂 𐬃 𐬄 𐬅 𐬆 𐬇 𐬈 𐬉 𐬊 𐬋 𐬌 𐬍 𐬎 𐬏 𐬐 𐬑 𐬒 𐬓 𐬔 𐬕 𐬖 𐬗 𐬘 𐬙 𐬚 𐬛 𐬜 𐬝 𐬞 𐬟 𐬠 𐬡 𐬢 𐬣 𐬤 𐬥 𐬦 𐬧 𐬨 𐬩 𐬪 𐬫 𐬬 𐬭 𐬮 𐬯 𐬰 𐬱 𐬲 𐬳 𐬴 𐬵 𐬶 𐬷 𐬸 𐬹 𐬺 𐬻 𐬼 𐬽 𐬾 𐬿 𐭀 𐭁 𐭂 𐭃 𐭄 𐭅 𐭆 𐭇 𐭈 𐭉 𐭊 𐭋 𐭌 𐭍 𐭎 𐭏 𐭐 𐭑 𐭒 𐭓 𐭔 𐭕 𐭖 𐭗 𐭘 𐭙 𐭚 𐭛 𐭜 𐭝 𐭞 𐭟 𐭠 𐭡 𐭢 𐭣 𐭤 𐭥 𐭦 𐭧 𐭨 𐭩 𐭪 𐭫 𐭬 𐭭 𐭮 𐭯 𐭰 𐭱 𐭲 𐭳 𐭴 𐭵 𐭶 𐭷 𐭸 𐭹 𐭺 𐭻 𐭼 𐭽 𐭾 𐭿 𐮀 𐮁 𐮂 𐮃 𐮄 𐮅 𐮆 𐮇 𐮈 𐮉 𐮊 𐮋 𐮌 𐮍 𐮎 𐮏 𐮐 𐮑 𐮒 𐮓 𐮔 𐮕 𐮖 𐮗 𐮘 𐮙 𐮚 𐮛 𐮜 𐮝 𐮞 𐮟 𐮠 𐮡 𐮢 𐮣 𐮤 𐮥 𐮦 𐮧 𐮨 𐮩 𐮪 𐮫 𐮬 𐮭 𐮮 𐮯 𐮰 𐮱 𐮲 𐮳 𐮴 𐮵 𐮶 𐮷 𐮸 𐮹 𐮺 𐮻 𐮼 𐮽 𐮾 𐮿 𐯀 𐯁 𐯂 𐯃 𐯄 𐯅 𐯆 𐯇 𐯈 𐯉 𐯊 𐯋 𐯌 𐯍 𐯎 𐯏 𐯐 𐯑 𐯒 𐯓 𐯔 𐯕 𐯖 𐯗 𐯘 𐯙 𐯚 𐯛 𐯜 𐯝 𐯞 𐯟 𐯠 𐯡 𐯢 𐯣 𐯤 𐯥 𐯦 𐯧 𐯨 𐯩 𐯪 𐯫 𐯬 𐯭 𐯮 𐯯 𐯰 𐯱 𐯲 𐯳 𐯴 𐯵 𐯶 𐯷 𐯸 𐯹 𐯺 𐯻 𐯼 𐯽 𐯾 𐯿 𐰀 𐰁 𐰂 𐰃 𐰄 𐰅 𐰆 𐰇 𐰈 𐰉 𐰊 𐰋 𐰌 𐰍 𐰎 𐰏 𐰐 𐰑 𐰒 𐰓 𐰔 𐰕 𐰖 𐰗 𐰘 𐰙 𐰚 𐰛 𐰜 𐰝 𐰞 𐰟 𐰠 𐰡 𐰢 𐰣 𐰤 𐰥 𐰦 𐰧 𐰨 𐰩 𐰪 𐰫 𐰬 𐰭 𐰮 𐰯 𐰰 𐰱 𐰲 𐰳 𐰴 𐰵 𐰶 𐰷 𐰸 𐰹 𐰺 𐰻 𐰼 𐰽 𐰾 𐰿 𐱀 𐱁 𐱂 𐱃 𐱄 𐱅 𐱆 𐱇 𐱈 𐱉 𐱊 𐱋 𐱌 𐱍 𐱎 𐱏 𐱐 𐱑 𐱒 𐱓 𐱔 𐱕 𐱖 𐱗 𐱘 𐱙 𐱚 𐱛 𐱜 𐱝 𐱞 𐱟 𐱠 𐱡 𐱢 𐱣 𐱤 𐱥 𐱦 𐱧 𐱨 𐱩 𐱪 𐱫 𐱬 𐱭 𐱮 𐱯 𐱰 𐱱 𐱲 𐱳 𐱴 𐱵 𐱶 𐱷 𐱸 𐱹 𐱺 𐱻 𐱼 𐱽 𐱾 𐱿 𐲀 𐲁 𐲂 𐲃 𐲄 𐲅 𐲆 𐲇 𐲈 𐲉 𐲊 𐲋 𐲌 𐲍 𐲎 𐲏 𐲐 𐲑 𐲒 𐲓 𐲔 𐲕 𐲖 𐲗 𐲘 𐲙 𐲚 𐲛 𐲜 𐲝 𐲞 𐲟 𐲠 𐲡 𐲢 𐲣 𐲤 𐲥 𐲦 𐲧 𐲨 𐲩 𐲪 𐲫 𐲬 𐲭 𐲮 𐲯 𐲰 𐲱 𐲲 𐲳 𐲴 𐲵 𐲶 𐲷 𐲸 𐲹 𐲺 𐲻 𐲼 𐲽 𐲾 𐲿 𐳀 𐳁 𐳂 𐳃 𐳄 𐳅 𐳆 𐳇 𐳈 𐳉 𐳊 𐳋 𐳌 𐳍 𐳎 𐳏 𐳐 𐳑 𐳒 𐳓 𐳔 𐳕 𐳖 𐳗 𐳘 𐳙 𐳚 𐳛 𐳜 𐳝 𐳞 𐳟 𐳠 𐳡 𐳢 𐳣 𐳤 𐳥 𐳦 𐳧 𐳨 𐳩 𐳪 𐳫 𐳬 𐳭 𐳮 𐳯 𐳰 𐳱 𐳲 𐳳 𐳴 𐳵 𐳶 𐳷 𐳸 𐳹 𐳺 𐳻 𐳼 𐳽 𐳾 𐳿 𐴀 𐴁 𐴂 𐴃 𐴄 𐴅 𐴆 𐴇 𐴈 𐴉 𐴊 𐴋 𐴌 𐴍 𐴎 𐴏 𐴐 𐴑 𐴒 𐴓 𐴔 𐴕 𐴖 𐴗 𐴘 𐴙 𐴚 𐴛 𐴜 𐴝 𐴞 𐴟 𐴠 𐴡 𐴢 𐴣 𐴤 𐴥 𐴦 𐴧 𐴨 𐴩 𐴪 𐴫 𐴬 𐴭 𐴮 𐴯 𐴰 𐴱 𐴲 𐴳 𐴴 𐴵 𐴶 𐴷 𐴸 𐴹 𐴺 𐴻 𐴼 𐴽 𐴾 𐴿 𐵀 𐵁 𐵂 𐵃 𐵄 𐵅 𐵆 𐵇 𐵈 𐵉 𐵊 𐵋 𐵌 𐵍 𐵎 𐵏 𐵐 𐵑 𐵒 𐵓 𐵔 𐵕 𐵖 𐵗 𐵘 𐵙 𐵚 𐵛 𐵜 𐵝 𐵞 𐵟 𐵠 𐵡 𐵢 𐵣 𐵤 𐵥 𐵦 𐵧 𐵨 𐵩 𐵪 𐵫 𐵬 𐵭 𐵮 𐵯 𐵰 𐵱 𐵲 𐵳 𐵴 𐵵 𐵶 𐵷 𐵸 𐵹 𐵺 𐵻 𐵼 𐵽 𐵾 𐵿 𐶀 𐶁 𐶂 𐶃 𐶄 𐶅 𐶆 𐶇 𐶈 𐶉 𐶊 𐶋 𐶌 𐶍 𐶎 𐶏 𐶐 𐶑 𐶒 𐶓 𐶔 𐶕 𐶖 𐶗 𐶘 𐶙 𐶚 𐶛 𐶜 𐶝 𐶞 𐶟 𐶠 𐶡 𐶢 𐶣 𐶤 𐶥 𐶦 𐶧 𐶨 𐶩 𐶪 𐶫 𐶬 𐶭 𐶮 𐶯 𐶰 𐶱 𐶲 𐶳 𐶴 𐶵 𐶶 𐶷 𐶸 𐶹 𐶺 𐶻 𐶼 𐶽 𐶾 𐶿 𐷀 𐷁 𐷂 𐷃 𐷄 𐷅 𐷆 𐷇 𐷈 𐷉 𐷊 𐷋 𐷌 𐷍 𐷎 𐷏 𐷐 𐷑 𐷒 𐷓 𐷔 𐷕 𐷖 𐷗 𐷘 𐷙 𐷚 𐷛 𐷜 𐷝 𐷞 𐷟 𐷠 𐷡 𐷢 𐷣 𐷤 𐷥 𐷦 𐷧 𐷨 𐷩 𐷪 𐷫 𐷬 𐷭 𐷮 𐷯 𐷰 𐷱 𐷲 𐷳 𐷴 𐷵 𐷶 𐷷 𐷸 𐷹 𐷺 𐷻 𐷼 𐷽 𐷾 𐷿 𐸀 𐸁 𐸂 𐸃 𐸄 𐸅 𐸆 𐸇 𐸈 𐸉 𐸊 𐸋 𐸌 𐸍 𐸎 𐸏 𐸐 𐸑 𐸒 𐸓 𐸔 𐸕 𐸖 𐸗 𐸘 𐸙 𐸚 𐸛 𐸜 𐸝 𐸞 𐸟 𐸠 𐸡 𐸢 𐸣 𐸤 𐸥 𐸦 𐸧 𐸨 𐸩 𐸪 𐸫 𐸬 𐸭 𐸮 𐸯 𐸰 𐸱 𐸲 𐸳 𐸴 𐸵 𐸶 𐸷 𐸸 𐸹 𐸺 𐸻 𐸼 𐸽 𐸾 𐸿 𐹀 𐹁 𐹂 𐹃 𐹄 𐹅 𐹆 𐹇 𐹈 𐹉 𐹊 𐹋 𐹌 𐹍 𐹎 𐹏 𐹐 𐹑 𐹒 𐹓 𐹔 𐹕 𐹖 𐹗 𐹘 𐹙 𐹚 𐹛 𐹜 𐹝 𐹞 𐹟 𐹠 𐹡 𐹢 𐹣 𐹤 𐹥 𐹦 𐹧 𐹨 𐹩 𐹪 𐹫 𐹬 𐹭 𐹮 𐹯 𐹰 𐹱 𐹲 𐹳 𐹴 𐹵 𐹶 𐹷 𐹸 𐹹 𐹺 𐹻 𐹼 𐹽 𐹾 𐹿 𐺀 𐺁 𐺂 𐺃 𐺄 𐺅 𐺆 𐺇 𐺈 𐺉 𐺊 𐺋 𐺌 𐺍 𐺎 𐺏 𐺐 𐺑 𐺒 𐺓 𐺔 𐺕 𐺖 𐺗 𐺘 𐺙 𐺚 𐺛 𐺜 𐺝 𐺞 𐺟 𐺠 𐺡 𐺢 𐺣 𐺤 𐺥 𐺦 𐺧 𐺨 𐺩 𐺪 𐺫 𐺬 𐺭 𐺮 𐺯 𐺰 𐺱 𐺲 𐺳 𐺴 𐺵 𐺶 𐺷 𐺸 𐺹 𐺺 𐺻 𐺼 𐺽 𐺾 𐺿 𐻀 𐻁 𐻂 𐻃 𐻄 𐻅 𐻆 𐻇 𐻈 𐻉 𐻊 𐻋 𐻌 𐻍 𐻎 𐻏 𐻐 𐻑 𐻒 𐻓 𐻔 𐻕 𐻖 𐻗 𐻘 𐻙 𐻚 𐻛 𐻜 𐻝 𐻞 𐻟 𐻠 𐻡 𐻢 𐻣 𐻤 𐻥 𐻦 𐻧 𐻨 𐻩 𐻪 𐻫 𐻬 𐻭 𐻮 𐻯 𐻰 𐻱 𐻲 𐻳 𐻴 𐻵 𐻶 𐻷 𐻸 𐻹 𐻺 𐻻 𐻼 𐻽 𐻾 𐻿 𐼀 𐼁 𐼂 𐼃 𐼄 𐼅 𐼆 𐼇 𐼈 𐼉 𐼊 𐼋 𐼌 𐼍 𐼎 𐼏 𐼐 𐼑 𐼒 𐼓 𐼔 𐼕 𐼖 𐼗 𐼘 𐼙 𐼚 𐼛 𐼜 𐼝 𐼞 𐼟 𐼠 𐼡 𐼢 𐼣 𐼤 𐼥 𐼦 𐼧 𐼨 𐼩 𐼪 𐼫 𐼬 𐼭 𐼮 𐼯 𐼰 𐼱 𐼲 𐼳 𐼴 𐼵 𐼶 𐼷 𐼸 𐼹 𐼺 𐼻 𐼼 𐼽 𐼾 𐼿 𐽀 𐽁 𐽂 𐽃 𐽄 𐽅 𐽆 𐽇 𐽈 𐽉 𐽊 𐽋 𐽌 𐽍 𐽎 𐽏 𐽐 𐽑 𐽒 𐽓 𐽔 𐽕 𐽖 𐽗 𐽘 𐽙 𐽚 𐽛 𐽜 𐽝 𐽞 𐽟 𐽠 𐽡 𐽢 𐽣 𐽤 𐽥 𐽦 𐽧 𐽨 𐽩 𐽪 𐽫 𐽬 𐽭 𐽮 𐽯 𐽰 𐽱 𐽲 𐽳 𐽴 𐽵 𐽶 𐽷 𐽸 𐽹 𐽺 𐽻 𐽼 𐽽 𐽾 𐽿 𐾀 𐾁 𐾂 𐾃 𐾄 𐾅 𐾆 𐾇 𐾈 𐾉 𐾊 𐾋 𐾌 𐾍 𐾎 𐾏 𐾐 𐾑 𐾒 𐾓 𐾔 𐾕 𐾖 𐾗 𐾘 𐾙 𐾚 𐾛 𐾜 𐾝 𐾞 𐾟 𐾠 𐾡 𐾢 𐾣 𐾤 𐾥 𐾦 𐾧 𐾨 𐾩 𐾪 𐾫 𐾬 𐾭 𐾮 𐾯 𐾰 𐾱 𐾲 𐾳 𐾴 𐾵 𐾶 𐾷 𐾸 𐾹 𐾺 𐾻 𐾼 𐾽 𐾾 𐾿 𐿀 𐿁 𐿂 𐿃 𐿄 𐿅 𐿆 𐿇 𐿈 𐿉 𐿊 𐿋 𐿌 𐿍 𐿎 𐿏 𐿐 𐿑 𐿒 𐿓 𐿔 𐿕 𐿖 𐿗 𐿘 𐿙 𐿚 𐿛 𐿜 𐿝 𐿞 𐿟 𐿠 𐿡 𐿢 𐿣 𐿤 𐿥 𐿦 𐿧 𐿨 𐿩 𐿪 𐿫 𐿬 𐿭 𐿮 𐿯 𐿰 𐿱 𐿲 𐿳 𐿴 𐿵 𐿶 𐿷 𐿸 𐿹 𐿺 𐿻 𐿼 𐿽 𐿾 𐿿 𐻀 𐻁 𐻂 𐻃 𐻄 𐻅 𐻆 𐻇 𐻈 𐻉 𐻊 𐻋 𐻌 𐻍 𐻎 𐻏 𐻐 𐻑 𐻒 𐻓 𐻔 𐻕 𐻖 𐻗 𐻘 𐻙 𐻚 𐻛 𐻜 𐻝 𐻞 𐻟 𐻠 𐻡 𐻢 𐻣 𐻤 𐻥 𐻦 𐻧 𐻨 𐻩 𐻪 𐻫 𐻬 𐻭 𐻮 𐻯 𐻰 𐻱 𐻲 𐻳 𐻴 𐻵 𐻶 𐻷 𐻸 𐻹 𐻺 𐻻 𐻼 𐻽 𐻾 𐻿 𐼀 𐼁 𐼂 𐼃 𐼄 𐼅 𐼆 𐼇 𐼈 𐼉 𐼊 𐼋 𐼌 𐼍 𐼎 𐼏 𐼐 𐼑 𐼒 𐼓 𐼔 𐼕 𐼖 𐼗 𐼘 𐼙 𐼚 𐼛 𐼜 𐼝 𐼞 𐼟 𐼠 𐼡 𐼢 𐼣 𐼤 𐼥 𐼦 𐼧 𐼨 𐼩 𐼪 𐼫 𐼬 𐼭 𐼮 𐼯 𐼰 𐼱 𐼲 𐼳 𐼴 𐼵 𐼶 𐼷 𐼸 𐼹 𐼺 𐼻 𐼼 𐼽 𐼾 𐼿 𐽀 𐽁 𐽂 𐽃 𐽄 𐽅 𐽆 𐽇 𐽈 𐽉 𐽊 𐽋 𐽌 𐽍 𐽎 𐽏 𐽐 𐽑 𐽒 𐽓 𐽔 𐽕 𐽖 𐽗 𐽘 𐽙 𐽚 𐽛 𐽜 𐽝 𐽞 𐽟 𐽠 𐽡 𐽢 𐽣 𐽤 𐽥 𐽦 𐽧 𐽨 𐽩 𐽪 𐽫 𐽬 𐽭 𐽮 𐽯 𐽰 𐽱 𐽲 𐽳 𐽴 𐽵 𐽶 𐽷 𐽸 𐽹 𐽺 𐽻 𐽼 𐽽 𐽾 𐽿 𐾀 𐾁 𐾂 𐾃 𐾄 𐾅 𐾆 𐾇 𐾈 𐾉 𐾊 𐾋 𐾌 𐾍 𐾎 𐾏 𐾐 𐾑 𐾒 𐾓 𐾔 𐾕 𐾖 𐾗 𐾘 𐾙 𐾚 𐾛 𐾜 𐾝 𐾞 𐾟 𐾠 𐾡 𐾢 𐾣 𐾤 𐾥 𐾦 𐾧 𐾨 𐾩 𐾪 𐾫 𐾬 𐾭 𐾮 𐾯 𐾰 𐾱 𐾲 𐾳 𐾴 𐾵 𐾶 𐾷 𐾸 𐾹 𐾺 𐾻 𐾼 𐾽 𐾾 𐾿 𐿀 𐿁 𐿂 𐿃 𐿄 𐿅 𐿆 𐿇 𐿈 𐿉 𐿊 𐿋 𐿌 𐿍 𐿎 𐿏 𐿐 𐿑 𐿒 𐿓 𐿔 𐿕 𐿖 𐿗 𐿘 𐿙 𐿚 𐿛 𐿜 𐿝 𐿞 𐿟 𐿠 𐿡 𐿢 𐿣 𐿤 𐿥 𐿦 𐿧 𐿨 𐿩 𐿪 𐿫 𐿬 𐿭 𐿮 𐿯 𐿰 𐿱 𐿲 𐿳 𐿴 𐿵 𐿶 𐿷 𐿸 𐿹 𐿺 𐿻 𐿼 𐿽 𐿾 𐿿 𐻀 𐻁 𐻂 𐻃 𐻄 𐻅 𐻆 𐻇 𐻈 𐻉 𐻊 𐻋 𐻌 𐻍 𐻎 𐻏 𐻐 𐻑 𐻒 𐻓 𐻔 𐻕 𐻖 𐻗 𐻘 𐻙 𐻚 𐻛 𐻜 𐻝 𐻞 𐻟 𐻠 𐻡 𐻢 𐻣 𐻤 𐻥 𐻦 𐻧 𐻨 𐻩 𐻪 𐻫 𐻬 𐻭 𐻮 𐻯 𐻰 𐻱 𐻲 𐻳 𐻴 𐻵 𐻶 𐻷 𐻸 𐻹 𐻺 𐻻 𐻼 𐻽 𐻾 𐻿 𐼀 𐼁 𐼂 𐼃 𐼄 𐼅 𐼆 𐼇 𐼈 𐼉 𐼊 𐼋 𐼌 𐼍 𐼎 𐼏 𐼐 𐼑 𐼒 𐼓 𐼔 𐼕 𐼖 𐼗 𐼘 𐼙 𐼚 𐼛 𐼜 𐼝 𐼞 𐼟 𐼠 𐼡 𐼢 𐼣 𐼤 𐼥 𐼦 𐼧 𐼨 𐼩 𐼪 𐼫 𐼬 𐼭 𐼮 𐼯 𐼰 𐼱 𐼲 𐼳 𐼴 𐼵 𐼶 𐼷 𐼸 𐼹 𐼺 𐼻 𐼼 𐼽 𐼾 𐼿 𐽀 𐽁 𐽂 𐽃 𐽄 𐽅 𐽆 𐽇 𐽈 𐽉 𐽊 𐽋 𐽌 𐽍 𐽎 𐽏 𐽐 𐽑 𐽒 𐽓 𐽔 𐽕 𐽖 𐽗

हेजाज़ और नज्द की लिपियाँ

ध्व	हेजाज़	नज्द	ध्व	हेजाज़	नज्द
अ	𐌰 𐌱	𐌲 𐌳	स	𐌴	
ब	𐌶 𐌷 𐌸 𐌹	𐌺 𐌻	आ	○ ◎	○ •
ज	𐌼 𐌽	𐌾 𐌿	इ	◊ ◻	𐌺 𐌻
द	𐍂 𐍃	𐍄 𐍅	औ	𐍆 𐍇	𐍈 𐍉 𐍊
ह	𐍋 𐍌	𐍍 𐍎	क	𐍇 𐍈	𐍉 𐍊 𐍋
व	𐍎 𐍇	𐍈 𐍉	र	𐍊 𐍋 𐍌	𐍍 𐍎 𐍇
ज़	𐍈	𐍉 𐍊	श	𐍊 𐍋 𐍌	𐍍 𐍎 𐍇
ह	𐍈 𐍉	𐍊 𐍋	त	𐍊 𐍋	𐍍 𐍎
त	𐍈 𐍉	𐍊 𐍋	स	𐍊 𐍋	𐍍 𐍎
प	𐍈 𐍉	𐍊 𐍋	ड	𐍈 𐍉	𐍊 𐍋
क	𐍈 𐍉	𐍊 𐍋	ट	𐍈 𐍉	𐍊 𐍋
ख	𐍈 𐍉	𐍊 𐍋	ख	𐍈 𐍉	𐍊 𐍋
म	𐍈 𐍉	𐍊 𐍋	ज	𐍈 𐍉	𐍊 𐍋
न	𐍈 𐍉	𐍊 𐍋	ज	𐍈 𐍉	𐍊 𐍋

फलक संख्या - १८९

‘फ० सं० - १८९ क’ पर दिया गया है जिसको ग्रिम ने पढ़ा और प्रकाशित किया। इसका हिन्दी अनुवाद अंग्रेजी के अनुवाद^१ से किया गया है।

हिन्दी अनुवाद : ‘एलिजाह गद - हद (अद) का पुजारी था’। यह तैमा से १६२६ में प्राप्त हुआ और इसका काल लगभग ६०० ई० पू०^२ माना गया है।

मण्डायक लिपि : यह लिपि उन ईसाईयों की थी जो बसरा (ईराक) के निकट शातेल - अरब पर रहते थे। यह ईसाई अपने धर्म से ईसा की दूसरी श० में पृथक् हो गये थे क्योंकि वह अन्य देवताओं की भी पूजा करते थे। ईराक में आकर इनका नाम मण्डाइन, नाजरीनी, सेवियन आदि पड़ गया था। चौदहवीं श० में इनकी संख्या लगभग १४००० थी। अब बहुत कम रह गये हैं। सत्रहवीं श० में इनका नाम सेण्ट जॉन के क्रिश्चियन पड़ गया। इस जाति के नाम पर इस लिपि को भी मण्डायक, नाजरीनी व सेवियन कहते हैं। यह लिपि धार्मिक पुस्तकों में ही दृष्टिगोचर होती है। इसका जन्म अरमायक तथा नब्ती से हुआ। इसकी भाषा अरमायक है। इसके वर्ण^३ तथा उच्चारण ‘फ० सं० - १९०’ के प्रथम कॉलम में दिये गये हैं।

सफातैनी लिपि : यह लिपि डैमसकस के उत्तर में पाई जाती थी। इस लिपि के अभिलेखों की खोज ग्राहम (Graham), वेस्टाइन (Weizstein), डी वोग (De Vogue), वेंडिंगटन (Waddington), दुस्साऊद (Dussaud) और लिटमन (Littmann) ने की तथा लगभग २००० अभिलेख प्राप्त किये। इसके अक्षरों का रहस्योद्घाटन हलेवी (Halevy), प्रैटोरियस (Praetorius), लिटमन और ग्रिम (Grimme) ने किया। (फ० सं० - १९० - द्वितीय कॉलम)

इस लिपि की दो शाखाएँ ग्रिम द्वारा निर्धारित की गई हैं। पहली उन अभिलेखों की जो सफा से प्राप्त हुए तथा दूसरी वह लिपि जिसके अभिलेख उम्म - अल - जमल से प्राप्त हुए। यह अभिलेख दूसरी से चौथी शताब्दी के माने जाते हैं। सफातैनी के वर्ण एक पुस्तक^४ से लिये गये हैं तथा उम्म - अल - जमल के वर्ण एक दूसरी पुस्तक^५ से लिये गये हैं। (फलक संख्या - १९० - तृतीय कॉलम)

नब्ती व मण्डायक में केवल २२ अक्षर मिलते हैं परन्तु इस लिपि में ६ अक्षर और जुड़ने से २८ अक्षर मिलते हैं।

सफातैनी का प्रतिदर्श : इस अभिलेख का रहस्योद्घाटन ग्रिम ने १९२६ में किया, जो १९२९ में प्रकाशित^६ हुआ। इसकी दिशा बाणों द्वारा ‘फ० सं० - १९० क’ पर दी गई है जिसको हल - पद्धति कहते हैं। इसका हिन्दी अनुवाद (अंग्रेजी^७ के अनुवाद से) इस प्रकार होगा :—

1. ‘Elijah, priest of Gad - Had (ad).’
2. Winnett : A Study of the Lihyanish and Thamudic Inscriptions (1938), p. - 185.
3. Müller, D. H. : Epigraphie Denkmäler aus Arabien (1899), p. - 304.
4. Halevy : ‘Essai sur les inscriptions du Safa’ - Extrait du Journal Asiatic (Paris - 1882), p. - 391.
5. Littmann : Zur Entzifferung der Safa - inschriften (1901), p. - 92.
6. Grimme, H : Texte und unter Suchungen Zur Safaten - arab. Religion Mit einer Epigraphik (1929), p. - 259.
7. ‘For A - h - l - m son of A - sh - j - m, son of K - s - t and he spent the spring in the (Sacred) region, in the year of Gods.’

‘कस्त सुत द्राल, सुत अशेम, सुत अखलम ने वसन्त ऋतु (एक पवित्र) स्थान में (उस वर्ष) बिताई (जो) वर्ष देवताओं के (थे) ।’

सफातैनी का प्रतिदर्श

⊙ P 6 5 . P P C . VI + 3 6 C X

→ व द त अ . ह द र . स ल त . श ज र त . →

D b 3 5 . 7 . 1 5 7 v . 7 . H A R

म ज श अ . न ब . ल अ र द न ब . त स क →

7) K 4 1 7

वन अ ख ल म →

फलक संख्या - १९० क

लिहियानिक लिपि : इस लिपि का नाम पश्चिम के विद्वानों ने लिहियानिक, लिथिनाइट तथा देदेनाइट रखा है। यह चट्टानों पर उत्कीर्ण किये हुए लेखनकला की तीन शाखाओं में से (थामुडिक, सफ़ायटिक तथा लिहियानिक) एक है। इस लिपि के अभिलेख १८८९ में हूवर, एण्टिग, याओसन तथा सैविगनाक द्वारा उत्तरी अरेबिया के अल - ऊला तथा अल हिजर के नगरों से प्राप्त हुए। इनकी लेखन पद्धति दायें से बायें तथा बायें से दायें - दोनों ओर की - मिली है। इन अभिलेखों का काल ई० पू० के ४०० से २०० तक निर्धारित किया गया है। कुछ अभिलेख ७०० से ४०० तक के भी प्राप्त हुए हैं। इन अभिलेखों का रहस्योद्घाटन इमाइल रोडिगर तथा जेसेनियस ने किया था और जी० रीकमन्स (G. Ryckmans) ने एक पुस्तक^१ में संकलित किये हैं।

उन अभिलेखों की एक वर्णमाला^२ ‘फ० सं० - १९१’ पर दी गई है। देवनागरी अक्षरों का प्रयोग केवल ध्वनि का बोध कराने के लिए किया गया है।

ई० पू० की दूसरी शताब्दी के आरम्भ के पश्चात् जब उत्तरी अरेबिया से नब्ती का विकास तथा प्रसार हुआ तब लिहियानिक का शनः शनः लोप होने लगा। यह लिपि दक्षिण - सेमिटिक वंश की मानी जाती है।

1. Repertoire d'epigraphie Semitique Vol. VII (1912), p. - 271.

2. Winnett : A study of Lihyanish and Thamundic Inscriptions (1938), p. - 171.

मण्डायक, सफातैनी, उम्म -- अल -- जमल

ध्व	म०	सफा०	उ० ज०	ध्व	म०	सफा०	उ० ज०
अ	α	खखइकत्र	खत्र	स	ω		
ब	इ)) ० १	० ०	ऐ	⌒	० ४ ०	०
ग	ए	० ० ०		फ	४	३ ६	
द	उ	४ ४ ४	४ ४	स	४	१ १ १ १ १	१
ह	१ Δ	४ ४ ४ ४ ४	४ ४	क	⌒	४ ४	४
व	०	० ०	० ०	र	⌒	० ० ४ ४ ४	४
ज	।	। । । । ।	।	श	४	३ ६	५
झ	~	^ ४ ० ३	३ ३	त	४	४ ४	४
ट	।	। । ।		स		। । । ४ ४	४
ड	८	१ ० ४	४	ड		४ ४	४
क	४	४ ४ ४ ४		ट/त		४ ४ ६	४
ल	।	। । ।	।	ख		४ ४	४
म	४	४ ४ ४	४	ड		। । । #	०
न	४	४ ~	०	ज		। । । ।	।
				वे		४ ४ ४ ४	४

फलक संख्या - १९०

लिहियानिक लिपि

व	ह	द	ज	ब	अ
⊙	◊	↘	◊	➤	⌒
ल	क	ज	त	ह	ज
१	↙	♀	⊞	↑	⌒
क	स	प/फ़	अ	न	म
१	⌒	⌒	⌒	⌒	⌒
ड	स	त	श	र	
⌒	⌒	⌒	⌒	⌒	⌒
ये(ज)	ज	ख	ट		
⌒	⌒	⌒	⌒	⌒	⌒

फलक संख्या - १९१

सिनाइ



फलक संख्या - १९२

सिनाइ की लिपियाँ

परिचय : सिनाइ मिस्र तथा अरेबिया के मध्य एक प्रायद्वीप है। इस भूभाग में न कभी कोई राज्य था, न कोई राजधानी थी और न कोई राजा। यहाँ न कभी इतनी जनसंख्या थी कि कोई राज्य स्थापित हो सके। यह भूभाग रेत से परिपूर्ण है। परन्तु फिर भी प्राचीन काल से बड़ा प्रसिद्ध रहा। इस स्थान को यहूदी, ईसाई तथा मुसलमान बड़ा पवित्र स्थान मानते हैं क्योंकि इसी सिनाइ के एक पहाड़ पर हज़रत मूसा को भगवान् यहोवा के दर्शन प्रकाश के रूप में हुए और उनकी ओर से कुछ आज्ञायें प्राप्त हुईं। इस पहाड़ को माउण्ट सिनाइ (Mount Sinai व कोहेतूर) कहते हैं। यहीं पर हेब्रू जाति के लोगों का पड़ाव पड़ा था जब कि वे मिस्र को छोड़ कर ई० पू० तेरहवीं श० में आये थे।

इसके अतिरिक्त मिस्र तथा अन्य पश्चिमी देशों के मध्य स्थित होने के कारण यह स्थान दोनों ओर के देशों की संस्कृतियों को मिलाने में बड़ा प्रसिद्ध रहा है। यह सदैव मिस्र के अधीन रहा चाहे मिस्र पर किसी वंश का राज्य क्यों न रहा हो। यहाँ पर तांबे की खानें भी थीं और ई० पू० की सत्रहवीं श० में इन खानों में बहुत से लोग, जो इस स्थान के पूर्व व पश्चिम में निवास करते थे, काम करते थे। यह काल सेमिटिक जाति के हिक्सास के राज्य का काल था जब वे मिस्र पर राज्य करते थे।

सिनाइ की प्राचीन लिपि : इस लिपि के १५ शिलालेख एक विश्वविख्यात पुरातत्त्ववेत्ता फ्लिण्डर्स पेट्री (Flinders Petrie) ने १९०४-५ के उत्खनन¹ द्वारा प्राप्त किये। इन शिलालेखों का काल १८०० - १६०० ई० पू० माना गया है। अन्य सेमिटिक लिपियों की तरह इसमें भी स्वर चिह्न नहीं मिलते। इसको पढ़ने वाला स्वयं स्वरों को अर्थानुसार पढ़ते समय जोड़ लिया करता था। इसमें १९ चिह्न प्राप्त हुए थे। 'फ० सं० - १६३' पर दिये गये वर्णों की ध्वनियाँ तथा उनका रहस्योद्घाटन ए० यच० गार्डिनर (A. H. Gardiner) द्वारा १९१६ में किया गया²। इस लिपि में पहले ३२ चिह्न मिले परन्तु उनमें से ८ के केवल रूप भेद थे इस कारण वर्णमाला में २४ चिह्न³ दिये गये हैं। इस लिपि के दो लघु - अभिलेख⁴ एक स्क्रिप्स⁵ (शरीर शेर का परन्तु सिर मनुष्य का) के प्रतिदर्श के दोनों ओर अंकित हैं। यह स्क्रिप्स ब्रिटिश संग्रहालय - लन्दन (यु० के०) में सुरक्षित है। इन दोनों अभिलेखों की दिशा बाईं ओर से है। इनका हिन्दी अनुवाद, जो अंग्रेजी⁶ के अनुवाद से लिया गया है, इस प्रकार है :— (फ० सं० - १९३ के नीचे)

१. 'बालत (बाल देवता) का प्रेम (कृपा दृष्टि) मिला'।

२. 'बालत (बाल देवता) की सेवा में'।

1. Moorhouse, C. : Writing and the Alphabet (Lond. 1946), p. - 41.
2. Gardiner, A. H. : The Inscriptions of Sinai (1955), p. - 201.
3. Sprengling, M. : The Alphabet (1931), p. - 28.
4. Albright, W. F. : 'Early Alphabetic Inscriptions from Sinai and their Decipherment - Bulletin of the American Schools of Oriental Research - No. 110 (NY. 1948), p. - 6 - 22.
5. इस प्रकार की अनेक मूर्तियाँ मिस्र में दृष्टिगोचर होती हैं। लेखक के पूछने पर वर्ड पथप्रदर्शक ने बताया कि प्राचीन मिस्र के शासक यह विश्वास करते थे कि शासक को शक्ति शेर की रखनी चाहिये परन्तु बुद्धि मनुष्य की हो।
6. (i) 'Loved by Baalat (Baal) - (final 't' is damaged)
(ii) 'Voting for Baalat.'

सिनाइ की लिपियाँ

व	ह	द	द	ग/ज	ब	ब	अ	अ
𐤅	𐤆	𐤇	𐤈	𐤉	𐤊	𐤋	𐤌	𐤍
प/फ	ए/ओ	स	न	म	ल	क	इ	ज
𐤎	𐤏	𐤐	𐤑	𐤒	𐤓	𐤔	𐤕	𐤖
त श र क								
𐤗 𐤘 𐤙 𐤚								
१								
𐤛	𐤜	𐤝	𐤞	𐤟	𐤠	𐤡	𐤢	𐤣
म	ऑ	ह	ब	अ	ल	त		
२								
𐤤	𐤥	𐤦	𐤧	𐤨	𐤩	𐤪	𐤫	𐤬
इ	व	द	ल	ब	अ	ल	त	

फलक संख्या - १९३

सिनाइ की अरबी लिपि : इस लिपि को नवात तथा उसके निकट के अरब निवासी ईसा की लगभग पहली तथा तीसरी शताब्दी के मध्य उत्कीर्ण करते रहे। उत्कीर्ण करने वाले अधिकतर पर्यटनशील व्यापारी थे जो अपने काफ़िले के साथ स्वेज नहर से पूरब की ओर ७५ मील पर एक ग्राम अबुखिनेमा की उपत्यका में पड़ाव डाला करते थे। उत्कीर्ण की हुई चट्टानों के स्थान का नाम इसी कारण 'वादियेमुक्तब' (लेखन की उपत्यका) पड़ गया।

सर्वप्रथम कॉसमस (Cosmus), जो सिकन्दिया का एक व्यापारी था लगभग ३०० वर्ष पूर्व भारत आया था। उसने यह मरुस्थान पैदल पार किया, तब उसने इन चट्टानों को देखा। अपने संस्मरण १७०७ में इटली में प्रकाशित कराये। तत्पश्चात् डा० रिचर्ड पोकोक (Richard Pococke) ने इन शिलालेखों की कुछ प्रतिलिपियाँ तैयार कीं। उसने समझा कि यह उत्कीर्ण कार्य उन हेब्रू लोगों का है जो ह० मूसा के साथ सिनाइ आये थे। तदनन्तर १८३० में जी० यफ़० ग्रे (G. F. Gray) ने १७७ प्रतिलिपियाँ तैयार कीं जो एक पाक्षिक^१ में प्रकाशित हुई तथा १८४० में एक जर्मन प्राच्यवेत्ता ई० यफ़० यफ़० बियर (E. F. F. Beer) ने अपना एक शोध-लेख प्रकाशित^२ किया जिसमें अनेक विद्वानों के रहस्योद्घाटन के प्रयासों का वर्णन किया, उदाहरणार्थ — पोकोक, मोन्तेग, नीब्हुस, कॉन्तेली, रोज़िएर, बर्कहाइड, ग्रे, लाबोर्दे, प्रूधोक, मेजर फ़ेलिक्स इत्यादि। अन्त में १९०४ में फ़िलिण्डर्स पेट्री ने उसकी प्रतिलिपियाँ तैयार कीं तथा उसकी वर्णमाला^३ भी तैयार की जो 'फ० सं० - १९४' पर ऊपर की ओर दी गई है।

उसी के नीचे एक अभिलेख^४ भी दिया गया है जिसको बियर ने पढ़ा। इस अभिलेख का लिप्यन्तरण, शब्दार्थ तथा हिन्दी अनुवाद निम्नलिखित है :— (सीधी ओर से पढ़िये)

उत्कीर्ण शब्द

अर्थ

आम

साधारण (मनुष्य)

कारा

चिल्लू से पानी पीना

अदरदर

पानी का सोत (चश्मा)

अमा

यह सत्य है (बिलाशक)

आम

साधारण

अदरम (अदाराम)

दो स्थान जहाँ पानी भरा रहता था

रमहा

गधे को पीटना

हज़र

छड़ी से पीटना

दर (जर)

वृक्ष की पतली शाखा

ऑन (एन)

पानी

मर (मुरा)

कड़वा

रफ़ (राफ़)

स्वस्थ करना

1. Gray, G. F. : Transactions of the Royal Society of Literature - Vol. ii - Part. 1. (1830), p. - 251.

2. Beer, E. F. F. : Studia Asiatica (1840), p. - 283.

3. Cowley, A. E. : 'Sinaitic Inscriptions' - Journal of Egyptian Archaeology (1929), p. - 200.

4. Forster, Rev. Charles : One Primeval Language (1850), p. - 273.

सिनाइ की अरबी लिपि

स ज द ख ह स त ब अ
 16 P.9 57 1 X 14 15 16 17 18

म ल क क फ़ ऑ स श
 19 20 21 22 23 24 25 26 27

ज र ये ह न
 28 29 30 31 32 33 34 35

सिनाइ की अरबी लिपि का प्रतिदर्श

16 19 74 75 76 77 78 79

अ म अ र द र द ऑ ऑरा का . म आ

1 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35

र ज ह ऑ ह म र म र द अ म आ

30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

फ़ र र म न ऑ र द

इस अभिलेख का हिन्दी अनुवाद अंग्रेजी¹ के अनुवाद से लेखक द्वारा इस प्रकार किया गया है :—

भाषार्थ :— '(जो) लोग औंधे मुँह से स्रोत (चश्मा) से पानी पीते हैं, (जो) लोग दो स्रोतों पर गधों को वृक्षों की शाखाओं (छड़ियों) से पीटते हैं (वे) कटुता के कुर्वे को स्वस्थ रखते (पाटते) हैं ।'

सबा की लिपि : सबाई या साबी लोग अरेबिया के पर्यटनशील लुटेरे थे । यह लोग दक्षिण की ओर गये और वहाँ जाकर लगभग १२०० ई० पू० में बस गये और अपना एक राज्य स्थापित कर लिया जिसका नाम अपनी जाति के नाम पर सबा रखा । उसकी राजधानी मारिब थी । असीरिया के शासक सेन्नाखरिब (६८५ ई० पू०) के अभिलेखों से ज्ञात होता है कि उस समय इस देश का एक क - री - बी - लू राजा था और उसने इसी शासक से कुछ सुन्दर वस्तुयें भेंट - स्वरूप प्राप्त की थीं ।

इन्हीं अभिलेखों से ज्ञात होता है कि लगभग ई० पू० की सातवीं शताब्दी में सबा के निकट तीन अन्य राज्य भी स्थित थे । एक मिनायन अथवा माईन का राज्य, जिसके मुख्य नगर करनबू, माईन तथा यथील थे । दूसरा हैद्रामौत तथा तीसरा कताबान था । अन्तिम दो राज्य उल्लेखनीय नहीं हैं ।

माईन राज्य में लगभग २५ शासकों ने ई० पू० की बारहवीं से सातवीं श० तक राज्य किया । इसी काल के कुछ अभिलेख पश्चिमोत्तर अरेबिया के अल - ऊला नगर से प्राप्त हुए हैं । ऐसा प्रतीत होता है कि इस राज्य के कुछ उपनिवेश वहाँ पर स्थित थे ।

सबा का राज्य ई० पू० की सातवीं से तीसरी शताब्दी तक स्थापित रहा तथा ई० पू० की तीसरी शताब्दी से ईसा की छठी श० तक हिमारी जाति का राज्य स्थापित रहा । दक्षिणी - पश्चिमी अरेबिया का कोना अफ्रीका देश से मिला हुआ था जहाँ अबीसीनिया का राज्य था । हिमारी राजा ने ३७५ ई० में यहूदी धर्म अपना लिया परन्तु अबीसीनिया का राजा ईसाई धर्म को पालने वाला था । इस कारण इन दोनों देशों में निरन्तर झगड़े चलते रहे । अन्त में हिमारी राज्य अबीसीनिया के अन्तर्गत हो गया और वहाँ का एक प्रान्तपाल शासन करने लगा । ५७९ ई० में हिमारी राज्य पर्शिया राज्य के अधीन आ गया तथा ६२८ में यहाँ के पर्शिया - राज्य के प्रान्तपाल ने इस्लाम धर्म अपना लिया । सबा की लिपि के अभिलेखों को १८८९ में हूबर तथा हर्ण्टिंग ने अल - ऊला से प्राप्त किया । इन अभिलेखों के वर्णों का रहस्योद्घाटन डब्ल्यू० जेसेनियस (W. Geseinius) तथा ई० रोडिगर (E. Rodiger) ने किया और २९ वर्णों में से २४ को ठीक ठीक पहचान लिया । तत्पश्चात् पाँच वर्ण भी पहचान लिये गये । इस लिपि का काल ई० पू० की सातवीं से तीसरी शताब्दी तक का माना जाता है ।

इस लिपि के वर्ण² 'फ० सं० - १९५' पर दिये गये हैं । ऊपर २२ वर्ण हैं तथा नीचे ७ और जोड़े गये थे, केवल भाषा के उच्चारणों के लिए निर्मित हुए । दायें बायें के रेखाचित्रों को देखने से लगता है कि किसी ने बाँसों को जोड़ कर ऊपर चढ़ने के लिए कोई सीढ़ी जैसी बनाई है परन्तु यह शब्द³ हैं जिनको

1. 'The people with prone mouth drinketh (at) water springs. The people (at) the two springs kicketh (like) an ass smiting with the branch of a tree the well of bitterness he heals.'
2. Lidzbarski : 'Der Ursprung der nord Südsemitischen schrift' - Ephemeris. 1. (1928), p. - 109.
3. Müller, D. H. : Epigraphic Deukmäler aus Arabien (1899), p. - 233.

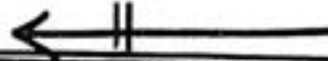
सबा की लिपि

ध्व	चिन्ह	ध्व	चिन्ह	ध्व	चिन्ह	ध्व	चिन्ह
अ	𑀓	ह	𑀡 𑀡	स	𑀭	त	𑀬
ब	𑀢 𑀢	त	𑀮	आ	𑀭	स	𑀬
ज	𑀣	य	𑀤	प	𑀭 𑀭	इ	𑀮
द	𑀥	क	𑀦	स	𑀭 𑀭	ट	𑀮
ह	𑀡 𑀡	ल	𑀩	क	𑀦	ख	𑀥 𑀥
व	𑀭	म	𑀮 𑀮	र	𑀮 𑀮	ड	𑀮
ज़	𑀭	न	𑀥 𑀥	श	𑀮	ज़	𑀮 𑀮

𑀡 𑀮 𑀮 𑀮 𑀮
ह र श ल अ



दायें से बायें
पढ़िये



सात वर्ण जोड़े गये

स ये ड ट ख ज द
𑀬 𑀮 𑀮 𑀮 𑀮 𑀮

𑀭 𑀥 𑀮
स ख अ



पश्चिम एशियाई देशों की लेखन कला]

‘अबुस’ तथा ‘अल शरह’ पढ़ा जायेगा। पहले शब्द के अर्थ हैं ‘प्रतिबिम्ब’ तथा दूसरे के ‘धार्मिक विधि संहिता’।

अरबी लिपि की अन्य शाखायें

अन्य शाखाओं में चार प्रकार की अरबी लिपियाँ मिलती हैं। इनका जन्म व विकास नब्ती लिपि से माना जाता है।

१. जेबेद लिपि : सिरिया की लिपियों में एक अभिलेख का वर्णन पहले किया जा चुका है। यह अभिलेख जेबेद (सिरिया) से १८७९ में प्राप्त हुआ था और इस पर तीन प्रकार की (सिरिया, ग्रीस तथा अरेबिया की) लिपियाँ अंकित थीं। इस अभिलेख का काल ईसा की छठी शताब्दी माना जाता है। इसी अभिलेख की अरबी लिपि का यहाँ वर्णन दिया गया है। इसके १७ वर्ण ‘फ० सं० - १९६’ पर दिये गये हैं।

२. कूफ़ा की लिपि : अरबी में इसको खत्ते कूफ़ी कहते हैं। यह लिपि सुलेख के लिए स्मारकों पर अंकित की जाती थी। इसमें सीधी पंक्तियों से वर्ण बनाये जाते हैं। इस लिपि में क़ुरआन शरीफ़ भी लिखा गया है। इसका जन्म कूफ़ा के नगर में, जो आधुनिक अल हीरा है, ईसा की सातवीं शताब्दी में हुआ था। बारहवीं श० के पश्चात् इसका प्रयोग लगभग समाप्त हो गया। सबसे प्राचीन अभिलेख जेरुसेलम की एक मस्जिद के गुम्बज पर उत्कीर्ण किया हुआ मिला है। इस मस्जिद का निर्माण ६९१ - ९२ में हुआ था। इसमें २८ वर्ण हैं जो ‘फ० सं० - १९६’ पर दिये गये हैं।

३. मगरिबी : (पश्चिम अरबी) इस लिपि की उत्पत्ति एक विद्वान् द्वारा लगभग ईसा की नवीं शताब्दी में कूफ़ा की लिपि से उन मुसलमानों के लिए की गई थी जो अरेबिया के पश्चिमी देशों में जाकर लड़े, बसे तथा इस्लामी राज्य (स्पेन तक) स्थापित किया (फ० सं० - १९६)।

४. नस्ख़ : (शीघ्र लिखी जाने वाली अरबी) - शनः शनः जब मुसलमानों ने जीवन से सम्बन्धित प्रत्येक क्षेत्र तथा विषयों में प्रगति की तब कार्यक्षमता बढ़ाने की भी आवश्यकता हुई और लिपि की गति बढ़ाने के लिए इस नस्ख़ लिपि का विकास किया गया। इसका विकास एक मनुष्य ने नहीं किया। यह समय की आवश्यकतानुसार स्वयं विकसित हुई। इसी लिपि से पंजिया, अफ़ग़ानिस्तान, सिन्ध, कश्मीर व मलाया आदि देशों की लिपियों का विकास उच्चारण की सुविधानुसार परिवर्तन करके हुआ (फ० सं० - १९६)।

नस्ख़ लिपि का विकास :¹ नब्ती लिपि से आठ सौ वर्षों में किस प्रकार हुआ - ‘फ० सं० - १९७, १९७ क’ पर आठ कॉलमों में दिया गया है, जिनका विवरण निम्नलिखित है :—

१. इस कॉलम में ध्वनि को जानने के लिए देवनागरी के वर्ण दिये गये हैं।
२. इसमें नब्ती लिपि (उत्तरी अरबी), जिसका प्रयोग पेट्रा व हिज्ज में ई० सन् की पहली से तीसरी शताब्दी तक रहा, दी गई है।
३. इसमें उस नब्ती लिपि के वर्ण दिये गये हैं जो नमारह में चौथी श० में प्रयोगात्मक थे। लिपि के वर्ण एक अभिलेख से लिये गये हैं जो इम्बुअल क़ैस से प्राप्त हुआ और विद्वानों ने इस अभिलेख का काल ३२८ निर्धारित किया।
४. इसमें छठी श० के वर्ण दिये हैं जो जेबेद व हरन के अभिलेखों से लिये गये हैं। इन अभिलेखों का काल ५१२ तथा ५६८ ई० सन् माना गया है।

1. Abbott, Nabia : Rise and Development of North Arabic-Script (1939), p. - 103.

अरबी लिपि की अन्य शाखायें

ध्व	जेबेद	कूफी	मग़रिबी	नस्ख	ध्व	जेबेद	कूफी	मग़रिबी	नस्ख
अ	ا	ا	ا	ا	ज़		خ	ز	ض
ब	ب	ب	ب	ب	त	ط	ط	ط	ط
त	ت	ت	ت	ت	ज़		ط	ظ	ظ
स		ث	ث	ث	अं	ع	ع	ع	ع
ज	ج	ج	ج	ج	ग		غ	غ	غ
ह	ح	ح	ح	ح	फ़	ف	ف	ف	ف
ख़		خ		خ	क		ق	ق	ق
द	د	د	د	د	ला		ل	ل	ل
ज़		ز	ز	ز	ल	ل	ل	ل	ل
र	ر	ر	ر	ر	म	م	م	م	م
ज़		ذ	ذ	ذ	न	ن	ن	ن	ن
स		س	س	س	व	و	و	و	و
श	ش	ش	ش	ش	ह	ه	ه	ه	ه
स		ص	ص	ص	य	ي	ي	ي	ي
					क		ك		

फलक संख्या - १९६

नब्ती द्वारा नस्खी का विकास

१	२	३	४	५	६	७	८
अ	6611	6	111	L1	11111111	अलिफ़	1
ब	7777	7777	7777	7777	77777777	बे	2
ज	8888	8888	8888	8888	88888888	जीम	3
ड	9999	9999	9999	9999	99999999	दाल	4
इ	0000	0000	0000	0000	00000000	हे	5
व	1111	1111	1111	1111	11111111	वाव	6
ज़	2222	2222	2222	2222	22222222	ज़े	7
ह	3333	3333	3333	3333	33333333	ह	8
त	4444	4444	4444	4444	44444444	तौय	9
थ	5555	5555	5555	5555	55555555	मे	0
क	6666	6666	6666	6666	66666666	काफ़	1

२	३	४	५	६	७	८
ल	ल	ल	ल	ल	ल	ल
म	म	म	म	म	म	म
न	न	न	न	न	न	न
ओ	ओ	ओ	ओ	ओ	ओ	ओ
फ	फ	फ	फ	फ	फ	फ
स	स	स	स	स	स	स
क	क	क	क	क	क	क
र	र	र	र	र	र	र
श	श	श	श	श	श	श
त	त	त	त	त	त	त
ल	ल	ल	ल	ल	ल	ल
नी	नी	नी	नी	नी	नी	नी

फलक संख्या - १९७ क

५. कुरआन मजीद की दो प्रकार की लिपियों का एक प्रयोग हुआ, जिसमें एक मक्का शरीफ में तथा दूसरी कूफा में प्रयोग की गई। हजरत उस्मान द्वारा तैयार किया गया मान्यता प्राप्त था। मक्का में और दूसरा बसरा (बाद में कूफा) के प्रान्तपाल अबू मूसा इब्न कंस द्वारा तैयार किया गया, जो कूफा की लिपि में लिखा गया था, बसरा व कूफा में मान्यता प्राप्त था। इन दो प्रकार की लिपियों में संकलित कुरआन मजीद दोनों जगह पढ़ा जाता था। कूफी लिपि का सबसे प्राचीन अभिलेख यरुसलम की एक मस्जिद के गुम्बज पर उत्कीर्ण पाया गया जिसकी तिथि ६९१ - ९२ ई० सन् मानी गई है। इस लिपि में गोलाई नहीं थी क्योंकि इसका अधिक प्रयोग मस्जिदों पर, बड़े मकानों पर तथा धातु के बर्तनों पर उत्कीर्ण करके किया जाता। इसका प्रयोग सातवीं से बारहवीं श० तक रहा। इस कॉलम में कूफी लिपि के वर्ण दिये गये हैं।
६. इस कॉलम में छठी से सातवीं श० के वर्ण दिये गये हैं जिनका प्रयोग कागज पर लिखने हेतु भिन्न लेखकों द्वारा किया गया।
७. इसमें बर्णों के नाम दिये गये हैं।
८. इसमें नस्खी लिपि के वर्ण दिये गये हैं। इनकी संख्या आरम्भ काल में केवल २२ ही थी परन्तु बाद में (काल निर्धारित नहीं है) सात वर्ण जोड़ कर, जो नीचे दिये गये हैं और जिनके साथ ऊपर की पंक्ति में वर्ण का नाम तथा उसके नीचे उसकी ध्वनि दी गई है, २९ बना दिये गये तथा उनका क्रम भी परिवर्तित कर दिया गया जो आधुनिक नस्खी (अरबी) में इस प्रकार है :— अलिफ़, बे, ते, से, जीम, हे, ख़े, दाल, जाल, रे, जे; सीन, शीन, स्वाद, ज़वाद, तो, जो, ऐन, ग्रैन, फ़े, काफ़, काफ़, लाम, मीम, नू, वाव, हे, ला, ये।

अरबी लिपि के विषय में कुछ अन्य बातें

इस्लाम धर्म के अनुसार मुसलमानों का यह विश्वास है कि अरबी लिपि हजरत आदम के साथ पृथ्वी पर आई परन्तु केवल छः अक्षर उनको अल्लाह के द्वारा प्राप्त हुए। वे अक्षर थे :— अलिफ़, बे, जीम, से, ते, ख़े जिनकी ध्वनि थी अ, ब, ज, स, त और ख़। तत्पश्चात् हजरत मोहम्मद पर दूसरे ढंग से उतरे और वे वर्ण थे :— अलिफ़, हे, रे, सीन, स्वाद, तो, ऐन, काफ़, काफ़, लाम, मीम, नू, हे, ये, जिनकी ध्वनि थी :— अ, ह, र, स, स, त, ऑ, क, क, ल, म, न, ह, इ।

अरबी का कोई शब्द सात वर्णों से अधिक नहीं बनता।

अरबी में कराची नगर का नाम किरातिशी है तथा चर्चिल का नाम तशरतिला (तशतिल) और चीन का सीन है।

'फ० सं० - १९८' पर कूफा की लिपि में इस्लाम धर्म का पवित्र कलमा लिखा है जिसको हृदय से पढ़ने पर कोई भी मनुष्य मुसलमान (अर्थात् अटल विश्वास वाला) हो सकता है। तदनन्तर वह अन्य धार्मिक विचारों को सीखे और जीवन में अपनाये। इस कलमे को दायें से बायें इस प्रकार पढ़ा जायेगा "ला इलाह इलल्लाह, मुहम्मदुर रसूलुल्लाह"। इसके अर्थ हैं 'कोई नहीं है पूजने योग्य सिवाय उस सत्ता के जिसका नाम अल्लाह है और उसका पैग़ाम लाने वाला है (हजरत) मुहम्मद (सल्ल०)'।

'फ० सं० - १९८' के नीचे विभिन्न देशों के नाम दिये गये हैं जहाँ अरबी लिपि में उन देशों की भाषाओं के उच्चारणों के अनुसार नये प्रकार के (अरबी से समानता रखने वाले) वर्णों का आविष्कार किया

कूफी लिपि में 'कलमा'

नये देशों में नये वर्णों का जन्म

ईरान की
फारसी में

गाफ़=ग, ज़ाल=ज़, चे=च, पे=प
گ . ژ . چ . پ

अफ़ग़ानिस्तान
की
पश्तोवदरी में

त.म.दस.त्स.दज़.ई.ज
ټ ډ ځ ښ ړ ږ

भारत की
उर्दू में

गाफ़ काफ़ चीम जीम प भे हे डाल डे
گ ک چ ج پ ڀ ٲ ڙ ڻ ڍ ڊ

मैलेशिया
की मैलै में

ण अं
ڠ ڤ

गया ताकि उच्चारण ठीक हो सकें। क्योंकि जो ध्वनियाँ उन देशों की भाषाओं में पाई जाती थीं वह ध्वनियाँ अरबी भाषा में थी ही नहीं। एक और कठिनाई प्रतीत होती है कि एक ध्वनि के लिए दो और तीन तक वर्ण मिलते हैं। उन वर्णों का आविष्कार क्यों और कब किया गया, जानना कठिन ही नहीं असम्भव प्रतीत होता है (फ० सं० - १९८)।

अरमेनिया

इतिहास : ई० पू० की नवीं श० में अरमेनिया के निवासी दो नामों से सम्बोधित किये जाते थे। एक उरार्ती से, उरार्तू पहाड़ पर व उसके निकट निवास करने के कारण तथा खाल्दी से, अपने मुख्य देवता खाल्दी के नाम के कारण। वान झील के किनारे पर बसा वान नगर इनकी राजधानी थी। असीरिया से इनके युद्ध होते रहते थे। अन्त में सरगोन द्वितीय (७२२ - ७०५ ई० पू०) से परास्त होने के कारण इनका पतन होने लगा।

कालासागर के उत्तर से एक भारोपीय जाति, जो यहाँ आकर बसने लगी थी, यहाँ के निवासियों से इतनी घुल - मिल गई कि वह आरमेनियन कहलाने लगी। ६१२ ई० पू० में मीडिया ने इसको परास्त किया। ५४९ में यह पर्शिया का एक प्रान्त बन गया। ३३१ में सिकन्दर के साम्राज्य का अंग बन गया। तत्पश्चात् यह दो प्रान्तों में विभाजित कर दिया गया। १९० ई० पू० में दोनों प्रान्तपतियों ने ऐण्टीओकस तृतीय (Antiochus III) के, जो सीरिया का राजा (२२३ से १८७ ई० पू० तक) था, के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और स्वतन्त्र हो गये। एक प्रान्तपति आर्ताक्सियाज ने आर्ताक्सेटा मुख्य नगर के साथ विशाल अरमेनिया का तथा दूसरे जेरियाड्स ने सोफ्रीन (लेसर अरमेनिया) का राज्य स्थापित किया। ९५ ई० पू० में यह रोम द्वारा परास्त हुए तथा ६९ में रोम राज्य के अंग बन गये।

त्रिडेत्स प्रथम (Tiridates) ६६ ई० सन् में रोम की अधीनता में अरमेनिया का राजा घोषित कर दिया गया। ३०३ ई० में त्रिडेत्स तृतीय ने ईसाई धर्म को अपना राज्य धर्म बना दिया। धर्म परिवर्तन के कारण चौथी श० में अरमेनिया और पर्शिया के मध्य युद्ध चलते रहे जिसके फलस्वरूप यह देश ३८७ में फिर दो भागों में (रोम और पर्शिया का ग्रास बन कर) विभाजित हो गया। अरबों ने पर्शिया को परास्त कर इन दोनों भागों पर भी अपना अधिकार सातवीं श० के अन्त तक जमा लिया। फिर भी अरमेनिया को शान्ति न मिली। सेलजुक और बैजन्टाइन में युद्ध होने लगे। सेलजुक लोगों की जीत हुई और इन लोगों ने इसको अपने अधीन कर अरमेनिया को पुनः अखण्ड बना दिया।

१२४० में मंगोलों ने पूरे पश्चिमी एशिया पर अपना अधिकार कर लिया तथा नरसंहारक लूटमार मचाते रहे। इसी काल में अरमेनिया के निवासी दुखी होकर अपना घर बार छोड़ छोड़ कर विश्व के अन्य देशों में जाकर बसने लगे। १३५१ में अरमेनिया छोटे छोटे राज्यों में विभाजित हो गया। प्रथम महायुद्ध में लगभग दस लाख निवासी मार डाले गये ताकि अरमेनिया जाति ही समाप्त कर दी जाये। बचे हुए लोगों ने अरमेनिया का रूस के अन्तर्गत एक स्वतन्त्र गणराज्य स्थापित कर लिया।

अरमेनिया की लिपियाँ : एक ईसाई सन्त मेस्राप (मेस्राब - मृत्यु ४४१ ई० सन्) ने पाँचवीं श० के आरम्भ में इस देश के लिए अरमायक व ग्रीक लिपि के वर्णों की सहायता से एक ३८ वर्णों की लिपि तैयार की जिसमें कुछ परिवर्तन के साथ नाम भी बदलते रहे, जो निम्नलिखित थे :—

सकेत:-

१. लीकिया
२. फ्रीडिया
३. लाइकोनिया
४. पैम्फिलिया
५. क्लीशिया
६. गलाटिया
७. सोफ्रोन
८. कोनोजिनी
९. आसोपनी
१०. असीरिया
११. मेसोपोटामिया
१२. पैलेस्टाइन
१३. अरेबिया - चेद्रा
१४. एशिया - माइनर
१५. सीरिया
१६. लेसर अरमेनिया
१७. पोन्टस

पश्चिम एशिया - १३० ई० सन (अरमेनिया)



१. एकंत - अजिर (लोह - लिपि) - आठवीं श० तक ।
२. मेस्रोपी लिपि - नवीं से बारहवीं श० तक ।
३. बोलर - अजिर (गोल लिपि) - बारहवीं से चौदहवीं श० तक ।
४. नोत्र - अजिर (शीघ्र लिपि) - पन्द्रहवीं से अठारहवीं श० तक ।
५. सेल - अजिर (मिली हुई लिपि) - अठारहवीं से उन्नीसवीं श० तक ।
६. नवीन लिपि (आधुनिक) - उन्नीसवीं से अब तक ।

इसमें अधिक प्रयोगात्मक बोलर - अजिर है । इसमें ३८ अक्षर हैं । इसकी वर्णमाला 'फ० सं० - २००' पर दी गई है । इसमें कुछ अन्य देशों व लिपियों के अक्षर लिये गये हैं, कुछ में परिवर्तन करके लिये गये हैं, कुछ का आविष्कार किया गया है तथा कुछ ओर नई ध्वनियों को भाषा के अनुसार उत्पन्न करने के लिए अक्षरों का रूप दिया गया । इस प्रकार से यह आधुनिक लिपि तैयार की गई है । अजिर के अर्थ हैं अक्षर ।

'फ० सं० - २००' पर दो प्रकार की लिपियाँ^१ दी गई हैं । एक मुद्रणार्थ जिसमें बड़े व छोटे अक्षर तथा दूसरी हस्त - लेखनार्थ जिसमें बड़े छोटे अक्षर दिये गये हैं । पहले कॉलम में ध्वनियों के लिए देवनागरी वर्ण हैं तथा दूसरे कॉलम में वर्णों के नाम दिये गये हैं ।

जॉर्जिया

इतिहास : बेबीलोन - निवासी जफ़ेत का एक पुत्र तरगोमास काकेशस के पहाड़ों में आकर बस गया था । इसके एक पुत्र कार्टलास के वंशज कार्टलियन (पूर्वी जॉर्जिया निवासी) हुए तथा दूसरे पुत्र एग्रास के वंशज मिग्रेली (पश्चिमी जॉर्जिया निवासी) हुए । जब सिकन्दर ने ३३१ ई० पू० में पर्शियन साम्राज्य को नष्ट कर दिया, कार्टलियन (इसका दूसरा नाम आइबेरिया भी था परन्तु यह स्पेन वाला आइबेरिया नहीं था) के राजा फ़रनबाज ने दोनों भागों को मिला कर एक करके उसको सिकन्दर के प्रान्तपतियों से मुक्त करा लिया और स्वतन्त्र रूप से राज्य किया ।

आइबेरिया का राजा मिरियानी (३०० से ३६२ तक - ई० सन्) इसाई हो गया । तत्पश्चात् यह पर्शिया के अधीन रहा और ५३३ में उसका एक प्रान्त बना लिया गया परन्तु बेंजेष्टाइन ने फिर इसको स्वतन्त्र करवा दिया और गुआराम को नरेश बना दिया जिसने तिफ़लिस या त्बीलिसी (त्बीली = गर्म) को ५६२ में अपनी नई राजधानी बनाया ।

इसा की सातवीं श० में यह मुसलमानों के अधीन हो गया और एक अरब यहाँ का राजा बना कर भेज दिया गया । इन्हीं दिनों एक बगरातनी वंश जॉर्जिया व अरमेनिया पर अपनी सत्ता स्थापित करने के लिए गृहयुद्ध करने लगा । इसी वंश का बगरात तृतीय (१००८ - १०१४ ईसवी) सफल हो गया और राजा बन गया और दोनों को मिला दिया । बगरात चतुर्थ (१०२७ से १०७२ ई० तक) के काल में सेलजुक - तुर्कों ने जॉर्जिया पर आक्रमण कर दिया परन्तु धर्म - युद्ध (Crusades) के आरम्भ हो जाने के कारण तुर्क फिर पश्चिम की ओर लौट पड़े । डेविड द्वितीय अगमाशेरबेली (१०८९ से ११२५) ने ११२२ में फिर तिफ़लिस को परास्त कर दिया ।

जब डेविड का स्वर्गवास हुआ तो अराजकता जागने लगी । परन्तु रानी तमारा (११८४ - १२१२) ने परिस्थिति को ठीक कर लिया तथा राज्य का कुछ विस्तार भी किया । १२२० में चंगेज खाँ की सेना ने

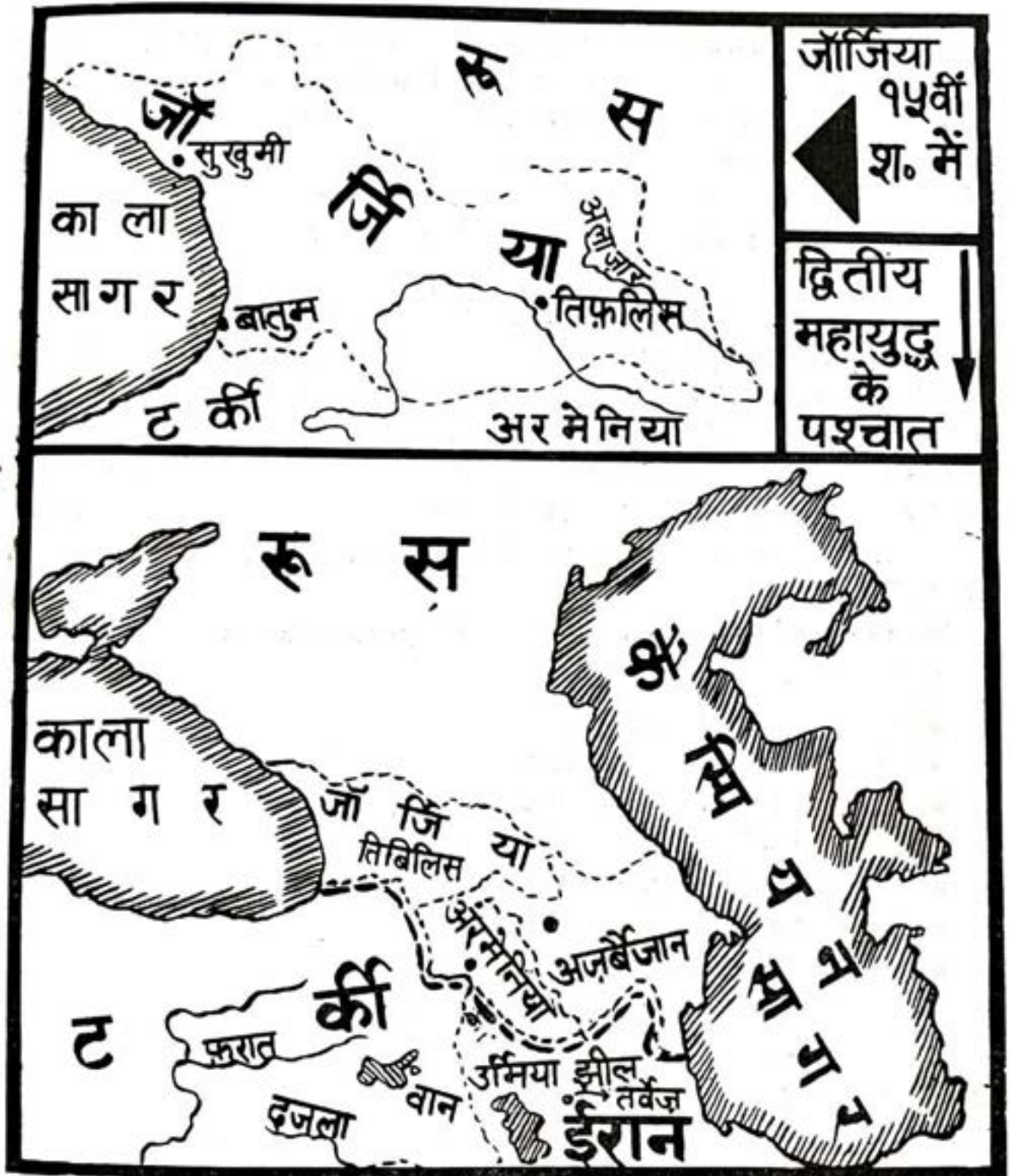
1. Bossert : Elements de la langue georgienne (1873), p. - 2.

अरमेनिया की लिपि -- बोलर -- अजिर

ध्व	नाम	मुद्रण के	हस्त लेखन	नाम	ध्व	मुद्रण	हस्त लेखन के
अ	ऐब	Ա ա	Վ վ	में	म	Մ մ	Մ մ
ब	बेन	Բ բ	Շ շ	ईई-ही	ई	Է է	Շ շ
ग	गिम	Գ գ	Չ չ	नू	न	Ն ն	Ն ն
द	दा	Դ դ	Պ պ	शा	श	Շ շ	Շ շ
ए	एच	Ե ե	Ջ Ջ	वू	वू	Վ վ	Վ վ
ज़	ज़	Զ զ	Ջ Ջ	भा	भा	Մ մ	Մ մ
ई	ई	Է է	Դ դ	पे	प	Պ պ	Պ պ
इ	इत	Ը ը	Ջ Ջ	चे	च	Չ Չ	Չ Չ
त	तो	Թ թ	Պ պ	रा	र	Ր ր	Ր ր
ज़ह	ज़ह	Ժ ժ	Ջ Ջ	से	स	Ս ս	Ս ս
ई	इनि	Ի ի	Պ պ	वेव	व	Վ վ	Վ վ
ल	लिपून	Լ լ	Ն ն	टिपून	ट	Տ տ	Տ տ
ख	खे	Խ խ	Պ պ	रे	र	Ր ր	Ր ր
त्स	त्सा	Օ օ	Շ շ	त्सो	त्स	Օ օ	Շ շ
क	केन	Կ կ	Շ շ	हीउन	हे	Ի ի	Վ վ
ह	म्हो	Հ հ	Դ դ	पिवर	प	Պ պ	Պ պ
दज़	दज़ा	Ջ Ջ	Շ շ	खे	ख	Վ վ	Վ վ
घ	घाट	Ղ ղ	Շ շ	औ	औ	Օ օ	Օ օ
ज	जे	Ճ ճ	Շ շ	फे	फ	Փ փ	Փ փ

फलक संख्या - २००

अरमेनिया जॉर्जिया



फलक संख्या - २०१

जॉर्जिया की शान्ति को भंग कर दिया और १२३६ में यह मंगोल राज्य का एक अंग बन गया। जब पर्शिया में मंगोल के शासन का अन्त होने लगा तो फिर जियार्जी — पंचम नरेश के राज्य में (१३१४ — १३४६) शान्ति एवं एकता आ गई। १३८६ में तैमूर ने फिर आक्रमण करके वगरात पंचम (१३६० — १३९३) को बन्दी बना लिया। १४०४ ई० सन् तक तैमूर का नरसंहार होता रहा परन्तु सिकन्दर के शासन (१४१३ — १४४३) काल में जॉर्जिया ने नया जन्म लिया। १७२२ में जब रूसी साम्राज्य ने अपने हाथ बढ़ाये तो इकाली द्वितीय ने १७८३ में रूस से एक सन्धि कर ली। १७९५ में पर्शिया के राजा आगा मोहम्मद ने जॉर्जिया पर आक्रमण करके तिबलिस को नष्ट — भ्रष्ट कर दिया। १७९८ में इकाली राजा का स्वर्गवास हो गया। उसका उत्तराधिकारी जियार्जी बारहवाँ १८०० में परलोक सिंघार गया और जॉर्जिया का राज्य रूस के साम्राज्य का अंग बन गया और रूस के राजनैतिक परिवर्तन के साथ एक स्वतन्त्र गणतन्त्र रूसी — पदों में हो गया।

जॉर्जिया की लिपि : इसके भी जन्मदाता सन्त मेस्त्राव हैं। जॉर्जिया निवासी पहले लोग हैं जिन्होंने अपनी भाषा की लिपि प्राप्त की। इसकी दो शाखायें हैं। एक हुतसुरी या खुतसुरी (हुतसी = पुजारी; खस्ते = लिपि या अक्षर + सुरी = आकाश अर्थात् आकाश से प्राप्त लिपि) धार्मिक लिपि है। दूसरी मेहद्रूली सैनिक (मेहद्री = सैनिक) लिपि है। हुतसुरी में ३८ चिह्न हैं (३८ छोटे तथा ३८ बड़े, रोमन के प्रकार से)। अब इसका प्रयोग कम हो गया है। मेहद्रूली का प्रयोग आज भी प्रचलित है। इसमें ४० चिह्न हैं जिनमें सात का प्रयोग अब नहीं होता। इसको जॉर्जिया के एक राजकुमार पनवाइ ने ईसा की चौथी श० के आरम्भिक चरण में बनाया था और कुछ विद्वानों के मतानुसार खुतसुरी से पूर्व इसका प्रयोग था। मेस्त्राव ने कुछ परिवर्तन इसमें भी किये। यह खुतसुरी की हस्तलिखित पद्धति है। हस्तलिखित में संश्लिष्ट अक्षरों का भी निर्माण किया गया है।

इन दोनों लिपियों में ग्रीक, अरमायक व पहेलवी के वर्ण या तो अपने शुद्ध रूप में या परिवर्तित रूप में पाये जाते हैं।

‘फ० सं० — २०२’ पर जो लिपियाँ^१ दी गई हैं उनका विवरण इस प्रकार है :—

बाएँ से दाएँ की ओर—

- पहले कॉलम में ध्वनियाँ दी हुई हैं।
- दूसरे कॉलम में अक्षरों के नाम दिये गये हैं।
- तीसरे कॉलम में पाँचवीं श० के खुतसुरी के अक्षर हैं।
- चौथे कॉलम में नवीं श० के खुतसुरी के अक्षर हैं।
- पाँचवें कॉलम में ग्यारहवीं श० के खुतसुरी के अक्षर हैं।
- छठे कॉलम में मुद्रण के लिए खुतसुरी के अक्षर हैं।
- सातवें कॉलम में हस्तलिखित मेहद्रूली के अक्षर हैं।

जिन अक्षरों पर तारे के चिह्न बने हैं उनका प्रयोग अब नहीं होता है। इसी कारण जो अक्षर मेहद्रूली में ४० तक हो गये थे अब केवल ३३ का ही प्रयोग होता है। ग्रीक लिपि के प्रभाव के कारण यह लिपि बाएँ से दाएँ पढ़ी व लिखी जाती है।

‘फ० सं० — २०३’ पर हस्तलिखित छोटे अक्षर दिये गये हैं तथा कुछ शब्द^२ भी दिये गये हैं।

1. Decters, G. : ‘Das Alter der georgischen Schrift’ — Oriens Christianus No. 39. (1955), p. — 63.
2. Bossert : Elements de la langue georgienne (1873), p. — 6 — 9.

जॉर्जिया की लिपियाँ

ध्व०	नाम	५वीं	६वीं	११वीं	खु०	मे०	ध्व०	नाम	५वीं	६वीं	११वीं	खु०	मे०
अ	अन	ა	ა	ა	ა	ა	ბ	ბ	ბ	ბ	ბ	ბ	ბ
ब	बन	ბ	ბ	ბ	ბ	ბ	გ	გ	გ	გ	გ	გ	გ
ग	गन	გ	გ	გ	გ	გ	დ	დ	დ	დ	დ	დ	დ
द	दन	დ	დ	დ	დ	დ	ე	ე	ე	ე	ე	ე	ე
ए	एनी	ე	ე	ე	ე	ე	ვ	ვ	ვ	ვ	ვ	ვ	ვ
व	विन	ვ	ვ	ვ	ვ	ვ	ზ	ზ	ზ	ზ	ზ	ზ	ზ
ज़	ज़ेन	ზ	ზ	ზ	ზ	ზ	ყ	ყ	ყ	ყ	ყ	ყ	ყ
एइ	एइ*	ი	ი	ი	ი	ი	შ	შ	შ	შ	შ	შ	შ
थ	थन	თ	თ	თ	თ	თ	ჩ	ჩ	ჩ	ჩ	ჩ	ჩ	ჩ
ई	ईन	ი	ი	ი	ი	ი	ც	ც	ც	ც	ც	ც	ც
क्क	क्कन	კ	კ	კ	კ	კ	ძ	ძ	ძ	ძ	ძ	ძ	ძ
ल	लस	ლ	ლ	ლ	ლ	ლ	წ	წ	წ	წ	წ	წ	წ
म	मन	მ	მ	მ	მ	მ	ჭ	ჭ	ჭ	ჭ	ჭ	ჭ	ჭ
न	नर	ნ	ნ	ნ	ნ	ნ	ხ	ხ	ხ	ხ	ხ	ხ	ხ
इए	इए*	ი	ი	ი	ი	ი	ჯ	ჯ	ჯ	ჯ	ჯ	ჯ	ჯ
ओं	ओंन	ო	ო	ო	ო	ო	ქ	ქ	ქ	ქ	ქ	ქ	ქ
प्प	प्पर	პ	პ	პ	პ	პ	ჟ	ჟ	ჟ	ჟ	ჟ	ჟ	ჟ
ज़्ह	ज़्हन	ჟ	ჟ	ჟ	ჟ	ჟ	რ	რ	რ	რ	რ	რ	რ
र	रइ	რ	რ	რ	რ	რ	ს	ს	ს	ს	ს	ს	ს
स	सन	ს	ს	ს	ს	ს	ყ	ყ	ყ	ყ	ყ	ყ	ყ

जॉर्जिया की मेहदूली -- हस्त लिपि के अक्षर

अ	ब	ग	द	ए	व	ज़	थ	ई	
ॐ	ॐ ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	
क्क	ल	म	न	ओं	प्प	ज्ह	र	स	
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	
त्त	उ	प	क	घ	क्क	श	च	त्स	दज़
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
त्स	त्श	ख	दज़	ह					
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ					
ॐ ॐ									

पठनीय सामग्री

- Albright, F. W.* : Chronology of South Arabia.
Abbot, Nabia : The Rise of the North Arabic Script and its Kuranic Development (1939).
- Ali Khan, Hakim Mahmud* : इल्मुल हुरूफ़
- Arberry, A. J.* : Specimens of Arabic and Persian Palaeography (1929)
Avallshvill, Z. : A History of Georgian People (1932).
Bernheimer, C. : Palaeografia arabica (1924).
Cantinean, J. : La nabateen - 2. Vols. (1930 - 32).
Drower, E. S. : Mandaean Writings (1934).
Enting, J. : Nabataische Inschriften aus Arabien (1885)
Gugushvili, A. : The Georgian Alphabet.
Hoffman : Beginnings of Writing.
Kraeling, E. J. H. : The Origin and Antiquity of Mandaeans. (Journal of the American Oriental Society - 1929).
- Karkash* : A Critical History of Armenia (1882).
Littmann, E. : Safaitic Inscriptions (1943).
Lalaian, J. : Catalogue of Armenian MSS of Vassbourajan (1915).
Lepsius, J. : Armenia and Europe.
Mader, E. : L'evangile armenienne (1920).
Massey, W. : Origin and Progress of Letter.
Mason, W. A. : The History of the Art of Writing (1920).
Pett, T. A. : The Inscriptions of Sinai (1917).
Stark, F. : Some - Pre - Islamic Inscriptions (Journal of Royal Asiatic Society 1939).
- Winnett, F. V.* : The Place of Minaeans in the History of Pre - Islamic Arabia. (1935).
 " " : A study of the Liyanite and Thamudic Inscriptions (1937).
Wardrop, O. : Catalogue of Georgian MSS (1913).





परिशिष्ट

10/10/10

परिभाषिका

पृष्ठ सं०	पंक्ति सं०	ऐसा है	ऐसा होना चाहिये
२१	अन्तिम	सौजन्यता	सौजन्य
५०	३	२३	१५
५३	२१	२६००	१६००
७८	१	मौर्य	मौर्य
	३	पुनर्मठन	पुनर्मठन
८७	९	साम्राज्य	साम्राज्य
८०	२६	बहादुर शाह	बहादुर शाह
८१	अन्तिम	संघर्ष	संघर्ष
९५	१	ब्राण	ब्राह्मण
	१५	भू-गर्भ	भू-गर्भ
	२१	१५०० ई० पू० में अन्त हो गया	१५०० ई० पू० में हो गया
	२२	होता	होना
९६	१४	सेसिटिक	सेमिटिक
८८	३०	पश्चिमात्तर	पश्चिमोत्तर
१०१	५	पहलवी	पहलवी
१०४	शीर्षक	संलिष्ट	संश्लिष्ट
११३	१०	स्वयं	स्वयं
१२५	६	इसने	इसने
	७	बड़े	बड़े
	नोट	yazdai	Yazdani
	२३	कलीहार्न	कीलहार्न
१२९	१०	१५०	५०
१३२	१२	ताम्रपत्रों	ताम्रपत्रों
१५२	१	कामरूप की बंगला की असम लिपि	कामरूप की बंगला लिपि
१५७	१३	सामान्त	सामन्त
१८६	३	७४७ ७५३	७४७ से ७५३
१८८	१५	डा० कीलहार्न	डा० कीलहार्न
	२१	अ अ ण ण झ झ	अ अ ण रा झ
२०४	अन्तिम	तीन से	तीन सौ से
२०६	१६	विभाजित होते	विभाजित होते होते
	१७	मुलेख	मुलेख

पृष्ठ सं०	पंक्ति सं०	ऐसा है	ऐसा होना चाहिये
२१२	११	जाजोफ हूकर जो	जाजोफ हूकर का जो
२२७	अन्तिम	राज्या	राज्य
२३२	१३	निनेव	निनेवः
२३५	५	Tosblots	Tablets
	नोट	जनुवाद	अनुवाद
२३८	१०	बेबीलोनिया नव -	बेबीलोनिया में नव -
२३६	२६	पूरातरव	पूरातत्त्व
२४१	४	विश्व	विश्व
२४३	नोट - 1	लूरा विश्व	लूरो विश्व
२४८	२०	एकबहान	एकबटान
	२८	पुरोहित - राजा	पुरोहित ने - राजा
	अन्तिम	परसगादे	परसगादे
२५०	२८	भ्रष्ट	भ्रष्ट
२५७	नोट - 7	सारे विश्व	सारे विश्व
२६१	७	उद्भव	उद्भव
	११	परसगादे	परसगादे
	नोट - २	जेष्ट	जेष्ट
२६२	१	फ० सं० - २७	फ० सं० १२७
२६३	९	निकलीं	निकले
२६४	४	असीकीज	असीकीज
२६४	१४	कोपेनगेन	कोपेनहेगेन
२६५	३	दि सेमी	सेसी
२६६	७	ऐन्तोने यान	ऐन्तोने इयान
२७२	१६	फ० सं० - १४१	फ० सं० - १३६
२७३	३१	भेद	भेज
२७६	१६	हखानीशीय	हखामनीशीय
२७६	११	शरूड	शरूड
२८२	७	आरम्भ किया (से) १४१ तक	
२८६	अन्तिम	वर्गों	वर्णों
२९०	५	Halvey	Halvey
३०२	११	राज्य	राज्य
	१६	पटिया	पाटिया
३०३	३	पामरा शमरा	शामरा शमरा
३०७	६	१७१	१५७

पृष्ठ सं०	पंक्ति सं०	ऐसा है	ऐसा होना चाहिये
		Hitti	Hitti
३०८	६	सूल	मूल
३०६	३	प्रथम	प्रथम
	१५	६००	९००
	अन्तिम	हत्ती	हिस्ती
३१०	मानचित्र	सेसी	सेसी
३१३	१५	अभिषेखों	अभिलेखों
	१९	१८०	१६६
३२१	२०	उसको	उसका
३२५	२	अमोजे जको	मोजेज को
३२६	१	१४५	१६९
३३१	९	एक	एक
३३२	११	Fisler	Fisher
	नोट-२	१८९	१७५
३४०	१५	वन	वस
	१७	१८९	१७५
	अन्तिम	प्रथम	प्रथम
३४३	२०	क्रोरिया	कैरिया
३५०	मानचित्र	माम	माल
३५९	१९	रोम के कारण सम्राट	रोम के सम्राट
	२२	५१६ ई०	५१५ ई०
	अन्तिम	मंगलों	मंगोलों
३६१	३३	अनेकों	अनेक
३६३	४	नष्ट	नष्ट
	१५	व	एवं
३६६	१३	लघु	लघु
	अन्तिम	दिये	दिये
३७९	२८	किया जाता ।	किया जाता था ।
३८३	८	तो, जो	तोय, जोय
	१७	था, के विरुद्ध	था, विरुद्ध
३८५	१५	चीयि	चीयी
	२१		

६]।

पृष्ठ सं	पंक्ति सं	ऐसा है
३९९	१५	तिब्बत
	नोट—	हसका
४००	९	प्रधान
४०२	१८	प्रतिदर्श
	२५	अुमेद का लिपि का
४०६	२	नाम पौराणिक
४१४	१	वैसे वैसे राजवंश में
४२७	२८	शेर
४२९	११	Shn
४३२	२०	रक्त भरा थाला
४४१	१७	२५५
	२६	उसी
	२८	दूसरे
४४३	५	di
४५२	शीर्षक	रेखाओं का (ट्रोफ)
४५४	८	मिंग वंश
४६६	२२	वर्षों
४७३	नोट—३	Palaeography
	१२	गैन्थियट
४७६	२७	वर्णमाला
४७९	शीर्षक	
४८०	१६	सिल्ला का राज्य
४८६	१२	२५२
	१६	Mccune
	अंतिम	Ecardt
४८६	२	८०५ से हो गया
	१६	बाहर
४९३	१५	२५३, २५४
	१८	लगभग
४६६	६	ध्वनी
	२२	D-1811
५००	२	२५८ दिये गये हैं
५१५	१९	पह
५१८	१	ब्रह्मा

ऐसा होना चाहिये

तिब्बत
हसका
प्रधान
प्रतिदर्श
अुमेद लिपि का
नाम की पौराणिक
वैसे वैसे राजवंश में
शेर
Shu
रक्त भरा प्याला
२३०
उसी
दूसरे
bi
रेखाओं के (स्ट्रोक)
मिंग वंश
वर्षों
Palaeography
गैन्थियट
वर्णमाला
पटनीय सामग्री
सिल्ला राज्य का
२५१ क
McCune
Eckardt
८०५ में हो गया
बाहर
२५४, २५४ क
लगभग
ध्वनि
D-1911
२५८ पर दिये गये हैं
पह
ब्रह्मा

पृष्ठ सं०	पक्ति सं०	ऐसा है
४२७	२४	१९ मार्च १६२१
	२६	स पबन्तु
५४१	अंतिम	Rule
५५०	२७	१८२८ तक
	२८	१९९५ तक
५५१	२	इय
	१७	थीबीज इनकी राजधानी थी
	१९	१६०३ ई० पू०
	२१	१६७१
५५२	१५	१४९० से १४३६ तक
५५३	२	सिख
५५५	प्रथम	उन्हें
	अन्तिम	आपने
५५८	प्रथम	७५१ से ६६३
	२३	पिपांचवी
	२४	७१६
५६०	प्रथम	तिपास
	९	३३६ से ३२२ तक
	११	किया
	२१	टॉलेमी
५६१	२०	बूटस
	२६	ने भी अपनी
५६२	८	सम्राट, जब मिला
५६७	२७	बिलासी
५९७	१७	फ० सं०-३०६
६०३	शीर्षक	बामनुन
६४७	१८	लाइनियर-एवं बी
६५७	८	पिसिट्रेटस
६८८	२७	११
७२१	१६	४५
७५३	२१	२७७६
७६०	१	मोटजेबू
७६२	१०	जी० द० हेवसे
७६४	१०	फ० सं० - ६८
	११	फ० सं० - ६६

ऐसा होना चाहिये

१६ मार्च १५२१

से परन्तु

Royal

१९२८ तक

१८९५ तक

इयन्तवी

१६७९ ई० पू०

१६७८

१४६९ से १४३६ तक

मिल

उसके

अपने

७१५ से ६६२

पियांखी

७१५

तियास

३३६ से ३३२ तक

करने

टॉलेमी

बूटस

ने अपनी

सम्राट मिला

विलासी

फ० सं०-३०५ क

बामुन

लाइनियर-ए एवं बी

पिसिट्रेटस

१७७१

४५१

१७७६

कोटजेबू

जी० डी० हेवसे

फ० सं० - ६६

फ० सं० - ६८



पारिभाषिक शब्दावली (Glossary)

Alphabetic	वर्णात्मक	
Anthropology	मानव विज्ञान; नृतत्व	
Archaeological Finds	पुरातात्विक सामग्री	
Archaeologist	पुरातत्त्ववेत्ता	
Archaeology	पुरातत्त्व	१११
Archaic	प्राचीन	१११
Bas - relief	उद्भूत; उभरे हुए चित्र	१११
Bibliography	पठनीय सामग्री	१११
Biconsonantal	द्विवर्णिक (एक वर्ण दो ध्वनियाँ)	
Biliteral	" " "	
Boustrophoden	हल चलाने वाली पद्धति; दाएँ से बाएँ तथा बाएँ से दाएँ लिखने की पद्धति	
Classical period	साहित्यिक काल	
Cylinder Seal	वर्तुल मुद्रा	
Decipherment	रहस्योद्घाटन	१११
Demotic (from 'Demos')	जनता - लिपि	
Determinative	निर्धारित शब्द	१११
Embryo Writing	भ्रूण लिपि	१११
Engrave	उत्कीर्ण करना	१११
Excavation	उत्खनन	१११
Flint	चकमक पत्थर	१११
Horizontal	क्षैतिज	१११
Ideographic	भावात्मक	१११
Index	पृष्ठबोधनी; अनुक्रमणिका	१११
Indo - European	भारोपीय	१११
Inscribe	उत्कीर्ण करना	१११
Inscription	अभिलेख	१११

Linguistics	भाषा विज्ञान
Logographic	रेखाक्षरात्मक
Map	मानचित्र
Monophone	एक ध्वनि अनेक वर्ण
Museum	संग्रहालय
Observatory	वेधशाला
Phonographic	ध्वन्यात्मक
Pictographic	चित्रात्मक
Polyphone	एक वर्ण अनेक ध्वनियाँ
Pottery	मिट्टी के बर्तन
Sacrosagus	पत्थर की कन्न
Scribe	प्राचीन लिपियों को उत्कीर्ण करने वाला
Seal	मुद्रा
Short - hand	आशुलिपि
Specimen	प्रतिदर्श
Stele	कन्न पर लगाने वाला पत्थर
Syllabic	अक्षरात्मक
Syllable	एक वर्ण में व्यंजन + स्वर
Tablet	पाटिया
Test	परख
Text	पाठ
Transliteration	लिप्यन्तरण
Triconsonantal (Triliteral)	त्रैवर्णिक (एक वर्ण तीन ध्वनियाँ)
Type-Writer	टंकण
Uniconsonantal (Uniliteral)	एक वर्ण एक ध्वनि
Vertical	शिरोवृत्त
Vowel	स्वर





अनुक्रमणिका

यह अनुक्रमणिका वर्णानुक्रमानुसार तथा निम्नलिखित विषयानुसार प्रस्तुत की गयी है :—

- | | |
|-------------------|----------------------------|
| १. अभिलेख | २१. भाषायें |
| २. काल | २२. भूभाग |
| ३. खोजकर्ता | २३. महाद्वीप |
| ४. ग्रन्थ | २४. युद्ध |
| ५. ग्राम | २५. राजकुमार, राजकुमारियाँ |
| ६. जातियाँ | २६. राजवंश |
| ७. शीलें | २७. राजवंशों के संस्थापक |
| ८. द्वीप | २८. राज्य |
| ९. देवता | २९. लिपियाँ |
| १० देश | ३०. लोग एवं निवासी |
| ११. धर्म | ३१. विद्वान् |
| १२. धर्म प्रवर्तक | ३२. विशिष्ट मनुष्य |
| १३. धर्म प्रचारक | ३३. शासक |
| १४. नगर | ३४. संघ |
| १५. नगर राज्य | ३५. स्मारक |
| १६. नदियाँ | ३६. सरकारें |
| १७. पदवियाँ | ३७. संस्कृतियाँ |
| १८. पदाधिकारी | ३८. संस्थान |
| १९. पर्वत | ३९. साम्राज्य |
| २०. प्रांत | |

ब्रैकेट के अन्दर लिखे गये शब्द या तो दिये गये नाम से सम्बन्धित हैं या नाम का दूसरा रूप है ।



अभिलेख

अवकाद की मुद्रा	६४
अमरना पाटियाँ	३०३
अरजवा लेख-पत्र	३१९
अरमायक अभिलेख	३४०, ३४१
अशोक शिलालेख	९६
अहिराम अभिलेख	२९३, २९८
आर्तमोन अभिलेख	३५३
आंशिक (चड़ली)	१०२
एलबेन्द शिलालेख	२६६
कनिष्क अभिलेख	११३
कुरम (कुरुम) अभिलेख	१२९
कोहाऊ रोंगो रोंगो	७६२
गंजेनामा	२६१, २६६
गिरनार शिलालेख	१०७, १२, १३
गोजर प्लेट (रूपक पंचाङ्ग)	३०२
छोटा अभिलेख (पिप्रावा)	१०७
छोटे छोटे अभिलेख	९९
जाँघों पर अंकित अभिलेख	२९७, ९९
ताम्र-पत्र (मुड़ बिहार)	१०२
तारकोण्डेमस मुद्रा (चांदी की)	३१४
तिरुमलाई शिलालेख	१२९
त्रैभाषिक अभिलेख	२५५, ६७
दान-पत्र (शिवरुद्र वरमा)	१२५
दिल्ली अशोक स्तम्भ	९९
द्विभाषिक	२५५, ६३२
द्विभाषिक अभिलेख	३१६, २२
पशुपति मुद्रा	६९
पाइलस की पाटियाँ	६४७, ४८
पाटिया (चूने की)	५७१
प्युनिक लिपि अभिलेख	२९९, ३००
प्रयाग स्तम्भ	९९, ११३
फ़िनीशियन अभिलेख	६२९
फ़ैस्टास चक्रिका	६४८, ४९, ५६

बिबलास का लघु अभिलेख	२९३, ९५
बेहिस्तून शिलालेख	९७
महाकाव्य (युगारिट)	३०४
माइसीनिया अभिलेख	६४८
मेशा का अभिलेख	२९७, ९८
मोआव का शिलालेख	२९७
युगारिट-मिस्र द्विभाषिक पाटियाँ	३०२
राजकीय मुद्रायें	३२१
रुम्मन देई स्तम्भ लेख	१०९, १२
रोसेटा शिलालेख	९७
लघु अभिलेख (नवी श०)	७२०
लीकिया का द्विभाषिक अभिलेख	३४८, ९
लीडिया का प्रतिदर्श	३५२
वज्र हस्त पंचम के लेख	१५४
विलक्षण लिपि शिलालेख	३९२
शहबाज गढ़ी शिलालेख	१०२
सत्यकी शिलालेख	९५७
मुखौताई अभिलेख	५१५, ९८
सुमेर की मुद्रा	७१
सुमेर की रेखा-चित्र पाटियाँ	२३५
सिन्धु-घाटी मुद्रायें	२९
सोमेश्वर मन्दिर शिलालेख	१३८
स्तम्भ लेख (नारायण पाल)	९७
हम्मूराबी के शिलालेख	२४९, ४२, ४३
हिता-चित्र लिपि शिलालेख	३११
हेब्रू-युगारिट द्विभाषिक पाटियाँ	३०४
हेब्रू लिपि के प्रतिदर्श	३३०, ३९

काल

अन्तर्वर्तीय काल	२९५
अमरना काल	५५४
उत्तर काल	५३
ईसा पूर्व काल	४९२

अनुक्रमणिका]

कुषाण काल	२५, ११३	मोरियर	२६६
क्रान्ति युग	७६	योरिस स्पिलबर्ग	२१८
गुप्त काल	११८	रेंब	३१३
गृह-युद्ध काल	४९१	रोग्गवीन, जैकब	७६१
ग्रीक-रोमन युग	६७०	लुदोविका दि वरथेमा	५३५
ग्रीक साहित्यिक काल	६६४, ६५, ८७	वास्कोडिगामा	९१
डोरियन काल	६५८	विलियम बर्बर्टन	५६६
पूर्व विकसित काल	५३	वीयाल	४५०, ५४
पौराणिक काल	४८०	शेप इब्राहिम हाजी (बर्कहार्ड)	३११
मेईजो शासन काल	४९१	सोटो, दि	२५३
विकसित काल	६४५	हर्नेन्दीज दि कार्दोवा	७५०
शासन काल	५५२	हर्बर्ट, टॉमस	२६२
		होगर्थ-डूली	३१३
		शासोप्रत बारबरो	२६१

खोजकर्ता

आल्मस्टेड	३१३	ग्रन्थ	
ईयन चार्दिन	२६२	अष्टाध्यायी व्याकरण	६५
एन्तोनियो दि अन्द्रादा	४००	ओल्ड टेस्टामेन्ट (बाइबिल)	३०४
ऐलियस गैलस	३५९	उपनिषद्	९५
कॉसमस	३७५	एतिहासिक पाठ (द्विभाषक)	३२१
कुक, जेम्स (कैप्टेन)	७५६, ६१	एशियाटिक रिसर्च	११८
गिरोसुडेप्रट	७५५	कोजिकी	४८७
गोंजालिस	७६१	कुरआन शरीफ	३७९
चार्लस	३१३	ग्रीक-डिमाटिक शब्दावली	५६९
जॉन कैवट	७५३	छांदोग्य उपनिषद्	९५
जुआन दि ग्रीजाल्वा	७५०	जैन ग्रन्थ	९५
जैक्स कार्टियर	७५३	ताउ-ते-किंग	४११
दान गार्शिया दि सिल्वा फ्रिग्यूरोआ	२६१	तुंग चीह	४३२
पोरोज़, ला	७६१	तैत्तिरीय उपनिषद्	९५
पेद्रो दि किन्तरा	६०४, १३	त्रै भाषिक शब्दकोष (सुमेरीयन-अक्कादीयन-हिती)	३२१
फ़रदीनन्द मैगलेन	५२७	निरुक्त	६९
फ़ासिस्को दि मोन्तेज़ो	७५०	निहोंगी	४८७
बेर्ग, वाइट्स	७५५	बाइबिल	२४७, ५७०, ६९३, ९८
बोन्डेल मोन्ते	५६५	बौद्ध ग्रन्थ (ललित विस्तर)	१०१
मेसरश्मिद	३१३		

बौद्ध ग्रन्थ	९५
भगवद् गीता	८८, ९४
बौद्ध-धर्म साहित्य	४८८
महाभारत महाकाव्य	७६, ९५
रामायण महाकाव्य	७६, ९५
विधि संहिता	४८८
विधान (जापानी)	४१९
विश्व कोष	४१७
वीरकाव्य (होमर के; इलियाड, ओडिसी)	६४५
शूर्जिंग	४०९
शब्दकोष (४४ हजार शब्द)	४१७
शुइजी हिब्रूमीदेन	४९२
सुमेरियन शब्दकोष	३२१
स्क्रिप्टा मिनोआ	६४७

ग्राम

अबूसिम्बल	२६७, ३५३, ५५६
अरक-अल-अमीर	३३०
अरलुह	७६१
ओरंगों	१४५
इपानो इंगलियानिस	६४७
उदय इन्द्रम	१३८
उरैयुर	८७
एबोमन	२८२
एलवेन्द	२६६
एलिचपुर	८७
कड़व	१४२
कल्याणी	८६
कपकुडी	१३८
कालीबंगन	२६
कुरम (कुरुम)	१२, ९३४
कुल्ली	२५
कोटियन	६२९
केन्दूर	१४२

कोटजेबू	७६१
कोणार्क	८८
कोरुमिल्लो	१४२, ४५
खजुराहो (खर्जुरवाहक)	८४
गिरनार	९९
चण्डलूर	१४२, ४५
जम्बूकेश्वर	१३२
तोपरा	९७
डेवरी—कोटी	१५७
देवपारा (देवपाड़ा)	१५०, ५४
देवलगाँव	१२७
निशा	२८६
पागनवरम	१४५
पिप्रावा	१०७
बचकुला	१९४
बड़ली	१०२
बादल	९७
बेहिस्तून (बिसीतून; बिसूतून), २६, ९७, २५७, ५९, ६०, ६७, ६८, ७१, ७३, ७६, ७९	
बोगरा	१०९
बोर गाँव	१९४
मडबोलु	१४२
मुइरकोडु (आ० कोडुनल्लूर)	१३२
मुरग्राव	२४८, ५७
मानिकियाल	१०१
मामल्लपुर	९९
रशीद	५६७
रुम्मिनदेह	१०९, १२
रोसेटा	२६
वमा ग्राम	६१३
वत्स गुल्म	८६
वादिये मुक्तब	३७४
वेप्पम बट्ट	१३८
शहबाजगढ़ी	१०९
शोरदनकवूर	१३२
सरार्हा	१५७

साँची	९९
सियोनी	१२५
सुइबिहार	१०२
सेवास्टिया	३३२
सोगडा	१०७
हरिहङ्गल्ली	१२५
हिल्ला (प्राचीन बेबीलोन)	२२९

ओयो	६१५
ओस्को	६७४
करेन	५०७
कलम्भर	८७
कसाइट	१३०, ४७
किन	४१४
किरात	२०४
क्रो	७५५
कुरेश	६०४
कुषाण (कुइशांग)	७७
कोल	२६

जातियाँ

अक्काइयन	६४५
अजटेक	७४१
अमोर (अमूरू)	२२९, ३२५
अरामियन (अराम)	२३८, ९९, ३२५, ३७
अहोम	१६०
आर्मेनियन	३८५
आपोनियन्स	६३६
आयोलियन्स	६३६
आस्ट्रोगोय (ओस्ट्रोगोय)	६८८
इकोटा	७४२
इंगियावोन	७१८, २१
इजेवू	६१५
इन्का	१०, ७४८
इस्तायवोन	७१८
ईफ्रे	६१५
ईफ्रो	६१५
ईवो	६१५
उइगुरी	४६२
उप्रियन	७१५
एम्बा	६१५
एट्रस्कन	६७१
एवार	७१५
ऐंगिल	७२१
ऐनु	४८७
ओटोमन (ओयोमन)	६३१, ५८, ६०

कैलडियन (अरबी खालेदीन)	२३२, ३२५, २७, ३७
खाम्ती	१६८
खिम्बस	२०४
खेमिर	५२६
गूटी	२२८
गेपिदाइ	७१५
गोइडेल	७०७
गोथिक (गोथ)	६७४, ८८, ७१५
चकमा	५०९
चिचिमेक	७४१
चिरोकी	७४३
जर्मन	७१५
जूट	७२१
जूडा	१३३, ३३०
टिटोनिक	६८८
टोल्टिक	७४१
डोंगरा	४००
डोरियन्स	६३६, ४१, ४५
तगोला	५३२
तिमने	६१३
तुर्क	७१५
तुंगू	४६९
तुंगूसी	४५४
तोखारी	४६९

धाई	१६०, ६८, ५२६
द्रविड़	२६
नहुआ	७४१
नीग्रो	६१३
नेवार	२०४, ६
पर्नी (पर्ण)	२५२
पश्चिमी गोथ	६८८
पार्थव	२५२
पॉलीनेशिया	७६१
पूर्वी गोथ	६८८
पेलासगियन	६३६, ६४
फुलानी	६१५
बटावी	७२१
बर्बर	६६०
बवरियन	७२१
ब्राइथन	७०७
ब्राह्मण	९५
बुल्गार	६९७
बंजिमन	२३३
भारोपीय	७०७
मध्य-पूर्वी स्लाव	६९९
मय (माइया, माया)	७४८, ५०, ५१, ५२
मंगोल	६०, ४१४, ६९
मागी	२५०
मूर (मोरो)	५३२
मेण्डि	६१३
मैग्ग्यार	७१८
मैत्रिक	१३८
मोन	५०७
यरुबा	६१५
यूची	७८
राजपूत	८२
रेड-इण्डियन	७४१, ४७, ४८, ५५, ५६
लम्बार्ड	७९५
लाओताई	५१५
लिम्बस	२०४

लेप्चा	२१५
बई नीग्रो	६०७, ९, १०
बारंगियन	६९९
विल्लोनोवन	६६७
विसीगोथ	६८८
बैण्डल	६९३
शक	७८
शिया	५६३
शेकलर	७९८
सिकाम्ब्री	३०९
मुखोताई	५१५, १८
सूर	८८
सेमिटिक २२५, २७, ३८, ८७, ९९, ६१७, २०	
सेल्टस (केल्टस)	६७०
सैक्सन	७२१
सैमिनी (समीनी)	६३२, ७४
स्काँटी (केल्ट)	७०८
स्लाव	७१५
हर्मोनोन	७१८, २१
हिक्सांस (हिकाउ खासुत)	५५१, ५५
हिक्तो	३३५
हिमारी	३७७
हुरियन	२२७, २८, ३०९, ३५
हूण	७८, ७१५
हेब्रू	२९९, ३२६, ३५, ७३, ५५६
हेलास	६३६
होसा	६१५

शीलें

उर्मिया	३४०
पेटेन	७५३
बकाल	४६५
म्योरिस	५५१, ९१
वान	३४०, ८५
सुदर्शन	१०९

द्वीप

अन्द्रोस	५३५, ६५
ईस्टर द्वीप	६२, ७६१, ६०
कोर्सीरा	६५८
जावा	५३४, ३५
टोंकिल	५३२
पुलोपिनांग	५१५
झारमूसा	४९२
क्रिलिपाइन्स	५२७, ३१
फ्रेण्डली (द्वीप समूह)	७६२
ब्रिटिश	७०७
मकाओ	४१७
माल्डीव	२१७
रंगोतिया	७६०
रोड्स	६६८
श्री रंगम	१३२, ३८
साइक्लेड्स	६५८
सिंगापुर	४२३
सिलेबीस	५४१
सिसली	६६०
सुमात्रा	५३५
हांगकांग	४१९

देवता

अतेन	५५४, ५५
अपोलो (सूर्य)	६३२
अमातिरासू (सूर्य देवी)	४८७
अमोन (अमु)	५५४, ५५
अल्लाह	६, ३८३
अनुर (असुर)	५८, २३३
अहरामज्द	२५८
आकाश	४१६, ४०, ६०

ले०—३

आर्तेमिस (देवी)	३५१
ईरास	६२२
उमा	७१, ३
ओगमा	६, ७१२
कम्बू	५२६
केमोश	२६७
क्रोनस	६४१
खम्मू	२३०
खाल्दी	३८५
खुदा	३५७
चेन-रे-सो	३६६
जेहोवा (यहोवा)	९, ३२६, २७, ३०, ७३
जिब्राइल (फरिस्ता)	२९३
जुपिटर	५९७
जूनो	५९७
ज्यूस	६४१, ४९
टॉट (थाट)	९, ५७०, ७२
इंगन (स्वर्ग का दरवान)	४२५, २७
नेबू	९, २३३
पशुपति	५८, ६९, ७०
ब्रह्मा	९
बैजनाथ	१५७
मनोटो	७४५
मर्करी	९
मिनर्वा (देवी)	५९७
मिनोटौर (दैत्य)	६४४
मीरा	५२६
यजदान	३५७
युरोपा (देवी)	६४४
योगेश्वर	२७
रंगो	७६२
रा(रे = सूर्य)	५४९, ५४, ५५, ७०
रिया (देवी)	६४१, ४४, ४९
वेनचांग	९
वीरूपक्ष	१३८
शमा (शम्मा)	४१६, ६०

धारदा (देवी)	१५७
शिव	५, ८२, १५७
सुमुद्र	४८७
सूर्य	८२, २३०
सोमेश्वर	१३८
हदाद	३३७
हमिस	९
हेवत (खोवत)	३२२

देश

अक्काद	६२९
अदलस (आ० सुमाला)	५३५
अन्तावर्ती तिब्बत	४०
अन्नाम	४१२, १६, ५१८, २६, २७
अपर-गिनी	६०७,
अपोलोनिया	६५८
अफगानिस्तान	९९, २५२, ३७९, ६९९
अफार्स-ईसास (फ्रेंच सोमाली लैण्ड आ० जिबुती)	६०४
अबोसीनिया (एबीसीनिया)	३५९, ७७, ६१७, १८, २०
अमतू	३२२
अमरीका (अमेरिका)	१०, ३२७, ५१, ४१९, २९, २९, ३९, ४३, ८१, ९९, ९२, ९३, ९६, ५३२, ६४७, ९९, ७४१, ४५, ५३, ५५
अरमेनिया (अर्मेनिया)	३८५, ८६
अरब (अरबिया, अरबजह, अरबइहा)	९, २५२, ३४३, ५६२, ६३९, ४४
अल्जीरिया	५९५
अल्प फीजिया	३४३
अल्बेनिया	५६३
असोरिया	१४, ४३, ५८, २३२, ३३, ३८, ४५, ४८, ७३, ९७, ३०३, ९, ९८, २७, ३२, ३५, ३७, ३८, ७७, ८५, ८६, ५५६, ५८, ५९, ६९७, २९

आईवेरिया	३८७
आयरलैण्ड (ऐबर्ना, ह्वर्नी)	९, २३९, ७०७, ८, ९, १०, ११, १२, १४
आस्ट्रिया	३२९, ६९७, ७२९, ४९
आस्ट्रेलिया	९
इंगलैण्ड (ऐंगिल लैण्ड, ऐल्वियन, ब्रिटैनिया)	२६, ९९, ९४, २९८, ६२, ६६, ६७, ६८, ३२९, ४९९, ९९, ५५५, ६७, ६८८, ९९, ७०८, ११, २१, ५३, ५६
इटली	१०, २६१, ३२१, ३८, ५३, ६४, ७५, ५३५, ६०४, २०, ३९, ४८, ५८, ६०, ६७, ६९, ७१, ७४, ७८, ८५, ९३, ७०७, १५, २१
इथियोपिया	३५३, ५५८, ६२, ९५, ६१७, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २५
इरोडिया	६२०
इस्त्राइल (इस्त्रायल)	९, २३२, ६८, ९७, ३२५, २६, २७, २८, ३०, ३२, ३५, ३७, ४०, ६२०
ईराक (देखिए मेसोपोटामीयां)	
ईरान (देखिए पर्शिया)	२६, ७६, ७७, २५५
ईस्ट इण्डोच (देखिए हिन्देशिया)	
उत्तर-पूर्वी चीन	४१७
उत्तरी अमरीका	७४८
उत्तरी इटली	६८५
उत्तरी कोरिया	४८१
उत्तरी मिस्र	५४०, ४६
उत्तरी मोयशिया (सर्बिया)	६९७
एनाटोलिया (देखिए तुर्की)	३४३, ६४५, ४९
एरमी	३१३
एशिया माइनर (देखिए तुर्की)	२३०, ४८, ३२१, ३८, ५१, ८६, ५४५, ६४६
ऐल्वियन; देखिए इंगलैण्ड	
ऐबर्ना; देखिए आयरलैण्ड	
ओमान	३६३
कटार	३६३

कनवान (काडेश)	२२८, ८७, ९९, ३०१, ९, २५, २७, ५५१, ५६
कनाडा	७५५
कम्पूचिया (कम्बोज, कम्बोडिया)	४१२, ५१५, १६, १७, २६, २७
क्यूबा	५३२, ७५०
कलीशिया (किलाशिया, अस्तान्तश)	३२२, ३८, ५३, ८६
क्रोट (क्राटा, क्राडया)	९, २८७, ३०२, ४७, ६३२, ४०, ४१, ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ४९, ५१, ५५
कुयेत	३६३
कैमेरून	६०२
कैरिया (कारिया)	३५१, ५३
कोरिया (कोजूरियो, कोरिया, चीनी भाषा में चाउ शानि)	४०९, २३, ८०, ८१, ८२, ८७, ८९, ५१, ९२
गाल	६९३
ग्रीस	९, ७६, २८७, ८९, ९९, ३३५, ४०, ४३, ५१, ७९, ५५९, ६०, ६५, ९१, ६२०, २५, ३१, ३२, ३६, ४०, ४४, ४६, ५७, ६०, ६२, ६७, ६८, ८५, ९३
ग्रेट ब्रिटेन (युनाइटेड किंगडम) देखिए इङ्ग्लैण्ड	
विली	७६१
चीन (अरबी भाषा-सीन; अंग्रेजी-चाइना)	९, १०, १४, ७८, २०४, ३२४, ८३, ९७, ९९, ४००, १, ९, १०, ११, १३, १४, १५, १६, १७, १९, २०, २१, २२; २३, २५, ३४, ४६, ५०, ५४, ६९, ७३, ७६, ८०, ८१, ८६, ८८, ८९, ९१, ९२, ९६, ५०७, १८, २६, २७
जर्मनी	२६७, ३२१, ४९२, ५१५, ६३, ६४४, ५८, ७८, ८८, ९७, ९९, ७१५, १८, १९, २१

जर्मनिया (देखिए जर्मनी)	
जार्जिया	३८७, ८९, ९०, ९१, ९२, ६९९
जार्डन (यादन)	३६३
जापान	१४, ४१७, २१, २३, ४६, ८०, ८१, ८७, ८८, ९०, ९१, ९२, ९६, ५०९, ३२, ६३, ६९९
जावा	४१७, ५२७, ३२, ३४, ३५
जावा माइनर (दे० सुमात्रा)	
जिबुती (दे० अफ्रान्स ईसास)	
जुगुरथीन	५९५
जेकोस्लोवाकिया	६९७
ट्रोवेन (दे० श्रीलंका)	
टर्की (दे० तुर्की)	
टियूनोशिया	२९७, ५६३, ९५, ९७
ट्रांसिल्वेनिया	७१५
ट्रूशल ओमान	३६३
डेनमार्क	७४, २६३, ८२, ४७६, ६९४
डेकिया (दे० हंगेरी)	
तारा	७०८
तिम्बो	६१३
तिब्बत (तिब्बत-चोद; भारतीय-भोट; मंगोल-तुवेत; चीनी-शी द्सांग)	२०४, ३९७, ९८, ९९, ४००, १, २, १६, ६२, ५०७
तुर्की	२३४, ३१९, २०, २२, ४३, ५१, ५३, ६३, ६६, ५३७, ६३, ६०४, ३१, ३६, ४५, ६०, ८८, ९७, ७१८
तुर्तेनिया	६०२
तैवान (फारमूसा)	४२१, २३
तोखारिस्तान	४६९
थाईलैण्ड	५१५
दक्षिण अरेबिया (अरब)	६१७, २०
दक्षिण कोरिया	४२१
दक्षिण चीन	४१७, २१
दक्षिण पश्चिम कोरिया (माहन)	४८०

दक्षिण पश्चिम चीन	७८
दक्षिण भारत	८६, ९९, १२१
दक्षिणी आस्ट्रिया	७१५
दक्षिणी गाल	७२१
दक्षिणी मिस्र	५४५, ४६
दक्षिणी मोयशिया (बुल्गारिया)	६९७
दक्षिणी यमन	३६३
दाहोमी	६१५
नाइजेरिया	६१३
नाबो	२६७, ६८८, ९९, ७०८, १२, ६१
नीदरलैण्ड (दे० हालैण्ड)	५३२, ३५
नुमीदिया	५९५
नेपाल	५०७, २४, ६, ७, १२, ३९७, ४०
पन्नोनिया (दे० हंगेरी)	७१५
प्रथम जावा (दे० सुमात्रा)	५३५
पशिया	९९, २३३, ३४, ३९, ४७, ५२, ५४, ६१, ६२, ६३, ६४, ६७, ६९, ७०, ७७, ८२, ३३५, ३८, ७७, ८५, ९०, ४१६, ६५, ७६, ५५९, ६०, ६२, ६२९ ५७, ६२, ६४
पश्चिमी चीन	६९९
पश्चिमी तिब्बत	३९९
पश्चिमी तुर्किस्तान	४६२, ५५, ७६
पाकिस्तान	२६, ७८, ९१, ९४, ९९, १०२, ७२
पापिया	२५२, ४१२
पालीनेशिया	७६१, ६२
पीरू	१०, १४, ७४८
पुर्तगाल	१०, २१६, ९१
पूर्वी तिब्बत	३९९
पूर्वी तुर्किस्तान	४६९, ७३, ७६
पोलैण्ड	६९७, ९९
पैलेस्टाइन (फिलिस्तीन)	१०, २९९, ३२७, ३२, ३५, ४०, ८६, ५५६
प्रलाबा	६१३
प्रारम्भ (दे० तैवान)	४२१, ९२

फारस (दे० पशिया)	२७७, ४१६
फिनलैण्ड	६९९
फिनीशिया (होनर-फिनिक्म; रोमन-फिनीकेस, प्युनीकस, प्युनी; इगलिश-फिनीशिया)	९, १४, ५८, ८७, ८८, ८९, ९७, २८७, ९५, ९६, ९९, ५५३, ९७, ६४, ५७, ५८, ६८
फिलिपाइन्स	५०७, ३१, ३२
फ्रीनम	५२६
फ्रांस	१०, ७८, १९६, २५५, ६३, ६६, ६७, ८२, ९७, ३०२, ३५, ४१९, २१, ४०, ८१, ९१, ९२, ९३, ५०९, १५, १८, २७, ६३, ७१, ६०४, १३, २०, ३६, ८८, ९९, ७२१, ५३, ६१
फ्रीजिया	३४३, ४६, ४९, ५०
बंगला देश	१०७, ५०९
बहामा	१०
बास्तिस्तान	४०२
बाह्या तिब्बत	४००, १
बिया	५९५
बुरियात	४६५
बुल्गारिया	६९७, ९८, ७१८
बेबीलोनिया	२३०, ३१, ३८, ३९, ५७, ८९, ३१३, २७, ३५, ३७, ३८, ५५८
बेल्जियम	७६१
बेस्सबिया	६९७, ९९
बैक्ट्रिया (बाख्लिया)	७८, ९९, १०१, २५२, ४७३
ब्रह्मा (बर्मा)	५३, ९६०, २१६, ४१६, २१, ५०७, ८, ९, १५, १८
ब्राजील	१०
ब्रिटेन (ब्रिटेनिया)	२५२, ८७, ३६३, ६४, ४४३, ९२, ५१५, ६३, ६८, ७०७, ८, २१, ४८
भारत	६, ९, १४, ४३, ७४, ७७, ८०, ८८, ९०, ९१, ९२, ९५, ९६, ९९, १२७, ६८, ७२, ७७, २०६, १२, २१, ५२, ६३, ६८, ३५९, ९७, ४००, १, १२, ६२, ९२, ९३, ५०९, १८, २६, ३२, ४२, ७२, ६०७, २५

मध्य चीन	४१२, २१
मलाया	३७९, ५२७, ३२
महा प्रीजिया	३४३
माल्टा	२९७, ३११, ६६०
माल्डीव	२१७, २१, २२
मिस्र ९, १०, १४, १८, २६, ५८, ७७, ९७, २४८, ५०, ६६, ८९, ९३, ३०२, ३, ९, १८, २०, २४, २५, २६, २७, ३५, ४३, ५३, ५९, ६६, ७३, ४२३, ५४५, ४६, ४७, ४९, ५०, ५२, ५३, ५६, ५७, ५८, ५९, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ६५, ६७, ६८, ६९, ७१, ७४, ७७, ९१, ६०४, १५, १७, २०, २९, ४१, ४६, ४८, ८५	
मिस्री सुडान	६०४
मोरा	३१३
मेसोपोटामिया (आ० ईराक) ९, ४४, ५८, ७१, ९७, २२५, ३१, ३५, ३८, ३९, ३४०, ८६, ४१६, ५५४, ६२९	
मेनीटोबा (आ० कनाडा)	७५५
मैलेशिया	४८७
मोराविया	६९७, ७१५, ७२१
मोरोतैनिया	५९७
मंगोलिया ३६१, ४००, १६, ६०, ६२, ६५, ६९, ४७३	
मंचाओ कुओ (मंचूरिया)	४६९
मंचूरिया ४९६, १७, ५८, ६०, ६९, ७२, ८१, ९२, ६९९	
यतनाम-दानाओई (दे० सायप्रस)	६२९
यमन	३५९, ६३
यमातो (दे० जापान)	४८७
युकेटान	७४८, ५०
युक्रेन	६९९
युगोस्लाविया	६९७
यूनान (दे० ग्रीस)	६३६

रूस (सोवियत सोशलिस्ट गणतन्त्र राज्यो का संघ) २५४, ३२०, ९, ४१६, १९, ६०, ६५, ६९, ८१, ९२, ६३६, ९७, ९८, ९९, ७००, ४, ५, ६, १५, ५६	
रोमा रंग दे० (लिबेरिया)	६०७
लाओस	५१५, १६, १७, १८, २५
लाइकोनिया	३८६
लिथुनिया	६९९
लिबेरिया	६०४, ७
लीकिया	३४३, ४८, ४९, ८६
लीडिया २४८, ५७, ३४३, ४७, ४९, ५०, ६६४, ६७, ७१	
लीबिया	५५६, ५७
लेबेनान	५५६
लेसर अरमेनिया	३८५, ८६
लैटियम (आ० मध्य इटली) ६६७, ६८, ७२, ८५, ८७, ७०	
लंका (दे० श्रीलंका)	२१६
वियतनाम	४२३, ५९६, १७
श्याम (आ० थाईलैण्ड) ५०७, १५, १६, १७, १८	
शिविर (दे० साइबेरिया)	४७३
शो द्सांग (दे० तिब्बत)	३९७
सबा	३७७, ७८, ६२०
सायप्रस (किप्रस) २८९, ६२९, ३०, ३१, ३२	
सायबेरिया (साइबेरिया) ४१६, ६०, ६५, ७३, ६९९, ७१८, ५५	
सिंगापुर	४२३
सियरें (सीरें) ल्योन	६०७, १३
सोथिया	९९, ७०७, २१
सोरिया २३८, ५२, ८७, ८९, ३०२, ९, ११, ३५, ३६, ३७, ४०, ४३, ४४, ५३, ६३, ७९, ८५, ८६, ४६०, ६२, ५५३, ५६, ५८, ६२, ६३, ६४४	
सीलोन (दे० श्रीलंका)	२१६
सूडान	५६३, ९५
सुमात्रा	५३५, ४१
सूसियाना	२४७

सोमिया (प्राचीन पर्शियन सुगुदा; ग्रीक-सोमिया)	४७३
सोमाली लैण्ड (सोमालिस)	६०४
स्वीडजरलैण्ड	३२१, ६८५
स्वीडन	२७२, ५६७, ६४७, ९९, ७०८
स्पेन	१०, २६१, ३७९, ४९१, ५२७, ३२, ६०२, ८८, ९३, ७२१, ४१, ५०, ५३, ५५
हत्तूशा (खत्तूशा)	९, ३०९, १०, २४
हवाशित (हवाशत)	६१७, २०
हॉलैण्ड (दे० नीदरलैण्ड)	२१८, ६२, ४८१, ९१, ५३५
हिन्द चीन	५९६, २७
हिन्देशिया	५३२, ३४
हेजाज	२३४, ६४, ६६, ६७
हैवर्नी (दे० आयरलैण्ड)	७०७
होन्डुराज	७५०
हंगेरी	४१६, ६०, ६६७, ७१५, १६, १७, १८, २२, ३३
श्री लंका (अरबी-सेरन दीव; पुर्तगाली ज़ीलोन; ग्रीस-ट्रोवेन; अग्नेजी-सीलोन)	१३४, २१६, १७, १८

धर्म

इस्लाम	२२८, ३५७, ५८, ६१, ६३, ८३, ४०२, १२, ५३५, ६१, ६५, ६१३, ६३
ईसाई	३६८, ७३, ७७, ८५, ८७, ४१२, १९, ५०, ६५, ८१, ९१, ५३२, ६६, ६१, ६१३, ४५, ७४, ९७, ९८, ७०८, २१, ४१
कनफ्यूशस बाद	४११
काप्टिक ईसाई	६२०
ग्रीक ऑर्थोडॉक्स चर्च	४६५, ६६७
जिसूट	५६६

जैन	२७, १२९, ३२
ताओ (ताव) बाद	४११
दीने इलाही	६०
नेस्टोरियन	३४३, ४६२
बौद्ध	१२७, ४१२, ६०, ६२, ६५, ७६, ८०, ८७, ८८, ६१, ९२, ५०७, ६, २६
मज्जावाद	३५७
मेथाडिस्ट	७५५
यहूदी	२२५, ३५९, ७७
लैटिन ईसाई	७१५
बहाबी	३६३
वैष्णव	१२७, ५२६
शिन्तो	४८७, ८८
शैव	१२५, २७, २६, ३२, ३४, ५०, २०४, ५२६
सिक्ख	६१, १७७
सूफ़ी	२५२

धर्म प्रवर्तक

अब्दुल बहाव	३६३
इग्नेशस लोयला	५६६
ईसा	३३१, ६१, ७५, ७६, ८७, ६०, ४२६, ८६, ९२, ५०७, २६, २७, ३२, ३५, ९७, ६१७, २०, ८८, ९३, ९४, ९७, ९९, ७१५, ४१
कनफ्यूशस (चियु कुङ; कुङ फूत्से)	७६, ४११
गुरु गोविन्द सिंह	९१
गुरु नानक	९१
जैकोबस बराडियस (पादरी)	३४०
जोरोआस्ट्र (जोरथूख)	७६, २८२, ४७६
नेस्टोरियस (पादरी)	३४३
बुद्ध (महात्मा)	७७, ८२, १०७, १८, ४६०, ८७, ८८
महावीर (तीर्थंकर)	७७, १०७
मानी	४७६
मुहम्मद (हज़रत मोहम्मद रसूल सल्ल०)	३६१, ३८३

मोरोज (हजरत मूसा) ३२५, २६, २७, ३०, ७३,
७५, ५५६, ७०

मेन्शियस ४११

लाउत्से (लाउत्सी; ली अर) ७६, ४११

वृषभ (तीर्थङ्कर) २७

धर्म प्रचारक एवं धार्मिक नेता

इब्राहीम (अलह सलाम) २२८, ३२, ३२५, ५५४

इस्माइल (अ० स०) ३२५, ५६४

ईसाई प्रचारक विलियम राइट ३१२

ईसाक (अ० स०) ३२५

उमर (हजरत खलीफा) २६१

उस्मान (हजरत उस्मान ख०) ३८३

एमोन (लूत के पुत्र) २९७

कोर्तेज, हर्मन ७४१, ५०

लुदानन्द (स्वामी) ४६५

गुरु अंगद जी १७७

जगद्गुरु शंकराचार्य १३४

जशुआ ३२६

जैकब (याकूब अ० स०) ३२५

ताशी लामा ४००

दस्तूर (पुगेहित दारा) २६३

दलाइ लामा ४००, १

नूह (हजरत, अ० स०) २२५, ६०४

पंचेण लामा ४०१

फातिमी खलीफा ५६३

बौद्ध भिक्षु ११८, ४८७, ८६, ९२, ९६

भारतीय धर्म प्रचारकों ६२५

भृङ्गारकर बाबा १४२

महिन्दभिक्षु (अशोक पुत्र) २१६

युसुफ (अ० स०) ३२५

लामा ३६६, ४००, २

लूत (अ० स०) २६७

शैव संत अप्पर १३२

साम (नूह के पुत्र)

२२५, ६२०

सेण्ट टॉमस

७८, ३४३

सेण्ट पाल

६५८, ६०

सेण्ट मार्क

५६१

सन्त उलफिलास (बुलफिलास)

६६३

सन्त पैट्रिक

७०८

सन्त मेस्नाब (मेस्नाप)

३८५, ९०

सन्त जानेश्वर

८८

सोनम ग्यात्सो

४००

हाम (नूह के पुत्र)

६०४, २०

नगरों के नाम

अकोला

८६

अक्काद

६४

अजमेर

१०२

अदिस अबाबा

५६६, ६२०

अनाहुआक

७४९

अनुराधापुरा

२१७

अपरी

५३१

अवाइडोस

५४६

अबूजिनेमा

३७५

अम्बाला

९७

अमरावती

५२६

अयोध्या (अयोध्या)

५१५

अल-ऊला

३५८, ७७

अल हिजर

३६४, ६८

अलेप्पी

२१७

अलेपू

३०९

अवारिस

५५१, ५२, ५७

असारलिक

३५३

असीयुक्त

५५७

आक्सफोर्ड

६४५

आक्सफोर्डशायर

२६८

आर्ताक्सेटा

३८५

भाराह	१५४	कड़पा	१५०
भालमगीरपुर	२५	कनेम	५६६
भावा (आ० माण्डले)	५०७	कन्नोज	८५, १२७, ६४
भासोपनी	३८६	कपिलवस्तु	१०७
इकारा	६३८	करनवू	३७७
इष एत तवी (देखिए लिहत)	५५१, ६४	करनाक	५५४
इनांग मुक्त	५०८	कराची	३८३
इमरोज	६३८	कर्जनि	३३७
इयॉस	६३८	कर्पयास	६३८
इलाहाबाद	११३	कर्फू-कर्कीरा	६३८
इलो इलो	५३१	क्यागिन	५०८
इस्तखर	२६१	क्याक्यादुंग	५०८
इस्तमबोल (देखिए कुस्तुनतुनिया)	३१२	क्योतो	४८९, ९१
उज्जैन	७७	कृष्णा (जनपद)	११८, २१, ४२
उज्जयनी	११३	कलकत्ता	५८, ९१
उम्म-अल जमल	३६८, ७०	कलेवा	५०८
उर्गा (आ० उल्लान बतोर)	४६०	कांची (कांजी वरम, दक्षिण काशी)	८६, १२१, ३२
उरखिलीनू (देखिए हमाथ)	३२२	कांचीपुरम	८८, १४०
एकबटाना (इकबटाना; देखिए हमादान)	२४८	काठमण्डू	२०४, ४००
एक्रोपोलिस	७६४	का-डिगर-रा (अक्कादियन भाषा—बाव इलिम; वेबिल; वेबीलोन)	२२९
एक्जेन्थस	३४७	कानपुर	४४
एडेसा	३३५, ४०	कानिया	६४४
एडोम	३२६, ६३	कानो	५९६
एड्रियाटिक	७०७	काय जंग जू	४५८
एदो (इयदो; दे० टोक्यु)	४८६, ६१	काराकोरम	४१६, ७३
एन्द्रास	६३८	कारा बुल्गासुन	४७३
एमार्गोस	६३८	कारकेमिश (आ० ज़ोराब्लूस)	३०९, १२, १९, २०
एयुक	३१२		३५, ३७
एलकाव (दे० नेस्त्रेव)	५४६, ६४	कार दुनियाश (वेबीलोन)	२३०
एलेक्जेंड्रिया	५६२, ६९	कालीकट	९१
ओनू (मिस्री भाषा में; दे० हेलियो पोलिस; ग्रीक भाषा में)	५४६, ४९, ६४	काशगर	१०१, ४७३
ओरंगो	७६१	काशी	१८७
अंकारा	३१२	काहिरा (कायरो)	५५३, ६३
अंकोर	५१५	किथनास	६३८
कटबलोगन	५३१		

किमोलास	६३८	गोजर	३०१, २
किरातिशी (अरबी में कराची)	३८३	गोजा	५४९
कीव	६९९	गुजरात	८०
कुचा	४७६	गुजरानवाला	८०
कुरकुम	३२२	गूजर खाँ	८०
कुस्तुनतुनिया (कांसटैन्टी नोपिल; आ० इस्तमबोल)	६९७, ७१८, २१	ग्रैनोविल	५६९, ७०
कूका	५९६	गोजा	२१६
कूफ़ा (आ० अलहीरा)	३६१, ७९, ८३	गोदावरी	८८
केफ़ालोनिया	६३८	गोरखपुर	१०७
केरीगो	६३८	गोहाटी	४४, १५०
केलानिया	२१७	चंगल नगर	५३५
केलिमनास	६३८	चम्पारन	१६०
केसांस	६३८	चम्बा	१५७
कैण्टन	४१२, १९	चाउशीन (चोजेन; आ० कोरिया)	४८०
कैन्डी	२१७, १८	चेबूल	१४५
कैये	४७३	चेलेल मीनार	२६९
कैनोपस	५७१, ६६८	जऊफ़	३५९
कैम्ब्रिज	५६६	जगरेव (प्रार्चीन अगरम)	६७१
कोचिन	१३२	जगयापेट	१२१
कोनोज़िनी	३८६	जजाकार्ता (जकार्ता)	५३५
कोपेन हेगेन	२६४, ६६	जबलपुर	८४
कोयमबटोर	२१७	जम्मू	४०२
कोलम्बो	२१६	जम्बो आंगा	५३१
कोल्हापुर	१८६	जलन्धर	१५७
कोलर	१३८	जार्डियम	३४३
कौनस	३५३	जान्ते	६३८
खानबालिग (आ० बीजिंग)	४१६	जाफ़ना	२१६, १८
खोतान	४७३	जारिया	५६६, ६९३
गञ्जनी	८८	ज़िनजर्ली (ममाल)	३३७
गंजाम	१५४	ज़ूनागढ़	९०७
गया	९७	जेहा	३११
ग्याङ-से	४००	जेनुवा (जेनोवा)	६६८
ग्लाटिया	३८३	जेबेलद्रुज	३६४
गान्धार	७८	जेराब्लूस (दे० कारकेमिश)	
गारटोक	४००	जेरुसलाम (जेरू सेलम; यरुसलम)	२३३, ३२६, २७, ३५, ७९, ८३, ६३१

शोला	५९६, ६०४
जोधपुर	५०, ८०, ८२, १९४
जोलो	५३२
जोहान्सबर्ग	६४९
टयासल	७५३
टाइल	७०७
टिनोबिटव टलन	७५०
टिपूनिस्	२९७
टुटीकोरिन	२१७
टेल एल अमरना	३१८, ३४३, ५५४
टेहदी-गढ़वाल	४०२, ७
टैनिस (मिस्री भाषा-पर रेमेसीज़)	५४६, ५७, ५८, ६४, ७१
टोकियू (टाक्यू; प्राचीन यदो)	४९१
टोल्लन (आ० टोला)	७४१
ट्रायर	७२१
ट्रावनकोर	१३४
ट्रिन्कोमली	२१७
ट्रेन्ट	६७८
डवलिन	७०८
डिवान	२९७
डैमसकस (अरबी-दमिश्क)	३१२, ३३५, ३७, ३८, ६३, ६६, ६८, ५३२
डोरसेट	५७०
तक्लोबन	५३१
तस्ते जमशीद	२५७
तजरा	६०४
तजूरा	६०४
तलबन्दी (आ० नानकाना-पाकिस्तान)	९१
तादमूर (टेडमोर)	३३८
तिगरे	६१७
तिन्नेवेल्ली	१२४
तिफ़लिस (तिबलिस; त्बीलिसी)	३८७, ९०
तिरुवेन्द्रम (त्रेवेन्द्रम)	२१७, १४२
त्रिक्कोवलूर	१२९
चुन हुआंग	४७३

तुबानूब (तपान)	३२२
तेजपुर	१५०
तेनास	५३८
तेन्नासरिन	५१५
तेवेस्सा	५९७
तैमा	३६३, ६४
तैले हकुआ	७५५
तोंगू	५०८
तौगी	५०८
तौलेसप	५२६
तंजावूर (तंजौर)	८७, १३२
त्सान-त्सही-अंगाइ	४५४
थोबीज (मिस्री भाषा-त्रैसी)	५४६, ५०, ५१, ५४, ५५, ५७, ५८, ६४, ९६
थुग्गा (आ० दौग्गा)	५९६, ९७
थेरा	६४१
दमनहुर (देखिए वेहदेत)	
दमिश्क (दे० डैमसकस)	३१२, ६६
दार्जिलिंग	२१२
दाशुर	५४६, ५१
दिल्ली	८४, ९०, ९४, ९७, ५२७
दीनाजपुर	९७
देवगिरि	१४०
देवनगर	१८७
दोनेपुण्डी	१४५
नई दिल्ली	३९, ४६५
नगादा	५४५
नन्दीनगर	१८७
नपाता	५५८, ९१, ९६, ६१७
नर्सारवपेट	१४२
नागाओका	४८९
नागासाकी	४९१
नानकाना (दे० तलबन्दी)	
नानकिंग	४१७, १९, २१
नार्थस्पोरेड्स	६३८
नाँम पेन	५२७

नारा	४८८, ८९
नालन्दा	१५४
नासिक	१०९, १८, ४०
न्यूरेम्बर्ग	७१८
निकोशिया	६३१
निगम्बो	२१७, १८
निनेवः (आ० कुयेंजिक)	२३३, ३६, ४८, ३४९
नूबिया (आ० सबूसिम्बल)	३५३, ५५१, ५६, ५८
नेखेव (मिस्री भाषा में; दे० एल काव-ग्रीक भाषा में)	५४६, ६४
नेखेन (मिस्री भाषा में; दे० हेरेकोन पोलिस-ग्रीक में)	५४६, ६४
नेफ्रेस्सी	५५२
नेबलेस (आ० शिकिम)	३३२
नेल्लोर	१४२
नोवगोरोड	६९९
नौक्रेटिस (मिस्री भाषा में; परमेरी-ग्रीक भाषा में)	५५६, ६४
पररेमेसीज (दे० टैनिस ग्रीकभाषा में)	
पसरगादे (आ० मुरगाव)	२३१, २५७, ६१
पर्सिपोलिस (आ० तरुते जमशीद)	२५७, ६१, ६२
	६५, ६६, ६८
प्रयाग	६६, ११३
प्लासी	९४
प्सोडिया	३८६
पागन	५०७, ५०८
पाटलिपुत्र (आ० पटना)	८०
पाण्डीचेरी	९१, १३८, २६३
पाण्डुरंग	५२६
पियोंगयांग	४८०, ८१
पोकिंग (आ० बीजिंग)	
पोगू	५०७, ८, ९, १५, १६, १७, १६, २१
पोलीभीत	१२७
पोहिति (आ० जाफना)	२१६, ३१
पुताओ	५०८
पुत्तालम	२१७

पुयेथोप्रिसेसा	५३१
पुलोपिनांग	५१५
पूना	९१
पे	५४६
पेट्रा	३६३, ७९, ८६
पेडांग	५३५
पेरिस (फ्रेच भाषा में-पारी)	५, २६७, ६९, ८२, ३३८, ५३२, ६८, ७०, ७१
पैठन	१०६
पोटोनोवो	५९६
पोन्टस	३८६
प्रोम	५०७
पोलभ्राह्वा	२१७
फिगीक	५६९
फ्री टाउन	५६६, ६१३
फ़िलाई	५६१, ७०
फ़ोर्ट सेण्ट जुलियन	५६७
फ़ोरम रोमाना	६८७
बकूफू	४८६
बगादाद	२६६, ३६१, ४१६, ५३२
बगुईयो	५३१
बंगलौर	१८६
बदामी	१४२
बदायुं	९०
बनात	७१५
बनबासी	८८
बनारस	४४
बम्बई	२०, १५८, ६१ ६४, २५२, ६३, ६८, ३५६
बकले	४३१
बरबेरा	६०४
बर्नो	६६७
बर्लिन	६९९
बल्ख	२५२, ४६२, ६६
बसरा	३८३
बहरियत (प्राचीन आइसिन)	२२९

बाँन	२६७
बासिलोना	६९३
बारी	६१३
बाबद्दीन	५०८
बित्त अशीनी	३३७
बिलासपुर	१८९
बीजापुर	९१, १६०
बोजिंग (देखिए पोकिंग)	
बुखारा	४६२, ७३
बुतुअन	५३१
बुट्ट (बीर) गया	३६, ४०१
बुबास्ति (बास्ति)	५५७, ६४
बुलहर	६०४
बुलहर मैदान	३१२
बुकलिन	६४७
बूटो	५४६
बूदा	७१७
बेबीलोन ^१ (आ० हिल्ला)	५८, २२९, ३०, ३१; ३३, ३६, ४१, ४२, ४७, ५५, ८६, ३८७, ४७६, ५५८, ६६१, ६३२
बेहदेत	५४८
बेसीन	५०८, ६
बेकाक	५१५
बोगजकुई (दे० हस्तुशास)	३०९, ११, २०
बोयन	७०८
बोर	३१२
भट्टी प्रोत्	११८, २९
भामो	५०८
भावलपुर	१०२
भदनपगान	१३२
भक्का (शरीफ)	३११, ६१, ६३, ६६, ८३, ४६२
भछली पट्टम	९१
भधुरा	७८, १८९
भदीना	३११, ६१, ६६
भदीनत अबू	५५७

भद्रास	९१
भधुरा (भदुराय)	१३४, ८७
भनीला	५२७, ३१, ३२
भन्दसीर	१९४
भवंदस्त	२५७
भलावार	२२१
भसकट	३६३
भहामल्लपुरम	१२९
भहीधरपुर	५२६
भाईन	३७७
भाण्टगुमरी	२६
भातारम	५३५
भाण्डले (दे० आवा)	
भाण्डलपुर (आ० मयडौर)	८०
भारिब (भारवी)	३५६, ७७
भारो (आ० हरीरी)	२२७, ३०६
भासेइ	२९७
भाले	२२१
भावची	५०८
भिकोनास	६३८
भिम्यान	५०८
भिनेत-एल-बैदा	३०२
भिमोइ	५६१, ६२
भित्बर्टन	५६९
भीतकीना	५०८
भुआंग लंकून	५१५
भुजकुरपुर	१६०
भुस्तान	१७७

१. अबकादिबन भाषा में बाब = द्वार; इलिम = भगवान; बाबइलिम; बाइबिल; बेबिल अर्थ हुए — भगवान का द्वार; धीक भाषा में 'न' जोड़ने से हो गया 'बेबीलोन'। कसाइट शासकों ने इसका नाम कारदुनियास रख दिया। अब केवल एक टीला रह गया है। उसी टीले के निकट हिल्ला घाम है।

मुवातली (गुरगम्मा)	३२२	रोहना	२१६
मुसल	३४०	लओ आग	५३१
मेइदुम	५४९	लखीमपुर	१६८
मेगिडो	२८७	लद्दाक (लद्दाख)	३९७, ४००
मेनकोरे (माइसे रीनस)	५४६	लन्दन (लन्डन)	२६, ६७, २६९, २७३, ६४७
मेम्फिस (ग्रीक भाषा में; मेन नेफर-मिस्री भाषा में) ५४६, ५७, ५८, ६४, ६८, ९६		लबरनाश (तवरनाश)	३०६
मेरठ	६७	लशियो	५०८
मेलॉस	६३८, ६४१	ल्यूकास	६३८, ५८
मेक्सिको	७४१, ४२, ४८, ५०	ल्हासा	३६७ ४००
मेड्रिड	७५०	लारकाना	२६
मैदाने सालिब	३६३	लिगमोर	५१५
मैसूर	१५०	लिनेरिक	७०८
मोनरोविया (मॅनरोविया)	५९८, ६०७	लिस्त	५५१, ६४
मोगुल	३५७	लुआंग प्रबंग	५१५ १८
मोहंजो-दड़ो	२७, ७४	लुकेनिया	६७४
मोलमीन	५०८	लुक्सर	५४५, ५४
मथील	३७७	लू क़आन हीन	४५४
यदो (देखए टोक्यू)		लेगास्पी	५३१
यशोधर पुर	५२६	लेमनास	६३८
यार्क	६८८	लेसावास	६३८
यार-लौंग	३९७	लैगास	५६६, ६१५
युटंग	४००	लोथल	२६
युबोइया	६३८	वर्धा	१९४
यूबिया	६७१	वाटरफोर्ड	७०८
रंगपुर	२५	वातापी (वादामी)	१४२
रंगून	६०	वान	२६६
रतनपुर	१८९, ६४, २१७	वारंगल	८८
राजमुन्द्री	१४२	वाराणसी (वनारस)	८२
राजारत्ते	२१६	वाशिगटन	४९२
राजाशाही	१५०, १५४	विजय	५२६
रानो रोराकू	७६१	विजय नगर	१३२, ३४, ३८, ४२, ९४
रॉस्टाक	२४६	विदिशा	७८
रोम (रोमा) ९, २५२, ८६, ६३, ३२७, ३५, ३८, ४७, ५३, ८५, ४१२, ५६१, ६२, ६६, ९५, ६३६, ४४, ६०, ६८, ७०, ७२, ७८, ८५, ६७, ७०८, ७१५, ७२१		विशिलापटनम	१५४
		वीन चांग	५१५
		वेंगी	१४०

बेनिस (विनीज़िया) ८७, २६१, ६३१, ४४, ५८, ६०, ७४, ८५, ६८, ६९	सिफर्नास	६३८
बेस्तिनी	स्किपा थोस	६३८
बेलूर	स्मिर्ना	६६७
बेसी (देखिए थीबीज़)	सियोल	४८१
बैशाली	सिरबाह आ० (खरीबा)	३५९
बोलसिनीआइ (बोल सेना)	सिरांस	६३८
बंघाई	सी-एन-फू	४१२
शाकम्भरी (सांभर)	सीरियम	५०८, ६
शातेल अरव	सुरोगाउ	५३१
शिमला	सूरत	९१, २६३
शिवनेर	सूसा (शूसा)	२३०, ३१, ४१, ४७, ५५
शीराज (आ० चेलेल मीनार)	सेमनियम	६७४
सक्कारा	सेरीफांस	६३८
संजान	सैलोनिका	६६, ७८
सतारा	सोमरसेट	५६९
समारिया (आ० सिबास्तीया)	हड़प्पा (हरीयूपा)	२५, ४३, ७४
समाल (ज़िनज़र्ली)	हत्तुशाश (आ० बोगज़कुई गोगें ग्राम)	३०६
सफ़ा	हनमकोण्डा	८८
समरक्रन्द	हमा	३११, १२
समोथ्रेस	हमाथ	३३७
सन्तोरिन	हमादान (देखिये एकवटाना)	
सराय	हरन	३७९
स्थानेश्वर (थानेश्वर)	हरार	५६६, ६०४,
सलामिस (ग्रीस)	हर्पीनी	६७४
सलामिस (सायप्रस; आ० एनकोमी)	हरीरी (दे० मारी)	
स्केपेलास	हल्पेश्वर (दे० तेजपुर)	
स्काइरांस	हवारा	५५१
सहसराम	हानयांग (दे० सीयोल)	४८०
साइस	हिज	३७६
सारन	हिरेबिल्योपोलिस	५५०, ५७
सिगीरिया	हिल्ला (दे० बेबीलोन)	२२८
सिपिलोस	हिस्टोनिया (वास्ता)	६६८, ६९
सिकन्दिया	हुगली	६१
सिटका	हेबरोन (हेब्रोन)	२२८, ३२५
	हेलियोपोलिस (दे० ओनू)	५४, ६२
	हेलीकानैसस	३५१, ५३, ६३६, ६७

हेलेसपाण्टस	३४३
हंदराबाद	९२
श्री कण्ठ	८२

नगर-राज्य

अक्काद (आ० एलदोर)	२२६, २७, २८, ५५, ३३५
अगरम (आ० जगरेब)	६६८
अगादे (देखिए-अक्काद)	
अग्मोन	६६८, ६६
अदाब	२२५, २६
अपूलिया	६६८
अबूहवा (दे० सिप्पर)	
अपोलोनिया	६३८, ५८
अम्निया	६७४
अम्ने सिया	६३८, ५८
अर्गास	६३८, ६०
अरोकिया	६६८, ६६
अशकाब	२२५, २६
अशुर (आ० शरकात)	२२९, ३९
आईसिन (आ० बहुरियत)	२२९
आर्केडिया	६६४, ६५
आर्कोमिनास	६४५
आदिया	६६८, ६९
इगूबियम (आ० गुब्बियो)	६६८, ६९, ७४
इथाका	६३८
इयोलकास	६४५
इरीदू	२६५, २६
उम्मा (आ० टेल जोला)	२२५, २६
उर (आ० मुख्यर)	४४, २२५, २६, २७, ३२, ४३, ५५४
उरुक (आ० वरक)	२२५, २६, २७, ३५, ४३
उधमाल (उधमल)	७४८
एजीना	६३८, ५८

एथेन्स	२५०, ६३२, ३६, ४४, ४५, ५०, ५८, ५९, ६०, ६२, ६४
एनेगटोरियम	६३८, ५८
एपोलोनिया (देखिए अपोलोनिया)	
एफिसस	६३८
एल घेमिर (दे० किश)	
एशनुन्ना (आ० टेल असमार)	२२९
एस्की अदालिया (दे० सिडे)	
ओम्निका	६६७
ओलिम्पिया	६३८, ६४
कइदोनिया	६३६
कपुआ (दे० कै सलिनम)	
कायरी (आ० कथैतरी)	६६७, ६८, ६९
कालसिस (खालसीस)	६३८, ७१
किर्ता	५९५, ६६८
कियास	६६८
किश (आ० एल घेमिर)	२२५, २६, २७, ४३
कुमाय (कीमाय, क्युसी)	६६८, ६९, ७१
कैसिलिनम (आ० कपुआ)	६६८, ६६, ७२
कोरिन्थ	६३८, ५८, ६०, ६१, ६२, ५७
कोस	६३६
कनीडस	६३६
कलूसियम	६६७, ६८, ६९, ७०
गवीआई	६६८, ६६
जेबाल (आ० जेबाइल)	२६३
जेम्द नल	२४३
टस्कोनेला (आ० टस्कोनीया)	६६८, ६६
टायर (आ० सूर)	२८७, ९३, ६२९, ४०, ४४
ट्रॉय	६३६, ४५
टीबुर (आ० टीबोली)	६६८, ६६
टूडर (आ० टोड़ी या तोड़ी)	६६८, ६६, ७४, ७८
टेंडमोर (आ० तादमूर-पालमीरा)	
टेल्लो (दे० लैगाश)	
हेल्फी	६३८
डेलियम	६३६

तारकुइनिया (आ० तारकुइनी)	६६७, ६८, ६९, ७०
तीगिया	६३८, ६४
थीबीज (थीस)	६३६, ४०, ४५, ६०, ३२, ६४
नासास (कीट)	६३६, ४६
निकियास	६३८, ६०, ६२
निप्पुर (आ० नूफ़र)	२२५, २६, २७, ४६
नियपोलिस (आ० नेपिल्स)	६४५, ६८, ६९, ७१, ७२
नोला	६६८, ७२
पाइलस	६३८, ४५, ४७, ४८, ५३, ५४, ५७
पापूलोनिया	६६७, ६८, ६९
पाफ़ोस	६२९, ३०, ३१
पायलिग्नी	६७४
पियासेंजा	६६८, ६९, ८५
पेक्सास	६३८
परास	६३८
पैलेस्ट्रीना (दे० प्रायनेस्ते)	
पोतीदइया	६३६, ५८
पोम्पेआई	६६८, ६९, ७२
प्रायनेस्ते (आ० पैलेस्ट्राइन; पैलेस्ट्रीना)	६६८, ६९, ८८
फ़लेरीआइ (आ० सिर्विटा कैस्ते लाना)	६६८, ६९, ७०, ७८
फ़्लोरेंतिया (आ० फ़ीरेंजे)	६६८, ६९
फ़्रन्तनी	६७४
फ़्रैस्टास	६३६, ४८, ५६
बद-तिविरा	२२५, २६
बिबलॉस (आ० जेवाइल; जेबाल)	२८७, ९४, ५५
बोल्जानो	६६८, ७८
मराथन	२५०, ६३६, ५७
मन्तीनियो	६३८, ६०, ६२, ६
महंकिनी	६७४
माइसिनिया	६३८, ४५
माग्रे	६६८
मिलेटस	६३६

मुकय्यर (दे० उर)	
मेगारा	६३८, ६०
मेगालोपोलिस	६३८, ६४
मेस्ताना (आ० मेसीना)	६६८
मेसीडोन	६३६, ६०
मोआब	२६७, ३२२
युगारिट (आ० रास शमरा)	२८७, ३०२, ३
रोड्स	६६८
रोमा	६६८, ६९
लराक	२२५, २६
लारसा (आ० सेन खरीब)	२२५, २६, २९
लिन्डस	६३६
लुगानो	६६८, ६९, ८३, ८४
ल्यूकत्रा	६३८, ६२, ६४
लैगास (आ० टेल्लो)	२२५, २६, २७, ३५
विनीजिया (आ० वेनीस)	६६८
वी आइ (आ० फ़ार्मेलो)	६६७, ६८, ६८, ६९, ७०
वेतूलोनिया	६६७, ६८, ६९
समोस	६३६
साइनास्की-क़लाई	६३६
सार्डिस	३४९, ५१, ६३६
सिडान (आ० सैदा)	२८७, ८९, ९३
सिडे (आ० एस्की अदालीया)	३५३
सिप्पर (आ० अबूहबा)	२५, २६, ३०, ४२, ४७
सिर्विटा कैस्टेलाना (दे० फ़लेरी आइ)	
सीराकूज	६५८, ६०, ६८, ६९
सोन्ड्रियो	६७८
स्पार्टा	६३८, ५७, ५८, ६०, ६२, ६४
हैगिया त्रियदा	६३६, ४७

नदियाँ

ओरहन	४७३, ७६
कावेरी	१५७
कुस्कोविम	७६१
गंगा	१५७
जार्डन	३३८
डैन्यूव	६६३, ९६, ७१५
दजला	२२५
नर्मदा	८२, १२७
नील	५४६, ५१, ५६, ५९, ६७
फुरात	२२५, ३६१
मकाम	१०१
मोकांग	५२६
यनिसी	४७३
रावी	२५
सरस्वती	८२

पदवियाँ

अम्बान	४००
एटीकोट्टी	७०८
एरेक्ट	७०७
ओइनक	७०७
कोटुम्बिक नेता	४८७
खेदिव	५६३
छोग्याल	३६६
तायरा	४८६
तोकूगावा	४६१
दाइमो	४८९
पादरी	३४३
पाशा	५६३
फु.जीवारा	४८६
फु.राओ	५५२, ६४४

ले०—५

मिनास	६४४
मीनामोतो	४८६
लामा	४००
बज्रधर	४००
वानप्रस्थी सम्राट	४८६
शरगाली शरी	२२८
सेइ-ई-ताइ शोगुन	४८६

पदाधिकारी

अगस्टस जॉन्सन (राजदूत)	३११
अर्नेस्ट दि सॉर्जेंक (राजदूत)	२३५
अशिकाग तकाउजी (शोगुन)	४८९
असाकीज (सेनानायक)	२५२
अहमद इब्न तुलुन (प्रांत पति)	५६३
आर्त बेनस (अंग रक्षक)	२५०
ई-ताय-जो (जनरल)	४८०
ई-ये-यासू (शोगुन)	४९१
उमरो (सैनिक)	३२६
एन्ना तुम्मे (एन्सी)	२२७
ऐन्द्रोगोरस (प्रांतपाल)	२५२
ओरोन्तेव्तोज (सेनानायक)	३५१
कर्वीग्रीन (राजदूत)	३१२
क्वीटन (ब्रीटीश)	१६८
क्वीटन (ब्रिटिश)	१६८
क्लाडियस जेम्स रिछ (प्रदूत)	२६६
क्लाइव (ईस्ट इंडिया क०)	९४
कामातोरी (फुजीवार)	४८८
कियोमोरी	४८९
कीत्से	४०९, ८०
खैरवेरा (सैनिक)	५६३
गौमाता (पुरोहित)	२५०
चर्चिल (प्रधान मंत्री)	३८३
चाणक्य (प्रधान मंत्री)	७७
चीनी	४१६, ८०

माउण्ट सिनाई (देखिए-कोहेतूर)	३२६, ३०,
	७३
युराल	७१५
हेबरोन (की पहाड़ियाँ)	३०९

प्रांत

अण्डमन	५३
अन्तावर्ती तिब्बत	४००
अम्दो	३६६
अलघेनी	७५३
असम	६८, ५०६
आन्ध्र	७७, ७८, ८७, ९१, ११८, २१, २५, ४५, ५०
उड़ीसा	१५७
उत्तर प्रदेश	२१, २५, ६७
एरीजोना	१०
एलास्का	६६६, ७४८, ५५, ५६, ५८, ५९
ओकलाहोमा	७५३
कच्छ	७४
कर्णाटक	८७
कर्नाटक	१५०
कपकुडी	१३८
काठिया वाड़	६६, १०६, ३८
कामरूप	१५४
क्रोट	६४४
कुडिस्तान	२५७, ६८, ८२
केदू	५३५
केरल	१३४
कैलीफोर्निया	७४१
कोहाऊ रोंगो रोंगो	७६२
गुजरात	२५, ७४, ८०, १०७, १०९, ३८
गोआ	६१
चीनी	४१९

जोकवान	४५०
तेलंगाना	८८
तोण्डेय नाड	१२१
पंजाब	७८, ८०, १५७, ७७
पिगूरिया	६७८
पूना	१६०
फ्र्यूम	५९१
फान्सू	७८
बंगाल	८४, ८८, २६३, ५०६
बरार	८६, ८७
बलूचिस्तान	२५
बिहार	९९, १६०
बुन्देलखण्ड	८४
मिथिला	१६०
युनान (चीनी प्रांत)	४५०, ५४, ५२६
राजस्थान (राजपुताना)	२५, ५०, ६६
बेल्स	७०७, ११
शंघाई	४००
शान्तुंग	४६२
संयुक्त प्रांत	९७
स्काट लैण्ड	७०८
सखालिन	६९९
सिन्व (शक द्वीप)	२५, ७८, ८८, १०२, ७२, ७७, ३७६
सिनाई	६. ३२६, ३०, ६३, ६६, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ५५१, ६४१, ८५
सिसली	२२९, ६५८, ६०, ७०, ७१, ९३
सोब्यांग	४००
सोंग	३९९
हवाई	४२१
हिमाचल प्रदेश	१७२
हैन्स बर्ग	६७८
होनान	४२५, ५८

भाषाएँ

अक्कादियन	३२०
अखमिनिक	५९१
अंग्रेजी	२७८, ९५, ३४९, ५५, ६८, ४२९, ४०, ४१, ४६, ९६, ६३१, ७१२
अफ्रीकी	६०४, ६०७
अम्ब्रिया	६७४, ७८
अरबी	५, १६८, २२५, ३२, ६६, ६८, ३८५
अरमायक	१०१
अरामी	३००
असीरियाई	२७३, ३१३
आर्य	६४८
इंगलिश	६०३, ४४४, ६०४, ७-८
इटालियन	६७४
ईग पिग (टोन)	४३१
उत्तरी मण्डारिन	४२२
उर्दू	१६८, ७२
एट्रस्कन	६८७
कनआनो	३०२
कनोन	५०
कानहक्का	४२२
काप्टिक	५७०
कियाओ कियो	४५४
कुकीचिन	१६८
कुन	५००
कुर्दिश	३५७
केल्टिक	७१२
केल्टिक-लेटिन	७१२
कैण्टोनीज	४२२
क्री	७५५
गोज (घेर्ज)	६२०
गुरमुखी	१७७
गुआन ह्वाह	४२१

ग्रीक	१८, ३४०, ४७३, ५४५, ४६, ६२६, ३१, ६८
ग्रीक-नब्ती	३६४
चीनी	१०१, ४३२, ९२, ९३
चीनी-इंगलिश	४३१
जापानी	४६१, ५-१, २, ३
जेण्ड-अवेस्त	२६३, ६६
तमिल	९९
तमाशोक (तफनार)	५९७
तिब्बती	३९९, ४०१ ४०२, ५४
तिब्बत-बर्मी	४५०
तुर्की	१६८, ४७६
तेलुगु	१४०, ४५, ५४
तोखारी	४६९
द्रविड़	३४, १२७
दक्षिणी मण्डारिन	४२२
द्वि-ध्वन्यात्मक	४४३
ध्वनि-बल (टोन)	४२९, ३३, ५१८
नव-असीरियाई	२७३
पर्शियन	२४८, ६६
पाली	७७, १००, १-७, २६६,
पाली-प्राकृत	१०७
प्राकृतिक	७७, १०२, १०७, १०९, ७७
प्राकृत-संस्कृत	१२५
प्राचीन पर्शियन	२५०, ४७३
प्राचीन फारसी	२७९, ३५९
पियू (प्यू)	५०७
पोकिंग	२२, २५, २९
पू-टंग-ह्वा (साधारण)	४२२
पूर्वी मण्डारिन	४२२
फ्यूमिक	५९१
फारसी	२६८, ३१३
फारसी-भारती	१७२
फ़ेच	१८७
बर्मी	१६८

बर्मी-तिब्बत	४५७
बैक्ट्रियन	२६४
भारती	१७२
भारोपीय (इण्डो-यूरोपियन)	५३, ३११, ५१, ८५, ६७१
मण्डारिन	४२१, २९, ३१
मराठी	८८
मिस्रो	२६२, ३१३, ५४६, ४९, ५७, ६५, ७५
मीडियन	२६४, ६७
मीन	४२२
यांग पिंग (टोन)	४३१
यूनानी	२ ८, ७९, ८०,
रूसी	४६९
रोमन उच्चारण	४३२
लिंगुआ-ओस्की	६७४
लैटिन (लातीनी)	२४८, ६३, ३३८, ६७८, ८५, ९८

वू	४२२
वेडनिंग	४५४
शांग पिंग शंग (प्रथम-टोन)	४३१
शांग शंग (तृतीय-टोन)	४३२
शियापिंग शंग (द्वितीय-टोन)	४३१
संस्कृत	९०, ५९, १००, १०२, १०९, १३, २७, ३४, ५४, ७७, ८७, ९४, २:६ ३ ३, ४०, ६६, ७३
स्लाव	६९७
सिडेटिक	३५३
सीरियाई	२७१
सोरियाक	३६१
सुमेरियन	३२०
सुमेरी	२७३
सूसियन (एलामाइट; अमारदियन)	२६७
हिती	३११
हिन्दी	५००
हिन्दुस्तानी	१७७, ४३१, ३२, ४४, ४६, २६६

हुई यांग	४२२
हेब्रू	५, १०१, २२८, ४८, ६३, ७१, ९७ ३१३, ५९, ६८५, ९८

भू भाग

गैलिली	३३१
चुनी भूमि	१०९
पम्फेलिया	३४७, ५३
माहन	४८०
रेशिया	६७८
स्कैण्डिनेविया	७०७
सिन्धु घाटी	२५, २६, ५८, २९, ५८, ७४, ८६, ९७, ९८
सुमेर	२७, ४३, २२५, २७, ३५, ३६, ३७, ४५, ३२४, २५, ३५, ७०७

महाद्वीप

अफ्रीका	१०, २८५, ३५९, ८७, ४३, ९१ ९५, ९६, ६०७, १७, ३१
अरेबिया	३३३, ३४, ६३, ३११, ४०, ५९, ६०, ६१, ६३, ६६, ७३, ७९, ८६, ५९५, ६०४
एशिया	४१२, १७, ५६, ६६०, ६७, ७४८
दक्षिण अमेरिका	१०; ७४८, ६१
दक्षिण-पश्चिम अरेबिया	६०४
दक्षिण-पूर्वी-एशिया	५६, ३९२
दक्षिणी-पूर्वी-यूरोप	६९७
पश्चिमी एशिया	२४९, ३११, ३८, ८५; ५४५; ५३, ५४, ५६
फेंच अफ्रीका	६०७
मध्य अमेरिका	७४८, ४९
मध्य एशिया	३९७, ४११, १६, २१, ६, ६०, ६५, ७३

मध्य यूरोप	७१५
यूरोप (यूरोप)	४००, १२, १६, १७, ६३, ७३; ९१, ५२७, ३०, ३५; ६३, ९५, ६०७, १७, ९०, ७५३

युद्ध

कोरिथियन	६५७
गृह-युद्ध	४२१
चीन-जापान	४२१
चीन-फ्रांस	४२१
जिहाद (इस्लाम का धार्मिक युद्ध)	६१५
थर्मोप्ली	६५७
दूसरा महायुद्ध	४८१, ४९२
प्युनिक	५७५, ६७८
पेलीपोनेशियन	६६२
प्रथम महायुद्ध	४९२
बाल्कन	६९७
मरायन	६५७
रूस	४९२
रूस-जापान	४८१
थ्याम-कम्पूचिया	५५१
सामुद्रिक	४८९

राजकुमार, राजकुमारियाँ

अरियादने (राजकुमारी)	६४४
आहोत्सू (राजकुमार)	४८८
कारु (राजकुमार)	४८८
कुमार देवी (राजकुमार)	११३, २०४
कैथरोन (राजकुमारी)	९१
थ्यूसियस (राजकुमार)	६४४
दज् शी (रानी)	४०१
नोका (राजकुमार)	४८८
प्लेसीडिया (राजकुमारी)	९१

पेसीफ्रो (रानी)	६४४
महिन्द (राजकुमार)	२१६
मेरी अतेन (राजकुमारी)	५५५
रज्यश्री (राजकुमारी)	८२
शोतुकू तैशी (उमयादो-राजकुमार)	४८८
सुयीको (राजकुमारी)	४८८

राजवंश

अंकोर	५२६
अखामेनीय (अखमेनी)	२७९
अट्टाईसर्वा	४५६
अठारहवाँ	४५२
अयूबी	४६३
अरसासिड (आर्सासिड)	२८२, २५२
अलंग पाया	५०७, ९
आठवाँ	४५०
इक्कीसवाँ	४५७
इन	४०९
इक्ष्वाकु	१२१
ई	४८१, ६५
उत्तर चाओ	४१४
उत्तर चीइन	४१४
उत्तर तांग	४१४
उत्तर लियांग	४१४
उत्तर हांग	४१४
उन्तीसवाँ	४५९
उन्नीसवाँ	४५५
एक्कीसवाँ	५६०
कदम्ब	८८, १४०, ४१
कपिलेन्द्र	१५७
कल्याणी-चालुक्य	८६
कलचुरी	८४, १८९
काकतीय	८८, १४५
काण्व	७७

कादमक					
किन	१०६				
कुषाण	४१४, १६				
खिलजी	७७, १०१, ८६				
गंग	९०				
गजनी	८६				
गहड़वाल	८८				
ग्यारहवाँ	८२				
ग्रीक	५५०				
गुर्जर	१०१, ५६०				
गुप्त	८०				
गुहिलोत	८०, १३८				
गोर	८०				
चतुर्थ	८८				
चन्देल	४५५				
चाउ	८४				
चालुक्य	४०, ११६, २७, ८०				
	८४, ८६, १२१, १२९, १३५, १४०,				
	१४२, ४५				
चीइन	४११				
चींग	४१७				
चोल	८७, १२६, १५४				
चौदहवाँ	५५१				
चौबीसवाँ	५५७				
चौहान	८४				
छठवाँ	५४६				
छत्रोसवाँ	५५८				
जगुये	६२०				
तांग	४१२, १३				
तीसवाँ	५५६				
तुंगू	५०७				
तुगलक	९०				
तुर्क	५६३				
तृतीय	५४६				
तेईसवाँ	५५७				
तेरहवाँ	५५१				
तैलंग	१२६				
तोकूगावा					
दसवाँ					
दास					
द्वितीय					
नवाँ					
नाकातोमी					
पञ्चोसवाँ					
परमार					
पश्चिमी चालुक्य	८४, १८६, १६४				
प्रतिहार	१४२				
प्रथम	८२, १६४				
पल्लव	५४६				
पन्द्रहवाँ	८६, ८७, १२८, २९, ३२, ३४, ४०				
पल्लव	५५१				
पागन	७८				
पांचवाँ	५०७				
पाण्ड्य	५४९				
पायिया	८६, ८७, १३४				
पाल	१०१				
पूर्वी गंग	८४				
पूर्वी चालुक्य	१५४				
बनी अब्बास	१४२				
बनी उम्मिया	३६१				
बसीम	३६१				
बाइसवाँ	१२५				
बारहवाँ	५५७				
बीसवाँ	५५०				
बंकिट्टया	५५६				
मंगोल	१०१				
मंचू (दे० चींग)	४१६, ६०, ६१, ५०७, २६				
मनखेड	४१७, २१, ६९, ८१				
ममलूकी	१४२				
मल्ल	५६३				
मलेच्छ	२०४				
मिंग	१५०				
मुगल	४१६, ५४, ८१				
	६०				

मैत्रक	८०
मोनो नोवे	४८८
मोखरि	८०
मौर्य	७७, २५२
यादव	८८
मुआन (मंगोल)	४१६, २१
राष्ट्रकूट	८७, १६४
राष्ट्रकूट-राठौर	१४२
रोमा नोव	६९९
लिच्छवि	११३, २०४, ३
लोदी	६०
वर्धन	८२
बलभी	१३८, ४०
बाकाटक	८३, १२५
बातापी-चालुक्य	८६
विष्णु कुण्डी	८६
बेंगी-चालुक्य	८७
शक	७७
शांग (इन)	४०९, २७, ८०
शान	५०७
शिया	४०९
शुंग	७७
सत्ताइसवाँ	५५६
सफ़वी	२५२
सस्सानो	२६१
सत्रहवाँ	५५१
सातवाँ	५५०
सातवाहन	७७, ७८, १०६, २१
सिल्युकिड	३४३
सिसोदिया	६०
सिहल	१३४, २१६
मुई	४१२
सूंग	४१४, १६
सैयध	६०
सोगा	४८८
सोमंकी	८४

सोलहवाँ	५५१
हख़मनी (दे० अस्त्रमेनी)	२७८
हान	४१२, ३८
हितायत	५५६
हेमेटिक	६०४, २०
हंहय (दे० कलचुरी)	८४
होयसाल	१४२
खहरात	१०९

राजवंशों के संस्थापक

अमेनर तायस	५५९
अमेनेमहूत प्रथम	५५०
अहमोस	५५२
उर नम्मू	२२८
एलेटीज	६५८
कंडुगोन	८७
कपिलेन्द्र	२५७
काओत्सू	४१२
कुतुबुद्दीन ऐबक	८८
कृष्ण राज (उपेन्द्र)	८४, १८६
कीबकल्ल	८४
खिज्ज खाँ	६०
खेत्ती द्वितीय	५५०
गयासुद्दीन तुगलक	९०
शाजी तुगलक (दे० गयासुद्दीन)	६०
चन्द्रगुप्त	८०, ११३
चन्द्रदेव	८२
चाउ कुआंग इन	४१४
चीन	४११
चुटू पल्लव	१२१, २५
जफ़ेत	३८७
जलालुद्दीन खिलजी	८८, ९०
जू मुयान जांग (हुंग वू)	४९६, ५४
जोसेर	५४६

त अंग	४०९
तेती प्रथम	५४९
तेफ़ नेक्ता	५५७
दन्ति दुर्ग	८७
दुर्विनीत	८७
नल्लुक (नन्नुक)	८४
नागभट्ट प्रथम	८२, १३४
नीको	५५९
नेक्ता नेबो प्रथम	५५६
नेटरवाउ	५४६
पियाली	५५८
पेदूपास्त	५५७
बेट्टा प्रथम	८८
बहलोल लोदी	९०
भिल्लन यादव	८८
मयूर शर्मा	८८
माधव वर्मन	८६
मूलराज	८४
मुसेर काफ़	५४९
यू	४०६
रुरिक	६९९
रेमसीज प्रथम	५५५
लियू पांग	४१२
लीमु (लीड्ज़ू) चेंग	४१७, ६६
वसुदेव कण्व	७७, ७८
वासुदेव	८४
विन्दफ़र्न	७८
विघ्न शक्ति	८६
बू वांग	४०६
थी गुप्त	८०
सर्व सेन	८६
स्नेफ़ू	५४६
स्नेन्दीज	५५७
सामन्त सेन	८४
सिंह विष्णु	८६, १२६
सेने खेन्ने	५५१

सेहर तबो इन्तेफ़ प्रथम	४५०
हरिचन्द्रशाम्भू	८०, ८२
हुंग वू (दे०जू युथान जांग)	४१६, ५४

राज्य

अवमुम	५९२, ६६, ६९७, २०
अजटेक	७४१, ५३
अट्टिका	६४५, ५७
अदाव	२२५
अन्तावर्ती तिब्बत	४००
अनजन	२४८
अरजवा	३१८
अरमेनिया (अर्मेनिया)	२४८, ६३, ३८५
	८७, ८८, ८९
अराकान	५०७, ५०६
अरामियन	३३७
अरियादने	६४४
अलवर	१६४
अवन्ती	१०९
अवार	७१५
असकाव	२२५
अहोम	१५०, ५०६
आकेंडिया	६६४, ६५
इटूरिया	६६७, ६८, ७०, ७१, ७८, ८५
इटालियन	६७२
इलूरिया	६७४
उत्तर	२२६
उरार्तू	२३२, ३३
एपीडेमनस	६५८
एलाम	२२७, २८, ३०, ४२, ४७, ४८, ५५, ५६
ओस्टमार्क	७१५
कतसीना	६१३
कतावान	३५६, ३७७
कनेम	६१३, १५

कम्पेनिया	६७२	यातोन	५०७
कम्बोज	५२६	थेसली	६३२, ४५, ७०७
कॉलिंग	७७, ८७, १५०, ८६	थ्रेस	३४३, ७०७
कश्मीर (काश्मीर)	१५७, ३७६, ४००, २	दलमनिया	७१५
काकेशस	६६६	दिल्ली	९०
कानो	६१३	दौरा	६१३
कामरूप	१५०, ५४	नज्द	३६१, ६३, ६४, ६६, ६७
कारटेपे	३२२	नमारह	३७९
कार्येज	२८७, ९७, ५६५, ६७, ६८, ६७०	नवात	९, ३६४, ६५, ७५
कार्येदस्त (दे० कार्येज)		नानचाउ	५०७, १८
किम्बरी	७१२	पम्फोलिया	३५३, ८६
किश (कुश)	६१७, २२७	परसूमाश (दे० अनशन)	२४८
कुर्ग	१३२, १७७	पश्चिम राज्य	२२९
कुश्शार	३०९	पश्चिमी तिब्बत	३९९
कुपाण	७८	पाथिया	७८, १०१, २५२, ४१२
केदा	५१५	पारसा (दे० परसूमाश)	२४८
केव्वी	६१५	पालमीरा	५६२
केजूरियो	४८०	पूर्वी तिब्बत	३९९
कोशल	१८६, ३६७	पेल (डबलिन)	७०८
कोर्सीरा	६५८	पेलोपानेसस	६४५
क्रोशिया	७१५	पेलोपोनेशिया	६६२
गंगावड़ी	८७	पैक्ची	४८०
गायकवाड़	९१	पोर्नु (दे० कनेम)	६१३
गोधिया	६८८, ९३	फ़लाशा	६२०
गोबिर	६१३, १५	फ़ुलानी	५९६
गोरखा	२०४	वन्ताम	५३५
चम्पा	५२६	बवरिया	६७८
चार्किंग	५२६	बाह्या तिब्बत	४००, ४०१
चालुक्य	८६	बोपेशिया	६४०, ४५, ६२, ६३
चेन-ला	५२६	बोर्नु	६१५
चोल	८७	बोहेमिया	६९७, ७२१
जगाताई	४१६	भोसला	९१
जापान	४८८	मगध	७७
जूडा	३२६, ३२७	मंगोल	३९०
जोवाह	३३७	मंचू	४६०
टर्की	६४५	मजापाहित	५३५

मणिपुर	१६८, ५०७, ९
महाराष्ट्र	५८, ९०, ९२
माइसोनिया २८७, ३०२, ६२९, ३१, ३२, ४१, ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ५२	
मालवा	८२, ८४, १३८, ८९
मित्तानी (मित्तानी)	२२७, ३०, ३१८, ५५३
मिनायन (माईन)	३७७
मोडिया २३३, ४७, ४८, ५०, ५७, ६६, ३२७, ४९, ८५	
मोनियन (माईयन)	३५९
मुख्य तिब्बत	३९९
मेवाड़	८०, ९०
मेसोडोनिया ३४३, ६३६, ६२, ६४, ७०७	
मैसूर	८८, ९२
मोआव	९७
मोखरी	१२७
रोमन २९९, ३३८, ५९, ५९५, ९७, ६३१, ४४	
वत्स गुल्म	८६
बलभी	८०, १२७, ४०
बातापी	८६
वेई	४१२
बेंगो	८७
बू	४१२
शान	५०७
शू	४१२
सबा	३७७
समारिया २३२, ३०२, २६, ३२, ३३	
सरहिन्द	९०
स्लाव	७१५
स्लैवोनिया	७१५
सानो	५१५
सिक्किम २१२, १३, १४, ४००, ४०२, ४०७	
सिन्धिया	९१
सिल्ला	४८०
सिलीशिया	७१४
सैबियन (दे० सबा)	३५६

सोफीन (लेसर अरमेनिया)	१८५, ८६
हवास्त	६१७
हिती	३१०, ३४३
हिमारी	३५९, ७७
हिन्दू	५१५, २६ ३२
हीरा	३६१
हैदरमौत	३०९, ७७
होल्कर	९१

लिपियाँ

अक्कादी (अक्कादियन) २३९, ७१, ७२, ७३ ७९, ३०२, २०, २१	
अजटेक-चित्र	७४२, ४३, ४४
अनशियल	६८८
अम्नियन	६७४, ७५
अमरीको	७४२
अरबी ९, १६, २६१, ३७५, ७६, ७९, ८०	
अरबी-सिन्धी	१७२, ७३
अरमायक ९६, ९७, ९९, १०१, २३८, ८२, ३३०, ३५, ३७, ३८, ३९, ४१, ५१, ६४, ६८, ४७३, ७६, ७१८	
अरसाकिड पहलवी	२८२
अल्बेनियन	६९८
अवेस्त २८२, ८४, ८५, ६९८	
असोरियन (असोरियाई)	२३९, ४४, ४५, ६४, ३१९
असोरियन कोलाकार	९६, २४३
अहर्क	४९२
अहोम	१६७, ६८
अधरात्मक ९, १६, ४३, ४५८, ९३, ६४७	
आधुनिक	५२७
आधुनिक गोलाकार (स्स-लोह)	५०९, १२, १८, २३, २४
आधुनिक धाई	५१८, २२, २३
आर्मेनियन	३१९

आगुलिपि	१९६, २००, २०१, ७६४, ६५
इटेलियन	६०४
ईनोशियल्स	४४१, ४३
उद्गुरी	४०२, ६२, ६३, ६५
अु-बेन	४०१, २, ४, ७
उडिया	१६, १४४, ७७, ८२, ८४
उत्तरो ब्राह्मी	१०७, १४, १५, १६, १७
उत्तरो सेमिटिक	९, १४, ९७, २६३, ९७, ३२२, ३७, ५७३
उर्दू	१७९, ७२, ५७२
उत्कीर्ण पवित्र लिपि	५६५
अु-मेद	४०१, २, ३, ७
एक-वर्णिक	५७२
एट्रस्कन	६७९, ७२, ७४, ७५, ८५
एकत-अजिर	३८७
एलामाइट	२६२, ६९, ७१
ऐन्द्रजालिक	४५७, ५८
ऐस्ट्रोजलो	३४०, ४२
ओगम	९, ७११, १३
ओनमुन	४८४, ८५, ८६
ओरहन	४७३, ७६, ७७, ७१८
ओस्कन	६७२, ७४, ७६
कताकाना	४९३, ९४, ९५, ९६, ५००
कश्म्व	५०७
कनअनी	३३२
कन्नड़-पांचवीं श०	९४२, ४३, ४४, ४५
„ छठी श०	१४०, ४१, ४२, ४३, ४४
„ सातवीं श०	१४२, ४३, ४४
„ आठवीं श०	१४२, ४३, ४४
„ नवीं श०	१४२, ४३, ४४
„ ग्यारहवीं श०	१४२, ४३, ४४
„ तेरहवीं श०	१४२, ४३, ४४
„ पन्द्रहवीं श०	१४२, ४३, ४४
„ आधुनिक	१४३, ४४, ५४
कयोक्त्स	५०९
कवि	५३५, ३६

कथेमोल	२०२
क्रम-द्वारा निर्मित चित्र	४२७, ३२
कॉप्टिक	५६६, ७६, ८७, ६२, ६६८
काय शू (काइ शू)	४२६, ६३, ५००, ५०२
कारापाल	४२७
कालमुक	४६५, ६८
किताब मुरत्वा	३३०
क्रो	७५५, ५७
कुटिल	१२७, २८
कुशुनी (मलावारी)	३४३, ४४
कुटाक्षर	२०८
कूफो	३८४
कुंमोल	२०८
कैरियन (क्रारी)	३५३, ५४
कैरोलीन	६८८
कोकूतेई-रोमा जी पद्धति	४६६
खगोल शास्त्र	७६७
खरोष्ठी	६६, ६६, १०२, ६, २८२
खाम्ती	१६८, ६६
खुतमुरी	३६०
खेमिर	५२७
ग्रन्थ—सातवीं श०	१३२, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८
„ आठवीं श०	१३७, ३८
„ नवीं श०	१३७, ३८
„ दसवीं श०	१३७, ३८
„ ग्यारहवीं श०	१३७, ३८
„ बारहवीं श०	१३७, ३८
„ तेरहवीं श०	१३४, १३३, ३७, ३८
„ पन्द्रहवीं श०	१३७, ३८
ग्रहण किये चित्र	४३८
गालिक	४६२, ६४
गिरनार (शिलालेख)	११२, १३
ग्राजदांसकाया	७००
ग्रीक	६. ३१५. ६०. ५६८. ५९. ७०. ७१. ६४०. ४३. ६४. ७१. ८७. ८८. ६४. ७१८

ग्रीक—साहित्यिक-काल	६६४, ६५
गुजराती	१६, १६०, १७७, ८३, ९४
गुप्त	११७, २७, ७७, २०६, ४०१
गुरुमुखी	१७७ ७६
गू-वन	४३२
ग्लेगोलिथिक	६९७, ७०१, १८
गोलमोल	२०८
चकमा	९०५, १४
चतुष्कोण पाली	५०९, १०, १८
चाउवन	४२७
चित्र ५६५, ६६, ६७, ६२, ७०, ७४८, ६१, ६२	
चित्रात्मक	१०, ६६, १३८, ५००, ७१, ७२, ७४, ११७, ४८, ५१, ७५०, ५३, ६१
चिरोकी	७५४, ५५
चिन्हात्मक	२३५, ३८
चीतान	४५४, ५७, ५८
चीनी	६, ४२३, २७, २९, ३०, ३३, ५३, ५८, ५००, ५०२, ४३३, ४१, ४३, ४४, ४७, ४८, ४६, ५०, ८७, ६६
चेर-पाण्ड्य	१३२
चोल	१३२
चौकोर हेब्रू	३३०
छोटी	४५४, ५८
जबाली दूरा	२२१, २२
जर शर (सांकेतिक चित्र)	४३२
जाटकी (लाण्डा)	१७७
जापानी	५००
जाजियन	६९८
जावा की दूसरी	५३५, ३७
जिया गू वन	४२७
जिया जीह (ग्रहण किये चित्र)	४३८, ३९
जुआन जू	४३२
जेण्ड	२६४
जेण्ड—अवेस्ता	२४, ८५
रवेद	३४०, ७९, ४२
जैकोबाइट (सातवीं श०)	३४०, ४२

जैकोबाइट (ग्यारहवीं श०)	३४०, ४२
टाइरेनियन	६७२
टांकारी	१५७, ७२, ७६
डा जुआन	४२७
डिमाटिक	५६७, ९, ७१, ७३, ८६, ९१, ९२
तगाला	५३२, ३३
तमिल	१२७, २९, ३०, २१, ३२, ३४, ८४
" (सातवीं श०)	१२९, ३१
" (आठवीं श०)	१२९, ६०, ६१
" (दसवीं श०)	१२९, ६१
" (ग्यारहवीं श०)	१२९, ३१
" (तेरहवीं श०)	१२९, ३१
" (चौदहवीं श०)	१३१, ३२
" (पन्द्रहवीं श०)	१३१, ३२
" (आधुनिक)	१३१, ३२
तिरहुतिया	६०, ६३
तुर्तेनियन	६०२
तुलु	१८१
तेलुगु—कन्नड़	१४०, ६०, २२१
तेलुगु	१६, ७७, ८४
" (सातवीं श०)	१४५, ४९
" (दसवीं श०)	१४५, ४६, ४९
" (ग्यारहवीं श०)	१४५, ४७, ४९
" (तेरहवीं श०)	१४५, ४८, ४९
" (चौदहवीं श०)	१४५, ४९
" (पन्द्रहवीं श०)	१४९, ५०
" (आधुनिक)	१४९, ५०
थामुडिक	३६४, ६६, ६९
थौकन्हे	२०८
दक्षिणी ब्राह्मी	११८, १९, २५
दक्षिणी सेमिटिक	९६, ३६९, ६१७
द्विभाषिक	५९७, ६३२
द्विवर्णिक	४९२, ९३
देवनागरी	११७, २९, ३४, ४०, ४५, ५०, ५४, ५७, ६०, ६८, ७७, ८६, ८७, ८९, ९०, ९१, ९२, ९३, २००, ३६९, ७९, ८७, ४०१, ४०,

देवनागरी ब्रेल	१९६, ९९	प्राचीन लैटिन	६८७, ८९
देवेनाइट (लिथिनाइट. लिहियानिक)	३६९, ९६	प्राचीन सोरिलिक	६९८, ७०२
देवेही, हकूरा	२२१, २२	प्राचीन हंगेरी	७१८
देवी	४९२, ९३	पिक्टो	७६४, ६८
ध्वन्यात्मक १४, ५२५, २७, ४१, ७०, ७१, ७२		पुमसो	४८३, ८६
ध्वन्यात्मक चिन्ह	४४५	पेगुअन	५०९, १३
ध्वन्यात्मक पद्धति ४४४, ४६, ४७, ४८, ४९, ९३		पेलासगियन	६७१
ध्वनि—सूचिक चित्र	४३२, ३७	प्रोटो—टाइरेनियन	६७१
नगदीनागरी	१८६, ८७	फाइनल्स	४४१, ४३, ४४
नवती ९, ३६३, ६४, ६५, ६८, ७९, ८१, ८२		फारसी	१६, २७३
नव एलामाइट	२७९	फिनीशियन—(दे० उत्तरी सेमिटिक)	९६,
नव बेबीलोनो	२७९		३३५, ३७, ६४०, ४१, ८८
नवीन	३८७	फिनीशियन—सिप्रियाटिक	६३२
नस्तालिख	२६१	फिनीशियन—हिती	३२१, २२
नस्ख (नस्खी)	३७९, ८१, ८२	फिनीशियन—हेब्रू	६९८
नाच्छ	७१८	फ्रेंच	४२३
निकोल्सबर्ग	७१८, २०	फ्रैलिस्कन	६७८, ७९
निर्धारिक	५७२, ७३, ७४, ७५	बंगला	१६, १५०, ५१, ७७, ८४
नुमोदियन ५९५, ९७, ९७, ९८, ९९, ६०२		„ (सातवीं श०)	१५३, ५४
नेवारी	२०८	„ (नवीं श०)	१५३, ५४
नेस्टोरियन	३४२, ४३, ६१	„ (दसवीं श०)	१५३, ५४
नोत्र—अजिर	३८७	„ (ग्यारहवीं श०)	१५३, ५४
पंजाबी	१६, १८३	„ (बारहवीं श०)	१५१, ५३, ५४
पत्तीमोखा	५१८, २०	„ (पन्द्रहवीं श०)	१५३, ५४
पश्चिमो	१३८, ३९	„ (आधुनिक)	१५३, ५४
पश्चिमो सीरियाक (दे० जकोवाइट)	६४०	बड़ी मुद्रा	४२७
पस्सेपा	४०२, ५	बर्बर	५९५, ९७, ६००, ६०१
पहलवो	१०१, २६४, ६५, ६६, ८२	बा गुआ	४०९, २५
प्यूनिक	२९७, ९९, ३००, ५९७	बाफ्रन शू	४२९
पाकोसिपा (पासिपा; दे० पस्सेपा)	४०२	बामुन	६०२, ६०३
पाचूमोल	२०८	बाल्टी (मोटिया)	४०२, ६
पालमोरा	३३८, ३९, ५६	ब्राह्मी ९, ४०, ७७, ९६, ९७, ९८, १०७, २७,	
पाली	५०९		४५, ५७, ८९, २०६, ७८, ५१८
प्राचीन थाई	५१८, २१	बुरियाती	४६५, ४७०
प्राचीन पशियन (फारसी)	२६६, ६८, ७९	बुल्गारियन ग्लेमोलिथिक	६९८
प्राचीन बेबीलोनियन	२४३	बुल्गारिक सीरिलिक	६९८, ७०३

बेबीलोनियन	२३९, ६२, ७१	मोड़ी	१६०, ६१
बेबीलोनी (नव एव प्राचीन)	२७८	यजोदी	३५६, ५७
ब्रेल (इंगलिश)	७६४, ६६	यनसिन्दी	६१६, १७
बोल्जानो	६७८, ८०	यनिसी	४७३, ७५
बोरोमात	५१८, १९	युगारिटिक	३०४, ६
बोलर अजिर	३८७, ८८	युनानी	९६, ३४९, ५३
भारती	१९४	यू चेन	४५४, ५८
भावमूलक	२३८	रंजना	२०६, १०
भावात्मक	१४, ९६, ५००, ६४७, ७५६	रेखा चित्र	२३७
भावात्मक—चित्र	३११	रेखाचित्रात्मक	२३५, ३६, ५६
भुंजिमोल	२०६, २१	रेखाक्षरात्मक	१६
भ्रू ण	१०	रून (रुनी)	६९४, ९८, ७२१
भोजपुरी	१६०, ६४	रोंग-लेप्चा	२१४, १५
मंगोल	४६२	रोमन	९, १६, १८७, ३९०, ४२४, ३१, ६९, ५३२, ५७४, ६८७, ७१२, ७५५
मगरिबी	३७६, ८०	रोक्स-इरस (दे० प्राचीन हंगेरी)	७१८
मण्डायक	३६८, ७०, ४६२	लाइनियर-ए	६४७, ४८, ५५
मनीकी	४७६, ७८	लाइनियर-ए, बी	६३१
मलयालम	१३२, ८०, ८४	लाइनियर-बी	६३१, ४७, ४८
मलावारी	३४३, ४४	लातीनी	६७१, ८७, ८८, ५६७, ६६३, ६४
म्याओत्से	४५४, ५६	लाण्डा	१७८
मागधी (मगही)	१६०, ६५	लितुमोल	२०८
माग्रे	६७८, ८१	लिथिनाइट (दे० देदेनाइट)	३६९, ७१
मिरोइटिक	५८८, ९१, ६२	लिहियानिक (दे० लिथिनाइट)	३६९, ७१
मिरोइटिक—डिमाटिक	५८९, ६२	ली जू (दे० कारापाल)	४२७, ३०
मित्रा	२७१, ३१३	लोकियन	३४७, ४८, ४९
मुड़िया	१७२	लिडियाकी	३५१, ५२
मूल अक्षर	५२७, २८	लीबियन	६०२
मेई-येई	१६८, ७०	लुगानो (लेपोन्टाइन)	६८५
मेण्डे	६१३	लेप्चा (दे० रोंग)	२१४, १५
मस्रोपी	६८७	लैटिन (दे० लातीनी)	
महदूली	३९०, ९२	लैटिन-एट्रस्कन	६७१
मैनियस कटार	६८७, ६०	लैटिन-फ़ैलिस्कन	६७१
मैथिली	१६०, ६०, २०६	लोगो ग्राफिक	१६
मोथाब के लेख	६६, ६७	लोलो	४५०, ५४, ५५
मोनो सिलेबिक	४४३	वई	६०७, ८, ९, १०, ११, १२, १३
मोसो	४५४, ५७		

बनियाकर	१७२, ७४
बट्टेलुत्तु (चेर-पाड्य)	१३२, ३३
वर्णान्मक (प्राचीन पशियन)	२६९
वर्णान्मक १६, ४३, ९६, ४४६, ८६, ५६८, ६९, ७०, ७३, ६०२, ७५३	
वस्तु चित्र	४३२, ३४
व्यंजनात्मक	४४६
वेनिती	६८४, ८५
वेस्ट-गोथिक	६६४
शाब्दिक चित्र	४४६
शारदा	१५७, ७२
शारदा (दसवीं श०)	१५७, ५६
„ (ग्यारहवीं)	१५७, ५६
„ (बारहवीं श०)	१५७, ५९
„ (तेरहवीं श०)	१५७, ५९
„ (चोदहवीं श०)	१५७, ५९
„ (सोलहवीं श०)	१५७, ५९
शिग शू	४२९
शियाओ जुआन	४२७
शिये शंग (ध्वनि सूचक चित्र)	४३२
संकेतात्मक १४, ४६५, ४४, ५६६, ७१, ७२, ७४ ६१७, ४७, ४८	
संकेतात्मक चित्र	६४८
संयुक्त-सांकेतिक चित्र	४३२, ३६
संयुक्तात्मक	४४६
सफ्रातैनी	३६८, ६६, ७०
सफ्रायटिक	३६९
सबा की	३७७, ६२०
संशोधित	५२७, २९
ससानिड पहलवा	२८४, ८५
सांकेतिक	७१२
सांकेतिक चित्र	४३२, ३५
त्साओ टू (सोशो)	४२९, ८६
सिडेटिक	३५५
सिन्धी (आधुनिक)	१७२
सिन्धी (प्राचीन)	१७२

सिन्धु-घाटी	३६, ४४, ५०, ६२, ७२, ७३, ९५, ७६२,
सिनाइ की	३७७, ७३, ७४, ७५
सिनाइ की प्राचीन	३७३, ७१
सिनाइ की अरबी	३७५, ७६
सिनायटिक	९
सिप्रियाटिक	६३२, ३४, ३५, ४७
सिप्रो-मीनियन	६३२
सिंहली	२१९, २०
सीरिलिक	४६९, ९९, ६९८, ९९
सुमेर के रेखाचित्र	९६
सुमेरियन कीलाकार	२४३
सूलेख पाली	५०९, ११
सूत्रात्मक	१०, १३
सूसियन (एलामाइट)	२६८, ७१, ७९
सेमिटिक	४७२, ४७६
सेमिटिक (प्राचीन)	६६, ३६६
सेल-औजर	३८७
सोगदी	४६२, ६५, ७४, ७६
सोन्ड्रियो	६७८, ८२
सोमाली	६०४, ५, ६
हिन्दी ९, २३०, ३०९, १०, ११, १५, १८, १९, २०, २१, २२, ७५०	
हिन्दी-सिन्धी	१७२, ७५
हिन्दुकी (लाण्डा)	१७७
हिमोल	२०८
हीरागाना	४९३, ९६, ९७, ९८, ९९, ५००
हीरोग्लिफ्स	९
हुतसुरी (सुतसुरी)	३९०
हेब्रू	६, ३२९, ३०, ३१, ३४०
हेब्रू (आधुनिक)	३२९
हेब्रू प्राचीन	३२६, ३०
हेरोग्लिफ्स (हेरोग्लिफिक्स; ग्रीक-हेरोग्लिफिकन)	
५३५, ३६, ३८, ३९, ७०, ७१, ७४, ७५, ७६, ७८, ७९, ८१, ८३, ८४, ८५, ९१, ९३, ७५०	

हेमिरायट	९६
हेरेटिक	५७३, ७५, ७६, ७८, ८३, ८४, ८५, ९२, ९३
त्रिपद पाटिया	६४८, ५३, ५४
ब्रह्मन्यात्मक	४४३
ब्रह्मणिक	५७२, ७५

उरार्ती (अरमेनिया के)	३८५
ऐंग्लोसेक्सनों	७२१
एटस्कनों	६७८, ८५, ५७
कनआनी	२८७
कार्टलियन	३८७
काप्टस	४९१
काफ़िरों	६१५
कालमुक	४६५
कृपाणों	१०९

लोग एवं निवासी

अकाइयन	६२९, ४५, ६०
अंग्रेज	४१९, ९१, ५६६, ६०२, ४७
अंग्रेजों	९४, ५०९, ६३
अन्नामियों	५२७
अफगान	८८
अमेरिकन	६४७
अमेरिका के	३२१, ६०७
अरब	२१६, ५७, ५६९
अरबों	२६१, ४१२, ५९१
अरामियन	३३७
अरामियों	३३५
अरामी	३२६
अलमुराक	
अलामन (अलामनों)	७२१
अलमुराक	७०८
आइबेरियों	७०७
आर्कडियन्स	६६४
आर्य	२६, २७, २६
आपोलियन्स	६३६
आस्ट्रोगोथों	७२१
इटली के	६४८
इथी	३२५
ईरानी	१०१
ईसाइयों	३६८, ४३२, ६१, ९६०

केल्ट्स (सेल्ट्स)	६७०, ७०७, ८
केल्टों	७०७, ८
केल्टो-बेरियन	७०७
केल्टो-सीथी	७०७
केली	७०७
खाल्दी	३८५
खेमिर (खेमर)	५१८
गाल	७१२
ग्रीक	६४६, ४७
गुर्जर	८०
गोरखों	४००
गोथ्स (गोथों)	६५८, ६०, ७९, ७२१
चालुक्य	८६, ८७
चलुबयों	८८
चीनियों	४००, १२, १६, २०
चीनी	५२६
चेरसी	७२१
जर्मन	२६२, ४७३, ७६, ५७१, ६०२
जापानियों	४८७, ५३५
ट्यूटन	७२१
टिगुटन्स	६६४
डच (डच)	२६२, ४१९, ९१, ५१५, ३२, ३५, ६०२, ४, ७६१
डचों	५१५
डू.एस	७०८

डोंगरा	४००	फ्रैंक	७२१
डोंगरो	१७२	फ्रैंकों	७२१
डोरियन	६५८	बर्गण्डियों	७२१
डोरियन्स	६३६	ब्राह्मणों	९६
तमिल	२१८	बुरियात	४६९
तातारी खान	६६६	बुरियातों	४६९
तिब्बत के	३९७, ४०१	भारतीय	३९७, ९९
तुर्क खुरासानी	२१२	भारतीयों	५२६, ३२
तुर्क	९०, ३८७	मंगोल	३६७, ४७३
तुर्कों	८८, ३८७, ६३१, ७१५	मंगोलों	२५२, ३६१, ८५, ४००, ५८
तैलंग	५०७ ९		६९, ८०, ८९, ६९९, ७१५,
थाई	५१८		२१
थ्रे शियन	६६७	मंचुओं	४१७, ८१
द्रविड़	२७	मण्डाइन	३६८
नाडिक	७०७	मरहटों	६०
नार्स	७०८	मनीकियों	४७६
नार्सेज	६७४	मनीकी	४७६
नार्सों	७०८	माइसीनिया के	६२६
पंजाबी	१७७	मिग्रेली	३८७
पल्लव	७८	मीडीज	३३७
पश्चिमी गोथों	६६३	मुसलमान	३७३, ८३, ४१६, ५२७,
पारसी	२५२		३२, ३५, ९१
पिक्ट	७. ७	मुसलमानों	४१२, ५३२, ३५, ६२, ६१५, ३१,
पुर्तगाली	२१६, ४००, १७, ९१,		४४, ४६, ७२, ७२१
	५१५, २७, ३५, ६०२,		६९७, ७१५
	४, १३	मैग्ग्यार	३५७
	४१७ ५२७, ६०४	यजोदी	३५३, ५६२, ६३१
पुर्तगालियों	६३६, ६७२	यहूदियों	२३३, ३३०, ३४०, ७३
पेलासगियन	३१२	यहूदी	६१३
पेलेस्टेनियन	७०७	यूरोपियन	५३५
प्रतानी	५८	यूरोप के	४९१
फ़्री	६२९	रूसी	७५३
फ़िनीशियन	२९	रेड-इण्डियनों	५६२, ७०८
फ़िनीशिया के	६८५	रोमन	५६२
फ़िनीशियनों	७१२	रोमनों	५१८
फ़ोजियन	६०२	लाओशियनों	७२१
फ़ॉब		बण्डाल	

बण्डालों	७२१	अचोकी	४९२
बिल्लोनोवन्स	६६७	अयानासियस किर्चर	५६६
बिसीगोथों	७२१	अयेनियस	२६१
बेङ्का	२१६	अन्द्रियास	२८२
बेण्डलों	५९५	अफुगस-पा	४०२
बेनिस के	६५८	अविट	६९८
बेल्वा	७०८	अबूमूसा इब्ने क़ैस	३८३
सवाई	३७७	अथ्रे वार्थलेमी	५६६
सबीनी	६६७	अबेल रेमुसत	४६२
समीनियों	६७२	अमारदियन	२६७
सावी	३७७	अमुन्द सेन	४०१
सिन्धु-घाटी के	२९, ५३	अरंज	७११
सीयियन	३३७	अलफ़ेड मेत्रो	७६९
सीरियक	५६५	अलेक्सी चिरोकोव	७५५
सुन्नियों	५६३	आइजक टेलर	९६
सुमेर के	८	आइजक पिटमैन	१९६
सेल्लुक (तुकों)	३८५, ८७	आर्फीबाल्ड हेनरी सेसी	९, ३१३
सैबियन	३६८	आटो पुल्सटाइन	३२१
स्काटिश	७०८	आर्थर ईवान्स	९, ६४५
स्लावों	६०७, ९८	आल्तो, पी०	२८
इंगेरियन	७६२	आस्टिन लेयड	२३२, ३९, ४६२
हिक्सास	३७३, ५५१, ५२, ५५	इदरियास	३५३
हिन्दुओं	५३५	इन्द्रजी, भगवान लाल	१२१
हिन्दू	५३२	इम्रुअल क़ैस	३७९
हितियों	५५४	ईट्स, जी०	१०२
हूणों	८०, ८२, ६९३, ७२१	ईवान्स, आर्थर (देखिए आर्थर ईवान्स)	
हेब्रू	३७५, २५	ईवान्स, जे०	७५५

विद्वान

अगस्टस जॉन्सन	३११	एकियास	३५१
अप्रवाल, ऋषि लाल	१९६	एन्जिल्वर्ट कैम्फ़र	२६२
अप्रवाल, धर्मपाल	२०, २१	एडवर्ड क्लॉड	९६
अर्वा दोर्जीव (रुसी भाषा में;		एडवर्ड टॉमस	९६
दे० नाम्द बां दोर्जे ने)	४६९	एडवर्ड मीयर	६४६
		एडवर्ड हिन्क्स	२३९
		एडविर्ड्स, आई० ई० एस०	४०
		एडविन नॉरिस	२६८, ७१

एडोल्फ अर्मन	५७१	काउण्ट कैलस	२६२
एण्टिंग	३६९	कान्तेली	३७५
एन्ड्रियास, ए५० सो०	४७३	कान्तेलेस वान ब्रूइन	२६२
एयुक	३१२	कावले, ए० ई०	६४७
एरिक, जे०	७४८	कार्ल हियूमान	३२१
एरिकसन	७५३	कासीन, एन०	४६६
एरियन	२६५	कान्सटैन्टाइन	६९७, ९८
एलाइ	३१६	किर्चोफ, जे० ड० एच०	६४१, ५८, ६०,
एलियस कोपीविच	७००	६२, ६४, ७१, ७४	
एल्थीम	७१८	किन्नाइर, जे० एम०	२६८
एल्बर्ट एलबर	६१३	विलगेनहेवेन	६०७
एन्तोने यान सेन्त मार्टिन	२६६	किसिमी कमाला	६१३
एन्ड्रे एक्कार्ड	७६४	कीता साते	४९२
ऐलेक्जेंडर फ़ैल्कनब्रिज	६१३	कीबी-नो मकीबी	४९३
ऐल्डस	५६५	कीलहार्न	१८९
ऐल्फ्रेड	९६	कुइन्टस कर्टियस	२६१
भोकर ग्लाड, जे० डी०	४६८, ६९	कुक, एस० ए०	३३७
भोशा, गो० ही०	१०२, १०७, १९४	कुंग फूत्से	४११
ओपर्ट	२७३	कुनियानिस	६४७
ओरोग्नी, पी० एल० डी०	५६७	कृष्ण चन्द्र	५०९
ओलोन, डी	४५०, ५४	कृष्णा राव, एम०. वी०. एन.	२८, ५८, ६०, ६९
ओल्शा	६७१	केदार नाथ शास्त्री	२७
ओल शान्सेन	२८२	कैकस, एपियस क्लाडियस	६८७
ओफ़रेण्ट, यस० टी०	६७४	कैथीन रौटलेज (श्रीमती)	७६१
ओलाव गेरहार्ड टाइलर	२६३, ६५	कैरातिल्ली, जी०, पी०	६४७, ४८
कचीनर, जे०	६४१	कोच, जे०, जी०	५६७
कर्निघम, कर्नल ए०	९६, ९७, ९९	कोर्ट, कैप्टेन	९९
करेल यानसन	७६४	कोण्डर	३२०
कलाड, एफ० ए० शेफ़र	३०२	कोबर, एलिस ई०	६४७, ४८
कलाडियस जेम्सरिच	२६६	कोबो दैशी	४९६
क्लाप्रोथ, जे०	४६२, ५७१	कोयल्लो, एफ०, डब्ल्यू०	६०७
कलिन्क	२६०	कोसकेन्निमी	२८
कर्न, ओ०	६४१	क्रौज	७१२
कर्बी ग्रीन	३१२	गाइडलर	६९८
कस्ट	९६	गाइल्स	४०९, २९
कनुदजोन, जे० ए०	३१९	गार्डघोसर	२९०

गाहिनर, इ० ए०	६४१	बोंग स-मा	३९९
गाहिनर, ए० एच०	२९०, ९३, ३७३, ५७३, ७४	जबलोम्सकी, पी० ई०	५६७
गावरट्टिगन	६४१	जयेरके	४०१
गारस्टांग, जॉन	३२०	जार्ज लून	४३८
ग्राहमबेली	१७७	जार्ज शोट	६४५
ग्रिफिथ	५९१	जार्जह चेनेस	३०२
ग्रिम, ई०	२९०	जॉन म्यूवेरो	२८, ६४, ६५
ग्रिम, जे०	३६८, ६९८	जॉन मार्गल	२७
ग्रियसन, जी०	१६८	जॉन मैलकान	२६८
ग्रोनबर्गर	७१०	जॉन विलिस	७६४
गुइन्नीस, डी०	५६७	जार्डन, ए०	५६७
गुण्डर्ट	१३२	जार्डन, एफ० सी०	६४९
गुस्टाफसन	४०२	जार्डन, सी० एच०	३०४, ६४८
गुटसलाव	६४०	जायसवाल, के० पी०	२०४
गुवोसिख	६९८	डिमर	७१२
गुवे, डब्ल्यु०	४५८	जुवेन विल्ले, जर्बोइस दि	७१२
गुबेलिन, सी० डी०	५६७	जुलस, एम०	१३८
गुल्ब, जार्ज० जे०	३१३, २२	जेम्स टॉड	१०६
ग्रे, जी० एफ०	३७५	जेम्स प्रिसेप	९, १०९, ११८
ग्रेपो, एच०	५७१	जेम्स होरे	११८
ग्लेई	३२०	जेसप	३११
ग्लेन विल्ले	५४६	जेसेनियस	३६९, ७७
ग्रेविले चेस्टर	६४५	जैकुयेट, ई० वा० एस०	२६७
गैड, सी० जे०	४०	जोयगा, जी०	५६७
गैवन, ए० वान	४६९, ७६	जोवे दि जंघोनिज	६०२
गैस्टर	६९८	टाइकसेन, टी० सी०	५६७
गोरीयून	४४३	टान चुंग	४२९
गोल्डमान	६७१	टॉप	६७१
गोटफ्रेण्ड, जार्ज फ्रेड्रिक	९, २६५, ६६, ६८	टॉमस	२८२
गोयियाट (गोयियत)	४६२, ७३	टामस, इ० जे०	६४
चारको	६६८	टॉमस बर्थेल	७६२
चार्ल्स टैक्सियर	३१२	टामस यंग	५६९
चार्ल्स विलकिन्सिन	६७, ६६	टामस वेड	४४३, ४६
चैडविक, जॉन	६४७	टामस हाइड	२६३
चैबेट	२९९	टामसन, एच०	५७१
चैम्बर लेन	५६६	टामसन, आर० एस०	३२०

टेलर, आइजक	२२१, ४६२, ६७१, ९८	देलाफ्रोसो	६०७
टेलबाट, विलियम हेनरी फ्राक्स	२७३	देवेरिया	४५८
टेंसिटस	७१८	द्रोनिन	२८२
डब्लोफ़र, एरस्ट	२८	धर्मपाल	३९९
डाइशी	४२७	घोरमे, एदुअर्ड	३०३, ३०४
डाउसन, जे०	१०२	नथीगल	५९८
डार्पफ़ोल्ड	६४६	नविया एबॉट	९
डायडोरस (सोकुलस)	२६१, ५४५	नागी, जेन्ट मिकलास	७१८
डायोनिसियस	६६७	नाम्द बां दोर्जे ने	४६९
डॉसन	९६	नाचीगिल	६०२
डिकी	९६	नारिस, एडविन (देखिए एडविन नारिस)	९९, १०१
डिके	२९०	२७३, ७९	
डिर्जर, डे०	५७४	नार्डन, एफ० एल०	५६७
डुनान्ड	२९३, ९५	निकोलो निकोली	५६५
डुपोण्ट	३२२	नीन्हुर्, कर्स्टन	६३, ६४, ६५, ३७५, ५६७
डेविड, एस०	६४९	नील कण्ठ शास्त्री	२७
डेविड्स, राइस	९६	नेक (स्कीमो)	७५६
डेविस, ई० जे०	३१२	नेमेथ	७१८
ड्रेक	३१२	नोल्डेकी	३३८, ३४०
डैनिएल्सन	६७०	परपोला, एस्को	५०, ५२, ६६, ७४
ड्वा-सीन-को	१३२	परपोला, सीमो	५०, ५२, ६९, ७४
सेरियन डी लकाउपेरी	४५४	पगस्टाल, बैरन वान हैमर	५६९
थाउसेन, गार्ड	६७१	पर्नियर, लुइगी	६४८
थाम्पसन, एस०	७४८	परीबेनी	३५३
थामसेन, वी०	६६७, ७१८	पर्णवितान, एस०	२८, ६९
थियोफ़िलास	६२५	पाइजर	३१८
थ्यकीडाइडीज	५४६	पाणिनि	५, ८०, ९५
थेलेन्दी, जे०	७१८	पांट	९६
थोर, हेयरदहल	७६१, ६२	पालमर	३१२
दयाराम साहनो	६	पाल एमाइल बोत्ता	२३९
दाइमल	२३५	पालिन, काउण्ट एन० जी० दि	५६८
दामन्त	१६८	पाल आंगे लुई दि फार्दने	२६८,
दियुलाफ़्री, एम०	२४३	पावलो	६७०
दि सेसी	२६५, ६६, ८२	पासकल कोस्ते	२६७
दुगास्ट	६०२	प्राण नाथ	२८, ४०, ४१
दुपेरों, अनकुयेतिल	२६५, ६६		

पिटमैन, आइजक (देखिए आइजक पिटमैन) १९६,
७६४

प्रिन्सेप, जेम्स (दे० जेम्स प्रिन्सेप) २२१

प्रिन्सेप सेनार्ट ९६

पीजर २९०

पीरियस बलेरियेनस ५६६

पूरनचन्द नाहर १५४

पूरन चन्द्र मुकजी १०७

प्रथोक ३७५

पेण्डिलबरी ६४९

पेल्यफ ४६२

पेलोटिनो ६७१

पैबो, ए जे० एम० ५१८

पोकाक, रिचर्ड ३७५

पोकोफी, आर० ५६७

पोन्टयस ६९८

फक पा ग्याल—चेन ३९९

फतेह सिंह ५०, ५४, ५५, ५६, ६९, ७१

फर्ग्युसन २३७

फ्योरेली, जो० ६७४

फाइयान ८०

फाग—पा (अफगस-पा) ४०२

फागुई ली ४०१

फादर एच० हेरास २८, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८,
३९

फाइड ३५५

फिलण्डर्स पेट्रो, डब्ल्यु० एम० ९, २८, २९, ३१,
२९०, ३७३, ७५

फिगूला, एच० एच० ३२०

फिशर ३३२

फीजल ६७१

फुरुमार्क ६४७

फुरुमेन्डियस ६२०

फेलिक्स वान लूशर ३२१, ७५

फेड्रिक डी लिश २९०

फेड्रिख ६२०

फेड्रिख मूलर ९६

फेरेह एन० ५६७

फैन चिय ४४४

फोंकनर, आर० ई० ४०

फोन्ताना, दोमिनिको ६७४

फोर्सेस, एफ० ई० ६०७

फोरर ३२१, ३२२

फोरियन, जोन बॅप्टिस्ट ५६९, ७०

फौलमान ५२७

वक, एस० दि ५७१

वकलर ३५१

वरनेल ९६

वर्कहाउट, योहान लुडविग ३११, ७५

वर्सेस १०९

वर्नोफ, युगेन ६७, ६९, ८२, २६६

वरुआ, डी० एम० २८, ६९

वर्बिगटन, वी० जी० ९९

वाईरोम ७६४

वांके विहारो चक्रवर्ती २८, ५८, ६३

वांट लिस्ती ६८५

वाण ८२

वावर, हुन्स २९०, ३०३, ३०४

ग्रान्डेस्टोन ३५१

ग्रसिओर दि बोग बोग ७५०

बिबलकर १६०

बिहारूप सिंह १६८

बियर, ई० एफ० एफ० ३७१

ब्रिन्टन, डेनियल जी० ७४५

ब्रोल, एम० ६७४, ८८

ब्लीडेन, एडवर्ड डब्ल्यु० ६१३

बुखेलर ६७४

बुग्गे, एस० ३१९, ५७१, ७१२

बुग्श, एच० ५९१

बुल्हर (बूलर) ११८, १२१

बुल्हर मैदेन ३१२

बेनफ्री ९६

वेनेट, एमेट एल०	६४७, ४८	मेसरस्मिथ	४७३
वेवर	९६	मैकग्रेगर	६१७
व्लेगेन, सी० डब्ल्यु०	६४७	मैकलीन, जॉन	७५५
वेंक्स, डब्ल्यु० जे०	५७०	मैकालिस्टर	३०२, ६४१, ७१२
वैली नोट	७१२	मैके, ई० जे० एच०	२५
वोर्क, एफ०	२५५, ३५३	मैक्सवेल	६१७
बोस्सार्ट	३२२, ५३, ५५, ६४९	मैरियो शीपान्स	२६१
बोन्देल मोन्ते	५६५	मैरीनैटस	६४७
बोलजनी, जी० बी पी०	५६६	मैसन	१०१
बौनामिकी, जो०	६७०	मैस्त्रो, जी०	५७१
भण्डारकर	१२१	मोर्डमान	२६७
भूपेन्द्र नाथ सान्याल	४२५, ७५०	मोंतेग	३७५
भरवीण सवील	७६२	मोर्दमान, ए० डी०	८२, ३११, १२
मर्सियर	५९७	मोमरू दाउलू बुकेरे (मोमोलू दुवालू बुकेले)	६०७
माइनहोफ़	५९७, ६०२	मोरियर, जेम्स जस्टिन	२६५, ६६
माकीडोज़, एम०	६३१	याओसन	३६९
मारस्ट्राण्डर	६९४, ७१२	यागिक	६९८
मायर्स, एस० ल०	६३१, ४९	यास्क	९५
मार्गन, जे० डी०	२३०	युयेन रन चाउ	४३१
माधो स्वरूप बत्स	२६	युगेन प्रलान्दीन	२६७
मार्शम, जे० डी०	५६७	यूलिस ओपर्ट	२३९
मार्टिन, ऐन्तोने यान सेन्त	२६६, ६७	येनसेन, पीटर	३१९
मिकेंजी, एलेक्जेंडर	७५६	येनसेन	२९५, ३२०, २१
मित्र	९९	राइसनर	३३२
मिलर	१५७	राउलिम्स	७१२
मुकुन्दराम	६६८	राखल दास बनर्जी	२५
मुण्टर, फ्रेडरिख क्रिश्चियन कार्ल हाइनरिख	२६५	राजमोहन नाथ	२८, ४४, ४६, ६१
मूरगट	२२९, ३०	राधा कांत शर्मा	९७
मूलर, ओतफ्रीड	६७४	राधेलाल त्रिवेदी	१९६
मूलर, एफ० डब्ल्यु० के०	४६२, ७३	राबर्ट गुल्ले	६०७
मेकेंजी	६४९	राबर्ट कर पोर्टर	२६८
मैज	२९०, ६४०	राबर्ट्स, ई० एस०	६४१
मेयाडियस	६९७	रामनिवास	१९६
मेरकटी	५६७	रालिन्सन, हेनरी क्रैसविक	९, ९७, २३८, ७१, ७३, ३११
मेरिगौ, पी०	२८, ५०, ५१, ३२९, ३२२	रासमुस क्रिश्चियन रस्क	२६६
मेशरस्मिड, लियोपोल्ड	३१९		

राव, एस० आर०	२८, ५३, ५७	लेनोरमॉन्ट	६९८
रिखतर, ओ०	६३१	लेप्सियस, रिचर्ड	९६, ३५३, ५७१, ९१, ६७४
रिचर्ड बर्टन	३१२	लेमान	६९०
रोन्सर, जी०	५९१	लेयान	३३२
रुडोल्फ एन्वीस	५४६	लेयऊन	६७८
रुश	३२०	लेलोर मॉन्ट	९६
रेप्सन	९६	लैन्कोरन स्की	३२१
रोज़िएर	३७५	लैंग, आर० एच०	६३१, ३२
रोडिगर, ई०	३७७	लैंगे, दि	३०४
रोमानेली	३५३	लैंगडन; एस०	७१
रोशे, डी०	२६०	लैण्डर	३५५
रोसलिनो, एच०	५७१	लैसन	९६
रोहेल	६४१	लोपुत्स, डब्ल्यु० के०	२४२
लांगपेरियर	२८२	लोवैनस्टर्न, इसादर	२६७
लान्दा, दियेगो दि	७५०	वड्डेल, एल० ए०	२८
लाबोर्दे	३७५	वाइडेमान	६४०
लाल, बी० बी०	२६, १९६	वाकणकर, एल० एस०	२८, ५८, ६१, ७१, ७४
लासेन, क्रिश्चियन	२६७, ६९	वाडिगलन	३५५
लिचबार्सकी	९, २९७, ९९	वायन, डब्ल्यु० एच०	९९
लिटमन	३५१, ६१७, २०	वान् विस्क	१०२
लिण्डनर	६९८	वानी	४९२
लिण्डवल्म	२९०	वालवाल्कर	७९
लिब्वी, डब्ल्यु० एफ०	२०	वाल्टर इलियट	९९
लो काक	४७२	विन्सेन्ट स्मिथ	१०७
ली ग्रांड जंकव	१०६	विम्मेर, एल०	६६४
ली, फांगुई	४२१	विलियम ग्रेगरी	२१६
ली ब्रून (दे० कार्नेलियस वान ब्रून)	२६२	विलियम जोन्स	९६, ९७
ली शी	४२७	विलियम गोरे आउस्ले	२६६
ली शुइन	४२४	विलियम रामसे	३२१, ४३
लीक	३४३	विलियम राइट	३१२
लुई ब्रेल	१९६	विलियमसन	४३२
लुकास, प्रो०	५६७	विल्सन	९६
लुडविग स्टर्न	५७१	वीरोलियूद, चार्ल्स	३०३
लुशियन	७१२	बुल्फ	३२१

बेन्दूरा (जनरल)	१०१	सिक्स	३५५
बेन्ट्रिस (एवं) बंडविक	६३२, ४८	स्मिथ, जी०	६३२
बेन्ट्रिस, माइकिल	६४७	सिमोनाइड्स, सी०	५७१
बेरियस प्लेक्स	६८८	सिल्लिक	६४७
बेस्टर गार्ड, नोल्स लुडविग	९६, १०९, २६७	सीरिल, संत	६९८
बेस	६१७	सुकरात	६५७
बैलिस बज	५७४, ७९	सुधांशु कुमार रे	२८, ३९, ४०, ४१, ४३,
बोण्ड्राक	६९८	६९, ७१	
शंकर हाजरा	२८, ६४, ६६	सुण्डवल	६४०, ४८, ४९
शंकरानन्द, स्वामी	२८, ४४, ४७, ४८, ४९, ६९	सूंग	४२७, ३१, ३२
शिनीदर, एच०	२९०, ६४०	सेथे, कर्ट	२९०, ९३, ५७१, ७३
शिमत, ए०	७५६, ६१	सेफार्थ, जी०	५७१
शिलीमान, हाइनरिख	६४५, ४६	सेसी, सिल्वेस्त्रे दि	९६, २६३, ६५, ६७, ९०,
शिलोजर	२२५	३१९, २०, ५१, ५३, ५६८, ६९, ७०	
शील	७१	सेन्ट निकोलस, अबे तैन्दु दि	५६८
शूमेकर, जे० एच०	५६७	सेल चोंग	४८६
शू शन	४२९	सेसनोला, एल० पी० दि	६३१, ३२
शैम्पोलियों, जीन फेंको	९, १८, ९७, ५६९, ७०,	संण्डविध, टी० बी०	६३१
	७१, ७५, ९१	संमुयल बर्क	३११
स्कयोल्सबोल्ड, ए०	७६१	संविगनाक	३६९
सत्यभक्त, स्वामी	१९४, ९५	सोर्जी ओगिर	४६२
सफारिक	६९८	सोमर	३२२, ५१
सरकार, दिनेशचन्द्र	१ २	सोलोन	६५७
स्कूतश	६७१	हन्टर, जी० आर०	२८, २९, ३२, ३३, ३४
स्टाइन, ओरेल	४७३, ७६	हण्टिंग	३७७
स्टावेल (कुमारी)	६४९	हर्थ	४५८
स्टीबेन्सन	९६	हर्विंग	१७०, ७१
स्टेसीनास	६२६	हरिंग्टन, जे० एच०	९९
स्पोहन, ए० डब्ल्यू०	५७१	हलेबी	५९७
संसुर, एफ० दि	६६७	हाइनरिख, शिलोमान	६४५
साक्य पण्डित	३९९, ४६२	हानुस	६९८
साजैक, अर्नेस्ट दि	२३५	हाम	६९८
सार्जी, काउण्ट दि	२६७	हावडं कार्टर	५५५
स्ट्राबो	६७२	ह्विंग जिये	४२३
साल्सी, लुई कैंगनत दि	६९७	ह्विंग दसो जंग	४२९
सिकवई	७५५	हिज, जे०	७५६

डिन्स, ए०	२७३
हिपूगो विन्कलर	३२०
हिराता	४९२
हिट्लर	९६
हिलर वान	६४१
होरेन, आरनॉल्ड हरमन लुडविग	२६४
हुसिंग, जी०	२६७
हूबर	३६९, ७७
हैनरी लावाचेरी	७६१
हैनरी स्मिथमैन	६१३
हेरन हटर	७५६
हेरोडोटस	३४९, ५४५, ६१७, ४०, ४६, ६७
हेल्पी	९६
हेबेसी, एम० जी० डी०	२८, ४८, ७६२
हैनमेल	२९०
हैनर स्ट्रोम	६७१
हैमिल्टन, डब्ल्यु०	३१२
हैलभर	६४७
होमर	६४५, ४६
होरापोला	५६५
हूरोज्नी, बेदरिख	२८, ६४, ६७, ३२०
होष्ट	२९०
श्रवण कुमार	१९६
श्रीमती चाड	४४६

विशिष्ट मनुष्य

कालीदास (कवि)	८०
टेरा (मूर्तिकार)	२२८, ३२५
तोक् गावाइये यामु (राज्य प्रबन्धक)	४८९
नोबू नागा (राजनीतिज्ञ)	४८६
पेत्रो देल्ला वल्ले (यात्री)	२६१
प्रह्लाद (यात्री)	८०
महात्मा गान्धी (राष्ट्रपिता)	९४
मोकोपोलो (यात्री)	८७, ४७३, ५३५

मैरियो शीपान्ग	२६१
महर्षी अगमून (सामाजिक कार्यकर्ता)	६०७
मुदोविको दि वरघेमा (यात्री)	५३५
वैकोवर, जार्ज (यात्री)	५६७
हन्स देव्हावान (यात्री)	७१८
ह्वान सांग (यात्री)	१२७
हिदे योशी (राजनीतिज्ञ)	४८६
हुईओ, जीन निकोलस (शिल्पकार)	५७०
हुयेन त्सांग (यात्री)	१३४

शासक

अकबर	८९, ९०, ९९, ३६१
अखमेनिज	२४८, २६९
अखेतातेन	५५५
असेनातेन	५५४, ५५
अखोरिस (ग्रीक भाषा में)	५६४
अंग का इव रा (मिस्री भाषा में)	५६४
अच्युत	१५०
अट्टिला	६९, ७१५, २१
अताडलक	६९३
अती	६६०
अदाद निरारी द्वितीय	२३०
अनंगभीम	८८
अनन्त वर्मन (वर्मा), चोङ्गंग	८८, १५४
अनवर सादात	३२७, ५६४
अनित्तारा	३०९
अनुराद्ध	५०७
अपरमाजित वर्मा	८६
अपराजित	१२५, १३४
अपिलसिन	२२९
अब्दुल करीम कासिम	२३४
अब्दुल्ला	३६६
अबी-एशु	२२९
अबी जाह	३२६

अबोदियस कैसियस	५६२	अगुर उवालि	३३५
अमालारिक	६९३	अगुर उवालि प्रथम	२३०
अमासिस द्वितीय (ग्रीक भाषा में)		अगुर नसीर पाल द्वितीय	२३०
खेनुम इव रा (मिस्री भाषा में)	५५८, ६४	अगुर (अमुर) बनीपाल	१३१, ३२, ३८, २८६, ३४६, ५५८, ६१७, २६
अमोन दोदी	२२१	अगुरहेदेन	२३२, ८६, ५५८
अम्मी जदूगा	२२९	अमीकागा तका उजी	४८९
अम्मी दिताना	२२९	अशोक	७७, ९६, ९७, ९९, १००, १०२, १०९, १३, २१६
अमेनहोतेप-प्रथम	५५२, ५३	अस्तगीज	२४८
अमेनहोतेप द्वितीय	५५२, ५३, ५४	असा	३२६
अमेनहोतेप तृतीय	५५२, ५३	अस्किया	६१५
अमेनहोतेप चतुर्थ	५५२, ५४	अस्वा खान	६६६
अमेनेमहत प्रथम	५५२, ५१	अहमद इब्न तुलुन	५६३
अमेनेमहत द्वितीय	५५०	अहमीज नेफरतारी (शासिका)	५५३
अमेनेमहत तृतीय	५५०, ५१	अहमोस (एहमोस)	५५२, ५३, ५५
अमेनेमहत चतुर्थ	५५०	अहाव	३०२, ३२, ३७
अय द्वितीय	७८	अहिराम (अखिराम)	२९३
अयी	५५२, ५५	अहोतेप	५५३
अरतास	३६३	आक्टेवियम	५६१
अरमसिन	२२८	आगस्टिन दि इतुरबिडे	७४१
अरशाम (अशाम-प्राचीन पशियन भाषा में)	२६९, ७६	आगस्टम	६६०, ७२
अरहदिना (अरहदत्त)	११८	आरामोहम्मद	३९०
अर्तजरक्सोज	२६१	आदित्य प्रथम	८६
अर्देगायर	२८२	आनन्दमाहडोल	५१५
अर्यारमन	२६९	आश्रं गोन	७४१
अर्साकोज	२५०	आडिस	३४६
अर्यारमन	२६९	आर्तजरक्सोज प्रथम	२५०, ५५९
अर्साकोज	२५०	आर्तजरक्सोज द्वितीय	२५०, ५६०
अर्सामीज (ग्रीक भाषा में; देखिए अरशाम)		आर्तजरक्सोज तृतीय	५६०
अर्लंगपाया	५०७, ९	अर्तजरक्सोज चतुर्थ	२५२
अलहकीम	५६३	आर्तबेनस चतुर्थ	२५२
अलाउद्दीन आलम शाह	९०	आर्सीज	५६०
अलाउद्दीन खिलजी	८७, ९०, १३४, ८९	इकाली द्वितीय	३९०
अलाफनपुरी	६१५	इक्षवाकु	१२१
अलारिक	६६०	इस्तयार उद्दीन	१५०
अस्तनश	८२		

इन्द्रवर्मा	२७	एलारिक द्वितीय	६६३
इपामिनोडस	६६२	एलिजाबेथ	६१
इब्राहीम पाशा	५६३	एलिसा	२६६
इब्राहीम लोदी	९०	एकेक्जेन्डर	५६२, ६६
इब्ने मऊद	३६३, ६६	ऐजेनोरा	५६२
इब्नी सिन	२२८	ऐटियस	७२१
इल खान	४१६	एनुलमुल्क	१८९
इलाहून	५५१	ऐण्टी ओक्स द्वितीय	९९
इबान चतुर्थ (जार प्रथम)	६९९	ऐण्टी ओक्स तृतीय	३३५, ३८५
ई-ताय-बांग	४८१	ऐण्टी गोनस	३५१, ६३
ईये यामू	४९१	ओगमियस	७१२
ईशान वर्मा	८२	ओगोताइ	६१६
ईशुमुनाजार	२९७	ओजिन	४६२
उदयादित्य	१८९, ६४	ओटो प्रथम	७ ५
उदेनायस	३३८	ओडोसर	७२१
उन्ताश उबन	२४७	ओलजैतू	४६२
उपेन्द्र	८४, १८६	ओस कोर्न द्वितीय	५५७
उमयादो	४८८	ओरंगजेव	६०, ६१, १६०
उमर	६१५	ओरेलियन	५६२
उमरी	२६७, ३२	ओसेरे अपोपी	५५१
उम्बा दारा	२१७	कर्क द्वितीय	८६, ८७
उम्मा मेनान	२४७	कजान	६९९
उर जवाबा	२२७	कनिष्क	७८, १ २, ६, ८६
उर नम्मू	२२८	कन्नर देव (कृष्ण राजा तृतीय)	१२९
उसमान (मुर्क)	६३१, ५८	कपिलेन्द्र	१५७
उसुमान दन फादिरो	८१५	करांजा	७४१
उस्मान युसुफ	६ ४	का (देखिए केबेह)	३७७
एजियस	६३२	क रो वू लू	३७७
एद्रस्तान	६६८, ७०	काइपेलस	६५८
एन्नातुम्मे (एन्नातुम)	२२७, २३५	कांग धी	४१७, २६
एन्तेमना	२२७	कांग ही	४१६
एप्रोज	५५८, ६४	कांस्टैटियस	७२१
एमीलियेनस	५६२	कान्सटैन्टाइन	६६७, ६८
एराटस	६६०	कामाकूरा	४८६
एल्फ्रेड	७११	कामोस	५५२
एलारिक (देखिए अलारिक)	६९३	कारु (कोतोक्)	४८८

कार्टलास	३८७	केबेह	५४६
कालेज	७४१	कैडमस	६, ६४०, ८५
क्रामबेल	७०८	कैमूस	८८
कार्नेलियस गैलस	५६१	कैम्पेसिज	२५०, ५५९, ६२९
कार्ल मैगना	६८८, ६७, ७१५	कैरकला	५६०
कलाइव	६४	कैवरस	७०७
कलादियस	५६२	कैसर	३२०
कवाम्मू	४८६	कोफेन (शासिक)	४८८
कत्योपेना	५६०, ६९, ६७, ७०, ७५	कोज्यूको (शासिका)	४८८
कलोविस	७२९	कोट्टा	२१६
कुरुण	८७	कोनराड द्वितीय	६७८
कियोमोरी	४८९	क्रोशस	२४८
किल्श (पर्सियन में; देखिए सायरस)	२३३, ४८	कौण्डिन्य	४६६
किल्स्थनोज	६५७	कोन्दिया	५२६
किशपिश	२४७	सत्तुसिली	३०६, ५५६
कार्ति वर्मन द्वितीय	१४२	खलीफ़ा उमर	५६०
कीर्ति वर्मा	८६	खल्लूसू	२४७
कुजूल कदफ़िस	७८	खियान	५५१
कुतुबुद्दीन	८४	खुर्वातिला	२४७
कुतुर नाखुष्टे	२४७	खुम्बा खालदस द्वितीय	२४८
कुदुर नाखुष्टे	२४७	खुम्बा निगस	२४७
कुब्ज विष्णुवर्धन	८७	खुर्मनी	२५४
कुवलई खान	३६६, ४०२, १६, ५०७, ९५, २६	खुशरो	५६२
कुविरका	९९८	खेत्ती द्वितीय	५५०
कुमार गुप्त	८०	खेफे (मिस्री भाषा; देखिए केफेन)	५४९, ६४
कुमार पाल	९५०	गणपति	८८, १४५
कुरीगालजू द्वितीय	२३०	गम्भीर सिंह	१६८
कुरीगालजू तृतीय	२४७	गयाकरण चंदेल	८४
कुरु	९९८	गयासुद्दीन तुगलक	९०
कुरेश	२४८	ग्रह वर्धन	१२७
कुलोत्तुग	८७	ग्रह वर्मा	८२
कुलतिजिन	४७६	गाइयस पेत्रोनियस	५६२
कूफू (खूफू-मिस्री भाषा; क्योप्स-ग्रीक)	४६, ६४, ५४६	गायसेरिक	६७२
कूलिग	४६२	गुआराम	३८७
केफेन (ग्रीक भाषा में; देखिए खेफे)	६४५	गुदफ़र्न	७८
		गुलाब सिंह	४०२

गुहदत्त	८०
गुहासेन	८०, १३८
गूडिया (गूडिया)	२२८
गे-दुन नुप-पा	३८८, ४००
गेलियेनस	५६२
गेलेरियस	५६२
गोपाल	८४
गो माता (गोमाता)	२५०, ५८
गोरी	८४
गोविन्द राज तृतीय	१४२, १९४
चकदोर नांगे	२१५
चक्रायुद्ध	८२
चंगेज खान (तिमु चिन)	३८७, ४१४, १६, ६०, ६२
चन्द्र गुप्त प्रथम	२०४
चन्द्र गुप्त विक्रमादित्य, द्वितीय	८०, ११८
चन्द्र गुप्त मौर्य	७७, १०९
चराइरोगवा	१६८
चष्टक	१०९
चाउशीन	४०९, ८०
चांग-चुप ग्याल-छेन	३९९
चार्ल्स दि ग्रंट	६८८
चार्ल्स द्वितीय	९१
चार्ल्स मोर्तल	७२१
चियांग काइ शेक	४२१
चोय कुयेइ	४०९
चूडा चन्द	१६८
चेन च्याओ	४३२
चेन लुंग	४००
छोग्याल	३९९
जंग बहादुर	२०४
जटावर्मन	१३४
जटा वर्मा सुन्दर पाण्ड्य	८७, १३४
जबूम	२२९
जमल अब्दुल नासिर	५६४
जमामा सुमुदीन	२४७
जय चन्द्र	१५७

जय दामन	१०९
जय देव प्रथम	२०४
जय प्रकाश मल्ल	२०४
जय पाल	८८
जयवर्मन द्वितीय	५२६
जय वर्मन सप्तम	५२६
जय वर्मन अष्टम	५२६
जय सिंह	८६, १८८
जय स्थिति मल्ल	२०४
जरवसीज	२६१, ६६, ६७, ६८
जरवसीज प्रथम	२५०, ५५९, ६३१, ५७
जरवसीज द्वितीय	२५०
जहाँगीर	९१, ११८
जहीरुद्दीन मोहम्मद (उपनाम : बाबर)	९०
जाजल्लदेव	१८९, ९४
जामोतिक	१०९
जॉर्ज तृतीय	४१९
जिमरी	३२६
जिंगो (शासिका)	४८७
जिम्मू तेघू	४८७
जियार्जी पंचम	३९०
जियार्जी बारहवाँ	३९०
जियेन लुंग	४१९
जुआन डी सलकैडो	५२७
जुस्टोनियन	६६०
जूना खाँ	९०
जूलियस सीजर	५६१
जेर्जेकिया	३२७
जेन्टियस	६७४
जेनोविया (शासिका)	३३८, ५६२
जेम्सो (शासिका)	४८८
जेम्स द्वितीय	७०८
जेरियाइस	३८५
जेहू	३३२
जे रीड्याकिस (याकिम)	२३३, ३२७
टाइरेनस	६६७

टॉलेमी	२८९, ३३५, ५९, ५७५, ६३१	तहमास्प	२५२
टॉलेमी प्रथम-तैगास	५६०, ६१, ६९, ६३१	तहारका	५५८
टॉलेमी द्वितीय-प्लेडीफ़स	९९, ५४५, ६०, ६१	तांजुन	४८०
टॉलेमी तृतीय-योरिंगेटिस (प्रथम)	५६०, ६१, ७१	तानूतामोन	५५८
टॉलेमी चतुर्थ-फ़िलोपेतर	५६०, ६१	तारकूमूबा	३९३
टॉलेमी पंचम-एपीफ़ेन्स	५६०, ६१, ६८	ताराबाई (शासिका)	९१
टॉलेमी षष्ठम-फ़िलोमेतर	५६०, ७०	ताशी नंगयाल	२१२
टॉलेमी सप्तम-योरिंगेटिस (द्वितीय)	५६०	त्याग सिंह	१५०
टॉलेमी अष्टम-सोतर (प्रथम)	५६०	तिगलत पलेसर प्रथम	२३०, ७३, ३३५, ३७, ३७
टॉलेमी नवम-सिकन्दर (प्रथम)	५६०	तिगलत पलेसर तृतीय	२३२, ८९, ३३७
टॉलेमी दशम-सोतर (द्वितीय)	५६०	तियास	५५९, ६०
टॉलेमी एकादश-सिकन्दर (द्वितीय)	५६०, ६१	तिरिदेतिज (तिरिदात)	२५२
टॉलेमी द्वादश	५६०, ६१	त्रिभुवन वीर विक्रम शाह	२०६, १२
टॉलेमी त्रयोदश	५६०, ६१	तिशपिश	२४८
टॉलेमी चतुर्दश	५६०, ६१	तुकुल्टो निनुरता द्वितीय	२३०
टिंगया देव	१५०	तुगलक	९९
टुट-अंख-आमेन (आमुन, आमोन)	५५२, ५५	तुक-चेन	३९९
टुट-अंखातेन (अंख + अतेन)	५५५	तैची (नाका)	४८८
टुटमिस	५७०, ७५	तेती प्रथम	५४९
टुटमोस प्रथम	५५२	तेफ़नख़त	५५८
टुटमोस द्वितीय	५५२, ५३	तेम्मू	४८८
टुटमोस तृतीय	५५२, ५३, ५४	तेस्पीज (विशपिश)	२६९
टुटमोस चतुर्थ	५५२, ५३	तैमूर	९०, ३९०
टोटमिस तृतीय	२८७	तैलय	८६, ८७
डायज	७४१	तोमर	८४
डायडोटस (दयोदत)	२५२	त्रिडेत्स प्रथम	३८५
डेमेट्रियस	६३१	त्रिडेत्स तृतीय	३८५
डेविड (दाउद)	३२६, ३७	त्रिसोंग दे चेन	३९९
डेविड द्वितीय अगमाशेरबेली	३८७	थ्योडोर	६२०
डेरियस	२५७, ५८, ६१, ६६, २६७, ६८, ७६	थालून	५०७
डेरियस प्रथम	२५०, ५५९, ६२९	थियो डोरिक प्रथम	६९३
डेरियस द्वितीय	५५९	थियो डोसियस	६९३
डेरियस तृतीय	२५०, ५६०	थीबा	६०९
तामारा (शासिका)	३८७	थेमिस्टाक्लिस्	६५७
तमिल इलाला	२१६	थेसियस	६३२
तमीरा दई	६२९	द्यूशी (शासिका)	४२१

अनुक्रमणिका]

दन्तिवर्ग द्वितीय	१८६	नागभट्ट प्रथम	८२, १९४
दन्तिवर्मन	१२९, ८६	नागभट्ट द्वितीय	८२
दन्तिवर्मा	८७	नादिर शाह (नादिर कुली)	२५२
दयोदत (दे० डायडोटस)	२५२	नाम-री सोंग चें	३९७
दाङ्गो द्वितीय	४८६	नामा नायक	१४५
दाऊद (डेविड)	३२६, ३७	न्या-त्रि चें पो	३६७
दामोजद	११३	नामन रॉजस द्वितीय	६६०
दारा (प्राचान पशियन-दरयूश; ग्रीक, डैरियस)	२५०, ६३	निक्लेोरस फोकस	६४४
दिनेकोब पोटर	६९८	निदिन्तुबेल	२३३
दुर्ग	२२८	निरसिम्ह द्वितीय	१४२
देवगुप्त	१२७, ८२	नीको (निकाउ - ग्रीक; बाह इब रा - मिस्री)	५५८, ६४
देवभूति	७७, ८६, ८७	नेवता नेबू प्रथम (ग्रीक; नेवतने वेफ - मिस्री)	५५८, ६४
देवियस	५६२	नेवता नेबू द्वितीय (ग्रीक; नेवत होर हेंव - मिस्री)	५५९, ६०, ६४
द्रोणसेन	१३८		
धंग	८४		
धरनीन्द्र वर्मन	५२६	नेटरबाउ	५४६
धरसेन प्रथम	१३८	नेडुम चेलियान	१३४
धरसेन द्वितीय	१३८	नेफूरीतिस प्रथम	५५६
ध्रुवसेन प्रथम	८०, १२७, ४०	नेफूरीतिस द्वितीय	५५९
ध्रुवसेन द्वितीय	१०९	नेफूरकारे (मिस्री; पेपी द्वितीय - ग्रीक)	५६४
नह्पान	१२६, ३४, ३८	नेफूत इब रा (मिस्री; सामतिक द्वितीय-ग्रीक)	५६४
नन्दी वर्मन	८४		
नन्तुक (नन्तुक)	२२७, २८, ४७, ३३५	नेबू कदनेजार	२३३, ३०९, २७, ३०, ३५
नरम सिन	८२	नेबका	५४६
नर वर्धन	८४	नेबूनयद (नेबूनिडस - रोमन)	२३३, ४८
नरवर्मा	२४७	नेबू पलासर	२३३, ४८, ३२७, ३७, ५५८
नर्गल युसेजिब	८८, १२६, ३४	नेम्बाना	६१३
नरसिंह	१३४, ४२	नेम्बाना	५५७
नरसिंह वर्मन द्वितीय	६७, १५४	नेसूवेने वदेद (रमन्दोज)	२६३, ५५३, ६३, ६७, ६८, ६६
नरायण पाल	१०९	नेपोलियन	६४९
नह्पान	४८८	नोकिमल	५२७
नाका	१५७	नोरदम प्रथम	१६८
नागपाल		पमहीवा	

परकेशरी वर्मन	१२९	पेरियण्डर	६५८
पनवाइ	३९०	पैक्सी	४८७
परमार्दी (परमल)	८४	पोटॅजगिल	७४१
परमेना	३४९	प्रोबस	५६२
परमेश्वर वर्मन	१२६, ३४	प्रक-मो-द्रू	३९९
परमेश्वर वर्मन द्वितीय	१३४	फरनवाज	३८७
पृथ्वी देव प्रथम	१८६	फ्लोरेन्स	५६५
पृथ्वी नरायण शाह	२०४	फस्टीडा	६६३
पृथ्वी पति द्वितीय	१३८	फ्लेमिनस	६६०
पृथ्वी राज	८४	फाया चक्कारी	५१५
प्रजाधिपाक	५१५	फारुख प्रथम	१६३
प्रतापरुद्र प्रथम	१४५	फिलिप	६६०
प्रताप रुद्र द्वितीय	८८	फिलिप द्वितीय	५२७
प्रभाकर वर्धन	८२	फीरोज शाह तुगलक	९७
प्रवर सेन प्रथम	८६	फुआद द्वितीय	५६३
प्रसेन जीत	३९७	फुआद प्रथम	५६३
प्राक्रम बाह	२१६	फूशी	४०९, २५
पिगमैलियन	२९९	फूजल	३६६
पिजुशतिश	३०६	फांसिस्को डी साण्डे	५३२
पिनोजदेंम	५५७	फ्रिथीगर्न	६९३
पियांखी	५५७, ५८, ६१७	फ्रेड्रिक द्वितीय	६७२
पीटर प्रथम	६९९, ७००	वक्कहीस	६५८
पुबलिपस आक्लियस-हैदियानस	३३८	वग़रात तृतीय	३८७
पुरुष दत्त प्रथम	१२१	वग़रात चतुर्थ	३८७
पुरुषोत्तम	१५७	वग़रात पंचम	३९०
पुलकेशिन द्वितीय	१२६	वहराम शाह	८८
पुलकेशी प्रथम	८६, ८८	वहादुर शाह	९०
पुलकेशी द्वितीय	८६	वहादुर सिंह	१५७
पुलोमावि तृतीय	७८	वाईबुरेह	६१३
पुष्य गुप्त	१०९	बाथ ज़ेबाज (देखिए ज़िनोबिया)	३३८
पुष्यमित्र शुंग	७७	बाशा	३२६
पुष्य वर्मन	१५०	बिम्बसार	७७
पेदपास्त	५५७	बुस्का द्वितीय	१२८
पेपी प्रथम (ग्रीक; मरीरे-मिली)	५४९, ६४	बेइनंग	५०७
पेपी द्वितीय (ग्रीक; नेफ़रकारे-मिली)	५४६, ६४	बेल्लो सोकोतो	६१५
पेरिक्लिस	६५७	बोवक होरिस (ग्रीक; बेक्रेनिफ़ - मिली)	५५७, ५८

बोनीफेस	६४४	मिकिप्सा	५९५, ३२
बोरिस	६६७	मिडास	३४३
बृहद्रथ	७७	मिण्डान	५०९
ब्रम्हपाल	१५०	मिनास	६४४, ४६
ब्रूटस	५६१	मिरियानी	३८७
भटार्क	१३८	मुइजुद्दनी (मोहम्मद गोरी)	८८
भद्र वर्मा	५२६	मुत्सी हितो	४९१
भाव वर्मन प्रथम	५२६	मुनी-चेन-पो	३६६
भास्कर रवि वर्मन	१३२	मुबारक खिलजी	९०
भास्कर वर्मन	१५०	मुरसिली प्रथम	३०९
भीम द्वितीय	८४, १४५	मुरसिली द्वितीय	३०६
भूमक	१०९	मुहम्मद गोरी	८२, ८४
भोज	१८९	मुहम्मद, राजा पहलवी	२५४
मंगलेश	१४२	मृगेश वर्मन	१४०, ४२
मंग-स्त्रोंग मंग-चेन	३६७, ६६	मेन्तुहोतेप प्रथम	५५०
मंगी युवराज सर्वलिकाश्रय	१४२, ४५	„ द्वितीय	५५०
मंगू खान	४१६	„ तृतीय	५५०
मन्सूटोव	७५६	„ चतुर्थ	५५०
मट्टन	२६६	„ पंचम	५५०
मथियास कोर्वीनस	७१५	मेने (मेनेज-ग्रीक; नारमर-मिस्रो)	५४६, ६४, ६५
मदेरो	७४१	मेनेलिक	६२०
मनीशतुम	२२७	मेमियस	६६०
मनेज	६६७	मेरीरे (देखिए पेपी प्रथम)	५६४
मनोहरी	१२९, ३२	मेरेन्ने प्रथम	५४९
ममलूक	५६७	मेरेन्ने द्वितीय	५५०
मलिक काफूर	८७, ८८	मेरेन्टा	५५५, ५६
मसीनिस्ता	५९५	मेरोदोख बलादन	३३७
महमूद राजनवी	८८	मेशा	२९७, ९८
महमूद शाह	६०	मेहमत अली (मोहम्मद अली)	५६३
महेन्द्र वर्मन	१२६, ३२	मैक्सिमिलियन	७४१
महेन्द्र वर्मन द्वितीय	१२९, ३४	मैगनस	७०८
माओ	४२२, २४	मैनफ्रेड	६७२
माई	६१५	मोअ (मोयस)	७८
मार्क एन्टोनी	५६१	मोम्मु	४८८
मार्क्स औरिलियस	५६२, ५९७	मोहम्मद तुगलक	६०
मानदेव	२०४	मोहम्मद नजीव	५६३, ६४

मोहम्मद बिन कासिम	८८, १७२	राजेन्द्र प्रथम	८७, १५४
मोयिस अखोरिस	५५९	राजेन्द्र तृतीय	८७
यकोवर्मन प्रथम	५२६	राम कम्हेंग	५१५
यक्षगर्द तृतीय	२५२	राम खोमहेंग	५१८
यनजोया	६०२	राम चतुर्थ	५१५
यशपाल	८२	रामचन्द्र	८८
यशोवर्मन	८४	राम पाल	८४, १५०
यसूगी बागातुर	४१६	रिचर्ड प्रथम	६३१
यज्ञश्री शातकर्ण	७८	रुद्र दामन	१०९, ११३
यादव भिल्लम	८६	रुद्र वर्मन	५२६
युंग लो	४१७	रेमे सीज प्रथम	५५५, ७०
युनिस	५४९	रेमेसीज द्वितीय (रामेसीज)	३२०, २६, ५३,
युरिक	६९३		५५५, ५६
युसुफ अली	६०४	रेमेसीज सीटा	५५५, ५६, ७५
युसेजिब	२४७	रेमेसीज तृतीय	५५६, ५७
युसेर काफ़	५४९	रेमेसीज चतुर्थ	५५६, ५७
योदित (जूडिथ-शासिका)	६२०	रेमेसीज पंचम	५५६
योमी	४८८	रेमेसीज षष्ठम	५५६
योरोतोमो	४८६	रेमेसीज सप्तम	५५६
रजा शाह पहलवी	२५४	रेमेसीज अष्टम	५५६
रणराग	८६	रेमेसीज नवम	५५६
रतन राज प्रथम	१८६	रेमेसीज दशम	५५६
रबाब जुबैर	६१५	रेमेसीज एकादश	५५६, ५७
रल-पा-चेन	३९९	रोमुलस	६६८
राज राज	८७, १३२	रोमोलस आगस्टलस	७२१
राज राज द्वितीय	१४२	रोस्टिस्लाव	६९७
राजा जय चन्द्र	८२	लंगदर्मा	३९९
राजा धिराज	१३८	लम्पोंग	५२६
राजा नन्द	७७	ललेगीज	३५१
राजा नरेन्द्र	११३	झाड्कोमिडीज	६६४
राजा मार वर्मा	८७	लाव सांग ग्याल्सो	२१२
राजा राम	९१	लार्स पोसेन्ना	६७०
राजा राम गंग	१५४	ल्हायो थोरो न्यान चैन	३९७
राजा रुआंग	३९८	लिनपेई	४१२
राज्य पाल	१५४	लियो तृतीय	६८८
राज्य वर्धन	८२	ल्योविगिल्ड	६९३

ली हुआंग चांग	४१९	शम्भा जो	९१
लुगाल जगेस्सी	२१७	शर त्सुंग	४५८
लुल्ली	२८९	शवाका	५५८
लेगाजपी	५२७	शवातका	५५८
लेनिन	६९९	शलमनासर द्वितीय	२३१
लोय-सोंग गया-त्सो	४००	शलमनासर तृतीय	२३२, ६८, ३३७
ब्रजहस्त पंचम	१५४	शलमनासर चतुर्थ	२३९, ३२६, ३२
वाकपति मुंज	१८९	शशांक	८२, १२७, १५४
वांग चेंग	४११	शाइस्ता खाँ	९१
वालक्कायम महामण्डलेश्वर	१३२	शान्ति वर्मन	१४०
वालिया	६९३	शापुर प्रथम	२६१
वालियस	६९३	शाहजहाँ	९०
वाशिष्ठ पुत्र पुलमायो द्वितीय	१२१	शाहज जी (भोंसले)	९१, १६०
वाह इब रा (देखिए नोको)	५६४	शाहू	९१
विक्टोरिया (शासिका,	९४	शिमिर	३३२
विक्रमादित्य	१०९, १३४	शिलहक (शिलाक) इन्शुशिनाक	२२८, ४७, ५५
विग्रहराज चतुर्थ	८४	शिलादित्य	१३८
विजय	२१६	शिवमार प्रथम	८७
विजय बाहू चतुर्थ	२१६	शिव स्कन्द वर्मन	१४२
विजय राय उडियार	१४२	शिवाजी	९१, १५०
विजय सेन	१५०	शिवाजी द्वितीय	९१
विजयादित्य	८७	शिशंक	५५७
विजयालय	८७, १६४	शिशंक चतुर्थ	५५७
विदग्ध	१५७	शोगा चैन	४००
विरुकुरु पल्लव	१२५	श्री हुआंग ती	४११, १२, २७, ८०
विशतास्प	२७८	श्री रंग	१३४
विशतास्पीज	२६८	श्री विजय	५३५
विष्णु वर्धन	१४५	शुदरल	२२८
विष्णु वर्मन	१४०	शुप्पि लूली माश	२३०
विसीमार	६९३	शुप्पि लूली उम्मा	२३०, ३३५
वीर पुरुषदत्त	१२१	शू सिन	२२८
वीरू पास	१३२	शंख नुङ्ग	४०९
वूती	४१२	शेप सेत काँक	५४६
धुवूका	१०७	शोगुन हिदेयोशी	४८१
वैद्य देव	१५०, ५४	शेतुको तैशी	४८८
शत्रुक नाखुटे	२४२, ४७	शोमू	४८८

स्कन्द गुप्त	८०	सिगिसमण्ड	७१५
स्कन्द नाग	१२५	सिदेरिज	३४९
स्कन्द बर्मन	१२५	सिद्धराज जयसिंह	८४
सत्यकी	१५७	सिनमुन	४८६
सनयात सेन	४२१	सिनमुबालित	२२८
समुद्र गुप्त	८८, ११३, १८, ८८	सिमुक (शिशुक या सिन्धुक)	७७
सरगोन प्रथम (अक्कादियन भाषा-सारकेनु)	२२७, २८, ३८, ४७	सिमेरी	३४९
सरगोन द्वितीय	२३२, ४७, ३०९, २६ ३०, ३२, ३७, ८५, ६२९	सियाक्सरीज	२४८
सलस्तम्भ	१५०	सियुरिशकुन	२३२
सलीम प्रथम	५६३	सिंह बर्मा	८६
सस्सू इलूना	२२९	सिंह बर्मा द्वितीय	८६
सस्सू दिताना	२२९, ३०	सी चोंग	४८६
स्मेन्दीज (ग्रीक; नेसूवेनेबदेद - मिस्री भाषा)	५५७	सीजर आगस्टस (देखिए आक्टोबियस)	५६१,
स्टैलिन	६९९	सीजर जूलियस	५६१, ६६०, ७०७, २१
साइमी (शासिका)	४८८	सीजर बोगियो	६७२
सांग-का-या	३९९	सोमियन, जार	६९७
सादात, अनवर	५६४	सीयक द्वितीय	८४
सामन्त सेन	१५०	सुजून	४८८
सामतिक प्रथम	५५८, ५९	सुबुक्तगीन	८८
सामतिक द्वितीय (देखिए-नेफ्रेत इब रा)	५५८, ६४	सुभी पाशा	३१२
सामतिक तृतीय (दे०-अंख का इब रा)	५६८, ६४	सुम्मू अबूम	२२९
सामथेक द्वितीय	३५३	सुम्मू लाइलुम	२२९
साम-सेन-ताई	५१८	सुयोको	४८८
सामोयिस	५५९	सुल्तान अहमद	२५४
सायरस (दे० कुरुश)	२३२, ४८, ५०, ५७, ६५, ३३० ३५, ४७, ४९	सुल्तान तुमन	५६३
साल	३२६	सुल्ला	६७२
सालोमन (ग्रीक; सुलेमान-अरबी)	२६१, ६५, ३२६, ६२०	सुशर्मा	७७
सिकन्दर	२५, २५०, ५२, ५३, ७८, ८९; ९३, ३२७, ४३, ५३, ८५, ८७, ९०, ५६०, ६३१, ६०, ६२, ६४	सुसेमीज	५५७
सिकन्दर तृतीय	५६०	सूर्य वर्मन-प्रथम	५२६
सिकन्दर चतुर्थ	५६०	सूर्य वर्मन-द्वितीय	५२६
		सेकेसुरे	५५२
		सेत मल्ल	५५६
		सेती प्रथम	५५५, ५६
		सेना खरिब	२३२, ४७, ८९, ३७७, ५५८
		सेबेक नेफ्रे रे	५५०, ५१
		सेत्युकस	२४२, ८३, ३३५

सेसास्त्रीज प्रथम	५५०, ५१
" द्वितीय	५५०, ५१
" तृतीय	५५०, ५१
सेहर तबी इन्तफ़ प्रथम	५५०
संक्रुद्धीन	८८
सोगा-नो-डल्का	४८८
स्रोंग चैन गम्पो	३९७, ४००, १
सोमेश्वर	८४, ८६
सोमेश्वर चतुर्थ	८६
हकोरिस	५५९
हतशेषमुत	५५२, ५३, ५४
हत्तुसिलिस तृतीय	३०८, ८०, ५५६
हदाद तृतीय	३३७
हदादेजेर	३३७
हम्मुराबी	२२९, ४१, ४२, ४३, ४७,
हरिवर्मा	८८
हरी वर्मन	१४०
हर्मियस	७८
हर्मेनिक	६९३
हर्षवर्धन	८०, ८२, ८३, १२७, ६४
हा इब रा (देखिए-एप्रोज)	५६४
हिरकैनस	३३२
हिरेकिल्स	६७२, ७१२
हिरेविलयस	५६२
हुआंग तो	४०९
हुनियादी	७१५
हुयेरतास	७४१
हुलागू	४१६
हुविष्क	७८
हुसैन	२३४, ६६
हुनी	५४९
हेकर (देखिए अखोरिस)	५६४
हेनरी द्वितीय	७०८
हेरीहोर	५५७
होओ तोकोमासा	४८९
होतू मतुआ	७६१

होरे महब

५५२, ५५

संघ

अकाइयन	६६२, ६४
आनोगुर	७१५
पेलोपोनेशियन	६५७, ४८, ६०
बोयेशिया	६६२
मयपान	७४८, ५३
हेलेनिक	६६०

स्मारकों के नाम

अल हजर मस्जिद	५६३
अशोक स्तम्भ (दिल्ली)	६६
आहू (चबूतरे ईस्टर द्वीप)	७६१
सजुराहो के मन्दिर	८४
जगन्नाथ पुरी मन्दिर	१५४
ताजमहल	६०
नागेश्वर मन्दिर	१४५
नासिक गुफा	११८
परेमिड	५४९
पोताल राजगृह	४००
बकूफू (सैनिक मुख्यालय)	४८९
बड़ी दीवार	४११, १६
वैजनाथ मन्दिर	१५७
बौद्ध मठ	४८९, ६१
बौद्ध स्तूप	२६
मियाजोदी स्तम्भ	५-६
यहूदी मन्दिर (सिनेगाग)	३३१
विशाल मन्दिर	३९९
शिला स्तम्भ	५७०
शिव मन्दिर	१५७

स्मारक

स्तूप	९९
स्मारक स्तूप	११८
स्वर्ण मूर्ति (बुद्ध)	४८७
स्विफ्स	३७३, ५४९
हैगिंग गार्डन्स	२३३
होरियूजी (बौद्ध) मन्दिर	४८८

सरकारें

केन्द्रीय सरकार	४८९
चीनी सरकार	४१७, ४३, ६९
जापान सरकार	४८८
ब्रिटिश सरकार	२३४, ३६६, ४१६, ५०६, ५१५, ६०४, १३, २०, ३१, ३६
बेजिन्टाइन (बेजिन्टाइन)	२५२, ८६, ३४३, ८५, ८७, ६३१, ३६, ६०, ६७, ६८
भारत सरकार	५०८

संस्कृतियाँ

आयोनिन	६३६
एजियन	६३२
एट्रस्कन	६६७
ग्रीस की	६३६
चीन की	४१७
द्रविड़	२६
प्राचीन एशिया माइनर की	६४६
प्राचीन संस्कृति (क्रीट की)	६४४, ४५
फिनोशियन	६४६
माइसोनियन	६४४, ४५
मिनोअन	६४६
यूनानी	६३६
रोमन	६९३

वैदिक	२७
सायप्रस का	६२६
सिन्धु घाटी	२६, २७, २८, ४३, ९६
सुमेर की	२७
हिन्दू	५३२
हेलेनिस्तक	६३२

संस्थायें

अकादमी दि इन्सक्रिप्शन्स	३३८
अमेरिकन कालोनाइजेशन सोसाइटी	६०७
अमेरिका पैलेस्टीनियन एक्सप्लोरेशन सोसायटी	३१२
अमरीकन स्कूल एट एथेन्स	६६२
अजमेर संग्रहालय	१०२
आक्सफोर्ड रॉयल सोसायटी	३३८
आक्सफोर्ड विश्व विद्यालय	२६
आर्कैयोलॉजिकल सर्वे डिपार्टमेन्ट	९७
इण्डियन नेशनल काँग्रेस	९४
ईस्ट इण्डिया कम्पनी	२६८, ४१९, ५१५, ३५
एकादमी आफ् साइन्सेज	५७०
एफीसस धार्मिक समिति	३४३
एशियाटिक सोसायटी	९७, २६९
एशमोलियन संग्रहालय	६४५
एल विश्व विद्यालय	४४३
चाइना रिवाइवल सोसायटी	४२१
टाटा इन्स्टीट्यूट आफ् फण्डामेंटल रिसर्च	२०
पीपिल्स नेशनल पार्टी	४२१
पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग	६७
पेनसेल्वेनियन विश्व विद्यालय	५४६
फ्रेंच एशियाटिक सोसायटी	२६६
बंगाल एशियाटिक सोसायटी	१६४
बर्लिन ओरिएण्टल सोसायटी	३२०
ब्रिटिश स्कूल आफ् आर्कैयोलॉजी	३२०
ब्रिटिश संग्रहालय	४६, २३२, ४८, ३११, १२ ७३, ५६८

भाषा विज्ञान परिषद	५
मिडिल ईस्ट सोसायटी	३२०
राज्य संग्रहालय	१५४
रायल अकादमी	२६४
रायल आयरिश अकादमी	२६७
रायल एशियाटिक सोसायटी ९७, २६८, ७३, ४५४	
रोआयल नाइजर कम्पनी	६१५
स्क्रिप्टिनेवियन इन्स्टीट्यूट आफ एशियन स्टडीज २८	
स्क्रिप्ट स्टडी ग्रुप	५८
रोमन स्क्रिप्ट सोसायटी (रोमाजीकाई)	४९६
लोग आफ नेशनस	६२०
लूगो संग्रहालय	२४३, ९७
बिट वाटम रैण्ड विश्व विद्यालय	६४७
सोसायटी आफ बिबलोकल आर्केयोलोजी	३१३
सोसायटी फार एन्टोक्वेरीज	५६९
हार्वर्ड विश्व विद्यालय	३३२
हिन्दी साहित्य सम्मेलन	१६६

सागरों के नाम

इंगलिस चैनेल	६८८
काला सागर	२८५, ६६६
केप माउण्ट	६०४
केप मेसूरेडो	६०४, ६०७
कैरोवियन सागर	१०
कैस्पियन सागर	२५२, ४१२
डेड सी	३३०
फारस की खाड़ी	३६३
बाल्टिक सागर	६९९
भू-मध्य-सागर	२६६, ३०२

लाल सागर
हुडसन खाड़ी

५५१, ५६, ६२०
७५५

साम्राज्य

इलखान	४९६
ओटोमन	६३६, ६७
गुप्त	८०
चीन	४१६
जगाताई	४१६
जापान	४८१
टर्की	६४४
तांग	४१०, १३
पशियन	२५२, ३८७, ४७३
पाण्ड्य	८७
पायिया	२५२
वेंजेन्टाइन	३४३, ६३६
मुगल	९०
मौर्य	७८
यूरोप	४१६
राष्ट्रकूट	८७
रूसी	३६०
रोमन	३४७, ४१२, ६४४, ४७
वर्धन	८२
बाकाटक	८६
विजय	५३५
विशाल	२५७
सिबिर	४१६
हान	४२

INDEX

A

Abicht	698	Alto, P.	28
Abott, Nabia	379, 93	Amalaric	693
Abraham	554	Amarqa	318
Abu Simbel	556	Amasis II	558
Abydos	546	Ambracia	658
Abyssinia	617	Amenertaic	559
Academy des Inscriptions et Belles Lettres	570	Amenesses	555
Academy of Sciences	570	Amen hotep-1	552
Achaean	629 45, 57	American Colonization Society	607
Achamenes	248, 69, 78	American Oriental Society	293, 307
Acropolis	664	American School at Athens	662
Ada	353	American School of Oriental Research	334
Aegeus	632	Amsterdam	272
Aeizanes	592	Anactorium	658
Aelius Gallus	359	Anastase, P.	357
Aemilianus	562	Anatolia (Turkey)	645
Agnone	674	Andhra Historical Research Society	53
Agvan Dordjiev	469	Andreas, F.C.	473
Aḥiram	293	Androgorus	252
Ahmes Nefertari	553	Ankh-ib-ra (Psamtik iii)	564
Ahmos	552	Antiochus-III	385
Ahu	761	Antony, Mark	561
Åkerblad, J. D.	568	Apollonia	658
Aksum	617	Apries (Ha-ib-ra)	558, 64
Alaric	693	Apulia	674
Alaska	699	Arabic	286
Albright, W. F.	307, 73 93	Aramaic	337
Aldred, Cyri.	593	Araq-el-Amir	330
Aldus	565	Aratus	664
Alexander	254, 353	Arberry, A. J.	254, 86, 93
Alexandria	560	Arcadia	664
Ali Khan, H. M.	393	Archaic Latin	687
Allen, A. B.	246, 357, 486, 649	Ardea	668
Allyattes	349	Ariadne	645
Almurach	708	Aricia	668
Altheim	698, 718	Arkwright, W.	357
		Arntz, H.	722, 25, 38
		Arsaces	250, 52

Arsames	269, 78	Bast (Dubastis)	557, 64
Artabanus	250	Baur, H.	290, 307, 604
Artabanus-iv	252	Beer, E. E. F.	267, 375
Artaxerxes-I	250	Behdet (Bamanhur)	545
Aryaramnes	248, 69	Behistun	286, 318
Aryds	349	Bekeurenef (Bocchoris)	564
Ashmolean Museum	645	Bell, Sir Charles	408
Asiatic	375	Bendell	206
Assiut	557	Bennett, Emmett L.	647, 48, 49
Assyria	246	Berlin	320, 55
Astle, T.	17	Berheimer, C.	393
Ataulf	693	Berthel, Thomas	762
Atecotti	708	Bessarbia	699
Athenaeus	261	Bevan, Edwyn	593
Athens	657	Bhandarkar, D. R.	121
Atkinson, G. M.	738	Bhattacharya, S.	203
Attica	657	Birch, S.	311, 593
Aufrecht, S. T.	674	Bittner	357
Aurelian	562, 733	Black, Robert	459
Ausere Apopi	551	Blackney, R. B.	427, 58
Avalishivili, Z.	393	Blakeway	687
Avaris	551	Blegen, C. W.	647, 48, 49
Avery, John	408	Bloch, R.	694
Avesta	282, 86	Blyden, Edward W.	613
Avidius Cassius	562	Bocchoris (Bekenrenef)	564, 57
Ay	552	Bodmer, F.	7, 694
B		Boetia	640, 62
Babylonia	246	Bolzani, G. V. P.	566
Babylonian	258, 286	Bolzano	678
Bacchis	659	Bombay	278
Bacot, J.	458	Bondelmonte	565
Bai Bureh	613	Boniface	644
Baikie, J.	649	Booth, A. J.	278, 86
Banerji, R. D.	102	Bork, F.	234, 55, 86, 347
Bankes, W. J.	570	Bossert, H. T.	322, 55, 87, 90, 649
Barnet, R. D.	324	Botsford, G. W.	666
Barno	697	Botta, P. E.	239
Barth, H.	625	Boudet, P.	541
Barthelemy, Abbe	338, 566, 67	Bourgbourg, B. de	750
Barton, G. A.	234, 46, 86	Bourgeois, R.	541
Barua, D. M.	75	Boussard (Bouchard), M.	567

Chamba	157	Clusium	667
Chamberlain, B. H.	504	Cock, H.	307
Chamberlayne	566	Codrington, H. W.	218
Champollion, J. F.	18, 569	Coedes, G.	542
Chan, Shan Wing	458	Cohen	469
Chantre, E.	319	Colledge, M. A. E.	254
Chao	409	Confucius	411
Chao (Mrs.)	432	Conrad-II	678
Chao K'uang Yin	414	Costantine	697
Chao, Y. R.	458	Constantinople	343
Charlemagne	684	Conway	694
Charles II	262	Cook, Captain	761
Chefren (See Khafre)	564	Cook, S. A.	337, 57
Chenet, G.	502	Cooke, Rev. G. H.	807, 34, 57
Cheng Miao	429	Coptic	566
Cheops (See Khufu)	765	Copts	562
Chiang Kai Shek	421	Copenhagen	246
Chicago	246, 321	Corinth	658
Chieh Kuei	409	Cornelius V. Bruyn	262
Chien Lung	419	Cosmus	375
Chiera, E.	234, 46	Coste, P.	267
Chih Pei Sha	458	Cottrell, L.	19, 246, 593, 700
Ch'i-tan	454	Count Caylus	262
Ch'in	411	Cowley, A. E.	324, 57, 75, 647
China Revival Society	421	Creel H. G.	458
Ch'iu K'ung	411	Crawford, O. G. S.	625
Chosen	409	Croesos	248, 349
Chou Hsin	409	Cromwell	708
Ch'ou Wen	427	Cronos	641
Christia, J. L.	542	Crosby, J.	542
Chung, Tan	424	Cross, F. M.	307, 334
Chu Yuan Chang	416	Cumae	671
Chwolson	334	Cuneiform	9, 246, 63, 78, 86
Cintra Pedrode	604	Curtis, E.	738
Clark, C.	234, 46	Cyaxares	233, 48
Claude, J.	19	Cyclades	658
Claudius	347, 562	Cynosce Phalae	657
Clester, P. E.	257, 61, 68, 86, 307, 12,	Cypselus	658
	19, 24, 575, 93, 649	Cyrillic	698
Cleisthenes	657	Cyrus	248
Clodd, E.	46, 334, 700		

D

Dacia	715
Damascus	363
Dani A. H.	203
Daniel, G.	307
Daniel, J. F.	632, 49
Daniels, O.	504
Danielson	670
Darius-I	250, 78, 86
Daustrop	738
Davids, R.	107
Davis, E. J.	312
Davis, Nathan	625
Decius	562
Decters, G.	390
Deecke	290
Delafoffe	607
Delitzsch, F.	273
Deorad	708
Deruschwan, Hans	718
Deuel, L.	320
Dhorme E.	303
Diamond, A. S.	7
Diemal, A.	235, 43
Dieulafoy, M.	243
Dillman	625
Dinokov, Peter	698
Diodorus, S.	261, 545
Diodotus	252
Dionysius	667
Diringer, D.	203, 93, 307, 486, 542, 93, 700
Djibuti	604
Djoser (See-Zoser)	546
Doblhofer, Erust	28, 75, 246, 307, 11, 12, 18, 19, 21, 24, 566, 74, 76, 93, 762
Dominico, F.	674
Don Garcia de Silva	261
Dorian	645
Dorpfeld, W.	646
Doughty, C.	364, 66

Dowson, J.	203
Drake	312, 24
Drive, G. R.	307, 34
Drower, E. S.	393
Druids	708
Dugast	602
Dunand	293
Dunlop, R.	738
Duperron, A.	263, 82
Dupont	322
Duroiselle, C.	542
Dussaud	293, 97, 302, 68
Dutta, B.	7

E

Eckardt, P. A.	486
Egbert, J. C.	694
Egypt	576
Egyptian	290, 375, 576
Eisler, R.	632
Elam	227, 47
Elbert, Elber	613
Embryo-Writing	10
Empson, R.H.W.	357
Engelbert, K.	262
Englianos, Epano	647
Enkomi (Salamis)	632
Enting, J.	364, 66, 93
Epaminodus	662
Eric, J.	748
Erichsen, W.	593
Erman, Adolf	571, 76, 93
Erskine, S.	625
Eski Adalia	353
Ethiopia	617
Etruscan	667
Euphrates	225, 361
Euric	693
Evans, A. J.	645, 48, 49, 755

F

Falconbridge, A.	613
Falerii	670, 78
Faliscan	678
Fan Ch'ieh	444
Fastida	693
Fateh Singh	75
Faulmann	438, 527, 42, 671
Fell, R. A.	694
Fergusson	267
Fiesal	671
Figeac	569
Figulla, H. H.	320
Finegan, J.	234, 307, 24, 34
Fiorelli, G.	674
Fitzgerald, C.P.	458
Flaminus	660
Flandin, E.	267
Fleet J. F.	11, 40, 86
Forbes, W. C.	542
Forde, C. D.	625
Fork, A.	443
Forrer, E.	321
Forster, Rev. Charles	375
Fourier, J. B.	569
Francke, Rev. A. H.	402
Frankfort, H.	234, 57
Frunkfurter, O.	542
Franks	693
Fransico de Almeida	216
Fraser, J.	357
Frederick-II	672
Freese, J. H.	649
Free Town	613
Freret N.	567
Fried	355
Friedrich, J.	243, 307, 24, 47, 49, 53, 55, 574, 75, 602, 13, 20, 32
Frithigern	693
Frumentius	625

Fryer, R. N.

Fu Hsi

Furumark

282

425

647

G

Gabain, A. von	469, 76, 79
Gabii	668
Gadd, C. J.	75, 234, 48
Gaertringen	641
Gailerius	562
Gaiseric	672
Gaius Petronius	562
Gallienus	562
Gardanne, P. A. L. de	268
Gardiner, A. H.	290, 307, 73, 574, 75, 93
Gardiner, C.	425
Gardiner, E. A.	641, 66
Gardner, F.	542
Gardthausen	290
Garstang, J.	320
Gauthiot, R.	462, 73, 79
Gebal	293
Gebelin, C. de	567
Geitler	698
Gelb, I. J.	17, 203, 46, 86, 307, 21, 22, 24, 446, 58, 649, 700
Gepidae	715
Gesenius, W.	377
Ghirshman, R.	254, 82
Giasofat B.	261
Gibbethon	326
Gibbon, J. B. E.	738
Giles, H. A.	409, 43, 79
Girosdeft	755
Gierset, K.	738
Glagolithic	698
Glanville, S. R. K.	593
Glottz, G.	666
Godard, T. N.	625
Goidels	707

ਭੰ. ੧੧

Magre	678	Melos	641
Mahalingam, T. V.	203	Memmius	660
Majumdar, R. C.	94	Menant, J.	318, 57
Malcolm, Sir J.	268	Mencius	411
Manchu	417	Mende	607
Mandarin	421	Menes (see Narmer)	546, 64
Manfred	672	Men Nefer (Memphis)	564
Manios Clasp	687	Mentuhotep-I	550
Manthis Akhoris	559	Mentz	290, 640
Marathon	657	Mercati	567
Marcus Aurelius	562, 97	Mercer, S A.B.	17, 246
Marguerson	19	Mercier	597
Marinatos	647	Mercury	9
Mario Schipans	261	Merenptah	555
Marrucini	674	Merenre-I	549
Marsden, W.	542	Merenre-II	550
Marshall, Sir John	75	Meriggi, Pierro	28, 75, 321
Marsham, J. D.	567	Meryre (Pepi-I)	549, 64
Marstrander, C. T. S.	694, 712	Mesha	297
Martin, St. A.J.	266	Meesana	674
Martin, W. J.	308, 334, 542, 700	Messerschmidt, L.	313, 19
Mas'nissa	595	Methodius	697
Mason, W.A.	694	Metropolis	664
Maspero, G.	358, 571	Meyer, Eduard	229, 646
Mass, Aquoi	626	Micipsa	595
Massey, W.	286, 393	Miller	698
Mastaba	546	Milverton	569
Mathews, R. H.	443, 59	Ming	41
Mathias Corvinus	715	Minos	644
Maveer, A.	738	Minotaur	644
Maxwell	617	Mirashi, V. V.	94, 203
Maya	748	Moab	297
Mc Cune, G. M.	486	Moesia	697
Mc Farland, G. B.	542	Mogeod, F. W. H.	626
Mc Gregor, J. K.	617, 25	Mohenjo-Daro	64, 71, 75
Mc Lean, John	755	Möller, G.	576, 93
Megalapolis	664	Momru Doalu Bukere	607
Mehrotra, R.M.	7	Mono-Syllabic	421, 23
Meidum	549	Monroe, E.	625
Meillet	469, 73	Montet, Pierre	293, 593
Meinhof, C.	597, 602	Moorgat, A.	229

Moorhouse, A. C.	246, 86, 308, 11, 73, 626
Mordtmann, A. D.	267, 311
Morgan, J. de	243
Morris, J.	215
Moses	556
Mount Sinai	373
Mtraux, Alfred	761
Mukherji, P. C.	107
Müller, D. H.	368, 77
Muller, F. W. K.	462, 79
Muller, Outfried	674
Munshi, K. M.	94
Münter, F. C. H.	264
Murray, M. A.	593
Mursili-I	309
Musaiev, K. M.	737, 38
Myers, S. L.	631, 49
Mystic Trigrams	409

N

Nabataean	364
Nachtigal	602
Nagada (Luxor)	545
Nagy, S. M.	718
Napata	558
Naples	671
Narain, A. K.	203
Narmar (Menes)	564
Nath, Rajmohan	75
Nathigal	698
Nebu	9
Nebuchadnezzar	233
Nebu Nedus	233
Nebu Palasar	248
Necho (See Wah-ib-ra)	564, 58
Neckel	725
Necropolis	664
Nectanebo-I (See-Nekht Nebef)	559, 64
Nectanebo-II (See-Nekht Horheb)	564

Neferitis-I	559
Neferkare (Pepi-II)	549, 64
Nefret-ib-ra (Psamtik-II)	564
Nehru, J. L.	459
Nell, J. G. O.	666
Nekheb (El Kab)	546, 64
Nekhen (Hierokonpolis)	546, 64
Nemeth	718
Nepal	107, 206
Nestorian	361
Nestorius	343
Nesubenebde	557
Neubaur	331, 34
Newberry, J.	28
Newman, P.	650
Newton, C. T.	353
Newyork	246
Niccolo Nicoli	565
Nicephorus Phocas	644
Nicholas, S. E. N.	218
Nicias	660
Nicolas, Abbe T, de	568
Nidintu Bel	233
Niebuhr, C.	263, 567
Nineveh	248
Njoya	602
Noah	225
Nola	672
Nöldeke	334, 38, 40, 58
Norden, F. L.	567
Norris, Edwin	268
North Arabic	379
North Semetic	307
Noth, M.	302, 34
Novgrod	699
Nubia	551
Nuremburg	718
Nya-tri Tsen-po	397
Nyein Tun	542

O

Oberman, J.	308
Octavius	561
Odenathus	337
Odoacer	721
Odyssey	287
Ogg, Oscar	694
Oghma	9
Oinach	707
Ojha, G. H.	102, 203
Oligarchy	658
Olmstead	313
Ollone, H. M. G. d'	459
Olympia	664
Olzscha	671
Onu (Heliopolis)	549, 69
Oppenheim, A. L.	234
Oppert, J.	239
Origny, P. A. L. d'	567
Orontes	261
Oscan	672
Osgood, C.	486
Oskorn	557
Ostrogoths	688
Ouseley, W. G.	266
Övre Dalarne	728
Owen, G.	459

P

Paeligni	674
Pa Fen Shu	429
Pa Kua	409
Pale	708
Palestine	307, 26
Pallatiuvo	694
Pallis, S. A.	234, 46
Palmer, L. R.	312, 24, 650
Pa'myre	338
Palotino	671

Pandey, C. B.	94
Pandey, R. B.	302
Pannonia	715
Pao Chia	414
Paphos	629
Pares, B.	700
Paribeni	353
Paris	263, 97, 366
Parker, B. M.	423
Parker, E. H.	454, 59
Parpola, A.	28, 75
Parthian	254, 82
Pasiphae	644
Pazkiewiez, H.	700
Paten, W. R.	353
Pathak, D. B.	7
Pauli, W.	670, 72, 94
Pavie, A. J. M.	518
Pe	546
Pederson, H.	734
Pedupast	557
Peet, T. A.	594
Peguria	678
Pei-sha, Chih	459
Pelasgian	671
Pelliof	462
*Peloponnesian League	657
Pendlebury	649
Peoples National Party	421
Pepi-I (See Meryre)	549, 64
Pepi-II (See Neferkare)	549, 6+
Periander	658
Pericles	657
Per Meri (Naucratis)	564
Pernier, Luigi	648
Per Rameses (Tanis)	564
Perrot, G.	311, 58
Persepolis	254
Persia	254, 6', 78, 82
Persian	258, 86
Persson, A. W.	650
Petrie, Hilda	594

Petrie, W. M. Flinders	28, 290, 363, 594	Puchstein, O.	321
Pett, T. A.	393	Purgstall, Baron Von Hammer	569
Phaistos Disk	648	Puri, B. N.	94
Philae Obelisk	570	Pylos	647
Phillip-II	657		
Phoenicia	287, 89		
Phoenician	293, 307	Q	
Piankhy	557	Quintus Curtius	261
Pickering	755		
Pictographic Script	10	R	
Pieser	290		
Pietro della Valle	261	Radlove, V.V.	479
Pitman, I.	196	Raetia	678
Pike, E. R.	234, 46, 650	Raffles, Sir S.	542
Pilcher, D.	593	Rameses Siptah	555
Pilling, J. C.	755	Ramesses-I	555
Pinojdem	557	Ramsay, W.	321, 43
Placidia	693	Ramstedt, G.T.	479, 86
Pococke, Richard	375, 567	Randall, D.	694
Polin, Count N. G. de	568	Ramo Rorarku	761
Pompeii	672	Rao, M. R.	94
Pompey	561	Rao, S. R.	75
Pontius	698	Rask, R.C.	266
Pope, M.	255, 65, 338, 565	Ras Shamra	307
Populonia	667	Raulings	712
Porcius Cato	629, 31	Rawlinson, H.C.	94, 268
Porter, R. K.	268	Ray, S.K.	75
Potidaea	658	Regmi	206
Poucha, P.	479	Reinser, G.	591
Praetorius	368	Reisner, F. L.	332
Pran Nath	75	Remusat, Abel	462
Prinsep, James	221	Rhea	641
Pritani	707	Rich, C. J.	266
Probus	562	Richardson, H. R.	408
Proto-Tyrrhenian	671	Richter, O.	631
Psammouthis	559	Ridgeway, W.	666
Psamtik-I	558	Roberts, E. S.	641, 66
Psamtik-II (Psalmthek)	297, 353, 564	Robinson, C. A.	666
Psamtik-III	564	Rockhill, W. W.	408
Psusemes	557	Rodiger, E.	364, 77
Ptolemy Lagos	560	Roehl	641

Roges-II	660	Sanyat Sen	421
Rogers, R. W.	234	Sarzec, de	236
Roggeveen, Jacob	761	Sarzy, Count de	267
Romaji Kai-Roman Script Society	496	Sassanian	282, 86
Romanelli	353	Saulcy, L. C. de	267, 597
Romulus	668	Savignac	366
Rosellini, H.	571	Savill, Mervyn	762
Rosetta	567	Sayce, A. H.	313, 24, 58, 594
Rosetta Stone	18	Sayce, Sylvestre de	263, 90, 568
Roughe, de	290	Schaeffer, C. F. A.	302, 8
Routlage, Katherine	761	Scheil	71
Roux, G.	234	Scherer	650
Roy, S.	203	Schiffer, S.	358
Royal Asiatic Society	282, 86, 454	Schliemann, H.	645
Royal Niger Co.	615	Schlozer	225
Royal Society of Literature	375	Schmidt, A.	761
Runciman	700	Schmidt, E. F.	254
Rurik	699	Schneider, H.	290, 640
Ryckmans, G.	369	Schubert, R.	358
		Schumacher, J. H.	567
		Schwnrz, B.	666
		Scotti	708
		Sebeknefrure	550
		Sehertawi Intef-1	550
		Seleucus	252
		Selišcev	698, 700
		Semen Khare	552
		Semitic	225, 307, 34
		Sen, S.	286
		Senanaik, R. D.	408
		Senart, E.	121
		Sensure F. de	667
		Sesostirs-1	550
		Sethe, Kurt	290, 93, 571
		Seti-1	555
		Setnakht	556
		Seyfarth G.	571
		Shabaka	558
		Shabatka	558
		Shapur-1	261
S			
Sabine	667		
Safaric	698		
Saggs, H. W. F.	234		
Sahidic	591		
Sahni, Swarn	542, 626		
Sahure	549		
Sais	551, 57		
Sakkara	546		
Salamis (Enkomi)	632, 57		
Salonica	697		
Samaria	332		
Samson, G. B.	504		
Samuel Flower	262		
Sandberg, Rev. G.	401		
Sandwith, T. B.	629		
Sandys	687		
Sankar Hajra	64		
Sankaranand	75		

Sharpe, S.			[८६
Shastsi, N. K.	594	Somerset	
Shen Nung	75, 94	Sondrio	569
Shepses Kaf	409	Sothill	678
Sheshonk (Sheshak)	549	Sparta	443
Shih Huang Ti	557	Spiegelburg, W.	657
Shivramamurti, C.	411	Spilberg, J.	571, 94
Shu	203	Spohn, A. W.	218
Shupululimash	412	Sporry, J. T.	571
Shu Shen	309	Springling, M.	594
Si-an-fu	429	St. ¹ Cyril	373, 626
Sicily	412	St. Mark	698
Sikwayi (Sequoyah)	670	St. Patrick	591
Siltiq	755	St. Paul	708
Simeon	647	Stark, F.	658
Simonides, C.	697	Stasinos	393
Sinaitic	571, 94	Stawell, F. M.	629
Sircar, D. C.	375	Stegemann, V.	649
Six	102, 21, 203	Stein, Aurel	576, 91
Skensure	355	Steinberr	473, 76
Ski, L.	552	Stephens, G.	353
Skinner, F. N.	321	Stern, Ludwig	738
Skjolsvold, A.	462	Stillwell	571
Skutsch	761	Stolte, E.	666
Smeathman, H.	671	Strabo	678
Smendes	613	Strange, E. F.	672
Smerdes	557	Stuart, Pigott	542
Smith, A. D.	250	Stungnar Runir	650
Smith, G.	626	Sturtevant, E. H.	725
Smith, S.	312, 632	Subramaniam, T. N.	324
Smith, V.	229, 34	Sui	203
Snefru	94, 102, 13, 21, 40	Sulla	412
Sobelman, H.	549	Sumner, A. T.	672
Sobolewskij	295, 308	Sung	626
Society of Antiquaries	698, 700	Sung, Yu Feng	414
Socrates	569	Susian	427, 40, 50, 59
Sogdian	657	Susiana	258
Solomon	462	Swain, J. E.	286
Solon	261, 620	Swinton	234, 258, 478
Somalis	657	Syracuse	338
Somer	604		658
	322	<i>1. Saint</i>	

Syria	307, 11	Thomas Hyde	263
		Thompson, Sir H.	571
		Thompson, R. C.	320, 24
		Thompson, S.	748
		Thompson, V. L.	542
		Thomsen, V.	476, 67, 718
		Thomson, E. M.	666
		Thomus, Herbert	262
		Thorsen, P. G.	725
		Thoth (Thot)	9, 572
		Thotmes-III	287
		Thucydides	646
		Thugga (Dougga)	597
		Thumb, A.	650
		Thutmose-I	552
		Tigris	225
		Tin, P. M.	542
		Tiridates	252
		Tiwari, B. N.	7
		Todi	678
		Tomkins, W.	748
		Torp, A.	319, 670
		Torrey, A.	293
		T'oung Pao	459
		Treuber, O.	358
		Trier	721
		Tripathi, R. S.	94
		Trondheim	724
		Troy	615
		Trump, D.	19
		Tsai Lun	438
		T'sao Shu	429
		Tsordji Osir	462
		Tuath	707
		Tudor	674, 78
		Turkey	645
		Tutankhamen	552
		Tutmis (Tutmosis)	553
		Tychsen, O. G.	263
		Tychsen, T.C.	567
		Tyle	70
T			
Ta Chuan	427		
Taharka	558		
Tai Hsi	427		
Talbot, P. A.	626		
Talbot, W. H. F.	273		
Tamiradae	629		
Tan Chung	427		
T'ang	409, 12		
Tanis	557, 64		
Tanutamone	558		
Tao-Teh-King	411		
Tarn, W. W.	666		
Tarquinia	667		
Tata Institute of Fundamental Research	20		
Taylor, Issac	203, 21, 69, 462, 79, 671, 98		
Taylor, William	650		
Tegea	664		
Teispes	248, 69		
Tell-El-Amarna	554		
Teos	559		
Teti-I	549		
Teutons	694		
Texier, C.	312		
Thausen, G. von	671		
Thebes (Greek)	640		
Thebes (Egyptian)	549, 64		
Thelegdi, J.	718		
Theomistocles	250, 657		
Theodore	620		
Theodoric	693		
Theodosius	693		
Theophilos	625		
Thera	641		
Thesius	632		
Thomas, E. J.	64, 286		

Tyrhenus 667
Tzu Hsi 421

U

Ugaritic 304
Ulfilas 693
Ullman, B. L. 334, 666
Umbrica 674
Unis 549
Upasak, C. S. 203
Urrad 708
Usman Dan Fodio 615

V

Valerianus, P. 566
Valeus 693
Varthema, L. di 535
Vasu, N. N. 203
Vats, M. S. 57
Vaux, W.S.W. 254
Veii 667
Venice 644
Ventriss, Michael 632, 47, 4
Verma, T. P. 203
Vestini 674
Vetulonia 667
Vienna 118
Villonovans 667
Virolleaud, C. 303, 308, 13
Visigoths 688
Visimar 693
Vogel 157
Vogüe, de 338, 4, 68
Vondrak 698

W

Wace, A. J. B. 647, 48, 50
Waddell, L. A. 28, 75, 402
Wade, Sir Thomas 443, 46

Wah-ib-ra (Necho) 564
Wallace, A. R. 542
Wallia 693
Wanderinglon 355, 64, 68
Wang An-Shih 414
Wang Cheng 411
Wang Chieh 423
Wardrop, O. 393
Wei 412
Wei Nung 454
Wellsted 364
Wen Chang 9
Wesi (Thebes) 564
Westergard, N L 267
Wetzstein 368
Wheeler, M. 75
White, J. C. 215
Whymant, A.N.T. 469
Wiedmann, F. 640
Wieger, L. 459
Wilber, D N. 254
Wild, R. 625
William, A M. 542
Williams 443
Williamson, H. R. 422, 41, 50, 59
Wimmer, L. 694, 722
Winckler, H. 320
Winnett, F. V. 368, 69, 93
Winter, F. 353
Wolfe 321
Woolley, C. L. 234, 313, 58
Wormius 722
Worrell, W. H. 549
Wrench 313
Wright, J. 694
Wright, W. 312
Wu 412
Wu Sankwei 417
Wu Ti 412
Wu Wang 409
Wurburton, W. 566

Wylie, A.	469	Yunnan	450
		Yutang, Lin	443
	X		
Xerxes-I	250		Z
	Y	Zangroniz, Z. de	602
Yamagiva, J. K.	504	Zeitlin, R. J.	337, 331
Yamato (Japan)	487	Zenobia	562
Yazdani, G.	94, 121, 25	Zeus	641
Yodit	620	Zide, A.	68
Young, J. C.	626	Zimmer	712
Young. Thomas	569, 94	Zoega, G.	568
Yu	409	Zoroaster	76, 476
Yuan	416, 21	Zoser	546
Yu Chen	454	Zvelebil	68
Yung Lo	417	Zwetaieff, J.	674



□

लेखनकला का इतिहास

द्वितीय खण्ड

ईश्वरचन्द्र गह्वरी

लेखन कला का इतिहास

(द्वितीय खण्ड)

लेखक

ईश्वर चन्द्र राही



उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान

(हिन्दी ग्रन्थ अकादमी प्रभाग)

राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन हिन्दी भवन

महात्मा गांधी मार्ग, लखनऊ—२२६००१

प्रकाशक

विनोद चन्द्र पाण्डेय

निदेशक,

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान,

लखनऊ

शिक्षा एवं समाज कल्याण मंत्रालय,

भारत सरकार की विश्वविद्यालयस्तरीय ग्रन्थ योजना के अन्तर्गत,

हिन्दी ग्रन्थ अकादमी प्रभाग, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा प्रकाशित ।

पुनरीक्षक

प्रोफ़ेसर डॉ० लल्लन जी गोपाल

विभागाध्यक्ष : प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं

पुरातत्त्व विभाग, कला संकाय,

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,

वाराणसी ।

© उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान

प्रथम संस्करण : १९८३

प्रतियाँ : २२००

मूल्य : ८७ रुपये (सत्तासी रुपये)

मुद्रक

जीवन शिक्षा मुद्रणालय (प्रा०) लि०

गोलबदर, वाराणसी

प्रस्तावना

शिक्षा-आयोग (१९६४-६६) की संस्तुतियों के आधार पर भारत सरकार ने १९६८ में शिक्षा सम्बन्धी अपनी राष्ट्रीय नीति घोषित की और १८ जनवरी, १९६८ को संसद के दोनों सदनों द्वारा इस सम्बन्ध में एक सङ्कल्प पारित किया गया। उक्त सङ्कल्प के अनुपालन में भारत सरकार के शिक्षा एवं युवक सेवा मंत्रालय ने भारतीय भाषाओं के माध्यम से शिक्षण की व्यवस्था करने के लिए विश्वविद्यालयस्तरीय पाठ्यपुस्तकों के निर्माण का एक व्यवस्थित कार्यक्रम निश्चित किया। उस कार्यक्रम के अन्तर्गत भारत सरकार की शत-प्रतिशत सहायता से प्रत्येक राज्य में एक ग्रन्थ अकादमी की स्थापना की गयी। इस राज्य में भी विश्वविद्यालय स्तर की प्रामाणिक पाठ्य-पुस्तकें तैयार करने के लिए हिन्दी ग्रन्थ अकादमी की स्थापना ७ जनवरी, १९७० को की गयी।

प्रामाणिक ग्रन्थ-निर्माण की योजना के अन्तर्गत यह अकादमी विश्वविद्यालय स्तरीय विदेशी भाषाओं की पाठ्यपुस्तकों को हिन्दी में अनूदित करा रही है और अनेक विषयों में मौलिक पुस्तकों की भी रचना करा रही है। प्रकाश्य ग्रन्थों में भारत सरकार द्वारा स्वीकृत पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग किया जा रहा है।

उपर्युक्त योजना के अन्तर्गत वे पाण्डुलिपियाँ भी अकादमी द्वारा मुद्रित करायी जा रही हैं जो भारत-सरकार की मानक-ग्रन्थ योजना के अन्तर्गत इस राज्य में स्थापित विभिन्न अधिकरणों द्वारा तैयार की गयी थी।

प्रस्तुत पुस्तक इसी योजना के अन्तर्गत मुद्रित एवं प्रकाशित करायी गयी है। इसके लेखक श्री ईश्वर चन्द्र राही हैं। इसका पुनरीक्षण प्रो० डॉ० लल्लन जी गोपाल ने किया है। इन दोनों विद्वानों के इस बहुमूल्य सहयोग के लिए उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान उनके प्रति आभारी है।

श्री राही जी द्वारा प्रस्तुत 'लेखन कला का इतिहास' उनके विशद अध्ययन और अध्यवसाय का परिचायक है। उसमें उन्होंने समस्त विश्व की भाषाओं के उद्गम, लिपियों के आविष्कार और इतिहास के बदलते हुए चरणों का विकासक्रम दिखाते हुए प्रत्येक प्राचीन देश के मूल स्वरूप, उसकी जातिगत विशेषता तथा आधुनिक उपलब्धियों का वैज्ञानिक विश्लेषण भी प्रस्तुत किया है। लिपियों के उद्भव एवं विकास का निरूपण करते हुए प्राचीन मानक चित्रों द्वारा सभ्यता और संस्कृति के विकास में मानवजाति के सामूहिक योगदान का भी समुचित उल्लेख है। इस प्रकार भाषा, लिपि, पुरातत्त्व, काल निर्धारण और प्राचीन इतिहास के आधार पर सिन्धु-घाटी, दक्षिण एशियाई देशों, पश्चिम एशियाई देशों तथा मध्य व पूर्वी एशियाई देशों की लेखन कला के विकास के साथ-साथ नृविज्ञान के आधार पर समस्त मानवता का इतिहास भी रेखांकित किया गया है। राही जी ने ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न भण्डारों का आकलन कर विश्व मानक की जिज्ञासाओं के सहज विकास को वर्तमान दुर्घर्ष तकनीकी युग तक की मंगल यात्रा के रूप में निरूपित किया है। जहाँ तक मैं जानता हूँ भारतीय भाषाओं में यह अपने ढंग का अनन्य प्रयास है, निश्चित ही राही जी के इस ग्रन्थ के प्रकाशन से हिन्दी संस्थान गौरवान्वित हो सकेगा। वे हम सबके साधुवाद के पात्र हैं।

शिवमंगल सिंह 'सुमन'

उपाध्यक्ष

उ० प्र० हिन्दी संस्थान,

लखनऊ

प्राक्कथन

मानव सभ्यता और संस्कृति के इतिहास में अनेक क्रान्तिकारी परिवर्तन समय-समय पर प्रस्फुटित हुए हैं। मानव समाज को नयी दिशा देनेवाले आविष्कारों के सापेक्षिक महत्त्व का निर्धारण दुष्कर है, तथापि इनमें लेखन-कला की उपयोगिता किसी से कम नहीं है। मानव के अन्य जीवों पर प्राप्य श्रेष्ठता के सूचक गुणों और उपलब्धियों में भावों और विचारों को अंकित करने की उसकी क्षमता विशिष्ट है। इसके कारण मानव के लिए यह सम्भव हो सका है कि वह ज्ञान का सर्जन, संरक्षण, संवर्धन और सातत्य बनाये रखे। वह अपने अनुभवों, विचारों और कल्पनाओं को भी मूर्त और स्थायी रूप दे सकता है।

लेखन कला के आविष्कार, उसमें सुधार और विकास की कथा अत्यन्त रोचक है। उससे कुछ कम रोमांचक नहीं है इन आविष्कारों की कथा और अनेक भूली-बिसरी लिपियों को पहचानने और समझने का आधुनिक विद्वानों का प्रयास। लेखन कला का इतिहास इतना विस्तृत है और तथ्यों की इतनी अविकता है कि उनका विधिवत् अध्ययन और समुचित प्रस्तुतीकरण सरल नहीं है। इस क्षेत्र में श्री ईश्वरचन्द्र राही का प्रयास स्तुत्य है। अर्थाभाव के होते हुए भी उन्होंने दीर्घकालीन अध्ययन के द्वारा एक कठिन कार्य को सम्पादित किया है। मुझे स्वयं पता है कि किस प्रकार अनेक देशों की यात्रा करके, अनेक पुस्तकालयों में अध्ययन करके और विशिष्ट विद्वानों से परामर्श करके उन्होंने प्रस्तुत पुस्तक का प्रणयन किया है। इस पुस्तक की रचना की अपनी एक रोचक कथा है जो किसी भी नैष्ठिक, कर्मठ और जिज्ञासु व्यक्ति के लिए प्रेरणा एवं स्फूर्ति का स्रोत सिद्ध होगी।

मुझे हर्ष है कि इस पुस्तक को प्रस्तुत करने का संयोग मुझे प्राप्त हुआ है। मैंने इस पुस्तक का औपचारिक पुनरीक्षण भी किया है। हिन्दी ही नहीं अन्य किसी भाषा में इससे तुलनीय उद्देश्य, विस्तार और शैली के ग्रन्थ विरल हैं। मानव की सांस्कृतिक विरासत को समझने में सहायक यह पुस्तक विभिन्न समाजों में परस्पर सहयोग और आदान-प्रदान की प्रक्रिया स्पष्ट करके समता और सद्भावना के विचारों और प्रयासों को बल देगी।

श्री राही को उनके इस बहुमूल्य योगदान के लिए साधुवाद देते हुए माँ सरस्वती से भरी प्रार्थना है कि उनको स्थायी यश का भागी बनाये।

संकाय प्रमुख, कला संकाय,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,
वाराणसी - २२१००५

प्रो० लल्लन जी गोपाल
एम० ए०, डी० फिल (श्लाघावाद),
पी एच० डी० (लन्दन),
विद्या चक्रवर्ती (मानद)

दो शब्द

जब मैं सन् १९२८ में ८ वर्ष की आयु में सर्वप्रथम एक सायकिल — विश्व — यात्री के संपर्क में आया तो मनरूपी कक्ष के एक कोने में यात्रा करने की प्रेरणा का बीजारोपण हो गया। चैतन्यता तथा उत्सुकता के खाद एवं पानी देने से वह बीज अंकुरित होकर बढ़ता रहा। २ जून १९३८ को वही बीज एक फल के रूप में परिवर्तित हो गया, जब मैंने अपनी प्रथम सायकिल-यात्रा दिल्ली से पंजाब की ओर इस आशय से आरम्भ कर दी कि मैं एक ऐतिहासिक खैबर दर्रे को पार करके विदेश चला जाऊँगा। परन्तु अंग्रेजी राज्याधिकारियों ने मुझे अनुमति नहीं दी और मैं अपने देश 'अखण्ड भारत' को जानने व समझने में लग गया।

भारत के सुदूर पश्चिमी, दक्षिणी, पूर्वी तथा उत्तरी पर्वतीय भागों की यात्रा में मेरा ध्यान एक मुख्य समस्या की ओर आकर्षित हुआ और वह समस्या थी भाषा की अर्थात् बोली व लिपि की। अंग्रेजी राज्य में अंग्रेजी भाषा द्वारा अहिन्दी भाषा-भाषियों से विचार-विनिमय का कार्य चलता रहा, परन्तु समस्या, समस्या ही बनी रही और मन में कुलबुलाती रही। न समस्या का पूर्ण रूप और न उसके किसी निदान का रूप मस्तिष्क में आ सका।

भारत की स्वतंत्रता के पश्चात् राजनैतिक, सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक समस्याएँ कुछ आंशिक रूप में सुलझने लगीं और विद्वानों का ध्यान भारत की राष्ट्रभाषा के निर्माण एवं एकता की ओर अग्रसर होने लगा तो मेरे मन की वह कुलबुलानेवाली समस्या भी अपने स्थूल रूप में प्रकट होने लगी और मैंने सन् १९५८-६० में पुनः सायकिल — यात्रा आरम्भ कर दी। अब मैं ३८ वर्ष का एक विकसित मानव बन चुका था, विचारों में भी परिपक्वता आ चुकी थी। इसके अतिरिक्त भी मैं बम्बई में सन् १९५२ - ५४ तक केन्द्रीय सरकार की ओर से विदेशी यात्रियों के लिए एक पथ-प्रदर्शक भी रह चुका था, जिसने उसी कुलबुलाती समस्या को अत्यधिक प्रज्वलित कर दिया था।

दूसरी बार की सायकिल — यात्रा ने भाषा एवं लिपि की समस्या पर मुझे कुछ गहरी दृष्टि से सोचने एवं समझने का अवसर प्रदान किया। एक प्रश्न, जिसका जन्म तो हो चुका था, परन्तु उसका स्पष्ट रूप सामने नहीं आया था, सदैव उठता रहा कि जब भारत की मुख्य १५-१६ भाषाएँ — बोली व लिपि और उनकी लगभग २६५ बोलियों के रूप में शाखाएँ हैं, जिनका एकीकरण असम्भव सा प्रतीत होता है तो विश्व की भाषाओं का एकीकरण तो एक यूटोपियन विचार होगा।

अपने इसी सायकिल — यात्रा — काल में मैंने एक पुरातत्त्व-सम्बन्धी पुस्तक के लिए हैदराबाद में प्रान्तीय सरकार के पुरातत्त्व विभाग के तात्कालिक निदेशक श्री मोहम्मद अब्दुल वहीद से भेंट की और उनसे कुछ चर्चा राष्ट्रभाषा

हिन्दी व उसकी देवनागरी लिपि के सम्बन्ध में हुई तब उन्होंने कुछ प्राचीन लिपियों के अभिलेख दिखाये तथा उनकी एकता पर कुछ प्रकाश डाला। अब क्या था, अन्धे को दो आँखें मिल गयीं, अँधेरी राह पर चलने के लिए अब कभी न बुझनेवाला दीप मिल गया और कुछ अध्ययन के पश्चात् यह भी पता लग गया कि भारत की समस्त लिपियों का एक ही स्रोत ब्राह्मी है। उसी की खोज में लग गयी और अध्ययन की सही दिशा में अग्रसर होने लगा।

जब एक देश में भाषाओं एवं लिपियों की समस्या है तो विश्व में कितनी समस्या होगी? क्या भारत की लिपि देवनागरी का सम्बन्ध विदेशों की लिपियों से है या हो सकता है? क्या भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी — देवनागरी विश्व-भारती के पथ पर अग्रसर हो सकती है? क्या एक भारतीय अपनी राष्ट्रभाषा के द्वारा विश्व की अन्य भाषाएँ सीख सकता है? क्या भारत की तरह विश्व की अन्य लिपियों का स्रोत भी एक है? ऐसे प्रश्नों ने मुझे न केवल विश्व की लिपियों के अध्ययन करने की प्रेरणा प्रदान की, अपितु भिन्न-भिन्न देशों की लिपियों के जन्म व विकास के विषय में शोध करने के लिए विश्व की सायकिल — यात्रा करने के लिए भी प्रेरित किया, जिसके फलस्वरूप मैं १९७४ में ५८ वर्ष की आयु में अपनी सायकिल — यात्रा पर निकल पड़ा और ३५ देशों की यात्रा दो वर्ष में पूरी कर ली। इस यात्रा के पूर्व ही मैंने इस विषय का पर्याप्त ज्ञान प्राप्त कर लिया था और उसको चार पुस्तिकाएँ तथा एक बृहद् ग्रन्थ लिखकर एक रूप भी दे चुका था। इस विश्व — सायकिल — यात्रा में मैंने अनेक पुरातत्त्व — विभागाध्यक्षों से भेंट करके इस विषय पर विचार-विमर्श किया। इस विषय की ऐसी अनेक पुस्तकों व ग्रन्थों का अवलोकन किया जिनका भारत में उपलब्ध होना असम्भव था। स्वीडन तथा जर्मनी में मैंने स्वयं चार्टर्स बनाकर भारत तथा अन्य मुख्य देशों के वर्णों की प्रदर्शनियाँ कीं तथा भाषण दिये। इन कार्यों से मेरे ज्ञान का विस्तार हुआ तथा भारत की देवनागरी लिपि की सरलता का प्रचार हुआ तथा अनेक पाश्चात्य देशवासियों को लिपियों के तुलनात्मक अध्ययन करने का अवसर मिला।

इस पुस्तक में आदिकाल अर्थात् ५००० वर्ष पूर्व से वर्तमान काल तक की लगभग सभी लिपियों के जन्म व विकास की तथा अन्य लिपियों से उनके सम्बन्ध की, विस्तार से प्रमाणों सहित चर्चा की गयी है। जहाँ — जहाँ से प्राचीन लिपियाँ उत्खनन द्वारा निकाली गयीं, वे भिन्न-भिन्न देशों के सारे स्थान मानचित्रों में दिये गये हैं। साथ साथ उन लिपियों का काल एवं देश का — प्राचीन से अर्वाचीन तक का — इतिहास, प्राचीन मानव का लिपियों के विकास में योगदान का रूप तथा अर्वाचीन मानव का उनको पढ़ने का प्रयास, प्रमाण सहित इस पुस्तक में दिया गया है।

सम्भवतः हिन्दी भाषा एवं उसकी देवनागरी लिपि के माध्यम से विश्व की समस्त लिपियों की ध्वनियों को तथा उनके वर्णों को लिपिबद्ध करने का मेरे द्वारा यह प्रथम प्रयास होगा। वैसे तो इसके पूर्व भी एक पुस्तक उर्दू भाषा में विश्व की लिपियों पर श्री मोहम्मद ईशाक सिद्दीकी द्वारा लिखी जा चुकी थी। यह प्रयास एक अन्त नहीं, अपितु इस बात का श्रीगणेश है कि हिन्दी को विश्व-भारती बनाना है तो उसके बुनियाद की भाषा और लिपियों को विश्व की भाषा की दृष्टि से अन्वेषण-ग्रंथ तैयार करने होंगे। भाषा से भी पहले लिपि को महत्त्व देना होगा। इस दृष्टि से भी यह हिन्दी या भारतीय भाषा में प्रथम पुस्तक होगी, ऐसी मेरी धारणा है।

अन्त में मैं उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के उपाध्यक्ष डॉ० शिवमंगल सिंह 'सुमन' जी का अत्यन्त आभारी हूँ, जिन्होंने अपने व्यक्तिगत प्रयास से इस प्रथम व अनोखे ग्रंथ को, प्रकाशित करने का भार वहन किया। मैं आंध्र प्रदेश के पुरातत्व-विभाग के भूतपूर्व निदेशक श्री मोहम्मद अब्दुल वहीद खाँ का भी आभारी हूँ, जिन्होंने इस विषय के अध्ययन की ओर मेरा ध्यान आकर्षित किया तथा मैं विश्व के सभी पुरातत्व-वेत्ताओं का, प्राचीन एवं अर्वाचीन इतिहासकारों का और सभी लिपि-सम्बद्ध शोधकर्ताओं का, लेखकों का, लिपियों के रहस्योद्घाटनकर्ताओं का तथा उत्खननकर्ताओं का अत्यन्त आभारी हूँ, जिनके अथक परिश्रम के परिणामों द्वारा मैं इस ग्रन्थ को पूरा कर सका। इससे भी अधिक मुझे आभारी होना चाहिए और आभारी हूँ, जीवन शिक्षा मुद्रणालय (प्रा०) लि०, वाराणसी के श्री तरुण भाई का, जिनके प्रयास के फलस्वरूप यह ग्रन्थ मुद्रित हो सका। इसके अतिरिक्त भी इस विषय के विद्वानों स्व० श्री सी० शिवराममूर्ति, डॉ० लल्लन जी गोपाल, डॉ० गोवर्धन राय शर्मा, डॉ० रमेशचन्द्र शर्मा, स्व० डॉ० राजबली पाण्डेय आदि का भी आभारी हूँ जिन्होंने समय-समय पर मेरा मार्गदर्शन किया है तथा अपने व्यक्तिगत सहयोग से प्रेरित करते रहे। मैं विश्व के अनेक मुख्य पुस्तकालयाध्यक्षों का तथा उन सभी व्यक्तियों का आभारी हूँ, जिन्होंने इस ग्रन्थ के लेखन तथा प्रकाशन में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया है।

इस बृहद् ग्रन्थ के प्रकाशन में समस्त विश्व की लिपियों के वर्ण, उनकी ध्वनियाँ, अभिलेखों के प्रतिदर्श आदि का यथासंभव प्रामाणिक एवं शुद्ध रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इसके मुद्रण में यदि कुछ अशुद्धियाँ एवं त्रुटियाँ रह गयी हों तो मैं पाठकगणों से क्षमा चाहूँगा तथा भविष्य में ग्रन्थ को त्रुटिरहित बनाने के लिए उनके बहुमूल्य सुझाव एवं विचारों का स्वागत करूँगा।

श्याम निवास,
बाग़ शेरजंग,
लखनऊ—२२६००३

ईश्वरचन्द्र राही

संकेताक्षर

A. S. I.	Archaeological Survey of India.
C. I. I.	Corpus Inscriptionum Indicarum.
C. I. V.	Civilization of Indus Valley.
E. I.	Epigraphica Indica.
E. R.	Epigraphic Researches.
F. E. M.	Further Excavation by Mackay.
I. A.	Indian Antiquary.
I. M. D.	Indus-Valley — Mohenjo-Daro.
I. M. P.	Inscriptions of Madras Presidency.
J.	Journal.
J. I. A. S.	Journal of Indian Asiatic Society.
J. A. S. B.	Journal of Asiatic Society.
J. R. A. S.	Journal of Royal Asiatic Society.
L. S. I.	Linguistic Survey of India of Bengal.
M. D.	Mohenjo-Daro.
M. E. H.	Mackay's Excavation at Harappa.
M. I. C.	Marshall's Indus Civilization.
N. Y.	New York.
P.	Page.
Pl.	Plate.
P. U. B.	Published.
S. I. I.	South-Indian Inscriptions.
Vol.	Volume.

आ०; आधु०	—	आधुनिक
ई०	—	ईसवी
ई० पू०	—	ईसा पूर्व
ई० स०	—	ईसवी सन्
फ० सं०	—	फलक संख्या
तृ०	—	तृतीय
श०	—	शताब्दी

प्रयुक्त शब्दों के विविध रूप

अमेरिका	:	अमरीका	ब्राह्मो	:	ब्राह्मो
अर्साकिड	:	अर्सासिड	बैजेन्टाइन	:	बैजेन्टीन
असुरबनीपाल	:	अशुरबनीपाल	भिन्न	:	भिन्न
इङ्गलैण्ड	:	इंगलैण्ड	मिट्टी	:	मिट्टी
उद्देश्य	:	उद्देश्य	मिस्र	:	मिस्र
उद्भव	:	उद्भव	मैथ्यु	:	मैथिउ
कम्बोडिया	:	कम्पूचिया	युद्ध	:	युद्ध
केल्ट	:	सेल्ट	युरोप	:	यूरोप, यूरोप
कन्द्रा	:	कन्दरा	व्यञ्जन	:	व्यंजन
क्रम	:	कूम	लिये	:	लिए
खेमर	:	खेमिर	संभव	:	सम्भव
गई	:	गयी	संबन्ध	:	सम्बन्ध
ग्यान	:	ज्ञान	सेमेटिक	:	सेमिटिक
गेल्व	:	जेल्व	हण्टर	:	हन्टर
चित्र	:	चित्र	हेरोग्लिफ्स	:	हेरोग्लिफ्स
चिन्ह	:	चिह्न	हेरेटिक	:	हैरेटिक
चिन्तन	:	चितन	हैड्रामात	:	हैड्रमजत
जिह्वा	:	जिह्वा	होजनी	:	हूरोज्नी
दायें	:	दाएँ	ख	:	ख
टियूनिस	:	ट्युनिस	झ	:	झ
डच्छ	:	डच	ण	:	रा
पियू	:	प्यू	१	:	१
पश्चात्	:	पश्चात्	४	:	४
फ्रीजिया	:	फ्रीजिया	५	:	५
फ्रांस	:	फ्रांस	८	:	८
बायें	:	बाएँ	९	:	९

कुछ विशेष संयुक्ताक्षर

ळ	=	ल	+	ड़	तमिळ
सं	=	स	+	म	संभव
क्ष	=	क	+	श	कक्षा
ज्ञ	=	ग	+	य	ज्ञान
श्री	=	श	+	री	श्रीमान्
स्र	=	स	+	र	मिस्र
त्र	=	त	+	र	मित्रता
स्य	=	स	+	य	राजस्य
अं	=	अ	+	न्	अंक
ह्वा	=	व	+	ह	जिह्वा
ह्व	=	न	+	ह	चिह्न
हृ	=	ह	+	र	हृदय
न्ध्र	=	न	+	ध + र	आन्ध्र
त्त	=	त	+	त	दत्त
क्य	=	क	+	य	चालुक्य
क्त (क्त)	=	क	+	त	शक्ति (शक्ति)
ण्ड	=	ण	+	ड	पाण्डेय
कृ	=	क	+	रि	कृपा
ष्ण	=	ष	+	ण	कृष्णा
प्र	=	प	+	र	प्रपात
द्व	=	द	+	व	द्वार
श्व	=	श	+	व	ईश्वर
न्द	=	न	+	द	नन्द
र्म	=	र	+	म	कर्म
म्ब	=	म	+	व	सम्बन्ध
क्र	=	क	+	र	क्रम
ख्य	=	ख	+	य	संख्या
ष्ट	=	ष	+	ट	कष्ट

अनुक्रम

क्या

कहाँ

प्रारम्भिक :

प्रस्तावना	V
प्राक्कथन	VII
दो शब्द	IX
संकेताक्षर	XIII
प्रयुक्त शब्दों के विविध रूप	XIV
कुछ विशेष संयुक्ताक्षर	XV
पृष्ठबोधिनी	XVII
लिपियों के फलों (Plates) की तालिका	XXV
मानचित्रों की तालिका	XXXI

पृष्ठबोधिनी

अध्याय : १

विषय प्रवेश -

परिचय :

भाषा : भाषा की परिभाषा; शब्द व वाक्य; भाषा की उत्पत्ति; भाषा का प्रसार; बोली और

भाषा; भाषा में स्वर व व्यंजन; संसार की भाषाओं में अन्तर; पठनीय सामग्री

लिपि : लिपि की उपयोगिता; लिपि की काल्पनिक उत्पत्ति; लिपि की प्रामाणिक उत्पत्ति; लिपियों का वर्गीकरण; अक्षरात्मक लिपि; वर्णात्मक लिपि; रेखाक्षरात्मक लिपि; लिपि का कौटुम्बिक

वर्गीकरण; पठनीय सामग्री

पुरातत्त्व : पठनीय सामग्री

कार्बन - १४ द्वारा काल निर्धारण

प्राचीन इतिहास

३

७

१७

१६

२१

२२

अध्याय : २

दक्षिण एशियाई देशों की लेखन कला का इतिहास—

सिन्धु घाटी : ऐतिहासिक घटना; इतिहास; लिपि; एल० ए० वड्डेल; प्रो० विलियम मैथ्यु फिलिण्डर्स प्रेटी; डा० जी० आर० हण्टर; फ़ादर यच्च० हेरास; सुधांशु कुमार रे; डा० प्राणनाथ विद्यालंकार; श्री राजमोहन नाथ; स्वामी शंकरानन्द; हर पी० मेरिग्गी; एस्को परपोला, सीमो परपोला आदि; डा० क़तेह सिंह; श्री एस० आर० राव; श्री एम० बी० कृष्ण राव; श्री० एल० एस० बाकणकर; डब्लोफ़र; श्री बांके बिहारी चक्रवर्ती; श्री जॉन न्यूवेरी; शंकर हाजरा; ह्योज़नी द्वारा रहस्योद्घाटन; रूसी विद्वानों द्वारा रहस्योद्घाटन; पशुपति — मुद्रा के विविध स्पष्टीकरण; सुमेर की मुद्रा; अभिलेखों तथा मुद्राओं का विवरण; सिन्धु — घाटी के विषय में कुछ अन्य बातें; पठनीय सामग्री

७५

भारत का इतिहास : परिचय; क्रान्ति युग; मौर्य वंश; शुंग वंश; काण्व वंश; आन्ध्र सातवाहन वंश; शक वंश; पल्लव वंश; कुषाण वंश गुप्त; मैत्रक वंश; गुर्जर वंश; गुहिलोत वंश; मौखिरि वंश; वर्धन वंश; उत्तर भारत के राजपूत वंश; दक्षिण भारत के वंश; मुसलमानों का आगमन; मरहटों का उत्थान; सिक्ख; विदेशियों का आगमन; पठनीय सामग्री

६४

भारत की लिपियाँ : ब्राह्मी लिपि के गूढ़ाक्षरों का रहस्योद्घाटन; खरोष्ठी लिपि; खरोष्ठी लिपि — दूसरी शताब्दी; विवादास्पद काल की प्राचीन ब्राह्मी; उत्तरी ब्राह्मी — ई० पू० तीसरी श०; उत्तरी ब्राह्मी — दूसरी श० (क्षत्रप); उत्तरी ब्राह्मी — दूसरी श० (कुषाण); उत्तरी ब्राह्मी — चौथी श० (गुप्त लिपि); दक्षिणी ब्राह्मी — ई० पू० दूसरी श०; दक्षिणी ब्राह्मी — दूसरी श०; दक्षिणी ब्राह्मी — तीसरी श०; दक्षिणी ब्राह्मी — चौथी श०; दक्षिणी ब्राह्मी — पांचवीं श०; कुटिल लिपि; तमिल लिपि; तमिल लिपि — सातवीं श०; तमिल लिपि का विकास; वट्टेलुत्तु लिपि; ग्रन्थ लिपि — सातवीं श०; ग्रन्थ लिपि — तेरहवीं श०; ग्रन्थ लिपि का विकास; पश्चिमी लिपि — छठी श०; कन्नड़ लिपि — छठी श०; कन्नड़ लिपि का विकास; तेलुगु लिपि; तेलुगु लिपि का विकास; बंगला लिपि बारहवीं श०; कामरूप की बंगला लिपि; बंगला लिपि का विकास; उड़िया लिपि — ग्यारहवीं श०, गंगवंश; उड़िया लिपि पन्द्रहवीं श०; शारदा लिपि का विकास; मौढ़ी लिपि; उत्तर — पूर्व की मध्यकालीन लिपियाँ (मैथिल, तिरहुतिया, भोजपुरी, मागधी, कैथी, अहोम, खाम्ती, मेई — धेई); उत्तर — पश्चिम की मध्य — कालीन लिपियाँ

(उर्दू, अरबी — सिन्धी, बनियाकर, हिन्दी — सिन्धी, टाकरी, लाण्डा, गुरमुखी) कुछ आधुनिक लिपियाँ (मलयालम, तुलु, उड़िया, गुजराती); देवनागरी लिपि (देवनागरी का जन्म, देवनागरी नामकरण के विविध कारण, देवनागरी लिपि की कुछ विशेषतायें, देवनागरी लिपि के कुछ दोष; देवनागरी म्यारहवीं श०; देवनागरी बारहवीं श०; देव — नागरी का विकास; देवनागरी में संशोधन (स्वामी सत्य भक्त द्वारा, श्री श्रवण कुमार द्वारा, रामनिवास द्वारा, हिन्दी — साहित्य — सम्मेलन द्वारा, श्री बी० बी० लाल द्वारा, कुछ अन्य सुधारकों द्वारा, शासकीय सुधार); देवनागरी — ब्रॅल — लिपि; देवनागरी — आशु — लिपि; अंक; पठनीय सामग्री	२०३
नेपाल : इतिहास; लेखन कला (किरात — लिपि, रंजना — लिपि, भुजिमोल; नेवारी — लिपि); संयुक्त वर्ण (किरात, रंजना, भुजिमोल); पठनीय सामग्री	२०६
सिक्किम : इतिहास; लिपि; पठनीय सामग्री	२१५
श्री लंका : इतिहास; लिपि; पठनीय सामग्री	२२०
माल्डीव द्वीप — समूह : इतिहास; लिपियों का जन्म (देवही लिपि, जवालीटूरा); पठनीय सामग्री	२२२

अध्याय : ३

पश्चिमी एशियाई देशों की लेखन कला का इतिहास —

मेसोपोटामिया — १ : इतिहास; पठनीय सामग्री	२३४
मेसोपोटामिया — २ : लेखन कला (सुमेर की रेखा — चित्रात्मक लिपि, सुमेर के अन्य रेखा — चित्र, उत्खनन तथा रहस्योद्घाटन, हम्मूराबी का प्रसिद्ध शिलालेख, असीरियन लिपि के व्यंजन व स्वर, असीरियन लिपि के कुछ निर्धारक शब्द, प्राचीन तथा नव — बेबीलोनी लिपि, कीलाकार लिपि का कालानुसार परिवर्तन, सुमेर की संख्या पद्धति, असीरिया की संख्या पद्धति); पठनीय सामग्री	२४६
पर्शिया (ईरान) : इतिहास; पठनीय सामग्री	२५४
पर्शिया की लेखन कला : आरम्भिक काल; कीलाकार लिपि का रहस्योद्घाटन; अक्कादियन भाषा का रहस्योद्घाटन; बहु — ध्वनीय चिह्न; भावात्मक, निर्धारक, अक्षरात्मक चिह्न, बेहिस्तून शिलालेख का आंशिक पाठ; बेहिस्तून शिलालेख का सूसियन पाठ; बेहिस्तून शिलालेख का बेबीलोनी पाठ; पहलवी लिपि (अरसाकिड पहलवी, ससानिड लिपि, ससानिड ग्रन्थ लिपि) अवैस्त; पठनीय सामग्री	२६६

- फिनीशिया** : इतिहास; लेखन कला (बिबलास; बिबलास के वर्ण तथा उनके रूप भेद; मोआब की लिपि; मध्य काल की फिनीशियन लिपि; प्यूनिक लिपि; कनआन की लिपि) ३०८
- युगारिट** : इतिहास; लिपि तथा रहस्योद्घाटन; पठनीय सामग्री ३०८
- हत्तुशा** : इतिहास; हित्ती लिपि का रहस्योद्घाटन; आर देशों की चित्रात्मक लिपियों की तुलना; पठनीय सामग्री ३२४
- इस्त्रायल** : इतिहास; इस्त्रायल की लिपियाँ (हेब्रू - प्राचीन, आधुनिक); समारिया की लिपियाँ (शिलालेख, वाइबिल, शीघ्र - लेखन); पठनीय सामग्री ३३४
- सोरिया** : इतिहास; सोरिया की लिपियाँ (अरमायक लिपि, पालमोरा लिपि, अरमायक लिपि की विशिष्ट शाखा, जेबेद लिपि, ऐस्ट्रेंजलो लिपि, नेस्टोरियन लिपि, जैकोबाइट लिपि - १ व २, सोरिया की कर्गुनी या मालावारी लिपि) ३४३
- फ्रीजिया** : इतिहास; लिपि ३४३
- लीकिया** : इतिहास; लेखन कला; लीकिया का एक द्विभाषिक अभिलेख ३४६
- लीडिया** : इतिहास; लिपि ३५१
- केरिया** : इतिहास; लिपि; सिडेटिक भाषा (परिचय, लिपि, रहस्योद्घाटन); यजोदी लिपि (इतिहास, लिपि); पठनीय सामग्री ३५८
- अरेबिया** : इतिहास (मोनियन राज्य, सैबियन राज्य, हिमारी राज्य, होरा राज्य, इस्लाम राज्य); अरेबिया की लिपियाँ (नब्ती, थामुडिक - हेजाज, तज्द, मण्डायक लिपि, सफ्रातैनी लिपि, सफ्रातैनी का प्रतिदर्श, लिहियानिक); सिनाइ की लिपियाँ - परिचय; सिनाइ की प्राचीन लिपि; सिनाइ की अरबी लिपि; सबा की लिपि; अरबी लिपि की अन्य शाखाएँ (जेबेद लिपि, कूफा की लिपि, मगरिबी, नस्ख) नस्ख लिपि का विकास; अरबी लिपि के विषय में कुछ अन्य बातें ३८५
- अरमेनिया** : इतिहास; अरमेनिया की लिपियाँ (बोळर - अजिर, मुद्रणार्थ - हस्तलेखनार्थ) ३८७
- जॉर्जिया** : इतिहास; जॉर्जिया की लिपियाँ (खुतसुरी, मेहदूली); पठनीय सामग्री ३८३

अध्याय : ४

मध्य व पूर्व एशियाई देशों की लेखन कला का इतिहास -

तिब्बत : इतिहास; तिब्बत की लिपियाँ (यु - चेन एवं यु - मेद लिपियाँ, पस्सेपा, बाल्टी लिपि, यु - चेन लिपि का प्रतिदर्श, यु - मेद लिपि का प्रतिदर्श); पठनीय सामग्री ४०८

चीन : इतिहास (शिया वंश, इन या शांग वंश, चाउ वंश, चीन वंश, हान वंश, सुई वंश, तांग वंश, पाँच वंश, सँग वंश, युआन वंश, मिंग वंश, मंचू वंश); चीन की लेखन कला परिचय, चीनी व्याकरण की एक झलक, चीन में साक्षरता, चीनी लिपि की विदेश यात्रा, चीनी लिपि का सुधार; चीन की लिपियाँ (बा गुआ, चीन की प्राचीन लिपि, चीनी लिपि का कालानुसार विकास, चीनी लिपि की ध्वनि - बल, चीनी लिपि के चार टोन, चीनी लिपि का वर्गीकरण - वस्तु चित्र, सांकेतिक चित्र, संयुक्त - सांकेतिक चित्र, क्रम द्वारा निर्मित चित्र, ध्वनि सूचक चित्र, ग्रहण किये हुये चित्र); मुलेख; चीनी लिपि को लेखन - पद्धति; लिपि का सरलीकरण, चीनी भाषा की ध्वनियाँ; इनीशियल्स की तालिका; फाइनल्स की तालिका; चीनी लिपि की ध्वन्यात्मक पद्धति - १, २, ३; शाब्दिक चित्रों की लिखने की पद्धति; आठ मौलिक रेखायें; चीनी लिपि के अंक; चीन के दक्षिणी भाग की लोलो लिपि; म्याओ - ल्से लिपि; मोसो लिपि; ची तान लिपि; पठनीय सामग्री ४५६

मध्य एशिया : मंगोलिया का इतिहास, मंगोलिया की लिपियाँ (उइगुरी लिपि, गालिक लिपि, मंगोल लिपि - १, २, कालमुक लिपि, बुरियात लिपि); मंचूरिया - इतिहास, लिपि; सोमिया - इतिहास, लिपि; साइबेरिया - इतिहास, साइबेरिया की लिपियाँ (यानिसो लिपि, ओरहून लिपि; मनीकी लिपि - इतिहास, लिपि); पठनीय सामग्री ४७९

कोरिया : इतिहास (सिल्ला राज्य, कोजुरियो राज्य, पैक्ची राज्य); कोरिया की लेखन कला (पुमसो लिपि, ओनमुन लिपि) पठनीय सामग्री ४८६

जापान : इतिहास; लेखन कला (दैवी लिपि कताकाना लिपि, हीरागाना लिपि, जापान की लेखन पद्धति, चीनी, कायशू लिपि से जापानी वर्णों का विकास, जापानी अक्षर विन्यास, जापानी लिपि के कुछ उदाहरण); पठनीय सामग्री ५०४

अध्याय : ५

दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों की लेखन कला का इतिहास -

ब्रह्मा : इतिहास (पागन वंश, शान वंश, तुंगू वंश, अलंग पाया वंश); लेखन कला (चतुष्कोण पाली, मुलेख पाली, आधुनिक गोलाकार लिपि, पेगुअन लिपि, चक्रमा लिपि ५१४

थाईलैण्ड : इतिहास; लेखन कला (बोरोमात लिपि, पतीमोखा लिपि, प्राचीन थाई लिपि, आधुनिक लिपि) ५२३

लाओस : इतिहास; लेखन कला ५२५

कम्पूचिया : इतिहास; लेखन कला (मूल अक्षर, संशोधित लिपि, आधुनिक लिपि)	५२७
फिलिपाइन्स : इतिहास; लिपि (तगाला)	५२७
हिन्देशिया : इतिहास; लेखन कला	५३२
जावा : इतिहास; लिपि (कवि, जावा की दूसरी लिपि)	५३५
सुमात्रा : इतिहास; लिपि (रेदजांग, लम्पोंग)	५३७
सिलेबीस : इतिहास; लेखन कला (बुगनो मकासर); पठनीय सामग्री	५४२

अध्याय : ६

अफ्रीका महाद्वीप के देशों की लेखन कला का इतिहास —

मिस्र : इतिहास (प्रथम वंश, द्वितीय वंश, तृतीय वंश, चतुर्थ वंश, पाँचवाँ वंश, छठवाँ वंश, सातवाँ वंश, आठवाँ वंश, नवाँ वंश, दसवाँ वंश, ग्यारहवाँ वंश, बारहवाँ वंश, तेरहवाँ वंश, चौदहवाँ वंश, पन्द्रहवाँ वंश, सोलहवाँ वंश, सत्रहवाँ वंश, अठारहवाँ वंश, उन्नीसवाँ वंश, बीसवाँ वंश, इक्कीसवाँ वंश, बाईसवाँ वंश, तेइसवाँ वंश, चौबीसवाँ वंश, पच्चीसवाँ वंश, छब्बीसवाँ वंश, सत्ताइसवाँ वंश, अट्ठाइसवाँ वंश, उन्तीसवाँ वंश, तीसवाँ वंश, एकतीसवाँ वंश, ग्रीक वंश, मिस्र रोम के अन्तर्गत, मिस्र देश की लेखन कला) हेरोग्लिफ्स, उसका रहस्योद्घाटन, चित्रात्मक, संकेतात्मक, ध्वन्यात्मक, निर्धारित शब्द, एक — वर्णिक, द्वि — वर्णिक, त्रै — वर्णिक, हेरेटिक, लिपि का विकास, एक चित्र दो ध्वनियाँ, दो चित्र एक ध्वनि, एक चित्र दो ध्वनियाँ, हेरोग्लिफ्स तथा हेरेटिक के प्रतिदर्श, हेरेटिक का विकास, हेरोग्लिफ्स एवं हेरेटिक के अभिलेख, डिमाटिक के वर्ण, प्रतिदर्श, काप्टिक लिपि, प्रतिदर्श मिरोइटिक, डिमाटिक एवं अभिलेख, अंक, हेरेटिक अंक	५६४
नुमीदिया : इतिहास, लिपि (नुमीदियन, बर्बर उनके आंशिक पाठ, तुर्वेतेनियन	६०२
कैमेरून : इतिहास, लिपि (बामुन)	६०२
सोमाली लैण्ड : इतिहास, सोमाली लिपि	६०४
लिबेरिया : इतिहास, बई लिपि	६०७
सियरैलियोन : इतिहास, मेण्डे लिपि	६१३
नाइजेरिया : इतिहास, यनसिब्बी लिपि	६१७
अबोसीनिया : इतिहास, लिपि (प्राचीन)	६१७
इथियोपिया : इतिहास, लिपि	६२५

अध्याय : ७

यूरोपीय देशों की लेखन कला का इतिहास

सायप्रस : इतिहास, लेखन कला (सिप्रियाटिक लिपि का क्रेटन लिपि से सम्बन्ध, सिप्रियाटिक लिपि का अभिलेख)	६३२
ग्रीस : इतिहास, ग्रीक वर्णों का विकास	६४१
क्रीट व माइसीनिया : इतिहास (क्रीट, माइसीनिया); लेखन कला (पूर्वकालीन युग, मध्यकालीन युग, उत्तरकालीन युग, क्रीट की चित्रात्मक लिपि, माइसीनिया की वर्णावली, पाइलस की त्रिपद पाटिया, क्रीट की लाइनियर - 'ए', फेस्टास चक्रिका)	६५६
ग्रीस के नगर राज्य : कोरिथ - इतिहास; लिपि । ऐथेन्स - इतिहास; लिपि । बोयेशिया - इतिहास, लिपि । आर्केडिया - इतिहास, लिपि । पठनीय सामग्री	६६६
इटली : नगर - राज्यों में विभाजित था उन्हीं का वर्णन निम्नलिखित है :—	
इट्रूरिया : इतिहास (हेरोडोटस के अनुसार, डायोनीसियस, एफ० दि संसुरे, वी० थामसेन) एट्रस्कन लिपि	६७२
कम्पेनिया : इतिहास (कपुआ नगर, नोला, पोम्पेआई), लिपि (ओस्कन)	६७४
अम्ब्रिया : इतिहास, लिपि	६७५
फलेरीआई : इतिहास, लिपि (फैलिस्कन)	६७८
रेशिया : इतिहास, लिपि (बोल्जानो, माग्ने, सोन्ड्रियो)	६७८
उत्तरी इटली : लिपि (लुगानो, वेनेती, कांसे की पाटिया)	६८५
लैटियम : इतिहास, लिपि (लैटिन, मैनियस की कटार, वर्णों का विकास); पठनीय सामग्री	६८८
गोथिया : इतिहास (पूर्वी गोथ, पश्चिमो गोथ); लिपि (गोथिक)	६९४
बुल्गारिया : इतिहास (मोराविया का इतिहास); लिपियाँ (ग्लेगोलिथिक, प्राचीन सीरिलिक बुल्गारी सीरिलिक)	६९८
रूस : इतिहास; लिपि (सीरिलिक, सीरिलिक के कुछ शब्द); पठनीय सामग्री	७०६
आयरलैण्ड : इतिहास (आइबेरियन्स, ब्रिटन्स, ड्रूइड्स, नगर एवं जागीरों का निर्माण आदि); लिपियाँ (ओगम, रोमन लिपि)	७१४
हंगेरी : इतिहास, लिपि (प्राचीन लिपि, निकोल्स नर्ग लिपि)	७२०
जर्मनी : इतिहास; लिपि (रून)	७२३

नार्वे-स्वीडन-डेनमार्क : इतिहास (नार्वे, स्वीडन, डेनमार्क), लिपियाँ (तीन देशों की रूनी लिपि; विन्दी वाले रून, दलसका रून)	७२६
प्राचीन इंग्लैण्ड : इतिहास (ऐंगिल, सैक्सन); लिपि (ऐंगलो-सैक्सन रून, अभिलेख, बार्डी लिपि)	७३३
रुमानिया : इतिहास; लिपि	७३६
अल्बेनिया : इतिहास; लिपि; पठनीय सामग्री	७३७

अध्याय : ८

अमरीकी देशों की लेखन कला का इतिहास —

मैक्सिको : इतिहास ; लेखन कला (अज़टेक-पंचांग, अज़टेक-अंक, अज़टेक चित्र-लिपि, अज़टेक के अन्य चित्र, विश्वोत्पत्ति की कहानी, एक रेडइण्डियन की कहानी)	७४८
युकैटान : इतिहास; लिपि (मय चित्र लिपि के वर्ण -- लान्दा द्वारा, अंक, मय का पंचांग)	७५३
अलघेनी : इतिहास; चैरोकी लिपि	७५५
मैनीटोबा : इतिहास; क्री लिपि	७५५
एलास्का : इतिहास; लिपि (एलास्का की लिपि, मोटजेबू क्षेत्रकी चित्र लिपि)	७६१
ईस्टर द्वीप : इतिहास; लिपि	७६२
कुछ अन्य लिपियाँ : आशु लिपि; ब्रेल लिपि; पिक्टो लिपि; विशिष्ट चिह्नों का प्रयोग	७६८
उद्बोधन :	७६९

परिशिष्ट

परिभाषिका
परिभाषिक शब्दावली
अनुक्रमणिका (हिन्दी)
अनुक्रमणिका (अंग्रेजी)

लिपियों के फलकों (Plates) की तालिका (प्रथम खण्ड)

क्रम सं०	फ० सं०	विवरण	पृष्ठ
१	१	भ्रूण लिपि	११
२	२	चित्रात्मक लिपि	१२
३	३	सूत्रात्मक लिपि	१३
४	४	ध्वन्यात्मक लिपि	१५
५	५	लिपि का कौटुम्बिक वर्गीकरण	१७
६	७	एल० ए० वड्डेल	३०
७	८	प्रो० पेटी	३१
८	९	डा० जी० आर० हण्टर	३२
९	१०	" "	३३
१०	११	" "	३४
११	१२	फ्रादर यच० हेरास	३५
१२	१३	" "	३६
१३	१४	" "	३७
१४	१५	" "	३८
१५	१६	श्री रे द्वारा ब्राह्मी लिपि के १३ चिह्नों की तुलना	४०
१६	१७	सुधांशु कुमार रे	४१
१७	१८	" "	४२
१८	१९	" "	४३
१९	२०	डा० प्राण नाथ	४५
२०	२१	श्री राज मोहन नाथ	४६
२१	२२	स्वामी शंकरानन्द	४७
२२	२३	" "	४८
२३	२४	" "	४९
२४	२५	हर पी० मेरिणी	५१
२५	२६	परपोला	५२
२६	२७	डा० फतेह सिंह	५४
२७	२८	" "	५५
२८	२९	" "	५६
२९	३०	श्री एस० आर० राव	५७
३०	३१	श्री कृष्णा राव	५८
३१	३२	" "	६०
३२	३३	श्री एल० एस० वाक्कणकर	६१

क्रम सं०	फ० सं०	विवरण	पृष्ठ
३३	२१	सिन्धु-घाटी व ईस्टर द्वीप चिह्नों की तुलना	६२
३४	२२	बांके बिहारी चक्रवर्ती	६३
३५	२३	जॉन न्यूबेरी	६५
३६	२४	शंकर हाजरा द्वारा रहस्योद्घाटन	६६
३७	२५	होज्जी द्वारा रहस्योद्घाटन	६७
३८	२५क	रूसी विद्वानों द्वारा रहस्योद्घाटन	६७
३९	२६	पशुपति-मुद्रा के विविध स्पष्टीकरण	७०
४०	२७	सुमेर की मुद्रा	७१
४१	२८	सिन्धु - घाटी - लिपि के चिह्न	७२
४२	२८क	" "	७३
४३	३६	सेमिटिक व सिन्धु - घाटी के चिह्नों की ब्राह्मी के अक्षरों की तुलना	८८
४४	३८	खरोष्ठी लिपि के वर्ण	१०३
४५	३८क	खरोष्ठी के कुछ अन्य संश्लिष्ट वर्ण	१०४
४६	३८ख	खरोष्ठी लिपि - दूसरी श०	१०५
४७	३८ग	" "	१०६
४८	३९	निवादास्पद काल की प्राचीन ब्राह्मी	१०८
४९	४०	उत्तरी ब्राह्मी लिपि - ई० पू० तीसरी श०	११०
५०	४०क	" "	१११
५१	४०ख	गिरनार शिलालेख के कुछ शब्द	११२
५२	४१	उत्तरी ब्राह्मी (क्षत्रप) दूसरी श०	११४
५३	४१क	" "	११५
५४	४२	" " (कुषाण)	११५
५५	४३	" " (गुप्त लिपि) चौथी श०	११७
५६	४४	दक्षिणी ब्राह्मी - ई० पू० दूसरी श०	११८
५७	४४क	" " के अभिलेख	१२०
५८	४५	दक्षिणी ब्राह्मी - दूसरी श०	१२२
५९	४६	" " तीसरी श०	१२३
६०	४७	" " चौथी श०	१२४
६१	४८	" " पाँचवी श०	१२६
६२	४९	कुटिल लिपि	१२८
६३	५०	तमिल लिपि - सातवीं श०	१३०
६४	५१	तमिल लिपि का विकास	१३१
६५	५२	वट्टेलुत्तु लिपि ग्यारहवीं श०	१३३
६६	५३	ग्रन्थ लिपि - सातवीं श०	१३५
६७	५४	" " तेरहवीं श०	१३६

क्र० सं०	फ० सं०	विवरण	पृष्ठ
६८	५५	ग्रन्थ लिपि का विकास	१३७
६९	५६	पश्चिमी लिपि - छठी श०	१३९
७०	५७	कन्नड़ लिपि - छठी श०	१४१
७१	५८	" " का विकास	१४३
७२	५८ क	" " " "	१४४
७३	५९	तेलुगु लिपि - दसवीं श०	१४६
७४	६०	" " - ग्यारहवीं श०	१४७
७५	६१	" " - तेरहवीं श०	१४८
७६	६२	" " - का विकास	१४९
७७	६३	बंगला लिपि - बारहवीं श०	१५१
७८	६४	कामरूप की बंगला लिपि	१५२
७९	६५	बंगला लिपि का विकास	१५३
८०	६६	उड़िया लिपि - ग्यारहवीं श०	१५५
८१	६६ क	" " - " "	१५६
८२	६७	" " - पन्द्रहवीं श०	१५८
८३	६८	शारदा लिपि का विकास	१५९
८४	६९	मौड़ी लिपि - सत्तरहवीं श०	१६१
८५	७०	मैथिल लिपि	१६२
८६	७१	तिरहुतिया लिपि	१६३
८७	७२	भोजपुरी लिपि	१६४
८८	७३	मागधी (भगही) लिपि	१६५
८९	७४	कैथी लिपि	१६६
९०	७५	अहोम लिपि	१६७
९१	७६	खाम्ती लिपि	१६९
९२	७७	मेई - मेई लिपि	१७०
९३	७८	उर्दू लिपि	१७१
९४	७९	अरबी - सिन्धी लिपि	१७३
९५	८०	बनियाकर लिपि	१७४
९६	८१	हिन्दी - सिन्धी लिपि	१७५
९७	८२	ठाकरी लिपि	१७६
९८	८३	लाण्डा लिपि	१७८
९९	८४	गुरमुखी लिपि	१७९
१००	८५	मलयालम लिपि	१८०
१०१	८६	तुलु लिपि	१८१
१०२	८७	उड़िया लिपि	१८२

क्र० सं०	फ० सं०	विवरण	पृष्ठ
१०३	८८	गुजराती लिपि	१८३
१०४	८९	मुख्य भारतीय लिपियों के कुछ शब्द	१८४
१०५	९१	देवनागरी का जन्म	१८६
१०६	९२	देवनागरी — ग्यारहवीं श०	१९०
१०७	९३	„ — बारहवीं श०	१९१
१०८	९४	„ का विकास	१९२
१०९	९४ क	„ „ „	१९३
११०	९५	स्वामी सत्यभक्त द्वारा सुधार	१९५
१११	९६	श्रवण कुमार गोस्वामी द्वारा सुधार	१९७
११२	९७	देवनागरी के कुछ अन्य संशोधित रूप	१९८
११३	९८	नेत्रहीनों के लिये ब्रेल लिपि	१९९
११४	९९	देवनागरी आद्यु — लिपि	२०१
११५	१००	अंक	२०२
११६	१०२	नेपाल की लिपियाँ	२०८
११७	१०३	मुलेख के लिये कुछ सुन्दर लिपियाँ	२०८
११८	१०४	किरात लिपि के संयुक्त वर्ण	२०९
११९	१०५	रंजना „ „ „ „	२१०
१२०	१०६	भुर्जिमोल „ „ „ „	२११
१२१	१०८	सिक्किम की लेप्चा या रोंग लिपि	२१४
१२२	११०	सिंहली लिपि	२१६
१२३	११० क	„ „ शब्द व संयुक्त अक्षर	२२०
१२४	१११	माल्डीव की लिपियाँ	२२२
१२५	११४	सुमेर की रेखा — चित्रात्मक लिपि	२३६
१२६	११५	सुमेर के रेखाचित्र	२३७
१२७	११६	असोरियाई कीलाक्षरों का विकास	२४०
१२८	११७	बेबीलोन की कीलाकार लिपि	२४१
१२९	११८	हम्मूराबी की विधि — संहिता	२४२
१३०	११९	असीरियन लिपि के व्यंजन तथा स्वर	२४४
१३१	१२०	„ अंक	२४६
१३२	१२४	एलाम की प्राचीन लिपि	२५६
१३३	१२५	बेहिस्तून का शिलालेख	२५६
१३४	१२६	बेहिस्तून की शिला पर मूर्तियों का विवरण	२६०
१३५	१२७	कीलाकार अक्षर	२६२
१३६	१२८	„ चिह्न	२६४
१३७	१२९	„ अक्षर	२६४
१३८	१३०	„ शब्द	२६५

क्रम सं०	फ० सं०	विवरण	पृष्ठ
१३९	१३१	कीलाकार अक्षर	२६६
१४०	१३२	" "	२६६
१४१	१३३	" वर्णावली	२७०
१४२	१३४	" बहु - ध्वनीय चिह्न	२७२
१४३	१३५	भावात्मक, निर्धारक, अक्षरात्मक चिह्न	२७३
१४४	१३६	असीरियाई - बेबीलोनी लिपि के निर्धारक - अक्षरात्मक चिह्न	२७४
१४५	१३७	प्राचीन सुमेर तथा नव - असीरियाई लिपियाँ	२७५
१४६	१३८	बेहिस्तून शिलालेख का आंशिक पाठ	२७६
१४७	१३८ क	" " " " "	२७७
१४८	१३८ ख	" " " " "	२७८
१४९	१३९	" " " सूसियन पाठ	२८०
१५०	१४०	" " " बेबीलोनी पाठ	२८१
१५१	१४१	पहलवी लिपि के रूप	२८३
१५२	१४२	जैन्द - अवेस्ता लिपि	२८४
१५३	१४३	ससानिड पहलवी तथा जैण्ड	२८५
१५४	१४५	प्राचीन फ़िनीशियन चिह्नों की तुलना, क्रीट के चिह्नों से	२८१
१५५	१४६	फ़िनीशिया लिपि के वर्ण	२८२
१५६	१४७	बिबलास के वर्ण	२८४
१५७	१४८	बिबलास का एक लघु अभिलेख	२८५
१५८	१४९	फ़िनीशियन लिपि के कालानुसार रूप	२८६
१५९	१५०	अहिराम का अभिलेख	२८८
१६०	१५० क	मेशा का अभिलेख	२८८
१६१	१५० ख	मध्यकालीन फ़िनीशियन का प्रतिदर्श	२८९
१६२	१५१	प्यूनिक लिपि	३००
१६३	१५२	कनआन की लिपि	३०१
१६४	१५३	युगारिट की लिपि	३०३
१६५	१५४	" " "	३०४
१६६	१५५	" " "	३०४
१६७	१५६	" " "	३०५
१६८	१५७	" " "	३०६
१६९	१५९	तारकोण्डेमस मुद्रा	३१४
१७०	१५९ क	तारकोण्डेमस मुद्रा (भीतरी भाग)	३१३
१७१	१६०	हिती चित्रात्मक लिपि	३१५
१७२	१६१	एक द्विभाषिक अभिलेख	३१६
१७३	१६२	भावात्मक चित्र-लिपि के कुछ पठन	३१७

क्रम सं०	फ० सं०	विवरण	पृष्ठ
१७४	१६३	सर्वनाम चिह्न	३१८
१७५	१६४	अन्य चिह्न	३१८
१७६	१६५	अन्य चिह्न	३१९
१७७	१६६	एक अभिलेख	३२१
१७८	१६७	चार देशों की चित्रात्मक लिपियों की तुलना	३२३
१७९	१६९	हेब्रू लिपि की वर्णमाला	३२९
१८०	१७०	हेब्रू लिपि के प्रतिदर्श	३३०
१८१	१७१	समारिया की लिपियाँ	३३३
१८२	१७३	अरमायक व पालमीरी लिपियाँ	३३६
१८३	१७४	अरमायक लिपि की एक विशिष्ट शाखा	३४१
१८४	१७५	जेबेद, एस्ट्रेजलो आदि	३४२
१८५	१७६	सीरिया की कर्णुनी	३४४
१८६	१७८	फ्रीजिया की लिपि	३४६
१८७	१७९	लीकियन लिपि	३४७
१८८	१८०	लीकियन लिपि (द्विभाषिक अभिलेख)	३४८
१८९	१८२	लीडिया की लिपि-एक प्रतिदर्श	३५२
१९०	१८३	कैरियन लिपि के अक्षर	३५४
१९१	१८४	सिडेटिक लिपि	३५५
१९२	१८५	यजोदी लिपि	३५६
१९३	१८८	नबात की नब्ती लिपि	३६५
१९४	१८८ क	प्रतिदर्श	३६४
१९५	१८९	हेजाज और नज्द की लिपियाँ	३६७
१९६	१८९ क	थामुडिक (हेजाज) का प्रतिदर्श	३६६
१९७	१९०	मण्डायक, सफ़ातैनी, उम्म-अल-जमल	३७०
१९८	१९० क	सफ़ातैनी का प्रतिदर्श	३६९
१९९	१९१	लिहियानिक लिपि	३७१
२००	१९३	सिनाइ की लिपियाँ	३७४
२०१	१९४	सिनाइ की अरबी लिपि	३७६
२०२	१९५	सबा की लिपि	३७८
२०३	१९६	अरबी लिपि की अन्य शाखाएँ	३८०
२०४	१९७	नब्ती द्वारा नस्खी का विकास	३८१
२०५	१९७ क	नब्ती द्वारा नस्खी का विकास	३८२
२०६	१९८	कूफ़ी लिपि में कलमा	३८४
२०७	२००	अरमेनिया की लिपि — बोलर-आजिर	३८८
२०८	२०२	जॉर्जिया की लिपियाँ	३९१
२०९	२०३	जॉर्जिया की मेहदूली	३९२

लिपियों के फलकों (Plates) की तालिका

(द्वितीय खण्ड)

क्र० सं०	फ० सं०	विवरण	पृष्ठ
२१०	२०५	अु-मेद् लिपि	४०३
२११	२०६	अु-चेन् लिपि	४०४
२१२	२०७	पस्सेपा लिपि	४०५
२१३	२०८	बाल्टी लिपि	४०६
२१४	२०९	अु-मेद् एवं अु-चेन् के प्रतिदर्श	४०७
२१५	२१५	आठ त्रिपुण्ड; प्राचीन रेखा-चित्र	४२६
२१६	२१६	चीन की प्राचीनतम लिपि	४२८
२१७	२१७	चीनी लिपि का कालानुसार विकास	४३०
२१८	२१८	चीनी लिपि में ध्वनि-बल (टोन)	४३३
२१९	२१९	चीनी लिपि के वस्तु-चित्र	४३४
२२०	२२०	चीनी लिपि के सांकेतिक चित्र	४३५
२२१	२२१	संयुक्त सांकेतिक चित्र	४३६
२२२	२२२	क्रम द्वारा निर्मित चित्र; ध्वनि-सूचक चित्र	४३७
२२३	२२३	ग्रहण किये हुये चित्र 'हृदय' (सुलेख)	४३९
२२४	२२४	कुछ शब्द व वाक्य	४४२
२२५	२२५	इनीशियल्स व फाइनल्स की तालिका	४४३
२२६	२२६	ध्वन्यात्मक चिह्नों का आविष्कार	४४५
२२७	२२७	चीनी लिपि की ध्वन्यात्मक पद्धति - १	४४७
२२८	२२८	" " " " - २	४४८
२२९	२२९	" " " " - ३	४४९
२३०	२३०	लिपि का सरलीकरण; आठ मौलिक स्ट्रोक	४५१
२३१	२३१	रेखाओं के द्वारा शब्द निर्माण	४५२
२३२	२३२	चीनी लिपि के अंक	४५३
२३३	२३३	चीन में दक्षिणी भाग की लोलो लिपि	४५५

क्रम० सं०	फ० सं०	विवरण	पृष्ठ
२३४	२३४	दक्षिण-पश्चिम चीन की म्याओ - त्से लिपि	४५६
२३५	२३५	मोसो लिपि	४५७
२३६	२३७	उइगुरी लिपि	४६३
२३७	२३८	गालिक लिपि	४६४
२३८	२३९	मंगोलिया की दो प्रकार की लिपियाँ	४६६
२३९	२४०	मंगोल लिपि का एक प्रतिदर्श	४६७
२४०	२४१	कालमुक लिपि	४६८
२४१	२४२	बुरियाती लिपि	४७०
२४२	२४३	तोखारी लिपि	४७१
२४३	२४४	मंचूरिया की लिपि	४७२
२४४	२४५	सोन्दी लिपि	४७४
२४५	२४६	साइबेरिया की यानिसी लिपि	४७५
२४६	२४७	“ “ ओरहून लिपि	४७७
२४७	२४८	मनीकी लिपि	४७८
२४८	२४९	पुमसो लिपि	४८३
२४९	२५०	ओनमुन लिपि	४८४
२५०	२५१	ओनमुन लिपि का पाठ	४८५
२५१	२५२	जापान की प्राचीनतम दैवी लिपि	४८६
२५२	२५३	कताकाना लिपि के अक्षर	४८७
२५३	२५४	“ “ “	४८८
२५४	२५५	हिरागाना लिपि के अक्षर	४८९
२५५	२५६	“ “ “	४९०
२५६	२५७	हिरागाना व कताकाना के आधुनिक वर्ण	४९१
२५७	२५८	जापानी भाषा के कुछ शब्द व स्ट्रोक	५०१
२५८	२५९	चीनी काइशू लिपि से जापानी अक्षरों का विकास	५०२
२५९	२६०	जापानी लिपि के मिश्रित प्रतिदर्श	५०३
२६०	२६१	चतुष्कोण पाली लिपि	५१०
२६१	२६२	सुलेख पाली लिपि	५११
२६२	२६३	आधुनिक गोल लिपि एवं अंक	५१२

क्रम० सं०	फ० सं०	विवरण	पृष्ठ
२६३	२६५	प्राचीन पेगुअन लिपि	५१३
२६४	२६६	चमका लिपि	५१४
२६५	२६९	बोरोमात	५१६
२६६	२७०	पतीमोखा लिपि	५२०
२६७	२७१	प्राचीन थाई लिपि	५२१
२६८	२७२	आधुनिक थाई लिपि	५२२
२६९	२७३	„ „ „ (संयुक्त अक्षर)	५२३
२७०	२७४	कुछ लिपियों के पाठ	५२४
२७१	२७५	लाओस की लिपि	५२५
२७२	२७६	मूल अक्षर लिपि	५२८
२७३	२७७	संशोधित शीघ्र लिपि	५२९
२७४	२७८	आधुनिक लिपि	५३०
२७५	२८०	तगाला लिपि	५३३
२७६	२८२	कवि लिपि की वर्णमाला	५५३
२७७	२८३	जावा की दूसरी लिपि	५३७
२७८	२८४	बटक लिपि	५३८
२७९	२८५	रेदजांग एवं लेम्पोंग लिपियाँ	५३९
२८०	२८६	बुगिनी — मकासार लिपि	५४०
२८१	२८८	मिस्र राज्य के मुकुट व चिह्न	५४८
२८२	२८९	कार्टूश	५६७
२८३	२९०	मिस्र लिपि का क्रमशः विकास	५७७
२८४	२९१	हेरोग्लिफ्स के वर्ण (डिटिंजर द्वारा)	५७८
२८५	२९२	हेरोग्लिफ्स के वर्ण (वेलिस बज द्वारा)	५७९
२८६	२९३	व्यनियाँ व चित्र	५८०
२८७	२९४	हेरोग्लिफ्स के कुछ शब्द	५८१
२८८	२९५	कुछ अतिरिक्त वर्ण व कुछ शब्द	५८२
२८९	२९६	हेरोग्लिफ्स तथा हेरेटिक के कुछ प्रतिदर्श	५८३
२९०	२९७	हेरोग्लिफ्स का घसीट रूप — हेरेटिक	५८४
२९१	२९८	हेरोग्लिफ्स एवं हेरेटिक का एक अभिलेख	५८५

क्र० सं०	फ० सं०	विवरण	पृष्ठ
२९२	२९९	डिमाटिक की वर्णमाला; डिमाटिक एवं कॉप्टिक के प्रतिदर्श	५८६
२९३	३००	कॉप्टिक लिपि की वर्णमाला	५८७
२९४	३०१	मिरोइटिक लिपि की वर्णमाला	५८८
२९५	३०२	मिरोइटिक — डिमाटिक की वर्णमाला	५८९
२९६	३०३	मिस्री लिपि के अंक	५९०
२९७	३०३ क	हेरेटिक के अंक	५९२
२९८	३०४	नुमीदियन लिपि	५९८
२९९	३०४ क	नुमीदियन लिपि का आंशिक पाठ	५९९
३००	३०६	बर्बर लिपि	६००
३०१	३०७	बर्बर लिपि का आंशिक पाठ	६०१
३०२	३०७ क	तुर्देतेनियन लिपि के कुछ वर्ण	६०१
३०३	३०८	वामुन लिपि	६०३
३०४	३०९	सोमाली लिपि	६०५
३०५	३१०	सोमाली लिपि के कुछ संयुक्त अक्षर	६०६
३०६	३११	एक्रोफोनी पद्धति से वर्णों का विकास	६०८
३०७	३१२	वई लिपि	६०९
३०८	३१२ क	वई लिपि	६१०
३०९	३१२ ख	वई लिपि	६११
३१०	३१२ ग	वई लिपि	६१२
३११	३१३	मेण्डे लिपि	६१४
३१२	३१४	यनसिब्दी लिपि	६१६
३१३	३१५	प्राचीन अबीसीनिया की लिपि	६१८
३१४	३१७	इथियोपिया की वर्णमाला	६२१
३१५	३१७ क	” ” ”	६२२
३१६	३१७ ख	” ” ”	६२३
३१७	३१७ ग	” ” ”	६२४
३१८	३१९	सिप्रियाटिक लिपि की वर्णमाला	६३३
३१९	३२०	सिप्रियाटिक लिपि का क्रैटन से सम्बन्ध	६३४
३२०	३२१	सिप्रियाटिक लिपि के कुछ शब्द	६३५

क्रम०	सं०	फ०	सं०	विवरण	पृष्ठ
३२१	३२४			ग्रीक लिपि के वर्णों का उद्भव	६४२
३२२	३२४	क		" " " " " "	६४३
३२३	३२५			क्रोट की चित्रात्मक लिपि	६५१
३२४	३२६			माइसीनिया की वर्णवली	६५२
३२५	३२७			पाइलस की त्रिपद पाठिया	६५३
३२६	३२७	क		" " " "	६५४
३२७	३२८			क्रोट की लाइनियर - 'ए' के चिह्न	६५५
३२८	३२९			फ्रैस्टास चक्रिका	६५६
३२९	३३०			एथेन्स की लिपि (अभिलेख)	६५९
३३०	३३१			कोरिंथ की लिपि	६६१
३३१	३३२			बोयोशिया की लिपि	६६३
३३२	३३३			आर्केडिया एवं साहित्यिक काला के वर्ण	६६५
३३३	३३४			ग्रीक लिपि के आधुनिक वर्ण	६७३
३३४	३३६			प्रोटो - टाहरेनियन द्वारा एट्रस्कन वर्णों का उद्भव	६७५
३३५	३३७			ओस्कन लिपि के वर्ण	६७६
३३६	३३८			अंब्रियन लिपि के वर्ण	६७७
३३७	३३९			फैलिस्कन लिपि के वर्ण	६७८
३३८	३४०			बोल्लानो लिपि के वर्ण	६८०
३३९	३४१			भाग्ने लिपि के वर्ण	६८१
३४०	३४२			सोन्द्रियो लिपि के वर्ण	६८२
३४१	३४३			लुगानो लिपि के वर्ण	६८३
३४२	३४४			वेनेती लिपि के वर्ण	६८४
३४३	३४५			कांसे की पाठिया	६८६
३४४	३४६			लैटिन वर्ण	६८९
३४५	३४७			मैनियस की कटार - ६०० ई० पू०	६९०
३४६	३४८			कुछ वर्णों का विकास	६९१
३४७	३४९			गोथिक लिपि	६९५
३४८	३५१			ग्लेगोलिथिक लिपि	७०१
३४९	३५२			प्राचीन सीरिलिक लिपि	७०२
३५०	३५३			बुल्गारी सीरिलिक लिपि	७०३
३५१	३५५			रूस की सीरिलिक लिपि	७०५
३५२	३५६			रूस की लिपि के कुछ शब्द	७०६
३५३	३५८			ओगम लिपि	७१३
३५४	३५९			आयरलैण्ड की रोमन लिपि	७१४
३५५	३६१			हंगेरी की प्राचीन लिपि	७१७

क्रम० सं फ० स०	विवरण	पृष्ठ
३५६	३६२ निकोलसबर्ग लिपि के वर्ण; नवीं श० का एक लघु अभिलेख	७२०
३५७	३६४ प्राचीन जर्मनी के रून	७२३
३५८	३६६ डेनमार्क नार्वे-स्वीडन के रून	७२७
३५९	३६६क एक प्रतिदर्श	७२८
३६०	३६७ विन्दी वाले रून; दलसकारून	७२९
३६१	३६९ ऍंग्लो - सैक्सनरून	७३१
३६२	३६० ऍंग्लो-सैक्सन रून का प्राचीनतम् अभिलेख	७३२
३६३	३७१ बाडीं लिपि	७३४
३६४	३७२ रुमानिया की लिपि	७३५
३६५	३७३ अल्बे नेयन लिपि	७३६
३६६	३७४ अजटेक गणित	७४२
३६७	३७५ अजटेक जाति की चित्र-लिपि	७४३
३६८	३७६ अजटेक जाति के कुछ अन्य चित्र	७४४
३६९	३७७ विश्वोत्पत्ति की कहानी	७४६
३७०	३७८ एक रेड - इण्डियन की कहानी	७४७
३७१	३८० मय चित्र लिपि के वर्ण	७५१
३७२	३८१ मय जाति का पंचांग	७५२
३७३	३८२ चिरोकी लिपि के वर्ण	७५४
३७४	३८३ क्री लिपि	७५७
३७५	३८५ एलास्का की वर्ण माला	७५९
३७६	३८६ मोटजेवू क्षेत्र की चित्र लिपि	७६०
३७७	३८७ ईस्टर द्वीप की चित्र लिपि	७६२
३७८	३८८ अंग्रेजी की आशु लिपि	७६५
३७९	३८९ रोमन वर्णों की ब्रेल लिपि	७६६
३८०	३९० खगोल शास्त्र, राशि चक्र	७६७
३८१	३९१ पियटो लिपि का प्रति दर्श	७६८

मानचित्रों की तालिका (प्रथम खण्ड)

क्रम सं०	फ० सं०	विवरण	पृष्ठ
१	६	सिन्धु - घाटी सभ्यता के नगर	२७
२	२९	कुषाण साम्राज्य	७६
३	३०	चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य का साम्राज्य	८१
४	३१	हर्ष वर्धन का साम्राज्य	८३
५	३२	गुर्जर - प्रतिहार वंश का साम्राज्य	८५
६	३३	अकबर का साम्राज्य	८९
७	३४	भारत १७६३ ई० सन् में	९२
८	३५	भारत १८५३ में	९३
९	३७	अशोक के शिला - लेख एवं स्तम्भ - लेख	१००
१०	९०	भारत की भाषायें	१८५
११	१०१	नेपाल	२०५
१२	१०७	सिक्किम	२१३
१३	१०८	माल्डीव द्वीप समूह तथा श्री लंका	२१७
१४	११२	प्राचीन मेसोपोटामिया	२२६
१५	११३	शलमनासर तृतीय एवं असुरवनीपाल का राज्य	२३१
१६	१२१	पश्चिम - एशिया के राज्य	२४९
१७	१२३	डैरियस का विशाल साम्राज्य	२५१
१८	१२३	सिकन्दर का साम्राज्य	२५३
१९	१४४	फ़िलीशिया	२८८
२०	१५८	हत्तुशा (हित्ति) राज्य	२९८
२१	१६८	इस्रायल जाति का इतिहास	३२८
२२	१७२	सीरिया	३३६
२३	१७७	एशिया माइनर के देश	१४१
२४	१८१	लीडिया तथा फ़ीजिया	३५८
२५	१८६	प्राचीन अरेबिया	३६८
२६	१८७	पश्चिम एशिया (इस्लाम के पूर्व)	३६८
२७	१८२	सिनाइ	३७८
२८	१९९	पश्चिम एशिया (अरमेनिया)	३८८
२९	२०१	अरमेनिया जॉर्जिया	३८८
३०	२०४	तिब्बत	३८८
३१	२१०	चीन	४११
३२	२११	चीन - तांग वंश का साम्राज्य	४११

मानचित्रों की तालिका

(द्वितीय खण्ड)

क्रम सं०	फ० सं०	विवरण	पृष्ठ
३३	२१२	चीन - १३वीं श० के अन्त में	४१५
३४	२१३	चीन - १७३६ से १७६६ ई० तक	४१८
३५	२१४	चीन - १९०० ई० में	४२०
३६	२३६	मंगोल जातियाँ	४६१
३७	२४६	कोरिया	४८२
३८	२५२	जापान	४९०
३९	२६१	ब्रह्मा	५०८
४०	२६७	श्याम व हिन्द - चीन के देश	५१६
४१	२६८	श्याम, कम्बोडिया, लाओस (वर्तमान)	५१७
४२	२७०	फ़िलिपाइन द्वीप समूह	५३२
४३	२८१	हिन्देशिया द्वीप समूह	५३४
४४	२८७	मिस्र	५४७
४५	३०४	अफ्रीका (अठारहवीं श० के अंत में)	५६६
४६	३१६	इथियोपिया (उन्नीसवीं श०)	६१९
४७	३१८	सायप्रस	६३०
४८	३२२	प्राचीन ग्रीस - ई० प० की दूसरी शती	६३७
४९	३२३	आधुनिक ग्रीस	६३८
५०	२३५	प्राचीन इटली	६६६
५१	३४८ क	यूरोप की प्राचीन जातियों का विस्तार - पाचवीं से ग्यारहवीं श० तक	६९२
५२	३५०	मोराविया - ९२० से ११२५ ई० के मध्य - आधुनिक बुल्गारिया	६६६
५३	३५४	रूस - १००० ई० के लगभग	७०४
५४	३५६	आयर लैंड	७०६
५५	३६०	हंगेरी	७१६
५६	३६३	जर्मनी	७१९
५७	३६५	नार्वे स्वीडन	७२६
५८	३६८	इंग्लैण्ड	७२८
५९	३७६	मध्य - अमरीका (मैक्सिको व युकेटान)	७४६
६०	३८४	एलास्का - ईस्टर आइलैण्ड	७५८



नोट :- इस पुस्तक में जो भी मानचित्र दिये गये हैं वे प्रामाणिक मानचित्रों के छाया - मात्र हैं। ये मानचित्र देशों की धारणा - मात्र प्रदर्शित करने के लिए अंकित किये गये हैं। सभी मानचित्र शुद्ध अनुपात में नहीं (not to scale) हैं।

लेखन कला का इतिहास
(द्वितीय खण्ड)

अध्याय : ४

**मध्य व पूर्व एशियाई देशों की
लेखन कला का इतिहास**

तिब्बत

तिब्बत निवासी इस देश को बोद् के नाम से सम्बोधित करते हैं। इसी प्रकार भारतीय 'भोट', मंगोल 'तुबेत' (जिससे हो गया तिब्बत) तत्पश्चात् चीनियों ने इसका नाम शी द्सांग (Hsi - Tsang) रखा।

इतिहास

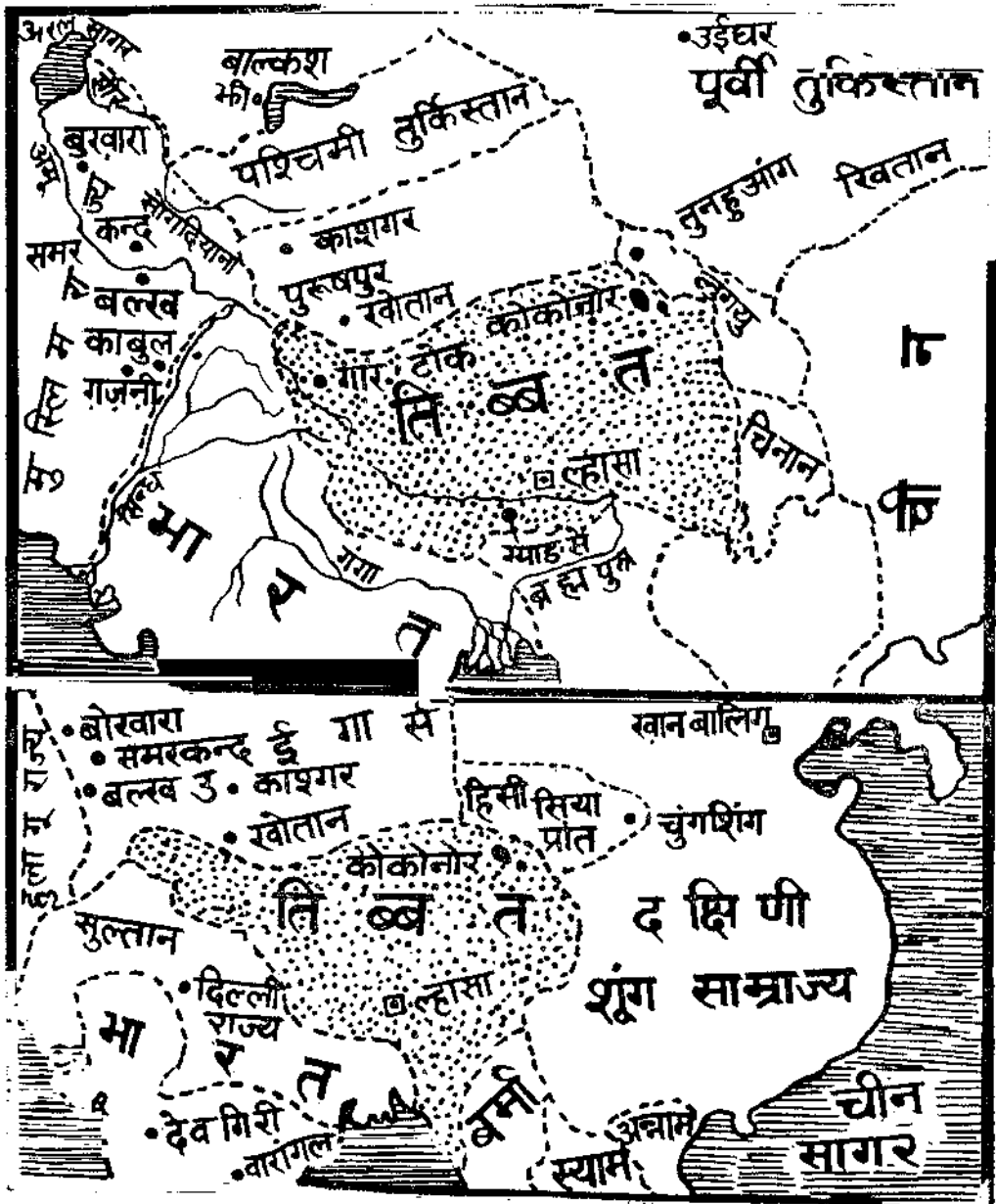
इस देश का इतिहास पौराणिक काल से आरम्भ होता है। इसका सर्वप्रथम नरेश कौशल निवासी एक भारतीय राजा प्रसेनजीत का पाँचवाँ पुत्र था, जो अपना घर छोड़कर उत्तर दिशा की ओर भाग गया था। चलते - चलते यह तिब्बत पहुँच गया और वहाँ के निवासियों ने इसको तिब्बत का नरेश चुन लिया तथा उसका नाम न्या - त्रि च्नेन - पो (Nya - tri Tsen - po) रख दिया। उसने अपना निवास स्थान यार - लोंग की बनाया। यह उप - नगर ल्हासा के दक्षिण में स्थित था। सर्वप्रथम शासक तथा उसके उत्तराधिकारी दिव्य - लोकीय - राजा कहलाते थे। तदनन्तर छः शासकों को भू - लोकीय राजा कहा जाता था।

तत्पश्चात् एक राजा हुआ जिसका नाम ल्हाथो थोरी न्यान च्नेन था। इसी राजा के शासन काल में सर्वप्रथम बौद्ध - धर्म - सम्बन्धी वस्तुएँ नेपाल से तिब्बत पहुँचने लगीं। इस राजा का चौथा उत्तराधिकारी नाम - री सोंग - च्नेन था जिसका स्वर्गवास ६३० ई० सन् में हुआ था। इसके शासन काल में तिब्बत - निवासियों ने गणित तथा आयुर्विज्ञान की शिक्षा चीन देश से प्राप्त की। इसके राज्य - काल में इतनी समृद्धि थी तथा इतना पशुधन था कि राजा ने अपना राजग्रह निर्माण कराने के लिये पदार्थों में पानी के स्थान पर दूध व मक्खन का प्रयोग किया।

इस शासक के मरणोपरांत इसका पुत्र तेरह वर्ष की अवस्था में राजसिंहासनारूढ़ हुआ। तिब्बत का वास्तविक इतिहास इसी राजा के शासन काल से आरम्भ होता है। इसका नाम स्रोंग च्नेन गम्पो था। इसी ने भारत की लिपि के वर्णों का प्रयोग तिब्बत में आरम्भ कराया। उसने अपने राज्य का विस्तार लद्दाक तथा नेपाल तक किया। ७०३ में नेपाल ने विद्रोह कर दिया और स्रोंग च्नेन गम्पो का तीसरा उत्तराधिकारी वीरयति को प्राप्त हुआ।

स्रोंग च्नेन गम्पो का दूसरा पुत्र व उत्तराधिकारी मंग - स्रोंग मंग - च्नेन था जिसने ६६३ ई० में मध्य - एशिया का बहुत सा भू - भाग अपने अधीन कर लिया। उसने चीन पर भी आक्रमण किया जिसके

ऊपर आठवीं श० में 'तिब्बत' नीचे बारहवीं श० में



प्रतिकार में चीन ने विध्वंसक आक्रमण कर दिया और राजधानी को नष्ट — भ्रष्ट कर दिया । मंग चैन के पौत्र त्सुक — चैन ने एक चीन की राजकुमारी से विवाह किया । ७३० में उसके एक पुत्र त्रि — सोंग दे — चैन उत्पन्न हुआ जो तिब्बत के इतिहास में एक प्रसिद्ध नरेश हुआ है । उसने ७४३ से ७८९ तक राज्य किया । तत्पश्चात् उसका पुत्र मुनि — चैन — पो राजसिंहासन पर बैठा । उसने अपनी प्रजा में समानता लाने का प्रयत्न किया और धनवानों का धन निर्धनों में अपनी आज्ञानुसार विभाजित करना तथा उनको उच्च — पदाधिकार दिलाना आरम्भ कर दिया । इन बातों से अप्रसन्न होकर उसकी माता ने उसको विष दिलवा दिया ।

उसके मरणोपरांत रल — पा — चैन शासक बना । इसने बौद्ध ग्रन्थों का तिब्बत की भाषा में अनुवाद करवाया तथा चीन से ८२९ में सन्धि कर ली । रल — पा — चैन के पश्चात् राजा धर्माध्यक्ष भी होने लगे जिनका नाम छोग्याल हो गया । इन भावी राजाओं ने बौद्ध धर्म का खूब प्रचार किया । यह राजा तिब्बत के मुख्य देवता चैन — रे — सी के अवतार माने जाने लगे । पिछले तीन राजा भी उसी के अवतार माने जाने लगे थे । ८३८ में रल — पा — चैन का उसी के भ्राता लंगदर्मा ने वध कर दिया । तीन वर्ष लंगदर्मा ने राज्य किया परन्तु एक पुरोहित ने उसका भी वध कर दिया । वह भी एक नृत्य के अभिनय में और तभी से उस पुरोहित की स्मृति में नृत्य होता चला आ रहा है ।

तत्पश्चात् तिब्बत का राज्य लंगदर्मा के दो पुत्रों में विभाजित हो गया । एक राज्य का नाम पूर्वी — तिब्बत तथा दूसरे का पश्चिमी — तिब्बत पड़ गया ।

१०१३ ई० में एक भारतीय विद्वान् धर्मपाल यहाँ पहुँचा । शनैः शनैः बारहवीं एवं तेरहवीं शताब्दी तक पुरोहित ने अपनी सत्ता बढ़ा ली । उन्हीं में से एक बड़े विहार का पुरोहित साक्य^१ था । यह विहार मध्य — तिब्बत के दक्षिण — पश्चिम में स्थित था । १२४७ में मंगोल सम्राट् के पौत्र ने सा — क्य पण्डित को अपने राज दरबार में निमन्त्रित किया । पाँच वर्ष पश्चात् कुबलई खाँ, जिसने पूर्वी तिब्बत विजय किया था, चीन का सम्राट् बना । उसने सा — क्य पण्डित के भतीजे फक — पा ग्याल — चैन को अपने दरबार में आमन्त्रित किया । उसने फक — पा को तिब्बत तथा दक्षिण — पूर्वी — तिब्बत के १३ जनपदों का तथा उत्तर — पूर्वी — तिब्बत के अम्दो प्रांत का भी शासक बना कर पूरी सत्ता सौंप दी । इसी समय से सा — क्य — पा के लामा (पुरोहित) शासक बन गये जो १३४० तक राज्य करते रहे ।

सा — क्य विहार की शक्ति शनैः शनैः कम होने लगी और दूसरे विहार अपनी शक्ति को बढ़ाने लगे । उनमें से एक लामा ने मुख्य तिब्बत तथा पूर्वी — तिब्बत को परास्त किया और वहाँ का शासक भी बन गया । उसका नाम चांग — चुप ग्याल — छेन था जो फक — मो — द्रू के नाम से प्रसिद्ध था । उस विहार के १२ शासक हुए और १६३५ तक शासन किया । फक — मो — द्रू वंश को सोंग प्रांत के शासक ने समाप्त कर दिया ।

१३५८ में एक महान् विद्वान् चांग ख — पा का जन्म हुआ । उसके चले पीला हैट (टोपा) पहनते थे जब कि दूसरे सम्प्रदाय वाले लाल हैट पहनते थे । पीले हैट वालों को विवाह करना तथा मदिरा पान करना निषेध था । सांग का — पा का उत्तराधिकारी थे — दुन चुप — पा हुआ जिसने एक विशाल विहार (मठ) का

1. इसका नाम सा — क्य विहार के नाम पर सा — क्य पड़ गया । इसका वास्तविक नाम कुनबगम्याँल मत्सन्द पाल — ब्जान — पो (Kun — dga — rgyal — mt' s and pal — bzan — po) था । यह विवरण इस पुस्तक से लिया गया है :—

Jansen, H. : Syn, Symbol and Script (1970), p. ~ 414.

निर्माण करवाया। यह विहार महान् लामा अर्थात् ताशी लामा का निवास स्थान बना। यह पीले हैट वालों का दूसरा महान् लामा था। १४७४ में गे - दुन चुप - पा का स्वर्गवास हो गया। उसकी आत्मा एक बच्चे की आत्मा में प्रवेश कर गई और वह अवतार माना जाने लगा। तीसरे उत्तराधिकारी का नाम सोनम ग्यत्सो था जिसने यह धर्म मंगोलिया तक प्रसारित किया। मंगोलिया में लामा को दलाई लामा वज्रधर की पदवी दी गई और तभी से दलाई लामा^१ नाम पड़ गया।

पाँचवाँ उत्तराधिकारी लोब - सोंग ग्या - त्सो था जो मंगोलों के सहयोग से १६४१ में शासक भी बना दिया गया।

ल्हासा का पोताल राजगृह पहले सोंग - चें - गम्पो ने बनवाया था जो युद्धों में नष्ट हो गया। तत्पश्चात् इस पाँचवें दलाई - लामा के प्रधान मंत्री ने पत्थर का महल निर्माण करवाया जो आज भी वर्तमान है। इसने चीन की भी यात्रा की और इसको वहाँ के दरबार में एक स्वतंत्र देश के शासक तथा एक धर्म के अधिष्ठाता के रूप में मान्यता प्रदान की गई। इसी के शासनकाल में प्रथम यूरोप निवासी एक पुर्तगाली एन्तोनियो दि अन्दादा तिब्बत आया परन्तु वह ल्हासा नहीं पहुँच सका। तत्पश्चात् दो पादरी आये जो पीकिंग के रास्ते ल्हासा पहुँचे। एक माह निवास करके नेपाल के रास्ते वापस आ गये।

अठारहवीं श० में चीन ने तिब्बत से कूटनीतिक सम्बन्ध स्थापित कर लिये। राजदूतों की पदवी 'अम्बान' के नाम से ज्ञात हुई। १७५० में चीन में तिब्बत के राजदूतों का वध कर दिया जिसकी प्रतिक्रिया में तिब्बत निवासियों ने चीनी राजदूतावास के चीनियों का वध कर दिया। इस पर चीन के सम्राट् चें - लुंग ने एक सेना भेज कर पुनः तिब्बत पर आधिपत्य जमा लिया परन्तु वह स्थिर न रह सका।

१७८८ में नेपाल - राज्य की सत्ता गोरखों के हाथ में आ गई और उन्होंने शी - गा - चें को अपने अधीन कर लिया परन्तु चीन ने एक सेना भेज दी और अब चीन एवं तिब्बत ने मिल कर १७९२ में नेपाल की सेना को परास्त कर दिया। तत्पश्चात् काठमाण्डू के निकट एक सन्धि - पत्र पर हस्ताक्षर हो गये। १८४१ में कश्मीर के डोंगरा लोगों ने पश्चिम से तिब्बत पर आक्रमण किया परन्तु ठण्ड व बर्फ के कारण परास्त हो गये। १८५५ में फिर नेपाली गोरखाओं ने एक शक्तिशाली आक्रमण किया। तिब्बत से सन्धि हो गई। नेपाली एजेन्सी तिब्बत में स्थापित हो गई और नेपाल ने वचन दिया कि यदि कोई आक्रमण हुआ तो नेपाल सहायता देगा।

उन्नीसवीं श० के अन्त तक कश्मीर के शासक ने लद्दाख़ पर तथा अंग्रेजों ने सिक्किम पर अपना आधिपत्य जमा लिया। १९०७ में ब्रिटिश सरकार ने तिब्बत पर चीन के अधिकार को मान्यता प्रदान कर दी और यदुंग, ग्याङ् - से एवं गारटोक में चौकियाँ (व्यापारिक केन्द्र) स्थापित कर दीं। १९१२ में चीन के मांचू शासन के अन्त होने के साथ ही तिब्बत ने अपनी स्वतन्त्रता घोषित कर दी। १९१४ में चीन, तिब्बत व भारत के प्रतिनिधियों की एक बैठक शिमला में हुई जिसमें इस विशाल पठारी राज्य को दो भागों में विभाजित कर दिया गया। (१) पूर्वी भाग, जिसमें वर्तमान चीन के शंघाई एवं सी क्यांग प्रांत के कुछ भाग सम्मिलित थे। इसको अन्तर्गती तिब्बत (Inner Tibet) के नाम से सम्बोधित किया गया तथा (२) पश्चिमी भाग जो बौद्ध - मतानुयायी लामा के हाथ में रहा। इसको बाह्य तिब्बत (Outer Tibet) के नाम से सम्बोधित किया गया।

१. दलाई (मंगोल भाषा) = सागर; लामा = ज्ञान अर्थात् ज्ञान का सागर।

पन चें (पाली); पन = शान; चें = (तिब्बती) = महान् अर्थात् महान् ज्ञानी।

१९३३ में तेरहवें दलाई लामा के स्वर्गवास होने के पश्चात् बाह्य तिब्बत भी धीरे धीरे चीन के घेरे में आने लगा। चीनी भूमि पर लालित — पालित चौदहवें दलाई लामा ने १९४० में शासन भार सँभाला। १९५० में तो पेंछेण लामा के चुनाव में दोनों देशों में शक्ति प्रदर्शन की नीबत आ गई। इस पर चीन को आक्रमण करने का अवसर प्राप्त हो गया। १९५१ में एक सन्धि के अनुसार यह देश साम्यवादी चीन के प्रशासन में एक स्वतंत्र राज्य मान लिया गया। इसी समय भूमि सुधार विधान एवं दलाई लामा के अधिकारों में हस्त — क्षेप तथा कटौती होने के कारण एक असन्तोष की आग सुलगने लगी जो क्रमशः १९५६ एवं १९५९ में जोरों से भड़क उठी जिसको बल प्रयोग द्वारा चीन ने दबा दिया। अत्याचारों व हत्याओं आदि से किसी प्रकार बच कर दलाई लामा भारत पहुँच सके। अब तिब्बत पर चीन का पूर्ण अधिकार है और पेंछेण लामा वहाँ के नाम मात्र शासक हैं।

तिब्बत की लिपियाँ

अ — चेन व अ — मेद लिपियाँ^१ : लगभग ६३० ईसवी में स्रोग चेन गम्पो ने, जो उस समय का शासक था, अपने एक मंत्री थोन — मी — सम — भोटा को भारत भेजा। उसको आदेश दिया गया कि वह भारत जाकर बौद्ध धर्म का साहित्य तथा संस्कृत सीखे और वापस आकर तिब्बत निवासियों को पढ़ना लिखना सिखाये। इस मंत्री ने बौद्ध — गया में रह कर तथा अन्य स्थानों में रह कर शिक्षा प्राप्त की। वह तात्कालिक गुप्त लिपि के वर्णों को तिब्बत लाया और यहाँ की ध्वनियों के अनुसार कुछ वर्णों को कम कर दिया।

यह लिपि बाद में दो भागों में विभाजित हो गई। एक दैनिक जीवन में प्रयोग के लिए हस्त — लिखित — शीघ्र — लिपि जिसका नाम अ — मेद 'फ० सं० — २०५' पड़ा तथा दूसरी मुद्रण के लिए जिसका नाम अ — चेन 'फ० सं० — २०६' पड़ा। पहली में शिरो — रेखा का प्रयोग नहीं होता तथा दूसरी में होता है। अ — चेन में प्रत्येक शब्द के पश्चात् शिरो — रेखा के अन्त में एक बिन्दु का प्रयोग किया जाता है ठीक इसी प्रकार जैसे देवनागरी लिपि में दो शब्दों के मध्य कुछ स्थान खाली रह जाता है। 'अ' तिब्बत के मध्य प्रांत का नाम था।

इस लिपि की समानता के लिए कुछ ध्वनियाँ तिब्बत की भाषा में ऐसी थीं जिनके लिये वर्ण थे ही नहीं। इस कारण बारहवीं श० में छः वर्ण और जोड़े गये। इन छः वर्णों पर अ — चेन की वर्णमाला में अंक डाल दिये गये हैं। साधारणतया यहाँ की लिपि को समझने में बड़ी कठिनाई इस कारण प्रतीत होती है कि अक्षरों की ध्वनियों में परिवर्तन आ जाता है। एक वर्ण की दो ध्वनियाँ होती हैं। उदाहरणार्थ 'ज' 'च' का, 'ग' 'क' का तथा 'द' 'त' का स्थान ग्रहण कर लेता है। तिब्बत के व्याकरण के नियमों के अनुसार कभी कभी 'ज, ग, द' को क्रम से 'च, क, त' पढ़ा जायेगा। 'अ' का प्रयोग स्वर की तरह नहीं किया जाता और वर्णमाला में उसका स्थान आरम्भ में होने के बजाय अन्त में कर दिया गया। एक दूसरा 'अ' भी है जिसका प्रयोग संशीत — मात्रा के अनुसार 'ऽ' होता है। इसमें स्वर केवल चार होते हैं, 'इ, उ, ए, ओ' तथा छोटी बड़ी मात्राएँ नहीं होतीं जैसे कि देवनागरी में होती हैं।

इन लिपियों में ध्वनि — बल पद्धति का प्रयोग होता है। टोन की संख्या^२ के विषय में विद्वान् एक मत नहीं हैं।

- लेखक ने १९७४ में लखनऊ विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के तिब्बती भाषा के प्राध्यापक श्री लामा जी से साक्षात्कार करके तिब्बत की लिपियों की ध्वनियों को लिखा है।
- जयेश्के (Jacschke) के अनुसार दो टोन हैं। ग्रेहम सैंडबर्ग (Rev. Graham Sandberg) के अनुसार तीन टोन हैं। अमुन्द सेन के अनुसार छः टोन हैं।

पस्सेपा : इसका आविष्कार तिब्बत के महान् लामा द्वारा हुआ था। उनका नाम फाग - पा (अफगस - पा) था। चीनी भाषा में 'पा - को - सि - पा' लिखा जाता था जिसका संक्षिप्त रूप था 'पा - सि - पा' और उससे बन गया पस्सिपा तथा पस्सेपा। चीन के सम्राट कुबलई खान ने १२६० में तिब्बत के महान् लामा को अपने दरबार में आमंत्रित किया तथा बौद्ध धर्म को ग्रहण कर लिया। १२६९ में इसी तिब्बत लिपि पस्सेपा को राजकीय लिपि बना दिया तथा उइगुरी लिपि, जो अब तक राजकीय लिपि थी, को हटा दिया गया। पस्सेपा अधिक दिनों तक चल न सकी। इसका प्रयोग ऊपर से नीचे की ओर किया जाता था परन्तु शिरोवृत्त पंक्तियाँ बाएँ से दाएँ की ओर लिखी जाती थीं। इसका प्रयोग चौदहवीं श० के मध्य तक रहा। इसके वर्ण 'फ० सं० - २०७' पर दिये गये हैं।

बाल्टी लिपि : इसका उपनाम भोटिया है। तिब्बत के सुदूर उत्तर - पश्चिम भागों के निवासी बाल्टी कहलाते थे। यह लीय तिब्बत के ही मूल निवासी भोटिया थे। इनकी भाषा भी तिब्बती थी परन्तु उसमें दोन पद्धति नहीं थी। बाल्टी लोग अपने इस भू - भाग को बाल्टिस्तान कहने लगे और शनैः शनैः एक राज्य में परिवर्तित कर लिया। कश्मीर के राजा गुलाब सिंह ने इस पर आक्रमण कर १८१४ में अपने जम्मू राज्य में मिला लिया। १९०१ में इनकी जनसंख्या १,३४, ३७२ थी।

जब बाल्टी लोगों ने चौदहवीं श० में इस्लाम धर्म को ग्रहण कर लिया तब इन्होंने पस्सेपा लिपि की सहायता से अपनी एक बाल्टी लिपि का आविष्कार कर लिया। सर्वप्रथम गोडविन ऑस्टिन (Godwin Austen) ने इस लिपि की एक बारहखंडी (Syllabary) तैयार की जिसकी सहायता से गुस्टाफसन (Gustafson) ने इस लिपि की एक वर्णमाला बनाई तथा इसका अनुवाद किया। इस लिपि का प्रयोग दाएँ से बाएँ किया जाता था। इसकी वर्णमाला^१ व प्रतिदर्श 'फ० सं० - २०८' पर दिया गया है।

अु - चेन लिपि का प्रतिदर्श : निम्नलिखित वाक्य अर्थ व भावार्थ सहित 'फ० सं० - २०९' पर दिया गया है :—

“ज्येन = दूसरों (इस शब्द का प्रथम अक्षर 'ग' शांत है); की = का; च्या = काम; मी शे क्यां = न जानने पर भी (इसमें 'ब' शांत है); ते तङ् = वह और; ते यी = उसका; च्योत पा = व्यवहार; क्यों = पालो”। इसका भावार्थ : “दूसरों के काम न जानने पर भी उनके साथ (अच्छा) व्यवहार पालो (का पालन करो)।”

अु मेद का लिपि का प्रतिदर्श : 'फ० सं० - २०९' पर ऊपर की ओर दो वाक्य—“मेरे (एक) घर है”; “लड़की के पास बिल्ली है”—दिये गये हैं। नीचे की ओर सिक्किम^२ में प्रयोग होने वाली 'अु - चेन लिपि' का प्रतिदर्श तथा टेह्रदो - गढ़वाल^३ में प्रयोग होने वाली 'अु - मेद लिपि' का प्रतिदर्श दिया गया है। दोनों प्रतिदर्शों के अर्थ एक ही हैं—“एक मनुष्य के दो पुत्र थे”।

1. Grierson, G. : Linguistic Survey of India, Vol. III, Part 1. page - 32. (through Rev. A. H. Francke)

2. Ibid : p. - 79. (through David Macdonald and Col. Waddell - 1899.)

3. Ibid : p. - 93.

अु -- मेद् लिपि

क	ख	गक	ङ	च	छ	जच	ञ	त	थ
गा	ख	गा	॥	का	का	५	३।	१।	३।
दत	न	प	फ	बप	म	च ^३	छ ^२	ज ^३	व
॥	१।	५।	५।	५।	५।	५।	५।	५।	५।
ज्य ^४	स ^५	अ ^६	य	र	ल	श	स	ह	अ
७।	३।	१।	५।	१।	५।	३।	५।	५।	५।
गो = कि		७। = खु		५। = जे		५। = डो			
<div style="border: 1px solid black; padding: 5px; margin: 0 auto; width: 100px;">अंक</div>									
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
१	३	३	५	५	५	५	५	५	१०
चिक्	अै	सुम्	शि	डा	टू	दून्	ग्यै	गू	चु

अ - चेन् लिपि

क	ख	ग-क	ङ	च	छ	ज-च	ञ	त	थ
गां	बां	बां	दं	उं	कं	हं	उं	रं	शं
द-त	न	प	फ	ब-म	म	व ^१	ळ ^२	ज ^३	व
दं	व	प	प	व	म	उं	कं	हं	शं
ज्य ^४	स ^५	अ ^६	य	र	ल	श	स	ह	अ
व	व	र	प	र	प	प	प	र	अ
		कि	खु	गे	डो				
		गै	सु	शे	हं				

या	व	श्री	पु	म	मी	मे	गु	दे	र
ज्येन	की	च्या	बा	मी	शे	क्यां	ते	तडु	
दे	प	प	प	प	प	प	प	प	प
ते	यी	च्योत	पा	क्यों					

पस्सेपा लिपि

क 𑂔	ख 𑂒	ग 𑂕	ङ 𑂚	च 𑂖	छ 𑂗
ज 𑂛	झ 𑂙	त 𑂔	थ 𑂚	द 𑂚	न 𑂛
प 𑂔	फ 𑂒	ब 𑂕	म 𑂚	व 𑂚	क्ष 𑂗
ञ 𑂛	व 𑂙	ज्य 𑂙	ज 𑂛	अ ^s 𑂙	य 𑂛
र 𑂔	ल 𑂒	श 𑂕	स 𑂚	ह 𑂚	अ 𑂛

बाल्टी लिपि

अ	ब	प	ट	ग
ख	च	छ	द	र
ज	स	श	क	ल
म	न	न	ज	ख
त्स	अं	'बू' की बारहवही	ब	बा
बे	बी	बो	बू	बं
वाक्य दाएँ से बाएँ पढ़ा जायेगा				
क चू बू री खो सी दा खू				
खुदा सी खोरी बू चीक = खुदा के केवल एक बेटा है				

अ -- मेव एवं अ -- चेन के प्रतिदर्श

Lilongwe

ड. ल. न ड. यों
मुझे प्यर है

1942

पु मो ल
लड़की (क) पास

८१ अथवा

जि मि
बिल्ली

याद
है

भावार्थ:
लड़की के पास बिल्ली है

अनु- चैन लिपि सिक्किम में • नीचे टेहड़ी गढ़वाल में अनु-मैद

མེ ཉལ་ལ་བྲུག་མེས་ཡོད་པ་རེད།

मी जिगला बू गिस्त योद पा रे द
"मी शिकला पू नेई यो पारे"

[illegible]

मी = मनुष्य; चिकला = एक कै; पू = पुत्र; नी = दो
 उपर्युक्त दोनों लिपियों में अर्थ हैं:- "एक मनुष्य के दो पुत्र थे"

पठनीय सामग्री

- Avery, John* : The Beginnings of Writing in and Around Tibet (The American Antiquarian - Vol. VIII - 1886).
- Bell, Sir Charles* : The People of Tibet (1928).
- Bushell, S. W.* : The Early History of Tibet (Journal of Royal Asiatic Society - New Series - Vol. XIII - 1885).
- Gould, B. and Grierson,* : Tibetan Word Book (Oxford University Press - 1943).
- Konow, S.* : Linguistic Survey of India - Vol. III - part 1.
- Konow, S.* : Saka Studies (1932).
- Lauffer, B.* : Origin of Tibetan Writing (Journal of the American Oriental Society - 1918).
- Leumann, M.* : Introduction to the Grammar of Tibetan.
- Richardson, H. R.* : Tibetan Sentences
- " " : Tibetan Syllables
- Rockhill, W. W.* : The land of Lamas (1891).
- Senanayak, R. D.* : Inside Story of Tibet (1967).



चीन

इतिहास : चीन देश की संस्कृति व सभ्यता बहुत प्राचीन है। इतिहास के लिए 'शू जिंग' (Shu Ching) नाम पौराणिक पुस्तक से पता लगता है कि २८०० ई० पू० में एक राजा या नेता हुआ जिसका नाम फू शी (Fu Hsi)^१ था। इसने आरम्भ काल की प्रजा में कई सुधार किये। पा गुआ (Pa Kua) नाम से आठ शब्दों का निर्माण करके लिपि को जन्म दिया। यह तीन पंक्तियाँ थीं। त्रिपुण्ड के नाम से अथवा मिस्तिक त्रिग्राम्स (Mystic Trigrams) के नाम से संसार में ज्ञात हुए। फू शी ने विवाह संस्था को जन्म दिया। तत्पश्चात् शेन नुङ्ग (Shen Nung) और हुआंग ती (Huang Ti)^२ दो शासक हुए। हुआंग ती ने चीन साम्राज्य का विस्तार किया, सुन्दर मकानों व नगरों का निर्माण किया, इतिहासकारों की एक समिति बनाई तथा रेशम का आधिपत्य किया। इसके पश्चात् राजवंशों की स्थापना होने लगी।

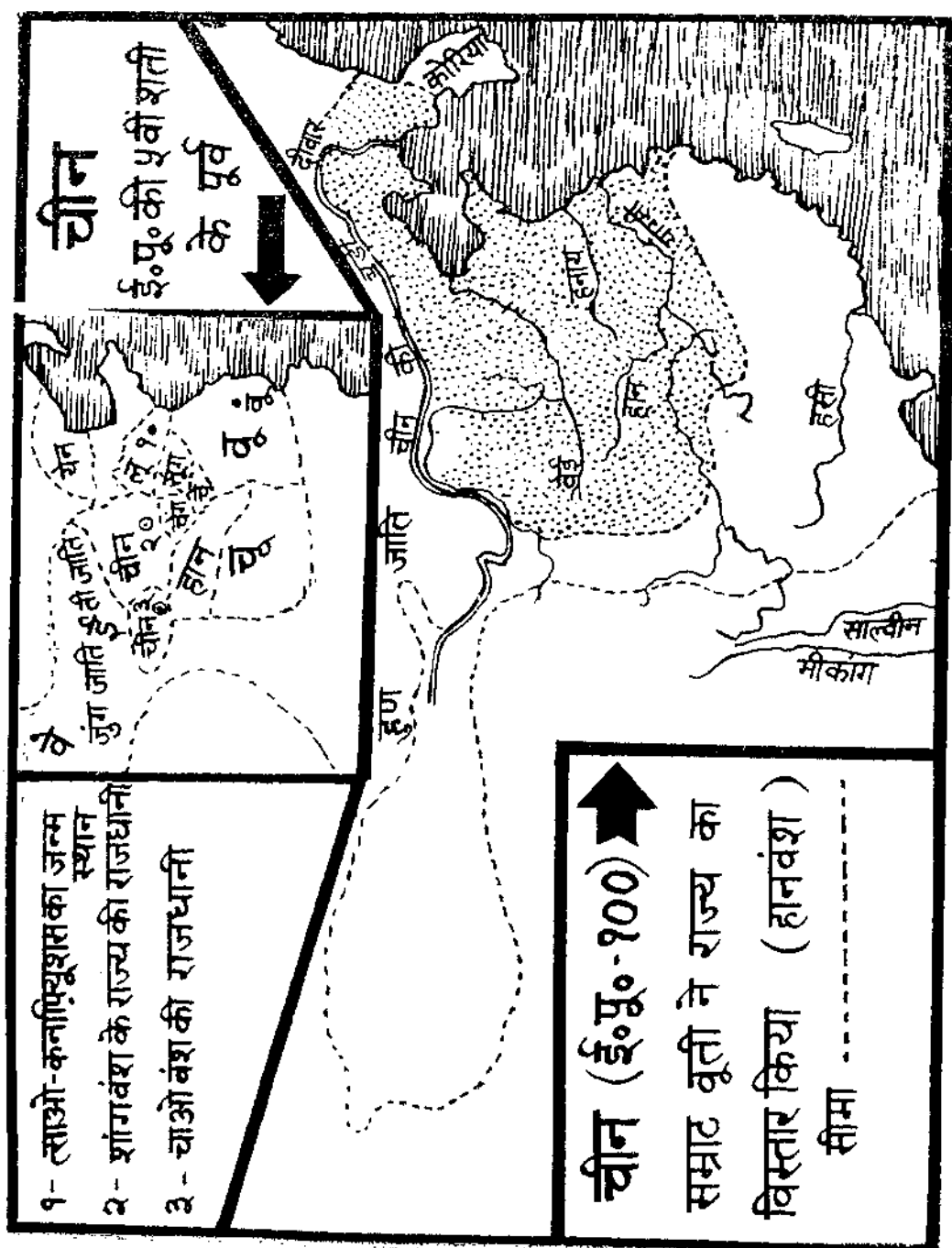
शिया (Hsia) वंश : (२२०५ से १७६५ ई० पू० तक) का संस्थापक 'यू' (Yu) था। इस वंश का अन्तिम राजा चीय कुयेइ (Chieh Kuei) था। यह शासक बड़ा अत्याचारी था।

इन (Yin) या शांग (Shang) वंश : (१७६५ से ११२२ ई० पू० तक) के संस्थापक त अंग (T'ang) ने शिया वंश को समाप्त कर शांग वंश की नींव डाली। इसका अन्तिम शासक चाउ शीन (Chou Hsin) था। इस राजा के कुकर्मों के कारण एक क्रांति हुई और इस राजवंश का अन्त हो गया।

चाउ (Chao) वंश : (११२२ से २४९ ई० पू० तक) का संस्थापक वू वांग (Wu Wang) था। इन्हीं दिनों शासन का एक उच्च पदाधिकारी की - त्से (Ki - Tse) ने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया। वह चाउ वंश के शासन में नौकरी करना अच्छा नहीं समझता था। पद त्याग के साथ उसने अपनी जन्मभूमि भी त्याग दी और लगभग अपने पाँच सहस्र साथियों सहित पूर्व की ओर चल पड़ा और एक भूमि भाग को चुनकर निवास करने लगा। इस जगह प्रातःकाल बड़ा शान्तिमय प्रतीत होता था। इन्हीं कारणों से यह भूमि 'चुनी भूमि' (Chosen) अथवा कोरिया कहलाने लगी। इस देश पर की - त्से के वंशजों ने लगभग ९०० वर्ष राज्य किया।

चाउ वंश के काल में तीन महान् दार्शनिकों ने जन्म लिया जिन्होंने चीन के व्यक्तिगत जीवन पर बड़ा प्रभाव डाला। यह महान् व्यक्ति तीन धर्मों के प्रवर्तक भी थे जो निम्नलिखित हैं :—

१. इस राजा का काल तेरियन दि लाकपरी (Terrien de Lacouperie) के अनुसार २८५२ - २७८३ ई० पू० है तथा गार्डल (Giles) के अनुसार २९५३ - २८३८ ई० पू० है।
२. इस राजा का काल २६९८ - २५९८ ई० पू० है।



१. ली अर (Li Erh) का जन्म ६०४ ई० पू० में हुआ । इसका नाम बाद में लाउत्से (Lao - tze) पड़ा । इसने ताववाद चलाया । इस धर्म का मूल ग्रन्थ ताउ - ते - किंग (Tao¹ - Teh - King) है । लाउत्से की ५२४ ई० पू० में मृत्यु हो गयी ।
२. चियु कुंग (Ch'iu K'ung) का जन्म ५५१ ई० पू० में हुआ । बाद में यह कुंग फूत्से (K'ung Fu-Tze) अर्थात् दार्शनिक कुंग सम्बोधित किया जाने लगा और विश्व में कनफ्यूशस (Confucius) के नाम से प्रसिद्ध हुआ । इसने कनफ्यूशसवाद धर्म चलाया । इस धर्म का मूल ग्रन्थ 'ऐनालेक्ट्स और पाँच किंग' (Analects and Five Kings) है । इसने पूर्वजों की मान्यता तथा चारित्रिक उत्थान पर अधिक बल दिया । इस महान् व्यक्ति की मृत्यु ४७९ ई० पू० में हो गयी ।
३. मेन्शियस (Mencius) का जन्म ३८५ ई० पू० में हुआ । इसने भी मानव स्वभाव की कल्याणकारी बनाने की ओर एक धर्म चलाया । इसकी मृत्यु २८९ ई० पू० में हो गयी ।

चाउ वंश के अंतिम दिनों में छोटे छोटे अधीन राज्य स्वतंत्र होने लगे । स्वतंत्र होने के पश्चात् अपनी शक्ति बढ़ाने लगे तथा राजसिंहासनाखंड होने के लिए आपस में युद्ध भी करने लगे । इन्हीं में से एक राजा ची - न (Ch'in), चाउ वंश के अंतिम शासक को राजगद्दी से उतार कर स्वयं शासक बन गया ।

चीन वंश : (२४९ से २०७ ई० पू० तक) का संस्थापक चीन हो गया । सम्भवतः इस देश का नाम 'चीन' इसी के नाम पर पड़ा । तीन शासकों ने तीन वर्ष राज्य किया । तत्पश्चात् २४९ ई० पू० में चौथा शासक आया जिसका नाम वांग चेंग (Wang Cheng) था । इसने गद्दी पर बैठने के पश्चात् अपना नाम शी हुआंग ती (Shih Huang Ti) रख लिया जिसके अर्थ हैं प्रथम सम्राट् । यह शासक अपने आप को बहुत बड़ा समझता था । चाहता था लोग अपने पूर्वजों को, पिछले राजाओं को तथा उनके कल्याणकारी कृत्यों को भूल जायें और केवल उसे ही जीवन में तथा मरणोपरान्त याद रखें ।

अभी तक चीन के सामाजिक व धार्मिक जीवन में पूर्वजों का मान - आदर एक अभिन्न अंग बन गया था । इसी बात पर कनफ्यूशस के मतानुयायी अधिक प्रचार करते थे, परन्तु चीन का वर्तमान सम्राट् तो इसके विरुद्ध प्रचार करता था । पूर्वजों की पूजा रोकने के लिए उसने घोषणा की कि "जो मनुष्य पिछले राजाओं को व पूर्वजों की मान्यता देगा अथवा प्राचीन पुस्तकों को सुरक्षित रखेगा वह सम्राट् का अपमान करेगा तथा मृत्यु - दण्ड का भागी बनेगा ।" इसी कारण उसने प्राचीन ग्रन्थों को जला डालने की आज्ञा निकलवा दी । केवल वैज्ञानिक विषयों की पुस्तकों को रखने का आदेश था । उसने सहस्रों ग्रन्थों को अग्नि के अर्पण कर दिया । कनफ्यूशसवादियों को भीत के घाट उतार दिया तथा उनसे चीन की बड़ी दीवार का निर्माण करवाया तथा बड़े अत्याचार किये ।

उसने केवल बुरे ही नहीं कुछ अच्छे कार्य भी किये । इसने सामंतवाद का अन्त किया । सम्पूर्ण साम्राज्य को ३६ प्रांतों में विभाजित किया तथा प्रत्येक प्रान्त में एक प्रांतपति नियुक्त किया । साम्राज्य के विस्तार के लिए इसने अग्रिम तक आक्रमण किये । पूरे देश को एक सूत्र में बांध दिया । देश की सुरक्षा के लिए एक बड़ी दीवार का (२१५ ई० पू० में) निर्माण करवाया । इसकी लम्बाई लगभग १५०० मील, इसकी नीचान पर चौड़ाई २५ फुट तथा ऊँचान पर १५ फुट तथा औसत ऊँचाई २० फुट थी । इस सम्राट की मृत्यु २१० ई० पू० में हो गई । तदुपरान्त सैनिक पदाधिकारी आपस में शासन की बागडोर सम्भालने के लिए झगड़ने लगे । इसी

1. ताउ=सत्य ।

अगड़े में उस सम्राट का २०७ ई० पू० में बध कर दिया गया जो शू हुआंग ती के मरणोपरांत राजसिंहासनाख्त हुआ था। यही इस वंश का अन्तिम सम्राट था।

हान (Han) वंश : (२०६ ई० पू० से २२० ई० सन् तक) उपर्युक्त पदाधिकारियों के अगड़ों में एक वीर विजयी हुआ और हान वंश का संस्थापक हो गया। इसका नाम था लियू पांग (Liu Pang)। इस वंश का छठा सम्राट वू ती (Wu - Ti) था जिसने ५० वर्ष राज्य किया। इसने एशिया की अनेकों पर्यटन - शील तथा बर्बर जातियों को परास्त कर अपने अधीन कर लिया। इस सम्राट के काल में रोमन साम्राज्य से सम्बन्ध स्थापित हुए। यल के मार्ग से दोनों देशों में व्यापार होने लगा। इस व्यापार का मध्यस्थ देश पाथिया था परन्तु जब पाथिया के साथ रोम का युद्ध आरम्भ हुआ तब यह व्यापार स्थगित कर दिया गया।

इसी वंश के शासन काल में भारत से यहाँ बौद्ध धर्म आया और धर्म के साथ भारत की कला व दर्शन भी आये। इसी के शासन काल में यहाँ मुद्रण - कला का आरम्भ हुआ और १०५ ई० सन् में कागज का आविष्कार हुआ।

इस वंश के आरम्भिक शासकों ने छिन्न - भिन्न साम्राज्य को एक सूत्र में बाँधा परन्तु अन्तिम काल के शासक साम्राज्य की एकता को स्थिर न रख सके और वह २२१ ई० सन् में निम्नलिखित तीन भागों में विभाजित हो गया।

१. उत्तर में वेई (Wei) राज्य के नाम से स्थापित हुआ।
२. मध्य चीन में वू (Wu) का राज्य स्थापित हुआ।
३. दक्षिण में हान वंश का बचा राज्य शू (Shu) के राज्य के नाम से स्थापित हुआ। इस

राज्य का प्रथम शासक लिन पेई (Lin Pei) था।

यह तीनों राज्य आपस में द्वेष रखते थे परन्तु फिर भी स्वास्थ्य रक्षा, गणित, खगोल शास्त्र, वनस्पति - शास्त्र तथा रसायनशास्त्र जैसे वैज्ञानिक विषयों पर विद्वानों ने अपने - अपने शोध व खोज कार्य सम्पन्न करके इन विषयों को व्यापकता प्रदान की। इन तीन वंशों का शासन २२१ से ५८८ ई० सन् तक स्थापित रहा।

५२६ ई० में भारत से एक बौद्धधर्म नाम का एक बौद्ध भिक्षु आया जिसके साथ अन्य भिक्षु भी चीन आये। इस काल से पूर्व लगभग दस सहस्र भारत - वासी चीन पहुँच चुके थे।

सुई (Sui) वंश : (५८९ से ६१८ ई० सन् तक) इस वंश के शासकों ने एकता लाने का पर्याप्त प्रयत्न किया। इसके शासक उत्प्रेक्षणीय नहीं हैं।

तांग (T'ang) वंश : (६१८ से ९०६ ई० तक) का संस्थापक काओत्सु (Kao Tzu) था। इस सम्राट ने विभाजित चीन को फिर एक सूत्र में बाँधा। अपने साम्राज्य का विस्तार किया। दक्षिण में अन्नाम व कम्बूचिया को अपने अधीन कर लिया। पश्चिम में कैस्पियन सागर तक आक्रमण करके अपने साम्राज्य में सम्मिलित किया। अपनी राजधानी सी - एन - फू (Si - an - Fu) को बनाया।

चीन में जनगणना कराने की पद्धति बहुत प्राचीन है। जिसके अनुसार ६७५ ई० में जनगणना की गई। तब चीन की जनसंख्या लगभग १० करोड़ थी (जो अब बढ़कर १०० करोड़ के लगभग हो गई है)। यहाँ इसाई धर्म के पूर्व इस्लाम आया। मुसलमानों ने सातवीं शताब्दी में कैण्टन में एक मस्जिद का निर्माण किया। अरबों ने चीनियों से कागज बनाना सीखा और योरोप के लोगों ने अरबों से सीखा। इसी वंश के शासनकाल में बालूद का भी आविष्कार चीन में हुआ।

चीन -- (७५० ई० सन्)
७वीं श० -- तांग वंश का साम्राज्य



जैसे जैसे यहाँ के शासक विलासी होते गये वैसे वैसे राजवंश में तथा प्रजा में चरित्रहीनता बढ़ने लगी । इसी के साथ कर अधिक वसूल किये जाने लगे । तत्कालीन शासक के विरुद्ध विद्रोह हुआ । तदनन्तर एक के बाद एक बंश आया परन्तु स्थिरता के साथ कोई शासन न कर सका । इस प्रकार निम्नलिखित पाँच बंश आये तथा समाप्त हुए :—

पाँच बंश : (९०७ से ९६० ई० तक)

१. उत्तर लियांग बंश ।
२. उत्तर तांग बंश ।
३. उत्तर ची इन बंश ।
४. उत्तर हान बंश ।
५. उत्तर चाओ बंश ।

सूंग बंश (Sung Dynasty) : (९६० से १२७९ तक) इस बंश का संस्थापक चाओ कुआंग — इन (Chao K'uang Yin) था । ग्यारहवीं श० में प्रजा में बड़ा असन्तोष फैला । फिर क्रान्ति हुई तथा उसका दमन किया गया । तब एक शासन का तत्कालीन प्रधानमन्त्री वांग अन — शर (Wang An — Shih) था जो बड़ा प्रगतिवादी था । उसने भविष्य में क्रांतियाँ रोकने के लिए कई सुधार किये ताकि जनता में संतोष बना रहे । उसने परिस्थितियों का विश्लेषण करके निम्नलिखित शासन — सुधार किये :—

१. कृषक अपना भूमि — कर मुद्रा के स्थान पर अपनी उत्पादक वस्तुओं द्वारा दे सकते हैं ।
 २. जब कृषकों को उत्पादन के लिए कृषि सम्बन्धी वस्तुओं की आवश्यकता हो तो सरकार उनकी सहायता करे और ऋण दे ।
 ३. अनाज का क्रय — विक्रय शासन द्वारा हो ।
 ४. पदाधिकारियों द्वारा ली जाने वाली बेमार बन्द की जाये और मजदूर को पूरी मजदूरी दी जाये ।
 ५. आवश्यकता पड़ने पर कर की वृद्धि धनवानों के लिए की जाये ।
 ६. एक देश — रक्षक — सेना का निर्माण किया जाये ।
- इस सेना का नाम 'बाओ चिया (Pao Chia)' रखा जाये ।

तत्कालिक परिस्थितियों के लिए यह सुधार औषधि के रूप में काम आये परन्तु प्रजा तथा राजा में यह विचार प्रचलित न हो सके । केवल देश — रक्षक — सेना स्थिर रह गई ।

मध्य एशिया की तथा मंगोलों की कई जातियों ने इस देश पर अपने आक्रमण आरम्भ कर दिये । सूंग वंशी शासक इनको रोक न सके और उन्होंने देश की रक्षा हेतु 'किन' जाति के तातारों को उत्तर से बुलाया । इन लोगों ने आक्रमणकारियों को तो भगा दिया परन्तु चीन के उत्तरी भाग में बस गये । शनैः शनैः अपनी सत्ता को बढ़ाने लगे तथा राजनीति में हस्तक्षेप करने लगे और एक दिन आया कि उन्होंने उत्तर में अपना राज्य स्थापित करना आरम्भ कर दिया । 'किन' जाति का राज्य बढ़ता गया और सूंग बंश का राज्य संकीर्ण होता गया ।

अब सूंग बंश के शासन में दो चीन हो गये । उत्तर में किन जाति का तथा दक्षिण में सूंग बंश का राज्य स्थापित रहा । यह व्यवस्था ११२७ से १२७९ ई० तक चलती रही ।

१२१० ई० में मंगोल जाति के लोगों ने अपने एक वीर तथा विश्व विख्यात नेता तिमूचिन के साथ

चीन १३वीं श० के अन्त में



चीन पर आक्रमण कर दिया। पहले उसने उत्तरी चीन के किन वंशी शासक को समाप्त किया। तत्पश्चात् दक्षिणी चीन के सूंग वंशी शासक को परास्त किया। इस नेता का नाम बाद में चंगेज खान पड़ा।

यूआन (Yuan) वंश : (१२७९ से १३६८ ई० तक) का दूसरा नाम था मंगोल वंश। चंगेज खान का जन्म ११५५ ई० में हुआ। उसके पिता का नाम यसूगी बागातुर (अर्थात् बहादुर) था और खान के या कागन के अर्थ होते हैं महाराजा। ५१ वर्ष की आयु हो जाने पर अर्थात् १२०६ में यह खान बना। जब फ़ारस के शाह ने मंगोल व्यापारियों का बध करवा दिया तब चंगेज खान ने १२१९ में फ़ारस पर आक्रमण कर दिया। मार्ग में नगर के नगर नष्ट कर दिये। रूस को पराजित किया और मध्य यूरोप के कई देशों को नष्ट - भ्रष्ट किया। उसने अपनी राजधानी कराकोरम बनाई। ७२ वर्ष की अवस्था में (१२२७ में) उसका देहान्त हो गया। बहुत से लोग अब भी 'खान' शब्द के कारण उसको मुसलमान समझते हैं परन्तु वह आकाश - देवता (शमा) का पुजारी था।

उसके मरणोपरांत उसका पुत्र ओगोताइ महा खान बना। १२५२ में इसकी मृत्यु के पश्चात् मंगू खान महा खान बना। इसके भाई हुलागू ने बगदाद, मध्य एशिया, यूरोप व रूस पर नरसंहारक आक्रमण किये। तिब्बत को भी परास्त किया। १२३९ में मंगू खान की मृत्यु हो गई।

अब चीन का प्रांतपति कुबलई खान स्वतंत्र होकर महा खान बना। उसने कराकोरम से अपनी राजधानी हटाकर पीकिंग बनाई तथा इसका नाम खानवालिग रखा। परन्तु अब खान (अर्थात् मंगोलसम्राट्) चीनियों के साथ रहते रहते बहुत सभ्य हो गये थे। उनकी निर्दयता पर्याप्त मात्रा में मर चुकी थी। इसने अन्नाम व बर्मा को अपने अधीन कर लिया और १२७९ में चीन का सम्राट् घोषित कर दिया गया और इस मंगोल वंश का संस्थापक बन गया। अब मंगोल जाति के लोग धनी हो गये थे। उनके पास काम करने के लिए गुलाम थे। अब वह शांत स्वभाव के विलासी हो गये थे। आक्रमण के स्थान पर आराम को अच्छा समझते थे। कुबलई खान की मृत्यु १२६२ में हो गई।

मंगोल जाति के, एशिया व यूरोप में, पाँच साम्राज्य स्थापित हो गये जो निम्नलिखित हैं :—

१. चीन का साम्राज्य, जिसके अन्तर्गत चीन, तिब्बत, मंगोलिया तथा मंचूरिया देश थे। इसके शासक कुबलई खान के उत्तराधिकारी हुए।
२. यूरोप का साम्राज्य जिसके अन्तर्गत रूस व हंगेरी देश थे। इसका शासक सुनहरे मंगोल जाति के लोग थे।
३. इलखान साम्राज्य जिसके अन्तर्गत पर्सिया व मेसोपोटामिया के देश थे। इसके शासक हुलागू का वंशज थे।
४. जगाताई साम्राज्य जिसके अन्तर्गत मध्य एशिया के छोटे छोटे राज्य थे।
५. सिबिर साम्राज्य जिसके अन्तर्गत सायबेरिया की हरियाली भूमि के उपनगर थे।

मंगोल जाति के अनेकों देशों से सम्पर्क होने के कारण सेना में बहुत से विदेशी आ गये थे। उनमें बहुत से अच्छे अच्छे पदों पर नियुक्त किये गये। १३६८ ई० में इस वंश का अंत एक क्रांति द्वारा हो गया।

मिंग वंश : (१३६८ से १६४४ तक) एक सरीब मजदूर का पुत्र मंगोल वंश के विरुद्ध की गई क्रांति का नेता बन गया जिसने उनको चीन की बड़ी दीवार के बाहर निकाल दिया। इस मजदूर के पुत्र का नाम था जू युआन जॉंग (Chu Yuan Chang) जो अपनी पदवी के कारण हुंग वू (Hung Wu) के नाम से विख्यात हुआ। यही मिंग वंश का संस्थापक तथा प्रथम सम्राट् बना जिसने तीस वर्ष तक शासन किया। मिंग के अर्थ हैं 'प्रकाशमान'।

एशिया के पूर्व तथा दक्षिण - पूर्व के देश, चीन का ज्येष्ठ भ्राता के रूप में आदर करते थे। जापान से जावा तक चीन की संस्कृति तथा भाषा व कला ने प्रभावित किया। इस काल में युद्ध नहीं हुए। देश का समय व धन देश के कल्याण के लिए प्रयोग होने लगा। कला व शिल्प की प्रगति होने लगी। ऊँचे ऊँचे कलापूर्ण भवनों का निर्माण होने लगा। इस पन्द्रहवीं श० में चीन योरोप से धन में, कला - कौशल में, उद्योग में तथा संस्कृति में बहुत ऊँचे शिखर पर था। इस वंश के एक शासक युंग लो (Yung Lo) ने अपनी राजधानी नानकिंग से पीकिंग बनाई। कागज की मुद्रा का (Paper Currency) का प्रचलन आरम्भ किया।

इसी काल की १५१६ में पुर्तगालियों का प्रथम जलपोत योरोप से चीन पहुँचा। आरम्भ में पुर्तगालियों ने चीन के निवासियों की ओर बड़ी सद्भावना दिखाई तथा आदरपूर्ण व्यवहार किया। चीन की सरकार से अपने व्यापार के लिए कोठियाँ बनवाने की आज्ञा प्राप्त कर ली। शनैः शनैः इनके व्यवहार में अन्तर आने लगा। जब इस बात की सूचना चीन सरकार को मिली तो उसने सख्ती से काम लिया और उनको अधिक पैर न पसारने की आज्ञा दी। १५५७ में उनको केवल एक छोटे से द्वीप मकाओ (Macau) पर निवास तथा व्यापार करने की आज्ञा प्रदान कर दी जहाँ वह आज तक जमे हैं।

अब पुर्तगाली व चीनी सरकार में अच्छी मित्रता हो गई। योरोप के कई व्यापारी देश यहाँ आये, अपने पैर जमाना चाहे परन्तु पुर्तगाली अधिकारियों ने चीन की सरकार के ऐसे कान भरे कि उनको व्यापार करने की अनुमति न मिल सकी।

जैसा कि बहुधा होता चला आया कि वंश के शासन के कुछ समय बाद शासक विलासी तथा राज्य की ओर से उदासीन होते जाते हैं जिसके कारण राज्य - पदाधिकारी लोभी तथा घूसखोर होते जाते हैं और उसी के विरुद्ध क्रान्तियाँ होती जाती हैं। उसी प्रकार १६४४ में इस वंश का अन्त भी एक क्रान्ति द्वारा हुआ।

मंचू (Manchu) वंश : (१६४४ से १९११ तक) का आगमन चीन के उत्तर - पूर्वी भाग मंचूरिया से हुआ। मंचू लोगों ने १६४४ में एक विद्रोह छड़ा कर दिया तथा कुछ भाग पर अपना अधिकार भी कर लिया। इसी विद्रोह के एक नेता ली द्जु चेंग (Li Tzu - Ch'eng) ने चीन के सम्राट होने की घोषणा कर दी। मिंग वंश के अन्तिम शासक ने आत्महत्या कर ली।

यह सब कैसे हो गया। मंचूओं ने जब विद्रोह किया तब मिंग वंश के शासक ने अपने एक सैनिक उच्च पदाधिकारी को, जिसका नाम वू सान कुई (Wu San - Kwei) था, विद्रोह दमन करने के लिए भेजा परन्तु वह उनसे मिल गया और देश व तत्कालीन शासन के साथ विश्वासघात किया। इसी सैनिक के कारण लीत्सु चेंग पीकिंग का सम्राट बन गया जिसने इस सैनिक को दक्षिणी चीन का वायसराय बना दिया। इस सब परिवर्तन में नरसंहार नाममात्र को हुआ। युद्ध भी नहीं हुआ केवल शासन के अधिकारी विद्रोहियों द्वारा मिला लिये गये।

१६५० से मंचूओं ने अपने पैर अच्छी तरह जमा लिये। विद्रोही नेता ली प्रथम सम्राट तथा इस वंश का संस्थापक बना। इस वंश को चींग (Ch'ing) वंश के नाम से भी सम्बोधित करते हैं।

इस वंश के एक शासक कांग शी (K'ang Hsi) ने, जिसने १६६१ से १७२२ तक राज्य किया, चीनी शब्दों का कोष तैयार करवाया जिसमें लगभग ४४ हजार शब्द थे। दूसरे इसने एक विश्वकोष चित्रों सहित लिखवाया तथा तीसरा महान् कार्य चीनी साहित्य का एकत्रित करना था। इन तीन कार्यों के कारण इस शासक का चीन के इतिहास में नाम अमर हो गया। इतना ही नहीं, इसने अंग्रेजों पर तथा उसके व्यापार

पर कड़ी दृष्टि रखी और ईसाई धर्म फैलने के साथ राजनीति को दूषित करने से रोका। चाय का व्यापार इसी के काल से आरम्भ हुआ।

१७३६ से १७९६ तक कांग — ही के पौत्र जियेन लुंग (Chien Lung) ने चीन पर शासन किया। इसने दक्षिण — पूर्व के देशों को अपने अधीन कर लिया। देशों के अधीन करने का तथा उनके स्वतन्त्र होने का क्रम शताब्दियों से चला आ रहा है। इसी शासक के शासन काल में इंग्लैण्ड के राजा जॉर्ज तृतीय (George III) ने १७९२ में अपने एक प्रतिनिधि मण्डल को चीन के साथ व्यापार करने की अन्य सुविधायें प्राप्त करने के लिए बहुत से उपहारों के साथ भेजा परन्तु चैन लुंग ने और अधिक सुविधायें देने से साफ़ मना कर दिया। अब अंग्रेज़ व्यापारियों ने चुपके चुपके छिप कर अफ्रीम का व्यापार बढ़ाया।

यह व्यापार दिन पर दिन बढ़ता ही गया। डच्छ व्यापारी अफ्रीम को तम्बाकू में मिला कर बेचा करते थे। १८०० ई० में चीन सरकार ने इस व्यापार को समाप्त करने के लिए एक आदेश निकाला कि चीन की भूमि पर अफ्रीम न आने पाये परन्तु व्यापारियों ने चीनी पदाधिकारियों की जेबें गर्म कीं और अफ्रीम का व्यापार पर्दे के पीछे से होने लगा।

१८३४ तक तो यह व्यापार कुछ कम रहा क्योंकि एक ईस्ट इण्डिया कम्पनी ही को व्यापार करने का अधिकार था परन्तु इसके पश्चात् ब्रिटिश सरकार ने अपने देश के अन्य व्यापारियों को भी व्यापार करने की अनुमति प्रदान कर दी जिसके कारण इस व्यापार में बहुत अधिक वृद्धि हुई। जब चीन की सरकार ने देख लिया कि उसके आदेश का पालन ऊपर से होता है तथा उल्लंघन नीचे से होता है तब उसने अपना एक विश्वासपात्र उच्च पदाधिकारी इसकी रोकथाम के लिए भेजा। कैंपटन में इसने अंग्रेज़ व्यापारियों के साथ बड़ा कड़ा व्यवहार किया। उनकी व्यापारिक कोठियों से छिपी हुई अफ्रीम के २० हजार बक्से नष्ट करवा दिये जिससे करोड़ों रुपयों की हानि हुई। ब्रिटिश सरकार इस हानि को सहन न कर सकी और उसने चीन की सरकार पर मानहानि का दोष लगा कर १८४० में आक्रमण कर दिया। चीनी अंग्रेज़ी तोपों एवं नौसेना के गोलों के सामने ठहर न सके। चीन को सन्धि करने के लिए बाध्य होना पड़ा।

यह सन्धि नानकिंग में १८४२ में सम्पन्न हुई। ऐसी सन्धियों में विजेता सदैव अपने पक्ष की शर्तें अधिक रखता है और वैसे ही इस सन्धि में भी हुआ। २० हजार अफ्रीम के बक्सों को नष्ट करने के तथा युद्ध की क्षति के बदले में चीन सरकार से बहुत सा धन तथा हांगकांग के द्वीप पर अपना अधिकार प्राप्त कर लिया। अब तो चीन में ईसाई धर्म के प्रचारक भी आने लगे। उनको किसी प्रकार का दण्ड देने का अधिकार चीन के न्यायालयों को नहीं था चाहे वह किसी प्रकार का दण्डनीय कार्य करें। इस प्रकार दिन पर दिन चीन की सरकार शक्तिहीन होती गई तथा विदेश के व्यापारी शक्तिमान् होते गये।

१८५० में एक महान् क्रान्ति हुई जिसको हुंग शीन जुआन (Hung Hsin Chuan) ने चलाया। इसमें लगभग दो करोड़ मनुष्य मारे गये। इधर तीन अन्य विदेशी शक्तियाँ इस सन्धि में सम्मिलित हो गईं जिनका नाम था अमरीका, फ्रांस तथा रूस। अब इन शक्तियों ने एक नई सन्धि करने के लिए चीन सरकार को बाध्य किया। विदेशी मण्डल बुलाये गये और उनको अमुक मार्ग से आने को कहा गया परन्तु विजेता होने के घमण्ड में दूसरे मार्ग से आये। चीनी सैनिकों ने गोली चला दी जिसके फलस्वरूप विदेशी सैनिकों ने पीकिंग नगर को खूब लूटा। १८६० में सन्धिपत्र पर सबके हस्ताक्षर हो गये।

१८६४ में एक चीनी प्रांत — पति ने क्रान्ति कर दी जिसका नाम ली हुआंग चांग (Li Huang ch'ang) था। इस विद्रोह को सरकार समाप्त नहीं कर पायी कि दूसरा विद्रोह चीनी अफसरों के विरुद्ध

मध्य एशिया के मुसलमानों ने कर दिया। १८८५ में चीन का युद्ध फ्रांस से हो गया। चीन पराजित नहीं हुआ। १८८६ में चीन ने बर्मा ले लिया। इन दिनों चीन में एक महारानी त्जु शी (Tzu Hsi) शासन करती थी। १८९४ में डा० सनयात सेन (Dr. Sunyat Sen) ने चाइना रिवाइवल सोसायटी (China Revival Society) को जन्म दिया। १९०८ में महारानी के मरणोपरांत एक शिशु सम्राट बना।

१९११ में डा० सेन की सोसायटी का नाम परिवर्तित करके पीपल्स नेशनल पार्टी (Peoples National Party) रख दिया गया। अक्टूबर १९११ में मध्य तथा दक्षिण चीन में क्रांति हो गई। पहली जनवरी १९१२ को स्वतंत्र प्रांतों में लोकतंत्र की घोषणा हो गई। नानकिंग राजधानी बनी तथा डा० सेन उसके राष्ट्रपति बने।

१२ फरवरी १९१२ को मंचु वंश के अंतिम शासक ने राजगद्दी को त्याग दिया। उत्तर में युवान (Yuan) ने अधिकार किया। इसर चीन - जापान युद्ध हुआ जो वर्षों चलता रहा। दूसरे महायुद्ध के पश्चात् चीनी साम्यवादियों का अधिकार बढ़ता गया और एक दिन १९४९ को राष्ट्रीय सरकार के राष्ट्रपति चियांग काइ शेक (Chiang Kai - Shek) को फारमूसा (तैवान) के द्वीप में जाकर अपना डेरा डालना पड़ा। अब दो चीन सरकारें बन गईं। एक राष्ट्रीय चीन सरकार तैवान में तथा दूसरी साम्यवादी सरकार चीन की मुख्य भूमि पर। साम्यवादी सरकार को विश्व के बहुत से देशों ने मान्यता प्रदान नहीं की। जब अमरीका ने मान्यता प्रदान की तब सारे देश इसको मानने लगे। १९७१ में यह संयुक्त राष्ट्र संघ का सदस्य बन गया और तैवान को संघ से निष्कासित करा दिया गया।

चीन की लेखन कला

परिचय : संसार के किसी देश की भाषा (बोली व लिपि) इतनी जटिल नहीं है जितनी चीन की। यह भी बड़े आश्चर्य की बात है कि चीन ने अपनी सांस्कृतिक लिपि के लगभग ४०,००० एकाक्षरी (Monosyllabic) और संयुक्त (Compound) शब्दों द्वारा इतनी वैज्ञानिक व तकनीकी प्रगति कर ली कि आज वह रूस व अमरीका जैसे प्रगतिशील देशों से प्रतियोगिता करने को तत्पर है।

इस भाषा में स्वर (Vowels), उपसर्ग (Prefixes) तथा शब्दों के अन्त में प्रत्यय (Suffixes) जोड़ने का प्रयोग नहीं होता था। एक शब्द क्रिया, संज्ञा अथवा विशेषण कुछ भी हो सकता था परन्तु उसका मूलरूप परिवर्तित नहीं होता था। अब व्याकरण का प्रयोग होने लगा है।

प्रचलित चीनी भाषा में जो आज विदेशों में सिखाई जाती है, दो प्रकार का मिश्रण है :—

१. श्रवणीय चिह्नों की पद्धति (System of Auditory Symbols)।
२. दृष्टिक चिह्नों की पद्धति (System of Visual Symbols) जिसमें रेखाओं के सम्मिलन से लिपि प्रयोगात्मक बनाई जाती है (Stroke Combinations - Called Characters)।

प्रोफेसर ली^१ मण्डारिन (Mandarin) को पीकिंग (आधुनिक बीजिंग) भाषा सम्बोधित करते हैं। २०० वर्षों से इसका समाज में उच्च - स्तर रहा है। इसी कारण इसका नाम कुआन ह्वाह (Kuan Hua) अर्थात् 'अफसरों की भाषा' पड़ गया परन्तु पश्चिमी देश - वासी इसको मण्डारिन पुकारते हैं। प्रो० ली के अनुसार चीन में आठ मुख्य भाषाएँ प्रचलित हैं जिनका नाम निम्नलिखित है :—

१. फांग्गु ली (Fang - Kuei Li) हवाई (Hawaii - U. S. A.) विश्व विद्यालय के १९३७ में प्रोफेसर थे।

- | | |
|---------------------|----------------|
| १. उत्तरी मण्डारिन | ५. कान - हक्का |
| २. पूर्वी मण्डारिन | ६. मीन |
| ३. दक्षिणी मण्डारिन | ७. कैन्टोनीज |
| ४. वू | ८. हुई यांग |

१९२३ में पीकिंग भाषा को राष्ट्रीय भाषा बनाने का एक आन्दोलन चला जिसमें ध्वन्यात्मक वर्णों का आविष्कार किया गया। १९१८ में चीन की सरकार ने इसको मान्यता प्रदान कर दी। छः दशक के पश्चात् अधिकांश चीनी तथा तैवान एवं सिंगापुर निवासी पीकिंग - भाषा का प्रयोग करने लगे और इस भाषा का नाम 'पू - टंग - ह्वा (p'u - T'ung - hua)' अर्थात् 'साधारण भाषा (Common Language)' पड़ गया।

माओ के शासन - काल में अनेक शब्दों को जो पूँजीवादी समाज में प्रचलित थे, परिवर्तित कर दिया गया।

चीनी व्याकरण की एक झलक : यहाँ की व्याकरण¹ अन्य भाषाओं के प्रकार से प्रयोग नहीं की जाती। उसके कुछ ही उदाहरण निम्नलिखित पंक्तियों में दिये गये हैं :—

संज्ञा (Noun) : इसमें शब्दों को स्त्री - लिंग या पुल्लिंग नहीं माना जाता जिस प्रकार हिन्दी भाषा में प्रयोगात्मक है। इसमें स्त्री और पुरुष के नामों के पूर्व शब्दों का प्रयोग कर वाक्य बनाया जाता है। 'नान (Nan)' शब्द का प्रयोग पुरुष के नाम के पूर्व तथा 'न्यु (Nü)' का प्रयोग स्त्री के नाम के पूर्व किया जाता है।

पशुओं में स्त्रीलिंग - पुल्लिंग के लिए पृथक् शब्दों का प्रयोग किया जाता है। नर के नाम के पूर्व 'मू (Mu)' तथा मादा - पशु के नाम के पूर्व 'पीन (P'in)' प्रयोग किया जाता है।

एक - वचन बहु - वचन संज्ञा के लिए अधिकांश इस प्रकार प्रयोग किया जाता है, जैसे, 'नान रन मन (Nan jên mên)' अर्थात् अनेक पुरुष। 'नीउ रन मन (Nü jên mên)' अर्थात् अनेक स्त्रियाँ।

अभिपद (Article) : 'ए या ऐन (a or an)' को 'ई (i) = एक' के द्वारा व्यक्त करते हैं, जैसे 'ई गो रन (I Ko jên)' अर्थात् 'एक मनुष्य'।

विशेषण (Adjective) : 'यह या वह' को 'ज गो (Chê Ko) = यह (This)' तथा 'न गो (Na Ko) = वह (That)' बहुवचन बनाने के लिए एक शब्द 'शीय (hsieh)' जोड़ देते हैं, जैसे, 'ज शीय रन (Chê hsieh jên) = यह मनुष्य (These men)'। 'ना शीय रन (Na hsieh jên) = वह मनुष्य (Those men)'।

व्यक्ति - वाचक सर्वनाम (Personal Pronoun) : 'हो (Wo)' = मैं, मुझे; 'नी (Ni)' = तुम; 'टा (T'a)' = वह (he, she, it)। बहुवचन बनाने के लिए 'मन (mên)' शब्द का प्रयोग किया जाता है, जैसे, 'हो मन (Wo - mên) = हम (we), हमको (Us); 'नी मन (Ni - mên)' = तुम; 'टा मन (Ta - Mên)' = वे, उनको (They, them)।

प्रश्न वाचक सर्वनाम (Interrogative Pronouns) : 'श्वे (Shui)' = कौन है ?; 'श्वे डी (Shui ti)' = किसका है ? इस प्रकार 'श्वे (Shui)' शब्द जोड़ने से प्रश्नवाचक बन जाता है; जैसे, 'ना गो रन शर

1. Williamson, H. R. : Teach Yourself Books - Chinese (1972), p. - 425.

श्वे (Na ko jên shih shui)' = कौन है ? (Who is that ?) । 'ना शीय हुंग शी शर श्वे डी (Na hsieh tung hai shih shui ti)' = वह किसकी वस्तुएँ हैं ? (Whose are those things ?) ।

क्रिया (Verb) : क्रिया के तीन काल :—भूत काल (Past Tense) 'वो लाई गुओ (Wo lai kuo)' = मैं आया (I came), मैं आ गया (I have come).

वर्तमान (Present Tense : 'वो लाई (Wo lai)' = मैं आ गया; मैं आ रहा हूँ ।

भविष्य (Future Tense) : क्रिया के पूर्व 'जियंग (Chiang)'; 'याओ (yao)'; 'ज्यू (Chiu)' आदि शब्द जोड़ देने से बन जाता है ।

'श्व ह्वा ज्यू लाई (Shuo hua chiu lai)' = जैसे ही आप बोले, वह आता है; 'टा ली को ज्यू लाई (T'a li k'o chiu lai)' वह तुरन्त आयेगा ।

चीन में साक्षरता : इस देश में साक्षरता का अभाव आरम्भ से ही रहा । उसके दो मुख्य कारण थे — 'भाषा' एवं 'लिपि' । 'भाषा' में फोनेटिक्स (Phonetics — प्रत्येक ध्वनि के लिए प्रत्येक अक्षर) नहीं थे और इसके स्थान पर थी टोन — पद्धति (Tone — System) जो एक स्थान से दूसरे स्थान में अन्तर रखती थी । दूसरा कारण था 'लिपि', जो संकेतात्मक न रह कर रेखात्मक (Written by Strokes) बन गयी थी ।

इन दो कारणों से केवल कुछ धनवान् — जिनके पास अभ्यास के लिए अधिक समय तथा धन होता था, इसको सीख सकते थे । यह धनवान् इसी बात के इच्छुक भी थे कि अधिक जनता साक्षर न हो जाये नहीं तो उस पर सर्वाधिकार जमाना कठिन होगा ।

चीन निवासी जिन्होंने १८०० वर्ष पूर्व कागज का आविष्कार^१ लकड़ी के गूदे से किया था । वैसे इसके पूर्ण मिल में कागज था परन्तु वह रीड (Reed — सरकण्डा) से निकले गूदे से बनता था । यही कागज योरोप निवासियों ने केवल ५०० वर्ष पूर्व बनाया । मुद्रण^२ भी चीन में १२०० वर्ष पूर्व आरम्भ हुआ और संसार की सर्वप्रथम पुस्तक ८४८ ई० सन् में व्वांग चिये (Wang Chieh) ने वल्लिख (Scroll) के रूप में, जिसमें भारतीय हीरक — सूत्र चीनी लिपि में मुद्रित था और जो १९०० में प्राप्त हुआ था, प्रकाशित की थी और योरोप में मुद्रण केवल ५०० वर्ष पूर्व आरम्भ हुआ । चीन में साक्षरता न्यून रही और योरोप में ९८ प्रतिशत हो गयी, उसका कारण था ध्वन्यात्मक लिपि ।

चीनी लिपि की विदेश यात्रा : इतनी कठिन होने पर भी इस लिपि का बहिर्गमन हुआ और कोरिया, जापान, तैवान, वियतनाम तथा सिंगापुर पहुँची । कोरिया ने अपनी एक लिपि का आविष्कार कर लिया और १९४५ में इसका बहिष्कार कर दिया । जापान ने अपनी लिपि का आविष्कार किया परन्तु चीनी वर्णों का प्रयोग भी होता रहा जो कम होते होते दस सहस्र से लगभग दो सहस्र वर्ण रह गये । आज भी जापानी लिपि के साथ चीनी लिपि का प्रयोग सम्मानजनक समझा जाता है । तैवान तथा सिंगापुर में भी चीनी लिपि प्रचलित है परन्तु वियतनाम ने इसका स्थान फ्रेंच लिपि को प्रदान कर दिया ।

1. Parker B. M. : The Golden Book Encyclopedia, Vol. XI, p. — 1052.

2. Ibid : Vol. XII, p. — 1134.

चीनी लिपि का सुधार : माओ ने १९४० में कहा "चीनी लिपि का सुधार होना चाहिए तथा चीनी भाषा जनता के समीप आनी चाहिए।" १९५५ में चीनी सरकार ने 'चीनी लिपि सुधार कमिशन' नियुक्त किया तथा एक 'सर्व चीनी अधिवेशन' का, चीनी लिपि में संशोधन करने के लिए, आयोजन किया।¹

इस अधिवेशन में चीनी लिपि में सुधार करने के तीन निम्नलिखित मुख्य कारणों पर विचार - विमर्श हुआ :—

१. चीनी लिपि बाल - शिक्षा तथा प्रौढ़ - शिक्षा पर एक भारी बोझ सिद्ध हुई है तथा श्रमिक व कृषक के तीन - वर्षीय साक्षरता के परीक्षण को निष्फल कर दिया। साथ साथ साक्षरता की योजना पर भी बुरा परिणाम डाला।
२. चीनी लिपि ने चीनी विद्यार्थियों के समय तथा शक्ति को नष्ट किया। प्राथमिक शालाओं के विद्यार्थी बड़ी कठिनाई से केवल ३००० शब्द लिखना तथा पढ़ना सीख पाते थे जिसके द्वारा वे कोई वैज्ञानिक विद्यालय में शिक्षार्थी बनने के अयोग्य रह जाते थे। उनको दो वर्ष केवल लिपि सीखने के लिए लगाने पड़ते थे। विज्ञान की विदेशी पुस्तकों के अनुवाद में भी चीनी लिपि ने अनेक समस्याएँ खड़ी कर दीं। इस कारण चीन की वैज्ञानिक तथा तकनीकी प्रगति में अवरोध उत्पन्न होने लगे।
३. चीनी लिपि ने आधुनिक सांस्कृतिक जीवन पर भी बुरे परिणाम डाले। यह लिपि टंकणयंत्र (type - writer) मुद्रणयंत्र (printing - press) तार - प्रेषण तथा कम्प्यूटर आदि के लिए भी एक बोझ बन गयी। तार घर में अनेक अनुवाद करने वाले रखे जाते थे। विदेशी तार भेजने में बहुत बिलम्ब होता था।

अन्त में इस अधिवेशन द्वारा यह निष्कर्ष निकला कि चीनी लिपि को वर्णात्मक बनाया जाये। इसके लिये रोमन लिपि का प्रयोग किया जाये। सम्भव है इस शताब्दी के अन्त तक चीनी लिपि का रूप परिवर्तित होकर पूर्णतया रोमनीकरण हो जाये।

जब से चीनी लिपि का जन्म हुआ तब से उसमें सदैव सुधार व संशोधन होते रहे। आज एक निपुण चीनी विद्यार्थी एक घण्टे में ३०० शब्दों से अधिक नहीं लिख सकता। संसार में कुछ वर्ष पूर्व तक चीनी भाषा पर कोई ऐसी पुस्तक नहीं थी जिसकी आलोचना न की गई हो अथवा जिसको पूर्णतया शुद्ध व त्रुटि - रहित माना गया हो। पुस्तक का यह पाठ भी त्रुटि - रहित नहीं हो सकता। लू ह्सुन (Lu Hsün)² के अनुसार "चीनी लिपि न यहाँ है न वहाँ - केवल एक गड़बड़ - झाला है।"

चीनी सरकार ने अब निश्चय कर लिया है कि चीनी लिपि का रोमीकरण अनिवार्य रूप से कर दिया जाये। उसमें अब यह परिवर्तन लाये जायेंगे, जैसे 'c' की ध्वनि 'ट्स' (Ts'u), 'q' की 'जी' (Chi) और 'X' की 'शी' (hsi) हो जायेगी। इसके अर्थ यह है कि रेखाओं का प्रयोग चीनी लिपि के चित्रों के निर्माण के लिए नहीं होगा। इससे कितनी अव्यवस्था होगी इसका अनुमान लगाना कठिन है।

1. Chung, Tan (J. N. U. - New Delhi) : 'Intricacies of Chinese Language (s) and Script' - Article published in Organiser - October 29, 1978. P - 40. Mao, "Written, Chinese must be reformed and the spoken language should be brought closer to that of the people."
2. Hsün, Lu : ".....the Chinese Script is neither here nor there a mere hotch - potch."
(Taken from 'Organiser' New Delhi weekly - 29th. October, 1978., p. - 40. Column. 2.)

इस परिवर्तन से सबसे बड़ी समस्या यह होगी कि चीन की संकेतात्मक लिपि की अनुपस्थिति में, जो अभी तक चीन की भिन्न भिन्न भाषाओं को एक सूत्र में बाँधे थी, वह एकता समाप्त हो जायेगी। इसके अतिरिक्त जो पीकिंग भाषा - भाषी नहीं हैं, तब उनके सामने ध्वन्यात्मक लिपि के वर्ण आयेंगे, वे अपने आपको निरक्षर समझने लगेंगे।

जब २००० ई० सन् तक पूर्ण चीन आधुनिक उद्योग व व्यवसाय अपना लेगा। संसार के अन्य देशों से उसके पर्याप्त सम्पर्क स्थापित हो जायेंगे तब लिपि का रोमनीकरण अधिक सम्भव हो पायेगा, और तब चीन का २००० वर्ष का प्राचीन लिपि का यशस्वी इतिहास संग्रहालयों को सुसज्जित करेगा। चीन का भूतपूर्व सांस्कृतिक गौरव लिपि के साथ समाप्त हो जायेगा और चीन भी एक आधुनिक देश में परिवर्तित हो जायेगा।

चीन की लिपियाँ

बा गुआ : आरम्भ में विचारों को व्यक्त करने के लिए तथा संवाद भेजने के लिए चीन में भी गाठों का प्रयोग होता था। पौराणिक काल के एक महाराजा फू शी (Fu - Hsi) ने २८०० ई० पू० में आठ रहस्य - वादी त्रिपुण्डों (Eight mystic Trigrams)¹ का निर्माण किया जिनको चीनी भाषा में बा² गुआ (Pa - Kua) कहते हैं। इन तीन पंक्तियों को जगह जगह पर काट काट कर निम्नलिखित शब्दों का निर्माण किया जिनको चीनी भाषा के शब्दों के साथ दिया गया है :—(फ० सं० - २१५)।

क्रमांक	शब्द	चीनी भाषा	विवरण
१.	स्वर्ग	गान	तीन पंक्तियाँ हैं।
२.	तोलना	डिन	ऊपर की पंक्ति कटी है।
३.	पानी	शुई	मध्य पंक्ति कटी है।
४.	गड़गड़ाहट	चेन्	ऊपर की दो पंक्तियाँ कटी हैं।
५.	लकड़ी	शू	नीचे की पंक्ति कटी है।
६.	त्याग	कन्	ऊपर व नीचे की पंक्तियाँ कटी हैं।
७.	सीमा	गेन्	नीचे की दो पंक्तियाँ कटी हैं।
८.	पृथ्वी	गुन	तीनों पंक्तियाँ कटी हैं।

इस प्रकार आठ शब्दों का निर्माण हुआ। तदनन्तर एक पंक्ति और जोड़कर आठ नये शब्द बने। इसी प्रकार छः पंक्तियों तक जोड़कर ४८ शब्दों का निर्माण किया गया।

चीन की प्राचीन लिपि : ली नाम के एक किसान को खेत में कुछ अद्भुत प्रकार की हड्डियाँ मिलीं। यह घटना १८६० की है जो होनान^३ प्रदेश के सियाव टुन नामक स्थान में घटी। उस किसान ने सोचा यह हड्डियाँ^४ ड्रैगन की हैं। उस समय चीन की देशी औषधियों के लिए हड्डियाँ अति शक्तिशाली मानी जाती थीं। ली ने यह हड्डियाँ रासायनिकों के हाथ में रहीं। इन लोगों ने इनका चूर्ण बना डाला तथा स्नायविक रोगों के



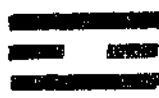

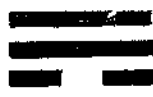



1. Taken from C. Gardner's - Journal of Ethnological Society (1870), Vol. II, p. - 5.

2. बा=आठ।

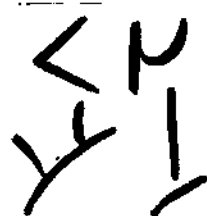







3. भूषेन्द्र नाथ सान्याल : आदिम मानव समाज (१९६१) पृष्ठ - 2.

4. यह हड्डियाँ बैल की अथवा मृतक कछुओं की पीठ की होती थीं।

आठ त्रिपुण्ड

१ 	२ 	३ 	४ 
५ 	६ 	७ 	८ 

प्राचीन रेखा चित्र

 बैल	 गाय	 मेढ़ा	 मेढ़ी
 रीछ	 रीछनी	 हिरन	 हिरनी

अनमोल उपचार के रूप में बेचा। एक रासायनिक की दुकान पर एक पुरातत्त्ववेत्ता पहुँच गया। जब उसने हड्डियों पर अंकित कुछ चिह्नों को देखा तो उसने उन चिह्नों को एक लिपि के अनुरूप मान लिया। अब पुरातत्त्ववेत्ताओं ने वे हड्डियाँ खरीदना आरम्भ कर दीं। लगभग ३० वर्ष बाद १८९९ में हड्डियों पर अंकित चिह्नों की व्याख्या की जा सकी।

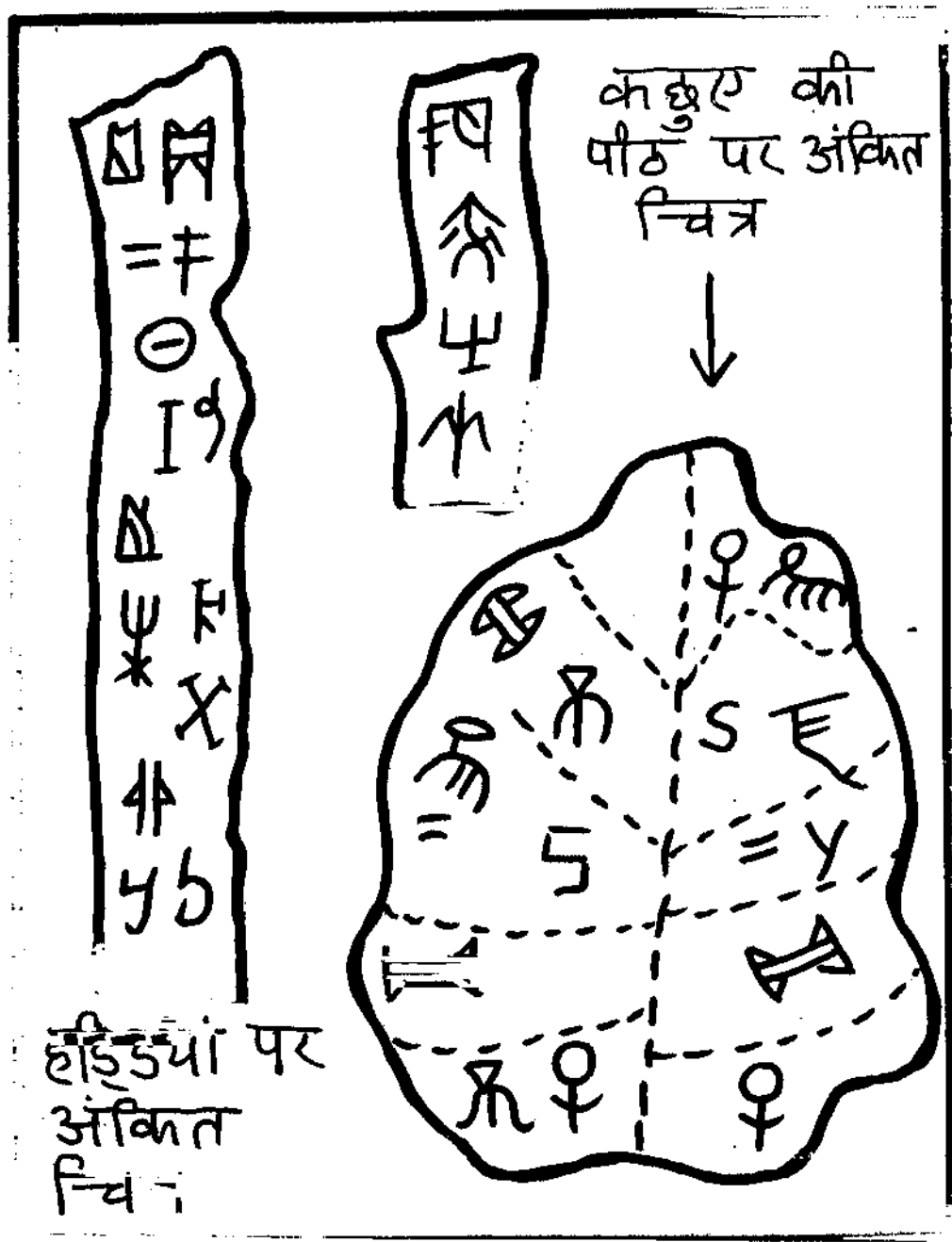
प्राचीन काल में इन हड्डियों के द्वारा भविष्यवाणी की जाती थी। जिस प्रश्न का उत्तर माँगा जाता था पुरोहित लोग हड्डी पर अंकित कर देते थे तदनन्तर उसको गर्म करते थे। गर्मी से हड्डी में जिस दिशा में दरार पड़ जाती थी उसी प्रश्न का उत्तर 'हाँ' या 'न' में माना जाता था। यह हड्डियाँ राजा के महलों में रखी जाती थीं। यह राजा शांग वंश (१७६५ - ११२३ ई० पू०) के काल के थे। यह राजा खेती की फसल, युद्ध या राजनीति के विषय में प्रश्न पूछा करते थे। सुंग^१ ने अपनी पुस्तक में यह काल १७६६ - ११५० ई० पू० माना है। 'फ० सं० - २१६' पर दिये गये चित्र इसी पुस्तक^२ से लिये गये हैं।

चीनी लिपि का कालानुसार विकास : जब से चीनी लिपि का जन्म हुआ तब से अब तक उसका विकास^३ होता रहा और सम्भवतः होता रहेगा, जब तक पूर्णतया यह ध्वन्यात्मक नहीं बन जाती अथवा जब तक पूर्णतया इसका रोमनीकरण नहीं हो जाता। आदि काल से अब तक उसके नामों में भी परिवर्तन होते रहे, जो निम्नलिखित हैं और 'फ० सं० - २१७' पर दिये गये हैं :—

१. **जिया गु वन (Chia - Ku - Wen^४) :** इसके अर्थ हैं खोल (Shell) एवं हाड़ लिपि। खोल अधिकतर मृत कछुओं की पीठ के और हाड़ मृत बेलों के होते थे। इनको ओरैकिल बोनस (Oracle Bones) अर्थात् आकाशवाणी द्वारा अंकित खोल या हाड़। बाज़ार में इनको ड्रैगन^५ - बोनस (Dragon Bones) के नाम से बेचा जाता था। इसमें ८०० मौलिक चित्र थे जिनका रूपान्तर करके अन्य-शब्दों का निर्माण किया गया। इनकी संख्या ३४६९ तक पहुँच गई। इस लिपि का काल १०८० से ८०० ई० पू० तक माना जाता है।
२. **डा जुआन (Ta Chuan) :** इस लिपि का विकास गु-वेन लिपि के द्वारा एक चीनी विद्वान् डाइ शी (Tai Hsi) ने ई० पू० की आठवीं श० में किया। इसका प्रयोग ६०० ई० पू० तक चलता रहा।
३. **चाउ वन (Ch'ou Wen) :** इसका विकास सामन्त शाही चाउ वंश के शासन काल में हुआ इसको बड़ी - मुद्रा - लिपि भी कहते थे। इसका काल ६०० से ४०० ई० पू० माना जाता है। ली शी (Li Hsi) ने एक ३००० शब्दों का शब्द - कोष संकलित किया।
४. **शियाओ जुआन (Hsiao Chuan) :** इसका विकास ४०० से २५० ई० पू० माना जाता है।
५. **ली शु (Li - Shu) :** इसको कारापाल लिपि (Jailor Script)^६ भी कहते हैं। इसका आविष्कार चीन वंशीय शासक शेर हुआंग ती (Ch'in - Shih - Huang - ti)^७ के शासन काल में हुआ।

1. Sung, Y. F. : Chinese in 30 Lessons. (Hollywood 1945). p. - 26.
2. Chalfant, F. H. : Memories of the Carnegie Museum IV. (1906), p. - 32.
3. Blackney : A Course in the Analysis of Chinese Characters (Shanghai 1926), p. - 11.
4. W'en - 'वन' = साहित्य।
5. 'ड्रैगन' चीन का पौराणिक जीवधारी माना जाता है। इसको स्वर्ग - नरक का चौकीदार मानते हैं। यह लम्बा सर्पाकार लम्बे नख वाला शेर के जैसा मुँह वाला मयानक पशु चित्रों में प्रदर्शित किया जाता है।
6. Dr. Tan Chung : 'The Intricacies of Chinese Languages and Script' - Published in 'Organiser' - (Periodical) October, 29. 1978, p. - 11.
7. इसको 'शु हुआंग ती' भी कहते हैं।

चीन की प्राचीनतम लिपि



इसने बहुत से सुधार किये परन्तु अत्याचार भी बहुत किये। जब बन्दियों से कारागार भरने लगे, तो एक कारागार के पदाधिकारी जंग मियाओ (Cheng Miao) ने सारे बन्दियों को पंजीकृत करने के लिए कुछ रेखाओं (Strokes) का प्रयोग कर इस नई लिपि का आविष्कार किया। इसका काल २५० से १०० ई० सन् माना जाता है। रेखाओं (Strokes) का प्रयोग इस काल से ही आरम्भ हुआ। ईसा की प्रथम श० में शु शन (Shu - Shen) द्वारा १०,५१६ शब्दों का एक शब्द - कोष संकलित किया गया।

अन्त में अठारहवीं श० में सम्राट् कांग शी^१ (K'ang - Hsi) ने ४४४४ शब्दों के एक शब्द - कोष का निर्माण करवाया। गाइल्स^२ के शब्द - कोष में १०,५१९ शब्द हैं।

६. त्साओ - शु (Ts'ao - Shu) : त्साओ के अर्थ हैं 'घास' तथा 'शू' के अर्थ 'किताब'। इसका काल १०० ई० से २०० तक रहा।
७. बा फ़न शु (Pa Fen Shu) : इसका विकास एक विद्वान् ह्वांग इसी जंग (Huang Tsi Cheng) ने किया। इसका काल २०० ई० से ३०० ई० तक माना जाता है।
८. काए - शु (K'ai - Shu) : इसका विकास ३०० से ४०० ई० तक रहा। इसका प्रयोग सुलेख के लिए किया जाता था।
९. शिंग - शु (Hsing - Shu) : इसका विकास ४०० ई० से ८०० ई० तक होता रहा। इसका प्रयोग शीघ्र तथा घसीट लिखने के लिए किया जाता था।

इसी फलक पर ऊपर की पंक्ति में लिपि का रूपान्तरण ६ शब्दों (आकाश, अग्नि, पवन, जल, पर्वत, पृथ्वी) के प्रतिदर्श द्वारा दिया गया है। इन ६ शब्दों को कैसे लिखा जाता है, 'फ० स० - २२४' पर दिया गया है।

चीनी लिपि की ध्वनि - बल (टोन - Tone) पद्धति : चीनी लिपि में ध्वनि - बल अर्थात् टोन का प्रचलित होना विदेशियों के लिये, जो चीनी भाषा बोल तो लेते हैं परन्तु बोलने में किस प्रकार का कर्हाना पर बल दिया जाये पूर्णतया नहीं जान पाते, इस कारण अनेक बार अर्थों में परिवर्तन हो जाता है। उदाहरणार्थ 'गान - बेई (Kan - pei)' के अर्थ हैं 'सद्भावना के लिए अतिथि के स्वास्थ्य के लिए मदिरा पान किया जाये (Toast for health) परन्तु इसके संक्षिप्त अर्थ हैं 'औंधे हो जाना (bottoms up)', जब एक अमेरीका के उच्च अधिकारी दम्पती अतिथि को टोस्ट द्वारा सद्भावना प्रदान की गयी तो उनके सचिव ने अंग्रेजी में चीनी भाषा का अनुवाद किया "हम इच्छुक हैं कि आप औंधे हो जायें।" इस प्रकार की अनेक घटनायें होती रहती हैं जो ध्वनि - बल के अन्तर के कारण घटित हो जाती हैं।






























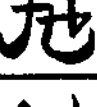



चीनी भाषा में अधिकांश चार टोन का प्रयोग होता है। वैसे पीकिंग की पूर्वकालिक मण्डारिन में पाँच टोन का भी प्रयोग किया जाता है। इन ध्वनियों (tones) की लिपि - बद्ध करना असम्भव है। इनका प्रयोग पाँचवीं श० में आरम्भ हुआ। उसका कारण था चीनी भाषा में एक ही ध्वनि वाले अनेक शब्दों (homophones) का उपस्थित होना। ध्वनि - बल के प्रयोग द्वारा उनमें अन्तर पड़ने लगा तथा उनके अर्थ भी शुद्ध होने लगे।

ध्वनि - बल (टोन) के प्रयोग के पूर्व, प्रोफ़ेसर टान चुंग के अनुसार 'ई (yi)' शब्द के निम्न - लिखित अर्थ थे :— डाक्टर, यन्त्र, कपड़े, कुर्सी, साँप, चींटी, दस करोड़, वर्तमान, हानि, सरल पदार्थ, बह

1. Williamson, H. R. : Teach yourself Chinese (1972), p. - 6.

2. Ibid.

चीनी लिपि का कालानुसार विकास

लिपि	काल		आकाश	अग्नि	पवन	जल	पर्वत	पृथ्वी
	से	तक						
जिया - गू- वन	२२००	१५०० ई.पू.						
डा जुआन	२०००	१००० ई.पू.						
चाउ वन	६००	४०० ई.पू.						
शियाओ जुआन	५००	३०० ई.पू.						
ली-शू	२५०	१०० ई.पू.						
साउ शू	१००	२०० ई.पू.						
बा- फनशू	२००	३०० ई.पू.						
गाइ शू	३००	४०० ई.पू.						
शिंग शू	४००	२०० ई.पू.						

निकलना, नियत, अन्तर, निर्भर, स्थानान्तरण, सरल, प्रसन्न, वंशज, विदेशी, कल, स्वप्न, संक्रामक, वातलाप, अनुवाद, लटकाना, चमकना, दुम, पर, शेष, आशा, मित्रता, दमन इत्यादि।

एक अन्य चीनी विद्वान् के अनुसार 'शर (Shih)' शब्द के लिए २३९ संकेतात्मक चित्र (५४ प्रथम टोन में, ४० द्वितीय टोन में, ७९ तृतीय टोन में तथा ६६ चतुर्थ टोन में) प्रयोग किये जाते हैं। राज्य भाषा मण्डारिन में ६९ शब्द ऐसे हैं जिनका उच्चारण 'इ (i)' है, २९ ऐसे हैं जिनका उच्चारण 'गू (KU)' है तथा ५९ ऐसे हैं जिनका 'शर (Shih)' है। इसी से पाठक चीनी भाषा व लिपि सीखने की कठिनाई को समझ सकते हैं।

अमेरिका के बर्कले स्थित कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय के एक चीनी शिक्षक प्रो० युयेनरेन चाओ (Yuen Jen Ch'ao) ने एक चालीस शब्दों की कहानी लिखी जिसमें लड़का गेण्डे से खेलता है। यह कहानी केवल एक शब्द 'शी (Hsi)', जो पूर्वकालिक चीनी - इंग्लिश शब्दकोष में मिलता है, को प्रयोग करके लिखी गई थी। इसमें 'शी' शब्द को भिन्न भिन्न टोन में ४० बार प्रयोग किया गया था। कितनी रोचक तथा आश्चर्यजनक कहानी होगी जो एक ही शब्द से लिखी गई।

चीनी लिपि के चार टोन : इन चार टोन का किस प्रकार उच्चारण किया जाये 'फ० सं० - २१८' पर रेखाकृति द्वारा दर्शाया गया है। इससे पाठकों को कुछ ज्ञान हो जायेगा कि टोन - पद्धति क्या वस्तु है। रेखाकृति में एक शब्द 'डू' लिया गया है और उसको एकसा, मोटे से छोटा, छोटे से मोटा तथा ऊपर को एकसा बनाया गया है। छोटे 'डू' की बारीक व ऊँची ध्वनि तथा मोटे 'डू' की मोटी व नीची ध्वनि निकालनी पड़ती है। प्रत्येक कालम में रेखाकृति एक बाण सहित दी है। उसके नीचे उस टोन का क्रम। फिर उसका चीनी भाषा में तथा रोमन लिपि में नाम दिया गया है। प्रत्येक नाम के ऊपर सीधी ओर अंग्रेजी के अंकों में टोन का क्रम तथा प्रत्येक रोमन लिपि के चीनी शब्द में स्वर के ऊपर टोन का चिह्न दिया है। उसके नीचे हिन्दी में नीचे लिखे चीनी शब्दों का उच्चारण दिया गया है। उसके नीचे रोमन लिपि के स्वरों पर लगाने के लिए प्रत्येक टोन का चिह्न और अन्त में चीनी लिपि में प्रत्येक टोन का नाम। यही पद्धति प्रत्येक कालम में दी गयी है। उसी 'फ० सं० - २१८' पर नीचे की ओर दो शब्दों (शर; की) के प्रतिदर्श दिये हैं। इन्हीं दो शब्दों के प्रत्येक टोन में क्या अर्थ होते हैं चीनी - लिपि - चित्रों के नीचे दिये गये हैं। नीचे सीधी ओर एक शब्द (माई) दिया गया है जिसके टोन परिवर्तन से अर्थ भी उलटे हो जाते हैं।

प्रत्येक टोन के विषय में कुछ समझ लेने के पश्चात् यह ज्ञान लेना अति आवश्यक है कि टोन का शुद्ध प्रयोग बिना किसी चीनी शिक्षक के सीखा नहीं जा सकता और यदि किसी और से सीखा है तो कोई बड़ी मूल होने की सम्भावना अनिवार्य रूप से रहेगी।

प्रथम टोन : इसको 'इन पिंग^१ (Yin P'ing) अथवा 'शंग पिंग शंग^२ (Shang P'ing Shêng) कहते हैं। इसके अर्थ हैं "एक समान भारी टोन" अथवा "ऊँची समान टोन"।

द्वितीय टोन : इसको सून की पुस्तक में 'यांग पिंग (Yang P'ing)' तथा विलियमसन की पुस्तक में 'शिया पिंग शंग (Hsia P'ing Shêng) कहते हैं। इसके अर्थ हैं "साफ़ तथा चमकीली।" इसमें प्रथम टोन के प्रकार से ध्वनि का प्रयोग करते हैं तत्पश्चात् उसको पतला करते चला जाना चाहिये। इसको नीची - समान ध्वनि में प्रयोग किया जाता है जैसा कि फलक पर दिया है।

1, Sung, Yu Feng : Chinese in 30 Lessons (1945), p. - 8.

2. Williamson, H. R. : Teach Yourself Chinese (1972), p. - 27.

तृतीय टोन : इसको सूनग व विलियमसन की दोनों पुस्तकों में केवल 'शांग शंग (Shang Shèng)' ही सम्बोधित किया गया है। इसको "उठती टोन" या "शीघ्रता से उठायी जाने वाली ऊँची टोन" कहते हैं।

चतुर्थ टोन : इसको भी सूनग व विलियमसन की दोनों पुस्तकों में 'चू शंग (Ch'u Shèng)' ही सम्बोधित किया गया है। इसको "प्रक्षिप्त (departing or Projected) टोन" कहते हैं। इसमें 'डू' शब्द को तेजी से एकसा उठा कर समान ध्वनि में उच्चारण किया जाता है।

चीनी लिपि का वर्गीकरण : मूलतः २१४ चीनी शब्दों (Radicals) को छः बड़े वर्गों में विभाजित किया गया है। इनको पुनः बठारह उप - वर्गों में तथा ५०० अन्य छोटे छोटे वर्गों में विभाजित किया गया है। चैन च्याओ ने बारहवीं श० में अपने बृहत् विश्लेषण को एक ग्रन्थ "तुंग चीह" में क्रम - बद्ध किया है, जिसमें प्रत्येक वर्ग में चीनी शब्दों की संख्या भी दी गई है। छः बड़े वर्ग^१ निम्नलिखित हैं :—

१. **वस्तु - चित्र (Pictures of objects) :** इन चित्रों को कु वन (Ku Wen) कहते हैं जिसके अर्थ हैं 'प्राचीन साहित्य'। इस वर्ग में ६०८^२ शाब्दिक चित्र हैं जिनमें कुछ 'फ० सं० - २१९' पर दिये गये हैं। यह चित्र चीनी लिपि के मूलाधार हैं। इस फलक में शब्दों का चित्रण चार कालम में किया गया है। प्रथम कालम में प्राचीन काल के शब्द, द्वितीय में अर्वाचीन काल के वही शब्द, तृतीय कालम में रोमन व हिन्दी में शब्दों का उच्चारण तथा चौथे में शब्दों के अर्थ दिये गये हैं। उच्चारण के शब्दों पर टोन का क्रम भी दे दिया गया है।
२. **सांकेतिक चित्र (Symbolic Pictures) :** इन चित्रों को चीनी भाषा में जर शर (Chih - Shih) कहते हैं। यह लिपिवर्ग पहले से अधिक रोचक है। इसमें अमुक वस्तु का चित्र कुछ संकेत प्रदान करता है। उदाहरणार्थ 'चन्द्र' सायंकाल का तथा 'क्षितिज पर सूर्य' प्रातःकाल का द्योतक हो गया। 'रक्त भरा थाला' शपथ ग्रहण करने का द्योतक बना। इनकी संख्या २०७ है (फ० सं० - २२०)।
३. **संयुक्त - सांकेतिक चित्रों (Symbolic Compounds) :** को चीनी भाषा में ह्वै - ई (Hui - i) कहते हैं। इस वर्ग में दैनिक प्रयोगात्मक चित्रों को द्विक (double) कर दिया गया है। उदाहरणार्थ 'दो बच्चों' का चित्र बनाने से 'जुड़वाँ बच्चों' का बोध होता है। 'देखने' के शब्द को दो बार बनाने से 'साथ साथ देखना' आदि। इनकी संख्या ७४० है। (फ० सं० - २२१)।
४. **क्रम द्वारा निर्मित चित्र (Pictures by Rotation) :** शब्दों को क्रम से लेकर कुछ नये शब्दों का निर्माण किया गया है। इस वर्ग में ७३२ शब्द हैं। चीनी भाषा में इस वर्ग को जुआन - जू (Chuan - Chu) कहते हैं। इन शब्दों की दिशा परिवर्तित करने से दूसरे शब्दों का उद्भव हो जाता है। (फ० सं० २२२)।
५. **ध्वनि - सूचक चित्र (Sound Indicating Signs)** इनको चीनी भाषा में शिये शंग (Hsieh - Sheng) कहते हैं। यह लिपि - वर्ग प्रधान वर्ग है और इसी वर्ग में सबसे अधिक शब्द हैं जिनकी संख्या २१८२०^३ है (फ० सं० - २२२)।

१. इन वर्गों के फलकों के शब्दों के अर्थों के नीचे जो अंग्रेजी में क्रम संख्या दी गई है वह Mathews की English - Chinese Dictionary से ली गई है। यह शब्द कोष वेड (Wade) पद्धति पर निर्मित है।
२. कुछ विद्वान् इनकी संख्या ८०० मानते हैं।
३. According to Mrs. Chao, Ex - Lecturer of Allahabad University (Now in Canada)

चीनी लिपि में ध्वनि बल (टोन)

<p>‘इ’ उ उ उ उ उ</p> <p>प्रथम टोन</p> <p>Yīn¹ P’īng²</p> <p>ईन पिंग</p> <p>音¹ 平²</p>	<p>‘डू’ उ उ उ उ उ उ उ</p> <p>द्वितीय टोन</p> <p>Yáng² P’īng²</p> <p>यांग पिंग</p> <p>陽² 平²</p>	<p>‘डू’ उ उ उ उ उ उ उ</p> <p>तृतीय टोन</p> <p>Shàng⁴ Shēng¹</p> <p>शांग शंग</p> <p>上⁴ 聲¹</p>	<p>चतुर्थ टोन</p> <p>Chū¹ Shēng¹</p> <p>चू शंग</p> <p>出¹ 聲¹</p>
--	--	--	---

ध्वनि-बल (टोन) के प्रतीक

<p>头¹</p> <p>मूल</p> <p>होना</p>	<p>时²</p> <p>समय;</p> <p>काल</p>	<p>使³</p> <p>प्रयोग</p>	<p>是⁴</p> <p>Shih</p> <p>शर</p> <p>Ch’i</p> <p>ची</p>	<p>買³</p> <p>माई</p> <p>Mǎi</p> <p>क्रय करना</p>
<p>七¹</p> <p>सात</p> <p>(अंक)</p>	<p>其²</p> <p>वह (HE;</p> <p>SHE; IT)</p>	<p>沁³</p> <p>भरना;</p> <p>प्रेरित करना</p>	<p>氣⁴</p> <p>पवन;</p> <p>श्वास</p>	<p>賣⁴</p> <p>माई</p> <p>Mài</p> <p>विक्रय करना</p>

१. चीन के वस्तु -- चित्र

प्राचीन	अर्वाचीन	ध्वनि	अर्थ	प्रा०	अर्वा०	ध्व०	अर्थ
		Tzū ³ इजू	शिशु			Yü ³ यू	वर्षा
		Mü ⁴ मू	लकड़ी; वृक्ष; शाखा			Chüan ³ च्युएन	कुत्ता
		Mên ² मन	द्वार फाटक			Pa बा	अजगर
		Shih ⁴ शर	तीर			Shou ³ श्व	हस्त
		Hsin ² शीन	दिल			Pei ⁴ बैइ	कीमती कोड़ी
		Yen ² एन	शब्द; भाषण			T'ien ² टिएन	खेत

२. चीन के सांकेतिक चित्र

प्राचीन	अर्वाचीन	ध्वनि	संकेत	विवरण
		Tu ⁴ टू	हंगित भाव	सीधा हाथ
		Hsi ⁴ शी	संध्या काल 2485	आरम्भिक चन्द्र
		Weng वंग	शपथ	रक्त भरा चाला
		Tan ⁴ टैन	प्रातः काल 6037	सूर्योदय
		Fang फांग	क्षेत्र 1802	आकाश की चार दिशाये दर्शाता है
		Wu ⁴ वू	निषेध करना 7208	सतर्ककरण की पताका
		Chiang ज्यांग	सीमा 643	दो खेतों के मध्य की रेखा

३. संयुक्त सांकेतिक चित्र

प्राचीन	अर्वाचीन	ध्वनि	शब्द	विवरण
𠂇𠂇	孖	Izu ¹ इजू	जुड़वाँथियु 6941	दो बच्चों का चित्र
見見	見見	Chien ¹ ज्येन	साथ साथ देखना	देखने के दो चित्र
立立	立立	Ping ⁴ बिंग	साथ साथ 5292	दो मनुष्यों के साथ साथ चित्र
川	川	Ch'uan ¹ च्वान	स्रोत 1439	तीन गेदों के चित्र
東東	東東	Tung ¹ पूर्व	सर्वत्र 6605	दो बार 'पूर्व' का चित्र
炎	炎	Yen ² येन	बहुत गर्म 7335	दो बार अग्नि चित्र
日月	日月	Ming ² मिंग	प्रकाशमान 4534	सूर्य व चन्द्र के चित्र
𠂇𠂇	𠂇𠂇	Ming ² मिंग	गाना 4535	मुँह व चिड़िया के चित्र
聞	聞	Wen ² वेन	सुनना 7142	दो द्वार व कान के चित्र

४. क्रम द्वारा निर्मित चित्र

प्राचीन	अर्वाचीन	ध्वनि	विवरण
司	司	Ssü ¹ स्सू	एक पदाधिकारी 5585
后	后	Hou ⁴ हो	राजकुमार 2144
𠂇	𠂇	Fa ² फ़ः	पराजित होना 1761
正	正	Chêng ⁴ जंग	ठीक या सीधा 351

५. ध्वनि - सूचक चित्र

चित्र	अर्थ	चित्र	अर्थ	चित्र	अर्थ
皇	उच्चसीन (exalted)	火 ³	अग्नि Huo होअ	火皇	वामकरार
分	भाग लेना (to share)	言 ²	बोलना Yen इयेन	詒	गपशप
巫	जादूगर Wu - वू	言 ²	बोलना Yen इयेन	誣	भूठ बोलना

इस वर्ग के शब्दों का निर्माण सबसे अधिक संख्या में हान वंश के शासन काल (२०६ ई० पू० से २२१ ई० तक) में हुआ है। इस वर्ग के जन्म के पूर्व चित्र भाव — सूचक होते थे। ध्वनि की प्रधानता पर कोई अधिक ध्यान नहीं देता था परन्तु शनैः शनैः विद्वानों का ध्यान ध्वनि की ओर आकर्षित हुआ। इस ज्ञान, खोज व शोध के कारण अब चित्रों में दो मुख्य तत्त्व हो गये। पहला निर्धारक तत्त्व (*Determinative Element*) जिससे भाव का तथा विचार का बोध होता था। दूसरा तत्त्व ध्वनि का था जो चित्र को ध्वनि प्रदान करता था। यह ध्वनि या तो अंश रूप में या पूर्ण रूप में दूसरे चित्र की ध्वनि से समानता रखती थी।

उदाहरणार्थ ध्वनि — सूचक चित्र में 'फ० सं० — २२२' एक चित्र उच्चासीन (*exalted*) का बना है। इस को चीनी भाषा में 'ह्वांग (*Huang*)' कहेंगे। इसमें भी दो चित्रों (सूर्य तथा पृथ्वी) का समावेश है जिससे किसी मनुष्य की महानता का बोध होता है। इस चित्र में अग्नि का शब्द (जिसकी ध्वनि है 'खो') जोड़ दिया, इससे एक नया शब्द बन गया 'चमकदार' और इसकी ध्वनि हो गई ह्वांग। इसी प्रकार दूसरा शब्द है 'भाग लेना' ध्वनि है 'फिन', इसमें जोड़ दिया 'येन' अर्थात् बोलना, इससे बना 'भग्नप करना' और इसकी ध्वनि हो गई 'फिन'। तीसरा शब्द है 'बू' अर्थ है जादूगर इसमें जोड़ा गया 'येन' अर्थात् 'बोलना'। इन दोनों शब्दों को जोड़ देने से बन गया 'झूठ बोलना'। इसका भी एक बड़ा रोचक कारण है। चीन में जादूगरों को झूठा समझा जाता है। इस कारण 'बू' शब्द का प्रयोग जादूगर के लिए किया गया। इस 'झूठ बोलना' के शब्द की ध्वनि हो गई 'बू'। (फ० सं० — २२२)।

६. ग्रहण किये हुए चित्र (*Borrowings*) : इस वर्ग को चीन की भाषा में 'जिया — जीह' (*Chia — Chieh*) कहते हैं। इस वर्ग में दूसरे चित्रों को ग्रहण करके नये चित्रों का निर्माण किया गया है इसमें ५९८ शब्द हैं। (फ० सं० — २२३)।

मुलेख (*Calligraphy*) : भिन्न भिन्न प्रकार की लिपियों का निर्माण चीन के मुलेखकों ने किया है जिनमें से कुछ 'फ० सं० — २२३' पर दी गई हैं। केवल एक शब्द 'हिन' (*Hsin*) अर्थात् 'हृदय' को दस प्रकार के मुलेखों में दिया गया है।



इन्हीं मुलेखकों (*Calligraphists*) ने प्रत्येक चित्र लिखने के लिए एक चतुष्कोण निर्धारित किया है। प्रत्येक चित्र का चतुष्कोण लगभग उतना ही स्थान घेरता है जितने में चित्र पूरा हो जाये, परन्तु सब चतुष्कोण लम्बाई चौड़ाई में समानता रखते हैं।

प्राचीन काल में लेखनी किसी धातु की बनाई जाती थी तदनन्तर बांस की लेखनी का प्रयोग होने लगा। लगभग २०० ई० पू० में तूलिका का प्रयोग आरम्भ हुआ। इस तूलिका को रेशम के रुखों से बनाया जाता था।






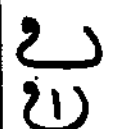




कागज का प्रयोग सर्वप्रथम जाई — लून (*Tsai — Lun*) ने १०५ ईसवी में किया। इसका इतना प्रचलन बढ़ा कि आठवीं श० में एक कागज बनाने का कारखाना समरक्रन्द में स्थापित हो गया। मुसलमानों ने चीन — निवासियों से ही कागज बनाना सीख कर ग्यारहवीं श० में उन्होंने स्पेन के निवासियों की सिखाया।

1. Faulmann : *Das Buch der Schrift* (Vienna, 1880), p. — 48

६. ग्रहण किये हुए चित्र

श्वेत (प्राचीन)		श्वेत (अर्वाचीन)		चित्र का नाम पाया	१४	ध्वनि अर्थात् चो-चाचा
--------------------	---	---------------------	---	-------------------------	----	--------------------------

‘हृदय’- विभिन्न प्रकार के सुलेखों में

	कैशू-आकार		सितारों की लिपि
	हीरों का आकार		बादल की लिपि
	चमत्कारी आकार		मेंढक के बच्चों की लिपि
	कर्ण आकार		क्रूर लिपि
	भव्य स्थानों का आकार		बर्तनों की लिपि

चीनी लिपि की लेखन - पद्धति : इसको दो प्रकार से लिखा जाता है। एक क्षैतिज (horizontal) दूसरा शिरोवृत्त (vertical)। क्षैतिज का प्रयोग हस्त - लेखन में तथा शिरोवृत्त का प्रयोग मुद्रण में किया जाता है, जैसे, समाचारपत्र, पुस्तकें तथा पाक्षिक आदि। क्षैतिज बायें से दायें तथा शिरोवृत्त ऊपर से नीचे लिखी जाती है परन्तु प्रथम खड़ी पंक्ति दायें से ही आरम्भ होगी और नीचे तक जाकर पुनः दूसरी पंक्ति पहली पंक्ति के साथ बाईं ओर से तथा ऊपर से आरम्भ होगी। इसका एक प्रतिदर्श 'फ० सं० - २२४' पर सीधी ओर दो खड़ी पंक्तियों में दिया गया है। प्रत्येक शब्द के साथ ऊपर सीधी ओर उस शब्द के टोन की क्रमसंख्या दी गई है। उसी के नीचे उसका उच्चारण हिन्दी में दिया गया है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक शब्द की बाईं ओर नीचे देवनागरी अंकों में क्रमसंख्या दे दी गई है जिसके द्वारा इन शब्दों के निम्नलिखित अर्थ तथा दोनों पंक्तियों के भावार्थ दिये गये हैं :—

हिन्दी	अंग्रेजी अर्थ	हिन्दी	क्र० सं०	अर्थ	अंग्रेजी अर्थ	हिन्दी	क्र० सं०
उच्चारण	(Fa - yin) Pronounce	फा ईन	८	इस कारण	(So; i) = Therefore	सो ई	१
अनिवार्य	(pi) = certainly (hsü) = necessary	वी श्यू	९ १०	चीनी (भाषा)	(Chung; kuo Chinese	जुंग गुओ	३ ४
शुद्ध	(chun) = exact; (ch'iao) = correctly	जन च्याओ	११ १२	शब्द तुम	(Tzu) = Characters (ti) = you	जू डी	५ ६

उपर्युक्त १२ शब्दों के शाब्दिक अर्थ हुए :—

१ + २ = 'इस कारण'; ३ + ४ = 'चीनी भाषा'; ५ = 'शब्द', ६ = 'तुम'; ७ + ८ = 'उच्चारण'; ९ + १० = 'अवश्य', 'अनिवार्य'; ११ + १२ = 'विशुद्ध'।

इस वाक्य के भावार्थ^१ हुए :—

“इस कारण आपको चीनी शब्दों का शुद्ध उच्चारण करना अनिवार्य है।”

पहली पद्धति (हस्त - लेखन के लिए) बायें से दायें, क्षैतिज (horizontal) चलती है। इसका प्रतिदर्श नीचे बाईं ओर दिया गया है। इस प्रतिदर्श का विवरण इस प्रकार है :—

प्रथम पंक्ति में ऊपर चीनी शब्द जिसके ऊपर अंग्रेजी अंक में टोन की क्रम - संख्या, उसके नीचे अंग्रेजी में उसका उच्चारण, उसके नीचे हिन्दी में उसका उच्चारण फलक में ही दिया गया है। अब इन आठ शब्दों के शाब्दिक तथा भावार्थ निम्नलिखित हैं :—

1. Sung, Fu Feng : Chinese in 30 Lessons. p. - 56.

शब्द = व्हो	शिया वू	कैन	व्हो डी
अर्थ = मैं	अपराह्न	मिलने	अपने (मेरे)
शब्द = बंग यू			
अर्थ = मित्र			

भावार्थ—मैं अपने मित्र से अपराह्न मिलने गया ।”

आठ पृथक् शब्द ‘फ० सं० - २२४’ पर ऊपर बाईं ओर दिये गये हैं। शब्दों के ऊपर सीधी ओर के अंग्रेजी अंक शब्दों की टोन - क्रम - संख्या तथा नीचे की ओर देवनागरी अंक शब्दों की क्रम - संख्या को बोध कराते हैं। शब्दों के केवल उच्चारण रोमन तथा हिन्दी में दिये गये हैं, उनके अर्थ क्रमानुसार निम्नलिखित हैं :—

१. स्वर्ग या आकाश; २. अग्नि; ३. पवन; ४. जल; ५. पर्वत; ६. पृथ्वी; ७. वर्षा;
८. चन्द्र या मास ।

उपर्युक्त क्रमांक १ - ६ तक के शब्द, ‘चीनी लिपि का कालानुसार विकास’ की ‘फ० सं० - २१७’ पर दिये गये हैं परन्तु विवरण यहाँ दिया गया है।

लिपि का सरलीकरण : संसार की यही ऐसी लिपि है जो चित्रों से आरम्भ हुई और आज तक चित्रों द्वारा लिखी जाती है। यही ऐसी लिपि है जिसका जन्म से ही सरलीकरण आरम्भ हो गया और सरलीकरण द्वारा लिपि में परिवर्तन आते गये। इस परिवर्तनक्रम में पीछे छूटी हुई लिपि तिरस्कृत होती गई इसी कारण चीनी लिपि की कोई पुस्तक आलोचना से बच न सकी। इस सरलीकरण के केवल तीन प्रतिदर्श ‘फ० सं० - २५५’ के ऊपर बाईं ओर दिये गये हैं। आधुनिक युग में जब प्रत्येक कार्य में मनुष्य की गति बढ़ने लगी तथा प्रत्येक वाहन की गति भी चौगुनी होने लगी, तब लिपि की गति बढ़ना अनिवार्य हो गया। चीनी लिपि की गति को बढ़ाना असम्भव लगने लगा। १९५६ में चीनी सरकार ने सर्वप्रथम २३० चित्रों का सरलीकरण किया तत्पश्चात् ३५३ शब्दों का किया गया। इस परिवर्तन - क्रम में रेखाओं (Strokes) की संख्या को कम करके शाब्दिक - चित्रों का निर्माण किया गया तथा उनका प्रयोग प्राथमिक शालाओं में प्रारम्भ करवा दिया। साथ साथ लिपि में ध्वन्यात्मक पद्धति का प्रयोग तथा लिपि का रोमनीकरण भी आरम्भ हो गया।

चीनी भाषा की ध्वनियाँ : स्वरोत्पादन (Intonation) अर्थात् उच्चारण, चीनी - भाषा के, विद्यार्थी को चाहे वह चीन का हो या विदेश का, समझ एक समस्या खड़ा कर देता है। संकेतात्मक चित्रों के उच्चारणों में भिन्नता है। चीन देश के एक भाग में इसी शब्द का उच्चारण कुछ है तो दूसरे भाग में कुछ और। उच्चारण के अन्तर से अर्थ में अन्तर पड़ जाता है। चीनी स्वयं इस समस्या से दुखी हो जाते हैं जब वे एक स्थान से दूसरे स्थान को जाते हैं।

लिपि के रोमनीकरण (Romanization) करने में चीनी भाषा के सब उच्चारणों को रोमन के २६ वर्णों में लिपि - बद्ध करने का प्रयास किया गया है। इन उच्चारणों की संख्या ४०९^१ है, जिनका कुछ स्वतन्त्र रूप से तथा कुछ सम्मिलन से ६२ पृथक् वर्णों द्वारा निर्माण किया गया है। इन ६२^२ मौलिक ध्वनियों को आधुनिक प्रचलित भाषा के दो भागों से, जिनको इनीशियल्स (Initials) तथा फाइनल्स (Finals)

1. Williamson, H. R. : Teach yourself Books - Chinese (1972), page, - 22.
2. Ibid, p. - 22.

कुछ शब्द व वाक्य (क्षैतिज - शिरोवृत्त)

天 ¹ t'ien टीयेन	火 ² huo होम	氣 ⁴ ch'i ची	水 ³ shui श्वै	發 ¹ 9. फा	所 ³ सो
山 ¹ shan शैन	土 ³ t'u टू	雨 ³ yü इयू	月 ⁴ yüeh युम	音 ¹ 7. ईन	以 ³ ई
我 ³ Woh हो	下 ⁴ hsia शिपा	午 ³ wu वू	看 ⁴ k'an कैन	必 ⁴ 8. बी	中 ¹ 3. जुंग
我 ³ woh हो	的 ¹ ti डी	朋 ² péng बंग	友 ³ yu यू	須 ¹ 10. शू	国 ² 8. गुमो
				隹 ³ 11. जन	字 ⁴ 4. जू
				確 ¹ 12. च्यामो	的 ¹ 6. डी

कहते हैं, लिया गया है। क्रम से इनकी संख्या २४ तथा ३८ है। १९०६ में ५० इनीशियल्स और १२ फ़ाइनल्स^१ थे। फ़ाइनल्स में ११^२ स्वतन्त्र ध्वनियाँ हैं परन्तु उनमें भी कभी कभी सम्मिलन दृष्टिगोचर हो जाता है (फ० सं० - २२५)।

वैसे तो चीनी लिपि मोनो सिलेबिक (Mono - syllabic) कही जाती है और है भी, परन्तु गहरा विश्लेषण करने से उन चित्रों में द्वि - ध्वन्यात्मक (di - syllabic) तथा त्रि - ध्वन्यात्मक (tri - syllabic) चित्र मिल जाते हैं। कारण यह है कि जब किसी एक विचार (Concept) को व्यक्त करने के लिए एक से अधिक चित्रों को संयुक्त रूप से लिपिबद्ध किया जाता है, ऐसे चित्रों को इनीशियल तथा फ़ाइनल उच्चारणों के मध्य में रख दिया जाता है उनको मीडियल्स (Medials) के नाम से सम्बोधित किया जाता है।

चीनी लिपि का रोमनीकरण अमरीका व ब्रिटेन के अनेक विद्वानों^३ ने किया है। इनमें से सबसे प्रसिद्ध तथा प्रचलित रोमनीकरण सर टॉमस वेड (Sir Thomas Wade) का माना जाता है। वैसे संसार में लिपि का कोई ऐसा रोमनीकरण नहीं हो सका है जो इस लिपि की ध्वनियों को पूर्णतया व्यक्त कर सके। इसके अति - रिक्त आधुनिक काल में रोमनीकरण की दो अन्य पद्धतियाँ, जिनको चीनी सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त हुई है, जैसे, एक गोरीयून (Guoryun) की तथा दूसरी एल (Yale) विश्वविद्यालय की। इसी कारण दो प्रकार के शब्दकोष^४ भी प्रयोगात्मक माने जाते हैं।

इनीशियल्स की तालिका (वेड पद्धति)

उच्चारण			उच्चारण			उच्चारण		
क्रम	रोमन	हिन्दी	क्रम	रोमन	हिन्दी	क्रम	रोमन	हिन्दी
१ -	Ch.	ज	९ -	L.	ल	१७ -	T.	ड
२ -	Ch'.	च	१० -	M.	म	१८ -	T'.	ट
३ -	F.	फ़	११ -	N.	न	१९ -	Ts.	डज़
४ -	H.	ह	१२ -	P.	प	२० -	Ts'.	ट्स
५ -	Hs.	श ^१	१३ -	P'.	प	२१ -	Tz.	ड्स
६ -	J.	र; य	१४ -	S.	स	२२ -	Tz'.	ट्स
७ -	K.	ग	१५ -	Sh.	श	२३ -	W.	व
८ -	K'.	क	१६ -	Ss.	स्स	२४ -	Y.	य

1. Forke, A. : Mitteilungen des Seminars für Orientalische Sprachen, Vol. IX (1906), p. - 404.
2. तालिका में तारे के चिह्न लगा दिये गये हैं।
3. Hillier; Goodrich; Sothill; Giles; Wells - Williams; Mac Gillivray etc.
4. Yutang, Lin : Chinese English Dictionary of Modern Usage (Chinese University - Hongkong - (1972).
4. Mathews., R. H. : Chinese English Dictionary - 214 Radicals - (Harvard University Press. - 1956). अब यह शब्दकोष अप्रचलित होने लगा।
5. चीन के कुछ भागों में 'स' उच्चारण किया जाता है।

फाइनल्स की तालिका

उच्चारण			उच्चारण			उच्चारण		
क्रम	रोमन	हिन्दी	क्रम	रोमन	हिन्दी	क्रम	रोमन	हिन्दी
२५ ^२ -	A.	आ	३८ ^३ -	Iao.	इयाओ	५१ ^४ -	Uai.	वाई
२६ ^२ -	Ai.	आइ	३९ ^३ -	Ich.	इय	५२ ^४ -	Uan.	वैन
२७ ^२ -	An.	ऐन	४० ^३ -	Icn.	इयन्			
२८ ^२ -	Ang.	आंग	४१ -	Ih.	इर्	५३ ^४ -	Uang.	वांग
२९ ^२ -	Ao.	आउ	४२ -	In.	इन	५४ ^४ -	Ui.	ओइ
३० ^२ -	E.	अर ^१	४३ -	Ing.	इंग	५५ -	Un.	अन
३१ -	Ei.	ए	४४ ^३ -	Io.	इअ	५६ -	Ung.	अंग
३२ ^२ -	En.	अन	४५ ^३ -	Iu.	इयु	५७ ^४ -	Uo.	वू
३३ -	Eng.	अंग	४६ ^३ -	Iung.	अंग	५८ -	Ü.	यौ
३४ ^२ -	I.	ई	४७ ^२ -	O.	ऑ	५९ ^५ -	Üan.	योअन
३५ ^३ -	Ia.	इया	४८ ^२ -	Ou.	ओ	६० ^५ -	Üch.	योअ
३६ ^३ -	Iai.	याइ	४९ -	U.	ऊ	६१ ^५ -	Ün.	योइन्
३७ ^३ -	Iang.	यांग	५० ^४ -	Ua.	वा	६२ ^५ -	Erh.	अर्

फलक संख्या - २२५

चीनी लिपि की ध्वन्यात्मक पद्धति - १ : इस लिपि का सर्वप्रथम 'ध्वन्यात्मक पद्धति' द्वारा सरलीकरण फैन चिय (Fan - Ch'ieh) ने पाँचवीं व छठी शताब्दियों के मध्य किया। उस समय इसका प्रयोग नाम मात्र रहा। फैन चिय ने रेखा - संकेतात्मक लिपि के कुछ शब्दों के एक भाग को लेकर एक चिह्न तथा उसी शब्द की ध्वनि को चिह्न के लिए निर्धारित कर इस पद्धति का आविष्कार किया। यह आविष्कार चीन में लिपि के लिए एक अनोखा आविष्कार था। इसके पक्षः प्रतिदर्श 'फ० सं० - २२६' पर दिये गये हैं, जिनका विवरण निम्नलिखित ६ कालों में दिया गया है :—

पहले काल में : हस्त - लिखित शब्द हैं।

दूसरे काल में : मुद्रित शब्द हैं।

तीसरे काल में : शब्दों के टोन - क्रम हैं।

चौथे काल में : शब्दों की ध्वनि ऊपर रोमनीकरण चीनी - भाषा में तथा नीचे हिन्दी में दी है।

पाँचवें काल में : शब्दों के अर्थ इंगलिश व हिन्दी में दिये हैं।

छठवें काल में : सरल चिह्न हैं, जिनकी ध्वनि शब्द की ध्वनि होगी।

१. '२' की ध्वनि हल्की होगी, पूरी नहीं।
२. इस संख्या वाले फाइनल्स स्वतंत्र हैं जिनकी संख्या ११ है।
३. इस संख्या वाली ध्वनियों में मीडियल 'ई' (I) है।
४. इनमें मीडियल 'व' ऊ (U) है।
५. इनमें वो (ü) है।

ध्वन्यात्मक चिह्नों का आविष्कार

शब्द-१	शब्द-२	टोन	ध्वनि	अर्थ - विवरण	सरलीकरण
皮	皮	२	p'i पी	LEATHER; SKIN चमड़ा खाल	𠂇
蘇	蘇	१	SU सू	TO REVIVE पुनरुद्धार करना	夕
女	女	३	nü न्यू	WOMAN (FEMALE) महिला	女
基	基	१	chi ची	A FOUNDATION आधार; नींव	上
安	安	१	an ऐन	REST ; PEACE विश्राम शान्ति	一
兒	兒	१	erh अर्	SUFFIX (To Noun) परसर्ग (संज्ञा के साथ)	儿

इसी प्रकार की पद्धति को जापान ने भी अपनाकर एक वर्णात्मक लिपि का आविष्कार कर लिया। चीन में इसका प्रयोग अधिक प्रचलित नहीं हुआ फिर भी कहीं कहीं हुआ। बीसवीं श० में इसका पुनर्जन्म हुआ तथा होपेई प्रांत ने इसको पूर्णरूप से ग्रहण कर लिया। इसमें ५० इनीशियल (initials) चिह्न अर्थात् व्यंजन थे तथा १२ फाइनल (finals) चिह्न अर्थात् स्वर थे। इसकी वर्णवली एक पुस्तक^१ से ली गई है और 'फ० सं० - २२७' पर दी गई है।

ध्वन्यात्मक पद्धति - २ : १९५६ में कुछ सुधार कर चीनी सरकार ने इस पद्धति की तीन तालिकाएँ प्रकाशित करवाईं जिनमें क्रमानुसार २३०, २९९ तथा ५४ शब्द थे। साथ साथ एक तालिका प्राथमिक शालाओं के लिए भी प्रकाशित कराई गई। यह इस लिपि के सरलीकरण का दूसरा प्रयास था जो मुख्यतया राष्ट्रीय भाषा के लिए था। इसकी वर्णवली 'फ० सं० - २२८' पर दी गई है।

इस वर्णवली में निम्नलिखित तीन प्रकार के चिह्नों का समावेश था तथा इसको राष्ट्रीय वर्णवली^२ के नाम से सम्बोधित किया गया :—

१. २४ प्रथमाक्षरों (Initials) की व्यंजनात्मक ध्वनियाँ दी गई हैं।
२. १६ अन्तिमाक्षरों (Finals) की स्वरात्मक ध्वनियाँ दी गई हैं।
३. २२ अन्तिमाक्षरों (Finals) की संयुक्तात्मक ध्वनियाँ दी गई हैं।

इस पद्धति में टॉमस वेड (Thomas Wade, 1818 - 1895) की रोमनीकरण पद्धति का समावेश था।

ध्वन्यात्मक पद्धति - ३ : इस पद्धति में लिपि का पुनः सरलीकरण किया गया। इसमें केवल २१ व्यंजन तथा १५ स्वर अर्थात् कुल वर्णों की संख्या ३६ दी गई है। इसके साथ साथ अक्षरों का टोन तथा सञ्चारण के प्रकार भी अंग्रेजी हिन्दी में दिये गये हैं। यह वर्णवली श्रीमती चाउ^३ द्वारा प्रस्तुत की गई है 'फ० सं० - २२९'। यह पद्धति आधुनिक है इसमें अक्षरों से शब्द बनाये जाते हैं। इसके दो उदाहरण 'गुओ' तथा 'रेन' के इसी फलक के मध्य में दिये हैं। लिपियों की रेखाओं (Strokes) में भी कमी की जा रही है। उपर्युक्त तीनों वर्णवलियों में चिह्नों की ध्वनियों को रोमन तथा हिन्दी अक्षरों में दिया गया है।

शाब्दिक - चित्रों को लिखने की पद्धति : चीनी लिपि में जिन रेखाओं द्वारा शब्द का निर्माण किया जाता है, उन रेखाओं को अंकित करने की एक निर्धारित विधि या पद्धति निश्चित है। उसी पद्धति के अनुसार मनुष्य को बचपन से रेखा अंकित करने का अभ्यास कराया जाता है। इसकी पद्धति निम्नलिखित है :—

प्रथम ऊपर की रेखा तत्पश्चात् नीचे की खींची जाये। इसी प्रकार बाईं ओर की रेखा पहले तथा सीधी ओर की बाद में। इस पद्धति का एक प्रतिदर्श 'फ० सं० - २३०' पर 'गुओ (Kuo)' शब्द द्वारा लिखा गया है। अंग्रेजी के अंकों द्वारा रेखा खींचने का क्रम दिया गया है।

इस फलक में 'गुओ (Kuo)' शब्द के दो प्रतिदर्श दिये गये हैं। एक पूर्वकालिक तथा एक आधुनिक जिसका सरलीकरण कर दिया गया है। पूर्वकालिक 'गुओ' को अंत में दिखाया गया है।

1. Gelb, I. J. : A study of Writing (London - 1963), p. - 88.

2. Jansen, H. : Sign, symbol and Script (London - 1970), p. - 181.

3. श्रीमती चाउ १९७७ में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के चीनी - विभाग में प्रवक्ता थीं। उन्होंने दिनों लेखक ने उनसे भेंट करके यह वर्णवली प्राप्त की। आजकल श्रीमती चाउ कनाडा में हैं।

चीनी लिपि की ध्वन्यात्मक पद्धति - १

ㄅू पू	ㄅु बु	ㄇू मू	ㄈू फू	ㄨू वू	ㄆी पी	ㄆी बी
ㄊू मी	ㄊू दू	ㄊू लू	ㄊू चू	ㄊू सू	ㄊू शु	ㄊू इज़
ㄊू इ	ㄊू जू	ㄊू लू	ㄊू लू	ㄊू नू	ㄊू त्स	ㄊू इज़
ㄊू स्स	ㄊू डर	ㄊू टर	ㄊू चर	ㄊू चर	ㄊू शर	ㄊू रर
ㄊू डी	ㄊू टी	ㄊू ले	ㄊू ना	ㄊू नी	ㄊू न्यू	ㄊू ल्यू
ㄊू चू	ㄊू चू	ㄊू ह्यू	ㄊू इयू	ㄊू ली	ㄊू जी	ㄊू ची
ㄊू शी	ㄊू इह	ㄊू गू	ㄊू कू	ㄊू हू	ㄊू गौ	ㄊू कौ
ㄊू हो	ㄊू फ्राइनलिस	ㄊू आ	ㄊू ओ	ㄊू एन	ㄊू आंग	ㄊू आइ
ㄊू अः	ㄊू ए	ㄊू ओ	ㄊू एन	ㄊू एंग	ㄊू ओ	ㄊू अर

चीनी लिपि की ध्वन्यात्मक पद्धति -- २

ㄅ b ब	ㄆ p प	ㄇ m म	ㄈ f फ़	ㄎ v व	ㄉ d द	ㄊ t त
ㄋ n न	ㄌ l ल	ㄍ g क	ㄏ k ख	ㄣ ng अं	ㄏ k.h ख	ㄐ djj दज़
ㄋ tjj तज़	ㄍ gn गू	ㄊ ch ज	ㄆ dz दज़	ㄎ t's त्श	ㄉ z श्र	ㄊ z ज़
ㄆ dz दज़	ㄊ ts त्स	ㄋ s स	24 INITIALS 16 FINAL S		ㄥ i ई	ㄨ u ऊ
ㄚ a आ	ㄛ o ओ	ㄜ ö ओय	ㄝ e अर	ㄟ a-i ऐ	ㄠ ā आ	ㄡ au औ
ㄛ ō ऊ	ㄢ ān आं	ㄣ ōn एं	ㄤ ang अं	ㄨ ōng औं	ㄨ o ए	ㄩ ia या
ㄟ io यो	ㄠ le ये	ㄡ iāi याइ	ㄢ iāu पाउ	ㄣ iu इयु	ㄤ ien येन	ㄥ iang यं
ㄥ ing इंग	ㄨ ua उआ	ㄣ uo उओ	ㄣ in इन	ㄨ uai उआइ	ㄨ ui उई	ㄨ uān उआं
ㄨ un उं	ㄨ uāng उआंग	ㄨ ung उंग	ㄨ üe योय	ㄨ üen यो	ㄨ ün योन	ㄨ iung मंग

चीनी लिपि की ध्वन्यात्मक पद्धति - ३

इनीशियल्स (INITIALS) - चार टोन सहित				
टोन-१	२	३	४	ध्वनियां
ㄅ _ब	ㄆ _प	ㄇ _म	ㄌ _फ	Labials.ओष्ठीय
ㄊ _द	ㄋ _त	ㄌ _न	ㄋ _ल	Dentals.दन्त्य
ㄍ _ग	ㄎ _क	ㄏ _ह	ㄍ _{गुग्गो Guo}	Gutturals.कंठ्य
ㄐ _ज	ㄑ _छ	ㄒ _श	ㄐ _{जेन Jen}	Palatals.तालव्य
ㄗ _झ	ㄘ _{तज}	ㄙ _{श्र}	ㄗ _र	RETROFLEXES प्रत्यग् वक्रण
ㄖ _{रज}	ㄗ _{श्ज}	ㄘ _{स्}	DENTAL-SIBILANTS ㄗ _{दन्त्य-ऊष्मीय} (व्यं-जन)	
फाइनल्स (FINALS) - 15 - स्वर (VOWELS)				
ㄚ _अ	ㄠ _ओ	ㄢ _ए	ㄣ _ऐ	ㄝ _ए
ㄚ _{अइ}	ㄠ _ओ	ㄢ _{ओऊ}	ㄣ _{आइ}	ㄝ _{एं}
ㄚ _{अइ}	ㄠ _{ओइ}	ㄢ _ई	ㄣ _ऊ	ㄝ _{इऊ}

फलक संख्या - २२९

इसी फलक पर सबसे नीचे क्षैतिज पद्धति में दो शब्द 'इंगलिशमैन' तथा 'चाइनामैन' ¹। इन शब्दों का विवरण इस प्रकार है :—(फ० सं० - २३० के नीचे)।

बाई ओर से पहला शब्द है 'इंग (Ying)' दूसरा शब्द है 'गुओ (Kuo)' तथा तीसरा शब्द है 'रन (Jên)'। इंग = इंगलैण्ड, गुओ = देश; रन = मनुष्य। इसके भावार्थ हुए 'इंगलिशमैन (अंग्रेज)' बाई ओर से पहला शब्द है 'जुंग (Chung)' दूसरा शब्द है 'गुओ (Kuo)' तथा तीसरा शब्द है 'रन (Jên)'। जुंग = केन्द्रीय अथवा चीन; गुओ = देश; रन = मनुष्य। भावार्थ हुए 'चीन (केन्द्र) का निवासी' अर्थात् 'चाइनीज'।

आठ मौलिक रेखाएँ (Strokes) : चीन की सम्पूर्ण लिपि इन्हीं आठ मौलिक रेखाओं द्वारा लिखी जाती है। उनके नाम तथा चित्र 'फ० सं० - २३०' पर ऊपर सीधी ओर दिये गये हैं। चीनी लिपि में एक स्ट्रोक के शब्द से ३३ स्ट्रोक तक के शब्द लिखे जाते हैं। अधिकतर २० या २२ स्ट्रोक द्वारा ही बहुत से शब्द लिख लिये जाते हैं। इससे अधिक स्ट्रोक वाले शब्दों की संख्या न्यून है। एक से २० स्ट्रोक तक के शब्द 'फ० सं० - २३१' पर दिये गये हैं। इस फलक में चार कालम बाई ओर तथा चार कालम सीधी ओर दिये गये हैं जिनका विवरण इस प्रकार है :—

प्रथम कालम : इसमें रेखाओं (स्ट्रोकस) की संख्या दी गई जिनके द्वारा शब्द का निर्माण किया गया है।

द्वितीय कालम : इसमें चीनी लिपि में शब्द लिखे गये हैं।

तृतीय कालम : इसमें ऊपर की ओर शब्द का उच्चारण रोमन लिपि द्वारा लिखा गया है और उसी के सीधी ओर टोन की क्रम - संख्या दे दी गई है ताकि पाठक को ज्ञात हो जाये कि शब्द का उच्चारण किस टोन में होगा। उसी के नीचे हिन्दी में भी उच्चारण लिख दिया है।

चतुर्थ कालम : इसमें शब्दों के अर्थ हिन्दी में दिये गये हैं।

इस फलक पर दिये गये शब्द दो पुस्तकों² से लिये गये हैं।

चीनी लिपि के अंक : कुछ चीनी अंक³ 'फ० सं० - २३२' पर दिये गये हैं। साथ के कालम में देवनागरी में उन अंकों के उच्चारण तथा अंक दे दिये गये हैं।

चीन के दक्षिणी भाग की लोलो लिपि

इस लिपि का नाम लोलो जाति⁴ के नाम पर पड़ा। इस जाति की भाषा तिब्बत - बर्मी थी। यह जाति दक्षिणी चीन के यूनान (Yunnan) और जेक्वान (Szechwan) प्रान्तों में बसी हुई थी।

१८७३ में फ्रांस का एक ईसाई - धर्म - प्रचारक वीयाल (Vial) यहाँ आया और इनकी बोलियों का अध्ययन किया। उसी वर्ष एक दूसरा फ्रांस का धर्म - प्रचारक डी - ओलोन (d' Ollone) जिसने

1. 'चाइनामैन' लिखना चीननिवासी अपमानजनक समझते हैं इसको लिखना चाहिये 'चाइनीज' अथवा 'चीनी' 'चाइनामैन' लिखने की भूल कदापि न कीजियेगा।
2. Sung, Yu Feng : Chinese in 30 Lessons.
Williamson, H. R. : Teach Yourself Chinese.
3. Sung : Chinese in 30 Lessons, p. - 15.
4. Henry, A. : 'The Lolo's and other Tribes of Western China.' Journal of Anthropo - logic Institute's Vol. 33 (1903), p. - 99.

लिपि का सरलीकरण आठ मौलिक स्ट्रोक

萬	万	मं	एक लाख से अधिक	१-बिन्दी	५-बाएँ स्ट्रोक
開	开	खै	खोलना	२-लैटी रेखा —	६-दाएँ "
億	亿	ई	क्यों	३-रवड़ी रेखा	७-चढ़ते "
				४-मुड़े स्ट्रोक	८-कांटे

रेखाओं (Strokes) का प्रयोग

玉	1	1 2	1 2 3	1 2 3 4	1 2 3 4 5
गुप्पो (KUO) = देश	1 2 3 4 5 6	1 2 3 4 5 6	1 2 3 4 5 6 7 8	1 2 3 4 5 6 7 8 9	1 2 3 4 5 6 7 8 9

दो शब्दों का प्रतिदर्श

英	国	人	中	国	人
Ying	Kuo	Jên	Chung	Kuo	Jên
इंग	गुप्पो	रन	जुंग	गुप्पो	रन

रेखाओं का (द्रोक) द्वारा शब्द -- निर्माण

क्र. सं.	शब्द	ध्वनि	अर्थ	क्र. सं.	शब्द	ध्वनि	अर्थ
१	一	I ¹ ई	एक	११	魚	Yü ² ईयु	मीन
२	二	Erh ⁴ अर्	दो	१२	黃	Huan ⁴ ह्वांग	पीला
३	子	Tzu ³ इजू	बेटा; बच्चा	१३	罪	Min ³ मिन	मेंढक
४	文	Wen ² वन	साहित्य	१४	鼻	Pi ² बी	नाक
५	甘	Kan ¹ गैन	मीठा	१५	齒	Ch'ih ³ चर	सामने के दांत
६	舟	Chou ¹ जौ	नाव	१६	龍	Lung ² लंग	ड्रैगन
७	見	Chien ⁴ जियन	देखना	१७	簫	Yo ⁴ योम्र	बांसुरी
८	金	Chin ¹ जिन	धातु; सोना	१८	鼻	Hsia ⁴ शिया	चोंकना
९	首	Shou ³ शौ	सिर	१९	議	I ⁴ ई	परामर्श
१०	馬	Ma ³ मा	घोड़ा	२०	織	Chih ¹ जर	बुनना

चीनी लिपि के अंक

一 ^१	१ ई	七 ^१	ch'i ७ ची	二十	erh shih २० अर शर
二 ^४	erh २ अर	八 ^१	pa ८ बा	二十八	अर शर २८ बा
三 ^१	san ३ सैन	九 ^३	chiu ९ ज्यु	三十	san shih ३० सैन शर
四 ^४	ssü ४ स्सू	十 ^२	shih १० शर	三十九	सैन शर ३९ ज्यु
五 ^३	wu ५ वू	十一	shih i ११ शरई	四十	ssü shih ४० सू शर
六 ^४	liu ६ ल्यू	十五	shihwu १५ शर वू	千	pai १०० बाई

इस जाति की दो भाषाओं का अध्ययन किया। वीयाल ने लगभग ४२५ चिह्नों को एकत्रित किया और डी०, ओलोन ने लगभग १०३० चिह्नों को एकत्रित किया।

लोलो लिपि का सबसे प्राचीन अभिलेख लू कुआन हीन (Lu - K' uan - hien) में यूनान से १९०६ में प्राप्त हुआ था, जिसका काल चीनी विद्वानों ने 'प्रथम मिंग सम्राट् हुंग वू (१३६८ - १३९८)' निर्धारित किया है। दूसरा अभिलेख यूनान के एक उपनगर त्सान - त्सही - अंगाइ (Tsan - Tsih - Ngai) से प्राप्त हुआ जो एक चट्टान पर उत्कीर्ण किया हुआ था। इसकी दिशा कुछ अंशों में ऊपर से नीचे तथा कुछ अंशों में बायें से दायें थी।

पहले अभिलेख का काल भिंग वंश के प्रथम शासक तथा संस्थापक हुंग - वू के शासनकाल (१३६८ से १३९८ तक) का तथा दूसरा शिलालेख १५३३ ई० का माना जाता है।

इस लिपि के उद्भव के विषय में निश्चयपूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता परन्तु चीनी परम्परा के अनुसार एक आबी ने इसका आविष्कार किया था।

इस लिपि में वर्ण या अक्षर नहीं होते परन्तु एक चित्र या चिह्न ही एक ध्वनि द्वारा एक वस्तु या भाव का बोध कराता है। 'फ० सं० - २३३' पर वीयाल द्वारा पहचाने गये कुछ चिह्न उनके उच्चारण के साथ दिये गये हैं। उसके पश्चात् डी० ओलोन द्वारा पहचाने गये चिह्न^१ दिये गये हैं। तीसरे कालम में कियाओ कियो (Kiao - Kio) भाषा के चिह्न तथा चौथे कालम में वेइ - निंग (Wei - Ning) भाषा के चिह्न दिये गये हैं। इन दोनों भाषाओं के चिह्नों का भी डी. ओलोन ने ही रहस्योद्घाटन किया है।

म्याओ - त्से लिपि

यह दक्षिण - पश्चिमी चीन की एक आदिवासी - जाति की लिपि है। यह जाति चीन के सुदूर दक्षिण - पश्चिमी पहाड़ियों में निवास करती थी। यहाँ भी धर्म - प्रचारक डी ओलोन पहुँचा और वहाँ के एक आदिवासी के सहयोग से उसने एक ३३८ चिह्नों का शब्द - कोष तैयार किया। उनमें से कुछ चिह्न 'फ० सं० - २३४' पर दिये गये हैं।

इसके उद्भव व विकास के विषय में कुछ ज्ञात नहीं।

मोसो लिपि

मोसो एक जाति का नाम है जो यूनान के उत्तर - पश्चिम की ओर निवास करती है तथा तिब्बत भाषा बोलती है। एक धूमक्कड़ विद्वान् तेरियन डी लकाउपेरी (Terrien de Lacouperie) ने इसकी लिपि के कुछ चिह्न १८८५ में रॉयल एशियाटिक सोसायटी के जर्नल (Journal of the Royal Asiatic Society) में प्रकाशित कराये। उन्हीं चिह्नों में से कुछ चित्रात्मक चिह्न 'फ० सं० - २३५' पर दिये गये हैं।

ची तान लिपि

चीन के उत्तर - पूर्व में एक छोटा सा राज्य ची तान (Ch'i - tan) था। यह राज्य तुंगूसी जाति का था। यह राज्य यू चैन (Yu - Chen) ने ११२५ में नष्ट कर दिया। यू चैन ने ची तान लिपि का आविष्कार १११९ में किया। ११३८ में इसको सरल बनाया गया तथा इसका नाम 'छोटी लिपि' रख दिया।

1. Parker, E. H. : 'The Lolo - Written Characters' 1. A. XXVII (1895), p. - 172.

चीन के दक्षिणी भाग की लोलो लिपि

शब्द	वीयल द्वारा चिन्ह उच्चारण	ओलोिन द्वारा चि० उच्चा०	कियाओ कियो चि० उच्चा०	वेइ निंग चिन्ह उच्चारण
वर्ष	𠂇 कोऊ K'ou	𠂇 कोऊओ K'ouo	𠂇 कोऊ K'ou	𠂇 क-आओ K'AO
जल	𠂇 जे je	𠂇 जेऊ jeuh	𠂇 गोऊ gou	𠂇 ईर Yie'
हस्त	𠂇 ले le'	𠂇 लोऊ lou	𠂇 लोऊ lou	𠂇 ला la
माता	𠂇 मा ma	𠂇 मो mo	𠂇 मू mu	𠂇 मा ma
चन्द्र	𠂇 ल्हा hla	𠂇 ल्हो hlo	𠂇 ल्हो hlo	𠂇 ल्हो hlo
अश्व	𠂇 मोन mon	𠂇 ह्म hm	𠂇 म् m'	𠂇 मोन mon
पत्थर	𠂇 लोड lou		𠂇 ल्हो llo	𠂇 लो lo
आकाश	𠂇 मोन mon	𠂇 मेड mev		𠂇 मोन mon
पर्वत	𠂇 पो po	𠂇 बोह boh	𠂇 बोड bou	𠂇 बो bo
देखना	𠂇 ने ne'	𠂇 च्लो chlo	𠂇 हेड heu	𠂇 ना na
एक	𠂇 ती ti	𠂇 त्से tse	𠂇 त्से t'se	𠂇 ता ta
दो	𠂇 ग्नी gni	𠂇 निक nic	𠂇 न्जे nje	𠂇 ग्नी gni
तीन	𠂇 से se	𠂇 सो so	𠂇 सो so	𠂇 सेड seu
दस	𠂇 त्से tse	𠂇 त्सी tsi	𠂇 त्सी tsi	𠂇 सेड seu

दक्षिण -- पश्चिम चीन की म्याओ -- त्से लिपि

चिन्ह	उच्चार	अर्थ	चिन्ह	उच्चार	अर्थ	चिन्ह	उच्चार	अर्थ
१	ही	चन्द्र	३	पा. के	आम्नो	५	मों के	जाम्नो
७	ह्ले	आग्न	४	लौ मे	नर	६	लौ ती	उंगली
८	ने	घोड़ा	२	लौ मे	मनुष्य	७	ई	एक
९	क्यो	ग्राम	५	लौ तो	नारी	८	आ ओ	दो
१०	चो	लिखना	६	त लो	बाएँ हाथ	९	पी	तीन
११	देक	पुस्तक	७	त लो तो	स्त्री	१०	क क	दस

मोसो लिपि

					
भूमि	सूर्य	चन्द्र	पुरुष	स्त्री	पर्वत

ची तान लिपि



a'-č 'ih-puh-lu han' ān-ni sāh-hī

ऐन्द्रजालिक लेखन कला

					
प्राचीन शब्द =	अर्वाचीन यून (Yun)	प्रा. लेई (lei)	अर्वा. गड़गड़ाहट	प्रा. हिस्सांग (hsiang)	अर्वा. उतार

फलक संख्या - १३५

गया परन्तु इसके साथ साथ ची तान लिपि भी चलती रही। ११८० में सम्राट् शर - त्सुंग (Shih - tsung) ने भी इस लिपि को मान्यता प्रदान की। १२३४ में मंगोलों ने यू चेन का वध कर दिया परन्तु ची तान लिपि का प्रयोग बचा रहा। १६५० में मंचूरिया की लिपि ने इस का स्थान ग्रहण कर लिया।

काय जुंग जू (K'ai - jung - ju in Honan) होनान के एक नगर के निकट येन ताइ (Yen - ta'i) उपनगर से प्राप्त उपर्युक्त दी गई 'छोटी लिपि' के एक अभिलेख को १८८३ में देवेरिया (Deveria) ने प्रकाशित करवाया। तत्पश्चात् एक चीन - विशेषज्ञ (Sinologist) हर्थ (Herth) ने बड़ी कठिनाई से कुछ शासकीय प्रलेख प्राप्त कर लिये। यह प्रलेख चीनी तथा यूचेन लिपियों में लिखे हुए थे। डबल्यू० ग्रूबे (W. Grube) ने बड़े परिश्रम से २२ शासकीय प्रलेख का अध्ययन करने के पश्चात् अनुवाद किया। तदनन्तर इसके ८७० शब्दों का शोध करके ज्ञात हुआ कि यह लिपि अक्षरात्मक है। इसके लिखने की पद्धति ऊपर से नीचे तथा दायें बायें चीनी लिपि की तरह है।

इस लिपि के कुछ शब्द, जिनका ग्रूबे ने अनुवाद किया 'फ० सं० २३५' पर दिये गये हैं। वाक्य के अर्थ इस प्रकार किये जायेंगे :—“महाराजाधिराज ने आपके सूचनार्थ भेजा है (*His Majesty presents for your information*)”।

इसी 'फ० सं० - २३५' पर नीचे चीन की 'ऐन्द्रजालिक लेखन कला' (*Magical Script*) के कुछ उदाहरण (प्राचीन व अर्वाचीन काल के) दिये गये हैं।

पठनीय सामग्री

<i>Barot, J.</i>	: <i>Les Mo - So</i> (1913).
<i>Blackney, R. B.</i>	: <i>A Course in the Analysis of Chinese Characters</i> (1926).
<i>Brandt, J. J.</i>	: <i>Introduction to Spoken Chinese</i> (1944).
<i>Creel, H. G.</i>	: <i>The birth of China</i> (1938).
<i>Chalfant, F. H.</i>	: <i>Early Chinese Writing</i> (<i>Memoires of the Carnegi Museum</i> , 1911)
<i>Chan, Shan Wing</i>	: <i>Elementary Chinese</i> (1951)
<i>Chao, Y. R.</i>	: <i>Language and Symbolic Systems</i> (Cambridge - 1960)
<i>Chih Pet Sha</i>	: <i>A chinese First Reader</i> (1948)
<i>Gelb, J. I.</i>	: <i>A study of writing</i> (1965)
<i>Fitzgerald, C. P.</i>	: <i>China - A short Cultural History.</i>
<i>Goodrich, L. C.</i>	: <i>A short History of Chinese People</i> (1951).
<i>Hopkins, L. C.</i>	: <i>The Development of Chinese Writing</i> (1910).
<i>Karlgren, B.</i>	: <i>Sound and Symbol in Chinese</i> (1971)
” ”	: <i>Philology and Ancient China</i> (1926)
” ”	: <i>The Chinese Language</i> (N. Y. - 1949)

- Latourette, K. S.* : The Chinese – Their History and Culture (1946).
- ” ” : The Development of China (1946).
- Lauffer, B.* : A Theory of the Origin of Chinese Writing (American Anthropologist – 1907).
- ” ” : The Nichols Mo – So Manuscript (The Geographical Review – 1916)
- Mathews, R. H.* : Chinese English Dictionary (Harvard Uni. Press – 1916)
- Nehru, J. L.* : Glimpses of World History.
- Ollone, d' H., M., G.* : Mission d' Ollone (1909).
- Owen, G.* : The Evolution of Chinese Writing (1911).
- Parker, E. H.* : The Lolo Written Characters (The Indian Antiquary Vol. XXVII – 1895.)
- Peisha, Chih* : A Chinese First Reader (1948)
- Sung, Yu Feng* : Chinese in 30 Lessons (1945)
- and Black, Robert*
- T'oung Pao*
- Wieger, L.* : Chinese Characters (1940).
- Williamson, H. R.* : Teach Yourself Chinese (1972).

मध्य एशिया

इसमें मंगोलिया, साइबेरिया, मंचूरिया, सोवियत आदि देशों की लिपियों का वर्णन दिया गया है।

मंगोलिया

मंगोल एक पर्यटनशील जाति थी जो मध्य एशिया के पठारों व साइबेरिया के मैदानों में घूमा करती थी। यह जाति किसी प्रकार से मुख्य नहीं समझी जाती थी। इस जाति के लोग इधर उधर प्रकीर्णित थे और इनमें किसी प्रकार की एकता का भाव नहीं था, परन्तु अकस्मात् यह लोग आपस में एक हो गये और इन्होंने अपना एक नेता चुन लिया जिसका नाम 'बड़ा खान' (एक पदवी) रखा गया। यह था तिमूचिन जो बाद में चंगेज खान के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

इतिहास : इस जाति का इतिहास इसी खान के काल से आरम्भ होता है। इसका जन्म ११५५ में हुआ और पदवी मिली जब यह ५१ वर्ष का था। चंगेज खान के अन्तर्गत इस जाति के वीरों ने पृथ्वी को हिला दिया। पश्चिम में सीरिया तथा हंगेरी तक और पूर्व में चीन की सीमा तक इसने अपनी विजय पताका फहराई। शक्तिशाली वीर युवावस्था में ही युद्ध में रत रहते हैं और अन्त में विलासी हो जाते हैं परन्तु चंगेज खान ने अपनी ५२ वर्ष की अवस्था में अपने पराक्रम का प्रदर्शन किया। संसार का यह पहला मनुष्य है जिसने अपने जीवन काल में इतने देशों को रौंद डाला।

इस जाति ने मंगोल वंश के नाम से चीन देश पर १२७९ से १३६८ तक शासन किया परन्तु इस जाति का अपना कोई देश न था। इनका एक मुख्य भूमि भाग अवश्य हो गया था जहाँ यह लोग स्थापित हो गये थे और उसी को मंगोलिया के नाम से सम्बोधित किया जाता था जो चीन साम्राज्य के अन्तर्गत था। उसका मुख्य नगर उर्ग (आ० उलान बतोर) था। आरम्भ में यह 'शम्मा' (आकाश) के पुजारी थे परन्तु बाद में यह बौद्ध धर्मानुयायी बन गये। इस धर्म के पूजनीय थे 'लामा' जिनको यह लोग जीवित बुद्ध भगवान् की तरह मानते थे।

जब चीन में मंचू राज्य का अन्त हुआ, १९११ की क्रान्ति हुई तो यहाँ के उपशासक स्वतन्त्र हो गये। परन्तु यह स्वतंत्रता उत्तरी मंगोलिया में हुई और तभी से दो भाग हो गये, उत्तरी और दक्षिणी मंगोलिया, अथवा बाहरी और भीतरी। यह भीतरी भाग चीन के अन्तर्गत रहा तथा बाहरी रूस के प्रभाव में आ गया। १९२४ में एक घोषणा के अनुसार यह देश पूर्ण स्वतंत्र हो गया परन्तु रूस के प्रभाव के कारण समाजवादी हो गया। इसको रूस से हर प्रकार का सहयोग प्राप्त होता रहा और उसति के पथ पर अग्रसर होता रहा।

मंगोलिया की लिपियाँ : मंगोल जाति ने केवल नर - संहार ही नहीं किया अपितु अपनी जाति के उत्थान के लिए कई प्रकार की लिपियों का भी निर्माण किया।

मंगोल जाति की उपजातियाँ, जिन्होंने अपनी लिपि का विकास किया



गालिक लिपि

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ
ॲ	ॲॲ	ॲ	ॲ	ॲ	ॲ	ॲ	ॲ	ॲ
औ	अं	अः	क	ख	ग	घ	ङ	च
ॲ	ॲ	ॲ	ॲ	ॲ	ॲ	ॲ	ॲ	ॲ
क्व	ज	झ	ञ	ट	ठ	ड	ढ	ण
ॲ	ॲ	ॲ	ॲ	ॲ	ॲ	ॲ	ॲ	ॲ
त	थ	द	ध	न	प	फ	ब	म
ॲ	ॲ	ॲ	ॲ	ॲ	ॲ	ॲ	ॲ	ॲ
म	य	र	ल	व	श	ष	स	ह
ॲ	ॲ	ॲ	ॲ	ॲ	ॲ	ॲ	ॲ	ॲ
		क्ष	ज्ञ	अई	श			
		ॲ	ॲ	ॲ	ॲ			

को रखा गया जो भाषा के अनुसार प्रयोग में आते थे। इसको ऊपर से नीचे तथा बायें से दायें लिखा जाता था।

मंगोलिया में एक और लिपि भी प्रचलित थी जिसका विकास उइगुरी लिपि से तेरहवीं श० में किया गया तथा उसके पश्चात् सोगदी लिपि का भी इसमें सम्मिश्रण हुआ।

‘फ० सं० — २३९’ पर मंगोल लिपि के दो प्रकार के वर्ण दिये गये हैं। ऊपर वाली लिपि की वर्ण — माला^१ मंगोलिया के दूतावास द्वारा नई दिल्ली से प्राप्त की गई है। इस लिपि को ऊपर से नीचे किस प्रकार मिला कर लिखा जाता है पृष्ठ के नीचे (सीधी ओर) ‘खुदानन्द’ शब्द लिख कर बतलाया गया है। दूसरे प्रकार की लिपि पृष्ठ के नीचे की ओर दी गई है जो उइगुरी लिपि से सम्बन्धित है। इस लिपि का एक पाठ^२ ‘फ० सं० — २४०’ दिया गया है जिसको ऊपर से नीचे तथा फिर बायें से दायें पढ़ा जायेगा और जिसके अर्थ निम्नलिखित हैं :—

“प्राचीन काल में कबालिक के नगर में सेन — तारोलू नाम का एक (ब्राह्मण) बरहामिन था जो ब्रह्म विद्या के प्रत्येक विषय में निपुण हो गया था।”

इसी पृष्ठ पर सीधी ओर मंगोलिया की लिपि में अंक भी दिये गये हैं।

१९४१ से सीरिल लिपि का, जिसका प्रयोग रूस में होता है, प्रयोग आरम्भ हो गया।

कालमुक लिपि : कालमुक लोग पर्यटनशील थे। इनके घर नहीं तम्बू होते थे जिनकी अपने साथ लिए फिरते थे और उन्हीं में रहते थे। यह लोग सतरहवीं शताब्दी में वॉल्गा नदी के दक्षिणी भाग में बस गये। वैसे तो यह मध्य — एशिया के मैदानों में फैले हुए थे परन्तु आपस के झगड़ों के कारण १६३६ में अपनी जन्म भूमि छोड़ कर रूस चले गये थे। अठारहवीं श० में रूस एवं पश्चिमी के युद्ध में यह लोग रूस के लिए अच्छे योद्धा सिद्ध हुए। जब वहाँ की एक अन्य जाति से झगड़ा हो गया और इनके बहुत से साथी बीर — गति को प्राप्त हुए तो बचे — खुचे फिर पश्चिमी तुर्किस्तान में आकर बस गये। यह लोग बौद्ध — धर्म के पालनकर्त्ता थे।

लामा जया पण्डित ने १६४८ में इस लिपि का निर्माण मंगोलिया लिपि द्वारा किया^३। इस लिपि का नाम ‘तोदार हाई उदुक’ रखा। इसमें २४ वर्ण होते थे जो ‘फ० सं० — २४१’ पर दिये गये हैं।

बुरियात लिपि : मंगोल जाति की अनेकों उपजातियों में से एक उपजाति का नाम बुरियात था जो साइबेरिया के मैदान में बैकाल झील के आसपास पहले घूमा करती थी परन्तु फिर उन्नीसवीं श० में उसी भू भाग में बस गई। इस उपजाति के लोग मुख्यतया पशु — पालन का कार्य करते थे। उनकी भाषा में अनेकों बोलियाँ प्रचलित थीं। सतरहवीं श० के अंत में इन लोगों ने बौद्ध धर्म के लामावाद को अपना लिया परन्तु बाद में रूस के प्रभाव में आकर यह लोग ग्रीक ऑर्थोडॉक्स चर्च (Greek Orthodox Church) के ईसाई — धर्म के अनुयायी हो गये। इसी सतरहवीं श० में यह भू भाग एक आक्रमण द्वारा रूस के अधिकार में आ गया। १९२३ में इस भू भाग की सीमा निश्चित करके बुरियात ए० एस० एस० आर० (Buryat A. S. S. R.)^४ स्थापित कर दिया गया तथा रूस का अंग बन गया।

1. लेखक ने स्वयं दिल्ली स्थित मंगोलिया वं राजदूत से १९७३ में प्राप्त की।

2. Schmidt, I. J. : Grammar der Mongolian Sprache (St. Petersburg. — 1831), p. — 16.

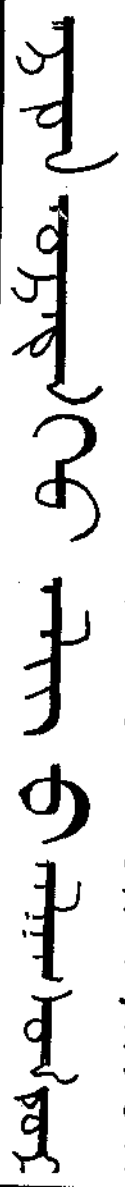
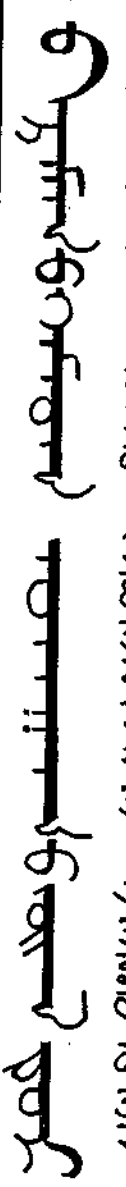

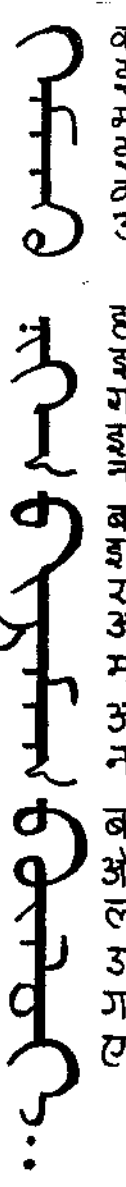
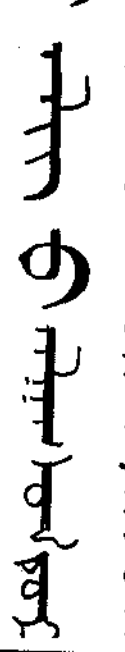
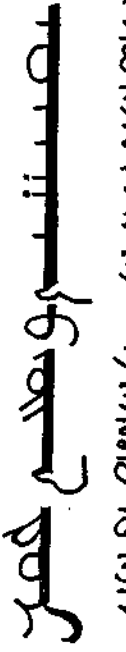
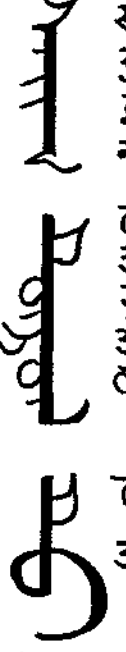
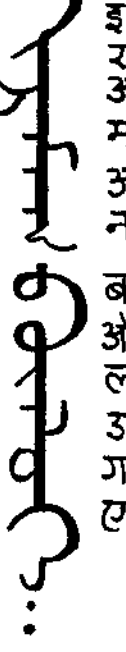
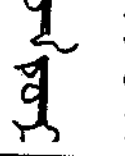
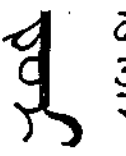

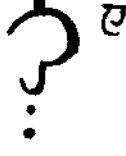
3. Laufer, B. : Keleti Szemle, Vol. VIII, (1922). p. — 186.

4. Autonomous Soviet Socialist Republic.

मंगोलिया की दो प्रकार की लिपियाँ

अ	ए	इ	उ	ओ	ऊ	ब	बे	बी	बो	बु
ᠠ	ᠡ	ᠢ	ᠣ	ᠤ	ᠥ	ᠪ	ᠪᠡ	ᠪᠢ	ᠪᠣ	ᠪᠤ
बू	क	की	कू	गे	गो	गू	न	ने	नी	नो
ᠪᠣ	ᠤ	ᠤ	ᠤ	ᠤ	ᠤ	ᠤ	ᠨ	ᠨᠡ	ᠨᠢ	ᠨᠣ
नु	नू	ह	म	ल	छे	थ	द	च	स	य
ᠨᠤ	ᠨᠤ	ᠬ	ᠮ	ᠯ	ᠬᠡ	ᠲ	ᠳ	ᠴ	ᠰ	ᠶ
फ	फ	छ	श	व	ज	दूसरा प्रकार	अ	ए	इ	ओ
ᠪᠡ	ᠪᠡ	ᠬᠡ	ᠱ	ᠪ	ᠵ		ᠠ	ᠡ	ᠢ	ᠣ
उ	औ	ऊ	न	ब	क	ग	क	ज	म	ल
ᠤ	ᠠᠤ	ᠤ	ᠨ	ᠪ	ᠬ	ᠭ	ᠬ	ᠵ	ᠮ	ᠯ
र	त	द	य	स	श	च	व	ख	ख	अक्षरों को मिला कर लिखा गया
ᠷ	ᠲ	ᠳ	ᠶ	ᠰ	ᠱ	ᠴ	ᠪ	ᠬᠡ	ᠬᠡ	

मंगोल लिपि का एक प्रतिदर्श

अंक	
अंक	नाम
1	नैख
2	हयुर
3	कोरो
4	तुर
5	थाऊ
6	चुरगा
7	टोलो
8	नैम
9	युस
10	अरऊ

कालमुक्त लिपि

अ 𑂀	ए 𑂁	इ 𑂂	ओ 𑂃	उ 𑂄
औ 𑂅	ऊ 𑂆	न 𑂇	ब 𑂈	प 𑂉
क 𑂊	ग 𑂋	ज 𑂌	म 𑂍	ल 𑂎
र 𑂏	त 𑂐	द 𑂑	ध 𑂒	स 𑂓
श 𑂔	च 𑂕	व 𑂖	व्र 𑂗	

इस लिपि का निर्माण लामा नागद बां दोर्जे ने (रूसी भाषा में अगवां दोर्जीव - Agvan Dordjiev) १९२० में किया परन्तु बुरियात लोग इसको अपना नहीं सके, तदनन्तर १९३१ में बुरियातियों ने रोमन लिपि का प्रयोग आरम्भ किया परन्तु यह लिपि भी प्रयोगात्मक न बन सकी। १९३७ में रूस की सीरिलिक लिपि अपना ली गई और यही राजकीय लिपि भी बन गई।

‘फ० सं० - २४२’ पर केवल वह लिपि दी गई है जो लामा दोर्जे ने तैयार की थी। इसमें २३ वर्ण थे। यहाँ की सीरिलिक लिपि जो मूलतः रूस ने अपनाई थी रूस की लिपि के वर्णों के साथ दी जायेगी।

तोखारी लिपि : तोखारी जाति के मंगोलों ने अपनी तोखारी भाषा के लिए बौद्ध साहित्य द्वारा भारतीय पद्धति पर, सातवीं व आठवीं श० के आस पास, पूर्वी तुर्किस्तान में इसका आविष्कार किया। ए० वान गबैन (A. Von Gabain) ने इस लिपि के कुछ अभिलेख १९५१ में एक प्राचीन बौद्ध मठ से प्राप्त किये। इसकी वर्णमाला ‘फ० सं० - २४३’ पर दी गई है। तोखारियों ने अपने निवास के भू - भाग को तोखारिस्तान नाम दिया जिसकी राजधानी बल्ख थी।

मंचूरिया

इतिहास : मंचूरिया का दूसरा नाम मांचाओ कुओ (Manchoukuo) है। यहाँ के निवासी मूलतः मंगोल जाति की एक शाखा तुंगु जाति के थे। यह पर्यटनशील थे। सत्रहवीं श० में इस जाति के एक नेता ली जू चेंग (Li Tzu - Cheng) ने चीनी शासन के विरुद्ध विद्रोह कर दिया तथा स्वयं चीन - सम्राट् होने की घोषणा कर दी। इस विद्रोह में चीन साम्राज्य के उच्च सेना - पदाधिकारी भी भीतरी - रूस से सहयोगी थे। यही ली १६४४ में चीन के मंचू वंश का संस्थापक बना। इस देश का मुख्य नगर जीकिंग (Hsiking) था।

मंचू वंश के शासन के अन्तिम दिनों में मंचूरिया में रूस का प्रभाव बढ़ गया था। परन्तु यह प्रभाव रूस व जापान के १९०४ - ५ के युद्ध के पश्चात् कम हो गया और इसकी जगह जापान ने ले ली।

१९३० में जापान ने सैनिक आक्रमण करके मंचूरिया को अपने अधीन कर लिया। १९३२ में यह जापान का ‘मांचाओ कुओ’ के नाम से एक प्रांत बन गया। तत्पश्चात् यहाँ की जनसंख्या में जापानी अधिक संख्या में आ गये। जापान के साथ चीन का वर्षों युद्ध चलता रहा। साम्यवादी चीन का राज्य स्थापित होने के पश्चात् मंचूरिया फिर चीन देश में सम्मिलित कर लिया गया।

लिपि : तेरहवीं श० से मंचूरिया निवासियों ने मंगोलिया की भाषा व लिपि^१ का प्रयोग किया। जब चीन में मंचू वंश का शासन आरम्भ हुआ तब सत्रहवीं श० में मंगोलिया की लिपि में सुधार किया गया तथा मंचूरिया की मुख्य भाषा के अनुसार यहाँ के एक विद्वान् दा - हाई ने एक स्वतंत्र लिपि का निर्माण किया। १९३७ के पश्चात् यहाँ की लिपि लोप हो गई और उसका स्थान चीनी लिपि ने ग्रहण कर लिया।

यहाँ की लिपि में २३ वर्ण^२ थे जो ‘फ० सं० - २४४’ पर दिये गये हैं।

1. Wylie, A. : ‘A Discussion on the Origin of the Manchus and their written Character’ - Chinese Researches, IV. (Shanghai - 1897).
2. Meillet - Cohen : Les langues du monde (1924), p. - 238.

बुरियाती लिपि

अ ः।	ए ~	इ ५	ओ ७	उ ५
ऊ ७	औ ७	न ५	ब ५	प ७
च ५	ग ः।	क ५	म ५	ल ५
र ५	त ५	द ५	य ज ५	स ५
श ५=	च ५	व ५		

संचूरिया की लिपि

अ 𑂀	ए 𑂁	इ 𑂂	ओ 𑂃	उ 𑂄
अँ 𑂅	न 𑂆	ब 𑂇	प 𑂈	च 𑂉
ग 𑂊	क 𑂋	ज 𑂌	म 𑂍	ल 𑂎
र 𑂏	त 𑂐	द 𑂑	य 𑂒	स 𑂓
श 𑂔	च 𑂕	व 𑂖		

सोग्दिया

इतिहास : सोग्दिया (प्राचीन पर्शियन — सुगुदा; ग्रीक — सोग्दियाना) ई० पू० की पाँचवीं शताब्दी में प्राचीन पर्शियन साम्राज्य का एक प्रांत था। ई० पू० की दूसरी श० में ग्रीक शासकों ने इसको बैक्ट्रिया (बख्त्रिया) राज्य में सम्मिलित कर लिया। आधुनिक समरकन्द एवं बोखारा के भूमि — भाग को सोग्दिया कहते हैं। सोग्दिया के निवासी प्राचीन पर्शिया के ही निवासी थे जो पूर्वी तुर्किस्तान में बस गये थे। इनका मंगोल निवासियों के साथ सम्मिश्रण हो गया।

लिपि : सोग्दी भाषा का मध्य एशिया¹ में कई शताब्दियों तक प्रचलन रहा। मुलर को १९०९ में कारा बल्गासुन के निकट उत्तरी मंगोलिया में एक नवीं श० का त्रैमासिक शिलालेख प्राप्त हुआ। इस भाषा का प्राचीनतम् अभिलेख तुन हुआंग नगर के एक घण्टा — घर पर अंकित सर ऑरिल स्टाइन (Sir Aurel Stein)² को १९०८ में प्राप्त हुआ जिसका काल ईसा की दूसरी श० माना जाता है। दो जर्मन विद्वानों यफ० सी० एन्ड्रियास (F. C. Andreas) और एफ० डब्ल्यू० म्युलर (F. W. Mueller), ने तथा एक फ्रांस के आर० गौथियत (R. Gauthiot) ने इस लिपि का रहस्योद्घाटन किया।

मुलर तथा अन्य विद्वानों ने इसका उद्भव अरमायक लिपि से माना है। इसमें २० वर्ण होते हैं। इस लिपि की बर्णमाला³ ली काक (Le Coq)⁴ ने १९१९ में तैयार की जो 'फ० सं० — २४५' पर दी गई है।

साइबेरिया

इतिहास : साइबेरिया को रूसी भाषा में सिबिर तथा संस्कृत में 'शिबिर' कहते हैं। यहाँ के प्राचीन मूल निवासी इनीसियन थे। तदनन्तर उग्रो — सम्बोदी ई० पू० की तीसरी श० में आकर बस गये। १५८१ में कजाक यरमाक ने इस भू भाग को अपने अधीन कर लिया। कजाक के अर्थ हैं 'सवार'। इस जाति के लोग बड़े वीर योद्धा होते थे। अब यह लोग रूस के निवासी माने जाते हैं।

साइबेरिया की लिपियाँ : यहाँ दो प्रकार की लिपियों का विकास हुआ, एक यनिसी तथा दूसरी ओरहन। पहली यनिसी नदी के निकट मिलने से यनिसी नाम पड़ा तथा दूसरी ओरहन नदी के पास मिलने के कारण ओरहन लिपि नाम पड़ा।

यनिसी लिपि : इस लिपि का प्रथम अभिलेख एक जर्मन विद्वान्, जो साइबेरिया में प्राकृतिक अध्ययन करने आया था और जिसका नाम मेसरस्मिथ (Messer Schmidt — B. 1665, d. 1735) को १७२२ में यनिसी नदी एवं प्राचीन मंगोल — राजधानी काराकोरम के विध्वस्त नगर के निकट प्राप्त हुआ था। 'फ० सं० — २४६' पर यनिसी लिपि दी गई है।

1. मार्कोपोलो की यात्रा के विवरण प्रकाशित होने के पश्चात् योरोप के इतिहासकारों ने मध्य-एशिया के भूभाग को, जो चीन साम्राज्य का एक भाग था, कैथे के (CATHAY) नाम से सम्बोधित किया जिसमें काशगर, समरकन्द, खोतान आदि नगर सम्मिलित थे।
2. Stein, Aurel : Serindia, II, p. — 672.
3. Madden, F. Universal Palaeography (1909), p. — 209.
4. Le Coq : Kurze Einführung indie uigurische schrift kunde Mitt. d. Sem. f. Orient Spr. XXII. plate — II (1919).

सोमदी लिपि

अ आ 	इ ई 	उ ऊ 	ए
ग क 	घ ज 	र 	ल
त 	द 	च 	स
श 	ज़ 	न 	ब प
व 	व 	म 	ह

साइबेरिया की यनिसी लिपि

अ J5x	ए X	इ ई t	ओ उ >	औ ऊ P	य ज _१ O	य ज _२ P
ब _१ 667	ब _२ X	च ज 入	क ग Y	द _१ X	द _२ X	य ए _२ 1144
ग _२ E66	क _२ Y P	को कू BB	ल _१ JV	ल _२ Y	म X	न _१ 7
न _२ P P P	न Y Y Y	अं च Z3	अं ग 3 {	प 1	क N	को कू ↑
र _१ 44	र _२ P	स _१ Y M	स _२ I	श n o A	इस लिपि में	३३ वर्ण हैं

ओरहन लिपि : इस लिपि का एक शिलालेख उसी जर्मन विद्वान् को ओरहन नदी के किनारे पर प्राप्त हुआ जो एक स्मारक पर उत्कीर्ण था। यह स्मारक ७३२ में चीन के सम्राट् ने तुर्किस्तान के राजकुमार कुल तिजिन के शुभागमन पर स्थापित करवाया था। यह अभिलेख ऊपर से नीचे तथा दायें से बायें की ओर अंकित था।

बहुत दिनों तक यह अभिलेख पढ़े नहीं जा सका। १८९३ में डेनमार्क के एक भाषा-विद्वान् वी. थॉमसेन (V. Thomsen) ने इन अभिलेखों के रहस्योद्घाटन में सफलता प्राप्त कर ली। इस लिपि में एक मुख्य बात यह थी कि अक्षर के नाम के पूर्व एक स्वर होता था। उदाहरणार्थ सेमेटिक लिपि में 'ल' और 'म' को 'लाम' तथा 'मीम' कहते हैं परन्तु इस लिपि में उनके नाम 'अल' तथा 'अम' होते हैं।

इन लिपियों के रहस्योद्घाटन कर्त्ताओं ने इनकी उत्पत्ति अरमायक लिपि द्वारा मानी है। जब स्टाइन द्वारा सोगदी लिपि के विषय में ज्ञात हो गया तब साइबेरिया की लिपियों की उत्पत्ति का स्रोत भी गैन्थियट तथा थॉमसेन द्वारा इसी सोगदी लिपि को मान लिया गया। परन्तु सोगदी लिपि में अनेकों परिवर्तनों के पश्चात् तुर्किस्तान की भाषाओं के अनुकूल बनाया जा सका।

'फ० सं० - २४७' पर ओरहन लिपि की वर्णमाला दी गई है।

मनीकी लिपि

इतिहास : मानी का जन्म २१५ ई० में बेबीलोन में हुआ। लगभग ३० वर्ष की अवस्था से उसने अपने विचारों का प्रचार आरम्भ कर दिया और एक धर्म का प्रवर्तक बन गया। उसका कहना था दुनिया केवल दो बातों पर आधारित है—एक उजेली जो अच्छा है दूसरा अंधेरा जो बुरा है। यह धर्म जोरोआस्टर (Zoroaster) अथवा जोरयूस के धर्म से मिलता-जुलता था। इस धर्म के अनुयायी मनीकी पुकारे जाते थे।

मानी की मृत्यु के पश्चात् मनीकी अपना देश छोड़ कर भाग गये। वह पश्चिम की ओर गये तथा पूर्व की ओर गये। पूर्व में यह पूर्वी तुर्किस्तान में बस गये। यहाँ मनीकी बौद्ध धर्म के सम्पर्क में आये। चौथी श० में इन लोगों ने कुचा नगर में एक मठ का निर्माण कर लिया। सातवीं श० में यह मनीकी चीन पहुँच गये और वहाँ कई मठों का निर्माण किया।

लिपि : मनीकियों ने अपनी एक ऐसी लिपि का निर्माण किया जिसमें कुछ ध्वनियाँ पश्चिमी की तथा कुछ ध्वनियाँ तुर्की भाषा की सम्मिलित की गई परन्तु इस लिपि की उत्पत्ति अरमायक से की गई। इस लिपि के कई अभिलेख स्टाइन (A. Stein) को १९०८ में प्राप्त हुए। इस लिपि की वर्णमाला ए. वॉन गबैन (A. Von Gabain) ने अपनी पुस्तक¹ में प्रस्तुत की है जो 'फ० सं० - २४८' पर दी गई है। इसकी दायें से बायें की ओर लिखते थे।

1. Gabain : *Altürkische Grammatika* (1951), p. - 17.

Le Coq, A Von : *'Türkische Manichaica aus Chotscho Vol. III. (1922), p. - 34.*

साइबेरिया की ओरहन लिपि

अ आ	ए	इ ई	ओ उ	औ ऊ	य ज _१	य ज _२
↵	↑	↑	>>	NN	D	99
ब _१	ब _२	च.ज	क.ग	द _१	द _२	ए-१
oos	xx	人	Y	3	X	4
ग _२	क _२	को कू	ल _१	ल _२	ल्दल	म
Ɔ	7	FR	J	Y	M	⋈
न _१	न _२	न	अंज	अंच अंग	त्त न्द	प
)	7	4	3	⊙⊙	3	1
क	की	को.कू	र _१	र _२	स	श
n n	△	↓	4	7	⋈	4

- Brinton, C.* : A History of Civilization.
Coq, A. Von Le : Buried Treasures of Chinese Turkestan (1928).
Gabain, A. Von : Uigurica. IV, (Berlin - 1931).
 " " : Alturkische Grammatik (1951.)
Gauthiot, R. : De l' alphabet Sogdien (Bulletin of the School of Oriental Studies - 1940).
Giles, H. A. : China and the Manchus (1912).
Henning, W. B. : Argi and Tokharians (Bulletin of the School of Oriental and African Studies - 1938).
Hosie, A. : Manchuria (1904).
Lauffer, B. : A Summary of Mongolian Literature (1927).
Lessing, F. : Mongolen, etc. (1935).
Madden, F. : Universal Palaeography (1909).
Mueller, F. W. K. : Uigurica - I, II, III, (Berlin - 1931).
Poucha, P. : Tocharica (Archiv Orientalni - 1930).
Radlove, V. V. : Die altuerkischen Inschriften der Mongolei (1899).
Ramstedt, G. T. : Kalmueckisch sprach Proben (1909).
Schmidt, I. J. : Grammar der Mongolian Sprache (St. Petersburg - 1831).
Skinner, F. N. : The Story of Letters and Figures (1902).
Stein, Sir Aurel : Sand Buried Ruins of Cathay.
 " " : Inner - most Asia (1928).
Swain, J. E. : History of World Civilization.
Taylor, Issac : The Alphabet.
Whymant, A. N. T. : A Mongolian Grammar etc. (1926).

कोरिया

इतिहास

कोरिया के पौराणिक काल में एक राजा तांजुन था जिसके वंश ने ११२२ ई० पू० तक शासन किया। जब चीन में शांग वंश के शासन का अंत हो गया और चाउ वंश ११२२ ई० पू० में शासक बना तब एक चीनी उच्चपदाधिकारी की - त्से अपने पाँच सहल साथियों के साथ कोरिया आया और कोरिया के शासन को अपने हाथ में लेकर एक नये राजवंश की स्थापना की तथा अपनी एक नई राजधानी पियोंगयांग (Pyongyang) का निर्माण करवाया। इस वंश ने लगभग ९०० वर्ष तक राज्य किया।

लगभग २१० ई० पू० में उन चीनियों का यहाँ आगमन आरम्भ हो गया जो चीन के सम्राट् शु हुआंग ती के अध्याचारों से दुखी थे। इस आगमन में चीन के सैनिक भी सम्मिलित थे। इन सैनिकों को एकत्र करके एक सैनिक योद्धा बी मान् १९३ ई० पू० में की - त्से के राजवंश को हटा कर कोरिया पर शासन करने लगा।

ई० पू० की अंतिम शताब्दी में कोरिया तीन राज्यों में विभाजित हो गया।

१. सिल्ला राज्य : चिनहान (दक्षिण - पूर्वी कोरिया) में ५७ ई० पू० में स्थापित हुआ।
२. कोजूरियो राज्य : ३७ ई० पू० में स्थापित हुआ।
३. पैक्ची राज्य : माहन् (दक्षिण - पश्चिमी कोरिया) में १८ ई० पू० में स्थापित हुआ।

यह तीनों राज्य एक दूसरे पर आक्रमण करते रहते थे और यह आपस के युद्ध लगभग ७०० वर्ष चलते रहे। इस बीच जापान के भी आक्रमण होते रहे। अन्त में सिल्ला राज्य ने दोनों राज्यों को परास्त कर दिया और पूरे देश को एक सूत्र में बाँध दिया। सिल्ला का राज्य ९३५ ई० मन् तक शासन चलता रहा।

९१८ ई० में सिल्ला राज्य के एक सैनिक अधिकारी वांग कीन (Wang Kien) ने विद्रोह कर दिया जो बहुत दिनों चलता रहा। अन्त में ९३५ में सिल्ला के राजा ने राज्य त्याग दिया और वांग कीन राजा बन गया। इसके वंश ने १३९२ तक राज्य किया। इसी वंश के राज्य काल में इस देश का नाम कोजूरियो से कोरियो तथा कोरिया पड़ गया। इसी काल में बौद्ध धर्म की प्रबलता दृष्टिगोचर होने लगी जिससे भिक्षु राजनीति में भाग लेने लगे। १२३१ में मंगोलों ने कई आक्रमण किये और देश को नष्ट - भ्रष्ट किया। १३६४ में एक सैनिक अधिकारी जनरल ई - ताय - जो (yi - Tae - jo) ने मंगोलों को बुरी तरह परास्त किया। १३९२ में जनरल ई ने वांग वंश के शासक को राज्य त्याग कर देने पर विवश किया और स्वयं राजसिंहासनावृद्ध हो गया और अपने नाम पर नये राजवंश की स्थापना कर दी। इस वंश ने १९१० तक राज्य किया। चीन के मिंग सम्राट् ने इस राजवंश को मान्यता दी तथा कोरिया का नाम चाउशीन (चोजेन - Chosen) रखा। 'ई' राजा ने अपनी एक नई राजधानी का निर्माण करवाया जिसका नाम हानयांग

(जा० सिओल - Seoul) रखा । इस वंश के शासनकाल में कोरिया बहुत समृद्धिशाली हो गया परन्तु बौद्धधर्म पर बन्धन लगाया गया । जो भूमि बौद्ध मठों के नाम थी उसको जनता में विभाजित कर दिया गया ।

१४२० में एक राजकीय महाविद्यालय स्थापित किया गया । १५० वर्ष तक शान्ति स्थापित रही और विद्वानों को शोध व खोज कार्य का अवसर मिलता रहा । १५९२ में जापान के शोगुन हिदेयोशी ने कोरिया पर आक्रमण कर दिया । १६२७ में मंचुओं (मंचूरिया निवासी) ने चीन पर आक्रमण करना आरम्भ कर दिये । इधर उन्होंने कोरिया पर भी आक्रमण किया तथा तात्कालिक शासक को मंचुओं को मान्यता देने पर विवश किया । मंचुओं ने १६४४ में चीन के मिंग वंश के शासक को परास्त कर मंचू वंश की स्थापना की ।

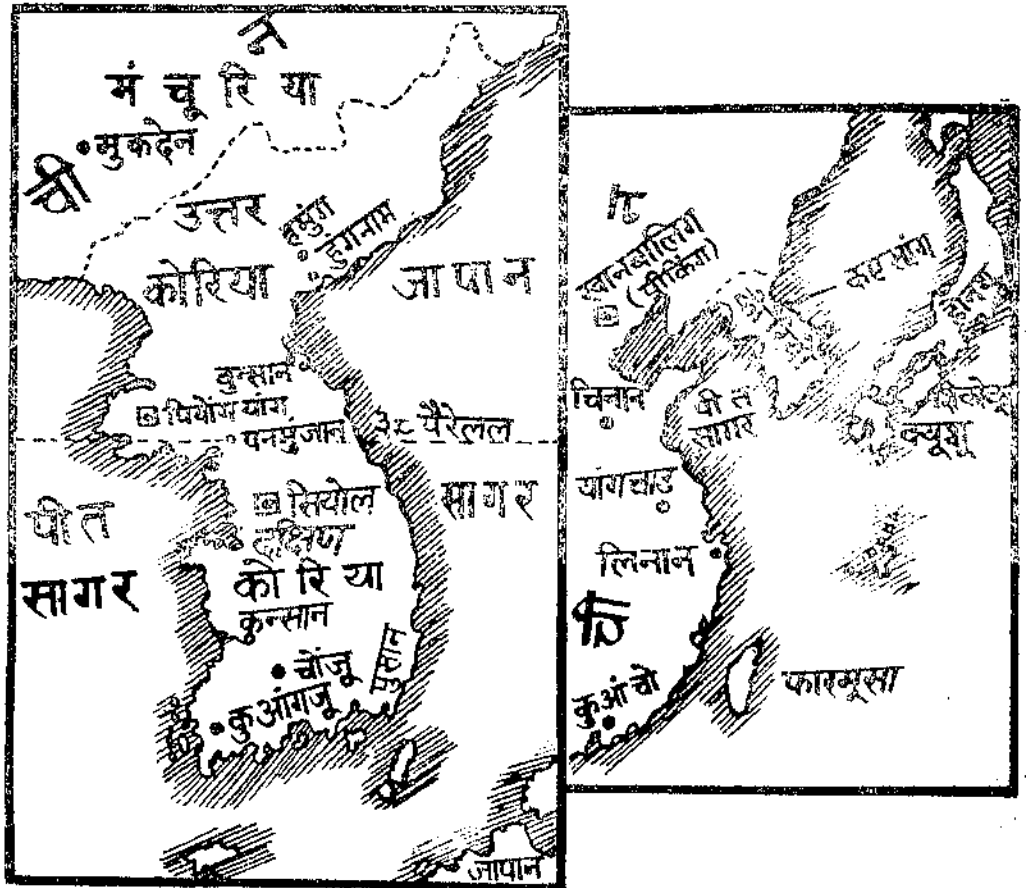
१६५३ में कोरिया में विदेशी पहुँचे । हॉलैण्ड देश का एक जल पोत पानी में डूब गया जिसके ३६ बच्चे हुए नाविक सिओल लाये गये । उनको देश के बाहर जाने की अनुमति नहीं दी गई परन्तु तेरह वर्ष के पश्चात् आठ भाग जाने में समर्थ हो गये । १८३० में फ्रांस के ईसाई - धर्म - प्रचारक कोरिया आये । तदनन्तर अन्य पाश्चात्य विदेशी पहुँचे ।

१८७६ में जापान ने कोरिया को एक सन्धि - पत्र पर हस्ताक्षर करने पर विवश किया जिसके अनुसार कूटनीतिक सम्बन्ध स्थापित हो गये । क्योंकि जापान व चीन दोनों ही कोरिया पर अपना अपना आधिपत्य जमाना चाहते थे परन्तु इन दो बड़े देशों ने निश्चय कर लिया कि कोरिया पर वे किसी प्रकार का अनुचित दबाव नहीं डालेंगे जिसको दोनों देशों ने नौ वर्षों तक मान्यता दी । १८९४ में कोरिया को जापान ने निवेदन के रूप में आज्ञा दी कि वह किसी विदेशी शक्ति का सहारा न ले । १८९५ में चीन ने कोरिया की पूर्ण स्वतंत्रता की स्वीकार कर लिया । परन्तु इस पूर्ण स्वतंत्रता को जापान ने स्वीकार नहीं किया और कोरिया को कुछ राजनैतिक सुधार करने पर विवश किया जिसके लिये जापान से एक मंत्री को राजदूत बना कर भेजा गया । इस सुधार के लिए जब वहाँ के राजा और रानी सहमत नहीं हुए तब दोनों का बध करवा दिया गया । तदनन्तर ई - ताए - वांग को राजा बनाया गया और जापान की इच्छानुसार सुधार किये गये तथा एक नये मंत्री - मण्डल की नियुक्ति की गई जिसमें सब जापानी पक्षबाले थे । ११ फरवरी १८९६ तक यह कूटनीति चलती रही । जब राजा यह सब सहन न कर सका तो रूस के दूतावास में शरण ली । रूस ने हस्ताक्षेप करके राजा को उसके अधिकार दिलवाये और जापान के पदाधिकारियों को निकाल कर रूस के राजनैतिक व सैनिक पदाधिकारियों को नियुक्त किया गया ।

१८९७ में कोरिया का राजा महाराजा हो गया जिसने कोरिया के निरपेक्ष होने की घोषणा की । १९०४ की फरवरी में रूस - जापान युद्ध छिड़ गया और जापान ने कोरिया पर आक्रमण कर दिया । १९०५ में जापान ने कोरिया को अपने संरक्षण में लेकर सारे विदेशी विभागों के कार्यों का संचालन किया । २२ अगस्त १९१० को ई वंश का अंत हो गया और कोरिया जापान साम्राज्य का अंग बन गया । दूसरे महायुद्ध के अंत तक यह इसी प्रकार जापान के अधिकार में रहा ।

महायुद्ध के समाप्त होने के पश्चात् कोरिया दो भागों में विभाजित कर दिया गया । उत्तरी भाग रूस के प्रभाव में साम्यवादी हो गया तथा दक्षिणी भाग अमेरिका के प्रभाव में राष्ट्रवादी हो गया । उत्तरी कोरिया की राजधानी पियोंगयांग तथा दक्षिणी कोरिया की सिओल बन गई । जून १९५० में उत्तरी कोरिया को मजबूर होकर दक्षिणी कोरिया पर आक्रमण करना पड़ा । १९५३ तक युद्ध चलता रहा और अंत में एक सन्धि - पत्र पर दोनों भागों के प्रतिनिधियों ने हस्ताक्षर कर दिये । अब दोनों भागों के शासक कोरिया के एकीकरण का प्रयत्न कर रहे हैं ।

कोरिया



फलक संख्या - २४९

पुमसो लिपि

क	का	को	ख	खा	खो
१	२	३	४	५	६
ग	गा	गं	गां	न	ना
७	८	९	१०	११	१२
नो	द	दा	नं	नां	नों
१३	१४	१५	१६	१७	१८
तुं	प	पा	पो	फ	फा
१९	२०	२१	२२	२३	२४
		बो	बू		
		२५	२६		

ओनमुन लिपि

आ	ई	ब	अ	य	औ	घो	इधै	ए
।	।	—	└	└	└	└	└	└
उ	यू	क	न	त	ल.ख	म	प	ख.द
└	└	└	└	└	└	□	└	└
च	छ	थ	फ	ख	अं	ह		
२३	२	└	└	└	○	○		

पूर्व ध्वनियों के योग से नये स्वर

अ + ई = ऐ	उ + ई = उई	ए + ई = ऐ
└ + । = └	└ + । = └	└ + । = └
ओ + ई = ओई	य + ई = यई	यू + ई = यूई
└ + । = └	└ + । = └	└ + । = └
इधै + ई = इधैई	घो + ई = घोई	न + ओ + अ = नोज
└ + । = └	└ + । = └	└ + └ + ○ = ○

ओनुमन लिपि का पाठ

कनसहान	क ई	ㄱ	अ	ㅏ	क अ	ㅑ
इयें होर न्नोमी	र	ㄴ	म	ㅓ	न	ㅕ
पपंबल थमहाथक	अं ई	ㅇ	ह आ	ㅗ	स अ	ㅗ
हमचेंगी साचए	न अ	ㅜ	त अ	ㅜ	ह आ	ㅜ
नज्जोल कीरी	न	ㄴ	क अ	ㅑ	न	ㄴ
ननकमहनचीरा	क अ	ㅑ	ह अ	ㅑ	श्वे अं	ㅑ
(इसके अर्थ हैं)	म	ㅓ	म	ㅓ	ह ओ	ㅓ
एक चालाक कुत्ता,	ह अ	ㅗ	अं ई	ㅗ	र अ न	ㅗ
जो खाने के लिपे तइप	न	ㄴ	स अ	ㅓ	न ओ	ㅓ
रहा था, एक गढ़े में गिर	च ई	ㄹ	च ए	ㅓ	म	ㅓ
गया जिससे निकलने का	र अ	ㅓ	न अ	ㅜ	अं ई	ㅜ
रास्ता कठिन था ।			ओं ल	ㅓ	प अ	ㅓ
					प अं	ㅓ
					ब ल	ㅓ

कोरिया की लेखन कला

पुमसो लिपि : ईसा की प्रथम शताब्दी में यहाँ चीन की लेखन कला सिखाई गई जो सातवीं श० तक प्रयोग में लाई गई । ६९२ ई० में एक कोरिया के विद्वान् सेलचोंगने, जो गिनमुन नरेश के दरबार का एक मंत्री भी था, एक नए प्रकार की पुमसो लिपि का निर्माण किया जो कोरिया की भाषा की ध्वनियों को उपयुक्त रूप से व्यक्त कर सके । इसका प्रयोग पन्द्रहवीं श० तक चलता रहा परन्तु कुछ परिस्थितियों के कारण यह लिपि सर्वप्रिय न हो सकी । इसके वर्ण 'फ० सं० - २५०' पर दिये गये हैं ।

ओनमुन लिपि : १४४३ में ई राजवंश के राजा सी - चोंग ने एक अन्य लिपि का आविष्कार किया जिसका नाम ओनमुन रखा । ओनमुन का अर्थ कोरिया की भाषा में 'जनता की लिपि' है जो पूर्णतया वर्णात्मक है तथा लिखने में, पढ़ने में, सीखने में एवं मुद्रण में बड़ी सरल प्रतीत होती है । १४४६ में यह शासकों में सिखाई जाने लगी ।

इसको ऊपर से नीचे तथा दाएँ से बाएँ की ओर लिखा जाता था परन्तु अब इसका प्रयोग बाएँ से दाएँ होने लगा है । इसके अतिरिक्त कुछ नये अर्धस्वरों का भी निर्माण किया गया है । ध्वनि मूलतः इसमें १७ व्यंजन और आठ स्वर थे । इसकी वर्णमाला तथा एक वाक्य 'फ० सं० - २५१, २५२' पर दिये गये हैं । यह वाक्य एक पुस्तक^१ से लिया गया है ।

पठनीय सामग्री

- | | |
|------------------------|---|
| <i>Allen, A. B.</i> | : <i>Romance of the Alphabet</i> (1937). |
| <i>Diringer, D.</i> | : <i>The Origins of Alphabet</i> (Antiquity - 1943). |
| <i>Eckardt, P. A.</i> | : <i>Ursprung der Koreanischen Schrift</i> (1928). |
| <i>Hooke, S. H.</i> | : <i>The Early History of writing</i> (Antiquity - 1937). |
| <i>Mecune, G. M.</i> | : <i>Notes on the Early History of Korea</i> (1952) |
| <i>Mason, W. A.</i> | : <i>A History of the Art of Writing</i> (1920). |
| <i>McCune, G. M.</i> | : <i>System de transcription de l' alphabet Coreen</i> (<i>Journal Asiatic</i> 1933), |
| <i>Osgood, C.</i> | : <i>The Koreans and their culture</i> (1951). |
| <i>Ramstedt, G. J.</i> | : <i>A Korean Grammar</i> (1939). |

1. Eckardt, A. : *Korean conversations grammatik* (1928), p - 203.

जापान

इतिहास

जापान का इतिहास पौराणिक कथाओं से आरम्भ होता है। यह कथाएँ दो पुराणों — कोजिकी और निहोंगी में मिलती हैं। यह दोनों पुराण आठवीं शताब्दी में रचे गये। इन्हीं पुराणों के अनुसार जापान की भूमि तथा जापानियों की उत्पत्ति देवताओं द्वारा मानी जाती है। जिसमें पहली मुख्य सूर्यदेवी¹ (जापानी नाम अमातिरामू) थी तथा दूसरा उसका भाई देवता (सुसन्नु) था। जापान का सर्वप्रथम मानव सम्राट् जिम्मू तेन्नु जो ११ फरवरी ६६० ई० पू०² को राजसिंहासनावृद्ध हुआ।

जापान के मूल निवासी ऐनु थे। सम्भवतः बाद में कोरिया तथा मैलेशिया से लोग पहुँचे और बस गये और उन्होंने ही मूल निवासियों को उत्तर की ओर खदेड़ दिया। ऐनु के रंग गोरे तथा शरीर पर बहुत बाल होते थे इसी से उनकी जाति की भिन्नता ज्ञात होती थी।

लगभग २०० ई० पू० के एक सम्राज्ञी, जिसका नाम जिंमो था जापान पर शासन करती थी। तब जापान का नाम यमातो (yamato) था। यमातो के निवासियों ने अपने सम्बन्ध कोरिया से अच्छे रखे। जापान को आरम्भ में जो कुछ प्राप्त हुआ वह चीन से कोरिया द्वारा हुआ। लगभग ४०० ई० में चीनी लिपि कोरिया से जापान पहुँची और ५५२ ई० में कोरिया के पैन्जी शासक ने बुद्ध की एक स्वरूप — मूर्ति जापान को भेंट की तथा साथ में बहुत से बौद्ध — भिक्षु भी भेजे।

जैसा कि अन्य देशों में भी हुआ, जापान का इतिहास भी पारस्परिक युद्धों का इतिहास है। जापान में कौटुम्बिक नेता होते थे। उनके कुछ क्षेत्र होते थे जो एक छोटे राज्य के राजा के समान होते थे। उनके अपने सैनिक होते थे। इन्हीं राज्यों में सत्ता को प्राप्त करने के कारण युद्ध होते थे। इसी कारण जापानी लड़ाकू हुआ करते थे। यह सैनिक अपने नेता के बड़े सेवक तथा आज्ञाकारी होते थे और कौटुम्बिक नेता को देवता का अवतार मानते थे। यह बात शिन्तो धर्म ने इनको सिखाई थी। जब जापान में बौद्ध — धर्म पहुँचा तो बौद्ध — धर्म तथा शिन्तो — धर्म के अनुयायियों में युद्ध होने लगे और अन्त में (५८७ ई० में) बौद्ध — धर्म के अनुयायियों की विजय हुई।

जापान के इतिहास में जापान का महाराजा देवता का अवतार माना जाता है, उसकी ओर कोई दृष्टि उठाकर देख नहीं सकता परन्तु स्वयं महाराजा की कोई सत्ता नहीं थी। वह शक्तिशाली कौटुम्बिक नेताओं के हाथ में कठपुतली की भाँति रहता था। यही कौटुम्बिक नेता महाराजा को राजसिंहासन पर आवृद्ध करने वाले तथा उससे उतारने वाले होते थे। यही जापान के वास्तविक शासक थे।

1. जापान में सूर्य को देवी मानते हैं जिसको अपने भाई के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करना पड़े।
2. यह तिथि काल्पनिक प्रतीत होती है।

जापान के महाराजा योमी के मरणोपरांत सोगा वंश के नेताओं में जो बौद्ध - धर्म - अनुयायी थे, और मानो नोबे वंश के नेताओं में, जो शिन्तो - धर्म - अनुयायी थे, सत्ता प्राप्त करने के लिए युद्ध हुआ जिसमें सोगा वंश की विजय हुई। परन्तु इसी युद्ध काल में सुजून महाराजा का वध कर दिया गया। तत्पश्चात् राजकुमारी सुयीको को सिंहासनाारुढ़ कर दिया गया जिसने ५९३ तक शासन किया।

महाराजा योमी के एक पुत्र शोतुकू तैशी था। इसी ने मोनो नोबे के वंश को पराजित किया था। इसका नाम उमयादो भी था जिसके अर्थ थे 'अस्तबल में जन्म लेने वाला राजकुमार' क्योंकि जब इसकी माँ घोड़ों का निरीक्षण कर रही थी तब इसका जन्म हुआ था। सुयीको के पश्चात् राज सत्ता शोतुकू तैशी के हाथ में आई। यह बड़ा योग्य शासक था। इसी ने बुद्ध भगवान् का होरियूजी का विशाल मन्दिर निर्माण करवाया जिसकी भव्यता आज तक प्रसिद्ध है। इसी ने बौद्ध - धर्म - साहित्य को लिखवाया तथा अपने देश के इतिहास को आरम्भ करवाया। इसी ने देश के विधि - संहिता का निर्माण करवाया।

६२१ में इसकी मृत्यु होने पर इसकी माँ को सिंहासन पर बिठा दिया परन्तु राज सत्ता सागो - नो - ईरुका के हाथ में रही। इसी काल में सोगा वंश के विरुद्ध एक विद्रोह खड़ा हो गया जिसका नेता नाकातोमी वंश का युवक कामातोरी था और जो शिन्तो - धर्म - अनुयायी था। इसका नाम फुजी धारा पड़ गया। इसने तात्कालिक सम्राज्ञी के भ्राता राजकुमार कारू तथा उसके पुत्र राजकुमार नाका को अपनी ओर कर लिया। कामातोरी ने अपनी कूटनीति से सोगा - नो - ईरुका का वध राजकुमार नाका के द्वारा करवा दिया और सम्राज्ञी से राजत्याग करवा दिया तथा ६४५ में राजकुमार कारू को सिंहासनाारुढ़ करवा दिया। अब राजकुमार कारू का नाम कोतोकू पड़ गया। महाराजा कारू नाममात्र का शासक था परन्तु कामातोरी की राजनीतिज्ञता के कारण जापान के राज्य में एकता आने लगी और चीन के सम्राट ने जापान राज्य को मान्यता प्रदान कर दी। जापान सरकार को चीनी शासन के ढाँचे पर चलाया गया।

जब महाराज कोतोकू (कारू) का स्वर्गवास हो गया और राजकुमार नाका ने राजसिंहासन पर बैठने से मना कर दिया तब उसी सम्राज्ञी कोज्यूको को जिससे राजत्याग करवाया गया था और जो राजकुमार नाका की माँ थी, पुनः राजसिंहासन पर बिठा दिया गया तथा उसका नाम साइमी रख दिया गया। ६६१ में इस सम्राज्ञी का स्वर्गवास हो गया और तब नाका को तेंची के नाम से राजसिंहासन पर बैठना पड़ा। नाका की मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्र को एक ओर करके उसके भाई को महाराज तेम्मू के नाम से गद्दी पर बिठा दिया गया जिसने ६८६ ई० तक राज्य किया। तेम्मू के मरणोपरांत महाराजा बनाने की समस्या इस कारण खड़ी हो गई कि तेम्मू के पुत्र आहोत्सू का वध कर दिया गया था। इस कारण तेम्मू की पत्नी को सम्राज्ञी बना दिया गया जिसने ६९७ में राजत्याग कर दिया। तत्पश्चात् तेम्मू के पोत्र मोम्मू को चौदह वर्ष की आयु में महाराजा बना दिया गया। इसका बीस वर्ष की अवस्था में स्वर्गवास हो गया। तदनन्तर उसकी माँ जेम्म्यो सम्राज्ञी बनी। अभी तक यह परम्परा चली आती थी कि महाराजा के स्वर्गवास होने पर नई राजधानी का निर्माण होता था। निर्माणकर्ताओं को बड़ा कष्ट होता था। इस कारण सम्राज्ञी जेम्म्यो ने ७१० में नारा की नवीन - निर्मित राजधानी को स्थिर कर दिया। अब प्रत्येक क्षेत्र में चीन का अनुसरण किया जाने लगा।

७२० में सम्राज्ञी के मरणोपरांत शोमू को सम्राट बना दिया गया। ७४९ में उसने राजत्याग कर दिया और अपनी पुत्री कोकेन को सम्राज्ञी बनवाया। ७५२ में उसने भी राजत्याग दिया और बौद्ध - भिक्षुजी बन गई। तदनन्तर कई राजा गद्दी पर बिठाये गये और उतारे गये। अंत में ७८२ में एक महाराजा सिंहासन

पर बिठाया गया जिसका नाम क्वाम्मू था । नारा से ७८४ में राजधानी हटा कर नागाओका बनाई गई और ७९४ में क्योतो बनाई गई । सम्राट् क्वाम्मू का देहांत ८०५ से हो गया ।

इसके उपरांत एक नये कुटुम्ब फुजीवारा ने केन्द्रीय शासन को अपने हाथ में ले लिया । इस फुजीवारा वंश के शासन — कर्त्ताजों ने भी सम्राटों को कठपुतली ही बनाकर रखा । जब चाहा जिसको चाहा गद्दी पर बिठाया और उतारा । राजगद्दी से हटाये गये सम्राट् बौद्ध — भिक्षु बन जाया करते थे और राजनीति की गतिविधियों में छिप कर भाग लिया करते थे । इन सम्राटों का नाम 'वानप्रस्थी सम्राट्' पड़ गया और बौद्ध — मठ राजनीति के अड्डे बनने लगे ।

इसी समय एक नया वर्ग दृष्टिगोचर होने लगा । इस वर्ग के लोग एक बड़ भू — भाग के स्वामी थे तथा वीर सैनिक भी थे । फुजीवारा — कुटुम्ब के शासकों ने इन लोगों को कर — वसूल — करने — वाला बना दिया । इस कारण शत्रु : शत्रु : इनकी शक्ति बढ़ने लगी । इनका नाम 'दाइमो' पड़ गया । यह लोग अपनी एक सेना भी रखने लगे । इतना ही नहीं, केन्द्रीय सरकार के आदेशों का उल्लंघन भी करने लगे तथा परस्पर युद्ध करने लगे । इनमें से दो मुख्य कुटुम्बों, ताएरा और मीनामोतो, ने तात्कालिक सम्राट् की फुजीवारा शासकों को हटाने में बड़ी मदद की परन्तु फुजीवारा की सत्ता को लेने के लिए परस्पर लड़ने लगे । इस प्रकार फुजीवारों का ११५६ में अंत हो गया और ताएरा कुटुम्ब ने मीनामोतो को परास्त कर दिया । उसके कुटुम्ब के अन्य सम्बन्धियों को भी समाप्त कर दिया ताकि भविष्य में किसी प्रकार का भय न रहे परन्तु चार बच्चे बच गये जिसमें से एक बाहर वर्षीय बालक योरीतोमो भी था । अब ताएरा कुटुम्ब निश्चित होकर शासन करने लगा जिसका मुखिया कियोमोरी था ।

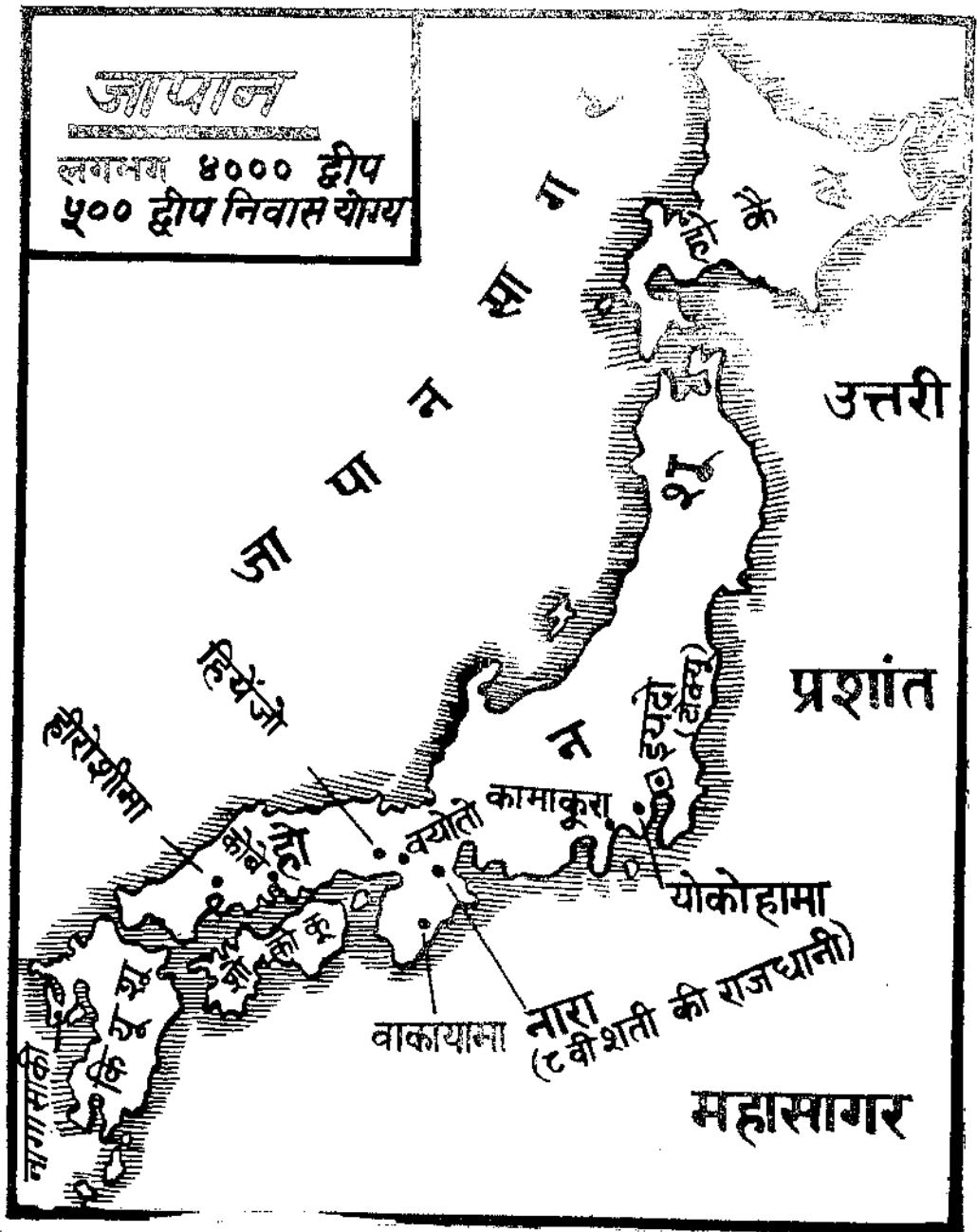
जब योरीतोमो बड़ा हुआ तब उसने अपनी शक्ति बढ़ाई । ११८५ में ताएरा कुटुम्ब के शासकों को परास्त कर सत्ता अपने हाथ में ले ली । सम्राट् को कुछ शान्ति मिली और उसने प्रसन्न होकर योरीतोमो को एक उच्च पदवी 'सेइ — ई — ताइ — शोगुन' से ११९२ में सुशोभित किया । इस पदवी को बंशानुगत बना दिया । उसने कामाकूरा में एक सैनिक मुख्यालय 'बकूफू' का निर्माण करवाया । वह न तो सम्राटों को अपनी उंगलियों पर नचाना चाहता था और न अपनी शक्ति का कोई अनुचित लाभ उठाना चाहता था । वह अपने भू — सामन्तों के निकट रहना चाहता था । सम्राट् ने प्रसन्न होकर उसको आरक्षक — विभाग तथा माल विभाग का भी प्रबन्धकर्ता बना दिया । शोगुन का प्रथम शासन काल १३३३ ई० तक, अर्थात् १५० वर्ष, बड़ा शान्तिमय रहा । मंगोलों के दो आक्रमण १२७४ तथा १२८१ में हुये परन्तु दोनों में वे पराजित कर दिये गये ।

इसी काल में जापानियों ने चीन से चीनी बर्तन बनाना सीखा । ११९१ में एक बौद्ध — भिक्षु चीन से चाय का पौधा लाया ।

१३१८ में एक नये सम्राट् दाइमो द्वितीय ने राजसिंहासन सुशोभित किया । इसी ने होजो तोकीमासा के मरणोपरांत अशिकागा टकाउजी को शोगुन की पदवी दी । इसने १३३८ से शासन का भार संभाला ।

१५७३ तक राज्य शान्तिपूर्वक चलता रहा । तत्पश्चात् फिर पारस्परिक झगड़े होने लगे जो लगभग १०० वर्ष तक चलते रहे । इसी बीच कोरिया पर भी आक्रमण किये गये परन्तु कोरिया ने सामुद्रिक युद्ध में जापान को परास्त कर दिया ।

उन्हीं दिनों जापान के इतिहास में तीन प्रसिद्ध व्यक्ति आये । नोबुनागा, हिदेयोशी तथा तोकूगावा इयेयासू इन तीनों व्यक्तियों के सहयोग से जापान में एकता का भाव दृष्टिगोचर होने लगा । परन्तु पारस्परिक झगड़ों से सबसे अधिक लाभ तोकूगावा इयेयासू ने उठाया और बहुत से भूभाग का स्वामी हो बना । उसने इयो



नाम का एक नगर निर्माण कराया जो आज टोकियो के नाम से प्रसिद्ध है और संसार का सबसे बड़ा नगर है। ईये यासू १६०३ में शोगुन हो गया जिसके वंशजों ने २५० वर्ष शासन किया।

१५४२ में (गृहयुद्ध काल) में पुर्तगाली सबसे पहले जापान आये। यही लोग सर्वप्रथम जापान में तोपें और बन्दूकें लाये। १५९२ में स्पेन से तदनन्तर हालैण्ड एवं इंग्लैण्ड से व्यापारी आने लगे। १५४९ में ईसाई धर्म का प्रचार होने लगा। बौद्ध धर्म के मठ राजनीति के अड्डे समझे जाते थे इसी कारण ईसाई - धर्म - को प्रोत्साहन दिया जाने लगा ताकि बौद्ध धर्म की शक्ति कम हो। १५८७ में ईसाई - धर्म - प्रचारकों को बीस दिन के अन्दर जापान छोड़ने का आदेश दे दिया गया। इयेयासू की मृत्यु के पश्चात् उन सब को ईसाई - धर्म छोड़ना पड़ा जिन्होंने इसको पहले ग्रहण कर लिया था। १६३६ तक सारे विदेशियों को जापान के बाहर निकाल दिया गया केवल कुछ हालैण्ड निवासी बच गये जिनको नागासाकी में बन्दी के रूप में रहने दिया गया। अब न कोई जापान से बाहर जा सकता था और न जापान में आ सकता था।

१८५३ में अमरीका से एक जलपोत जापान आया। अमरीका के राष्ट्रपति ने जापान से अपने बन्दरगाह खोलने का निवेदन किया था। जापान ने प्रथम बार स्टीमर देखा था। शोगुन शासक इस बात पर सहमत हो गये और दो बन्दरगाह विदेशी व्यापारियों के लिये खोल दिये गये। यह समाचार सुनते ही अंग्रेज, रूसी एवं डच इत्यादि आना आरम्भ हो गये। विदेशों से सन्धियाँ हुईं और शोगुनों ने अपने को सम्राट मानकर सन्धि पत्रों पर हस्ताक्षर किये। इसके कारण विदेशियों ने आन्दोलन किया। कुछ विदेशी मारे गये तब उन लोगों ने नौ सेना का आक्रमण किया। स्थिति और बिगड़ गई और जापान के शोगुन शासकों को अपने कार्य से त्यागपत्र देना पड़ा। तोकूगावा कुटुम्ब का ईये यासू १६०३ में शोगुन हुआ था और उसके कुटुम्ब का शासन १८६७ में समाप्त हो गया। लगभग एक सहस्र वर्ष के पश्चात् महाराजा ने, जो अभी तक शासनकर्ताओं के हाथ में कठपुतली की भाँति एक नाममात्र के महाराजा थे, अब स्वतन्त्रता की साँस ली। इस समय एक चौदह वर्षीय बालक सम्राट मुत्सी हितो के नाम से राजसिंहासनारूढ़ हुआ जिसने १९१२ तक शासन किया। इस शासन काल को जापानी भाषा में 'मेईजी' (प्रकाशित राज्य या ज्ञानवर्धक) कहते हैं। वास्तव में जापान ने विदेशी नौसेना की विजय तथा अपनी पराजय से अपने को बड़ा हीन समझा और निश्चय किया कि वह ऊपर उठेगा उन्नति करेगा। इसी निश्चय के कारण जापानी योरोप और अमरीका गये और वहाँ जाकर जो कुछ सीखा उससे अपने देश को उद्योग तथा विज्ञान के पथ पर अग्रसर किया।

सामन्तवाद का अंत कर दिया गया। राजधानी को क्योतो से एदो लाया गया और उसका नाम परिवर्तित करके टोकियो रखा गया। एक विधान बनाया गया। दो सभाओं का निर्माण हुआ। अब जो भी परिवर्तन होते सब सम्राट के नाम पर होते थे। अब सम्राट की मान्यता इतनी बढ़ा दी गई कि उसकी पूजा की जाने लगी। एक दिन था कि जापान ने सय कुछ चीन से सीखा था परन्तु अब वह प्रत्येक बात में चीन से आगे था। चीन विदेशों द्वारा दबाया जा रहा था इधर जापान अपनी शक्ति बढ़ा रहा था।

जापान के कुछ मछियारों को चीन ने पकड़ लिया तथा बध कर दिया। इस बात पर जापान ने चीन से क्षतिपूर्ति की माँग की। जब चीन ने इसको देने से मना किया तो जापान ने आक्रमण की धमकी दी। चीन दक्षिण में फ्रांस की सेना से उलझा था। १८७४ में उसने जापान को क्षतिपूर्ति का धन दे दिया। अब जापान ने कोरिया से कुछ झगड़ा मोल लिया और उसको व्यापार करने की अनुमति देने पर विवश किया। कोरिया के न मानने पर जापान ने आक्रमण कर दिया। इस समय कोरिया चीन के अन्तर्गत था। इस कारण उसने चीन से सहायता की याचना की परन्तु चीन ने अपनी असमर्थता प्रगट की और हथियार डाल देने की सलाह दी।

१८८२ में कोरिया ने अपनी पराजय मान ली। अब कोरिया दो देशों के अन्तर्गत हो गया। १८९४ में जापान ने चीन पर आक्रमण कर दिया। इसके फलस्वरूप कोरिया को स्वतंत्रता प्राप्त हुई परन्तु जापान के प्रभाव में जापान को फारमूसा द्वीप आदि चीन से प्राप्त हो गये। १९०४-५ में रूस से युद्ध हुआ और जापान की विजय हुई। संसार की आँखें खुलीं और जापान की इतनी शीघ्र उन्नति पर आश्चर्य प्रगट होने लगा। १९११ में चीन में साम्राज्यवाद का अंत हो गया और लोकतंत्रवाद आ गया। तत्पश्चात् प्रथम महायुद्ध आरम्भ हो गया, जापान ने भी जर्मनी के विरुद्ध अपनी घोषणा की। जर्मनी के पास चीन का शान्तुंग प्रांत था इस कारण जापान ने चीन के उस भू भाग को ले लिया तथा चीन को अपनी २१ 'मांगों' को मानने पर विवश किया। अन्य देशों ने आपत्ति की, कुछ संशोधन हुये फिर १९१५ में जापान ने अपनी मांगों किसी प्रकार पूरी कीं। चीन में जापान के लिए घृणा के भाव जागृत होने लगे।

१९१७ में रूस में क्रान्ति हो गई। १९२२ में एक सभा वाशिंगटन बुलाई गई जिसमें चार बड़ी शक्तियाँ सम्मिलित हुई—अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस तथा जापान और सन्धि हुई कि कोई देश किसी देश को उपनिवेश को लेने का प्रयास नहीं करेगा। फिर भी जापान ने १९३१ में मंचूरिया को अपने अधीन कर लिया। १९३२ में चीन पर आक्रमण कर दिया। १९४१ में दूसरे महायुद्ध में जर्मनी से मिल गया और अमेरिका पर आक्रमण कर दिया। दक्षिण-पूर्वी-एशिया के देशों को अपने अधीन करता हुआ भारत पर भी एक दो आक्रमण किये। १९४५ के दो अणुबमों ने जापान को परास्त होने पर विवश किया। जापान को अमेरिका ने बहुत दबा कर रखा। १९४७ में एक नया विधान लागू किया गया।

यह वही जापान है जिसने दूसरे देशों से ही सब कुछ सीखा, वही जापान जो दो अणुबमों द्वारा नष्ट किया गया, हर प्रकार के बन्धनों से जकड़ा गया परन्तु आज वही जापान प्रगतिशील देशों को बहुत सी बातें सिखा रहा है। यह सब उसके देश-प्रेम तथा बलिदान की भावना का फल है।

लेखन कला

जापान के सम्बन्ध चीन से ईसा पूर्व काल से लगभग दूसरी शताब्दी से आरम्भ हुये। ईसा की प्रथम शताब्दी में सांस्कृतिक सम्बन्ध स्थापित हुए।

दैवी लिपि : एक जापानी विद्वान् हिराता ने अपनी पुस्तक शुइजी हिबुमीदेन (१८१९) में इसको प्राचीनतम लिपि माना है। कीतासाते ने इसको अहिर्लु लिपि के नाम से सम्बोधित किया। १४४० में इस लिपि के अनेक अभिलेख मन्दिरों से प्राप्त हुये। १७७० में एक बौद्ध भिक्षु ने इसको प्रकाशित^१ किया और इसको चीनी लिपि को जापान आने के पूर्व का माना है।

४०४ ई० में महाराजा ओजिन (२७० - ३१२ ई०) ने अपने पुत्र उत्तराधिकारी को शिक्षा देने के लिये चीनी भाषा व साहित्य के दो महान् विद्वानों - अचोकी और वाना को, जो कोरिया के निवासी थे, नियुक्त किया। तभी से उच्च वर्ग के जापानियों में शिक्षा का प्रसार होने लगा और चीनी भाषा व लिपि को लोग सीखना आरम्भ कर दिये। छठी शताब्दी में जब चान से कोरिया के द्वारा जापान में बौद्ध - धर्म तथा उसका साहित्य जापान पहुँचा और चीन में बौद्ध - धर्म - साहित्य का अनुवाद चीनी भाषा में होने लगा तो जापानी भाषा के साथ चीनी भाषा को सीखना अनिवार्य कर दिया गया और इस प्रकार शनैः शनैः चीनी

1. Kochachiro Miyazaki : 'Jindai nomoji' (Script Signs from the times of Gods)
Tokyo - 1942.

क	कौ	कौ	कू	स	सी
सौ	सू	र	री	रौ	रू

1. 'काना' शब्द 'कन्ना' से तथा 'कारी न' से, जिसके अर्थ हैं छिपे नाम'
2. **Lang** : Einführung in die Japanische Schrift (Berlin - 1896), p. - 13.
3. 'थाना' तथा 'काना' समान शब्द हैं। काना शब्द कन्ना (**Kanna**) से और 'कन्ना' 'कारी न' से जिसके अर्थ हैं पेछि नाम।

कताकाना लिपि के अक्षर

अर्थ	काइ शू	कता	अक्षर	अर्थ	काइ शू	कता	अ०
आदरबोधक	阿	ア	अ	आवश्यक	須	ス	सू
सर्वनाम	伊	イ	ई	काल (जीविषों के लिये)	世	セ	से
आश्रय	宇	ウ	उ	पहले से	曾	ソ	सो
नदी	江	工	ए	अत्याधिक	多	タ	त
में	於	オ	ओ	विरोध करना	干	テ	ची
अधिक	加	カ	क	थूकना	津	ツ	सू
उत्तम	最	セ	की	आकाश	天	テ	ते
बहुत दिन पूर्व	久	ク	कू	पृथ्वी	土	ト	तो
अनुरक्षण करना	衛	ケ	के	परन्तु; वैसे	奈	ナ	न
स्वयं	己	コ	को	दास	仁	ニ	नी
घास	草	カ	स	भद्रस्त्री	奴	ヌ	नू
पहुंचना	之	シ	शी	बच्चा	子	ネ	ने

कताकाना लिपि के अक्षर

अर्थ	काइशू	कता	अं	अर्थ	काइशू	कता	अं
जैसे भी	乃	ノ	नो	वीर	勇	ユ	यू
प्रकाश	八	ハ	ह	साथ में	與	ヨ	यो
तुलना करना	比	ヒ	ही		良	ラ	र
नहीं	不	フ	फू	लाभ	利	リ	री
वर्तन	皿	ハ	हे	बहा लै जाना	流	ル	रु
	保	ホ	हो	सद्व्यवहार	礼	レ	रे
अन्त	末	マ	म	संगीत का स्वर ज्ञान	呂	ロ	रो
नदी	三美	ミ	मी	दिन; सूर्य	日	ワ	व
कृषि - फल	牟	ム	मू	चतुर	慧	エ	वी
सबसे ऊँचा	女	メ	मे	नामों में प्रयोगात्मक	伊	ヱ	वे
बाल; पर	毛	モ	मो	साधारण	平	マ	वो
भी	也	ヤ	य			ヨ	अं

हीरागाना लिपि : का विकास¹ तवीं श० के आरम्भ में हुआ। इसका निर्माण — कर्ता एक विद्वान् बौद्ध-भिक्षु कोबो — दंशी (Kobo — daishi) था। इसका विकास चीन की एक शीघ्र लिखने वाली लिपि त्साउ — शू (T'sao — Shu) से किया गया जिसको जापानी भाषा में 'सो — शो' कहते हैं। चीनी भाषा में 'त्साउ' को 'वास' कहते हैं। इस लिपि की वर्णमाला 'फ० सं० — २५५, २५६' पर दी गई है।

कताकाना और हीरागाना लिपियों में ४७ अक्षर थे। आधुनिक काल में एक 'अ' की ध्वनि जोड़ने से दोनों में ४८, ४८ अक्षर हो गये। इन में 'ई' की ध्वनि से 'यी' का 'ए' की ध्वनि से 'ये' तथा 'उ' की ध्वनि से 'वू' का काम निकाल लिया जाता है। इन लिपियों² में मूलतः नौ व्यंजन थे जिनमें पाँच स्वरों—'अ, ई, उ, ए, ओ' की ध्वनियाँ जोड़ कर वर्णमाला बनाई गई थी। परन्तु बाद में पाँच व्यंजन और जोड़ दिये गये जिससे कुल मिलाकर चौदह व्यंजन हो गये। तत्पश्चात् संयुक्त व्यंजनों का प्रयोग भी प्रचलित होने लगा। पाँच व्यंजन तथा संयुक्त व्यंजन 'फ० सं० — २५७' पर दे दिये गये हैं।

१८७२ तक चीनी लिपि, जो जापान में प्रयोग की जाती थी, अपरिवर्तित रही। १९०० में चीनी चित्रों को घटा कर २००० कर दिया गया और १९५० में केवल १८५० रह गये जो आज भी पाठशालाओं में सिखाये जाते हैं। परन्तु समाचार — पत्रों द्वारा तथा जापानियों द्वारा अब भी तीन सहस्र से कम प्रयोग नहीं होते।

चीनी चित्र व जापानी ध्वनियों के मिश्रण से एक बात नई उत्पन्न हुई। एक उच्चारण के अनेकों अर्थ बतने लगे जैसे 'शू' के लगभग ५२ अर्थ हैं इसी प्रकार 'को' के ५५ अर्थ हैं। इस कठिनाता को दूर करने के लिए चीनी लिपि बड़ी उपयोगी सिद्ध हुई। जापानी लिपि में 'यो' उच्चारण के चार चित्र हैं जो चीनी लिपि से लिये गये। यदि चीनी लिपि हटा दी जाए तो जापानी भाषा अधूरी रह जाये। वैसे तो एक शब्द के कई अर्थ अन्य भाषाओं में भी पाये जाते हैं परन्तु इतनी बड़ी संख्या में मिलना कठिन है।

१८८४ में एक 'रोमाजी काइ (रोमन स्क्रिप्ट सोसायटी)'³ स्थापित हुई। इस सोसायटी ने जापानी भाषा का रोमन — करण करना आरम्भ किया। इस कार्य में एक अमरीका के धर्म — प्रचारक जे० सी० हेपबर्न (B — 1815, D — 1811) ने बड़ा परिश्रम किया। हेपबर्न ने १८८६ में एक जापानी — अंग्रेजी शब्द कोष (Japanese English Dictionary) भी प्रकाशित किया। १९३७ में इसको राजकीय मान्यता प्रदान कर दी गई और इस लिपि का नाम 'कोकूतेई — रोमाजी — पद्धति' (Official Roma Script) रखा गया।

जापान की लेखन पद्धति

जापानी लिपि बाएँ से दाएँ की ओर लिखी जाती है। यह भी चीनी लिपि का भाँति पहले तूलिका से लिखी जाती थी परन्तु अब लेखनी (पेन) से भी लिखी जाती है। इसमें स्ट्रोकों का प्रयोग होता था परन्तु अब धसीट रूप में परिवर्तित हो चुकी है। यद्यपि चीन की के — ऐ — शू से निर्मित कताकाना वर्णमाला अधिक सरल थी परन्तु फिर भी कताकाना का प्रयोग समाप्त करके त्साउ — शू या सो — शो चीनी लिपि से निर्मित हीरागाना का प्रयोग ही किया जाता है जो लिखने में कताकाना से अधिक कठिन पतीत होती है।

1. Hoffmann : A Japanese Grammar (Leyden — 1876), P. — 59.
2. कताकाना और हीरागाना लिपियों के अक्षर 'जापानो वार्तालाप' (Texts for April — September 1971 — Radio Japan) पुस्तिका से तथा अन्य चीनी चित्र 'जापानी शब्दकोष' से लिये गये हैं।
3. Romaji Kai Roman Script Society.

हीरागाना लिपि के अक्षर

विवरण	साउशू	हीरा०	अ०	विवरण	साउशू	हीरा०	अ०
आदरबोधक	𑖀	𑖁	अ	आवश्यक	𑖂	𑖃	सू
सर्वनाम	𑖄	𑖅	ई	काल (पीढ़ियों के लिये)	𑖆	𑖇	से
आश्रय	𑖈	𑖉	उ	पहले से	𑖊	𑖋	सो
नदी	𑖌	𑖍	ए	अत्याधिक	𑖎	𑖏	त
मैं	𑖐	𑖑	ओ	विरोधकरना	𑖒	𑖓	ची
अधिक	𑖔	𑖕	क	भूकना	𑖖	𑖗	सू
उत्तम	𑖘	𑖙	की	स्वर्ग ; आकाश	𑖚	𑖛	ते
बहुत दिन पूर्व	𑖜	𑖝	कू	पृथ्वी	𑖞	𑖟	तो
	𑖠	𑖡	के	परन्तु ; कैसे	𑖢	𑖣	न
स्वयं	𑖤	𑖥	को	दास	𑖦	𑖧	नी
प्यास	𑖨	𑖩	स	मद्र स्त्री	𑖪	𑖫	नू
पहुंचना	𑖭	𑖮	शी	बच्चा	𑖯	𑖰	ने

फलक संख्या - २५५

हीरागाना लिपि के अक्षर

विवरण	साउ शू	हीरा०	अ०	विवरण	साउ शू	हीरा०	अ०
जैसे भी	ノ	の	नो	वीर	巾	巾	यू
प्रकाश	照	は	ह	साथ में	5	よ	यो
तुलना करना	比	ひ	ही		良	ら	र
नहीं	不	ふ	फू	लाम	手	り	री
वर्तन	工	へ	हे	बरा लैजाना	ワ	る	रु
	保	ほ	हो	सद्व्यवहार	孔	れ	रे
अन्त	束	く	म	रांगीत का स्वर जान	子	ろ	रो
नदी	川	み	मी	दिन ; सूर्य	平	わ	व
कृषि-फल	米	む	मू	चतुर	考	わ	वी
सबसे ऊँचा	丈	め	मे	नामों में प्रयोगात्मक	高	高	वे
बाल, पर	也	も	मो	साधारण	達	高	वो
भी	也	や	य			ん	अं

हीरागाना व कताकाना के आधुनिक वर्ण

ध्व.	हीरा०	कता०	ध्व.	हीरा०	कता०	ध्व.	हीरा०	कता०	ध्व.	हीरा०	कता०
गी	キ	ギ	बी	ビ	ビ	स्यो	シ	シ	र्य	リ	リ
गू	グ	グ	बू	ブ	ブ	च	チ	チ	र्यो	リ	リ
गे	ゲ	ゲ	वे	ベ	ベ	चू	チュ	チュ	ग्य	ギ	ギ
गो	ゴ	ゴ	बो	ボ	ボ	चो	チョ	チョ	ग्यु	ギ	ギ
ग	ガ	ガ	प	パ	パ	न्य	ニ	ニ	ग्यो	ギ	ギ
ज	ジャ	ジャ	पी	ピ	ピ	न्यु	ニ	ニ	ज्य	ジ	ジ
जी	ジ	ジ	पू	プ	プ	न्यो	ニ	ニ	ज्यु	ジ	ジ
जू	ジュ	ジュ	पे	ペ	ペ	ह्य	ヒ	ヒ	ज्यो	ジ	ジ
जे	ジェ	ジェ	पो	ポ	ポ	ह्यु	ヒ	ヒ	ज्य	ジ	ジ
जो	ジョ	ジョ	क्य	キ	キ	ह्यो	ヒ	ヒ	ज्यु	ジ	ジ
द	ダ	ダ	क्यु	キ	キ	म्य	ミ	ミ	ज्यो	ジ	ジ
दे	デ	デ	क्यो	キ	キ	म्यु	ミ	ミ	ज्य	ジ	ジ
दो	ド	ド	स्य	シ	シ	म्यो	ミ	ミ	ज्यु	ジ	ジ
ब	バ	バ	स्यु	シ	シ	र्य	リ	リ	ज्यो	ジ	ジ

इसमें एक स्ट्रोक से २३ स्ट्रोक तक के शब्द प्रयोग किये जाते थे जिसमें से १ से १० स्ट्रोक तक के शब्द तथा एक शब्द २३ स्ट्रोकों का भी 'फ० सं० - २५८' दिये गये हैं।

चीनी काइशू लिपि से जापानी वर्णों का विकास : इस विकास के विषय में पिछले पृष्ठों पर कुछ प्रकाश डाला गया है। जब चीनी लिपि का सरलीकरण किया गया तब चीनी काइशू लिपि के चित्रात्मक व भावात्मक शब्दों के एक भाग को ले लिया गया और जो उस शब्द की ध्वनि थी — अर्थात् उच्चारण — वही ध्वनि उस भाग को दे दी गई और इस प्रकार अक्षरों का आविष्कार किया गया। तत्पश्चात् उन अक्षरों को और भी सरल किया गया। यह वर्णन कताकाना लिपि के विषय में है जिसका प्रयोग १९४७ से काम कर दिया गया है। 'फ० सं० - २५९' पर (ऊपर की ओर) विकास पद्धति के कुछ उदाहरण निम्नलिखित प्रकार से दिये गये हैं:—

- पहले कॉलम में काइशू लिपि के चित्र हैं।
- दूसरे कॉलम में उसके हिन्दी में अर्थ¹ दिये गये हैं।
- तीसरे कॉलम में प्राचीन काल के अक्षर हैं।
- चौथे कॉलम में आधुनिक काल के अक्षर हैं।
- पाँचवें कॉलम में अक्षर, जो निर्माण किये गये, दिये हैं।

पाँचवें कॉलम के अक्षर उन चित्रों के उच्चारण हैं जो पहले कॉलम में दिये गये हैं।

चीनी शब्द व अर्थ : चीन की काइशू लिपि के तीन चित्र 'फ० सं० - २५९' की बाई ओर दिये गये हैं, जो इस प्रकार हैं:—

- पहले कॉलम में चित्र या शब्द हैं।
- दूसरे कॉलम में ऊपर उनके चीनी भाषा में उच्चारण दिये हैं। उनी के नीचे उन शब्दों के अर्थ भी दिये गये हैं।
- तीसरे कॉलम में जापान की 'कनोन भाषा' में उच्चारण दिये गये हैं जिसके अर्थ वही हैं जो हिन्दी में लिखे हैं — जैसे पहले शब्द का अर्थ 'वृक्ष' है।
- चौथे कॉलम में जापान की 'कुन भाषा' में उच्चारण दिये गये हैं।

जापानी अक्षर - विन्यास (Spelling) : 'फ० सं० - २५९' के दाई ओर अक्षर - विन्यास दिये हैं। इसमें — कताकाना व हीरागाना — दोनों लिपियों के अप्रचलित तथा प्रचलित शब्द — 'ईमासू' (अर्थ 'वहाँ है') तथा 'ईहोन' (अर्थ 'चित्रों की पुस्तक') — दिये गये हैं।

जापानी लिपि के कुछ उदाहरण : 'फ० सं० - २६०' पर दिये गये हैं। उनको पढ़ने से पता लगता है कि जापानी भाषा की व्याकरण हिन्दी भाषा की व्याकरण से कुछ मिलती है। परन्तु लिपि के कुछ वर्ण ऐसे भी हैं जिनको वाक्यों में प्रयोग ता किया जाता है परन्तु उनके कुछ अर्थ नहीं निकलते, जैसे 'नो' 'वा' 'का' इत्यादि। जापान ही ऐसा देश है जिसमें एक वाक्य लिखने के लिए कभी कभी तीन प्रकार की 'चीनी, कताकाना, हीरागाना' लिपियों का प्रयोग किया जाता है। इस फलक पर उदाहरणार्थ वाक्य दिये गये हैं। जापानी इस प्रकार नहीं लिखते। जापान के एक प्रोफेसर ने लेखक को यह प्रतिदर्श लिख कर दिये।

जापानी भाषा के कुछ शब्द व स्ट्रोक

शब्द	अर्थ	हिन्दी में	शब्द	अर्थ	हिन्दी में
一	१ इ	एक	車	७ कुरुमा	पहिया
人	२ हितो	व्यक्ति	門	८ मोन	फाटक
下	३ शिता	नीचे	美	९ बी	सुन्दरता
天	४ तेन	स्वर्ग	馬	१० उमा	घोड़ा
立	५ ज़ेन	काला	言	१३ हेन	आश्चर्य
舟	६ फून	नाव	父		जनक

चीनी काइशू लिपि से जापानी अक्षरों का विकास

चित्र	अर्थ	प्रा०	आ०	अ०	चित्र	अर्थ	प्रा०	आ०	अ०
阿	मानसूचक	𠀎	𠀎	अ	於	में - अन्दर	𠀎	𠀎	ओ
伊	यह	𠀎	𠀎	ई	己	स्वयं	𠀎	𠀎	को
𠀎	छत	𠀎	𠀎	उ	𠀎	दिन	𠀎	𠀎	व
江	नदी	𠀎	𠀎	रे	जापानी अक्षरविन्यास				
चीनी शब्द व अर्थ									
शब्द	चीनी	जापानी			अप्रचलित शब्द	कता काना	हीरा गाना		
𠀎	हिन्दी	कनोना कुन			इमासू	𠀎	𠀎		
𠀎	मू वृक्ष	𠀎	𠀎	की	इहोन	𠀎	𠀎		
𠀎	बेई चावल	𠀎	𠀎	कोमे	प्रचलित शब्द				
𠀎	चिन धातु	𠀎	𠀎	काने	इमासू	𠀎	𠀎		
					इहोन	𠀎	𠀎		
					इमासू = वहां है इहोन = चित्रों की पुस्तक				

जापानी लिपि के मिश्रित प्रतिदर्श

	<p>कांजी (चीनी लिपि) व हीरागाना मिश्रित वाक्य</p> <p>最寄りの郵便局はどこですか。</p> <p>मो पो री नो यूबिंक यो कू वा दोको देसू का ?</p> <p>निकटतम (कांजी) डाकघर (कांजी) कहाँ है ? (हीराग)</p>
	<p>कांजी, कताकाना व हीरागाना मिश्रित वाक्य</p> <p>小刀を手をクリアするにはどう</p> <p>कोगी ते ओ कूरीआ सू रु नी वा दोनो</p> <p>चैक (clear) पास (कता) हौने को कितना</p>
	<p>位時間が掛かりますか。</p> <p>कुरा ई जीकन गा का कारी मा सू का</p> <p>समय लगेगा ?</p>
<p>कांजी व हीरागाना</p> <p>कांजी व कताकाना</p>	<p>वाक्य : हम बम्बई से दिल्ली आए।</p> <p>和達はおバエからテリ-オキ</p> <p>वाताकुशीताची व बम्बई द्वारा देहली कीमाशीता</p> <p>和達はおバエからテリ-オキ</p>

पठनीय सामग्री

- Brinkley, F.* : A History of Japanese People (1915).
- Chamberlain, B. H.* : A Practical Introduction to the Study of Japanese Writing (1905)
- Daniels, O.* : Dictionary of Japanese (Soshō = Ts'ao - shu) Writing Forms (1944)
- Innes, A. R.* : Japanese Reading for Beginners - 5, Vols. (1934).
- Isemonger, N. E.* : The Elements of Japanese Writing (1943).
- Kennedy, G. A.* : Introduction to Kana Orthography (1942)
- Sansom, G. B.* : Japan. A short Cultural History (1928).
- Yamagiva, J. K.* : Introduction to Japanese Writing (1943).



अध्याय : ५

**दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों की
लेखन कला का इतिहास**

दक्षिण – पूर्वी एशियाई देश

ब्रह्मा¹

इतिहास : ईसा की पाँचवीं से सातवीं शताब्दी के प्राचीन अभिलेखों से, जो प्रोम से प्राप्त हुए और जो पियू भाषा तथा कदम्ब लिपि में उत्कीर्ण थे, पता लगता है कि ब्रह्मा में पियू जाति का राज्य था। करेन और मोन जातियों ने उनको आठवीं श० में परास्त कर दिया और वे नानचाउ के शान राज्य की ओर स्थानांतर कर गये। ८३२ में नानचाउ ने करेन की राजधानी को नष्ट कर दिया और नागरिकों को भगा दिया गया। करेन लोग दूसरी जातियों में घुल मिल गये।

उसी काल में मोन और तैलंग आये और उन्होंने श्याम देश का बहुतांश भूभाग अपने अधिकार में कर लिया। उनका मुख्य केन्द्र पागन था।

पागन वंश : ब्रह्मा निवासी तिब्बत के पूर्वी पर्वतों से आये और उन्होंने पागन वंश की नींव डाली। इस वंश का राज्य १०४४ से १२८७ तक रहा। बराकान राज्य की स्थापना की। उनके राजा अनिरुद्ध ने दक्षिण की ओर प्रस्थान किया और थातोन का राज्य अपने अधीन कर लिया। यह मोन संस्कृति का मुख्य केन्द्र था। चीन के मंगोल सम्राट कुबलई खान ने अपने राजदूतों को पागन की राजनिष्ठा प्राप्त करने के लिए पागन दरबार में भेजा परन्तु जूते पहने राजदरबार में आने के अपराध में उनका वध कर दिया गया। इस बात पर मंगोल सैनिकों ने पागन को १२८७ से १३०१ तक घेरे रखा तत्पश्चात् वे वापस चले गये।

शान वंश : इसका राज्य १२८७ से १५३१ तक रहा। इस काल में राज्य विभाजित हो गया। यह लोग श्याम देश के निवासी थे परन्तु भाषा ब्रह्मा की थी। ये बौद्ध – धर्म के अनुयायी थे।

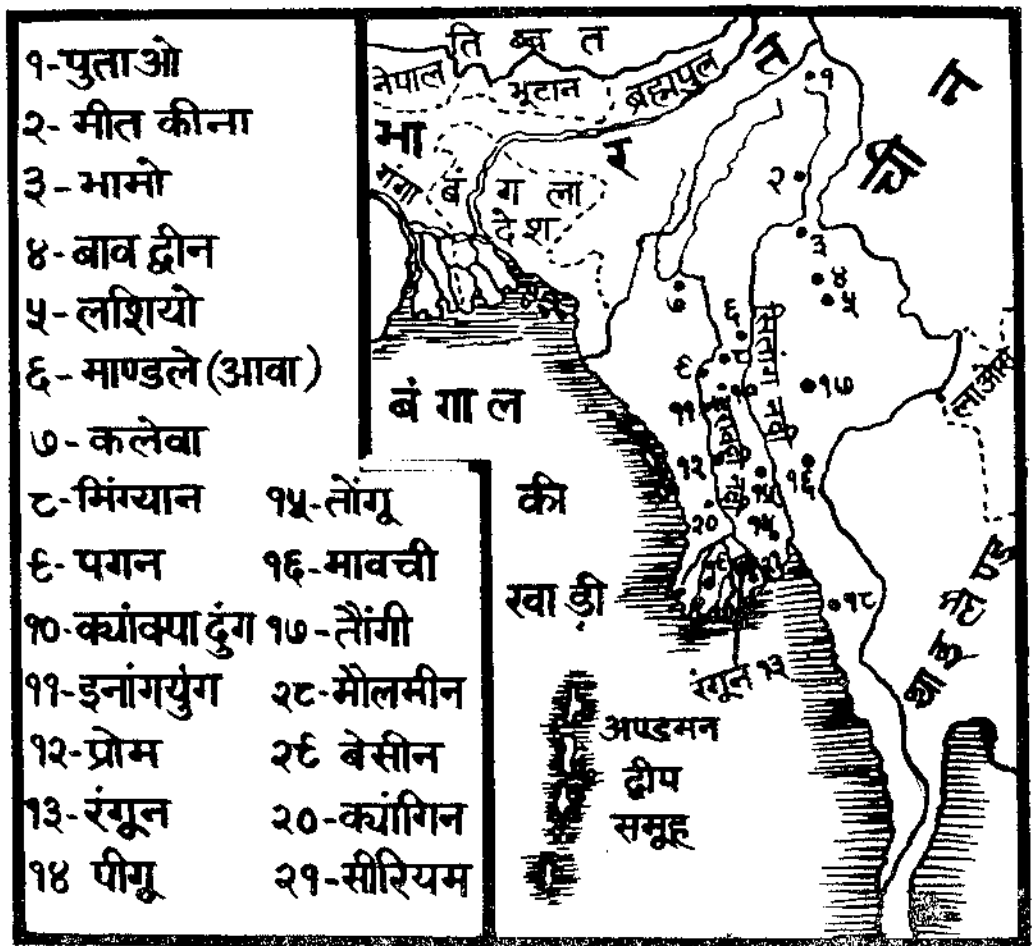
तुंगू वंश : इसका शासन १५३१ से १७५२ तक रहा। इस वंश ने ब्रह्मा निवासियों को पुनः शक्तिशाली बना दिया। इसके एक नरेश वेइनंग ने १५५० से ८१ तक शासन किया और शान एवं तैलंग² का दमन किया। राजा थालून (१६२९ – ४८) ने अपनी राजधानी पीगू को छोड़ कर आवा बनाई।

अलंग पाया वंश : इसने १७५२ से १८८५ तक राज्य किया। अलंग पाया एक ग्राम का मुखिया था जिसने इस वंश की स्थापना की। इसने पीगू पर अपना अधिकार कर लिया। तैलंगों का ऐसा दमन किया कि पुनः शक्तिशाली न बन सके। इसने मणिपुर पर भी आक्रमण किया परन्तु १७६० में उसका स्वर्गवास हो गया। तत्पश्चात् इस वंश के शासकों ने अनेकों युद्ध किये और अपनी सत्ता स्थिर रखी।

1. इस देश का भारतीय नाम 'स्वर्ण भूमि' था। दूसरी शताब्दी से यहाँ हिन्दू राज्य था जो यहाँ की उत्तरी जातियों द्वारा नष्ट कर दिया गया।

2. तैलंग भारत के दक्षिणी भाग तिलंगाना के निवासी थे।

ब्रह्मा



इसी काल में पश्चिम से विदेशियों ने सीरियम और बेसीन में अपनी कोठियाँ बनाईं। परन्तु जब तैलंग से १७५६ में युद्ध हुए तो फ्रांस वालों ने तैलंग की सहायता की इसी कारण अलग पाया ने उनके जलपोत तथा तोपें छीन लीं।

ब्रह्मा निवासियों ने १७८५ में अराकान परास्त किया और आसाम व मणिपुर में १८१९ में अहोम राज्य स्थापित किया। १८२४ - २६ के ब्रह्मा युद्ध के समाप्त होने पर अंग्रेजों के साथ एक सन्धि हुई परन्तु ब्रह्मा ने उसको मान्यता नहीं दी। १८५२ में एक और युद्ध हुआ और अंग्रेजों ने पीगू को अपने अधीन कर लिया। राजा मिण्डान (१८५२ - ७८) ने इन अंग्रेजों का स्वागत किया तथा देश को आधुनिकता प्रदान की। १८७८ में थीबा अपने दर्जनो सौतेले भाई बहनों का वध करने के पश्चात् राजसिंहासन पर बैठा। इसने अंग्रेजों से कुछ धन की मांग की। धन न मिलने पर फ्रांस से मांग की। इस बात को ब्रिटिश सरकार सहन न कर सकी। थीबा ने इस पर अंग्रेजों के लकड़ी काटने वाले मजदूरों तथा ठेकेदारों को बन्दी बना लिया। जब नहीं छोड़ा तो अंग्रेजों ने तीसरा युद्ध १८८५ में आरम्भ कर दिया। ब्रह्मा की पराजय हुई और ब्रिटिश शासन आरम्भ हो गया जो १९४५ तक रहा।

१९३७ तक ब्रह्मा भारत सरकार का एक प्रांत रहा। १९४२ में जापान ने आक्रमण कर दिया और १९४५ में स्वतंत्र हो गया और १९४८ में गणतंत्र राज्य स्थापित हो गया।

लेखन कला

ब्रह्मा में लेखन कला का विकास भारत की लिपियों द्वारा हुआ। बौद्ध धर्म के साथ बौद्ध धर्म की भाषा 'पाली' भी बारहवीं श० के अंत में यहाँ पहुँची। प्राचीनतम पाली अभिलेख एक स्तम्भ पर उत्कीर्ण किया हुआ प्राप्त हुआ, जिसका नाम 'मियाजेंदी स्तम्भ' है। इस पर तीन प्रकार की लिपियाँ दी हुई हैं। इसका काल १०८४ निर्धारित किया गया है।

निम्नलिखित पाँच लिपियाँ अगले फलकों पर दी गई हैं जो इस प्रकार हैं :—

१. चतुष्कोण पाली : जो शिलाओं पर उत्कीर्ण की जाती थी। इसको ब्रह्मा की भाषा में कयोक्तस् कहते हैं (फ० सं० - २६२)।
२. सुलेख पाली : जो पुस्तकों पर सुलेख में लिखी जाती थी (फ० सं० - २६३)।
३. आधुनिक गोलाकार लिपि : जिसको ब्रह्मी भाषा में त्स - लोह (tsa - louh) कहते हैं। इसको आज भी प्रयोग करते हैं (फ० सं० - २६४)।
इसके संयुक्त वर्ण 'फ० सं० - २७३' पर दिये गये हैं तथा एक पाठ 'फ० सं० - २७४' पर दिया गया है।
४. पेगुअन लिपि : इसका विकास ब्रह्मा की प्राचीन लिपि से ही किया गया है परन्तु 'मोन' जाति की भाषा की ध्वनियों के अनुसार इसको संशोधित करके पीगू लिपि बनी। पीगू को तैलंगों की, छोटी श० में राजधानी बनाया गया (फ० सं० - २६५)।
५. चकमा लिपि : खामी - चकमा जाति (Tribe) ने, जो दक्षिण - पूर्वी बंगाल (आ० बंगला देश) में निवास करती थी, इसका आविष्कार लगभग सोलहवीं - सत्रहवीं शताब्दी में किया। इसके वर्ण दीवान कृष्ण चन्द्र द्वारा, जो स्वयं चकमा जाति के थे, प्राप्त किये गये तथा प्रकाशित^१ हुए। उन्होंने इस लिपि के वर्ण तथा पाठ सुरक्षित रखे। इसके वर्ण तथा एक लघु - पाठ 'फ० सं० - २६६' पर दिये गये हैं।

१. Grierson's L. S. I. Vol. V. Part. I. p. - 339.

चतुष्कोण पाली लिपि

अ	इ	उ	ए	आ	क	ख	ग
𑀅	𑀆	𑀇	𑀈	𑀉	𑀊	𑀋	𑀌
घ	ङ	च	छ	ज	झ	व	ट
𑀍	𑀎	𑀏	𑀐	𑀑	𑀒	𑀓	𑀔
ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध
𑀕	𑀖	𑀗	𑀘	𑀙	𑀚	𑀛	𑀜
न	प	फ	ब	भ	म	य	र
𑀝	𑀞	𑀟	𑀠	𑀡	𑀢	𑀣	𑀤
ल	व	श	ष	स	ह	इस लिपि में	३८ वर्ण हैं
𑀥	𑀦	𑀧	𑀨	𑀩	𑀪		

सुलेख पाली लिपि

अ	आ	इ	उ	ए	क	ख	ग
ॐ	𑀅	𑀆	𑀇	𑀈	𑀉	𑀊	𑀋
घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट
𑀌	𑀍	𑀎	𑀏	𑀐	𑀑	𑀒	𑀓
ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध
𑀔	𑀕	𑀖	𑀗	𑀘	𑀙	𑀚	𑀛
न	प	फ	ब	भ	म	य	र
𑀜	𑀝	𑀞	𑀟	𑀠	𑀡	𑀢	𑀣
इस लिपि में	अ	व	स	ह	३६ वर्ण	हैं	
	𑀤	𑀥	𑀦	𑀧			

आधुनिक गोल लिपि एवं अंक

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	
३०	३००	३	३	३	३	३	३०	३	
औ	क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	
३	३	३	३	३	३	३	३०	३	
झ	ञ	ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	
३	३	३	३	३	३	३	३०	३	
द	ध	न	प	फ	ब	भ	म	य	
३	३	३	३	३	३	३	३०	३	
र	ल	व	स	ह	ळ	अंक १ से १० तक			
३	३	३	३	३	३				
१-टै	२-हिने	३-तहु	४-लेह	५-ण	६-छऊ	७-खें	८-शे	९-को	१०-एष
३	३	३	३	३	३	३	३०	३	३

प्राचीन पेंगुअन लिपि

अ	आ	इ	उ	ए	क	ख	ग
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
घ	ङ	च	छ	ज	झ	य	ट
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ठ	ड	ढ	ण	त	द	ध	न
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
प	फ	ब	भ	म	य	र	ल
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
व	श	ष	स	ह	इस लिपि में ३८ वर्ण हैं		थ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ			ॐ

फलक संख्या - २६५

चकमा लिपि

अ	।	औ	ॐ	क	ख	द	ॐ	र	ॐ	की	ॐ
आ	ॐ	क	ॐ	अ	ॐ	ध	ॐ	ल	ॐ	कु	ॐ
इ	ॐ	ख	ॐ	ट	ॐ	न	ॐ	व	ॐ	कू	ॐ
ई	ॐ	ग	ॐ	ठ	ॐ	प	ॐ	श	ॐ	को	ॐ
उ	ॐ	घ	ॐ	ड	ॐ	फ	ॐ	ह	ॐ	कौ	ॐ
ऊ	ॐ	ड	ॐ	ढ	ॐ	ब	ॐ	का	ॐ	कै	ॐ
ए	ॐ	च	ॐ	ण	ॐ	म	ॐ	कि	ॐ	कै	ॐ
ऐ	ॐ	ॐ	ॐ	त	ॐ	म	ॐ	चकमा का प्रतिदर्श			
औ	ॐ	ज	ॐ	थ	ॐ	य	ॐ				

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

एक जना तुन दिब पू एल
अर्थ: एक मनुष्य के दो पुत्र थे।

थाईलैण्ड

इतिहास : ५७५ ई० में श्याम^१ (वर्तमान — थाईलैण्ड) में लाओस की सर्वप्रथम राजधानी भुआंग — लफ्फ (लेबांग या हरी बुन चाई) के नाम से स्थापित की गई । इसी काल में यहाँ कई जातियों का सम्मिश्रण आरम्भ हो गया । जब कुवलई खान ने लाओ — ताई को दक्षिण — पश्चिमी चीन से निष्कासित कर दिया तब श्याम में कई छोटे छोटे राज्य स्थापित हो गये ।

१२८४ के एक सुखोताई अभिलेख से ज्ञात हुआ कि एक नरेश राम कम्हेंग ने अपने राज्य का विस्तार किया और लिंगमोर को अपने राज्य में सम्मिलित कर लिया । सानो के छोटे राज्य पर भी आक्रमण करके श्याम देश का राज्य पूर्णरूप से स्थापित हो गया । १३५० में सानो के ध्वंसावशेषों पर अयोध्या (अयोध्या का अपभ्रंश) राजधानी का निर्माण हुआ ।

श्याम ने कम्पूचिया पर आक्रमण कर दिया और अंकोर को अपने अधिकार में कर लिया और लगभग ९०००० नागरिकों को बन्दी बना कर स्थानान्तर करवा दिया । श्याम और कम्पूचिया के युद्ध लगभग ४०० वर्षों तक चलते रहे और अंत में कम्पूचिया श्याम का एक अंग बन गया । १८२८ तक लुआंग प्रबंग और वीन चांग के मुख्य नगरों पर भी श्याम का पूर्ण अधिकार हो गया ।

पन्ध्रवीं एवं सोलहवीं श० में ब्रह्मा और पीगू निवासियों ने श्याम पर कई आक्रमण किये । १५५५ में श्याम ब्रह्मा देश का एक अंग बन गया । कुछ वर्षों पश्चात् श्याम देश के एक वीर नेता फ्रा — नरेत् ने कम्पूचिया तथा लाओस^२ को अपने अधीन करने के पश्चात् पीगू पर भी आक्रमण कर दिया । १७६७ में ब्रह्मा ने अयोध्या को भी नष्ट कर दिया । अयोध्या के नष्ट होने के पश्चात् सेना के एक जनरल फाया — तख — सिन नेवैकॉक को अपनी राजधानी बनाया परन्तु पागल होने के कारण उसका बध कर दिया गया । तदनन्तर फाया — चक्करी ने एक नये राजवंश को स्थापित किया । उसने तेन्नासरिन पर आक्रमण भी किया ।

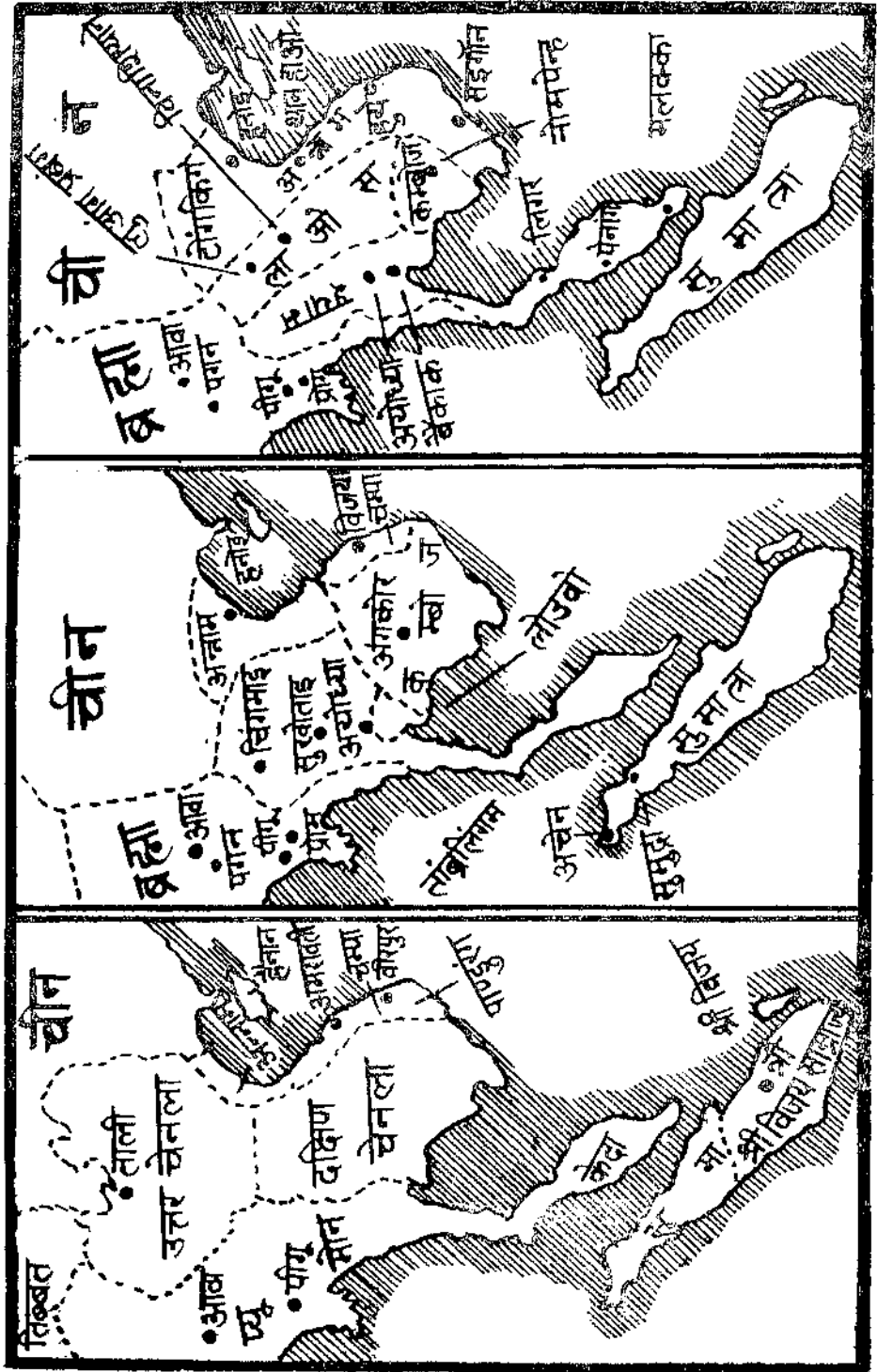
१५११ में पहू पुर्तगाली आये । सत्रहवीं श० में डच्छों ने उनको निकाल कर स्वयं व्यापारिक अधिकार प्राप्त कर लिये । श्याम ने अपने अधीन एक छोटे राज्य केदा के एक द्वीप पुलो पिनांग को १७८६ में एक कोठी बनाने के लिये ईस्ट इण्डिया कम्पनी को दे दिया । १८२४ में डच्छ और ब्रिटिश को सन्धियों के अनुसार व्यापारिक अधिकार दे दिये गये । फ्रांस और ब्रिटेन में भूमि प्राप्त करने के कारण अनेकों झगड़े हुए । १९१७ में श्याम ने प्रथम महायुद्ध में जर्मनी के विरुद्ध भाग लिया ।

श्याम नरेश राम चतुर्थ के मरणोपरांत उसका भाई प्रजाधिपक १९२५ में राजसिंहासनावृद्ध हुआ । २४ जून १९३२ को एक क्रांति हुई तथा एक संवैधानिक राजतंत्र स्थापित किया गया । प्रजाधिपक ने राजत्याग कर दिया । तत्पश्चात् उसका दस वर्षीय भतीजा आनन्द महीडोल नरेश बना दिया गया । दिसम्बर १९४१ में जापानी सेना ने श्याम पर अधिकार कर लिया और २५ जनवरी १९४२ को ब्रिटेन से युद्ध करने की घोषणा कर दी गई । युद्ध के पश्चात् अनेकों देशों के साथ सन्धियां हुईं ।

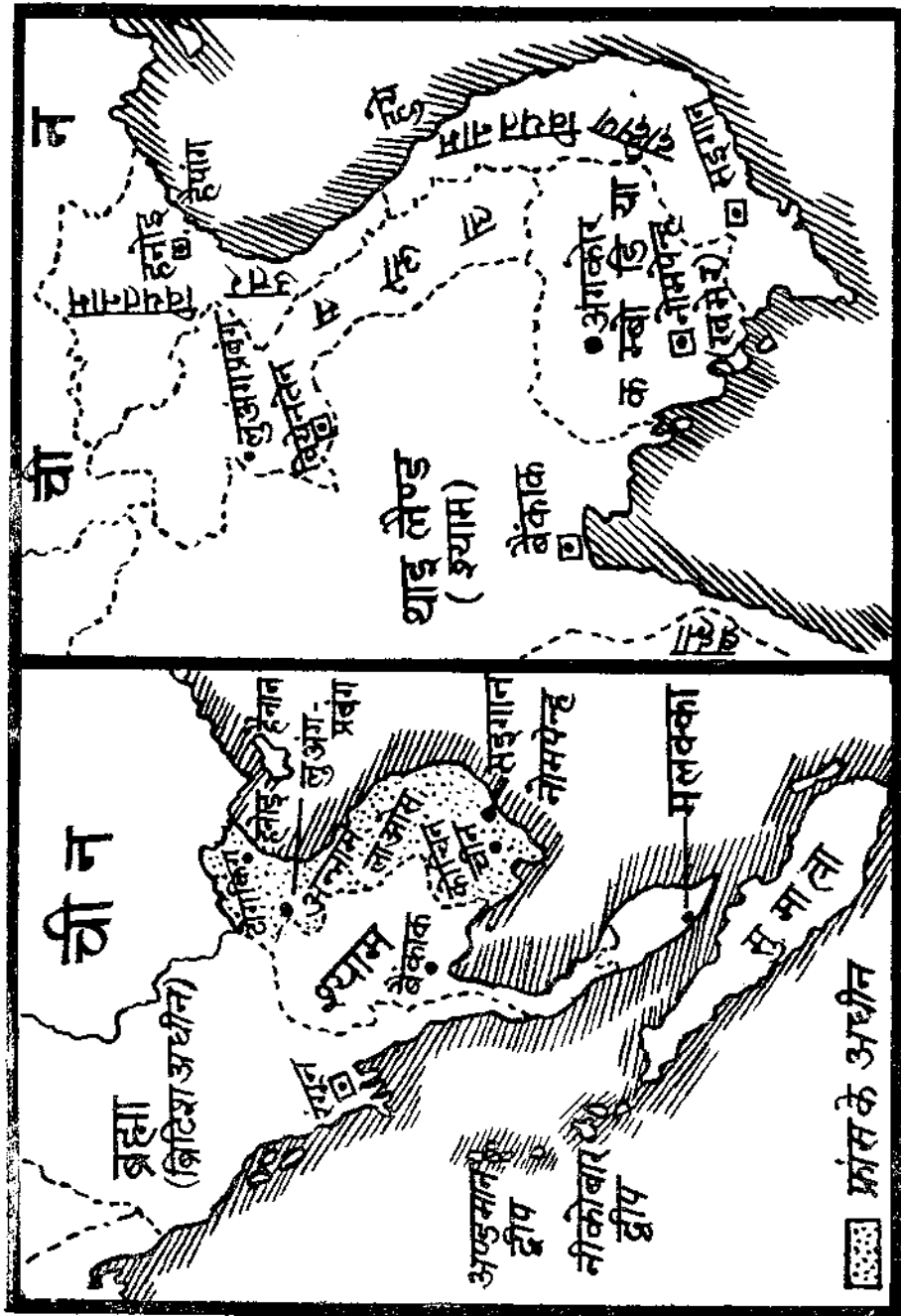
१९४९ में इसका नाम थाईलैण्ड रख दिया गया ।

1. यह देश पहले कम्बोज हिन्दू राज्य के अधीन था परन्तु दक्षिणी चीन से थाई जाति के आने पर (ग्यारह श० में आई) हिन्दू राज्य समाप्त हो गया ।
2. लाओस को फ्रेंच भाषा में 'लाओ' कहते हैं । अन्तिम 'स' फ्रेंच में मूक होता है ।

श्याम व हिन्द-चीन के देश (कम्पूचिया, लाओस, वियेतनाम)



श्याम - कम्बोडिया -- लाओस -- उ० एवं द० वियेतनाम
१६०० ई० में वर्तमान काल में



फलक संख्या - २६८

लेखन कला : श्याम की प्राचीन लिपि भी भारत से ब्रह्मा के द्वारा विकसित हुई। पाली चतुष्कोण लिपि में कुछ परिवर्तन करके प्रयोगात्मक बनाई गई। वे भी कई प्रकार की थीं, जो निम्नलिखित हैं :—

१. **बोरोमात लिपि :** यह प्राचीन लिपि पाली से विकसित हुई (फ० सं० — २६९) ।
२. **पातीमोखा लिपि :** यह हस्तलिखित पुस्तकों के लिये पाली से ही विकसित हुई (फ० सं० — २७०) ।
३. **प्राचीन थाई लिपि :** राजा रुआंग द्वारा दसवीं श० में आविष्कार हुआ (फ० सं० — २७१) ।
४. **आधुनिक लिपि :** यह शीघ्र — लिखित लिपि बोरोमात से सुखोताई नरेश राम खोमहेंग द्वारा तेरहवीं श० में विकसित हुई। इसी नरेश के शासनकाल के एक अभिलेख से ज्ञात हुआ। इसमें स्वर पृथक नहीं हैं उनकी मात्राओं व्यंजनों में लया दी जाती हैं (फ० सं० — २७२, २७३) ।

‘फ० सं० — २७२’ पर अंक भी दिये गये हैं। आधुनिक लिपि में एक ध्वनि के कई अक्षर हैं। इसी फलक के नीचे ब्रह्मा देश की आधुनिक गोल लिपि के कुछ संयुक्त वर्ण भी दिये गये हैं।

श्याम की भाषा में भी चीन की भाषा जैसी ध्वनिबल (Tone) की पद्धति वर्तमान है। इन ध्वनि — बल के विज्ञानों का प्रयोग न करने के कारण किसी विदेशी विद्यार्थी को, जो श्याम की भाषा एवं लिपि सीख रहा हो शुद्ध लिखना या पढ़ना असम्भव प्रतीत होता है।

लाओस

इतिहास : लगभग ७१३ में लाओशियनों (Laotians) ने नानचाउ के राज्य को स्थापित किया। ८७७ में नानचाउ के एक नरेश ने चीन के सम्राट् की एक पुत्री से विवाह किया। खेमर एवं थाई लोगों ने लाओस पर ग्यारहवीं से तेरहवीं श० तक राज्य किया। अब इसकी राजधानी लुआंग — प्रबंग बन गई। १३५६ से १००६ तक साम — सेन — ताई ने राज्य किया और लाओशियनों को उनका राज्य वापस कर दिया तथा निष्कण्टक राज्य किया। लाओशियनों ने कई शताब्दियों तक थाई और ब्रह्मा से युद्ध किया। अठारहवीं श० के अंत से लाओस के एक बड़े भाग पर श्याम का शासन रहा। अन्नाम ने इस देश के दक्षिण — पूर्वी भाग पर अपना शासन स्थिर रखा। १८३० के पश्चात् लाओस सरकार ने भी अन्नाम को कर देना आरम्भ कर दिया।

१८९३ में फ्रांस ने देश के कई नगरों पर अपना अधिकार कर लिया। ए० जे० एम पवी (A. J. M. Pavie) ने, जो श्याम के दरबार में एक मंत्री था श्याम को ४८ घण्टे की अंतिम चेतावनी दी कि वह लाओशियन के शासन क्षेत्र को खाली कर दे और उसकी धन लेकर सहायता करे। तभी से लाओस फ्रांस के संरक्षण में आ गया। जुलाई १९४९ में यह देश पूर्ण स्वतंत्र हो गया।

लेखन कला : लाओस की लिपि का विकास प्राचीन थाई लिपि से हुआ। इसकी ध्वनि पद्धति पर श्याम की ध्वनि पद्धति का प्रभाव पड़ा है। इस प्रभाव से भाषा में सरलता के स्थान पर अधिक जटिलता आ गई है।

‘फ० सं० — २७५’ पर लाओस की लिपि दी गई है।

बोरोमात

अ	आ	इ	उ	ए	क	ख
𑀀	𑀁	𑀂	𑀃	𑀄	𑀅	𑀆
ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ
𑀇	𑀈	𑀉	𑀊	𑀋	𑀌	𑀍
ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ
𑀎	𑀏	𑀐	𑀑	𑀒	𑀓	𑀔
द	ध	न	प	फ	ब	भ
𑀕	𑀖	𑀗	𑀘	𑀙	𑀚	𑀛
म	य	र	ल	व	स	ह
𑀜	𑀝	𑀞	𑀟	𑀠	𑀡	𑀢

पतीमोखा लिपि

अ	इ	उ	ए	आ	क	ख
४	५	६	७	८	९	१०
ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ
११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
अ	ट	ठ	ड	ण	त	थ
१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
द	ध	न	प	फ	ब	भ
२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
म	य	र	ल	व	स	ह
३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८

प्राचीन थाई लिपि

क	ख	ग	घ	ङ	च	
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	
ख	भ	ट	ठ	ड	ढ	
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	
ण	त	थ	द	ध	न	
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	
प	फ	ब	म	म	य	
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	
र	ल	व	श	ष	स	ह
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ

फलक संख्या - २७१

आधुनिक थाई लिपि

कॉ	ก	ข	ฦ	ฦ	น	บ	ม	ส	ล	
ख	ข	ส	ฦ	ठ	ฦ	व	ป	จ	พ	ห
खा	ฦ	श	ฦ	ना	ฦ	प	ป	ร	ร	ฟ
खो	ฦ	ज	ฦ	ड	ฦ	फ	ผ	ล	ล	อ
गों	ง	द	ฦ	त	ฦ	फ	ผ	व	ว	ฮ
च	ฦ	त	ฦ	ढ	ฦ	फ़	ผ	स	ฦ	थ
छ	ฦ	थ	ฦ	ध	ฦ	फ़	ผ	स	ฦ	फ
अं	นंगो	संगो	साम	सी	हां	हो	चेद	पैद	काउ	सिप
क	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
	๑	๒	๓	๔	๕	๖	๗	๘	๙	๑०

आधुनिक थाई लिपि के संयुक्त अक्षर

ना	नि	नी	नइ	नई
๒๑	๒๒	๒๓	๒๔	๒๕
नु	नू	ने	नय	नै
๒๖	๒๗	๒८	๒๯	๓०
नॉ	नो	नो	नों	पुनःचिन्ह
๓१	๓२	๓३	๓४	๓๫

ब्रह्मा की गोल लिपि के संयुक्त अक्षर

ग	गा	गि	गी	गु	गू
ௐ	௑	௒	௓	௔	௕
गे	गै	गो	गौ	गं	गः
௖	ௗ	௘	௙	௚	௛

कुछ लिपियों के पाठ

जावा की दूसरी लिपि का पाठ	
ही-कू दीहरनः प्र म सास्त्र जावा स्त्र जा वा, {यह जावा की व्याकरण है} अर्थ	
आधुनिक थाई लिपि	
आधुनिक ब्रह्मा की गोल लिपि का एक पाठ	
लिप्यंतर =	स इन या त अ दो गो पी इन या क उं ग ग उं ग त इन पे ब अ त एत म व ए ह म उ क उं ग ग उं ग य बा जे अ क आ क अ त त ई न अ लोक पे त आ बा
अर्थ =	लोगों का अच्छा पालन पोषण हो, उनका अच्छा रहन सहन हो, उनको सदैव व्यस्त रखो।

लाओस की लिपि

अ 𑌀	इ 𑌁	उ 𑌂	ए 𑌃	क 𑌄	ख 𑌅
ङ 𑌆	च 𑌇	ट 𑌈	ड 𑌉	न 𑌊	प 𑌋
फ 𑌌	ब 𑌍	म 𑌎	य 𑌏	र 𑌐	ल 𑌑
व 𑌒	श 𑌓	ष इस वर्ण का प्रयोग नहीं है	स 𑌔	ह 𑌕	इस में २२ वर्ण हैं

कम्पूचिया

इतिहास : लगभग ईसा की प्रथम शताब्दी में फ़ौनान^१ राज्य स्थापित था। उसी काल में भारत की संस्कृति का भी पदार्पण हुआ। चानकिंग तथा चम्पा के राज्य इस देश के विरोधी थे। ईसा की तीसरी शताब्दी से भारत के साथ अच्छे सम्बन्ध स्थापित हो गये। चौथी तथा पाँचवीं श० में भारतीयों की एक बड़ी संख्या यहाँ आकर बस गई। फ़ौनान राज्य का अंतिम नरेश कौन्दिया था जिसकी मृत्यु ५१४ में हो गई। रुद्रवर्मन के राजसिंहासनारुढ़ होने में कुछ नियमों को तोड़ा गया जिसके कारण फ़ौनान राज्य विभाजित हो गया।

चेन-ला राज्य मीकांग नदी पर स्थित हौनान राज्य का एक उपराज्य था जो इस विभाजन के कारण स्वतन्त्र हो गया। इस राज्य के नरेश अपने को एक पौराणिक देवी — देवता, मीरा और कम्बू के वंशज मानते थे जिससे कम्बोज एवं कम्बोडिया तथा अब कम्पूचिया के नाम उत्पन्न हुए। यहाँ के निवासी खेमिर जाति के थे। चेन — ला राज्य की एक राजकुमारी ने रुद्रवर्मन के पौत्र भाववर्मन प्रथम से विवाह किया। नवीं श० में खेमिर राज्य शक्तिशाली हो गया।

जयवर्मन द्वितीय ने ८०२ में अंकोर — वंश की नींव डाली और ८५० तक राज्य किया। यकोवर्मन प्रथम ने ८८९ से ९०० तक राज्य किया। इसकी माँ फ़ौनान राज्य की थी। इसने यशोधर पुर की स्थापना की। इसके बाद सूर्यवर्मन ने १०१० से १०५० तक शासन किया।

१०८० में महीधरपुर के एक वंश ने राज्य किया जिसका तीसरा शासक सूर्यवर्मन द्वितीय था जिसने १११३ से ११४६ तक राज्य किया। इसने अन्नाम देश से ११२८ से ११३८ तक युद्ध किया। ११३२ में चीन के साथ भी युद्ध किया तथा ११४५ में चम्पा राज्य को दो वर्ष के लिये अपने अधीन कर लिया। इसी ने अंकोर का निर्माण करवाया। इसके मरणोपरांत इसका चचेरा भाई सिंहासन पर बैठा। अभी तक राजा श्रैव तथा वैष्णव धर्मानुयायी थे परन्तु जब धरनीन्द्र वर्मन राजा बना तब वह बौद्ध — धर्म का अनुयायी हो गया।

११७७ में चम्पा ने अंकोर पर आक्रमण किया परन्तु जयवर्मन सप्तम ने अपनी नौसेना द्वारा उसको परास्त किया। तेरहवीं श० में चीन में मंगोल वंश का शासन आरम्भ हो गया। चीन के दक्षिणी भाग युनान के वहुत से लोग भाग कर कम्पूचिया आ गये। १२८३ में मंगोल सेना ने आक्रमण किया जिसको परास्त होना पड़ा। दो वर्ष बाद जयवर्मन अष्टम् (१२४३ — ९५) ने कुबलई खान को कर देना आरम्भ कर दिया। १२९६ में थाई जाति के लोग इस देश में आकर बसने लगे। १३५१ में लम्पोंग राजा हुआ जिसको अंकोर से १३५७ में निकाल दिया गया। कुछ दिनों के लिए अंकोर थाई लोगों के अधिकार में रहा। सूर्यवर्मन तृतीय (१४०५ — १४५० तक) ने अपनी एक राजधानी का तीलेसप में निर्माण करवाया।

1. चीनी लोग कम्बोज के हिन्दू राज्य को फ़ौनान के नाम से सम्बोधित करते थे। दक्षिण भारत के कौण्डिन्य नामक ब्राह्मण ने यहाँ हिन्दू राज्य की स्थापना लगभग दूसरी शताब्दी में की थी। शनैः शनैः यह राज्य अति शक्तिशाली हो गया। यशोवर्मन प्रथम तथा सूर्यवर्मन द्वितीय यहाँ के अत्यन्त प्रभावशाली तथा वीर राजा थे। पन्द्रहवीं श० में अन्नामियों तथा थाई लोगों के आक्रमणों ने इस राज्य को छिन्न-भिन्न कर दिया, परन्तु इसका पूर्णतया विनाश नहीं हुआ।

इसी प्रकार भारतीय राजाओं ने चम्पा में भी एक उपनिवेश लगभग दूसरी शताब्दी में स्थापित किया। यहाँ के तीन मुख्य नगर ३८० ई० में यहाँ के प्रभावशाली राजा अद्रवर्मा के अधीन थे जिनके नाम भमरावती, विजय तथा पांडुरंग थे। बारहवीं श० में कम्बोज से तथा तेरहवीं में चीन के मंगोल वंश से वीर युद्ध हुए और यह राज्य चीन के तत्पश्चात् अन्नाम के अन्तर्गत हो गया।

पन्द्रहवीं श० में अन्नामियों ने चम्पा पर आक्रमण कर दिया। सत्रहवीं श० में अन्नामियों ने खेमिर को अपने अधीन कर लिया। अठारहवीं श० में कम्पूचिया अन्नाम का एक अंग बन गया। सोलहवीं श० में पुर्तगाली जलपोत यहाँ आये। तत्पश्चात् फ्रांस ने नोरदम प्रथम (१८५९ - १९०४) को अपने संरक्षण में आने के लिए विवश किया और कम्पूचिया फ्रांस के अन्तर्गत हो गया। ८० वर्ष तक यह हिन्द - चीन का एक अंग बन कर फ्रांस के संरक्षण में रहा। इन्हीं दिनों इसकी राजधानी नोम पेन (Pnom Penh) में बनाई गई। १९०४ से १९४९ तक फ्रांस और श्याम का युद्ध चलता रहा। दूसरे महायुद्ध में जापान का अधिकार हो गया। जो १९४५ में जापान के आत्मसमर्पण पर समाप्त हो गया। ८ नवम्बर १९४९ को देश पूर्ण रूप से स्वतन्त्र हो गया।

लेखन कला : कम्पूचिया की लिपि भारत की लिपि से श्याम देश की लिपि के द्वारा विकसित हुई। यहाँ दो प्रकार की लिपियों ने जन्म लिया, जो निम्नलिखित हैं :—

१. मूल अक्षर^१ : उसको खेमिर (Khmer) लिपि के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है। इसका विकास आठवीं श० में हुआ (फ० सं० - २७६)।
२. संशोधित लिपि : उपर्युक्त लिपि में संशोधन करके इस लिपि का अठारहवीं श० में विकास हुआ। शीघ्रता से लिखने के कारण इसका आविष्कार किया गया (फ० सं० - २७७)।
३. आधुनिक लिपि : यह लिपि आजकल प्रचलित है।^२ नीचे अंक भी दिये गये हैं (फ० सं० - २७८)। आधुनिक लिपि की ध्वनियाँ कुछ अनोखी लगती हैं। चीनी एवं भारतीय ध्वनियों का सम्मिश्रण प्रतीत होता है। उसमें स्वर अलग नहीं दिये हैं केवल एक अक्षर 'अ' है उसी में स्वरों की मात्रायें अन्य व्यंजनों की तरह लगा कर उच्चारण कर लिया जाता है।

फ़िलिपाइन्स

इतिहास : तीसरी से पन्द्रहवीं श० तक मलाया से आये हिन्दू राजाओं का यहाँ राज्य था। तत्पश्चात् चीन के अधीन रहा।

इस द्वीपसमूह का नाम स्पेन के शासक फ़िलिप द्वितीय के नाम पर रखा गया। इसमें लगभग ७०९० द्वीप हैं।

१९ मार्च १९२१ को यहाँ सबसे पहला योरोप निवासी फ़रदीनन्द मैगेलन (Ferdinand Magellan) पहुँचा। ईसा की दूसरी शताब्दी में सबसे पहले यहाँ हिन्दू संस्कृत मलाया प्रायद्वीप एवं जावा से आई। एक स्पेन निवासी लेगाज़्पी (Legazpi) यहाँ अप्रैल १५६४ में पहुँचा परन्तु उसको पुर्तगालियों से झगड़ा करना पड़ा। १५७१ में लेगाज़्पी ने मनीला को प्रशासकीय केन्द्र बनाया। १६०० तक और कई द्वीप स्पेन के अधिकार में आ गये। इन द्वीपों का प्रशासक लेगाज़्पी का पोत्र जुआन डी सलकेडो (Juan de Salcedo) हो गया।

१५७४ में चीन ने आक्रमण कर दिया। परन्तु उसको विफल कर दिया गया। १५७१ में मुसलमान मुख्य विरोधी के रूप में यहाँ आये परन्तु कुछ झगड़ों के पश्चात् उन्होंने आत्मसमर्पण कर दिया।

१. इसकी वर्णमाला फ़ौलमान (Faulmann) ने अपनी पुस्तक 'Das Buch der. Schrift (1880), p. - 152 - 3' में दी है।
२. इसकी वर्णमाला स्वर्ण लेखक ने दिल्ली में कम्पूचिया के दूतावास जाकर तैयार की।

मूल अक्षर लिपि

अ	आ	इ	उ	ए	क	ख	ग
𑀓	𑀕	𑀖	𑀗	𑀘	𑀙	𑀚	𑀛
घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट
𑀜	𑀝	𑀞	𑀟	𑀠	𑀡	𑀢	𑀣
ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध
𑀤	𑀥	𑀦	𑀧	𑀨	𑀩	𑀪	𑀫
न	प	फ	ब	भ	म	य	र
𑀬	𑀭	𑀮	𑀯	𑀰	𑀱	𑀲	𑀳
ल	व	श	ष	स	ह	इस लिपि में ३८ वर्ण हैं	
𑀴	𑀵	𑀶	𑀷	𑀸	𑀹		

संशोधित शीघ्र लिपि

अ	आ	इ	उ	ए	क	ख	ग
४४	५५	६६	७७	८८	९९	१०	११
घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट
१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९
ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध
२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७
न	प	फ	ब	भ	म	य	र
२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
इस लिपि में	ल	व	श	ष	स	ह	३६ वर्ण
३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३

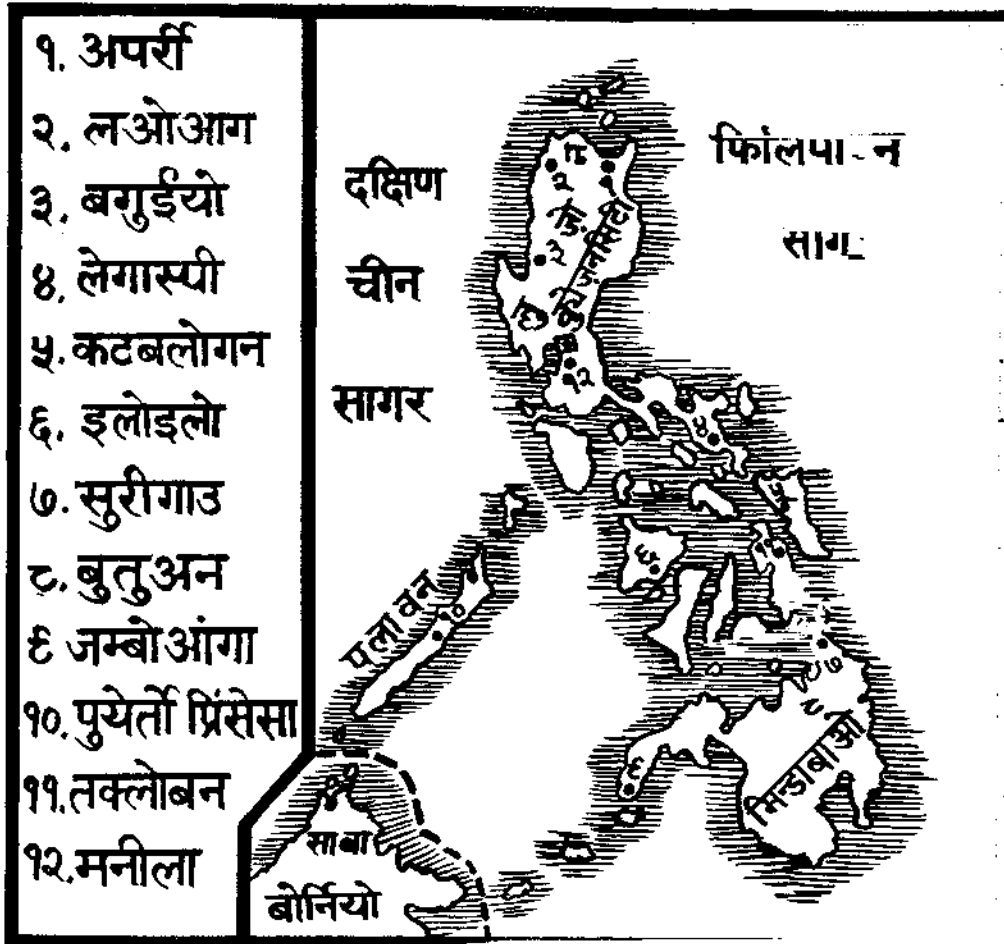
फलक संख्या - २७७

आधुनिक लिपि

क	ग	भ	व	थ	ड	रु	ए	अ	ॐ	ले	ॐ
ख	घ	अ	ग	त	ड	रु	य	आ	ॐ	अई	ॐ
ग	घ	ड	व	थ	ड	रु	ॐ	इय	ॐ	आउ	ॐ
ख	य	थ	व	न	मि	अ	व	रु	ॐ	अऊ	ॐ
म	घ	व	ॐ	व	ॐ	व	ॐ	ओ	ॐ	अम	ॐ
व	ॐ	थ	व	म	ॐ	स	ॐ	औ	ॐ	एम	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ज	ॐ	त	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	अंक	ॐ

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

फिलिपाइन द्वीप-समूह



स्पेन में मुसलमानों को मूर कहते थे परन्तु यहाँ उनको मोरो सम्बोधित किया गया। १५७९ में फ्रांसिस्को डी साण्डे (Fransisco de Sande) को जो यहाँ का गवर्नर (१५७५ से १५८० तक) था फिर एक युद्ध इन मोरों से करना पड़ा और उनकी पुनः पराजय हुई। तत्पश्चात् मोरो लोग जलपोतों को लूटने का कार्य करने लगे। १८५० में मोरों के मुख्य गढ़ को, जो उन्होंने टोन्किज द्वीप पर बनाया था, नष्ट कर दिया गया और जोलो के नगर पर अधिकार कर लिया गया।

१५९६ में डच आये। १७६२ में अंग्रेज आये और उन्होंने मर्नाला पर अधिकार कर लिया परन्तु १७६३ में पेरिस की सन्धि द्वारा पुनः स्पेन को वापस कर दिया। १८९८ में क्यूबा में कुछ झगड़े होने के कारण तथा क्यूबा की राजधानी तथा बन्दरगाह में खड़े अमरीका की नौ सेना के युद्धपोत को आग लगा देने के कारण स्पेन - अमरीका का युद्ध आरम्भ हो गया। स्पेन परास्त हुआ तथा पेरिस में एक सन्धि - पत्र पर हस्ताक्षर होने के पश्चात् १८९९ में स्पेन ने क्यूबा तथा फिलिपाइन द्वीप समूह अमरीका के अधिकार में दे दिया।

१८४९ में यह जापान के अधिकार में आ गया। १९४५ में जापान की पराजय तथा समर्पण के कारण यह द्वीपसमूह पुनः अमरीका के अधीन हो गया।

४ जुलाई १९४६ को इसको पूर्ण स्वतन्त्रता प्रदान कर दी गई।

लिपि : यहाँ की जातियों में से एक जाति का नाम तगोला था। ये जातियाँ हिन्दू राजाओं के साथ मलाया से आई थीं और यहाँ आकर बस गईं। यहाँ की प्राचीन लिपि तगाला थी। इसके विषय में अधिक ज्ञात नहीं हो सका। इसका स्थान रोमन लिपि ने ले लिया। (फ० सं० - २८०)।

हिन्देशिया

इतिहास : ईसा की आरम्भिक शताब्दियों में यहाँ हिन्दू संस्कृति विद्यमान थी। भारत से पुरोहित तथा व्यापारी वर्गों ने अपनी विचारधारा का यहाँ प्रचार किया।

पन्द्रहवीं श० में यहाँ मुसलमान आये और सोलहवीं श० में योरोप निवासी आये परन्तु नीदरलैण्ड के डच लोगों ने सबको बाहर निकाल कर अपना प्रभुत्व जमा लिया।

१९२२ में यहाँ के लगभग ३००० छोटे बड़े द्वीप नीदरलैण्ड की छत्रछाया में आगये और ईस्ट इण्डीज के नाम से ज्ञात हो गये। १९४२ तक यह नीदरलैण्ड सरकार के उपनिवेश के रूप में रहा। १९४२ - ४५ के बीच सरकार के विरुद्ध एक क्रांति हुई जिसमें देश के नेताओं ने बड़े त्याग किये और देश को १७ अगस्त १९४५ में गणतन्त्र राज्य घोषित कर दिया। डच ने इसको नहीं माना और चार वर्ष तक युद्ध चलता रहा तत्पश्चात् यह देश २७ दिसम्बर १९४९ को पूर्ण स्वतन्त्र हो गया।

लेखन कला : इसका इतिहास इस देश के कुछ मुख्य द्वीपों में आरम्भ हुआ जिसके विषय में आगे विस्तार से दिया गया है।

जावा

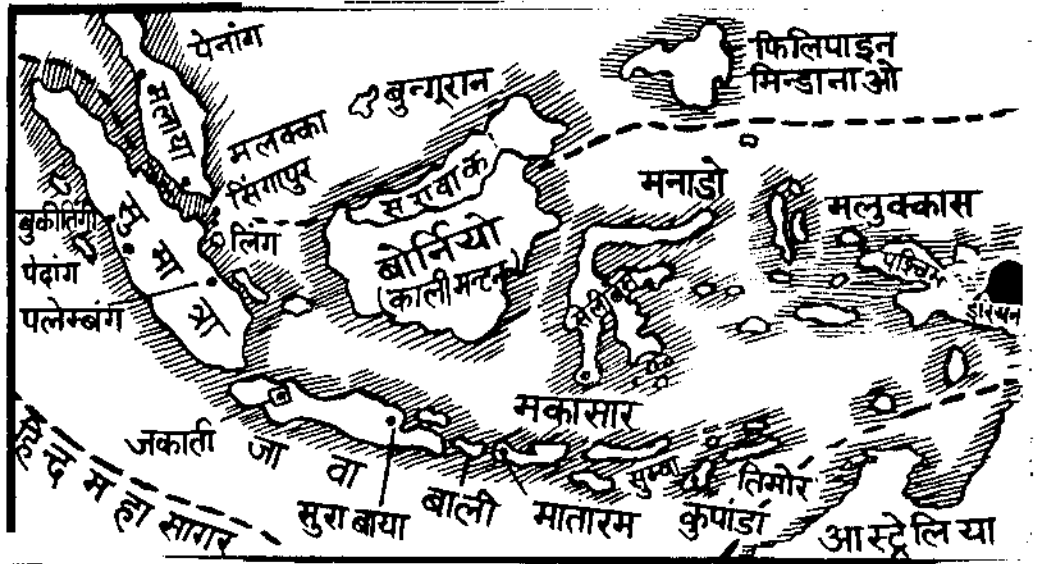
इतिहास : योरोप निवासियों के आने के पूर्व यहाँ सर्वप्रथम भारत के हिन्दू ईसा की प्रथम शताब्दी में पहुँचे। पहले वे व्यापारी होकर आये तत्पश्चात् धर्म - प्रचारक बन कर आये। भारतीयों ने यहाँ के मूल -

तगाला लिपि

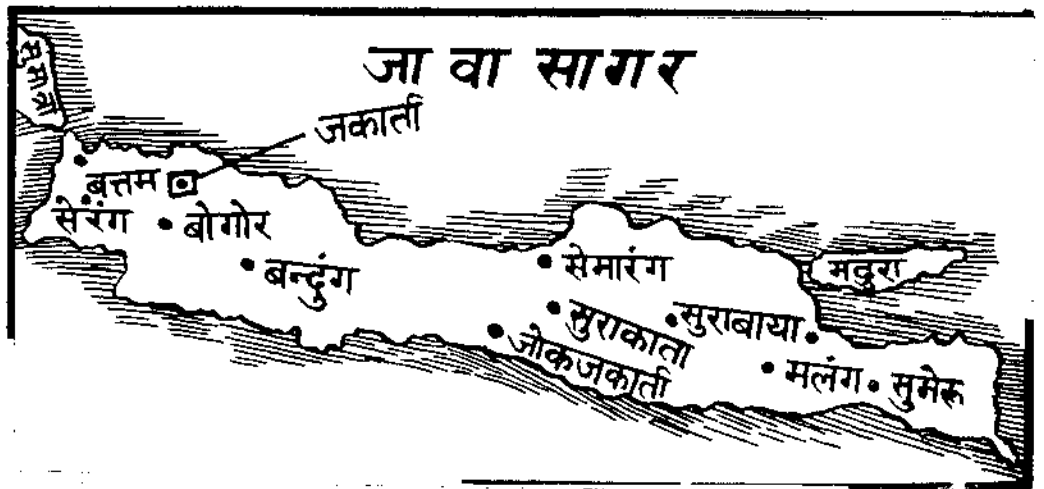
अ ॐ	इ ॐ	उ ॐ	क ॐ	ग ॐ
ङ ॐ	त ॐ	द ॐ	न ॐ	प ॐ
ब ॐ	म ॐ	य ॐ	ल ॐ	व ॐ
इस लिपि में	स ॐ	केवल	ह ॐ	१७ वर्ण में

हिन्देशिया द्वीप समूह

(लगभग ३००० द्वीप)



हिन्देशिया का जावा द्वीप



निवासियों से वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किये और अपनी संस्कृति का प्रसार किया परन्तु उन्होंने राज्य नहीं किया। उन्होंने अपना एक सांस्कृतिक तथा राजनैतिक केन्द्र ९२८ में मध्य जावा के मातारम नगर में स्थापित किया।

अनेकों राज्य स्थापित हुए और समाप्त हुए परन्तु उनमें सबसे अच्छा तथा प्रसिद्ध राज्य मजापाहित राज्य था जो १२९३ से १५२० तक चलता रहा। अन्य जातियाँ सामुद्रिक लूटमार करती थीं। वैसे जावा अन्य द्वीपों की तुलना में सबसे अधिक सम्य था। मजापाहित राज्य समाप्त होने के पश्चात् जावा पुनः कई राज्यों में विभाजित हो गया। तदनन्तर इस्लाम आया और यहाँ के निवासी मुसलमान हो गये।

१५११ में पुर्तगली आये। १५९६ में डच व्यापारी आये १६०२ में डच ईस्ट इण्डिया कम्पनी का निर्माण हुआ। १६१० में डच का पहला गवर्नर जनरल नियुक्त हुआ जिसको अजाकार्ता के निकट शासकीय मुख्यालय निर्माण करने की अनुमति मिल गई। १६१९ में अजाकार्ता नगर को भी ले लिया गया जो आज अजाकार्ता के नाम से सम्बोधित किया जाता है।

१७४५ में पूर्ण जावा पर डच का अधिकार मान लिया गया। मातारम का राज्य १७५५ में तथा बन्ताम का राज्य १८०८ में डच के अधीन हो गया। १८७० में जनता को व्यापार करने का अधिकार दे दिया गया और १८७२ में दण्ड - संहिता (Penal Code) का प्रयोग आरम्भ हो गया। १९२२ में सब द्वीपों को मिला कर एक देश का रूप दे दिया गया जो १९४२ तक नीदरलैण्ड (हालैण्ड) राज्य का एक अंग या उपनिवेश बना रहा। १९४२ से १९४५ तक दूसरे महायुद्ध में जापानियों के अधिकार में रहा।

१७ अगस्त १९४५ को यहाँ गणतन्त्र राज्य स्थापित कर लिया गया परन्तु नीदरलैण्ड की सरकार से चार वर्ष युद्ध चलता रहा। अन्त में २७ दिसम्बर १९४९ को यह पूर्ण स्वतन्त्र हो गया।

लिपि : यहाँ की प्राचीन लिपि का जन्म ईसा की दूसरी शताब्दी में हिन्दुओं के द्वारा हुआ। इसका नाम 'कवि' लिपि था। इसका सबसे प्राचीन अभिलेख मध्य जावा के दू प्रांत के चंगल नगर से प्राप्त हुआ है जिसमें ७३२ ई० का वर्ष दिया गया है। इस लिपि में संस्कृत शब्दों का प्रयोग अधिक था। सम्भवतः महाकाव्यों के कारण इसका नाम 'कवि' पड़ गया।

इससे दूसरी लिपि का, जो यहाँ लगभग ३० वर्ष पहले तक प्रयोग होती रही, उद्भव हुआ जिसको आधुनिक लिपि कह सकते हैं परन्तु अब यहाँ रोमन अक्षरों का प्रयोग होता है।

यह दोनों लिपियाँ 'फ० सं० - २८२ व २८३' पर दी गई हैं।

दूसरी लिपि का एक वाक्य का प्रतिदर्श "यह जावा की व्याकरण है" 'फ० सं० - २७४' पर दिया गया है।

सुमात्रा

इतिहास : इसका प्राचीन नाम अदलस था। पेडांग के प्राचीन शिलालेखों से ज्ञात हुआ कि इसका नाम 'प्रथम जावा' था। मार्कोपोलो ने इसको जावा माइनर के नाम से सम्बोधित किया था।¹ इस द्वीप के विषय में योरोप निवासियों को एक इटली के यात्री लुदोविको दी वरथेमा (Ludovico di Varthema) के द्वारा

1. यहाँ श्री विजय का साम्राज्य लगभग दूसरी से पन्द्रहवीं शताब्दी तक रहा जो मुसलमानों के आगमन द्वारा समाप्त हो गया।

कवि लिपि की वर्णमाला

अ	इ	उ	क	ख	ग	घ	ङ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
च	छ	ज	झ	ञ	ट	ठ	ड
८	८	८	८	८	८	८	८
ढ	ण	त	थ	द	ध	न	प
८ ८ एक है	८	८	८	८	८	८	८
फ	ब	भ	म	य	र	ल	व
८	८	८	८	८	८	८	८
इस लिपि	में	श	ष	स	ह	३६	वर्ण ३६
८	८	८	८	८	८	८	८

जावा की दूसरी लिपि

अ ꦲ	इ ꦲꦶ	उ ꦲꦸ	ए ꦲꦺ	ओ ꦲꦺꦴ
क ꦏꦲ	ग ꦒꦲ	ङ ꦚꦲ	च ꦚꦺ	ज ꦚꦺꦴ
झ ꦞꦲ	ट ꦞꦶ	ड ꦞꦸ	त ꦞꦺ	द ꦞꦺꦴ
न ꦤꦲ	प ꦥꦲ	ब ꦨꦲ	म ꦩꦲ	य ꦩꦺꦴ
र ꦫꦲ	ल ꦭꦲ	व ꦮꦲ	स ꦱꦲ	ह ꦱꦺꦴ

फलक संख्या - २८३

बटका लिपि

अ 𑂀	इ 𑂁	उ 𑂂	ए 𑂃	ओ 𑂄
क 𑂅	ग 𑂆	ङ 𑂇	च 𑂈	ज 𑂉
झ 𑂊	ट 𑂋	ड 𑂌	भ 𑂍	प 𑂎
ब 𑂏	म 𑂐	य 𑂑	र 𑂒	ल 𑂓
इस लिपि में	व 𑂔	स 𑂕	ह 𑂖	२३ वर्ण हैं

रेदजांग एवं लेम्पोंग लिपियां

ध्वनि	रेदजांग	लेम्पोंग	ध्वनि	रेदजांग	लेम्पोंग
अ	ᱠ	ᱡ	प	✓	ᱣ
क	ᱢ	ᱣ	ब	/	ᱤ
ग	ᱥ	ᱦ	म	ᱨ	ᱩ
ङ	ᱧ	ᱨ	य	ᱪ	ᱫ
च	ᱬ	ᱭ	र	ᱮ	ᱯ
ज	ᱰ	ᱱ	ल	ᱲ	ᱳ
झ	ᱵ	ᱶ	व	ᱸ	ᱹ
ञ	ᱺ	ᱻ	स	ᱼ	
क्ष	ᱽ	᱾	ह	✓	᱿
श	᱿	ᱺ		१६ वर्ण ᱻ	१६ वर्ण ᱾

बुगिनी-मकासार लिपि

अ 	क 	ग 	ङ 	च
ज 	झ 	त 	द 	न
प 	ब 	म 	य 	र
ल 	व 	स 	ह 	इस में १६ वर्ण हैं

१५०५ में ज्ञात हुआ जिसने इसका नाम सुमात्रा रखा । १५०९ में पुर्तगालियों ने एक कोठी निर्माण करवायी परन्तु उसी शताब्दी के अन्त में डच द्वारा निष्कासित कर दिये गये । तीन शताब्दियों तक डच अपनी श्रेष्ठता स्थापित करने के लिए लड़ते रहे परन्तु अजित (अजितेह Ajteh) पर अधिकार न कर सके ।

१६०२ में अंग्रेज आधिन आये और उनके नेता सर जॉन लैन्कास्टर (Sir John Lancaster) का भव्य स्वागत किया गया । १६६४ में इन्द्रपुर पर तथा १६६६ में पेडांग पर डच ने अपना अधिकार जमा लिया । ब्रिटिश ने बेंकुलेन पर १६८५ में अधिकार जमा लिया । डच और ब्रिटिश में निरन्तर झगड़े होते रहे और अपनी श्रेष्ठता जमाते रहे । कुछ दिनों पश्चात् दोनों देशों में सन्धि हो गई । ब्रिटिश ने सुमात्रा की भूमि छोड़ दी और मलेक्का को डच ने छोड़ दिया । इस प्रकार लूट के माल के विभाजन की तरह दूसरे देशों की भूमि विभाजित हो जाती थी ।

लेखन कला : यहाँ तीन प्रकार की लिपियाँ प्रचलित थीं । दक्षिण पूर्व सुमात्रा में दो — एक रेडजांग तथा दूसरी लम्पोंग-लिपियाँ थीं तथा मध्य सुमात्रा में बटक लिपि का प्रयोग किया जाता था । बटक सुमात्रा के मूल निवासी थे । बाद में इन्होंने ईसाई धर्म अपना लिया । इन्हीं के नाम पर लिपिका नाम पड़ा । यह तीनों लिपियाँ 'फ० सं० २८४, २८५' पर क्रमानुसार दी गई हैं ।

सिलेबीस

इतिहास : इसका स्थानीय नाम सुलाबेसी था । इस द्वीप में छः विभिन्न जातियाँ निवास करती थीं जिनके नाम थे तोमाला, तोराजा, बुगीनेसी, मकासार, मिन्हायसी और गोरन्तलीस ।

१५१२ में पुर्तगालियों ने इसको ढूँढ निकाला । मकासार जाति का सुल्तान, जो दक्षिण सिलेबीस में गोवा राज्य का शासक था, पुर्तगालियों तथा अंग्रेजों से प्रसन्न था । इससे डच क्रोधित हुए और सुल्तान को सतरहवीं श० में (पुर्तगालियों की सहायता मिलने पर भी) परास्त कर दिया और १६६७ में गोवा राज्य को समाप्त करके १९११ में डच के उपनिवेशों में सम्मिलित कर लिया गया । अब यहाँ के निवासी मुसलमान हैं और यह हिन्देशिया का एक प्रांत बन गया ।

लेखन कला : यहाँ की लिपि का नाम बुगिनी मकासार है । इसका विकास, एच० कर्न (H. Kern-१८८२) के अनुसार, जावा द्वीप की कवि लिपि से हुआ जो 'फ० सं० २८६' पर दी गई है ।

पठनीय सामग्री

- Boudet, P. and* : *Bibliographic de l' Indo - Chine Francaise* (1933).
Bourgeois, R.
Bowring, Sir John : *The Kingdom and People of Siam - 2 Vols.* (1857.)
Bradley, C. B. : *The Proximate Source of the Siamese Alphabet* (*Journal of Siam Society* - 1913).
Chhabra, B. C. : *Expansion of Indo - Aryan Culture During Pallava Rule As Evidenced by Inscriptions* (*Journal of the Rule Asiatic Society, Bengal* - 1935).

- Christia, j. L.* : Modern Burma (1942).
Coedes, G. : Inscriptions du cambodge (1937).
Crosby, J. : Siam (1945).
Dirtinger, David : The Alphabet - A Key to the History of Mankind.
Duroiselle, Ch. : Mon Inscriptions (Epigraphica Birmanica 3. Vols - 1928).
Faulmann : Das Buch der Schrift (1880).
Forbes, W. C. : The Phillipine Islands (1929).
Frankfurter, O. : Elements of Siamese Grammar (1900).
Gardner, F. : Phillipine Indie Studies (1943).
Grterson, G. A. : Linguistic Survey of India - Vol. II (1904).
Harvey, G. E. : History of Burma upto 1824 (1925).
Humphrey, H. N. : Origin and Progress of the Art of Writing.
Laubach, F. C. : The People of the Phillipines (1925).
Lendoyro, C. : Tagalog Language (1909).
Leob, E. M. : Sumatra - Its History and People (1935).
Marsden, W. : History of Sumatra (1911).
Martin, W. J. : Origin of Writing.
Mc Farland, G. B. : Thai - English Dictionary (1941).
Nyeln, Tun : Inscriptions Pagan, Pinya and Ava. (1899)
Raffles, Sir S. : History of Java (1930).
Sahni, Swarn, : Book of Nations.
Strange, E. F. : Alphabets (1928).
Thompson, V. E. : Thailand - The New Siam (1941).
Tin, Pe Maung : Inscriptions of Burma (1939).
and Luce, J.
Wallace, A. R. : The Malay Archipelago (1890).
William, A. M. : A History of Writing (1924)



अध्याय : ६

**अफ्रीका महाद्वीप के देशों की
लेखन कला का इतिहास**

मिस्र

इतिहास

मिस्र का प्राचीन इतिहास जानने के लिए तीन साधन उपलब्ध हुए हैं। पहले साधन में स्मारक चिह्न (Monuments), मन्दिर, स्तम्भाधियाँ जिनमें विशाल पिरामिड भी सम्मिलित हैं तथा संस्मरणात्मक अभिलेख प्राप्त हुए। दूसरे साधन में उत्खनित पुरातात्विक सामग्री जो पुरातत्त्ववेत्ताओं के प्रयत्नों द्वारा प्राप्त हुई है। तीसरे साधन में प्राचीन इतिहासकारों के विवरण मिले। उन तीन इतिहासकारों के नाम उल्लेखनीय हैं, जो निम्नलिखित हैं :—

१. हेरोडोटस (Herodotus), जिसका जन्म हेलीकारनेसस नगर (एशिया माइनर के पश्चिमी किनारे पर स्थित था) में हुआ था, ४५० ई० पू० में मिस्र आया था। उसने विचरण करके मिस्र का वर्णन लिखा है।

२. डायडोरस सोकुलस (Diodorus Soculus) जिसने मिस्र का वर्णन किया है।

३. मनेथो (Manetho) की वंशावली, जिसमें उसने मिस्र के शासकों को ३१ वंशों में विभाजित किया है। मनेथो की वंश परम्परा को आज सभी प्राचीन इतिहासकारों ने मान्यता प्रदान की है तथा मिस्र के इतिहास में सदैव उसीको आधार मानकर वृत्तांत लिपिबद्ध किये गये। ई० पू० की तीसरी शताब्दी में मनेथो मिस्र धर्म का एक पुजारी था और उसने, टॉलेमी द्वितीय फिलेडीफस (Ptolemy II Philadephus), जो २८३ से २४६ ई० पू० तक मिस्र का शासक था, की आज्ञानुसार ग्रीक भाषा में मिस्र का इतिहास लिखा।

ई० पू० की लगभग नवीं सहस्राब्दी में जब कि नील नदी के किनारों पर कीचड़ व दलदल रहा करती थी, पश्चिमी एशिया तथा अफ्रीका के निवासी इसके दोनों किनारों पर आकर बसने लगे। वह लोग किस जाति से सम्बन्धित थे तथा उनके रहन — सहन के क्या ढंग थे, निश्चय रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। अफ्रीका तथा पश्चिमी एशिया के रक्त मिलन से मिस्र देश की एक नई जाति का जन्म हुआ। शर्नः शर्नः यह लोग उन्नति की ओर अग्रसर होने लगे। खेती तथा व्यापार करने लगे। छोटे छोटे नगरों का जन्म होने लगा जो नगर राज्यों में परिवर्तित होने लगे। इस ७५० मील लम्बे देश को यातायात के साधनों की अनुपस्थिति में एक सूत्र में बाँधना असंभव था। इस कारण उत्तरी मिस्र के निवासियों ने अपना राजनैतिक केन्द्र बेहदेत (Behdet), आधुनिक दमनहुर (Damanhur) को बनाया तथा दक्षिणी मिस्र निवासियों ने अपना मुख्य नगर आधुनिक लुक्सर (Luxor) के समीप नगादा (Nagada) को बनाया। इन दो राज्यों को एक उत्तरी मिस्र के शासक ने ई० पू० ४१४० में एक सूत्र में बाँधने का प्रयत्न किया परन्तु कुछ दिनों पश्चात् यह देश फिर विभाजित हो गया।

इस बार उत्तरी मिस्र की राजधानी बूटो (Buto), नील नदी के डेल्टा में स्थापित हुई तथा पे (Pe) में राजमहल का निर्माण हुआ। दक्षिणी मिस्र की राजधानी नेखेब (Nekheb) आधुनिक एल काब (El Kab) में स्थापित हुई तथा नील के पश्चिमी किनारे पर नेखेन (Nekhen) में राजमहल का निर्माण हुआ। उत्तरी भाग के शासक लाल मुकुट धारण करते थे तथा उनका राज - चिह्न 'मधुमक्खी' था और दक्षिणी शासक श्वेत मुकुट धारण करते थे तथा उनका राज - चिह्न 'लिली पोधे की शाख' था।

प्रथम वंश (३११० से २८८४ ई० पू० तक) : मनेथो के अनुसार दोनों राज्यों का एकीकरण करने वाला मेने (Menes), मेनेज (Menes) या नारमर (Narmer) था। इसके तीन नाम थे। यह एक शक्तिशाली छोटा राजा था और दक्षिणी मिस्र में नील के पश्चिमी किनारे पर स्थित अबाइडोस (Abydos) के निकट थीबिज नगर का निवासी था। मेने प्रथम वंश का संस्थापक था। ३११०^१ ई० पू० में यह प्रथम वंश का प्रथम शासक बना। इसने दोनों राज्यों के एकीकरण के साथ साथ एक समन्वयात्मक 'श्वेत भवन' (White House) निर्माण करवाया जिसके चारों ओर एक नगर बस गया। मिस्री भाषा में इस नगर का नाम मेन - नेफ़र था जो बाद में ग्रीक भाषा में मेमफ़िस के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यही नगर दोनों राज्यों की राजधानी बनी। श्वेत भवन के दो फाटक बनावे गये जो दो राज्यों के एकीकरण के प्रतीक थे। मेने ने दोनों मुकुटों को एक बनाकर धारण किया और दोनों राजचिह्नों को भी मिलाकर प्रयोग किया। इस वंश में आठ शासक हुए। अन्तिम शासक का नाम 'केबेह' (Kebek) अथवा 'का' (Ka) था।

द्वितीय वंश (२८८३ से २६६५ ई० पू० तक) : इस वंश का संस्थापक नेटरबाउ (Neter bau) था जिसने २८८३ से २८११ ई० पू० तक शासन किया। इस वंश में १० शासक हुए। इस वंश का अन्तिम शासक नेबका (Nebka) था जिसने २६८३ से २६६५ ई० पू० तक राज्य किया।

तृतीय वंश (२६६४ से २६१५ ई० पू० तक) : इस वंश के शासन काल से 'प्राचीन राज्य' माना जाता है। इस वंश का संस्थापक जोसेर (Zoser अथवा Djoser) था, जिसने २६६४ से २६४६ ई० पू० तक राज्य किया। इसका प्रधानमन्त्री एक महान् वास्तुशिल्पी था। इसीकी सम्मति से जोसेर ने सक्कारा (Sakkara) में एक सीढ़ीदार पिरमिड^२ (Terraced Pyramid) बनवाया जिसकी ऊँचाई २०० फुट

१. प्रथम वंश के स्थापन काल में विद्वान् एकमत नहीं हैं। अनेक मत हैं :—

३११० — रडोल्फ् एन्थोस : Rudolf Anthes) का जो पेनसेल्वेन विश्वविद्यालय में प्राच्य - मि - शास्त्र का प्राध्यापक था। (अमेरिकाना विश्वकोष से लिया है)।

३१८८ — यह काल र्लैनविल्ले ने अपनी पुस्तक (Legacy of Egypt) में दिया है।

३००० — यह काल कार्ल रिचर्ड लेप्सियस द्वारा निर्धारित किया गया है।

३४०० — कुछ विद्वानों ने माना है तथा २८५० ई० पू० कुछ अन्य ने।

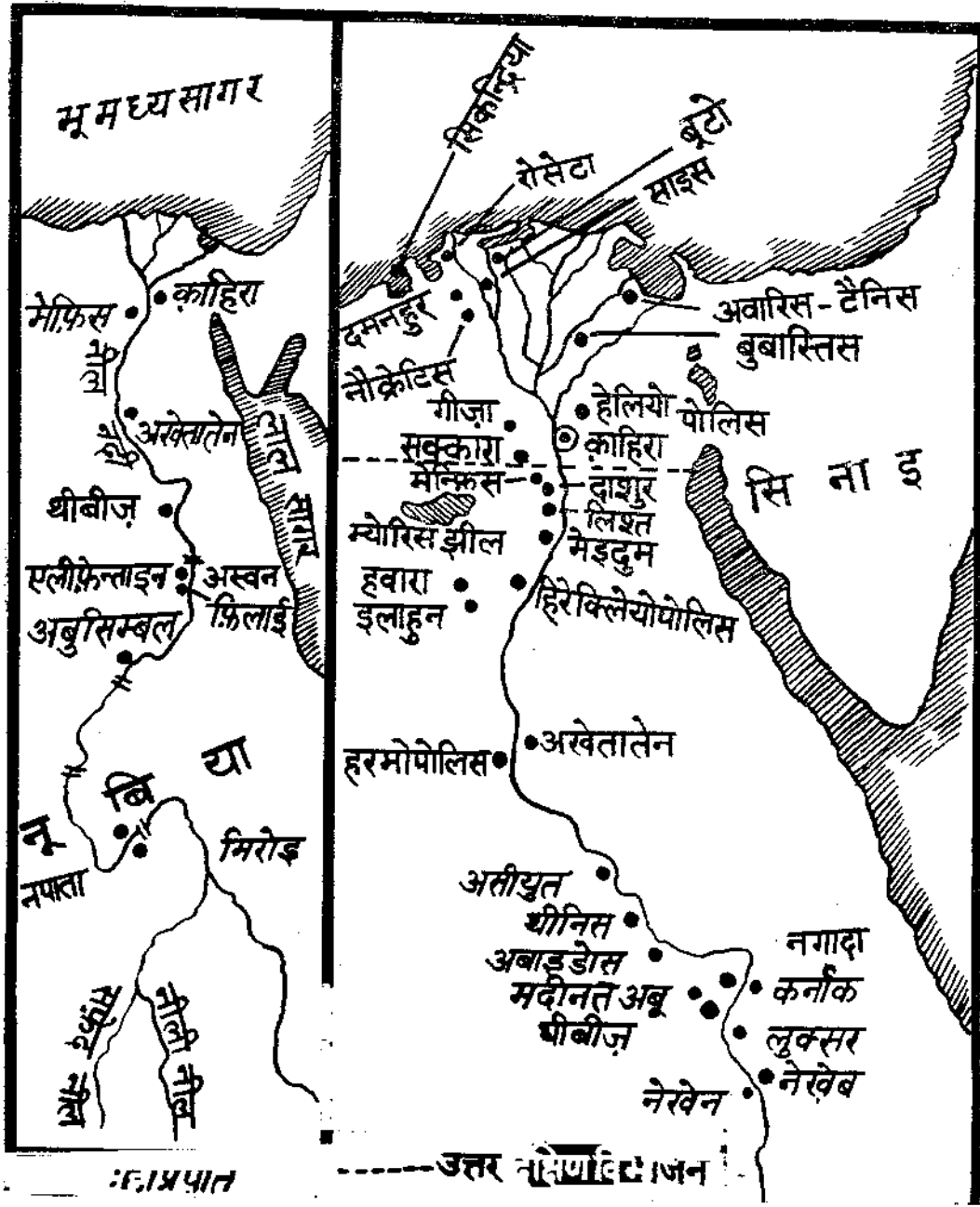
इसके अतिरिक्त शासकों के नामों के वर्णविन्यास में भी स्वरवर्णों की अनुपस्थिति के कारण बहुत अन्तर आया ग्रीक निवासियों ने आकर मिस्र के नगर व शासकों के नामों में और अन्तर उत्पन्न कर दिया। उदाहरणार्थ :—

मिस्री भाषा — खूफू, या कूफू, आनू, पर रेमेभीस, मेनकरै आदि।







ग्रीक भाषा — कथोप्स, हेलियापोलिस, टैनिस, माक्सेरीनस आदि।

२. पिरमिड बनने से पूर्व मिस्र के छोटे बड़े राज्यों के शासक अपने मकबरे बनवाते थे जो मस्तबा (Mastaba) के नाम से प्रसिद्ध थे। जब राजा अधिक सम्पन्न तथा शक्तिशाली हो गये तो यह मकबरे भी भव्य होने लगे। धार्मिक विश्वास के अनुसार मरणोपरान्त भी मनुष्य एक दूसरे प्रकार के जीवन में रहता है इसी कारण उसके दैनिक जीवन की सारी आवश्यक वस्तुओं तथा सोना-चाँदी के भूषणों आदि के साथ दफन किया करते थे। यह ऊपर से नोकदार ढलवाँ होकर चारों ओर चार त्रिकोण बनाकर भूमि पर लगकर बहुत चौड़ा हो जाता था।

मिस्र



मिस्र के राज्यों के मुकुट व चिन्ह—उनका एकीकरण

उत्तरी राज्य	दक्षिणी राज्य	एकीकरण
		
लाल मुकुट	श्वेत मुकुट	एकीकरण
		
मधुमक्खी	लिली पौधा	एकीकरण

फलक संख्या - २८८

थी। यह मिस्र के इतिहास में सर्वप्रथम एक महान् निर्माण — कार्य था। इसी युग से मिस्र के निवासियों में एक राष्ट्रीय धारणा जागृत होने लगी। इस वंश में चार शासक हुए। इस वंश के अन्तिम शासक हूनी (Huny) ने २६३८ से २६१५ ई० पू० तक शासन किया।

चतुर्थ वंश (२६१४ से २५०२ ई० पू० तक) : हूनी का जामाता स्नेफू (Snefru) इस वंश का संस्थापक था जिसने २५९१ ई० पू० तक राज्य किया। इसने दो पिरैमिड बनवाये। एक दाशुर के निकट तथा एक मेइदुम (Meidum) में। इसका उत्तराधिकारी खूफू (Khufu) था। इसने अपने शासनकाल (२५९० — २५६८ ई० पू० तक) में एक विशालतम पिरैमिड गीजा में निर्माण करवाया। यह ४८१ फुट ऊँचा तथा तलों पर ७५५ फुट चौड़ा था। इसने ३१ एकड़ भूमि घेर रखी थी। इसमें २० लाख चौकोर पत्थर लगाये गये थे। प्रत्येक पत्थर का वजन लगभग ढाई टन (१०० मन) होता था। इन पत्थरों को इस सुन्दरता से जोड़ा गया है कि कहीं कहीं पर तो जोड़ भी नहीं दिखायी देता है।¹ इस वंश का शासनयुग 'पिरैमिड युग' के नाम से सम्बोधित किया जाता है। इस खूफू का उत्तराधिकारी खेफे (Khefre) था जिसने एक सबसे छोटा पिरैमिड तथा एक विशाल स्फिक्स (Sphinx) बनवाया। स्फिक्स एक विशाल बैठा शेर था पर उसका मुँह मनुष्य का था। इसका अन्तिम शासक शेपसेस काफ़ (Shepses Kaf) था। इस वंश में कुल ८ शासक हुए।

पाँचवाँ वंश (२५०१ से २३४२ ई० पू० तक) : इस वंश का संस्थापक सूर्य देवता रा (Ra) या रे (Re) के मन्दिर का, जो हेलियोपोलिस (Heliopolis) में स्थित था, मुख्य पुरोहित था। इसका नाम युसेरकाफ़ (Userkaf) था। हेलियोपोलिस को मिस्री भाषा में ओनु (Onu) कहते थे। युसेरकाफ़ ने २५०१ से २४९१ ई० पू० तक राज्य किया। इस शासक ने तथा इसके पुत्र सहुरे (Sabure) ने मिस्र की नौ सेना में वृद्धि की। मिस्र की जनता पर करों का बहुत बोझ पड़ने लगा। इस वंश में कुल ९ शासक हुए। अन्तिम शासक का नाम युनिस (Unis) था जिसने २३७१ से २३४२ तक राज्य किया। इस वंश के शासन काल में पुरोहितों, सामंतों तथा सेनापतियों की महत्वाकांक्षायें बढ़ने लगीं और केन्द्रीय शासक की शक्तियाँ शनैः शनैः कम होने लगीं। इस वंश का तीसरा शासक 'रा' (सूर्यदेवता) का पुत्र माना गया। दो छोड़कर ७ शासकों ने पिरैमिड की बजाय 'रा' के मन्दिर बनवाये।

छठवा वंश (२३४१ से २१८१ ई० पू० तक) : इस वंश के शासक निम्नलिखित थे :—

- | | |
|--|--------------------|
| १. तेती प्रथम (Teti I) संस्थापक | — २३४१ से २३२८ तक। |
| २. पेपी प्रथम (Pepi I) | — २३२७ से २२७८ तक। |
| ३. मेरेन्रे प्रथम (Merenre I) | — २२७८ से २२७३ तक। |
| ४. पेपी द्वितीय नेफ़ेरकारे (Pepi II Neferkare) | — २२७२ से २१८२ तक। |

इस शासक ने मिस्र के इतिहास में (सम्भवतः विश्व के इतिहास में) सबसे अधिक वर्षों तक अर्थात् ९० वर्ष तक राज्य किया। (कुछ विद्वान् ९४ वर्ष मानते हैं)। यह बाल्यकाल में ही सिंहासनावृद्ध हुआ।

- यह पिरैमिड संसार के सात चमत्कारों में से एक है। कितना आश्चर्य लगता है कि इतने भारी पत्थरों को ५०० फुट ऊँचे उठाकर किस प्रकार जमाया होगा जब कि उठाने के लिए वर्तमान — युग के साधन — क्रेन या ट्राली — नहीं थे। फिर यह पत्थर सैकड़ों मील की दूरी से लाये जाते थे। वर्तमान — युग के वैज्ञानिकों ने अनुमान लगाया है कि यह पत्थर गोल लकड़ियों पर सरकाये जाते होंगे। लाखों मजदूर काम करते थे। मिस्र के निवासी दास नहीं थे इस कारण खुद से बन्दी या कारागार से कैदी इस मजदूरी को किया करते थे।

५. मेरेन्रे द्वितीय (Merenre II) २१८२ से २१८१ तक ।

यह इस वंश का अन्तिम शासक था जिसने केवल एक वर्ष ही राज्य किया ।

सातवाँ वंश (२१८० से २१७५ ई० पू० तक) : इस वंश के शासकों ने किसी प्रकार का कोई ऐसा स्मारक निर्माण नहीं करवाया अथवा कोई अभिलेख उत्कीर्ण नहीं करवाया जो उनके शासन काल को या उनके नामों को प्रमाणित करता । इस वंश के शासनकाल में केन्द्रीय शासन का अन्त दृष्टिगोचर होने लगा । इसी कारण यह भी ज्ञात नहीं कि कितने शासक हुए ।

आठवाँ वंश (२१७४ से २१५५ ई० पू० तक) : इस वंश में आठ शासक हुए जो नाममात्र के शासक थे । इस वंश के पश्चात् ही मिस्र छोटे छोटे राज्यों में विभाजित हो गया और केन्द्र शिथिल हो गया ।

नवाँ वंश (२१५४ से २१०० ई० पू० तक) : इस वंश के संस्थापक के विषय में कुछ ज्ञात नहीं । इसकी राजधानी हिरेक्लियोपोलिस (Heracleopolis) थी । इस वंश में १३ शासक हुए जो सत्ताहीन थे ।

दसवाँ वंश (२१०० से २०५२ ई० पू० तक) : इस वंश का संस्थापक खेत्ती द्वितीय (Khetty II) था ।

इसके पश्चात् चार अन्य शासकों ने नाममात्र के लिए शासन किया । उत्तर में गृह — युद्ध आरम्भ हो गया तथा अराजकता फैलने लगी । हिरेक्लियोपोलिस की राजधानी नष्ट भ्रष्ट हो गयी ।

ग्यारहवाँ वंश (२१३४ से १९९२ ई० पू० तक मध्य राज्य) : उधर दक्षिण में सेहर्तवी इन्तेफ प्रथम (Sehtawi Intef I) ने, जो हिरेक्लियोपोलिस के अन्तर्गत एक नोमार्क (नोम = प्रांत; नोमार्क = प्रांत — पति) था स्वतन्त्र हो गया और २१३४ में इस वंश की स्थापना की और पूरे दक्षिणी मिस्र का शासक बन बैठा तथा थीबीज (Thebes) को अपनी राजधानी बनाया । इन्तेफ ने २१३२ तक ही शासन किया । तदनन्तर इस वंश में तीन अन्य शासक हुए जिन्होंने २०६२ ई० पू० तक राज्य किया । पाँचवें शासक मेन्तुहोतेप प्रथम (Mentuhoteb I) ने २०६२ से २०६१ तक शासन किया । मेन्तुहोतेप द्वितीय ने गृहयुद्ध का अन्त करके मिस्र का फिर एकीकरण किया । इसने २०११ ई० पू० तक राज्य किया । उसके पुत्र मेन्तुहोतेप तृतीय ने २०१० से १९९९ तक शासन किया । तदुपरांत मेन्तुहोतेप चतुर्थ व पंचम ने १९९२ तक राज्य किया जो उल्लेखनीय नहीं हैं ।

बारहवाँ वंश (१९९१ से १७८६ ई० पू० तक) : इस वंश का संस्थापक मेन्तुहोतेप पंचम का प्रधानमन्त्री था । इसका नाम अमेनेमहत प्रथम (Amenemhat I) था । इस वंश के निम्नलिखित शासकों ने राज्य किया :—

१. अमेनेमहत प्रथम	—	१९९१ से १९६२ ई० पू० तक ।
२. सेसात्रीज प्रथम (Sesostris I) ^१	—	१९६१ से १८२८ तक ।
३. अमेनेमहत द्वितीय	—	१९२८ से १९१५ तक ।
४. सेसात्रीज द्वितीय	—	१८९४ से १८७९ तक ।
५. सेसात्रीज तृतीय	—	१८७८ से १८४३ तक ।
६. अमेनेमहत तृतीय	—	१८४२ से १७९७ तक ।
७. अमेनेमहत चतुर्थ	—	१७९६ से १७९० तक ।
८. सेबेकनेफूरे (Sebknefure)	—	१७८९ से १७८६ तक ।

1. Sesostris is also mentioned as Senwosre by Jacoba in his book — THE STORY OF EGYPT (1964) and Senusret as Well.

अमेनेमहत प्रथम ने एक नवीन राजधानी का निर्माण उत्तर में नील के पश्चिमी किनारे पर इथ (Ith at Tawi) आधुनिक लिखत में करवाया। १९६२ ई० पू० में राजमहल में ही इसका वध कर दिया गया।

सेसात्रीज प्रथम ने नूबिया (Nubia) की सोने की खानों को अपने अधीन कर लिया। सेसात्रीज द्वितीय ने अपना पिरैमिड इलाहून (Illahun) में बनवाया।

सेसात्रीज तृतीय ने मिस्र के खजानों की सोने चाँदी से भर दिया। उसने नील को लाल सागर से एक नहर द्वारा मिलाया जिससे दक्षिण एशिया से व्यापार में बहुत प्रगति हुई। इसने ३००० कमरों का विशाल भवन बनवाया।

उसके पुत्र अमेनेमहत तृतीय ने महान् निर्माण कार्य सम्पन्न किये। इसने म्योरिस झील के चारों ओर एक दीवाल खड़ी करवाई तथा एक नहर से उसको नील नदी से मिला दिया जिसके द्वारा २७००० एकड़ जमीन सींची जाने लगी। सिनाइ की तटों की खानों^१ से भी राज्य को अच्छा धन प्राप्त होता था।

अमेनेमहत की मृत्यु के पश्चात् फिर गृहयुद्ध आरम्भ होने लगा। सेबेकनेफ्रूरे इस वंश की अन्तिम नाममात्र शासिका थी (इतिहासकारों में मतभेद है कि शासिका ने शासन किया भी या नहीं)। इसने दो पिरैमिड भी बनवाये, एक दाशुर में और दूसरा हवारा (Hawara) में। मिस्र फिर छोटे छोटे राज्यों में विभाजित होने लगा। केन्द्रीय शासन नाममात्र का रह गया। इस वंश ने २१५ वर्ष राज्य किया।

तेरहवाँ वंश (१७८५ से १६७७ ई० पू० तक) : इस वंश के शासकों के नाम ज्ञात नहीं। इन्होंने थीबीज को राजधानी बनाया। इनका राज्य दक्षिण में रहा। इनका शासन नाममात्र रहा। थीबीज इनकी राजधानी थी।

चौदहवाँ वंश (१७८५ से १६०३ ई० पू० तक) : इस वंश के शासकों ने अपनी राजधानी साइस (Saïs) में बनाई। शासकों के नाम ज्ञात नहीं।

पाँचहवाँ वंश (१६७८ से १५७० ई० पू० तक) : इस वंश के संस्थापक हिकसांस (Hyksos) थे। हिकसांस को मिस्र की भाषा में हिकाउ खासुत (Hikau Khasut) अर्थात् 'विदेशी शासक' कहते थे। संस्थापक का नाम ज्ञात नहीं। दो अन्य शासक इसी जाति के हुए जिनके नाम ज्ञात नहीं। इन तीन शासकों ने १६७८ से १६४७ ई० पू० तक राज्य किया। मनेथो के कथनानुसार इन आक्रमणकारियों को कहीं भी लड़ना नहीं पड़ा। इन लोगों को 'गड़रियों का राजा' के नाम से भी इतिहासकारों ने सम्बोधित किया है। इन लोगों ने अपनी राजधानी अवारिस (Avaris) को बनाया।

इस वंश का चौथा राजा खियान (Khian) था जिसने १६४७ से १६०७ ई० पू० तक राज्य किया। पाँचवें शासक ने, जिसका नाम ज्ञात नहीं १६०७ से १६०३ ई० पू० तक राज्य किया। इस वंश का छठा तथा अन्तिम शासक औसेरें अपोपी (Ausere Apopi) था जिसने १६०३ से १५७० ई० पू० तक राज्य किया।

सोलहवाँ वंश (१६७७ से १६४७ ई० पू० तक) : इस वंश में नाममात्र के लिए अनेक शासक हुए जिनके नाम ज्ञात नहीं। इनकी राजधानी भी थीबीज थी।

सत्रहवाँ वंश (१६४६ से १५७० ई० पू० तक) : इस वंश का संस्थापक सेनेखेन्त्रे (Senekhentre)

१. इन खानों में कनथान के निवासी काम करते थे जिन्होंने मिस्र की चित्र लिपि के चिह्नों को हेब्रू नामों से सम्बोधित किया।

था। इसके पुत्र सेकेन्सुरे (Sekensure) ने हिकसाँस के राज्य पर आक्रमण किया परन्तु परास्त हुआ। तत्पश्चात् इसके पुत्र कामोस (Kamos) ने हिकसाँस के जनरल तेती से हर्मोपोलिस के उत्तर में स्थित नेफेरुसी (Neferusi) में युद्ध किया और हिकसाँस परास्त हो गये। इसी समय से हिकसाँस की शक्ति का अन्त होने लगा।

हिकसाँस के शासन काल में, जो लगभग सौ वर्ष रहा, मिस्र निवासियों ने रथों को बनाना सीखा तथा घोड़ों का पालन - पोषण सीखा। यह कार्य मिस्र के लिए अनोखा था क्योंकि इसके पूर्व मिस्र में रथ तथा घोड़े नहीं थे। उनके राज्य से एक प्रकार की जागृति उत्पन्न हुई। हिकसाँस ही अपने साथ मिस्र में बोड़े लाये थे क्योंकि यह लोग पर्वत निवासी थे।

अठारहवाँ वंश (१५७० से १३०४ ई० पू० तक) : इस वंश में निम्नलिखित चौदह शासक हुए :—

१. अहमोस (Ahmose)	—	१५७० से १५४५ तक।
२. अमेनहोतेप प्रथम (Amenhotep I)	—	१५४५ से १५२५ तक।
३. ठुटमोस प्रथम (Thutmose I)	—	१५२५ से १५०८ तक।
४. ठुटमोस द्वितीय	—	१५०८ से १४९० तक।
५. हतशेपसुत (Hatshepsut)	—	१४८४ से १४६९ तक।
६. ठुटमोस तृतीय	—	१४९० से १४३६ तक।
७. अमेनहोतेप द्वितीय	—	१४३६ से १४११ तक।
८. ठुटमोस चतुर्थ	—	१४११ से १३९७ तक।
९. अमेनहोतेप तृतीय	—	१३९७ से १३९० तक।
१०. अमेनहोतेप चतुर्थ	—	१३७० से १३५५ तक।
११. सेमेनखरे (Semenkharé)	—	१३५५ से १३५२ तक।
१२. ठुट-अंख-आमेन (Tutankhamen)	—	१३५२ से १३४३ तक।
१३. अयी (Ay)	—	१३४३ से १३३९ तक।
१४. होरेमहेब (Horemhab)	—	१३३९ से १३०४ तक।

इस वंश का संस्थापक अहमोस था। यह कामोस का पुत्र था। इस शासक ने मिस्र को फिर एक सूत्र में बाँध दिया। इसने हिकसाँस की राजधानी अवारिस को तीन वर्ष तक घेरे रखा। तदनन्तर उसको नष्ट - भ्रष्ट कर दिया। लगभग दो लाख चालीस हजार हिकसाँस मिस्र छोड़कर चले गये। अहमोस ने एक सैनिक - राज्य स्थापित किया। दो सेनायें, उनके दो जनरल तथा दो प्रधानमन्त्री - उत्तर व दक्षिण के लिए पृथक् पृथक् नियुक्त किये। इसने छोटे छोटे राज्यों को समाप्त कर उनकी भूमि को राजकीय खाते में लिखवा दिया। छोटे छोटे राजाओं को अपने अधीन कर उनको मिस्र मिस्र विभागों का अध्यक्ष नियुक्त कर दिया। इसी वंश के शासन काल से शासकों का नाम फ़ेराओ^१ (Pharaoh) पढ़ने लगा। इसके शासन से मिस्र का

१. फ़ेराओ, पर - ओ (per - o) या पर - आ (Per - aa) के शब्द से बाइबिल में फ़ेराओ (Pharaoh) लिखा जाने लगा। मिस्र की भाषा में पर - ओ के अर्थ हैं 'विशालघर' (Great House) अर्थात् विशालघर का निवासी। प्रत्येक फ़ेराओ किसी न किसी मुख्य देवता का पुत्र माना जाता था। उत्तर में सूर्य देवता को 'रा' कहते थे और दक्षिण में 'अमोन'। जब दोनों राज्यों का एकीकरण हुआ तो देवताओं का भी एकीकरण हो गया और सूर्यदेवता 'अमोन रा' के नाम से पूजा जाने लगा।

साम्राज्य स्थापित हो गया। उत्तर में सीरिया तक तथा दक्षिण में नूबिया तक अहमोस का राज्य रहा। इसकी महारानी का नाम अहमीज नेफरतारी (Ahmes Nefertari) था। सिख के इतिहास में यह पहली महारानी थी जो राजकाज में अहमोस का हाथ बँटाती थी और अहमोस की अनुपस्थिति में पूर्णतया राज्य करती थी। उसने एक पुत्र को जन्म दिया जो अमेनहोतेप के नाम से प्रसिद्ध हुआ। अहमोस ने लगभग २५ वर्ष तक राज्य किया।

इसके मरणोपरांत अमेनहोतेप प्रथम सिंहासनावृद्ध हुआ। इसने २० वर्ष राज्य किया। इसके कोई पुत्र न था। फ़ेराओ की एक मुख्य पत्नी तथा अनेक उप पत्नियाँ होती थीं। मुख्य पत्नी अहोतेप द्वारा एक पुत्री राजकुमारी अहमोस उत्पन्न हुई तथा उप पत्नी से टुटमोस जिसको टुटमोसिस (Tutmosis) अथवा टुटमिस (Tutmis) भी लिखते हैं — उत्पन्न हुआ। टुटमोस का विवाह सौतेली बहन अहमोस से हो जाने पर उसे राजवंश में सम्मिलित कर लिया गया।

टुटमोस अमेनहोतेप के मरणोपरांत फ़ेराओ बना और टुटमोस प्रथम के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उसने कारकेमिश तक अपने राज्य का विस्तार किया और अधीन राजाओं से कर भी वसूल किया। इसके भी कोई पुत्र न था परन्तु एक पुत्री हतशेपसुत थी जो पुत्र के समान रहती थी। इसके भी एक उप पत्नी से पुत्र था जिसका नाम टुटमोस द्वितीय था। हतशेपसुत का विवाह टुटमोस द्वितीय से कर दिया गया। इनके दो पुत्रियाँ हुईं परन्तु उप पत्नी से एक पुत्र हुआ। टुटमोस द्वितीय की मृत्यु के पश्चात् टुटमोस तृतीय शिशु था। शिशु राजसिंहासनावृद्ध तो हुआ परन्तु राजकाज हतशेपसुत ही देखा करती थी। इसने १५ वर्ष शासन किया। उसने अनेक भवन तथा मन्दिरों का निर्माण करवाया और अपना नाम अमर करने के लिए प्रत्येक भवन पर अपना नाम उत्कीर्ण करवाया। हतशेपसुत की मृत्यु के पश्चात् टुटमोस तृतीय शासक बना। वह अपनी सौतेली माँ से घृणा करता था इस कारण उसने हतशेपसुत का नाम प्रत्येक भवन से साफ करवा दिया। सारा मिस्र छेनी व हथौड़े की ध्वनि से गूँज उठा। इस प्रकार उसका नाम मिस्र के इतिहास से मिटाने की चेष्टा की गयी।

टुटमोस तृतीय को इतिहासकारों ने 'मिस्र के नेपोलियन' की उपाधि दी है। इसने पश्चिमी एशिया पर कई आक्रमण किये। इसके आक्रमण में २५००० सैनिक थे। इसने पराजित देशों की जनता के साथ मानवता का व्यवहार किया। पराजित राजाओं के पुत्रों को अपने देश में लाकर उनको अपने अधीन राज्य करने की प्रणाली से अवगत कराया। वह अपने साथ बहुत सा सोना, चाँदी, बालू व घोड़े लाया। सहस्रों लोगों को बन्दी बनाकर लाया। लौटने पर इसका भव्य स्वागत किया गया। मिस्र के कोषागार धन से भर गये। इसने फ़िनीशिया पर अपनी नौसेना द्वारा आक्रमण किया। नगर राज्यों को परास्त कर फिर धन एकत्रित किया। उसका मृतक शरीर काहिरा (Cairo) के संग्रहालय में सुरक्षित है। इसने ५४ वर्ष राज्य किया।

इसके पुत्र अमेनहोतेप द्वितीय ने भी कई आक्रमण करके मिस्र की समृद्धि बढ़ायी। अनेक आन्दोलन-कर्ताओं को मौत के घाट उतारा। इसने २५ वर्ष राज्य किया।

अमेनहोतेप का पुत्र टुटमोस चतुर्थ फ़ेराओ हुआ। उसने मितन्नी राज्य की राजकुमारी से विवाह किया और केवल चौदह वर्ष राज्य किया। इसके मरणोपरांत इसका पुत्र अमेनहोतेप तृतीय शासक बना। इसने लगभग २७ वर्ष राज्य किया। इसीके शासन काल में विदेशों से अच्छे सम्बन्ध रहे। अनेक राजदूतों का आना जाना होता रहता था। मिस्र का यह सुनहरा युग था। लोग समृद्धशाली हो रहे थे। हर ओर

शान्ति थी। व्यापारियों के कारिजे बिना किसी भय के इधर उधर आ जाकर व्यापार किया करते थे। मन्दिरों और भवनों के निर्माण हो रहे थे। पदाधिकारी ईमानदारी से कार्य कर रहे थे। इसी काल को अमरना (Amarna Age) काल भी कहा गया है क्योंकि इसी आधुनिक उपनगर तेल-एल-अमरना (Tell - El - Amarna) में कीलाक्षरों की पाटियाँ उत्खनन द्वारा प्राप्त हुईं। पश्चिम एशिया के देश अपने पर्वों को कागज पर नहीं चाक मिट्टी (Clay) की पाटियों पर उत्कीर्ण करवाते थे जब कि मिस्र में कागज का प्रयोग होता था। इस शासक के अन्तिम काल में पतन के बादल दृष्टिगोचर होने लगे। मिस्र के उपनिवेशों पर हितियों के आक्रमण होने लगे और जब वहाँ के शासकों (मिस्र के अधीन) ने सहायता की याचना की तो मिस्र शान्त रहा।

अमेनहोतेप तृतीय के स्वर्गवास होने पर अमेनहोतेप चतुर्थ सिंहासनालुब हुआ। इसने १५ वर्ष राज्य किया। यह बड़ा विचारक तथा क्रान्तिकारी था। यही संसार का सर्वप्रथम शासक एकेश्वरवादी^१ था। इसने अन्य देवताओं की पूजा को बन्द कर दिया। इसने हेलियोपोलिस के मन्दिर के 'रा' (सूर्य देवता) के पुजारी तथा थीबीज के मन्दिरों के 'अमेन' के पुजारियों की निष्काशकर मन्दिर बन्द कर दिये। इसने एक ईश्वर निर्धारित किया जिसका नाम 'अतेन' रखा। वह अतेन भगवान् की व्याख्या इस प्रकार करता था "वह सूर्य के प्रकाश की भाँति एक प्रकाश है और उसकी किरणें भगवान् के हाथ हैं जो सारे संसार में प्रति प्राणी पर कृपा रखते हैं।" उसने अपना नाम अमेनहोतेप (अमेन^२ = कण्ठा का सागर) से अखेनातेन अर्थात् अखेन + अतेन ('अतेन' भगवान् की प्रसन्न करनेवाला) रख लिया और अपने इस नये नाम के भगवान् का एक विशाल मन्दिर करनाक (Karnak) व लुक्सर (Luxor) के मध्य बनवाया। साथ ही साथ अपने लिए एक विशाल भवन व उसके तीन ओर एक राजधानी का निर्माण करवाया। इसका नाम अखेत अतेन अर्थात् 'अतेन की क्षितिज' रखा। यह राजधानी मध्य मिस्र में नील के पूर्वी किनारे पर थीबीज से ३०० मील उत्तर में स्थित थी। इसी का आधुनिक नाम तेल-एल-अमरना पड़ा जहाँ से लगभग ३०० पत्र चाक मिट्टी की पाटियों पर अंकित प्राप्त हुए। जिस प्रकार हतशेसुत ने अन्य शासकों के नाम मिटवा कर अपना नाम उत्कीर्ण करवाया, टुटमोस तृतीय ने हतशेसुत का नाम मिटवाकर अपना नाम अंकित करवाया उसी प्रकार अखेनातेन ने मन्दिरों व भवनों से अन्य देवताओं के नामों को मिटवाना आरम्भ कर दिया। एक बार फिर सारा मिस्र छेती व हथौड़े की ध्वनियों से गूँज उठा। पुजारियों को पदच्युत कर दिया गया और वह स्वयं 'अतेन' का मुख्य पुजारी बना।

इस युग में उसके इस कृत्य को महान् कहा जा सकता है परन्तु ऐसे युग में, जब सारा मिस्र देश बहुदेववादी था, इस कार्य की सराहा नहीं जा सकता था। उसका यह कृत्य बड़ी घृणा की दृष्टि से देखा जाने लगा। लोग भय के कारण दिखाने के लिए एकेश्वरवादी बने परन्तु मन से बहुदेववादी रहे। अपने देवताओं की छिप छिपकर पूजा करते रहे। निष्काशित पुजारी वर्ग अपन अनुयायियों को भड़काते रहे। इसने कोई युद्ध नहीं किया। वह धर्म परिवर्तन में रत रहा। साम्राज्य का अन्त होने लगा। पराजित नरेश स्वतन्त्र होने लगे।

1. इसके पूर्व भी एक उर नगर (मेसोपोटामिया) का निवासी अब्राहम (Abraham) एकेश्वरवादी हुआ था और उसको अपना घर व देश त्याग देना पड़ा। परन्तु वह शासक नहीं था।
2. सम्भवतः 'अमेन' से 'आमेन' 'आमीन' बन गया।

अखेनातेन को कोई पुत्र न था। उन्हें दो पुत्रियाँ थीं। एक का नाम मेरी अतेन था। अखेनातेन ने अपनी इसी पुत्री का विवाह एक समृद्धशाली व्यक्ति सेमेनखुरे से कर दिया और अपना सह — शासक बना कर उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया। अखेनातेन के स्वर्गवास होने पर सेमेनखुरे शासक बना जो केवल तीन वर्ष शासन करने के पश्चात् मृत्यु का शास हो गया।

इसके मरणोपरांत अखेनातेन का दूसरा जामाता टुट — अखेनातेन सिंहासनारूढ़ हुआ। कुछ दिनों तक इसने नयी राजधानी अखेनातेन से राज्य किया परन्तु बाद में इसने राजधानी छोड़ दी और पहले की राजधानी थीबीज़ से शासन आरम्भ कर दिया। शनैः शनैः अखेनातेन का एकेश्वरवाद समाप्त हो गया। प्राचीन मन्दिरों में फिर बहु देवताओं की पूजा आरम्भ हो गयी। टुट — अखेनातेन ने अपना नाम परिवर्तित करके टुट अखामुन कर लिया। सारे प्राचीन मन्दिरों से अतेन का नाम मिटाया जाने लगा। अखेनातेन की नई राजधानी अखेनातेन वीरान हो गई। अमुस देवता तथा 'रा' देवता की पूजा फिर से होने लगी।

टुट — अखामेन ने ९ वर्ष राज्य किया। यह अपने काल का कोई प्रसिद्ध फ़ेराओ नहीं था परन्तु इस युग में इसने प्रसिद्धि प्राप्त की क्योंकि इसकी कब्र किसी लुटेरे के हाथ नहीं लगी। इसके मकबरे का पता २६ नवम्बर १९२२ में हावर्ड कार्टर^१ (Howard Carter) को लगा। इसके मकबरे के उत्खनन से लगभग साठ सहस्र वस्तुएँ प्राप्त हुईं जो आज भी काहिरा के संग्रहालय में सुरक्षित हैं।

टुट की मृत्यु के पश्चात् अयी, जो एक पुजारी तथा टुट का परामर्शदाता था, फ़ेराओ बनाया गया जिसने केवल चार वर्ष शासन किया तत्पश्चात् होरेमहेब, जो अखेनातेन के शासनकाल में मुख्य — सैनिक — अधिकारी था शासक बना। इसने अखेनातेन की बनवाई हुई अनेक 'अतेन' की मूर्तियों को नष्ट करवाया तथा थीबीज़ में 'अतेन' का मन्दिर तुड़वाया और 'अतेन' व अखेनातेन के नाम को नष्ट करने का कार्य पूरा कर दिया। होरेमहेब एक अच्छा शासक सिद्ध हुआ। इसने घूसखोरी को नष्ट करने के लिए बड़े कड़े कानून बनाये। अधिक कर वसूल करने वालों की नाक काटने की आज्ञा जारी की और न्यायाधीशों का वेतन बढ़ाया ताकि घूस न लें।

उन्नीसवाँ वंश (१३०४ से ११८१ ई० पू० तक) : इस वंश में सात निम्नलिखित शासक हुए :—

१. रेमेसीज प्रथम (Ramesses or Rameses I)	—	१३०४ से १३०३ तक
२. सेती प्रथम (Seti I)	—	१३०३ से १२९० तक
३. रेमेसीज द्वितीय	—	१२९० से १२२३ तक
४. मेरेनपा (Merenptah)	—	१२२३ से १२११ तक
५. अमेनेसीज (Amenesses)	—	१२११ से १२०६ तक
६. (नाम ज्ञात नहीं)	—	१२०६ से ११९४ तक
७. रेमेसीज सीटा (Rameses Siptah)	—	११९४ से ११८१ तक

इस वंश का संस्थापक ह्विक्सॉस की राजधानी अवारिस का एक प्रसिद्ध सैनिक था जिसने ह्विक्सॉस को निकालने में अहमोस की बड़ी सहायता की थी। इसका नाम रेमेसीज प्रथम था। होरेमहेब के स्वर्गवास होने पर यह फ़ेराओ बनाया गया। इसने अपना सह — शासक आपने पुत्र सेती को बनाया। इसने केवल एक

१. कार्टर एक पुरातत्त्व वेत्ता था जो उत्खनन कार्य में वर्षों से संलग्न था। एक सम्पन्न व्यक्ति लार्ड कर्नावन (Lord Carnavon), जो इंग्लैण्ड का निवासी था, इसको आर्थिक सहायता देता रहता था।

वर्ष शासन किया और परलोक सिधार गया। तदनन्तर सेती प्रथम सिंहासन पर बैठा। इसने पश्चिम एशिया पर आक्रमण करने की योजना बनाई। सड़कों को फिर से ठीक कराया गया, कूओं को खुदवाया गया तथा सेना के जाने के रास्तों पर छोटे-छोटे किलों को ठीक कराया गया। तदनन्तर इसने सेना को आगे बढ़ाया। इसकी विजय हुई और बहुत-सा धन लेकर लौटा। इसने नील नदी को लाल सागर से मिलाने वाली नहर को फिर ठीक करवाया। इस कार्य को एशियाई युद्ध — बन्दियों ने पूरा किया। सेती ने १३ वर्ष राज्य किया।

सेती के पश्चात् इसका पुत्र रेमेसीज द्वितीय फ़ेराओ बना। इसने १२८८ ई० पू० में पैलेस्टाइन पर आक्रमण किया। रेमेसीज ने हिताइत नरेश खत्तुसिली (हत्तुसिली), जो मुवात्तलीस का भ्राता था, से सन्धि कर ली क्योंकि इन दोनों शासकों की असीरिया की बढ़ती हुई शक्ति का भय था। इस सन्धि को स्थिर करने के लिए रेमेसीज ने खत्तुसिली की पुत्री से विवाह कर लिया। यह भवनों व मूर्तियों का महान् निर्मागकर्ता था। इसने लूबिया में (अबू सिम्बल — Abu Simbel, आधुनिक नाम है) चार विशाल मूर्तियाँ बनवाईं जिनकी ऊँचाई ६५ फुट थी। जब अरब वहाँ पहुँचे तो मूर्तियों की गर्दनोँ तक रेत व मिट्टी चढ़ चुकी थी जिसको महीनों में साफ किया गया।

सम्भवतः इसी काल में हज़रत मुसा (Moses) ने अपनी जाति हेब्रू को मिस्र से स्वतन्त्रता दिलवाई और वे लोग कनआन में जाकर बस गये तथा अपना राज्य स्थापित कर लिया।

रेमेसीज की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र मेरेनटा शासक बना। इसने सीरिया व लेबेनान को फिर परास्त किया। इस युद्ध में योरोपीय देशों के निवासी भी सैनिक के रूप में उपस्थित थे। इधर लीबिया ने मिस्र पर आक्रमण कर दिया। मेरेनटा ने इसको समाप्त किया। इसमें लगभग ९००० आदमी मारे गये। इसने लगभग १२ वर्ष राज्य किया परन्तु इसके मरणोपरान्त अराजकता फैलने लगी। उधर अकाल पड़ा इधर छोटे छोटे शासकों ने अपने अपने इलाकों से केन्द्रीय शासन का अन्त कर दिया। प्रत्येक शक्तिशाली अपने पड़ोसी के रक्त का प्यासा होने लगे।

तदोपरान्त तीन फ़ेराओ शासक बने परन्तु नाममात्र की। आठवाँ तथा अन्तिम शासक रेमेसीज सीदा था। इन चारों फ़ेराओं ने केवल अपनी राजधानी में ही राज्य किया। सारे मिस्र में अराजकता फैली हुई थी।

बीसवाँ वंश (११८१ से १०७५ ई० पू० तक) : इस वंश में दस निम्नलिखित शासक हुए :—

१. सेतनखत (Setnakht)	—	११८१ से ११७९ ई० पू० तक
२. रेमेसीज तृतीय	—	११७९ से ११४७ „ „ तक
३. „ चतुर्थ	—	११४७ से ११४१ „ „ तक
४. „ पंचम	—	११४१ से ११३७ „ „ तक
५. „ षष्ठम	—	११३७ से ११३२ „ „ तक
६. „ सप्तम	—	११३२ से ११२५ „ „ तक
७. „ अष्टम	—	११२५ से ११२४ „ „ तक
८. „ नवम	—	११२४ से ११०५ „ „ तक
९. „ दशम	—	११०५ से ११०२ „ „ तक
१०. „ एकादश	—	११०२ से १०७५ „ „ तक

उन्नीसवाँ वंश समाप्त होते ही एक शक्तिशाली शासक ने राज्य की बागडोर सँभाली और बीसवें वंश का संस्थापक हुआ। इसके पुत्र रेमेसेज तृतीय ने अराजकता का अन्त कर दिया। इसने एक विशाल तथा सुन्दर मन्दिर का मदीनत - अब में निर्माण करवाया। रेमेसेज चतुर्थ ने लगभग २९ गज लम्बे पत्रा पर अपने पिता के कृत्यों को लिखवाया। इसके अन्तिम शासक के काल में डाकू और लुटेरे शासकों के प्राचीन मकबরों को नष्ट करके गड़े हुए धन को लूटना आरम्भ कर दिये।

इक्कीसवाँ वंश (१०७५ से ९४० ई० पू० तक) : इस वंश में पाँच शासक हुए और राज्य फिर दो भागों में विभाजित हो गया। थीबीज में तो मुख्य पुजारी हेरीहोर (Herihor) शासक हुआ और इक्कीसवें वंश की नींव डाली। इसने १०७५ से १०४४ ई० पू० तक शासन किया। तदनन्तर इसका पुत्र पियांखी (Piankhy) शासक बना और उसके पश्चात् उसका पुत्र पिनोजदेम (Pinedjem) शासक बना। उत्तर में रेमेसीज एकादश का प्रांतपति स्मेन्दीज (Smendes), जिसको मिस्री भाषा में नेसुबेनेबदेद (Nesubenebde) कहते हैं, टैनिस^१ की उपराजधानी से राजकीय कार्य किया करता था स्वतन्त्र हो गया और स्वयं फ़ेराओ बन गया। इसका पुत्र सुसेमीज (Pusemca) स्मेन्दीज का उत्तराधिकारी बना। थीबीज के शासक पिनोजदेम ने सुसेमीज की पुत्री से विवाह करके मिस्र का फिर एकीकरण कर दिया। इस प्रकार इस वंश में पाँच शासक हुए और अन्त में एक हो गये।

बाइसवाँ वंश (९४० से ७३० ई० पू० तक) : इस वंश में नौ शासक हुए। कई शासकों के नाम ज्ञात नहीं और न उनका शासन काल ज्ञात है। २१वें वंश के शासन काल में लीबिया (Libya) के निवासी उत्तरी भाग में बस गये। यह लोग अच्छे सैनिक थे इसी कारण डेल्टा के गढ़ों के कमाण्डर नियुक्त किये गये थे। इन्हीं में से एक कमाण्डर हिरेक्लियोपोलिस में आकर बस गया था। इसका पुत्र शिशांक (Sheshonk) या शिशाक (Shishak) बड़ा शक्तिशाली था। वह बुबास्तिस (Bubastis) या बास्त (Bast) के गढ़ का कमाण्डर था। अवसर को देख कर अपने को स्वतन्त्र घोषित करके डेल्टा का नरेश बन गया। अपने पुत्र ओस्कोर्न (Oskorn) को मुख्य पुजारी नियुक्त किया और बुबास्तिस को ही अपनी राजधानी बनाया। इस वंश का अन्तिम शासक शेशांक चतुर्थ था।

तेईसवाँ वंश (८१७ से ७३० ई० पू० तक) : इस वंश का संस्थापक पेदुपास्त (Pedupast) था जिसने थीबीज को परास्त कर इस वंश की नींव डाली। इस वंश में छः शासक हुए ओस्कोर्न चतुर्थ था। इस वंश के शासनकाल में एक और छोटा राज्य मेम्फिस से असीयुत (Assiut) तक स्थापित हो गया था।

चौबीसवाँ वंश (७३० से ७१५ ई० पू० तक) : इस वंश का संस्थापक तेफ़नख़त था। यह साइस (Sais) नगर का एक प्रभावशाली व्यक्ति था। जब गृहयुद्ध चल रहा था तब इसने शेशांक चतुर्थ (२२वें वंश का अन्तिम शासक) को परास्त कर सिंहासनाखंड हाँ गया और बाद में मेम्फिस व हिरेक्लियोपोलिस को अपने अधीन कर उत्तरी मिस्र का शासक बन गया। परन्तु पच्चीसवें वंश के संस्थापक पियांखी ने इसको परास्त कर दिया और डेल्टा को अपने अधीन कर लिया। जब वह दक्षिण की ओर चला गया तो डेल्टा में फिर अराजकता फैलने लगी। इसी अवसर को तेफ़नख़त ने हाथ से न जाने दिया और वह फिर शासक बन गया। उसने उत्तरी मिस्र पर अपना अधिकार कर लिया। इसके मरणोपरान्त इसका पुत्र बोक्कहोरिस (Bocchoris) शासक बना। यही इस वंश का अन्तिम शासक था। इस वंश में केवल दो ही शासक हुए।

1. इक्कीसवाँ का नष्ट - अष्ट राजधानी अवारिस के अवशेषों पर टैनिस (Tanis) का नगर सम्भवतः रेमेसेज द्वितीय ने बसाया था जो डेल्टा की उपराजधानी हो गया था।

छब्बीसवाँ वंश (७५१ से ६६३ ई० पू० तक) : इस वंश का संस्थापक एक नूबिया^१ निवासी प्रभावशाली व्यक्ति पियांखी था। यहाँ के नीग्रो निवासियों ने मिस्र का धर्म अपना लिया था। इसकी राजधानी नपाता (Napata) थी। इसी ने तेफनख्त की बढ़ती सेना को परास्त किया। पियांखी के उत्तराधिकारी ने बोक्कहोरिस को परास्त किया जो डेल्टा का शासक था। इसका नाम शबाका (Shabaka) था। इसी समय असीरिया के शासक सेनाखरिब ने सीरिया पर आक्रमण कर दिया। मिस्र को उसके आक्रमण से बचाने के कारण शबाका ने असीरिया की सेना पर आक्रमण कर दिया परन्तु असीरिया की सेना में एक महामारी फैलने के कारण सेनाखरिब को असीरिया वापस लौटना पड़ा।

शबाका की मृत्यु पर उसका पुत्र शबातका (Shabataka) शासक बना, तदनन्तर पियांखी का दूसरा पुत्र तहारका (Taharka) शासक बना। इसने टैनिस् को अपनी राजधानी बनाया।

अबकी बार असीरिया के नरेश अशुरहेदन ने मिस्र के राज्य को, जो सदैव सीरिया का सहायक बना रहता था, पूर्णतया नष्ट करने की ठान ली और ६७१ ई० पू० में आक्रमण कर दिया। वह नगरों को परास्त करता हुआ मेम्फिस पहुँच गया। तहारका का कुटुम्ब बन्दी बना लिया गया परन्तु तहारका नूबिया की ओर भाग गया। सारे मिस्र ने अपनी पराजय मान ली। साइस व थीबीज के शासकों ने भी अधीनता स्वीकार कर ली।

अशुरहेदन की मृत्यु पर तहारका ने फिर मिस्र को जीत लिया परन्तु असीरिया के नये शासक अशुर-बनीपाल ने फिर आक्रमण कर दिया और तहारका को फिर दक्षिण की ओर भागना पड़ा। बोक्कहोरिस के पुत्र नीको ने अशुरबनीपाल की बड़ी सहायता की जिससे प्रसन्न होकर उसने नीको (Necho) को बहुत से उपहार भेंट किये और उसको साइस का शासक बना दिया। अशुरबनीपाल ने थीबीज को ऐसा नष्ट किया कि वह अपनी प्राचीन ख्याति को फिर प्राप्त न कर सका। असीरिया ने फिर कभी मिस्र पर आक्रमण नहीं किया क्योंकि वह स्वयं बेबीलोनिया के शासक नेबूपलासर द्वारा नष्ट कर दिया गया।

इस वंश का अंतिम नरेश तानूतामोन (Tanutamone) था जिसने केवल एक वर्ष राज्य किया।

इस वंश के निम्नलिखित शासक थे :—

१. पियांखी	—	७३० से ७१६ तक
२. शबाका	—	७१६ से ७०१ तक
३. शबातका	—	७०१ से ६८९ तक
४. तहारका	—	६८९ से ६६३ तक
५. तानूतामोन	—	६६३ से ६६२ तक

छब्बीसवाँ वंश (६६२ से ५२५ ई० पू० तक) : इस वंश के निम्नलिखित शासक थे :—

१. नीको ^२ या नेकाउ	—	६६२ से ६०९ तक
२. सामतिक प्रथम (Psamtik)	—	६०९ से ५९४ तक
३. सामतिक द्वितीय	—	५९४ से ५८८ तक
४. एप्रीज (Apries)	—	५८८ से ५६८ तक
५. अमासिस द्वितीय (Amasis II)	—	५६८ से ५२६ तक
६. सामतिक तृतीय	—	५२६ से ५२५ तक

१. इसी नूबिया को आज इथियोपिया (Ethiopia) कहते हैं।

२. कुछ विद्वानों का मत है कि सामतिक प्रथम इस वंश का संस्थापक था।

इस वंश का संस्थापक नीको था। उसके मरणोपरांत उसके पुत्र सामतिक प्रथम ने सैनिकों को जमा किया और असीरिया के निवासी सैनिकों को मिस्र से बाहर निकाल दिया। इसी काल में ग्रीस के निवासी बड़ी संख्या में यहाँ आकर बसने लगे। उन्होंने अपना एक नगर भी स्थापित कर लिया जिसका नाम नाक्रोटिस (Naucratis) था। अब कला का तथा व्यापार का केन्द्र नील नदी से हटकर डेल्टा में आ गया था। यही केन्द्र अब मिस्र की सभ्यता का भी प्रतिनिधित्व करने लगा था। इसकी राजधानी साइस थी। अब यहाँ सुन्दर भवनों व मन्दिरों का भी निर्माण होने लगा था। सामतिक तृतीय के शासनकाल में पर्शिया की एक विशाल सेना ने, जिसका नेतृत्व कैम्बेसिज कर रहा था, ५२५ ई० पू० में आक्रमण कर दिया और सारे देश को अपने अधीन कर लिया।

सत्ताइसवाँ वंश : (५२५ से ४०४ ई० पू० तक) — इस वंश के शासक पर्शिया के शासक थे जो निम्नलिखित हैं :—

१. कम्बेसिज	—	५२५ से ५२२ ई० पू० तक
२. डेरियस प्रथम	—	५२२ से ४८६ ,, ,, तक
३. जरक्सिज प्रथम	—	४८६ से ४६५ ,, ,, तक
४. आर्तजरक्सिज प्रथम	—	४६५ से ४२४ ,, ,, तक
५. डेरियस द्वितीय	—	४२४ से ४०४ ,, ,, तक

कैम्बेसिज और डेरियस प्रथम ने तो बड़ी उदारता से मिस्र पर शासन किया परन्तु अन्य पर्शिया के शासकों ने बड़े अत्याचारात्मक ढंग से राज्य किया। आन्दोलन व क्रान्तियाँ आरम्भ हो गयीं। इनमें ग्रीस निवासियों ने मिस्र वालों का साथ दिया क्योंकि वह तो पहले से ही पर्शिया से द्वेष रखते थे। एक नौसेना का वेड़ा भी मिस्र की सहायता के लिये पहुँच गया जिसके कारण पर्शिया के शासकों का शासन ४०४ ई० पू० में समाप्त हो गया।

अट्ठाइसवाँ वंश (४०४ से ३९८ तक) : इस वंश का संस्थापक अमेनरतायस (Amenertais अथवा Amyrtaios) था तथा अंतिम शासक भी था। इस वंश का केवल यही शासक था। तदनन्तर जो शासक बने वह मिस्र के राजवंश के न थे।

उत्तीसवाँ वंश (३९८ से ३७८ ई० पू० तक) : इस वंश के निम्नलिखित शासक हुए :—

१. नेफरीतिस प्रथम (Nefertitis I)	—	३९८ से ३९३ तक
२. मौथिस — अखोरिस (Mouthis — Akhoris)	—	३९३ से ३९१ तक
३. सामोथिस (Psammouthis)	—	३९१ से ३९० तक
४. हकोरिस (Hakorisis)	—	३९० से ३७८ तक
५. नेफरीतिस द्वितीय	—	३७८ से ३७८ तक

उपर्युक्त शासकों ने ग्रीस निवासियों की सहायता से नाममात्र शासन किया। अन्तिम शासक ने केवल तीन माह ही शासन किया।

तीसवाँ वंश (३७८ से ३४१ ई० पू० तक) : इस वंश के निम्नलिखित शासक हुए :—

१. नेक्टानेबो प्रथम (Nectanebo)	—	३७८ से ३६० तक
२. तिपास (Teos)	—	३६० से ३५९ तक
३. नेक्टानेबो द्वितीय	—	३५९ से ३४१ तक

इस वंश में तिपास ने ही एशिया के कुछ भागों को अपने अधीन किया परन्तु तिपास के भ्राता ने उसके विरुद्ध एक षड्यन्त्र रचा जिसके कारण तिपास को भाग कर पशिया के शासक आर्तज़रक्सीज़ तृतीय की शरण में जाना पड़ा और सिंहासन पर उसका भ्राता नेवतानेबो द्वितीय ने अधिकार कर लिया। यही शासक इस वंश का अन्तिम शासक था।

एकतीसवाँ वंश (३४१ से ३३२ ई० पू० तक) : इस वंश के शासक पशिया के भी निम्नलिखित शासक थे :—

१. आर्तज़रक्सीज़ तृतीय	— ३४१ से ३३८ तक
२. आर्सीज़	— ३३८ से ३३६ तक
३. डैरियस तृतीय	— ३३६ से ३२२ तक

आर्तज़रक्सीज़ के आक्रमण ने मिस्र की स्वतंत्रता का अंत कर दिया जो लगभग बीसवीं सदी में प्राप्त हुई।

३३२ में सिकन्दर ने पशिया को परास्त कर मिस्र में पदार्पण किया और ग्रीस लौटने की योजना बनाई। उसने अपने राज्य को अपने सैनिक अधिकारियों में विभाजित करके उनको प्रांतपति नियुक्त कर दिया परन्तु उसके मरणोपरांत ये स्वतंत्र शासक बन गये। मिस्र में इसको कोई युद्ध नहीं करना पड़ा। उसने सिकन्दरिया (Alexandria) नगर का निर्माण करवाया। कहा जाता है कि उसको यहीं दफनाया गया परन्तु उसके मकबरे का पता नहीं लगा। मिस्र का उसने अपने एक जनरल टालेमी लैगास (Ptolemy Lagos) को प्रांतपति बना दिया।

ग्रीक वंश (३३२ से ३० ई० पूर्व तक) इस वंश के निम्नलिखित शासक हुए :—

१. सिकन्दर तृतीय	— ३३२ से ३२३ तक
२. अर्रहीडियस (Arrhidacus)	— ३२३ से ३१६ तक
३. सिकन्दर चतुर्थ	— ३१६ से ३०४ तक
४. टॉलेमी लैगास	— ३०४ से २८३ तक
५. ,, द्वितीय फ़िलेडेलफ़स (Philadelphus)	— २८३ से २४६ तक
६. ,, तृतीय योरीगेटिस प्रथम (Euergetes I)	— २४६ से २२२ तक
७. टॉलेमी चतुर्थ फ़िलोपेतर (Philopatar)	— २२१ से २०५ तक
८. ,, पंचम एपीफेन्स (Epiphanas)	— २०५ से १८० तक
९. ,, षष्ठम फ़िलोमेटोर (Philometor)	— १८० से १४५ तक
१०. ,, सप्तम योरीगेटिस द्वितीय	— १४५ से ११६ तक
११. ,, अष्टम सोतर (Soter)	— ११६ से १०७ तक
१२. ,, नवम सिकन्दर प्रथम	— १०७ से ८८ तक
१३. ,, दशम सोतर द्वितीय	— ८८ से ८० तक
१४. ,, एकादश सिकन्दर द्वितीय	— ८० से ५९ तक
१५. ,, द्वादश	} इन तीनों ने क्लियोपेट्रा ^१ (Cleopatra) के साथ राज्य किया
१६. ,, त्रयोदश	
१७. ,, चतुर्दश	

१. इसका उच्चारण 'क्लियोपेट्रा' तथा 'क्लयापेट्रा' भी है।

सिकन्दर की ३२३ ई० पू० में बेबीलोन में मृत्यु के पश्चात् उसके सेनापतियों में युद्ध आरम्भ हो गया । कुछ सैनिक अधिकारियों ने सिकन्दर के भ्राता आदि का वध कर दिया और टॉलेमी लैगास मिस्र का शासक बना । इसने मिस्र के देवताओं की पूजा की । मिस्र की संस्कृति को अपनाया । नये-नये नगरों का निर्माण किया । सिकन्द्रिया में एक विशाल पुस्तकालय तथा एक विशाल संग्रहालय स्थापित किया । टॉलेमी द्वितीय भी अपने पिता की भाँति विज्ञान तथा कला का संरक्षक था । उसने भी कोई युद्ध नहीं किया । उसने एक जलदीप (लाइट हाउस) का सिकन्द्रिया में निर्माण करवाया तथा लगभग बीस सहस्र पुस्तकें लिखवाई ।

टॉलेमी तृतीय पशिया पर आक्रमण करके बहुत सा धन लूट कर लाया । चतुर्थ बड़ा अत्याचारी था इसी कारण उसके मरणोपरांत जनता ने उसकी पत्नी तथा उसके अन्य साथियों का वध कर दिया परन्तु संरक्षकों ने उसके पुत्र को बचा लिया जो टॉलेमी पंचम बना । वह भी अपने पिता की तरह बड़ा भोगी था । इन दिनों रोम की शक्ति बढ़ती जा रही थी ।

टॉलेमी एकादश की पुत्री का संरक्षक पाम्पेइ (Pompey) बना जो अपने भ्राता टॉलेमी द्वादश के साथ सह-शासक बनी परन्तु उनके सम्बन्ध अच्छे न थे । पाम्पेइ अपने विरोधी जूलियस सीज़र (Julius Caesar) के साथ युद्ध करने गया जब पाम्पेइ हार गया तो भाग कर अपने पालक-पुत्र टॉलेमी द्वादश से सहायता की याचना की परन्तु टॉलेमी ने उसका वध करवा दिया । सीज़र पाम्पेइ का पीछा करते करते मिस्र पहुँचा और वह क्ल्योपेट्रा से प्रेम करने लगा और उसको सहयोग भी दिया । टॉलेमी ने सीज़र पर आक्रमण कर दिया और परास्त होकर नदी में डूब गया । सीज़र ने क्ल्योपेट्रा के ११ वर्षीय छोटे भाई को टॉलेमी त्रयोदश के नाम से शासक बनाया जिसका क्ल्योपेट्रा ने अपने संकेत से वध करवा दिया । क्ल्योपेट्रा ने तब अपने पुत्र को, जो सीज़र द्वारा उत्पन्न हुआ था, टॉलेमी चतुर्दश के नाम से शासक बनाया ।

४४ ई० पू० में ब्रूटस ने सीज़र का वध कर दिया जिसके कारण रोम में गृह-युद्ध आरम्भ हो गया । क्ल्योपेट्रा ने ब्रूटस का पक्ष लिया परन्तु जब सीज़र के मित्र मार्क एन्टोनी (Mark Antony) द्वारा ब्रूटस की हार हुई तो एन्टोनी ने क्ल्योपेट्रा को बुलवाया, यह कारण पूछने कि उसने क्यों ब्रूटस का पक्ष लिया । क्ल्योपेट्रा अपनी भव्यता के साथ एक सुसज्जित नौका पर एन्टोनी से मिलने गयी जो उसकी सुन्दरता पर मोहित हो गया और उसी के साथ अपना जीवन भोग-विलास में बिताने के लिए मिस्र चला आया ।

आक्टेवियस (Octavius) सीज़र का दत्तक पुत्र था । वह रोम में शक्तिशाली हो गया और ३२ ई० पू० में युद्ध के लिए तत्पर हो गया । इधर एन्टोनी ने भी एक नौसेना तैयार की और उसके साथ क्ल्योपेट्रा ने भी अपनी नौसेना को भी जोड़ दिया । युद्ध में एन्टोनी हार गया । इस कारण एन्टोनी और क्ल्योपेट्रा ने आत्महत्या कर ली ।

तत्पश्चात् ३० ई० पू० से मिस्र रोम के साम्राज्य में मिला लिया गया जिसका सम्राट आक्टेवियस बना और अपना नाम सीज़र आगस्टस रख लिया ।

मिस्र रोम के अन्तर्गत^१ अब आगस्टस मिस्र को अपनी व्यक्तिगत भूसम्पदा मानने लगा । अब मिस्र में रोमनों को उच्च पदों पर नियुक्त किया जाने लगा । रोमन सम्राट के प्रतिनिधि के रूप में प्रशासक (Prefect) नियुक्त किये जाने लगे जो मिस्र के नरेश माने जाने लगे । उनकी तालिका निम्नलिखित है:—

१. कॉर्नेलियस गैलस (Cornelius Gallus) जिसने फ़िलाई को अपनी राजधानी बनाया ।

1. यह पाठ लिया गया है : - 'Encyclopaedia Britannica, Vol. VIII P. - 63.

२. गैलरियस (Galerius), जिसने केवल छः माह शासन किया ।
३. गाइयस पेत्रोनियस (Gaius Petronius) जिसने नहरों को साफ़ करवाया तथा इथियोपिया के आक्रमणों को रोका ।
४. क्लाडियस (Claudius) ने मिस्र के लिये भारत से मसालों का व्यापार आरम्भ कर दिया जिससे अरब देशों की बड़ी आर्थिक हानि उठानी पड़ी ।
५. अवोदियस कैसियस (Avidius Cassius) ने सीरिया तथा मिस्र की सेना लेकर इथियोपिया पर आक्रमण कर दिया तथा रोम के विरुद्ध क्रान्ति करके स्वयं रोम — सम्राट बन गया । जब १७५ ई० में मार्कस औरेलियस (Marcus Aurelius) तत्कालीन रोमन सम्राट, जब मिस्र आया तो कैसियस का बघ उसी के सहयोगियों द्वारा कर दिया गया ।
६. कारैकला (Caracalla) ने २०२ ई० में ईसाईयों पर बड़े अनर्थ किये । अनेक युद्ध करने योग्य नवयुवकों का वध करवा दिया ।
७. डेकियस (Decius) ने २५० में पुनः ईसाईयों को यन्त्रणार्थ देना आरम्भ कर दिया ।
८. एमीलियेनस (Aemilianus) जिसने अपना नाम एलेक्जेन्डर रखकर एलेक्जेन्ड्रिया में अपने आपको रोमन सम्राट घोषित कर दिया । तत्कालीन रोमन सम्राट गैलियेनस (Gallienus) ने उसको परास्त कर दिया ।
९. औरेलियन (Aurelian) ने २७३ में, पालमीरा की महारानी जेनोबिया (Zenobia) ने मिस्र को परास्त कर अपने अधिकार में कर लिया था, पुनः मिस्र को अपने अधिकार में कर लिया ।
१०. प्रोबस (Probus) ने इथियोपिया की जन जातियों को जो सदैव मिस्र पर आक्रमण करती थी, दूर खदेड़ दिया । अब प्रशासक गवर्नर कहलाये जाने लगे ।

अब मिस्र में आये दिन क्रान्तियाँ गृहद्वियों व ईसाईयों में मार — काट तथा रोमन व ईसाईयों में वैर, क्योंकि रोमन बहु — मूर्ति — पूजक थे तथा ईसाई एकेश्वरवादी, बढ़ने लगे । उधर दक्षिण की जन जातियों के आक्रमण पुनः आरम्भ हो गये । धर्म और राजनीति में कोई अन्तर न रहा । प्रतिदिन अराजकता बढ़ती गई तथा एक लम्बे काल तक गृह — युद्ध चलता रहा । जनता असुरक्षित हो गई । मिस्र रोमन राज्य का अंग न रहा । पर्सिया के सम्राट खुशरो ने ६१६ में मिस्र पर आक्रमण कर दिया और दस वर्ष राज्य किया । रोमन सम्राट हिरेक्ल्यस (Heraclius) ने पुनः मिस्र पर अधिकार कर लिया जो शनैः शनैः संकुचित होकर केवल एलेक्जेन्ड्रिया पर रह गया ।

६३९ में खलीफा उमर ने ४००० योद्धाओं के साथ मिस्र पर आक्रमण किया । ६ जून ६४० में पुनः खलीफा उमर ने १२,००० सैनिकों को भेजा जो हेल्योपोलिस पहुँच गये । युद्ध हुआ और ८ नवम्बर ६४१ को मिस्र परास्त हो गया । इस युद्ध में ईसाईयों (Copts) ने मुसलमानों को पर्याप्त सहयोग दिया परन्तु विजय के पश्चात् मुसलमानों ने ईसाईयों तथा रोमनों के साथ निष्ठुरता का व्यवहार किया ।

६४२ में मक्का के खलीफा ने अपना एक सूबेदार नियुक्त कर दिया । ६६१ से ७५० तक यह उमैय्यद के उमैय्यदों के वंशज खलीफा का एक प्रांत रहा तदनन्तर यह अब्बास के वंशज खलीफाओं के, जो बग़दाद में शासन करते थे, अधीन हो गया । जब खलीफा की सत्ता क्षीण होने लगी तो मिस्र प्रांत के तथा अन्य प्रांतों

के प्रान्तपति अपनी सत्ता बढ़ाने लगे । मिस्र के प्रान्तपति अहमद इब्न तुलुन ने एक शासक वंश की स्थापना की जिसने ८६८ से ९०५ ई० तक मिस्र में शासन किया । लगभग ३० वर्ष के पश्चात् एक तुर्क वंश की नींव पड़ी जिसने ९३५ से ९६९ तक मिस्र पर शासन किया ।

इस वंश के पश्चात् यूनीशिया के फ़ातिमी खलीफ़ाओं का शासन आरम्भ हुआ । यह खलीफ़ा शिया जाति से सम्बन्धित थे । इस वंश ने ९६९ से ११७१ ई० तक राज्य किया । इस वंश के शासकों ने मिस्र में बड़े बड़े काम किये । इसी वंश के एक सेनापति जवहार ने ९६९ में काहिरा तथा अल-हज़र मसजिद का निर्माण करवाया । इसका राज्य केवल ९७२ तक रहा । काहिरा ही कायरो के नाम से आधुनिक मिस्र की राजधानी स्थापित हुई । एक अन्य शासक अल हकीम ने (९९६ से १०२१ तक), जो एक पागल शासक माना जाता है, गिरजाघर की एक पवित्र समाधि को १००९ में नष्ट — ध्वस्त कर दिया जिसके कारण धार्मिक युद्ध^१ हुए ।

इस वंश के पश्चात् सुन्नियों के वंशों ने (अयूबी तथा ममलूकी) १५१७ तक राज्य किया । अंतिम ममलूकी शासक सुल्तान तुमन बे एक तुर्की सुल्तान सलीम प्रथम द्वारा २२ जनवरी १५१७ ई० को काहिरा के समीप परास्त किया गया । यह पराजय सुल्तान तुमन के एक सैनिक उच्च पदाधिकारी खैर बेग के कारण हुई क्योंकि वह तुर्की सेना से मिल गया ।

अब मिस्र पर तुर्की प्रान्तपति शासन करने लगे जिनको 'पाशा' के शब्द से सम्बोधित किया जाता था । इन पाशाओं के शासनकाल में मिस्र अवनति की ओर अग्रसर होने लगा जो अवनति अठारहवीं श० में अराजकता में उसी प्रकार परिवर्तित हो गई जैसी छठे वंश के शासनकाल के पश्चात् हुई थी । विरुद्ध टोलियों के झगड़े सड़कों पर होते रहते थे । इस अराजकता का अन्त नेपोलियन ने अपने एक आक्रमण द्वारा कर दिया । इस आक्रमण ने योरोप निवासियों को मिस्र का एक व्यवस्थित तथा वैज्ञानिक ज्ञान प्रदान किया तथा मिस्र को योरोपीय शासन तथा सभ्यता का सर्वप्रथम अवसर प्रदान किया । १८०१ में अंग्रेजों के आक्रमण ने फ्रांस की सेना को परास्त किया तथा उनको मिस्र छोड़ना पड़ा ।

१८०५ में अल्बेनिया का मेहमत अली (मोहम्मद अली) पाशा बना जिसने इस शासक वंश की स्थापना की और १८४८ तक शासन किया । १८१८ में इसने बहादुरियों की एक क्रांति का दमन किया । नूबिया तथा सुडान के राजाओं को शान्त किया । १८३२ में उसके पुत्र इब्राहीम पाशा ने सीरिया को परास्त किया तथा १८४० तक उसको अधीन रखा परन्तु फ्रांस व ब्रिटेन की सेनाओं ने जो तुर्की के पक्ष में युद्ध कर रहीं थीं सीरिया को स्वतन्त्र करा लिया । अब मिस्र के पाशा वंशानुगत शासन करने लगे । १८८२ में ब्रिटेन ने सिकन्दरिया पर बम फेंके और मिस्र को अपने अधीन कर लिया । ब्रिटेन ने स्वयं शासन नहीं किया परन्तु पाशा ही, जो अब खेदिव के नाम से ज्ञात होने लगे, उसके संरक्षण में आ गये । तदनन्तर १९२२ में फ़ुआद प्रथम मिस्र का स्वतन्त्र शासक हुआ । तत्पश्चात् उसका पुत्र फारूक प्रथम गद्दी पर विराजमान हुआ । द्वितीय महायुद्ध में मिस्र की सरकार ने जापान व जर्मनी के विरुद्ध युद्ध करने की घोषणा कर दी ।

२६ जुलाई १९५२ को जनरल मोहम्मद नजीब के नेतृत्व में एक सैनिक क्रांति हुई और फारूक गद्दी व मिस्र छोड़कर भाग गया और अपने पुत्र, जो एक शिशु था, फ़ुआद द्वितीय को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त

कर गया। १८ जून १९५३ को मिस्र एक गणतन्त्र राज्य घोषित कर दिया गया। नजीब उसका प्रथम प्रधान मंत्री तथा राष्ट्रपति नियुक्त हुआ। १९५४ में जमल^१ अब्दुल नासिर ने सत्ता अपने हाथ में ले ली। १९७० में इसकी मृत्यु के पश्चात् सादात राष्ट्रपति बने। इस्लाम से सन्धि करने के कारण उनका वध कर दिया गया।

कुछ शासकों व नगरों के नाम जिनको ग्रीक भाषा में परिवर्तित किया गया

ग्रीक भाषा	शासकों के नाम	मिस्री भाषा
१. मेनेज (Menes)	नारमर (Narmer)	
२. केयोप्स (Cheops)	खूफू (Khufu)	
३. केफ्रेन (Chephren)	खेफ्रे (Khafre)	
४. पेपी प्रथम (Pepi I)	मेरीरे (Meryre)	
५. पेपी द्वितीय (Pepi II)	नेफेरकारे (Neferkare)	
६. बोष्क होरिस (Boce horis)	बेकेन्रेनेफ (Bekenrenef)	
७. नीको (Necho)	वाह इब रा (Wah - ib - ra)	
८. सामतिक द्वितीय (Psamtik II)	नेफ्रेत इब रा (Nefret - ib - ra)	
९. एप्रोज (Apries)	हा इब रा (Haa - ib - ra)	
१०. अमासिस (Amasis)	खेनुम इब रा (Khnum - ib - ra)	
११. सामतिक तृतीय (Psamtik III)	अंख का इब रा (Ankh - ka - ib - ra)	
१२. अखोरिस (Akhoris)	हेकर (Haker)	
१३. नेक्तानेबो प्रथम (Nectanebo I)	नेख्त नेबेफ (Nekht Nebef)	
१४. नेक्तानेबो द्वितीय (Nectanebo II)	नेख्त होर हेब (Nekht - hor - heb)	

नगरों के नाम

१. टैनेस (Tanis)	पर रेमेसीज (Per Ramses)
२. नौक्रैटिस (Naucratis)	पर मेरी (Per Meri)
३. बुबास्टस (Bubastis)	बास्त (Bast)
४. हेलियोपोलिस (Heliopolis)	ओनु (Onu)
५. मेम्फिस (Memphis)	मेन नेफर (Men Nefer)
६. हिक्रोकोनपोलिस (Hierakonpolis)	नेखेन (Nekhen)
७. एल काब (El Kab)	नेखेब (Nekheb)
८. लिश्न (Lisut)	इथ एत तवी (Ith - at - Tawi)
९. थीबीज (Thebes)	वेसी (Wesi)

1. जमल के अर्थ हैं 'ऊँट'। अब्दुल नासिर बहुत लम्बा होने के कारण ऊँट अब्दुल नासिर के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

कुछ अन्य शब्द

भारतीय भाषा	मिस्री भाषा
१. देखना	मा (आँख का चित्र)
२. रोना	रेम (रोने के लिए आँसू)
३. चलना	ई (दो पैरों का चित्र)
४. तीर	खिन
५. पेपर (पेपिरी)	प-पी-युर (coptic = पापीऊर)
६. हवाबील पक्षी और बड़ा	वर (पक्षी का चित्र)
७. गुबरीला	खेपर
८. कान	मसदर या स्दम = सुनना
९. मुँह	हर (मुँह का चित्र)
१०. दिन	हर वू
११. पक्षी का पर	श्वेत
१२. टोकरी	नेबेत
१३. भगवान	नेब

मिस्र देश की लेखन कला

जिस प्रकार अन्य प्राचीन देशों में लेखन कला का जन्म चित्रों द्वारा हुआ उसी प्रकार मिस्र में भी दैनिक प्रयोग में आने वाली वस्तुओं के चित्रों द्वारा लेखन कला का जन्म हुआ। इसका आरम्भिक काल विद्वानों ने लगभग ३५०० ई. पू० माना है क्योंकि यह प्रमाणित हो चुका है कि मेने के शासनकाल में यहाँ चित्र-लिपि प्रचलित थी। ग्रीस निवासियों ने इसका नाम हेरोग्लिफिक्स (Hieroglyphics) अथवा हेरोग्लिफ्स (Hieroglyphs) रखा जिसके अर्थ हैं 'उत्कीर्ण की हुई पवित्र लिपि' (Hieros = पवित्र; Glyphein = उत्कीर्ण करना)। इसका यह नाम इसलिये ही पड़ा क्योंकि यह मन्दिरों पर उत्कीर्ण की जाती थी। यूनानी भाषा में इसका नाम हेरोग्लिफिकन (Hieroglyphikon) था। इसका अन्तिम पाठ २४ अगस्त ३९४ ई० में लिखा गया तत्पश्चात् इसका ज्ञान लोप हो गया। लगभग १६०० वर्ष पश्चात् इस चित्र लिपि को जानने की उत्कण्ठा पुनः जागृत हुई और संसार के विद्वान् इसको पढ़ने का प्रयास करने लगे।

१४९९ में : सर्वप्रथम होरापोलो (Horapollo) की लिखी एक पुस्तक^१ बोंन्देलमोन्ते (Boundelmonte) को ग्रीस के एक द्वीप अन्ड्रोस में प्राप्त हुई जिसमें इस चित्र लिपि के विषय में विस्तार से लिखा गया था। इसको १४०५ में ऐल्डस (Aldus) द्वारा प्रकाशित किया गया।

१४३५ में : सर्वप्रथम सीरियक (Cyriac)^२ मिस्र आया और उसने उसी पुस्तक (होरापोलो को) को अपने एक मित्र निकोलो निकोली (Niccolo Nicoli) को फ्लोरेंस में भेज दी।

1. Pope, M. : The Story of Decipherment (London - 1975), p. - 24.

2. Pope, M. : The Story of Decipherment (1975), p. - 11.

१५५६ में : सर्वप्रथम दो विद्वान मिल आये । एक जी० वी० पी० बोल्ज़नी (G. V. P. Bolzani), जिसने अपने पढ़ने के प्रयास के निष्कर्ष एक पुस्तक^१ में प्रकाशित किये जो बाद में असंगत, अशुद्ध तथा क्रमहीन सिद्ध हुए । दूसरा पीरियस वनेरियेनस (Pierius Valerianus), जिसने अपना शोध कार्य एक पुस्तक^२ में प्रकाशित किये ।

१६३१ में : एन० कासीन (N. Caussin) आया उसने इस लिपि के कुछ चित्र लेकर एक पुस्तक^३ प्रकाशित की ।

१६३६ में : एक जिसूट^४ (Jesuit) अथानासियस किर्चर^५ (Athanasius Kircher) ने, जो गणित का प्राध्यापक था, अपना कॉप्टिक (Coptic) लिपि पर शोध कार्य १६४३ में रोम में प्रकाशित कराया । यह प्रथम विद्वान् था जिसने कॉप्टिक की व्याख्या की । तदनन्तर उसने हेरोग्लिफ्स को पढ़ने का प्रयास किया और तीन खण्डों में उनको १६५० में प्रकाशित किया । इस शोध कार्य के कारण वह मरणोपरांत (१६८० - मृत्यु) भी कई वर्षों तक एक महान् मिश्रवेत्ता माना जाता रहा क्योंकि उस समय उसके शोध कार्य^६ का कोई खण्डन करने वाला नहीं था परन्तु उन्नीसवीं श० में उसका यह शोध कार्य निरर्थक सिद्ध हुआ । किर्चर के इस कार्य का और कुछ लाभ तो न हुआ परन्तु उसके कार्य ने विद्वानों तथा वैज्ञानिकों के मन में उस ओर शोध कार्य करने की एक जागृति तथा उत्सुकता अवश्य उत्पन्न कर दी ।

१७१५ में : चैम्बरलेन (Chamberlayne) ने एक पुस्तक^७ १५२ भाषाओं में प्रकाशित की जिसके द्वारा मिस्र की कॉप्टिक भाषा अनेक योरोपीय निवासियों को ज्ञात हो गई ।

१७४० में : एक अंग्रेज पादरी विलियम वर्बर्टन (Willam Warburton, १६९८-१७७९) मिस्र आया और चित्र लिपि को देखकर कहा कि यह चित्र केवल संकेतात्मक चित्र नहीं हैं और न उत्कीर्ण - पाठ केवल धार्मिक हैं । यह तो पूर्ण लिपि है ।

१७४२ : अब्बे बारथेलेमी (Abbe Barthelemy) ने हेरोग्लिफ्स लिपि के कुछ चिन्हों की ध्वनियों को पहचानने^८ का प्रयास किया ।

1. Bolzani, G. V. P. : Hieroglyphica (1557)
2. Valerianus, P. : The Hieroglyphs (1556) - Printed in Basle.
3. Caussin, N. : de Symbolica Aegyptiorum Sapientia (The Symbolic Wisdom of Egypt - Cologne)
4. ईसाई धर्म की एक शाखा का नाम है जिसको इग्नेशस लोयला (Ignatius Loyala) ने १५३४ में आरम्भ किया था ।
5. इस शब्द का यूनानी भाषा में अर्थ 'अमर' है ।
6. Kircher, A. : Prodrum Coptus Sive Aegyptiacus (Introduction to Coptic or Egyptian), 1643.
7. „Lords Prayer in 15 language”.
8. Doblhofer, E. : Voices in stone (1961), p. - 44.

१७४५ में : मेरकटी (Mercati) ने भी मिस्र की इस गूढ़ चित्र लिपि पढ़ने के प्रयास किये जो निष्फळ सिद्ध हुए ।

अठारहवीं श० में : विद्वानों की एक होड़ सी लग गई और निम्नलिखित विद्वान् इस क्षेत्र में चित्र लिपि के गूढ़ाक्षरों के रहस्योद्घाटन के लिए सलग्न हो गये :—

पी० लुकास (P. Lucas), आर. पौकोकी (R. Pococke), सी० नीबुह (C. Niebuhr) यफ० यल० नॉर्डन (F. L. Norden), ए. जॉर्डन (A. Gordon), यन. फ़रेट (N. Freret), पी० ए० यल० डी ओरिग्नी (P. A. L. D' Origny), जे० डी० मार्शम (J. D. Marsham), सी० डी गेबेलिन (C. De Gebelin), जे० एच० शूमेकर (J. H. Schumacher), जे० जी० कोच (J. G. Koch), टी० सी० टाइक्सेन (T. C. Tychem), पी० ई० जबलोन्सकी (P. E. Jablonski), जे० जे० बार्थेलेमी (J. J. Barthelemy), डी गुइग्नेस (De Guignes) तथा जी० जोयगा (G. Zoega) । इन विद्वानों के प्रयास चित्रलिपि की समस्या को सुलझा न सके । उनके शोध विवादास्पद रहे । इतना अवश्य निष्कर्ष निकला कि इस लिपि में जो चित्र गोल घेरों (कार्टूश - Cartouches) के अन्दर उत्कीर्ण हैं वे फ़ेराओं या शासकों एवं शासिकाओं के नाम हैं ।

(कार्टूश) एक रस्सी का गोला सा था जो उन शासकों का नाम घेरे हुए होती थी और उसमें एक ग्रन्थि सी लगाकर रस्सी को सीधा कर दिया जाता था । इससे यह सिद्ध किया गया कि रस्सी सूर्य देवता की गोलाई का प्रतीक थी तथा सूर्य, जो मिस्र देशवासियों का मुख्य देवता था और वहाँ का शासक उसका पुत्र माना जाता था, शासक को अपने घेरे में सुरक्षित रखा करता था । जब नाम कुछ बड़े होमे लगे तो उस ग्रन्थि की गोलाई भी कुछ लम्बी होने लगी । 'फ० सं० - २८६' पर न्यूयेवा का कार्टूश दिया गया है ।

जुलाई १७९८ में जब नेपोलियन इंग्लैण्ड पर आक्रमण न कर सका तो उसने इंग्लैण्ड के पूर्वी उपनिवेशों पर अपना अधिकार जमाने का विचार किया और अपनी नौ सेना को लेकर मिस्र पहुँचा । उस समय ममलूक^१ मिस्र का, तुर्की की नाममात्र अधीनता में, शासक था । मिस्र बिलासी - जीवन का अभ्यस्त हो चुका था इस कारण उसने नेपोलियन के समक्ष तुरन्त समर्पण कर दिया । नेपोलियन की सेना में केवल सैनिक ही नहीं थे अपितु उच्च कोटि के विद्वान तथा वैज्ञानिक भी थे । उनकी सभायें होती थीं और उनमें नेपोलियन स्वयं एक सदस्य के रूप में भाग लिया करता था ।

उसी सभा के एक सदस्य कैप्टन बोस्टार्ड (Captain M. Boussard) अथवा बोखार्ड (Bouchard) ने अपने निरीक्षण में नील नदी के रोसेटा (Rosetta) मुहाने से पाँच मील दूर जहाँ पर रशीद^२ नाम का



फलक संख्या - २८९

१. कश्केश पर्वत के निवासी दास ।

२. बोस्टार्ड ने इसका नाम परिवर्तित करके फ़ोर्ट सेंट जूलियन रख दिया ।

एक गढ़ खण्डहर के रूप में स्थित था, उत्खनन कार्य¹ आरम्भ किया जिसके फलस्वरूप २ अगस्त १७९९ में एक काले पत्थर की शिला प्राप्त हुई। यह शिला ३ फुट ९ इंच लम्बी, २ फुट ४ ३/४ इंच चौड़ी तथा ११ इंच मोटी थी। इस पर तीन प्रकार की लिपियाँ अंकित थीं। ऊपरी भाग में हेरोग्लिफ्स की १४ पंक्तियाँ सीधे से बाईं ओर उत्कीर्ण थीं। मध्य भाग में डिमॉटिक की ३२ पंक्तियाँ तथा निचले भाग में ग्रीक लिपि की ५४ पंक्तियाँ, जिसमें से २६ नष्ट हो चुकी थीं, अंकित थीं। ऊपर एवं नीचे के भाग तो कुछ अंशों में विकृत हो गये थे परन्तु मध्य का भाग पूर्णतया सुरक्षित था। तत्पश्चात् इस शिलालेख की प्रतिलिपियाँ बनवाई गयीं और उनको विद्वानों के पास शोध करने के लिए भेजा गया। नवम्बर १८०१ में नेल्सन के नेतृत्व में ब्रिटेन का एक जहाज़ी बेड़ा सिकन्दिया पहुँच गया। कुछ नाममात्र का युद्ध हुआ। नेपोलियन अपनी पराजय को निश्चित समझ कर अपनी सेना को छोड़ कर थल के मार्ग से फ्रांस चला गया। इसकी सेना ने आत्म-समर्पण कर दिया। उपर्युक्त शिला खण्ड जो फ्रांस भेजा जा रहा था १८०२ में इंग्लैण्ड पहुँच गया जो रोसेटा शिला खण्ड के नाम से प्रसिद्ध हुआ तथा ब्रिटिश संग्रहालय के आतिथ्य में सुरक्षित हो गया।

ग्रीक लिपि को पढ़ने पर ज्ञात हुआ कि २७ मार्च १९६ ई० पू० मिस्र के पुरोहितों की एक सभा जिसमें टॉलेमी पंचम को उसके सिंहासनारूढ़ होने पर सम्मानित किया गया था, मेम्फिस में हुई थीं जिसमें अन्य राजाज्ञाओं के साथ टॉलेमी पंचम एपीफ्रेन्स का यह भी अनुमोदन था कि घोषणा की प्रतिलिपियाँ मिस्र के सभी मन्दिरों में स्थापित कर दी जायें। उस काल की राजकीय भाषा ग्रीक थी इस कारण राजाज्ञा उसी में मुख्यतया अंकित की गई थी परन्तु उस समय व्यापारिक लिपि डिमॉटिक तथा धार्मिक लिपि हेरोग्लिफ्स थी, इस कारण ग्रीक लिपि के भावार्थ रूप में वह घोषणा इन दो लिपियों में भी अंकित की गई। पुरोहित मिस्र में सदैव सत्तावान् रहे हैं इस कारण सबसे ऊपर पुरोहितों की लिपि अंकित कराई गई थी। अब की बार इंग्लैण्ड की ओर से उस शिलालेख की प्रतिलिपियाँ विद्वानों के पास पेरिस एवं अन्य स्थानों को भेजी गई।

रहस्योद्घाटन : १८०२ में सिल्वेस्ट्रे दि सेसी (Sylvestre de Sacy) ने ग्रीक लिपि के पाठ की सहायता से कई नाम पढ़ने में सफलता प्राप्त की जिनमें टॉलेमी का नाम भी था। अब उसने हेरोग्लिफ्स के कुछ चिह्न भी पहचान लिए थे परन्तु वह इसके अतिरिक्त आगे कोई प्रगति न कर सका और उसने वहीं अपने परिश्रम को विराम लगा दिया।

दि सेसी ने अपने सारे शोध का व्योरा एक स्वीडन निवासी विद्वान् को सौंप दिया जो उस समय पेरिस में भाषाओं के ज्ञानार्जन में व्यस्त था। उस विद्वान का नाम जे. डी. ओकरब्लाड (J. D. Akerblad) था। उसने अपना शोध आरम्भ किया और उसने तुलनात्मक रूप से सर्वप्रथम डिमॉटिक को पढ़ने का प्रयास किया और कुछ नाम पहचानने में सफल हुआ। उसी पर उसने निष्कर्ष निकाला कि डिमॉटिक लिपि वर्णात्मक है जो बाद में असत्य सिद्ध हुआ। जब ओकर ब्लाड अपने निष्कर्ष दि सेसी के पास ले गया तो उसने अपनी शंका प्रगट की। इससे ओकर ब्लाड हताश हो गया और अपना शोध समाप्त कर दिया।

रोसेटा के प्रस्तर के रहस्योद्घाटन की समस्या अब अन्य विद्वानों के समक्ष पहुँची और उन्होंने लगभग १० वर्ष अपनी अटकलें लगायीं। उदाहरणार्थ काउण्ट एन० जी० दो पालिन (Count N. G. de Polin) ने अपना मत प्रकट किया कि उसने एक ही दृष्टि में उसके अर्थ समझ लिए हैं परन्तु उन अर्थों में कुछ त्रुटियाँ अवश्य रह गई हैं। एक दूसरे विद्वान अबे तैन्दू दि सेन्ट निकोलस (Abbe Tandeau de St. Nicolas) ने

अपने वक्तव्य में कहा कि मिस्र की चित्र लिपि कोई लिपि — पद्धति नहीं है अपितु मन्दिरों आदि को सुसज्जित करने का एक साधन मात्र है । १८०६ में एक ऐसे ही प्राच्य वेत्ता बॅरन वॉन हैमर पर्गस्टाल (Baron Von Hammer Purgstall) ने मिस्र के एक प्राचीन अभिलेख का अनुवाद एक अरब के सहयोग से १८२१ में किया, जो पूर्णतया भ्रमपूर्ण निकला ।

अब इस प्रस्तर की समस्या टॉमस यंग (Thomas Young) के, जो कैम्ब्रिज में एक भौतिकशास्त्री थे, पास आयी । यंग का जन्म मिल्वर्टन (Milverton)—सोमरसेट (Somerset) में १७७३ में हुआ था । २० वर्ष के होने तक लगभग १२ भाषाओं का ज्ञाता हो गया था । १७९८ में सौभाग्य से इसको अपने चाचा की सारी चल अचल सम्पत्ति प्राप्त हो गयी जिसके कारण उसको अन्य विषय भी अध्ययन करने का अवसर प्राप्त हुआ । उसने रोसेटा की प्रतिलिपि में से मध्य का डिमॉटिक भाग निकाल कर उसको पृथक कागज़ों पर चिपकाया और दाएँ से बाएँ पढ़ने का प्रयास किया । अब उसने ग्रीक लिपि के भाग को काट कर उसके साथ चिपकाया जिसके विषय में वह निश्चित हो गया कि यह डिमॉटिक का भाग ग्रीक लिपि से समानता रखता है । परन्तु यह पद्धति हैरोग्लिफ्स के विषय में प्रयोग न कर सका क्योंकि ऊपर का भाग दाएँ तथा बाएँ दोनों ओर से कुछ अंशों में नष्ट हो चुका था । उसने सेसी व ओकरव्लाड की भाँति तुलना की और दो नामों को पहचाना, 'एलेक्जेंडर और एलेक्जेंड्रिया' । उसने एक और शब्द 'किंग' पहचाना और देखा कि ग्रीक लिपि में ३७ बार इसका प्रयोग किया गया है जब कि डिमॉटिक में केवल ३० बार ही है । शब्द 'टॉलेमी' एक में ११ बार तथा दूसरी में १४ बार आया है । अब उसने एक ग्रीक डिमॉटिक शब्दावली बनाई जिसमें ८६ शब्द थे और वे सब ठीक सिद्ध हुए । १८१४ में सोसायटी फ़ार एन्टीक्वेरीज़ (Society for Antiquaries) के समक्ष उसने रोसेटा प्रस्तर के मध्य डिमॉटिक भाग का पूरा अनुवाद सुना दिया । इस अनुवाद में उसके प्रमाणों तथा अनुमानों का सम्मिश्रण था क्योंकि वह यह नहीं समझ सका कि यह डिमॉटिक पाठ ग्रीक पाठ का अनुवाद नहीं है ।

जब उसने हैरोग्लिफ्स पर अपना शोध किया तो उसने कई त्रुटियाँ कीं । एक तो उसको यह ज्ञात नहीं था कि मिस्र की लिपि में स्वरों का प्रयोग नहीं किया जाता दूसरे उसने कुछ चिह्नों को अनुमान से पढ़ा जो प्रगति में बाधाजनक हुए । तब भी ब्रिटेनिका के विश्व कोष^१ के १८१९ के संस्करण में उसने अपने शोध के विषय में हैरोग्लिफ्स के रहस्योद्घाटन करने की एक विधि दर्शायी तथा यह भी बताया कि यह लिपि किस किस प्रकार से लिखी गयी है और वह पूर्णतया वर्णात्मक नहीं है । अंक केवल खड़ी लकीरों से बनाये गये हैं और बहुवचन बनाने के लिए चिह्न को तीन बार अंकित किया जाता है अथवा तीन खड़ी लकीरें खींची जाती हैं । दो भिन्न चिह्नों की एक छवि भी हो सकती है । इतने परिश्रम के पश्चात् वह प्रगति न कर सका और शोध कार्य त्याग दिया ।

इधर एक अन्य विद्वान् जीन फ़्रैंको चैम्पोलियो (Jean Francois Champollion) भी इस कार्य में संलग्न था जिसको रोसेटा प्रस्तर की समस्या सुलझाने तथा मिस्र की लिपि का रहस्योद्घाटन करने का श्रेय प्राप्त हुआ । चैम्पोलियो का जन्म फ़िगेक (Figeac) में १७९० में हुआ । १२ वर्ष की आयु से ही उसको प्राच्य भाषाओं में अभिरुचि उत्पन्न होने लगी । १८०१ में जब उसका भ्राता उसको ग्रॅनोबिल (Grenoble) अपने साथ लाया, तब उसका परिचय एक विख्यात गणितज्ञ जीन बॅप्टिस्ट फ़ोरियर (Jean Baptiste Fourier) से हुआ । फ़ोरियर नेपोलियन के विद्वानों की सभा का एक सदस्य था और वह उसके साथ मिस्र

1. Encyclopaedia Britannica - 1819 Ed.

गया था। फोरियर ने अपना मिस्री पुरातत्व का संग्रह दिखाया। उसमें मिस्र की प्राचीन लिपियों की वस्तुएँ भी थीं जिनकी ओर शैम्पोलियों विशेष रूप से आकर्षित हुआ। उसी समय से उसने उस अज्ञात लिपि के रहस्य का उद्घाटन करने की ठान ली।

अब उसने भाषाओं का तथा इतिहास का अध्ययन आरम्भ कर दिया और पेरिस चला गया जहाँ उसका परिचय दि सेसी से हुआ और उसे रोसेटा — प्रस्तर के अभिलेखों को देखने का अवसर प्राप्त हुआ। वह दि सेसी का शिष्य बन गया। १८ वर्ष की आयु में वह ग्रैनोबिल में १८०९ में इतिहास का प्राध्यापक नियुक्त हो गया। परन्तु कुछ वर्षों के पश्चात् उसको पदच्युत कर दिया गया क्योंकि उसकी नैपोलियन के लिए सहानुभूति प्रतीत की गयी। १८१७ में वह पुनः ग्रैनोबिल आया और उसकी एकादमी आफ़ साइन्सेस (Academy of Sciences) में पुस्तकालयाध्यक्ष के रूप में नियुक्ति हो गयी परन्तु वह पुनः राजद्रोह के दोषारोपण में निर्वासित कर दिया गया। वह तुरन्त पेरिस भाग गया।

इस विपत्ति काल में भी शैम्पोलियों मिस्र तथा उसकी गूढ़ लिपि की समस्या को सुलझाने में संलग्न रहा। इसके लिए सर्वप्रथम उसने कॉप्टिक भाषा व लिपि का गहन अध्ययन किया। १८२२ के आरम्भ में उसने अकादमी (Academie des Inscriptions et Belles-lettres) के सदस्यों के समक्ष मिस्र की चित्र लिपि के ध्वन्यात्मक चिह्नों की तालिका प्रदर्शित की जिसमें उसने कार्टूशों के अन्दर अंकित चिह्नों के वर्णात्मक रूपों की घोषणा की तथा उनके गूढ़ रहस्योद्घाटन सम्बन्धी अपनी योग्यता का भी वर्णन किया।

इस शोध की सफलता उसको फ़िलाइ के फ़िलास्तम्भ (Philae Obelisk) द्वारा प्राप्त हुई। यह स्तम्भ १८१५ में डब्ल्यू. जे. बैंक्स (W. J. Bankes) को फ़िलाइ में टूटा हुआ प्राप्त हुआ था। यह स्तम्भ टॉलेमी षष्ठम द्वारा १७३ ई० पू० में फ़िलाइ के मन्दिर के सामने स्थापित कराया गया था। इसमें हैरोग्लिफ़स तथा ग्रीक लिपि में यह राजाज्ञा उत्कीर्ण की हुई थी कि “मन्दिर के दर्शन करने आने वाले यात्रियों को भोजन तथा ठहरने का स्थान प्रदान किया जायेगा”। उसको बैंक्स अपने निवास स्थान डोरसेट को ले गया। इसी स्तम्भ लेख की प्रतिलिपि शैम्पोलियों के पास भी अन्य विद्वानों के साथ भेजी गयी थी। इसमें क्ल्योपेट्रा का नाम भी अंकित था। इस प्रकार शैम्पोलियों ने लगभग ८० कार्टूश के चिह्नों को पहचान लिया जिनमें ग्रीक व रोमन शासकों के नाम थे।

अभी तक उसने ग्रीक — वंश के पूर्व के शासकों के नाम ज्ञात नहीं किये थे। १४ सितम्बर १८२२ का दिन शैम्पोलियों के लिए एक अविस्मरणीय दिवस था। इस दिन उसको जीन निकोलस हुईओत (Jean Nicolas Huyot) एक शिल्पकार द्वारा एक मन्दिर की अभिलेखों की कई प्रतिलिपियाँ प्राप्त हुईं। यह सब अभिलेख बहुत प्राचीन थे। इसमें भी अनेक कार्टूश थे। मनेथो की वंशावली तथा नाइबिल की हज़रत मूसा की घटनाएँ भी उसके समक्ष थीं। इन अभिलेखों में उसने दो शासकों के नाम देखे जिनके चिह्न ‘फ० सं० — २९४’ पर दिये गये हैं। शैम्पोलियों ने पहले नाम का पहला चिह्न ‘रा’ ‘रे’, (सूर्य) तथा बाद के दो चिह्न ‘स’ ‘स’ पढ़ लिए। अब समस्या आयी बीच के चिह्न के लिए। कॉप्टिक में ‘ms’ के अर्थ होते थे ‘उत्पन्न हुआ’ व ‘mas’ के अर्थ होते थे ‘बच्चा’। तभी वह समझ गया ‘सूर्य का बच्चा’ या ‘सूर्य पुत्र’ अर्थात् रेमेसीज (Rameses अथवा Ramesses)। इसी प्रकार दूसरे चित्र में पत्नी का पहला चित्र ‘टाट देवता’ का द्योतक था अर्थात् ‘टाट देवता का पुत्र’ टुथमस (Thotmas)

अपनी इस सफलता के निष्कर्षों को उसने अपनी पुस्तक (Precis du Systeme hieroglyphique)

को १८२४ में प्रकाशित कराया और संसार को चकित कर दिया। उसने इस पुस्तक में सिद्ध कर दिया कि मिस्र की लिपि अति जटिल है। इस लिपि में तीनों प्रकार (चित्रात्मक, संकेतात्मक तथा ध्वन्यात्मक—Pictographic, Ideographic and Phonetic) के चिह्न न केवल एक अभिलेख या वाक्य में दृष्टिगोचर होते हैं अपितु शब्दों में भी वर्तमान होते हैं।

१८२४ से अपनी मृत्यु (१८३२) तक वह हैरोग्लिफ्स के ज्ञान की वृद्धि करने में अनवरत प्रयास करता रहा। इसी सन्दर्भ में वह फ्रांस सरकार द्वारा मिस्र भेजा गया जहाँ जाकर वह अभिलेखों की प्रतिलिपियाँ लेता रहा तथा उनका अध्ययन भी करता रहा। इसी सलग्नता के काल में उसका स्वर्गवास हो गया। तत्पश्चात् उसके भ्राता ने पेरिस से १८४१ में 'मिस्र की व्याकरण (Grammaire Egyptienne)' तथा १८४३ में 'मिस्र का शब्दकोष' (Dictionnaire Egyptien) प्रकाशित किये जो शैम्पोलियों को अमर बना गये तथा विश्व के समस्त एक देश की अज्ञात प्राचीन संस्कृति व इतिहास को ज्ञात बना गये।

इतने परिश्रम पर भी बहुत से विद्वान् जैसे, ए० डब्ल्यू० स्पोह्न (A. W. Spohn), जी० सेफार्थ (G. Seyfarth), जे० क्लापरोथ (J. Klaproth) तथा सी० सिमोनाइड्स (C. Simonides), शैम्पोलियों के प्रामाणिक शोधकार्य के निष्कर्षों से सहमत नहीं हुए, परन्तु इटली के दो विद्वानों, एच० रोसेल्लिनी (H. Rosellini) तथा रिचर्ड लेप्सियस (Richard Lepsius) ने इस शोधकार्य की बड़ी प्रशंसा की। १८६६ में जर्मन विद्वानों के एक दल, जिसमें लेप्सियस भी था, ने टैनिस के समीप एक चूने के पत्थर की पाटिया (Slab) उत्खनित की। यह शिलालेख कैनोपस (Canopus)¹ की राजाज्ञा थी जिसमें टॉलेमी तृतीय को एक कृतज्ञ पुरोहित द्वारा मानपत्र भेंट किया गया था। संयोगवश १५ वर्ष के पश्चात् इसी प्रकार का शिलालेख जी० मास्पेरो (G. Maspero) को प्राप्त हुआ जिस पर वही शब्द उत्कीर्ण थे। इन दोनों शिलालेखों पर तीनों लिपियाँ उत्कीर्ण थीं (ऊपर ३७ पंक्तियाँ हैरोग्लिफ्स की, नीचे ७६ पंक्तियाँ ग्रीक लिपि की तथा ५७ पंक्तियाँ डिमॉटिक लिपि की)।

उन्नीसवीं श० के अन्त तक हैरोग्लिफ्स का ज्ञान वैज्ञानिक रूप धारण कर चुका था। उसमें लेशमात्र भी अनुमान व संशय का स्थान न था। लुडविग स्टर्न (Ludwig Stern) एवं एडोल्फ अर्मन (Adolf Erman) के व्याकरणীয় अध्ययन ने तथा कर्ट सेथे (Kurt Sethe), सर एच० टॉम्पसन (Sir H. Thompson), एच० ग्रेपो (H. Grapo), डब्ल्यू स्पीगेलबर्ग (W. Spiegelberg) तथा एस० दि बक (S. de Buck) के अनुक्रमिक कृत्यों ने शैम्पोलियों के शोध की न केवल पुष्टि की अपितु भावी पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए लिपि के अध्ययन को पर्याप्त सरल बना दिया।

लिपि की कुछ विशेषतायें : विविध विद्वानों के १५० वर्ष के अथक परिश्रम द्वारा मिस्र की रहस्यमयी हैरोग्लिफ्स तथा अन्य लिपियों के विषय में निम्नलिखित रहस्य प्रकाश में आये :—

१. हैरोग्लिफ्स : एक पवित्र लिपि मानी जाती थी। इसका प्रयोग, मन्दिरों के दिवालों पर, शासकों की समाधियों तथा शव — पेटियों पर, पिरमिड की भीतरी दीवारों पर तथा अन्य शिलास्तम्भों आदि पर उत्कीर्ण करने में किया जाता था।
२. इस लिपि : का जन्म कब और कैसे हुआ, निश्चय रूप से ज्ञात नहीं हो सका। इसी कारण धार्मिक

1. Decrees of Memphis and Canopus - 3 Vols. - (London 1904).

विश्वास के अन्तर्गत यह धारणा बन गई कि इसका जन्मदाता एक देवता था जिसका नाम टाथ (Thoth) था। इस देवता का सिर एक पक्षी (Ibis) का तथा शरीर मनुष्य का था।

३. इस लिपि : का प्रयोग सम्भवतः ३५०० ई० पू० से (प्रथम वंश में यह लिपि वर्तमान थी) आरम्भ हुआ और ४०० ई० तक होता रहा। तदनन्तर इसका कोई ज्ञाता न रहा।

४. इस लिपि : के उत्कीर्ण करने की विविध प्रणालियाँ थीं। उदाहरणार्थ ऊपर से नीचे (इसमें प्रथम खड़ी पंक्ति दाएँ ओर होती थी तथा दूसरी प्रथम खड़ी पंक्ति के बाएँ ओर से आरम्भ की जाती थी जिस प्रकार चीनी लिपि लिखी जाती थी), दाएँ से बाएँ^१ तथा ग्रीक वंश के शासन काल से कभी बाएँ से दाएँ भी अंकित की जाती थी।

५. इस लिपि : में तीन प्रकार के चिह्नों का प्रयोग होता था।

१. चित्रात्मक : जिसमें किसी वस्तु या प्राणी का चित्र उसी वस्तु या प्राणी का बोध कराता था।

२. संकेतात्मक : जिसमें चित्र या चिह्न किसी भाव का संकेत करता था।

३. ध्वन्यात्मक : जिसमें चित्र या चिह्न किसी ध्वनि का प्रतिनिधित्व करता था।

६. इस लिपि : में ध्वन्यात्मक चित्र या चिह्न तीन प्रकार के थे :—

१. एक वर्णिक (Uniconsonantal) : जो केवल एक ध्वनि के लिए एक वर्ण रखते थे। इनकी संख्या २४ थी।

२. द्विवर्णिक (Biconsonantal) : जो एक ध्वनि के लिए दो वर्ण रखते थे। इनकी संख्या ७५ थी परन्तु लगभग ५० प्रयोग में आते थे।

३. त्रिवर्णिक (Triconsonantal) : जो एक ध्वनि के तीन^३ वर्ण रखते थे।

७. इस लिपि : में केवल व्यंजनों (Consonants) का ही प्रयोग होता था जिस प्रकार उस काल की पश्चिम एशियाई देशों को सेमिटिक लिपियों में होता था। वैसे तो यह पद्धति बड़ी कठिन व जटिल प्रतीत होती है परन्तु उस भाषा के प्रयोग करने वालों को कोई कठिनाई प्रतीत नहीं हुई होगी।^३

८. इस लिपि : में किसी शब्द को लिखने के लिए वर्णों के प्रयोग के साथ साथ कभी कभी उस शब्द के निर्धारक (determinative—भाव को संकेत करने वाला) चित्र को भी अंकित कर दिया जाता था और उस चित्र के नीचे एक खड़ी लकीर भी खींच दी जाती थी जो इस बात को प्रमाणित करती थी कि अमुक चित्र वर्ण नहीं अपितु निर्धारक है।

१. लगभग २००० ई० पू० से प्रयोग में आई।

२. They are also called Uniliteral, Biliteral and Triliteral.

३. आज भी भारत में उर्दू लिपि के प्रयोग में यही पद्धति प्रचलित है। इसका एक अन्य उदाहरण I. J. Gelb ने अपनी पुस्तक 'A Study of Writing' में इस प्रकार दिया है :— Writing without vowel can also be read with ease— 'n rdng ths sntnc u wll fnd th bst prf tht th nglsh logug cn b wrttn wtht vwls'— (In reading this sentence you will find the best proof that the English language can be written without vowels).

९. संसार : की यह सर्वप्रथम वर्णात्मक लिपि थी परन्तु इसके लिखने की प्रणालियों के कारण तथा निर्धारक चित्रों का व ध्वन्यात्मक (वर्ण) चित्रों का साथ साथ प्रयोग होने की जटिलता के कारण इसका प्रयोग मिस्र के अतिरिक्त किसी अन्य देश की भाषा के लिए प्रयोगात्मक नहीं बनाया जा सका ।
१०. संसार : की यही सर्वप्रथम लिपि थी जिसके वर्णों द्वारा (पूर्णतया नहीं) उत्तरी सेमिटिक लिपियों का उद्भव हुआ परन्तु भाषा की भिन्नता के कारण उन वर्णों के नामों को परिवर्तित कर दिया गया ।
११. ए० एच० गार्डिन्बर व सेथे के अनुसार : इस लिपि में लगभग ७०० चित्र व चिह्न हैं जिनको २० वर्णों में विभाजित किया गया है । उदाहरणार्थ ६३ चिह्न मानव शरीर के अंगों के, ५५ चिह्न मानव जीवन के आजीविका के, ५२ चिह्न स्तन वाले (mammals) प्राणियों के, ३९ चिह्न पक्षियों के, २० चिह्न क्रीड़ा व वादक यंत्रों आदि के मुख्य वर्ग हैं ।
१२. इस लिपि : का एक दूसरा रूप भी था जो कागज पर शीघ्रता से लिखने के लिए प्रयोग किया जाता था । उसका नाम हेरेटिक (Hieratic) था । इसको भी धार्मिक क्षेत्र में ही प्रयोग किया जाता था जिसके कारण इसको भी पवित्र लिपि माना जाता था । इसके उद्भव के विषय में निश्चित रूप से कहना संभव नहीं है । कुछ विद्वानों का मत है कि यह प्रथम वंश में भी वर्तमान थी तथा कुछ विद्वानों का मत है कि इसका विकास पंचम वंश के शासन काल (२५०० ई० पू०) से दृष्टिगोचर होने लगा ।
१३. इन दोनों लिपियों : का प्रयोग पुरोहित वर्ग द्वारा किया जाता था । नव दीक्षित पुरोहितों को इनके लिखने की शिक्षा देने के लिए मन्दिरों में पाठशालायें स्थापित की गयीं थीं ।
१४. पच्चीसवें वंश : के शासन काल (७५१ से ६६३ ई० पू० तक) में जनसाधारण के प्रयोग के लिए एक तीसरी लिपि का हेरेटिक से आविष्कार किया गया । उस काल के अनुसार यह हेरेटिक का सरल रूप था जिसका प्रयोग प्रायः व्यापारिक क्षेत्र में अधिक होता था । जनसाधारण के लिए ग्रीक भाषा में एक शब्द डेमोस (Demos) था, उसी से इस लिपि का नाम भी डेमोतिक रख दिया गया । नामकरण सम्भवतः ई० पू० की तीसरी शताब्दी में हुआ ।
१५. प्रथम वंश : के शासन काल में एक ध्वनि वाले व्यंजन - वर्ण, जिनकी संख्या २४ थी, निर्धारित कर लिए गए थे परन्तु पाँचवें वंश के शासन काल में ६ अन्य सम - ध्वनि वाले वर्णों^१ (चित्रों) का आविष्कार कर लिया गया ।
१६. इस लिपि : को पढ़ने में दो बातों का ध्यान रखा जाता था :—
 (क) क्षैतिज पंक्तियों (horizontal) की लिपि की दिशा (दाएँ से बाएँ या बाएँ से दाएँ) जानने के लिए चित्रों के मुख की दिशा देखी जाती थी यदि मुख बायीं ओर हो तो बाएँ से अथवा मुख दाईं ओर हो तो दाएँ से पढ़ी जाती थी ।
 (ख) दो व्यंजनों के मध्य अधिकतर 'ए' या 'ई' की ध्वनि का प्रयोग किया जाता था, जैसे 'Rmss' = 'Remeses' ।

अगले चित्रों का विवरण

मिस्र के कुछ संकेतात्मक शब्द¹ : (फ० सं०—२९०) आरम्भ काल में चित्रों की संख्या लगभग दो सहस्र थी परन्तु जब लिपि का सरलीकरण होने लगा तथा चित्रात्मक से लिपि संकेतात्मक की ओर अग्रसर होने लगी तब इनकी संख्या कम होने लगी । चित्रों के संकेत निर्धारित² होने लगे ।

‘फ० सं०—२९०’ पर प्रथम पंक्ति के चित्र केवल चित्रात्मक (Pictographic) हैं तथा प्रत्येक चित्र एक शब्द है इसका काल लगभग ३४०० ई० पू० माना जाता है । इसमें चित्रों के नीचे दो पंक्तियाँ हैं । प्रथम में मिस्र की भाषा में नाम दिए हैं और इसी के नीचे हिन्दी भाषा में उसी चित्र के नाम दिये हैं । उस काल में ऐसे लगभग ७०० चित्रात्मक शब्द थे ।

द्वितीय पंक्ति में वही चित्र कुछ संकेत देने लगे और इसको संकेतात्मक (Ideographic) लिपि कहने लगे । अब आँख केवल आँख का चित्र नहीं रहा अपितु उसके अर्थ ‘देखना’ हो गया तथा दो टांग का चित्र ‘चलना’ हो गया ।

तृतीय पंक्ति में गुणवाची शब्द दिए गये हैं । चित्र भौतिक हैं पर उनसे अभौतिक भाव निकलता है ।

चतुर्थ पंक्ति में निर्धारक (Determinatives) शब्दों का निर्माण किया गया है । चित्र बना देने से पूरा भाव व्यक्त हो जाता था । इस प्रकार लिपि का विकास हुआ जिसका काल गार्डिनर ने अपनी पुस्तक³ में दिया है:—

१. प्राचीन लिपि :	३४००	से	२४०० ई० पू०
२. मध्यकालीन लिपि :	२४००	से	१३५० ई० पू०
३. अन्तिम काल की लिपि :	१३५०	से	७०० ई० पू० तक ।
		और ७०० ई० पू० से ४०० ई० तक ।	

हेरोग्लिफ्स के वर्ण (डिस्क्रिप्टर द्वारा) : (फ० सं०—२९१) इस चित्र में वह २४ वर्ण दिए गये हैं जो प्रथम वंश के शासनकाल में प्रयोगात्मक बनाये गये । इनमें केवल व्यंजनों का ही प्रयोग होता था । प्रत्येक वर्ण⁴ के चित्र का नाम तथा हिन्दी व रोमन लिपि में उसकी ध्वनि दी गई है । प्रत्येक वर्ण के लिए एक चित्र⁵ है ।

हेरोग्लिफ्स के वर्ण (वेलिस बज द्वारा) : (फ० सं०—२९२) इस चित्र में हेरोग्लिफ्स की वर्णमाला में ६ नये वर्ण जोड़े गये हैं । पाँचवें वंश में ३० वर्ण हो गये थे । ल, ओ, ऊ, न, ण, प नये हैं । कुछ समध्वनियों वाले भी जोड़े गये ।

ध्वनियाँ व चित्र :⁶ (फ० सं०—२९३) इस चित्र में ऊपर की ओर वाले द्विवर्णिक (Bi-consonantal)

1. Jansen, H. : Syn, Symbol and Scripts Page—58, (1970).

2. Determinatives.

3. Gardiner, A. H. : Egyptian Grammar (1927).

4. Friedrich, J : Extinct Languages Page—12, (1962).

5. Uniconsonantal.

6. Erust Doblhofer : Voices in Stones (1955).

चित्र हैं,¹ मध्य वाले कुछ अन्य सम — ध्वनि वाले चित्र हैं जो ग्रीक काल में जोड़े गये तथा नीचे वाले त्रैवर्णिक चित्र या वर्ण² हैं ।

हैरोग्लिफ्स के कुछ शब्द :³ (फ० सं०—२९४) इस चित्र के ऊपर की ओर के शब्दों में प्रथम नाम 'टॉलिमी' का है जो सर्वप्रथम दि सेसी ने पढ़ा था और इसी नाम के द्वारा शैम्पोलियों ने नीचे के नाम 'क्लियोपेट्रा' की तुलना की थी । 'P', 'O', 'L', वर्णों को वह जानता था बाद में नाम की पहचानने पर और वर्ण जान गया । क्लियोपेट्रा में पहला वर्ण 'C' है जो 'क' की ध्वनि के समान है और सातवें अक्षर को 'द' की ध्वनि वाले चित्र से अंकित किया गया है । संभवतः उस काल में क्लियोपेट्रा ही उच्चारण करते हों । 'रेमसीज' व 'टुटमस' के नाम शैम्पोलियों ने १४ दिसम्बर १८२२ को पहचाने ।

अतिरिक्त वर्ण व कुछ शब्द : (फ० सं० — २९५) इसमें चित्र की वर्णात्मक ध्वनि, चित्र का नाम तथा उसका हिन्दी नाम फलक के सीधी ओर कुछ शब्द, उनके लिखने की अनोखी पद्धति, साथ में निर्धारक चित्र, उसका मिस्री भाषा में नाम, किन वर्णों से शब्द का निर्माण हुआ हिन्दी में उसके अर्थ आदि प्रत्येक शब्द के साथ दिये गए हैं । शब्द 'दिन (Day)' (फ० सं०—२९४) जिसकी मिस्र की भाषा में 'हर वू (Har Wu)'⁴ कहते हैं परन्तु लिखा जाता है 'HRW' बिना स्वरों के चार प्रकार से । उसी के नीचे एक वाक्य दिया है जिसका अंग्रेजी भाषा में अर्थ है 'A man lives when his name is pronounced' अर्थात् 'मनुष्य, नाम से जीवित रहता है' । इन दोनों (शब्द व वाक्य) में वर्ण तथा निर्धारक शब्द भी दिये गये हैं । उनके पास या नीचे एक खड़ी लकीर अंकित कर दी जाती थी जो सूचित करती थी कि यह चित्र ध्वन्यात्मक वर्ण नहीं अपितु निर्धारक चित्र है । इसी कारण दिन के 'सूर्य' का तथा नाम व मनुष्य के लिए मनुष्य का चित्र भी अंकित कर दिया गया है ।

इस चित्र में ऊपर से नीचे तक लिपि को सरलता से पढ़ने के कारण बाएँ से दाएँ की ओर बना लिया गया है । हैरोग्लिफ्स में जब बाएँ से दाएँ लिखा जाता है तो चित्रों की दिशा बाईं ओर होती है और जब दाएँ से बाएँ लिखा जाता है तो दाईं ओर होती है ।

हैरोग्लिफ्स तथा हेरेटिक के कुछ प्रतिदर्श : बायीं ओर ऊपर से (फ० सं० — २९६) :—

शब्द	उच्चारण	अर्थ
उबन	उबेन	सूर्योदय
इतेन	इतेन	सूर्य का चक्र
पद	पेद	घुटना
रआमपत	रामपेत	आकाश में सूर्य
हरउ	हेर, हर वू	दिन

इसके नीचे हेरेटिक (हैरोग्लिफ्स का घसीट रूप) के दो काल की लिपि में एक शब्द 'हर वू' (दिन) लिखा गया है । उसमें सं० — १ में आरम्भिक हेरेटिक तथा सं० — २ में पुराकालीन हेरेटिक का

1. Friedrich, J. : Extinct Languages p-7, (1962).

2. Triconsonantal.

3. P. E. Cleator : Lost Languages—Page 49-51 (1957).

4. Gardiner, A. H. : Egyptian Grammar P - 27, (1927).

प्रतिदर्श है। इसी 'फ० सं० - २९६' पर सीधी ओर हैरोग्लिफ्स तथा साथ साथ हेरेटिक भी दी गई है, दोनों ऊपर से नीचे लिखे^१ गये हैं जो इस प्रकार पढ़े जायेंगे :-

शब्द		अर्थ
न खेम्स	=	दूर ले जाना; बचाना।
पीटना	=	निर्धारक शब्द है।
स	=	वह (स्त्री)
ह - न - अ; हीना	=	(सब) के साथ
आँख (निर्धारक)	=	देखना
र - त; इरंत	=	स्त्री, पुरुष
स्त्री - पुरुष	=	निर्धारक शब्द हैं
नब + त; नेवेत		
निर्धारक + अक्षर	=	सब
र	=	को
स	=	वह (स्त्री)

इसका अनुवाद होगा—'उस (स्त्री) को बचाओ, उन सब स्त्री पुरुषों से, जो उसको (स्त्री) पीट रहे हैं'।

हैरोग्लिफ्स का घसीट रूप हेरेटिक : (फ० सं० - २९७) इस चित्र में हैरोग्लिफ्स के कुछ वर्णों का घसीट रूप^२ दिया गया है। इसमें बाएँ से प्रथम कॉलम में चित्रों की ध्वनि (Phonetic value) दी है, दूसरे में वर्ण, तीसरे और चौथे कॉलम में परिवर्तन तथा पाँचवें में पूर्ण परिवर्तित रूप दिया गया है। हेरेटिक का कब निर्माण हुआ यह विषय विवादास्पद है। कुछ विद्वानों का मत है कि हैरोग्लिफ्स के साथ ही इसका भी प्रयोग होता था।


हैरोग्लिफ्स एवं हेरेटिक का एक अभिलेख : (फ० सं०-२९८) इस अभिलेख^३ में ऊपर हैरोग्लिफ्स (सरलीकरण के लिए बाएँ से दाएँ कर लिया गया है) तथा नीचे हेरेटिक, जो दाएँ से बाएँ लिखी है, दी गई है।

मिस्र की डिमॉटिक^४ : जन साधारण के लिए डिमॉटिक का आविष्कार ई० पू० की सातवीं श० में हुआ। इसका प्रतिदर्श^५ तथा वर्ण 'फ० सं० - २९९' पर दिए गये हैं।

कॉप्टिक लिपि : (फ० सं०-३००) पर कॉप्टिक लिपि की वर्णमाला^६ दी गई है। 'कॉप्टिक' अरबी शब्द 'क़िब्त' से गलत उच्चारण करके 'क्रोब्त' शब्द से बना। 'क़िब्त' शब्द 'इजिप्शियन' (Egyptian) के संक्षिप्त रूप गिन्तियस (Gypcios) से बना।

१. यह पाठ लेखक ने स्वयं काहिरा (Cairo, Egypt) के मुख्य निदेशक के सहयोग से एक हैरोग्लिफ्स के प्रवक्तृ द्वारा १९७५ में प्राप्त किया।
२. Möller, G. : Hieratische Paläographie (2 nd. Ed.) 1927, P - 36.
३. Doblhofer, E. : Voices in Stone (1961), P-81.
४. इसकी वर्णमाला लेखक ने स्ट्राकहोम में प्राचीन मिस्री संग्रहालय से प्राप्त की जो यहाँ दी गयी है।
५. Erman : Die Hieroglyphen-p. 7.
६. Stegemann, V. : Koptische Palaeographie (Heidelberg - 1936), p-211,

मिस्र लिपि का क्रमशः विकास

	१
ईत मर्त रेद बेव नेब तेबेत खैव पैत अदैत आंख कौना टांग पैर हल सैण्डल कमल आकाशवर्षा	
	२
नेखेत वेनेम खैनी शेम अनन डेगी रेमी पीटना. खाना. नाव जाना आना देखना रोना	
	३
अंख गेमी स्वेत केब्ब इअव इव जीवन दूटना दक्षिणी मिस्र ठण्डा बुढ़ापा आना	
	४
हेरु एबेद अखेव हेरेत इदैत हैके दिन माह चमकना स्वर्ग वर्षा राज चिन्ह	
	
सैमेत वेस्त मेर नेत सैपैत मरुस्थल नगर पिरामिड जल जनपद	

फलक संख्या - २९०

हैरोग्लिफ्स के वर्ण (डिर्निजर द्वारा)



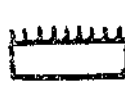

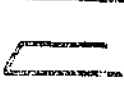

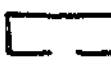







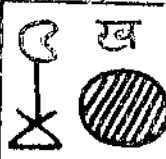
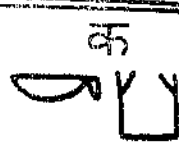


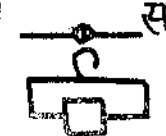
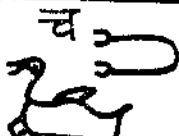


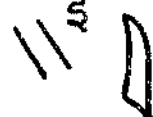




W व बटेर का बच्चा	Ā आ अग्रभुज	Y इ नकुल	A अ गिद्ध
M म उल्लू	F फ़ नाग	P प बैठने का स्थान	B ब पैर
H ह ह	H ह ह	R र र	N न पानी
S' स्स तह किया कपड़ा	S स चटकनी	H ख योनिद्वार	H ख आंवल
G ज जग	K क क	Q क क	Š श तालाब
D ज़ अस्त्र	D द हथेली	I च पशु की गलफांस	T ट रोटी

हैरोग्लिफ्स के वर्ण (वैलिस बज द्वारा)





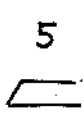


































U ऊ	I ई	I ई	A अं
N न	O ओ	L ल	U ऊ
K कं	M म	M म	I थ
ड श	B ब	S स	Q कं
T ट	N न	P प	ड श
६ अक्षर और जोड़े गये = ल. ओ. ऊ. न. श. प.			

ध्वनियाँ व चित्र

एक चित्र दो ध्वनियाँ

					
ओ. व	मस	मन	ल. ख	म. गस	मर
					
प. ह	नन	सन	नव	त. द	इ श
दो चित्र एक ध्वनि					
					
ब	प	ख	क		
					
म	श	स	च		
					
म	न	इ	व		
एक चित्र तीन ध्वनियाँ					
					
तइउ (तिउ)	खपर	दपत			

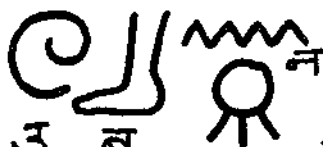
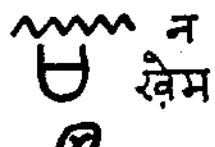


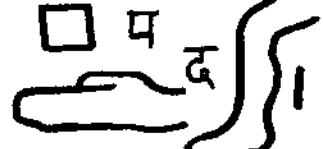
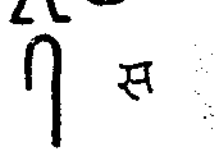
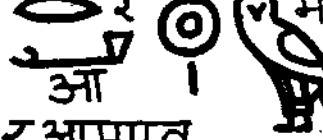
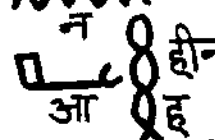
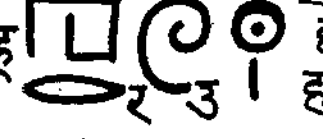


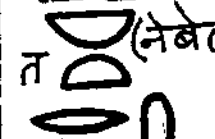


हैरोग्लिफ्स के कुछ शब्द

1  P	2  T	3  O	4  L	5  M	6  I	7  S		
1  (C) C	2  L	3  E	4  O	5  P	6  A	7  (D) T	8  R	9  A
 RA	 MS	 S S	 THOT	 MS	 S			
DAY HRW HARWU	 Ā R	 SUN	 H R	 R U(A)	 H W	 H R	 W+SUN	
 ANKH	 S	 D	 M	 TW	 RN	 F		
LIVES	MAN	PRONOUNCE	ONE	NAME	HIM			

कुछ अतिरिक्त वर्ण व कुछ शब्द

इ द्वैत का प्रयोग	म मेर प्रेम	इव आना
इ द्वैत का प्रयोग	म मा हंसिया	श म शेम जाना
व बटेर ओ काबच्चा उ	ख खेव कमल	अ मुड़ना न
ल, र लियो रेव	क का प्रार्थना	सै फ़ कल
व वेव ओ फ़न्दा उ	श श्वेत पर	न मिन
न नेत लाल मुकट	श शा ताल	म इ आज
थ थेथी फ़न्दा	न नत मटका	प स द
म इम दो पसली	उ डैव पर्वत	पैसदे चमकना

हेरोग्लिफ्स तथा हेरेटिक के कुछ प्रतिदर्श

 <p>उ ब न उ बेन सूर्योदय</p>	 <p>न खेम म</p>
 <p>इ त न इ तेन सूर्य का चक्र</p>	 <p>(खेटना)</p>
 <p>प द पेद घुटना</p>	 <p>स</p>
 <p>र आ र आमपत</p>	 <p>न हीना आ ह (इरत)</p>
 <p>ह र उ हरउ = हेरु हरवू दिन</p>	 <p>त (नेबेत)</p>
 <p>१</p>	 <p>त स</p>
 <p>२</p>	

हेरोग्लिफ्स का घसीट रूप - हेरेटिक

अ				
क				
द				
ह				
फ़				
ख				
च				
झ				
ग				
अ				
म				
न				
ज				
क				
र				
श				

हेरोग्लिफ्स एवं हेरेटिक का एक अभिलेख



फलक संख्या - २९८

डिमाँटिक की वर्णमाला

2	4	K	L	∫	∩	∩	Y
अ	ब	ग क	द	ए	इ	ई	ल
)	2	U	Z	/	<	∠	2
म	न	ओ	प	र	स	त	उ
≡	✓	L	<	ω	4	4.	∠b
फ़	ख	प्स	व	श	फ़	ज	व ती










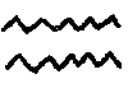

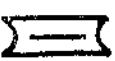



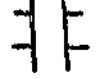



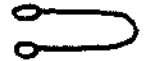
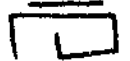


डिमाँटिक एवं कॉप्टिक के प्रतिदर्श

डिमाँटिक में दाईं ओर से	टॉलेमी - PTOLEMY	कॉप्टिक में बाईं ओर से
< ∩	∩ ∫ ∠ Z	π T O λ E P λ I O C
S I M E L T P	P T O L E M A I O S	

कॉप्टिक लिपि की वर्णमाला

ध्व०	नाम	वर्ण	ध्व०	नाम	वर्ण	ध्व०	नाम	वर्ण
अ	अल्फा	Α	ल	लूला	Λ	ख	किज	Χ
ब	बीदा	Β	म	मीज	ϸ	स	एब्सी	Ϩ
ग	गामा	Γ	न	नी	Ν	उ	उ	Ϡ
द	डेल्टा	Δ	क्स	एक्सी	Ξ	डिमोटिक से FROM DEMOTIC		
ए	एजे	Ε	ऊ	ओन	Ο	श	शेइ	ϣ
	सोन	Ϭ	प	बेज	Π	फ	फेइ	ϥ
ज़	ज़ादा	Ζ	र	रोन	Ρ	ख	खेइ	ϧ
इ	हाश	Η	स	सम्मा	Ϫ	ह	होरी	Ϩ
त	तुन्ने	Θ	त	दाउ	Τ	ज	जॉजिमा	ϫ
ज़	जोदा	Ι	ई	हे	Υ	श	शॉफ़ि	Ϭ
क	कब्बा	Κ	फ़	फ़िज	ϰ	त	तॉ	τ


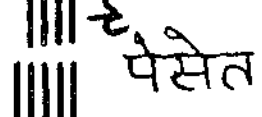

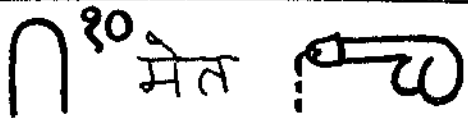



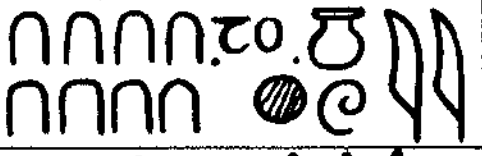

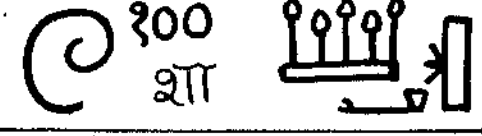

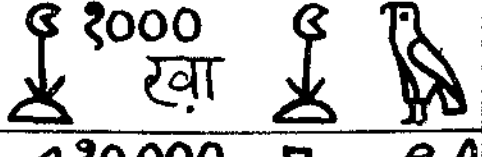

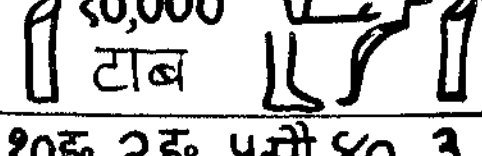

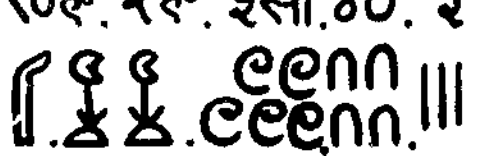
मिरोइटिक लिपि की वर्णमाला

अ	ए	ऐ	ई	इ	व
					
व, ब	प	म	न	नं	र
					
ल	ख	ख	स	श	क
					
क	त	ते	तै	ज	
					

मिरोइटिक डिमाँटिक की वर्णमाला तथा अभिलेख

अ a	ए e	ऐ ê	इ i	य y	व w	ब u-b	प p	म m	न n	नं ñ	र r	ल l
92	9	14	III	8	2	3	13	7	W	4		
ह h	ख h	स s	श s	क k	क k	त t	ते te	तै te	ज z			
5	3	VII	3	3	K	7	14	6	2			
अभिलेख - दाएँ से बाएँ												
: 1 K 4 : 12 3 2 4 3 7 : 4 III 9 W 13 92 : 4 3 1 8												
Ê K I : N H Z I T K T : I Y E R E S A : I S Ê W												
L to R = I K Ê T (A) Q T I Z H N A S E R E Y I W E S I												
PROTECT TAKTIZ AMON OSIRIS ISIS												
4 6 5 2 9 : III 9 W 14 4 12 3 92 : 12 6 3 W 9 : W 3 1 2												
I L H Z E : Y E R T E I N M A : Ê L E K R E : R K Ê Z												
E Z H L I A M N T A R E S E R K E L E Z E Q R												
B O R N A M N T A R E S B E G O T T E N Z E K A R E R												
जकेरर के पुत्र अमोनतारिस की आशसिस, ओसाइरिस व												
तक्तीज अमोन (देवता) रक्षा करते हैं।												

मिस्री लिपि के अंक

१ उम्मा 	६ पैसेत 
२ सैन 	१० मैत 
३ खेमेत 	२० टाउट 
४ फेतू 	१०० शा 
५ आउ 	१००० खा 
६ सिस 	१०,००० टाब 
७ सेफेख 	१०हू. २हू. ५सौ. ४०. ३ 
८ खेनु 	१०हू. २हू. ५सौ. ४०. ३ 

ग्रीस के निवासी जो मिस्र में आकर बसने लगे थे ५६ ई० में सेंट मार्क (St. Mark) द्वारा ईसाई बनाये गये थे और बाद में काप्ट्स के नाम से ज्ञात होने लगे थे । इन्होंने अपनी एक लिपि को जन्म दिया । इनकी भाषा में मिस्र व ग्रीक का मिश्रण था और मुख्य बोलियाँ, सेहीदिक (Sahidic), अख्मिनिक (Akhminic जिसमें पश्चिम के शब्दों का मिश्रण था) और फ़यूमिक (Fayumic जो मिस्र के फ़यूम प्रांत में बोली जाती थी - मियोरिस झील के निकट थी), भी सम्मिलित थीं ।

जब मिस्र अरबों के अधीन हुआ तब वहाँ के लगभग सभी निवासियों ने इस्लाम धर्म अपना लिया परन्तु इन ईसाईयों ने नहीं अपनाया जिसके कारण यह लोग मुसलमान शासकों द्वारा निम्न नागरिक समझे जाते थे । इनके गिरजाघरों को नष्ट किया गया । इनके क्रास व चित्र नष्ट किये गये । इनको काली पगड़ियाँ पहननी पड़ती थीं और भारी क्रास गले में लटकाने पड़ते थे परन्तु फिर भी इन्होंने इस्लाम धर्म नहीं अपनाया ।

१३४८ में धर्म युद्ध (Crusades) आरम्भ हो गये । बाद में अपनी जान के भय से कुछ ने इस्लाम अपनाया ।

काप्टिक लिपि के सबसे प्राचीन अभिलेख ईसा की दूसरी शताब्दी के प्राप्त हुए परन्तु लिपि इससे पहले आरम्भ हो चुकी थी । सातवीं श० में अरबी ने काप्टिक की जगह ले ली परन्तु धार्मिक क्षेत्रों में इसका प्रयोग अब भी काप्ट्स (ईसाईयों) द्वारा किया जाता है । दशवीं श० तक इसका प्रयोग होता रहा ।

स्पीग्लिंग के अनुसार इसमें २४ चिह्न कुछ नाममात्र परिवर्तित करके ग्रीक लिपि से लिए गये हैं, एक नये वर्ण का निर्माण किया गया है । इस प्रकार २५ हो गये । इसमें ७ चिह्न डिमांटिक से लेकर जोड़ दिये । इस तरह कुल मिलाकर इसमें ३२ वर्ण^१ हो गए ।

शैम्पोलिया ने इसी का सर्वप्रथम अध्ययन किया था ।

मिरोइटिक लिपि की वर्णमाला : (फ० सं०—३०१) इस चित्र में २३ वर्णों वाली मिरोइटिक वर्णमाला^२ दी गई है । मिस्र के दक्षिण में एक देश नूबिया था जिसमें अफ्रीका निवासी रहा करते थे । उनको मिस्र के शासकों ने कई बार अपने अधीन किया, उनकी सोने की खानों से सोना लेते रहे तथा उनको निम्न कोटि के नागरिक मानते रहे । युद्ध में उनकी सेना अधिक होती थी क्योंकि मिस्र के निवासी विलासी थे । मिस्र ने सबसे पहले १९०० ई० पू० में नूबिया को परास्त किया और १४५० में उसको मिस्र का एक उपनिवेश बना लिया ।

८५० ई० पू० में एक नये राज्य की स्थापना की गई जिसकी राजधानी नपाता थी और नदी के पार एक उप - राजधानी मिरोइ थी । यहाँ पहले तो मिस्र की लिपि का ही प्रयोग होता था परन्तु जैसे जैसे यह देश स्वतन्त्र होता गया इसने अपनी एक नवीन लिपि - मिस्र की पद्धति पर - का निर्माण कर लिया ।

इस देश का पुरातात्विक सर्वेक्षण लेप्सियस ने १८४४ में तथा जी० रीन्सर (G. Reinser) ने १९२१ - २३ में किया । इस सर्वेक्षण के द्वारा हेरोनिल्फ्स तथा मिरोइटिक दोनों के अभिलेख प्राप्त हुए । इनको एच० ब्रुगश (H. Brugsch १८८७) ने अधूरा पड़ा तथा ग्रिफ़िथ ने पूर्णतया इसका रहस्योद्घाटन

1. Stegmann, V. : Koptische Palaeographie (Heidelberg - 1936), p - 271

2. Erman, A. : Die Hieraglyphen (1927), P-37.

किया। विद्वानों के मतानुसार मिरोइटिक का जन्म व विकास नवीं शताब्दी ई० पू० से आरम्भ हो गया था और ७०० ई० पू० तक पूर्णतया प्रयोगात्मक हो गई।

जिस प्रकार मिस्र में घसीट रूप हेरेटिक विकसित हुआ उसी प्रकार मिरोइटिक का घसीट रूप डिमॉटिक लगभग ७ वीं शती में विकसित हुआ। उस काल में नूबिया वंश का शासन पूर्ण मिस्र पर था। तभी घसीट - रूप की आवश्यकता प्रतीत हुई। मिरोइ नगर को अक्सुम के शासक ऐजेनीज (Aezanes) ने ३५० ई० में नष्ट कर दिया।

मिरोइ की डिमॉटिक : 'फ० सं० - ३०२' पर डिमॉटिक की वर्णमाला^१ दी गई है। ग्रिफिथ के मेमोयर्स (Memoirs) से दी गई है (चित्र के नीचे देखिये)।

अभिलेख दाएँ से बाएँ दिया गया है। उच्चारण रोमन वर्णों द्वारा दिया गया है जिसमें उसी के नीचे बायीं ओर से लिखे गये हैं। चतुर्थ पंक्ति में अंग्रेजी में अनुवाद दिया गया है तथा पूरे अभिलेख का हिन्दी में अनुवाद कर दिया गया है। इसका अन्तिम प्रयोग ११ दिसम्बर ४५२ ई० को हुआ तदनन्तर यह खोप हो गई।

मिस्र के प्राचीन अंक : लिपि के साथ साथ गणित आदि का भी विकास हुआ जिसके लिए अंकों का आविष्कार किया गया। 'फ० सं० ३०३' पर मिस्रीलिपि के अंक^२ दिये गये हैं। इस फलक में १६ कालम हैं जिनमें निम्नलिखित अंक दिए गये हैं:—

१. पहले अंक : उसका उच्चारण तथा उसको लिपि में कैसे लिखा जाय। उदाहरणार्थ । = उआ (एक) चित्रलिपि में उसी के आगे लिखा है।

इसी प्रकार दस कालमों में दस तक के अंक दे दिए गये हैं।

११. इस कालम में बीस के अंक तथा उनकी लिपि है।

हेरेटिक के अंक										
।	॥	॥॥	॥॥॥	५	॥॥॥	२	२।	२॥	२	२०
१	२	३	४	५	६	७	८	९		

फलक संख्या - ३०३ क

१२. इसमें अस्सी के अंक दिए गये हैं।

१३. में सौ का अंक है।

1. Griffith : Meroitic Inscriptions, Vol. 1. xix. Memoires of Archaeological Survey of Egypt. (London. 1911), page - 73.
2. Budge, E.A.W. : Easy Lessons in Egyptian Hieroglyphics (1922), P-38.

१४. में एक सहस्र का ।

१५. में दस सहस्र का ।

१६. १२५४३ को हेरोग्लिफ्स में किस प्रकार लिखा जाएगा - दिया गया है ।

इसके अतिरिक्त हेरेटिक के अंक 'फ० सं० - ३०३ क' पर दिये गये हैं ।

पठनीय सामग्री

- Aldred, Cyril* : Egypt - to the end of the old kingdom (1965).
- Bevan, Edwyn* : A History of Egypt under the Ptolemaic Dynasty (1927).
- Birch, S.* : The Egyptian Hieroglyphs (1857).
- Breasted, J. H.* : A History of Egypt - From the Earliest Times to Persian Conquest (1925).
- Breasted, J. S.* : Ancient Records of Egypt (1909).
- Budge, E. A. W.* : The Literature of Ancient Egyptians (1914).
- ” ” : The Rosetta Stone (1929).
- ” ” : Easy Lessons in Egyptian Hieroglyphics (1922).
- Cleaver, P. E.* : Lost Languages (1957).
- Cottrell, Leonard* : Life Under The Pharaohs (1958).
- Diringer, David* : The Alphabet - A Key to the History of Mankind (1948).
- Doblhofer, Ernst* : Voices in Stone (1955).
- Erichsen, W.* : Demotische Lesestuecke - 3 Vols. (1937).
- Erman, Adolf* : The Literature of Ancient Egyptians (1927).
- Gardiner, A. H.* : The Nature and Development of the Egyptian Hieroglyphic Writing (Journal of Egyptian Archaeology - 1915).
- ” ” : Egyptian Grammar (1927).
- Glanville, S. R. K.* : The Legacy of Egypt (1957).
- Griffith, F. L.* : A Collection of Hieroglyphs (1898).
- ” ” : The Inscriptions of Meroe (1911).
- Jansen, Hans* : Signs, Symbols and Script (1968).
- Möller, G.* : Hieratische Palaeographie (2nd. Ed.-1936).
- Montet, Pierre* : Eternal Egypt (1964). Translated in English by Doreen Weightman.
- Murray, M. A. and*
Pilcher, D. : A Coptic Reading Book for Beginners (1933).

- Peet, T. A.* : The Antiquity of Egyptian Civilization (Journal of Egyptian Archaeology - 1922).
- Petrie, Hilda* : Egyptian Hieroglyphs of the First and Second Dynasties (1927).
- Petrie, W. M. F.* : A History of Egypt - 3 Vols - (1924).
- " " : Ancient Egyptians (1925).
- " " : The Making of Egypt (1939).
- Sayce, A. H.* : The Decipherment of Meroitic Hieroglyphs (1911).
- Sharpe, S.* : Egyptian Hieroglyphs (1861).
- Sethe* : The Decrees of Memphis and Canopus (1904).
- Simonides, C.* : Hieroglyphic Letters (1860).
- Spiegelberg, W.* : Demotische Grammatik (1925).
- Sporry, J. T.* : The Story of Egypt (1964).
- Worrell, W. H.* : A Short Account of Copts, (1945).
- Young, Thomas* : Egyptian Antiquities (1823).

अफ्रीका महाद्वीप

अफ्रीका के महाद्वीप को पाश्चात्य विद्वानों व पर्यटकों ने अन्य महाद्वीप (डार्क कान्टीनेन्ट) के नाम से सम्बोधित किया है । परन्तु कितने आश्चर्य की बात है कि इसी अन्धकारमय महाद्वीप में विश्व की एक महान् तथा प्राचीनतम संस्कृति ने जन्म लिया और आधुनिक विद्वानों को चकित करने के लिए उसने अपने प्रमाण भी सुरक्षित रखे । अन्य प्राचीन देशों का इतिहास बहुधा पौराणिकता से आरम्भ होता है । उन देशों के शासकों का कोई प्रामाणिक इतिहास भी नहीं मिलता परन्तु इस प्राचीन देश के इतिहास में किसी प्रकार की पौराणिकता नहीं मिलती लगभग ५५०० वर्ष पूर्व के प्रमाण पुरातत्त्व वेत्ताओं ने अपने अथक परिश्रम द्वारा एकत्रित किये । इस देश को आज मिस्र के नाम से पुकारते हैं ।

इस महाद्वीप में दो अन्य देशों के नाम प्राचीन इतिहास में सम्मिलित किये गये हैं और वे कार्थेज तथा बिया हैं जो आज ट्युनीशिया तथा सूडान के नाम से सम्बोधित किये जाते हैं । एक और देश प्राचीनता की परिधि में आता है, वह है इथियोपिया । इसके अतिरिक्त सारे महाद्वीप का इतिहास सत्रहवीं श० से ज्ञात हुआ । इस्लाम धर्म के सम्पर्क में आने से कुछ भागों में दसवीं श० में भी कुछ जागृति व सम्यता के लक्षण दृष्टिगोचर होते हैं । उत्तरी अफ्रीका ने यूरोप व अरेबिया के सम्पर्क में आने से सम्यता के सुखों तथा दुष्परिणामों का आनन्द अधिक चखा ।

कुछ भागों को छोड़कर यहाँ लिपियों का जन्म अठारहवीं श० से पूर्व नहीं हुआ जिनके विषय में आगे दिया गया है ।

नुमीदिया

इतिहास : यह प्राचीन देश ट्युनीशिया तथा अल्जीरिया के आधुनिक देशों के भूभाग में स्थित था । इसकी राजधानी किर्टा (Cirta) थी । दूसरे प्युनिक युद्ध (२१८ से २०१ ई० पू० में) में, जो रोम तथा कार्थेज के मध्य हुआ था, नुमीदिया (Numidia) में दो मुख्य जातियाँ निवास करती थीं । एक जाति रोम के साथ तथा दूसरी जाति कार्थेज के साथ होकर प्युनिक युद्ध में सम्मिलित हो गई ।

इस देश का राजा मसीनिस्सा (Masinissa) था । उसके मरणोपरांत उसका पुत्र मिकिप्सा (Micipsa) राजसिंहासनारूढ़ हुआ । उसने १४८ से ११८ ई० पू० तक राज्य किया । तदोपरांत इस देश में एक गृह युद्ध हुआ तथा इसके बाद जुगुरथीन (Jugurthine) से, जो एक छोटा पड़ोसी देश था, १११ से १०६ ई० पू० तक युद्ध हुआ । तत्पश्चात् यह देश क्षीण गति को प्राप्त होने लगा । ४६ ई० पू० में यह रोमन राज्य का प्रांत बन गया । ४२८ ईसवी में इस देश पर वैंडलों (Vandal—एक जर्मन वर्बर जाति का नाम था) ने ४२८ ई० में इस पर आक्रमण किया । अंत में यह ट्युनीशिया व अल्जीरिया देशों का एक भाग बन गया और देश का नाम लुप्त हो गया ।

लिपि : नुमीदिया के देश में दो प्रकार की लिपियाँ प्रचलित थीं । एक का नाम नुमीदियन तथा दूसरी का नाम वर्बर लिपि था । इन लिपियों के अनेक शिलालेख, जो रोमन राज्य के शासन काल में उत्कीर्ण किये गये

ये आधुनिक मोरीतैनिया व ट्युनीशिया से प्राप्त हुए। यह लिपि संसार के विद्वानों को १६३१ में ज्ञात हुई जब एक द्विभाषिक शिलालेख, जिस पर नुमीदियन व प्युनिक लिपियाँ अंकित थीं, थुग्गा (Thugga)—आधुनिक दोग्गा (Dougga)^१ से प्राप्त हुआ। थुग्गा कार्थेज व तेबेस्सा के मध्य प्युनिक काल^२ में एक प्राचीन मुख्य नगर था। यहाँ जुपिटर, जुनो व मिनर्वा देवी व देवताओं के बड़े सुन्दर व भव्य मन्दिरों को मार्कस औरेलियस (Marcus Aurelius), जो रोमन राज्य का ईसा की दूसरी श० में सह-शासक था, ने निर्माण करवाये थे। वे मन्दिर आज भी पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

अभी तक इस लिपि के लगभग एक सहस्र अभिलेख प्राप्त हो चुके हैं जिनमें से १५ अभिलेखों पर नुमीदियन व लैटिन लिपियाँ तथा ६ पर नुमीदियन व प्युनिक लिपियाँ उत्कीर्ण हैं। इनके गूढ़ाक्षरों के रहस्योद्घाटन का प्रयास १८४३ में दि सॉल्सी (de Saulcy)^३ द्वारा थुग्गा की द्विभाषिक^४ लिपि के अभिलेख से आरम्भ किया गया। तत्पश्चात् हलेवी (Halevy) ने लगभग २५० अभिलेखों का भाषांतरण तथा अनुवाद किया। उसके बाद अन्य विद्वानों ने इनको पढ़ा जिसमें मुख्य माइनहाफ (Meinhof) और मसियर (Mercier) के नाम उल्लेखनीय हैं। माइनहाफ के अनुसार इनमें स्वर वर्ण नहीं होते तथा ऊपर से नीचे व दाएँ से बाएँ लिखी जाती थीं।

नुमीदियन लिपि का एक आंशिक पाठ : यह पाठ थुग्गा से प्राप्त एक द्विभाषिक — नुमीदियन + प्युनिक — अभिलेख^५ के एक भाग^६ से लिया गया है। इसको दाएँ से बाएँ पढ़ा जायेगा। ('उ' की ध्वनि 'व' है) लिप्यन्तरण :—“खकन तबग्ग बंजफ़श मसनसन गलदत् उ — गज्ज गलदत् उ — जल्लसन शफ़्त सबनदग् सगदत् सजसग् गलद मकूसन शफ़्त गलदत् उ — फ़शन गलदत् मोसनग़शनक उ — बनज उ — शनक दशफ़्त उ — म [न]” ‘फ० स०—३०६’ अर्थ : “मिकिप्सा के राज्य काल के दसवें वर्ष में थुग्गा के निवासियों ने नृप मसीनिसा, आत्मज नृप गज्ज, आत्मज सुफ़ेतन ज़िल्लसन, के लिये एक मन्दिर का निर्माण करवाया। नृप फ़शन आत्मज शनक, आत्मज बंज, आत्मज नगम, आत्मज तंकू, का पुत्र शफ़्त (था), जो सौ का कमाण्डर था”।^७

बर्बर लिपि का एक आंशिक पाठ : यह आंशिक पाठ बर्बर लिपि के एक अभिलेख^८ से लिया गया है जिसका अनुवाद हलेवी ने किया है। यह बर्बर लोग एक यायावरीय जाति के थे, जिनको तुआरेग कहते थे। उनकी भाषा का नाम ‘तमाचेक’ था, जिसको बर्बर भाषा में ‘तिक्रीनार’ भी कहते थे। लिप्यन्तरण :—

“बिक रिन ग़र हस्क़र कख़तनहस हसनक करहलन न नसबी कर रतकल दूर कनहरत” अर्थ :

1. इस नगर को लेखक ने फरवरी १९७५ में स्वयं जाकर देखा है। वहाँ रोम राज्य की भव्यता अब भी दर्शनीय है।
2. यहाँ फ़िनीशिया की संस्कृति ७०० से १०० ई० पू० तक समृद्धि काल में रही।
3. Journal Asiatic (1849)—P. 248.
4. Meinhof, C. : ‘Der libysche Text der Massinissa—Inscription von Thugga’ in Orientalist Literary Zeitung (1926), P 744
5. Chalbot, J. B. : ‘Inscriptions punicalibyques’—Journal Asiatic (March-April 1918), P. 259, 301.
6. केवल प्युनिक भाग की दो पंक्तियों तथा नुमिदियन भाग की तीन पंक्तियों का अनुवाद दिया गया है।
7. अंग्रेजी के अनुवाद से किया गया है :—“This temple the citizens of Thugga built for King Masinissa, Son of King Gaja, son of the Suffetan Z(i)llasan, the tenth year of the reign of Micipsa, in the year of King Shft, Son of King fshn. The Commander of the Hundred (were) Shnk, Son of the Bnj and Shft, Son of Ngm, Son of Tnkw”
8. Hanoteau, E. : Essai de la langue Tamacheck (Paris., 1860) p.-132

नुमीदियन लिपि

अ (अलिफ़) •	ब ○ □	ग ┌—VΛ	द □ □ □
ह 	उ =	ज —	स H I
श Λ □	ख └┐┐	त ➤ □	ईज Z N
क ⇐ ↑	ल =	म) □ U	न I
स X 8	श C C	ग ≡ ÷ .	प-फ़ X X X
क़ ≡	र ○ □	श ➤ M	त + X
	त ☞ □		











































तुमीदियन लिपि का आंशिक पाठ

<p>· 1818J'4 3XV10' 120X' 14+</p> <p>नसनसम(?) श फ़ जनब ग ग ब त नकख</p>
<p>· 3111' 1111' = 3111'</p> <p>त द लग ज ज ग उ त द लग</p>
<p>· 3111100C' 3X3' 18111' - =</p> <p>ग द नस बस त फ़ श नसललज उ</p>
<p>· 18=4111' 3111' 3XVX' 3111C</p> <p>नसउ कम द लग ग सजस त द गस</p>
<p>· 318=1111' 13X= 3111' 3X3'</p> <p>गनसउम त द लग नशफ़ उ त द लग त फ़ श</p>
<p>· 1=3X311' 413= 1110= 413'</p> <p>म उ त फ़ श द क नश उ जनब उ कनश</p>

बर्बर लिपि

















अ (अलिफ) •	ब ⊙ □	ग ⋈ ÷	द □ □ Λ
ह ⋮	उ ⋮	ज #	झ ⋮
श ✱ ✱	ख ⋮⋮	त ⋈ ⋈	ड ⋈ ⋈
क ⋮	ल 	म] [न
स ⊙ □	म-फ] [क ⋮⋮	ग ✱ ✱
र ○ □	श 3 2	त +	बा + ⊕
रत सत ⊕ ⊕	गत लत ⋈ ⋈	मत नत ⋈ +	शत नक ⋈ ⋈

बर्बर लिपि का आंशिक पाठ

<p>            </p> <p>उ र क स ह उ र ग न इ र क इ ब</p>	<p>             </p> <p>न न ल ह र क क न स ह स ह न त उ र क</p>
<p>             </p> <p>उ द ल क त र उ र क इ ब स न</p>	<p>        </p> <p>त र ह न क र</p>

फलक संख्या ३०७

तुर्कतेनियन लिपि के कुछ वर्ण

<p>         </p> <p>अ ब ग द उ उ क न</p>	<p>         </p> <p>ल ल ल स स त त</p>
--	--

फलक संख्या - ३०७ क

अर्थ : 'एक कुत्ते को एक हड्डी मिल गई। वह उसका चर्वण करने लगा। हड्डी ने उससे कहा 'मैं बहुत कष्टकारक हूँ।' कुत्ते ने उससे कहा 'चिन्ता मत कर, मुझे अन्य कोई कार्य करने को नहीं है।'

इस अर्थ का अनुवाद एक अंग्रेजी¹ के पाठ से लिया गया है।

तुर्देतेनियन लिपि : स्पेन देश के दक्षिणी भू-भाग को तुर्देतेनिया कहते थे। उसकी राजधानी तारतेसो² थी। लगभग ५०० ई० पू० में यह नष्ट हो गई। इसकी लिपि २०० ई० पू० में कुछ सिक्कों पर उत्कीर्ण दृष्टिगोचर हुई। यह लिपि नुमीदियन लिपि से कुछ समानता रखती है। इसके कुछ वर्ण जो सिक्कों द्वारा प्राप्त हो सके 'फ० सं० — ३०७ क' पर दिये गये हैं। इसका एक भी अभिलेख प्राप्त नहीं हो सका।

सर्वप्रथम जोवे दि जंग्रोनिस (Zobe de Zangroniz) ने, जिसने इसको प्रकाशित भी किया, रहस्योद्घाटन करने का प्रयत्न किया, जो आंशिक अशुद्ध था तत्पश्चात् माइनहोफ (Meinhof) ने किया और इसको लीवियन बताया।

कैमेरून

इतिहास : १४८२ में सर्वप्रथम पुर्तगाली यहाँ पहुँचे। सोलहवीं श० में फ्रेंच, डच तथा अंग्रेज भी पहुँचे। १८६८ में जर्मन व्यापारी भी यहाँ आये। १४ जुलाई १८८४ को डा० नाचिगल (Dr. Nachtigal) ने कैमेरून को जर्मन संरक्षण में आने को घोषणा कर दी। १९०५ में इस देश का अन्तरांश जर्मनों के अधीन हो गया। १९१२ में रेलगाड़ी का चलना आरम्भ हो गया।

१९१४ के महायुद्ध में फ्रेंच और ब्रिटिश सैनिक इस जर्मन उपनिवेश में पदार्पण कर गये। दोला को अधीन कर लिया और १९१६ में योन्डे को भी ले लिया। तत्पश्चात् देश को फ्रेंच व ब्रिटिश के मध्य विभाजित कर लिया गया। महायुद्ध समाप्त होने पर जर्मनी निवासियों को अपनी निजी भूमि फिर से खरीदने की अनुमति मिल गई परन्तु दूसरे महायुद्ध के प्रथम चरणों में अर्थात् १९३९ में पुनः छीन ली गई।

१ जनवरी १९६० को यह देश स्वतन्त्र हो गया।

बामुन लिपि : कैमेरून के देश के एक भूभाग बामुन³ के राजा यनजोया (NJOYA) ने १९०३ को इस लिपि का आविष्कार बामुन जाति के लोगों की बामुन भाषा के लिये किया। सर्वप्रथम यह लिपि चित्रों द्वारा आरम्भ हुई। तदनन्तर यह वर्णात्मक बनाई गई। दुगास्ट (Dugast) के अनुसार इसमें ६ प्रकार का विकास पाया जाता है। सर्वप्रथम १९०३ में इसमें केवल ४५० चिह्न थे जो सरलीकरण व्यवस्था के अन्तर्गत कम होकर १९११ में केवल ८० रह गये।

जब यनजोया की मृत्यु १९३२ में हो गई तो इसका प्रयोग भी कम होते-होते लुप्त सा हो गया।

इसकी विकसित पद्धति⁴ 'फ० सं०—३०८' पर दी गई है।

1. Jensen, H. : Syn, Symptom and Scribe—(1968)—p. 155

































'A dog found a bone, he gnawed it. The bone said to him, 'I am very hard'. Said the dog to it, 'Don't worry, I have nothing else to do'.

2. सम्भवतः यह तारतेसो वही हो, जिसके विषय में प्राचीन बाइबिल में तारशिश लिखा गया है।

3. 'बामुन' को 'बामुम' भी सम्बोधित करते हैं।

4. Friedrich, J. : Alaska und Bamum Schrift, Ztschr. d. dtsh, Morgen l. Ges. 104 (i) (1954), P—317.

बामुनन लिपि

शब्द	अर्थ	१६०७	१६०६	१६११	१६१६	१६१८	ध्वनि	
							नाम	ध्वनि
म्फोन	राजा						फो	फ़
पवो	शस्त्र						प्वो	प
णा	यः						णा	ण
मी	मुख						मी	म
ना	पकाना						ना	न
कू	दृढ़						कू	क
ला	रात्रि विज्ञाप						ला	ल
यू	भोजन						यू	य
री	उठाना						री	र

सोमालीलैण्ड

इतिहास : इसका प्राचीन नाम सोमालिस (Somalis) था। यहाँ के निवासी अपना सम्बन्ध हेमेटिक वंश (हज़रत नूह - Noah - के एक पुत्र हाम) से मानते हैं। इनमें से एक कबीला अपने को शरीफ ईशाक बिन अहमद के वंशज से सम्बन्धित मानता है। शरीफ ईशाक अपने चालीस साथियों के साथ दक्षिण अरेबिया के एक प्राचीन देश हैदामौत से स्थानान्तरण करके तेरहवीं श० में सोमालिस आया था। सातवीं श० में यमन, जो दक्षिण-पश्चिमी अरेबिया में स्थित है, के कुरैश जाति के लोगों ने यहाँ एक राज्य स्थापित किया था जिसकी राजधानी ज़ैला थी। तेरहवीं श० में यह राज्य एक साम्राज्य में परिवर्तित हो गया क्योंकि इस राज्य ने अपने पड़ोस के छोटे छोटे अफ्रीकी राज्यों को अपने अधीन कर लिया था। सोलहवीं श० में इसकी राजधानी हरार हो गई। तब तक ज़ैला यमन के अधीन हो गया। बाद में यह तुर्कों के अधीन हो गया।

१८४० में ब्रिटिश सरकार ने तज़रा के सुलतान से तथा ज़ैला के प्रांतपति से व्यापारिक संधियाँ कर लीं। १८७५ में मिस्र के शासक इस्माइल पाशा ने तज़रा, बरबेरा, बुलहर और हरार को अपने अधीन कर लिया। जब १८८४ में मिस्री सूडान ने विद्रोह कर दिया, ब्रिटिश सरकार ने ज़ैला, बरबेरा तथा बुलहर को अपने अधीन कर लिया। १८८६ में कई सोमाली सरदारों ने ब्रिटिश संरक्षण के लिए संधियाँ कर लीं।

१८८८ में ब्रिटिश व फ्रांस ने एक संधि के अन्तर्गत सोमालिस को विभाजित कर लिया। १८८६ में इस देश का कुछ भाग इटली ने अपने अधीन कर लिया था। १८९६ में ब्रिटिश का भाग सोमालीलैण्ड तथा फ्रांस का भाग फ्रेंच सोमालीलैण्ड कहलाने लगा। बाद में ब्रिटिश वाले भाग का नाम सोमाली हो गया और फ्रांस वाले भाग का नाम अफ़ार्स और ईसास हो गया। द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् इटली वाला भाग भी ब्रिटिश के पास आ गया जो १९५० में इटली को लौटा दिया गया। राष्ट्रीय जागृति के कारण इन दोनों भागों को मिला दिया गया तत्पश्चात् २६ जून १९६० को स्वतन्त्र हो गया। फ्रांस वाला भाग अब भी फ्रांस का एक उपनिवेश है और अब इसका नाम जिबुती (Djibouti) हो गया है। यह भी २७ जून १९७६ को स्वतन्त्र हो गया।

सोमाली लिपि : सोमाली कबीले के एक सदस्य उस्मान युसुफ़ ने, जो सोमाली के सुलतान युसुफ़ अली का एक पुत्र था, एक २२ व्यंजनों तथा पाँच स्वर - वर्णों की एक वर्णमाला का आविष्कार १८२५ में किया। जब स्वर वर्णों के उच्चारण को दीर्घ करना होता था तो उसमें एक दूसरा चिह्न, जो इसके लिये निर्धारित किया गया था, लगा दिया जाता था। इसकी दिशा इटैलियन लिपि के कारण बाएँ से दाएँ रखी गई थी। परन्तु जब अरबी लिपि का प्रयोग होने लगा तब यह लिपि बीसवीं श० के आरम्भ में लोप हो गई।

सोमाली लिपि के वर्ण तथा कुछ शब्द 'फ० सं० - ३०६, ३१०' पर दिये गये हैं जो एक पुस्तक^१ से लिये गये हैं।

लिबेरिया


इतिहास : सर्वप्रथम १४६१ में एक पुर्तगाली पेद्रो दि किन्तरा (Pedro de Cintra) ने लिबेरिया की भूमि पर अपने चरण रखे। उसी ने केप माउन्ट तथा केप मेसूरेडो नाम रखे। सत्रहवीं श० में जो व्यापार पुर्तगालियों के हाथ में था इंग्लिश, फ्रेंच व डच लोगों के हाथ में चला गया। अठारहवीं श० में दासों का व्यापार होता रहा।

1. Bauer, H. : Ursprung des Alphabets (1937), p - 32.

सोमाली लिपि

अ 9	ब 4	त 9	ज 1	ह H	ख h
द O	र 7	स 8	श 9	ड 6	ग 4
ऑ 4	फ E	क H	क 4	अ 7	म 3
न Z	व 4h	ह L	य Z	इ 9	उ 9
	ओ Z	आ 5	ए L		

सोमाली लिपि के कुछ संयुक्त अक्षर व शब्द

ba.ब	bā=बा	बि	बी	बे
𐌸𐌵	𐌸𐌵𐌹	𐌸𐌹	𐌸𐌹𐌲	𐌸𐌺
बेए	बेए	बो	बू	बूऊ
𐌸𐌺𐌹	𐌸𐌺𐌺	𐌸𐌺	𐌸𐌺𐌹	𐌸𐌺𐌺
दअल	डएए	र	लओओ	गउ मअ गउ
05𐌺	𐌺𐌺𐌹	𐌺𐌺𐌹	𐌺𐌺𐌹	𐌺𐌺𐌹
ओरस	आदओ	श ईऑ	यए	लओओ
𐌺𐌺𐌺𐌺𐌺	𐌺𐌺𐌺𐌺𐌺	𐌺𐌺𐌺𐌺𐌺	𐌺𐌺𐌺𐌺𐌺	𐌺𐌺𐌺𐌺𐌺
गउ	मआ	दए	गओ	
𐌺𐌺	𐌺𐌺	0𐌺𐌺𐌺	𐌺𐌺𐌺	
इस के अर्थ				
दूर देश में वे हम से विवाह नहीं करेंगे। विदेशों को मत जाओ।				

१८२१ में केप मेसूरेडो, अमेरिकन कालोनाइजेशन सोसायटी (American Colonization Society) ने उन दास नीग्रो लोगों का एक स्थायी स्थान बनाने के लिये निर्वाचित किया जो अमरीका से प्रथम बार स्वतंत्र करके भेजे गये थे । तब से अमरीकी - दास - नीग्रो यहाँ बसने के लिये निरन्तर आते रहे । १८२५ तक लगभग बीस हजार अपनी मातृभूमि अफ्रीका आ गये जिसमें से लगभग ५० प्रतिशत मैनरोविया में बस गये ।

लिबेरिया को स्थापित करनेवाला प्रथम श्वेत अमरीका निवासी यहूदी अशमुन (Jehudi Ashmun) था जो अमरीका द्वारा दासों को बसाने के कार्य के लिये मेसूरेडो जो अब मैनरोविया कहलाने लगा था, भेजा गया था । राबर्ट गुर्ले (Robert Gurley) ने इस स्थान का नाम लिबेरिया (Liberia) रखा । अन्तिम अमरीकी गवर्नर का १८४१ में स्वर्गवास हो गया । तत्पश्चात् एक नीग्रो गवर्नर नियुक्त हुआ । २६ जुलाई १८४७ को एक गणतंत्र राज्य हो गया और पूर्ण स्वतंत्र हो गया ।

वई लिपि : इस लिपि का प्रयोग वई-नीग्रो के जाति वाले करते हैं । इनकी भाषा मण्डे (Mende) है । इनकी संख्या लगभग ५० सहस्र है । यह जाति लिबेरिया, सोरे-लियोन तथा अपर-गिनी के भूभागों में निवास करती है ।

वई लिपि का ज्ञान १८४६ में यूरोप निवासियों को एक अमरीकी इंजीनियर एफ० ई० फ़ोर्बेस् (F. E. Forbes) द्वारा हुआ । यह इंजीनियर स्वयं अपने कार्यवश अफ्रीका गया था । इसने अपने अफ्रीका के अनुभवों की प्रकाशित कराने के साथ वई लिपि को भी प्रकाशित किया । जब इस लिपि का आभास एक अफ्रीकी - भाषा - शास्त्री एफ० डबल्यु० कोयल्लो (F. W. Koello) को मिला, वह तुरन्त वई लिपि के प्रयोगकर्त्ताओं के स्थान पर अफ्रीका पहुँचा और उसके जन्म व विकास पर शोध करने लगा ।

वहाँ पहुँचकर उसको ज्ञात हुआ कि इस लिपि का जन्मदाता एक मनुष्य मोमरु दाउलू बुकेरे (Momru Daulu Bukere) था । क्लिंगेनहेबेन ने इसका उच्चारण मोमोलू दुवालू बुकेले (Momolu Duwalu Bukele) किया । कहा जाता है कि उसको एक स्वप्न में इस लिपि का ज्ञान हुआ था । तत्पश्चात् एक फ्रेंच अफ्रीका-विशेषज्ञ देलाफोस्से (Delafosse) ने इस लिपि पर अपना शोध किया । यह फ्रेंच का विशेषज्ञ बुकेरे के विषय में कुछ नहीं जानता था । इसके विचार से कुछ मूल निवासियों ने लगभग २०० वर्ष पूर्व इसका आविष्कार किया ।











क्लिंगेनहेबेन के अनुसार बुकेरे की मृत्यु १८५० में हुई थी । उसने तात्कालिक परिस्थितियों के अनुसार लगभग १६० चिह्न निर्धारित किये और एक्रोफोनी पद्धति से कुछ वर्णों का निर्माण किया । 'फ० सं० - ३११' पर उदाहरणार्थ 'ब' की ध्वनि 'ब' शब्द से की, जो बकरे से लिया गया इसी प्रकार निम्नलिखित चिह्नों से वर्ण बने । इस लिपि की वर्णमाला^१ क्लिंगेनहेबेन ने प्रस्तुत की है जो ३६ वर्णों की दी गई है और लगभग प्रत्येक वर्ण के साथ ६ स्वरों की ध्वनि जोड़ कर एक वर्णवली (Syllabary) प्रस्तुत की गई है । इस लिपि पर भी भारत का प्रभाव पड़ा है (फ० सं० - ३१२ से ३१२ ग) ।

सियर्रे लियोन

इतिहास : 'लियोन' शब्द के अर्थ हैं 'शेर' (Lion) अर्थात् शेर के जैसा देश । यहाँ एक पर्वत है जिसका आकार शेर से मिलता है (हो सकता है अधिक शेर जंगल में रहते हैं इस कारण इसका नाम पड़ा) । यहाँ के मूल निवासी इसको रोमारंग (Romarang) के नाम से सम्बोधित करते हैं ।

1. Klingenhoben, A. : The Vai Script, Africa - VI (1933). p - 158.

एक्रोफोनी पद्धति से चित्रों द्वारा वर्णों का विकास

नाम	अर्थ	चित्र	वर्ण	ध्वनि
सोवो	घोड़ा			सो
फू	फूल			फू
ता	अग्नि			ता
कून	सिर			कू
कोन	वृक्ष का तना व शाखें			को
मी	उंगली - पट्टे			मी

वई लिपि

वृत्ति	अ	ए	इ	ई	ओ	उ	ऊ
अ	ॐ	०	०	५	३	५	५
ब	५	५	५	५	५	५	५
ब	५	५	५	५	५	५	५
अं	५	५	५	५	५	५	५
द	५	५	५	५	५	५	५
उ	५	५	५	५	५	५	५
फ	५	५	५	५	५	५	५
ग	५	५	५	५	५	५	५
गवं							

फलक संख्या - ३१२

बई लिपि

एव नि	अ	ए	इ	ई	ओ	उ	ऊ
ह	॥	४४	८	५	४५	८	८
हं	८	०५		८	८		८
जं	८	८	८	८	८	८	८
क	८	८	८	८	८	८	८
कप्	८	८	८	८	८	८	८
कप्	८	८					
अ	८	८	८		८	८	८
म	८	८	८	८	८	८	८
म	८	८	८	८	८	८	८

वई लिपि

वृत्त	अ	ए	इ	ई	ओ	उ	ऊ
मंथ	△	○	卐		卐	◇	
न	I	✕	४	४	४	४	田
उ	卐		४	४	४	४	卐
प	卐	卐	४	卐			
जंज	卐	卐	४	४	卐	卐	卐
नंग	४	卐	४	४	卐	卐	४
नं	卐	卐			卐		
प	卐	卐	४	卐	४	卐	卐
र	卐	卐	卐	४	卐	卐	卐

बई लिपि

ध्वनि	अ	ए	इ	ई	ओ	उ	ऊ
स	४	५	॥	४+	F	५	॥१
त	५	४	५	५:	E	५:	५:
व	५	५	५	५	४	५	५
व	५	५	५	५	५	५	५
वं	५						
य	५	५	५	५	५	५	५
ज	५	५	५	५	५	५	५
गं	५						

यहाँ सर्वप्रथम १४६२ में एक पुर्तगाली पेद्रो आया था। तत्पश्चात् यहाँ ब्रिटिश व्यापारी आये तथा दास-व्यापार आरम्भ कर दिया। १७८६ में हेनरी स्मिथमैन (Henry Smithman) ने, जो यहाँ चार वर्ष रह चुका था, एक योजना बनाई, जिसके अन्तर्गत उसने सेना तथा नौसेना के भूतपूर्व सैनिकों को (जो नीग्रो व गोरे थे) यहाँ बसाने का विचार किया। १७८७ में ४०० नीग्रो तथा ६० योरोपियन बसाये गये। १७८८ में यहाँ के मूल निवासी शासक नेम्बाना ने समुद्री किनारे की कुछ भूमि बेच दी। १७९१ में ऐलेक्जेंडर फ्रैल्कनब्रिज (Alexander Falconbridge) ने एक नई बस्ती बसाई जिसमें लगभग ११०० नीग्रो दास थे। १७९४ में इस नगर का नाम फ्री टाउन (Free Town) पड़ गया। १८०७ में इस नगर को ब्रिटिश शासक को सौंप दिया गया। दास-व्यापार अवैध कर दिया गया।

जब फ्रांस भी उस भूभाग को अपने अधीन करने पहुँचा तब ब्रिटिश सरकार ने एक नीग्रो पदाधिकारी एडवर्ड ब्लैड्यु (Edward W. Blyden) को नियुक्त किया। तब उसने फ़लावा व तिम्वो का निरीक्षण किया। १८७३ में यह दोनों मुस्लिम देश विभाजित कर दिये गये। फ़लावा ब्रिटिश के अधीन हो गया और तिम्वो फ्रांस के।

२३ दिसम्बर १८९३ को फ्रांस व ब्रिटिश की सेनाओं में मुठभेड़ हो गई। १८९५ में एक संधि — पत्र पर दोनों सेनाओं के सेनापतियों ने हस्ताक्षर कर दिये। इस संधि के अन्तर्गत जो भूमि भाग ब्रिटिश के अधीन हो गया था १८९६ में ब्रिटिश की संरक्षणता में आ गया।

कुछ समय पश्चात् एक तिम्बे जाति के मुखिया बाई बुरेह (Bai Bureh) ने ब्रिटिश के विरुद्ध एक विद्रोह कर दिया। १८९८ में मेण्डी जाति के मुखिया ने विद्रोह कर दिया और कई ईसाई धर्म-प्रचारकों तथा ब्रिटिश सरकार के कई पदाधिकारियों का वध कर दिया।

तदनन्तर एक राष्ट्रीय राजनीति की जागृति आरम्भ होने लगी। स्वतंत्रता के लिये संघर्ष होने लगा फलस्वरूप २१ अप्रैल १९६१ को देश स्वतंत्र हो गया।

मेण्डे लिपि : सियर्रे लियोन के निवासी नीग्रो मेण्डे जाति से सम्बन्धित हैं और वई नीग्रो जाति के सम्बन्धी हैं। यह अपनी लिपि का ही प्रयोग करते हैं जो लगभग एक शताब्दी पूर्व बनी। इसके विषय में एल्बर्ट एलबर (Elbert Elber) ने पर्याप्त प्रकाश डाला है। १९३५ में सियर्रे लियोन देश के कोने कोने में उसने पर्यटन किया।

इसका आविष्कार एक नीग्रो दर्जी किसिमो कमाला ने वमा ग्राम — ज़िला बारी — में किया था। इसकी वर्णविली^१ लगभग चार माह में तैयार की गई थी और वई लिपि का कुछ अंशों में अनुकरण, किया गया था। इस वर्णविली के कुछ चिह्न 'फ० सं०—३१३' पर दिये गये हैं। इसमें १६० चिह्नों का प्रयोग किया जाता है।

नाइजेरिया

इतिहास : ग्यारहवीं श० में इस देश में एक कनेम नाम का साम्राज्य स्थापित हुआ था चौदहवीं श० में क्षीण होकर एक राज्य के रूप में रह गया। तेरहवीं श० में यहाँ के लोगों ने इस्लाम धर्म अपना लिया। इस क्षीण राज्य का नाम परिवर्तित होकर पोर्नू हो गया। तदनन्तर कानो, ज़ारिया, दौरा, गोबिर और कतसीना के राज्य बन गये। इनमें आपसी युद्ध होते रहते थे। प्रत्येक राज्य अपनी सत्ता स्थापित करने में संलग्न था।

1. Friedrich, J. : 'Zu einigen Schrifterfindungen der neusten Zeit.' Z. d. d. Ges. 92 (1938) p-192.

सेण्डे लिपि

की	का	कू	वी	बी	ई	अ
7	7	7	o	व	।	┐
उ	सी	सा	सू	ही	हा	ह
┐				ॐ	ॐ	ॐ
वू	म्बी	म्बा	म्बू	ग्बी	ग्बू	ली
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
क्पा	डी	डा	हां	हीं	क्पी	ईं
√X	≡≡	×	×	♀	0#0	!
सूं	म्बीं	ओ	क्पो	बे	ए	बीं
≡	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ

अन्त में कनेम राज्य के अस्तित्व नाम के राजा ने सबको परास्त कर एक साम्राज्य स्थापित कर लिया । जब कनेम राज्य क्षीण होने लगा तो हीसा की कई जातियों के परास्त शासक स्वतन्त्र होने लगे । वे पुनः आपस में युद्ध करने लगे । इनमें से दो राज्य — बोनू तथा केब्बी पुनः शक्तिशाली हो गये ।

यहाँ की जातियों में एक पर्यटक जाति फुलानी थी जो घूमा करती थी परन्तु अब वे लोग नगरों में बस गये थे । उन्हीं में से एक उसुमान दन फोदियो (Usuman Dan Fodio) एक शेख था जो हज भी कर आया था । जब बहुत से फुलानी लोग दास बना लिये गये तो १८०२ में इस शेख ने आपत्ति की जिसके कारण गोविर के राजा ने उसको पकड़ने की आज्ञा दी । उसुमान को फुलानी तथा हीसा के मुसलमानों से सहयोग मिला और उसने गोविर की सेना को परास्त कर दिया । तत्पश्चात् उसने काफ़िरो (मूर्ति पूजक) पर जिहाद (धार्मिक युद्ध) किया और बहुत से हीसा के भूभाग अपने अधीन कर लिये ।

१८०८ में बोनू का राज्य स्वतन्त्र हो गया और फुलानी के कई छोटे — छोटे राज्यों के शासक बना दिये गये । तत्पश्चात् फुलानी साम्राज्य की स्थापना हो गई । उसुमान के मरणोपरान्त उसका पुत्र बेल्लो सोकोतो सुलतान बना और सब फुलानी राज्यों ने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली । १८०८ में जब बोनू की सेना की पराजय हो गई तो उसका शासक माई भाग गया । उसके साथ उसकी एक छोटी सेना भी थी, जिसका सेनापति लैमिनो (मोहम्मद अल अमोन अल कनेमी) था । लैमिनो ने फिर एक सेना एकत्रित की और उसने फुलानी राज्य का अन्त कर दिया और बोनू राज्य के बाहर निकाल दिया । माई फिर शासक बन गया परन्तु नाममात्र, सारी राजसत्ता लैमिनो के हाथ में रही । १८३५ में लैमिनो की मृत्यु हो गई । माई ने पुनः अपनी सत्ता बढ़ाई परन्तु लैमिनो के पुत्र उमर ने उसका वध कर दिया और स्वयं बोनू का शासक बन गया ।

१८६३ में रबाब जुबैर ने बोनू पर आक्रमण कर दिया और १८०० में वह स्वयं शासक बन गया । यही रबाब फ्रेंच सेना द्वारा मार डाला गया ।

बोनू में कई जातियाँ निवास करती थीं । उनमें से प्रमुख यरूबा तथा ईबो की जातियाँ थीं । यरूबा जाति के लोग सम्भवतः मिस्र की ओर से आये थे । सबसे पहले वे ईफ्रो में बस गये । ईफ्रो इस यरूबा जाति का मुख्य धार्मिक स्थान हो गया । पहले तो ओयो का अलाफ़िन पूरी यरूबा जाति का शासक था परन्तु १८१० के पश्चात् राज्य छोटी छोटी जागीरों में विभाजित हो गया और प्रत्येक जागीर का सरदार बहुत अंशों में स्वतन्त्र होने लगा । अलाफ़िन की केन्द्रीय सत्ता नाममात्र को रह गई । ओयो (Oyo) का देश क्षीण होने लगा तथा दाहोमी की ओर से आक्रमण भी होने लगे । उत्तरी भाग पुनः फुलानी जाति के अधीन आ गया । छोटी छोटी जातियाँ — ओयो, एग्बा, ईफ्रो, इजेबू आदि आपस में पुनः लड़ने लगे । पकड़े हुये बन्दी दासों के रूप में बेचे जाने लगे और दासों का व्यापार बढ़ने लगा । इस दास — व्यापार का मुख्य केन्द्र लैगास था जो बाद में नाइजेरिया की राजधानी बना ।

अठारहवीं श० में अनेक यूरोप निवासी आये । १८४६ में लैगास के राजा कोसोके के दरबार में ब्रिटिश राजदूत नियुक्त हो गया । १८८६ में रॉयल नाइजर कम्पनी (Royal Niger Co.) की स्थापना हुई जिसको समुद्री किनारे के भूभाग का प्रबन्धकर्ता बना दिया गया । १८९७ में फुलानी राज्य के शासक इलोरिन नूर्फो को कम्पनी ने अपने अधीन करने का प्रयास किया जिसके फलस्वरूप कम्पनी के एक नगर पर फुलानी सरकार ने आक्रमण कर दिया तथा कई अंग्रेजों को बन्दी बनाकर ले गये और उनको मारकर खा डाला ।

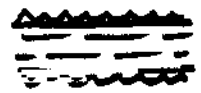
१ जनवरी १९०० को कम्पनी ने अपना पूरा अधिकार कर लिया । १ मई १९०६ को नाइजेरिया ब्रिटिश का एक उपनिवेश बन गया और लैगास उसकी राजधानी बन गई । द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् एक राष्ट्रीय विद्रोह

यनसिन्दी लिपि

विवाहित प्रेम, विवाहित प्रेम एवं तक्रिया, वि० प्रेम एवं दो तक्रिये



पति-पत्नी भगड़ा, उग्र भगड़ा, स्त्री वद्ध, बच्चे, मार्ग



घर, पति, ३ पत्नी, घर, पति, २ पत्नी एवं १० बच्चे, दास

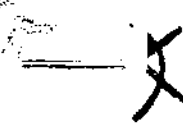
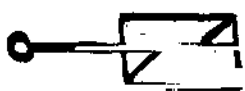


धन, पानी पीना, भगड़ालू गवाही, उग्र प्रेम



दर्पण

अग्नि व्यापार मनुष्य कारागार में



आरम्भ हो गया और यह देश १ अक्टूबर १९६० को पूर्ण स्वतंत्र हो गया। तीन वर्ष के पश्चात् एक गणतंत्र राज्य स्थापित हो गया।

यनसिब्दी लिपि : सिबिदी (Sibidi) के अर्थ प्रतिनिधि के हैं। यनसिब्दी लिपि का ज्ञान १९०५ में मैक्सवेल (Maxwell) तथा मैक ग्रेगर (Mc - Gregor)^१ द्वारा योरोप निवासियों को मिला। यह लिपि ईबो व इजिक जातियों में प्रचलित थी। इसका प्रयोग एक गुप्त समाज द्वारा जादू - मंत्र शाद - फूँक आदि के लिये किया जाता था। यह लिपि संकेतात्मक थी जिसके लिये कुछ चिह्न निर्धारित कर लिये जाते थे। उनमें से कुछ चिह्न 'फ० सं० - ३१४' पर दिये गये हैं। इसका आविष्कार किसने किया तथा कब किया निश्चयपूर्वक ज्ञात नहीं।

अबीसीनिया

इतिहास : लगभग १२०० ई० पू० सेमिटिक जाति के लोगों ने दक्षिण अरेबिया के प्राचीन देश सबा को त्याग कर अफ्रीका में अपना घर बसाया और तिगरे (Tigre) में अक्सुम (Aksum) के नाम से राज्य की स्थापना भी की। कुछ हवास्त से भी आये थे। इस कारण अपने देश का नाम हवाशित रखा जिसका यूरोप के निवासियों ने बिगाड़ कर अबेसी तथा अबीसीनिया (Abyssinia) कर दिया।

इस देश के राज्य ने ईसा की प्रथम शताब्दी में बहुत उन्नति की और अपनी एक लिपि भी बनाई।

लिपि : इस लिपि का नाम प्राचीन अबीसीनियन लिपि रखा गया। यह दक्षिण सेमिटिक वंश की एक शाखा है। इसमें २३ वर्ण थे। इसको लिटमन (Litmann) ने पढ़ा था। इसका जन्म लगभग ई० पू० की छठी शताब्दी में हुआ था। इसकी दिशा दाएँ से बाएँ है। 'फ० सं० - ३१५' पर इसकी वर्णमाला दी गई है। कुछ वर्णों के चिह्न दो - दो भी हैं पर उनमें थोड़ी भिन्नता है।

इथियोपिया

इतिहास : हेरोडोटस ने इथियोपियन्स को दो भागों में विभाजित किया। एक तो खड़े बालों वाले जो पूर्व की ओर निवास करते थे तथा दूसरे ऊनी बालों वाले जो पश्चिम की ओर निवास करते थे। अटारह्वे वंश के शासन काल (१५७० से १३०४ ई० पू० तक) में इथियोपिया (Ethiopia) मिस्र का प्रांत बन गया था। वहाँ का प्रांत पति, जो इथियोपिया का ही शासक था, किश (कुश भी कहते थे जो नूबिया का दूसरा नाम था, नूबिया इथियोपिया का प्राचीन नाम था) का राजकुमार था, जो मिस्र के शासकों को नोग्रो - दास व सैनिक, बैल, हाथीदांत तथा पशुओं की खालें कर के रूप में भेंट किया करता था।

ईसा पूर्व की ग्यारहवीं श० में नूबिया (इथियोपिया) का राज्य पुनः स्वतंत्र हो गया। आठवीं श० में एक शासक पियांखी ने मिस्र को परास्त कर मिस्र का शासक बन कर पच्चीसवें वंश की स्थापना की। इस वंश ने ७५१ से ६६३ ई० पू० तक मिस्र पर शासन किया। परन्तु असीरिया के एक शक्तिशाली शासक अशुरबनीपाल के आक्रमण के कारण, जो ७७१ में हुआ था, इस वंश का अन्त हो गया।

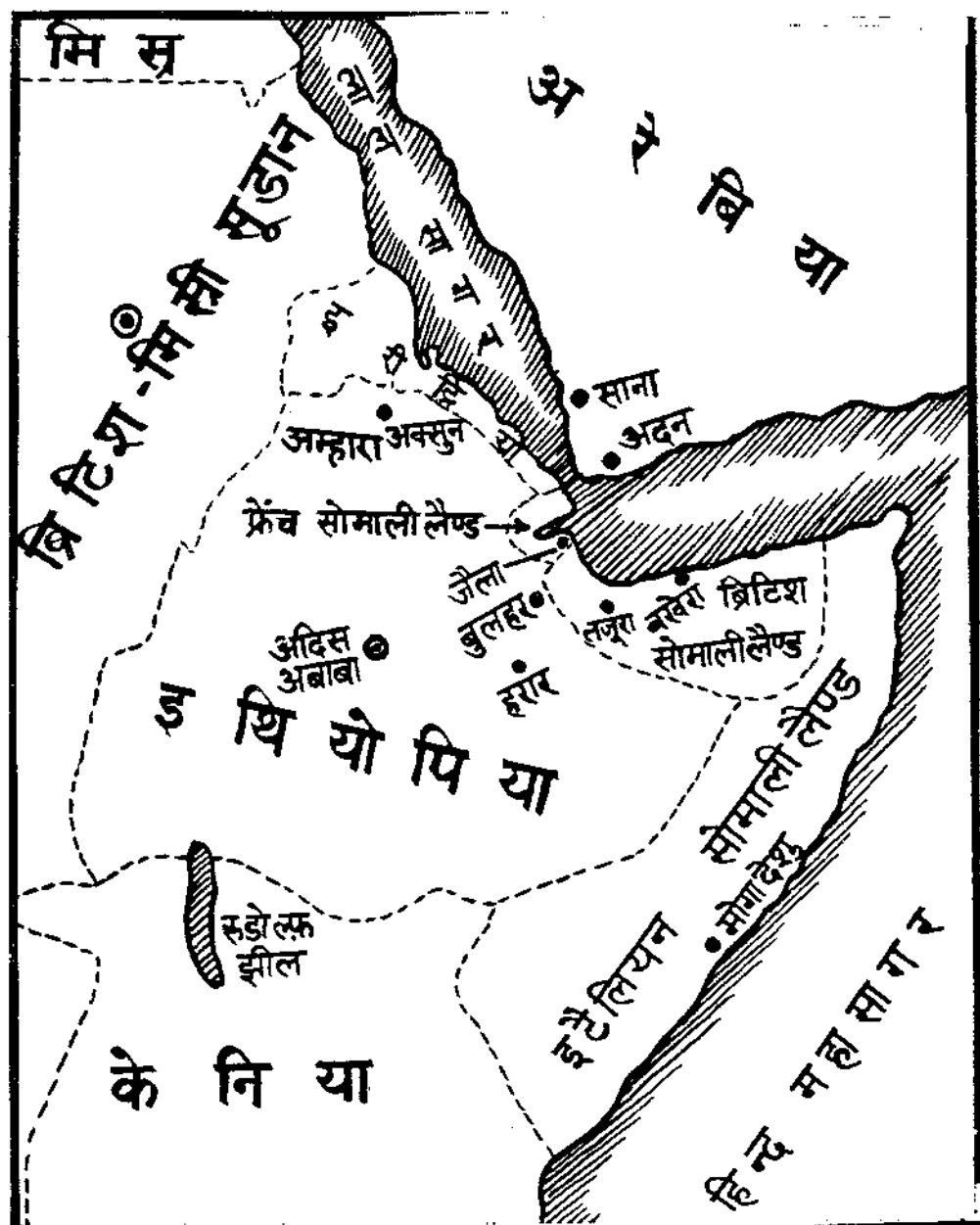
इथियोपिया ने मिस्र पर पुनः कभी आक्रमण नहीं किया परन्तु उसको सुडान की जंगली जातियों से युद्ध करता पड़ता था। २४ ई० पू० में रोमन सैनिकों ने इस पर आक्रमण किया तथा उसकी राजधानी नपाता को नष्ट कर दिया।

1. Mc Gregor : 'Some Notes on Nsibidi' - Journal of Royal Anthropological Institute - No. 39. (1909), p - 209.

प्राचीन अबीसीनिया की लिपि

अ	ब	ज	द	ह		
𑀀	𑀁	𑀂	𑀃	𑀄		
व	ह	य	क	ल	म	न
𑀅	𑀆	𑀇	𑀈	𑀉	𑀊	𑀋
आ(ऐन)	फ़	स	क़	र	श	
𑀌	𑀍	𑀎	𑀏	𑀐	𑀑	
त	स	ख़	ज़	प		
𑀒	𑀓	𑀔	𑀕	𑀖		

इथियोपिया - (उन्तीसवीं श०)



ई० पू० की सातवीं श० में सेमिटिक जाति के लोग, जो दक्षिण अरब से व्यापारियों के रूप में शनैः शनैः यहाँ आकर बसने लगे, इथियोपिया के निवासी हेमेटिक¹ थे। कुछ दिनों पश्चात् इन बाहर से आने वालों ने अपना एक राज्य स्थापित कर लिया तथा अक्सुम उसकी राजधानी बनाई। यह लोग हबाशत के नाम से सम्बोधित किये जाने लगे। इसी नाम के कारण इस देश का नाम अबेसी, अब्सी अबोसीनिया पड़ा। यह लोग इथियोपिया के निवासियों को गौण समझते थे इसी कारण उनको अपने आधिपत्य में रखते थे। अपनी राजधानी अक्सुम को बड़ा पवित्र स्थान मानते थे, जहाँ शासकों के राज्याभिषेक होते थे और यह १८६८ तक भी होते रहे।

इथियोपिया के शासक अपने को सोलोमन (Solomon - सुलेमान), जो इस्राइल का सबसे अधिक शक्तिशाली तथा धनवान् शासक था, के वंशजों में से मानते थे। ईसा की चौथी शताब्दी में इथियोपिया के शासकों ने काप्टिक - ईसाई - धर्म - प्रचारकों से दीक्षा ली और ईसाई हो गये। अक्सुम का राज्य अपने अंत को ओर अग्रसर हो रहा था।

६११ ई० में फ़लाशा की शासिका योदित (Yodit) या जूडिथ (Judith) ने इथियोपिया को बड़ी हानि पहुँचाई तथा उसको परास्त कर अपने अधीन कर लिया। तत्पश्चात् जगुये वंश के एक शासक ने इस शासिका को परास्त कर दिया और १२६८ तक राज्य किया। तदनन्तर पुनः सोलोमन वंशी शासकों ने सत्ता प्राप्त कर ली।

आधुनिक इथियोपिया का पुनर्जन्म १८५५ में थ्योडोर (Theodore) के शासन काल से आरम्भ हुआ। इस शासक ने छोटे छोटे राज्यों को परास्त कर शासन की बागडोर अपने हाथों में ले ली। परन्तु नेपियर की सेना ने १८६२ में इस शासन का अंत कर दिया। उधर १८७२-७६ के मध्य मिस्र के आक्रमण होने लगे जिसके फलस्वरूप इथियोपिया लाल सागर से पृथक् हो गया। १८८० में इटली ने इस देश पर आक्रमण कर दिया और १८८० में इटली ने अपना एक इरीट्रिया (Eritrea) के नाम से उपनिवेश स्थापित कर लिया। मेनेलिक ने १८८६ में इटली को परास्त कर देश को स्वतंत्र कर लिया और १८९६ में ब्रिटिश, फ्रांस व इटली के देशों की सरकारों ने इथियोपिया की सीमाओं को मान्यता प्रदान कर दी। १९२३ में इथियोपिया 'लीग आफ नेशन्स' (League of Nations) का सदस्य बन गया।

१९३६ में इटली ने पुनः आक्रमण कर दिया। १९४१ में ब्रिटिश सरकार के सहयोग से इथियोपिया ने पुनः स्वतंत्रता प्राप्त कर ली। अब इसकी राजधानी अदिस अबाबा है।

लिपि : जो प्रवासी अरब से आये थे वे अपने को तथा अपनी भाषा को गीज या घेर्ज कहते थे जिसके अर्थ हैं 'प्रवासी'। आरम्भ में तो वे सबा की लिपि का ही प्रयोग करते थे परन्तु ईसाई - धर्म अपनाने के पश्चात् इन लोगों ने ३५० में दूसरे प्रकार की लिपि का प्रयोग आरम्भ कर दिया, जो प्राचीन - अबोसीनियन - लिपि के नाम से ज्ञात हुई। ईसाई - धर्म के अनुयायी होने के पश्चात् इन लोगों का सांस्कृतिक सम्बन्ध ग्रीस देश से हो गया और लिपि में परिवर्तन होने लगे। प्राचीन - अबोसीनियन का परिवर्तित रूप ही इथियोपिक अथवा गीज लिपि पड़ा। इसका प्रयोग आज भी इस देश की अन्य भाषाओं के लिये होता है।

फ़्रीड्रिख (Friedrich) तथा लिटमन² (Littmann) के विचारानुसार इथियोपिया की लिपि के २६ अक्षरों के साथ-साथ ७ स्वरों का मिश्रण किया गया है। यह तीसरी व चौथी शताब्दी के मध्य में फ्रूमेन्शियस

1. **हबशत नूह** (Noah) के दो पुत्रों के नाम से दो जातियाँ बनीं। एक का नाम साम था जिसके वंशज सेमिटिक जाति के तथा दूसरे का नाम हाम था जिसके वंशज हेमेटिक जाति के लोग कहलाये।

2. **Littmann : Deutsche Aksum - Expedition, iv, P - 76.**

इथियोपिया की वर्णमाला

ह-H	हु	ही	हा	हे	हि	हो
ሀ	ሁ	ሂ	ሃ	ሄ	ህ	ሆ
ल-L	लू	ली	ला	ले	लि	लो
ለ	ሉ	ሊ	ላ	ሌ	ሎ	ሎ
ख-H	खू	खी	खा	खे	खि	खो
ከ	ከሁ	ከሂ	ከሃ	ከሄ	ከህ	ከሆ
म-M	मू	मी	मा	मे	मि	मो
መ	ሙ	ሚ	ማ	ሜ	ሚ	ሞ
श-፩	शू	शी	शा	शे	शि	शो
ሠ	ሠሁ	ሠሂ	ሠሃ	ሠሄ	ሠህ	ሠሆ
र-R	रू	री	रा	रे	रि	रो
ረ	ሪ	ሪ	ሪ	ሪ	ሪ	ሪ
स-S	सू	सी	सा	से	सि	सो
ሰ	ሰሁ	ሰሂ	ሰሃ	ሰሄ	ሰህ	ሰሆ

इथियोपिया की वर्णमाला

क-Q	कू	की	का	के	कि	को
ቀ	ቑ	ቒ	ቃ	ቄ	ቅ	ቆ
ब-B	बू	बी	बा	बे	बि	बो
በ	ቡ	ቢ	ባ	ቤ	ብ	ቦ
त-T	तू	ती	ता	ते	ति	तो
ተ	ቲ	ቲ	ታ	ቲ	ቲ	ቲ
ख-H	खू	खी	खा	खे	खि	खो
ከ	ከ	ከ	ከ	ከ	ከ	ከ
न-N	नू	नी	ना	ने	नि	नो
ነ	ከ	ከ	ነ	ከ	ነ	ከ
अ-'	अू	अी	आ	अे	अि	ओ
አ	አ	አ	አ	አ	አ	አ
क-K	कू	की	का	के	कि	को
አ	አ	አ	አ	አ	አ	አ

इथियोपिया की वर्णमाला

व-W	वू	वी	वा	वे	वि	वो
፱	፱፡	፱፡፡	፱፡፡፡	፱፡፡፡፡	፱፡፡፡፡፡	፱፡፡፡፡፡፡
अ ^x -e	अू	अी	आ	अे	अि	ओ
ዐ	ዐ፡	ዐ፡፡	ዐ፡፡፡	ዐ፡፡፡፡	ዐ፡፡፡፡፡	ዐ፡፡፡፡፡፡
ज़-Z	ज़ू	ज़ी	ज़ा	ज़े	ज़ि	ज़ो
ዘ	ዘ፡	ዘ፡፡	ዘ፡፡፡	ዘ፡፡፡፡	ዘ፡፡፡፡፡	ዘ፡፡፡፡፡፡
ज-J	जू	जी	जा	जे	जि	जो
የ	የ፡	የ፡፡	የ፡፡፡	የ፡፡፡፡	የ፡፡፡፡፡	የ፡፡፡፡፡፡
द-D	दू	दी	दा	दे	दि	दो
ደ	ደ፡	ደ፡፡	ደ፡፡፡	ደ፡፡፡፡	ደ፡፡፡፡፡	ደ፡፡፡፡፡፡
ग-G	गू	गी	गा	गे	गि	गो
ገ	ገ፡	ገ፡፡	ገ፡፡፡	ገ፡፡፡፡	ገ፡፡፡፡፡	ገ፡፡፡፡፡፡

x इस अक्षर का नाम ऐन(AIN) है।

क्रमशः

इसकी ध्वनि 'अ' जैसी ही होती है।

इथियोपिया की वर्णमाला

त-ṭ	तू	ती	ता	ते	ति	तो
ṭ	ṭ	ṭ	ṭ	ṭ	ṭ	ṭ
प-p	पू	पी	पा	पे	पि	पो
ṭ	ṭ	ṭ	ṭ	ṭ	ṭ	ṭ
स-s	सू	सी	सा	से	सि	सो
ṭ	ṭ	ṭ	ṭ	ṭ	ṭ	ṭ
दज-D	दजू	दजी	दजा	दजे	दिज	दजो
ṭ	ṭ	ṭ	ṭ	ṭ	ṭ	ṭ
फ-F	फू	फी	फा	फे	फि	फो
ṭ	ṭ	ṭ	ṭ	ṭ	ṭ	ṭ
प-P	पू	पी	पा	पे	पि	पो
ṭ	ṭ	ṭ	ṭ	ṭ	ṭ	ṭ

अलिफ़ के लिए भाषा शास्त्रियों ने (१) निर्धारित किया है इसकी ध्वनि भी अ जैसी होती है। इसी प्रकार से ऐन-(९)

(*Frumentius*) और थियोफिलास (*Theophilos*) के अनुसार भारतीय धर्म-प्रचारकों द्वारा किया गया । भारत में इस प्रकार की पद्धति को बारहखड़ी अथवा वर्णविली कहते थे । इस प्रकार २६ अक्षरों को ७ से गुणा कर देने से १८२ चिह्न बनाये गये ।

आरम्भ में इसकी दिशा दाएँ-से-बाएँ थी परन्तु ग्रीस तथा भारत के सम्पर्क में आने से इसकी दिशा लगभग दसवीं श० में बाएँ से दाएँ^१ हो गई ।

‘फ० सं० — ३१७-३१७ ग’ पर इथियोपिया की लिपि^२ दी गई है ।

पठनीय सामग्री

- | | |
|----------------------------|---|
| <i>Barth, H.</i> | : <i>The Northern Tribes of Nigeria</i> (1948). |
| <i>Budge, E. W.</i> | : <i>History of Ethiopia, Nubia and Abyssinia</i> , 2 Vols. (1928) |
| <i>Burns, Sir Alan</i> | : <i>History of Nigeria</i> (1955). |
| <i>Cerull</i> | : <i>Oriente moderno</i> , XII. (1932). |
| <i>Crawford, O. G. S.</i> | : <i>Article on Bamun Writing</i> (<i>Antiquity</i> December—1935). |
| <i>Davis, Nathan</i> | : <i>Carthage and Her Remains</i> . (1861). |
| <i>Eberl, E.</i> | : <i>Westafrikas letztes Ratsel</i> (1936). |
| <i>Erskine, S.</i> | : <i>Vanished Cities of North. Africa</i> (1927), |
| <i>Forde, C. D. and</i> | : <i>The Ibo and Ibibio Speaking Peoples of Southern</i> |
| <i>Jones, G. I.</i> | : <i>Eastern Nigeria</i> (1950). |
| <i>Goddard, T. N.</i> | : <i>The Hand-Book of Sierre Leone</i> (1925). |
| <i>Greenwall, H. J.</i> | : <i>Unknown Liberia</i> (1936). |
| <i>and Wild, R.</i> | |
| <i>Humphrey, H. N.</i> | : <i>Origin and Progress of the Art of Writing</i> (1938). |
| <i>Jansen, Hans</i> | : <i>Syn, Symbol and Script</i> (1968). |
| <i>Jones, A. H. M. and</i> | : <i>History of Abyssinia</i> (1935). |
| <i>Monroe, E.</i> | |
| <i>Kuczinski, R. R.</i> | : <i>The Cameroons and Togoland</i> (1939). |
| <i>Mac Gregor, J. K.</i> | : <i>Some Notes on Nsibdi</i> (<i>Journal of the Royal Anthropological</i> |
| | : <i>Institute of Great Britain and Ireland</i> — 1909), |

1. Dillmann : *Grammar der äthiopische Sprache* (1899), P — 19.

2. Grohmann : ‘Über den Ursprung and die Entwicklung der äthiopische Schrift’
Archaeologie für Schriftkunde, I. (1914), p — 35)

- Mason A. W.* : A History of Writing (1924).
- Mass - aquot* : 'The Vai People and Their Writing.
(Journal of African Society Vol. X. - 1910).
- Mogeod, F. W. H.* : The Syllabic Writing of the Vai People (Journal of the
African Society - 1910).
- Moorhouse, A. C.* : Writing and Alphabet (1927).
- Moreno, M. M.* : Il Somalo della Somalia, (Rome - 1955).
- Sahni, Swarn* : Book of Nations (1972).
- Smith, A. D.* : Through Unknown African Countries (1897).
- Springling, M.* : The Alphabet-Its Rise and Development (1931),
- Sumner, A. T.* : Sierre Leone Studies (1932).
- Talbot, P. A.* : The Peoples of Southern Nigeria.
- Werner, A.* : The Language Families of Africa (1925).
- Young, J. C.* : Liberia Rediscovered (1934).

अध्याय : ७
यूरोपीय देशों की
लेखन कला का इतिहास

यूरोपीय देश

यूरोप जंगली जातियों का स्थान रहा है। यहाँ सबसे प्राचीन संस्कृति केवल ग्रीस, सायप्रस तथा इटली में मिलती थी। यही जंगली जातियाँ युद्ध करती रहीं तथा सम्यता की ओर अग्रसर होती रहीं, साथ-साथ अपना विकास करती रहीं। इनमें एक गुण था कि वे साहसिक थीं। यही जातियाँ सारे विश्व की शासक बन गयीं और आज विज्ञान, तकनीकी में सब से आगे हो गईं। किस प्रकार से यूरोप के देशों में लिपियों का जन्म व विकास हुआ है इस अध्याय में विस्तार से दिया गया है।

सायप्रस

इतिहास : ग्रीक भाषा में इस देश का नाम किप्रॉस है। पुरातात्विक उत्खनन से ज्ञात हुआ है कि यहाँ ३४०० से ३२०० ई० पू० में कृषि होती थी और तात्कालिक संस्कृति के मिट्टी के बरतनों में एक प्रधानता पायी जाती थी जिसको पुरातत्त्ववेत्ताओं ने कोम्ब्ड पॉटरी (*combed pottery*) के नाम से सम्बोधित किया है। इस प्रकार के मिट्टी के बर्तन किसी अन्य प्राचीन संस्कृति में दृष्टिगोचर नहीं होते। लगभग २४०० व २००० ई० पू० के मध्य यहाँ लाइनियर प्रकार की लेखन कला भी आरम्भ हुई थी। तथा २००० - १५०० ई० पू० के मध्य, देश के बाहर की अन्य जातियों ने यहाँ आकर बसना आरम्भ कर दिया।

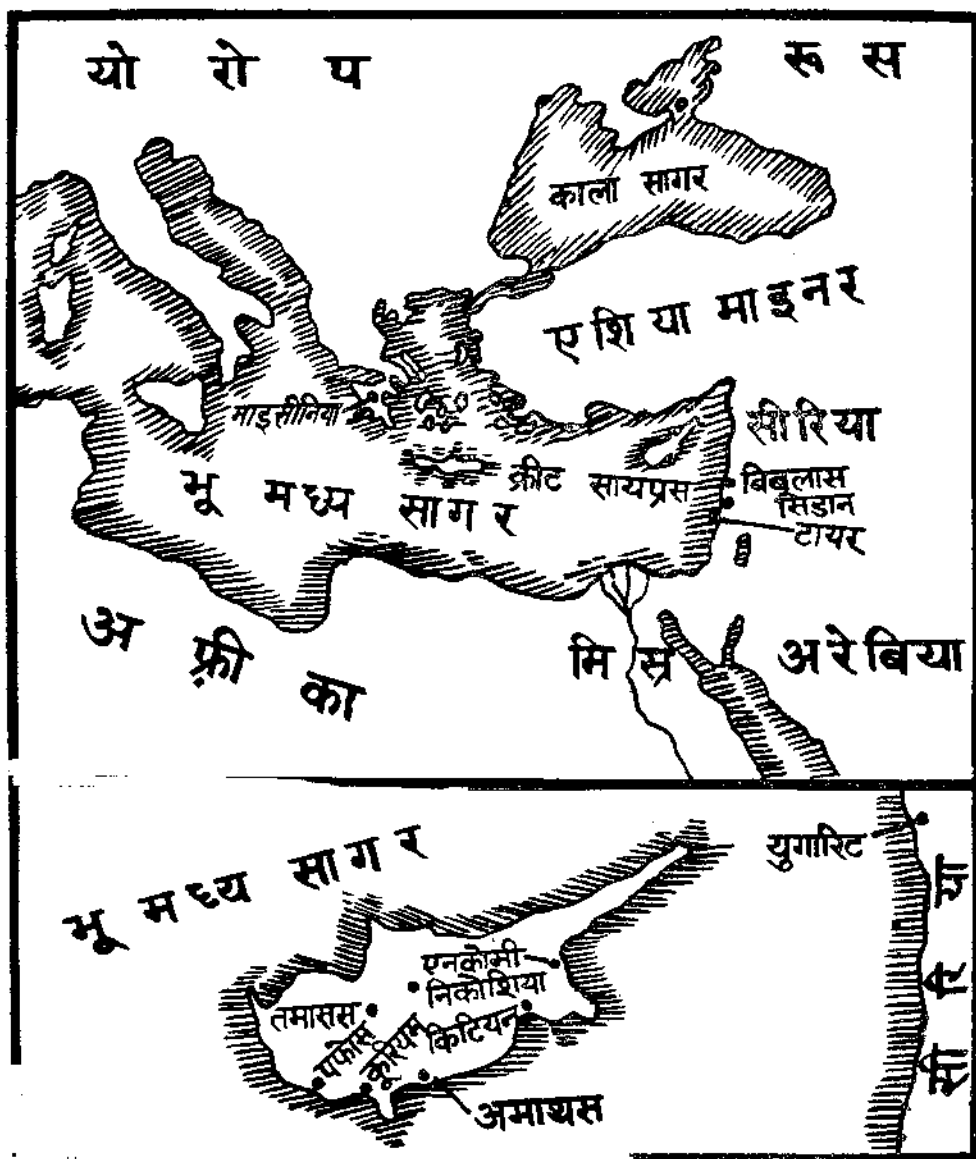
पन्द्रहवीं श० में माइसीनिया के निवासी यहाँ आये, जो अपने साथ चक्र-निर्मित मिट्टी के बर्तन, अपने भिन्न प्रकार के अस्त्र तथा अपनी भाषा व लिपि भी लाये। यह बाद में किप्रो-माइसीनियन के नाम से ज्ञात हुये। यहाँ से भिन्न व मेसोपोटामिया को ताँवा नियत किया जाता था। लगभग बारहवीं श० में अकाइयन (*Achaean*) उपनिवेशी यहाँ पहुँचे। उस काल में यहाँ एक राज्य स्थित था जिसकी राजधानी पाफ़ोस (*Paphos*) थी और तमीरादई (*Tamiradac*) राजा के वंशज राज्य करते थे।

५०० ई० पू० में फ़िनीशियन आने लगे। टायर (*आधु० सूर*) नगर - राज्य ने किटियन में अपनी एक बस्ती भी बसा ली थी। यह बात पुरातात्विक उत्खनन द्वारा अनेक फ़िनीशियन अभिलेखों के प्राप्त होने से प्रमाणित होती है।

७०६ ई० पू० में प्रथम बार सायप्रस की स्वतंत्रता को ठेस पहुँची जब सरगोन द्वितीय ने, जो अवकाद (*असीरिया*) का शासक था, आक्रमण करके सायप्रस को परास्त कर दिया। तब सायप्रस का नाम यतनान-दनाओई का द्वीप (*Yatnana the Isles of Danaoi*) पड़ गया। ६६७ ई० पू० में यह देश अशुरबनीपाल को उपहार देता रहता था। तदनन्तर सायप्रस ने लगभग सौ वर्ष स्वाधीनता का आनन्द लिया और वह स्वर्ण युग कहलाया। इसी शताब्दी में स्टेसीनास (*Stasinus*) ने एक महाकाव्य 'किप्रिया' के नाम से रचा।

असीरिया की अधीनता के पश्चात् भिन्न की अधीनता आई परन्तु भिन्न के शासकों ने इस पर शासन नहीं किया। सायप्रस को कर के रूप में भिन्न को उपहार भेजने पड़ते थे। ५२५ ई० पू० में कैम्बेसिज ने इसको पर्शिया का उपनिवेश बना लिया और डैरियस ने इसको अपने देश के पाँचवें प्रान्त में सम्मिलित कर लिया। सायप्रस ने

सायप्रस



४८० ई० पू० में, जब जर्कसीज ने ग्रीस पर आक्रमण किया था, अपनी नौसेना के साथ १५० जलपोत सहयोग के रूप में जर्कसीज को भेंट किये। ३३३ ई० पू० में सिकन्दर के आक्रमण का स्वागत किया गया।

३२३ में सिकन्दर के मरणोपरान्त सायप्रस मिस्र के शासक टॉलेमी प्रथम के अन्तर्गत आ गया। ३०६ में डेमेट्रियस ने इस पर अधिकार कर लिया। २६५ में पुनः टॉलेमी ने अपने अधीन कर लिया और राजवंश के एक प्रांतपति द्वारा शासन होता रहा।

५८ ई० पू० में रोम ने पोर्कियस काटो (Porcius Cato) को सायप्रस रोमन राज्य के अन्तर्गत करने के लिये भेजा। जिसमें युद्ध हुआ। सहस्रों मनुष्यों का हनन हुआ। सलामिस^१ नष्ट किया गया और सायप्रस से सब यहूदियों को निकाल दिया गया। सातवीं श० में अरब के विध्वंसक आक्रमण होने लगे। ३०० वर्षों तक सायप्रस न मुसलमानों के अधिकार में रहा और न पूर्णतया बैजेन्टाइन के अधिकार में रहा। दोनों ही आक्रमणकारियों ने उसको अपना एक अड्डा एक दूसरे पर आक्रमण करने को बना लिया। तत्पश्चात् २०० वर्षों तक यह बैजेन्टाइन साम्राज्य के अन्तर्गत रहा।

१२११ में सायप्रस ब्रिटिश धार्मिक — युद्ध — सैनिकों (Crusaders) के विरुद्ध हो गया। तब रिचर्ड प्रथम ने आक्रमण करके इसको अपने अधीन कर लिया। तत्पश्चात् इसको जेरुसेलम के हाथों बेच दिया। सायप्रस के शासकों ने धर्म-युद्ध को जीवित रखा। १४६० से १५७० ईसवी तक यह वेनिस (इटली) के अधीन रहा। १५७१ में ऑटोमन (उस्मान से ओथोमन तथा ऑटोमन) तुर्कों के अधीन आ गया और ३०० वर्षों तक तुर्की शासन में रहा। १७६४ से १८२१ तक तुर्कों के विरुद्ध अनेक विद्रोह हुये। १८७८ में तुर्कों ने सायप्रस का शासन ब्रिटिश के हाथों में सौंप दिया। १९१४ में यह ब्रिटिश के अधीन हो गया। १९२५ में यह ब्रिटेन के राजवंश का एक उपनिवेश (Crown Colony) बन गया। १९३१ में ग्रीस के सायप्रस नागरिकों ने ग्रीस के साथ मिलाने के लिये विद्रोह किया। द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् यह विद्रोह और शक्तिशाली हो गया।

१९५६ में एक गणतन्त्र राज्य बनाने की योजना बनी जिसमें तुर्कों की अल्प संख्या को सुरक्षा प्रदान करने का वचन दिया गया और यह निश्चय हुआ कि एक ग्रीक राष्ट्रपति हो तथा तुर्क उप — राष्ट्रपति। २६ अगस्त १९६० को एक स्वतन्त्र गणराज्य स्थापित होने की घोषणा कर दी गई। यहाँ तीन भाषाओं — ग्रीक, तुर्की एवं अंग्रेजी — का प्रयोग साथ साथ चलता है। निकोशिया इसकी राजधानी स्थापित हुई।

लेखन कला : उन्नीसवीं श० के मध्य तथा बीसवीं श० के आरम्भ में सायप्रस में कई पुरातात्विक उत्खनन किये गये। उत्खनन कार्य करने वालों के निम्नलिखित नाम उल्लेखनीय हैं :—

टी० बी० सैंडविच (T. B. Sandwith), आर० एच० लैंग (R. H. Lang), एल० पी० दि सेसनोला (L. P. di Cesnola), ओ० रिखतर (O. Richter), एस० एल० मायर्स (S. L. Myres) तथा एम० मार्कीडीज (M. Markides)। इस उत्खनन कार्य द्वारा पता लगा कि यहाँ लाइनियर बी (Linear B) की लिपि शैली, जो माइसीनियन प्रवासियों के साथ लाई गई थी, ई० पू० की पन्द्रहवीं श० से आठवीं श० तक प्रचलित रही। यह भी ज्ञात हुआ कि ई० पू० की सातवीं श० से प्रथम श० तक एक वर्णावली का प्रयोग होता रहा जिसमें ४५ चिह्नों का प्रयोग किया जाता था। इसके लिखने की दिशा दाएँ से बाएँ तथा हल चलाने की पद्धति (Beoustrophoden Style) प्रचलित थी।

१. इसी नाम का दूसरा नगर ग्रीस में पथेन्स के भी निकट था।

उत्खनन द्वारा कई द्विभाषिक अभिलेख भी प्राप्त हुये जिसके द्वारा यहाँ की लिपि के रहस्योद्घाटन में पर्याप्त सहायता प्राप्त हुई। रहस्योद्घाटन के कार्य¹ का भी श्रीगणेश करने के लिये कुछ प्राथमिकतायें हैमिल्टन (Hamilton), लैंग (Lang) तथा जी० स्मिथ (G. Smith) द्वारा पूर्ण की गईं। लैंग व स्मिथ ने फ़िनीशिया - सिप्रियाटिक द्विभाषिक अभिलेखों को पढ़ने का प्रयास किया। ५६ चिह्नों में से १८ अक्षर पहचान लिये गये। तत्पश्चात् अन्य विद्वानों के सहयोग से एक वर्णवली प्रस्तुत की गई।

सिप्रियाटिक लिपि की वर्णवली : में वर्णों के रूप तथा पाँच स्वर सम्मिलित हैं। ५०० के लगभग जो पाटियाँ उत्खनन में प्राप्त हुईं उनको जॉर्ज स्मिथ ने तथा वेन्ट्स - चैडविक ने पढ़ा और एक वर्णवली² प्रस्तुत की। उसी के कुछ वर्ण 'फ० सं० - ३१६' पर दिये गये हैं। इसका समय ७०० ई० पू० निर्धारित किया गया तथा अभिलेखों की भाषा ग्रीक है।

सिप्रियाटिक लिपि का क्रीट लिपि से सम्बन्ध : 'फ० सं० - ३२०' पर क्रीट की लाइनियर - 'A' और 'B' लिपियाँ एवं सिप्रो - मीनियन से सिप्रियाटिक लिपि का विकास³ दिखाया गया है। अब यह बात सर्वमान्य हो चुकी है कि आरम्भ काल में क्रीट व माइसीनिया की संस्कृतियों का सायप्रस पर प्रभाव पड़ा और लिपि का उद्भव इन्हीं देशों से आरम्भ हुआ परन्तु बाद में फ़िनीशिया व बेबीलोन आदि के सम्पर्क में आने से बहुत से परिवर्तन भी हुये।

सिप्रियाटिक लिपि का अभिलेख : यह अभिलेख सेसनोला द्वारा एक उत्खनन में, जो सलामिस (Salamis) - आधुनिक एनकोमी (Enkomi) - में किया गया, प्राप्त हुआ। इसका रहस्योद्घाटन तथा अनुवाद जॉर्ज स्मिथ ने १८८६ में किया। इसको दाएँ से बाएँ पढ़ा जायेगा। "ईरास ने इसे अपोलो को भेंट किया" (फ० सं० - ३२१)। (ईरास ग्रीस का एक पौराणिक प्रेम - देवता था, अपोलो सूर्य देवता था।)

ग्रीस

इतिहास : ग्रीस का इतिहास सारे देश का इतिहास नहीं है। क्योंकि ग्रीस प्राचीन काल में कभी एक देश या राष्ट्र के रूप में नहीं रहा। उसका इतिहास छोटे छोटे नगर-राज्यों का इतिहास है। फिर भी संस्कृति के दृष्टिकोण से यह देश एक रहा है। इस संस्कृति का प्राचीन नाम एजियन संस्कृति था जिसका जन्म लगभग ३००० ई० पू० में हुआ। कुछ विद्वानों के विचारानुसार एजियस (Aegeus) एथेंस के राजा का नाम था। जब उसने अपने पुत्र थेसियस (Thesius), जो क्रीट पर आक्रमण करने गया था, की मृत्यु का समाचार सुना, वह समुद्र में कूद पड़ा और आत्महत्या कर ली उसी के नाम पर 'एजियन संस्कृति' का नाम पड़ा। कुछ विद्वान् इस देश की संस्कृति को हेलेनिस्तिक (Hellenistic civilization) संस्कृति के नाम से सम्बोधित करते हैं। यह थेसली के दक्षिण

1. Friedrich, J. : *Entzifferung verschollener Schriften und Sprachen* (Berlin-1924), p - 102.
2. Ventris and Chadwick : 'Evidence for Greek Dialect in the Mycenaean Archives' *Journal of Hellenic Studies* Vol. LXXIII. (1953); p - 84.
3. Daniel, J. F. : 'Prolegomena to Cyprian-Minoan Script'—*American Journal of Archaeology*, Vol. 45. (1941), p - 249; Evans : *Scripta Minos* (1909) p - 70
Eisler, R. : *J. R. A. S.* (1923), p-169.

सिप्रियाटिक लिपि की वर्णमाला

अ * ^A	ए * ^E	ई * ^I	ओ * ^O	ऊ * ^U
क ↑↑	के * ^K	की * ^K	को * ^K	कु * ^K
त —	ते * ^T	ती * ^T	तो * ^T	तू * ^T
प ‡	पे * ^P	पी * ^P	पो * ^P	पू * ^P
ल ∨	ले * ^L	ली * ^L	लो +	लू * ^L
र ∇	रे * ^R	री * ^R	रो * ^R	रू * ^R
स ∪	से * ^S	सी * ^S	सो * ^S	सू * ^S
म ∪	मे * ^M	मी * ^M	मो * ^M	मू * ^M
न —	ने * ^N	नी * ^N	नो * ^N	नू * ^N
ज ○	जे * ^J			
झ ∪	झे * ^J	झी * ^J	झो * ^J	
ञ ∪			ञो * ^J	
व ∪				
श ∪				
स ∪	से * ^S			











फलक संख्या - ३१९

सिप्रियाटिक लिपि का क्रेटन से सम्बन्ध

ध्वनि	लाइनियर- A	लाइनियर- B	सिप्रोमीनियन	सिप्रियाटिक
व)()()()(
सी	↑	↑	↑	^
प		≡	≡	≡
के	≡ ≡		≡ ≡	≡
ओ	+	+	+	+
त	┐	┐	┐	┐
अ	⌘ ⌘		8	8
भ	┘	┘	┘	┘
को	^	^	┐	^
ली	⌐	⌐	↑	↑ ↑
पी			≡ ≡	≡
मु	┘		┘	┘

सिप्रियाटिक लिपि के कुछ शब्द

सेसनोला (CESNOLA) के संग्रह से प्राप्त

									
नी	लो	पो	अ	तो	के	ते	से	रो	ए
ni	lo	ho	a	to	ke	te	se	ro	e
A POLLO TO IT OFFERED					EROS				
को अपोलो इसे भेंट किया ईरास ने									

फलक संख्या - ३२१

में निवास करने वाली एक जाति, जिसका नाम हेल्लास (Hellas) था, के नाम पर रखा गया। कुछ विद्वान् ग्रीस की संस्कृति को यूनानी संस्कृति भी कहते हैं। यह नाम आयोनियन (Ionian) के नाम पर यूनान अथवा यवन कहलाने के कारण यूनानी संस्कृति हो गई। मतभेदों का कारण केवल प्रमाण की अनुपस्थिति है।

अब यह मत सर्वमान्य हो चुका है कि ग्रीस के मूल निवासी पेल्लासगियन (Pelasgeon) थे। उत्तर की ओर से कुछ जातियाँ आकर बसने लगीं और उन्होंने नगर-राज्यों को स्थापित किया। इनके आने का काल लगभग २००० ई० पू० माना जाता है। तदनन्तर २१०० से ७०० ई० पू० तक तीन जातियों ने आकर अपने अपने नगर-राज्य स्थापित किये। उन जातियों के लोगों के नाम आयोलियन्स (Aeolians), डोरियन्स (Dorians) तथा आयोनियन्स (Ionians) थे। यह नगर-राज्य गृह-युद्ध में रत रहते थे तथा एक दूसरे पर शासक बनने के लिये आक्रमण करते रहते थे। कुछ दिनों पश्चात् कुछ राज्य मिल कर एक संघ (League) का निर्माण करने लगे तब एक संघ दूसरे संघ से युद्ध करता रहता था।

ई० पू० की पाँचवीं श० में ग्रीस अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया था। चौथी व तीसरी शताब्दी में यह मैसीडोनिया के अन्तर्गत आगया। दूसरी श० से रोम के प्रभाव में आ गया। ईसवी सन् की चौथी श० में बैजन्टायन साम्राज्य के अधीन रहा। १४५३ में ओटोमन साम्राज्य में आ गया। १८२१-२६ तक यह टर्की से युद्ध करता रहा और ब्रिटिश, फ्रांस व रूस के सहयोग से २५ मार्च १८२६ को टर्की के शासन से मुक्त हो गया। १८२५ में यह गणतंत्र राज्य घोषित कर दिया गया। १८३५ में फिर एक राजा के शासन के अन्तर्गत आ गया। १ जनवरी १८५२ से विवान के अन्तर्गत शासन चलने लगा।

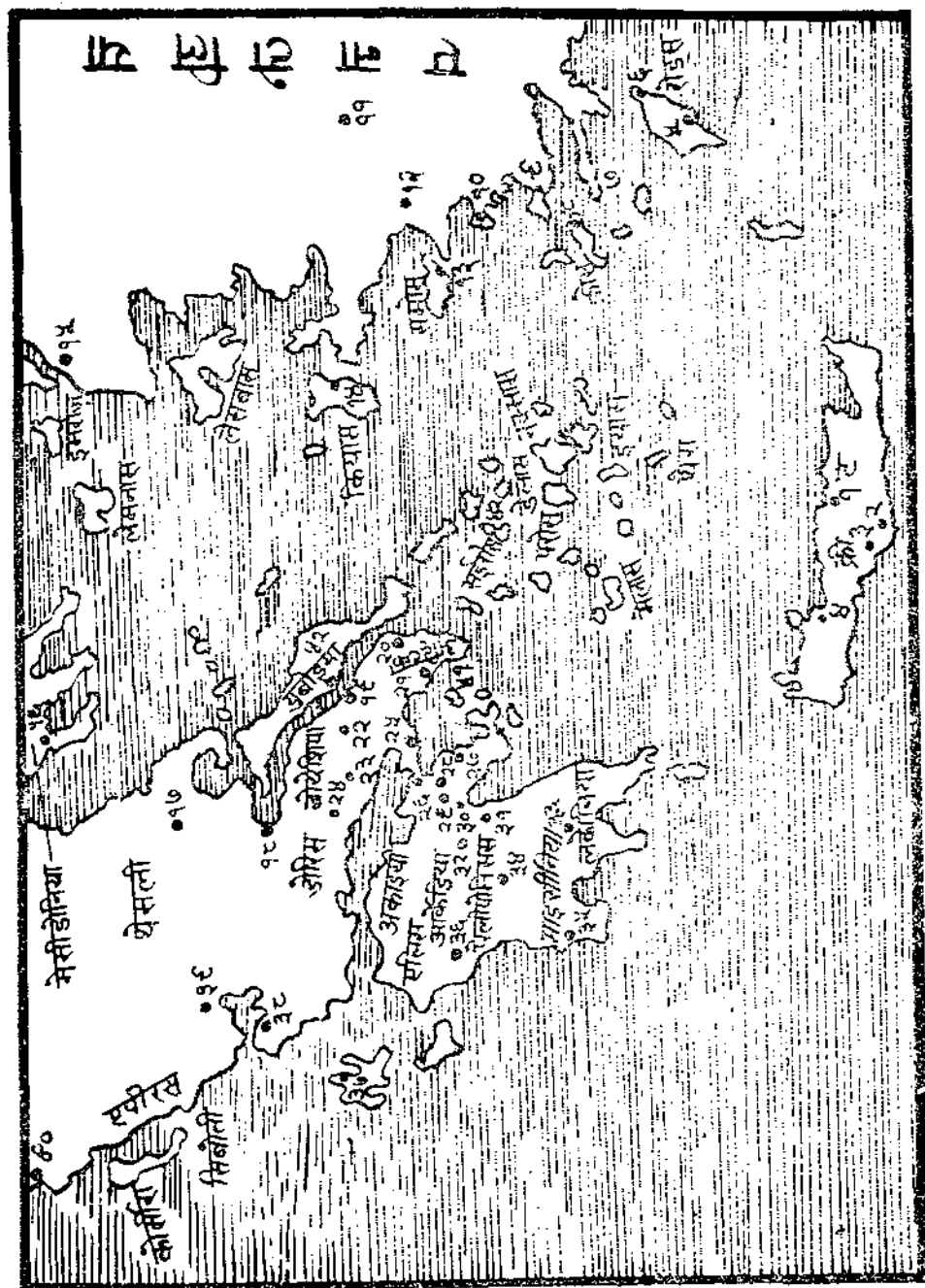
ग्रीस के प्राचीन मानचित्र में संख्याओं का निर्देशन

(इसमें कुछ द्वीपों के तथा राज्यों के नाम लिख दिये गये हैं नगरों को संख्या से दिखाया गया है जिसकी तालिका निम्नलिखित है)

१. नसस (Knossos)	१२. एफिसस (Ephesus)
२. फ़ैस्टस (Phaistos)	१३. समोस (Samos)
३. हागिया त्रियादा (Hagia Triada)	१४. कियास (Chios)
४. कइदोनिया (Cydonia)	१५. ट्रॉय ^३ (Troy)
५. लिन्दस (Lindus)	१६. पोतीदइया (Potidaea)
६. रोड्स (Rhodes)	१७. साइनास्कीफ़लाइ (Cynoscephalae)
७. क्नीडस (Cnidus)	१८. थर्मोपिली (Thermopylae)
८. कोस (Cos)	१९. डेलियम (Delium)
९. हेलीकार्नेस ^१ (Halicarnassus)	२०. मराथन (Marathon)
१०. मिलेटस (Miletus)	२१. एथेन्स (Athens)
११. सार्डिस ^२ (Sardis)	२२. थीबीज (Thebes)

१. इसी नगर में हेरोडोटस-प्रसिद्ध प्राचीन इतिहासकार-का जन्म लगभग ४८० ई० पू० में हुआ था। यह इतिहास का जन्मदाता माना जाता है।
२. यह नगर प्राचीन काल में बड़ा प्रसिद्ध राजनैतिक केन्द्र रहा है।
३. होमर के महाकाव्य का मुख्य नगर जिसका पुरातात्विक उत्खनन करके हेनरिख शिलीमान (Heinrich Schliemann) ने १८९१ में एक कल्पना को पुनर्जीवित कर दिया।

प्राचीन ग्रीस - ई० पू० की दूसरी शती तक



फलक संख्या - ३२२

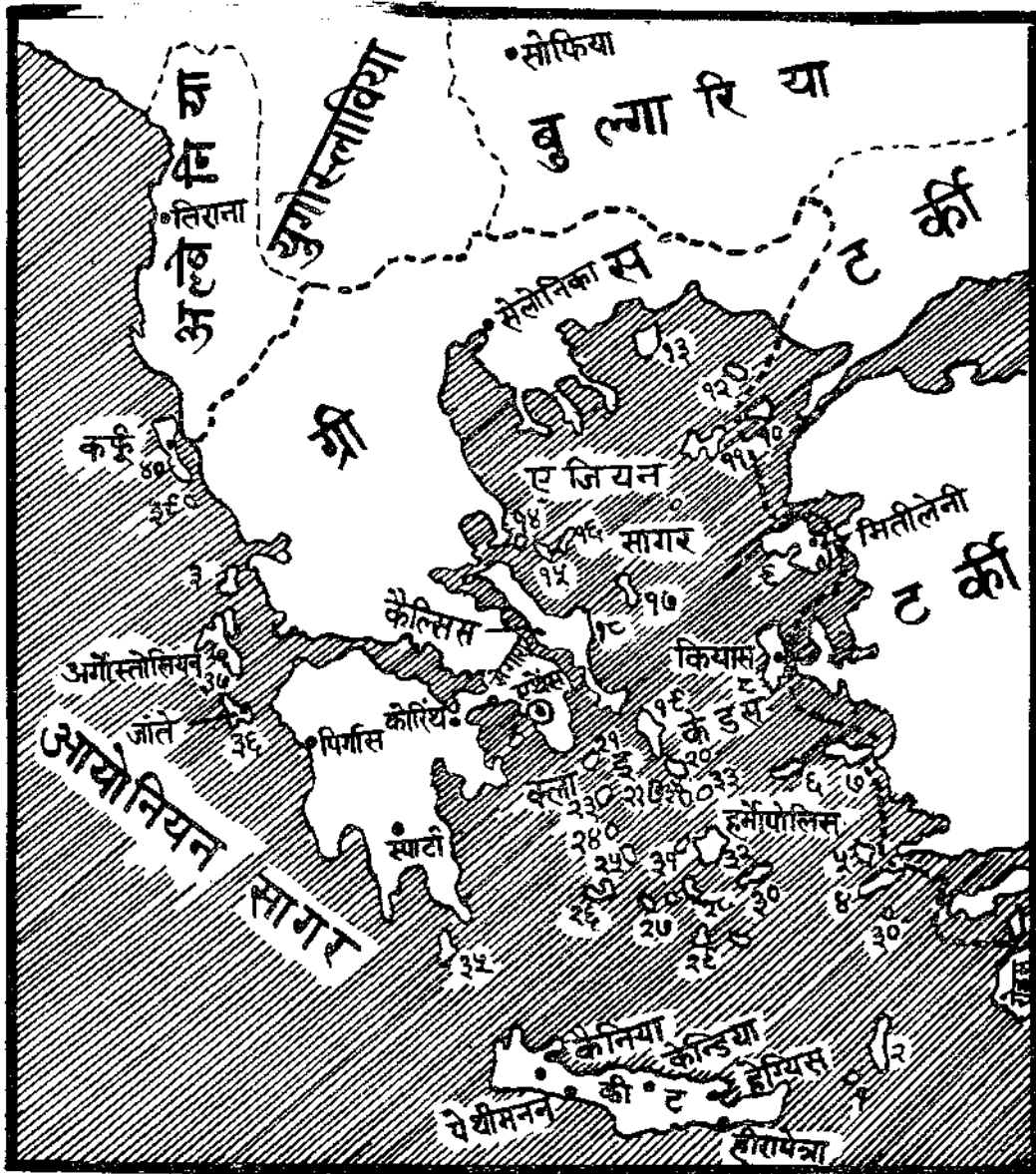
- | | |
|---------------------------|---|
| २३. ल्यूकत्रा (Leuctra) | ३३. स्पार्टा (Sparta) |
| २४. डेल्फ़ी (Delphi) | ३४. मेगालोपोलिस (Megalopolis) |
| २५. मेगारा (Megara) | ३५. पाइलस (Pylos) |
| २६. कोरिन्थ (Corinth) | ३६. ओलिम्पिया (Olympia) |
| २७. एपिडौरस (Epidauros) | ३७. इथाका (Ithaca) |
| २८. निकियास (Nicias) | ३८. एनक्टोरियम (Anactorium) |
| २९. माइसोनिया (Mycenae) | ३९. अम्ब्रेसिया (Ambracia) |
| ३०. अर्गोस (Argos) | ४०. एपोलोनिया (Apollonia) |
| ३१. तीगिया (Tegyra) | ४१. एजिना (Aegina) |
| ३२. मन्तोनिओ (Mantinea) | ४२. कालकिस या खालकिस (Chalcis or Khalkis) |

ग्रीस के आधुनिक मानचित्र में संख्याओं का निर्देशन

इसमें नगरों के नाम लिख दिये गये हैं । छोटे बड़े द्वीप संख्या द्वारा दिये गये हैं, जिनके नाम निम्न-लिखित हैं :-

- | | |
|--|---|
| १. केसॉस (Kasos) | २१. क्यॉस (Keos) |
| २. कर्पथॉस (Karpathos) | २२. सिरॉस (Syros) |
| ३. टेलॉस (Telos) | २३. कियनॉस (Kythnos) |
| ४. कॉस (Kos) | २४. सेरीफ़ॉस (Seriphos) |
| ५. केलिमनॉस (Kalymnos) | २५. सिफ़नॉस (Siphnos) |
| ६. इकारा (Ikara) | २६. मेलॉस (Melos) |
| ७. समोस (Samos) | २७. सिकिनॉस (Sikinos) |
| ८. कियॉस (Chios) | २८. इयॉस (Ios) |
| ९. लेसबॉस (Lesbos) | २९. सन्तोरिन (Santorin) |
| १०. इमरोज (Imroz) | ३०. एमार्गोस (Amargos) |
| ११. लेमनॉस (Lemnos) | ३१. पैरॉस (Paros) |
| १२. समोथ्रेस (Samothrace) | ३२. नक्सॉस (Naxos) |
| १३. थासोस (Thasos) | ३३. मिकोनास (Mykonos) |
| १४. स्कियाथोस (Skiathos) | ३४. किमोलॉस (Cimolos) |
| १५. स्केपेलॉस (Skepelos) | ३५. केरीगो (Cerigo) |
| १६. नार्थ स्पोरेड्स (North Sporades) | ३६. ज़ान्ते (Zante) |
| १७. स्काइरॉस (Skyros) | ३७. सेफ़ालोनिया (Cephalonia) |
| १८. युबोइया (Euboea) | ३८. ल्युकास (Leukas) |
| १९. एन्ड्रॉस (Andros) | ३९. पेक्सास (Paxos) |
| २०. टेनॉस (Tenos) | ४०. कर्फू - कर्कीरा (Corfu - Kerkyra) |

आधुनिक ग्रीस



लेखनकला

विद्वानों के मतानुसार ग्रीस के प्राचीन काल—१३०० से ८०० ई० पू०—में लेखन कला का जन्म फ़िनीशिया के एक राजकुमार कैडमस^१ (Cadmus) द्वारा लगभग ११०० ई० पू० में हुआ, जो अपने साथ फ़िनीशिया के वर्ण लाया था। हेरोडोटस के अनुसार कैडमस ने वर्णों का उद्भव ग्रीस (बोयेशिया — Boetia) में किया तथा थीबीज (Thebes) नगर की स्थापना भी की। आधुनिक विद्वान् भी निम्नलिखित कारणों से उपर्युक्त विचारों का समर्थन करते हैं :—

१. ग्रीस की वर्णवली में फ़िनीशिया की वर्णवली का क्रम उपस्थित है।
२. ग्रीस के वर्णों के नाम भी फ़िनीशिया के वर्णों के नामों से समानता रखते हैं।
३. ग्रीस के प्राचीनतम अभिलेखों में फ़िनीशिया की (दाएँ-से-बाएँ ओर) लिखने की पद्धति पायी जाती है।
४. ग्रीस के वर्णों के चिह्नों में भी फ़िनीशिया के चिह्नों से समानता दृष्टिगोचर होती है।

मेंज (Mentz — 1936) ने भी इस बात का समर्थन किया है कि ई० पू० को चौदहवीं श० में कैडमस द्वारा फ़िनीशिया के वर्ण सर्वप्रथम क्रीट लाये गये तत्पश्चात् बोयेशिया (Boetia) पहुँचे। १९१३ में शिनाइजर (H. Schneider) ने भी इसी विचार का समर्थन किया तथा सुण्डवल ने १९३१ में क्रीट के चिह्नों की तुलना भी फ़िनीशिया के वर्णों से की है, जिसका चार्ट इस पुस्तक के तीसरे अध्याय के फ़िनीशिया देश की लिपियों में 'फ० सं० — १४५' पर दिया गया है।

ग्रीस एवं फ़िनीशिया की भाषाओं में अन्तर होने के कारण ग्रीस के तात्कालिक विद्वानों ने निम्नलिखित परिवर्तन किए :—

१. कुछ फ़िनीशियन वर्णों की ध्वनियों में परिवर्तन किया। उदाहरणार्थ :—

- अल्फ़ा की ध्वनि को 'अ' (a — alpha) में।
- ह (हेथ) की ध्वनि को 'इ' (e — eta) में। ग्रीक भाषा में 'ह' की ध्वनि शांत है।
- य (थोद) की ध्वनि को 'ई' (i — iota) में।
- ऐन को ध्वनि को 'ओ' (O — Omicron) में।
- ए या ई की ध्वनि को 'ए' (e — epsilon) में।
- व (वाव) की ध्वनि को 'उ' (u — upsilon) में।

२. फ़िनीशियन लिपि में स्वर नहीं थे जो ग्रीस ने लगभग ई० पू० की ग्यारहवीं श० में दिए। इसी के कारण फ़िनीशियन लिपि के वर्णों के नाम व्यंजनों में अंत होते हैं और ग्रीक लिपि के वर्णों के नाम स्वरों में अंत होते हैं, जैसे अल्फ़ा का एल्फ़ा, बेथ का बीटा (बीदा), गिमिल का गामा, दलेथ का डेल्टा आदि हो गया।

३. फ़िनीशिया लिपि की दिशा को, जो दाएँ से बाएँ लिखी जाती थी, लगभग ई० पू० की आठवीं श० में बाएँ से दाएँ कर दी गई।

कुछ विद्वानों के नाम, जिन्होंने आठवीं व सातवीं श० के मध्य में प्राप्त हुए ग्रीस के प्राचीन अभिलेखों पर शोध कार्य किया है, उल्लेखनीय हैं, गुटर्सलाब (Guterslob — 1887), वाइडेमान (F. Wiedemann —

१. कैडमस के तात्कालिक वंशजों काल ईस्टर (Eisler) ने अपनी पुस्तक (Kenit Weihin Schriften — Page 118) में १३५० से १२०९ ई० पू० तक का निर्धारित किया है, जब वे टायर (Tyre) के नगर राज्य में शासन करते थे। कुछ विद्वान कैडमस को फ़िनीशिया का देवता भी मानते हैं।

1899), हिलर वॉन (Hiller von), गार्त्रिंगन (Gaertringen - 1924), ई० एस० राबर्ट्स (E. S. Roberts - 1887) और ई० ए० गार्डिनर (E. A. Gardiner - 1905) जिन्होंने एक पुस्तक¹ भी प्रकाशित की, ओ० कर्न (O. Kern - 1913), रोहेल (Roehl - 1907) और जे० कर्चीनर (J. Kirchner - 1948)। किर्चोफ़ (Kirchoff) ने इन प्राचीन वर्णों का नाम हरा (Green) रखा है जिनके प्राचीनतम अभिलेख थेरा (Thera) और मेलोस (Melos) से प्राप्त हुये हैं।

ग्रीक लिपि के वर्णों का उद्भव : 'फ०सं०-३२४; ३२४ क' के चार्ट के निम्नलिखित कॉलमों का विवरण :-

१—सिनाइ लिपि के चित्र। २—चित्रों के नाम।

३—फ़िनीशियन लिपि के २२ वर्ण जिनका जन्म सिनाइ के चित्रों से हुआ।

४—फ़िनीशियन लिपि के हेब्रू नाम।

५—जिस प्रकार से परिवर्तित होकर वे ग्रीक लिपि के १६ वर्ण बने। कुछ दो व तीन प्रकार के भी हैं।

६—उन वर्णों के नाम। ७—उन वर्णों की ध्वनियाँ।

८—ग्रीस के विद्वानों ने वर्णों के स्थान में परिवर्तन किया तथा (तारे लगे नये) अन्य चिह्नों का आविष्कार करके अपनी वर्णमाला में जोड़ दिये। अब ग्रीक लिपि में २४ वर्ण हो गये।

९—ग्रीक वर्णों की ध्वनियाँ।

क्रीट व माइसीनिया

इतिहास : प्रामाणिक रूप से क्रीट के इतिहास का आदिकाल तथा अन्त काल का निर्णय करना कठिन है परन्तु फिर भी यह धारणा विद्वानों में मान्य होने लगी है कि इस संस्कृति का सूर्योदय लगभग ३००० ई० पू० में हुआ और उसका अन्त लगभग १४०० ई० पू० में हो गया। एक ऐसी आकस्मिक विपत्ति टूट पड़ी जिसने एक छोटे से समृद्ध तथा सम्पन्न देश को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। उसके सारे गाँव, नगर व भव्य भवन उजड़ गये जो पुनः वह सम्पन्नता तथा वैभव न ला सके। यह विध्वंस कोई ऐसा प्रमाण छोड़ कर नहीं गया जिससे इतिहास के पृष्ठों द्वारा संसार को कुछ ज्ञात हो सकता। धन्य हैं वे विद्वान् जिनके अधिक परिश्रम ने क्रीट की समस्या पर पर्याप्त प्रकाश डाला है। इस विपत्ति के पश्चात् क्रीट के इतिहास पर ऐसे घनघोर बादल छा गये कि संसार क्रीट को भूल ही गया परन्तु डोरियन जाति के लोग यहाँ पुनः आकर बस गये और क्रीट पुनः जीवित हो उठा। उनका ७०० ई० पू० तक अधिकार रहा।

विद्वानों का विचार है कि क्रीट अपने समृद्धि काल में अपने पड़ोसी देश मिस्र से पर्याप्त सम्पर्क रखता था उसने बहुत कुछ मिस्र से सीखा था। क्रीट खालों, फलों, अनाज, मदिरा, पशुवन, काष्ठ और बालक व बालिकाओं का व्यापार किया करता था।






















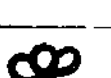


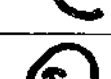














पौराणिक कथाओं के अनुसार क्रोनस (Cronos) देवताओं का एक राजा था। उसने आकाशवाणी द्वारा सुना कि उसके पुत्र ही उसके सर्वनाश का कारण बनेंगे। इसको सुनते ही उसने अपने पुत्रों को उत्पन्न होते ही निगलना आरम्भ कर दिया परन्तु जब ज्यूस (Zeus) का जन्म हुआ तो उसकी माता रिया (Rhea) ने

1. Gardiner, E. A. : An Introduction to Greek Epigraphy (1905), p-17.

ग्रीक लिपि के वर्णों का उद्भव

1	2	3	4	5	6	7	8	9
	बैल		अलिफ		अैलफ़ॉ	अ		अ
	घर		बैथ		बीटा	व		ब
	अंट		गिमेल		गामा	ग		ग
	द्वार		देलैथ		डैल्टा	द		द
	खिड़की		है		अैप्सिलॉन	ए		ए
	हुक		वाव		उप्सिलॉन	उ		ज
	अस्त्र		जैन		जैटा	ज		इ
	बाड़		हैथ		अैटा	इ		थ
	क्रास		तैथ		थैटा	थ		ई
	भुजा		यौद		आइमोट	ई		क
	हाथ		कॉफ़		कप्पा	क		ल

ग्रीक लिपि के वर्णों का उद्भव

1	2	3	4	5	6	7	8	9
	अंकुश		लुमेद		लम्दा	ल		म्यु
	जल		मीम		म्यु	म		न्यु
	सर्प		नून		न्यु	न		ए-क्स
			समेख					ऑ
	आंख		ऐन		ओमीक्रोन	ऑ		प
	मुंह		पै		पी	प		र
			सीन					स
	गांठ		क्रॉफ़					त
	सिर		रेश		रौ	र		उ
	दन्त		शिन्		सिगमा	स		फ़
	चिन्ह		ताव		ताउ	त		ख
								स
								ऊ

उसको क्रीट के एक पर्वत ईडा की कन्द्रा में लाकर छिपा दिया। रिया ने एक अप्सरा को भी बच्चे के पालन-पोषण के लिये नियुक्त कर दिया। अप्सरा ने उसको मधु व बकरी का दूध पिला पिला कर बड़ा किया। जब वह बड़ा हो गया तब उसने अपने पिता का वध कर दिया और संसार के सारे देवताओं व मनुष्यों का राजा बन गया। उसने टायर के राजा की पुत्री युरोपा से विवाह किया और उनके एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम मिनास (Minos) था।

मिनास की पत्नी का नाम पैसीफी (Pasiphae) था, जिसने एक दैत्य मिनोटौर (Minotaur) को जन्म दिया, जो आधा मनुष्य तथा आधा बैल था। मिनास ने इसको अपने महल की भूलभुलइयों में रखा था। एथेंस के राजकुमार थ्यूसियस ने क्रीट की राजकुमारी अरियादने (Ariadne) की सहायता से इस दैत्य का वध कर दिया। उसी ने थ्यूसियस को भूलभुलइयों की कुंजी दी थी। इतिहासकार मिनास को फेराओ की भाँति शासक की पदवी का नाम मानते हैं, एक शासक का नाम नहीं। मिनास एक विशाल नौसेना का मालिक था और एक शक्तिशाली शासक था।

क्रीट का प्राचीन नाम क्रीटा अथवा कण्डिया था और उसकी राजधानी का नाम कानिया था। ई० पू० की पाँचवीं शताब्दी में कई जातियों के लोग यहाँ आकर बस गये थे। ई० पू० की चौथी शताब्दी में ग्रीस के दार्शनिक व इतिहासकार क्रीट की ओर आकर्षित हुए। ३३० ई० पू० में विदेशी जातियों का हस्तक्षेप आरम्भ होने लगा। जब ग्रीस में नगर-राज्य आपसी गृह-युद्ध करने लगे तो ग्रीस ने सैनिकों को यहाँ भर्ती करना आरम्भ कर दिया। अब क्रीट समुद्री-डाकुओं के छिपने का एक मुख्य स्थान बन गया। ई० पू० की दूसरी शताब्दी में रोम ने क्रीट पर एक दृष्टि डाली और ६७ ई० पू० में यह रोमन साम्राज्य का एक प्रान्त बन गया।

इस रोमन शासन काल में भी क्रीट विद्रोही तथा अशास्य समझा जाता रहा जहाँ जनसंहार होते रहते थे और समुद्री डाकू, व्यापारी जलपैतों को लूटते रहते थे। ८३२ ई० सन् में अरब व सीरिया के लुटेरों ने आकर अपना अधिकार जमा लिया और ८६० तक यह मुसलमानों के अधिकार में रहा। तदनन्तर निकेफोरस फोकास (Nicephorus Phocas) ने इसको अपने अधीन कर लिया। १२०४ में धार्मिक-युद्ध (क्रूसेड्स) करने वालों ने इसको अपने अधीन करके बोनीफेस (Boniface) को दे दिया जिसने क्रीट को वेनिस (Venice) के हाथों बँच दिया। १२१० में वेनिस का एक प्रांतपति नियुक्त कर दिया गया। अब वेनिस और क्रीट का सम्मिश्रण आरम्भ हुआ जिसके फलस्वरूप एक नये प्रकार की संस्कृति ने जन्म लिया।

अनेक युद्ध हुये, अनेक शासक आये और गये। इसी प्रकार के परिवर्तनों में १८३७ में क्रीट टर्की साम्राज्य का एक प्रांत बन गया। १४ नवम्बर १८६८ को टर्की की सारी सेना ने इस द्वीप को छोड़ दिया और यह ग्रीस के अधीन हो गया। २६ जुलाई १८०६ को अन्य विदेशी सैनिकों ने यहाँ से कूच कर दिया और ग्रीस का झण्डा फहराने लगा। दूसरे महायुद्ध में कुछ दिनों के लिये यह जर्मनी के अधीन रहा परन्तु महायुद्ध के अन्त होने तक यह ग्रीस के अधिकार में आकर सदैव के लिये ग्रीस देश का एक अभिन्न अंग बन गया। आज भी प्राचीन खण्डहर रो रो कर क्रीट की प्राचीन संस्कृति की कहानी सुनाते हैं।

माइसीनिया

१४०० ई० पू० में क्रीट तो नष्ट हो गया परन्तु उसकी संस्कृति माइसीनियन संस्कृति के नाम से ग्रीस के मुख्य भू-भाग पर जीवित रही। माइसीनिया क्रीट का उत्तराधिकारी बन गया। माइसीनिया व क्रीट की संस्कृतियों

का मिलन तो उसी समय से आरम्भ हो चुका था जब से माइसीनिया के चरण क्रीट पर लगभग १५०० ई० पू० में पड़े थे। क्रीट के नष्ट हो जाने से क्रीट की संस्कृति का केवल स्थानांतरण हुआ था।

माइसीनिया की संस्कृति के विषय में लगभग सभी विद्वान् एक मत हैं कि उसका विकसित काल १५५० से ११०० ई० पू० तक रहा। यह धारणा पुरातात्विक सामग्री के उत्खनन द्वारा प्रामाणित हो चुकी है। लगभग १५०० ई० पू० में माइसीनियन संस्कृति ने ग्रीस की भूमि पर अनेक केन्द्र नगर-राज्यों के रूप में स्थापित कर दिये थे जो इस प्रकार थे—थेसली में ड्योलकास नगर-राज्य, बोयेनिया में थीबीज और आर्कोमिनास के नगर-राज्य, अट्टिका में ऐथेंस का नगर-राज्य तथा पेलोपेनेसस में पाइलस व माइसीनिया के नगर-राज्य। यह सब केन्द्र ग्रीस की पूरी उपजाऊ भूमि पर अपना अधिकार जमाये हुये थे। शेष भूमि पर्वत-मालाओं से घिरी थी। यातायात का साधन केवल सागर था।

११०० ई० पू० में डोरियन (Dorian) तथा अक्काइयन (Achaean) जातियों ने, जिनको लगभग सभी प्राचीन इतिहासकार आर्य मानते हैं, माइसीनिया की सभ्यता को नष्ट किया। उनके नगर राज्यों को या तो अपने अधीन कर लिया या नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। इन दो जातियों के आगमन के प्रश्न पर इतिहासकारों में मतभेद हैं। कुछ विद्वानों का मत है कि वे बाल्कन पर्वतों से आये और कुछ की धारणा है कि वे अनाटोलिया (Anatolia), आधुनिक टर्की (Turkey) से पधारे। पुरातत्व वेत्ता उनका आगमन उत्खनित सामग्री के आधार पर, जैसे घोड़ों की हड्डियाँ, अस्त्र-शस्त्र आदि, अनाटोलिया की ओर से मानते हैं। इसी आगमन के पश्चात् से ग्रीस के इतिहास का श्री गणेश हुआ। इन जातियों ने अपने नगर-राज्य स्थापित किये जिनमें आपसो युद्ध चलते रहे, उस समय तक जब तक ग्रीस में एक राष्ट्रीय-भावना की एकता जागृत नहीं हुई।

लेखन कला का इतिहास

जिस प्रकार प्रत्येक प्राचीन देश में लेखन कला का उद्भव पुरातात्विक सामग्री के उत्खनन पर निर्भर करता है उसी प्रकार क्रीट व माइसीनिया में भी जब तक वैज्ञानिक रूप से उत्खनन नहीं हुआ प्राचीन लेखन कला का ज्ञान संसार को न हो सका।

१८७० के पूर्व तक होमर (Homer) के वीर काव्यों को एक कल्पना मात्र ही समझा जाता रहा और ट्रॉय (Troy) का नगर भी एक पौराणिक कालीन नगर माना जाता रहा। प्रसिद्ध इतिहासकार जॉर्ज ग्रोटे (George Grote) का भी यही विचार था। १८६८ में जर्मनी का एक व्यापारी हाइनरिख शिलीमान (Heinrich Schliemann-b. 1822) ग्रीस पहुँचा और १८७१ में उसने हिसार्लिक (Hissarlik) के खण्डहरों में, जो ट्रॉय का नष्ट नगर समझा जाता था, उत्खनन आरम्भ किया। जहाँ एक नहीं लगभग ६ नगर एक के ऊपर एक निकले। इस उत्खनन ने होमर के ट्रॉय को पुनर्जीवित कर दिया। उसने माइसीनिया में भी उत्खनन किया। तत्पश्चात् १८९० में शिलीमान को मृत्यु नेपल्स (Naples) में हो गई। वह क्रीट भी जा रहा था और चालीस हजार फ्रैंक्स उस भूभाग के दाम भी निश्चय हो गये थे परन्तु वह घोखे से बच गया क्योंकि उत्खनित सामग्री टर्की-राज्य की हो जाती।

१८८६ में ऑक्सफ़ोर्ड के एश्मोलियन संग्रहालय (Ashmolean Museum) का रक्षक (Keeper) आर्थर ईवान्स (Arthur Evans) था। ग्रेविले चेस्टर (Greville Chester) ने उसके पास क्रीट का मुद्रा-पत्थर (Seal-Stone) भेजा जिस पर कुछ अज्ञात चिह्न व चित्र उत्कीर्ण थे। इस पत्थर ने उसके मन में ऐसी प्रेरणा जागृत की जिसके कारण वह ग्रीस की ओर चल दिया और १८९४ में वह क्रीट पहुँच गया। उसने अपने

कार्य करने की योजना के लिये छान-बीन आरम्भ कर दी। १८६६ में ईसाई तथा मुसलमानों में उपद्रव आरम्भ हो गये। १८६६ में उसने ग्रीस के राजकुमार से एक नासास (Knossos) के निकट भू-भाग मोल लिया और ३० मार्च १८०० में उसने अपना उत्खनन कार्य आरम्भ कर दिया।

इस उत्खनन द्वारा उसको सहस्रों की संख्या में मिट्टी की पाटियाँ प्राप्त हुई तथा एक विशाल राजमहल दृष्टिगोचर हुआ जिसमें विशाल कमरे, महाकक्ष, ऊपर-नीचे खण्ड, जल-निर्गम-प्रणाली तथा गर्म व ठण्डे जल से स्नान करने का प्रबन्ध आदि उपस्थित थे। ईवान्स ने प्राचीन काल की इस उच्च कोटि की संस्कृति का नाम पौराणिक शासक मिनास के नाम पर मिनोअन संस्कृति रखा। यही नाम अब सारे विद्वान् प्रयोग करते हैं।

ईवान्स ने भिन्न-भिन्न प्रकार की सामग्री का निरीक्षण करके इस संस्कृति को तीन भागों में तथा तीनों भागों को पुनः तीन-तीन भागों में विभाजित कर दिया, जो निम्नलिखित हैं :—

१—पूर्वकालीन युग (Early Minoan = E M)

- E M - I, ३२०० ई० पू० } मिस्र में प्राचीन राज्य (Old Kingdom) का शासन था।
- E M - II, २६०० ई० पू० }
- E M - III, २४०० ई० पू०

२—मध्यकालीन युग (Middle Minoan = M M)

- M M - I, २२०० ई० पू०—मिनास के राजमहल का निर्माण हुआ।
- M M - II, २००० ई० पू०—राजमहल को नष्ट किया परन्तु पुनः निर्माण हुआ।
- M M - III, १८०० ई० पू०—फिर आक्रमण हुये, विध्वंस हुआ, निर्माण हुआ।

३—उत्तरकालीन युग (Late Minoan = L M)

- L M - I, १५५० ई० पू०—मिस्र की पाटरी प्राप्त हुई। माइसीनियन लोग आकर बसे।
- L M - II, १४५० ई० पू०—१४०० के लगभग पूर्णतया नष्ट होकर उजड़ गया।
- L M - III, १३७५ ई० पू०—पुनः कुछ लोग आकर बसे परन्तु चले गये।

इस उत्खनन ने विद्वानों के मन में एक नवीन उत्सुकता उत्पन्न कर दी और यह जिज्ञासा जागृत हुई कि क्रीट की इस उच्च कोटि की संस्कृति के जन्मदाता कौन थे। इसका उत्तर निम्नलिखित विद्वानों ने दिया :—

थ्यूकीडाइडीज (Thucydides) ने कहा कि क्रीट का शासक मिनास ग्रीक था। हेरोडोटस ने कहा कि ग्रीक नहीं था। होमर ने कहा कि क्रीट में पाँच प्रकार की जातियाँ निवास करती थीं। डार्फ़फ़ेल्ड (W. Dorpfeld), जो गिलीमान का, ट्राय के उत्खनन में, एक सहायक था, ने कहा कि क्रीट व माइसीनिया की संस्कृति फिनीशियन संस्कृति है। एक प्राचीन इतिहासकार एडवर्ड मेयर (Eduard Meyer) ने कहा कि क्रीट की संस्कृति प्राचीन एशिया माइनर की संस्कृति है। परन्तु ईवान्स ने कहा कि क्रीट के मूल निवासी अफ्रीका तथा मिस्र के निवासी थे तथा माइसीनिया ने क्रीट को नष्ट किया। यह विचार ईवान्स की मृत्यु (१९४१) तक अटल रहे और किसी ने इनका खण्डन नहीं किया। उसकी मृत्यु के पश्चात् पुनः विद्वान् अपने अनुमान लगाने लगे।

कुछ विद्वानों का विचार था कि क्रीट ने ग्रीस के मुख्य भूभाग पर आक्रमण किया ।

ईवान्स ने क्रीट की लिपि, जो चित्रात्मक, भावात्मक तथा अक्षरात्मक थी, को दो मुख्य भागों में विभाजित किया । एक लाइनियर - ए¹ तथा दूसरी लाइनियर - बी । लाइनियर - ए का काल १७०० से १५०० ई० पू० निर्धारित किया तथा लाइनियर - बी का काल १४५० ई० पू० निर्धारित किया ।

ईवान्स के अतिरिक्त निम्नलिखित पुरातत्त्व-वेत्ताओं ने उत्खनन कार्य सम्पन्न करके तथा पुरातात्विक सामग्री पर शोध करके अपने अपने निष्कर्ष संसार के समक्ष रखे :—

जी० पी० केर्रातेल्ली (G. P. Carratelli) ने लाइनियर - ए के २५० अभिलेखों का निरीक्षण किया तथा ८५ चिह्नों को प्रकाशित किया और सिद्ध किया कि लिपि अक्षरात्मक तथा संकेतात्मक है । एक अमेरिकन सी० डबल्यु० ब्लेगन (C. W. Blegan) तथा एक ग्रीक कुरुनियातिस (Kuruniotis) ने १९३६ में पाइलस (Pylos) के निकट इपानो इंग्लियानस (Epāno Englianos) में एक राजमहल का उत्खनन किया जिसमें से अनेक अभिलेख वहाँ के तात्कालिक शासक के अभिलेखालय से प्राप्त हुये । जिनका काल १२०० ई० पू० निर्धारित किया गया है । ब्लेगन ने पुनः १९५२ के उत्खनन द्वारा ४०० मिट्टी की पाटियाँ भूमर्र से निकालीं । अंग्रेज वेस (Wace) तथा ग्रीक मैरीनेटस (Marinatos) ने १३ वीं श० के ३६ अभिलेखों को प्राप्त किया । सिल्टिक (Siltiq) ने सिप्रियाटिक तथा लाइनियर - बी के चिह्नों को समान बताया । हैल्भर (Halbherr) ने हैगिया त्रियदा (Hagia Triada) के शासकीय महल के उत्खनन से १५० छोटी छोटी मिट्टी की पाटियाँ निकालीं । एक स्वीडन के विद्वान् फुरुमार्क (Furumark) ने लाइनियर - बी का काल १६०० ई० पू० निर्धारित किया । ए० ई० कावले (A. E. Cowley) के मतानुसार लाइनियर - एवं बी की भाषा एक है ।

ईवान्स ने १९०९ में लण्डन से अपनी 'स्क्रिप्टा मिनोआ' (Scripta Minoa) प्रकाशित की जिसमें १७२२ पाठों (Texts) का उल्लेख था । उसमें इस बात का भी उल्लेख किया गया था कि १४५० से १२०० तक के भवनों में स्याही का भी प्रयोग किया गया है । २५ वर्ष पश्चात् ईवान्स ने अपनी पुस्तक^२ में १२० पाटियों का उल्लेख किया है परन्तु फिर भी ३००० पाटियाँ उसकी मृत्यु तक प्रकाशित न हो सकीं । उसके मरणोपरान्त उसके सहयोगी जे० एल० मेयर्स ने 'Scripta Minoa II' के नाम से १९५२ में प्रकाशित किया ।

ब्लेगन द्वारा १९३९ के उत्खनन की पाटियों को सिन्किनाती विश्वविद्यालय के एक विद्वान् एमेट एल० बेनेट (Emmett L. Bennett) के पास निरीक्षण के लिए भेज दी गईं जिनका निष्कर्ष विश्व के समक्ष - पाइलस की पाटियाँ "The Pylos Tablets (1951)" - के रूप में आया । उसी काल ब्रुकलिन (Brooklyn) में एक अमेरिका निवासी एलिस ई० कोबर (Alice E. Kober) - के १९४३ से १९५० तक के लेख प्रकाशित हुये ।

१९५२ में क्रीट व माइसीनिया के अभिलेखों के रहस्योद्घाटन पर दो शोधकर्ता दो भिन्न स्थानों पर अपने अपने कार्य में संलग्न थे । उनके नाम माइकिल वेन्ट्रिस (Michael Ventris) तथा जॉन चैडविक

1. Jordon, C. H. : First Pub. in J. of 'Near Eastern studies', Vol. xvii (1958), P - 145.

2. Palace of Minos (1935).

(John Chadwick) थे। इन दोनों विद्वानों ने सुण्डवाल, बेनेट तथा कोबर के शोध कार्यों का अध्ययन किया था। उस अध्ययन के तथा अपने परिश्रम के आश्रय पर १९५६ में लाइनियर - बी की एक वर्णमाला प्रस्तुत की। तत्पश्चात् बेनेट ने भी लगभग १०० संकेतात्मक चित्रों की एक तालिका प्रस्तुत की।

क्रीट की चित्रात्मक लिपि - 'फ० सं० - ३२५' पर ऊपर की ओर कुछ चित्र^१ दिये गये हैं जो क्रीट निवासियों ने आरम्भ में अपनी लिपि के लिये बनाये। उसी के नीचे चित्रों द्वारा लाइनियर - ए एवं लाइनियर - बी के वर्णों की रचना की तथा उनकी ध्वनि निर्धारित की।

माइसीनिया की वर्णावली^२ - 'फ० सं० - ३२६' में ऊपर पाँच स्वरों के चिह्न - वर्ण दिये गये हैं तथा कुछ वर्णों के चिह्न दिये गये हैं जिनके साथ स्वरों को जोड़ कर उनकी ध्वनि दी गई है। यहाँ के उत्खनन में अनेक पाटियाँ^३ निकलीं।

पाइलस की त्रिपद पाटिया - (फ० सं० - ३२७ - ३२७) कः १९३९ - ५२ में पाइलस (Pylos) के निकट एक राजमहल में उत्खनन किया था और उत्खनन सामग्री का निरीक्षण कर इसको 'पाइलस टेबलेट्स' (Pylos Tablets)^४ के नाम से १९५५ में प्रकाशित करवाया और इसका रहस्योद्घाटन वेस्ट्स और चैडविक ने किया। यह एक तीन पैर वाली पाटिया (Tripod Tablet) है जो पाइलस के उत्खनन से प्राप्त हुई थी। इसमें शब्द चिह्न भी दिये गये हैं। यह पद्धति सम्भवतः क्रीट निवासियों ने मिस्र से सीखी होगी। इस चित्र के शब्दों में कुछ आर्य भाषा (संस्कृत) का आभास मिलता है।

क्रीट की लाइनियर - 'ए' के चिह्न 'फ० सं० - ३२८' में क्रीट की लाइनियर 'ए' के चिह्न दिये गये हैं जिनका निरीक्षण कैरातिल्ली (G. P. Carratelli) ने किया था। अभी इन चिह्नों का निर्णयपूर्वक रहस्योद्घाटन नहीं किया जा सका है। जार्डन ने भी इसका अध्ययन^५ किया।

फ़ैस्टास चक्रिका 'फ० सं० - ३२९' : इस चित्र में एक मिट्टी की चक्रिका^६ के दोनों ओर के संकेतात्मक चित्र दिये गये हैं। इसका नाम फ़ैस्टास डिस्क (Phaistos Disc) रखा गया है क्योंकि यह १९०८ में एक इटली निवासी पुरातत्त्व - वेत्ता लुईगी पर्नियर (Luigi Pernier) द्वारा क्रीट के एक राजमहल से, जो फ़ैस्टास में स्थित था, उत्खनन में प्राप्त हुई। यह चक्रिका पकी हुई मिट्टी की बनी है। इसका व्यास लगभग ६ इंच है। इसका काल १७०० ई० पू० के लगभग का निर्धारित किया गया है।

इसमें दोनों ओर के चिह्न मिलाकर २४१ हैं। एक ओर इसमें ३१ अनुभाग तथा १२३ चिह्न हैं और दूसरी ओर ३० अनुभाग तथा ११८ चिह्न हैं। इसका आरम्भ बाएँ से दाएँ हुआ है। कारण यह है कि चित्रों के मुँह सीवी ओर है। इसमें पर्नियर के अनुसार ४५ प्रकार के चिह्न हैं।

1. Evans, A. J. : 'Primitive Pictographs' - J. of Hellenic Studies (1898), p - 270.
2. Ventris And Chadwick : 'Evidence for Greek Dialect in Mycenaean Archives' - Journal of Hellenic Studies, Vol. LXXIII, page - 86.
3. Wace, A. J. B. : 'The Discovery of Inscribed Clay Tablets at Mycenaea' - Antiquity - 27, (1953), p - 84.
4. Blegen and Bennett : The Pylos Tablets, Texts of Inscriptions Found (1939 - 54), Published in 1955, p - 271.
5. Jordon, C. H. : Journal of Near Eastern Studies, Vol. XVII (1958), p - 245.
6. Evans, A. J. : Scripta Minoa, Vol. 1, Plate - XII (1909) p - 275.

जब यह चक्रिका संसार के विद्वानों के समक्ष आई, उन्होंने अपने अनुमान लगाने आरम्भ कर दिये। उदाहरणार्थ मैकेन्जी (Mackenzie), ईवान्स, मायर्स (Myers), पेन्डिलबरी (Pendlebury) एवं बोसर्ट (Bossert) के विचार हैं कि यह एनाटोलिया (आधु० टर्की) से लाई गई है। मैकालिस्टर (Macalister) का विचार है कि जो कलगीदार सिर के चित्र से आरम्भ होनेवाले अनुभाग हैं वे किसी शासक के नाम हैं। कुमारी स्टावेल (F. M. Stawell) का विचार है कि यह ज्यूस देवता की माँ रिया की प्रार्थना (Hymn) है। एफ० सी० जार्डन (F. C. Jordan) के विचार से यह प्रार्थना वर्ण - देवता के लिये की गई है। सुन्डवाल (Sundwall) के विचार से इस चक्रिका के चिह्न क्रीट से लिये गये हैं अभी तक फ्रैस्टास चक्रिका की समस्या सुलझ नहीं सकी है कि यह किससे सम्बन्धित है तथा इसके गूढ़ाक्षर क्या हैं। विद्वान् अपने शोध कार्य में रत हैं और एक दिन इस समस्या का हल संसार के समक्ष अवश्य आ जायेगा।

अभी कुछ दिन पूर्व जोहान्सवर्ग के विटवार्ट्सरेड विश्वविद्यालय के प्रो० एस० डेविड ने पिछले कुछ वर्षों में इस गोल चक्रिका का सूक्ष्म अध्ययन किया और इसके पाठ को राजमहल की प्रतिष्ठा में फ्रैस्टास के राजा नोकियल द्वारा किये गये भक्तिपूर्ण अनुष्ठान का सूचक माना है। उनकी आधुनिकतम प्रस्थापनाएँ बहुत शीघ्र ग्रंथ - रूप में प्रकाशित होगी।

पठनीय सामग्री

- Allen, A. B.* : Romance of Alphabet (1937).
Balkle, J. : Ancient Crete (1924).
Bennett, E. L. : A Minoan Linear - B - Index (1953).
Ibid : Pylos Tablets (1955).
Blegen, C. W. and : The Pylos Tables and Texts Found in 1939 - 54. (1955).
Bennett Browning, R. : 'The Linear - B Texts from Knossos - Transliterated and Edited' - Bulletin of the Institute of Class Studies of the University of London. (1955).
Casson, S. : Ancient Cyprus (1937).
Cleater, P. E. : Lost Languages (1962).
Daniel, J. F. : 'Prolegomena to the Cypro - Minoan Script' - American Journal of Archaeology - 45 (1941).
Evans, A. J. : Cretan Pictographs and Pre - Phoenician Script (London - 1895).
Ibid : Scripta Minoa - 1 (Oxford - 1909).
Ibid : Palace of Minos - I - IV (London 1921).
Freese, J. H. : A Short Popular History of Crete (1897).
Gelb, I. J. : A Study of Writing (1952).
Hall, H. R. : The Relation of Aegean with Egyptian Art - J. of Egyptian Arch. (1925).

- Hutchinson, R. W.* : Prehistoric Crete (1951).
- Jordan, C. H.* : 'Minoan Linear - A' - Journal of Near Eastern Studies, XVII - (1958).
- Karageorghis, V.* : Ancient Civilization of Cyprus (1951).
- Newman, P.* : A short History of Cyprus (1940).
- Palmer, L. R.* : Mycenaeans and Minoans (1932).
- Persson, A. W.* : Schrift und Sprache Alt Kreta (Uppsala - 1950).
- Pigott Stuart* : Dawn of Civilization (1928).
- Pike, E. R.* : Finding Out about Minoans (1963).
- Taylor, William* : The Mycenaeans (1964).
- Thumb, A. and Scherer* : Handbuch der griechischen Dialekte II (Heidelberg—1959).
- Ventris, M. and Chadwick, J.* : The Decipherment of Linear - B (Cambridge - 1958).
- Ibid* : Documents in Mycenaean Greek (1956).
- Ibid* : 'Evidence for Greek Dialect in Mycenaean Archives' - J. of Hellenic Studies, LXXII (1953).
- Ibid* : Languages of Minoan and Mycenaean Civilization (N. Y. - 1950).
- Ibid* : Ancient History of West Asia, India and Crete (1944).
- Wace, A. J. B.* : 'The Discovery of Inscribed Clay Tablets at Mycenaea' - Antiquity - 27 (1953).



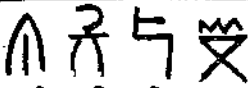
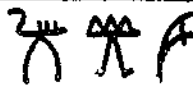

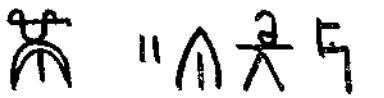

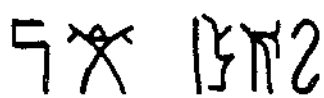
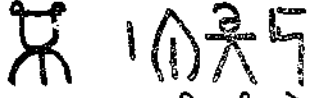
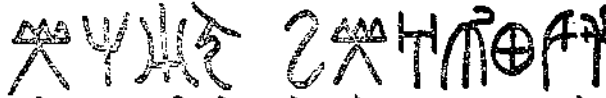

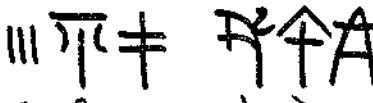
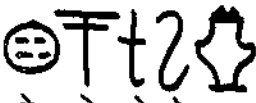
क्रीट की चित्रात्मक लिपि

पैर मालिक अनाज आंख हाथ			
गंडासा कुरी माला बैल का सिर तारा-चन्द्र			
लाइनियर लिपि का चित्रों से विकास			
चित्र	लाइनियर-ए	लाइनियर-बी	ध्वनि
			जे
			मू
			ज
			अ

माइसीनिया की वर्णवली

ध्वनि→	अ	ए	ई	ओ	ऊ
स्वर	𐀀	𐀁	𐀂	𐀃	𐀄
द	𐀅	दे 𐀆	दी 𐀇	दो 𐀈	दू 𐀉
ज	𐀊	जे 𐀋		जो 𐀌	
क	𐀍	के 𐀎	की 𐀏	को 𐀐	कू 𐀑
म	𐀒	मे 𐀓	मी 𐀔	मो 𐀕	मू 𐀖
न	𐀗	ने 𐀘	नी 𐀙	नो 𐀚	नू 𐀛
प	𐀜	पे 𐀝	पी 𐀞	पो 𐀟	पू 𐀠
क		के 𐀡	की 𐀢	को 𐀣	
र	𐀤	रे 𐀥	री 𐀦	रो 𐀧	रू 𐀨
स	𐀩	से 𐀪	सी 𐀫	सो 𐀬	सू 𐀭
त	𐀮	ते 𐀯	ती 𐀰	तो 𐀱	तू 𐀲
व	𐀳	वे 𐀴	वी 𐀵	वो 𐀶	
ज	𐀷	जे 𐀸		जो 𐀹	जू 𐀺

पाइलस की त्रिपद पाटिया

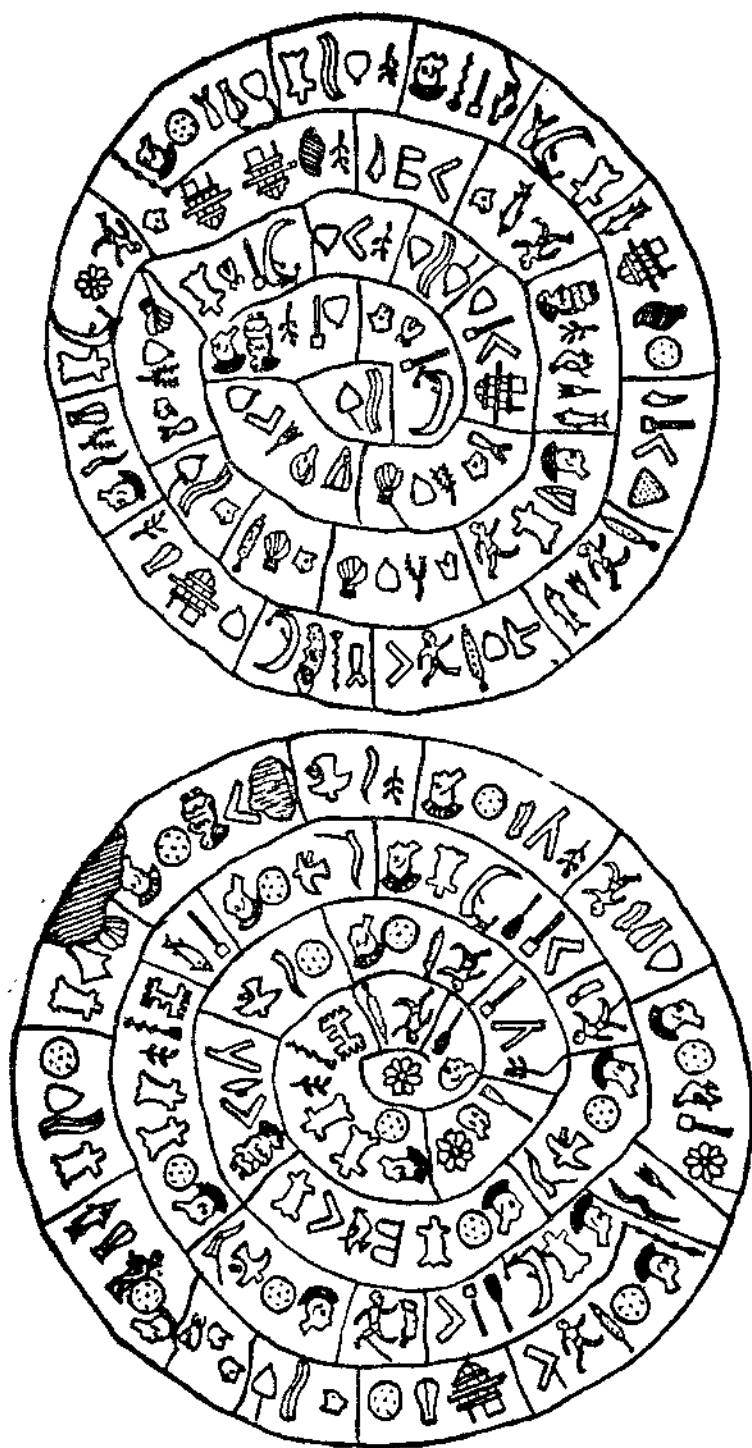
 ती री पो दे त्रीपद TRIPOD	 ऐ के ऊ ऐकेऊ AIGEUS	 के रे सी जो वे के केरेटन के वक OF CRETAN WORK
 २ ती री पो दो त्रीपद TWO TRIPOD	 ए मे पाद FOOT	 पो दे ओ वो वे पाद FOOT
 १ ती री पो एक त्रीपद ONE TRIPOD	 के रे सी जो वे के अ पू कऊ मे केरेटन के वक जल गया OF CRETAN WORK BURNT	
 कै तो तीन दीप THREE CUP	 ३ दी प मे जो ए बड़े LARGE	 कै तो रो वे चार हथ्ये वाले FOUR HANDLED

पाइलस की त्रिपद पाटिया

१	१	१	१	१
दी प ए	मे जो ए	ती री ओ	वे ए	
एक दीप	बड़ा	तीन हथ्ये वाला		
ONE CUP	LARGE	THREE HANDLED		
॥	१	१	१	१
दी प	मे वी जो	के तो रो वे	१ दी प	
दो दीप	छोटे	चार हथ्ये वाले	एक दीप	
TWO CUP	SMALL	FOUR HANDLED	ONE CUP	
१	१	१	१	१
मे वी जो	ती री जो वे	१ दी प		
छोटा	तीन हथ्ये वाला	एक दीप		
SMALL	THREE HANDLED	ONE CUP		
१	१	१	१	१
मे वी जो	अ नो वे			
छोटा	बिना हथ्ये वाला			
SMALL	HANDLESS			

क्रीट की लाइनियर-ए के चिन्ह

फंस्टास चक्रिका (दोनों ओर के चित्र)



ग्रीस के नगर राज्य

लगभग ६०० ई० पूर्व में ग्रीस की भूमि पर अनेक नगर-राज्य थे जिनमें लिपियों का विकास फिनीशिया की लिपि से ही हुआ था परन्तु उनमें कुछ भिन्नता थी। उन्ही नगर-राज्यों का संक्षिप्त वर्णन यहां दिया जा रहा है।

एथेन्स

इतिहास : ग्रीस की प्राचीन संस्कृति १५०० से ११०० ई० पू० तक जीवित रही। तदनन्तर उत्तर से आक्रमण हुये और नगर राज्यों का जन्म होने लगा। इन नगर-राज्यों में दो नगर बड़े प्रसिद्ध थे। एक स्पार्टा (Sparta) तथा दूसरा एथेन्स (Athens)। एथेन्स का अपना एक राज्यक्षेत्र था जिसका नाम अट्टिका (Attica) था। ई० पू० की सातवीं श० में एथेन्स बड़ा शक्तिशाली राज्य था। ६८३ ई० पू० में एथेन्स ने वंशानुगत राजाधिकार का उन्मूलन कर दिया। ५९४ ई० पू० में सोलोन (Solon) ने एक नयी विधि-संहिता (Law Code) स्थापित की। तदनन्तर कई राजाओं ने राज्य किया जिसमें पिसिस्ट्रैटस (Pisistratus), जिसने ५६० से ५१७ ई० पू० तक राज्य किया, बड़ा प्रसिद्ध था।

५०८ ई० पू० में क्लिस्थिनीज (Cleisthenes) ने सुधार किये और प्रजातंत्र का जन्म हुआ। ४९३ ई० पू० में थेमिस्टोकिल्स (Themistocles) एथेन्स के ६ न्यायधीशों में से प्रथम न्यायधीश - शासनाधिकारी निर्वाचित हुआ। उसने एक विशाल नौसेना की स्थापना की क्योंकि उसको पर्शिया के आक्रमण की अनुभूति हो गई थी। ४९० में पर्शिया को अट्टिका में मराथन (Marathon) युद्ध में पराजित किया। ४८० में जरक्सीज ने सलामिस (Salamis) को नष्ट कर दिया। थर्मोप्ली के युद्ध में स्पार्टा (पेलोपोनीशियन लीग - Peloponnesian League) के सहयोग से पर्शिया को पुनः परास्त किया। अब एथेन्स की किलाबन्दी कर दी गई।

एथेन्स पेरिकिल्स (Pericles) के शासन काल (४६०-४३१) में बड़ा वैभवशाली हो गया तथा पेलोपोनीशियन लीग^१ से पृथक् हो गया और स्पार्टा से युद्ध करने में रत हो गया। ४३१ से ४०४ ई० पू० तक स्पार्टा से दूसरा युद्ध हुआ। ३९९ ई० पू० में सुक्रात (Socrates) को विष - पान द्वारा मृत्यु का दण्ड दिया। कोरिंथियन के युद्ध में एथेन्स ने स्पार्टा के विरुद्ध कोरिंथ का साथ दिया। ३३८ ई० पू० में मेसीडोन (Macedon) के शासक फिलिप द्वितीय (Phillip II) से युद्ध हुआ जिसमें एथेन्स की पराजय हुई और एथेन्स मेसीडोनिया के अधीन हो गया। ३३२ तक उसी के शासन में रहा।

इसी बीच एथेन्स ने रोम से मित्रता कर ली और उसी की सहायता से मेसीडोनिया के शासन से स्वतंत्रता प्राप्त कर ली। इस स्वतंत्रता के लिये १९७ ई० पू० में साइनास्की फ़लाइ (Cynosce - phalae) में एक युद्ध लड़ना पड़ा जिसमें मेसीडोनिया परास्त हुआ। अब एक अकाईयन लीग (Achaean League) बन गई। १४६ ई० पू० में रोम ने इस लीग को समाप्त कर दिया और अकाईया रोमन साम्राज्य का एक अंग बन गया।

१. कुछ राज्य मिल कर एक संघ बना लेते थे और वे राज्य एक दूसरे की हर प्रकार की सहायता करने के लिये वचन-बद्ध होते थे।

५४ ई० सन् में यहाँ सेंट पॉल (St. Paul) आया । ३६५ ई० सन् में एथेन्स को गोथ्स (Goths) ने अपने अधीन कर लिया । १२०४ में यह इटली के अधीन हो गया ।

१४५६ में ओटोमन (ओथोमान — उसमान) तुर्कों ने इसको अपने अधीन कर लिया । १६८७ में वेनिस निवासियों ने अपने अधिकार में ले लिया । १८३५ में एथेन्स आधुनिक ग्रीस की राजधानी बन गया । दूसरे महायुद्ध की १९४१ में जर्मनी के अधिकार में आ गया और १४ अक्टूबर १९४४ को स्वतंत्र हो गया ।

किचोफ़ ने इस लिपि के वर्णों का नाम हल्का नीला (Light Blue) रखा है और यह साइक्लेड्स (Cyclades) के द्वीप समूह में, एथेन्स, सलामिस व एजीना में लगभग ई० पू० की सातवीं व छठवीं शताब्दी में प्रचलित थी । इसको दिशा बाएँ से दाएँ थी ।

'फ० सं० — ३३०' पर इस लिपि के वर्ण तथा सातवीं श० का एक अभिलेख जो एथेन्स से प्राप्त हुआ था नीचे दिया गया है । परन्तु इस अभिलेख का पाठ दाएँ से बाएँ है । अभिलेख का अनुवाद "अब जो नृत्य करने वालों में से सबसे अच्छा नृत्य करेगा, वह इसको प्राप्त करेगा ।" इस अभिलेख का रहस्योद्घाटन किचोफ़ ने किया है ।

कोरिंथ

इतिहास : कोरिंथ (Corinth) का इतिहास डोरियन काल (लगभग ई० पू० की ग्यारहवीं श०) से आरम्भ होता है जब डोरियन लोगों के आक्रमण उत्तर की ओर से आरम्भ होने लगे थे । इस नगर — राज्य का संस्थापक एक पौराणिक एलेटोज (Aletes) अर्थात् घुमक्कड़ था । इसी काल में यहाँ फिनिशिया के निवासी भी आकर बसने लगे थे ।

आठवीं श० से कोरिंथ ने अपने उपनिवेश स्थापित करना आरम्भ कर दिये थे । उसका प्रथम उपनिवेश ग्रीस के पश्चिम में एक द्वीप कोर्सीरा था तथा दूसरा सीराकूज (Syracuse), सिसली का एक नगर था । उस समय कोरिंथ की सामुद्रिक शक्ति अपनी चरम सीमा पर थी । कोर्सीरा ने कोरिंथ के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और फलस्वरूप ६६४ ई० पू० में एक युद्ध हुआ । ६५२ ई० पू० एलेटोज के वंशज बक्कीस (Bacchis) अन्तिम शासक को काइप्सेलस (Cypselus) ने परास्त कर दिया और स्वयं एक शक्तिशाली राजा बन गया । उसने अम्ब्रेसिया (Ambracia), एनक्टोरियम (Anactorium) तथा ल्यूकास (Leucas) के उपनिवेशों को स्थापित किया । उसने अपने राज्य में सर्वप्रथम मुद्रा का प्रचलन आरम्भ किया । उसके मरणोपरांत उसका पुत्र पेरियण्डर (Periander) शासक बना जिसने ६२५ से ५८५ ई० पू० तक शासन किया । उसने भी अपनी नौसेना को शक्तिशाली बना कर दो नये उपनिवेश अपोलोनिया (Apollonia) तथा पोतीदइया (Potidaea) स्थापित किये । पेरियण्डर की मृत्यु के पश्चात् राजसत्ता एक शासक से निकल कर कुछ धनी — नागरिकों के हाथ में आ गई और कोरिंथ एक धनी-तांत्रिक (Oligarchy) राज्य स्थापित हो गया । यह शासन कर्ता व्यापार की उन्नति में संलग्न रहते थे ।

५०७ ई० पू० में कोरिंथ भी स्पार्टा की पेलोपोनीशियन लीग का एक सदस्य बन गया और स्पार्टा के विरुद्ध एथेन्स के प्रजातन्त्र का साथ दिया । ४८० ई० पू० में पर्सिया के युद्ध में अपनी पूरी शक्ति के साथ भाग लिया । कुछ दिनों के पश्चात् यह एथेन्स के विरुद्ध हो गया और ४६२ — ४४६ के मध्य इन दोनों में युद्ध हुये । एथेन्स ने कोरिंथ के व्यापार की बड़ी हानि पहुँचाई परन्तु इससे अधिक हानि कोर्सीरा के विद्रोह तथा एपीडेमनस के गृह-युद्ध द्वारा पहुँची । युद्ध में कोरिंथ परास्त हो गया और एपीडेमनस (एपोलोनिया के उत्तर में) कोर्सीरा का उपनिवेश बन गया । कोर्सीरा अब एथेन्स का मित्र बन गया ।

एथेन्स की लिपि के वर्ण

अ	अ	ब	ब	ग	ग	द	द	ए	ए	ज़			
Δ	Δ	Β	Β	Λ	Λ	Δ	D	Ε	Ε	I			
इ	इ	थ	थ	ई	ई	क	ल	ल	म	म	न	न	
H	Θ	⊕	⊗	Σ	I	K	Λ	Λ	M	M	N	N	
ओ	प	प	क	र	र	स	स	त	ऊ	ऊ	फ	ख	ख
O	Π	Q	P	R	Σ	Σ	T	V	Υ	Φ	X	+	

एथेन्स की लिपि का एक अभिलेख

*7P TSX 40 Y Y Y ZO
 3 I P *7 *T *T 0 1 *T *Y O T Y
 X 7 M *X 3 J T > T <

Who now of all the dancers performs most gracefully, he shall receive this.

अब कोरिथ ने पेलोपोनीशियन लीग को एथेन्स के विरुद्ध उकसाया और युद्ध की घोषणा कर दी जिसमें स्पार्टा को एथेन्स के विरुद्ध अनिच्छा से लड़ना पड़ा। - इसमें कोरिथ को अपने अन्य उपनिवेशों से हाथ घोना पड़ा। अन्त में ४२१ ई० पू० में निकियास (Nicias) में एक सन्धि हो गई परन्तु सन्धि से कोरिथ असन्तुष्ट रहा। अब स्पार्टा का युद्ध ४२८ ई० पू० में एथेन्स से पुनः हुआ जिसमें मन्तीनिया में तथा ४१५ में सिसली में एथेन्स की पराजय हुई। इस युद्ध में कोरिथ को स्पार्टा का साथ देना पड़ा तथा सीराकूज़ का भी साथ दिया। अब स्पार्टा एथेन्स का साथी हो गया। इस बार के युद्ध में जो पुनः स्पार्टा और एथेन्स के मध्य हुआ कोरिथ ने स्पार्टा के विरुद्ध थीबीज़, अर्गस और एथेन्स का साथ दिया। परन्तु इस युद्ध में कोरिथ की बड़ी हानि हुई और वह अर्गस के अधीन हो गया। ३८६ में उसने पुनः पेलोपोनीशियन लीग की सदस्यता स्वीकार कर ली।

३४३ ई० पू० में मेसीडोन के राजा फिलिप द्वारा कोरिथ को बड़ी हानि पहुँची और उसको फिलिप के अधीन होना पड़ा। ३३८ में कोरिथ फिलिप की हेलेनिक लीग (Hellenic League) का केन्द्र बन गया। दो वर्ष पश्चात् सिकन्दर ग्रीस का निर्विरोध नेता बन गया। अब कोरिथ व्यापार का एक मुख्य केन्द्र बन गया। १४३ ई० पू० में एराटस (Aratus) ने इसको स्वतन्त्र कर लिया और अकार्डीयन लीग का सदस्य बन गया। २९६ ई० पू० में फ्लेमिनस (Flaminus) ने रोम के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। १४६ ई० पू० में मेमियस (Memmius) ने कोरिथ को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया और वहाँ की कला का एक विशाल संग्रह अपने साथ रोम ले गया।

लगभग २०० वर्ष तक कोरिथ खण्डहर की दशा में पड़ा रहा परन्तु सीज़र ने उसके पास एक नवीन नगर की स्थापना की और उसका नाम भी कोरिथ रखा। रोम के शासक आगस्टस के काल में अकाडिया रोम का एक प्रान्त बन गया और कोरिथ पुनः समृद्धशाली होने लगा। ग्रीस में ईसाईयों की सर्वप्रथम बस्ती सन् ५४ में सेंट पॉल द्वारा कोरिथ में बनी।

ईसवी सन् की तीसरी शताब्दी में अन्य नगर-राज्यों की भाँति गोथों और अन्य बर्बर जातियों द्वारा कोरिथ को भी बड़ी हानि हुई। २६७ ईसवी में कोरिथ का दूसरा नगर नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। पुनः इसका निर्माण हुआ और पुनः ३९६ में अलारिक द्वारा नष्ट कर दिया गया परन्तु पुनः निर्माण किया गया और अपना वैभव प्राप्त करने लगा। तदनन्तर यह बैजेंटाइन साम्राज्य के अधीन रहा परन्तु छठी शताब्दी में एक भूकम्प द्वारा नष्ट हो गया और जुस्टीनियन द्वारा पुनः निर्मित हुआ।

ईसवी सन् की नवीं शताब्दी में यह धार्मिक तथा राजनीतिक केन्द्र बन गया। तत्पश्चात् यहाँ एक विशाल सैनिक केन्द्र खोला गया तथा सिल्क का उद्योग स्थापित हो गया। ११४७ में सिसली के नार्मन रॉजस द्वितीय (Roges II) द्वारा इटली के अधिकार में आ गया। तदनन्तर पुनः बैजेंटाइन साम्राज्य का एक अंग बन गया। १४५९ में यह आटोमान तुर्कों के अधीन हो गया। कुछ दिनों बाद यह तुर्कों से स्वतन्त्र होकर सत्रहवीं व अठारहवीं शताब्दियों में यह माल्टा तथा वेनिस के अधिकार में रहा परन्तु पुनः स्वतन्त्रता की आस न ले सका। इसके पश्चात् इसका पृथक् इतिहास समाप्त हो गया अब वह आधुनिक ग्रीस का एक अंग बन गया था, जो अब भी वर्तमान है।

लिपि : कोरिथ की लिपि के वर्णों का नाम किर्चोफ़ ने गहरा नीला (Blue) रखा। इस लिपि का प्रयोग अर्गस, मेगारा तथा एशिया के पश्चिमी किनारे के कुछ नगरों में होता था। इसका काल ई० पू० की छठी शताब्दी माना जाता है। इसका प्रयोग बाएँ से दाएँ होता था।

कोरिथ की लिपि के वर्ण

अ △△	ब └┐	ग <C	द △▷	ए ⋈
फ़ ⋈	ज I	झ ⊠	थ ⊕⊗	ड ⚡
क K	ल └^	म M	न N	स ⋈
ओ ○	प └┐	स M	क्र ○	र PR
त T	व VY	फ़ ⊕⊗	च-ख X+	प्स VY

प्राचीन कोरिथ (विध्वंस) नगर में 'अमरीकन स्कूल एट एथेन्स' (American School at Athens) के विद्वानों तथा पुरातत्त्व वेत्ताओं ने १८८६ में उत्खनन कार्य आरम्भ किया जो १९१६ तक चलता रहा। तत्पश्चात् यह कार्य १९२५ में पुनः आरम्भ हुआ। प्राचीन पुरातात्विक सामग्री तथा अभिलेख बहुत बड़ी मात्रा में प्राप्त हुये जिनके द्वारा प्राचीन कोरिथ पर प्रकाश पड़ सका।

'फ० सं० — ३३१' पर कोरिथ की लिपि के वर्ण दिये गये हैं।

बोयेशिया

इतिहास : इस राज्य की संस्कृति लगभग पाँच सहस्र वर्ष पूर्व वर्तमान थी परन्तु इसका इतिहास ई० पू० की पाँचवीं शताब्दी से आरम्भ हुआ। ४८० में जब पर्शिया ने ग्रीस पर आक्रमण किया तो बोयेशिया पर्शिया की ओर हो गया। युद्ध के समाप्त होने पर अन्य नगर राज्यों ने इसका बहिष्कार किया। बोयेशिया लीग का अन्त कर दिया गया। ४५७ में स्पार्टा ने एक अन्य लीग की स्थापना की परन्तु एथेन्स द्वारा इसको समाप्त कर दिया गया और लगभग १० वर्ष बोयेशिया पर इसका अधिकार रहा।

तदनन्तर ९ नगरों की एक नई लीग बोयेशिया (Boetia) में स्थापित हुई जिसका अध्यक्ष थीबीज का नगर — राज्य बना। इसका कार्य ६० वर्ष तक चलता रहा। पेलोपोनेशियन युद्ध में बोयेशिया ने स्पार्टा का पक्ष लेकर एथेन्स को परास्त किया परन्तु निकियास की सन्धि से, जो ४२१ ई० पू० में हुई, एथेन्स असंतुष्ट रहा। इसी के कारण एक युद्ध स्पार्टा और थीबीज के मध्य हुआ। ३८२ में स्पार्टा के एक सैनिक अधिकारी ने थीबीज के नगर — राज्य को अपने अधीन कर लिया। ३७९ में एक प्रजातन्त्र ने शासन का अधिकार हस्तगत कर लिया जिसके कारण शनैः शनैः स्पार्टा का प्रभाव समाप्त होने लगा। तत्पश्चात् पुनः बोयेशिया लीग की स्थापना की गई जो पूर्णतया थीबीज के अन्तर्गत रही। यह थीबीज के साम्राज्यवाद का एक दूसरा रूप था।

३७१ ई० पू० में बोयेशिया की सेना ने ल्यूकत्रा में स्पार्टा को परास्त कर दिया। यह युद्ध इपामीनोडस (Epaminodus) के नेतृत्व में हुआ। इस विजय से थीबीज का प्रभाव बढ़ने लगा और मध्य ग्रीस व पेलोपो — नीशिया के नगर — राज्य इससे मित्रता का सम्बन्ध रखने लगे। ३६२ ई० पू० में स्पार्टा के साथ एक दूसरा युद्ध मन्तीनिया में हुआ जिसमें इपामीनोडस वीर मति को प्राप्त हुआ। फलस्वरूप थीबीज की शक्ति क्षीण होने लगी और उसका नेतृत्व समाप्त होने लगा।

कुछ दिनों के पश्चात् मेसीडोनिया ने थीबीज को अपने प्रभाव में लिया तदनन्तर अपनी सेना का केन्द्र बना दिया। जब ३३५ ई० पू० में थीबीज ने इसके विरुद्ध विद्रोह किया तो सिकन्दर ने थीबीज को पूर्णतया नष्ट कर दिया। ई० पू० की दूसरी श० में बोयेशिया निवासियों ने मेसीडोनिया का रोम के विरुद्ध पक्ष लिया परन्तु इस कार्य से उनको रोम के क्रोध द्वारा बड़ी हानि उठानी पड़ी। कुछ समय पश्चात् १४६ में उन्होंने अकाइयन लीग के विद्रोह का पक्ष लिया जिसके कारण बोयेशिया लीग को सदैव के लिये समाप्त कर दिया गया अब बोयेशिया रोमन राज्य का एक अंग बन गया। कुछ दिनों में बोयेशिया का नाम इतिहास के पृष्ठों से लोप हो गया।

लिपि : किर्चोफ़ ने इस लिपि के वर्णों का नाम 'लाल वर्ण' रखा। यह बोयेशिया के नगर — राज्यों में छठी शताब्दी में प्रचलित थे जो 'फ० सं० — ३३२' पर दिये गये हैं।

बोयेशिया की लिपि के वर्ण

अ AA	ब BB	इ ^Γ	द Δ∇D	ए ÆE
फ़ F□	ज I	इ ⊞H	थ ⊕⊞⊖	ई I
क K	ल L	म MM	न NN	स +
ओ ○◻◇	प ΠN7	र P̄PR	स ⚡⋈⋈	त-ट T
ऊ V~		फ़ ⊙⊙		प्स V4

आर्केडिया

इतिहास : प्राचीन काल में आर्केडिया (Arcadia) में पेलासगियन जाति के लोग निवास करते थे । ५५० ई० पू० में स्पार्टा ने आर्केडिया के मुख्य नगर - राज्य तीगिया (Tegea) को परास्त कर दिया । ४८० में आर्केडिया के नगर - राज्यों ने पर्सिया की सेना से युद्ध किया । ४२१ में उसकी एथेन्स से सन्धि हो गई । ४१८ ई० पू० में स्पार्टा से मन्तीनिया में युद्ध हुआ जिसमें आर्केडिया पुनः परास्त हुआ । जब ल्यूकत्रा में स्पार्टा की पराजय तथा थीबीज की विजय ३७१ में हुई, तब मन्तीनिया के राजा लाइकोमिडीज ने एकता की एक योजना बनाई । ३६८ में राज्यों के संघ की राजधानी मेगालोपोलिस^१ (Megalopolis) को बनाया गया ।

३६५ ई० पू० में आर्केडियन्स ने ओलिम्पिया^२ (Olympia) पर अधिकार कर लिया । तत्पश्चात् राज - नैतिक तथा सामाजिक छोटे छोटे युद्ध होते रहे । आर्केडियन - नगर - राज्य ३६२ ई० पू० में आपस में ही मन्तीनिया में युद्ध करते रहे । इन झगड़ों को रोकने के लिए पुनः एक संघ बना जो ३०० ई० पू० तक जीवित रहा । तदनन्तर सिकन्दर के उत्तराधिकारी आर्केडिया पर शासन करते रहे परन्तु मेगालोपोलिस मैसीडोनिया के विरुद्ध रहा । कुछ दिनों पश्चात् मैसीडोनिया का प्रभाव भी समाप्त हो गया और अकाइयन लीग की शक्ति बढ़ गई । २३५ ई० पू० में लिडिया के निवासियों ने मेगालोपोलिस को भी साथ अकाइयन लीग में सम्मिलित कर लिया । तत्पश्चात् आर्केडिया अन्य नगर - राज्यों के इतिहास के साथ सम्मिलित हो गया ।

लिपि : किर्चोफ़ ने इस लिपि के वर्णों का नाम लाल वर्ण - रखा था । इन वर्णों का प्रयोग आर्केडिया के नगर राज्यों में पाँचवीं शताब्दी में हुआ करता था । इसकी दिशा भी बाएँ से दाएँ थी । 'फ० सं० - ३३३' पर आर्केडिया के वर्ण दिये गये हैं । उसी के साथ ग्रीक साहित्यिक काल (Classical Period) के वर्ण भी दे दिये गये हैं । पहले काल में आर्केडिया की लिपि तथा दूसरे में साहित्यिक काल की लिपि दी गई है ।

ग्रीक के आधुनिक वर्ण : इस चित्र में ग्रीक लिपि के आधुनिक वर्ण दिये गये हैं जो मुद्रण में प्रयोग किये जाते हैं । इसमें छोटे व बड़े - दोनों प्रकार के वर्ण दिये गये हैं । इसके अतिरिक्त वर्णों के नाम भी दिये गये हैं (फ० सं० - ३३४) ।

१—वर्णों की ध्वनि ।

२—बड़े वर्ण (Capital letters) ।

३—छोटे वर्ण (Small letters) ।

४—उनके नाम ।

1. पोलिस (Polis) के अर्थ हैं नगर राज्य । मेट्रोपोलिस या मेट्रोपोलिस (Metropolis) 'मात्र' शब्द से 'मेत्रो' अर्थात् जहाँ नगर का जन्म हुआ अर्थात् मुख्य नगर । ऐक्रोपोलिस (ऐक्रो के अर्थ हैं ऊँचा) इस कारण ऊँचे पर बना रक्षा केन्द्र (Acropolis) अर्थात् गढ़ । नेक्रो पोलिस (Necropolis; Nekros = मृत) अर्थात् मुर्दों का नगर = कब्रस्तान ।

2. ७७६ ई० पू० में सर्वप्रथम खेल - कूद की विश्व प्रतियोगिता का यहीं से अन्त हुआ ।

आर्केडिया एवं साहित्यिक काल के वर्ण

अ	Λ A	A	स	+	≡
ब	B	B	ओ	○	○
ग	< C	Γ	प	Π Π	Π
द	Δ Δ Δ	Δ	ल		⌒
ए	⋈ E	E	क	♀	♀
झ	I	I	र	R	P
इ	⊞	H	श	⋈ ⋈	⋈
थ	⊕	⊙	त	T	T
ई	I	I	व	V	Y
क	K	K	फ		Φ
अ	^ ^	^	च	∇	X
म	M	M	स	✱	Y
न	N	N	उ		Ω

फलक संख्या - ३३३

पठनीय सामग्री :

- Boisford, G. W. and* : Hellenic History (1956).
Robinson, C. A. : Greece and Crete (1952).
Buckley, C. : A History of Greece (1951).
Bury, J. B. : 'The Antiquity of the Greek Alphabet'—American Journal of Archaeology—XXXVI (1933).
Carpenter, R. : 'The Greek Alphabet Again' American J. of Arch. XLII (1969).
Ibid. : Essays in Aegean Archaeology (Oxford—1927).
Casson, S. : Aegean Civilization (1925).
Glantz, G. : The Oldest Civilization of Greece (1908).
Hall, H. R. : 'The Date of Hellenic Alphabet'—University of North Carolina Studies in Philology—XLII (1945).
Harland, J. P. : The Home of Heroes (London—1967).
Hood, M. S. F. : Travels in Northern Greece (1835).
Leake, W. M. : Ancient Corinth (1930).
Neill, J. G. O. : Early Age of Greece (1901).
Ridgeway, W. : An Introduction to Greek Epigraphy, 2. Vols. (Cambridge—1905).
Roberts, E. S. : 'The Phaistos Disk'—Journal of the Near Eastern Studies, XVIII (1959).
and Gardner, E. A. : 'Corinth'—American Journal of Archaeology, XXXVII (1933).
Schwartz, B. : Hellenistic Civilization (1932).
Stillwell, A. N. : Hand book of Greek and Latin Palaeography (London—1906).
Tarn, W. W. : An Introduction to Greek and Latin Palaeography (Lond.—1912).
Thomson, E. M. : 'How Old is the Greek Alphabet?' American Journal of Archaeology, XXXVIII (1933).
Ibid.

इटली

इटली देश प्राचीन काल में एक सम्पूर्ण देश नहीं था। यहाँ भी नगर — राज्य थे तथा उनकी अपनी लिपियाँ भी थीं। उन्हीं नगर — राज्यों का वर्णन नीचे दिया गया है।

इटूरिया

इतिहास : अभी तक यह प्रमाणित नहीं हो सका है कि एट्रस्कन (Etruscan) लोग कौन थे और कहाँ से आये तथा उनकी भाषा क्या थी। इन पहलियों को हल करने के लिये विद्वानों ने अपने अपने मत इस प्रकार प्रकट किये हैं :—

हेरोडोटस के अनुसार : ई० पू० की नवीं शताब्दी में लीडिया में अत्यो (Aty) का पुत्र मनेज शासन करता था। उसी काल में एक अकाल पड़ा जो लगभग २८ वर्ष तक रहा। खाद्य पदार्थों की इतनी कमी हुई कि राजा ने यह निश्चय किया कि देश के आधे निवासी किसी अन्य देश को चले जायें। इस बात का निर्णय करने के लिये भाग्य का सहारा लेना पड़ा और लाटरो डाली गई जिसमें स्वयं राजा तथा उसका पुत्र भी सम्मिलित हुए। पुत्र का नाम टायरेनस (Tyrhenus) था। जाने वालों में पुत्र का नाम निकला और वह अन्य नागरिकों के साथ स्मिर्ना (Smyrna), जो समुद्र के किनारे पर स्थित था, पहुँचा और सब लोगों ने मिल कर जलपोत बनाना आरम्भ कर दिये। तत्पश्चात् उन लोगों ने अपने सारे सामान को उस में लाद दिया और पश्चिम की ओर अपनी यात्रा आरम्भ कर दी। कुछ दिनों की यात्रा के पश्चात् वे लोग ओन्निकी पहुँचे जहाँ वे लोग बस गये और उन्होंने नगर — राज्यों की स्थापना की। उसी भू भाग को इतिहास में इटूरिया सम्बोधित किया जाता है।

डायोनीसियस^१ (Dionysius), जो हेलिकारनेसस (Halicarnasus) का एक प्रसिद्ध इतिहासकार था, के अनुसार एट्रस्कन इटली के ही प्राचीन निवासी थे तथा उनकी भाषा अनोखी थी।

एफ़० दि संसुरे : (F. de Sanssurre) के अनुसार यह लोग एशिया निवासी थे।

वी० थामसेन : (V. Thomsen) के अनुसार यह लोग काकेशियन जाति के थे।

इन मतभेदों के होने पर भी अब यह धारणा बन चुकी है कि यह लोग ग्रीस की ओर से ही आये क्योंकि इसकी लिपि में ग्रीक लिपि के वर्ण दृष्टिगोचर होते हैं। ई० पू० की सातवीं शताब्दी तक इन लोगों ने इटूरिया में अपना एक राज्य — संघ स्थापित कर लिया था जिसमें लगभग १२ नगर — राज्य सम्मिलित थे। इस संघ की राजधानी तारकुइनिया (Tarquinia) तथा कायरो — (Caere) — आबु० कर्वेतेरी (Cerveteri), वीआइ (Veii), क्लूसियम (Clusium), पापूलोनिया (Populonia), वेतूलोनिया (Vetulonia) आदि मुख्य थे। जहाँ यह आकर बसते लगे थे वहाँ के मूल निवासी विल्लोनोवन (Villonovans) थे, तथा दक्षिण की ओर के, जिसको बाद में लैटियम (Latium) सम्बोधित करने लगे, मूल निवासी सबीनी (Sabine) थे।

१. इस का काल ई० पू० की प्रथम शताब्दी है।

यह दो प्राचीन जातियाँ कृषि करती थीं तथा भेड़ों को पालती थीं। यह दोनों जातियाँ सम्म थीं और इनके प्रजातंत्र राज्य थे प्रत्येक ग्राम की अपनी सभा थी और वह स्वतंत्र थे।

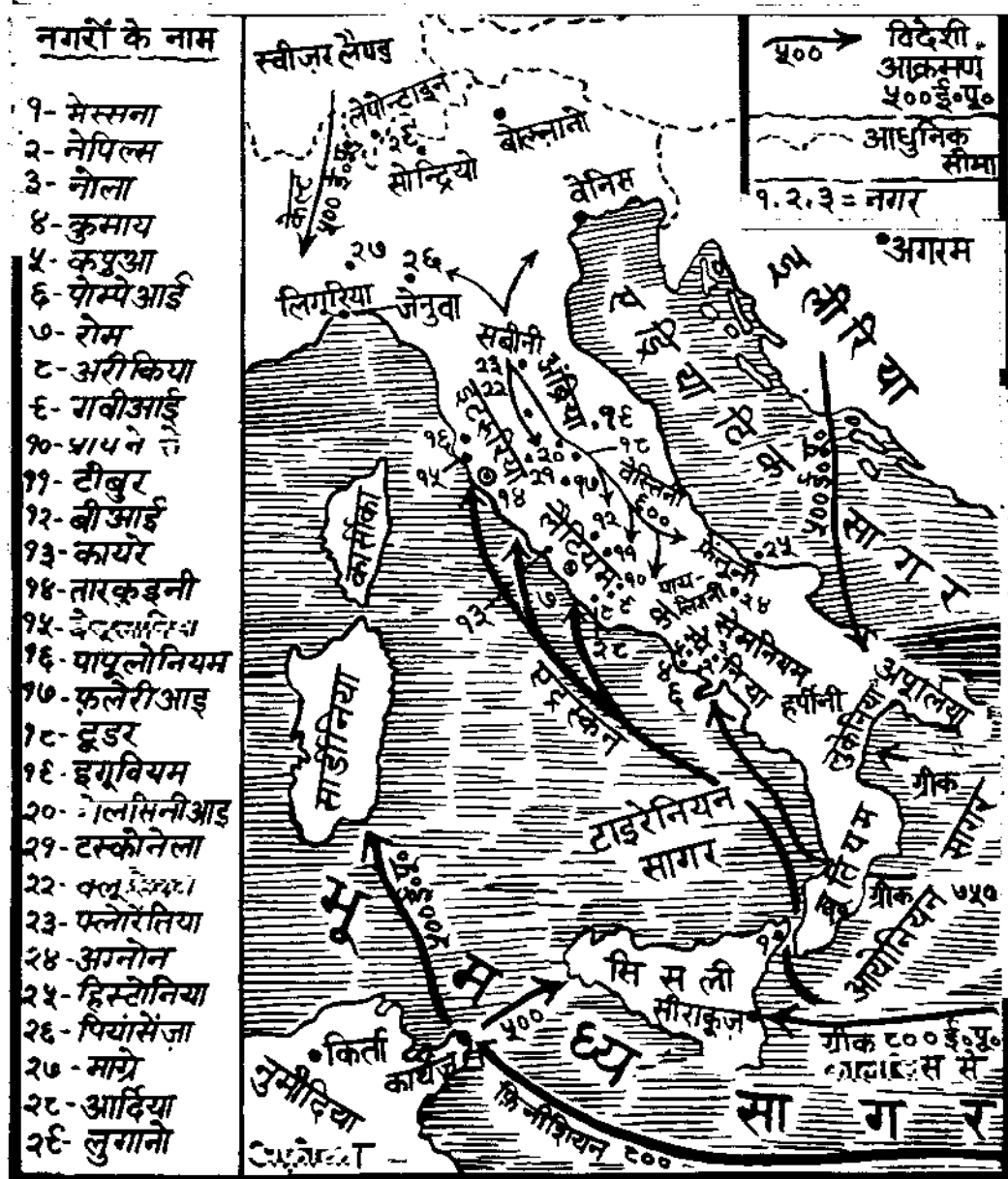
लगभग आठवीं श० में जिस प्रकार इटलिया में नगर-राज्य स्थापित हो गये उसी प्रकार लैटियम में भी ६ नगर-राज्य स्थापित हुये। अब लैटियम व इटलिया के नगर-राज्यों में युद्ध आरम्भ होने लगे थे। दो शताब्दियों में, पूर्व से अब तक, इटलिया पर्याप्त उन्नति कर चुका था। उसने अपने नगर-राज्यों की सुरक्षा के लिये नगरों के चारों ओर बड़ी दीवारों तथा छोटे छोटे गढ़ों का निर्माण करवा लिया था। उनके पास कुशल सैनिक तथा आज्ञाकारी भूमिदार तथा कृषिक थे। वे लोग बड़े परिश्रम तथा कुशलता से कृषि करते थे। वे लोग खानों से लोहा व तांबा आदि निकाल कर उससे सुन्दर सुन्दर वस्तुयें बनाकर उद्योग व व्यापार में भी उन्नतिशील हो गये थे। फ़िनीशिया व ग्रीस से व्यापार होता था। देश समृद्ध हो रहा था।

रोम का नगर-राज्य एट्रस्कन शासकों के ही अन्तर्गत था। इसका प्रथम शासक रोमूलस (Romulus) था, संभवतः उसी के नाम पर रोम नाम पड़ा था। इसके चारों ओर भी लगभग ६ मील लम्बी दीवार थी जिसमें लगभग दो लाख मनुष्य सुरक्षित रह सकते थे। एट्रस्कन पूरे लैटियम पर राज्य करना चाहते थे। इस कारण लैटियम के कुछ नगर-राज्यों से युद्ध भी होते रहते थे। उनके नगरों के नाम गबीआइ (Gabii), अरीकिया (Aricia) तथा आदिया (Ardea) आदि थे। अब लैटियम राज्यों का एक पृथक संघ बन गया था।

प्राचीन इटली के नगरों की सूची

नगरों के नाम			नगरों के नाम		
क्रम संख्या	प्राचीन	आधुनिक	क्रम संख्या	प्राचीन	आधुनिक
१	मेस्साना		२२	क्लूसियम	क्लूसी
२	नियपोलिस	नेपल्स	२३	फ़्लोरेंतिया	फ़्लोरेंजे
३	नोला		२४	अग्नोन	
४	कुमाय	कोमाय	२५	हिस्टोनिया	वास्तो
५	कैसिलिनम	कपुआ	२६	पियांसिजा	
६	पोम्पेआइ		२७	माथे	
७	रोमा	रोम	२८	आदिया	आदियाटाइन केन्स
८	अरीकिया		२९	लुगानो	
९	गबीआइ		३०	कार्थेज	टियूनिस
१०	प्रायनेस्ते	पैलेस्ट्राइन	३१	किर्ता	
११	टीबुर	टिवोली	३२	सीराकूज़	
१२	बीआइ	फ़ार्मेलो	३३	जेनुवा	जेनोवा
१३	कायरे	कर्वेतरा	३४	सोन्ड्रियो	
१४	तारकुइनी	तारकुइनिया	३५	वोल्जानो	
१५	वैतूलोनिया		३६	अगरम	ज़गरेव
१६	पापूलोनियम	पापूलोनिया	३७	विनीज़िया	वेनिस
१७	फ़लेरीआइ	सिविटा कैस्टिलाना			
१८	टूडर	टोडी			
१९	इगूबियम	गुब्बियो			
२०	बोलसिनीआइ	बोलसेना			
२१	टस्कोनेला	टस्केनिया			

प्राचीन इटली का मानचित्र



परन्तु इस संघ का नेता तारकुइनिया - राजवंश का ही शासक था। ५०६ ई० पू० में रोम व काथेज के मध्य प्रथम संधि हुई। यह संसार का सर्वप्रथम प्रलेख (document) था।

इटलरिया में प्रजातंत्र नाम मात्र था। सभायें बहुत कम होती थीं परन्तु लैटियम में प्रजातंत्र सुचारु रूप से कार्य करता था। लैटियम के नगर - राज्य जब तारकुइनी - शासकों के हाथ आये तब नागरिक एक प्रकार के दास बन गये। ५०६ ई० पू० (अब परम्परानुगत इसी को मानने लगे) में लैटियम के नगर - राज्यों ने एट्रस्कन-शासन के विरुद्ध विद्रोह इस बात पर कर दिया कि वे भवनों के निर्माण में नागरिकों से बेगार करवाते थे। इस विद्रोह के कारण उनको रोम छोड़ना पड़ा परन्तु फिर भी एट्रस्कन आक्रमण करते ही रहते थे। बीच में क्लूसियम के शासक लार्स पोर्सेन्ना ने कुछ दिनों के लिए विजय प्राप्त कर ली थी परन्तु ४६६ ई० पू० में एक युद्ध हुआ जिसने एट्रस्कन शासकों का सदैव के लिये रोम पर से शासन समाप्त कर दिया। तत्पश्चात् लैटियम का एक स्वतंत्र राज्य - संघ बन गया जिसका नेता रोम था। अब शनैः शनैः रोम शक्तिशाली होता गया।

कहाँ तो एट्रस्कन रोम (लैटियम) को सम्य बनाने में उनके गुरु तथा शासक थे परन्तु अब दिशा परिवर्तित होने लगी। ३६६ ई० पू० में रोम ने एट्रस्कन का मुख्य नगर वीआइ अपने अधीन कर लिया। यह नगर रोम से केवल १० मील उत्तर की ओर था। कुछ दिनों पश्चात् कपुआ (Capua) तथा फ्लेरीआइ (Flerii) ने भी रोम की अधीनता स्वीकार कर ली।

इधर दक्षिण की ओर से सिसली (Sicily) निवासी ग्रीक लोगों ने तथा उत्तर की ओर से सेल्ट्स (Celts), कुछ लोग सेल्ट्स भी उच्चारण करते हैं, की जातियों ने आक्रमण करना आरम्भ कर दिये। इन युद्धों में रोम की भी बड़ी हानि हुई। ३६० ई० पू० में वे लोग रोम को परास्त करके तथा बहुत सा सोना लेकर पुनः उत्तर की ओर कूच कर गये। तत्पश्चात् रोम अपनी शक्ति को पुनः प्राप्त करने लगा। उसने एक एक करके इटलरिया के नगरों को अपने अधीन करना आरम्भ कर दिया था। ई० पू० की चौथी शताब्दी के अन्त तक उसने सारे नगरों को अपने अधीन कर लिया था और ३०० ई० पू० में तारकुइनी शासन को समाप्त कर दिया गया। इस प्रकार एक प्राचीन सम्यता, जिसने एक दिन रोम को सम्य बनाया था, का उसी रोम द्वारा अन्त हो गया।

एट्रस्कन लिपि : ई० पू० की सातवीं शताब्दी से प्रथम श० तक के छोटे बड़े लगभग ९००० अभिलेख पुरातत्त्व वेत्ताओं द्वारा प्राप्त हो चुके हैं। इनमें से बहुत से पावली (Pauli - 1893) द्वारा प्रकाशित¹ हुए तत्पश्चात् डैनिएल्सन (Danielson) और हर्बिग (Herbig) द्वारा उत्खनित किये गये। जी० बीनामिकी (G. Buonamici) ने १९३२ में यह अभिलेख अपनी पुस्तक² में प्रकाशित करवाये। इन ९००० अभिलेखों (लगभग सभी दाह संस्कार से सम्बन्धित छोटे छोटे अभिलेख हैं) पर केवल नाम अंकित हैं। इनमें से केवल ९ अभिलेख लम्बे हैं और इनमें से भी तीन उल्लेखनीय हैं जो निम्नलिखित हैं :—

१. एक मिट्टी की बनी मुद्रा है जिस पर ३०० शब्द उत्कीर्ण किये हुये हैं।
२. दूसरी पाटिया बछड़े के पङ्क्त की आकृति की है। जिस पर देवी देवताओं के नाम अंकित हैं (फ० सं० - ३४५)।

३. तीसरी कपड़े पर लिखी हुई पाण्डुलिपि है जो पहले पूरी और गोल लिपटी हुई थी पर बाद में काट काट कर एक मिस्री - स्त्री की ममी को लपेटने के लिए, जो ग्रीक रोमन युग (प्रथम शताब्दी ई० पू०) की थी - प्रयुक्त

1. Corpus Inscriptionum Etruscarum (1893)

2. Buonamici, G.: Epigraphia Etrusca (Florence - 1932)

की जाती रही। इसमें १५०० शब्दों का एक लेख है, जो जगरेब (प्राचीन अगरम) के संग्रहालय में सुरक्षित रखा है। अभी तक इसका अनुवाद नहीं हो सका है।

इन अभिलेखों के रहस्योद्घाटन का शोचकार्य निम्नलिखित विद्वानों ने किया :—

हर्बिग (Herbig), बुग्गे (Bugge), टॉर्प (Torp), स्कुत्श (Skutsch), फीजल (Fiesal), गोल्डमान (Goldmann) तथा ओल्शा (Olzsha)। इनके अतिरिक्त एट्रस्कन भाषा के प्रसिद्ध विद्वान् प्रो० पैलोतिनो (Palotino) ने दाह — संस्कार के अनेक अभिलेखों को साथ साथ रखा और उन शब्दों की सूची तैयार की जिनका प्रयोग बारम्बार हुआ है। उन शब्दों की संख्या लगभग २०० है। उनके अर्थ भी निश्चित हो चुके हैं। उसी तरह के कई वाक्यांशों के अर्थ भी अनुमान से जान लिये गये हैं।

द्विभाषी अभिलेख (लैटिन — एट्रस्कन) जो प्राप्त हुए वे इतने छोटे और कम हैं कि उनसे किसी प्रकार की कुंजी प्राप्त न हो सकी जो एट्रस्कन लिपि का रहस्योद्घाटन कर सकती। यह भाषा भारतीय भाषाओं में नितान्त विचित्र तथा भिन्न है। किसी जाति से भी एट्रस्कन की सजातीयता का निश्चित प्रमाण अभी तक नहीं मिला और न किसी भाषा से कोई समानता मिली। वर्णों के विषय में यह प्रमाणित हो चुका है कि प्राचीन लैटिन के वर्ण ग्रीक से लिये गये। इटैरिया के दक्षिणी भाग से अनेक अलंकृत कलशों, थालियों, बर्तनों व प्लेटों पर तथा लघु — शिलाओं पर ग्रीक वर्णों से समानता रखने वाले वर्ण अंकित मिले हैं। इनका काल भी आठवीं तथा सातवीं श० निर्धारित हो चुका है। जो अंकित वर्ण प्राप्त हुये हैं उनको टेलर (Taylor) ने पेलासगियन¹ (Pelasgian) के नाम से तथा गार्ड थाउसन (Von Gard Thausen) ने प्रोटो टाइरेनियन² (Proto Tyrrhenian) के नाम से सम्बोधित किया है तथा किर्चोफ़ (१८८७) ने उनका नाम पश्चिमी (ग्रीक के) वर्ण रखा। यह वर्ण कालसिस³ से चल कर सिसली पहुँचे उस समय कालसिस अपने कई उपनिवेश — नगर सिसली में स्थापित कर चुका था। ग्रीक निवासियों ने इटली के पश्चिमी किनारे के भूभाग पर कुमाय (Cumae), लगभग ई० पू० की नवीं शताब्दी में स्थापित किया था जहाँ बाद में नियोपोलिस स्थापित हुआ जिससे नेपल्स (Naples) नाम निकला जो आज भी प्रचलित है। इसी स्थान से ग्रीक वर्णों को एट्रस्कन द्वारा अपनाया गया तथा इन्हीं वर्णों से लैटिन — फ़ैलिस्कन (Latin — Faliscan) का भी जन्म हुआ।

किर्चोफ़ की इस मान्यता का खण्डन करते हुये हैमरस्ट्रोम (Hammerstrom) ने कहा कि लैटिन — फ़ैलिस्कन वर्ण एट्रस्कन के साथ नहीं जन्मे अपितु एट्रस्कन वर्णों से जन्मे तथा एट्रस्कन वर्णों का उद्भव प्रोटो — टाइरेनियन वर्णों द्वारा हुआ। तदनन्तर एट्रस्कन वर्णों द्वारा इटली के उत्तर व दक्षिण में कई अन्य प्रकार के वर्णों का जन्म हुआ जिसके विषय में आगे लिखा जायेगा। इन मतभेदों का विश्लेषण करने के पश्चात् यह बात निश्चित हो जाती है कि एट्रस्कन वर्ण ग्रीक वर्णों द्वारा ही विकसित हुए।

हैमरस्ट्रोम के अनुसार B.D.O.X. वर्ण एट्रस्कन वर्णों में नहीं अपनाये गये परन्तु कुछ विद्वानों का मत इसके विरुद्ध है। एक (F) की ध्वनि के लिए लीडिया का एक वर्ण ४ लिखा गया और इसी एक वर्ण के आधार पर एट्रस्कन की जन्मभूमि लीडिया मान ली गई।

1. ग्रीस के मूलनिवासी थे।
2. Faulmann : Illustration Gesch der Schrift (Berlin - 1924) p - 239.
3. कालसिस या खाल्किस् (Chalcis - Khalkis) यूनिया का मुख्य नगर — राज्य था जिसने सिसली में लगभग 30 नगर अपने उपनिवेश बना कर स्थापित किये थे। इसके ग्रीस के अन्य नगर — राज्यों से युद्ध होते रहते थे। इस पर कई देशों का शासन रहा। अंत में इसका नाम कैस्ट्रो पड़ गया। 1894 के सूक्ष्म में इसका बहुत सा भाग नष्ट हो गया।

‘फ० सं० - ३४३’ पर एट्रस्कन वर्णों^१ का उद्भव टाइरेनियन लिपि (अर्थात् पश्चिमी ग्रीक लिपि) द्वारा दिया गया है ।

कम्पेनिया

इतिहास : कम्पेनिया लैटियम के दक्षिण में एक प्राचीन प्रान्त था जिसके मुख्य नगरों से ओस्कन (Oscan) लिपि के अभिलेख प्राप्त हुये हैं । कम्पेनिया का अपना कोई इतिहास नहीं है इस कारण उन नगरों के विषय में ही कुछ वृत्तान्त दिया गया है ।

कपुया (Capua) : यह कम्पेनिया का प्राचीन मुख्य नगर था । इसका आरम्भिक नाम कैम्पस (जिसका विशेषण कैम्पेनस, जिससे कम्पेनिया बना) था और इसकी स्थापना ६०० ई० पू० में हुई । सैमनी जातियों के आक्रमणों से ई० पू० की पाँचवीं शताब्दी में यहाँ से एट्रस्कन आधिपत्य उठ गया । ३४० ई० पू० में यह रोम के अधिकार में आ गया । १२३ ई० पू० के पश्चात् से यह रोम के एक निर्वाचित न्यायाधीश के शासन में रहा तदनन्तर ई० पू० की प्रथम श० में आगस्टस के अधीन आ गया । ४५६ ई० में गायसेरिक (Gaiseric) ने इसको नष्ट - भ्रष्ट कर दिया परन्तु पुनः इसका निर्माण हो गया । ८४० में मुसलमानों ने इसे नितान्त नष्ट कर दिया । १२३२ में फ्रेडरिक (Frederick II) ने यहाँ एक गढ़ का निर्माण करवाया । १५०२ में सीज़र बोरगिया (Caesar Borgia) ने इसको परास्त किया । १८६० तक यह नेपिल्स के राज्य का एक भाग बना रहा तत्पश्चात् यह इटालियन राज्य में आ गया ।

यहाँ के समाधि - स्थानों से पकी हुए मिट्टी की पाटियाँ प्राप्त हुईं जिनका काल सातवीं श० निर्धारित किया गया । यह ओस्कन लिपि में अंकित थीं । २ पाटियाँ लैटिन लिपि में भी प्राप्त हुईं । कुल १९ पाटियाँ यहाँ के उत्खनन से प्राप्त हुईं ।

नोला (Nola) : ५०० ई० पू० में यह नगर एट्रस्कन के अधीन था । ३२८ ई० पू० में इसने रोम के विरुद्ध युद्ध किया । ३१३ ई० पू० में रोम ने इसको अपने अधीन कर लिया । सामाजिक युद्ध में इसने समीनियों (Samnites) का साथ दिया परन्तु ८० ई० पू० में सुल्ला (Sulla) ने इसको पुनः रोम के अधीन कर दिया । आगस्टस ने इसको रोम का उपनिवेश बना लिया और यहीं उसकी मृत्यु हो गई । ४५५ ई० में इसको गायसेरिक ने तथा ८०६ ई० में मुसलमानों ने अपने अधीन रखा । तेरहवीं श० में मैनफ्रेड (Manfred) ने अपने अधिकार में कर लिया । पन्द्रहवीं तथा सोलहवीं श० में भूकम्पों ने इसका सर्वनाश कर दिया । यहाँ से भी ओस्कन लिपि की कुछ पाटियाँ प्राप्त हुईं ।

पोम्पेआई (Pompeii) : इस नगर की हिरैकिल्स (Heracles) ने स्थापना की । स्ट्राबो (Strabo)^२ के अनुसार पहले यहाँ ओस्कन लोग बसे तदनन्तर पेलासगियन तथा टाइरेनियन आकर बसे और अन्त में समीनी जाति के लोग आये । ८० ई० पू० में यह रोम के अधीन हो गया ।

ई० सन् की प्रथम शताब्दी में यह नगर समृद्धि की चरम सीमा पर पहुँच गया था । सन् ६३ और ७९ के दो भूकम्पों ने इस नगर का सर्वनाश कर दिया और सारा नगर भूगर्भ में चला गया ।

1. Pauli. : Studi Etruschi, Vol III, p. - 81.

2. इसका नाम ग्नेइयस पोम्पेइयस (Gnaeus Pompeius) था । भेंगी - दृष्टि के कारण इसका नाम स्ट्राबो पड़ा । इसने अनेक सामाजिक युद्ध किये । ८ ई० पू० में इसको सूर्यु बिजली गिरने के कारण हो गई ।

ग्रीक लिपि के आधुनिक वर्ण

ध्वनि _१	बड़े वर्ण _२	छोटे वर्ण _३	नाम _४	ध्वनि _१	बड़े वर्ण _२	छोटे वर्ण _३	नाम _४
अ	A	a	alpha	न	N	ν	nū
ब	B	β	bēta	क्स	Ξ	ξ	xī
ग	Γ	γ	gamma	ओ	O	ο	omicron
द	Δ	δ	delta	प	Π	π	pī
ए	E	ε	epsīlon	र	P	ρ	rhō
ज	Z	ζ	zēta	स	Σ	σς	sigma
इ	H	η	ēta	त	T	τ	tau
थ	Θ	θ	thēta	उ	Υ	υ	upsilon
ई	I	ι	iōta	फ	Φ	φ	phī
क	K	κ	kappa	ख	X	χ	chī
ल	Λ	λ	lambda	प्स	Ψ	ψ	psī
म	M	μ	mū	ऊ	Ω	ω	ōmega

फलक संख्या - ३३४

१५९४ - १६०० के मध्य एक गहरी नाली के निर्माण करने में दोमिनिको फोन्ताना (Domenico Fontana) को कुछ अभिलेख प्राप्त हुये। १७६३ में यहाँ वैज्ञानिक ढंग से उत्खनन हुआ और १८०६ में इस कार्य को शासकों ने रुकवा दिया। १८६१ में इटली - शासन के जी० फियोरेली (G. Fiorelli) ने पुनः उत्खनन आरम्भ किया और ओस्कन तथा ग्रीक लिपि के कुछ अभिलेख प्राप्त किये। कई अभिलेख विज्ञापन के रूप में दीवारों पर अंकित दृष्टिगोचर हुये। एक घर से तो पूरी एक पेटी अभिलेखों से भरी प्राप्त हुई। कई अभिलेख अग्नोने (Agnone) के ग्राम से भी प्राप्त हुए। यह ग्राम नोला व अवेल्दा के मध्य स्थित था।

जे० ज्वेटायेफ (J. Zwetaieff - 1878) के अनुसार, जो उपर्युक्त नगरों में ओस्कन लिपि की पाटियाँ मिली हैं, उनका काल ई० पू० की छठवीं व पाचवीं श० है। उनकी दिशा भी दाएँ से बाएँ है।

इसके अतिरिक्त ओस्कन लिपि के अभिलेख अपूलिया (Apulia), लुकैनिया (Lucania), मेस्साना (Messina - आबु० मेसीना), सेमनियम (समीनी जाति का निवास स्थान), फ्रेन्तनी (Frentani), हर्पीनी (Herpini), पापलिग्नी (Paeligni), मरुक्किनी (Marrucini), वेस्तिनी (Vestini), टूडर (आबु० तोडी) आदि से भी प्राप्त हुये हैं। ओस्कन का नामकरण रोमन द्वारा 'लिंगुआ ओस्का' (Lingua Osca) उस भाषा का हुआ, जो कम्पेनिया की एक जाति 'ओस्की' द्वारा बोली जाती थी।

'फ० सं० - ३३७' पर ओस्कन लिपि के वर्ण दिये गये हैं। इसकी दिशा दाएँ से बाएँ थी।

अंत्रिया

इतिहास : इटली के पूर्वी किनारे के निवासी अंत्रिया भाषा - भाषी थे, इसी कारण इस भूभाग को अंत्रिया कहते थे। ई० पू० की छठी श० में उनका मुख्य केन्द्र इगूवियम (Iguvium) था, इसका आधुनिक नाम गुब्बियो है। ई० पू० की तीसरी श० में यह रोम के (एक संधि द्वारा) अधीन हो गया। इलूरिया का राजा जेन्टियस तथा उसका पुत्र अपने देश से भाग कर यहीं आकर छिपा था। इटली के सामाजिक युद्ध के पश्चात् इगूवियम के विषय में कुछ नहीं सुना गया। ४१३ में एक ईसाई - धर्म - पुजारी ने इसके विषय में कुछ वृत्तांत सुनाये। ५५२ ई० में गोथ जाति के सैनिकों ने इसको नष्ट कर दिया परन्तु नार्सेज के सहयोग से यह पुनः बन गया। इगूवियम अपने प्राचीन सिक्कों तथा पाटियों के लिये प्रसिद्ध है।

लिपि : १४४४ में ६ पाटियाँ, जिन पर अंत्रियन लिपि अंकित थी, प्राप्त हुई, जिनको वहाँ की नगर - पालिका ने १४५६ में मोल ले लिया। इसके पूर्व ही दो पाटियाँ १५५४ में वेनिस पहुँच गई थीं। १७२४ में प्रथम बार वे प्रकाशित हुई। ओतफ्रीड मुलर (Otfried Muller) ने अपनी पुस्तक^१ में बताया कि यह लिपि एट्रस्कन से समानता रखती है परन्तु भाषा इटालियन है। कार्ल लेप्सियस ने अपने निबन्ध^२ में अंत्रियन वर्णों की ध्वनियों को निर्धारित किया है। इस पर यस० टी० औफ्रेख्ट (S. T. Aufrecht) तथा किर्चोफ (J. W. H. Kirchhoff) ने १८४६ - ५१ में अपनी एक वैज्ञानिक व्याख्या प्रकाशित की। १८७५ में एम० ब्रील (M. Breal) ने कुछ अधिक प्रकाश डाला और अन्त में बुखेलेर (F. Bucheler) ने १८८३ में 'अंत्रिका' (Umbrica) के नाम से एक पुस्तक प्रकाशित कर दी।

1. Die Etrusker (1828).

2. 'De Tabulis Egvubinis' (1833).

प्रोटो-टाइरेनियन द्वारा एट्रस्कन वर्णों का उद्भव

एवनि	प्रोटो-टाइरेनियन	एट्रस्कन	एवनि	प्रोटो-टाइरेनियन	एट्रस्कन
अ	A	AA	न	N	५५
ब	B		स	田	
ग	<C	37(क)	ओ	00	
द	D		प	P	7
ए	E	≡	श	YM	∞
व	F		क	19	99
ज	I	I≠±	र	P	09
ह	田	田田	स	Σ	43
थ	⊕⊙	⊗⊙	त	T	+
ई	I	I	उ	YV	YVY
क	K	7	फ	Φ	⊙
ल	L	√	ख	Y	Y↓
म	M	५५	फ़	लीडिंग के चिह्न हैं →	8887

ओस्कन लिपि के वर्ण

अ Λ	ब Ɱ	ग-क > Ɱ	द ϣ
ए Ε	व Ɱ	त्स I	ह Ɱ
ई I	क Ɱ	ल √	म HH
न H	प N	र D	स ~
त T	उ V	फ 8	ऊ V̇

अंग्रियन लिपि के वर्ण

अ A	ब B	ग G	द D
ए E	व V	ह H	ई I
क K	ल L	म M	न N
प P	र R	स S	त T
ड V	फ F	स S	व W

सात कांसे की पाटियों पर दाह - संस्कार के पाठ अंकित हैं जिनमें से लगभग आधे अंत्रियन भाषा के तथा आधे लैटिन भाषा के हैं।

इसके अतिरिक्त भी टोडी (Todi) के प्राचीन नगर से, जहाँ अंत्रियन रहा करते थे - जिसका आधुनिक नाम टूडर (Tudar) है और जो इटली के पिगूरिया (Peguria) प्रांत का एक नगर है - कुछ प्राचीन कांसे की पाटियाँ अंत्रियन लिपि में प्राप्त हुई हैं। 'फ० सं० - ३३८' पर इस लिपि के वर्ण दिये गये हैं।

फ़लेरीआइ

इतिहास : फ़लेरीआइ (Falerii) इटलिया का एक प्राचीन नगर दक्षिण की ओर था। यह एट्रस्कन के १२ नगर - राज्यों में से एक था। प्रथम प्यूनिक युद्ध में इसने रोम के विरुद्ध विद्रोह कर दिया जिसके कारण रोम ने २४१ ई० पू० में इसका अर्ध - भाग नष्ट कर दिया। तदनन्तर एक नवीन नगर का निर्माण हुआ जो पहाड़ी के नीचे स्थित है। १०६४ में यहाँ के निवासियों ने प्राचीन नगर को छोड़ दिया और नये नगर में बस गये। फ़लेरीआइ नगर का आधुनिक नाम सिविटा कैस्टेलाना (Civita Castellana) है।

लिपि : यहाँ के उत्खनन से जो अभिलेख प्राप्त हुए उनकी लिपि तथा भाषा लैटिन से मिलती है। इसकी दिशा दाएँ से बाएँ है। इस लिपि का नाम फ़ैलिस्कन (Faliscan)¹ है।

'फ० सं० - ३३९' पर इसके वर्ण दिये गये हैं। इसकी दिशा भी दाएँ से बाएँ थी।

रेशिया

इतिहास : प्राचीन रेशिया (Raetia) का भूभाग दक्षिणी आल्प्स पर्वत में स्थित था। यहाँ के निवासी एट्रस्कनों से सम्बन्धित थे। इस भाग में तीन प्रकार की लिपियों के अभिलेख प्राप्त हुये जिनको एक वर्ग में रख दिया गया और नगरों के नाम पर उन लिपियों का भी नामकरण कर दिया गया।

बोलज़ानो (Bolzano) नगर बोलज़ानो प्रांत की राजधानी था। सातवीं ईसवी में बोलज़ानो ववरिया के सामन्त के अधीन था। १०२७ ई० में यह महाराजा कोनराड द्वितीय (Conrad II) द्वारा ट्रेन्ट के बिशप को दान - स्वरूप भेंट कर दिया गया। १०२८ में स्थानीय बिशप (सामन्त) के अधीन हो गया। १४६२ में बिशप ने एक त्यागपत्र द्वारा बोलज़ानो को जर्मनी के एक प्रांत हब्सबर्ग (Habsburg) को सौंप दिया जो १६१८ तक उसी के अधीन रहा।

लिपियाँ : यहाँ के उत्खनन से प्राप्त अभिलेखों की लिपि का नाम भी बोलज़ानो रख दिया गया।

बोलज़ानो : इस लिपि की वर्णमाला लेजेऊन (M. Lejeune) ने १६५७ में प्रस्तुत की जो 'फ० सं० - ३४०' पर दी गई है।

रेशिया : की दो अन्य प्रकार की लिपियाँ माग्रे (Magre) व सोन्ड्रियो (Sondrio) से प्राप्त हुईं। माग्रे की वर्णमाला 'फ० सं० - ३४१' पर तथा सोन्ड्रियो की वर्णमाला 'फ० सं० - ३४२' पर प्रस्तुत की गयी है।

इन तीनों प्रकार की लिपियों का काल ई० पू० की तीसरी शताब्दी निर्धारित किया गया है। इनमें B. D. G. के वर्णों का प्रयोग नहीं होता था।

1, Stolte, E.: Glotta, 17 (1928), p-113.

फैलिस्कन लिपि के वर्ण

अ A	ब B	ग-क > C	द D
ए E	फ F	लस G H	ह I J K L
थ O	इ I	क K	अ L
म M N	न M N	ओ O	प P
स X	क-क Q R	र S	स T U V
त-ट T T	उ V	क्स X	ख Y Z

बोलजानो लिपि के वर्ण

अ Λ Λ Λ Λ	ए ≡ ≡	व ≡ ≡ ≡ ≡
ह H	थ ≡	इ I
क K K	अ J	म M
न N	प P P P	स्स M
र R D	स S S S	न T T T
उ V	फ Φ ρ ρ	ख Y V Λ

माग्रे लिपि के वर्ण

अ A V A	ए ≡ ≡	व ≡
ह 	थ इ B B	क Y Y N
अ 1	म M M	न Y N V
प B B	स्स M M	र V V A V
स < S L	त X T +	उ ^ ^
फ ◇ ◇ ◇	ख Y	ज ≡

फलक संख्या - ३४१




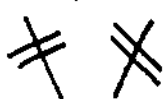
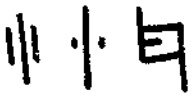
















सोन्द्रियो लिपि के वर्ण

अ 	ए 	व
इ 	ई 	उ
क 	ख 	ग
न 	ओ 	प
स्स 	र 	स
त 		उ

लुगानो लिपि के वर्ण

अ 	ए 	ज
इ 	क 	ल
म 	न 	ओ
प 	स्स 	र
स 	त 	उ
फ 	रव 	इ

वेनेती लिपि के वर्ण

अ 	ए 	व 	ज 
ह 	थ 	इ 	क 
ल 	म 	न 	ओ 
प 	स्स 	र 	स 
त 	उ 	फ 	ख 
	॥ 		

उत्तरी इटली

इटली के उत्तर की ओर दो अन्य प्रकार की लिपियों के अभिलेख प्राप्त हुए जिनके नाम भी उन नगरों के नाम पर दिये गये जहाँ से वे प्राप्त हुए ।

लुगानो : एक लिपि का लुगानो (Lugano) या लेपोन्टाइन (Lepontine) नाम रखा गया । स्वीट्ज़रलैण्ड (Switzerland) के दक्षिणी भाग के एक प्रांत लेपोन्टाइन में एक बड़ी झील है जिसका नाम लुगानो है और उसी के किनारे पर बसा एक नगर भी लुगानो के नाम से स्थित है ।

वेनेती : दूसरे प्रकार की लिपि का नाम वेनेती (Venetic) रखा गया क्योंकि इसके अभिलेख, जो लगभग २०० की संख्या में थे, वेनिस नगर से प्राप्त हुये । लगभग ई० पू० की चौथी श० में इन वेनिस निवासियों की भाषा वेनेती थी । इनकी लिपि में भी 'B. D. G.' के वर्ण नहीं थे । वे लोग 'ब' (B) की ध्वनि के स्थान पर 'फ़' (F) की ध्वनि का प्रयोग करते थे, उदाहरणार्थ 'Boius' — बोइयस को फ़ोइयस लिखते थे, ईगो (ego) को ईखो लिखते थे तथा 'द' (D) के स्थान पर 'ज' (Z) का प्रयोग करते थे । दिशा भी दाएँ से बाएँ थी । इन दोनों की बॉटलिस्ती (Botlisti) ने १६३४ में पढ़ा है । 'फ० सं० — ३४३' पर लुगानो के वर्ण दिये गये हैं ।

तथा 'फ० सं० — ३४४' पर वेनेती लिपि के वर्ण दिये गये हैं । दोनों लिपियों की दिशा दाएँ से बाएँ थी ।

कांसे की पाटिया

इटली के पियासेंज़ा नामक स्थान से एट्रस्कनों द्वारा कांसे पर बनाया गया बछड़े के यकृत का नमूना प्राप्त हुआ । इस पर एट्रस्कन देवी — देवताओं के नाम उत्कीर्ण हैं । इसका प्रयोग शिक्षार्थी ज्योतिषियों को प्रशिक्षित करने के लिये किया जाता था ।

लिपि में एट्रस्कन वर्ण हैं परन्तु भाषा का ज्ञान न होने के कारण अभी तक निश्चित रूप से पाटिया का रहस्योद्घाटन न हो सका ।

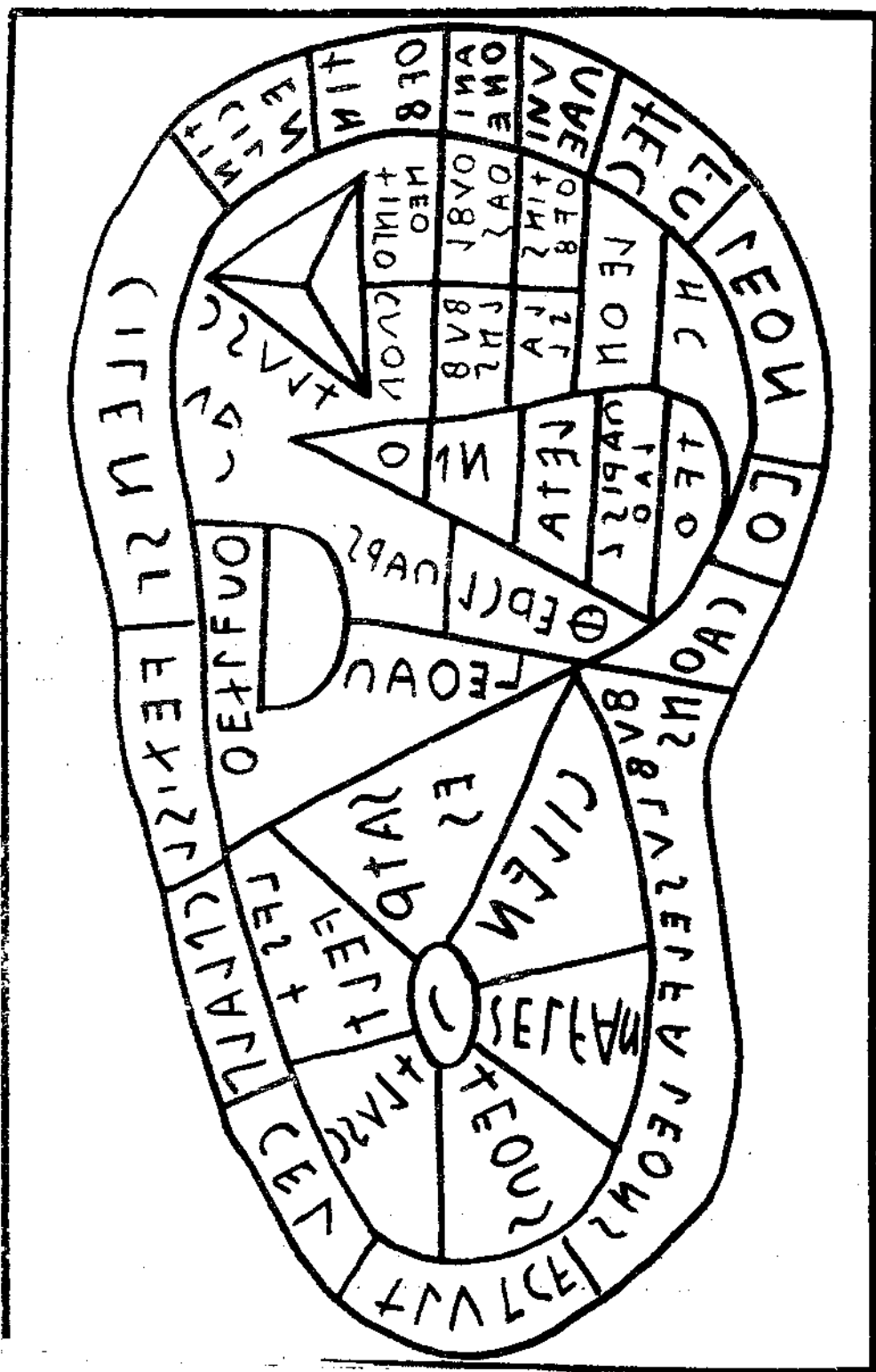
'फ० सं० — ३४५' पर पाटिया का चित्र दिया गया है ।

लैटियम

इतिहास : लैटियम (Latium) इटली के उस प्राचीन भू भाग को कहते हैं जो इटली के पश्चिमी किनारे पर स्थित था । इसके उत्तर में एट्रस्कन के नगर — राज्य थे जिसको इट्रूरिया के नाम से सम्बोधित किया जाता था । लैटियम का मुख्य नगर रोम (रोमा) था । इसका इतिहास इट्रूरिया के इतिहास से पृथक् नहीं किया जा सकता इसी कारण इट्रूरिया के इतिहास के साथ सम्मिलित कर दिया गया है ।

लैटियम की लिपि व भाषा का नाम लैटिन था । आरम्भ में मिस्र के चित्रों को हेब्रू भाषा के नाम देकर सिनाइ के द्वारा फ़िनीशियनों ने अपने स्वर — रहित २२ वर्णों का निर्माण किया । ग्रीस निवासियों ने ई० पू० की लगभग ग्यारहवीं शताब्दी में कैडमस द्वारा फ़िनिशिया के १६ वर्णों द्वारा अपनी लिपि का विकास किया । इस विकास काल में अनेक परिवर्तन हुये और अंत में फ़िनीशिया के १६ वर्ण ग्रीक लिपि में स्थापित हो गये और उन्होंने अपनी भाषा की ध्वनि के अनुसार ५ वर्णों के — उ, फ़, ख, प्स, ऊ (उनके नाम — उपसोलोन, फी, खी, प्सी और ओमेगा थे) — चिह्नों का आविष्कार करके अपनी २४ वर्णों की वर्णमाला को प्रयोगात्मक बना लिया (फ० सं० — ३२४) ।

कांसे की पाटिया



लिपि : जब ग्रीक लिपि के वर्ण एट्रस्कनों द्वारा लैटियम पहुँचे जहाँ लैटिन भाषा थी तब ग्रीक वर्ण लैटिन भाषा के लिये प्रयोग किये जाने लगे। परन्तु उनमें अनेक परिवर्तन किये गये क्योंकि जो ध्वनियाँ ग्रीक वर्णों की थीं वे सब लैटिन भाषा के लिये उपयुक्त नहीं थीं। इस कारण F. Q. जो ग्रीक लिपि में छोड़ दिये गये थे वे लैटिन में ले लिये गये। G. के स्थान पर C को ले लिया गया तथा Z के स्थान पर G को कर दिया गया। पहले तो Z को छोड़ दिया गया परन्तु लैटिन भाषा में एट्रस्कन एवं ग्रीक भाषा के शब्दों का प्रयोग होने लगा तो लैटिन में पुनः Z को ले लिया गया और अंत में रख दिया गया। V की ध्वनि को परिवर्तित करके जो पहले U की थी 'व' कर दी गई और उसको गोल कर U का वर्ण बना लिया गया। I. E. की ध्वनि के लिये Y बना लिया गया। लगभग १००० ई० में I को विभाजित करके I और J बना लिया गया। साथ साथ U को दुगुना दोहरा करके डबल + यू = डबल्यू = W बना दिया गया। इस प्रकार हेर - फेर करके प्राचीन लैटिन के २१ वर्णों को २६ बना लिया गया जो आज रोमन लिपि के नाम से प्रसिद्ध हैं और लगभग संसार की आधी जन संख्या इनका प्रयोग करती है।

लैटिन (लातीनी) वर्ण : इस चित्र के प्रथम कालम में वर्णों की ध्वनियाँ^१ दी गई हैं। दूसरे में प्राचीन लैटिन (Archaic Latin) दी गई है जिसका काल ई० पू० की पाँचवीं व चौथी शताब्दी के मध्य का माना जाता है। तीसरे कालम में साहित्यिक काल (Classical period) के वर्ण दिये गये हैं। चौथे में, जो नये वर्ण जोड़े गये हैं, दिये हैं तथा पाँचवें में जैसे वर्तमान काल में वर्णों का स्थान है, उस प्रकार दिये गये हैं।

३१२ ई० पू० में एप्पियस क्लाडियस कैकस (Appius Claudius Caecus) ने, जब Z की ध्वनि का कार्य S की ध्वनि से चलने लगा, तो Z के वर्ण को पृथक् कर दिया। ग्रीक भाषा में QO का प्रयोग किया जाता था जिसको लैटिन में QU का प्रयोग कर दिया गया। क्योंकि एट्रस्कन में 'O' नहीं था। Q अकेला कार्य नहीं कर सकता था (फ० सं० - ३४६)।

मैनियस की कटार (Manius Clasp) : लैटिन का प्राचीनतम अभिलेख फोरम रोमानम^२ (Forum Romanum) से एक काले पत्थर पर उत्कीर्ण १८६६ में प्राप्त हुआ था परन्तु वह इतना मिट चुका था कि उस का रहस्योद्घाटन करना कठिन था। उसकी लेखन पद्धति हल - चलने वाली (Boustropheden Style)^३ थी।

इसके अतिरिक्त प्राचीन अभिलेखों में एक कटार^४ प्राप्त हुई। जिसका काल ६०० ई० पू० का है। इसका नाम 'मैनियस क्लैस्प'^५ है। संभवतः कोई उत्तम प्रकार का कलाकार रहा होगा जिसका नाम मैनियस था और

1. लैटिन वर्णों की ध्वनियाँ अनेक हैं। उदाहरणार्थ A. की ध्वनियाँ हैं—अ, आ, ए, ऐ; D=द, ड; C=क, स; E=ए, इ; G=ग, ज; O=ओ, अ, आ आदि।

2. यह दो पहाड़ियों—पैलाटीन व कैपिटोलीन—के मध्य स्थित मैदान का नाम था। यह शब्द स्ट्रेडियम के लिये प्रयोग किया जाने लगा जहाँ नीचे खेल—कूद होते थे और ऊपर रोम—निवासी उनको देख देख कर आनन्द लेते थे। तदनन्तर यह शब्द नगरों के बाजारों के लिये भी प्रयोग में आने लगा।

3. जब कोई अभिलेख दायें से बायें या बायें से लिखा जाये, तदनन्तर पंक्ति समाप्त होने पर पुनः उसकी दिशा परिवर्तित कर दी जाये, अर्थात् दायें से बायें लिखा गया लेख बायें से दायें तथा बायें से दायें लिखा गया दायें से बायें लिखा जाये, तब इस पद्धति को 'हल - चलाने की' पद्धति कहेंगे।

4. Blakeway : Journal of Roman Studies, Vol. XXV, (London - 1936), p - 141.

5. Sandys - Campbell : Latin Epigraphy (1927), page - 36.

उसने नुमायसियस को वह कटार भेंट रूप में दी होगी, इसी कारण उसने उस कटार पर यह शब्द “मैनियस ने नुमायसियस के लिये बनाई” अंकित किये होंगे। यह कटार १६२६ में प्रायनेस्ते^१ में ब्रोल के उत्खनन कार्य द्वारा प्राप्त हुई। इसकी पद्धति दाएँ से बाएँ है (फ० सं० - ३४७)।

कुछ वर्णों का विकास : इस चित्र में सबसे ऊपर फिनोशियन वर्ण, उसके नीचे ग्रीक वर्ण, तदनन्तर लैटिन वर्ण तथा उनके परिवर्तन की क्रम दिया गया है। ईसा की चौथी शताब्दी से आठवीं के मध्य एक प्रकार का वर्णों में परिवर्तन आया जिसके द्वारा अनशियल (Uncial)^२ वर्ण बने। आठवीं शताब्दी के पश्चात् कैरोलीन वर्ण बने। कैरोलीन (Caroline) का नाम उस विद्वान् के नाम पर पड़ा जो यार्क (York - इंग्लैण्ड) नगर का निवासी था। यही बाद में फ्रांस का राजा बना (७६८ से ८१४ ई० तक) और इसी ने इन वर्णों का आविष्कार ७९६ में किया। इसका नाम था कार्लमेगना (Charlemagne) या चार्ल्स दि ग्रेट, रोम के पोप लियो तृतीय (Leo III) ने इसका राज्याभिषेक ८०० ई० के बड़े दिन पर किया था। इसका राज्य इंगलिश चैनल से टर्की तक था (फ० सं० - ३४८)।

गोथिया

इतिहास : गोथिया का इतिहास, क्योंकि गोथिया नाम का कोई देश स्थायी रूप से स्थिर नहीं हो सका, (Goths) का नहीं है। गोथ एक जर्मनी की प्राचीन पर्यटनशील जाति का नाम था। कुछ विद्वानों का विचार है कि वे नावों के मूल निवासी थे। वे देशों को परास्त करते थे और जीत का कुछ दिनों ठहरकर, आनन्द उठा कर चल दिया करते थे परन्तु बाद में वे बस गये। स्पेन के देश पर राज्य भी किया और उसी का नाम गोथिया पड़ा जो अधिक दिनों के लिये स्थिर नहीं रह सका। इस जाति के दो भाग थे जो पृथक होकर विसी - गोथ (Visigoths) = अर्थात् पश्चिमी गोथ तथा ऑस्ट्रोगोथ (Ostrogoths) = अर्थात् पूर्वी गोथ कहलाये। यह लोग टियोनिक (Teutonic) जाति के वंशज थे। यह लोग लगभग ईसा की प्रथम शताब्दी से आक्रमणकारी बन गये थे। इतिहासकार जर्मनी को ही इनका मूल स्थान मानते हैं।

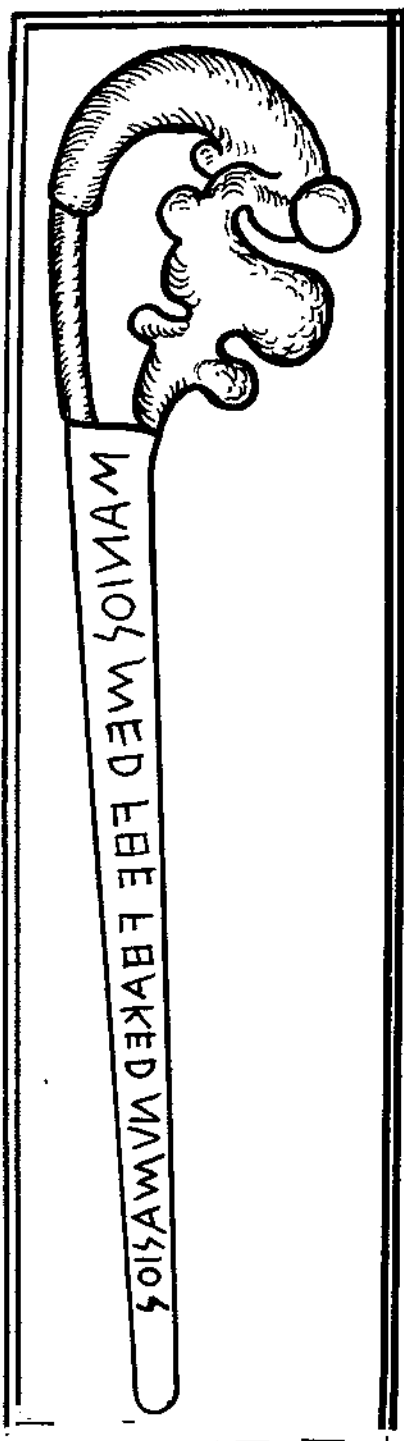
1. इस नगर का आधुनिक नाम पैलेस्ट्रीना है। यह लैटियम का अति प्राचीन नगर था (मान चित्र फ० सं० - ३३५ पर देखिए)। ई० पू० की आठवीं श० में यह एक समृद्धिशाली नगर था। पट्टस्कनों से इसका व्यापार चलता था। ४९९ ई० पू० में इसने रोम से सन्धि कर ली परन्तु जब रोम एवं गॉलों (Gauls) के आक्रमणों से दुखी होने लगा तो इसने भी रोम के साथ झगड़े आरम्भ कर दिये। ३४० - ३८ में खुलकर युद्ध हुआ जिसमें रोम की विजय हुई। रोम ने दण्ड के रूप में, इसके सब अधीन - उप - नगर तथा भूमि छीन ली, केवल मुख्य नगर को नष्ट नहीं किया। अब यह रोम के प्रभाव में आ गया बाद में रोमन राज्य का अंग बन गया। पैलेस्ट्रीना बड़ा रमणीक था तथा ग्रीष्म ऋतु में शीतल रहता था। रोम के धनी - नागरिक यहाँ आकर आनन्द लेते थे। ११ में एक महान् व्याकरणाचार्य वेरियस फ्लेक्स (Verrius Flacus) द्वारा निर्मित तिथिपत्र (कैलेंडर) प्राप्त हुआ तथा समाधि - स्थल (Necropolis) से भी बड़ी अमूल्य पुरातात्विक सामग्री प्राप्त हुई जिसमें धातु व हथी - दांत की बड़ी सुन्दर वस्तुयें कब्रों से प्राप्त हुईं।
2. 'Uncia' (Latin) = an inch; 'Uncus' = Crooked; इन दो लातीनी शब्दों से 'अनशियल' (Uncial) बना। इसका भावार्थ है, 'घसीट में लिखने से अक्षर एक इंच ऊपर तथा एक इंच नीचे जाना चाहिये'

लैटिन वर्ण

अ	ΔA	A		A	औ	O	O		N
ब	BB	B		B	प	1P	P		O
क	८	C _क		C	क	०२	Q		P
द	Q	D		D	र	५	R		Q
ए	३	E		E	स	५५	S		R
फ	३	F		F	त	T	T		S
ज	I	G _ज		G	उ	V	V	U	T
ह	H	H		H	व			V	U
ई	I	I		I	व			W	V
क	K	K		J	क्स			X	W
ल	L	L		K	य			Y	X
म	M	M		L	ज़			Z	Y
न	N	N		M	ज			J	Z

फलक संख्या - ३४६

मैनियस की कटार—६०० ई० पू०



SOISAMVN DEKAHF EHF DEM SOINAM

(Read from Right to Left)

MANIOS MED FHE FHAKED NUMASIOS

(Read from Left to Right)

Meaning : "Manios Made Me For Numasios"

अर्थ: मैनियस ने मुझे नुमासियस के लिए बनाया

फलक सख्या - ३४७

कुछ वर्णों का विकास

१४०० ई.पू.	𐤀	𐤁	𐤂	𐤃	𐤄	𐤅	𐤆	𐤇
८०० ई.पू.	𐤀	𐤁	𐤂	𐤃	𐤄	𐤅	𐤆	𐤇
१०० ई.पू.	A	B	C	D	E	H	K	M
३०० ई.	Ɑ	Ɱ	Ɐ	Ɒ	ⱱ	Ⱳ	ⱳ	ⱴ
८००	Ɑ	Ɱ	Ɐ	Ɒ	ⱱ	Ⱳ	ⱳ	ⱴ
६००	A	b	c	d	e	h	k	m
११००	a	b	c	d	e	h	k	m
१२००	ā	b	c	d	e	h	k	m
१४००	ā	b	c	d	e	h	k	m
UNCIALS = ETCN Loq/ueBAT								
half uncial : Ɑ : Ɱ : Ɐ								

पश्चिमी गोथों ने पूर्वी गोथों के राजा फस्टीडा (Fastida) को ईसा की प्रथम शताब्दी में परास्त किया था। वैंडल जाति के राजा विसोमार (Visimar) को भी परास्त किया। तत्पश्चात् गोथों के प्रसिद्ध शासक हर्मेनिक (Hermanic) ने हूणों के आक्रमण के कारण, जो ३७० ईसवी में इन पर हुआ था, आत्महत्या कर ली। पूर्वी — गोथ हूणों के अधीन हो गये।

३७६ ई० में पश्चिमी गोथों के शासक फ्रिथिगेर्न (Frithigern) ने डैन्यूब नदी को पार करके रोम के प्रांत पर आक्रमण कर दिया। इस युद्ध में रोम का महाराजा वालियस (Valeus) का स्वर्गवास हो गया। तदनन्तर रोम के सिंहासन पर थियोडोसियस (Theodosius) बैठा। उसने ३८१ में गोथों से सन्धि कर ली। ३८५ में गोथों ने ग्रीस पर आक्रमण किया। ४०२ तथा ४०८ में इटली पर आक्रमण किया। अब इनका नेता एलारिक (Alaric) था। इसने तीन बार रोम को घेरा। तीसरी बार रोम को नष्ट कर दिया। एलारिक की ४१० में मृत्यु हो गई।

तत्पश्चात् अताउल्फ (Ataulf) शासक बना जिसने थियोडोसियस की पुत्री प्लेसीडिया (Placidia) से विवाह कर के रोम से सन्धि कर ली। ४१५ में वार्सीलोना में इसका वध कर दिया गया। तदनन्तर वालिया (Wallia) शासक बना परन्तु उस का भी ४१८ में देहांत हो गया। अब थियोडोरिक प्रथम (Theodoric I) शासक बना। अब पूर्वी तथा पश्चिमी गोथ आपस में मिल गये क्योंकि हूणों के आक्रमण अट्टिला के द्वारा आरम्भ हो गये थे। इस युद्ध में थियोडोरिक ४५१ में वीरगति को प्राप्त हुआ। इसके पश्चात् वे दोनों पुनः पृथक् हो गये।

पश्चिमी गोथों ने अपना राज्य गाल और स्पेन में स्थापित कर लिया था और इन देशों का शासक युरिक (Euric) बन गया था। इसने ४६६ से ४८५ तक शासन किया। अब गोथों ने रोमन संस्कृति को अपना लिया था परन्तु ईसाई धर्म को नहीं अपनाया था। ५०७ में फ्रैंकों (Franks) ने आक्रमण कर दिया और गोथों की पराजय हुई। अब इनका राज्य केवल स्पेन में रह गया।

जब हूणों के नेता अट्टिला की मृत्यु हो गई, तब पूर्वी गोथ स्वतंत्र हो गये और उन्होंने ४०६ में रोम पर आक्रमण कर दिया। ४६३ तक पूर्वी गोथों का शासन पूरा इटली व सिसली पर स्थापित हो गया। कुछ दिनों पश्चात् पूर्वी तथा पश्चिमी गोथ पुनः एक दूसरे के निकट आने लगे और पूर्वी गोथों के राजा थियोडोरिक की पुत्री का विवाह पश्चिमी गोथों के राजा एलारिक द्वितीय से सम्पन्न हो गया। ५०७ में एलारिक का स्वर्गवास हो गया। तदनन्तर अमालारिक (Amalaric) राजा बना।

थियोडोरिक की मृत्यु के पश्चात् दोनों गोथ जातियाँ पुनः पृथक् हो गईं। पूर्वी गोथों का नाम सदैव के लिये लोप हो गया परन्तु पश्चिमी गोथों का साम्राज्य स्पेन में स्थापित रहा। अब स्पेन के बहुत से गोथ ईसाई बन गये थे और वे स्पेन राज्य से असंतुष्ट थे क्योंकि शासक अभी तक ईसाई नहीं बना था। ५६ में जब ल्योविगिल्ड (Leovigild) शासक बना तो उसने स्पेन को शक्तिशाली बनाने के प्रयास में कई युद्ध किये। खोये हुये गाल के भाग भी अपने राज्य में सम्मिलित किये तथा गोथों के सामन्तों को भी, जो स्वतंत्र हो गये थे, परास्त कर अपने राज्य के अधीन कर लिया। ५८६ में उसके पुत्र ने पिता की मृत्यु के पश्चात् रोम के ईसाई — धर्म को अपना लिया जिसके कारण स्पेन रोम के पोप के प्रभाव में आ गया। अब सब कुछ रोम जैसा ही था केवल नाम के लिये गोथ — राज्य था। ७११ में इस्लाम के आने से जो शेष स्पेन रह गया था गोथिया के नाम से सम्बोधित होने लगा।

लिपि : चौथी ईसवी में पश्चिमी — गोथों के एक पादरी उल्फिलास (Ulfilas) अथवा वुल्फिलास (Wulfilas) ने, जो डैन्यूब नदी के दक्षिण में धर्म प्रचार का भी कार्य करता था, अपने अनुयाईयों के लिये एक

लिपि का आविष्कार किया जिसका नाम वेस्ट गोथिक¹ पड़ गया। वह इसी लिपि में बाइबिल का अनुवाद भी करना चाहता था। इस लिपि के लिये उसने ग्रीक तथा लैटिन वर्णों का उपयोग किया परन्तु उनमें कुछ परिवर्तन अवश्य किया। उसका जन्म ३१८ तथा मृत्यु ३८८ में हुए।

इस लिपि में २७ वर्ण थे जो 'फ० सं० - ३४९' पर दिये गये हैं। डेनमार्क निवासी एक विद्वान् एल० विम्मर (L. Wimmer) के अनुसार यह लिपि साहित्यिक ग्रीक (Classical Greek) व लैटिन (Latin) वर्णों द्वारा बनाई गई है। मारस्ट्रान्डर (C. T. S. Marstrand) के अनुसार यह वर्ण केल्ट जाति के लोगों में, जो पूर्वी एल्प्स पर्वतों पर ईसा की प्रथम शताब्दी में निवास करते थे, प्रचलित थी। ट्यूटन्स (Teutons) के आने पर इसी लिपि² से रून के वर्ण बने।

पठनीय सामग्री

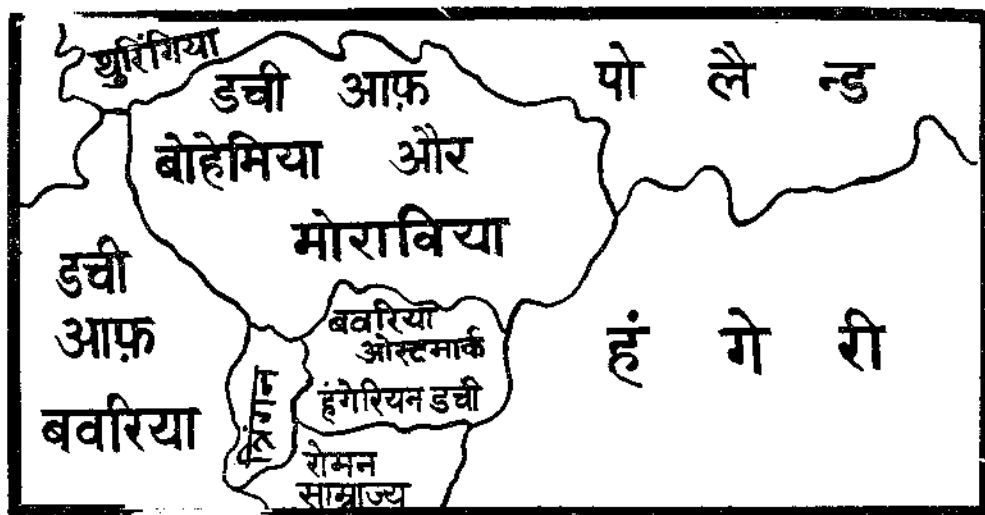
- | | |
|------------------------|---|
| <i>Bloch, R.</i> | : The Ancient Civilization of Etruscans (1928). |
| <i>Bodmer, F.</i> | : Loom of the Language (London - 1961). |
| <i>Bucheler, F.</i> | : Umbrica (Bonn - 1883). |
| <i>Buck, C. D.</i> | : Grammar of Oscan and Umbrian (1904). |
| <i>Buonamici, G.</i> | : Epigraphia etrusca (Florence - 1932). |
| <i>Carpenter, R.</i> | : 'The Alphabet in Italy' - American Journal of Archaeology XLIX (1945). |
| <i>Conway, R. S.</i> | : 'The Ancient Alphabet of Italy' - Cambridge - Ancient History, Vol. IV., p.p. 395 - 403 (1930). |
| <i>Egbert, J. C.</i> | : Introduction to the Study of Latin Inscriptions (N. Y. - 1923). |
| <i>Fell, R. A.</i> | : Etruria and Rome (1932). |
| <i>Gutenbrunner</i> | : Über den Ursprung des gotischen Alphabets, 72 (1890). |
| <i>Jensen, H.</i> | : Syn, Symbol and Script (London - 1970). |
| <i>Johnston, M. A.</i> | : Etruria - Past and Present (Lond. - 1930). |
| <i>Kirchoff</i> | : Das Gotische Runnenalphabet (Berlin - 1854). |
| <i>Madona, A. N.</i> | : A Guide to Etruscan Antiquity (1954). |
| <i>Mason, W. A.</i> | : A History of the Art of Writing (N. Y. - 1920). |
| <i>Ogg, Oscar</i> | : The 26 Letters (1966). |
| <i>Pallatino, M.</i> | : The Etruscans (1956). |
| <i>Panli, W.</i> | : Corpus Inscriptionum Etruscarum (1893). |
| <i>Ibid</i> | : Studi Etruschi, Vol. III - (1902). |
| <i>Randall, D.</i> | : The Etruscans (1927). |
| <i>Wright, J.</i> | : A Primer of Gothic Language (1892). |

1. Gutenbrunner : Über den Ursprung des gotischen Alphabets (1890), p - 500.
2. Kirchoff : Das gotische Runnenalphabet (Berlin - 1854), p - 109.

गोथिक लिपि

अ 𐌰 ग्रीक	ब 𐌲 ग्रीक	ग 𐌸 ग्रीक	द 𐌳 ग्रीक
ए 𐌺 ग्री०	क (q) 𐌚 लैटिन	ज 𐌶 ग्री०	ह 𐌗 लैटिन
फ 𐌿 ग्री०	ई 𐌗 ग्री०	क 𐌗 ग्री०	ल 𐌗 ग्री०
म 𐌻 ग्री०	न 𐌽 ग्री०	ज 𐌾 लैटिन	उ 𐌺 रून
प 𐌱 ग्री०	य 𐌚 ग्री०	र 𐌿 लै०	स 𐌾 लै०
त 𐌹 ग्री०	व 𐌚 ग्री०	फ 𐌺 लै०	क्स 𐌶 ग्री०
ह (hw) 𐌺 ग्री०	ज 𐌺 रून	↑ ग्री०	इस लिपि २७ वर्ण हैं

मोराविया - ६२० से ११२५ ई० के मध्य



आधुनिक बुल्गारिया



फलक संख्या - ३५०

बुल्गारिया

इतिहास : प्राचीन काल में इस देश का नाम मोयशिया (Moesia) था। यह दक्षिण - पूर्वी यूरोप में डैन्यूब नदी के दक्षिण में स्थित था। इसमें थ्रेसियन लोग निवास करते थे। ७५ ई० पू० में रोम ने इस देश पर आक्रमण कर दिया तथा २६ ई० पू० में इसको परास्त कर दिया। पन्द्रहवीं ईसवी में यह रोम का एक प्रांत बन गया। तत्पश्चात् यह दो भागों में विभाजित कर दिया गया। उत्तरी मोयशिया बाद में सर्बिया के नाम से ज्ञात हुआ तथा दक्षिणी मोयशिया बुल्गारिया के नाम से ज्ञात हुआ।

ईसवी सन् की चौथी शताब्दी में गोथों ने इस को अपने अधीन कर लिया और स्लाव जाति के लोग भी यहाँ आकर बस गये। सातवीं श० में उत्तर पश्चिम की ओर से बुल्गार जाति के लोग यहाँ आकर बसने लगे। इसके कुछ पूर्व वे लोग बेस्सर्बिया में आकर बस चुके थे। अब यह मिल कर स्लाव कहलाने लगे। इन्हीं लोगों ने अपना एक राज्य स्थापित कर लिया। इनका एक राजा बोरिस ८०५ ई० में ग्रीक - चर्च के ईसाई धर्म का अनुयायी हो गया। तत्पश्चात् इसका पुत्र जार सिमियन (Simeon) ने, ८६३ में बैजेंटाइन संस्कृति को अपनाया परन्तु भाषा को नहीं अपनाया।

९६७ में रूस ने तथा ९७२ में बैजेंटाइन ने इस पर आक्रमण कर दिया। ११८५ तक यह बैजेंटाइन साम्राज्य का एक अंग बना रहा। तत्पश्चात् स्वतंत्र होकर १३६६ तक राज्य किया। तदनन्तर ऑटोमन साम्राज्य के अधीन आ गया। १८७६ में टर्की के विरुद्ध विद्रोह कर दिया जिसमें सहस्रों मनुष्यों का संहार हुआ। १८७७ - ७८ में रूस व टर्की में युद्ध हुआ और बुल्गारिया एक स्वतंत्र राज्य बन गया। १८८५ में सर्बिया से इसका युद्ध हुआ और १८९६ में यह रूस का मित्र बन गया। १९०८ में यह टर्की से पूर्णतया स्वतंत्र हो गया।

प्रथम बाल्कन युद्ध में इसको १९१३ में अपने देश का बहुत सा भाग अन्य पड़ोसी देशों को देना पड़ा। प्रथम तथा द्वितीय महायुद्ध में यह जर्मनी की ओर रहा। १९४४ में रूस ने इस पर आक्रमण कर दिया। १५ सितम्बर १९४६ को इसने एक गणतंत्र राज्य होने की घोषणा कर दी और समाजवादी बन गया।

मोराविया का इतिहास : ईसा की छठी शताब्दी में इस भूभाग में स्लाव तथा मोरावियन आकर बस गये। नवीं शताब्दी में कार्लमैग्ने (मृत्यु - ८४३) द्वारा यह देश ईसाई धर्म का अनुयायी बना लिया गया। ८७० में इसने जर्मनी के शासन के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और एक स्वतंत्र राज्य बन गया। ८९३ में हंगेरी के अधीन हो गया और ९०६ ईसवी तक बहुत से मैग्थार यहाँ आकर बस गये। दसवीं शताब्दी में यह पोलेण्ड तथा बोहेमिया राज्यों का एक भाग बन गया। १०२६ में यह पूर्णतया बोहेमिया के अधीन होगया। १८४६ में यह एक प्रथक राज्य हो कर आस्ट्रिया राज्य का भाग बन गया और इसकी राजधानी बर्नो (Barro) स्थापित हो गई। १९१८ में सदैव के लिये यह चेकोस्लोवाकिया का एक भाग बन गया।

लिपि : ८६२ में मोराविया के शासक रोस्टिस्लाव (Rostislav) ने क्रुस्तुनतुनिया (कान्स्टैन्टीनोपिल) को अपना एक राजदूत भेजा और निवेदन किया कि शासकीय गिर्जाघर में स्लावों के लिये स्लाव भाषा में धर्म - प्रचार के लिये किसी स्लाव - भाषा के ज्ञानी को भेजा जाये। उस समय वहाँ के शासक ने एक उच्च - पदा - धिकारियों की सभा का आयोजन किया जिसके द्वारा यह निश्चय किया गया कि सैलोनिका (Salonica) के निवासी, जहाँ स्लाव भाषा का प्रयोग किया जाता था, दो भाईयों - कान्स्टैन्टाइन (Constantine) एवं मेथोडियस (Methodius) - को इस कार्य के लिये मोराविया भेजा जाय।

वैसे तो इससे पूर्व भी स्लावों ने अपने लिये अपनी भाषा के अनुरूप एक लिपि बनाने के लिये प्रयास किये थे परन्तु उनमें सफलता न मिल सकी। जब यह दोनों भाई वहाँ पहुँचे तो इन्होंने एक लिपि का आविष्कार किया। प्रो० पीटर दिनेकोव (Peter Dinekov) के अनुसार उपर्युक्त भ्राताओं ने सर्वप्रथम बुल्गारिया में लिपि का आविष्कार किया। तत्पश्चात् यह लोग मोराविया गये और दो प्रकार के वर्णों का आविष्कार किया। पहले ग्लेगो-लिथिक (Glagolitic) तदनन्तर सीरिलिक (Cyrillic) वर्णों का। ग्लेगोलिथिक का प्रयोग तो समाप्त हो गया परन्तु सीरिलिक वर्णों का प्रयोग आज भी बुल्गारिया, यूगोस्लाविया तथा रूस में किया जाता है। वैसे तो इन दो प्रकार के वर्णों में अन्तर है परन्तु दोनों की पद्धति एक है।

कान्स्टैन्टाइन का जन्म सैलोनिका में ८२७ में हुआ था। इसकी शिक्षा बैजैन्टाइन की राजधानी के उच्चकोटि के स्कूल में सम्पन्न हुई। वहाँ इसकी भेंट पोन्टियस (Pontius) से हुई और यह उसका शिष्य बन गया। जिस काल में इसने उपर्युक्त लिपियों का आविष्कार किया, ईसाई संसार में केवल तीन भाषायें पवित्र समझी जाती थीं — ग्रीक, लैटिन तथा हेब्रू — और इन तीन के अतिरिक्त किसी अन्य भाषा में बाइबिल के पवित्र — धर्म का प्रचार करने की आज्ञा नहीं थी। इस आज्ञा के बन्धन का इन दो भाइयों ने मानवता की भलाई के लिये उल्लंघन किया और स्लावों के लिये लिपि का आविष्कार करके बाइबिल तथा धर्म के अन्य साहित्य का इस लिपि एवं भाषा में अनुवाद भी किया। इस बात पर रोम के पादरियों में बहुत विवाद भी हुआ अन्त में इन दो भाइयों को मान्यता प्रदान की गई। कान्स्टैन्टाइन बाद में संत सीरिल (St. Cyril) के नाम से प्रसिद्ध हुआ। ८६९ में इस संत का स्वर्गवास हो गया। उसी के नाम पर लिपि का नाम भी सीरिलिक रखा गया।

ग्रूबिसिख (Grubissich) के अनुसार, प्राचीन ग्लेगोलिथिक लिपि में ४० वर्ण थे। कुछ विद्वानों — जे० ग्रिम (J. Grimme), चार्को (Chadzko), लेनोर्मन्ट (Lenormant), हानुस (Hanus) तथा ह्याम (Ham) — का मत है कि इनका आविष्कार प्राचीन रून वर्णों (Runic Letters — 'फ० सं० — ३६४' पर) द्वारा किया गया। मिलर (Miller) का मत है कि इनका विकास 'अवेस्ता' के वर्णों से किया गया। कुछ अन्य विद्वानों — सफारिक (Safarik), वण्ड्राक (Vondrak) — के विचारानुसार इस लिपि का विकास फिनोशियन — हेब्रू द्वारा किया गया। नथीगल (Nathigal) काप्टिक से, गैस्टर (Gaster) तथा अबिच (Abicht) जार्जियन से और गाइटलर (Geitler)¹ अल्बेनियन से मानते हैं। लिण्डनर (Lindner) ग्रीक लिपि से इसका उद्भव मानते हैं और टेलर (Taylor), यागिक (Jagic) आदि इस विचार का समर्थन करते हैं।

सीरिलिक लिपि में ४२ वर्ण हैं जिसमें से २४ वर्ण नवीं — दसवीं श० की ग्रीक लिपि से लिए गये हैं। ग्लेगोलिथिक लिपि² के वर्ण 'फ० सं० — ३५१' पर, प्राचीन सीरिलिक³ (बुल्गारियन ग्लेगोलिथिक) के वर्ण 'फ० सं० — ३५२' पर तथा बुल्गारी सीरिलिक⁴ (छोटे — बड़े वर्णों सहित) 'फ० सं० — ३५३' पर दिये गये हैं।

1. Geitler : Studien Zur Palaeographie Und Papyruskunde, Vol. XIII (1913), p — 41.
2. Altheim : Hunnische Runen (1948), p — 18.
3. Sobolew kij : Slavjano Russkaja palcografia (St. Petersburg — 1908)
4. Selšcev : Staroslavjanskij ja.

रूस

इतिहास : इस देश में ईसा की पाँचवीं से आठवीं श० के मध्य पूर्वी स्लाव - जाति के लोग बसना आरम्भ हो गये थे। ९ वीं शताब्दी में स्वीडन व नावों की ओर से एक वारंगियन जाति के लोग आना आरम्भ हो गये और उन्होंने नोवगोरोड (Novgorod) तथा कीव (Kiev) के नगरों की स्थापना की तथा बाल्टिक सागर से काला सागर तक व्यापार भी आरम्भ किया। इनमें से एक रुरिक (Rurik) था जिसने रूस राज्य की ८५० ई० में स्थापना की।

१२२४ ईसवी सन् में रूस पर मंगोलों के आक्रमण होने लगे और १२४० में उन्होंने इसको अपने अधीन कर लिया। तातारी खान लोगों (Tatar Khanate of Golden Horde) ने, जिनकी राजधानी सराय थी, इस देश से कई प्रकार के कर लेना आरम्भ कर दिये। चौदहवीं व पन्द्रहवीं श० में मास्को राज्य के शासकों ने अपनी सत्ता बढ़ाई और तातारी मंगोलों को साइबेरिया तक भगा दिया तथा अन्य छोटे राज्यों को भी अपने अधीन कर लिया। इन शासकों में इवान चतुर्थ (Ivan IV), जिसने १५३३ से १५८४ तक राज्य किया रूस का प्रथम ज़ार (Tsar) बना। उसीने अस्था खान तथा कज़ान को परास्त कर रूस से खदेड़ दिया। १६१३ से रोमानोव के वंश के शासकों के अधीन रहा। १६५४ से १६६७ तक पोलैण्ड से युद्ध होता रहा। १७०० की लड़ाई में युक्रेन के भाग को अपने अधीन कर लिया। पीटर प्रथम ने बाल्टिक सागर की ओर जाकर लिथुनिया (Lithuania) तथा पोलैण्ड के कुछ भागों को १७७२ से १७९५ तक अपने अधीन कर लिया तथा काला सागर के उत्तरी भागों को भी रूस के देश में सम्मिलित कर लिया।

१८०६ में फ़िनलैण्ड तथा १८१२ में बेस्सर्बिया (Bessarbia) को भी ले लिया। १८१२ में फ्रांस से युद्ध हुआ। १८१३ में जॉर्जिया तथा काकेशस के राज्यों को अपने अधीन कर लिया। वार्सा का बहुत सा भाग भी ले लिया। १८६० में पश्चिमी चीन का भाग अपने अधीन कर लिया और १८६७ में एलास्का (Alaska) को अमरीका के हाथ बेच दिया तथा अफ़ग़ानिस्तान की सीमा तक पहुँच गया। १८७५ में सखालिन को अधीन कर लिया परन्तु १९०५ में जापान से परास्त हुआ। मंचूरिया में अधिकार समाप्त हो गया। प्रथम महायुद्ध (१९१४ - १९१७) में इंग्लैण्ड का साथी रहा।

नवम्बर १९१७ की महान् क्रान्ति में ज़ार के शासन का अन्त कर दिया गया। १९१८ - २० के मध्य गृह - युद्ध हुआ और १९२१ में एक अकाल पड़ा। १९२२ में सोवियेट - सोशलिस्ट - गणतन्त्र राज्यों का एक संघ (U. S. S. R.) बना। १९२४ में लेनिन का स्वर्गवास होने के पश्चात् नेताओं में सत्ता पाने के लिये संघर्ष होने लगा। १९२६ में स्टैलिन की विजय हुई और वह रूस का एक शक्तिशाली नेता बन गया। १९२९ में ट्राट्स्की को देश से निर्वासित कर दिया गया। १९३६ में एक नया संविधान का निर्माण हुआ जिसके अन्तर्गत ११ गणतन्त्र राज्य स्थापित किये गये। १९३१ में जर्मनी से युद्ध न करने के वचन के एक सन्धि - पत्र पर हस्ताक्षर हुए। १९३९ में पूर्वी पोलैण्ड को अपने अधीन कर लिया। १९४० में फ़िनलैण्ड के कुछ भागों पर अधिकार कर लिया। २२ जून १९४१ को जर्मनी ने रूस पर आक्रमण कर दिया। १९४४ को जर्मनी की सेना को देश के बाहर कर दिया और अप्रैल १९४५ में रूस ने बर्लिन को (अन्य मित्र - सेनाओं के साथ) परास्त कर दिया।

लिपि : रूस ने सीरिलिक लिपि को अपनाया परन्तु इसमें कुछ परिवर्तन किये गये तथा सरलीकरण के क्रम में कुछ वर्ण बनाये गये तथा कुछ निकाल दिये गये। पहले इसमें ३५ वर्ण थे। परन्तु अब केवल ३३ हैं। इसमें तारे के चिह्न लगा वर्ण 'ज़ा' को भी हटा दिया गया।

‘फ० सं० - ३५५’ पर आधुनिक लिपि की वर्णमाला दी गई है। पहले कालम में ध्वनियाँ दी गई हैं। दूसरे में मुद्रिण हेतु वर्ण (बड़े) तथा तीसरे में छोटे वर्ण दिये गये हैं। चौथे व पाँचवें कालम में हस्त-लिखित वर्ण - बड़े व छोटे दिये गये हैं और छठे कालम में वर्णों के नाम दिये गये हैं।

इस लिपि के वर्णों में जो परिवर्तन किये गये वे एलियस कोपीविच (Elias Kopivitch) द्वारा पीटर महान् के काल (१७०८) में किये गये। पीटर ने इन वर्णों का नाम ग्राज़दांसकाया (Grazdanskaya = Civil Alphabets) रखा और १७३५ से इनका प्रयोग आरम्भ हुआ। तब ३५ वर्ण थे। १८१७ में कुछ और परिवर्तन हुए जिससे आधुनिक लिपि को सर्वमान्य बना दिया गया।

‘फ० सं० - ३५६’ पर रूस की लिपि के कुछ शब्द उच्चारण तथा अर्थों सहित दिये गये हैं।

पठनीय सास्रग्री

- | | |
|------------------------|--|
| <i>Clodd, E.</i> | : Story of the Alphabet (N. Y. - 1938). |
| <i>Cotrell L.</i> | : Reading the Past - The Story of Deciphering Ancient Languages (London - 1972). |
| <i>Diringer, D.</i> | : Writing (1962). |
| <i>Gelb, I. J.</i> | : A Study of Writing (London - 1963). |
| <i>Grimme, W.</i> | : Kleine Schriften (1902). |
| <i>Lgoio, G. C.</i> | : Bulgaria - Past and Present (1936). |
| <i>Martin, W. J.</i> | : The Origin of Writing (1943). |
| <i>Masor, W. A.</i> | : A History of the Art of Writing (N. Y. - 1920). |
| <i>Pares, B.</i> | : History of Russia (1947). |
| <i>Paszkievicz, H.</i> | : Origin of Russia (1954). |
| <i>Runciman, S.</i> | : History of Bulgarian Empire (1930). |
| <i>Seliscev</i> | : Staroslavjanskij jazyk (1951). |
| <i>Sobolevskij</i> | : Slavjano russkaja paleografia (St. Petersburg - 1908). |

ग्लेगोलिथिक लिपि

अ 𐌰	ब 𐌲	व 𐌳	ग 𐌵	द 𐌶	ए 𐌷	ज म 𐌸
इ 𐌹	जा 𐌺	ई 𐌻	य 𐌽	क 𐌾	ल 𐌿	म 𐍀
न 𐍁	ओ 𐍂	प 𐍃	र 𐍄	स 𐍅	थ 𐍆	ऊ 𐍇
फ 𐍈	ख 𐍉	ऑ 𐍊	स्त 𐍋	त्स 𐍌	त्श 𐍍	श 𐍎
औ 𐍏	इय 𐍐	ऐ 𐍑	पु 𐍒	जे 𐍓	अह 𐍔	जह 𐍕
जाह 𐍖	पाह 𐍗	य 𐍘	ये 𐍙	इय 𐍚	इस लिपि में	४० वर्ण हैं

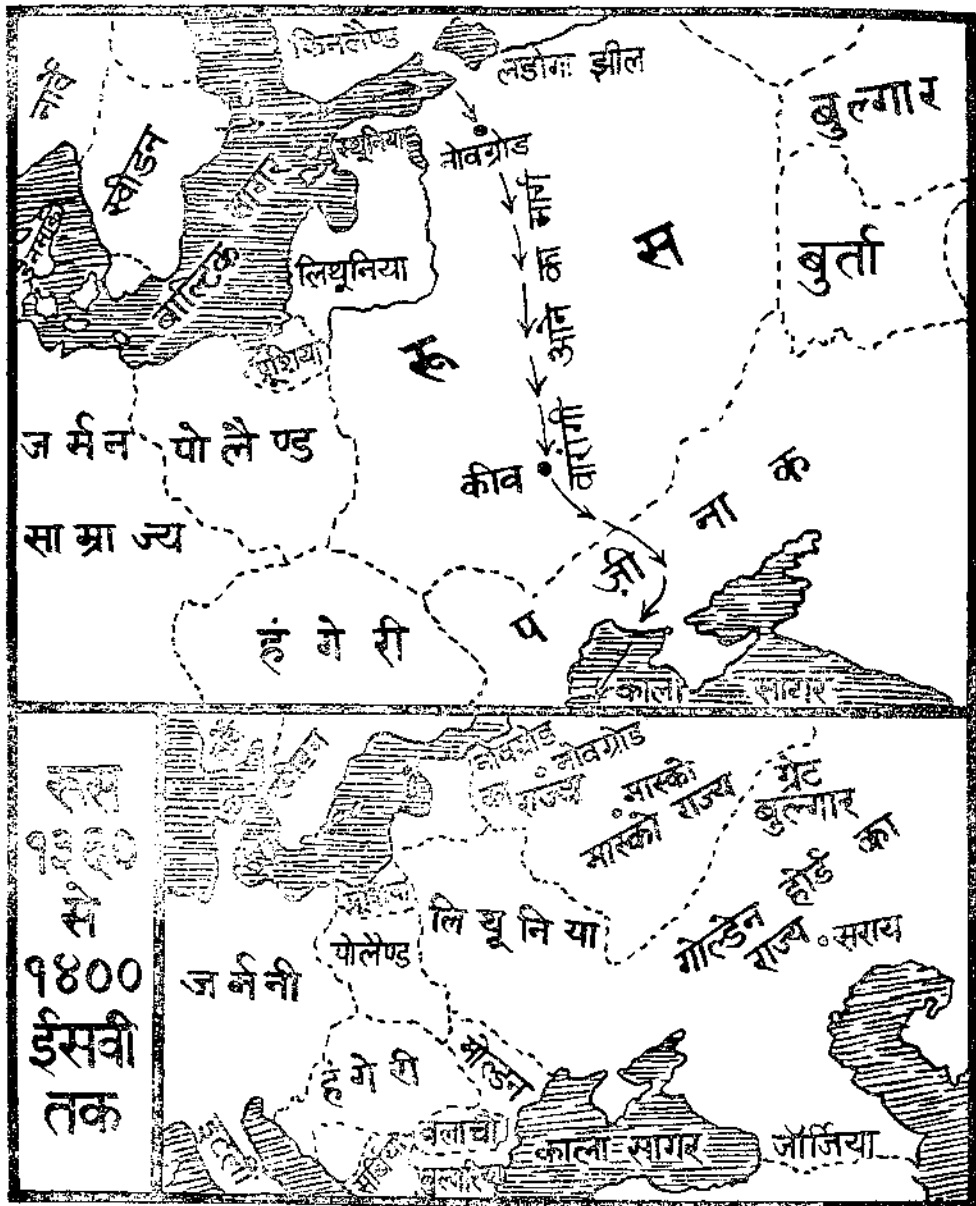
प्राचीन सीरिलिक लिपि

अ	ब	व	ग	द	ए	भ
А	Б	В	Г	Д	Е	Ж
इज़	ज	इ	य	क	ल	म
З	И	І	К	Л	М	
न	ओ	प	र	स	त	ऊ
Н	О	П	Р	С	Т	У
फ़	ख	ऑ	स्त	स्व	श	श
Ф	Х	Ѡ	Ѳ	Ѣ	Ѥ	Ѧ
औ	इय	ऐइ	ऐ	जू	जा	जै
Ѧ	ѧ	Ѩ	ѩ	Ѫ	ѫ	Ѭ
जै	जै	म्राह	ये	जेह	पोह	पाह
Ѡ	ѡ	Ѣ	ѣ	Ѥ	ѥ	Ѧ

बुल्गारी सीरिलिक लिपि

अ Аа	ब Бб	व Вв	ग Гг	द Дд	ए Ее
ज-झ Жж	ज़ Зз	ई Ии	य Йй	क Кк	ल Лл
म Мм	न Нн	ओ Оо	प Пп	र Рр	स Сс
थ Тт	ऊ Уу	फ़ Фф	ख Хх	त्स Цц	त्श Чч
श Шш	श्त Щщ	अह Ъъ	यह Ьь	यु Юю	यः Яя

रूस-१००० ई० के लगभग



रूस की सीरिलिक लिपि

आ	A	a	А	а	ऐ	र	P	p	Р	р	एर
ब	Б	б	В	в	बेह	स	C	c	С	с	एस
व	В	в	В	в	वेह	त	T	t	Т	т	तेह
ग	Г	г	Г	г	गेह	उ	У	у	У	у	ऊ
द	Д	д	Д	д	देह	फ	Ф	ф	Ф	ф	एफ
य	Е	е	Е	е	ये	ख	X	x	Х	х	खाह
या	Ё	ё	Ё	ё	यो	ल्स	Ц	ц	Ц	ц	ल्सेह
ज	Ж	ж	Ж	ж	जेह	च	Ч	ч	Ч	ч	चेह
ज	З	з	З	з	जे	शा	Ш	ш	Ш	ш	शाह
ई	И	и	И	и	ई	श्च	Щ	щ	Щ	щ	श्चेह
इ	Й	й	Й	й	इ		Ь	ь	Ь	ь	कठेरचिह्न
का	К	к	К	к	कह	इ	Ь	ь	Ь	ь	कठेर इ
ल	Л	л	Л	л	एल		Ь	ь	Ь	ь	मृदुचिह्न
म	М	м	М	м	एम	ए	Э	э	Э	э	ए
न	Н	н	Н	н	एन	यू	Ю	ю	Ю	ю	यू
ओ	О	о	О	о	ओ	या	Я	я	Я	я	या
प	П	п	П	п	पेह	फा	Ф	ф	Ф	ф	फीता *

फलक संख्या - ३५५

रूस की लिपि के कुछ शब्द

Кем работает ваш отец ?

क्येम रबोतइत वाश अत्येत्स ?

आपके पिता का पेशा क्या है ?

Он служащий Работает

бухгалтером в одном учре-

ждении. ^{प्रोन स्लूज्जश्चिघ् । रबोतइत} बुगलितरमव् अदनोम उचरिज्ज्येनिइ

“वह नौकर है । वह एक दफ्तर में मुनीम के रूप में काम करते हैं।”

Вдовец Вдова муж жена мать

व्यव्येत्स् ववा मूश जिना मात्प
विध्वुर विधवा पति पत्नी मां

आयरलैण्ड

इतिहास : आयरलैण्ड का इतिहास केल्ट जाति के इतिहास से आरम्भ होता है । केल्ट भारोपीय जाति के लोग थे जो सर्वप्रथम स्कैण्डीनेविया¹ में रहा करते थे इसी कारण उनको नाडिक के नाम से भी सम्बोधित किया गया । तत्पश्चात् यह लोग आल्प के पर्वतों के आस पास रहने लगे । ई० पू० की पाँचवीं श० से इनका विस्तार होना आरम्भ हो गया ।

ई० पू० की चौथी शताब्दी में उनके कुछ लोग इटली की ओर गये और रोमन² सैनिकों से युद्ध हुये । वहाँ से लूटमार करके पूर्व की ओर अग्रसर हुये । उन्होंने एड्रियाटिक तथा मैसेडोनिया के नगरों पर आक्रमण करना आरम्भ कर दिया और २८० में थिसली को अधीन कर लिया । परन्तु वहाँ इनके पैर जम न सके और २७९ में ही वहाँ से भगा दिये गये । तदनन्तर यह भ्रस को पराजित कर वहाँ जम गये तथा अपना राज्य स्थापित कर लिया । टाइल (Tyle) इनकी राजधानी बन गई । २२० ई० पू० में इनके राजा कैवरस (Cavarus) की मृत्यु हो गई और तब भ्रस निवासियों ने इनका संहार आरम्भ कर दिया । इनको वहाँ से पुनः भागना पड़ा और यह पूर्व की ओर बढ़ते गये । अंत में यह सीथिया पहुँचे और उनके साथ हिल - मिल गये । अब उनका नाम केल्टो - सीथी पड़ गया ।

ई० पू० की तीसरी श० में कुछ लोग दक्षिण - पश्चिम की ओर बढ़े और फ्रांस होते हुये स्पेन पहुँच गये । वहाँ यह लोग आइबेरियनों³ (Iberians) के साथ घुल - मिल गये और इनका नाम केल्टोवेरियन पड़ गया ।

ई० पू० की पाँचवीं श० के अन्त में इनकी दो जातियों—ब्राइथन (Brythons) तथा गोइडेल (Goidels) ने पश्चिम की ओर प्रस्थान किया और ब्रिटिश द्वीप समूह पहुँच गये । ब्राइथन तो ब्रिटेन में और वेल्स में फैल गये परन्तु गोइडेल आयरलैण्ड पहुँच गये और वहाँ के मूल निवासी पिक्ट (Picts) इनके अधीन हो गये और इन्हीं की भाषा को भी अपना लिया । इन दो बड़े द्वीपों का प्राचीन नाम एल्बियन (Albion) इंग्लैण्ड आदि के लिये और ऐवर्ना (Iverna) आयरलैण्ड के लिये तथा बाद में हैबर्नी (Haburni) हो गया । ग्रीक निवासियों ने इन दोनों द्वीपों का नाम प्रितानी (Pretani) रखा था । सीजर ने इनका नाम ब्रिटानी (Britanni - Britanni) कर दिया । इन नामों में पुनः परिवर्तन होते रहे - ब्रिटैनिया व ब्रिटन्स (Britannia - Britones - Britons) आदि ।

केल्ट जब आयरलैण्ड पहुँचे तो इनको पिक्टों से कोई बड़ा युद्ध नहीं करना पड़ा । पिक्टों ने तुरन्त इनकी भाषा व संस्कृति को अपना लिया । अब केल्टों ने अपने छोटे-छोटे राज्य स्थापित कर लिये जिसके बीज- रूप का नाम 'टुआथ' (Tuath) रखा । इस प्रकार के उन्होंने पाँच राज्य स्थापित किये । सब लोगों की सभा का स्थान टुआथ था । राजा ही सब कुछ था जिस प्रकार सुमेर के नगर राज्यों का राजा ही सब कुछ होता था । वही शासक, वही न्यायाधीश, वही युद्ध में सेना-नायक इत्यादि । स्वतंत्र नागरिकों को ओइनक (Oinach) कहते थे । शासन सम्बन्धी सभा (Senaeor Curia) को एरेक्ट (areacht) कहते थे । सभा के सदस्य राजा के साथी केली (Celi) कहलाते थे और

1. 'आइसलैण्ड, नार्वे, स्वीडन, फ़िनलैण्ड तथा डेनमार्क' के पाँच देश स्कैण्डीनेविया कहलाते हैं ।
2. रोम के ऊपर तो पहले से ही सेमिनी जातियों के आक्रमण हो रहे थे । यह एक नयी विपत्ति खड़ी हो गई । रोम ने इनको बहुत सा सोना देकर ३९० ई० पू० में विदा किया ।
3. आइबेरियन प्राचीन काल में स्पेन की आइबेरिया नदी के पास रहा करते थे जिसके कारण इनका यह नाम पड़ा । अब इस नदी को एब्रो (Ebro) के नाम से सम्बोधित करते हैं ।

सभा भी राजमहल में ही हुआ करती थी। प्रत्येक दुआय के नागरिक को उर्राद (Urrad) तथा दूसरे दुआय का आया हुआ नागरिक देवराद (Deorad) और विदेशी को अलमुराक (Almurach) कहते थे। उनमें कुछ लोग ऐसे भी थे जो देवी-देवताओं, रीति-रिवाज तथा मृत्यु के पश्चात् के एवं भविष्य के ज्ञान के विषय में भी अपने को महान् ज्ञाता कहते थे। इनका नाम ड्रूइड्स¹ (Druids) था। यह लोग केल्टों के पुरोहित थे।

शनैः शनैः केल्ट, शक्तिशाली व सम्पन्न होने लगे और उनको राज्य विस्तार करने की सूझी। तारा के राजा ने ब्रिटेन पर २६० ई० में आक्रमण करना आरम्भ कर दिया तथा कुछ राज्य आपस में ही अपनी सत्ता बढ़ाने के लिये युद्ध करने लगे। इसी शताब्दी में जब रोमन वहाँ² पहुँचे तो उन लोगों ने केल्टों को एक नये नाम से सम्बोधित किया — स्काटी (sco:ti) तथा एटोकोट्टी (atecotti) जिसके अर्थ हैं आक्रमणकारी तथा प्राचीन निवासी। चौथी श० में रोम की सेना में बहुत से एटोकोट्टी भर्ती कर लिये गये। नवीं शताब्दी में ब्रिटेन का पश्चिमी भाग केल्टों के अधीन रहा तथा स्काटलैण्ड का शासक भी केल्ट था।

ईसाई धर्म के बहुत से अनुयायी बन्दी के रूप आयरलैण्ड में पहली से चौथी शताब्दी तक रहते रहे परन्तु पाँचवीं शताब्दी में संत पैट्रिक (St. Patrick) ने धर्म-प्रचार आरम्भ करके आयरलैण्ड में धर्म-परिवर्तन करवाया। बहुत से लोग ईसाई बन गये।

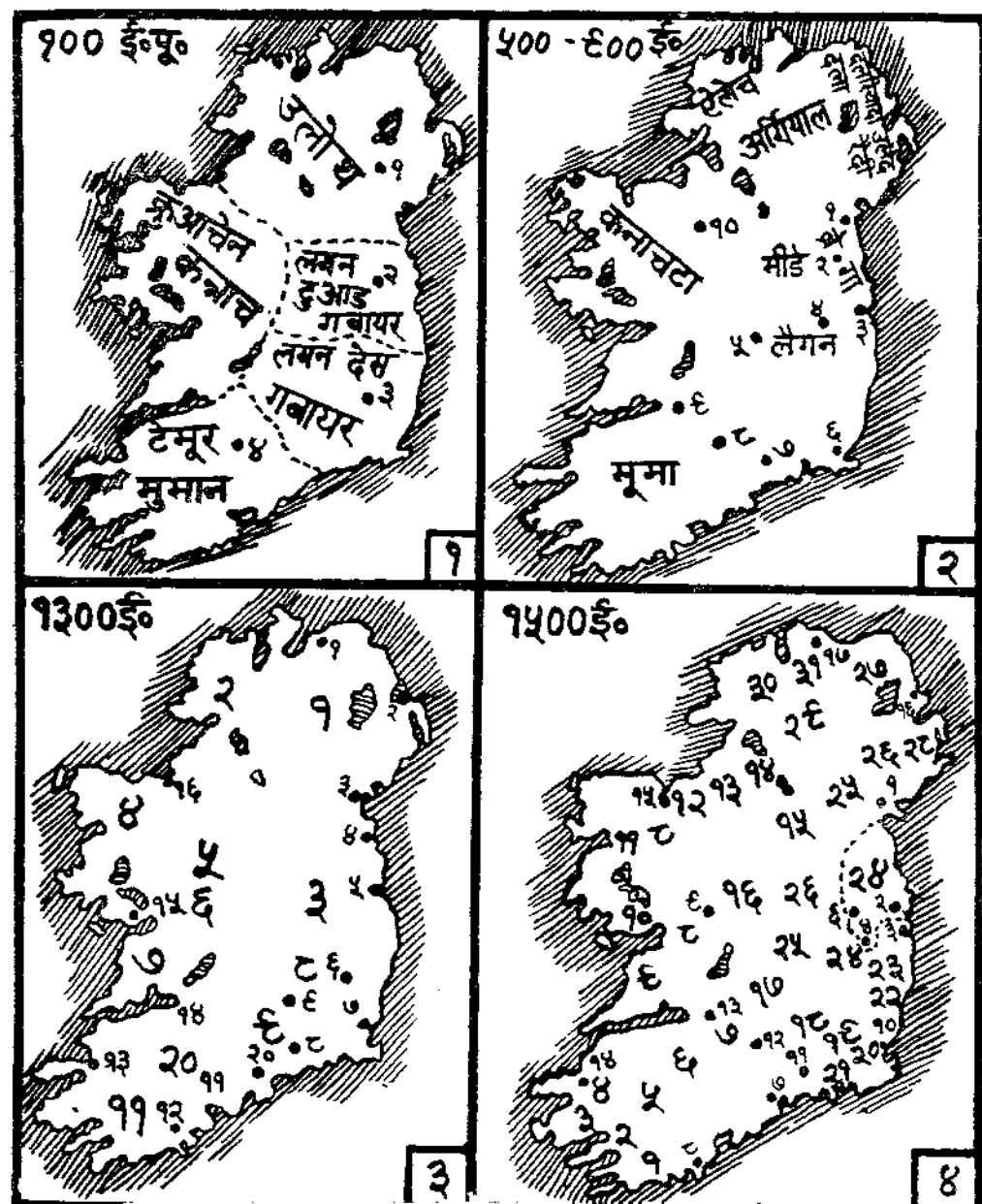
आठवीं श० के अंत में तथा नवीं के आरम्भ में उत्तर से नार्स लोगों (नार्वे-स्वीडन) के आक्रमण होने लगे। ८४१ से ८४५ तक उन्होंने आयरलैण्ड के पूर्वी किनारे के कई बन्दरगाह ले लिये तथा वहाँ के राजा का वध कर दिया। तत्पश्चात् आयरलैण्ड के राजा नार्स होने लगे। उन्होंने इंगलैण्ड तथा स्काटलैण्ड पर कई आक्रमण किये। ६१४ में वाटरफोर्ड व लिमेरिक के नगर भी अपने अधीन कर लिये। फिर भी नार्सों का आयरलैण्ड पर पूर्णतया अधिकार नहीं हो पाया। आयरलैण्ड के अन्य राज्य निरन्तर नार्स के राजाओं से युद्ध करते रहे।

१०६८ में नार्स का शासक मैगनस स्वयं एक बड़ी नौसेना लेकर आया और स्काटलैण्ड पर अपना अधिकार कर लिया परन्तु ११०३ में उसका वध कर दिया गया। ११७१ में इंगलैण्ड का राजा हेनरी द्वितीय वाटरफोर्ड के नगर पहुँचा जहाँ उसका भव्य स्वागत हुआ। ११७२ में वह वापस चला गया परन्तु डवलिन के निकट की भूमि पर अपना राज्य स्थापित कर गया, जिसको पेल (Pale) कहने लगे। १६४१ — ४२ की क्रान्ति के पश्चात् क्रामवेल (Cromwell) ने आयरलैण्ड की सारी जागीरों को अपने अधीन कर लिया जो स्काटिश, वेल्श और इंगलिश लोगों ने स्थापित कर ली थीं। १६६० में बोयन के निकट के एक युद्ध के परिणामस्वरूप जेम्स द्वितीय ने ग्रेट ब्रिटेन को एक संघीय — विधान सभा स्थापित की। आयरलैण्ड को उसमें सम्मिलित कर लिया गया।

तदनन्तर १८०१ में एक क्रान्ति आरम्भ हुई जो अंग्रेजी राज्य के विरुद्ध आयरलैण्ड ने की और १८८६ में उसको होम रूल प्रदान कर दिया गया। तत्पश्चात् पुनः ईस्टर विद्रोह हुआ। यह विद्रोह सोमवार २४ अप्रैल १८१६ को ईस्टर के दिन होने के कारण ईस्टर विद्रोह के नाम से ज्ञात हुआ। १८१६ — २१ में गृह — युद्ध हुआ और १८२१ में स्वतंत्रता प्रदान कर दी गयी परन्तु इंगलैण्ड का शासक नाममात्र को आयरलैण्ड का शासक बना रहा — अर्थात् डोमिनियन स्टेटस (Dominion Status) दिया गया। १८२५ में आयरलैण्ड का विभाजन हो गया। उत्तरी भाग इंगलैण्ड के अन्तर्गत रहा।

1. कुछ विद्वानों का मत है कि ड्रूइड्स आयरलैण्ड के ही मूल निवासी थे। कुछ भी हो वे पूजा पाठ करने वाले थे।
2. तीसरी शताब्दी के कुछ लैटिन भाषा व लिपि के अभिलेखों द्वारा यह बात मानी जाती है।

आयरलैण्ड



आयरलैण्ड के मानचित्र के संकेत

(१) आयरलैण्ड - १०० ई० पू० तक

१. इमायन माचा (Emain Macha in Coised Uloth)
२. तिमुर - तारा (Timur - Tara in Lagan Tuad Gabair)
३. दीन रिग (Din Rig in Coised Des Gabair)
४. एरन्न (Erann in Temuir Muman)
(Cruachain Connacht)

(२) आयरलैण्ड ५०० से ९०० ई० तक

- | | |
|-------------------------------|-----------------------------|
| १. अन्नागस्सान (Annagassan) | ६. वेक्सफोर्ड (Wexford) |
| २. तिमायर (Timair) | ७. वाटरफोर्ड (Waterford) |
| ३. डबलिन (Dublin) | ८. कैसेल (Caisel) |
| ४. ऐलेनोल (Ailenol) | ९. लिमेरिक (Limeric) |
| ५. उस्नेक (Usnech) | १०. किरुआचैन (Ciruachain) |

(३) आयरलैण्ड - ९३०० ई० में : इसमें छोटे अंकों में नगर दिये गये हैं ।

- | | |
|----------------------------|-----------------------------------|
| १. कोलरेन (Coleraine); | २. कैरिक्फर्गस (Carrickfergus); |
| ३. डुण्डाल्क (Dundalk); | ४. ड्रोगेदा (Drogheda); |
| ५. डबलिन (Dublin); | ६. कार्लो (Carlow); |
| ७. वेक्सफोर्ड (Wexford); | ८. वाटरफोर्ड (Waterford); |
| ९. किलकेनी (Kilkenny); | १०. डुंगरवन (Dungarvan); |
| ११. कार्क (Cork); | १२. किसेल (Kinsale); |
| १३. ट्रेली (Tralee); | १४. लिमेरिक (Limerick); |
| १५. गाल्वे (Galway); | १६. स्लीगो (Sligo); |

बड़े अंकों में जागीरों के नाम दिये गये हैं, जिन पर सामन्त, राजाओं की भाँति राज्य करते थे ।

१. ओनील आफ़ टाइरोन (O'Neil of Tyrone)
२. ओ-डोनेल (O' Donnell)
३. अर्ल आफ़ किल्डेयर (Earl of Kildare)
४. डी बर्ग (De Burgh)
५. ओ-कन्नोर (O' Connor)
६. ओ-केल्ली (O' Kelly)
७. ओ-ब्रियेन (O' Brien)
८. लैण्ड आफ़ लीन्सटर (Land of Leinster)
९. अर्ल आफ़ ओरमण्ड (Earl of Ormond)
१०. अर्ल आफ़ डिसमान्ड (Earl of Desmond)
११. मैक्कार्थी मोर (Mac Carthy More)

४. आयरलैण्ड—१५०० ई० में ।

नगरों के नाम :—(छोटे अंकों की संख्या देखिए)

- | | |
|--|--------------------|
| १. कार्लिंग फोर्ड (Carling Ford); | २. डबलिन; |
| ३. डलकेग (Dalkeg); | ४. नास (Naas); |
| ५. विकलोव (Wicklow); | ६. ट्रिम (Trim); |
| ७. डुगरवन; | ८. किसेल; |
| ९. अथेनी (Atherny); | |
| १०. वेक्सफोर्ड; ११. वाटरफोर्ड; १२. किलकेनी; १३. लिमेरिक; | |
| १४. ट्राली (Tralee); १५. स्लीयो; १६. कोलरेन; कैरिकफार्गस । | |

जागीरों के नाम :—(बड़े अंकों की संख्या देखिए)

- | | |
|---|---|
| १. मैक्कार्थी बीच (Ma CCarthy Beach); | २. ओ सुलीवान बयर (O' Sullivan Bearc) |
| ३. ओ सुलीवान मोर (O' Sullivan Mor); | ४. नाइट आफ केरी (Knight of Kerry) |
| ५. मैक्कार्थी मोर (MacCarthy Mor); | ६. अर्लडम आफ देसमण्ड (Earldom of Desmond) |
| ७. अर्लडम आफ ओर्मण्ड (Earldom of Ormand); | ८. मैक्विलियम उचतर (Macwilliam Uachtar) |
| ९. थामण्ड ओ ब्रियन (Thomond O' Brien); | १०. ओ फ्लेती (O' Flapty) |
| ११. ओ मेले (O' Maille); | १२. ओ कोनोर सिलीगो (O' Conor Sligo) |
| १३. पश्चिमी ब्रेफन; (West Breini); | १४. मैगुयेर आफ फर्मंग (Meguire of Fermangu) |
| १५. पूर्वी ब्रेफनी (E. Brefni); | १६. ओ केलीमेनी (O' Kelly Many) |
| १७. एली ओ करोल (Ely O' Carroll); | १८. मैकगिल्ला पैट्रिक (Macgilla Patrick) |
| १९. लेक्स ओ मोर (Leix O' Mor); | २०. मैकमुरो कवनाग (Mac Murrough Kavanagh) |
| २१. इंगलिश आफ वेक्सफोर्ड (English of Wexford); | २२. ओ बीरोन (O' Byrone); |
| २३. ओ टूले (O' Toole); | २४. दि पेल (The Pale); |
| २५. मैकमोहन आफ मोनागन (MacMohan of Monaghan) | |
| २६. सुपरामेसो आफ ओ नीलमोर (Suferamaay of O' Neill Mor); | |
| २७. ओ नील आफ क्लेण्डेबाय (O' Neill of Clondeboy); | |
| २८. सैवेज आफ दि आर्ड्स (Savage of the Ards); | |
| २९. टीरोगेन (Tircoghain) | |
| ३०. ओ डोगर्टी (O' Dogherty); | ३१. ओ कहान (O' Cahan) |

लिपियों का विकास : यहाँ की प्राचीन लिपि चौथी ईसवी में ओगम (Oghams) वर्णों द्वारा प्रचलित हुई। अरन्ज (Arntz - d, 1935) के अनुसार इस लिपि के लगभग ३६० अभिलेख प्राप्त हुये हैं जो बहुधा समाधियों के पत्थरों पर उत्कीर्ण पाये गये। लगभग ३०० तो दक्षिण आयरलैण्ड से प्राप्त हुये। ६० वेल्स, इंगलैण्ड

आदि से प्राप्त हुये। उनकी भाषा केल्टिक है। प्राचीनतम अभिलेख केल्टिक — लैटिन द्विभाषी भी प्राप्त हुये जिनका काल ईसवी सन् की चौथी शताब्दी माना गया है।

पौराणिक वारणा के अनुसार यह सहस्रों वर्ष पुरानी मानी जाती है तथा इसका जन्मदाता एक देवता 'ओगमा' माना जाता है। इस लिपि की वर्णमाला अर्बोइस दि जुबेनविल्ले¹ (Arbois de Jubeinville — 1881) द्वारा पाँच खँचों से, जो भिन्न भिन्न दिशाओं में बनाये गये थे, प्रस्तुत की गयी है। इसके पठन की समस्या की कुंजी एक छोटे लेख द्वारा मिली। यह हस्तलिखित लेख बैलीनोट की पुस्तक से प्राप्त हुआ। यह लेख चौदहवीं शताब्दी का था।

ओगम लिपि का जन्म एवं विकास की समस्या पर निम्नलिखित विद्वानों ने अपने मत दिये हैं :—

१. मारस्ट्रैंडर (Marstrand) के अनुसार यह गाल (प्राचीन फ्रांस के निवासी) द्वारा आई।
२. राउलिंग्स (Raulings) के विचार से यह रून लिपि के द्वारा निर्मित हुई।
३. ग्रीनबर्गर (Grienberger) के अनुसार इसका विकास रोमन लिपि के घसीट रूप से हुआ।
४. नावें निवासी बुग्गे (Bugge) के कथनानुसार इसका उद्भव ग्रीक लिपि से हुआ क्योंकि दोनों लिपियों में २४ वर्ण हैं।

मैकालिस्टर^२ (१९२८) के विचारानुसार यह गूगे — बहरे लोगों वाली सांकेतिक लिपि है जैसे वे उँगलियों को एक उँगली से छू छू कर अपने विचारों को व्यक्त कर लेते हैं उसी प्रकार प्राचीन काल के पुजारी (Druids) भी अपनी पवित्र तथा गोपनीय बातों को इन संकेतों से व्यक्त करते होंगे। इसके लिये अंकित करने की या लिपि का रूप देने की बात उन लोगों ने कभी सोची भी नहीं होगी परन्तु बाद में पुरोहितों ने उन संकेतों को लिपि में परिवर्तित कर लिया। इस विचार का समर्थन मारस्ट्रैंडर (१९२८), अरंज (१९३५) तथा क्राउज (Krause — १९३८) ने भी किया है। जिमर (Zimmer — १९०६) के अनुसार यह लिपि गॉल (फ्रांस) से आई। 'ओगम' का शब्द लूथियन द्वारा ज्ञात हुआ कि केल्ट, हिरैकिल्स को ओगमियस कहते थे और वह उनका देवता बन गया। इस लिपि में २० वर्ण होते हैं जो 'फ० सं०-३५८' पर दिये गये हैं। नीचे अंग्रेजी भाषा का एक वाक्य 'I am going' दिया गया है।

६५० में यह लिपि लैटिन (रोमन) लिपि द्वारा समाप्त कर दी गयी। इसमें भी केल्टिक भाषा के उच्चारणार्थ कुछ हेर फेर किये गये और कुछ लिखने में भी अंतर आ गया। इस लिपि के मुद्रित तथा हस्तलिखित वर्ण 'फ० सं०-३५८' पर दिये गये हैं।

आयरलैण्ड की रोमन लिपि : ६५० ई० से रोमन (लैटिन) लिपि का प्रभाव आरम्भ हो गया। केल्टिक भाषा के समावेश के कारण ध्वनियों व चिह्नों में कुछ परिवर्तन करके भाषा के अनुरूप बना दी गई। इस लिपि के हस्तलिखित तथा मुद्रित वर्ण 'फ० सं० - ३५६' पर दिये गये हैं।

1. Atkinson, G. M. : Some account of Ancient Irish Treatises on Ogham Writing—
The Royal Historical and Archaeological Association of Ireland,
XIII, P — 202.
2. Macalister : The Archaeology of Ireland (London-1928), P-216.

ओगम लिपि

अ-A	ओ-O	उ-U	ए-E	ई-I	
ब-B	ल-L	व-V	प-P	न-N	
म-M	ग-G	गं-NG	फ-F	र-R	
/	//	///	////	/////	
ह-H	ड-D	ट-T	क-स-C	क-Q	
	/	//		///	
I	AM	G	O	I	NG.

फलक संख्या - ३५८

आयरलैण्ड की रोमन लिपि

ध्वनि	प्राचीन बड़े छोटे वर्ण	आधुनिक बड़े छोटे वर्ण	ध्वनि	प्राचीन बड़े छोटे वर्ण	आधुनिक बड़े छोटे वर्ण
अ	Ꝫ Ꝭ	Ꝡ ꝡ	म	Ꝺ ꝺ	Ꝼ ꝼ
ब	ꝸ Ꝺ	ꝺ Ꝼ	न	Ᵹ Ꝿ	ꝿ ꝺ
क स	ꝼ Ᵹ	Ꝿ ꝿ	ओ	Ꝼ ꝼ	Ᵹ Ꝿ
ड	ꝺ Ꝼ	ꝼ Ᵹ	प	Ꝿ ꝿ	ꝺ Ꝼ
ए	ꝼ Ᵹ	Ꝿ ꝿ	र	Ꝿ ꝿ	ꝺ Ꝼ
फ	ꝼ Ᵹ	Ꝿ ꝿ	स	ꝼ Ᵹ	Ꝿ ꝿ
ग ज	ꝼ Ᵹ	Ꝿ ꝿ	ट	ꝼ Ᵹ	Ꝿ ꝿ
ह	ꝼ Ᵹ	Ꝿ ꝿ	उ	ꝼ Ᵹ	Ꝿ ꝿ
झ	ꝼ Ᵹ	Ꝿ ꝿ	व	ꝼ Ᵹ	
अ	ꝼ Ᵹ	Ꝿ ꝿ			

हंगेरी

इतिहास : हंगेरी के प्राचीन नाम पन्नोनिया (Pannonia) तथा डैकिया (Dacia) थे। रोम निवासियों को, जो यहाँ आकर बस गये थे, जर्मन जातियों ने निकाल बाहर किया और जर्मन जातियों को हूण^१ जातियों ने मार भगाया। ४५३ ई० में, जब अट्टिला की मृत्यु हो गई, तब गोथिक जातियाँ यहाँ आकर बसने लगीं। छठी शताब्दी में लम्बार्डों की जातियाँ पन्नोनिया में तथा गेपिदाइ (Gepidae) को जातियाँ डैकिया में बसने लगीं। ५६७ में एवार व लम्बार्ड जातियों ने गेपिदाइ को जातियों को नष्ट कर दिया। तदनन्तर एवार तथा लम्बार्ड जातियों में युद्ध हुआ और लम्बार्ड इटली के उत्तर में आकर बस गये। एवार राज्य की सत्ता क्षीण होने पर हंगेरी के उत्तरी तथा पश्चिमी भाग स्वतंत्र हो गये। अब स्लाव जाति का राज्य स्थापित हो गया। ७६२-७६७ ई० में कार्लमैग्ने ने एवार राज्य को परास्त कर प्रथम ओस्टमार्क राज्य स्थापित किया। ८२८ में डैन्यूब नदी के उत्तर में स्लाव - राज्य (मोराविया) स्थापित हो गया।

हंगेरी राज्य के संस्थापक मैग्ग्यार थे जो गूराल पर्वतों के निवासी उग्रियन जातियों के लोगों से सम्बन्धित थे। ईसा की प्रथम शताब्दी में रोम के निवासियों ने उनको पूर्व की ओर खदेड़ दिया और तब से वे तुर्क जातियों के घनिष्ठ सम्बन्धो बन गये। पाँचवीं से नवीं शताब्दी के मध्य उन्होंने अपना एक ओनोगुर (ओनोगुर) के नाम से संबन्ध भी स्थापित कर लिया था। ओनोगुर का स्लाव भाषा में (ओगुर, अंगुर, हंगेर, हंगेरी) हंगेरी हो गया।

८६३ में ओनोगुर संघ की मैग्ग्यार जातियों ने हंगेरी पर आक्रमण करना आरम्भ कर दिया। ९५५ में जर्मनी के सम्राट ओटो प्रथम को परास्त कर दिया। १००० ई० में एक स्वतंत्र राज्य स्थापित हो गया तथा लैटिन - ईसाई - धर्म ग्रहण कर लिया। ग्यारहवीं शताब्दी में हंगेरी ने दलमनिया, स्लैवोनिया तथा क्रोशिया के राज्य अपने साम्राज्य में सम्मिलित कर लिये। १२४१ में मंगोलों ने इस देश पर आक्रमण कर दिया। १३०१ में एलफ्रेड नरेश की मृत्यु हो गई तत्पश्चात् शासक का निर्वाचन आरम्भ होने लगा।

१३०८ से १३८२ तक अंजोऊ के वंशजों का तथा १३८३ से १४३७ तक सिगिस्मण्ड (जर्मन नरेश) का शासन चलता रहा परन्तु हुनियादी (मृत्यु १४५६) के शासन काल में तुर्कों का प्रथम आक्रमण हुआ। मथियास कोर्वीनस (Matthias Corvinus) के १४५८ - १४६० शासन काल में सिलीशिया, मोराविया तथा दक्षिणी आस्ट्रिया को परास्त करके राज्य का विस्तार किया गया। अब हंगेरी मध्य - योरोप का शक्तिशाली राज्य हो गया। १५२६ के तुर्कों के आक्रमणों ने हंगेरी की सत्ता को बड़ी हानि पहुँचाई। ट्रांसिल्वैनिया स्वतंत्र हो गया और हंगेरी का बहुत सा भाग तुर्कों तथा आस्ट्रिया के शासक द्वारा विभाजित कर दिया गया।

१६८६ में बूडा नगर पर पुनः अधिकार कर लिया तदनन्तर स्लैवोनिया तथा ट्रांसिल्वैनिया पर भी अधिकार कर लिया। १६८६ में बनात को छोड़कर सम्पूर्ण हंगेरी आस्ट्रिया के अधिकार में चला गया। १८४८ में एक विद्रोह हुआ जिसका १८४९ में अन्त हो गया। १८६७ से १९१८ तक आस्ट्रिया - हंगेरी के नरेशों के अन्तर्गत द्वि - नृपराज्य रहा। तत्पश्चात् एक स्वतंत्र लोकतंत्र राज्य बन गया। १९१९ में यह रूस के प्रभाव में आ गया तथा इस देश का बहुत सा भाग पृथक हो गया। द्वितीय महायुद्ध में इसने जर्मनी का साथ दिया। १९४५ में रूस ने इस देश के कुछ भागों पर अधिकार कर लिया। १९४६ में पुनः लोकतंत्र राज्य हो गया।

१. कुछ विद्वान् हंगेरी का नाम हुणों से सम्बन्धित मानते हैं।

लिपियाँ : हंगेरी में दो प्रकार की लिपियाँ पायी गयी हैं ।

पहली प्राचीन हंगेरी की लिपि तथा दूसरी निकोलसबर्ग की । प्राचीन लिपि का आधार तुर्की एवं ग्रीक लिपियाँ हैं जिन पर अरमायक का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है । इसके ३२ वर्णों में दो बुल्गारिया की स्लेगोलिथिक लिपि के हैं, जिनकी ध्वनि 'अ' तथा 'ती' है । दो ग्रीक वर्ण हैं, जिनकी ध्वनि 'फ़' और 'ह' है । अन्य वर्ण साइबेरिया की लिपि से सम्बन्धित हैं । नागी (Nagy) तथा नेमेथ (Nemeth - 1934) का कहना है, 'जो सिद्धान्त एल्थीम (Altheim) ने निर्धारित किया है वह समर्थन के योग्य है' । इसी सिद्धान्त के अनुसार प्राचीन लिपि का काल नवीं श० माना गया तथा निकोलसबर्ग लिपि का का० बारहवीं श० निर्धारित किया गया है । इसका सम्बन्ध दूसरी लिपि से जोड़ा जा सकता है अर्थात् किसी भी खोजकर्ता के मन में यह संशय रहना अनिवार्य है कि नवीं तथा बारहवीं श० के मध्य काल में, जो तीन सौ वर्षों का होगा, इनका सम्बन्ध कैसे मिलाया जाये । एल्थीम का कहना है कि शेकलर जाति के लोगों ने हंगेरी की प्राचीन सात मैनिग्यार जातियों के साथ आठवीं जाति के रूप में अपना सम्बन्ध स्थापित कर लिया । यह लोग हंगेरी के पश्चिमी सीमान्त पर बस गये । शेकलर जाति के लोग साइबेरिया के मूल निवासी थे जो अपने साथ अपनी लिपि भी लाये । इस लिपि को अपनी जाति की गोपनीय - लिपि मानते थे इस कारण उसका प्रयोग छिपा कर करते थे । इसी कारण से इसके अभिलेख भी अधिक संख्या में प्राप्त न हो सके तथा इस लिपि पर साइबेरिया की ओरहन¹ लिपि का प्रभाव अधिक मात्रा में दृष्टिगोचर होता है ।

इस प्राचीन लिपि के विषय में सर्वप्रथम एक हंगेरी के यात्री हन्स देरुस्वान् (Hans Deruschwan 1494 - 1569) के द्वारा उस अभिलेख से ज्ञात हुआ जो उसको कुस्तुनतुनिया से १५१५ ई० में प्राप्त हुआ था । इसका रहस्योद्घाटन सर्वप्रथम जो० थेलेग्दी (J. Thelegdi) ने सोलहवीं श० के अन्तिम काल में किया था । उसने हूणों की भाषा पर एक पुस्तक लिखी थी जिसमें उसने लिखा है कि 'इस प्राचीन - हंगेरी लिपि का अभिलेख (जिसका कुछ अंश 'फ० सं०—३६१' पर दिया गया है) कुस्तुनतुनिया का है ।' इस लिपि का नाम-करण थेलेग्दी ने ही किया था । हंगेरी निवासी इस लिपि को रोवस - इरस (Rovas - iras) कहते थे जिसके अर्थ हैं खाँचेदार लिपि अथवा नाच्छ लिपि (Notch Script) । इस की दिशा बाएँ से दाएँ है ।

दूसरी लिपि निकोलसबर्ग की है । इसकी भी दिशा बाएँ से दाएँ है । इस लिपि का एक छोटा सा अभिलेख नागी जेन्ट मिक्लास (Nagy Szent Miklos) को न्यूरम्बर्ग² (Nuremberg) से १७९९ में प्राप्त हुआ । यह एक चर्मपत्र पर अंकित था । अब यह अभिलेख हंगेरी के राष्ट्रीय संग्रहालय - बूदापेस्ट में सुरक्षित है, जिसका काल बारहवीं सदी निर्धारित किया गया है । वी० थामसन (V. Thomsen) तथा एल्थीम इसको नवीं श० का मानते हैं । नेमेथ इसको तुर्की भाषा का मानते हैं । इस लिपि के वर्ण तथा उपर्युक्त अभिलेख 'फ० सं० - ३६२' पर दिया गया है ।

जर्मनी

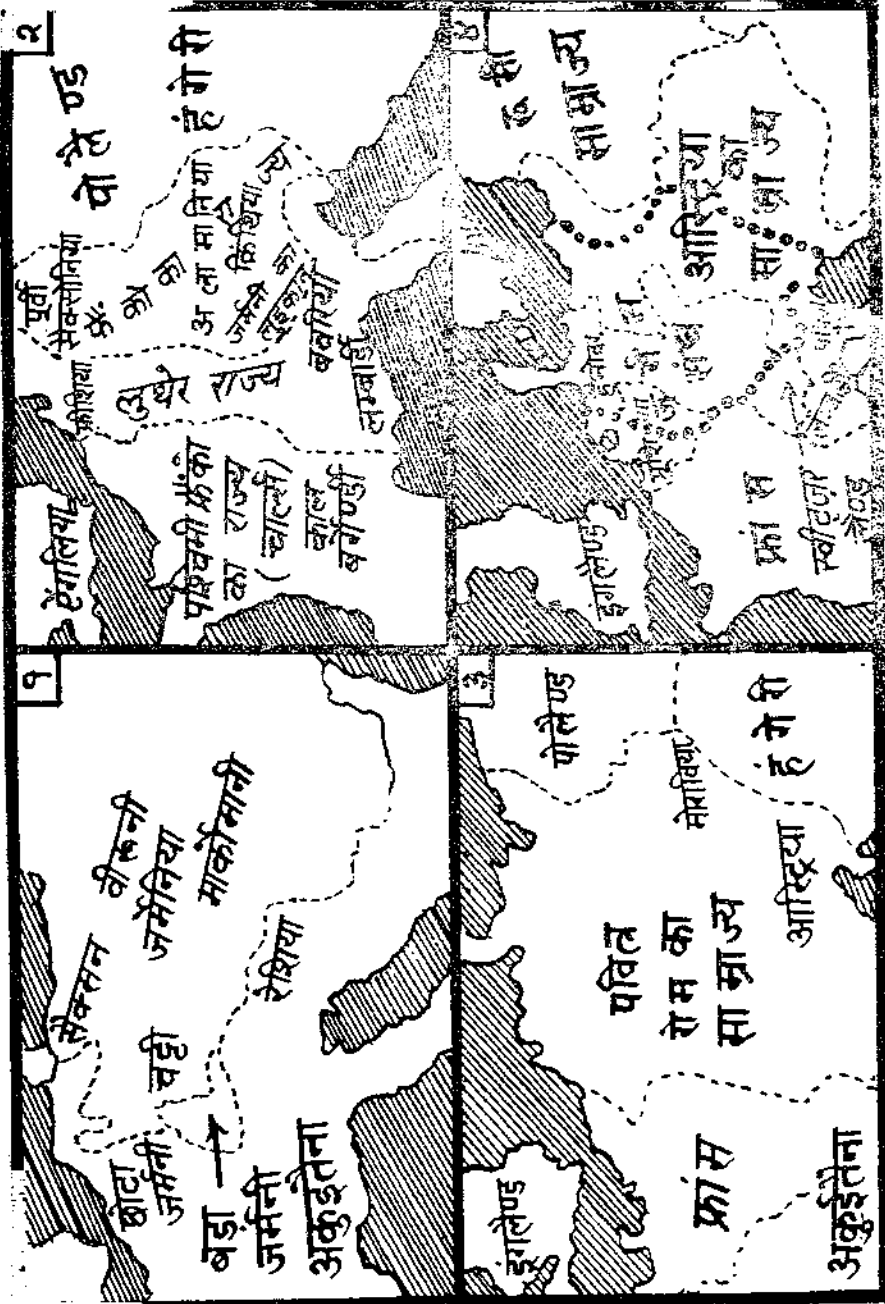
इतिहास : टैसिटस (Tacitus) इतिहासकार के अनुसार प्राचीन जर्मनी (जर्मेनिया) में तीन मुख्य धार्मिक जातियाँ निवास करती थीं जिनके नाम इंगायवोन, हर्मिनीोन तथा इस्तायवोन थे । इनके अपने-अपने पृथक देवी-देवता थे । इनके अपने-अपने राजा थे । इन तीन जातियों के अन्तर्गत भिन्न-भिन्न जातियाँ निवास करती थीं ।

1. फ० सं०—२४७.

2. हंगेरी के दक्षिणी भाग में स्थित है ।

जर्मनी

१-दूसरी श०; २-नवीं श०; ३-चौदवीं श०; ४-उत्तमवीं श०



फलक संख्या - ३६२

निकोलसबर्ग लिपि के वर्ण

ल	क	स	औ-ऊ	ब	श-स	द	क
Y	३		>>>	8	□	7	7
न	न	य	म	म	र	त	द
7)	D	⊖	X	⊕	↑	7
र	इ (ए, औ, ऊ के पूर्व)	इ	इ (ई के पूर्व)	सो	अ		
4	○		99	N	✓		

नवीं श० का एक लघु अभिलेख

4	7)	३	:	↑	⊕	□	7
र	द	उ	क	त	र	स	न	
यह दाएँ से बाएँ पढ़ा जायेगा - स्वर लगाईये								
न (अ) स; (इ) र त (अ); क (औ) द (उ) र								
नास इरता कौदूर = प्रातः एक घूंट के साथ								

उदाहरणार्थ, इंगायबोन के घर्मानुयायी किम्बरी, ट्यूटन, बन्डाल, जूट, ऐंगिल तथा फ्रीजियन थे। हर्मिनोन के मतानुयायी सुयेवी तथा लम्बार्ड थे और इस्तायबोन के मतानुयायी चेरुसी, बटावी, सिकाम्ब्री आदि थे। इसके अतिरिक्त ववरियन, सैक्सन, फ्रैंक तथा अलामन भी निवास करते थे। जर्मनिया विभिन्न जातियों का एक संग्रहालय था। ये सब जातियाँ भिन्न-भिन्न प्रकार के कार्य करती थीं, जैसे, मछली पकड़ना, किरितियों का बनाना, खेती करना, व्यापार करना आदि। ये जातियाँ आवश्यकताओं के अनुसार तथा मंगोलों के आक्रमणों के कारण अपना निवास-स्थान परिवर्तन करती रहती थीं। ये लोग रूनी लिपि का प्रयोग वृक्षों की छालों पर खोदकर किया करते थे।

सर्वप्रथम सीजर ने आल्प पर्वतों को पार कर इन जातिपों को अपने अधीन करने का प्रयत्न किया था। तदनन्तर रोम ने कई बार जर्मनिया पर आक्रमण किये। शनैः-शनैः इन जातियों ने रोम की संस्कृति को अपनाना आरम्भ कर दिया। जर्मनी के मजदूर तथा युवक रोम की सेना में भर्ती होने लगे। रोम की पद्धति पर जर्मनी में कई नगरों का निर्माण आरम्भ होने लगा। रोम के साम्राज्य के इस विस्तार के कारण अब दो सम्राट नियुक्त किये गये। एक रोम में तथा एक ट्रायर (Trier) में। ट्रायर का सम्राट कांस्टैटियस नियुक्त हुआ जो स्पेन, गाल तथा ब्रिटेन पर शासन करता था।

जब ४१० में गोथों ने रोम पर आक्रमण कर दिया तब जर्मनिया से रोम — सेना भेज दी गयी। रोम — सेना की अनुपस्थिति में फ्रैंकों ने ट्रायर पर अधिकार कर लिया। अलामनों ने अल्सास् (Alsace) पर अधिकार कर लिया तथा बर्गण्डियों ने अन्य भूभाग को पराजित करके अपना एक स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लिया। विसीगोथों ने अपना राज्य स्थापित कर लिया। जब हूणों के जर्मनिया पर आक्रमण होने लगे तब यह राज्य एक हो गये। ४५५ में पुनः हूणों का आक्रमण हुआ। इस बार ऐटियस के नेतृत्व में हूणों को सदैव के लिये खदेड़ दिया गया। अट्टिला का वध उसी की पत्नी, जो जर्मनी की एक राजकुमारी थी, द्वारा कर दिया गया। इस युद्ध ने पश्चिम को मुक्ति प्रदान कर दी। शनैः-शनैः रोम का प्रभुत्व समाप्त होने लगा।

४७६ में रोम का अंतिम सम्राट सिद्दासनारुद्ध हुआ जिसको केवल एक वर्ष पश्चात् ही अधिकार मुक्त कर दिया गया। इस सम्राट का नाम रोमलस आगस्टलस था। जर्मनी ने अपना नया सम्राट ओडोसर (Odoacer) जो सीथिया का एक राजकुमार था, निर्वाचित कर लिया। उसने रोम-राज्य के चिन्ह को रोम के सम्राट को, जो कुस्तुनतुनिया (कांस्टैन्टीनोपिल) से शासन करता था, लौटा दिया। इसके अर्थ स्पष्ट थे कि जर्मन सम्राट अब रोम के सम्राट के अधीन नहीं रहा। छठी शताब्दी के अंत में लम्बार्डों ने जर्मनी का बहुत सा भाग (मोराविया, बोहेमिया, आस्ट्रिया आदि) अपने अधीन कर लिया। विसीगोथों ने स्पेन और दक्षिणी गाल अपने अधीन कर लिये। जो भाग जर्मनी का शेष रह गया वह जर्मन जातियों ने आपस में विभाजित कर लिया। ये सभी जातियाँ अब ईसाई धर्म को अनुयायी बन चुकी थीं। फ्रांस फ्रैंकों के अधीन, इटली ओस्ट्रोगोथों के अधीन, अफ्रीका वण्डालों के अधीन तथा इंगलैण्ड^१ ऐंग्लो-सक्सनों के अधीन हो गये थे।

फ्रैंकों के राजा क्लोविस ने, जो ४८१ में गद्दी पर बैठा, अपनी प्रजा के सहयोग से बड़े सुचारु रूप से शासन किया परन्तु उसकी मृत्यु के पश्चात् परम्परा के अनुसार, उसका राज्य उसके पुत्रों में विभाजित कर दिया गया। सत्ता को पाने के लिए आपस में युद्ध हुए। उनमें से चार्ल्स मार्टेल विजयी हुआ। उसने ७१४ से ७४१ तक शासन किया। उसने मुसलमानों को दक्षिण की ओर भगा दिया तथा राज्य को एक सूत्र में बांधने का प्रयास किया। उसके

१. इंगलैण्ड का नाम भी ऐंगिल-लैण्ड से इंगलैण्ड पड़ा।

पुत्र पेपिन ने ७४१ से ७६८ तक शासन किया। उसने रोम को लम्बाडों के आक्रमण से बचा लिया तथा रोम के पादरी को कुछ भू-भाग दान-रूप में प्रदान कर दिया, जिसका नाम पापल-स्टेट पड़ा। पेपिन के मरणोपरांत उसका पुत्र चार्ल्स सिंहासनावृद्ध हुआ। इसने सैक्सनों से ३० वर्ष युद्ध किया। उनको परास्त कर ईसाई-धर्म का अनुयायी बना लिया। जब यह कुछ विद्रोहियों का दमन करने रोम गया, तब रोम के पादरी ने प्रार्थना उपरांत पहली जनवरी ८०० को उसके सिर पर मुकुट रख दिया और घोषणा की चार्ल्स सारी रोम जाति का सम्राट है। इसके मरणोपरांत लुई सिंहासन पर बैठा और उसने ८१८ से ८४० तक राज्य किया।

अब उत्तर से आक्रमण होने लगे। बड़ी अराजकता फैलने लगी। ९३६ में ओटो महान् सम्राट बना जिसने मेसिंगारों को खदेड़ दिया और उनको हंगेरी में निवास करने के लिये विवश किया। अब जर्मनी ने पूर्व की ओर अपना विस्तार किया और तेरहवीं शताब्दी में प्रुशिया पर अधिकार कर लिया। १५१७ में लूथर ने प्राचीन ईसाई-धर्म के विरुद्ध क्रांति कर दी। जर्मनी का विभाजन धर्म के अनुसार कैथोलिक व प्रोटेस्टैंटों में हो गया। १६१८ से १६४८ तक युद्ध होता रहा। १८०६ में पवित्र रोमन साम्राज्य समाप्त कर दिया गया। १८१५ में आस्ट्रिया के अन्तर्गत एक संघ स्थापित हुआ जिसका कार्य १८६६ तक चलता रहा। १८६६ में एक युद्ध हुआ जिसमें आस्ट्रिया को पराजित करने का प्रयास किया गया। अब जर्मनी एक डोर में बंध गया। १८७१ में फ्रांस से युद्ध हुआ और एक जर्मन-साम्राज्य स्थापित हुआ जिसका प्रथम चांसलर बिसमार्क हुआ। १८७६ में आस्ट्रिया से तथा १८७२ में इटली से मैत्री सन्धियाँ हुईं। १८८४ में जर्मनी ने अपना विस्तार आरम्भ कर दिया। १९१४ में प्रथम महायुद्ध हुआ। कैसर को राज्यपद से हटाकर दिया गया और १९१८ में एक लोकतन्त्र स्थापित हुआ। युद्ध के पश्चात् जर्मनी के बहुत से उपनिवेश जर्मनी से ले लिये गये। १९३६ में दूसरा महायुद्ध आरम्भ हुआ। ८ मई १९४५ को यह युद्ध जर्मनी की हार में समाप्त हो गया। १९४९ में पूर्वी तथा पश्चिमी भागों में विभाजित हो गया। पश्चिमी भाग अमेरिका एवं इंग्लैण्ड के प्रभाव में तथा पूर्वी रूस के प्रभाव में आ गया।

लिपि :—जर्मनी की प्राचीन लिपि के वर्णों का नाम 'रून' था। 'रून' शब्द जर्मन-केल्ट भाषा का है जिसका सम्बन्ध अज्ञात है। इसके अर्थ गोथिक भाषा के शब्द 'रूना' में 'गोपनीय' है। प्राचीन आयरिश भाषा में भी इसके अर्थ 'गोपनीय' हैं। ऐंग्लो-सैक्सन भाषा में इसके अर्थ 'गोपनीय' कानाफूसी के हैं। सर्वप्रथम 'रून' के अभिलेख सत्रहवीं श० में ब्यूरेन्स (Burens) और वर्मियस (Wormius) द्वारा प्रकाशित किये गये। तद-नन्तर बहुत से अभिलेख प्रकाशित हुए। इनका तथा अन्य कई अभिलेखों का रहस्योद्घाटन डन्यु० ग्रिम (W. Grimme), ब्राइन्यूल्फ़सन (Brynjulfsson) तथा लिज्येग्रिन (j=y) (Liljegren) द्वारा उन्नीसवीं सदी के आरम्भ में हुआ। तत्पश्चात् इस लिपि पर और अधिक शोध कार्य नार्वे के विद्वान् बुग्गे (Bugge - 1905) तथा डेनमार्क के विद्वान् विम्मेर (Wimmer - 1874) द्वारा सम्पन्न हुए।

सबसे प्राचीन अभिलेख उत्तरी जर्मनी से प्राप्त हुआ जिसका काल चौथी श० निर्धारित किया गया है। इस लिपि की दिशा बाएँ से दाएँ है परन्तु कुछ अभिलेख दाएँ से बाएँ की दिशा वाले भी प्राप्त हुये हैं।

प्राचीन जर्मनी के रूनों^१ में २४ वर्ण प्रचलित थे। इनका उद्भव लगभग चौथी श० में हुआ तथा इनका प्रयोग रोमन लिपि के प्रयोग के कारण आठवीं सदी में बिलकुल समाप्त हो गया। इन चौबीस वर्णों को तीन भागों में विभाजित किया गया है और प्रत्येक भाग में आठ आठ वर्ण रखे गये हैं। प्रत्येक भाग को आठ वर्णों का एक कुटुम्ब माना गया है जो वर्णों की ध्वनियों पर निर्भर हैं। उन तीन भागों को फ्रेयर का (Freyr's), हैगल का (Hagall's) तथा टायर का (Tyr's) कुटुम्ब कहते हैं। (फ० सं० - ३६४)।

1. Arntz, H. : Handbuch der Runenkunde (1935), p - 46.

प्राचीन जर्मनी के रून

फ़	उ	उ	थ	थ	अ	र	र	क	क
ƿ	ʌ	ʀ	þ	þ	ʀ	ʀ	ʀ	ʀ	ʀ
य	व	व	ह	ह	न	ई	ज	ज	ज
ʏ	ʏ	ʏ	ʏ	ʏ	ʏ	ʏ	ʏ	ʏ	ʏ
हे	प	प	प	ज/र	----->	स	स	त	
ʒ	ʒ	ʒ	ʒ	ʒ	ʒ	ʒ	ʒ	ʒ	ʒ
ब	ब	ए	ए	म	ल	नं	नं	नं	नं
ʒ	ʒ	ʒ	ʒ	ʒ	ʒ	ʒ	ʒ	ʒ	ʒ
वर्ण-द्वनि	द	द	ओ	ओ	इस लिपि				
२४ हैं	ʒ	ʒ	ʒ	ʒ	४५ चिह्न हैं				

नार्वे-स्वीडन-डेनमार्क

नार्वे का इतिहास : नार्वे का प्राचीन युग प्राचीन जर्मनी से सम्बन्धित था। जर्मनी के प्राचीन रूनी लिपि के अभिलेख, जिनका काल ईसा की तृतीय शताब्दी निर्धारित किया गया, यहाँ से प्राप्त हुए। यहाँ की प्राचीन भाषा भी प्राचीन-जर्मन थी। ऑस्लो के निकट का भूभाग, जिस पर स्थानीय राजा राज्य करते थे, डेनमार्क (प्राचीन-युत लैण्ड) के अन्तर्गत रहा। इस देश का इतिहास ८१३ से आरम्भ होता है। इसको नार्स भी कहते हैं। यहाँ के निवासी नार्समेन (नार्थमेन) कहलाते थे। उन्होंने इसी शताब्दी में आइसलैण्ड, ग्रीनलैण्ड, आयरलैण्ड तथा स्काटलैण्ड अपने अधीन कर लिये थे। ९९५ में इस देश ने ईसाई धर्म अपना लिया। यहाँ के एक शासक ने १०६६ में इंग्लैण्ड पर आक्रमण कर दिया।

१३८० में इसकी राजधानी ट्रोंडहैम (Trondheim) थी। १३९७ से यहाँ डेनमार्क का शासन स्थापित हो गया। १८१४ में कोल के एक सन्धिपत्र के अनुसार नार्वे स्वीडन के अधीन कर दिया गया। स्वीडन ने इस राज्य का विधान पृथक रखा परन्तु शासन अपने नृप-राज्य का ही रखा। १९०५ में यह पृथक होकर पूर्ण स्वतंत्र हो गया।

स्वीडन का इतिहास : प्राचीन नार्स भाषा में स्वीवर (Sviar), स्वीडिश भाषा में स्वीअर (Svear) तथा एंग्लो-सैक्सन भाषा में स्वीवन (Sweon) के नामों से सम्बोधित किया जाता रहा। यहाँ के निवासी स्वीन कहलाते थे। यहाँ वाइकिंग जाति के लोग भी निवास करते थे। प्राचीन नार्स भाषा में वाइकिंग के अर्थ वीर-योद्धा होते थे। इस जाति के लोगों का काम भी सामुद्रिक लूटमार था। यहाँ से ही गोथ जाति के तथा वारंगी जाति के लोगों ने रूस तथा दक्षिणी यूरोप की ओर प्रस्थान किया।

बारहवीं शताब्दी में यह देश ईसाई-मत का अनुयायी बन गया। बारहवीं शताब्दी में इसने फ़िनलैण्ड को परास्त किया। १३९७ में यह डेनमार्क तथा नार्वे से मिल गया। १५१३ में इस संघ से पृथक हो गया तथा अपना विस्तार करना आरम्भ कर दिया। १५६१ में स्तोनिया, १६२९ में लिवोनिया, १६४५ में शोटलैण्ड द्वीप आदि अपने अधीन कर लिये। १६६० में डेनमार्क का बहुत सा भाग भी अपने देश में मिला लिया। १७००-२१ के युद्ध में इस की सत्ता क्षीण होने लगी। १७४३ में फ़िनलैण्ड रूस के अधिकार में चला गया। १८१४ में नार्वे के साथ सम्मिलित हो गया। १९०५ में दो देश स्वतंत्र रूप से शासन करने लगे। दोनों महायुद्धों में यह राज्य तटस्थ रहा।

डेनमार्क का इतिहास : यहाँ डेन^१ जाति के लोग छठी शताब्दी में आकर बस गये। प्राचीन काल में युत जाति के निवास करने के कारण यह युतलैण्ड भी कहलाता था। ८००-१००० के मध्य डेन लोग भी वाइकिंग लूटमारों के साथ मिल गये और इंग्लैण्ड, फ्रांस तथा दक्षिणी देशों पर आक्रमण किये। १०१८ से ईसाई मत के अनुयायी होने लगे। ११५७ में वाल्डमार ने एक नया राजवंश स्थापित किया। १४०० में यह जर्मनी के प्रभाव में आ गया। १४४८ से १४६३ तक यह देश एक नृपराज्य रहा।

१५३६ में उसने प्रोटेस्टैन्ट-ईसाई-मत अपना लिया। इस देश ने कई युद्ध लड़े और अपने कई उपनिवेश खो दिये। १८६४ में आस्ट्रिया के युद्ध में पराजित हुआ। प्रथम महायुद्ध में तटस्थ रहा। १९१७ में वेस्ट इण्डोज को अमेरिका के हाथ बेच दिया। १९१८ में आइसलैण्ड की स्वतंत्रता को मान्यता प्रदान कर दी। द्वितीय महायुद्ध में यह देश १९४० से ४५ तक जर्मनी के अधीन रहा।

१. डेन द्यूटन जाति की शाखा थी।

नार्वे - स्वीडन - डेनमार्क के रून : प्राचीन जर्मनी के रूनों का प्रयोग जर्मनी तक ही सीमित रहा, जो आठवीं श० के पश्चात् समाप्त हो गया और डेनमार्क के दक्षिणी भाग के ऊपर न बढ़ सका। इसके पश्चात् इनका अधिक प्रयोग नार्वे, स्वीडन और डेनमार्क में हुआ। इनका उद्भव नार्वे, स्वीडन, डेनमार्क में प्राचीन रूप से हुआ। इसमें केवल सोलह^१ रून थे अर्थात् प्राचीन रूनों में से आठ वर्ण कम कर दिये गये तथा उनकी ध्वनियों का भार इन सोलह वर्णों के ऊपर रख दिया गया। उदाहरणार्थ 'त/ट' के चिह्न से 'द/ड' का भी उच्चारण किया गया, इसी प्रकार 'ई' के चिह्न से 'ए' की, 'ब' के चिह्न से 'प' की, 'क' के चिह्न से 'ग' और 'इंग' की और 'उ' के चिह्न से 'ओ' और 'व' की ध्वनियों का कार्य लिया गया (फ० सं०—३६६)।

इस लिपि के अभिलेख स्मृति - शिलाखण्डों पर उत्कीर्ण किये हुये प्राप्त हुये हैं, जो मृतक के सम्बन्धी उनकी समाधियों पर एक स्मारक के रूप में स्थापित कर देते थे। ऐसे अभिलेखों की संख्या लगभग दो सहस्र पाँच सौ से कुछ अधिक है जो नार्वे - स्वीडन से प्राप्त हुए। उनका काल सातवीं से आठवीं श० का माना जाता है। इसका सबसे प्राचीन अभिलेख एक कटार पर उत्कीर्ण नार्वे से प्राप्त हुआ है। यह कटार अस्थि के दस्ते की बनी है। इसका काल आठवीं सदी निर्धारित किया गया है (फ० सं० - ३६६क)। इसका रहस्योद्घाटन अरंज (Arntz) द्वारा किया गया है। जो उसकी पुस्तक^२ में प्रकाशित हुआ। 'फ० सं०—३६६' पर पाँच कालम दिये गये हैं। तृतीय कालम में वर्णों की ध्वनियाँ दी गई हैं। चतुर्थ कालम में वर्णों के नाम तथा पंचम में नामों के अर्थ^३ दिये गये हैं।

विन्दी वाले रून : जब वाइकिंग काल में (Viking - ८०० से १०५० तक) नार्वे - स्वीडन वाले रूनों की संख्या चौबीस से घट कर केवल सोलह रह गई और उच्चारण का भार दूसरे चिह्नों पर रख दिया गया तब शनैः शनैः मानव प्रगति के साथ कुछ कठिनाई प्रतीत होने लगी। इसके अतिरिक्त रोम के राज्य तथा धर्म के बढ़ते कदमों ने रोम की लिपि को भी प्रगति प्रदान की। इन कारणों से दसवीं सदी में नार्वे - स्वीडन के रूनों में कुछ परिवर्तन किये गये। उदाहरणार्थ 'क' और 'ग' की ध्वनियों के लिए जो एक चिह्न निश्चित किया गया था उसका रूप तो वैसा ही रखा गया परन्तु 'ग' की ध्वनि को पृथक् करने के लिए उसी चिह्न या रून में एक बिन्दी लगा दी गई। इसी प्रकार अन्य ध्वनियों को पृथक् करने के लिये उसी प्रकार के रूनों में बिन्दी का प्रयोग करना आरम्भ कर दिया गया। साथ साथ उनके स्थानों में भी परिवर्तन कर दिया गया। यह परिवर्तन रोम की लैटिन लिपि के अनुसार किया गया (फ० सं० - ३६७)।

पी० जी० थोरसेन (P. G. Thorsen, 1877) के अनुसार यह परिवर्तन बाल्डेमर नरेश (नार्वे - स्वीडन) के शासन काल (१२०२ से १२४१ ई० तक) में पूर्ण^४ हो गया। इन रूनों का नाम स्टुंगनार रूनिर (Stungnar Runir) अर्थात् बिन्दी वाले रून रख दिया गया।

1. Neckel : 'Die Runen'—Acta Philologie, vol. XII (1938), p-102.

2. Die Runen Schrift, (1938), p-76.

3. Johannesson, A. : Grammatik der urnordischen Runeninschriften (Heidelberg—1928), p-97.

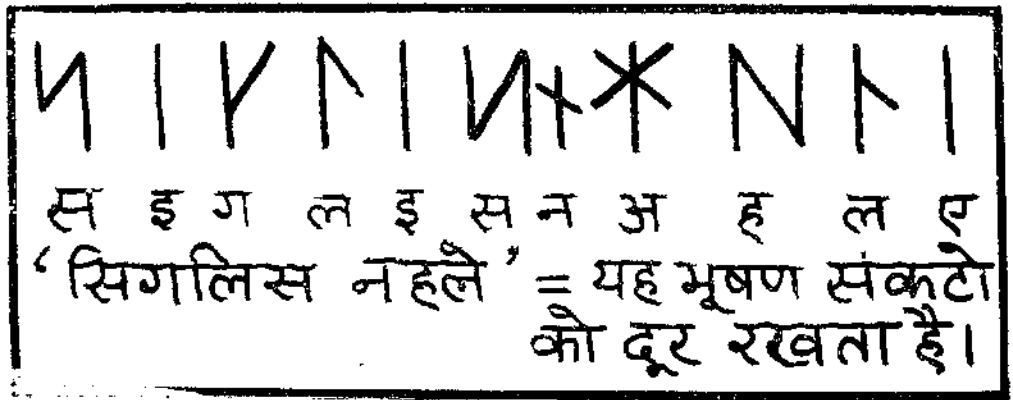
4. Thorsen, P. G. : Our Runerne: Brag til Strift uden for det monumentale - (1877), p-29.

डेनमार्क, नार्वे-स्वीडन रुत

डेनमार्क	ना. स्वी.	ध्वनि	नाम	अर्थ
ƿ	ƿ	फ़	फ़िउ	प्रथम (पशुधन)
ŋ	h ŋ	उ,ओ,व	उर	बाद में (इस्की वर्ग)
þ	þ	प,थ	थुरिस्	दोनव (तौसरा डण्डा)
f	f	अ,आ	आस	अस्त्रि (उससे ऊपर)
R	R	र	रट	चढ़ना (अंतिम डिब्बा)
ʏ	ʏ	क,ग,न	कौन	सूजन (चिपकना)
*	†	ह	हगल	ओला
†	†	न	नैत	संकर
ı	ı	ई	आइस	वर्ष (ईस)
†	†+1	अ	अर	वर्ष
ŋ	ı	स	सैल	सूर्य
↑	1	त,द,न्ह	तदर	रंग
B B°	ƿ ≠	प,ब,भ	पुखौ	वृक्ष की छल (वोर्क)
ʏ ʏ	† ı	न	नद्र	ननुष
†	† ı	ल	लगु	पानी
†	ı	र	र	धनुष

दत्सका रुन : स्वीडन के एक जनपद ओरे दलार्ने (Övre Dalarne)¹ में इनका आज भी गोपनीय रखने के लिए — किसी प्रकार के पत्रव्यवहार अथवा किसी अन्य बात के लिए प्रयोग किया जाता है। इनका एक छोटा सा अभिलेख एक छड़ी पर अंकित अल्फ्रदलेन ग्राम से प्राप्त हुआ जो १७५० ई० का माना जाता है। दत्सका रुनों की वर्णमाला 'फ० सं० — ३६७' पर दी गई है।

एक प्रतिदर्श



फलक संख्या - ३६६ क

प्राचीन इंगलैण्ड

इतिहास : प्राचीन इंगलैण्ड के विषय में आयरलैण्ड के पाठ के साथ कुछ वृत्तान्त दे दिया गया है। यहाँ के मूल निवासी ब्रतानी थे। तत्पश्चात् योरोप की अन्य जातियाँ यहाँ आकर बसने लगीं उनमें से दो जातियाँ मुख्य थीं, एक ऐंगिल दूसरी सैक्सन।

टैसीटस इतिहासकार के कथनानुसार ऐंगिल जाति के लोग मूलतः ड्यूटेनी जाति के थे। ड्यूटेनी जाति हेलवेती जाति की एक शाखा थी जो स्वीट्जरलैण्ड में निवास करती थी। यह सब जातियाँ केल्ट जाति की उपजातियाँ थीं। ड्यूटेनी जाति के लोग रोमनिवासियों के सम्पर्क में लगभग १०३ ई० पू० में आये। ऐंगिल जाति के लोग इंगलैण्ड आने के पूर्व एक ऐंगुलस द्वीप में निवास करते थे जो डेनमार्क के निकट था। इसको वर्तमान काल में शिलेसविय प्रांत कहते हैं। पाँचवी सदी में इन लोगों ने इंगलैण्ड के पूर्वी भाग पर आक्रमण किया और वहीं बस गये।

1. Noreen : Övre Dalarne (1903), page-405.

बिन्दी वाले रून्

अ	अ	ब	क-स	द	द	ए	फ़.व	ग	हर							
A	†	B	Y	h	↑	↑	•	Ʒ	Ʒ	*	H					
ई	ज	क	ल	म	न	न	ओ	ओ	ओ	प	प	क	र			
I	Ʒ	Y	†	Y	†	†	†	†	†	†	†	†	†			
स	स	स	ट	ट	प	प	उ	व	य	य	ज	ज	ज	ओ	म	अ
S	h	h	†	†	†	†	†	†	†	†	†	†	†	†	†	†

दल्लुका रून्

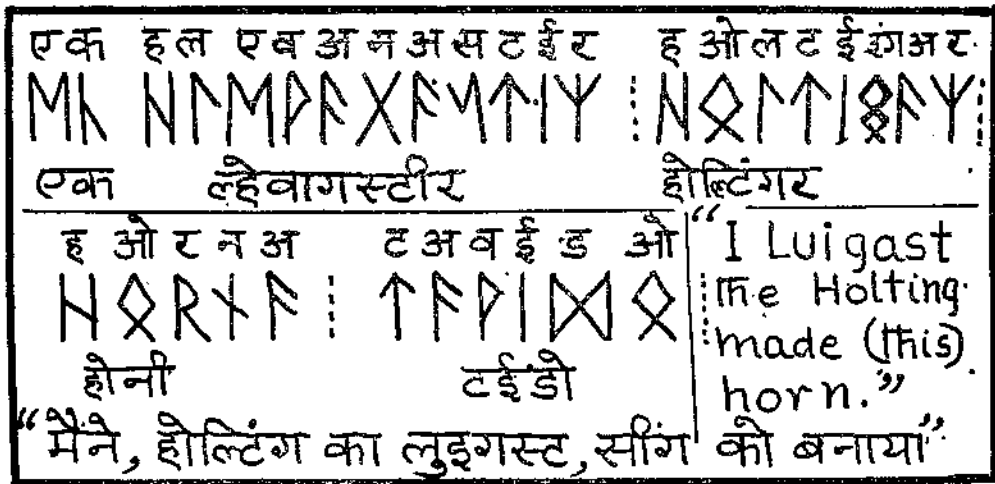
अ	अ	ब	क.स	द	द	ए	फ़	फ़	ग			
†	X	B	hC	D	P	†	Ʒ	Ʒ	Ʒ			
ह	ह	ई	क	क	ल	म	न	ओ	प	प	क	र
*	*	†	Y	K	†	Y	†	†	†	†	†	†
स	ट	उ	व	क्स	य	य	आ	आ	ऐ	ऐ	अ	अ
S	†	†	V	h	Y	Y	†	†	†	†	†	†
संयुक्त	अ+उ = औ	अ+न = अन	उ+क = उक	ट+अ = टा	†+† = †	†+† = †	†+† = †	†+† = †	†+† = †	†+† = †	†+† = †	†+† = †

ऐंग्लो-सैक्सन रुन

वर्ण	ध्व०	नाम	वर्ण	ध्व०	नाम	वर्ण	ध्व०	नाम
ƿ	फ़	फ़ियो feoh	ƿ	ज़	जर zer	𐌳	द ड	दपेग daeg
ʌ	उ	उर Ur	ʃ	यौ	यौ eow	𐌸	ओम	येपेल epel
þ	थ	थोर्स Thors	ƿ	प	प्योरो peoro	𐌹	आ	आक ac
ƿ	ऑ	ऑस os	ƿ	क्स	योलक्स eolx	𐌺	अये	अयेस्क aesk
R	र	राड Rad	ʃ	स	सीगेल sigel	𐌻	इय	इयर ear
h	क	केन Cen	↑	त ट	तीर tir	𐌺	य	यर yr
X	ग	गीफ़ gyfu	B	ब	बेयोर्क beorc	*	ईया	ईयार lor
ƿ	व	व्यून wyun	M	ए	एह eh	ʃ	क	वियोर्ड weord
h	ह	हैगल haegl	𐌳	म	मन man	𐌺	क	कल्क calc
+	न	नीद nyd	𐌺	ल	लगु lagu	𐌺	स्त	स्तान stan
l	ई	ईस is	𐌺	इंग	इंग ing	𐌺	ज	जाट gær

सैक्सन जाति के लोग भी ट्यूटोनी जाति के सम्बन्धी थे। सर्वप्रथम टॉलेमी ने दूसरी सदी के मध्य इनके विषय में कुछ ज्ञान प्राप्त किया। यह लोग किम्ब्री के प्राचीन प्रायद्वीप में निवास करते थे (शिलेसविग प्रांत)। इन लोगों ने २८६ ई० से व्यापारी जलयोतों के लूटने का कार्य आरम्भ किया। चौथी सदी में इनकी सामुद्रिक डकैतियाँ अधिक होने लगीं। पाँचवी सदी में इन लोगों ने भी इंगलैण्ड के दक्षिणी - पूर्वी भागों पर आक्रमण करना आरम्भ कर दिया। शनैः शनैः इन्होंने वहाँ अपने पर जमा लिये। इसी कारण जो सैक्सन पूर्व में बस गये वह स्थान एसेक्स (East + Saxon = Essex), जो लोग पश्चिम में बस गये वह स्थान वेसेक्स (Wessex) तथा जो सैक्सन दक्षिण में बस गये वह स्थान ससेक्स (Sussex) कहलाने लगा। ऐंगिल जाति के लोगों के बसने के कारण

ऐंग्लो-सैक्सन रून का प्राचीनतम् अभिलेख



फलक संख्या - ३७०

ऐंगिल - लैण्ड तथा इंगलैण्ड कहलाने लगा। ऐंगिल तथा सैक्सन जातियों के सम्मिश्रण से जो लोग उत्पन्न हुये वे ऐंग्लो - सैक्सन^१ कहलाने लगे।

लिपि : पाँचवी सदी तक ऐंग्लो - सैक्सन जातियों के लोग प्राचीन जर्मनी के रून - वर्णों का प्रयोग करते रहे, परन्तु जब वे ब्रितानी लोगों के सम्पर्क में आये और कुछ अन्य ध्वनियों का भाषा में समावेश हुआ तब इन लोगों ने प्राचीन जर्मनी के चौबीस रून - वर्णों में चार^२ नई ध्वनियों के वर्ण और जोड़ कर अट्ठाईस रून बना लिये। सातवीं एवं आठवीं सदी में तीन वर्ण और जोड़ दिये और इसी प्रकार दसवीं सदी में दो अन्य रून वर्ण

१. यह नामकरण इंगलैण्ड के नरेश ऐल्फ्रेड द्वारा ८८ ई० में हुआ,

२. यह चार वर्ण 'फ० सं०-३६९' पर दो पंक्तियों के मध्य दिखाये गये हैं। अन्य तीन तथा दो वर्ण भी इसी प्रकार दिखाये गये हैं।

जोड़कर तैंतीस स्वरों की एक वर्णमाला¹ बन कर प्रयोग में आने लगी। इसका प्रयोग अधिक दिनों तक न हो सका क्योंकि रोम के धर्म-प्रचारकों ने ईसाई-धर्म के साथ साथ रोम की लिपि का भी प्रचार किया और जैसे जैसे ईसाई धर्म में प्रगति हुई उसी के साथ रोमन लिपि की भी प्रगति हुई। फलस्वरूप स्वरों का स्थान रोमन लिपि ने ले लिया (फ० सं०-३६६)। इसका प्राचीनतम अभिलेख² 'फ० सं० - ३७०' पर दिया गया है।

बार्डों लिपि : केल्ट जाति के लोग मध्य यूरोप से चल कर लगभग ई० पू० की चौथी श० में आयरलैण्ड में आकर बस गये थे। इन लोगों में कुछ पुरोहित लोग भी थे जो ईश्वर के विषय में, आत्मा के विषय में तथा मरणोपरांत जीवन के विषय में खोज और चिन्तन-मनन किया करते थे। यह लोग बड़े विद्वान् समझे जाते थे। ज्योतिष विद्या तथा खगोल शास्त्र के भी ये पण्डित समझे जाते थे। ये लोग कविता भी करते थे तथा पूजन आदि की विधियों के भी ज्ञाता माने जाते थे। कुछ विद्वानों का विचार है कि ये लोग केल्ट नहीं पिक्ट (आयरलैण्ड के मूल निवासी) थे। इन पण्डितों का नाम ड्रूड था। इन्हीं विद्वानों की एक शाखा, जो इंग्लैण्ड के पश्चिमी पर्वतों पर आकर बस गयी, बार्ड कहलाती थी।

इंग्लैण्ड के पश्चिमी पर्वतों पर रहते रहते यह लोग वेत्स के नाम से ज्ञात होने लगे। यहाँ पर इन लोगों ने एक सुसंगठित समाज की स्थापना की जिसको इंग्लैण्ड की सरकार ने मान्यता प्रदान कर दी। समय समय पर यह लोग अपने उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाते हैं। महारानी एलिज़बेथ प्रथम के शासन काल से इनके रीति-रिवाजों में कुछ शिथिलता आने लगी परन्तु १८२२ ई० से उनका पुनरुत्थान होने लगा। अब उनके उत्सव निश्चित तिथियों पर मनाये जाते हैं। वर्तमान काल में कविता करना उनकी जीविका बन गई है।

इन्होंने बड़े गोपनीय ढंग से अपनी प्राचीन लिपि को सुरक्षित रखा है। इसका उद्भव स्वर-वर्णों द्वारा प्रतीत होता है। इस के उद्भव के विषय में विद्वान् एकमत नहीं हैं। इस लिपि की पद्धति में कुछ भारतीय लिपि पद्धति का समावेश भी दृष्टिगोचर होता है जो सम्भवतः मध्य एशिया से चल कर स्वर-लिपि के सम्पर्क में आकर इसको प्रभावित किया (फ० सं० - ३७१)।

रुमानिया

इतिहास : इसका प्राचीन नाम डाकिया है। इसके निवासी यायावर थे। लगभग १६३ वर्ष यह रोमन राज्य के अधीन रहा परन्तु २७१ ई० में रोमन सम्राट औरेलियन (Aurelian) ने अपना अधिकार हटा लिया। तीसरी से बारहवीं श० तक भिन्नभिन्न जातियों के आक्रमण होते रहे। कहीं गोथों के, तो कभी स्लावों के और कभी अवारों। ८६४ में बुल्गारों ने आक्रमण किया। यह लोग अपने साथ ईसाई धर्म लाये और रुमानिया निवासी ईसाई धर्म के अनुयायी हो गये। बुल्गारों को सैन्यारों ने परास्त कर दिया और ग्यारहवीं श० में हंगेरी के राजा स्टीफ़ेन ने इसको अपने अधीन कर लिया।

१२४१ में मंगोलों ने विध्वंसक आक्रमण करके सब कुछ नष्ट कर दिया। १७७४ में यह भूभाग दो राज्यों में - वालाचिया तथा मोल्डाविया - विभाजित हो गया। १७ जनवरी १८५६ को यह दो भाग पुनः एक सूत्र में बंध गये। १८७६ में यह देश स्वतंत्र हो गया। १९४७ में यहाँ के शासक राजा माइकिल ने राजगद्दी छोड़ दी और देश समाजवादी हो गया।

1. Keller, W., : Angelsachs Palaeographie Palaestra, Vol, XLIII, (1960), P - 46.

2. यह Loom of The Language - Page 265 - से लिया गया है।

बाडीं लिपि

अ	आ	इ	ए	ई	ब
^	↑	↓	↘		lb
द. ड	क	ज	फ	ग	ह
>>	८	∠	FX	LC	h
ल	म	न	ओ	प	र
KL	५	∩	◇◇	PP	NR
स	त. ट	ती. टी	व	व	क्स
Y	T	↑	↓	V	X
इंग	ज	उ	ऊ	व	य
◇	▷	Y	Σ	३	Y

रुमानिया की लिपि

अ	λ	इज	S	न	H	त	T	त्स	प	इयू	to
ब	Б	ज	Z3	क्स	उ	उ	४	श	W	इया	to
व	B	इ	N	ओ	O	उ	O	श्त	Ψ	इये	IE
ग	Г	फ़	⊖	प	П	फ़	Φ	ए	Г	इय	A
द	Δ	क	İ	ल्श	Υ	ख	X	इ	Ы	ई	Υ
ए	E	ल	Λ	र	P	प्स	Ψ	य	Б	घन	↑
ज	Ж	म	M	स	C	औ	ω	ईया	К	दश	У

अल्बेनियन (अल्बेनो) लिपि

अ	८	त्स	९	र	५	गंज	३	प	४	श	१
ए	।	इस	३	ई	८	ग	४	ब	८	श	१
इ	।	इंस	३	फ	८	स	५	म्ब	८	शत	१
ओ	०	व	८	थ	८	ह	८	म्य	८	तै	८
उ	०	ल	८	म	८	ख	४	न	४	जं	४
इयु	८	इज	८	ज	८	ज	४	श	८	अस	४
एँ	४	कज	४	ग	८	त	८	इश	४	ओम	४
स	४	क	८	गं	८	द	४	इंश	४	जीयु	८
इज	८	कस	८	गज	४	द	४	स्त	४	व	५३

रुमानियन लिपि : इस लिपि को सीरिलिक में आंशिक परिवर्तन करके बनाया गया परन्तु १९७० के पश्चात् रुमानिया ने रोमन लिपि का प्रयोग आरम्भ कर दिया। के० एम० मुसाइव (K. M. Musaiev) ने इसका वर्णन अपनी पुस्तक^१ में किया है। इसकी वर्णमाला एक पुस्तक^२ से ली गई है (फ० सं० - ३७२)।

अल्बेनिया

इतिहास : प्राचीन काल में अल्बेनिया को इलीरिया (Illyria)^३ कहते थे। यहाँ के लोग एक पहाड़ी जाति के थे। आठवीं श० में स्लाव लोगों ने इस भू-भाग पर आक्रमण किया तथा अपने अधीन कर लिया। जब प्राचीन ईसाई धर्म, रोमन चर्च तथा ग्रीक-आर्थोडॉक्स चर्च में, विभाजित हो गया और कुस्तुनतुनिया की शक्ति का विस्तार होने लगा तब १२१४ तक यह एपरिस के अधीन रहा। १२९४ में बुल्गारिया के शासक इवान असेन ने इस पर अधिकार जमा लिया।

कुछ वर्षों पश्चात् यह पुनः बिजेंन्टीन साम्राज्य का भाग बन गया। लगभग ४०० वर्ष यह ओटोमान तुर्कों के अधीन रहा। इसी काल में यहाँ के बहुत से लोग मुसलमान हो गये जो वर्तमान जनसंख्या के ७० प्रतिशत हैं। जब तुर्की और ग्रीस का युद्ध हुआ और तुर्की की पराजय हुई तो १९१२ में अल्बेनिया स्वतंत्र हो गया। प्रथम महायुद्ध में इसने बाल्कन राज्यों का साथ दिया। १९२१-२४ तक एक नृप-राज्य रहा। दूसरे महायुद्ध में इटली ने ग्रीस पर यहाँ से ही आक्रमण किया। इटली परास्त हुआ। ग्रीस ने अल्बेनिया पर आक्रमण कर दिया। १९४४ में बड़ी अशान्ति रही और देश कम्युनिस्ट हो गया। यह यूरोप का सबसे निर्धन देश है।

लिपि : यह लिपि विशुद्ध राष्ट्रीय मानी जाती है। इसकी खोज अल्बेनिया स्थित एक जर्मन राजदूत जो० वान् हब्न (G. Von Hahn) ने की जिसके परिणाम स्वरूप १८५० में इसके अभिलेख उत्तरी अल्बेनिया के एक नगर एलबसन से प्राप्त हुये। केवल इसी नगर में इसका प्रयोग सीमित हो कर रह गया।

इसका आविष्कार थ्योडोर (Theodore) नाम के एक शिक्षक ने अठारहवीं श० के सातवें दशक में किया था। फ्रांज़ (Franz) के अनुसार इसकी उत्पत्ति* फ़नीशियन लिपि द्वारा, ब्लौड (Blau) के अनुसार लीकियन लिपि द्वारा तथा गोटलर के अनुसार घसीट - रोमन - लिपि द्वारा हुई, जिसका प्रयोग सातवीं श० में होता था, (फ० सं०-३७३)।



1. Musaiev, K. M. : Alphavity yazkykov narodov S S S R - Moscow (1965)

2. Jensen, H : Syn, Symbol and Script - (London - 1970) p. - 5.2

3. इटली के मान चित्र में ' फ० सं०-३३५ ' पर इलीरिया नाम दिया गया है।

4. Halin : Albanesische Studien- (1854) p. 286.

पठनीय सामग्री

- Arntz, H.* : 'Origin of Runes' – Journal of German Philologie, 11., (1899).
- Ibid* : Die Runenschrift (1908).
- Ibid* : Handbuck Der Runenschrift (1902).
- Atkinson, G. M.* : 'Some Account of Ancient Irish Treatises on Ogham Writing' – Journal of Royal Historical and Archaeological Association of Ireland XIII (1921).
- Bruce, D.* : Runic and Heroic Poems of the Old Teutonic Peoples, (Cambridge – 1915).
- Curtis, E.* : A History of Ireland (1936).
- Dastrup* : A History of Denmark (Cop. – 1949).
- Dunlop, R.* : Ireland from Early Times (1922).
- Gibbon, J. B. E.* : Decline and Fall of the Roman Empire (1900).
- Gjerset, K.* : History of Norwegian People, (1932).
- Grlenberger* : 'Die anglesächs Runenreihen' – Arkologie f. nord, Filol. XV (1898).
- Hallendorff, C.* : A History of Sweden (1938).
- Halin* : Albanesische Studien (1931).
- Hodgkin, R. H.* : A History of the Anglo – Saxons, 2 Vols. (1939).
- Joyce, P. W.* : History of Ancient Ireland (1913).
- Keller, W.* : Angel – Sächs Palaeographie, XLIII, (1906)
- Larsen, K.* : A History of Norway (1948).
- Macalister, S.* : Studies in Irish Epigraphy (1907).
- Ibid* : Archaeology of Ireland, 3 Vols. (1928).
- Macarteny, C. A.* : Hungary (1934).
- MacNeill* : Phases of Irish History (1920).
- Maveer, A.* : The Vikings (1913).
- Musatev, K. M.* : Alphavity yazkykov narodov (Moscow – 1965)
- Pedersen, H.* : 'Runernes Oprindelse' – Aarboger f. nord, Old Kyndighed of Historic (3. R) Vol. 13, (1923).
- Stephens, G.* : Handbook of Runic Monuments (1884).

अध्याय : ८
अमरीकी देशों की
लेखन कला का इतिहास

अमरीका

अमरीका की लिपियाँ इस आधुनिक अमरीका की नहीं हैं अपितु उन आदिवासियों की हैं जिनको आज 'रेड - इण्डियन' के नाम से सम्बोधित किया जाता है। ये लोग उत्तरी तथा दक्षिणी अमरीका में फैले हुये थे। इनकी अपनी एक उच्च कोटि की संस्कृति थी। इनमें से कुछ रेड - इण्डियन जातियों ने अपनी लिपियों का स्वयं आविष्कार किया तथा कुछ जातियों के लिये ईसाई - धर्म - प्रचारकों ने उनकी भाषा के अनुरूप विविध प्रकार की लिपियों का आविष्कार किया। इन्हीं लिपियों का वर्णन इस पाठ में दिया गया है।

मैक्सिको

इतिहास : ईसा की सातवीं शताब्दी में नहुआ जातियाँ उत्तर की ओर से आकर बसने लगीं। उनमें से एक मुख्य टोलेक जाति ने एक नगर टोल्लन (आवु० टोला ग्राम) की आधारशिला रखी। एक अन्य चिचिमेक जाति ने आकर टोलेक जाति को नष्ट कर दिया परन्तु चिचिमेकों ने पराजित जातियों की संस्कृति को अपना लिया। चिचिमेकों की एक उपजाति अज़टेक (Aztec) थी जिसने एक दूसरे नगर की स्थापना की। इसका नाम अनाहुआक¹ (Anahuac) था जो आज मैक्सिको की राजधानी है।

१५१६ में हर्नान कोर्टेज़ ने अन्य जातियों के सहयोग से, जो अज़टेक राज्य के विरुद्ध थीं, इस राज्य को नष्ट कर दिया और मैक्सिको नगर की स्थापना की। शनैः शनैः सारी रेड - इण्डियन जातियों की सत्ता को नष्ट करके स्पेन निवासियों ने अपनी जागीरें स्थापित करना आरम्भ कर दिया। उधर स्पेन राज्य अपना पूर्ण अधिकार जमाना चाहता था। फलस्वरूप एक लम्बे समय तक विद्रोह की अग्नि जलती रही। १८२१ में मैक्सिको स्वतंत्र हुआ १८२२ में आगस्टिन दि ईतुरबिडे (Augustine de Iturbide) सम्राट बना परन्तु १८२३ में उसने राज त्याग दिया। १८२४ में मैक्सिको एक लोकतंत्र राज्य बन गया। १८४६ में अमरीका से युद्ध हुआ जिसमें मैक्सिको की पराजय हुई और कैलीफ़ोर्निया का भाग अमरीका ने डेढ़ लाख डॉलर देकर अपने अधीन कर लिया।

१८६३ में आस्ट्रिया के एक राजकुमार को मैक्सिमिलियन के नाम से सम्राट बनाया गया। कुछ दिन पश्चात् उसका वध कर दिया गया। कुछ दिनों की अराजकता के पश्चात् डायज़ राष्ट्रपति बनाया गया। १९११ में जब कई विद्रोह हुये तो उसको भागना पड़ा। तत्पश्चात् म्देरो राष्ट्रपति बना। १९१३ में उसका भी वध कर दिया गया। तदनन्तर सेनापति हुयेरतास राष्ट्रपति बना। उसने शासन को कड़ा किया परन्तु १९१४ में उसे भी भागना पड़ा। अमरीका के सहयोग से करांज़ा को नियुक्त किया। १९२० में उसका वध कर दिया गया। १९२४ में दूसरे राष्ट्रपति आब्रेगोन का वध कर दिया गया। १९२४ से कालेज़ राष्ट्रपति बना। इसने कुछ सुधार किये। १९२८ में पोर्टेज़ गिल राष्ट्रपति बना जिसने कालेज़ को देश से निर्वासित करा दिया। इसी प्रकार अनेक राष्ट्रपति बने और कुछ सुधार होते रहे।

लेखन कला : स्पेन के निवासियों के आने के पूर्व अज़टेक राज्य बड़ा शक्तिशाली एवं समृद्ध था। यहाँ कई प्रकार की कला जैसे पत्थर का काम, मिट्टी के बर्तन, बुनाई तथा बहुत सुन्दर रंगारंग के काम होते थे। साथ

1. कुछ विद्वानों का विचार है कि टिनाक्टिखन नगर, जो अज़टेकों ने बसाया था वर्तमान मैक्सिको है।

साथ लेखन कला की भी उत्पत्ति हुई। इन लोगों ने भी सर्वप्रथम दैनिक जीवन सम्बन्धी वस्तुओं के चित्रों से अपनी लिपि का आविष्कार किया। इसका प्रयोग यह लोग बड़े पशुओं की खालों पर लिख कर किया करते थे। मैक्सिको का पंचांग ६१३ ई० से आरम्भ होता है और तभी से लिपि का जन्म भी माना जाता है (फ० सं० - ३७४)।

अजुटेक - पंचांग का एक उदाहरण : इसका उल्लेख निम्नलिखित है (फ० सं० - ३७६ के नीचे)।

१. १८०० में इकोटा जाति के ३० लोगों को क्राउन जाति ने मार डाला।
२. १८०१ में, चेचक की महामारी फैल गयी।
३. १८०२ में घोड़ों की चोरी हो गयी।
४. १८०३ में खांसी का रोग फैल गया।

अजुटेक - अंक : ये आदिवासी अंक - गणित^१ का भी पर्याप्त ज्ञान रखते थे जो 'फ० सं० - ३७४' पर दिया गया है।

अजुटेक चित्र - लिपि : 'फ० सं० - ३७५ - ७६' पर अजुटेक चित्र - लिपि दी गयी है तथा प्रत्येक चित्र के ऊपर उसके अर्थ दिये गये हैं।

अजुटेक गणित

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
•	••	•••	••••	•••••	••••••	•••••••	••••••••	•••••••••	◊
१५	२०	३०	४०	५०	६०				
◊•••	P	P◊	PP	PP◊	PPP	PPP•••			
८२	१००	२००	४००	८००	१०००	२०००			
PPPP••	≡	≡	≡	≡	≡	≡	≡	≡	≡

अजुटेक जाति की चित्र-लिपि

आकाश	वर्षा	बादल	बिजली	बिजली-वर्षा	सूर्य
चन्द्र	प्रकाश	ग्रहण लगना	तारे	प्रातःकाल	प्रातः
मध्याह्न	संध्या	रात्रि	रात्रि	समय	वर्ष
एक दिन	दो दिन	तीन दिन	एक माह	पर्वत	द्वीप
सागर	नदी	पुरुष	स्त्री पुरुष	मृत स्त्री पुरुष	जीवनमृत्यु
देखना	पहनना	बात करना	घर दिल	घोड़ा युद्ध	शान्ति

अजटैक जाति के कुछ अन्यचित्र

शुद्ध जल 	अशांत जल  तथा आंधी	टांग 	टूटी टांग 	चैचक 
निवास स्थान 	शक्ति 	गौरामनुष्य 	जल प्रपात 	अत्याधिक 
बौलना 	पुद्ध करौ 	पुद्ध करौ 	पुद्ध करौ 	पत्थर 
मिट्टीका बर्तन 	विधवा 	जल 	शिकरा 	रात्रि 
अजटैक पंचांग का एक उदाहरण				
 १	 २	 ३	 ४	
१८०० में	१८०१ में	१८०२ में	१८०३ में	

विश्वोत्पत्ति की कहानी

अमरीका की एक प्राचीन (रेड — इण्डियन) जाति लेनी — लेनापे के लोगों ने स्वयं अपनी चित्रात्मक लिपि द्वारा, 'विश्व की उत्पत्ति की कहानी' को अंकित करके निर्माण किया। विश्वोत्पत्ति को उनकी भाषा में 'वलम ओलम' (Walam Olum) कहते हैं।

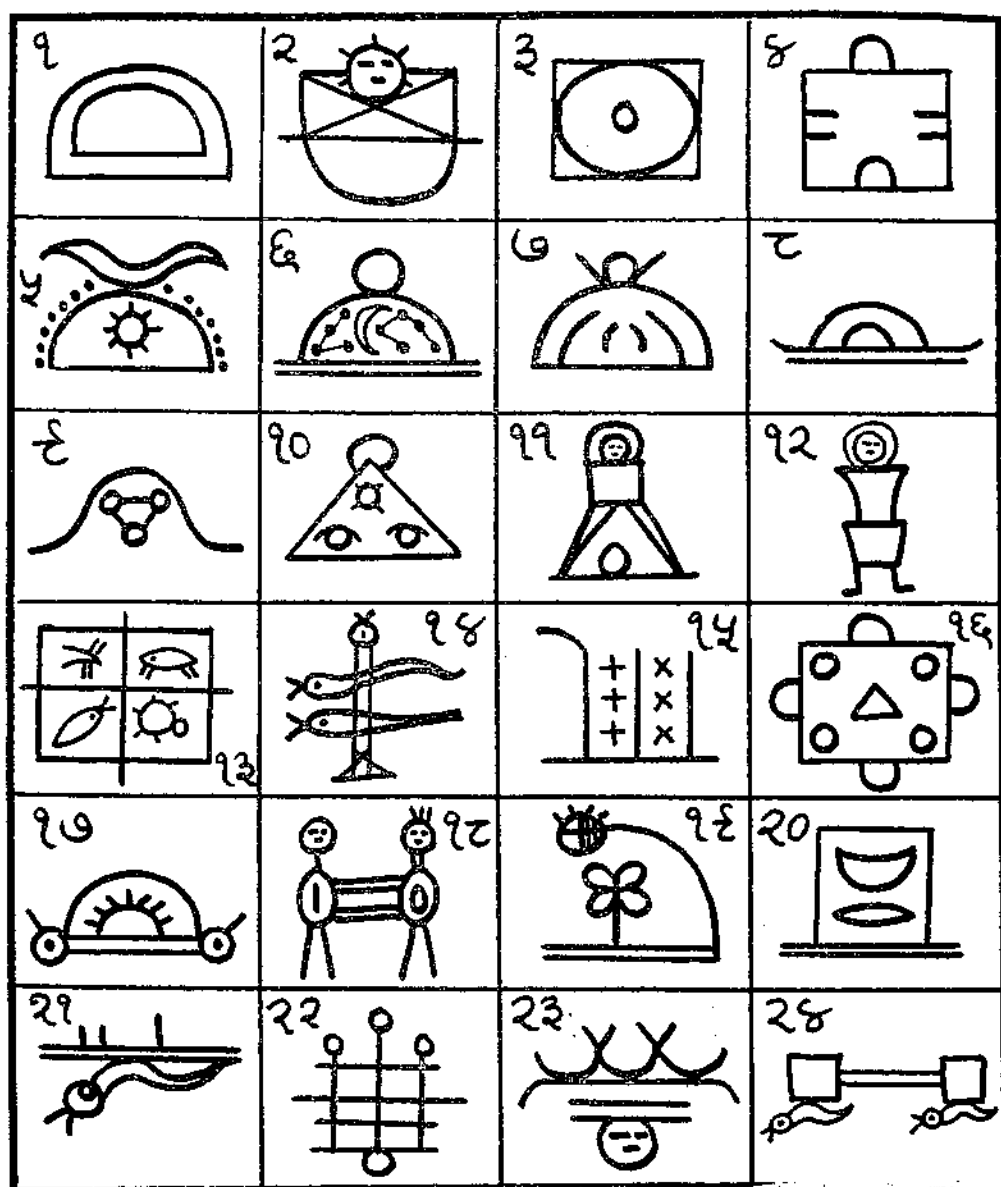
इन चित्रों के अर्थ निम्नलिखित हैं :—(फ० सं० — ३७७)

- १—सर्वप्रथम किसी स्थान पर, कहीं, पृथ्वी के ऊपर।
 - २—पृथ्वी के ऊपर कोहरा ही कोहरा था और उसमें मनीटो^१ था।
 - ३—सर्वप्रथम अन्तरिक्ष में प्रत्येक स्थान पर केवल वही महान् मनीटो था।
 - ४—उसने आकाश तथा पृथ्वी का निर्माण किया।
 - ५—उसने सूर्य, चन्द्र और तारे बनाये।
 - ६—उसने उनको गति प्रदान करके चलाया।
 - ७—तदनन्तर पवन के झोंके चलने लगे।
 - ८—उसने पानी को और तब कई छोटे बड़े द्वीपों को उत्पन्न किया।
 - ९—तत्पश्चात् मनीटो अन्य छोटे मनीटों से बोला।
 - १०—यह अन्य प्राणियों से, आत्माओं से और सबसे बोला।
 - ११—यह सबका, सब मनुष्यों का पितामहा था।
 - १२—उसी ने सब प्राणियों के लिये सर्वप्रथम माँ दी।
 - १३—उसने मछली, कछुये, पशु तथा पक्षी दिये।
 - १४—परन्तु एक दुष्ट मनीटो भी था जिसने वुष्टों की तथा दानवों की उत्पत्ति की।
 - १५—उसने मक्खियों तथा कीड़े — मकोड़ों को उत्पन्न किया।
 - १६—तब सब मिल — जुल कर निवास करने लगे।
 - १७—मनीटो बड़ा कृपालु था।
 - १८—उसने सबसे पहली वाली माताओं को तथा उनकी सन्तानों को आशीर्वाद दिया।
 - १९—उनके लिये भोजन लाया (उनकी इच्छानुसार)।
 - २०—तब सब प्राणी प्रसन्न थे, सब आराम से रहते थे और सब प्रसन्नता — पूर्वक विचार करते थे।
 - २१—बड़े गोपनीय ढंग से एक दुष्ट शक्तिमान जादूगर पृथ्वी पर उतरा।
 - २२—उसी के साथ बुराईयाँ, झगड़े तथा दुःख भी आये।
 - २३—वही अपने साथ हानिकारक जलवायु, रोग तथा मृत्यु लाया।
 - २४—यह सब कहीं बीच में हुआ।
- उपर्युक्त कहानी के रेखा — चित्र डैनियल जी ब्रिन्टन (Daniel G. Brinton) की एक पुस्तक^२ से लिये गये हैं।

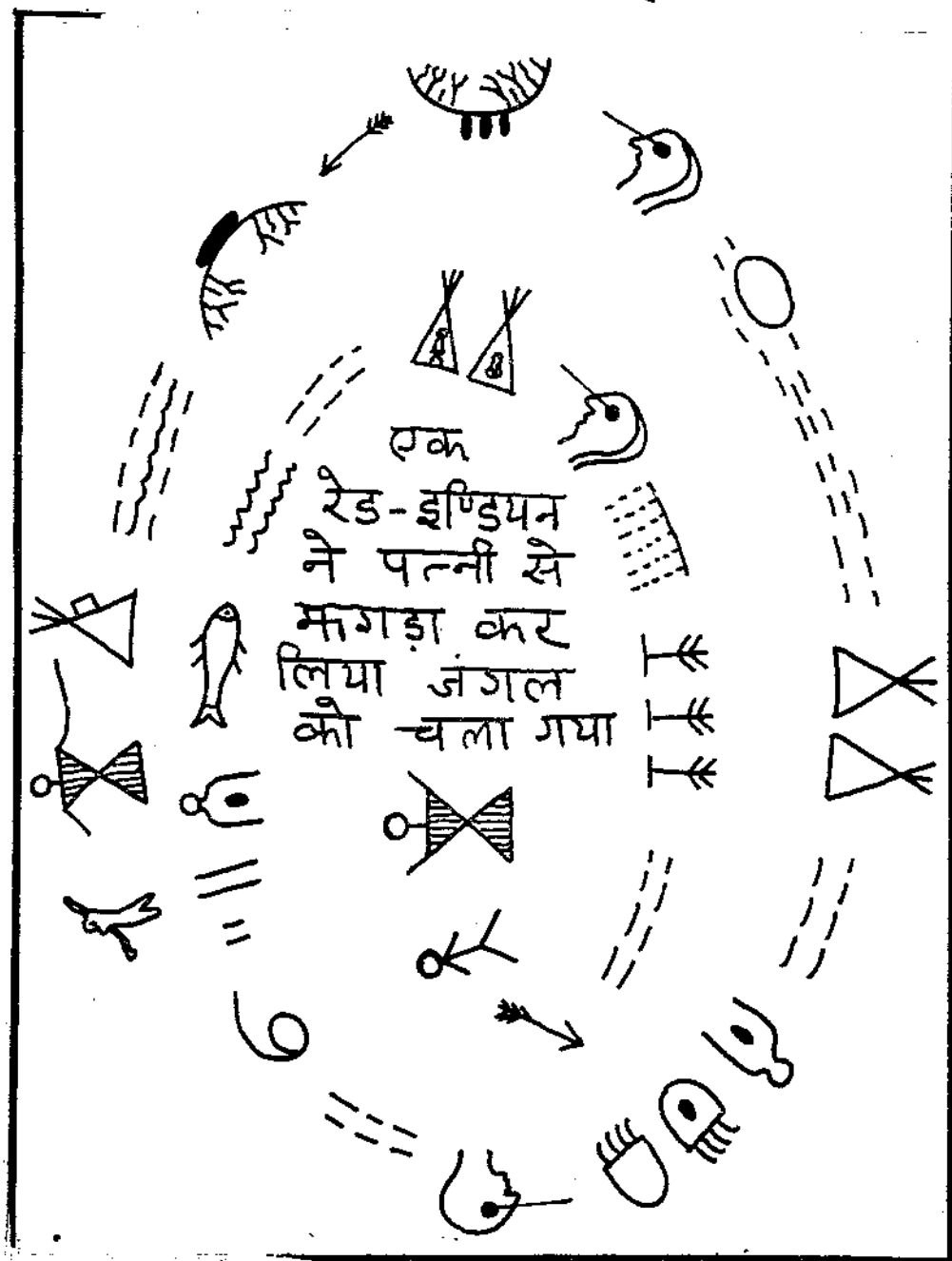
१. एक शक्ति का रूप, कोई सृष्टि — कर्त्ता, ईश्वर आदि।

२. Brinton, G. Daniel : Library of Aboriginal American Literature (1885), p — 295.

विश्वोत्पत्ति की कहानी



एक रेड -इण्डियन की कहानी



चित्र-लिपि में एक अन्य कहानी : उन्नीसवीं सदी के आरम्भ तक उत्तरी अमरीका के कुछ रेड - इण्डियन जाति के लोग चित्र - लिपि का प्रयोग करते रहे। उनमें से एक मनुष्य ने अपनी एक कहानी¹ चित्र - लिपि में लिख दी जिसको मध्य से आरम्भ किया गया है और जिसके अर्थ निम्नलिखित हैं :—

एक रेड - इण्डियन ने अपनी पत्नी से झगड़ा कर लिया। वह शिकार को जाना चाहता था। उसने अपना वनुष - बाण उठाया और जंगल की ओर चल दिया। रास्ते में बर्फ गिरने लगी। उसने बचने के स्थान की खोज की। उसको दो डेरे दिखायी दिये। एक में एक बालक तथा दूसरे में एक मनुष्य - परन्तु दोनों चेचक से पीड़ित थे। उनको देखकर वह भागा और एक नदी के किनारे पहुँचा। नदी में उसने मछलियाँ देखीं। उसने उनको मारा और खा गया। दो दिन ठहरा और पुनः चल पड़ा। तब उसने एक रीछ देखा और उसको मार कर खा गया। वह फिर चल दिया। चलते - चलते उसने एक गाँव देखा। वहाँ लोग उसके दुश्मन निकले इस कारण वह वहाँ से भागा और एक झील के किनारे होता हुआ आगे बढ़ा। वहाँ उसने एक हिरण देखा। उसको मार दिया और बसीट कर अपने घर ले गया। वह पुनः अपने बच्चे एवं पत्नी से जा मिला (फ० सं० - ३७८)।

यूकेटान

इतिहास : प्राचीन काल में ई० पू० की प्रथम शताब्दी में मय (Maya)² जाति के लोग यहाँ आकर बसने लगे। अमरीका में संस्कृति के तीन केन्द्र थे। मैक्सिको में अज़टेकों का, मध्य अमरीका में मय लोगों का तथा दक्षिण अमरीका (पीरू) में इन्का लोगों का निवास था। विद्वानों का मत है कि यह तीनों जातियाँ सम्भवतः एशिया के उत्तर - पूर्वी कोने से गुज़र कर अलास्का होते हुए अमरीका पहुँची होंगी। इस बात का कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है परन्तु फिर भी यह धारणा मान्य होने लगी है। दो प्रख्यात ब्रिटेन निवासी पुरातत्व वेत्ताओं, जे० एरिक (J. Eric) तथा एस० थॉम्पसन (S. Thompson), के अनुसार, जिन्होंने अपने जीवन के अनेक वर्ष मय - सम्यता - केन्द्रों के भास पास की भूमि का उत्खनन करने तथा खोज करने में अर्पण कर दिये, मय लोग लगभग ई० पू० की पाँचवीं शताब्दी में यहाँ आकर बसने लगे थे। उन्होंने अपनी एक भिन्न प्रकार की संस्कृति को जन्म दिया, जो चौथी ईसवी में पर्याप्त बृद्ध हो चुकी थी।

छठी शताब्दी तक उनका यूकेटान³ के आसपास की भूमि में एक राज्य स्थापित हो चुका था। नवीं शताब्दी तक उन्होंने कई नगरों का निर्माण कर लिया था। दसवीं शताब्दी में मय लोगों ने तीन राज्यों का एक संघ स्थापित कर लिया था जिसका केन्द्र उक्समाल (उसमल) था। इस संघ का नाम मयपान - संघ था।

इतनी सम्य तथा शक्तिशाली जाति पुरोहित वर्ग के अंकुश से दबी हुई थी। प्रत्येक व्यक्तिगत तथा सामूहिक समस्या का हल तथा कारण का ज्ञान पुरोहितों के ही पास था। वे लोग ज्योतिष - विज्ञान के भी ज्ञाता माने जाते थे। आपसी फूट के कारण ११९० ई० में मयपान - संघ नष्ट हो गया। सत्ता विभाजित हो गई। तेरहवीं सदी में मैक्सिको की ओर से अन्य जातियों के आक्रमण होने लगे और चौदहवीं सदी में अज़टेकों ने मय राज्य पर अपना

1. Tomkins, W. : Universal Indian Sign Language of the plain's Indians of North America, San Diego - (California-1927), P. - 219.

2. मय (Maya) का उच्चारण कनाडा निवासी 'माईया' करते हैं, कुछ विद्वान् 'माया' (श्री भूषेन्द्रनाथ सन्याल ने अपनी पुस्तक 'आदिम मानव समाज - १९६१' में 'माया' का ही प्रयोग किया है) करते हैं तथा कुछ विद्वान 'मे' करते हैं।

3. युकेटान = युक् का देश; 'युक्' एक प्रकार के छोटे नृगों को कहते थे जो यहाँ अधिक संख्या में फिरते रहते थे।

अधिकार कर लिया। इन्होंने अपना एक सुन्दर मुख्य नगर टिनोक्टिलन का निर्माण किया और दो सौ वर्ष तक राज्य किया।

इन जातियों में देवताओं को प्रसन्न करने के लिये बलि दी जाने की प्रथा थी। प्रत्येक वर्ष लगभग सैकड़ों मनुष्यों के पेटों को चीर कर दिल निकाल लिया जाता था और उनको इसी प्रकार तड़पता छोड़ दिया जाता था। इनका राज्य डण्डे के जोर से चलता था। शासक स्वयं एक देवता स्वरूप माना जाता था।

यूकेटान का इतिहास उस अभियान से आरम्भ होता है जो हर्नेन्दीज दि कार्दोवा (Hernandez de Cardova) के अधीन आरम्भ हुआ। वह क्यूबा में निवास करने लगा था। इसी को १५१७ को फरवरी को यूकेटान का पूर्वी किनारा ज्ञात हुआ जब कि यह दासों को पकड़ने के लिए इधर-उधर जाया करता था। १५१८ में जुआन दि ग्रीजाल्वा ने भी वही मार्ग अपनाया। १५१९ में एक तीसरा अभियान उसी हर्मेन कोर्तेज के अन्तर्गत आया जिसने मैक्सिको को परास्त किया था। इसने कई युद्ध किये। १५२५ में यूकेटान प्रायद्वीप को पार किया गया और अभियान — दल होन्डु राज पहुँचा। फ्रांसिस्को दि मोन्तेजो को कार्तेज से अधिक कष्ट उठाने पड़े तथा युद्ध करने पड़े। अन्त में १५४९ में स्पेन का शासन स्थापित हुआ। आगे का इतिहास मैक्सिको के साथ ही है। क्योंकि यूकेटान उसी देश का एक भाग है।

लिपि : यहाँ की प्राचीन लिपि का सम्बन्ध मय जाति के लोगों से है। आदिम जातियों की अन्य सभ्यताओं से इनकी जाति की सभ्यता को सर्वश्रेष्ठ माना गया है। श्री भूपेन्द्रनाथ सन्याल के अनुसार इन लोगों ने भारत से पूर्व 'शून्य' का आविष्कार कर लिया था। ज्योतिष विज्ञान तथा गणित यहाँ प्रचलित था। मिस्र जैसे पिरामिडों का निर्माण भी इन लोगों ने किया था। इनकी आरम्भिक लिपि हिन्दी व मिस्र जैसी ही चित्रात्मक थी जो पत्थरों पर उत्कीर्ण की जाती थी परन्तु आज तक इसका रहस्योद्घाटन न हो सका। लिपि के विषय में जो कुछ भी ज्ञान प्राप्त हो सका वह केवल एक धर्म प्रचारक दियेगो दि लान्दा (Diego de Landa) के, जिसने १५६५ में मय सभ्यता का एक इतिहास लिखा था, द्वारा ही प्राप्त हो सका। कुछ विद्वानों का विचार है कि लान्दा ने ही उनके प्राचीन अभिलेखों को, जो कागज तथा खालों पर अंकित किये गये थे, नष्ट किया।

१८६३ में एक फ्रांस-निवासी ब्रासिओर दि बोरगबोर्ग (Brasseur de Bourbourg) को मैड्रिड (स्पेन) से एक पाण्डुलिपि प्राप्त हुई जो लान्दा¹ द्वारा १५६६ में लिखी गई थी। इसमें लान्दा ने मय के हेरोग्लिफ्स की एक वर्णमाला तैयार की थी जिसको पुरातत्व-वेत्ताओं तथा भाषा-विशेषज्ञों ने काल्पनिक कृति मान कर कोई मान्यता प्रदान नहीं की (फ० सं०-३८०)।

मय लोगों ने अपना पंचांग भी बनाया था। वे एक माह के बीस दिवस तथा एक वर्ष में १८ माह मानते थे। पांच दिन जो शेष रह गये वे उनको अशुभ मानकर अपने पंचांग को अपवित्र नहीं करते थे। उन दिनों वे अपने घरों से निकल कर कुछ दूर पर बाहर रहा करते थे। तत्पश्चात् मन्दिर की अग्नि लेकर वे अपने घर में अग्नि का

1. Landa, Diego de : *Relacion de las cosas de yucatan* (1566)

(Republished by Brasseur in 1864).

मय चित्र लिपि के वर्ण (लान्दा द्वारा)

अ	अ	आ	ब	बा	क	त	ए
ह	इ	क	ल	ला	म	व	ओ
औ	प	प्प	क्व	क्सू	उ	ज	त्स

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
•	••	•••	••••	—	•	••	•••	••••	•••••
११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
•••••	•••••	•••••	•••••	•••••	•••••	•••••	•••••	•••••	•••••
$20 \times 3 = 60, 20 \times 7 = 140, 20 \times 10 = 200, \times 18 = 360, \times 19 = 380, \times 14 = 280$									

फलक संख्या - १८०

मय जाति का पंचांग

पाय 	उम्रौ 	जिप 	जाक
जैक 	कसुल 	ग्रक्सन 	मोल
चैन 	याक्स 	जक 	कैह
मैक 	कैकिन 	मोन 	पैक्स
क्याब 	काम्क 	१ वर्ष में १८ मास = २० दिन	
२ 	३ 	४ 	५

प्रयोग करते थे। पुरोहितवाद के कारण अनेक देवताओं की पूजा होती थी। उनकी लिपि में भी देवताओं की मुखाकृतियों का अधिक समावेश है। उन्होंने भी चित्रात्मक से वर्णात्मक की ओर प्रगति की थी परन्तु अज़टेक के आक्रमणों ने सब नष्ट — भ्रष्ट कर दिया। मयपान का विशाल साम्राज्य सिकुड़ कर पेटेन की झील के एक छोटे से द्वीप व्यासल पर सीमित रह गया था।

अंक : अंकों के निर्माण तथा गणित का उदाहरण 'फ० सं० — ३८०' पर नीचे की ओर दिया गया है।

पंचांग का विवरण : 'फ० सं० — ३८१' पर ऊपर की ओर १८ महीनों के नाम दिये हुए हैं। नीचे पांच चित्र निम्नलिखित हैं:—

- १— **किन** — एक दिन अथवा सूर्य।
- २— **उइनल** — एक माह बीस दिन का।
- ३— **तुन** — एक वर्ष ३६० दिन का।
- ४— **काटुन** — जिसमें २० तुन होते हैं अथवा ७२०० दिन।
- ५— **बक्कुन** — जिसमें २० काटुन होते हैं अथवा १४४००० दिन।

अलघेनी

इतिहास : अलघेनी का आधुनिक नाम ओक्लाहोमा है। दसवीं सदी के लगभग यहां रेड — इण्डियनों^१ की एक जाति चैरोकी (Cherokee) उत्तर की ओर से आकर बस गई थी। 'चैरोकी' शब्द के अर्थ हैं कंदरा — निवासी। यह भू — भाग अमरीका के (संयुक्त राष्ट्र संघ) के दक्षिण में स्थित है। सर्वप्रथम ग्यारहवीं सदी में एरिक्सन इस देश के पूर्वी किनारे पर पहुँचा तत्पश्चात् कोलम्बस, जॉन कैबट, जैक्स कार्टियर आदि पहुँचे जिन्होंने यूरोप निवासियों के लिये एक रास्ता खोल दिया। बहुधा स्पेन, इंग्लैण्ड तथा फ्रांस के लोग यहाँ आकर बसने लगे। १५६५ से इन लोगों ने अपनी — अपनी जागीरें बनाना आरम्भ कर दिया। फ्रांस और इंग्लैण्ड में, आविष्य जमाने के कारण १६८९ से १७६३ तक युद्ध होते रहे। फ्रांस की पराजय के पश्चात् इंग्लैण्ड की सरकार सारे अमरीका को अपने अधीन रखना चाहती थी जिसके कारण जागीरदारों ने इंग्लैण्ड की सरकार को विरुद्ध विद्रोह कर दिया। ४ जुलाई १७७६ को अमरीका ने स्वतंत्र होने की घोषणा कर दी। उस समय केवल तेरह जागीरों ने मिल कर एक संघ स्थापित किया।

अब उत्तर एवं दक्षिण के जागीरदारों में १८६१ — ६५ के मध्य गृह — युद्ध छिड़ गया जिसमें उत्तरी पक्ष की विजय हुई। चैरोकी जाति के लोगों ने इस गृह — युद्ध में उत्तरी पक्ष वालों का साथ दिया। इन लोगों के सम्पर्क में आने वाला पहला यूरोप निवासी दि सोटो था जो यहां १५४० में आया। इंग्लैण्ड से युद्ध के बाद जब अमरीका एक भू में बँध गया तब चैरोकी जाति के लोग सिमट कर ओक्लाहोमा में आ गये। अमरीका की सरकार ने इनकी जाति को सभ्य समझ कर मान्यता प्रदान कर दी और तब १८२० में इन लोगों ने अपना एक राज्य स्थापित कर

१. यह नाम एक भूल के फलस्वरूप पड़ गया जो क्लास्टोकोर कोलम्बस ने १४९२ में यह समझकर की थी कि वह इण्डिया के देश में पहुँच गया।

चेरोकी लिपि के वर्ण

स्वर	अ - D	ए - R	ई - T	ओ	ऊ
गा	गे	गी	गो	गू	गुला
f	h	y	A	J	l
हा	है	ही	हो	हू	हुला
04	2	A	T	Γ	6
जा	जे	जी	जो	जू	जुला
6	V	H	K	J	
ला	ले	ली	लो	लू	लुला
W	u	Γ	G	M	Q
मा	मे	मी	मो	मू	मुला
W	04	H	3	y	6
ना	नै	नी	नो	नू	नुला
0	h	h	Z	2	j
गवा	ग्वै	ग्वी	ग्वो	ग्वू	ग्वुला
I	0	y	M	Q	6
सा	से	सी	सो	सू	सुला
U	4	b	k	h	6
डा	डै	डी	डो	डू	डुला
6	5	h	h	S	W
					W
					h
					h

लिया। इनकी राजधानी का नाम तैलेहकुआ था। इनका राज्य १९०६ ई० तक चलता रहा तत्पश्चात् इस जाति के सब लोग अमरीका के नागरिक हो गये।

लिपि : चैरोकी लिपि का आविष्कार, एक इन्हीं की जाति के विद्वान् सिक्वई (Sikwayi) अथवा सेक्यू - ओयाह (Sequoyah) ने (एक चित्र - लिपि) किया। तत्पश्चात् इस में सुधार कर के १८२४ में भानू-भापा के अनुरूप एक वर्णमाला^१ तैयार कर दी। इसमें ८५ वर्ण हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि सिक्वई को रोमन वर्णों का ज्ञान था। १९०२ तक इसका प्रयोग होता रहा परन्तु बाद में इसका स्थान रोमन लिपि ने ले लिया और इसका लोप हो गया (फ० सं०—३८२)।

मैनीटोबा

इतिहास : मैनीटोबा आधुनिक कनाडा देश का एक प्रांत है जो हुडसन^२ खाड़ी के दक्षिण में स्थित है। इसी के उत्तर पश्चिम में एक नदी है जिसका नाम चर्चिल है। नदी के दक्षिण की ओर तथा मैनीटोबा में रेड-इण्डियन जाति की एक उपजाति निवास करती है। इस जाति का नाम 'क्री' है। यह लोग जंगल में निवास करते थे तथा जंगली भैंसों का शिकार करते थे। अब इस जाति के लोगों ने आधुनिक सभ्यता को अपना लिया है।

लिपि : १८४० ई० में क्री जाति के लोगों के साथ एक ईसाई मेथॉडिस्ट - धर्म - प्रचारक जे० ईवान्स (James Evans) रहता था। उसी ने जॉन मैक्लीन (John Mclean) के सहयोग से यहाँ की क्री (Cree) भाषा के अनुरूप एक लिपि^३ का आविष्कार किया। उसने इस लिपि में नई बाइबिल (New Testament) के कुछ भागों का अनुवाद किया। उसने इस कार्य के लिये एक मुद्रणालय की भी स्थापित किया जिसमें इस लिपि के वर्णों में मुद्रण कार्य होता था। क्री लिपि में ४४ चिह्न हैं, जो एक ईशु^४ की प्रार्थना के पाठ के साथ 'फ० सं० - ३८३' पर दिये गये हैं।

एलास्का

इतिहास : सर्वप्रथम स्पेन को इस भूभाग के विषय में कुछ ज्ञान प्राप्त हुआ। तत्पश्चात् १७२८ में वाइटस बेरिंग ने इस जलसंयोजी को पार किया और उन्हीं के नाम पर इसका नाम बेरिंग जलसंयोजी पड़ा। १७३१ में गिरोसडेफ्ट (Giroseft) ने अमरीका की ओर का किनारा देखा। १७४१ में बेरिंग ने पुनः अलेक्सी चिरीकोव, जो साइबेरिया का निवासी था, के साथ यहाँ के कई द्वीप की यात्रा की परन्तु इस अभियान में बेरिंग का जलपोत नष्ट हो गया और उसकी शीत के कारण ८ दिसम्बर १७४१ को मृत्यु हो गई। तीस पैंतीस वर्ष के पश्चात् रूस ने कई अभियान एलास्का भेजे जिनके कारण वहाँ के निवासियों से सम्पर्क बढ़े तथा उनके साथ सुन्दर, मुलायम तथा बालवाली खालों का व्यापार भी आरम्भ हो गया।

1. Pickering : Über die indianischen sprachen Amerikas, (Leipzig - 1834), p - 58.

2. हेनरी हुडसन पहला व्यक्ति था जो घने जंगलों में घूमा। यह सोलहवीं श० के मध्य क्री जाति के लोगों के सम्पर्क में आया था। इसी के नाम पर हुडसन खाड़ी का नाम पड़ा।

3. Pilling, J. C. : 'Bibliography of the Algonquin Languages' - Bureau of Ethnology Misc. Pub. XIII (1891). Page 284.

4. 'ट्रेसो' ईशु (जीसस) के लिये प्रयोग किया गया है।

शनैः शनैः इंग्लैण्ड के यात्री आने लगे जिनमें से मुख्य जेम्स कुक, जॉर्ज बैंकोवर तथा सर एलेक्जेंडर मिर्केजी थे । कुक का अभियान १७७६ में यहाँ आया था । जब व्यापारियों ने अपने स्वार्थ के कारण यहाँ के रेड — इण्डियन निवासियों को बहुत तंग करना आरम्भ कर दिया, उनको मारने एवं लूटने लगे तो रूस की सरकार ने इस खुले व्यापार पर प्रतिरोध लगा दिया । १७९९ में रूस — अमरीका में एक सन्धि-पत्र पर हस्ताक्षर हुये और अमरीका की कम्पनी का एक निदेशक यहाँ का प्रांतपाल बना दिया गया । इसने १८०४ में सिटका नगर की स्थापना की । अब यही नगर राजकाज का मुख्य नगर बन गया । १८२१ में रूस ने अमरीका एवं इंग्लैण्ड के नाविकों को रोका जिस पर उन देशों ने आपत्ति की । तदनन्तर १८२४ में दोनों देशों के साथ सन्धि हो गयी । यह सन्धि ३१ दिसम्बर १८६१ को समाप्त हो गई । अब राजकुमार मक्सूटोव यहाँ का प्रांतपाल नियुक्त कर दिया गया और पुनः अमरीका एवं इंग्लैण्ड को व्यापार करने की अनुमति प्रदान कर दी गयी । रूस और एलास्का से दूर — भाष्य के लिये तार जोड़ दिये गये । ३० मार्च १८६७ को एक सन्धि द्वारा एलास्का अमरीका के हाथ बेच दिया गया और अमरीका को ७२ लाख डालर देना पड़ा । अब एलास्का अमरीका के राष्ट्रसंघ में सम्मिलित हो गया ।

लिपि : यहाँ की लिपि के विषय में ए० श्मिट (A. Schmitt) तथा जे० हिन्ज (J. Hinz) के द्वारा १८८० में विद्वानों को सूचना प्राप्त हुई । १८८५ में हेरनहूटर (Herranbutter) द्वारा ज्ञात हुआ कि यहाँ एक भावात्मक लिपि प्रचलित थी जिसको यहाँ के एक स्कीमो निवासी नेक (Neck) ने तैयार किया था । इसका एक उदाहरण 'फ० सं०— ३८५' पर नीचे की ओर दिया गया है जिसका अर्थ निम्नलिखित है :— (यह सामुद्रिक शेर के शिकार के विषय में है)

- १—शिकार का पथ प्रदर्शन करता है ।
- २—नाव चलाने का चप्पू लिये है जिसके द्वारा संकेत है कि सामुद्रिक यात्रा को जाना है ।
- ३—अब एक रात विश्राम करना है ।
- ४—एक द्वीप मिला जिस पर दो झोपड़े बने थे ।
- ५—अब पुनः पथ प्रदर्शन करता है ।
- ६—एक दूसरा द्वीप मिला ।
- ७—पुनः रात्रि को विश्राम करना है — उंगली से दो रात्रि का बोध होता है ।
- ८—बायें हाथ में सामुद्रिक — शेर मारने का काँटा है ।
- ९—सामुद्रिक — शेर है ।
- १०—उस शेर को मार कर ले चले ।
- ११—नाव में दो मनुष्य बैठ कर नाव खेने लगे ।
- १२—पथ प्रदर्शक का निवास स्थान है ।

उपर्युक्त बारह चित्रों के अर्थों का भावार्थ है :— “मैं उस द्वीप, जहाँ एक (सामुद्रिक शेर) था, मैं दूसरे द्वीप पर गया जहाँ दो सो रहे थे । मैंने एक शेर मारा और लौट पड़ा ।”¹ इसके अतिरिक्त नेक ने एक रोमन पद्धति के अनुसार वर्णमाला का भी आविष्कार किया जो ३८५ पर ऊपर की ओर दिया गया है ।

1. Hoffman, M. : Transactions of the Anthropological Society, Washington, Vol. II (1883.)

क्री लिपि

अ	बा.पा	टा	का	टशा	ला	मा	ना	वा	सा	या
△	<	C	b	U	∟	L	∩	U	∟	<
ए	बे.पे	टै	कै	टशे	ले	मे	नै	वै	सै	यै
▽	V	U	q	∩	U	7	∩	∩	∟	>
ई	बी.पी	टी	की	टशी	ली	मी	नी	वी	सी	यी
△	^	∩	P	∩	∩	∟	∩	∩	∟	<
ओ	बो.पो	टो	को	टशो	लो	मो	नो	वो	सो	यो
▷	>	∩	d	∩	∟	∟	∩	∩	∟	>

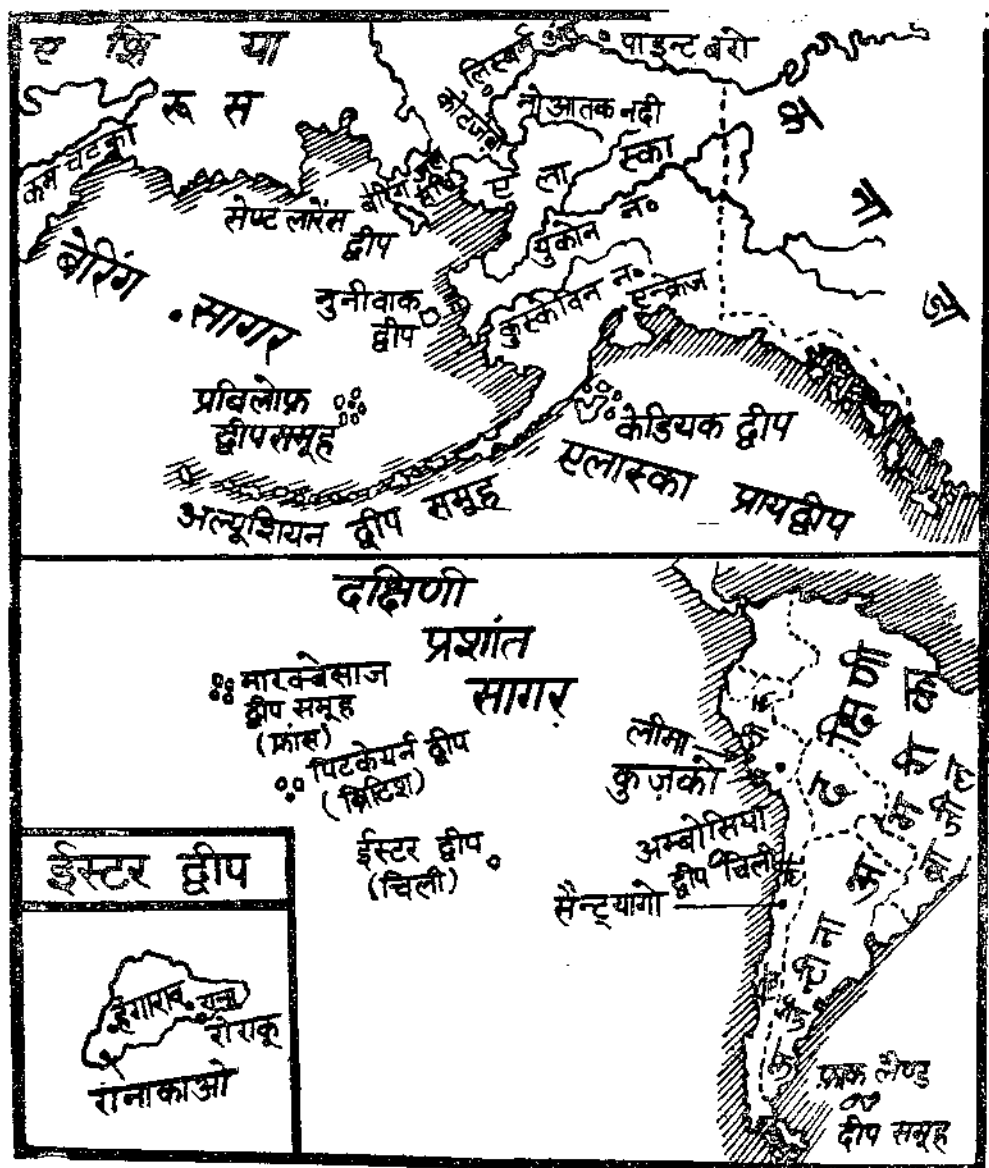
प्रार्थना-पुस्तक का शीर्षक

△ ∟ ∟ ∟ ∟ ∟ ∟ ∟ ∟ ∟ ∟
अ-ना-मी-ई मा-सी-ना इ-का-टशे-सो ओ-ई-सी-टा-वी-ओ

b> <△ ∟ ∟ ∟ ∟ ∟ ∟ ∟ ∟ ∟ ∟
का-पे अ-ना-मी-ई ना-का-मो-ना(त) टा-को-पी-ई का-टे-वा(त)

∟ ∟ ∟ ∟ ∟ ∟ ∟ ∟ ∟ ∟
मी ए-सी-टा-व(त) का-टो-ली(क) अ-ना-मी-ई टशी(क)
प्रार्थना पुस्तक जीसस धर्म के भक्ति पूर्ण गाने इसमें छपे हैं

एलास्का

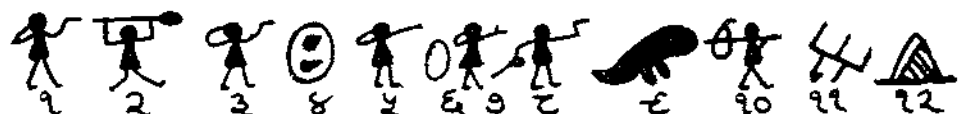


एलास्का की वर्ण माला


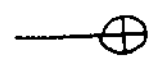

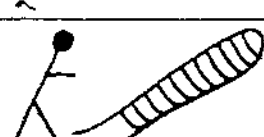
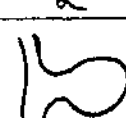
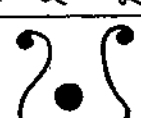
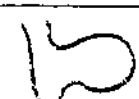




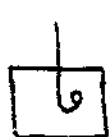

अ A	इ C	ऊ U	पा P	पे K	पू T	वा 5
वै P	वू F	मा M	मे M	मू Q	टो H	टै L
त्सा Y	सै Y	सू N	ना Th	नै U	नू W	का Tu
के Ln	कू Y	गा U	गे J	गू K	नंगा T	नंगे P
नंगू L	का Zu	कै J	कू I	रा Q	रे T	रू J
मा 3	ये T	यू Zu	ला K	ले K	लू Zu	टू Zu

कुछ मुख्य चिन्ह

अर Y	अग S	इग 3	मिक Z	टिट Zu	इइत We	कुट K
काक W	टलू Z	उगा W	प्राचीन लिपि चित्र			



मोटजेबू क्षेत्र की चित्र लिपि

जीसस निपलैतैलगाह ईलाह ऊवानंगा			
SUS			
जीसस बोलते हैं	उसको	मैं	
टू मोरू नंगा । सूली ईलू मू टू रोक			
			
ही मार्ग हूँ	और	(मैं ही) सत्य हूँ	
सूली ई न्यूलिक ई नूक टी के चूमीनेचूक			
			
और (मैं ही) जीवन हूँ । मनुष्य नहीं आता			
अब पा मून ऐंगलन ऊबुष कून			
			(जॉन १४:६)
पिता (ईश्वर) के पास सिवाय मेरे द्वारा			

यह दोनों प्रकार की लिपियाँ तो कुस्कोविम नदी के दक्षिण की ओर प्रचलित हुईं परन्तु उत्तर को ओर लगभग ४५० मील दूर कोटजेबू के निकट श्मित द्वारा ही एक अन्य चित्रात्मक लिपि का पता लगा। इस लिपि का रहस्योद्घाटन तथा अनुवाद एक पुस्तक^१ से लिया गया है। 'क० स० - ३८६' पर उसका एक आंशिक पाठ उदाहरणार्थ दिया गया है।

इस पाठ के भावार्थ हुये :—जीसस कहते हैं "मैं ही मनुष्य को मार्ग दिखाने वाला हूँ, मैं ही सत्य हूँ, मैं ही जीवन हूँ और मेरे बिना मनुष्य अपने पिता (ईश्वर) के पास नहीं पहुँच सकता।"

ईस्टर द्वीप

इतिहास : इसका प्राचीन नाम रपानुई था। यह एक वृक्षरहित पथरीला, लगभग पचास वर्ग-मील क्षेत्र का प्रशांत महासागर में स्थित एक छोटा सा द्वीप है। दक्षिणी अमरीका के पश्चिमी किनारे के चिली देश, जिसके अब यह अधीन है, से लगभग २५०० मील है। संयोगवश १७२२ के ईस्टर-दिवस पर एक डच नाविक जैकब रोगवीन् (Jacob Roggeveen) यहाँ पहुँचा जिसके कारण उसने इस द्वीप का नाम ईस्टर द्वीप रख दिया। तदनन्तर १७७० में गोंजालिस (Gonzales) ने, १७७४ में कैप्टेन कुक (Captain Cook) ने तथा १७८६ में ला पेरौज (La Perouse) ने इस द्वीप की यात्रा की। १८१४ में इस क्षेत्र का सर्वप्रथम निरीक्षण करने तथा पुरातात्विक सर्वेक्षण करने एक महिला श्रीमती कैथीन रूटलेज (Katherine Routledge) आईं। इन्होंने इस द्वीप की पूरी यात्रा की तथा लगभग चार सौ प्रस्तर की मूर्तियों का, अनेक शिलालेखों का तथा कई लकड़ी की उत्कीर्ण पाटियों का निरीक्षण किया। १८३४ में बेल्जियम के एक पुरातत्त्व-वेत्ता हेनरी लावाचरी (Henry Lavachery) फ्रांस के अल्फ्रेड मेत्रो^२ (Alfred Mtraux) के साथ आये। इन्होंने इस द्वीप की चित्र-लिपि पर, जो अनेक शिलाओं पर उत्कीर्ण थी, अपना शोध कार्य किया। १८३५ में नार्वे से विद्वानों की एक टोली आई जिसका नेता थोर हेयरदहल (Thor Heyerdahl) थे। इस टोली के एक पुरातत्त्व-वेत्ता ए० स्क्योल्सवोल्ड (A. Skjolsvold) ने रानो रोरार्कु (Rano Rorarku) के निकट कई स्थानों पर उत्खनन कार्य किये।

उपर्युक्त पुरातत्त्व - वेत्ताओं के सर्वेक्षणों के तथा कार्बन - १४ के परीक्षणों द्वारा यह ज्ञात हुआ कि सर्वप्रथम चौथी शताब्दी^३ में पृथ्वी की नाभि ढूँढते ढूँढते यहाँ एक जाति के लोग आये जिनका राजा होतू मनुआ था। यही लोग इस द्वीप की प्रस्तर-मूर्तियों के निर्माता थे। इन्हीं लोगों ने अपने नेताओं की समाधियों पर बड़े सुन्दर सीढ़ीदार ऊँचे ऊँचे चबूतरे बनवाये, जिनको आहू (Ahu) कहते हैं। इनकी संख्या २६० है। इनमें लगभग सौ मूर्तियों को रोकने के लिए निर्माण किये गये थे। एक आहू पर एक से पन्द्रह मूर्तियाँ तक बनाई गई थीं। इन मूर्तियों द्वारा यहाँ के प्राचीन निवासी अपने पूर्वजों का आदर एवं सम्मान करते थे। मूर्तियों की ऊँचाई बहुधा बारह से बीस फुट है परन्तु एक सबसे ऊँची मूर्ति है जिसकी ऊँचाई ६६ फुट है। उसका भार लगभग पचास टन है। इनका एक पवित्र ग्राम भी था जिसका नाम ओरंगों था। ऐसा प्रतीत होता है कि चेचक के व्यापक रोग से यहाँ के लोग या तो मृत्यु के श्रास बन गये या भाग गये।

इसके पश्चात् पुनः एक दूसरी जाति यहाँ आकर बस गयी। इनमें आपसी गृह - युद्ध होने के कारण १६८० में समाप्त हो गये। तत्पश्चात् पॉलीनेशिया की जाति के लोग अठारहवीं सदी में आकर बस गये जो अब भी यहाँ निवास करते हैं। इनकी संख्या लगभग एक सहस्र है।

1. Schmitt, A. : Alaska Schrift, (1903), p - 172. 2. यह नृत्य शास्त्री था।

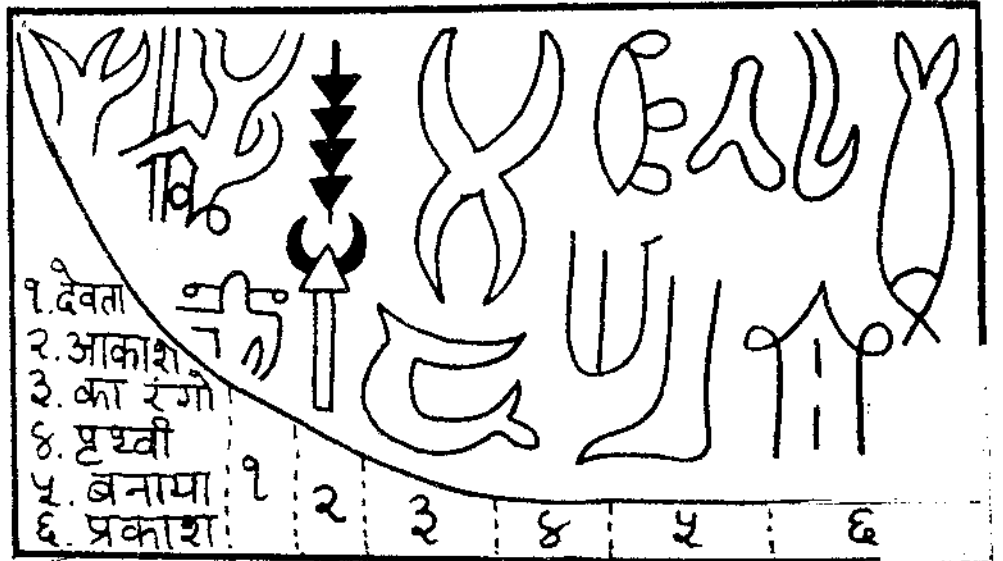
3. कुछ विद्वानों का मत है कि ये लोग बारहवीं सदी में आये और इन लोगों ने ही काष्ठ फलकों को अंकित किया।

लिपि

यहाँ की चित्र लिपि जो काष्ठ - फलकों या पाटियों पर उत्कीर्ण की गई है, पॉलीनेशिया में अपने ढंग की बनोली है। इसको बाएँ से दाएँ तथा दाएँ से बाएँ, दोनों ओर से उत्कीर्ण किया गया है अर्थात् हल - चलने की पद्धति में। इसी कारण पाटियाँ को एक ओर से पढ़कर पुनः पलट कर (एक ओर का हो, ऊपर का भाग नीचे की ओर करके) पढ़ना पड़ता है। ऐसे पन्द्रह पाटियाँ वर्तमान निवासियों के घरों से प्राप्त हुईं। इनका काल लगभग सत्रहवीं श० माना गया है। कुछ विद्वान् इनको बारहवीं अथवा तेरहवीं श० का मानते हैं। कुछ पाटियाँ छः फुट लम्बी भी हैं। इनको "कोहाऊ रोंगो-रोंगो" अर्थात् "बोलते जंगल" कहते हैं। यह पाटियाँ हड्डी द्वारा उत्कीर्ण की गई थीं।

प्राचीन निवासियों की पैतृक कन्दरायें थीं। ऐसी ही एक कन्दरा से एक काष्ठ - फलक थोर को प्राप्त हुआ। उस काष्ठ - फलक को टॉमस बर्थेल (Thomas Berthel) ने पढ़ने का प्रयास¹ किया तथा मरवीन सबील (Mervyn Savill) ने अनुवाद किया तथा इस प्रकार पढ़ा² "आकाश और पृथ्वी का देवता रोंगो है जिसने प्रकाश बनाया" (फ० सं०— ३८७)। जी. द हेवसे नामक हंगेरियन विद्वान् ने इस लिपि की तुलना सिन्धु - घाटी - लिपि³ से की है। इस कथन का समर्थन अन्य विद्वान् नहीं करते। थामस बर्थेल नामक जर्मन मानवजाति वैज्ञानिक ने इस लिपि का अध्ययन करके बताया कि यह भाषा पॉलीनेशियन है और ईस्टर द्वीप के प्राचीन निवासी १५०० मील दूर स्थित फ्रेण्डली द्वीप समूह के रोंगितिया नामक द्वीप से आये थे।

ईस्टर द्वीप की चित्र लिपि



फलक संख्या - ३८७

1. Doblhofer, E. : Voices in Stone (1961), p - 310.
2. Rango, Lord of the Sky and earth who created light".
3. देखिये : पृष्ठ 62 - , फ० सं० - 21.

पठनीय सामग्री

- Beyer, H.* : 'The Analysis of the Maya Hieroglyphs' - Internationales Archiv für Ethnographie, XXXI (1932).
- Brinton, D. G.* : A Primer of Mayan Hieroglyphs (Boston - 1895).
- Chamberlain, R. S.* : The Conquest and Colonization of Yucatan (1948).
- Diffie, J. W.* : Latin American Civilization and Colonial Period (1945).
- Greely, A. W.* : Handbook of Alaska (1925).
- Heyerdahl, T.* : Aku Aku; London - (1658).
- Joyce, T. A.* : Mexican Archaeology (1922).
- Knorozov, Y. V.* : 'The Problem of the Study of the Maya Hieroglyphic Writing' - American Antiquity Vol XXIII (1958).
- Mallery, G.* : 'Picture Writing of the American Indians' - Tenth Annual Report of the Bureau of Ethnology (Washington - 1893).
- Metaux, A.* : Easter Island (London - 1957).
- Morley, S. G.* : An Introduction to the Study of the Maya Hieroglyphs, (Washington - 1915).
- Ibid* : The Ancient Maya (1956).
- Nichols, J. P.* : Alaska (1928).
- Parkes, H. B.* : A History of Mexico (1950).
- Pickering* : Über die indianischen Sprachen Amerikas (Leipzig - 1834).
- Prescott, W. H.* : History of the Conquest of Mexico (1843).
- Schlenker, U.* : Die geistige Welt der Maya (Berlin - 1965).
- Spinder, H. J.* : Ancient Civilizations of Mexico and Central America (1922).
- Thompson, J. E. S.* : The Rise and Fall of the Mayan Civilization (London - 1956).
- Ibid* : The Civilization of the Mayas (Chicago - 1927).
- Ibid* : Maya Hieroglyphic Writing (Washington - 1960).
- Ibid* : A Catalogue of Maya Hieroglyphs (1962).
- Vaillant, G. C.* : The Aztecs of Mexico (1950).
- Wadepuhl, W.* : Die alten Maya und ihre Kulture (Leipzig - 1964).
- William, T.* : Universal Indian Sign Language of the Plains Indians of North America (California - 1927).

कुछ अन्य लिपियां

यह लिपियां किसी देश से सम्बंधित नहीं हैं। इनका प्रयोग विभिन्न देशों में किया जाता है।

आशुलिपि : सबसे प्राचीन आशु लिपि¹, जिसका काल ई० पू० की चौथी श० निर्धारित किया गया है, सगमरमर के प्रस्तर पर उत्कीर्ण एथेंस के ऐक्रोपोलिस से प्राप्त हुई है। (फ० सं० - ३८८)।

१६०२ में जॉन विल्लिस (John Willis) ने एक वर्णात्मक आशु लिपि का आविष्कार किया जो सत्रहवीं सदी में प्रचलित रही (फ० सं० - ३८८)।

१७६७ में बाईरोम (Byrom) ने इसका एक और प्रकार बनाया। अन्त में पिट्सैन (ज० १८१३-मृ० १८६७) ने कुछ संशोधन करके पूर्ण रूप प्रदान किया जो आज भी सारे विश्व में प्रयोग की जाती है (फ० सं० - ३८८)।

१८५१ में भारत ने अपनी राष्ट्र भाषा हिन्दी के लिये, देवनागरी वर्णों के लिये, एक आशु लिपि का आविष्कार किया जो 'फ० सं० - ९८' पर दी गयी है।

ब्रेल लिपि : इसके विषय में 'पृ० सं० - १९९' पर वर्णन तथा 'फ० सं० - ९९' पर देवनागरी - ब्रेल - लिपि दी जा चुकी है। यहाँ रोमन वर्णों की ब्रेल दी गयी है (फ० सं० - ३८६)।

पिक्टो लिपि : मानव की तकनीकी तथा वैज्ञानिक प्रगति ने विश्व को कहीं से कहीं पहुँचा दिया। पाषाण युग में अग्नि तथा गोल चक्के का आविष्कार कितना महान् तथा आश्चर्यजनक आविष्कार था परन्तु आज मानव चन्द्रलोक की यात्रा पूरी करके लौट आया जिसको प्राचीन काल से कुछ दिन पूर्व तक एक देवता के रूप में समझा जाता रहा। इन प्रगतियों के कारण विश्व अब छोटा दृष्टिगोचर होने लगा। विचारकों ने एकता की ओर दृष्टि उठाई। अब मानव प्रत्येक वस्तु का, प्रत्येक विचार का तथा प्रत्येक पद्धति का एकीकरण करना चाहता है। वह चाहता है संसार की एक सरकार बन जाये, एक मुद्रा, एक व्यापक डाक - टिकट, एक भाषा तथा एक लिपि बन जाय और मानव मानव के निकट आ जाय। इस ओर यूरोप में कुछ प्रयास, भाषा को अन्तर्राष्ट्रीय बनाने के लिये एस्पैरेन्टो भाषा का आविष्कार किया गया है। लिपि का एकीकरण करने के लिये भी दो विद्वानों ने प्रयास किया है। उनमें एक डच्छ पत्रकार करेल यानसन (Karel Janson) तथा दूसरे जर्मनी के एक प्राध्यापक डॉ० एन्ड्रे एक्कार्ड (Andre Eckhardt) हैं। इन दोनों ने एक 'पिक्टो लिपि' का आविष्कार किया है। इसको देख कर यह प्रतीत होता है कि मानव पुनः प्राचीनता की ओर जाने का प्रयास कर रहा है। इस लिपि का एक प्रतिदर्श 'फ० सं०-३८१' पर दिया गया है।

विशिष्ट चिह्नों का प्रयोग : इतनी प्रगति होने के पश्चात् भी चिह्नों का प्रयोग, जो मानव ने कई सहस्र वर्ष पूर्व लिपि के उद्भव - क्रम के प्रथम चरण के रूप में, प्राचीन काल में किया था, आज भी किया जाता है। चिह्नों के बिना कार्य चल ही नहीं सकता। कुछ चिह्न निम्नलिखित हैं :- (फ० सं० - ३८०)।

1. (Short Hand)

2. Gardthausen : Griechische Palagraphic, Vol. II, page -- 204.

अंग्रेजी की आशुलिपि


















एथेंस की प्राचीनतम आशु लिपि	A	I	C	IS	P	M	NI	RICH
	Λ		7	Γ	1	√]]	4

जान विल्लिस की आ० लिपि	A	B	C	D	E	F	G	H	I	J		
	Λ	∩	Γ	7	<	L]	+	α	>		
	K	L	M	N	Q	R	S	T	U	V	W	X
	Γ)	U	\	∪	-		C	~	V)	8
	O	P	Y	Z	CH	TH						
	C	/	8	Z	X	O						

पिटमैन की आ० लि.	P	B	T	D	CH	J	K	G	F	V	TH	DH	
	\				//	/	-	-	∪	∪	∪	∪	
	S	Z	SH	ZH	M	N	NG	MB	L	R	R		
)°)°))	∪	∪	∪	∪	()	/		
	W	Y	H	ā	ē	ū	ō	ō	ū	ō	ō	ū	ei
	∪	∪	96	1	1	1	7	7	7	7	7	7	7
au iw palm ape pay talk gate get	1	nl	h	1	1	7	7	7	7	7	7	7	7

खगोल शास्त्र :

राशि चक्र :

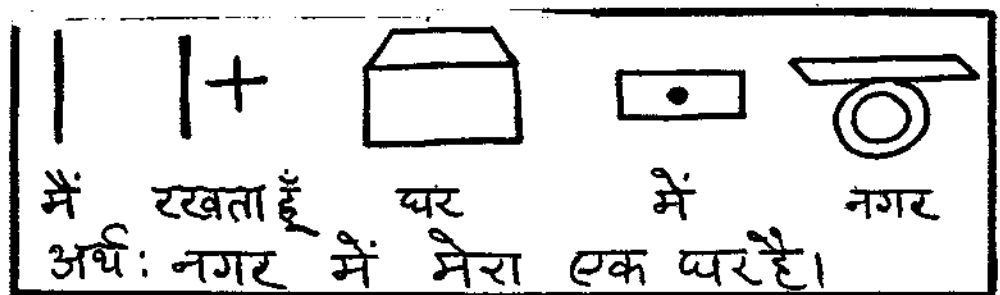
	सूर्य		मेघ (Aries) - मेढ़े के सींग ।
	चन्द्र		वृष (Taurus) - बैल का सिर व सींग ।
	तारा		मिथुन (Gemini) - दो काष्ठ के टुकड़े ।
	पुच्छल तारा		कर्क (Cancer) - कैंकड़े के पैर ।
	बुध ग्रह		सिंह (Lion) - बाघ की पूंछ ।
	शुक्र		कन्या (Virgo) - कन्या अर्थात् विरजिन का संक्षिप्त ।
	पृथ्वी		तुला (Libra) - तुला का रूप ।
	मंगल ग्रह		वृश्चिक (Scorpio) - बिच्छू के पैर एवं पूंछ ।
	शनि		धनु (Sagittarius) - वनुष तथा बाण ।
	बृहस्पति		मकर (Capricornus) - बकरा ।
			कुम्भ (Aquarius) - जल ।
			मीन (Pisces) - मछलियाँ ।

कुछ अन्य चिह्न :-



- अमरीका की मुद्रा डालर का चिह्न जो 'डेलर' से बना ।
- युनाइटेड किंगडम की मुद्रा पाउण्ड का चिह्न जो बड़े 'एल' से बना ।
- इसके अर्थ हैं 'प्रति' अर्थात् इतने दर से ।
- इसके अर्थ हैं 'निकाल दो' । बहुधा मुद्रणालय में यह चिह्न प्रयोग में आता है । यह अंग्रेजी शब्द डीलिट (Delete) का संक्षिप्त रूप है ।

पिक्टो लिपि का प्रतिदर्श



उद्बोधन

जब से संसार में लिपि का उद्भव हुआ है, तब से अब तक विद्वानों का तथा लिपि-आविष्कारकों का यही प्रयास रहा है कि भाषा की ध्वनियों के साथ तदनिमित्त चिह्नों या वर्णों का ऐसा साम्य हो जाय कि जो बोला जाय वह लिखा जाय तथा जो लिखा जाय वह पढ़ा जाय परन्तु सारे प्रयासों के पश्चात् ऐसा न हो सका। संसार की लगभग प्रत्येक लिपि में कुछ न कुछ पॉलीफोन (Polyphones) अर्थात् बहुस्वर वर्ण (एक वर्ण में अनेक ध्वनियाँ) तथा मोनोफ़ोन्ग (Monophthong) अर्थात् एक स्वर के अनेक वर्ण दृष्टिगोचर होते हैं।

आज विश्व में लगभग ४००^१ लिपियाँ और २७९६^२ बोलियाँ प्रचलित हैं जो मानव एकता में पर्वत की भांति राह में खड़ी हैं। तकनीकी तथा वैज्ञानिक प्रगतियों के कारण संसार का कोई देश अब दूर नहीं लगता। दो शताब्दियों पूर्व भारत से इंग्लैण्ड पहुँचने के लिये छः माह लगते थे परन्तु अब छः घण्टे में पहुँचा जा सकता है। अन्तरिक्ष में मानव की गति लगभग बीस सहस्र मील प्रति घण्टा से भी अधिक हो गयी है परन्तु राष्ट्रवाद संकीर्णता के कारण एक देश के मानव को अपने राष्ट्र की दस गज चौड़ी सीमा को पार करने में छः माह लग जाते हैं। इसी राष्ट्रवाद-संकीर्णता के कारण लिपियों में समन्वय नहीं हो पाता। अब तो देशों में प्रान्तवाद-संकीर्णता भी दृष्टिगोचर होने लगी है जो एक देश की मानव-एकता में भी बाधक सिद्ध हो रही है। भाषा एवं लिपि की समानता न होने से एक देश का निवासी दूसरे देश के निवासी के साथ अपने विचारों को व्यक्त नहीं कर सकता। इसी राष्ट्रवाद-संकीर्णता तथा प्रांतवाद-संकीर्णता के कारण बालकपन से ही ऐसे विचारों का विष मस्तिष्क में प्रवेश कराया जाता है, जैसे, “जो हमारा है वह अच्छा है”। इस विष के कारण वह अपने प्रांत या देश की प्रत्येक वस्तु को सर्वोच्च-समझने लगता है और मानव एकता के लिए किसी प्रकार का संशोधन सहन नहीं करता चाहे वह संशोधन कितना ही व्यापक रूप से लाभदायक सिद्ध हो। इस विषय में मेरा नवयुवकों से निवेदन तथा अनुरोध है कि वे राष्ट्रवाद तथा प्रान्तवाद के इस सिद्धान्त “जो हमारा है वह अच्छा है” को अपने मस्तिष्क से निकाल कर मानव समाज की एकता एवं प्रगति के लिये इस “जो अच्छा है वह हमारा है” सिद्धान्त को वारण करें। कुटुम्ब का, समाज का, प्रांत का, राष्ट्र का तथा सारे विश्व के मानव समाज की प्रगति का तथा एकता का भार अब आप पर है। आप ही इस सिद्धान्त को मान्यता प्रदान करके मानव एकता एवं प्रगति का उत्थान कर सकते हैं।

क्या आज के वैज्ञानिक युग में मानव एकता, सद्भावना की समस्या, समस्या ही बनी रहेगी? मानव एकता की राह में, जहाँ विश्व के विभिन्न देशों की राजनीति, अर्थ व्यवस्था, बोलियाँ बाधक हैं वहाँ लिपि भी एक अवरोध है। विश्व की लिपियों के एकीकरण का अर्थ है एक नयी लिपि का आविष्कार, जिसके द्वारा विभिन्न देशवासी पारस्परिक सम्बन्ध स्थापित कर सकें। नयी लिपि के आविष्कार का परिणाम क्या होगा? नयी लिपि के निर्माण से विश्व के लाखों पुस्तकालयों तथा संग्रहालयों में सुरक्षित रखे ग्रन्थों की उपयोगिता का अन्त,

1. इनमें से बहुत सी ऐसी हैं जिनमें नाम मात्र की भिन्नता है।

2. Gray, G. F. : Foundations of the Languages (1861), p - 418.

लाखों मुद्रणालयों का टाइप परिवर्तन, टंकणों का नव निर्माण आदि । इस उपयोगिता को स्थिर रखने के लिये उन ग्रन्थों का नवनिर्मित लिपि में पुनः अनुवाद तथा मुद्रण और उसके लिये अथाह धन का व्यय, जिसका अनुमान लगाना असंभव है । यही नहीं लाखों विद्वानों का परिश्रम एवं समय भी इस दुर्लभ कार्य के लिये अर्पित करना होगा । क्या यह संभव है ?

संभव क्यों नहीं ? एक ओर विश्व के लगभग सभी देश पारस्परिक सम्बन्ध बनाये रखने की चेष्टा रखते हैं परन्तु दूसरी ओर पारस्परिक भय के कारण निःशस्त्रीकरण के नाम पर शस्त्रीकरण, शान्ति के नाम पर युद्ध की तत्परता में उद्बुत हैं । इसके लिये सभी देश सुरक्षा के नाम पर मानव के संहारक तथा विध्वंसक शस्त्रों का या तो निर्माण कर रहे हैं या संग्रह कर रहे हैं । क्या इस सुरक्षा के नाम पर बेहिसाब धन का व्यय, परिश्रम व समय का दुरूपयोग नहीं हो रहा ? विश्व के देश मानव संहार के लिये जितना धन आज लगा रहे हैं, संभवतः उसका केवल दस प्रतिशत यदि मानव एकता पर, मानव की पारस्परिक सद्भावना पर, मानव के आपसी प्रेम तथा समझदारी पर, विश्व - बन्धुता पर व्यय किया जाय, तब यह निश्चय है कि दो पीढ़ियों अर्थात् अर्ध शतक के पश्चात् सारे संसार का यह भयभीत मानव सुख की नींद सो सकेगा । अपनी सांस्कृतिक प्रगति का, पारस्परिक प्रेम का तथा 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की धारणा का उत्थान करके अभाव - रहित तथा शान्तिमय जीवन व्यतीत कर सकेगा ।

यह कल्पना तभी साकार हो सकती है जब विश्व के देशों के शासनाध्यक्ष अपने सुरक्षा कोष से केवल दस प्रतिशत व्यय कम करके उस धन को ऐसी सोसायटियों को, ऐसी सामाजिक एवं धार्मिक संस्थानों को, लिपियों की समानता पर विचार तथा शोध करने वाले संगठनों को तथा वर्तमान युग की सर्वोपरि अन्तर्राष्ट्रीय संस्था, 'संयुक्त राष्ट्र - संघ' को प्रदान कर दे जो मानव एकता और विश्व बन्धुता की ओर अग्रसर होने की चेष्टा कर रहे हैं ।

मुझे न केवल आशा है अपितु पूर्ण विश्वास है कि लिपि के एकीकरण के लिये एक नवनिर्मित लिपिद्वारा, जिसका निर्माण आज के वैज्ञानिक युग में असंभव नहीं है, मानव सद्भावना को बढ़ाने में एक नया प्रयास होगा । इस प्रयास को प्रगतिपथ पर लाने के लिये वर्तमान राष्ट्रों के शासनाध्यक्षों की, मानव हितों के लिये, इक्कोसवीं सदी की एक महान् भेंट होगी ।



परिशिष्ट

परिभाषिका

पृष्ठ सं०	पंक्ति सं०	ऐसा है	ऐसा होना चाहिये
२१	अन्तिम	सौजन्यता	सौजन्य
५०	३	२३	१५
५३	३१	२६००	१६००
७८	१	मौर्य	मौर्य
	३	पुनर्मठन	पुनर्गठन
८७	९	साम्राज्य	साम्राज्य
६०	२६	बहादुर शाह	बहादुर शाह
६१	अन्तिम	संघर्ष	संघर्ष
९५	१	ब्राण	ब्राह्मण
	१५	भू-गर्भ	भू-गर्भ
	२१	१५०० ई० पू० में अन्त हो गया	१५०० ई० पू० में हो गया
	२२	होता	होना
९६	१४	सेसिटिक	सेमिटिक
६६	३०	पश्चिमात्तर	पश्चिमोत्तर
१०१	५	पहलवी	पहलवी
१०४	शीर्षक	संलिष्ट	संलिष्ट
११३	१०	स्वयं	स्वयं
१२५	६	इनने	इसने
	७	बड़े	बड़े
	नोट	yazdaui	Yazdani
	२३	कलीहार्न	कोलहार्न
१२९	१०	१५०	५०
१३२	१२	ताम्रपत्रों	ताम्रपत्रों
१५२	१	कामरूप की बंगला की असम लिपि	कामरूप की बंगला लिपि
१५७	१३	सामान्त	सामन्त
१८६	३	७४७ ७५३	७४७ से ७५३
१८८	१५	डा० कलिहार्न	डा० कोलहार्न
	२१	अ अ ण ण झ झ	अ अ ण रा झ
	अन्तिम	तीन से	तीन सौ से
२०४	१६	विभाजित होते	विभाजित होते होते
२०६	१७	मुलेख	मुलेख

पृष्ठ सं०	पंक्ति सं०	ऐसा है	ऐसा होना चाहिये
२१२	११	जाजफ हूकर जो	जाजफ हूकर का जो
२२७	अन्तिम	राज्या	राज्य
२३२	१३	निनेब	निनेवः
२३५	५	Tosblets	Tablets
	नोट	जनुवाद	अनुवाद
२३८	१०	बेबीलोनिया नव -	बेबीलोनिया में नव -
२३६	२६	पूरातत्त्व	पुरातत्त्व
२४१	४	विश्व	विश्व
२४३	नोट - 1	लूग विश्व	लूरो विश्व
२४८	२०	एकबटान	एकबटान
	२८	पुरोहित - राजा	पुरोहित ने - राजा
	अन्तिम	परसगादे	परसगादे
२५०	२८	भ्रष्ट	भ्रष्ट
२५७	नोट - 7	सारे विश्व	सारे विश्व
२६१	७	उद्भव	उद्भव
	११	परसगादे	परसगादे
	नोट - २	जेष्ट	जेष्ट
२६२	१	फ० सं० - २७	फ० सं० १२७
२६३	९	निकलीं	निकले
२६४	४	असीकीज	असीकीज
२६४	१४	कोपेनहेगेन	कोपेनहेगेन
२६५	३	दि सेमी	सेसी
२६६	७	ऐन्तोने यान	ऐन्तोने इयान
२७२	१६	फ० सं० - १४१	फ० सं० - १३६
२७३	३१	भेद	भेज
२७६	१६	हखामनीशीय	हखामनीशीय
२७६	११	शररुड	शररुड
२८२	७	आरम्भ किया (से) १४१ तक	
२८६	अन्तिम	वर्णों	वर्णों
२९०	५	Halvey	Halvey
३०२	११	राज्य	राज्य
	१६	पटिया	पाटिया
३०३	३	शामरा शमरा	शामरा शमरा
३०७	६	१७१	१५७

पृष्ठ सं०	पंक्ति सं०	ऐसा है	ऐसा होना चाहिये
३०८	६	Hitti	Hitti
३०६	३	सूल	मूल
	१५	प्रथम	प्रथम
	अन्तिम	६००	९००
३१०	मानचित्र	हत्ती	हित्ती
३१३	१५	सेसी	सेसी
	१९	अभिषेखों	अभिषेखों
३२१	२०	१८०	१६६
३२५	२	उसको	उसका
३२६	१	अमोजेजको	मोजेज को
३३१	९	१४५	१६९
३३२	११	एक	एक
	नोट-२	Fisler	Fisher
३४०	१५	१८९	१७५
	१७	बन	बस
	अंतिम	१८९	१७५
३४३	२०	प्रथम	प्रथम
३५०	मानचित्र	कोरिया	कौरिया
३५९	१९	माम	माल
	२२	रोम के कारण सम्राट	रोम के सम्राट
	अंतिम	५१६ ई०	५१५ ई०
३६१	३३	मंगलों	मंगोलों
३६३	४	अनेकों	अनेक
	१५	नष्ट	नष्ट
३६६	१३	ब	एवं
	अंतिम	लघु	लघु
३७९	२८	दिये	दिये
३८३	८	किया जाता ।	किया जाता था ।
	१७	तो, जो	तोय, जोय
३८५	१५	था, के विरुद्ध	था, विरुद्ध
	२१	चौथी	चौथी

पृष्ठ सं	पंक्ति सं	ऐसा है	ऐसा होना चाहिये
३९९	१५	तिस्वत	तिस्वत
	नोट—	हसका	इसका
४००	९	प्रधान	प्रधान
४०२	१८	प्रतिदर्श	प्रतिदर्श
	२५	अुमेद का लिपि का	अुमेद लिपि का
४०६	२	नाम पौराणिक	नाम की पौराणिक
४१४	१	वैसे वैसे राजवंश में	वैसे वैसे राजवंश में
४२७	२८	शेर	शर
४२९	११	Shn	Shu
४३२	२०	रक्त भरा थाला	रक्त भरा प्याला
४४१	१७	२५५	२३०
	२६	डसी	उसी
	२८	दसरे	दूसरे
४४३	५	di	bi
४५२	शीर्षक	रेखाओं का (द्रोक)	रेखाओं के (स्ट्रोक)
४५४	८	भिग वंश	भिग वंश
४६६	२२	वर्षों	वर्षों
४७३	नोट—३	Palaeography	Palaeography
	१२	गैन्थियट	गैन्थियट
४७६	२७	वर्णमाला	वर्णमाला
४७९	शीर्षक		पटनीय सामग्री
४८०	१६	सिल्ला का राज्य	सिल्ला राज्य का
४८६	१२	२५२	२५१ क
	१६	Mecune	McCune
	अंतिम	Ecardt	Eckardt
४८६	२	८०५ से हो गया	८०५ में हो गया
	१६	बाहर	बाहर
४९३	१५	२५३, २५४	२५४, २५४ क
	१८	लगभग	लगभग
४९६	६	ध्वनी	ध्वनि
	२२	D-1811	D-1911
५००	२	२५८ दिये गये हैं	२५८ पर दिये गये हैं
५१५	१९	यहाँ	यहाँ
५१८	१	ब्रह्मा	ब्राह्मी

पृष्ठ सं०	पक्ति सं०	ऐसा है	ऐसा होना चाहिये
५२७	२४	१९ मार्च १९२१	१६ मार्च १९२१
	२६	स पबन्तु	से परन्तु
५४१	अंतिम	Rule	Royal
५५०	२७	१८२८ तक	१९२८ तक
	२८	१९९५ तक	१८९५ तक
५५१	२	इथ	इथ-तवी
	१७	थीबीज इनकी राजधानी थी	
	१९	१६०३ ई० पू०	१६७९ ई० पू०
	२१	१६७१	१६७८
५५२	१५	१४९० से १४३६ तक	१४६९ से १४३६ तक
५५३	२	सिख	मिथ
५५५	प्रथम	उन्हें	उसके
	अन्तिम	आपने	अपने
५५८	प्रथम	७५१ से ६६३	७१५ से ६६२
	२३	पिपाचूवी	पियांखी
	२४	७१६	७१५
५६०	प्रथम	तिपास	तियास
	९	३३६ से ३२२ तक	३३६ से ३२२ तक
	११	क्रिया	करने
	२१	टॉल्मि	टलिमी
५६१	२०	बूटस	बूटस
	२६	ने भी अपनी	ने अपनी
५६२	८	सम्राट, जब मिला	सम्राट मिला
५६७	२७	बिलासी	बिलासी
५९७	१७	फ० सं०-३०६	फ० सं०-३०५ क
६०३	शीर्षक	बामनुन	बामुन
६४७	१८	लाइनियर-एवं बी	लाइनियर-ए एवं बी
६५७	८	पिसिट्रेटस	पिसिट्रेटस
६८८	२७	११	१७७१
७२१	१६	४५	४५१
७५३	२१	२७७६	१७७६
७६०	१	मोटजेबू	कोटजेबू
७६२	१०	जी० द० हेवसे	जी० डी० हेवसी
७६४	१०	फ० सं० - ६८	फ० सं० - ६६
	११	फ० सं० - ६६	फ० सं० - ६८

पारिभाषिक शब्दावली (Glossary)

Alphabetic	वर्णमय
Anthropology	मानव विज्ञान; मृतत्व
Archaeological Finds	पुरातात्विक सामग्री
Archaeologist	पुरातत्ववेत्ता
Archaeology	पुरातत्व
Archaic	प्राचीन
Bas - relief	उद्भूत; उभरे हुए चित्र
Bibliography	पठनीय सामग्री
Biconsonantal	द्विवर्णिक (एक वर्ण दो ध्वनियाँ)
Bilateral	" " "
Boustrophoden	हल चलाने वाली पद्धति; दाएँ से बाएँ तथा बाएँ से दाएँ लिखने की पद्धति
Classical period	साहित्यिक काल
Cylinder Seal	वर्तुल मुद्रा
Decipherment	रहस्योद्घाटन
Demotic (from 'Demos')	जनता - लिपि
Determinative	निर्धारित शब्द
Embryo Writing	भ्रूण लिपि
Engrave	उत्कीर्ण करना
Excavation	उत्खनन
Flint	चकमक पत्थर
Horizontal	क्षैतिज
Ideographic	भावात्मक
Index	पृष्ठबोधनी; अनुक्रमणिका
Indo - European	भारोपीय
Inscribe	उत्कीर्ण करना
Inscription	अभिलेख

Linguistics	भाषा विज्ञान
Logographic	रेखाक्षरात्मक
Map	मानचित्र
Monophone	एक ध्वनि अनेक वर्ण
Museum	संग्रहालय
Observatory	वेधशाला
Phonographic	ध्वन्यात्मक
Pictographic	चित्रात्मक
Polyphone	एक वर्ण अनेक ध्वनियाँ
Pottery	मिट्टी के बर्तन
Sacrofagus	पत्थर की कन्न
Scribe	प्राचीन लिपियों को उत्कीर्ण करने वाला
Seal	मुद्रा
Short - hand	आशुलिपि
Specimen	प्रतिदर्श
Stele	कन्न पर लगाने वाला पत्थर
Syllabic	अक्षरात्मक
Syllable	एक वर्ण में व्यंजन + स्वर
Tablet	पाटिया
Test	परख
Text	पाठ
Transliteration	लिप्यन्तरण
Triconsonantal (Triliteral)	त्रैवर्णिक (एक वर्ण तीन ध्वनियाँ)
Type-Writer	टंकण
Uniconsonantal (Uniliteral)	एक वर्ण एक ध्वनि
Vertical	शिरोवृत्त
Vowel	स्वर



अनुक्रमणिका

यह अनुक्रमणिका वर्णानुक्रमानुसार तथा निम्नलिखित विषयानुसार प्रस्तुत की गयी है :—

१. अभिलेख	२१. भाषायें
२. काल	२२. भूभाग
३. खोजकर्ता	२३. महाद्वीप
४. ग्रन्थ	२४. युद्ध
५. ग्राम	२५. राजकुमार, राजकुमारियाँ
६. जातियाँ	२६. राजवंश
७. शीलें	२७. राजवंशों के संस्थापक
८. द्वीप	२८. राज्य
९. देवता	२९. लिपियाँ
१०. देश	३०. लोग एवं निवासी
११. धर्म	३१. विद्वान्
१२. धर्म प्रवर्तक	३२. विशिष्ट मनुष्य
१३. धर्म प्रचारक	३३. शासक
१४. नगर	३४. संघ
१५. नगर राज्य	३५. स्मारक
१६. नदियाँ	३६. सरकारें
१७. पदवियाँ	३७. संस्कृतियाँ
१८. पदाधिकारी	३८. संस्थान
१९. पर्वत	३९. साम्राज्य
२०. प्रांत	

ब्रैकेट के अन्दर लिखे गये शब्द या तो दिये गये नाम से सम्बन्धित हैं वा नाम का दूसरा रूप हैं ।



अभिलेख

अक्काद की मुद्रा	६४
अमरना पाटियाँ	३०३
अरजवा लेख-पत्र	३१९
अरमायक अभिलेख	३४०, ३४१
अशोक शिलालेख	९६
अहिराम अभिलेख	२९३, २९८
आर्तमोन अभिलेख	३५३
आंशिक (बड़ली)	१०२
एलवेन्द शिलालेख	२६६
कनिष्क अभिलेख	११३
कुरम (कुरुम) अभिलेख	१२९
कोहाऊ रोंगो रोंगो	७६२
भंजेनामा	२६१, २६६
गिरनार शिलालेख	१०७, १२, १३
गीजर प्लेट (कृषक पंचाङ्ग)	३०२
छोटा अभिलेख (पिप्रवा)	१०७
छोटे छोटे अभिलेख	९९
जाँवों पर अंकित अभिलेख	२९७, ९९
ताम्र-पत्र (मुड़ विहार)	१०२
तारकोण्डेमस मुद्रा (चाँदी की)	३१४
तिरुमलाई शिलालेख	१२९
त्रैभाषिक अभिलेख	२५५, ६७
दान-पत्र (शिवरुद्रन्द वर्मा)	१२५
दिल्ली अशोक स्तम्भ	९९
द्विभाषिक	२५५, ६३२
द्विभाषिक अभिलेख	३१६, २२
पशुपति मुद्रा	६९
पाइलस की पाटियाँ	६४७, ४८
पाटिया (चूने की)	५७१
प्युनिक लिपि अभिलेख	२९९, ३००
प्रयाग स्तम्भ	९९, ११३
फिनीशियन अभिलेख	६२९
फ्रैस्टास चक्रिका	६४८, ४९, ५६

विवलास का लघु अभिलेख	२९३, ९५
वेहिस्तून शिलालेख	९७
महाकाव्य (युगारिट)	३०४
माइसीनिया अभिलेख	६४८
मेशा का अभिलेख	२९७, ९८
मोआव का शिलालेख	२९७
युगारिट-मिन्न द्विभाषिक पाटियाँ	३०२
राजकीय मुद्रायें	३२१
रम्मिन देई स्तम्भ लेख	१०९, १२
रोसेटा शिलालेख	९७
लघु अभिलेख (नवीं श०)	७२०
लीकिया का द्विभाषिक अभिलेख	३४८, ९
लीडिया का प्रतिदर्श	३५२
वज्र हस्त पंचम के लेख	१५४
विलक्षण लिपि शिलालेख	३९२
शङ्खाज गढ़ी शिलालेख	१०२
सत्यकी शिलालेख	९५७
सुखौताई अभिलेख	५१५, ९८
सुमेर की मुद्रा	७१
सुमेर की रेखा-चित्र पाटियाँ	२३५
सिन्धु-वाटी मुद्रायें	२९
सोमेश्वर मन्दिर शिलालेख	१३८
स्तम्भ लेख (नारायण पाल)	९७
हम्मूराबी के शिलालेख	२४९, ४२, ४३
हितां-चित्र लिपि शिलालेख	३११
हेब्रू-युगारिट द्विभाषिक पाटियाँ	३०४
हेब्रू लिपि के प्रतिदर्श	३३०, ३९

काल

अन्तर्वर्तीय काल	२९५
अमरना काल	५५४
उत्तर काल	५३
ईसा पूर्व काल	४९२

कुषाण काल	२५, ११३	मोरियर	२६६
क्रान्ति युग	७६	योरिस स्पिलबर्ग	२१८
गुप्त काल	११८	रेंच	३१३
गृह-युद्ध काल	४९१	रोगवीन, जैकब	७६१
ग्रीक-रोमन युग	६७०	लुदोविका दि वरथेमा	५३५
ग्रीक साहित्यिक काल	६६४, ६५, ८७	वास्कोडिगामा	९१
डोरियन काल	६५८	विलियम वर्वर्टन	५६६
पूर्व विकसित काल	५३	वीयाल	४५०, ५४
पौराणिक काल	४८०	शेप इब्राहिम हाजी (बर्कहार्ड)	३११
मेईजी शासन काल	४९१	सोटो, दि	२५३
विकसित काल	६४५	हर्नोन्दीज दि कार्दोवा	७५०
शासन काल	५५२	हर्वर्ट, टॉमस	२६२
		होगर्थ-बूली	३१३
		जासोफ़्त बारबरो	२६१

खोजकर्ता

आल्मस्टेड	३१३	ग्रन्थ	
ईयन चार्दिन	२६२	अष्टाध्यायी व्याकरण	६५
एन्तोनियो दि अन्द्रादा	४००	ओल्ड टेस्टामेन्ट (बाइबिल)	३०४
ऐलियस गैलस	३५९	उपनिषद	९५
कॉसमस	३७५	एतिहासिक पाठ (द्विभाषक)	३२१
कुक, जेम्स (कैप्टेन)	७५६, ६१	एशियाटिक रिसर्च	११८
गिरोसडेफ़्ट	७५५	कोजिकी	४८७
गोंजालिस	७६१	कुरआन शरीफ़	३७९
चार्ल्स	३१३	ग्रीक-डिमाटिक शब्दावली	५६९
जॉन कैवट	७५३	छांदोग्य उपनिषद	९५
जुआन दि ग्रीज़ाल्वा	७५०	जैन ग्रन्थ	९५
जक्स कार्टियर	७५३	ताउ-ते-किंग	४११
दान गार्शिया दि सिल्वा फ़िम्ब्यूरोआ	२६१	तुंग चीह	४३२
पीरोज़, ला	७६१	तैत्तिरीय उपनिषद	९५
पेद्रो दि किन्तरा	६०४, १३	त्रै भाषिक शब्दकोष (सुमेरीयन-अक्कादीयन-हिती)	३२१
फ़रदीनन्द मैगलेन	५२७	निष्क	६९
फ़्रांसिस्को दि मोन्तेज़ो	७५०	निहोंगी	४८७
बेरिंग, वाइल्स	७५५	बाइबिल	२४७, ५७०, ६९३, ९८
बोन्देल मोन्ते	५६५	बौद्ध ग्रन्थ (ललित विस्तर)	१०१
मेसरश्मिद	३१३		

बौद्ध ग्रन्थ	९५
भगवद् गीता	८८, ९४
बौद्ध-धर्म साहित्य	४८८
महाभारत महाकाव्य	७६, ९५
रामायण महाकाव्य	७६, ९५
विधि संहिता	४८८
विधान (जापानी)	४१९
विश्व कोष	४१७
वीरकाव्य (होमर के; इलियाड, ओडिसी)	६४५
शूर्जिन	४०९
शब्दकोष (४४ हजार शब्द)	४१७
शुद्धी हिवूमीदेन	४९२
सुन्दरियन शब्दकोष	३२१
स्क्रिप्टा मिनीआ	६४७

ग्राम

मबूसिम्बल	२६७, ३५३, ५५६
अरक-अल-अमीर	३३०
अरलुह	७६१
ओरंगों	१४५
इपानो इंगलियानिस	६४७
उदय इन्द्रम	१३८
उरैयुर	८७
एथोमन	२८२
एलवेन्द	२६६
एलिचपुर	८७
कड़व	१४२
कल्याणी	८६
कषकुडी	१३८
कालीबंगन	२६
कुरम (कुरुम)	१२, ९३४
कुल्ला	२५
कीटियन	६९९
केन्दूर	१४२

कोटजेबू	७६१
कोणार्क	८८
कोरुमिल्लो	१४२, ४५
खजुराहो (खर्जुरवाहक)	८४
गिरनार	९९
चण्डलूर	१४२, ४५
जम्बूकेद्वर	१३२
तोपरा	९७
डेवरी—कोटी	१५७
देवपारा (देवपाड़ा)	१५०, ५४
देवलगाँव	१२७
निशा	२८६
पागनवरम	१४५
पिप्रावा	१०७
वचकुला	१९४
वडली	१०२
वादल	९७
वेहिस्तून (बिसीतून; बिसूतून),	२६, ९७, २५७, ५९, ६०, ६७, ६८, ७१, ७३, ७६, ७९
वोगरा	१०९
बोर गाँव	१९४
मड्डवोलु	१४२
मुइरकोडु (आ० कोडुनल्लूर)	१३२
मुरग्राव	२४८, ५७
मानिकियाल	१०१
मामल्लपुर	९९
रशीद	५६७
रुम्मिनदेइ	१०९, १२
रोसिटा	२६
वमा ग्राम	६१३
वत्स गुल्म	८६
वादिये मुकत्तब	३७५
वेप्पम बट्टू	१३८
शहबाजगढ़ी	१०९
शोरइक्कवूर	१३२
सराना	१५७

साँची	९९
सियोनी	१२५
सुइविहार	१०२
सेवास्टिया	३३२
सोगडा	१०७
हरिहड़गल्ली	१२५
हिल्ला (प्राचीन बेबीलोन)	२२९

ओयो	६१५
ओस्की	६७४
करेल	५०७
कलम्भर	८७
कसाइट	५३०, ४७
किन	४१४
किरात	२०४
क्री	७५५
कुरेश	६०४
कुषाण (कुडशांग)	७७
कोल	२६

जातियाँ

अक्काइयन	६४५
अजटेक	७४१
अमोर (अमूरु)	२२९, ३२५
अरामियन (अराम)	२३८, ९९, ३२५, ३७
अहोम	१६०
आर्मेनियन	३८५
आयोनियन्स	६३६
आयोलियन्स	६३६
आस्ट्रोगोथ (ओस्ट्रोगोथ)	६८८
इकोटा	७४२
इंगियाबोन	७१८, २१
इजेनू	६१५
इन्का	१०, ७४८
इस्तायबोन	७१८
ईफ्रे	६१५
ईफ्रो	६१५
ईवो	६१५
उडगुरी	४६२
उग्रियन	७१५
एरबा	६१५
एट्रस्कन	६७१
एवार	७१५
एंगिल	७२१
ऐनु	४८७
ओटोमन (ओथोमन)	६३१, ५८, ६०

कैलडियन (अरबी खालेदीन)	२३२, ३२५, २७, ३७
खाम्ती	१६८
खिम्ब्रस	२०४
खेमिर	५२६
गूटी	२२८
गेपिदाइ	७१५
गोइडेल	७०७
गोथिक (गोथ)	६७४, ८८, ७१५
चक्रमा	५०९
चिचिमेक	७४१
चिरोकी	७५३
जर्मन	७१५
जूट	७२१
जूडा	१३३, ३३०
टिटोनिक	६८८
टोस्टिक	७४१
डोंगरा	४००
डोरियन्स	६३६, ४१, ४५
तगोला	५३२
तिमने	६१३
तुर्क	७१५
तुंगू	४६९
तुंगूसी	४५४
तोखारी	४६९

थाई	१६०, ६८, ५२६	लेप्चा	२१५
द्रविड़	२६	वई नीग्रो	६०७, ९, १०
नहुआ	७४१	वारंसियन	६९९
नीग्रो	६१३	विल्लोनोवन	६६७
नेवार	२०४, ६	विसीगोथ	६८८
पर्नी (पर्ण)	२५२	वैण्डल	६९३
पश्चिमी गोथ	६८८	शक	७८
पार्थव	२५२	शिया	५६३
पॉलीनेशिया	७६१	शेकलर	७१८
पूर्वी गोथ	६८८	सिकाम्ब्री	३०९
पेलासगियन	६३६, ६४	सुखोताई	५१५, १८
फुलानी	६१५	सूर	८८
बटावी	७२१	सेमिटिक २२५, २७, ३८, ८७, ९९, ६१७, २०	
बर्बर	६६०	सेल्टस (केल्टस)	६७०
बवरियन	७२१	सैक्सन	७२१
ब्राइथन	७०७	सैमिनी (समीनी)	६३२, ७४
ब्राह्मण	९५	स्काँटी (केल्ट)	७०८
बुल्गार	६९७	स्लाव	७१५
बैजिमन	२३३	हर्मिनीन	७१८, २१
भारोपीय	७०७	हिकसाँस (हिकाउ खासुत)	५५१, ५५
मध्य-पूर्वी स्लाव	६९९	हिती	३३५
मय (माइया, माया)	७४८, ५०, ५१, ५२	हिमारी	३७७
मंगोल	६०, ४१४, ६९	हुरियन	२२७, २८, ३०९, ३५
मागी	२५०	हूण	७८, ७१५
मूर (मोरो)	५३२	हेब्रू	२९९, ३२६, ३५, ७३, ५५६
मेण्डि	६१३	हेलास	६३६
मैग्ग्यार	७१८	हौसा	६१५
मेथ्रिक	१३८		
मोन	५०७		
यरूबा	६१५		
यूची	७८		
राजपूत	८२		
रेड-इण्डियन	७४१, ४७, ४८, ५५, ५६		
लम्बार्ड	७१५		
लाओताई	५१५		
लिम्बस	२०४		
		उर्मिया	३४०
		पेटेन	७५३
		बैकाल	४६५
		म्योरिस	५५१, ९१
		वान	३४०, ८५
		सुदर्शन	१०९

शीर्ष

द्वीप

अन्द्रोस	५३५, ६५
ईस्टर द्वीप	६२, ७६१, ६०
कोर्सोरा	६५८
जावा	५३४, ३५
टोंकिल	५३२
पुलोपितांग	५१५
फ़ारसूसा	४९२
फ़िलिपाइन्स	५२७, ३१
फ़्रेण्डली (द्वीप समूह)	७६२
ब्रिटिश	७०७
मकाओ	४१७
माल्डीव	२१७
रंगीतिया	७६०
रोडस	६६८
श्री रंगम	१३२, ३८
साइक्लेड्स	६५८
सिंगापुर	४२३
सिलेबीस	५४१
सिसली	६६०
सुमात्रा	५३५
हांगकांग	४१९

देवता

अतेन	५५४, ५५
अपोलो (सूर्य)	६३२
अमातिरासू (सूर्य देवी)	४८७
अमोन (अमृ+)	५५४, ५५
थल्लाह	६, ३८३
अशुर (असुर)	५८, २३३
अहुरामज्द	२५८
आकाश	४१६, ४०, ६०

आर्तेमिस (देवी)	३५१
ईरास	६८२
उमा	७१, ३
ओगमा	६, ७१२
कम्बू	५२६
केमोश	२६७
क्रोनस	६४१
खम्मू	२३०
खाल्दी	३८५
खुदा	३५७
चेन-रे-सी	३६६
जेहोवा (यहोवा)	९, ३२६, २७, ३०, ७३
जिब्राइल (फरिश्ता)	२९३
जुपिटर	५९७
जूनो	५९७
ज्यूस	६४१, ४९
टॉट (थाट)	९, ५७०, ७२
ड्रैगन (स्वर्ग का दरवान)	४२५, २७
नेबू	९, २३३
पशुपति	५८, ६९, ७०
ब्रह्मा	९
वैजनाथ	१५७
मर्नाटो	७४५
मर्करी	९
मिनर्वा (देवी)	५९७
मिनोटौर (दैत्य)	६४४
मीरा	५२६
यजुदान	३५७
युरोपा (देवी)	६४४
योगेश्वर	२७
रंगो	७६२
रा(रे = सूर्य)	५४९, ५४, ५५, ७०
रिया (देवी)	६४१, ४४, ४९
वेनचांग	९
वीरपक्ष	१३८
शमा (शम्मा)	४१६, ६०

शारदा (देवी)	१५७
शिव	५, ८२, १५७
सुसूत्र	४८७
सूर्य	८२, २३०
सोमेश्वर	१३८
हृदाद	३३७
हर्मिस	९
हेवत (खोवत)	३२२

देश

अक्काद	६२९
अदलस (आ० सुमाला)	५३५
अन्तावर्ती तिब्बत	४०
अन्नाम	४१२, १६, ५१८, २६, २७
अपर-गिनी	६०७,
अपोलोनिया	६५८
अफगानिस्तान	९९, २५२, ३७९, ६९९
अफार्स-ईसास (फ्रेंच सामाली लैण्ड आ० त्रिबुती)	६०४
अबीसीनिया (एबीसीनिया)	३५९, ७७, ६१७, १८, २०
अमतू	३२२
अमरीका (अमेरिका)	१०, ३२७, ५१, ४१९, २९, २९, ४३, ८१, ९९, ९२, ९३, ९६, ५३२, ६४७, ९९, ७४१, ४५, ५३, ५५
अरमेनिया (अर्मेनिया)	३८५, ८६
अरब (अरेबिया, अरबजह, अरबइहा)	९, २५२, ३४३, ५६२, ६३९, ४४
अल्जीरिया	५९५
अल्प फोजिया	३४३
अल्बेनिया	५६३
असीरिया	१४, ४३, ५८, २३२, ३३, ३८, ४५, ४८, ७३, ९७, ३०३, ९, ९८, २७, ३२, ३५, ३७, ३८, ७७, ८५, ८६, ५५६, ५८, ५९, ६९७, २९

आईबेरिया	३८७
आयरलैण्ड (ऐवर्ना, हैवर्नी)	९, २३९, ७०७, ८, ९, ९०, ९९, ९२, ९४
आस्ट्रिया	३२९, ६९७, ७२९, ४९
आस्ट्रेलिया	९
इंगलैण्ड (ऐंगिल लैण्ड, ऐल्वियन, ब्रिटैनिया)	२६, ९९, ९४, २९८, ६२, ६६, ६७, ६८; ३२९, ४९९, ९९, ५५५, ६७, ६८८, ९९, ७०८, ९९, २१, ५३, ५६
इटली	१०, २६१, ३२१, ३८, ५३, ६४, ७५, ५३५, ६०४, २०, ३९, ४८, ५८, ६०, ६७, ६९, ७१, ७४, ७८, ८५, ९३, ७०७, १५, २१
इथियोपिया	३५३, ५५८, ६२, ९५, ६१७, ९९, २०, २१, २२, २३, २४, २५
इरीट्रिया	६२०
इलाइल (इलायल)	९, २३२, ६८, ९७, ३२५, २६, २७, २८, ३०, ३२, ३५, ३७, ४०, ६२०
ईराक (देखिए मेसोपोटामीया)	
ईरान (देखिए पर्शिया)	२६, ७६, ७७, २५५
ईस्ट इण्डो (देखिए हिन्देशिया)	
उत्तर-पूर्वी चीन	४१७
उत्तरी अमरीका	७४८
उत्तरी इटली	६८५
उत्तरी कोरिया	४८१
उत्तरी मिस्र	५४०, ४६
उत्तरी मोयशिया (सर्बिया)	६९७
एनाटोलिया (देखिए तुर्की)	३४३, ६४५, ४९
एरमी	३१३
एशिया माइनर (देखिए तुर्की)	२३०, ४८, ३२१, ३८, ५१, ८६, ५४५, ६४६
ऐल्वियन; देखिए इंगलैण्ड	
ऐवर्ना; देखिए आयरलैण्ड	
ओमान	३६३
कटार	३६३

कनवान (काडेश)	२२८, ८७, ९९, ३०१, ९, २५, २७, ५५१, ५६
कनाडा	७५५
कम्पूचिया (कम्बोज, कम्बोडिया)	४१२, ५१५, १६, १७, २६, २७
क्यूबा	५३२, ७५०
कलीशिया (किलाशिया, अस्तान्तश)	३२२, ३८, ५३, ८६
क्रीट (क्रीटा, काण्डया)	९, २८७, ३०२, ४७, ६३२, ४०. ४१, ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ४९, ५१, ५५
कुयेत	३६३
कैमेरून	६०२
कैरिया (कारिया)	३५१, ५३
कोरिया (कोरूरियो, कोरिया, चीनी भाषा में चाउ शानि)	४०९, २३, ८०, ८१, ८२, ८७, ८९, ५१, ९२
गाल	६९३
ग्रीस	९, ७६, २८७, ८९, ९९, ३३५, ४०, ४३, ५१, ७९, ५५९, ६०, ६५, ९१, ६२०, २५, ३१, ३२, ३६, ४०, ४४, ४६, ५७, ६०, ६२, ६७, ६८, ८५, ९३
ग्रेट ब्रिटेन (युनाइटेड किंगडम) देखिए इङ्ग्लैण्ड	
चिली	७६१
चीन (अरबी भाषा-सीन; अंग्रेजी-चाइना)	९, १०, १४, ७८, २०४, ३२४, ८३, ९७, ९९, ४००, १, ९, १०, ११, १३, १४, १५, १६, १७, १९, २०, २१, २२; २३, २५, ३४, ४६, ५०, ५४, ६९, ७३, ७६, ८०, ८१, ८६, ८८, ८९, ९१, ९२, ९६, ५०७, १८, २६, २७
जर्मनी	२६७, ३२१, ४९२, ५१५, ६३, ६४४, ५८, ७८, ८८, ९७, ९९, ७१५, १८, १९, २१

जर्मनिया (देखिए जर्मनी)	
जार्जिया	३८७, ८९, ९०, ९१, ९२, ६९९
जार्डन (यार्दन)	३६३
जापान	१४, ४१७, २१, २३, ४६, ८०, ८१, ८७, ८८, ९०, ९१, ९२, ९६, ५०९, ३२, ६३, ६९९
जावा	४१७, ५२७, ३२, ३४, ३५
जावा माइनर (दे० सुमात्रा)	
जिवुती (दे० आफ्रिका ईसास)	
जुगुरथीन	५९५
जेकोस्लोवाकिया	६९७
टमोबेन (दे० श्रीलंका)	
टर्की (दे० तुर्की)	
टियूनीशिया	२९७, ५६३, ९५, ९७
ट्रांसिल्वेनिया	७१५
ट्रूशल ओमान	३६३
डेनमार्क	७४, २६३, ८२, ४७६, ६९४
डेकिया (दे० हगेरा)	
तारा	७०८
तिम्बो	६१३
तिब्बत (तिब्बत-बोद; भारतिय-मोट; मंगोल-दुबेत; चान-शी दुसांग)	२०४, ३९७, ९८, ९९, ४८०, १, २, १६, ६२, ५०७
तुर्की	२३४, ३१९, २०, ८२, ४३, ५१, ५३, ६३, ६६, ५३७, ६३, ६०४, ३१, ३६, ४५, ६०, ८८, ९७, ७१८
तुवैनेनिया	६०२
तैवान (फारभूस)	४२१, २३
तोखारिस्तान	४६९
थाईलैण्ड	५१५
दक्षिण अरेबिया (अरब)	६१७, २०
दक्षिण कोरिया	४२१
दक्षिण चीन	४१७, २१
दक्षिण पश्चिम कोरिया (माहन)	४८०

दक्षिण पश्चिम चीन	७८
दक्षिण भारत	८६, ९९, १२१
दक्षिणी आस्ट्रिया	७१५
दक्षिणी गाल	७२१
दक्षिणी मिस्र	५४५, ४६
दक्षिणी मोयशिया (बुल्गारिया)	६९७
दक्षिणी यमन	३६३
शाहोमी	६१५
नाइजेरिया	६१३
नार्वे	२६७, ६८८, ९९, ७०८, १२, ६१
नीदरलैण्ड (दे० हालैण्ड)	५३२, ३५
नुमीदिया	५९५
नेपाल	५०७, २०४, ६, ७, १२, ३९७, ४०
पन्नोनिया (दे० हंगेरी)	७१५
प्रथम जावा (दे० सुमात्रा)	५३५
पर्शिया	९९, २३३, ३४, ३९, ४७, ५२, ५४, ६१, ६२, ६३, ६४, ६७, ६९, ७०, ७७, ८२, ३३५, ३८, ७७, ८५, ९०, ४१६, ६५, ७६, ५५९, ६०, ६२, ६२९ ५७, ६२, ६४
पश्चिमी चीन	६९९
पश्चिमी तिब्बत	३९९
पश्चिमी तुर्किस्तान	४६२, ५५, ७६
पाकिस्तान	२६, ७८, ९१, ९४, ९९, १०२, ७२
पार्थिया	२५२, ४१२
पालीनेशिया	७६१, ६२
पीरू	१०, १४, ७४८
पुर्तगाल	१०, २१६, ९१
पूर्वी तिब्बत	३९९
पूर्वी तुर्किस्तान	४६९, ७३, ७६
पोलैण्ड	६९७, ९९
पैलेस्टाइन (फिलिस्तीन)	१०, २९९, ३२७, ३२, ३५, ४०, ८६, ५५६
फ़लाबा	६१३
फ़ारमूसा (दे० तैवान)	४२१, ९२

फारस (दे० पर्शिया)	२७७, ४१६
फ़िनलैण्ड	६९९
फ़िनीशिया (होनर-फ़िनिक्स; रोमन-फ़िनीकेस, प्युनीकस, प्युनी; इगालिश- फ़िनीशिया)	९, १४, ५८, ८७, ८८, ८९, ९७, २८७, ९५, ९६, ९९, ५५३, ९७, ६४, ५७, ५८, ६८
फ़िलिपाइन्स	५२७, ३१, ३२
फ़्रीनान	५२६
फ़्रांस	१०, ७८, १९६, २५५, ६३, ६६, ६७, ८२, ९७, ३०२, ३५, ४१९, २१, ५०, ८१, ९१, ९२, ९३, ५०९, १५, १८, २७, ६३, ७१, ६०४, १३, २०, ३६, ८८, ९९, ७२१, ५३, ६१
फ़्रीजिया	३४३, ४६, ४९, ५०
बंगला देश	१०७, ५०९
बहामा	१०
बाल्टिस्तान	४०२
बाह्या तिब्बत	४००, १
बिया	५९५
बुरियात	४६५
बुल्गारिया	६९७, ९८, ७१८
बेवोलोनिया	२३०, ३१, ३८, ३९, ५७, ८९, ३१३, २७, ३५, ३७, ३८, ५५८
बेल्जियम	७६१
बेस्सर्बिया	६९७, ९९
बैक्ट्रिया (बाख़्तिया)	७८, ९९, १०१, २५२, ४७३
ब्रह्मा (बर्मा)	५३, १६०, २१६, ४१६, २१, ५०७, ८, ९, १५, १८
ब्राजील	१०
ब्रिटेन (ब्रिटोनिया)	२५२, ८७, ३६३, ६४, ४४३, ९२, ५१५, ६३, ६८, ७०७, ८, २१, ४८
भारत	६, ९, १४, ४३, ७६, ७७, ८०, ८८, ९०, ९१, ९२, ९५, ९६, ९९, १२७, ६८, ७२, ७७, २०६, १२, २१, ५२, ६३, ६८, ३५९, ९७, ४००, १, १२, ६२, ९२, ९३, ५०९, १८, २६, ३२, ६२, ७२, ६०७, २५

मध्य चीन	४१२, २१
मलाया	३७९, ५२७, ३२
महा फ्रीजिया	३४३
माल्टा	२९७, ३११, ६६०
माल्दीव	२१७, २१, २२
मिल ९, १०, १४, १८, २६, ५८, ७७, ९७, २४८,	
५०, ६६, ८९, ९३, ३०२, ३, ९, १८,	
२०, २४, २५, २६, २७, ३५, ४३, ५३,	
५९, ६६, ७३, ४२३, ५४५, ४६, ४७,	
४९, ५०, ५२, ५३, ५६, ५७, ५८, ५९,	
६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ६५, ६७, ६८,	
६९, ७१, ७४, ७७, ९१, ६४, १५,	
१७, २०, २९, ४१, ४६, ४८, ८५	
मिल्ली सुडान	६०४
मोरा	३१३
मेसोपोटामिया (आ० ईराक) ९, ४४, ५८, ७१, ९७,	
२२५, ३१, ३५, ३८, ३९, ३४०, ८६,	
४१६, ५५४, ६२९	
मेनीटोबा (आ० कनाडा)	७५५
मैलेशिया	४८७
मोराविया	६९७, ७१५, ७२१
मोरोतैनिया	५९७
मंगोलिया ३६१, ४००, १६, ६०, ६२, ६५, ६९,	
४७३	
मंचाओ कुओ (मंचूरिया)	४६९
मंचूरिया ४९६, १७, ५८, ६०, ६९, ७२, ८१,	
९२, ६९९	
यतनाम-दानाओई (दे० सायप्रस)	६२९
यमन	३५९, ६३
यमातो (दे० जापान)	४८७
युकेटान	७४८, ५०
युक्रेन	६९९
युगोस्लाविया	६९७
यूनान (दे० ग्रीस)	६३६

रूस (सोवियत सोशलिस्ट गणतन्त्र राज्यों का	
संघ) २५४, ३२०, ९, ४१६, १९, ६०,	
६५, ६९, ८१, ९२, ६३६, ९७, ९८, ९९,	
७००, ४, ५, ६, १५, ५६	
रोमा रंग दे० (लिबेरिया)	६०७
लाओस	५१५, १६, १७, १८, २५
लाइकोनिया	३८६
लियूनिया	६९९
लिबेरिया	६०४, ७
लीकिया	३४३, ४८, ४९, ८६
लीडिया २४८, ५७, ३४३, ४७, ४९, ५०, ६६४,	
६७, ७१	
लोविया	५५६, ५७
लेबेनान	५५६
लेसर अरमेनिया	३८५, ८६
लैटियम (आ० मध्य इटली) ६६७, ६८, ७२, ८५,	
८७, ७०	
लंका (दे० श्रीलंका)	२१६
वियतनाम	४२३, ५९६, १७
श्याम (आ० थाईलैण्ड) ५०७, १५, १६, १७, १८	
शिबिर (दे० साइबेरिया)	४७३
शी द्सांग (दे० तिब्बत)	३९७
सबा	३७७, ७८, ६२०
सायप्रस (किप्रस) २८९, ६२९, ३०, ३१, ३२	
सायवेरिया (साइबेरिया) ४१६, ६०, ६५, ७३,	
६९९, ७१८, ५५	
सिंगापुर	४२३
सियर्रे (सीरि) ल्योन	६०७, १३
सोथिया	९९, ७०७, २१
सीरिया २३८, ५२, ८७, ८९, ३०२, ९, ११,	
३५, ३६, ३७, ४०, ४३, ४४, ५३, ६३,	
७९, ८५, ८६, ४६०, ६२, ५५३, ५६,	
५८, ६२, ६३, ६४४	
सोलोन (दे० श्रीलंका)	२१६
सूडान	५६३, ९५
सुमात्रा	५३५, ४१
सूसियाना	२४७

सोमिदा (प्राचीन पर्शियन सुगुदा; ग्रीक-सोमिदियाना)	४७३
सोमाली लैण्ड (सोमालिस)	६०४
स्वीडजरलैण्ड	३२१, ६८५
स्वीडन	२७२, ५६७, ६४७, ९९, ७०८
स्पेन	१०, २६१, ३७९, ४९१, ५२७, ३२, ६०२, ८८, ९३, ७२१, ४१, ५०, ५३, ५५
हत्तूशा (खत्तूशा)	९, ३०९, १०, २४
हवाशित (हवाशत)	६१७, २०
हॉलैण्ड (दे० नीदरलैण्ड)	२१८, ६२, ४८१, ९१, ५३५
हिन्द चीन	५५६, २७
हिन्देशिया	५३२, ३४
हेजाज	२३४, ६४, ६६, ६७
हैवर्नी (दे० आयरलैण्ड)	७०७
होन्डुराज	७५०
हंगेरी	४१६, ६०, ६६७, ७१५, १६, १७, १८, २२, ३३
श्री लंका (अरबी-सेरन दीव; पुर्तगाली जीलोन; ग्रीस-उप्रोवेन; अग्रेजी-सीलोन)	१३४, २१६, १७, १८

धर्म

इस्लाम	२२८, ३५७, ५८, ६१, ६३, ८३, ४०२, १२, ५३५, ६१, ६५, ६१३, ६३
ईसाई	३६८, ७३, ७७, ८५, ८७, ४१२, १९, ५०, ६५, ८१, ९१, ५३२, ६६, ६१, ६१३, ४५, ७४, ९७, ९८, ७०८, २१, ४१
कनफ्यूशस बाद	४११
काटिक ईसाई	६२०
ग्रीक ऑर्थोडॉक्स चर्च	४६५, ६६७
जिसूट	५६६

जैन	२७, १२९, ३२
ताओ (ताव) बाद	४११
दीने इलाही	६०
नेस्टोरियन	३४३, ४६२
बौद्ध	१२७, ४१२, ६०, ६२, ६५, ७६, ८०, ८७, ८८, ६१, ९२, ५०७, ६, २६
मज्जावाद	३५७
मेथार्डिस्ट	७५५
यहूदी	२२५, ३५९, ७७
लैटिन ईसाई	७१५
वहाबी	३६३
वैष्णव	१२७, ५२६
शिन्तो	४८७, ८८
शैव	१२५, २७, २६, ३२, ३४, ५०, २०४, ५२६
सिक्ख	६१, १७७
सूफी	२५२

धर्म प्रवर्तक

अब्दुल वहाब	३६३
इग्नेशस लोयला	५६६
ईसा	३३१, ६१, ७५, ७६, ८७, ६०, ४२६, ८६, ९२, ५०७, २६, २७, ३२, ३५, ९७, ६१७, २०, ८८, ९३, ९४, ९७, ९९, ७१५, ४१
कनफ्यूशस (चियु कुङ्ग; कुङ्ग फूत्से)	७६, ४११
गुरु गोबिन्द सिंह	९१
गुरु नानक	९१
जैकोबस बराडियस (पादरी)	३४०
ओरोआस्ट्र (ओरथूत्र)	७६, २८२, ४७६
नेस्टोरियन (पादरी)	३४३
बुद्ध (महात्मा)	७७, ८२, १०७, १८, ४६०, ८७, ८८
मझादोर (तीर्थंकर)	७७, १०७
मानो	४७६
मुहम्मद (हज्जरत मोहम्मद रसूल सल्ल०)	३६१, ३८३

मोजेज (हज़रत मूसा)	३२५, २६, २७, ३०, ७३, ७५, ५५६, ७०
मेन्वायस	४११
लाउत्ते (लाउत्सी; ली अर्रे)	७६, ४११
वृषभ (तीर्थङ्कर)	२७

धर्म प्रचारक एवं धार्मिक नेता

इब्राहीम (अलह सलाम)	२२८, ३२, ३२५, ५५४
इस्माइल (अ० स०)	३२५, ५६४
ईसाई प्रचारक विलियम राइट	३१२
ईसाक (अ० स०)	३२५
उमर (हज़रत खलीफ़ा)	२६१
उस्मान (हज़रत उस्मान ख०)	३८३
एमोन (लूत के पुत्र)	२९७
कोर्तेज, हर्मन	७४१, ५०
खुदानन्द (स्वामी)	४६५
गुरु अंगद जी	१७७
जगद्गुरु शंकराचार्य	१३४
जशुआ	३२६
जैकब (याकूब अ० स०)	३२५
ताशी लामा	४००
दस्तूर (पुरोहित दारा)	२६३
दलाइ लामा	४००, १
नूह (हज़रत, अ० स०)	२२५, ६०४
पंचेण लामा	४०१
फ़ातिमी खलीफ़ा	५६३
बौद्ध भिक्षु	११८, ४८७, ८६, ९२, ९६
भारतीय धर्म प्रचारकों	६२५
भृङ्गारकर बाबा	१४२
महिन्दभिक्षु (अशोक पुत्र)	२१६
युसुफ (अ० स०)	३२५
लामा	३६६, ४००, २
लूत (अ० स०)	२६७
शैव संत अप्पर	१३२

साम (नूह के पुत्र)	२२५, ६२०
सेण्ट टॉमस	७८, ३४३
सेण्ट पाल	६५८, ६०
सेण्ट मार्क	५६१
सन्त उलफ़िलास (बुलफ़िलास)	६६३
सन्त पैट्रिक	७०८
सन्त मेन्नाब (मेन्नाप)	३८५, ९०
सन्त जानेश्वर	८८
सोनम म्यात्सो	४००
हाम (नूह के पुत्र)	६०४, २०

नगरों के नाम

अकोला	८६
अक्काद	६४
अजमेर	१०२
अदिस अबाबा	५६६, ६२०
अनाहुआक	७४१
अनुराधापुरा	२१७
अपरी	५३१
अवाइडोस	५४६
अबूजिनेमा	३७५
अम्बाला	९७
अमरावती	५२६
अयोध्या (अयोध्या)	५१५
अल-ऊला	३५८, ७७
अल हिज़र	३६४, ६८
अलेप्पी	२१७
अलेपू	३०९
अवारिस	५५१, ५२, ५७
असारलिक	३५३
असीयुक्त	५५७
आक्सफ़ोर्ड	६४५
आक्सफ़ोर्डशायर	२६८
आर्ताक्सेटा	३८३

भाराह	१५४	कड़पा	१५०
बालमगीरपुर	२५	कनेम	५८६
बावा (आ० मारडले)	५०७	कन्नोज	८५, १२७, ८४
बासोपनी	३८६	कपिलवस्तु	१०७
इकारा	६३८	करनवू	३७७
इथ एत तवी (देखिए लिखत)	५५१, ६४	करनाक	५५४
इनांग युद्ध	५०८	कराची	३८३
इमरोज	६३८	कर्जोन	३३७
इयॉस	६३८	कर्पेथास	६३८
इलाहाबाद	११३	कफू-कर्कीरा	६३८
इलो इलो	५३१	क्यागिन	५०८
इस्तखर	२६१	क्याक्यादुंग	५०८
इस्तमबोल (देखिए कुस्तुनतुनिया)	३१२	क्योतो	४८९, ९१
उज्जैन	७७	कृष्णा (अनपद)	११८, २१, ४२
उज्जयिनी	११३	कलकत्ता	५८, ९१
उम्म-अल जमल	३६८, ७०	कलेवा	५०८
उर्गा (आ० उलान बतोर)	४६०	कांची (कांजी वरम, दक्षिण काशी)	८६, १२१, ३२
उरखिलीनू (देखिए हमाय)	३२२	कांचीपुरम	८८, १४०
एकबटाना (इकबटाना; देखिए हमदान)	२४८	काठमण्डू	२०४, ४००
एक्रोपोलिस	७६४	का-डिंगर-रा (अक्कादियन भाषा—बाब इलिम;	
एक्जेन्यस	३४७	वेबल; वेबीलोन)	२२९
एडेसा	३३५, ४०	कानपुर	४४
एडोम	३२६, ६३	कानिया	६४४
एड्रियाटिक	७०७	कानो	५९६
एदो (इयदो; दे० टोक्यू)	४८६, ८१	काय जंग जू	४५८
एन्दास	६३८	काराकोरम	४१६, ७३
एमागोस	६३८	क्रारा बुल्गासुन	४७३
एयुक	३१२	कारकेमिश (आ० ज़ेराब्लूस)	३०९, १२, १९, २०
एलकाब (दे० नेखेब)	५४६, ६४		३५, ३७
एलेक्जेंड्रिया	५६२, ६९	कार दुनियास (वेबीलोन)	२३०
ओनू (मिस्री भाषा में; दे० हेलेथो पोलिस; ग्रीक		कालीकट	९१
भाषा में)	५४६, ४९, ६४	काशगर	१०१, ४७३
ओरंगो	७६१	काशी	१८७
अंकारा	३१२	काहिरा (कायरो)	५५३, ६३
अंकोर	५१५	किथनास	६३८
कटबलोगन	५३१		

किमोलास	६३८	गीजर	३०१, २
किरातिशी (अरबी में कराची)	३८३	गोजा	५४९
कीव	६९९	गुजरात	८०
कुचा	४७६	गुजरानवाला	८०
कुरकुम	३२२	गुजर खाँ	८०
कुस्तुनतुनिया (कांसटैन्टी नोपिल; आ० इस्तमबोल)	६९७, ७१८, २१	ग्रैनोबिल	५६९, ७०
कूका	५९६	गोजा	२१६
कूफा (आ० अलहीरा)	३६१, ७९, ८३	गोदावरी	८८
केफालोनिया	६३८	गोरखपुर	१०७
केरीगो	६३८	गौहाटी	४४, १५०
केलानिया	२१७	चंगल नगर	५३५
केलिमनांस	६३८	चम्पारन	१६०
केसांस	६३८	चम्बा	१५७
कैण्टन	४१२, १९	चावशीन (चोजेन; आ० कोरिया)	४८०
कैन्डी	२१७, १८	चेङ्गल	१४५
कैथे	४७३	चेल्ले मीनार	२६९
कैनोपस	५७१, ६६८	जऊफ	३५९
कैम्ब्रिज	५६६	जरख (प्राचीन अगरम)	६७१
कोचिन	१३२	जम्गापेट	१२१
कोनोजिनी	३८६	जजाकार्ता (जकार्ता)	५३५
कोपेन हेगन	२६४, ६६	जबलपुर	८४
कोयसबटोर	२१७	जम्भू	४०२
कोलम्बो	२१६	जम्बो आंगा	५३१
कोल्हापुर	१८६	जलन्वर	१५७
कोलर	१३८	जार्डियम	३४३
कौनस	३५३	जान्ते	६३८
खानबालिग (आ० बीजिंग)	४१६	जाफना	२१६, १८
खोतान	४७३	जारिया	५६६, ६९३
राजनी	८८	जिनजर्ली (समाल)	३३७
गंजाम	१५४	जूनागढ़	९०७
गया	९७	जेहा	३११
ग्याङ-से	४००	जेनुवा (जेनोवा)	६६८
ग्लेटिया	३८३	जेबेलद्रुज	३६४
गान्धार	७८	जेराब्लूस (दे० कारकेमिश)	
गारटोक	४००	जेरुसलाम (जेरू सेलम; यरुसलम)	२३३, ३२६, २७, ३५, ७९, ८३, ६३१

जौला	५९६, ६०४	तुवानूव (तपान)	३२२
जोधपुर	५०, ८०, ८२, १९४	तेजपुर	१५०
जोली	५३२	तेनास	५३८
जोहान्सबर्ग	६४९	तेन्नासरिन	५१५
ज्यासल	७५३	तेवेस्ता	५९७
टाइल	७०७	तैमा	३६३, ६४
टिनोबिटव टलन	७५०	तैले हकुआ	७५५
टियूनिस	२९७	तौगू	५०८
टुटीकोरिन	२१७	तौगी	५०८
टेल एल अमरना	३१८, ३४३, ५५४	तौलेसप	५२६
टेहड़ी-गढ़वाल	४०२, ७	तंजावूर (तंजौर)	८७, १३२
टैनिस (मिस्री भाषा-यर रेमेसीज़)	५४६, ५७, ५८, ६४, ७१	त्सान-त्सहो-अंगाइ	४५४
टोकिगू (टाक्यू; प्राचीन यदो)	४९१	थीवीज (मिस्री भाषा-वेसी)	५४६, ५०, ५१, ५४, ५५, ५७, ५८, ६४, ९६
टोल्लन (आ० टोला)	७४१	थुग्या (आ० दौग्या)	५९६, ९७
ट्रायर	७२१	थेरा	६४१
ट्रावनकोर	१३४	दमनहुर (देखिए बेहदेत)	
ट्रिन्कोमली	२१७	दमिश्क (दे० डैमसकस)	३१२, ६६
ट्रेंट	६७८	दार्जिलिंग	२१२
डबलिन	७०८	दाशुर	५४६, ५१
डिबान	२९७	दिल्ली	८४, ९०, ९४, ९७, ५२७
डैमसकस (अरबी-दमिश्क)	३१२, ३३५, ३७, ३८, ६३, ६६, ६८, ५३२	दीनाजपुर	९७
डोरसेट	५७०	देवगिरि	१४०
दक्कलवन	५३१	देवनगर	१८७
दहले जमशीद	२५७	दोनेपुण्डी	१४५
दजरा	६०४	नई दिल्ली	३९, ४६५
दजुरा	६०४	नगादा	५४५
दलबन्दी (आ० नानकाना-पाकिस्तान)	९१	नन्दीनगर	१८७
दादमूर (डेडमौर)	३३८	नपाता	५५८, ९१, ९६, ६१७
दिगरे	६१७	नर्सारावपेट	१४२
दिन्नेवेल्ली	१२४	नागाओका	४८९
दिफ्रलिस (तिचलिस; त्वीलिसी)	३८७, ९०	नागासाकी	४९१
दिरुवेन्द्रम (अवेन्द्रम)	२१७, १४२	नानकाना (दे० दलबन्दी)	
दिवकोवलूर	१२९	नार्नकिंग	४१७, १९, २१
चुन हुआंग	४७३	नार्थस्वोरेड्स	६३८
		नॉम पेन	५२७

नारा	४८८, ८९	पुयेथोर्प्रिसेसा	५३१
नालन्दा	१५४	पुलोपिर्नांग	५१५
नासिक	१०९, १८, ४०	पूना	९१
न्यूरेम्बर्ग	७१८	पे	५४६
निकोशिया	६३१	पेट्रा	३६३, ७९, ८३
निगम्बो	२१७, १=	पेडांग	५३५
निनेवः (आ० कुर्येनिक)	२३३, ३६, ४=, ३४९	पेरिस (फ्रेंच भाषा में-पारी)	५, २६७, ६९, ८२, ३३८, ५३२, ६८, ७०, ७१
नूविदा (आ० स्यूस्मिम्बल)	३५३, ५५१, ५६, ५=	पैठन	१०६
नेल्डेव (मिस्री भाषा में; दे० एल काव-ग्रीक भाषा में)	५४६, ६४	पोटोतोवो	५९६
नेल्डेन (मिस्री भाषा में; दे० हेरेकोन पॉलिस-ग्रीक में)	५४६, ६४	पोन्टस	३८६
नेफ्रेस्सी	५५२	प्रोम	५०७
नेवलेस (आ० शिकिम)	३३२	पोल्साकवा	२१७
नेल्लोर	१४२	फिगीक	५३३
नोवगोरोड	६९९	फ्री डाउन	५६६, ६१३
नौक्रेटिस (मिस्री भाषा में; परमेरी-ग्रीक भाषा में)	५५६, ६४	फ्रिडाई	५६१, ७०
पररेमेसीज (दे० टैलिस ग्रीकभाषा में)		फ्रोर्ट सेण्ट जुलियन	५६७
पसरगादे (आ० मुरगाव)	२३१, २५७, ६१	फोरम रोमाना	६८७
पसीपोलिस (आ० तख्ते जमशीद)	२५७, ६१, ६२	वकूफू	४८६
६५, ६६, ६८		वरादात्र	२६६, ३६१, ४१६, ५३२
प्रयाग	६६, ११३	वसुईधो	५३१
प्लासी	९४	वंगलौर	१८६
प्सीडिया	३८६	वदामी	१४२
पागन	५०७, ५०८	वदामुं	९०
पाटलिपुत्र (आ० पटना)	८०	वनात	७१५
पाण्डीचेरी	९१, १३८, २६३	वनवामी	८८
पाण्डुरंग	५२६	बनारस	४४
पियोंगयांग	४८०, ८१	बम्बई	२०, ५८, ६१, ६४, २५२, ६३, ६८, ३५६
पीकिंग (आ० बीजिंग)		बकले	४३१
पीगू	५०७, ८, ९, १५, १६, १७, १८, २१	बरबेरा	६०४
पीलीभीत	१२७	बर्नो	६६७
पीहित (आ० जाफना)	२१६, ३१	बर्लिन	६९९
पुताओ	५०८	बल्ख	२५२, ४६२, ६६
पु तालम	२१७	बसरा	३८३
		बहरियत (प्राचीन आइसिन)	२२९

बाँन	२६७
बासिलोना	६९३
बारी	६१३
बावद्वीन	५०८
बित अदीनी	३३७
बिलासपुर	१८९
बीजापुर	९१, १६०
बोजिग (देखिए पीकिंग)	
बुखारा	४६२, ७३
बुतुअन	५३१
बुद्ध (बौद्ध) गया	६६, ४०१
बुबास्ति (बास्त)	५५७, ६४
बुलहर	६०४
बुल्हर मैदान	३१२
ब्रुकलिन	६४७
बूटो	५४६
बूदा	७१७
बेबीलोन ^१ (आ० हिल्ला)	५८, २२९, ३०, ३१; ३३, ३६, ४१, ४२, ४७, ५५, ८६, ३८७, ४७६, ५५८, ६६१, ६३२
बेहदेत	५४८
बेसीन	५०८, ६
बैकांक	५१५
बोगजकुई (दे० हत्तुशाश)	३०९, ११, २०
बोयन	७०८
बोर	३१२
भट्टी प्रोलू	११८, २९
भामो	५०८
भावलपुर	१०२
भइनपगान	१३२
मक्का (शरीफ)	३११, ६१, ६३, ६६, ८३, ५६२
मछली पट्टम	९१
मथुरा	७८, १८९
मदीना	३११, ६१, ६६
मदीनत अबू	५५७

मद्रास	९१
मधुरा (मदुराय)	१३४, ८७
मनीला	५२७, ३१, ३२
मन्वसौर	१९४
मर्वदस्त	२५७
मलाबार	२२१
मसकट	३६३
महामल्लपुरम	१२९
महीवरपुर	५२६
माईन	३७७
माण्टगुमरी	२६
मातारम	५३५
माण्डले (दे० आवा)	
माण्डव्यपुर (आ० मण्डौर)	८०
मारिब (मारवी)	३५६, ७७
मारो (आ० हरीरी)	२२७, ३०६
मार्सेइ	२९७
माले	२२१
मावची	५०८
मिकोनास	६३८
मिग्यान	५०८
मिनेत-एल-बैदा	३०२
मिरोइ	५६१, ६२
मिल्वर्टन	५६९
मीतकीना	५०८
मुआंग लंकून	५१५
मुजफ्फरपुर	१६०
मुल्तान	१७७

१. अक्कावियन भाषा में वाव = द्वार; इलिम = भगवान; बावईलिंग; बाइविल; बेबिल अर्थ हुए — भगवान का द्वार; ग्रीक भाषा में 'न' जोड़ने से हो गया 'बेबीलोन'। कसाइट शासकों ने इसका नाम कारदुनियाश रख दिया। अब केवल एक टीला रह गया है। उसी टीले के निकट हिल्ला ग्राम है।

मुवातली (गुरगम्मा)	३२२	रोहता	२१६
मुसल	३४०	लओ आग	५३१
मेइदुस	५४९	लखीमपुर	१६८
मेगिङ्गो	२८७	लद्दाक (लद्दाख)	३९७, ४००
मेनकौरे (माइसे रीनस)	५४६	लन्दन (लन्डन)	२६, ६७, २६९, २७३, ६४७
मेम्फिस (ग्रीक भाषा में; मेन नेफर-मिस्री भाषा में) ५४६, ५७, ५८, ६४, ६८, ९६		लबरनाश (तवरनाश)	३०६
मेरठ	६७	लशियो	५०८
मेलॉस	६३८, ६४१	लूकास	६३८, ५८
मैक्सिको	७४१, ४२, ४८, ५०	ल्लासा	३६७, ४००
मैड्रिड	७५०	लारकाना	२६
मैदाने सालिब	३६३	लिगमोर	५१५
मैयूर	१५०	लिनेरिक	७०८
मोनरोविया (मॅनरोविया)	५९८, ६०७	लिस्त	५५१, ६४
मोमुल	३५७	लुआंग प्रबंग	५१५, १८
मोहेंजो-दड़ो	२७, ७४	लुकेनिया	६७४
मौलमीन	५०८	लुक्सर	५४५, ५४
यथील	३७७	लू कुआन हीन	४५४
यदो (देखए टोक्यू)		लेमाखी	५३१
यशोधर पुर	५२६	लेमनास	६३८
यार्क	६८८	लेसाबास	६३८
यार-लॉग	३९७	लैगास	५६६, ६१५
युटंग	४००	लोथल	२६
युबोइया	६३८	वर्षा	१९४
यूबिया	६७१	वाटरफोर्ड	७०८
रंगपुर	२५	वातापो (वादामी)	१४२
रंगून	६०	बान	२६६
रतनपुर	१८९, ६४, २१७	वारंगल	८८
राजमुन्द्री	१४२	वाराणसी (बनारस)	८२
राजारत्ते	२१६	वाशिंगटन	४९२
राजाशाही	१५०, १५४	विजय	५२६
रानो रोराकू	७६१	विजय नगर	१३२, ३४, ३८, ४२, ९४
रॉस्टाक	२४६	विदिशा	७८
रोम (रोमा) ९, २५२, ८६, ६३, ३२७, ३५, ३८, ४७, ५३, ८५, ४१२, ५६१, ६२, ६६, ९५, ६३६, ४४, ६०, ६८, ७०, ७२, ७८, ८५, ६७, ७०८, ७१५, ७२१		विशिलापटनम	१५४
		वीन चाँग	५१५
		वेंगी	१४०

वेनिस (विनीज़िया)	८७, २६१, ६३१, ४४, ५८, ६०, ७४, ८५, ६८, ६९
वेस्तिनी	६७४
वेलूर	१३८
वेसी (देवि ए थ्रीबीज़)	
वैशाली	२०४
वोलसिनीआइ (वोल सेना)	६६८, ६६
वंवाई	४००
शाकम्भरी (सांभर)	८४
शातेल अरव	३६८
शिमला	४००
शिवनेर	१९
शीराज (आ० चेल्ले मीनार)	२६१
सक्कारा	५४६
संजान	२५२
सतारा	९१
समारिया (आ० सिबास्त्रीया)	२३२
समाल (जिन जलों)	३३७
सक्रा	३६६
समरकन्द	४६२, ७३
समोथ्रेस	६३८
सन्तोरिन	६३८
सराय	६६६
स्थानेश्वर (थानेश्वर)	८२
सलामिस (ग्रीस)	२५०
सलामिस (सायप्रस; आ० एनकोमी)	६३१, ३२, ५७, ५८
स्केपेलास	६३८
स्काइरास	६३८
सहसराम	१५४
साइस	५५१, ५७, ५८, ५६
सारन	१६०
सिगीरिया	२१७
सिपिलोस	३१२
सिकन्दिया	३७५, ५६०, ६१, ६३, ६८
सिटका	७५६

सिफनस	६३८
स्किया थोस	६३८
स्मिर्ना	६६७
सियोल्	४८१
सिरवाह आ० (खरीबा)	३५९
सिरॉस	६३८
सी-एन-फू	४:२
सोरिक्स	५०८, ६
सुरीगाड	५३१
सूरत	९१, २६३
सूसा (सूसा)	२३०, ३१, ४१, ४७, ५५
सैमनिक्स	६७४
सेरिफॉस	६३८
सैलोनिका	६६, ७८
सोमरसेट	५६९
हडप्पा (हरीयूपा)	२५, ४३, ७४
हत्तुशाश (आ० बोगज़कुई गोर्गे ग्राम)	३०६
हनमकोण्डा	८८
हमा	३११, १२
हमाथ	३३७
हमदान (देखिये एकबटाना)	
हरन	३७९
हरार	५६६, ६०४,
हपीनी	६७४
हरीरी (दे० मारी)	
हल्पेश्वर (दे० तेजपुर)	
हवारा	५५१
हानयांग (दे० सीयोल)	४८०
हिज	३७६
हिरैकिलोपोलिस	५५०, ५७
हिल्ला (दे० बेबीलोन)	२२८
हिस्टोनिया (बास्ता)	६६८, ६९
हुगली	६१
हेबरोन (हेब्रोन)	२२८, ३२५
हेलियोपोलिस (दे० ओनू)	५४, ६२
हेलीकानैसस	३५१; ५३, ६३६, ६७

हेलेसपाण्डस	३४३
हैदराबाद	९२
श्री कण्ठ	८२

नगर-राज्य

अक्काद (आ० एलदीर)	२२६, २७, २८,
५५, ३३५	
अगरम (आ० जगरेब)	६६८
अगादे (देखिए-अक्काद)	
अग्नेोन	६६८, ६६
अदाब	२२५, २६
अपूलिया	६६८
अबूहबा (दे० सिप्पर)	
अपोलोनिया	६३८, ५८
अम्ब्रिया	६७४
अम्ब्रोसिया	६३८, ५८
अर्गास	६३८, ६०
अरोकिया	६६८, ६६
अशकाब	२२५, २६
अशुर (आ० शरकात)	२२९, ३९
आईसिन (आ० बहरियत)	२२९
आर्कोडिया	६६४, ६५
आर्कोमिनास	६४५
आदिया	६६८, ६९
इगूवियम (आ० गुब्बियो)	६६८, ६९, ७४
इथाका	६३८
इथोलकास	६४५
इरीडू	२२५, २६
उम्मा (आ० टेल जोखा)	२२५, २६
उर (आ० मुक्यर)	४४, २२५, २६, २७,
	३२, ४३, ५५४
उरुक (आ० वरक)	२२५, २६, २७, ३५, ४३
उधमाल (उधमल)	७४८
एजीना	६३८, ५८

एथेन्स	२५०, ६३२, ३६, ४४, ४५, ५७,
	५८, ५९, ६०, ६२, ६४
एनेक्टोरियम	६३८, ५८
एपोलोनिया (देखिए अपोलोनिया)	
एफिसस	६३८
एल वेमिर (दे० किश)	
एशनुभा (आ० टेल असमार)	२२९
एस्की अदालिया (दे० सिडे)	
ओम्ब्रिका	६६७
ओलिम्पिया	६३८, ६४
कइदेनिया	६३६
कपुआ (दे० कै सलिनम)	
कायरी (आ० कथैतरी)	६६७, ६८, ६९
कालसिस (खालसीस)	६३८, ७१
किर्ता	५९५, ६६८
कियास	६६८
किश (आ० एल वेमिर)	२२५, २६, २७, ४३
कुमाय (कीमाय, क्युसी)	६६८, ६९, ७१
कैसिलिनम (आ० कपुआ)	६६८, ६९, ७२
कोरिनथ	६३८, ५८, ६०, ६१, ६२, ५७
कोस	६३६
क्नीडस	६३६
क्लूसियम	६६७, ६८, ६९, ७०
गबीआई	६६८, ६९
जेवाल (आ० जेवाइल)	२२३
जेम्द नल	२४३
टस्कोतेला (आ० टस्केनीया)	६६८, ६९
टायर (आ० सूर)	२८७, ९३, ६२९, ४०, ४४
ट्रॉय	६३६, ४५
टीबुर (आ० टीवोली)	६६८, ६९
टूडर (आ० टोड़ी या तौड़ी)	६६८, ६९, ७४, ७८
टेंडमोर (आ० तादमूर-पालमीरा)	
टेल्लो (दे० लेंगास)	
डेलफी	६३८
डेलियम	६३६

तारकुइनिया (आ० तारकुइनी)	६६७, ६८, ६९, ७०
तीनिया	६३८, ६४
थीबीज (थीस)	६३६, ४०, ४५, ६०, ३२, ६४
नासास (क्रीट)	६३६, ४६
निकियास	६३८, ६०, ६२
निप्पुर (आ० नूफुर)	२२५, २६, २७, ४६
नियपोलिस (आ० नेपिल्लि)	६४५, ६८, ६९, ७१, ७२
नोला	६६८, ७२
पाइलस	६३८, ४५, ४७, ४८, ५३, ५४, ५७
पापूलोनिया	६६७, ६८, ६९
पाफोस	६२९, ३०, ३१
पायलिम्नी	६७४
पियामेंजा	६६८, ६९, ८५
पेक्सास	६३८
परास	६३८
पैलेस्ट्रीना (दे० प्रायनेस्ते)	
पोतीवइया	६३६, ५८
पोम्पेआई	६६८, ६९, ७२
प्रायनेस्ते (आ० पैलेस्ट्राइन; पैलेस्ट्रीना)	६६८, ६९, ८८
फ़लेरीआई (आ० सिविटा कैस्टे लाना)	६६८, ६९, ७०, ७८
फ़्लोरेंतिया (आ० फ़्लोरेंजे)	६६८, ६९
फ़न्तनी	६७४
फ़्रैस्टास	६३६, ४८, ५६
बद-तिबिरा	२२५, २६
बिबलॉस (आ० जेबाइल; जेबाल)	२८७, ९४, ९५
बोल्लानो	६६८, ७८
मराथन	२५०, ६३६, ५७
मन्तीनियो	६३८, ६०, ६२, ६
मर्किनी	६७४
माइसिनिया	६३८, ४५
माप्रे	६६८
मिलेट्स	६३६

मुक्य्यर (दे० उर)	
मेगारा	६३८, ६०
मेगालोपोलिस	६३८, ६४
मेस्साना (आ० मेसीना)	६६८
मेसीडोन	६३६, ६०
मोआब	२६७, ३२२
युगारिट (आ० रास शमरा)	२८७, ३०२, ३
रोड्स	६६८
रोमा	६६८, ६९
लराक	६२५, २६
लारसा (आ० सेन खरीब)	२२५, २६, २९
लिल्डस	६३६
लुगानो	६६८, ६९, ८३, ८४
ल्यूकत्रा	६३८, ६२, ६४
लैगाश (आ० टेल्लो)	२२५, २६, २७, ३५
बिनोजिया (आ० वेनीस)	६६८
वी आइ (आ० फामेलो)	६६७, ६८, ६९, ७०
वैतूलोनिया	६६७, ६८, ६९
समोस	६३६
साइनास्की-फ़लाई	६३६
साडिस	३४९, ५१, ६३६
सिडान (आ० सैदा)	२८७, ८९, ९३
सिडे (आ० एस्की अदालीया)	३५३
सिप्पर (आ० अबूहवा)	२०५, २६, ३०, ४२, ४७
सिविटा कैस्टेलाना (दे० फ़लेरी आई)	
सीराकूज	६५८, ६०, ६८, ६९
सोन्ड्रियो	६७८
स्पार्टा	६३८, ५७, ५८, ६०, ६२, ६४
हैगिया त्रियदा	६३६, ४७

नदियाँ

ओरहून	४७३, ७६
कावेरी	१५७
कुस्कोविम	७६१
गंगा	१५७
जार्डन	३३८
डैम्यूब	६६३, ९६, ७१५
दजला	२८५
नर्मदा	८२, १२७
नील	५४६, ५१, ५६, ५९, ६७
फरात	२२५, ३६१
मकाम	१०९
मोर्कांग	५२६
यनिसी	४७३
रावी	२५
सरस्वती	८२

पदवियाँ

अम्बान	४००
एटीकोट्टी	७०८
एरेक्ट	७०७
ओइन्क	७०७
कौटुम्बिक नेता	४८७
खेदिव	५६३
छोश्याल	३६६
तायरा	४८६
तोकूगावा	४६१
दाइमो	४८९
पादरी	३४३
पाशा	५६३
फुजीवारा	४८६
फराओ	५५२, ६४४

मिनास	६४४
मीनामोलो	४८६
लामा	४००
बज्रधर	४००
वानप्रस्थी सम्राट	४८६
शरगाली शरी	२२८
सेइ-ई-ताइ शोगुन	४८६

पदाधिकारी

अगस्टस जॉन्सन (राजदूत)	३११
अर्नेस्ट दि मॉर्ज़ेक (राजदूत)	२३५
अशिकाग तकाउजी शोगुन)	४८९
अर्साकीज़ (सेनानायक)	२५२
अहमद इब्न तुलुन (प्रान्त पति)	५६३
आर्त वेनस (अंग रक्षक)	२५०
ई-ताय-जो (जनरल)	४८०
ई-थे-यामू (शोगुन)	४९१
उमरो (सैनिक)	३२६
एन्ना तुम्मे (एन्मा)	२२७
एन्ड्रोगोरस (प्रांतपाल)	२५२
ओरोन्तेजो (सेनानायक)	३५१
कर्जोग्रीन (राजदूत)	३१२
क्वीटन (ब्रीटीश)	१६८
क्वीटन (ब्रिटिश)	१६८
क्लाडियस जेम्स रिच (प्रदूत)	२६६
क्लाइव (ईस्ट इंडिया क०)	९४
कामातोरी (फुजीवारा)	४८८
कियोमोरी	४८९
कौरसे	४८९, ८०
खैरबेश (सैनिक)	५६३
गौमाता (पुरोहित)	२५०
चचिल (प्रधान मंत्री)	३८३
चाणक्य (प्रधान मंत्री)	७७
चीनी	४१६, ८०

मार्शल सिनाई (देखिए—कोहेतूर)	३२६, ३०,
	७३
युराल	७१५
हेबरोन (की पहाड़ियाँ)	३०९

प्रांत

अण्डमन	५३
अन्तावर्ती तिब्बत	४००
अम्दो	३६६
अलघेनी	७५३
असम	६८, ५०६
आन्ध्र	७७, ७८, ८७, ९१, ११८, २१, २५, ४५, ५०
उड़ीसा	१५७
उत्तर प्रदेश	२१, २५, ६७
एरोजोना	१०
एलास्का	६६६, ७४८, ५५, ५६, ५८, ५९
ओकलाहोमा	७५३
कच्छ	७४
कर्णाटक	८७
कर्नाटक	१५०
कषकुडी	१३८
काठिया वाड़	६६, १०६, ३८
कामरूप	१५४
क्रीट	६४४
कुडिस्तान	२५७, ६८, ८२
केदू	५३५
केरल	१३४
कैलीफोर्निया	७४१
कोहाऊ रोंगो रोंगो	७६२
गुजरात	२५, ७४, ८०, १०७, १०९, ३८
गोआ	६१
चीनी	४१९

जेकवान	४५०
तेलंगाना	८८
तोण्डेय नाड	१२१
पंजाब	७८, ८०, १५७, ७७
पिगूरिया	६७८
पूना	१९०
फ्र्यूम	५९१
फान्सू	७८
बंगाल	८४, ८८, २६३, ५०६
बरार	८६, ८७
बलूचिस्तान	२५
बिहार	९९, १६०
बुन्देलखण्ड	८४
मिथिला	१६०
युनान (चीनी प्रांत)	४५०, ५४, ५२६
राजस्थान (राजपुताना)	२५, ५०, ६६
वेल्स	७०७, ११
शंघाई	४००
शान्तुंग	४६२
संयुक्त प्रांत	९७
स्काट लैण्ड	७०८
सखालिन	६९९
सिन्ध (शक द्वीप)	२५, ७८, ८८, १०२, ७२, ७७, ३७६
सिताई	६, ३२६, ३०, ६३, ६६, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ५५१, ६४१, ८५
सिसली	२१९, ६५८, ६०, ७०, ७१, ९३
सोक्र्यांग	४००
सोंग	३९९
हवाई	४२१
हिमाचल प्रदेश	१७२
हैन्स बर्ग	६७८
होनान	४२५, ५८

भाषाये

अक्कादियन	३२०
अखमिनिक	५९१
अंग्रेजी	२७८, ९५, ३४९, ५५, ६८, ४२१, ४०, ४१, ४६, ९६, ६३१, ७१२
अफ्रीकी	६०४, ६०७
अम्बिया	६७४, ७८
अरबी	५, १६८, २२५, ३२, ६६, ६८, ३८५
अरमायक	१०१
अरामी	३००
असीरियाई	२७३, ३१३
आर्य	६४८
इंगलिश	६०३, ४४४, ६०४, ७-८
इटालियन	६७४
ईग पिंग (टोन)	४३१
उत्तरी मण्डारिन	४२२
उर्दू	१६८, ७२
एट्रस्कन	६८७
कन्नड	३०२
कन्नड	५०
कानहक्का	४२२
काप्टिक	५७०
कियाओ कियो	४५४
कुकोचिन	१६८
कुन	५००
कुर्दिश	३५७
केल्टिक	७१२
केल्टिक-लेटिन	७१२
कैण्टोनीज़	४२२
क्री	७५५
साज (वेर्ज़)	६२०
गुरुमुखी	१७७
गुआन ह्वाह	४२१

ग्रीक	१८, ३४०, ४७३, ५४५, ४६, ६२६, ३१, ६८
ग्रीक-नवती	३६४
चीनी	१०१, ४३२, ९२, ९३
चीनी-इंगलिश	४३१
जापानी	४६१, ५०१, २, ३
जोण्ड-अवेस्त	२६३, ६६
तमिल	९९
तमाशोक (तिफनार)	५९७
तिब्बती	३९९, ४०१ ४०२, ५४
तिब्बत-बर्मी	४५०
तुर्की	१६८, ४७६
तेलुगु	१४०, ४५, ५४
तोखारी	४६९
द्रविड़	३४, १२७
दक्षिणी मण्डारिन	४२२
द्वि-ध्वन्यात्मक	४४३
ध्वनि-बल (टोन)	४२९, ३३, ५१८
नव-असीरियाई	२७३
पर्शियन	२४८, ६६
पाली	७७, १००, १०७, २६६,
पाली-प्राकृत	१०७
प्राकृतिक	७७, १०२, १०७, १०९, ७७
प्राकृत-संस्कृत	१२५
प्राचीन पर्शियन	२५०, ४७३
प्राचीन फ़ारसी	२७९, ३५९
पियू (प्यू)	५०७
पोर्किश	२२, २५, २९
पू-टंग-ह्वा (साधारण)	४२२
पूर्वी मण्डारिन	४२२
फ़्यून्कि	५९१
फ़ारसी	२६८, ३१३
फ़ारसी-भारती	१७२
फ़ोच	१८७
बर्मी	१६८

बर्मी-तिब्बत	४५०
बैक्ट्रियन	२६४
भारती	१७२
भारोपीय (इण्डो-यूरोपियन)	५३, ३११, ५१, ८५, ६७१

मण्डारिन	४२१, २९, ३१
मराठी	८८
मिस्रो	२६२, ३१३, ५४६, ४९, ५७, ६५, ७५
मोडियन	२६४, ६७
मीन	४२२
यांग पिग (टोन)	४३१
यूनानी	२ ८, ७९, ८२,
रूसी	४६९
रोमन उच्चारण	४३२
लिंग्वा-ओस्की	६७४
लैटिन (लातीनी)	२४८, ६३, ३३८, ६५८, ८५, ९८

वू	४२२
वेदनिग	४५४
शांग पिग शांग (प्रथम-टोन)	४३१
शांग शांग (तृतीय-टोन)	४३२
शिवापिग शांग (द्वितीय-टोन)	४३१
संस्कृत	९०, ५९, १००, १०२, १०९, १३, २७, ३४, ५४, ७७, ८७, ९४, २६६, ३३, ४०, ६६, ७३

स्लाव	६९७
सिडेटिक	३५३
सीरियाई	२७१
सोरियाक	३६१
सुमेरियन	३२०
सुमेरो	२७३
सूसियन (एलामाइट; अमारदियन)	२६७
हिन्दी	३११
हिन्दी	१७७, ४३०, ३२, ४४, ४६, ५००
हिन्दुस्तानी	२६६

हुई यांग	४२२
हेब्रू	५, १०१, २२८, ४८, ६३, ७१, ९७ ३११, ५९, ६५, ९८

भू भाग

गैलिली	३३१
चुनो भूमि	४०९
पम्फेलिया	३४७, ५३
माहन	४८०
रेशिया	६७८
स्कैण्डिनेविया	७०७
सिन्धु घाटी	२५, २६, २८, २९, ५८, ७४, ८६, ९७, ९८
सुमेर	२७, ४३, २२५, २७, ३५, ३६, ३७, ४५, ३२४, २५, ३५, ७०७

महाद्वीप

अफ्रीका	१०, २८५, ३५९, ४७, ४३, ९१ ९५, ९६, ६०७, १७, २१
अरेबिया	२३३, ३४, ६३, ३११, ४०, ५९, ६०, ६१, ६३, ६६, ७३, ७९, ८६, ५९५, ६०४
एशिया	४१२, १७ ५६, ६६०, ६७, ७४८
दक्षिण अमेरिका	१०; ७४८, ६१
दक्षिण-पश्चिम अरेबिया	६०४
दक्षिण-पूर्वी-एशिया	६६, ४९२
दक्षिणी-पूर्वी-यूरोप	६९७
पश्चिमी एशिया	२४९, ३११, ३८, ८५, ५४५; ५३, ५४, ५६
फ्रेंच अफ्रीका	६०७
मध्य अमेरिका	७४८, ४९
मध्य एशिया	३९७, ४११, १६, २१, ६, ६२, ६५, ७३

मध्य यूरोप	७१५
यूरोप (यूरोप)	४००, १२, १६, १७, ६३, ७३; ९१, ५३७, ३०, ३५; ६३, ९५, ६०७, १७, ९२, ७५३

युद्ध

कोरिथियन	६५७
गृह-युद्ध	४२१
चीन-जापान	४२१
चीन-फ्रांस	४२१
जिहाद (इस्लाम का धार्मिक युद्ध)	६१५
थर्मोप्ली	६५७
हूसरा महायुद्ध	४८१, ४९२
प्युनिक	५७५, ६७८
पेलीपोनेशियन	६६२
प्रथम महायुद्ध	४९२
बाल्कन	६९७
मराथन	६५७
रूस	४९२
रूस-जापान	४८१
ध्याम-कम्पूचिया	५५१
सामुद्रिक	४८९

राजकुमार, राजकुमारियाँ

अरियादने (राजकुमारी)	६४४
बाहोल्मू (राजकुमार)	४८८
कारू (राजकुमार)	४८८
कुमार देवी (राजकुमार)	९१३, २०४
कैथरीन (राजकुमारी)	९१
थ्यूसियस (राजकुमार)	६४४
दूजू शी (रानी)	४०१
नाका (राजकुमार)	४८८
प्लेसीडिया (राजकुमारी)	९१

पेसीफ्री (रानी)	६४४
महिन्द (राजकुमार)	२१६
मेरी अतेन (राजकुमारी)	५५५
रज्यश्री (राजकुमारी)	८२
शौतुकू तैशी (उमयादो-राजकुमार)	४८८
सुयीकी (राजकुमारी)	४८८

राजवंश

अंकोर	५२६
अखामेनीय (अखमेनी)	२७९
अट्ठाईसवाँ	५५६
अठारहवाँ	५५२
अयूबी	५६३
अरसासिड (आर्सासिड)	२८२, २५२
अलंग पाया	५०७, ९
आठवाँ	५५०
इक्कीसवाँ	५५७
इन	४०९
इक्ष्वाकु	१२१
ई	४८१, ६५
उत्तर चाओ	४१४
उत्तर चीइन	४१४
उत्तर ताँग	४१४
उत्तर लियांग	४१४
उत्तर हाँग	४१४
उन्तीसवाँ	५५९
उन्नीसवाँ	५५५
एक्कीसवाँ	५६०
कदम्ब	८८, १४०, ४१
कपिलेन्द्र	१५७
कल्याणी-चालुक्य	८६
कलचुरी	८४, १८९
काकतीय	८८, १४५
काण्व	७७

कार्दमक	१०६	तोकूगावा	४९१
किन	४१४, १६	दसवाँ	५५०
कुषाण	७७, १०१, ८६	दास	८८
खिलजी	९०	द्वितीय	५४६
गंग	८६	नवाँ	५५०
गजनी	८८	नाकातोमी	४८८
गहड़वाल	८२	पच्चोसवाँ	५५८
ग्यारहवाँ	५५०	परमार	८४, १८६, १६४
ग्रीक	१०१, ५६०	पश्चिमी चालुक्य	१४२
गुर्जर	८०	प्रतिहार	८२, १६४
गुप्त	८१, १३८	प्रथम	५४६
गुहिलोत	८०	पल्लव	८६, ८७, १२८, २९, ३२, ३४, ४०
गोर	८८	पन्द्रहवाँ	५५१
चतुर्थ	४५-	पल्लव	७८
चन्देल	८४	पागन	५०७
चाउ	४०, ११६, २७, ८०	पांचवाँ	५४९
चालुक्य	८४, ८६, १२१, १२९, १३४, १४०, १४२, ४५	पाण्ड्य	८६, ८७, १३४
चीइन	४११	पार्थिया	१०१
चींग	४१७	पाल	८४
चोल	८७, १२६, १५४	पूर्वी गंग	१५४
चौदहवाँ	५५१	पूर्वी चालुक्य	१४२
चौबीसवाँ	५५७	बनी अब्बास	३६१
चौहान	८४	बनी उम्मिया	३६१
छठवाँ	५४६	बसीम	१२५
छब्बीसवाँ	५५८	बाइसवाँ	५५७
जगुये	६२०	बारहवाँ	५५०
ताँग	४१२, १३	बीसवाँ	५५६
तीसवाँ	५५६	बेक्ट्रिया	१०१
तुंगू	५०७	मंगोल	४१६, ६०, ६१, ५०७, २६
तुगलक	९०	मंचू (दे० चींग)	४१७, २१, ६९, ८१
तुर्क	५६३	मनखेड	१४२
तृतीय	५४६	ममलूकी	५६३
तेईसवाँ	५५७	मल्ल	२०४
तेरहवाँ	५५१	मलेच्छ	१५०
तैलंग	१२६	मिग	४१६, ५४, ८९
		मुगल	६०

मैत्रक	८०
मोनो नोवे	४८८
मौखरि	८०
मीर्य	७७, २५२
यादव	८८
युवान (मंगोल)	४१६, २१
राष्ट्रकूट	८७, १६४
राष्ट्रकूट-राठौर	१४२
रोमा नोव	६९९
लिच्छवि	११३, २०४, ३
लोदी	६०
वर्धन	८२
बलभी	१३८, ४०
वाकाटक	८३, १२५
वातापी-चालुक्य	८६
विष्णु कुण्डी	८६
वेंगी-चालुक्य	८७
शक	७७
शांग (इन)	४०९, २७, ८०
शान	५०७
शिया	४०९
शुंग	७७
सत्ताइसवाँ	५५६
सफवी	२५२
सस्सानो	२६१
सत्रहवाँ	५५१
सप्तवाँ	५५०
सातवाहन	७७, ७८, १०६, २१
सित्युकिड	३४३
सिसोदिया	६०
सिहल	१३४, २१६
सुई	४१२
सूंग	४१४, १६
सैयच	६०
सोगा	४८८
सोलंकी	८४

सोलहवाँ	५५१
हखमनी (द ० अखमेनी)	२७८
हान	४१२, ३८
हितायत	५५६
हेमेटिक	६०४, २०
हैहय (दे० कलचुरी)	८४
होयसाल	१४२
क्षहरात	१०९

राजवंशों के संस्थापक

अमेनर तायस	५५९
अमेनेमहत प्रथम	५५०
अहमोस	५५२
उर नम्मू	२२८
एलेटीज	६५८
कंडुगोन	८७
कपिलेन्द्र	२५७
काओत्सू	४१२
कुतुबुद्दीन ऐबक	८८
कृष्ण राज (उपेन्द्र)	८४, १८६
कीवकल्ल	८४
खिज्र खाँ	६०
खेत्ती द्वितीय	५५०
गयासुद्दीन तुगलक	९०
ग़ाजी तुगलक (दे० गयासुद्दीन)	६०
चन्द्रगुप्त	८०, ११३
चन्द्रदेव	८२
चाउ कुआंग इन	४१४
चीन	४११
चुटू पल्लव	१२१, २५
अफ़ेत	३८७
जलालुद्दीन खिलजी	८८, ९०
जू युवान जाँग (हुंग वू)	४१६, ५४
जोसेर	५४६

त अंग	४०९
तेती प्रथम	५४९
तेफ नेख्त	५५७
दन्ति दुर्ग	५७
दुबिनीत	५७
नन्नुक (नन्नुक)	५४
नागभट्ट प्रथम	५२, १३४
नीको	५५९
नेक्ता नेबो प्रथम	५५६
नेटरबाउ	५४६
पियाँखी	५५८
पेदूपास्त	५५७
वेट्टा प्रथम	५८
बहलोल लोदी	९०
भिल्लन यादव	५८
मयूर शर्मा	५८
माधव वर्मन	५६
मूलराज	५४
मुसेर काफ़	५४९
यू	४०६
खुरिक	६९९
रेमेसीज प्रथम	५५५
लियू पाँग	४१२
लीसु (लीड्ज़ू) चेंग	४१७, ६६
वसुदेव कण्व	७७, ७८
वासुदेव	५४
विन्दफर्न	७८
विध्य शक्ति	५६
दू बाँग	४०६
श्री गुप्त	५०
सर्व सेन	८६
स्नेफू	५४६
स्नेन्दीज	५५७
सामन्त सेन	८४
सिंह विष्णु	८६, १२६
सेने खेन्ने	५५१

सेहर तबी इन्तेफ प्रथम	४५०
हरिचन्द्रग्राम्हण	८०, ८२
हुंग वू (दे०जू युयान जांग)	४१६, ५४

राज्य

अक्सुम	५९२, ६६, ६९७, २०
अजटेक	७४१, ५३
अट्टिका	६४५, ५७
अदाव	२२५
अन्तावर्ती तिब्बत	४००
अनशन	२४८
अरजवा	३१८
अरमेनिया (अर्मेनिया)	२४८, ६३, ३८५ ५७, ५८, ५६
अराकान	५०७, ५०६
अरामियन	३३७
अरियावने	६४४
अलवर	१६४
अवन्ती	१०९
अवार	७१५
अशकाव	२२५
अहोम	१५०, ५०६
आर्कोडिया	६६४, ६५
इटूरिया	६६७, ६८, ७०, ७१, ७८, ८५
इटालियन	६७२
इलूरिया	६७४
उत्तर	२२६
उरातू	२३२, ३३
एपीडेमनस	६५८
एलाम २२७, २८, ३०, ४२, ४७, ४८, ५५, ५६	
ओस्टमार्क	७१५
कतसीना	६१३
कताबान	३५६, ३७७
कनेम	६१३, १५

कम्पेनिया	६७२	थातोन	५०७
कम्बोज	५२६	थेसली	६३२, ४५, ७०७
कलिंग	७७, ८७, १५०, ८६	थ्रेस	३४३, ७०७
कश्मीर (काश्मीर)	१५७, ३७६, ४००, २	दलमनिया	७१५
काकेशस	६६६	दिल्ली	९०
कानो	६१३	दौरा	६१३
कामरूप	१५०, ५४	नज्द	३६१, ६३, ६४, ६६, ६७
कारटेपे	३२२	नमारह	३६९
कार्थेज	२८७, ९७, ५६५, ६७, ६८, ६७०	नवात	९, ३६४, ६५, ७५
कार्थेदस्त (दे० कार्थेज)		नानचाउ	५०७, १८
किम्बरी	७१२	पम्फोलिया	३५३, ८६
किश (कुश)	६१७, २२७	परसूमाश (दे० अनशन)	२४८
कुर्ग	१३२, १७७	पश्चिम राज्य	२२९
कुशार	३०९	पश्चिमी तिब्बत	३९९
कुषाण	७८	पाथिया	७८, १०१, २५२, ४१२
केदा	५१५	पारसा (दे० परसूमाश)	२४८
केब्बी	६१५	पालमीरा	५६२
कोजूरियो	४८०	पूर्वी तिब्बत	३९९
कोखल	१८६, ३६७	पेल (डवलिन)	७०८
कोर्सीरा	६५८	पेलोपानेसस	६४५
क्रोशिया	७१५	पेलोपोनेशिया	६६२
गंगावडो	८७	पैक्ची	४८०
गायकवाड	९१	पोनू (दे० कनेम)	६१३
गोथिया	६८८, ९३	फ़लाशा	६२०
गोविर	६१३, १५	फ़ुलानी	५९६
गोरखा	२०४	वन्ताम	५३५
चम्पा	५२६	बवरिया	६७८
चानकिंग	५२६	वाह्या तिब्बत	४००, ४०१
चालुक्य	८६	वोपेशिया	६४०, ४५, ६२, ६३
चेन-ला	५२६	बोनू	६१५
चोल	८७	बोहेमिया	६९७, ७२१
जगाताई	४१६	भोसला	९१
जापान	४८८	मगध	७७
जूडा	३२६, ३२७	मंगोल	३९०
जोबाह	३३७	मंचू	४६०
टर्की	६४५	मजापाहित	५३५

मणिपुर	१६८, ५०७, ९
महाराष्ट्र	५८, ९०, ९२
माइसीनिया २८७, ३०२, ६२९, ३१, ३२, ४१, ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ५२	
मालवा	८२, ८४, १३८, ८९
मित्तनी (मित्तानी)	२२७, ३०, ३१८, ५५३
मिनायन (मार्डन)	३७७
मीडिया २३३, ४७, ४८, ५०, ५७, ६६, ३२७, ४९, ८५	
मीनियन (मार्डन)	३५९
मुख्य तिब्बत	३९९
मेवाड़	८०, ९०
मेसीडोनिया	३४३, ६३६, ६२, ६४, ७०७
मैसूर	८८, ९२
मोआव	९७
मौखरी	१२७
रोमन २९९, ३३८, ५९, ५९५, ९७, ६३१, ४४	
वत्स गुल्म	८६
वलभी	८०, १२७, ४०
वातापी	८६
वेई	४१२
वेगो	८७
वू	४१२
शान	५०७
शू	४१२
सबा	३७७
समारिया	२३२, ३०२, २६, ३२, ३३
सरहन्द	९०
स्लाव	७१५
स्लैवोनिया	७१५
सानो	५१५
सिक्किम	२१२, १३, १४, ४००, ४०२, ४०७
सिन्धिया	९१
सिल्ला	४८०
सिलीशिया	७१५
सैबियन (दे० सबा)	३५६

सोफीन (लेसर अरमेनिया)	१८५, ८६
हबासत	६१७
हिती	३१०, ३४३
हिमारी	३५९, ७७
हिन्दू	५१५, २६, ३२
हीरा	३६१
हैदरमौत	३०९, ७७
होल्कर	९१

लिपियाँ

अक्कादी (अक्कादियन) २३९, ७१, ७२, ७३, ७९, ३०२, २०, २१	
अजटेक-चित्र	७४२, ४३, ४४
अनशियल	६८८
अम्ब्रियन	६७४, ७५
अमरीको	७४२
अरबी ९, १६, २६१, ३७५, ७६, ७९, ८०	
अरबी-सिन्धी	१७२, ७३
अरमायक ९६, ९७, ९९, १०१, २३८, ८२, ३३०, ३५, ३७, ३८, ३९, ४१, ५१, ६४, ६८, ४७३, ७६, ७१८	
अरसाकिड पहलवी	२८२
अल्बेनियन	६९८
अवेस्त	२८२, ८४, ८५, ६९८
असोरियन (असोरियाई) ४५, ६४, ३१९	२३९, ४४,
असोरियन क्रीलाकार	९६, २४३
अहक	४९२
अहोम	१६७, ६८
अक्षरात्मक ९, १६, ४३, ४५८, ९३, ६४७	
आधुनिक	५२७
आधुनिक गोलाकार (स्स-लोह) २३, २४	५०९, १२, १८,
आधुनिक थाई	५१८, २२, २३
आर्मेनियन	३१९

आशुलिपि	१९६, २००, २०१, ७६४, ६५
इटेलियन	६०४
ईनीशियल्स	४४१, ४३
उइगुरी	४०२, ६२, ६३, ६५
अन्वेन	४०१, २, ४, ७
उडिया	१६, १५४, ७७, ८२, ८४
उत्तरी ब्राह्मी	१०७, १४, १५, १६, १७
उत्तरी सेमिटिक	९, १४, ९७, २६३, ९७, ३२२, ३७, ५७३
उर्दू	१७१, ७२, ५७२
उत्कीर्ण पवित्र लिपि	५६५
अ-मेद	४०१, २, ३, ७
एक-वर्णिक	५७२
एटस्कन	६७१, ७२, ७४, ७५, ८५
एकत-अजिर	३८७
एलामाइट	२६२, ६९, ७१
ऐन्द्रजालिक	४५७, ५८
ऐस्ट्रैजलो	३४०, ४२
ओगम	९, ७११, १३
ओनमुन	४८४, ८५, ८६
ओरहन	४७३, ७६, ७७, ७१८
ओस्कन	६७२, ७४, ७६
कताकाना	४९३, ९४, ९५, ९६, ५००
कदम्ब	५०७
कनआनी	३३२
कन्नड़-पांचवीं श०	१४२, ४३, ४४, ४५
„ छठी श०	१४०, ४१, ४२, ४३, ४४
„ सातवीं श०	१४२, ४३, ४४
„ आठवीं श०	१४२, ४३, ४४
„ नवीं श०	१४२, ४३, ४४
„ ग्यारहवीं श०	१४२, ४३, ४४
„ तेरहवीं श०	१४२, ४३, ४४
„ पन्द्रहवीं श०	१४२, ४३, ४४
„ आधुनिक	१४३, ४४, ८४
क्योक्त्स	५०९
कवि	५३५, ३६

क्वेमोल	२०२
क्रम-द्वारा निर्मित चित्र	४२७, ३२
कॉप्टिक	५६६, ७६, ८७, ६२, ६६८
काय शू (काइ शू)	४२६, ६३, ५००, ५०२
कारापाल	४२७
कालमुक	४६५, ६८
किताय मुरन्वा	३३०
क्रो	७५५, ५७
कुटिल	१२७, २८
कुशुनी (मलाबारी)	३४३, ४४
कुटाभर	२०८
कूफ़ी	३८४
कुमोल	२०८
कैरियन (कारी)	३५३, ५४
कैरोलीन	६८८
कोकूतेई-रोमा जी पद्धति	४६६
खगोल शास्त्र	७६७
खरोष्ठी	६६, ६६, १०२, ६, २८२
खाम्ती	१६८, ६६
खुतसुरो	३६०
खेमिर	५२७
ग्रन्थ—सातवीं श०	१३२, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८
„ आठवीं श०	१३७, ३८
„ नवीं श०	१३७, ३८
„ दसवीं श०	१३७, ३८
„ ग्यारहवीं श०	१३७, ३८
„ बारहवीं श०	१३७, ३८
„ तेरहवीं श०	१३४, १३६, ३७, ३८
„ पन्द्रहवीं श०	१३७, ३८
ग्रहण क्रिये चित्र	४३८
गालिक	४६२, ६४
गिरनार (शिलालेख)	११२, १३
ग्राजदांसकाया	७००
ग्रीक	६. ३५५. ६०. ५६८. ५९. ७०. ७१. ६४२. ४३. ६४. ७१. ८७. ८८. ६४. ७१८

ग्रीक—साहित्यिक-काल	६६४, ६५
गुजराती	१६, १६०, १७७, ८३, ९४
गुप्त	११७, २७, ७७, २०६, ४०१
गुरुमुखी	१७७, ७६
गू-वन	४३२
ग्लेगोलिथिक	६९७, ७०१, १८
गोलमोल	२०८
चकमा	५०९, १४
चतुष्कोण पाली	५०९, १०, १८
चाउवन	४२७
चित्र ५६५, ६६, ६७, ६०, ७४८, ६१, ६२	
चित्रात्मक	१०, ६६, १३८, ५००, ७१, ७२, ७४, १०७, ४८, ५१, ७५०, ५३, ६१
चिरोकी	७५४, ५५
चिन्हात्मक	२३५, ३८
चीतान	४५४, ५७, ५८
चीनी	६, ४२३, २७, २९, ३०, ३३, ५३, ५८, ५००, ५०२, ४३३, ४१, ४३, ४४, ४७, ४८, ४६, ५०, ८३, ६६
चेर-पाण्ड्य	१३२
चोल	१३२
चौकोर हेनू	३३०
छोटी	४५४, ५८
जवाली दूरा	२२१, २२
जर शर (सांकेतिक चित्र)	४३२
जाटकी (लाण्डा)	१७७
जापानी	५००
जार्जियन	६९८
जावा की दूसरी	५३५, ३७
जिया गू बन	४२७
जिया जीह (ग्रहण किये चित्र)	४३८, ३९
जुआन जू	४३२
जेण्ड	२६४
जेण्ड—अवेस्त	२०४, ८५
रवेद	३४०, ७९, ४२
जैकोबाइट (सातवीं श०)	३४०, ४२

जैकोबाइट (ग्यारहवीं श०)	३४०, ४२
डाइरेनियन	६७२
टांकरी	१५७, ७२, ७६
डा जुआन	४२७
डिमाटिक	५६७, ९, ७१, ७३, ८६, ९१, ९२
तगाला	५३२, ३३
तमिल	१२७, २९, ३०, २१, ३२, ३४, ८४
" (सातवीं श०)	१२९, ३१
" (आठवीं श०)	१२९, ६०, ३१
" (दसवीं श०)	१२९, ६१
" (ग्यारहवीं श०)	१२९, ३१
" (तेरहवीं श०)	१२९, ३१
" (चौदहवीं श०)	१३१, ३२
" (पन्द्रहवीं श०)	१३०, ३२
" (आधुनिक)	१३१, ३२
तिरहुतिया	६०, ६३
तुर्कैनियन	६०२
तुलु	१८१
तेलुगु—कन्नड़	१४०, ६०, २२१
तेलुगु	१६, ७७, ८४
" (सातवीं श०)	१४५, ४९
" (दसवीं श०)	१४५, ४६, ४९
" (ग्यारहवीं श०)	१४५, ४७, ४९
" (तेरहवीं श०)	१४५, ४८, ४९
" (चौदहवीं श०)	१४५, ४९
" (पन्द्रहवीं श०)	१४९, ५०
" (आधुनिक)	१४९, ५०
थामुडिक	३६४, ६६, ६९
थौकन्हे	२०८
दक्षिणी ब्राह्मी	११८, १९, २५
दक्षिणी सेपिटिक	९६, ३६९, ६१७
द्विभाषिक	५९७, ६३२
द्विवर्णिक	४९२, ९३
देवनागरी	११७, २९, ३४, ४०, ४५, ५०, ५४, ५७, ६०, ६८, ७७, ८६, ८७, ८९, ९०, ९१, ९२, ९३, २००, ३६९, ७९, ८७, ४०१, ४०,

देवनागरी ब्रेल	१९६, ९९
देवेनाइट (लिथिनाइट, लिथियानिक)	३६९, ९६
देवेही, हकूरा	२२१, २२
देवी	४९२, ९३
ध्वन्यात्मक १४, ५२५, २७, ४१, ७०, ७१, ७२	
ध्वन्यात्मक चिन्ह	४४५
ध्वन्यात्मक पद्धति ४४४, ४६, ४७, ४८, ४९, ९३	
ध्वनि—सूचिक चित्र	४३२, ३७
नगदीनागरी	१८६, ८७
नब्बी ९, ३६३, ६४, ६५, ६८, ७९, ८१, ८२	
नव एलमाइट	२७९
नव बेबीलोनी	२७९
नवीन	३८७
नस्तालिख	२६१
नस्ख (नरखी)	३७९, ८१, ८२
नाच्छ	७१८
निकोलसबर्ग	७१८, २०
निर्धारिक	५७२, ७३, ७४, ७५
नुमीदियन ५९५, ९७, ९७, ९८, ९९, ६०२	
नेवारी	२०८
नेस्टोरियन	३४२, ४३, ६१
नोत्र-अजिर	३८७
पंजाबी	१६, १८३
पत्तीभोखा	५१८, २०
पश्चिमी	१३८, ३९
पश्चिमी सीरियाक (दे० जकोवाइट)	६४०
पस्सेपा	४०२, ५
पहलवी १०१, २६४, ६५, ६६, ८२	
प्यूनिक २९७, ९९, ३००, ५९७	
पाकीसिपा (पासिपा; दे० पस्सेपा)	४०२
पाचूमोल	२०८
पालमीरा ३३८, ३९, ५६	
पाली	५०९
प्राचीन थाई ५१८, २१	
प्राचीन पश्चियन (फ़ारसी)	२६६, ६८, ७९
प्राचीन बेबीलोनियन	२४३

प्राचीन लैटिन	६८७, ८९
प्राचीन सीरिलिक	६९८, ७०२
प्राचीन हंगेरी	७१८
पिनटो	७६४, ६८
पुमसो	४८३, ८६
पेगुअन	५०९, १३
पेलासगियन	६७१
प्रोटो—टाइरेनियन	६७१
फाइनलस	४४१, ४३, ४४
फ़ारसी	१६, २७३
फ़िनीशियन—(दे० उत्तरी सेमिटिक)	९६, ३३५, ३७, ६४०, ४१, ८८
फ़िनीशियन—सिप्रियाटिक	६३२
फ़िनिशियन—हिती	३२१, २२
फ़िनीशियन—हेब्रू	६९८
फ़ोंच	४२३
फ़ैलिस्कन	६७८, ७९
बंगला १६, १५०, ५१, ७७, ८४	
„ (सातवीं श०)	१५३, ५४
„ (नवीं श०)	१५३, ५४
„ (दसवीं श०)	१५३, ५४
„ (ग्यारहवीं श०)	१५३, ५४
„ (बारहवीं श०)	१५१, ५३, ५४
„ (पन्द्रहवीं श०)	१५३, ५४
„ (आधुनिक)	१५३, ५४
बड़ी मुद्रा	४२७
बर्बर ५९५, ९७, ६००, ६०१	
बा गुआ	४०९, २५
बाफ़न शू	४२९
बामुन	६०२, ६०३
बाल्टी (भोटिया)	४०२, ६
ब्राह्मी ९, ४०, ७७, ९६, ९७, ९८, १०७, २७, ४५, ५७, ८९, २०६, ७८, ५१८	
बुरियाती	४६५, ४७०
बुल्गारियन स्लेगोलिथिक	६९८
बुल्गारिक सीरिलिक	६९८, ७०३

बेबीलोनियन	२३९, ६२, ७१
बेबीलोनी (नव एव प्राचीन)	२७८
ब्रेल (इंग्लिश)	७६४, ६६
बोल्जानो	६७८, ८०
बोरोमात	५१८, १९
बोलर अजिर	३८७, ८८
भारती	१९४
भावमूलक	२३८
भावात्मक	१४, ९६, ५००, ६४७, ७५६
भावात्मक—चित्र	३११
भुजिमोल	२०६, २-१
भ्रूण	१०
भोजपुरी	१६०, ६४
मंगोल	४६२
मगरिबी	३७६, ८०
मण्डायक	३६८, ७०, ४६२
मनीकी	४७६, ७८
मलयालम	१३२, ८०, ८४
मलावारी	३४३, ४४
म्याओत्से	४५४, ५६
मागधी (मगही)	१६०, ६५
माथे	६७८, ८१
मिरोइटिक	५८८, ९१, ६२
मिरोइटिक—डिमाटिक	५८९, ६२
मिस्र	२७९, ३१३
मुड़िया	१७२
मूल अक्षर	५२७, २८
मेई-थेई	१६८, ७०
मेण्डे	६१३
मस्त्रोपी	६८७
महदूली	३९०, ९२
मैनियस कटार	६८७, ६०
मैथिली	१६०, ६०, २०६
मोआब के लेख	६६, ६७
मोनो सिलेबिक	४४३
मोसो	४५४, ५७

मीड़ी	१६०, ६१
यज़ीदी	३५६, ५७
यनसिन्दी	६१६, १७
यनिसी	४७३, ७५
युगारिटिक	३०४, ६
युनानी	९६, ३४९, ५३
यू चैन	४५४, ५८
रंजना	२०६, १०
रेखा चित्र	२३७
रेखाचित्रात्मक	२३५, ३६, ५६
रेखाधरात्मक	१६
रुन (रुनी)	६९४, ९८, ७२१
रोंग-लेप्चा	२१४, १५
रोमन	९, १६, १८७, ३९०, ४२४, ३१, ६९, ५३२, ५७४, ६८७, ७१२, ७५५
रोवस-इरस (दे० प्राचीन हंगेरी)	७१८
लाइनियर-ए	६४७, ४८, ५५
लाइनियर-ए, बी	६३१
लाइनियर-बी	६३१, ४७, ४८
लातीनी	६७२, ८७, ८८, ५६७, ६६३, ६६४
लाण्डा	१७८
लितुमोल	२०८
लिथिनाइट (दे० देवेनाइट)	३६९, ७१
लिहियानिक (दे० लिथिनाइट)	३६९, ७१
ली शू (दे० कारापाल)	४२७, ३०
लीकियन	३४७, ४८, ४९
लिडियाकी	३५९, ५२
लीबियन	६०२
लुगानो (लेपोन्टाइन)	६८५
लेप्चा (दे० रोंग)	२१४, १५
लैटिन (दे० लातीनी)	
लैटिन-एट्रस्कन	६७१
लैटिन-फ्रैस्कन	६७१
लोगो ग्राफिक	१६
लोले	४५०, ५४, ५५
वई	६०७, ८, ९, १०, ११, १२, १३

वनियाकर	१७२, ७४
वट्टेलुत्तु (चेर-पाड्य)	१३२, ३३
वर्णात्मक (प्राचीन पर्शियन)	२६९
वर्णात्मक १६, ४३, ९६, ४४६, ८६, ५६८, ६९, ७०, ७३, ६०२, ७५३	
वस्तु चित्र	४३२, ३४
व्यंजनात्मक	४४६
वेनिती	६८४, ८५
वेस्ट-गोथिक	६६४
शाब्दिक चित्र	४४६
शारदा	१५७, ७२
शारदा (दसवीं श०)	१५७, ५६
,, (ग्यारहवीं)	१५७, ५६
,, (बारहवीं श०)	१५७, ५९
,, (तेरहवीं श०)	१५७, ५९
,, (चोदहवीं श०)	१५७, ५९
,, (सोलहवीं श०)	१५७, ५९
शिग शू	४२९
शिवाओ जुआन	४२७
शिये शंग (ध्वनि सूचक चित्र)	४३२
संकेतात्मक १४, ४६५, ४४, ५६६, ७१, ७२, ७४ ६१७, ४७, ४८	
संकेतात्मक चित्र	६४८
संयुक्त-सांकेतिक चित्र	४३२, ३६
संयुक्तात्मक	४४६
सफ़ातैनी	३६८, ६६, ७०
सफ़ायटिक	३६९
सबा की	३७७, ६२०
संशोधित	५२७, ५९
ससानिड पहलवी	२८४, ८५
सांकेतिक	७१२
सांकेतिक चित्र	४३२, ३५
त्साओ शू (सोशो)	४२९, ८६
सिडेडिक	३५५
सिन्धी (आधुनिक)	१७२
सिन्धी (प्राचीन)	१७२

सिन्धु-घाटो	३६, ४४, ५०, ६२, ७२, ७३, ९५, ७६२,
सिनाइ की	३७२, ७३, ७४, ७५
सिनाइ की प्राचीन	३७३, ७४
सिनाइ की अरबी	३७५, ७६
सिनायटिक	९
सिप्रियाटिक	६३२, ३४, ३५, ४७
सिप्रो-मीनियन	६३२
सिहली	२१९, २०
सीरिलिक	४६९, ९९, ६९८, ९९
सुमेर के रेखाचित्र	९६
सुमेरियन कीलाकार	२४३
सूलेख पाली	५०९, ११
सूत्रात्मक	१०, १३
सूसियन (एलामाइट)	२६८, ७१, ७९
सेमिटिक	४७२, ४७६
सेमिटिक (प्राचीन)	६६, ३६६
सेल-औजर	३८७
सोयदी	४६२, ६५, ७४, ७६
सोमिद्रियो	६७८, ८२
सोमाली	६०४, ५, ६
हिस्ती ९, २३०, ३०९, १०, ११, १५, १८, १९, २०, २१, २२, ७५०	
हिन्दी-सिन्धी	१७२, ७५
हिन्दुकी (लाण्डा)	१७७
हिमोल	२०८
हीरागाना	४९३, ९६, ९७, ९८, ९९, ५००
हीरोग्लिफ़स	९
हुतसुरो (खुतसुरो)	३९०
हेब्रू	६, ३२९, ३०, ३१, ३४०
हेब्रू (आधुनिक)	३२९
हेब्रू प्राचीन	३२६, ३०
हेरोग्लिफ़स (हेरोग्लिफ़िक्स; ग्रीक-हेरोग्लिफ़िक्स)	
	५३५, ३६, ३८, ३९, ७०, ७१, ७४, ७५, ७६, ७८, ७९, ८१, ८३, ८४, ८५, ९१, ९३, ७५०

हेमिरायट	९६
हेरेटिक	५७३, ७५, ७६, ७८, ८३, ८४, ८५, ९२, ९३
त्रिपद पाटिया	६४८, ५३, ५४
त्रैध्वन्यात्मक	४४३
त्रैवर्णिक	५७२, ७५

लोग एवं निवासी

अकाइयन	६२९, ४५, ६०
अंग्रेज	४१९, ९१, ५६६, ६०२, ४७
अंग्रेजों	९४, ५०९, ६३
अनामियों	५२७
अफगान	८८
अमेरिकन	६४७
अमेरिका के	३२१, ६०७
अरब	२१६, ५७, ५६९
अरबों	२६१, ४१२, ५९१
अरामियन	३३७
अरामियों	३३५
अरामी	३२६
अलमुराक	
अलामन (अलामनों)	७२१
अलमुराक	७०८
आइबेरिनो	७०७
आर्केडियन्स	६६४
आर्य	२६, २७, २६
आयोलियन्स	६३६
आस्ट्रोगोथों	७२१
इटली के	६४८
इब्री	३२५
ईरानी	१०१
ईसाइयों	३६८, ५३२, ६१, ६६०

उराती (अरमेनिया के)	३८५
ऐंग्लोसेक्सनों	७२१
एट्रस्कनों	६७८, ८५, ५७
कनजानी	२८७
कार्टलियन	३८७
काप्स	५९१
काफ़िरो	६१५
कालमुक	४६५
कृषाणों	१०९
केल्ट्स (सेल्ट्स)	६७०, ७०७, ८
केल्टों	७०७, ८
केल्टो-बेरियन	७०७
केल्टो-सीथी	७०७
केली	७०७
खाल्दी	३८५
खेमिर (खेमर)	५१८
गाल	७१२
ग्रीक	६४६, ४७
गुर्जर	८०
गोरखों	४००
गोथ्स (गोथों)	६५८, ६०, ७९, ७२१
चालुक्य	८६, ८७
चलुक्यों	८८
चीनियों	४००, १२, १६, २०
चीनी	५२६
चेरसी	७२१
जर्मन	२६२, ४७३, ७६, ५७१, ६०२
जापानियों	४८७, ५३५
ट्यूटन	७२१
टियूटन्स	६६४
डच (डच)	२६२, ४१९, ९१, ५१५, ३२, ३५, ६०२, ४, ७६१
डचों	५१५
डूड्स	७०८

डोंगरा	४००	फ्रैंक	७२१
डोंगरों	१७२	फ्रैंकों	७२१
डोरियन	६५८	बर्गण्डियों	७२१
डोरियन्स	६३६	ब्राह्मणों	९६
तमिल	२१८	बुरियात	४६९
तातारी खान	६६६	बुरियातों	४६९
तिब्बत के	३१७, ४०१	भारतीय	३९७, ९९
तुर्क खुरासानो	२१२	भारतीयों	५२६, ३२
तुर्क	९०, ३८७	मंगोल	३६७, ४७३
तुर्कों	८८, ३८७, ६३१, ७१५	मंगोलों	२५२, ३६१, ८५, ४००, ५८
तैलंग	५०७, ९		६९, ८०, ८९, ६९९, ७१५,
थाई	५१८		२१
थ्रेसियन	६६७	भूचुओं	४१७, ८१
द्रविड	२७	मण्डाइन	३६८
नार्डिक	७०७	मरहटों	६०
नार्स	७०८	मनीकियों	४७६
नार्सेज	६७४	मनीकी	४७६
नार्सों	७०८	माइसीनिया के	६२६
पंजाबी	१७७	मिन्नेली	३८७
पल्लव	७८	मीडीज़	३३७
पश्चिमी गोथों	६६३	मुसलमान	३७३, ८३, ४१६, ५२७,
पारसी	२५२		३२, ३५, ९१
पिक्ट	७७	मुसलमानों	४१२, ५३२, ३५, ६२, ६१५, ३१,
पुर्तगाली	२१६, ४००, १७, ९१,		४४, ४६, ७२, ७२१
	५१५, २७, ३५, ६०२,	मैग्ग्यार	६९७, ७१५
	४, १३	यज़ीदी	३५७
पुर्तगालियों	४१७ ५२७, ६०४	यहूदियों	३५३, ५६२, ६३१
पेलासगियन	६३६, ६७२	यहूदी	२३३, ३३०, ३४०, ७३
पैलेस्टेनियन	६१२	यूरोपियन	६१३
प्रतानी	७०७	यूरोप के	५३५
फ़नी	५८	रूसी	४९१
फ़िनीशियन	६२९	रेड-इण्डियनों	७५३
फ़िनीशिया के	२९	रोमन	५६२, ७०८
फ़िनीशियनों	६८५	रोमनों	५६२
फ़ोज़ियन	७१२	लाओशियनों	५१८
फ़ोच	६०२	वण्डाल	७२१

बण्डालों	७२१
बिल्लोनोवन्स	६६७
बिसीगोथों	७२१
बेड्डा	२१६
बेण्डलों	५९५
बेनिस के	६५८
बेल्हा	७०८
सबाई	३७७
सबीनी	६६७
समोनियों	६७२
साबो	३७७
सिन्धु-घाटी के	२९, ५३
सीथियन	३३७
सीरियक	५६५
सुन्नियों	५६३
सुमेर के	८८
सेल्जुक (तुर्कों)	३८५, ८७
सैबियन	३६८
स्काटिश	७०८
स्लावों	६७७, ९८
हंगेरियन	७६२
हिक्सास	३७३, ५५१, ५२, ५५
हिन्दुओं	५३५
हिन्दू	५३२
हिन्दियों	५५४
हूणों	८०, ८२, ६९३, ७२१
हेब्रू	३७५, २५

विद्वान

अगस्टस जॉन्सन	३११
अग्रवाल, ऋषि लाल	१९६
अग्रवाल, धर्मपाल	२०, २१
अर्वा दोर्जीव (रूसी भाषा में; दे० नाम्द बां दोर्जे ने)	४६९

अचोकी	४९२
अथानासियस किर्बर्	५६६
अथेनियस	२६१
अन्धियास	२८२
अफुगस-पा	४०२
अबिट	६९८
अबूमूसा इब्ने क़ैस	३८३
अब्बे बार्थलेमी	५६६
अबेल रेमुसत	४६२
अमारदियन	२६७
अमुन्द सेन	४०१
अरंज	७११
अलफ्रेड मेत्रो	७६९
अलेक्सी चिरीकोव	७५५
आइज़क टेलर	९६
आइज़क पिटमैन	१९६
आर्कीबाल्ड हेनरी सेसी	९, ३१३
आटो पुक्सटाइन	३२१
आर्थर ईवान्स	९, ६४५
आल्तो, पी०	२८
आस्टिन लेयर्ड	२३२, ३९, ४६२
इदरियास	३५३
इन्द्रजी, भगवान लाल	१२१
इम्रुअल क़ैस	३७९
ईट्स, जी०	१०२
ईवान्स, आर्थर (देखिए आर्थर ईवान्स)	
ईवान्स, जे०	७५५
ईस्लर	६४०
एकियास	३५१
एज़िलबर्ट कैम्फर	२६२
एडवर्ड क्लॉड	९६
एडवर्ड टॉमस	९६
एडवर्ड मीयर	६४६
एडवर्ड हिन्क्स	२३९
एडविड्स, आई० ई० एस०	४०
एडविन नॉरिस	२६८, ७१

एडोल्फ अर्मन	५७१	काउण्ट कैलस	२६२
एण्टिय	३६९	कान्तेली	३७५
एन्ड्रियास, ए० सी०	४७३	कान्तेलेस वान ब्रूइन	२६२
एयूक	३१२	कावले, ए० ई०	६४७
एरिक, जे०	७४८	कार्ल हियुमान	३२१
एरिकसन	७५३	कासीन, एन०	५६६
एरियन	२६५	कान्सटैन्टाइन	६९७, ९८
एलाह	३१६	किर्चोफ, जे० ड० एच०	६४१, ५८, ६०,
एलियस कोपीविच	७००	६२, ६४, ७१, ७४	
एल्थीम	७१८	किन्नाइर, जे० एम०	२६८
एल्बर्ट एल्बर	६१३	क्लिगेनहेबेन	६०७
एन्तोने यान सेन्त मार्टिन	२६६	किसिमी कमाला	६१३
एन्ड्रे एक्काई	७६४	कीता साते	४९२
एलेक्जेंडर फ्रैंकलिनब्रिज	६१३	कीबी-नो मकीबी	४९३
एल्डस	५६५	कीलहार्न	१८९
एल्फेड	९६	कुइन्टस कटियस	२६१
ओकर ब्लाड, जे० डी०	५६८, ६९	कुक, एस० ए०	३३७
ओशा, गौ० ही०	१०२, १०७, १९४	कुंग फूले	४११
ओपर्ट	२७३	कुश्नियातिस	६४७
ओरोग्नी, पी० एल० डी०	५६७	कृष्ण चन्द्र	५०९
ओलोन, डी	४५०, ५४	कृष्णा राव, एम०. वी०. एन.	२८, ५८, ६०, ६९
ओल्खा	६७१	केदार नाथ शास्त्री	२७
ओल शान्सेन	२८२	कैकस, एपियस क्लाडियस	६८७
औफरोख्त, यस० टी०	६७४	कैथीन रौटलेज (श्रीमती)	७६१
ओलाव गेरहार्ड टाइल्लेन	२६३, ६५	कैरातिल्ली, जी०, पी०	६४७, ४८
कर्चोन्नर, जे०	६४१	कोच, जे०, जी०	५६७
कर्निघम, कर्नल ए०	९६, ९७, ९९	कोर्ट, कैप्टेन	९९
करेल यानसन	७६४	कोण्डर	३२०
कलाड, एफ० ए० शेफर	३०२	कोबर, एलिस ई०	६४७, ४८
कलाडियस जेम्सरिच्छ	२६६	कोबो देशी	४९६
कलाप्रोथ, जे०	४६२, ५७१	कोयल्लो, एफ०, डब्ल्यू०	६०७
कलिन्क	२६०	कोसकेन्निमी	२८
कर्न, ओ०	६४१	क्रौज	७१२
कर्बी ग्रीन	३१२	गाइटलर	६९८
कस्ट	९६	गाइल्स	४०९, २९
कनुदजोन, जे० ए०	३१९	गार्डथोसर	२९०

गार्डिनर, इ० ए०	६४१	चोंग ख-पा	३९९
गार्डिनर, ए० एच० २९०, ९३, ३७३, ५७३, ७४		जदलोप्सकी, पी० ई०	५६७
गायररट्रिमान	६४१	जयेश्के	४०१
गारस्टाँग, जॉन	३२०	जार्ड लून	४३८
ग्राहमबेली	१७७	जार्ज ग्रीट	६४५
ग्रिफिथ	५९१	जार्ज जेनेत	३०२
ग्रिम, ई०	२९०	जॉन न्यूबेरी	२८, ६४, ६५
ग्रिम, जे०	३६८, ६९८	जॉन मार्शल	२७
ग्रियर्सन, जी०	१६८	जॉन मैलकाम	२६८
ग्रीनवर्गर	७१०	जॉन विलिस	७६४
गुड्मनीस, डी०	५६७	जार्डन, ए०	५६७
गुण्डर्ट	१३२	जार्डन, एफ० सी०	६४९
गुस्टाफसन	४०२	जार्डन, सी० एच०	१०४, ६४८
गूटर्सलाब	६४०	जायसवाल, के० पी०	२०४
ग्रूबोसिख	६९८	जिमर	७१२
ग्रूबे, डब्ल्यु०	४५८	जुबेन विल्ले, अबोइस दि	७१२
ग्रेबेलिन, सी० डी०	५६७	जुलिस, एम०	१३८
गंस्व, आर्डी० जे०	३१३, २२	जेम्स टॉड	१०६
ग्रे, जी० एफ०	३७५	जेम्स प्रिसेप	९, १०९, ११८
ग्रेपो, एच०	५७१	जेम्स होरे	११८
ग्लेई	३२०	जेसप	३११
ग्लेन विल्ले	५४६	जेसेनियस	३६९, ७७
ग्रेविले चेस्टर	६४५	जैक्यूट, ई० वा० एस०	२६७
गैड, सी० जे०	४०	जोयगा, जी०	५६७
गैबन, ए० वान	४६९, ७६	जोवे दि ज'ग्रोनिज	६०२
गैस्टर	६९८	टाइकसेन, टी० सी०	५६७
गोरीयून	४४३	टान चुंग	४२९
गोल्डमान	६७१	टॉर्प	६७१
गोटफ्रेण्ड, जार्ज फ्रेड्रिक	९, २६५, ६६, ६८	टॉमस	२८२
गोथियाट (गोथियत)	४६२, ७३	टामस, इ० जे०	६४
चाउको	६६८	टॉमस बर्थेल	७६२
चार्ल्स टैक्सियर	३१२	टामस यंग	५६९
चार्ल्स बिलकिन्सन	६७, ६६	टामस वेड	४४३, ४६
चैडविक, जॉन	६४७	टामस हाइड	२६३
चैबेट	२९९	टामसन, एच०	५७१
चैम्बर लेन	५६६	टामसन, आर० एस०	३२०

टेलर, आइज़क	२२१, ४६२, ६७१, ९८	देलाफ्रोस्से	६०७
टैलबाट, विलियम हेनरी फ्राक्स	२७३	देवेरिया	४५८
टैसिटस	७१८	द्रोनिन	२८२
डब्लोफ़र, एरस्ट	२८	धर्मपाल	३९९
डाइशी	४२७	घोरमे, एदुअर्द	३०३, ३०४
डाउसन, जे०	१०२	नथीगल	५९८
डार्पक्रोल्ड	६४६	नविया एबॉट	९
डायडोरस (सोकुलस)	२६१, ५४५	नागी, जेन्ट मिकलास	७१८
डायोनिसियस	६६७	नागद बाँ दोर्जे ने	४६९
डॉसन	९६	नाचीगिल	६०२
डिकी	९६	नारिस, एडविन (देखिए एडविन नारिस)	९९, १०१
डिके	२९०	२७३, ७९	
डिर्जर, डे०	५७४	नाडन, एफ० एल०	५६७
डुनान्ड	२९३, ९५	निकोलो निकोली	५६५
डुपोण्ट	३२२	नीब्लुर, कर्सटन	२६३, ६४, ६५, ३७५, ५६७
डेविड, एस०	६४९	नील कण्ठ शास्त्री	२७
डेविड्स, राइस	९६	नेक (स्कीमो)	७५६
डेविस, ई० जे०	३१२	नेमेथ	७१८
ड्रेक	३१२	नोल्डेकी	३३८, ३४०
डैनिएल्सन	६७०	परपोला, एस्को	५०, ५२, ६६, ७४
ता-सीन-को	१३२	परपोला, सीमो	५०, ५२, ६९, ७४
तेरियन डी लकाउपेरी	४५४	पर्सटाल, बैरन वान हैमर	५६९
थाउसेन, गार्ड	६७१	पर्सियर, लुइगी	६४८
थाम्पसन, एस०	७४८	परीबेनी	३५३
थामसेन, बी०	६६७, ७१८	पर्णवितान, एस०	२८, ६९
थियोफिलास	६२५	पाइज़र	३१८
थ्यकीडाइडीज़	५४६	पाणिनि	५, ८०, ९५
थेलेग्दी, जे०	७१८	पाँट	९६
थोर, हैयरदहल	७६१, ६२	पालमर	३१२
दयाराम साहनी	२६	पाल एमाइल बोत्ता	२३९
दाइमल	२३५	पालिन, काउण्ट एन० जी० दि	५६८
दामन्त	१६८	पाल आंगे लुई दि फादने	२६८, ६७०
दियुलाफ्री, एम०	२४३	पावल्लो	२६७
दि सेसी	२६५, ६६, ८२	पासकल कोस्ते	२६७
दुगास्ट	६०२	प्राण नाथ	२८, ४०, ४५
दुपेरो, अनकुयेतिल	२६५, ६६		

पिटमैन, आइज़क (देखिए आइज़क पिटमैन) १९६, ७६४		फ्रेड्रिख मूलर	९६
प्रिन्सेप, जेम्स (दे० जेम्स प्रिन्सेप)	२२१	फ्रेरेह एन०	५६७
प्रिन्सेप सेनार्ट	९६	फ्रैन चिय	४४४
पोज़र	१९०	फ्रोंकनर, आर० ई०	४०
पोरियस वलेरियेनस	५६६	फ्रोन्ताना, दोमिनिको	६७४
पूरनचन्द नाहर	१५४	फ्रोबेस, एफ० ई०	६०७
पूरन चन्द्र मुकुर्जी	१०७	फ़ोरर	३२१, ३२२
प्रचोक	३७५	फ़ोरियन, जीन बैप्टिस्ट	५६९, ७०
पेण्डिलबरी	६४३	फ़ौलमान	५२७
पेल्यफ़	४६२	क्व, एस० दि	५७१
पैलोदिनो	६७१	क्वलर	३५१
पैवी, ए जे० एम०	५१८	वरनेल	९६
पोकाक, रिचर्ड	३७५	वर्कहार्ड, योहान लुडविग	३११, ७५
पोकोकी, आर०	५६७	वर्ग्रेस	१०९
पोन्टयस	६९८	वर्नोफ, युगेन	६७, ६९, ८२, २६६
फ़क पा ग्याल—चेन	३९९	वरुआ, डी० एम०	२८, ६९
फ़तेह सिंह	५०, ५४, ५५, ५६, ६९, ७१	वर्दिगटन, बी० जी०	९९
फ़म्युसन	५३७	वाईरोम	७६४
फ़योरेली, जी०	६७४	वांके बिहारी चक्रवर्ती	२८, ५८, ६३
फ़ाड्यान	८०	बॉट लिस्ती	६८५
फ़ान—पा (अफ़ग़ान-पा)	४०२	बाण	८२
फ़ांगुई ली	४०१	बावर, हन्स	२९०, ३०३, ३०४
फ़ादर एच० हेरास २८, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९		ब्रान्डेस्टीन	३५१
फ़ाइड	३१५	ब्रासिओर दि बोगो बोग	७५०
फ़िलण्डर्स पेटी, डब्ल्यु० एम० ९, २८, २९, ३१, २९०, ३७३, ७५		बिचलकर	१६०
फ़िगूला, एच० एच०	३२०	बिहारूप सिंह	१६८
फ़िशर	३३२	बियर, ई० एफ़० एफ़०	३७१
फ़ीज़ल	६७१	ब्रिन्टन, डेनियल जी०	७४५
फ़ुरुमार्क	६४७	ब्रोल, एम०	६७४, ८८
फ़ुम्मेन्शायस	६२०	ब्लीडेन, एडवर्ड डब्ल्यु०	६१३
फ़ो लिक्स वान लूशर	३२१, ७५	बुखेलर	६७४
फ़ोड्रिक डी लिश	२९०	बुगो, एस०	३१९, ५७१, ७१२
फ़ोड्रिख	६२०	बुग्श, एच०	५९१
		बुल्हर (ब्रूलर)	११८, १२१
		बुल्हर मैदेन	३१२
		बेनफ़्री	९६

बेनेट, एमेट एल०	६४७, ४८	मेसरस्मिथ	४७३
बेवर	९६	मैकग्रेगर	६१७
ब्लेगेन सी० डब्ल्यु०	६४७	मैकलीन, जॉन	७५५
बेक्स, डब्ल्यु० जे०	५७०	मैकालिस्टर	३०२, ६४२, ७१२
बैली नोट	७१२	मैके, ई० जे० एच०	२५
बोर्क, एफ०	२५५, ३५३	मैक्सवेल	६१७
बोस्सार्त	३२२, ५३, ५५, ६४९	मैरियो शीपान्स	२६१
बोन्देल मोन्ते	५६५	मैरीनैटस	६४७
बोलजनी, जी० वी पी०	५६६	मैसन	१०१
बौनामिकी, जी०	६७०	मैस्प्रो, जी०	५७१
भण्डारकर	१२१	मोर्डमान	२६७
भूपेन्द्र नाथ सान्याल	४२५, ७५०	मोंतेग	३७५
मरवीण सवील	७६२	मोर्दमान, ए० डी०	८२, ३११, १२
मर्सियर	५९७	मोमरू दाउलू बुकेरे (मोमोलू दुवालू बुकेले)	६०७
माइनहोफ	५९७, ६०२	मोरियर, जेम्स जस्टिन	२६५, ६६
माकीडीज, एम०	६३१	याओसन	३६९
मारस्ट्राण्डर	६९४, ७१२	थागिक	६९८
मायर्स, एस० ल०	६३१, ४९	यास्क	९५
मार्गन, जे० डी०	२३०	युवेन रन चाउ	४३१
माधो स्वरूप बत्स	२६	युगेन प्रलान्वीन	२६७
मार्शम, जे० डी०	५६७	यूलिस ओपर्ट	२३९
मार्टिन, ऐन्तोनि यान सेन्त	२६६, ६७	येनसेन, पीटर	३१९
मिर्केजी, एलेक्जण्डर	७५६	येनसेन	२९५, ३२०, २१
मित्र	९९	राइसनर	३३२
मिलर	१५७	राउल्लिम्स	७१२
मुकुन्दराम	६८८	राखल दास बनर्जी	२५
मुण्टर, फ्रेडरिख क्रिश्चियन कार्ल हाइनरिख	२६५	राजमोहन नाथ	२८, ४४, ४६, ६१
मूरगट	२२९, ३०	राधा कान्त शर्मा	९७
मूलर, ओतफ्रीड	६७४	राधेलाल त्रिवेदी	१९६
मूलर, एफ० डब्ल्यु० के०	४६२, ७३	राबर्ट गुल्ले	६०७
मेर्केजी	६४९	रावर्ट कर पोर्टर	२६८
मैज	२९०, ६४०	राबर्ट्स, ई० एस०	६४१
मेथाडियस	६९७	रामनिवास	१९६
मेरकटी	५६७	रालिन्सन, हेनरी क्रैसविक	९, ९७, २३८, ७१, ७३, ३११
मेरिगौ, पी०	२८, ५०, ५१, ३२९, ३२२	रासमुस क्रिश्चियन रस्क	२६६
मेशरस्मिड, लियोपोल्ड	३१९		

राव, एस० आर०	२८, ५३, ५७	लेनोरमॉन्ट	६९८
रिखतर, ओ०	६३१	लेप्सियस, रिचर्ड	९६, ३५३, ५७१, ९१, ६७४
रिचर्ड बर्टन	३१२	लेमान	२९०
रोन्सर, जी०	५९१	लेयान	३३२
रूडोल्फ एन्थीस	५४६	लेयऊन	६७८
रुश	३२०	लेलोर मॉन्ट	९६
रेप्सन	९६	लैन्कोरन स्की	३२१
रोज़िएर	३७५	लैंग, आर० एच०	६३१, ३२
रोडिगर, ई०	३७७	लैंगे, दि	३०४
रोमानेली	३५३	लैंगडन; एस०	७१
रोशे, डी०	२६०	लैण्डर	३५५
रोसलिनी, एच०	५७१	लैसन	९६
रोहेल	६४१	लोपुतस, डब्ल्यु० के०	२४२
लांगपेरियर	२८२	लोवेनस्टर्न, इसोदर	२६७
लान्दा, दियेगो दि	७५०	वड्डेल, एल० ए०	२८
लाबोर्दे	३७५	वाइडेमान	६४०
लाल, बी० बी०	२६, १९६	वाकणकर, एल० एस०	२८, ५८, ६१, ७१, ७४
लासेन, क्रिश्चियन	२६७, ६९	वाडिगलन	३५५
लिज्जबार्सकी	९, २९७, ९९	वाथन, डब्ल्यु० एच०	९३
लिटमन	३५१, ६१७, २०	वान् बिजक	१०२
लिण्डनर	६९८	वानी	४९२
लिण्डब्लम	२९०	वालवाल्कर	७९
लिब्बी, डब्ल्यु० एफ०	२०	वाल्टर इलियट	९९
लो काक	४७२	विन्सेन्ट स्मिथ	१०७
ली ग्रांड जेकब	१०६	विम्पर, एल०	६६४
ली, फांगुई	४२१	विलियम ग्रेगरी	२१६
ली ब्रून (दे० कार्नेलियस वान ब्रून)	२६२	विलियम जोन्स	९६, ९७
ली शी	४२७	विलियम गोरे आलस्ले	२६६
ली शुइन	४२४	विलियम रामसे	३२१, ४३
लीक	३४३	विलियम राइट	३१२
लुई ब्रैले	१९६	विलियमसन	४३२
लुकास, पी०	५६७	विल्सन	९६
लुडविग स्टर्न	५७१	वीरोलियूद, चार्ल्स	३०३
लुशियन	७१२	वुल्फ	३२१

वेन्दूरा (जनरल)	१०१	सिक्स	३५५
वेन्ट्रिस (एवं) चंडविक	६३२, ४८	स्मिथ, जी०	६३२
वेन्ट्रिस, माइकिल	६४७	सिमोनाइड्स, सी०	५७१
वेरियस प्लेक्स	६८८	सिल्लिक	६४७
वेस्टर गार्ड, नील्स लुडविग	९६, १०९, २६७	सीरिल, संत	६९८
वेस	६४७	सुकरात	६५७
वैलिस वज	५७४, ७९	सुवांशु कुमार रे	२८, ३९, ४०, ४१, ४३,
वोण्डाक	६९८	६९, ७१	
शंकर हाजरा	२८, ६४, ६६	मुण्डवल	६४०, ४८, ४९
शंकरानन्द, स्वामी	२८, ४४, ४७, ४८, ४९, ६९	सूंग	४२७, ३१, ३२
शिनीदर, एच०	२९०, ६४०	सेथे, कर्ट	२९०, ९३, ५७१, ७३
झिमत, ए०	७५६, ६१	सेफार्थ, जी०	५७१
शिलीमान, हाइनरिख	६४५, ४६	सेसी, सिल्वेस्त्रे दि	९६, २६३, ६५, ६७, ९०,
शिलोज़र	२२५	३९९, २०, ५१, ५३, ५६८, ६९, ७०	
शील	७१	सेन्ट निकोलस, अबे तैन्दु दि	५६८
शूमेकर, जे० एच०	५६७	सेल चोंग	४८६
शु शन	४२९	सेसनोला, एल० पी० दि	६३१, ३२
शैम्पोलियो, जीन फ्रेको	९, १८, ९७, ५६९, ७०,	सेण्डविध, टी० बी०	६३१
	७०, ७५, ९१	सेमुयल बर्क	३११
स्कयोल्सवोल्ड, ए०	७६१	सैविगनाक	३६९
सत्यभक्त, स्वामी	१९४, ९५	सोर्जी ओगिर	४६२
सफ़ारिक	६९८	सोमर	६२२, ५१
सरकार, दिनेशचन्द्र	१ २	सोलोन	६५७
स्कूतश	६७१	हटर, जी० आर०	२८, २९, ३२, ३३, ३४
स्टाइन, ओरेल	४७३, ७६	हण्टिंग	३७७
स्टाबेल (कुमारी)	६४९	हर्थ	४५८
स्टीवेन्सन	९६	हविग	२७०, ७१
स्टेसीनास	६२६	हॉरिगटन, जे० एच०	९९
शोहन, ए० डब्ल्यु०	५७१	हलेवी	५९७
सुरे, एफ़० दि	६६७	हाइनरिख, शिलोमान	६४५
राक्य पण्डित	३९९, ४६२	हानुस	६९८
राजेंक, अर्नेस्ट दि	२३५	हाम	६९८
राजी, काउण्ट दि	२६७	हावडं कार्टर	५१५
राबो	६७२	ह्विंग जिये	४२३
रास्सी, लुई कंगनत दि	६९७	ह्विंग दसो जंग	४२९
रकवई	७५५	हिज़, जे०	७५६

डिन्क्स, ए०	२७३
हियूगो विन्कलर	३२०
हिराता	४९२
ह्विन्से	९६
हिलर वान	६४१
हीरेन, आरनॉल्ड हरमन लुडविग	२६४
हुसिंग, जी०	२६७
हूबर	३६९, ७७
हेनरी लावाचेरी	७६१
हेनरी स्मिथमैन	६१३
हेरन हूटर	७५६
हेरोडोटस	३४९, ५४५, ६१७, ४०, ४६, ६७
हेल्वी	९६
हेवेसी, एम० जी० डी०	२८, ५८, ७६२
हैनमेल	२९०
हैमर स्ट्रोम	६७१
हैमिल्टन, डब्ल्यु०	३१२
हैलभर	६४७
होमर	६४५, ४६
होरापोला	५६५
हूरोज़्नी, बेदरिख	२८, ६४, ६७, ३२०
हौप्ट	२९०
श्रवण कुमार	१९६
श्रीमती वाड	४४६

विशिष्ट मनुष्य

कालीदास (कवि)	८०
टेरा (मूर्तिकार)	२२८, ३२५
तोक् गावाइये यासु (राज्य प्रबन्धक)	४८९
नोबू नागा (राजनीतिज्ञ)	४८६
पेत्रो देल्ला बल्ले (यात्री)	२६१
फ्राह्यान (यात्री)	८०
महात्मा गान्धी (राष्ट्रपिता)	९४
मोर्कोपोलो (यात्री)	८७, १४७, ५३५

मैरियो शीपान्स	२६१
यहूदी अशमून (सामाजिक कार्यकर्ता)	६०७
लुदोविको दि वरथेमा (यात्री)	५३५
वैकोवर, जार्ज (यात्री)	५६७
हन्स देखशवान (यात्री)	७१८
ह्वान सांग (यात्री)	१२७
हिदे योशी (राजनीतिज्ञ)	४८६
हुईओ, जीन निकोलस (शिल्पकार)	५७०
हुयेन त्सांग (यात्री)	१३४

शासक

अकबर	८९, ९०, ९९, ३६१
अखमेनिज़	२४८, २६९
अखेतातेन	५५५
अखेनातेन	५५४, ५५
अखोरिस (ग्रीक भाषा में)	५६४
अंल का इव रा (मिस्री भाषा में)	५६४
अच्युत	१५०
अट्टिला	६९, ७१५, २१
अताउल्ला	६९३
अती	६६०
अदाब निरारी द्वितीय	२३०
अनंगभीम	८८
अनन्त वर्मन (बर्मा), चोङ्गंग	८८, १५४
अनवर सादात	३२७, ५६४
अनित्तारा	३०९
अनुरुद्ध	५०७
अपरमाजित वर्मा	८६
अपराजित	१२५, १३४
अपिलसिन	२२९
अब्दुल करीम कासिम	२३४
अब्दुल्ला	३६६
अबी-एबु	२२९
अबी जाह	३२६

अबोदियस कैसियस	५६२	अगुर उवालि	३३५
अमालारिक	६९३	अगुर उवालि प्रथम	२३०
अमासिस द्वितीय (ग्रीक भाषा में)		अगुर नसीर पाल द्वितीय	२३०
खेतुम इब रा (मिस्री भाषा में)	५५८, ६४	अगुर (असुर) बनीपाल	१३१, ३२, ३८, २८६, ३४६, ५५८, ६१७, २६
अमीन दीदी	०२१	अगुरहेदेन	२३२, ८६, ५५८
अम्मी जद्गा	०२९	अशीकागा तका उजी	४८९
अम्मी दिताना	२२९	अशोक	७७, ९६, ९७, ९९, १००, १०२, १०९, १३, २१६
अमेनहोतेप-प्रथम	५५२, ५३	अस्तगीज	२४८
अमेनहोतेप द्वितीय	५५२, ५३, ५४	असा	३२६
अमेनहोतेप तृतीय	५५१, ५३	अस्किया	६१५
अमेनहोतेप चतुर्थ	५५२, ५४	अस्त्रा खान	६६६
अमेनेमहत प्रथम	५५१, ५१	अहमद इब्न तुलुन	५६३
अमेनेमहत द्वितीय	५५०	अहमीज नेफरतारी (शासिका)	५५३
अमेनेमहत तृतीय	५५०, ५१	अहमोस (एहमोस)	५५२, ५३, ५५
अमेनेमहत चतुर्थ	५५०	अहाव	३०२, ३२, ३७
अय द्वितीय	७८	अहिराम (अखिराम)	२९३
अयी	५५२, ५५	अहोतेप	५५३
अरतास	३६३	आक्टेवियम	५६१
अरमसिन	२२८	आगस्टिन दि इतुरविडे	७४१
अरशाम (अशमि-प्राचीन पर्शियन भाषा में)	२६९, ७६	आगस्टस	६६०, ७२
अरहदिना (अरहदत्त)	११८	आरामोहम्मद	३९०
अर्तजरक्सीज	२६१	आदित्य प्रथम	८६
अर्देशायर	२८२	आनन्दमोहडोल	५१५
अर्यारमन	२६९	आब्रं गोन	७४१
अर्साकोज	२५०	आडिस	३४६
अर्यारमन	२६९	आर्तजरक्सीज प्रथम	२५०, ५५९
अर्साकोज	२५०	आर्तजरक्सीज द्वितीय	२५०, ५६०
अर्सामीज (ग्रीक भाषा में; देखिए अरशाम)		आर्तजरक्सीज तृतीय	५६०
अलंगपाया	५०७, ९	अर्तिजरक्सीज चतुर्थ	२५२
अलहकीम	५६३	आर्तबेनम चतुर्थ	२५२
अलाउद्दीन आलम शाह	९०	आर्सीज	५६०
अलाउद्दीन खिलजी	८७, ९०, १३४, ८९	इकाली द्वितीय	३९०
अलाफनपुरी	६१५	इक्ष्वाकु	१२१
अलारिक	६६०	इस्तयार उद्दीन	१५०
अस्तनश	८२		

इन्द्रवर्मा	८७	एलारिक द्वितीय	६६३
इपामिनोडस	६६२	एलिजाबेथ	६१
इब्राहीम पाशा	५६३	एलिसा	२६६
इब्राहीम लोदी	९०	एलेक्जेंडर	५६२, ६६
इव्ते सऊद	३६३, ६६	ऐजेनोजा	५६२
इब्नी सिन	२२८	ऐटियस	७२१
इल खान	४१६	एतुलमुल्क	१८९
इल्हाहन	५५१	ऐण्टी ओकस द्वितीय	९९
इवान चतुर्थ (जार प्रथम)	६९९	ऐण्टी ओकस तृतीय	३३५, ३८५
ई-ताय-वांग	४८१	ऐण्टी गोनस	३५१, ६३
ईये यासू	४९१	ओगमियस	७१२
ईशान वर्मा	८२	ओगोताइ	६१६
ईशुमुनाजार	२९७	ओजिन	४६२
उदयादित्य	१८९, ६४	ओटो प्रथम	७ ५
उदेनाथस	३३८	ओडोसर	७२१
उन्ताश उबन	२४७	ओलजैतू	४६२
उपेन्द्र	८४, १८६	ओस कोर्न द्वितीय	५५७
उमयादो	४८८	औरंगजेब	६७, ६१, १६०
उमर	६१५	औरेलियन	५६२
उमरी	२६७, ३२	औसेरे अपोपी	५५१
उम्बा दारा	२४७	कर्क द्वितीय	८६, ८७
उम्मा मेनान	२४७	कजान	६९९
उर जबाधा	२२७	कनिष्क	७८, १ २, ६, ८६
उर नम्बू	२२८	कन्नर देव (कुष्म राजा तृतीय)	१२९
उसमान (तुर्क)	६३१, ५८	कपिलेन्द्र	१५७
उसुमान दन फादिदो	८१५	करांजा	७४१
उस्मान युसुफ	६ ४	का (देखिए केबेह)	३७७
एजियस	३३२	क री बू लू	३७७
एडुस्सन	६६८, ७०	काइम्पेलस	६५८
एन्नातुम्मे (एन्नातुम)	२२७, २३५	कांग शी	४१७, २६
एन्तेमना	२२७	कांग हो	४१६
एप्रोज	५५८, ६४	कांस्टैटियस	७२१
एमीलियनस	५६२	कान्सटेन्टाइन	६६७, ६८
एराटस	६६०	कामाकूरा	४८६
एलफ्रेड	७११	कामोस	५५२
एलारिक (देखिए अलारिक)	६९३	कारू (कोतोक्)	४८८

कार्टलास	३८७	केवेह	५४६
कालेज	७४१	कैडमस	६, ६४०, ८५
क्रामवेल	७४८	कैमूस	८८
कार्नेलियस गैलस	५६१	कैम्बेसिज़	२५०, ५५९, ६२९
कार्ल मैगना	५६८, ६७, ७१५	कैरकला	५६०
क्लाइव	६१	कैवरस	७०७
क्लादियस	५६२	कैसर	३२०
क्वाम्मू	४८६	कोकेन (शासिक)	४८८
क्लियोपेट्रा	५६०, ६१, ६७, ७०, ७५	कोज्यूको (शासिका)	४८८
क्लोविस	७२१	कोट्टा	२१६
क्लृण	८७	कोनराड द्वितीय	६७८
कियोमोरो	४८९	क्रोशस	२४८
किरुश (पर्सियन में; देखिए सायरस)	२३३, ४८	कौण्डिन्य	४९६
क्लिस्थनोज	६५७	कौन्दिया	५२६
किशपिष	२४७	खत्तुसिली	३७६, ५५६
कांति वर्मन द्वितीय	१४२	खलीफ़ा उमर	५६०
कीर्ति वर्मा	८६	खल्लूमू	२४७
कुजूल कदफ़िस	७८	खियान	५५१
कुतुबुद्दीन	८४	खुर्बतिला	२४७
कुतुर नाखुष्टे	२४७	खुम्बा खालदस द्वितीय	२४८
कुदुर नाखुष्टे	२४७	खुम्बा निगस	२४७
कुलज विष्णुवर्धन	८७	खुमैनी	२५४
कुवलई खान	३६६, ४०२, १६, ५०७, १५, २६	खुशरो	५६२
कुविरका	११८	खेत्ती द्वितीय	५५०
कुमार गुप्त	८०	खेफ़े (मिस्री भाषा; देखिए केफ़ेन)	५४९, ६४
कुमार पाल	१५०	गणपति	८८, १४५
कुरीगालजू द्वितीय	२३०	गम्भीर सिंह	१६८
कुरीगालजू तृतीय	२४७	गयाकरण चंदेल	८४
कुरु	११८	गयामुद्दीन तुग़लक	९०
कुरेश	२४८	ग्रह वधन	१२७
कुलोत्तुग	८७	ग्रह वर्मा	८२
कुलविजिन	४७६	गाइयस पेत्रोनियस	५६२
कूफ़ू (खूफ़ू-मिस्री भाषा; क्योप्स-ग्रीक)	४६, ६४, ५४६	गायसेरिक	६७२
कूलिग	४६२	गुआराम	३८७
केफ़ेन (ग्रीक भाषा में; देखिए खेफ़े)	६४५	गुदफ़र्न	७८
		गुलाब सिंह	४०२

गुहदत्त	८०	जय दामन	१०९
गुहासेन	८०, १३८	जय देव प्रथम	२०४
गूडिया (जूडिया)	२२८	जय प्रकाश मल्ल	२०४
गे-दुन वृष-पा	३६६, ४००	जय पाल	८८
गैलियेनस	५६२	जयवर्मन द्वितीय	५२६
गैलेरियस	५६२	जय वर्मन सप्तम	५२६
गोपाल	८४	जय वर्मन अष्टम	५२६
गो माता (गोमाता)	२५०, ५८	जय सिंह	८६, १८६
गोरी	८४	जय स्थिति मल्ल	२०४
गोविन्द राज तृतीय	१४२, १९४	जरक्सीज	२६१, ६६, ६७, ६८
चकदोर नागे	२१५	जरक्सीज प्रथम	२५०, ५५९, ६३१, ५७
चक्रायुद्ध	८२	जरक्सीज द्वितीय	२५०
चंगेज खान (तिमु चिन) ३८७, ४१४, १६, ६०, ६२		जहाँगोर	९१, ११८
चन्द्र गुप्त प्रथम	२०४	जहीरुद्दीन मोहम्मद (उपनाम : बाबर)	९०
चन्द्र गुप्त विक्रमादित्य, द्वितीय	८०, ११८	जाजल्लदेव	१८९, ९४
चन्द्र गुप्त मौर्य	७७, १०९	जामोतिक	१०९
चराइरोगवा	१६८	जार्ज तृतीय	४१९
चष्टक	१०९	जिमरी	३२६
चाउशीन	४०९, ८०	जिगो (शासिका)	४८७
चांग-चुप ग्याल-छेन	३९९	जिम्पू तेन्पू	४८७
चार्ल्स दि ग्रैंट	६८८	जियार्जो पंचम	३९०
चार्ल्स द्वितीय	९१	जियार्जो बारहवाँ	३९०
चार्ल्स मोर्तेल	७२१	जियेन लुंग	४१९
चियांग काइ शेक	४२१	जुआन डी सलकैडो	५२७
चीय कुयेइ	४०९	जुस्टोनियन	६६०
चूडा चन्द	१६८	जूना खाँ	९०
चेन च्याओ	४३२	जूलियस सीजर	५६१
चेन लुंग	४००	जेडोकिया	३२७
छोग्याल	३९१	जेन्टियस	६७४
जंग बहादुर	२०४	जेनोबिया (शासिका)	३३८, ५६२
जटावर्मन	१३४	जेम्भो (शासिका)	४८८
जटा वर्मा सुन्दर पाण्ड्य	८७, १३४	जेम्स द्वितीय	७०८
जदूम	२२९	जेरियाड्स	३८५
जमल अब्दुल नासिर	५६४	जेहू	३३२
जमामा सुमुदीन	२४७	जे रीड्याकिस (याकिम)	२३३, ३२७
जय चन्द्र	१५७	टाइरेनस	६६७

टॉलेमी	२८९, ३३५, ५९, ५७५, ६३१	तहमास्प	२५२
टॉलेमी प्रथम-लैगास	५६०, ६१, ६९, ६३१	तहारका	५५८
टॉलेमी द्वितीय-प्लेडीफस	९९, ५४५, ६०, ६१	तांजुन	४८०
टॉलेमी तृतीय-थोरिगेटिस (प्रथम)	५६०, ६१, ७१	तानूतामोन	५५८
टॉलेमी चतुर्थ-फिलोपेतर	५६०, ६१	तारकूमवा	३९३
टॉलेमी पंचम-एपोफोन्स	५६०, ६१, ६८	ताराबाई (शासिका)	९१
टॉलेमी षष्ठम-फिलोमेतर	५६०, ७०	ताशी नंगयाल	२१२
टॉलेमी सप्तम-थोरिगेटिस (द्वितीय)	५६०	त्याग सिंह	१५०
टॉलेमी अष्टम-सोतर (प्रथम)	५६०	तिगलत पलेसर प्रथम	२३०, ७३, ३३५, ३७, ३७
टॉलेमी नवम-सिकन्दर (प्रथम)	५६०	तिगलत पलेसर तृतीय	२३२, ८९, ३३७
टॉलेमी दशम-सोतर (द्वितीय)	५६०	तियास	५५९, ६०
टॉलेमी एकादश-सिकन्दर (द्वितीय)	५६०, ६१	तिरिदेतिज (तिरिदात)	२५२
टॉलेमी द्वादश	५६०, ६१	त्रिभुवन वीर विक्रम शाह	२०६, १२
टॉलेमी त्रयोदश	५६०, ६१	तिशपिश	२४८
टॉलेमी चतुर्दश	५६०, ६१	तुकुल्टी निनुरता द्वितीय	२३०
टिंगया देव	१५०	तुगलक	९९
टुट-अंख-आमेन (आमुन, आमोन)	५५२, ५५	त्सुक-चेन	३९९
टुट-अंखातेन (अंख + अतेन)	५५५	तेंची (नाका)	४८८
टुटमिस	५७०, ७५	तेती प्रथम	५४९
टुटमोस प्रथम	५५२	तेफनस्त	५५८
टुटमोस द्वितीय	५५२, ५३	तेम्मू	४८८
टुटमोस तृतीय	५५२, ५३, ५४	तेस्पीज (चिशपिश)	२६९
टुटमोस चतुर्थ	५५२, ५३	तैमूर	९०, ३९०
टोटमिस तृतीय	२८७	तैलप	८६, ८७
डायज	७४१	तोमर	८४
डायडोटस (दयोदत)	२५२	त्रिडेत्स प्रथम	३८५
डेमेट्रियस	६३१	त्रिडेत्स तृतीय	३८५
डेविड (दाउद)	३२६, ३७	त्रिसोंग दे चेन	३९९
डेविड द्वितीय अगमाशेरवेली	३८७	ध्योडोर	६२०
डैरियस	२५७, ५८, ६१, ६६, २६७, ६८, ७६	थालून	५०७
डैरियस प्रथम	२५०, ५५९, ६२९	थियो डोरिक प्रथम	६९३
डैरियस द्वितीय	५५९	थियो डोसियस	६९३
डैरियस तृतीय	२५०, ५६०	थीबा	६०९
तामारा (शासिका)	३८७	थेमिस्टाकिल्स	६५७
तमिल इलाला	२१६	थेसियस	६३२
तमोरा दर्ई	६२९	ड्यूशी (शासिका)	४२१

दन्तिवर्ग द्वितीय	१८६
दन्तिवर्मन	१२९, ८६
दन्तिवर्मा	८७
दयोदत (दे० डायडोटस)	२५२
दाङ्गो द्वितीय	४८६
दाऊद (डेविड)	३२६, ३७
दामोजद	११३
दारा (प्राचान पशियन-दरयूश; ग्रीक, डैरियस)	२५०, ६३
दिनेकोव पीटर	६९८
दूदू	२२८
देवगुप्त	१२७, ८२
देवभूति	७७, ८६, ८७
देवियस	५६२
द्रोणसेन	१३८
धंग	८४
धरनीन्द्र वर्मन	५२६
धरसेन प्रथम	१३८
धरसेन द्वितीय	१३८
ध्रुवसेन प्रथम	१३८
ध्रुवसेन द्वितीय	८०, १२७, ४०
महपान	१०९
नन्दी वर्मन	१२६, ३४, ३८
नन्तुक (नन्तुक)	८४
नरम सिन	२२७, २८, ४७, ३३५
नर वर्धन	८२
नरवर्मा	८४
नरगल युसेजिब	२४७
नरसिंह	८८, १२६, ३४
नरसिंह वर्मन द्वितीय	१३४, ४२
नरायण पाल	६७, १५४
नहपान	१०९
नाका	४८८
नागपाल	१५७

नागभट्ट प्रथम	८२, १९४
नागभट्ट द्वितीय	८२
नादिर शाह (नादिर कुली)	२५२
नाम-री सोंग चें	३९७
नामा नायक	१४५
न्या-वि चें पो	३६७
नामन राजस द्वितीय	६६०
निकेफोरस फोकस	६४४
निदितुबेल	२३३
निरसिंह द्वितीय	१४२
नीको (निकाउ - ग्रीक; वाह इव रा - मिस्री)	५५८, ६४
नेक्ता नेबू प्रथम (ग्रीक; नेबूतने बेफ - मिस्री)	५५६, ६०, ६४
नेक्ता नेबू द्वितीय (ग्रीक; नेबूत होर हेव - मिस्री)	५५९, ६०, ६४
नेटरबाउ	५४६
नेडुम चेलियान	१३४
नेफरीतिस प्रथम	५५६
नेफरीतिस द्वितीय	५५९
नेफरकारे (मिस्री; पेपी द्वितीय - ग्रीक)	५६४
नेफत इव रा (मिस्री; सामंतिक द्वितीय-ग्रीक)	५६४
नेबू कदनेजार	२३३, ३०९, २७, ३०, ३५
नेवका	५४६
नेबूनयद (नेबूनिडस - रोमन)	२३३, ४८
नेबू पलासर	२३३, ४८, ३२७, ३७, ५५८
नेम्बाना	६१३
नेसूबेने बदेद (स्मन्दीज)	५५७
नेपोलियन	२६३, ५५३, ६३, ६७, ६८, ६९
नोकियल	६४९
नोरदन प्रथम	५२७
पमहीबा	१६८

परकेशरी वर्मन	१२९	पेरियण्डर	६५८
पनवाइ	३९०	पैक्ची	४८७
परमार्दी (परमल)	८४	पोटेंजगिल	७४१
परमेना	३४९	प्रोबस	५६२
परमेश्वर वर्मन	१२६, ३४	फ्रक-मो-द्रू	३९९
परमेश्वर वर्मन द्वितीय	१३४	फर्नवाज	३८७
पृथ्वी देव प्रथम	१८६	फ्लोरेन्स	५६५
पृथ्वी नरायण शाह	२०४	फुस्टीडा	६६३
पृथ्वी पति द्वितीय	१३८	फ्लेमिन्स	६६०
पृथ्वी राज	८४	फ्राया चक्कारी	५१५
प्रजाविपाक	५१५	फारुख प्रथम	५६३
प्रतापरुद्र प्रथम	१४५	फिलिप	६६०
प्रताप रुद्र द्वितीय	८८	फिलिप द्वितीय	५२७
प्रभाकर वर्मन	८२	फोरोज शाह तुगलक	९७
प्रवर सेन प्रथम	८६	फुआद द्वितीय	५६३
प्रसेन जोत	३०७	फुआद प्रथम	५६३
प्राक्रम बाहू	२१६	फूशी	४०९, २५
पिगमैलियन	२९९	फ़ाल	३६६
पिजुशतिश	३०६	फ्रांसिस्को डो साण्डे	५३२
पिनोज़ेस	५५७	फ़िथीगर्न	६९३
पिर्थाखी	५५७, ५८, ६१७	फ़ेड्रिक द्वितीय	६७२
पीटर प्रथम	६९९, ७००	वक्कहीस	६५८
पुबलियस अक्विलस हैद्रियानस	३३८	वगरात तृतीय	३८७
पुण्य दत्त प्रथम	१२१	वगरात चतुर्थ	३८७
पुल्लोत्तम	१५७	वगरात पंचम	३९०
पुलकेशिन द्वितीय	१२६	वहराम शाह	८८
पुलकेशी प्रथम	८६, ८८	बहादुर शाह	९०
पुलकेशी द्वितीय	८६	बहादुर सिंह	१५७
पुलोमावि तृतीय	७८	बाईबुरेह	६१३
पुष्य गुप्त	१०९	बाथ ज़ेबाज (देखिए ज़िनोबिया)	३३८
पुष्यमित्र शुंग	७७	बाशा	३२६
पुष्य वर्मन	१५०	बिम्बसार	७७
पेदास्त	५५७	बुक्का द्वितीय	१२८
पेपी प्रथम (ग्रीक; मरीरे-मिल्ली)	५४९, ६४	बेइनंग	५०७
पेपी द्वितीय (ग्रीक; नेफुरकारे-मिल्ली)	५४६, ६४	बेल्लो सोकोतो	६१५
पेरिक्लस	६५७	बोवक होरिस (ग्रीक; बेक्रेनेनिफ़ - मिल्ली)	५५७, ५८

बोनीफ़ेस	६४४	मिकिप्सा	५९५, ३२
बोरिस	६६७	मिडास	३४३
बृहद्रथ	७७	मिण्डान	५०९
ब्रम्हपाल	१५०	मिनास	६४५, ४६
ब्रूटस	५६१	मिरियानी	३८७
भटार्क	१३८	मुहम्मदगोरी (मोहम्मद गोरी)	८८
भद्र वर्मा	५२६	मुत्सी हितो	४९१
भाव वर्मन प्रथम	५२६	मुनी-चैन-पो	३६६
भास्कर रवि वर्मन	१३२	मुबारक खिलजी	९०
भास्कर वर्मन	१५०	मुरसिली प्रथम	३०९
भीम द्वितीय	८४, १४५	मुरसिली द्वितीय	३०६
भूमक	१०९	मुहम्मद गोरी	८२, ८४
भोज	१८९	मुहम्मद, रजा पहलवी	२५४
भंगलेश	१४२	मृगेश वर्मन	१४०, ४२
भंग-स्त्रोंग भंग-चैन	३६७, ६६	मेन्तुहोतेप प्रथम	५५०
भंगी युवराज सबलिकाश्रय	१४२, ४५	,, द्वितीय	५५०
भंगू खान	४१६	,, तृतीय	५५०
भक्सूटोव	७५६	,, चतुर्थ	५५०
भट्टन	२६६	,, पंचम	५५०
भथियास कोर्वीनस	७१५	मेने (मेनेज-ग्रीक; नारमर-मित्री)	५४६, ६४, ६५
भदेरो	७४१	मेनेलिक	६२०
भनीशतुम	२२७	मेमियस	६६०
भनेज	६६७	मेरीरे (देखिए पेपी प्रथम)	५६४
भनीहरी	१२९, ३२	मेरेन्ने प्रथम	५४९
भमलूक	५६७	मेरेन्ने द्वितीय	५५०
भलिक काफूर	८७, ८८	मेरेनटा	५५५, ५६
भसीनिस्सा	५९५	मेरोदोख बलादन	३३७
सहमूद राजनवी	८८	मेशा	२९७, ९८
सहमूद शाह	६०	मेहमत अली (मोहम्मद अली)	५६३
सहेन्द्र वर्मन	१२६, ३२	मेक्समिलियन	७४१
सहेन्द्र वर्मन द्वितीय	१२९, ३४	मैगनस	७०८
साओ	४२२, २४	मैनफ्रेड	६७२
साई	६१५	मोअ (मोयस)	७८
मार्क एन्टोनी	५६१	मोम्मु	४८८
मार्कस औरिलियस	५६२, ५९७	मोहम्मद तुगलक	६०
मानदेव	२०४	मोहम्मद नजीव	५६३, ६४

मोहम्मद बिन कासिम	२८, १७२	राजेन्द्र प्रथम	८७, १५४
मौथिस अन्जोरिस	५५९	राजेन्द्र तृतीय	८७
यकोबर्न प्रथम	५२६	राम कम्हेंग	५१५
यक्षगर्द तृतीय	२५०	राम खोमहेंग	५१८
यनजोथा	६०२	राम चतुर्थ	५१५
यशपाल	८२	रामचन्द्र	८८
यशोवर्मन	८४	राम पाल	८४, १५०
यसूगी बागालुर	४१६	रिचर्ड प्रथम	६३१
यज्ञश्री शातकर्णि	७८	रुद्र दामन	१०९, ११३
यादव भिल्लम	८६	रुद्र वर्मन	५२६
युग लो	४१७	रेमे सीज प्रथम	५५५, ७०
युनिस	५४९	रेमेसीज द्वितीय (रामेसीज)	३२०, २६, ५३, ५५५, ५६
युरिक	६९३	रेमेसीज सीटा	५५५, ५६, ७५
युसुफ अली	६०४	रेमेसीज तृतीय	५५६, ५७
युसेजिद	२४७	रेमेसीज चतुर्थ	५५६, ५७
युसेर काफ़	५४९	रेमेसीज पंचम	५५६
योदित (जूडिथ-शासिका)	६२०	रेमेसीज षष्ठम	५५६
योमी	४८८	रेमेसीज सप्तम	५५६
योरोतोमो	४८६	रेमेसीज अष्टम	५५६
रजा शाह पहलवी	२५४	रेमेसीज नवम	५५६
रणराग	८६	रेमेसीज दशम	५५६
रतन राज प्रथम	१८६	रेमेसीज एकादश	५५६, ५७
रबाब जुबैर	६१५	रोमुलस	६६८
रल-पा-चेन	३९९	रोमोलस आगस्टलस	७२१
राज राज	८७, १३२	रोस्टिस्लाव	६९७
राज राज द्वितीय	१४२	लंगदर्मा	३९९
राजा जय चन्द्र	८२	लम्पोंग	५२६
राजा धिराज	१३८	ललेगीज	३५१
राजा नन्द	७७	लाइकोमिडीज	६६४
राजा नरेन्द्र	११३	लाब साँग ग्यात्सो	२१२
राजा मार वर्मा	८७	लार्स पोर्सेन्ना	६७०
राजा राम	९१	लहाथो थोरो न्यान चैन	३९७
राजा राम गंग	१५४	लिनपेई	४१२
राजा रूयांग	३९८	लियो तृतीय	६८८
राज्य पाल	१५४	ल्योविगिल्ड	६९३
राज्य वर्धन	८२		

ली हुआंग चांग	४१९	शम्भा जी	२१
लुगाल जगोस्सी	२१७	शर त्तुंग	४५८
लुल्ली	२८९	शबाका	५५८
लेगाजपी	५२७	शबातका	५५८
लेनिन	६९९	शलमनासर द्वितीय	२३१
लोब-सोंग गया-त्सो	४००	शलमनासर तृतीय	२३२, ६८, ३३७
ब्रजहस्त पंचम	१५४	शलमनासर चतुर्थ	२३९, ३२६, ३२
वाकपति भुंज	१८९	शशांक	८२, १२७, १५४
वांग चेंग	४११	शाइस्ता ख़ाँ	९१
वालककायम महामण्डलेश्वर	१३२	शान्ति वर्मन	१४०
वालिया	६९३	शावुर प्रथम	२६१
वालियस	६९३	शाहजहाँ	९०
वाशिष्ठ पुत्र पुलमायो द्वितीय	१२१	शाहज जी (भोंसले)	९१, १६०
वाह इव रा (देखिए नोको)	५६४	शाहू	९१
विक्टोरिया (शासिका)	९४	शिमिर	३३२
विक्रमादित्य	१०९, १३४	शिलहक (शिलाक) इन्गु शिनाक	२२८, ४७, ५५
विग्रहराज चतुर्थ	८४	शिलादित्य	१३८
विजय	२१६	शिवमार प्रथम	८७
विजय बाहू चतुर्थ	२१६	शिव स्कन्द वर्मन	१४२
विजय राय उडियार	१४२	शिवाजी	९१, १८०
विजय सेन	१५०	शिवाजी द्वितीय	९१
विजयादित्य	८७	शिशौंक	५५७
विजयालय	८७, १६४	शिशौंक चतुर्थ	५५७
विदग्ध	१५७	शोना चेन	४००
विल्कुरू पल्लव	१२५	शी हुआंग ती	४११, १२, २७, ८०
विस्तास्प	२७८	श्री रंग	१३४
विस्तास्पीज	२६८	श्री विजय	५३५
विष्णु वर्धन	१४५	शुदरल	२२८
विष्णु वर्मन	१४०	शुप्पि लूली माश	२३०
विसीमार	६९३	शुप्पि लूली उम्मा	२३०, ३३५
वीर पुरुषदत्त	१२१	शू सिन	२२८
वीरू पाक्ष	१३२	शेब नुङ्ग	४०९
वृत्ती	४१२	शेप सेस काँफ़	५४६
धुवृका	१०७	शोगुन हिदेयोशी	४८१
वैद्य देव	१५०, ५४	शोतुको तैशी	४८८
शत्रुक नाकुटे	२४२, ४७	शोमू	४८८

स्कन्द गुप्त	८०	सिगिसमण्ड	७१५
स्कन्द नाग	१२५	सिदेरिज	३४९
स्कन्द वर्मन	१२५	सिद्धराज जयसिंह	८४
सत्यकी	१५७	सिनमुन	४८६
सनयात सेन	४२१	सिनमुबालित	२२८
समुद्र गुप्त	६६, ११३, १८, ८८	सिमुक (शिङ्गुक या सिन्धुक)	७७
सरगोन प्रथम (अक्कादियन साषा-साहकेनु)	२२७, २८, ३६, ४७	सिमैरी	३४९
सरगोन द्वितीय	२३२, ४७, ३०९, २६ ३०, ३२, ३७, ८५, ६२९	सियाक्सरीज	२४८
सलस्तम्भ	१५०	सियुरिशकुन	२३२
सलीम प्रथम	५६३	सिंह वर्मा	८६
सस्सू इलूना	२२९	सिंह वर्मा द्वितीय	८६
सस्सू दिताना	२२९, ३०	सी चोंग	४८६
स्मेन्दीज (ग्रीक; नेसूबेनेबदेद - मिस्री भाषा)	५५७	सीजर आगस्टस (देखिए आक्टेवियस)	५६१, ५६१, ६६०, ७०७, २१
स्टैलिन	६९९	सीजर जूलियस	५६१, ६६०, ७०७, २१
साइमो (शासिका)	४८८	सीजर बोंगियो	६७२
सांग-का-पा	३९९	सीमियन, जार	६९७
सादात, अनवर	५६४	सीयक द्वितीय	८४
सामन्त सेन	१५०	सुजून	४८८
सामतिक प्रथम	५५८, ५९	सुबुक्तगीन	८८
सामतिक द्वितीय (देखिए-नेफ्रेत इब रा)	५५८, ६४	सुभी पाशा	३१२
सामतिक तृतीय (दे०-अंख का इब रा)	५६८, ६४	सुम्मू अबूम	२२९
सामथेक द्वितीय	३५३	सुम्मू लाइलुम	२२९
साम-सेन-ताई	५१८	सुयीकी	४८८
सामोथिस	५५९	सुल्तान अहमद	२५४
सायरस (दे० कुर्खा)	२३२, ४८, ५०, ५७, ६५, ३३० ३५, ४७, ४९	सुल्तान तुमन	५६३
साल	३२६	सुल्ला	६७२
सालोमन (ग्रीक; सुलेमान-अरबी)	२६१, ६५, ३२६, ६२०	सुशर्मा	७७
सिकन्दर	२५, २५०, ५२, ५३, ७८, ८९, ९३, ३२७, ४३, ५३, ८५, ८७, ९०, ५६०, ६३१, ६०, ६२, ६४	सुसेमीज	५५७
सिकन्दर तृतीय	५६०	सूर्य वर्मन-प्रथम	५२६
सिकन्दर चतुर्थ	५६०	सूर्य वर्मन-द्वितीय	५२६
		सेकेसुरे	५५२
		सेत नल्ल	५५६
		सेतो प्रथम	५५५, ५६
		सेना खरिब	२३२, ४७, ८९, ३७७, ५५८
		सेबेक नेफ्रे	५५०, ५१
		सेल्युकस	२५२, ६३, ३२५

सेसास्त्रीज प्रथम	५५०, ५१
" द्वितीय	५५०, ५१
" तृतीय	५५०, ५१
सेहर तवी इन्लेफ प्रथम	५५०
सैफुद्दीन	८८
सोगा-नो-इरुका	४८८
शोंग चैन गम्पो	३९७, ४००, १
सोमेश्वर	८४, ८६
सोमेश्वर चतुर्थ	८६
हकोरिस	५५९
हतशेषसुत	५५२, ५३, ५४
हत्तुसिलिस तृतीय	३०८, ८०, ५५६
हदाद तृतीय	३३७
हदादेजर	३३७
हम्मूराबी	२२९, ४१, ४२, ४३, ४७,
हरिवर्मा	८८
हरी वर्मन	१४०
हर्मियस	७८
हर्मैनिक	६९३
हर्षवर्धन	८०, ८२, ८३, १२७, ८४
हा इब रा (देखिए-एप्रोज)	५६४
हिरकैनस	३३२
हिरैकिल्स	६७२, ७१२
हिरैविलयस	५६२
हुआंग तो	४०९
हुनियादी	७१५
हुयेरतास	७४१
हुलागू	४१६
हुविष्क	७८
हुसैन	२३४, ६६
हुनी	५४९
हेकर (देखिए अखोरिस)	५६४
हेनरी द्वितीय	७०८
हेरीहोर	५५७
होजो तोकामासा	४८९
होवू मतुआ	७६१

होरे महव ५५२, ५५

संघ

अकाइयन	६६२, ६४
आनोगुर	७१५
पेलोपोनेशियन	६५७, ४८, ६०
बोथेशिया	६६२
मयपान	७४८, ५३
हेलेनिक	६६०

स्मारकों के नाम

अल हजर मस्जिद	५६३
अशोक स्तम्भ (दिल्ली)	३६
आहू (चबूतरा ईस्टर द्वीप)	७३१
खजुराहो के मन्दिर	८४
जगन्नाथ पुरी मन्दिर	१५४
ताजमहल	८०
नागेश्वर मन्दिर	१४५
नासिक गुफा	११८
परेमिड	५४९
पोताल राजगृह	४००
बकूफू (सैनिक मुख्यालय)	४८९
बड़ी दीवार	४११, १६
बैजनाथ मन्दिर	१५७
बौद्ध मठ	४८९, ३१
बौद्ध स्तूप	२६
मियाजोदी स्तम्भ	५६६
यहूदी मन्दिर (सिनेगाग)	३३१
विशाल मन्दिर	३९३
शिला स्तम्भ	५७०
शिव मन्दिर	१५७

स्मारक	
स्तूप	९९
स्मारक स्तूप	११८
स्वर्ण भूति (बुद्ध)	४८७
स्किंक्स	३७३, ५४९
हैरिंग गार्डन्स	२३३
होरियूजी (बौद्ध) मन्दिर	४८८

बैदिक	२७
सायप्रस का	६२६
सिन्धु घाटों	२६, २७, २८, ४३, ९६
सुमेर की	२७
हिन्दू	५३२
हेलेनिस्तिक	६३२

सरकारें

केन्द्रीय सरकार	४८९
चीनी सरकार	४१७, ४३, ६९
जापान सरकार	४८८
ब्रिटिश सरकार	२३४, ३६६, ४१६, ५०६, ५१५, ६०४, १३, २०, ३१, ३६
बैजेंन्टाइन (बैजेंन्टाइन)	२५२, ८६, ३४३, ८५, ८७, ६३१, ३६, ६०, ६७, ६८
भारत सरकार	५०८

संस्कृतियाँ

आयोनियन	६३६
एजियन	६३२
एट्रस्कन	६६७
ग्रीस की	६३६
चीन की	४१७
ब्रिड्ज	२६
प्राचीन एशिया माइनर की	६४६
प्राचीन संस्कृति (क्रोट की)	६४४, ४५
फिनोशियन	६४६
माइसीनियन	६४४, ४५
मिनोअन	६४६
यूनानो	६३६
रोमन	६९३

संस्थायें

अकादमी दि इन्सक्रिप्शन्स	३३८
अमेरिकन कालोनाइजेशन सोसायटी	६०७
अमेरिका पैलेस्टीनियन एक्सप्लोरेशन सोसायटी	३१२
अमेरिकन स्कूल एट एबेन्स	६६२
अजमेर संग्रहालय	१०२
आक्सफोर्ड रॉयल सोसायटी	३३८
आक्सफोर्ड विश्व विद्यालय	२६
आर्कैयोलॉजिकल सर्वे डिपार्टमेन्ट	९७
इण्डियन नेशनल कॉंग्रेस	९४
ईस्ट इण्डिया कम्पनी	२६८, ४१९, ५१५, ३५
एकादमी आफ् साइन्सेज	५७०
एफीसस धार्मिक समिति	३४३
एशियाटिक सोसायटी	९७, २६९
एशमोलियन संग्रहालय	६४५
एक विश्व विद्यालय	४४३
आइना रिवाइवल सोसायटी	४२१
टाटा इन्स्टीट्यूट आफ् फण्डामेंटल रिसर्च	२०
पीपिल्स नेशनल पार्टी	४२१
पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग	६७
पेनसेल्वेनियन विश्व विद्यालय	५४६
फ्रेंच एशियाटिक सोसायटी	२६६
बंगाल एशियाटिक सोसायटी	१६४
बर्लिन ओरिएण्टल सोसायटी	३२०
ब्रिटिश स्कूल आफ् आर्कैयोलॉजी	३२०
ब्रिटिश संग्रहालय	४६, २३२, ४८, ३११, १२
	७३, ५६८

भाषा विज्ञान परिषद	५
मिडिल ईस्ट सोसायटी	३२०
राज्य संग्रहालय	१५४
रॉयल अकादमी	२६४
रायल आयरिश अकादमी	२६७
रॉयल एशियाटिक सोसायटी ९७, २६८, ७३, ४५४	
रोआयल नाइजर कम्पनी	६१५
स्किंफिडनेवियन इन्स्टीट्यूट आफ् एशियन स्टडीज	२८
स्क्रिप्ट स्टडी ग्रुप	५८
रोमन स्क्रिप्ट सोसायटी (रोमाजीकाई)	४९६
लीग आफ् नेशन्स	६२०
लूगे संग्रहालय	२४३, ९७
विट वाटर्स रैण्ड विश्व विद्यालय	६४७
सोसायटी आफ् विब्रलीकल आर्कैयोलोजी	३१३
सोसायटी फ़ार ऐन्टीक्वेरीज	५६९
हार्वर्ड विश्व विद्यालय	३३२
हिन्दी साहित्य सम्मेलन	१६६

सागरों के नाम

इंगलिस चैनल	६८८
काला सागर	२८५, ६६६
केप माउण्ट	६०४
केप मेसूरेडो	६०४, ६०७
कैरीबियन सागर	१०
कैस्पियन सागर	२५२, ४१२
डेड सी	३३०
फ़ारस की खाड़ी	३६३
बाल्टिक सागर	६९९
भू-मध्य-सागर	२६६, ३०२

लाल सागर	५५१, ५६, ६२०
हुडसन खाड़ी	७५५

साम्राज्य

इलखान	४९६
ओटोमन	६३६, ६७
गुप्त	८०
चीन	४१६
जगाताई	४१६
जापान	४८१
टर्की	६४४
तांग	४१२, १३
पर्शियन	२५२, ३८७, ४७३
पाण्ड्य	८७
पार्थिया	२५२
बेजेंन्टाइन	३४३, ६३६
मुग़ल	९०
मौर्य	७८
यूरोप	४१६
राष्ट्रकूट	८७
रूसी	३६०
रोमन	३४७, ४१२, ६४४, ४७
वर्धन	८२
वाकाटक	८६
विजय	५३५
विशाल	२५७
सिबिर	४१६
हान	४२

INDEX

A

Abicht	698	Alto, P.	28
Abott, Nabia	379, 93	Amalaric	693
Abraham	554	Amarra	318
Abu Simbel	556	Amasis II	558
Abydos	546	Ambracia	658
Abyssinia	617	Amenertaic	559
Academy des Inscriptions et Beiles Lettres	570	Amenesses	555
Academy of Sciences	570	Amen hotep-I	552
Achaean	629 45, 57	American Colonization Society	607
Achamenes	248, 69, 78	American Oriental Society	293, 307
Acropolis	664	American School at Athens	662
Ada	353	American School of Oriental Research	334
Aegeus	632	Amsterdam	272
Aeizanes	592	Anactorium	658
Aelius Gallus	359	Anastase, P.	357
Aemilianus	562	Anatolia (Turkey)	645
Agnone	674	Andhra Historical Research Society	53
Agvan Dordjiev	469	Andreas, F.C.	473
Ahram	293	Androgorus	252
Ahmes Nefertari	553	Ankh-ib-ra (Psamtik iii)	564
Ahmos	552	Antiochus-III	385
Ahu	761	Antony, Mark	561
Akerblad, J. D.	568	Apollonia	658
Aksum	617	Apries (Ha-ib-ra)	558, 64
Alaric	693	Apulia	674
Alaska	699	Arabic	286
Albright, W. F.	307, 73 93	Aramaic	337
Aldred, Cyri.	593	Araq-el-Amir	330
Aldus	565	Aratus	664
Alexander	254, 353	Arberry, A. J.	254, 86, 93
Alexandria	560	Arcadia	664
Ali Khan, H. M.	393	Archaic Latin	687
Allen, A. B.	246, 357, 486, 649	Ardea	668
Allyattes	349	Ariadne	645
Almurach	708	Aricia	668
Altheim	698, 718	Arkwright, W.	357
		Arntz, H.	722, 25, 38
		Arsaces	250, 52

Arsames	269, 78	Bast (Dubastis)	557, 64
Artabanus	250	Baur, H.	290, 307, 604
Artabanus-iv	252	Beer, E. E. F.	267, 375
Artaxerxes-I	250	Behdet (Bamanhur)	545
Aryaramnes	248, 69	Behistun	286, 318
Aryds	349	Bekeurenef (Bocchoris)	564
Ashmolean Museum	645	Bell, Sir Charles	408
Asiatic	375	Bendell	206
Assiut	557	Benn. tt, Emmett L.	647, 48, 49
Assyria	246	Berlin	320, 55
Astle, T.	17	Berheimer, C.	393
Ataulf	693	Berthel, Thomas	762
Atecotti	708	Bessarbia	699
Athenaeus	261	Bevan, Edwyn	593
Athens	657	Bhandarkar, D. R.	121
Atkinson, G. M.	738	Bhattacharya, S.	203
Attica	657	Birch, S.	311, 593
Aufrecht, S. T.	674	Bittner	357
Aurelian	562, 733	Black, Robert	459
Ausere Apopi	551	Blackney, R. B.	427, 58
Avalishivili, Z.	393	Blakeway	687
Avaris	551	Blegen, C. W.	647, 48, 49
Avery, John	408	Bloch, R.	694
Avesta	282, 86	Blyden, Edward W.	613
Avidius Cassius	562	Bocchoris (Bekenrenef)	564, 57
Ay	552	Bodmer, F.	7, 694
B		Boetia	640, 62
Babylonia	246	Bolzani, G. V. P.	566
Babylonian	258, 286	Bolzano	678
Bacchis	659	Bombay	278
Bacot, J.	458	Bondelmonte	565
Bai Bureh	613	Boniface	644
Baikie, J.	649	Booth, A. J.	278, 86
Banerji, R. D.	102	Bork, F.	234, 55, 86, 347
Bankes, W. J.	570	Bossert, H. T.	322, 55, 87, 90, 649
Barnet, R. D.	324	Botsford, G. W.	666
Barno	697	Botta, P. E.	239
Barth, H.	625	Boudet, P.	541
Barthelemy, Abbe	338, 566, 67	Bourbourg, B. de	750
Barton, G. A.	234, 46, 86	Bourgeois, R.	541
Barua, D. M.	75	Boussard (Bouchard), M.	567

Chamba	157	Clusium	667
Chamberlain, B. H.	504	Cock, H.	307
Chamberlayne	566	Codrington, H. W.	218
Champollion, J. F.	18, 569	Coedes, G.	542
Chan, Shan Wing	458	Cohen	469
Chantre, E.	319	Colledge, M. A. E.	254
Chao	409	Confucius	411
Chao (Mrs.)	432	Conrad-II	678
Chao K'uang Yin	414	Costantine	697
Chao, Y. R.	458	Constantinople	343
Charlemagne	684	Conway	694
Charles II	262	Cook, Captain	761
Chefren (See Khafre)	564	Cook, S. A.	337, 57
Chenet, G.	302	Cooke, Rev. G. H.	807, 34, 57
Cheng Miao	429	Coptic	566
Cheops (See Khufu)	765	Copts	562
Chiang Kai Shek	421	Copenhagen	246
Chicago	246, 321	Corinth	658
Chieh Kuei	409	Cornelius V. Bruyn	262
Chien Lung	419	Cosmus	373
Chiera, E.	234, 46	Coste, P.	267
Chih Pei Sha	458	Cottrell, L.	19, 246, 592, 700
Ch'i-tan	454	Count Caylus	262
Ch'in	411	Cowley, A. E.	324, 57, 75, 647
China Revival Society	421	Creel H. G.	458
Ch'iu K'ung	411	Crawford, O. G. S.	625
Chosen	409	Croesos	218, 343
Chou Hsin	409	Cromwell	708
Ch'ou Wen	427	Cronos	641
Christia, J. L.	542	Crosby, J.	542
Chung, Tan	424	Cross, F. M.	307, 334
Chu Yuan Chang	416	Cumae	671
Chwolson	334	Cuneiform	9, 246, 63, 78, 86
Cintra Pedrode	604	Curtis, E.	738
Clark, C.	234, 46	Cyaxares	233, 48
Claude, J.	19	Cyclades	658
Claudius	347, 562	Cynosce Phalae	657
Cleator, P. E.	257, 61, 68, 86, 307, 12,	Cypselus	658
	19, 24, 575, 93, 649	Cyrillic	698
Cleisthenes	657	Cyrus	248
Clodd, E.	46, 334, 700		

D			
Dacia	715	Dowson, J.	203
Damascus	363	Drake	312, 24
Dani A. H.	203	Drive, G. R.	307, 34
Daniel, G.	307	Drower, E. S.	393
Daniel, J. F.	632, 49	Druids	708
Daniels, O.	504	Dugast	602
Danielson	670	Dunand	293
Darius-1	250, 78, 86	Dunlop, R.	738
Daustrop	738	Duperron, A.	263, 82
Davids, R.	107	Dupont	322
Davis, E. J.	312	Duroiselle, C.	542
Davis, Nathan	625	Dussaud	293, 97, 302, 68
Decius	562	Dutta, B.	7
Decters, G.	390		
Deecke	290	E	
Delafosse	607	Eckardt, P. A.	486
Delitzsch, F.	273	Egbert, J. C.	694
Deorad	708	Egypt	576
Deruschwan, Hans	718	Egyptian	290, 375, 576
Deuel, L.	320	Eisler, R.	632
Dhorme E.	303	Elam	227, 47
Diamond, A. S.	7	Elbert, Elber	613
Diemal, A.	235, 43	Embryo-Writing	10
Dieulafoy, M.	243	Empson, R.H.W.	357
Dillman	625	Engelbert, K.	262
Dinokov, Peter	698	Englianos, Epano	647
Diodorus, S.	261, 545	Enkomi (Salamis)	632
Diodotus	252	Enting, J.	364, 66, 93
Dionysius	667	Epaminodus	662
Diringer, D.	203, 93, 307, 486, 542, 93, 700	Eric, J.	748
Djibuti	604	Erichsen, W.	593
Djoser (See-Zoser)	546	Erman, Adolf	571, 76, 93
Doblhofer, Erust	28, 75, 246, 307, 11, 12, 18, 19, 21, 24, 566, 74, 76, 93, 762	Erskine, S.	625
Dominico, F.	674	Eski Adalia	353
Don Garcia de Silva	261	Ethiopia	617
Dorian	645	Etruscan	667
Dorpfeld, W.	646	Euphrates	225, 361
Doughty, C.	364, 66	Euric	693
		Evans, A. J.	645, 48, 49, 755

F

Falconbridge, A.	613
Falerii	670, 78
Faliscan	678
Fan Ch'ieh	444
Fastida	693
Fateh Singh	75
Faulmann	438, 527, 42, 671
Fell, R. A.	694
Fergusson	267
Fiesal	671
Figac	569
Figulla, H. H.	320
Finegan, J.	234, 307, 24, 34
Fiorelli, G.	674
Fitzgerald, C. P.	458
Flaminus	660
Flandin, E.	267
Fleet J. F.	11, 40, 86
Forbes, W. C.	542
Forde, C. D.	625
Fork, A.	443
Forrer, E.	321
Forster, Rev. Charles	375
Fourier, J. B.	569
Francke, Rev. A. H.	402
Frankfort, H.	234, 57
Frankfurter, O.	542
Franks	693
Fransico de Almeida	216
Fraser, J.	357
Frederick-II	672
Freese, J. H.	649
Free Town	613
Freret N.	567
Fried	355
Friedrich, J.	243, 307, 24, 47, 49, 53, 55, 574, 75, 602, 13, 20, 32
Frithigern	693
Frumentius	625

Fryer, R. N.

282

Fu Hsi

425

Furumark

647

G

Gabain, A. von	469, 76, 79
Gabii	668
Gadd, C. J.	75, 234, 48
Gaertringen	641
Gallerius	562
Gaiseric	672
Gaius Petronius	562
Gallienus	562
Gardanne, P. A. L. de	268
Gardiner, A. H.	290, 307, 73, 574, 75, 93
Gardiner, C.	425
Gardiner, E. A.	641, 66
Gardner, F.	542
Gardthausen	290
Garstang, J.	320
Gauthiot, R.	462, 73, 79
Gebal	293
Gebelin, C. de	567
Geitler	698
Gelb, I. J.	17, 203, 46, 86, 307, 21, 22, 24, 446, 58, 649, 700
Gepidae	715
Gesenius, W.	377
Ghirshman, R.	254, 82
Giasofat B.	261
Gibbethon	326
Gibbon, J. B. E.	738
Giles, H. A.	409, 43, 79
Girosdeft	755
Gieret, K.	738
Glagolithic	698
Glanville, S. R. K.	593
Glottz, G.	666
Godard, T. N.	625
Goidels	707

Goldmann	671	Hadrianus, P.A.	338
Gonzales	761	Hagia Triada	647
Goodrich, E. A.	641	Ha-ib-ra (Apries)	564
Goodrich, L. C.	443, 58	Haker (Akhoris)	564
Gordon, A.	567	Hakoris	559
Gordon, C. H.	286, 303, 304, 8, 11, 13, 18, 19, 20, 22; 24	Halbherr	647
Gordon, F. C.	649	Halevy	290, 368
Gould, B.	408	Halicarnasus	667
Graff, W. L.	7	Halin	737, 38
Graham	368	Halis	349
Gray, G. F.	375	Hall, H. R.	7, 649, 66
Green, K.	312	Hallendorff, C.	738
Greenwall, H. T.	625	Ham	698
Gregory, W.	216	Hamilton, W.	312, 632
Grenoble	569	Hamlyn, P.	234
Greville Chester	645	Hammerstrom	671
Grienberger	712, 38	Han	412
Grierson, G.	157, 203, 15, 402, 408, 542	Hanmel	290
Griffith, F. L.	592, 93	Hanoteau E	597
Grimme, E. H.	290, 364, 66, 68	Hanus	698
Grimme, J.	698	Harappa	64
Grimme, W.	700, 22	Harden, D.	308
Grohmann	625	Harland, J. P.	666
Grote, George	645	Harrer, A.	357
Grubissich	698	Harris, Z. S.	308
Gudea	228	Harvey, G. E.	542
Gugushivili, A.	393	Hatshepsut	552
Guignes, De	567	Hauran	363
Gurley, Robert	607	Haupt	290
Gurmani, C.	364	Hawai	421
Gurney, O. R.	324	Hawara	551
Gutenbrunner	694	Heberdey, R.	358
Guterslob	640	Hebrew	302, 30, 34
Gyges	349	Heeran, L.	264
Gyles, M. F.	234, 357	Helene	7
		Heliopolis (see Onu)	549, 64
		Hellenic League	660
		Hemraj, S. V.	206
		Henning, W.B.	479
		Henry, A.	450
		Heracles	672
Habsburg	678		
Haburni	707		

H

Heraclius	562	Hsun, Lu	424
Heras, H. (Rev.)	28, 75	Hsi-Tsong	397
Herbig	670, 71	Huang Ti	409
Herder, J. G.	264	Huber	366
Herecleopolis	550	Hultzseh, E.	134, 203
Herihor	557	Humphrey, H. N.	542, 625
Hermanic	693	Hung Hsin Chuan	419
Hermann, A.	264	Hung Wu	416
Hermes	9	Hunter, G. R.	28, 75
Herodotus	545	Huny	549
Herpini	674	Hüsing, G.	255, 67
Heumann, K.	321	Hussey, D. M.	218
Heyrerdahl, Thor	761	Hutchinson, R. W.	650
Hieratic	573	Huyot, Jean Nicolas	570
Hieroglyphikon (Greek)	565	Hyksos	290, 551
Hieroglyphs (...phics)	9, 321, 22, 24, 565	Hymarite	359
Hikau Khasut	551	Hystaspes	268, 78
Hiller, von	641		
Hillier	443		
Hincks, Edward	239, 67	I	
Hiraclitus	76	Iberians	707
Hissarlik	645	Ibis	572
Hitti, P. K.	308, 57	Iguvium	674
Hittite	320, 21, 24	Ilahun	551
Hockley, F. W.	220	Iliad	287
Hodgkin, R. H.	738	India	113
Hoffman, M.	393, 496, 756	Iran	254, 82
Hogarth, D. C.	313, 57	Iraq	246
Homer	645	Isemonger, N. E.	504
Hood, M. S. F.	666	Israel	334
Hooke, S. H.	486	Ith-at-Tawi (Lisht)	564
Hopkins, L. C.	458	Ivan-iv	699
Horapollo	565		
Hotemhab	552	J	
Howard Carter	555		
Hrozny, B.	320, 24	Jablonski, P. E.	567
Hsiao Chuan	427	Jack, J. W.	308
Hsiking	469	Jackson, A. V. W.	282, 86
Hsing Shu	429	Jacob	331

Magre	678	Melos	641
Mahalingam, T. V.	203	Memmius	660
Majumdar, R. C.	94	Menant, J.	318, 57
Malcolm, Sir J.	268	Mencius	411
Manchu	417	Mende	607
Mandarin	421	Menes (see Narmer)	546, 64
Manfred	672	Men Nefer (Memphis)	564
Manios Clasp	687	Mentuhotep-I	550
Manthis Akhoris	559	Mentz	290, 640
Marathon	657	Mercati	567
Marcus Aurelius	562, 97	Mercer, S A.B.	17, 246
Marguerson	19	Mercier	597
Marinatos	647	Mercury	9
Mario Schipans	261	Merenptah	555
Marrucini	674	Merenre-I	549
Marsden, W.	542	Merenre-II	550
Marshall, Sir John	75	Meriggi, Pierro	28, 75, 321
Marsham, J. D.	567	Meryre (Pepi-I)	549, 64
Marstrander, C. T. S.	694, 712	Mesha	297
Martin, St. A.J.	266	Meesana	674
Martin, W. J.	308, 334, 542, 700	Messerschmidt, L.	313, 19
Mas'nisia	595	Methodius	697
Mason, W.A.	694	Metropolis	664
Maspero, G.	358, 571	Meyer, Eduard	229, 646
Mass, Aquoi	626	Micipsa	595
Massey, W.	286, 393	Miller	698
Mastaba	546	Milverton	569
Mathews, R. H.	443, 59	Ming	41
Mathias Corvinus	715	Minos	644
Maveer, A.	738	Minotaur	644
Maxwell	617	Mirashi, V. V.	94, 203
Maya	748	Moab	297
Mc Cune, G. M.	486	Moesia	697
Mc Farland, G. B.	542	Mogeod, F. W. H.	626
Mc Gregor, J. K.	617, 25	Mohenjo-Daro	64, 71, 75
Mc Lean, John	755	Möller, G.	576, 93
Megalapolis	664	Momru Doalu Bukere	607
Mehrotra, R.M.	7	Mono-Syllabic	421, 23
Meidum	549	Monroe, E.	625
Meillet	469, 73	Montet, Pierre	293, 593
Meinhof, C.	597, 602	Moorgat, A.	229

Moorhouse, A. C.	246, 86, 308, 11, 73, 626
Mordtmann, A. D.	267, 311
Morgan, J. de	243
Morris, J.	215
Moses	556
Mount Sinai	373
Mittraux, Alfred	761
Mukherji, P. C.	107
Müller, D. H.	368, 77
Muller, F. W. K.	462, 79
Muller, Outfried	674
Munshi, K. M.	94
Münter, F. C. H.	264
Murray, M. A.	593
Mursili-I	309
Musaiev, K. M.	737, 38
Myers, S. L.	631, 49
Mystic Trigrams	409

N

Nabataean	364
Nachtigal	602
Nagada (Luxor)	545
Nagy, S. M.	718
Napata	558
Naples	671
Narain, A. K.	203
Narmar (Menes)	564
Nath, Rajmohan	75
Nathigal	698
Nebu	9
Nebuchadnezzar	233
Nebu Nedus	233
Nebu Palasar	248
Necho (See Wah-ib-ra)	564, 58
Neckel	725
Necropolis	664
Nectanebo-I (See-Nekht Nebef)	559, 64
Nectanebo-II (See-Nekht Horheb)	564

Neferitis-I	559
Neferkare (Pepi-II)	549, 64
Nefret-ib-ra (Psamtik-II)	564
Nehru, J. L.	459
Nell, J. G. O.	666
Nekheb (El Kab)	546, 64
Nekhen (Hierokonpolis)	546, 64
Nemeth	718
Nepal	107, 206
Nestorian	361
Nestorius	343
Nesubenebde	557
Neubaur	331, 34
Newberry, J.	28
Newman, P.	650
Newton, C. T.	353
Newyork	246
Niccolo Nicoli	565
Nicephorus Phocas	644
Nicholas, S. E. N.	218
Nicias	660
Nicolas, Abbe T, de	568
Nidintu Bel	233
Niebuhr, C.	263, 567
Nineveh	248
Njoya	602
Noah	225
Nola	672
Nöldeke	334, 38, 40, 58
Norden, F. L.	567
Norris, Edwin	268
North Arabic	379
North Semetic	307
Noth, M.	302, 34
Novgorod	699
Nubia	551
Nuremburg	718
Nya-tri Tsen-po	397
Nyein Tun	542

O		Pandey, C. B.	94
Oberman, J.	308	Pandey, R. B.	302
Octavius	561	Pannonia	715
Odenathus	337	Pao Chia	414
Odoacer	721	Paphos	629
Odyssey	287	Pares, B.	700
Ogg, Oscar	694	Paribeni	353
Oghma	9	Paris	263, 97, 366
Oinach	707	Parker, B. M.	423
Ojha, G. H.	102, 203	Parker, E. H.	454, 59
Oligarchy	658	Parpola, A.	28, 75
Olmstead	313	Parthian	254, 82
Ollone, H. M. G. d'	459	Pasiphae	644
Olympia	664	Pazkiewicz, H.	700
Olzscha	671	Paten, W. R.	353
Onu (Heliopolis)	549, 69	Pathak, D. B.	7
Oppenheim, A. L.	234	Pauli, W.	670, 72, 94
Oppert, J.	239	Pavie, A. J. M.	518
Origny, P. A. L. d'	567	Pe	546
Orontes	261	Pederson, H.	738
Oscan	672	Pedupast	557
Osgood, C.	486	Peet, T. A.	594
Oskorn	557	Peguria	678
Ostrogoths	688	Pei-sha, Chih	459
Ouseley, W. G.	266	Pelasgian	671
Övre Dalarne	728	Pelliof	462
Owen, G.	459	Peloponnesian League	657
P		Pendlebury	649
Paeligni	674	Peoples National Party	421
Pa Fen Shu	429	Pepi-I (See Meryre)	549, 64
Pa Kua	409	Pepi-II (See Neferkare)	549, 64
Pale	708	Periander	658
Palestine	307, 26	Pericles	657
Pallatiuvo	694	Per Meri (Naucratis)	564
Pallis, S. A.	234, 46	Pernier, Luigi	648
Palmer, L. R.	312, 24, 650	Per Rameses (Tanis)	564
Pa'myre	338	Perrot, G.	311, 58
Palotino	671	Persepolis	254
		Persia	254, 6', 78, 82
		Persian	258, 86
		Persson, A. W.	650
		Petrie, Hilda	594

Petrie, W. M. Flinders	28, 290, 363, 594	Puchstein, O.	321
Pett, T. A.	393	Purgstall, Baron Von Hammer	569
Phaistos Disk	648	Puri, B. N.	94
Philae Obelisk	570	Pylos	647
Phillip-II	657		
Phoenicia	287, 89		
Phoenician	293, 307	Q	
Piankhy	557	Quintus Curtius	261
Pickering	755		
Pictographic Script	10		
Pieser	290	R	
Pietro della Valle	261		
Pitman, I.	196	Radlove, V.V.	479
Pike, E. R.	234, 46, 650	Raetia	678
Pilcher, D.	593	Raffles, Sir S.	542
Pilling, J. C.	755	Rameses Siptah	555
Pinojdem	557	Rameses-I	555
Placidia	693	Ramsay, W.	321, 43
Pococke, Richard	375, 567	Ramstedt, G.T.	479, 86
Polin, Count N. G. de	568	Randall, D.	694
Pompeii	672	Ramo Rorarku	761
Pompey	561	Rao, M. R.	94
Pontius	698	Rao, S. R.	75
Pope, M.	255, 65, 338, 565	Rask, R.C.	266
Populonia	667	Ras Shamra	307
Porcius Cato	629, 31	Raulings	712
Porter, R. K.	268	Rawlinson, H.C.	94, 268.
Potidaea	658	Ray, S.K.	75
Poucha, P.	479	Regmi	206
Praetorius	368	Reinser, G.	591
Pran Nath	75	Reisner, F. L.	332
Prinsep, James	221	Remusat, Abel	462
Pritani	707	Rhea	641
Probus	562	Rich, C. J.	266
Proto-Tyrrhenian	671	Richardson, H. R.	408
Psammouthis	559	Richter, O.	631
Psamtik-I	558	Ridgeway, W.	666
Psamtik-II (Psalmthek)	297, 353, 564	Roberts, E. S.	641, 66
Psamtik-III	564	Robinson, C. A.	666
Psusemes	557	Rockhill, W. W.	408
Ptolemy Lagos	560	Rodiger, E.	364, 77
		Roehl	641

Roges-II	660	Sanyat Sen	421
Rogers, R. W.	234	Sarzec, de	236
Roggeveen, Jacob	761	Sarzy, Count de	267
Romaji Kai-Roman Script Society	496	Sassanian	282, 86
Romanelli	353	Saulcy, L. C. de	267, 597
Romulus	668	Savignac	366
Rosellini, H.	571	Savill, Mervyn	762
Rosetta	567	Sayce, A. H.	313, 24, 58, 594
Rosetta Stone	18	Sayce, Sylvestre de	263, 90, 568
Roughe, de	290	Schaeffer, C. F. A.	302, 8
Routlage, Katherine	761	Scheil	71
Roux, G.	234	Scherer	650
Roy, S.	203	Schiffer, S.	358
Royal Asiatic Society	282, 86, 454	Schliemann, H.	645
Royal Niger Co.	615	Schlozer	225
Royal Society of Literature	375	Schmidt, A.	761
Runciman	700	Schmidt, E. F.	254
Rurik	699	Schneider, H.	290, 640
Ryckmans, G.	369	Schubert, R.	358
		Schumacher, J. H.	567
		Schwnrz, B.	666
		Scotti	708
		Sebeknefrure	550
		Sehertawi Intef-1	550
		Seleucus	252
		Selišcev	698, 700
		Semen Khare	552
		Semitic	225, 307, 34
		Sen, S.	286
		Senanaik, R. D.	408
		Senart, E.	121
		Sensure F. de	667
		Sesostirs-1	550
		Sethe, Kurt	290, 93, 571
		Seti-1	555
		Setnakht	556
		Seyfarth G.	571
		Shabaka	558
		Shabatka	558
		Shapur-1	261
S			
Sabine	667		
Safaric	698		
Saggs, H. W. F.	234		
Sahidic	591		
Sahni, Swarn	542, 626		
Sahure	549		
Sais	551, 57		
Sakkara	546		
Salamis (Enkomi)	632, 57		
Salonica	697		
Samaria	332		
Samson, G. B.	504		
Samuel Flower	262		
Sandberg, Rev. G.	401		
Sandwith, T. B.	629		
Sandys	687		
Sankar Hajra	64		
Sankaranand	75		

Sharpe, S.	594	Somerset	569
Shastsi, N. K.	75, 94	Sondrio	678
Shen Nung	409	Sothill	443
Shepses Kaf	549	Sparta	657
Sheshonk (Sheshak)	557	Spiegelburg, W.	571, 94
Shih Huang Ti	411	Spilberg, J.	218
Shivramamurti, C	203	Spohn, A. W.	571
Shu	412	Sporry, J. T.	594
Shupfululimash	309	Springling, M.	373, 626
Shu Shen	429	St. ¹ Cyril	698
Si-an-fu	412	St. Mark	591
Sicily	670	St. Patrick	708
Sikwayi (Sequoyah)	755	St. Paul	658
Siltiq	647	Stark, F.	393
Simeon	697	Stasinos	629
Simonides, C.	571, 94	Stawell, F. M.	649
Sinaitic	375	Stegemann, V.	576, 91
Sircar, D. C.	102, 21, 203	Stein, Aurel	473, 76
Six	355	Steinberr	353
Skensure	552	Stephens, G.	738
Ski, L.	321	Stern, Ludwig	571
Skinner, F. N.	462	Stillwell	666
Skjolsvold, A.	761	Stolte, E.	678
Skutsch	671	Strabo	672
Smeathman, H.	613	Strange, E. F.	542
Smendes	557	Stuart, Pigott	650
Smerdes	250	Stungnar Runir	725
Smith, A. D.	626	Sturtevant, E. H.	324
Smith, G.	312, 632	Subramaniam, T. N.	203
Smith, S.	229, 34	Sui	412
Smith, V.	94, 102, 13, 21, 40	Sulla	672
Snefru	549	Sumner, A. T.	626
Sobelman, H.	295, 308	Sung	414
Sobolewskij	698, 700	Sung, Yu Feng	427, 40, 50, 59
Society of Antiquaries	569	Susian	258
Socrates	657	Susiana	286
Sogdian	462	Swain, J. E.	234, 258, 478
Solomon	261, 620	Swinton	338
Solon	657	Syracuse	658
Somalis	604		
Somer	322		

I. Saint

Syria	307, 11	Thomas Hyde	263
		Thompson, Sir H.	571
		Thompson, R. C.	320, 24
		Thompson, S.	748
		Thompson, V. L.	542
		Thomsen, V.	476, 67, 718
		Thomson, E. M.	666
		Thomus, Herbert	262
		Thorsen, P. G.	725
		Thoth (Thot)	9, 572
		Thotmes-III	287
		Thucydides	646
		Thugga (Dougga)	597
		Thumb, A.	650
		Thutmose-I	552
		Tigris	225
		Tin, P. M.	542
		Tiridates	252
		Tiwari, B. N.	7
		Todi	678
		Tomkins, W.	748
		Torp, A.	319, 670
		Torrey, A.	293
		T'oung Pao	459
		Treuber, O.	358
		Trier	721
		Tripathi, R. S.	94
		Trondheim	724
		Troy	645
		Trump, D.	19
		Tsai Lun	438
		T'sao Shu	429
		Tsordji Osir	462
		Tuath	707
		Tudor	674, 78
		Turkey	645
		Tutankhamen	552
		Tutmis (Tutmosis)	553
		Tychsen, O. G.	263
		Tychsen, T.C.	567
		Tyle	707
T			
Ta Chuan	427		
Taharka	558		
Tai Hsi	427		
Talbot, P. A.	626		
Talbot, W. H. F.	273		
Tamiradae	629		
Tan Chung	427		
T'ang	409, 12		
Tanis	557, 64		
Tanutamone	558		
Tao-Teh-King	411		
Tarn, W. W.	666		
Tarquinia	667		
Tata Institute of Fundamental Research	20		
Taylor, Issac	203, 21, 69, 462, 79, 671, 98		
Taylor, William	650		
Tegea	664		
Teispes	248, 69		
Tell-El-Amarna	554		
Teos	559		
Teti-I	549		
Teutons	694		
Texier, C.	312		
Thausen, G. von	671		
Thebes (Greek)	640		
Thebes (Egyptian)	549, 64		
Thelegdi, J.	718		
Theomistocles	250, 657		
Theodore	620		
Theodoric	693		
Theodosius	693		
Theophilos	625		
Thera	641		
Thesius	632		
Thomas, E. J.	64, 286		

Tyrhenus	667	Wah-ib-ra (Necho)	564
Tzu Hsi	421	Wallace, A. R.	542
		Wallia	693
		Wandington	355, 64, 68
		Wang An-Shih	414
		Wang Cheng	411
		Wang Chieh	423
		Wardrop, O.	393
		Wei	412
		Wei Nung	454
		Wellsted	364
		Wen Chang	9
		Wesi (Thebes)	564
		Westergard, N L	267
		Wetzstein	368
		Wheeler, M.	75
		White, J. C.	215
		Whymant, A.N.T.	469
		Wiedmann, F.	640
		Wieger, L.	459
		Wilber, D. N.	254
		Wild, R.	625
		William, A M.	542
		Williams	443
		Williamson, H. R.	422, 41, 50, 59
		Wimmer, L.	694, 722
		Winckler, H.	320
		Winnett, F. V.	368, 69, 93
		Winter, F.	353
		Wolfe	321
		Woolley, C L.	234, 313, 58
		Wormius	722
		Worrell, W. H.	549
		Wrench	313
		Wright, J.	694
		Wright, W.	312
		Wu	412
		Wu Sankwei	417
		Wu Ti	412
		Wu Wang	409
		Wurburton. W.	566
U			
Ugaritic	304		
Ulphilas	693		
Ullman, B. L.	334, 666		
Umbrica	674		
Unis	549		
Upasak, C. S.	203		
Urrad	708		
Usman Dan Fodio	615		
V			
Valerianus, P.	566		
Valeus	693		
Varthema, L. di	535		
Vasu, N. N.	203		
Vats, M. S.	57		
Vaux, W.S.W.	254		
Veii	667		
Venice	644		
Ventris, Michael	632, 47, 4		
Verma, T. P.	203		
Vestini	674		
Vetulonia	667		
Vienna	118		
Villonovans	667		
Virolleaud, C.	303, 308, 13		
Visigoths	688		
Visimar	693		
Vogel	157		
Vogüe, de	338, 4, 68		
Vondrak	698		
W			
Wace, A. J. B.	647, 48, 50		
Waddell, L. A.	28, 75, 402		
Wade, Sir Thomas	413, 46		

Wylie, A.	469	Yunnan	450
		Yutang, Lin	443
X			
Xerxes-I	250	Z	
Y		Zangroniz, Z. de	602
Yamagiva, J. K.	504	Zeitlin, R. J.	357, 331
Yamato (Japan)	487	Zenobia	562
Yazdani, G.	94, 121, 25	Zeus	641
Yodit	620	Zide, A.	68
Young, J. C.	626	Zimmer	712
Young. Thomas	569, 94	Zoega, G.	508
Yu	409	Zoroaster	76, 476
Yuan	416, 21	Zoser	546
Yu Chen	414	Zvelebil	68
Yung Lo	417	Zwetaieff, J.	674



लेखनकला का इतिहास

द्वितीय खण्ड

ईश्वरचन्द्र गह्वरी